MAHESHWARI

1941 G.K.U.

110674

110679

माहेश्वरी

110674

पृ. १२

23

जहां चित्त भयशून्य है, जहां मस्तक उच्च रहता है, जहां ज्ञान मुक्त है, जहां जगत् (राष्ट्र) क्षुद्र घराऊ दीवारों से खण्ड खण्ड नहीं कर दिया गया है, जहां शब्द सत्यता की गहराई से निकलते हैं, जहां अनथक पुरुषार्थ अपनी भुजाओं को पूर्णता की ओर बढ़ाता है, जहां तर्क की निर्मल धारा ने अपने मार्ग को मृत रूढ़ि की भयानक मरुभूमि में नष्ट नहीं कर दिया है, जहां (के निवासियों का) मन सदा विस्तृत होनेवाले विचारों और कर्मों की ओर अग्रसर रहता है, ऐ मेरे पिता ! स्वतंत्रता के ऐसे दिव्य लोक में मेरा प्यारा देश जागृत हो !

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

110674

र्ष ३२
ख्या ९

वार्षिक मूल्य
३) रुपया

Sizl.

खिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभाका मुखपत्र

पाक्षिक

प्रवर्तक—स्व. भागीरथदासजी भूतड़ा

सम्पादक समिति
ीनारायण मालाणी, श्री. दामोदरदास मूंदड़ा
श्री. राधाकृष्ण लाहोटी

प्रवन्ध सम्पादक
राधाकृष्ण लाहोटी

प्रकाशक
श्री. वसन्तलाल श्राफ़

कार्यालय—अली चेम्बर्स, डीन लेन,फोर्ट, बम्बई.

कृष्णमन्दिर प्रयाण —

श्री बद्रीनारायणजी भगवानदासजी गिलड़ा

आपने २८ अगस्तको सुबह १० बजे बाजारपेठ, पनवेलमें अपने घरके सामने युद्धविरोधी घोषणा करके सत्याग्रह किया। सत्याग्रहके बाद आपको गिरफ्तार कर लिया गया। आपको 'बी' क्लासमें तीन मासकी सादी कैदकी सजा दी गई।

गेंडा मार्का
क्राफ्ट
कागज़
मज़बूती और टिकाऊपन में
सबसे उत्तम है
पत्र व्यवहार करें
ओरियण्ट पेपर मिल्स, लिमिटेड
मैनेजिंग एजेण्ट्स
बिड़ला ब्रदर्स लिमिटेड, कलकत्ता

R.T-1444

41 — 46
9—17

माहेश्वरी

' उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत '

वर्ष ३२, संख्या ९] बम्बई ता. ७ सितम्बर १९४१ [वार्षिक मूल्य ३ रुपया

दैवी शक्ति बनाम आसुरी शक्ति

जिस चीज़के कारण हम मनुष्यको मनुष्य कह सकते हैं वह चीज़ उसके हाथ हैं। ईश्वरने मनुष्यजातिको हाथ दिये हैं। पशुको हाथ नहीं दिये। मनुष्य और पशुमें यही फर्क है। कहा जाता है कि एक बिल्ली दूसरी बिल्लीसे अधिक चतुर होती है। कुत्ते और ढोरोंके विषयमें भी जाननेवाले यही कहते हैं कि उनमें काफ़ी बुद्धि रहती है। लेकिन उनके हाथ नहीं है इसलिये उनकी बुद्धिका विकास नहीं हो सकता।

मनुष्यके हाथमें जो शक्ति भरी पड़ी है, मनुष्यने जो बड़ी बड़ी चीज़ें बनाई हैं उनमें हाथका हिस्सा सबसे बड़ा है। बुद्धिके साथ यदि हाथ न हो तो बुद्धिका अच्छा उपयोग नहीं हो सकता। हम लोगोंने हाथोंको निकम्मा बना रक्खा है। हमारे जो ऋषि हो गये हैं उनके विषयमें मैं ज्यादा नहीं जानता। लेकिन आजकलके इतिहास परसे यह देखा गया है कि बड़े–बड़े बुद्धिमान् पंडित हाथका उपयोग खो बैठे हैं और सिर्फ मुँहसे ज्ञानकी बातें करते रहे हैं। यति वेद, मुल्ला कुरान, और ईसाई बाईबल गाते हैं। बुद्धि और हाथके असहयोगके कारण, बुद्धिके विकास ने, मनुष्यको गिराया है।

यह ठीक है कि हमने राक्षसी–प्रवृत्तियां नहीं कीं। उसकी साधना जिन लोगोंने की उनमेंसे हिटलर पैदा हुआ। उसका मुकाबिला करना मुश्किल है। वह किसका और कितना संहार करेगा इसका पता भी नहीं चलता। उसके साथ लड़ने वाले भी बड़ी शक्ति इस्तेमाल कर रहे हैं। इसका परिणाम नाश ही हो सकता है।

हम न राक्षस बने न मनुष्य बने। मनुष्यकी आकृति होनेसे मनुष्य मनुष्य नहीं कहा जा सकता। हम रूखे ग्रंथ ही पढ़ते रहे। उसके रहस्यको हमने नहीं जाना, क्योंकि हमने हाथ की अमोध–शक्तिका ज्ञान नहीं पाया था। यह मैंने १९०२ में देख लिया था। लेकिन उसको अमलमें तो १९२० में लाया। मेरे तो हाथ नहीं थे, लेकिन मगनलाल मेरा हाथ था। उसने तप किया और चर्खेका शस्त्र खोजा और वह तप करते करते मर गया। उसकी तपश्चर्यासे मीठा फल निकला, राक्षसी नहीं।। क्योंकि वह दैवी और सात्विक तपश्चर्याका फल था।

आजकी प्रार्थनामें हमने गाया है कि "मुझे असत्यमेंसे सत्यकी ओर ले जाओ" यह चीज़ राक्षसी तपमें नहीं हो सकती। उसमें सत्य और झूठका विवेक नहीं है। उसकी नींव ही झूठ पर है। हमें असत्यको छोड़नेकी कोशिश करनी है। इस लिये हमारी तपश्चर्या दैवी अर्थात् सत्य और अहिंसामय होनी चाहिये। लेकिन यह आसान नहीं है।

यूरोप भी हाथका प्रयोग करता है लेकिन उसमेंसे मिलें पैदा होती हैं। कमसे कम, मनुष्य ताकत लगाकर जितना कर सकें उतना ही करना चाहते हैं। यंत्रोंका कमसे कम इस्तेमाल करना चाहते हैं।

यंत्रवादका हमें मुकाबिला करना है। वह घबरा देनेवाली चीज़ है। लेकिन मुझे घबराहट नहीं होती। निर्जर शक्ति का पूर्ण उपयोग करना मेरा धर्म है। इसका परिणाम ईश्वरके हाथोंमें है। इस विचारसे मेरी घबराहट दूर हो जाती है। जब हमारेमें शास्त्रीयता आ जायगी तब अमुक चीज़ हम क्यों करते हैं? वह हमें कहां ले जायगी? वह क्यों नहीं करते? यह क्यों करते हैं? यह सब समझमें आने लगेगा। किसान हल तो चलाता है लेकिन हम उससे पूछें कि यह क्यों चलाता है, दूसरे किस्मका क्यों नहीं, इसी तरह क्यों चलता है, तो वह जवाब नहीं दे सकता। वह जमीनका शास्त्र भी नहीं जानता है। वह सिर्फ कहेगा कि हमारे बाप–दादाओंसे यही रीति चली आयी है। हमें तो सोचना होगा कि तकली ऐसी ही क्यों? लोहेकी क्यों? लकड़ी या पीतल की क्यों नहीं? हरएकको विद्यार्थी रहना होगा। शास्त्रीय ज्ञानके लिये कोई अन्त नहीं है।

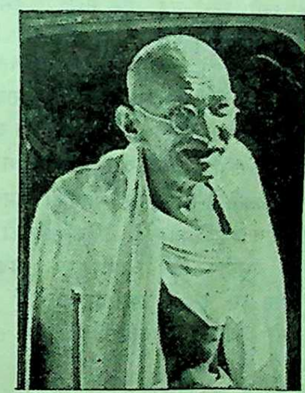

इस पर भी हमने एक मर्यादा रक्खी है। प्रार्थनामें हमने गाया है कि "चलो हम सब मिलकर सारी जनताकी सेवा करें"। उसमें यह नहीं कहा गया है कि हम भोग प्राप्त करें और साम्राज्य बनावें। और एक ही देशकी सेवा भी नहीं बताई है। प्राणीमात्र की सेवा उसमें हेतु है। सिर्फ हिन्दु, मुसल्मान या हिन्दुस्तान तक हमारी मर्यादा नहीं है। इसके माने यह नहीं कि हम प्रचारके लिये हिंदुस्तानके बाहर चले जायेंगे। लेकिन हमारी प्रवृत्ति इस प्रकारकी होगी कि जो जगत की भी सेवास्वरूप हो सकती है, पर किसीके लिये हानि स्वरूप नहीं।

कोई भी चीज़ बगैर तपश्चर्याके नहीं होती। तपश्चर्याके मानी फाका करना या एकादशी का व्रत करना नहीं है, लेकिन सत्यदान प्राप्त करनेके लिये परिश्रम उठाना है। सामान्य पाठशालामें भी विद्यार्थी काफी परिश्रम करते हैं। हमें तो इससे भी ज्यादा परिश्रम उठाना चाहिये। सामान्य पाठशालामें जो परिश्रम किया जाता है उसे व्यर्थ मानना चाहिये। उसमें धन कमानेकी वृत्ति रहती है। यहां सेवाकी भावना है। इसमें धनिक बननेकी तो आशा नहीं है। रोटी की तो है, लेकिन वह भी रूखी-सूखी रोटी ही मिल सकती है। भोग नहीं मिल सकते। कुरबानी और तपश्चर्यासे ही यह ज्ञान मिलने वाला है।

इसके साथ साथ चारित्र्य-शुद्धि चाहिये ही। उसके बिना यह तपश्चर्या शुद्ध नहीं होगी। राक्षसी तपमें चारित्र्य शुद्धिका महत्व नहीं है। तुम्हारे आंख, कान सब पवित्र रहने चाहियें। आखिर तुम देहातमें जाओगे। वहांकी जनता अज्ञानमें पड़ी है। अगर उनके बीच तुम दगाबाज़ और व्यभिचारी बनोंगे तो सारे कामका खातमा हो जायगा। इसलिये शास्त्रीयताके साथ साथ अन्तः शुद्धि भी होगी तो उसी हालतमें सफलता मिलनेवाली है। इसके मानी यह है कि तुम जैसे भीतर हो वैसे ही बाहर भी दिखाई दो। अन्दर और बाहरमें मेल होगा तभी इस महान् कार्यमें तुम उत्तीर्ण होओगे।

अध्यापक भी खुदको विद्यार्थी ही समझे। खादी–जगतमें मैंने एक लेख दिया था कि "एक बड़ा पुल बांधनेके लिये बड़े इन्जिनीयरकी ज़रूरत होती है। लेकिन इन्जिनीयरमें जो ज्ञान और शक्ति होती है उससे भी अधिक कुशलता हममें होनी चाहिये, यह समझनेकी ज़रूरत है। तकलीमें जो अपार शक्ति भरी पड़ी है उसका ज्ञान मुझे एक अंग्रेजने बताया। उनका नाम जीन्स है, वे एक बड़े खगोल शास्त्री थे और उन्होंने "युनिवर्स इन द ऐटम" नामकी एक किताब लिखी है। उसमेंसे मैंने 'यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे' का वैज्ञानिक वर्णन पढ़ा, तब मैं हैरान हो गया। हमारे लिये तकली एक 'ऐटम' है। उसीके अंदर मिल भरी पड़ी है, और जो चीज़ मिल सिखा सकती है वह तकली भी सिखा सकती है।

गंगाके ऊपर पुल बांधनेके लिये जो ज्ञान चाहिये उससे बहुत ज्यादा ज्ञान तुम्हें इस कामके लिये चाहिये। हिन्दुस्तानके करोड़ोंकी, जिनकी आंखोंमें तेज नहीं है, कमानेकी शक्ति बढ़ाना है। उनको दान देकर निभाना नहीं है। वैद्य या डॉक्टर जो अत्यावश्यक चीज़ बनाते हैं उसे हासिल करनेकी शक्ति उनमें होनी चाहिये। या जब यह हो सकेगा तभी हम शान्तिसे बैठ सकते हैं और कह सकते हैं कि हमने अपनी विद्या संपादन की।

आपके पास चर्खा–संघ, तालीमी–संघ, और उद्योग संघ हैं। यदि आपका काम ठीक नहीं होगा तो बाकीके बैठ जाते हैं। चर्खा ही इन सब प्रवृत्तियोंका केन्द्र है। मैंने उसकी तुलना सूर्यमंडलसे की है। जिस तरह हमारे लिये सूर्य केन्द्रमें है और सब ग्रह उसके आसपास हैं उसी तरह चर्खेके आसपास सब चीज़ें हैं। अगर सूर्य नहीं रहेगा तो सब ग्रहोंका नाश हो जायगा, उसी तरह अगर चर्खा नहीं रहा तो संघ नहीं रह सकेंगे। ['खादी जगत्'से].

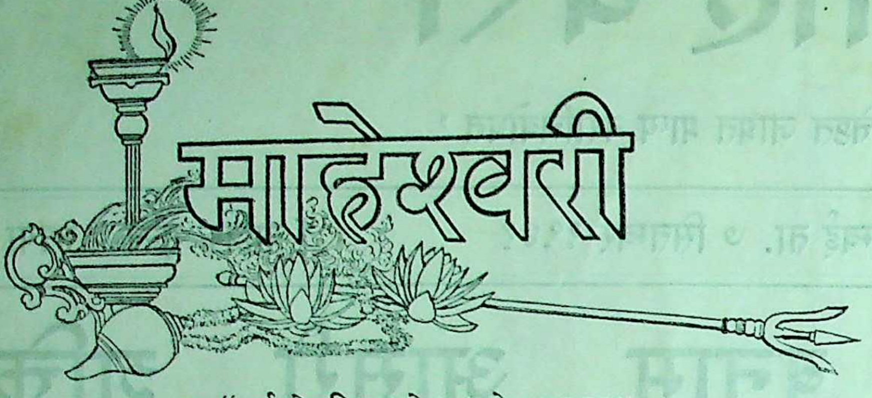

" कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन "

बम्बई, ता० ७ सितम्बर १९४१

कुरूढ़ियों की दासता से मुक्त होइए !

अभी हालहीमें गत ३० अक्तूबरको बम्बईमें माहेश्वरी व मारवाड़ी समाजके सुप्रसिद्ध व्यवसायी स्व० राजा सर विश्वेश्वरदासजी डागाका मौसर हुआ है। १८ अगस्तको बम्बईमें आपका स्वर्गवास हुआ था। तभीसे आपका मौसर मारवाड़ी समाजमें एक चर्चाका विषय बन गया था। ख्याल किया जाता था कि बम्बईसे मारवाड़ी समाजने मौसरकी जिस घातक प्रथाको तिलांजलि दे दी है उसको पुनरुज्जीवित नहीं किया जायगा। किन्तु यह आशा व्यर्थ साबित हुई और अन्तमें ३० अक्तूबरको मौसर हो ही गया। जिस समयसे मौसरकी तरफ स्वर्गीय डागाजीके कुटुम्बीजनोंके झुकावकी बात सुनी गयी तभीसे बम्बईके मारवाड़ी समाजके प्रमुख प्रतिष्ठित व्यक्तियोंने उन्हें समझा-बुझाकर इस मौसरसे पराङ्मुख करनेका भरसक यत्न किया। श्रीयुत रामदेवजी पोद्दार और श्रीयुत राजा नारायणलालजी पित्तीने भी श्री लक्ष्मणदासजी डागाके द्वारा स्व० डागाजीके आत्मीय स्वजनोंको समझाया-बुझाया और उनसे प्रार्थना की कि इस घातक प्रथाको वे फिर प्राणदान नहीं करें। हमनें भी श्री खुशहालचन्दजी डागा एवं श्री लक्ष्मणदासजी डागा से इस सम्बन्धमें वार्त्तालाप किया और इस बातका यथा सम्भव प्रयत्न किया कि यह मौसर न हो किन्तु हमें बड़े दुःख और व्यथाके साथ अपने प्रयत्नको निष्फल होते देखना पड़ा।

विवश होकर मौसरके अवसर पर नगरके अनेक प्रतिष्ठित सुधारवादियोंने शान्तिपूर्वक धरना दिया और बहुत अंशोंमें वह सफल भी हुआ। स्वयं बीकानेरके माहेश्वरी भाइयोंमें से भी बहुतोंने इस मौसरमें भाग नहीं लिया। इस धरनेके समय मौसरमें शरीक होनेवाले लोगोंसे जो विचार विनिमय हुआ उसने हमारे सामने एक अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय उपस्थित किया है। यद्यपि यह विषय एकदम नया नहीं है और हमने इन्हीं कालमोंमें अनेक वार इस विषयकी चर्चा भी की है। परन्तु फिर-फिर यह विषय हमारे सामने उपस्थित होता है जिसका एकमात्र अर्थ यही है कि यह भी समाजकी दुरवस्थाका मूल है। जब तक इस पर ज़ोरसे आघात नहीं किया जायगा तब तक समाजकी कुरीतियोंको परास्त नहीं किया जा सकता। सदियोंसे कुरीतियोंने समाजके मनपर एक प्रकारका प्रगाढ़ आतंक पैदा कर दिया है, उसे कायर और भीरु बना दिया है। हमने मकड़ी की तरह अपने ही चारों ओर एक प्रकारका जाल रच डाला है और यह जाल रच तो डाला है पर इसे अपने ही भीतर समेट डालने की शक्ति हमारे भीतर नहीं। इसलिये हम उसके भीतर निरुपाय और निश्चेष्ट होकर यातना पा रहे हैं।

इस मानसिक बन्धनसे हमारा जो संघर्ष चल रहा है, उसमें विजय पानेके लिये हमें भी दुर्योधनकी जंघाकी तरह उसके मर्मस्थलपर आघात करना पड़ेगा। यह मर्मस्थल है मानसिक कायरता–नैतिक साहसकी कमी। जबतक हम अपने भीतर की इस मानसिक कमजोरी पर विजय नहीं पाते तबतक सुधारके पथपर आगे बढ़ना सम्भव नहीं और तबतक कुरीतियोंकी गुलामीसे भी हम छूट नहीं सकते। जो लोग केवल इसी बातकी राह देखते हैं कि कोई दूसरा बढ़कर उनको राह दिखाये, जिनमें स्वयं अपना मार्ग साफ करनेकी शक्ति नहीं, उनका भविष्य अत्यधिक अन्धकारमय है।

धरना देनेके समय अनेक लोगोंने यह विचार प्रकट किया कि वे मौसरके पक्षमें नहीं और उससे उकता भी गये हैं किन्तु स्वयं उनमें यह साहस नहीं कि इस प्रथाके विनाशका द्वार अपने हाथसे खोल सकें। यदि कोई दूसरा इस प्रथाको तोड़नेके लिये आगे बढ़कर अपने नैतिक साहसका प्रदर्शन करे तो वे उसका अनुसरण कर सकते हैं। यदि सारे ही समाजकी ऐसी ही मनोवृत्ति हो जाय तो हमारे इस हतभागे समाजके लिये और अधिक आशा नहीं। किन्तु जब हम देखते हैं कि हमारे मारवाड़ी समाजके ही कितने लोगोंने इस प्रथाको तोड़नेमें नैतिक साहसका परिचय दिया है तब समाजके लिये आशाका एक सम्बल मिल जाता है। और हम उस घड़ीकी इन्तज़ारमें हैं जब कि समाजके दूसरे लोग भी इसी भांति नैतिक साहसका परिचय देंगे।

मौसरको हटानेके लिये प्रायः समूचे मारवाड़ी समाजमें ही आन्दोलन चल रहा है और जब तब इस आन्दोलनको नैतिक साहस और सुधारके प्रति श्रद्धा दिखानेवाले लोगोंकी बदौलत बल भी मिलता रहता है किन्तु कभी-कभी इस प्रवाहमें इस तरहकी रुकावटें आ खड़ी होती हैं।

मौसरकी प्रथाका आज जो विरोध हो रहा है उसके पीछे एक स्पष्ट नैतिक पहलू है। यह तो स्पष्ट है कि किसी भी धर्मने इस प्रथाका अनुमोदन नहीं किया और यदि किसीने इसका अनुमोदन किया भी होता तो अवश्य ही वह सच्चा धर्म नहीं होता। एक तरफ मृत व्यक्तिके कुटुम्बीजन और बन्धुबान्धव विलाप और शोक करते हैं और दूसरी तरफ आमोद-प्रमोद और खान-पानका यह दौर चलता है जो कभी उचित और नैतिक नहीं कहा जा सकता। केवल समाज पर अपनी साख बिठाने या लोक दिखावेके लिये इस प्रथाका किसी समय प्रारम्भ हुआ होगा तभीसे इसकी जड़ें समाजके अन्तस्तलके भीतर क्रमशः गहरी-गहरी पैठती चली गयीं। और आज हालत यहां तक पहुंच गयी है कि रूढ़िवादी लोगोंने इस प्रथाके पीछे कितनीही अन्ध परम्पराएं गढ़ ली हैं और इसे समाजका एक अत्यन्त आवश्यक और अपरिहार्य अनुष्ठान बना डाला है। यदि कोई पुरुष दरिद्रताका मारा अपने स्वर्गीय पितरोंका मौसर न कर सके तो समाजमें व्यङ्गबाणों और कटाक्षोंसे उसका जीना तक दूभर कर दिया जाता है। इसीसे कितने ही लोग अपने आपको इन तीखे व्यङ्गबाणोंकी चोटसे बचानेके लिये कर्जेका अभेद्य कवच पहननेके लिये बाध्य हो जाते हैं जो अन्तमें कभी-कभी उनका कफन तक बन जाता है। यह इस प्रथाकी घातकताकी चरम सीमा है।

और यह नहीं कि समाज इस बातको समझ नहीं रहा। धीरे २ लोगोंने इस प्रथाकी हानियोंको समझना प्रारम्भ कर दिया है और यदि सचमुच ही यह प्रथा त्याज्य न होती तो आज जो तीर्थयात्राओंमें मौसर त्यागनेकी प्रतिज्ञाएं ली जाती हैं और मौसरके भोजनोंमें लोगोंकी उपस्थिति कम होती जा रही है, वह नहीं होती। पर हम देख रहे हैं कि क्रमशः मौसरका प्रभाव समाजके मनसे उतर रहा है। मौसरमें जो बड़ी-बड़ी धनराशियां मिट्टी कर दी जाती हैं, यदि लोग उन्हें समाज हितके किन्हीं शुभ कार्योंमें लगायें तो इसमें सन्देह नहीं कि उस धनका सदुपयोग हो सकेगा और गरीब देशकी पूंजी इस तरह व्यर्थ बर्बाद नहीं होगी।

मौसरके साथ एक और भी महत्वपूर्ण सवाल उठता है। मौसरका विरोध करते हुए लोग हमसे प्रायः सवाल करते हैं कि क्या ब्राह्मण भोज उचित है? इसका हम विवेचन करना चाहते हैं। हमारा लक्ष्य ब्राह्मण भोजनका विरोध करते हुए किसी खास वर्ण या सम्प्रदायपर अनुचित कटाक्ष करना नहीं। हम यह नहीं कहते कि योग्य ब्राह्मण लोगोंको दान-पुण्य नहीं किया जाय। किन्तु हम इस दान-पुण्य और भोजनके पीछे जो मनोवृत्ति है उसे बदला हुआ देखना चाहते हैं। निःसंदेह यदि यह मनोभावना बदल गयी तो इस प्रथाका रूप भी परिवर्त्तित हो जायगा।

आज जो ब्राह्मणोंको भोजन कराया जाता है उसके पीछे यही भावना रहती है कि दाता या दाताने जिसे उद्देश्य करके दान किया है वह व्यक्ति इस ब्राह्मण भोजसे स्वर्ग पहुंच जायगा और उसे पुण्य मिलेगा। इस प्रकारकी मिथ्या भावना और आत्मप्रवंचनका अन्त होना चाहिए। और केवल यही नहीं, जिन ब्राह्मणों को भोज दिया जाता है, वे वास्तवमें सच्चे ब्राह्मण हैं या नहीं, भोज देनेके अधिकारी हैं, या नहीं, इस बातपर भी कभी विचार नहीं किया जाता। इसीसे मारवाड़ी समाजके लोगों की अन्ध परम्पराओंसे प्रश्रय पाकर मारवाड़के ब्राह्मण समाजकी दिन-दिन दुर्दशा हो रही है। ब्राह्मणोंके यथार्थ कर्त्तव्यको वे भूल गये हैं और इस प्रकार अन्धपरम्पराओं और रूढ़ियोंमें फंसे लोगोंसे मौसर आदिके अवसरपर ब्राह्मण भोज पाकर और दान-दक्षिणा बटोरकर वे अपनी जीवन यात्रा चलाते हैं। सच्चे ब्राह्मणोंके समान न उनमें ज्ञान है, न विद्या है और न योग्यता ही। हमारे देशमें प्राचीन कालसे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र—इन चार वर्णोंके रूपमें वर्णव्यवस्था चली आ रही है। मनुष्य समाजको चार विभिन्न वर्णोंमें उसके गुण, कर्म और स्वभावके अनुसार बांट दिया गया है। ज्ञान और विद्याके द्वारा अध्ययन-अध्यपनके द्वारा समाजका ज्ञानके क्षेत्रमें पथप्रदर्शन करना ब्राह्मणका कर्म है। शत्रुओंसे रक्षा करना क्षत्रियका और धनोपार्जन करके समाजका भरण-पोषण करना वैश्योंका कार्य है और जो लोग इनमेंसे कोई भी कार्य नहीं कर सकते उनका काम है सेवा। हमारे शास्त्रोंने उन्हें शूद्र नाम दिया है। इनमेंसे कोई वर्ण छोटा या बड़ा नहीं–समाजके लिये सभी एक-से अनिवार्य है। इन चारों अंगोंका समाजमें सामंजस्य होना चाहिए। एक अंग भी यदि अपने कर्तव्यमें शिथिल होजाता है तो समाजकी शक्ति कमजोर पड़ जाती है। ब्राह्मणकी प्रतिष्ठा और उच्च आसन, उसके ज्ञान, तप और विद्याके कारण था। परन्तु हमारे समाजके आजके

ब्राह्मणोंका कर्त्तव्य शिथिल हो गया है। ज्ञानका आदान-प्रदान, अध्ययन-अध्यापन कुछ भी नहीं रहा। उनका जीवन महज निठल्लेपनका जीवन है, जिसका किसीके लिये भी उपयोग नहीं। हम यह नहीं कहते कि सभी ब्राह्मणोंकी यह दशा है। हमारे देशमें आज भी सच्चे नैष्ठिक ब्राह्मण हैं पर आम ब्राह्मण समाजकी दशा अच्छी नहीं इस दशामें उन्हें यह अधिकार नहीं कि ब्राह्मणत्वकी सनद केवल ब्राह्मण कुलमें जन्म पानेसे ही उन्हें दे दी जाय। और इसी लिये वैश्य और धनिक वर्गसे उन्हें किसी प्रकार का दान पुण्य पानेका अधिकार नहीं।

फिर भी समाजके लोग उनमें अटूट श्रद्धा रखते हैं। इसीसे उन ब्राह्मणोंकी अकर्मण्यता और निश्चेष्टताको सहारा मिल रहा है। उनका जीवन न समाजके लिये उपयोगी है और न राष्ट्रके लिये। सच तो यह है कि केवल जैसे-तैसे जीवनके दिन काट देना ही मनुष्यका जीना नहीं। इसलिये अज्ञान और अन्धकारके वशवर्त्ती होकर उन ब्राह्मणोंका निजी-जीवन भी किसी कामका नहीं।

और गज़ब तो यह कि अधिकाश ऐसे ही ब्राह्मण आज, लोगोंके गुरु बन बैठे हैं। मानों उन्हें आनुवंशिक अधिकार प्राप्त हुआ है। अभी सर विश्वेश्वरदासजी डागाके स्वर्गवासपर दापा लेनेके लिये कमसे कम १०० "गुरु" इकट्ठे हुए होंगे। आने जानेमें ही इन लोगोंने बीकानेरसे बम्बई तक कमसे कम पन्द्रह-सोलह सौ रुपया रेल भाड़ेमें खर्च कर दिया होगा। और यह बात केवल डागाजीके यहां हुई हो सो बात नहीं, औरोंके यहां भी इसी प्रकार 'गुरुओं' की भीड़ जमा हो जाती है। यजमान समझता है, मैंने खूब दान किया है और 'गुरु' भी समझते हैं कि यजमानने मुक्तहस्त होकर दान किया है, परन्तु देखा जाय तो एक बड़ी रकम रेलभाड़ेने ही खा डाली है। इन "गुरुओं" ने दापा लेनेके लिए देशके इस कोनेसे उस कोने तक घूमना फिरना अपना व्यापार ही बना लिया है। इससे यजमानको भी क्या सच्चा सन्तोष हुआ और ब्राह्मणोंको या समाजको भी उससे क्या सच्चा लाभ हुआ।

सच तो यह है कि रूढ़ियोंकी दासताके कारण लोग इन बातोंकी गहराई तक पहुंचते ही नहीं। दान-पुण्य करते हैं बिना कुछ समझे-बूझे। हरेक व्यक्ति अपनी-अपनी हैसियतके अनुसार एक बड़ी रकम व्यय कर डालता है। और यदि यही हाल रहे और ब्राह्मणोंको इसी तरह रुपया दान-पुण्यके रूपमें मिलता रहे तो वे समाजके लिये उपयोगी बननेका यत्न भी क्यों करने लगे। आज उन ब्राह्मणोंसे समाजको क्या लाभ पहुंच रहा है? फिर उन्हें क्यों इस प्रकार खिला-पिला कर व्यर्थ ही उनमें मुटमर्दी बढ़ाई जाय। जब हम एक कार्य दान-पुण्य और मोक्ष प्राप्तिकी भावनासे करते हैं तब तो हमें और भी अधिक सतर्क हो जाना चाहिए। हमें देखना चाहिए कि हमारा दान सत्पात्रमें पहुंच रहा है या नहीं।

ब्राह्मण भोजनका जो विरोध हम कर रहे हैं वह सिर्फ इस भावनासे कि इस दिशामें सुधार हो। ब्राह्मण कहे जानेवाले लोगोंपर हम कटाक्ष नहीं कर रहे। हम तो चाहते हैं कि समाजकी, देशकी, राष्ट्रकी और उससे भी अतिक्रान्त होकर मानव समाजकी उन्नति हो। इस दान-पुण्यके नामपर जो लाखों रुपया प्रतिवर्ष खर्च हो रहा है वह धनका अपव्यय है। उससे बचकर उस धनको किसी सत्कार्यमें लगाना चाहिए जिससे समाज, राष्ट्र व देशका लाभ हो और यह अकर्मण्यताकी विभीषिका न रहे।

अच्छा यह है कि मौसर और समय-समय पर होनेवाले ब्राह्मण भोज आदिमें व्यय किया जानेवाला धन आगे आनेवाले युवक समाजकी शिक्षा-दीक्षाके क्रियात्मक कार्यमें लगानेके लिये अलग कर लिया जाय। आज मारवाड़में ही नहीं अपितु सारे देशभरमें कितने ही लोग केवल इसीलिये नहीं पढ़ सकते कि उनके पास यथेष्ट धन नहीं। यदि यह रुपया ऐसे गरीब लोगोंकी सहायतामें लगा दिया जाय तो समाजका इससे बहुत भला हो सकता है। इससे हम बहुतसे योग्य व्यक्ति पैदा कर सकते हैं जो अन्यथा अयोग्य और प्रतिभाशून्य ही रह जायंगे।

केवल यही नहीं, यदि इस धनका उपयोग स्वयं अपनी ही सन्तानों की उच्च शिक्षा-दीक्षा पर खर्च किया जाय तब भी उस पढ़ी-लिखी विद्वान संतानके द्वारा समाजका खासा भला हो सकता है। जो हो, हमारा लक्ष्य यह है कि मौसर जैसी जघन्य प्रथाओंको, खत्म करके उनकी पूर्त्तिमें होने वाला अपव्यय बन्द किया जाय।

हमें निश्चय है कि मौसर और समय-समय पर होनेवाले ब्राह्मण भोजके सम्बन्धमें समाज हमारे इस दृष्टिकोण पर ध्यान देगा। हम यह नहीं कहना चाहते कि समाजमें सभी लोग इस सचाईसे आंखें मूंदे हुए हैं। समझदार लोग भी समाजमें हैं और वे समाजके उपयोगी कार्य करनेमें पीछे भी नहीं रहते पर ज़रूरत तो इस बातकी है कि जो लोग अब तक इस तरफ ध्यान नहीं देते वे भी आगेसे इधर ध्यान दें और कुरूढ़ियोंकी दासतासे अपनेको मुक्त करनेका नैतिक साहस दिखायें। वही समाजके लिये श्रेय और प्रेय मार्ग है।

एक अवांछनीय कार्यवाही

मारवाड़ी विद्यालय, बम्बईकी गत ता. ३१ अगस्त १९४१ की सर्व साधारण सभाकी कार्यवाहीको देखकर किसी भी समाजसेवी सज्जनको दुःख हुए बिना नहीं रहेगा। दुःखका विशेष कारण यह है कि जिन सज्जनोंसे हमने सभाकी कार्यवाहीको सुचारु रूपसे सम्पन्न करानेकी आशा की थी, जो सार्वजनिक संस्थाओंमें काफी भाग लेते हैं और जिनके दिलोंमें देश और समाजके उत्थानकी उमंगें भरी हुई हैं, वे ही इस प्रकारका शोचनीय कार्य करते देखे गये। मतभेद-प्रामाणिक मतभेद-होना स्वभाविक है किन्तु अन्तर उस मतभेदको व्यक्त करनेके तरीकेमें है। जब इस मतभेदका इज़हार करनेमें संयत और शिष्ट भाषा तथा शान्तिका स्थान उद्दण्डता, उच्छृंखलता और ग्राम्यता ले लेते हैं तब दृश्य बड़ा शोचनीय हो जाता है। मत भेद रहना और अपने सिद्धान्तोंकी रक्षाके सम्बन्धमें सचेत रहना हमारे विचारमें जीवनका चिन्ह है किन्तु साथ ही हमारा यह भी विचार है कि उस मतभेदको व्यक्त करते हुए सुन्दर, मधुर शब्दों, संयत व्यवहार और शिष्टताकी मर्यादाका उल्लंघन नहीं होना चाहिए।

प्रत्येक व्यक्तिको यह जानना चाहिए कि जिस प्रकार हम अपने स्वतन्त्र विचार रख सकते हैं उसी प्रकार दूसरे लोग भी अपने विचार रख सकते हैं। और जैसे हम दूसरोंको अपने विचार सुनाना चाहते हैं वैसे ही हमें स्वयं भी दूसरोंके विचार सुननेकी क्षमता पैदा करनी चाहिए। एक तरफ हम लोकशाही और विचार स्वातन्त्र्यकी बातें करते हैं और दूसरी तरफ हमारा बर्त्ताव तानाशाहीका होता है। यह हमारे सार्वजनिक जीवनके लिये अत्यधिक खतरेकी चीज़ है। कटु शब्दोंके प्रयोगसे हम किसी प्रयोजनकी सिद्धि नहीं कर सकते। उनसे तो केवल कटुता ही बढ़ती है। यह ध्यानमें रखना चाहिए कि जिस बातपर आज हमारा किसीसे मतभेद है कल उसीसे दूसरी बातपर हमारा मतैक्य भी हो सकता है। और सार्वजनिक संस्थाओंमें तो प्रवेश भी संस्थाओंकी भलाई एवं सेवाके लिये किया जाता है-वहां सत्ताके प्रदर्शन का कोई स्थान नहीं। तब कटु शब्दोंके द्वारा हम संस्थाओं की क्या भलाई और सेवाकर सकते हैं? शिक्षित और सेवाव्रती कार्यकर्त्ताओंको तो दूसरोंको भी अपनी कृतिसे सिखला देना चाहिए कि सार्वजनिक संस्थाओंमें किस प्रकार का बर्त्ताव और कार्य होना चाहिए। और खासकर शिक्षा संस्थाओंमें तो कार्यकर्त्ताओंको और भी अधिक जिम्मेवारी और समझदारीसे काम लेना चाहिए। विद्यालयकी इस घटनासे विद्यार्थियोंके मनपर कितना कुत्सित और बुरा संस्कार पड़ेगा, क्या इस बातको उन्होंने सोचा है? जहां विद्यार्थियोंको शिष्टता, सभ्यताका पाठ पढ़ानेका हम आग्रह करते हैं वहां हमारी कृति ठीक उसके विपरीत हो, यह बात कहां तक उचित है, इसका विचार हम उन्हीं सज्जनोंपर छोड़ते हैं।

यहां दो शब्द उस सभाकी कार्यप्रणालीके सम्बन्धमें कह देना भी ठीक होगा। २४ ता. की सभामें आगत प्रतिनिधि पत्रोंपर विचार करनेके लिये काफी समय दिया गया और ता. ३१ की सभामें भी करीब पांच घण्टे इसी काममें खर्च किये गये। हमारी नम्र सम्मतिमें यह केवल समयको व्यर्थ खोना था जो अपराध भी कहा जा सकता है। यह काम तो सभापति, मन्त्री और कार्यकारी मण्डलके बीचका था। जिस दिन कार्यकारी मण्डलने सर्व साधारण सभा बुलानेकी तारीख मुकर्रर की थी उसी दिन वह यह भी घोषित कर देता कि जो संयुक्त नाम या फर्म लिखित पत्र द्वारा अपनी ओरसे चुने हुए प्रतिनिधिका नाम भेजना चाहें वे फलां-फलां दिनके भीतर भेज दें। इन आगत पत्रोंकी जांचका काम कार्यकारी मण्डल कर लेता तो कार्य पद्धति सहज हो जाती और यह झमेला नहीं होता। ता. २४ की सभामें दिये जाने वाले प्रतिनिधिपत्रोंको रद्द करवाकर ता. २४ की सभामें दूसरे प्रतिनिधि पत्र भेजना भी निहायत गलत तरीका है। यदि संयुक्त नाम व फर्में अपना प्रतिनिधि जब चाहें बदल सकें तब तो ऐसी संस्थाओंका कार्य सुचारु रूपसे चलना नितान्त अशक्य हो जाय। यह कार्य तो उन धान्धली करनेवाले कार्यकर्त्ताओंके हाथमें संस्थाकी हत्या करनेका हथियार थमा देने जैसा है। यह कैसी अजीब बात है कि जो सज्जन कल तक प्रतिनिधि पत्र प्राप्त किये हुए हो वही आज उससे वंचित और गैर जिम्मेवार ठहरा दिया जाय। सबसे अधिक आश्चर्य तो इस बातपर है कि सर्वसाधारण चुनावके लिये कार्यकारी मण्डलने लोकशासनानुसार कोई नियम व उपनियम नहीं बनाये हुए। और जिस ढंगसे कार्यकारी मण्डलका चुनाव होता है वह भी सर्वथा अनियमित तरीका है। बम्बई जैसे शहरोंमें रहनेवाले और आये दिन सार्वजनिक संस्थाओंमें कार्य करनेवाले कार्यकर्त्ताओंको भी इस सम्बन्धमें कहना पड़े यह कहां तक वांछनीय हो सकता है। यह भी कम आश्चर्यकी बात नहीं कि कार्यालयमें इस बातका भी रिकार्ड न रहे कि विद्यालयके कुल कितने सदस्य हैं, उनमेंसे कितने व्यक्तिगत (Individual) सदस्य है और कितने संयुक्त नामों या फर्मोंके प्रतिनिधिके रूपमें हैं अथवा प्रारम्भमें सदस्य घोषित की जानेवाली फर्मोंमेंसे कितनी फर्में अभी मौजूद हैं और कितनी उड़ा दी गयी हैं। नतीजा यह होता है कि अन्तिम क्षणमें इस बातपर वादविवाद खड़ा हो जाता है कि कौन सदस्य स्वतन्त्र सदस्य हैं और कौन संयुक्त फर्मोंके प्रतिनिधि। सभापति और मन्त्रीका यह कर्त्तव्य है कि वे संस्थाका तमाम रिकार्ड एकदम पूर्ण और अद्यावधि रखें। पर अफसोस तो यह है कि रिकार्डके सुव्यवस्थित रखनेके अभावमें पूछे गये सवालोंका जवाब तक मिलना दुष्कर हो जाता है।

यह भी देखनेमें आया है कि जो सज्जन साल-साल भर विद्यालयके सभापति बने रहते हैं उन्हें विद्यालयकी सर्वसाधारण सभामें उपस्थित होनेके लिये समय तक नहीं मिलता। जिन सज्जनोंके पास संस्थाओंका कार्य करनेके लिये अवकाश नहीं है वे क्यों अधिकार व पदपर गद्दी जमाये रहते हैं? उसका त्याग क्यों नहीं कर देते? यदि सन्मान और पद पानेकी अभिलाषा है तो उसके लिए सेवा और त्याग करनेकी भावना व चेष्टा भी होनी चाहिए।

अन्तमें इस लेखको समाप्त करनेसे पूर्व हम विद्यालयके उपसभापति श्री वेगराजजी गुप्तका जिन्होंने सभाके सभापतिपदसे सुयोग्यतापूर्वक कार्य संचालन किया, अभिनन्दन किये बिना नहीं रह सकते। श्री वेगराजजीकी कार्यप्रणालीसे कई लोगोंका विरोध हो सकता है किन्तु यह निर्विवाद है कि वे ही ऐसे पुरुष हैं जिन्होंने इस सभाका इतनी उत्तमता और निष्पक्षतासे कार्य संचालन किया है।

जेन्टलमैन !

इंग्लैण्ड की शासक श्रेणी का एक चित्र

हॅरॉल्ड जे. लास्की

इंग्लैण्डकी यह एक गर्वोक्ति है कि 'जेन्टलमैन' होना–यह विचार वहांके लोगोंकी एक खासियत है। और मुझे भी इस बातमें सचाई मालूम होती है। आदर्शके तौरपर देखा जाय तो कमसे कम इसमें एक उच्च सादगी का गुण है। कर्त्ता-की अपेक्षा अधिकांश में जेन्टलमेन एक सत्ता मात्र है। जिन्दगीके प्रति उसका दृष्टिकोण एक प्रकारसे तटस्थताके भाव लिये हुए रहता है। व्यावसायिक दृष्टिसे उसे किसी बातमें रस नहीं। वह चाहे तो अनेक प्रकारके शौक और सनकें ज़रूर बढ़ा सकता है लेकिन व्यापार उद्योगकी वृद्धि नहीं कर सकता। अपनी कमाईके निकम्मे धंधेसे उसे संबंध नहीं रखना चाहिये और यह बात उसे बखुशी सिद्ध कर देनी चाहिये कि कमसे कम उसके दादेकी पीढ़ीसे लेकर अब तक उसके कुटुंबके किसीभी व्यक्तिने व्यापारिक क्षेत्रको नहीं अपनाया। उससे यह आशा की जाती है कि कुछ खास स्कूल विशेषतया ईटन तथा हेरोमें वह पढ़ चुका हो और उसके लिये यह भी एक आवश्यक बात है कि वह ऑक्सफर्ड या केम्ब्रिजमें भी पढ़ा हो। उसे घुड़सवारी, निशानेबाजी तथा मछली पकड़ना–इन विद्याओंका माहिर होना चाहिये। सेना और नौविभागमें उसके कुछ संबंधी होने चाहियें और राजनैतिक दलमें भी कमसे कम एक जान पहिचान तो होनी ही चाहिये। उसके लिये यह आवश्यक है कि वह किसी क्लबमें जाता हो और यह इससे भी अधिक आवश्यक है कि वह कन्ज़रवेटिव पक्षका सभासद हो, तथा यह वांछनीय है कि उसके विचार "मोर्निंग पोस्ट"के विचारों से मेल रखते हों। शीत ऋतुमें रिविराके कड़े जाड़ेको सहने की शक्ति तथा अगस्तसे सितंबर तक इंग्लैण्डकी ग्रामीण बस्तियोंमें दौरे लगाना उसके लिये अति महत्वपूर्ण है-लेकिन यही सब-कुछ नहीं है, यह तो उसकी सजावटका केवल एक भाग है।

इन चीज़ोंको हम एक प्रकारकी आधारशिलायें कह सकते हैं जिन पर अन्तिम रचना खड़ी हुई है। किन्तु कुछ भावनात्मक तथा बौद्धिक अर्धछायाओंके प्रति भी ध्यान देना ज़रूरी है। जेन्टलमैनके प्रिय लेखक सर्टीज़ तथा किपलिंग होने चाहियें। वर्तमान कथा–साहित्यमें पायी जाती नीति विषयक शिथिलता पर उसे अपना विरोध प्रगट करना चाहिये। गिल्बर्ट और सलीवान की उज्वल बुद्धि की वह सराहना करे परंतु बेथोवन और मोज़ार्ट से उसे खास सरोकार नहीं। ओपेरामें देरसे कैसे पहुंचा जाता है यह उसे सीखना चाहिये, और थिएटरोंके बारेमें उसके भाव यह होना चाहियें कि मनुष्य वहां पर आनंद प्राप्त करनेके लिये जाता है। पेरिसकी यात्रासे उसके दिलमें इस प्रकारके भाव उत्पन्न होने चाहिएं जैसे वह पापके एक सुखमय सामीप्यमें पहुंच गया हो। और उसे सुबोध फ्रेंच और जर्मन बोलनेके सर्वथा अयोग्य होना चाहिए।

वह अधिकांश खेलोंको विशेष फैशनके साथ खेलता है और यह महसूस करता है कि उनको अपनाना ही राष्ट्रीय गौरवका रहस्य है, फिर भी उन खेलोंको वह इस प्रकार कतई नहीं खेलेगा जिससे कि अपने अन्य साथियोंसे वह जुदा मालूम हो, और उसे इस बातका पूरा यकीन है कि खेलको पेशा बनानेकी वृत्ति ही खेलकी असली आत्माका सर्वनाश करती है। डॉक्टरोंकी हिदायतके सिवाय और किसी भी अवस्थामें उसे मादक द्रव्योंके सेवनमें परहेज नहीं करना चाहिये।

कुछ दूसरे गुण भी महत्वपूर्ण हैं। राजकीय अर्थशास्त्रके विषयमें उसे बिल्कुल बेखबर रहना चाहिये और विदेशी राष्ट्रोंकी शासन प्रणालीके बारेमें थोड़ीसी जानकारी पर्याप्त है। बोल्शेविज़म तथा "अनादि" (Original sin) ये दोनों उसके लिये एक से हैं। उसे स्वतंत्र विचारक तो नहीं होना चाहिये, लेकिन धर्मके विषयमें अत्युत्साही भी नहीं बनना चाहिये, क्योंकि इसमें अनधिकार प्रवेशका भय सन्निहित है। उसे साम्राज्यके गुणोंका पूरा ज्ञान होना चाहिये और सोचना चाहिये कि पूर्वमें साम्राज्यके सन्मानकी रक्षा तलवार और बलसे ही हो सकती है। जब कभी वह किसी पार्टीमें शामिल हो, उसे इस बातका ख्याल रखना चाहिये कि या तो वह बिलकुल मौन रहे या सिर्फ इतनी ही बातचीत करे जिससे यह मालूम हो कि वह चर्चाके विषयसे परिचित है किन्तु किसी खास विषयके गंभीर ज्ञानका—जो निहायत ख़तरनाक है—परिचय न दे।

अमेरिकाके विषयमें उसकी राय यह होनी चाहिये कि वह एक जड़वादी देश है। और यदि वह किसी अमेरिकनसे शादी करे तो इस बातका पूरा ख्याल रक्खे कि जिससे वह विवाह संबंधसे बंध रहा है वह समुचित दहेज देनेवाला एक कुलीन कुटुंब है और लंडनके ऊंचे घरानोंमें भी उसका स्वागत किया जाता है। उसे बागवानीका भी शौक रखना चाहिये। किसी कंपनीका शायद वह डिरेक्टर भी हो सकता है बशर्ते कि उसे अपने धंधेके बारेमें कुछ ज्ञान न हो। जब उसे भाषण देनेके लिये कहा जाय तब वह निहायत नज़ाकतसे जाहिर कर दे कि भाषण देना उसके लिये कठिन है और धाराप्रवाह भाषण देना तो असंभव ही है। वह सुंदर शक्ल सूरत और वेशभूषामें नैतिकता अनुभव करे और, उदाहरणके लिये, यह समझे कि शामको ऊंचे कोटके साथ काली टाई पहिनना नीच जातिमें होनेका चिह्न है जो कभी देरतक कायम नहीं रह सकता। और अगर वह यात्रा पर जाये तो उसे बेलाग वापिस आना चाहिये, यह नहीं कि कहीं उसके विशाल मनमें विकृति आ जाय।

इंग्लिश जेन्टलमेनमें दूसरे भी महान् गुण हैं जिनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। वह अपने समकक्ष साथियोंके साथ ही खेल सकता है। उसे रूआबसे हुक्म चलाने की आदत होती है। हिन्दुस्तानी, समाजवादी, ट्रेड यूनियनके व्यवस्थापक एवं बिना आज्ञाके प्रवेश करने वालों को छोड़कर वह प्रायः सबके साथ समुचित उदारता से पेश आता है। वह सचमुच साहसी है और अपनी श्रेणी की स्त्रियोंके लिये शूरवीर और सम्मानित भी। अपने दुर्गुणोंको वह कदाचित् ही प्रगट करता है और शानदार सद्गुणोंसे उसे भय सा लगता है। दरजीके हिसाबको चुकाना वह शायद भूल भी जाय लेकिन जुएके कर्जेको चुकानेमें वह नियमित रहता है। राजकुटुंब (जिसकी त्रुटियोंके विषयमें वह जनतामें एक शब्द भी नहीं बोलता) और अपने पक्षके मन्त्रीगण, इन सबपर उसे अपार भक्तिभाव रहता है। अपने दावेपर वह शायद ही दीर्घ काल तक टिका रहता हो और बौद्धिक दृष्टिसे वह इतना दीन है कि उदार दृष्टिकोणसे विचार करने की उससे आशा नहीं की जा सकती। यदि वह असंतुष्ट होकर बड़बड़ाता है तो कमसे कम अपने ऊपर हंसना भी जानता है, और किसी भयजनक परिस्थितिसे उसके समान दूसरा कोई भी होशियारीके साथ अपने आपको बाहर नहीं निकाल सकता। वह सत्ताका उपभोग करता है, और चूंकि वह पैसे कमाना जानता ही नहीं, अतः यह और भी नामुमकिन है कि वह उसकी बुराइयोंका शिकार हो। साधरण तौर पर उसे प्राचीनकालकी शिक्षा तो मिलती ही है अतः शेक्सपियरके समान वह थोड़ी लेटिन और थोड़ी ग्रीक अवश्य जानता है।

यह उस श्रेणीके व्यक्ति हैं जिन्होंने, पिछले ६–७ वर्षों को छोड़ दिया जाय तो, शताब्दियां तक वकीलोंकी मददसे इंग्लैण्ड पर शासन किया है। और वास्तवमें देखा जाय तो अभी–अभी गत युद्धकालके दिनोंमें ही उसके आधिपत्य पर भयंकर खतरा होना शुरू हुआ है। इंग्लैण्डके इतिहास की यह एक महत्तम घटना है कि वर्तमान कालमें उसे किसी क्रांतिका सामना नहीं करना पड़ा। १८ वीं शताब्दीके मध्य भागसे लेकर अबतक वहांका सामाजिक ढाँचा ज्यों का त्यों बना हुआ है। दूसरोंके प्रति सन्मान की भावना रखनेवाले हमारे लोग अबतक भी पहलेकी भांति निठल्लेपन और अक्रियाशीलताको मान देते हैं। एक औसत अंग्रेज आज भी इस वर्गकी प्रशंसा करता है जिसे अपनी आजीविकाके लिये कुछ भी कमाना नहीं होता और उसके हाथोंमें अपने आपको रक्षित और मानित समझता है। लार्ड रोज़बैरीने जब पुस्तक लिखी तब संभव है उसके मनमें कुछ शंका पैदा हुई हो, लेकिन डर्बीकी प्रतियोगितामें रोज़बैरीकी विजयको देख कर उसने उसके प्रधानमंत्रीके पदको तुरंत मंजूर कर लिया। अपने पुरुषार्थसे आगे बढ़नेवाले लायड ज्योर्ज जैसे वेल्शमेन और हेनरी चेपलिन जैसे एक जमींदारके बीच, जिसे विचारका दाग ही नहीं लगा, अगर चुनाव करना पड़े तो अंग्रेज पिछलेका ही चुनेगा। मज़दूर अपने मालिकका शायद ही आदर करता हो लेकिन वही मज़दूर अंग्रेज रईसोंके प्रति सदा सन्मान प्रगट करता है जो सिर्फ बापदादोंकी मिल्कियत पर ही जिन्दा है। मालिक अपने व्यक्तिगत रूपमें किसी मज़दूरको पसंद भी करता हो तो भी साधारण तौर पर उसका यही विश्वास रहता है कि वे शासन करनेके अयोग्य हैं इसलिये अगर स्वतंत्र व्यवसायका सवाल न हो तो उसकी समस्त सहज उमंगें उसे उस श्रेणीकी ओर ही देखनेको मजबूर करती हैं जो पूर्व परंपराओं और बड़ी बड़ी जमीन जायदादोंकी चमककी प्रतिनिधि है। और चूंकि जेन्टलमेन अच्छी तरहसे जानते हैं कि किस प्रकार व्यापारिक उन्नतिके ऊपर ही उनकी शक्ति निर्भर है इसलिये उन दोनोंका संबंध मैत्रीपूर्ण रहा है। इसके अतिरिक्त क्योंकि उसका बड़े–बड़े व्यापारियोंके यहां विवाह संबंध होता है इसलिये वे लोग जेन्टलमेनकी सुरक्षामें ही अपना सबसे बड़ा संरक्षण समझते हैं। क्योंकि शासनसत्ता जेन्टलमेनोंके हाथमें है इसलिये वे खूब समझते हैं कि कब समझौता करने या रियायतें देनेकी जरूरत है। समाजके दूसरे वर्गोंकी आवश्यकताओंका विरोध इसने चाहे जितना किया हो, परंतु उस हद तक वह कभी नहीं गया, जिससे स्वयं उसका अस्तित्व खतरेमें आ जाय। समझौता करनेकी बुद्धि तथा सबके अनुकूल बन जानेकी शक्तिसे ही वह आज दो सौ वर्षोंसे इंग्लैण्डपर शासन कर रहा है।

जिन परिस्थितियोंसे उसने अपने प्रभुत्वको इतने काल तक निबाहा वे स्पष्ट हैं। औद्योगिक क्रांतिके बाद करीब एक शताब्दी तक इंग्लैण्डके व्यापारिक नेतृत्वमें कोई अवरोध नहीं उपस्थित हुआ। उस समयकी सरकार एक तरहकी निषेधात्मक सरकार थी, और उसके सामने गंभीर आर्थिक एवं अन्तर्राष्ट्रीय सवालात भी हल करनेको नहीं थे। उच्च और मध्यम श्रेणीके लोगोंके पास प्रचुर और पर्याप्त धन था, और चार्टिस्ट आंदोलनके थोड़ेसे समयको छोड़कर वैयक्तिक संपत्तिके अधिकारोंके संबंधमें कभी भी गंभीर प्रश्न नहीं उपस्थित हुए थे। इंग्लैण्ड उस समय जेन्टलमेनों की

सरकार बना सकता था । राजनीतिमें उदार दृष्टि किसीके पास नहीं थी, और विवादास्पद प्रश्नोंके समाधानके लिये उन्हें कभी विशेषज्ञों की जरूर नहीं पड़ी । राष्ट्रीय शिक्षा इतनी ही पर्याप्त मानी जाती थी जिससे पढ़ना–लिखना जानने वाले फौरमेन पैदा हो सकें, राष्ट्रीय आरोग्यके बारेमें इतनी जानकारी काफी थी जिससे महामारी या टाइफ़स जैसे रोगोंको रोका जा सके, इसके आलावा बड़े बड़े विज्ञापनोंके साथ दान होते थे, जिसके जरिये वास्तविक बेकारोंको मदद दी जा सके। इन्हीं आधारोंपर अंग्रेज भलीभांति महसूस कर सकता था कि उसे बड़ी कामयाबी मिली है । राजनैतिक अर्थशास्त्रियोंने यह सिद्ध कर दिखाया है कि मज़दूरोंकी समस्त मांगें कभी भी पूरी नहीं की जा सकतीं और पूंजीपतिको यह जानकर संतोष होता है कि उसके आत्मपरित्यागने ही उसे संपत्तिका स्वामी बनाया है—जो कि संसारका एक आश्चर्य है ।

वास्तवमें इस बातका कोई सबूत नहीं है कि महायुद्धके पहले अंग्रेजोंने जेन्टलमेन किस्मके नेतृत्वपर संदेह प्रगट किया हो । हां, यह बात ठीक है कि कुछ अशान्तिकी लहरें उठी थीं लेकिन आमतौर पर सुरक्षाकी भावना इतनी पर्याप्त मात्रामें फैली हुई थी कि प्रेसिडेन्ट लोवेल जैसे सचेत निरीक्षकको कहना पड़ा था कि ब्रिटिश मज़दूर पार्टी लिबरलोंकी ही एक टोली बनी रहेगी । इंग्लैण्डके जेन्टलमेनोंने उसे वही बनाया जो कि वह थी, केवल वाटरलू की लड़ाई ही ईटनकी क्रीड़ाभूमिमें नहीं जीती गई थी । वे रूढ़ियां जो उनके साथ साथ चली आ रही थीं, उन्होंने ही इंग्लैण्डको अमेरिकन जड़वादसे बचाया । उन रूढ़ियोंने ही इंग्लैण्डको नूतन औद्योगिक जर्मनीके समान दीखनेसे रोका । उसकी सहिष्णुताने विचारोंके मतभेदको स्थान दिया । उसके सामाजिक परीक्षणोंने यह दिखलाया कि वह विचारोंको कितने आश्चर्य जनक ढंगसे क्रियामें परिणत करता है । महायुद्धने न केवल यही सिद्ध कर दिखाया कि इंग्लैण्डके जेन्टलमैन मरना जानते हैं बल्कि संकट कालमें उसके दृढ़ विश्वासने यह भी सिद्ध कर दिया कि मध्यस्थ श्रेणीके अर्थशास्त्रकी उत्तम शिक्षाओंको भी उन्होंने पचाया है। मेथ्यू आर्नोल्डका यह कथन, कि इग्लैण्डको अपनी जेन्टलमैन किस्म की रूढ़ियोंको सामाजिक समानताके औषधसे कुछ नरम बनाना चाहिये–बहुत कुछ अंशमें झूठा सिद्ध हुआ । कमसे कम १९१९ के विजयके कारण जेन्टलमेनोंका तो यही ख्याल है ।

फिर भी कुछ निश्चितताके साथ यह कहा जा सकता है कि पिछली शताब्दीके इंग्लैण्डके ऐतिहासिक जेन्टलमैन होनेके खतरेको समझानेमें व्यस्त रहेंगे । क्यों कि इंग्लैण्डकी वर्तमान बहुतसी कठिनाइयां उसी जेन्टलमैनी नेतृत्वसे पैदा हुई हैं । जेन्टलमैन एक प्रकारका अनुकरणीय नमूना था, और एक अनुसरण करने योग्य उदाहरण । उसकी आदतें, उसकी रुचियां और उसके रहन–सहनके तरीके, इंग्लैंडके कुछ विद्रोही व्यक्तियोंको छोड़कर प्रायः सभी पर अपना असर रखते थे । सामान्य रीतिसे हम यह कह सकते हैं कि जेन्टलमैनी दर्शन सैद्धान्तिक तरीकोंसे किसी भी चीज़को सोचनेसे इनकार करता है । आगे मत दौड़ो, प्रश्नोंको उसी वक्त निपटाओ जिस वक्त वे उपस्थित होते हैं । जीवनके आदर्शको ऐसा बनाओ जिससे न तो बुद्धिको अधिक मेहनत करनी पड़े और न ही भावनायें अनावश्यक दबानी पड़ें । अपनी ही रुचिको पकड़ रक्खो और यह मानो कि दुनिया तुम्हारी ही आवश्यकताओंके मुताबिक अपनेको ढाल देगी । विचारकोंसे सदा सतर्क रहो और बड़ी बड़ी उड़ाने लेनेवाले व्यक्ति की ओर संदेहकी दृष्टिसे देखो । अपने ऊपर पूरा भरोसा रक्खो, और यह समझो कि तुम्हारे आचरणके नियम सारी दुनियाके लिये निर्धारित हुए हैं । दूसरे लोगोंके सम्पर्कमें आते समय अपनी श्रेष्ठताको कभी न भूलो । किसी चीज़को प्राप्त करनेमें इतना अधिक उत्साह न दिखाओ कि उसे न पानेपर कोई विदेशी यह महसूस करे कि इससे तुम्हें दुःख हुआ है । जीवनको एक प्रकारका खेल समझो, और यह मानो कि अत्यधिक गंभीरता खेलकी भावनाके लिये विघातक है ।

इस दृष्टिकोणकी जड़ें ऐतिहासिक दृष्टिसे बड़ी साफ नज़र आती हैं । शूरवीरताके कुलीन आदर्शके साथ मध्यमश्रेणीके धार्मिक विचारोंके मेल से ये पनपी हैं । इसमें कुलीनताका प्रावल्य स्पष्ट रूपसे प्रतीत होता है क्योंकि इंग्लैंडकी मध्यम श्रेणीका यह मुख्य कार्य रहा है कि किसी प्रकार कुलीन श्रेणीसे उसका मेल बना रहे । और यह कहनेमें भी कोई आपत्ति नहीं हो सकती कि इस दृष्टिकोणने बड़ी शानके साथ काम किया । इसने शासनके अनावश्यक भावको बिना पैदा किए ही अपना प्रभाव डाला । अपनेसे छोटोंकी राज्यभक्ति उसने बिना किसी खास कठिनाईके संपादन की । वे सौम्य थे, उनमें कृतज्ञताकी भावना थी, और इसके अतिरिक्त उनमें दुनियादारीकी कुछ ऐसी चतुराई थी, जिनकी प्रशंसा किये बिना नहीं रहा जा सकता । उनमें एक प्रकारका श्रेष्ठ व्यवहार है जिससे इंग्लिश जेन्टलमैन अपने वचनका पालन करता है । वह दूसरे किसीकी अपेक्षा नौकर शाहीकी चिढ़को कम पैदा करता हुआ शासन कर सकता है और आंतर्राष्ट्रीय मतभेदोंके प्रसंगमें मध्यस्थपदको उतने ही निष्पक्ष भावसे निभा सकता है जितना कि क्रिकेटके मैचोंमें अम्पायर । एक बार जीत लेनेपर बड़बड़ाते रहना उसके लिये असंभव है । वह यह देख नहीं सकता कि कमजोर और असहाय लोग व्यर्थमें ही तकलीफ झेलें ।

परन्तु यहां जन्टलमेनोंके गुणोंका इतना सवाल नहीं है-जितना कि उनकी कार्यक्षमताका । और यहीं पर गंभीर कठिनाईयां खड़ी होती हैं । क्योंकि वर्तमान संसारमें एसा कोई कार्यक्षेत्र नहीं है जिसमें एक नौसिखिया–फिर चाहे वह जितना भी भला हो––आश्रित जनताको जोखिममें डाले बिना ही नेतृत्वपद पर रहता हुआ अपना कार्य कर सके । और यह बात सही है कि जेन्टलमैन की खासियतें–जहां तक कि उनका परिमाणात्मक ज्ञान, अविरत श्रम, विविध कल्पनाओं और व्यवस्थित योजनाओंके साथ सम्बन्ध है–जनताके लिये एक खतरा ही हैं । यह जेन्टलमैन हिंदुस्तान पर कैसे शासन कर सकता है जब कि वह इस बातको मानकर आगे बढ़ता है कि हिन्दुस्तानी हमेशाके लिये हमसे निकृष्ट कोटिके रहेंगे ? वह रूसकी असली शक्तिका माप कैसे लगा सकता है जबकि १९१४ में उसके रूसी राजदूत सर ज्योर्ज बूकेननने रूसी भाषाको पढ़ना भी आवश्यक नहीं समझा था ? वह लेबर पार्टीके उत्थानको कैसे रोक सकता है जब कि डिज़रायलीके शब्दोंमें इंग्लैण्ड अमीर और गरीब इन दो राष्ट्रोंमें बंट गया है जिनका परस्पर एक दूसरेके जीवनसे कोई रिश्ता नहीं? उसकी कुलीनता महान् सैनिकोंको कैसे पैदा कर सकती है जब कि लश्करी टुकडियोंके अधिकांश अफसरोंका जीवन अपने विषयके अध्ययनमें नहीं लेकिन सामाजिक परिपाटियों की पूर्तिमें ही व्यतीत होता है ?

जेन्टलमैनकी राजनीतिक असफलताको एकही वाक्यमें हम यों कह सकते हैं कि उनके पास यह देखनेकी कल्पना नहीं कि राजनीतिक लोकशासनके साथ सामाजिक समानता अवश्यम्भावी है । लेकिन इस बातपर उन्हें विश्वास ही नहीं हुआ । १९२४ में जब मजदूरोंकी कमजोर-सरकार स्थापित हुई उस समय भी उनका यही ख्याल रहा कि यह तो एक प्राकृतिक विप्लव है । जिस प्रकार वे इस बातको कभी मान नहीं सकते कि पीली और भूरी प्रजायें श्वेतशासनको नापसंद करती हैं, उसी प्रकार उनके लिये यह समझना भी कठिन है कि गरीबी भी मांगें पेश कर सकती है । पैसेवालोंने और कुलीनोंने हमेशा शासन किया है और वे हमेशा संगठित रहे हैं । उनके लिये यह दावा असह्य था कि रैमजे मेकडोनल्ड और आर्थर हेन्डरसन जैसे लोग राष्ट्रकी व्यवस्थामें समान हिस्सा लें । चर्चिलकी तरह वे मजदूरों की शासन करने की योग्यतामें विश्वास नहीं रख सके । वे जीवनकी रणभूमिके विजेता थे, और यह खेलके नियमोंका ही एक अंग है कि लूटके मालका विजेता ही उपभोग करें ।

दीपावलीके अवसर पर 'माहेश्वरी' का

दीपावली अंक

बड़ी सज धजसे निकलेगा

ग्राहकों व विज्ञापन दाताओंके लिये अपूर्व अवसर !

यदि आप ग्राहक नहीं हैं तो शीघ्र ग्राहक बनकर इस अंककी प्राप्तिका लाभ उठाइये !!

मारवाड़ी महिलायें और वस्त्राभूषण

इस पुस्तिकाकी हमारे पास बहुत मांग आ रही है । यह पुस्तक हमारे यहां स्टॉकमें नहीं रही । प्रेसमें पुनर्मुद्रण हो रहा है । तय्यार होते ही भेज दी जायगी ।

श्रीमती रमणगीरी हेड़ा

मन्त्रिणी अ. भा. मा. महिला परिषद्

अरविन्द हाऊस, न्यू चर्नीरोड, बम्बई नं. ४

श्री हिन्दू सेवामण्डलका सेवाकार्य

बाढ़पीडितों की सहायता

जोधपुर राज्यके माली, जालोर आदि परगनों में बाढ़के कारण प्रलय सा मच गया है । कई गांवके गांव बह गये और कितने ही जन, धन, घर और पशुओं की हानि हुई जिसका अंदाजा लगाना कठिन है । स्थानीय श्री हिन्दु सेवा मंडल इस संबंधमें बहुत सरगर्मीसे काम कर रहा है । जांच कमेटियां मौके पर पहुंच कर तहकीकात कर रही हैं और साथ ही साथ उचित सहायताका प्रबंध कर रही हैं । इसके लिए मंडल ने विशेष बजट भी पास किया है ।

—वैद्य मुरलीधर वैष्णव आयुर्वेद शास्त्री मंत्री

वर की आवश्यकता

एक १५ वर्षीय सुन्दर स्वस्थ पढ़ी लिखी एवं गृहकार्य में दक्ष कन्या के लिये २५ वर्ष तक के योग्य वर की आवश्यकता है । वर की आमदनी व्यापार जायदाद अथवा नौकरी से १००)रु. माहवार के लगभग होनी चाहिये । भट्टर व मल्ल सांप वाले सज्जन पत्र व्यवहार न करें ।

पत्र व्यवहार का पता:—

बॉक्स न. १४
C/o "माहेश्वरी"
अली चेम्बर्स, डीन लेन, फोर्ट, मंबई

ईरान

निकट पूर्वका नवीन रणक्षेत्र

श्री मगनलालजी कोठारी बी. ए.

रूस एवं ब्रिटनके द्वारा ईरानके खिलाफ संयुक्त सैनिक कार्रवाही कर दी गयी है। रूसी और अंग्रेजी सेनाओंने विभिन्न मोर्चोंपर अधिकार कर लिया हैं। ईरानमें नए रणक्षेत्रके प्रारम्भसे युद्धका संहारकारी दानव हिन्दुस्तानी सीमाओंके बहुत पास आगया है। नक्शेको देखनेसे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि ईरान और बलूचिस्तानकी सीमाएं एक दूसरेसे बिलकुल लगी हुई हैं। अतएव आगे आने वाले कुछ दिनोंमें हमें युद्धके खतरेका बहुत निकटसे सामना करना पड़े तो इस में आश्चर्यकी कोई बात न होगी। इस अवसरपर अपने निकटवर्ती पड़ोसी ईरानके सम्बन्धमें ऐतिहासिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं युद्धकी सम्भावनाओंकी दृष्टिसे विचार करना विशेष उपयोगी होगा।

यों तो ईरान एवं ईरानी सभ्यता बहुत पुराने है। मानव सभ्यताके आरम्भ कालसे ही ईरानी सभ्यताका विशेष महत्व रहा हैं। एक ओर जहां जरथुस्त्रीयन या पारसी धर्मके जन्मस्थान होनेके कारण ईरानका खास महत्त्व था वहां दूसरी ओर ईरानकी प्राचीन संस्कृति दर्शन एवं सभ्यता मानव विकासके इतिहासमें अपना विशिष्ट स्थान रखती हैं। राजनैतिक दृष्टिसे भी ईरानका प्राचीन समयमें विशेष महत्त्व रहा है। किसी जमानेमें मध्य एशिया एवं यूरोपके पूर्वीय हिस्से पर ईरान शासन कर चुका है एवं ईरानके सम्राटका लोहा ग्रीक लोगोंको भी मानना पड़ा था। मध्ययुगके इतिहासमें भी ईरानका अपना एक स्थान है मुस्लिम विजेताओं द्वारा जीत लिए जानेपर तथा तलवारके बलपर इस्लाम स्वीकृत करवाए जाने पर भी ईरानने अपनी संस्कृति, सभ्यता, साहित्य एवं दर्शनको नहीं छोड़ा। अपितु मुस्लिम धर्म तथा अरबी सभ्यताको अपने साहित्य एवं दर्शनसे बहुत अधिक प्रभावित किया। फारसी भाव, भाषा, साहित्य एवं जीवनका प्रभाव अरब लोगों पर स्पष्ट लक्षित होता है। जीवनके लिए जरूरी प्रचुर आर्थिक साधनोंकी बहुलताके कारण ईरानी जीवनमें एक तरहकी विशिष्ट रसिकता एवं दार्शनिकता आगयी है जो मध्य युगमें तथा आज भी ईरान पर अपना प्रभाव जमाए हुए है। मध्ययुगके ईरानी साहित्य एवं दर्शन का एक खास स्थान विश्वके ज्ञान भंडारमें हैं। विशेषकर सूफी संतोंके दार्शनिक विचारोंसे ईरानका साहित्य एवं जीवन विशेष प्रभावित रहा है और " उमर खय्याम " की रुबाइयां तो आज भी विश्व साहित्यकी अमर चीज हैं।

आधुनिक ईरान पर दृष्टि पात करते हुए हमें प्रतीत होता है कि अन्य पौरस्त्य देशोंके अनुसार ही औद्योगिक क्रान्तिमें पिछडे रहने के कारण ईरान भी पिछडा रहा। १९ वीं शताब्दीके प्रारम्भ कालसे ही यूरोप की साम्राज्यवादी ताकतोंकी ईरान पर भीं नजर पड़ी और तबसे अभी तक वह विभिन्न विदेशी सरकारोंके कूटनीतिक दांव पेंचों का केन्द्र रहा है। यों तो ईरान आज एक स्वतंत्र देश है लेकिन वास्तवमें सन १९२० तक वह रूस एव ब्रिटेनके प्रभाव क्षेत्र में था और आज भी उसे इन देशों के प्रभावसे सर्वथा मुक्त नहीं कहा जा सकता। आजके ईरानपर, विशेषकर वहांके शाह रजाशाह पहलवीपर इन दो शक्तियोंके अलावा जर्मनीका भी विशेष प्रभाव पड़ रहा है और रूस तथा ब्रिटेनके द्वारा उसके खिलाफ सैनिक कार्रवाही किए जानेका रहस्य इसी बातमें छिपा हुवा है। आगे चलकर इस स्थितिका विस्तृत विवेचन किया जायगा।

जैसा हम ऊपर लिख आए हैं, सन् १९२० तक ईरान रूस एवं ब्रिटेनके प्रभाव क्षेत्रका देश था। पिछले महायुद्धमें यद्यपि वह एक तटस्थ देश था लेकिन फिर भी उसे अपनी कमजोर स्थितिके कारण रूस, ब्रिटेन, टर्की और जर्मनीके षड़यंत्रों एवं छोटी मोटी झपाझपियोंका केन्द्र रहना पड़ा। सन १९१७ में बोलेशेविक क्रांतिके फलस्वरूप रूसने " ज़ार " के समय प्राप्त किए हुए अपने अधिकारोंका त्याग कर दिया और सन १९१८ में ब्रिटेन ने भी ईरानसे अपनी सेनाएं वापिस बुला लीं। इसी समय ईरानके राजनैतिक क्षेत्रमें एक ऐसे वीर पुरुष का आगमन हुआ जिसने ईरानकी काया पलट कर दी। इस वीर पुरुष को आधुनिक ईरान का जन्मदाता कहा जा सकता है। आजके ईरानके शाह रजाशह पहलवी उन दिनों ईरान सेनाकी कज्जाक टुकडीके सरदार थे। इस मामूली सरदारके मनमें ईरानको विदेशी प्रभावसे मुक्त करने एवं एक संघठित राष्ट्रवादी ईरानका निर्माण करनेकी प्रबल इच्छा जाग्रत हुई। महायुद्धके पश्चात उसे अपनी इस महत्त्वाकांक्षाको कार्यरूपमें परिणित करनेका एक उत्तम अवसर भी प्राप्त हो गया। उसने राष्ट्रवादी ईरानके नेतृत्वका भार अपने ऊपर ग्रहण कर लिया तथा सन १९२० में वह ईरानका युद्ध सचिव बनाया गया। धीरे धीरे उसका प्रभाव बढ़ता गया और सन १९२२ में वह प्रधानमंत्री भी बन बैठा। जब ईरानके पुरानेशाह अपनी विलास वासनाको सफल बनाने के लिए यूरोप यात्राको गए हुए तब सन १९२५ में ईरानी पार्लमेंटने रज़ाशाह पहलवी को ही अपना राजा निर्वाचित कर दिया। वास्तवमें ईरानका पुराना शाह तो नाम मात्रके लिए ही राजा था। रजाशाह पहलवी ही प्रधान मंत्री बननेके पश्चात शासनकी सब बागडोर सम्हाले हुए था अतएव राजा निर्वाचित होनेके पश्चात तो राष्ट्रीय ईरानके निर्माण का मार्ग साफ हो गया। सन १९२५ के पश्चात इसने अपने पड़ोसी टर्कीके मुवाफिक ईरानमें सुधार कार्य प्रारम्भ कर दिए। टर्कीके निर्माता स्व. कमाल अतातुर्क (मुस्तफा कमालपाशा) के मार्ग का इसने बहुत अंशोमें अनुसरण किया और ईरान को धार्मिक अन्धविश्वासों से मुक्त करके आधुनिक राष्ट्रों की श्रेणीमें लानेका प्रयत्न किया। इसमें उसे बहुत अंशतक सफलता भी मिली है लेकिन ईरान को अभी बिलकुल आधुनिक एवं युद्ध सामग्री से सुसज्ज राष्ट्र नहीं कहा जा सकता।

शक्ति में आने के पश्चात रजाशाह पहलवीने ईरान को विदेशी प्रभावसे मुक्त करनेका भरसक प्रयत्न किया और उसे स्वतंत्र राष्ट्रोंकी श्रेणीं मे स्थान दिलवानेके ख्यालसे सन १९२६ में टर्कीसे, सन १९२७ में सोवियट और अफगानिस्थानसे पारस्परिक मित्रताकी सन्धियां कीं। सन १९३४ में उसने अपने पड़ोसी मुस्लिम राष्ट्रोंसे अर्थात् ईराक, टर्की और अफगानिस्थानसे पारस्परिक राजनैतिक सहायताकी सन्धियां कीं। अभी भी ईरानको विदेशी प्रभावसे सर्वथा मुक्त नहीं कहा जा सकता। वहां अभी भी विभिन्न साम्राज्यवादी, विशेषकर ब्रिटेन, रूस एवं जर्मनीके आर्थिक हितोंमें संघर्ष चालू है। यों शाह रज़ाशाह पहलवीने ईरानके आन्तरिक जीवनमें एक बहुत बड़ी क्रांति कर दी है। आजका ईरान डेढ़ करोड़ आबादी एवं ६,२८,०० वर्गमील क्षेत्रफलका स्वतंत्र देश है। ईरानकी राजधानी **तेहरान** है और यह यहांका सबसे बड़ा शहर भी है। ईरानके दक्षिणी तट पर सामुद्रिक व्यवसायके लिए अच्छे बन्दरगाह भी हैं।

शासन प्रणाली

आधुनिक जनतंत्रके सिद्धान्तोंके अनुसार वहां एक पार्लियामेंट भी है। इसका चुनाव प्रति दो वर्षमें होता है लेकिन इसका मताधिकार बहुत ही सीमित है और उसे वास्तविक रूपमें नाम मात्रके ही अधिकार प्राप्त हैं। राजनैतिक सुधारोंके अलावा रजाशाह पहलवीने सैनिक औद्योगिक, सामाजिक एवं शिक्षाके क्षेत्रोंमें ईरानको बहुत हद तक प्रगति पथ पर आगे बढ़ाया। स्वयं एक सैनिक शक्तिको नए ढंगसे सुसज्जित करने का प्रयत्न किया है। आज ईरान के पास ५०००० तालीम पाए हुए सैनिक है तथा करीब १५०००० का दूसरा सैनिक दल है। उसने एक छोटासा नौका दल एवं हवाईदल भी तैय्यार कर रखा है। ईरानके बजटका आधा भाग सैनिक तैय्यारियोंपर खर्च किया जाता है और वहां अनिवार्य सैनिक शिक्षा दी जाती है। विशेषज्ञोंका यह मत है कि ईरानकी सैनिक शक्तिका कोई विशेष महत्त्व नहीं है लेकिन वास्तवमें ईरानके समान एक छोटे देशकी तुलना आधुनिक संहारके भीषण तम साधनोंसे सुसज्ज बड़े बड़े देशोंकी सेनासे की भी नहीं जा सकती।

औद्योगिक क्षेत्रमें भी ईरानने बहुत प्रगतिकी है। ईरानका प्रमुख उद्योग तेल उत्पादनका है। यह उद्योग एंग्लो ईरानियन कंपनीके हाथमें है और पूर्णतः ब्रिटिश लोगोंके अधिकारमें ही कहा जा सकता है। इस उद्योगके बदलेमें यह कंपनी ईरान सरकारको १० मिलियन डालर देती है। इसके अलावा ईरानके विदेशी व्यापारका एक बहुत बड़ा भाग रूसके अधिकारमें है। जर्मनीने भी पिछले दिनों ईरानके उद्योग व्यवसाय पर अपना प्रभाव स्थापित करनेका प्रयत्न किया है। रेल एवं हवाई उद्योगमें जर्मन लोगोंके विशेष हित हैं। यद्यपि ईरान औद्योगिक क्षेत्रमें काफ़ी प्रगति कर रहा हैं लेकिन विदेशी स्वार्थोंकी सहायतासे की गई यह उन्नति उसकी स्वतंत्रताके मार्गमें बाधक सिद्ध हो रही हैं।

राजनैतिक दृष्टिसे आजके युद्धकालमें ईरानका खास महत्त्व हैं। उसकी सीमाएं उत्तरमें करीब ५०० मीलतक रूसकी सीमाओंसे मिली हुई हैं। पूर्वमें अफगानिस्तान और बलूचिस्थानकी सीमाओंसे उसकी सीमा मिली हुई हैं। दक्षिणमें ईरानकी खाड़ी हैं जिसका व्यापारिक एवं सामुद्रिक महत्त्व बहुत अधिक हैं। विशेषकर हिन्दुस्थान और पूर्वी साम्राज्यपर कब्जा बनाए रखनेकी दृष्टिसे ब्रिटेनके लिए वह खास राजनैतिक महत्व रखती है। इसके अलावा यूरोपसे पूर्वीय देशोंको जानेवाले वायुमार्गमें स्थित होनेके कारण ईरानका हवाई महत्त्व भी कम नहीं है। ईरानपर मित्र राष्ट्रोंके अलावा किसी भी विदेशी सरकारके प्रभुत्व स्थापनसे जहां एक ओर रूसके व्यापारिक एवं प्रादेशिक हितोंका खतरा पैदा हो जाता है वहां दूसरी ओर ब्रिटेनके व्यापारिक, सामुद्रिक एवं प्रादेशिक हितों को भी उससे बहुत बड़ा खतरा पैदा हो जाता है। विशेषकर ईराक और बलूचिस्तानकी सीमाएं असुरक्षित हो जाती हैं, ईराक तथा ईरानका तेल व्यवसाय चौपट हो जाता है और सामुद्रिक दृष्टिसे विशेष महत्त्व प्राप्त ईरानकी खाड़ी तथा ईरानी हवाई मार्ग पर वर्चस्व न रहनेसे हिंदुस्तान एवं ब्रिटेनके पूर्वीय साम्राज्यकी स्थिति संकटापन्न हो जाती है। इस प्रकार राजनैतिक दृष्टिसे ईरान रूस एवं ब्रिटेनके लिए बहुत बड़े महत्त्वका स्थान है। पिछले कुछ दिनोंसे ईरानमें

(शेष पृष्ठ ८ के कालम १ पर)

शिक्षा

श्री लक्ष्मीनिवासजी विड़ला

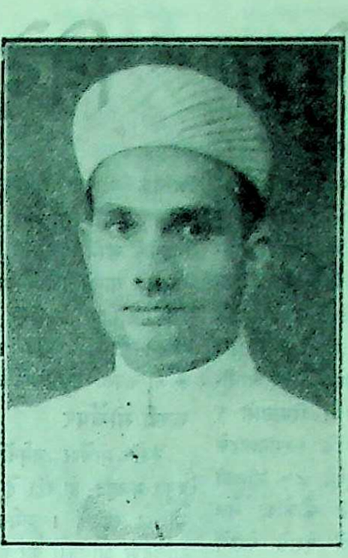

इतना तो अब सब लोग जान गये हैं कि आजकल की शिक्षा पद्धति ठीक नहीं है, तथा इसमें सुधार की बहुत आवश्यकता है। लेकिन शिक्षाका अर्थ लोग अब भी यही लगाते हैं कि लड़का कितने शब्दोंका अर्थ जानता है, कहां तक अङ्कगणित पढ़ चुका है, भूगोल की परिभाषा जानता है या नहीं, और इतिहासके कितने पन्ने उलटे हैं। कभी कभी इसमें शारीरिक शिक्षा अर्थात् व्यायाम भी सम्मिलित कर लेते हैं और यहीं शिक्षाकी परिधि समाप्त कर देते हैं। यदि इतनेको ही हम शिक्षा मानकर संतोष कर लें तो बहुत पिछड़े हुए रह जायंगे। पठन पाठन की पुस्तकोंमें फेरफार करना ही शिक्षा सुधार नहीं है। शिक्षालय केवल लिखना पढ़ना सिखानेका कारखाना नहीं है, बल्कि वह तो ऐसी जगह है जहां भावी समाजका बीजारोपण होता है। शिक्षालयके द्वारा लोग आजके जर्मनी और कलके रामराज्यका निर्माण कर सकते हैं। शिक्षाका केन्द्र बहुत बड़ा है और यही हमारे सामाजिक उत्थानकी जड़ है इसलिये इसे थोड़ीसी पुस्तकोंमें बन्द करके नहीं रखा जा सकता। अंग्रेजीके एक बड़े विद्वानका कथन है कि " हजार सुधारकोंसे एक विधायक कहीं अच्छा है "। जहां समाज सुधारकी चर्चा करते हैं, वहां शिक्षा सुधारकी चर्चा करें और इसे समाज सुधारसे ऊँचा स्थान दें तो हमारी बहुत-सी समस्यायें अपने आप हल हो जांयगी।

यहां यह विचार करना तो कठिन है कि नई शिक्षा-प्रणालीसे समाज का उत्थान किस तरफ और कौनसे विषयोंमें होगा। रोज़ रोज़ दुनिया आगे बढ़ती जा रही है। जहां २०-२५ वर्ष पहले विलायती मोर छापका जोड़ा और नैनसुख की कमरी पहन कर सन्तोष था वहां देशी मिलोंसे ही आज नित्य नई चीजें निकल रही हैं। गाँव-गाँवमें तार और रेडियो, जगह-जगह रेल और गली-गली मोटरें। जितने वेगसे नई सृष्टि हो रही है उतने ही वेगसे हमारे लिये नई समस्यायें खड़ी हो रही हैं। फिर भी आजकी शिक्षाका समाज पर क्या असर पड़ा है यह समझ कर हम नई शिक्षा प्रणाली और उससे तैयार होनेवाले भावी समाजकी शक्ल सूरतका कुछ अन्दाज़ा ज़रूर लगा सकते हैं।

नई प्रणाली कैसी हो, क्या हो, इस पर काफी लिखा जा चुका है तथा कई विद्वत् सभायें इस प्रश्नपर विचार करके अपने मत भी प्रकाशित कर चुकी हैं। सब इस बात पर सहमत हैं कि शिक्षा इस प्रकारकी हो जिससे स्वाभाविक बुद्धिका विकास हो तथा बच्चे रचनात्मक काम करके अनुभवशील बनें। सीधी पंक्तिबद्ध सजी हुई पट्टी बेंचें, ४०-४५ छात्रोंसे खचाखच भरी कक्षायें, कुछ पुरानी टूटी-सी मेज और कुर्सियां शायद कहीं कहीं दीवार पर एकाध चित्र-यह है आज के स्कूलका एक दृश्य। ऐसे स्थानसे बच्चे, शिक्षक जो सुनाता है, उसे सुनते हैं और घर भागते हैं। क्योंकि ऐसी पढ़ाई चाहे किताबोंसे हो चाहे शिक्षक मुंह जबानी बतावे, सुनने ही के बराबर है। तैयार किया हुआ पाठ शिक्षक उगल देता है और आशाकी जाती है कि बच्चे उसे ज्यादासे ज्यादा पचा लें। जैसे कारखानेसे माल बनकर निकलता है वैसे हजारोंकी तादादमें परीक्षायें पास करके स्कूलसे लड़के निकलते जाते हैं। इन परिस्थितियोंमें बच्चोंके विकासके बहुत कम साधन रहते हैं। न तो सामान रहता है और न उसके औजार। यहां तककि समय और जगह भी नहीं रहती कि बच्चे अकर्मण्यता छोड़कर क्रियात्मक रचना करना सीखें। यदि कोई लड़का सुस्त हो तो उसकी खोज खबर लेनेवाला कोई होता ही नहीं, बल्कि कोई लड़का खास तेज भी हो तो उसे सारी क्लासके साथ बंध कर ही चलना पड़ता है। यह प्राकृतिक नियम है कि दो बच्चे एकसे नहीं हो सकते। यह बात जो प्रणाली नहीं महसूस करती वह अधूरी है। यदि बच्चे कल पुर्जोंसे घड़कर बने होते तो उनके लिये यह प्रणाली बड़ी अच्छी साबित होती। पर वह तो जीते जागते प्राणी हैं इसलिये उनमें विविधता या विभिन्नता का न होना ही अप्राकृतिक या असम्भव है। हमें कृत्रिम समानता या एकरूपताके पीछे पागल न होकर इस असमानता या विभिन्नताको प्राकृतिक मानकर ही अपने कर्तव्य पथपर अग्रसर होना होगा।

एक आदर्श घरका उदाहरण लीजिये जहां मातापिता समझदार हैं। ऐसे घरके बच्चे मां बापसे पचासों तरहके प्रश्न पूछते हैं। खास खास विषयोंकी जिनमें बच्चोंको दिलचस्पी होती है खूब चर्चा की जाती है। घरके कामकाजमें भी बच्चे शामिल होते हैं, उनकी यदि कोई गलती होती है तो दुरुस्त कर दी जाती है—लेकिन उन्हें मनके मुताबिक काम करने दिया जाता है। इससे बच्चोंमें करनेकी आदत पड़ती ही है और जिम्मेदारीके साथ साथ अनुभव भी होता है और क्रियात्मक रचना करनेका मौका मिलता है। यही नई प्रणाली भी करना चाहती है पर आजके स्कूलमें पहुंचते ही उन्हें मुश्किलका सामना करना पड़ता है। न तो अपने घरके अनुभवको किसी काममें ला सकते हैं और न ही निजी रचना करनेकी छूट है। इधर स्कूल का सबक रोजके रहन-सहनमें नहीं आ सकता और नतीजा यह होता है कि बच्चे स्कूलके काममें दिलचस्पी खो बैठते हैं। स्कूल जाना तक भी भार हो जाता है। नई प्रणालीका उद्देश्य है बच्चेके निजी अनुभव और वृत्ति का पूरा उपयोग करके बच्चों का बौद्धिक विकास करना। यही आधुनिक शिक्षा की कुञ्जी है और इसे ही नई प्रणाली काममें लाती है।

★ मेवाड़का माहेश्वरी समाज और शिक्षा ★

मेवाड़ प्रदेशमें माहेश्वरी बन्धुओंकी अच्छी बस्ती है। अधिकांश माहेश्वरी भाई गाँवोंमें रहते हैं, जहाँ पर शिक्षाके लिये कोई भी समुचित प्रबन्ध नहीं है। साथ ही अब तक इस ओर किसी भाईका ध्यान भी आकृष्ट नहीं हुआ। हमारे समाजमें कई प्रकारकी कुरीतियां हैं। इस सामाजिक सुधारके आन्दोलन पर काफी विचार किया गया तो हम लोग इस नतीजेपर पहुँचे कि शिष्ट मण्डलोंके भ्रमण से व्याख्यानों द्वारा जाति बन्धुओं को यह महसूस करा दिया जा सकता है कि वर्तमान में प्रचलित कुरीतियां ही समाजको खोखला बनानेवाली हैं, और इसका मूल कारण अशिक्षा है। जब तक समाजमें शिक्षा प्रचार पूर्णरूपसे नहीं हो जाय, तब तक सामाजिक सुधारका कार्य सफल नहीं हो सकता।

इस वर्ष मुझे मेवाड़के कई ग्रामोंमें भ्रमण करनेका अवसर प्राप्त हुआ। उससे गांवोंकी दशाका अध्ययन करनेका अवसर मिला। मैं अपनी जानकारीसे यह कह सकता हूं कि वहांके समाज की दशा बड़ी दयनीय है। नन्हें नन्हे बालक-बालिका, जिनकी अवस्था स्कूलमें पढ़ने के योग्य हैं, आवारा फिर रहे हैं। बालकोंके साथ प्रेमपूर्वक मिल कर इस विषयपर बातचीत करनेका प्रयत्न किया गया तो अनुभव हुआ कि उनके माता-पिताओंकी आर्थिक अवस्था विचित्र है। कारण स्पष्ट है कि गांवोंमें रहनेवाले भाइयोंके पास प्रथम तो धन नहीं जिससे व्यापारको विस्तृत रूप दें। दूसरे गांवोंमें कोई व्यापार रहा ही नहीं। तीसरे अशिक्षित होनेके कारण उनकी बुद्धि काम नहीं करती। निर्धनताके कारण और भी अधिक दशा

★ श्री दिलिपसिंहजी राठी ★

खराब होती जा रही है। मेवाड़के माहेश्वरी समाजकी उपरोक्त दशा देखते हुए शिष्ट मंण्डल निम्बाहेड़ा पहुंचा और श्री जगन्नाथजी शारदासे जो समाज सेवी और सुधारक विचारके हैं, समाजकी इस गिरती हुई दशाको उठानेके सम्बन्ध में वार्तालाप करनेका अवसर मिला समाजके इन होनहार भावी नवयुवकोंके अशिक्षित रहनेकी बात और मेवाड़में फैली हुई निर्धनताकी करूण गाथाको सुनकर शारदाजीको भी व्यथा हुई। मैंने अपने विचार शारदाजीके सामने रक्खे कि उदयपुरमें कालेज व हाईस्कूल शिक्षाके लिये महाराणा साहबने स्थापित किया है। ऐतिहासिक और प्राकृतिक दृष्टिसे उदयपुर एक सुन्दर स्थान है, जहाँपर माहेश्वरी विद्यार्थियोंके लिये बोर्डिङ्ग हाऊस की स्थापना की जानी चाहिये। मेरे इन विचारोंका श्री शारदाजीने समर्थन किया और मेरे उत्साहको बढ़ाया। परिणाम यह हुआ कि गत जुलाई मासमें उदयपुरमें बोर्डिङ्ग हाउसकी स्थापना की गई।

वर्तमानमें उदयपुरके माहेश्वरी समाजके पास दस हजार रुपयों की लागत का एक प्लॉट है जो माहेश्वरी बोर्डिङ्गके भवन निर्माणके लिये तैयार है। इस प्लॉटके अन्दर सोलह-सतरह कमरे बन जांय तो विद्यार्थियोंके लिये बड़ा सुभीता हो जाय। माहेश्वरी समाजमें कई विद्याप्रेमी महानुभाव मौजूद हैं। यदि एक ही बन्धु चाहे तो भी यह कार्य आसानीसे सम्पूर्ण हो सकता हैं। अब देखना है भारतवर्षके माहेश्वरी समाजमें भामाशाका रूप धारण कर कौन इस कार्यको सम्पूर्ण करनेके लिये प्रेमपूर्वक आगे कदम बढ़ाता है।

मेरी तो मेवाड़के सुधारवादी और विद्याप्रेमी माहेश्वरी बन्धुओंसे अपील है कि वह इस महान् यज्ञको पूर्ण करनेके लिये सुयोग्य व्यक्तियोंका ऐक डेपुटेशन लेकर भारतवर्षके बड़े बड़े दानी विद्वान महानुभावोंके पास पहुँचें तो अवश्य सफलता मिलेगी।

देश विदेशकी चर्चा

राजनीतिज्ञ और युद्धके व्यूह की समझ रखनेवाले लोगोंका यह अनुमान सत्य सिद्ध हुआ कि सीरिया और ईराकके बाद ईरान ही मित्र राष्ट्रोंका भक्ष्य बनेगा। इस अनुमानके अनुसार ही ईरान पर ब्रिटिश और रूसी फौजों ने आखिर आक्रमण कर दिया और देखते-देखते दोनों देशों की फौजोंने प्रायः सारे देशपर सैनिक अधिकार कर लिया। ब्रिटिश फौजोंका संचालन भारतके जंगी लाट जनरल सर आर्चीबाल्ड वावेल ने शिमलासे बैठकर ही किया। शिमलासे १ सितम्बरको निकली विज्ञप्तिमें कहा गया है कि करमनशाहसे चलनेपर १ सितम्बर को तेहरानके उत्तर-पूर्वमें ८५ मीलकी दूरीपर अजबिन शहर पर ब्रिटिश और रूसी फौजोंका मेल होगया है। इस प्रकार दोनों देशों की फौजें देशके केन्द्रमें पहुंच गयी हैं।

ईरानके शाह रजाशाह पहलवीने पहले ही अविरोधात्मक नीति अख्तियार कर ली थी और इस आशयका एक फरमान भी जारी कर दिया था। तेहरानमें मार्शल लॉ जारी कर दिया गया है। अब ईरानमें पूर्ण शान्ति स्थापित हो गयी है और ईरानके नये मन्त्रिमण्डलने सभी आंग्लो-रशियन शर्त्तोंको मंजूर कर लिया है। इन शर्त्तोंके अनुसार (१) तेलवाला इलाका (२) कास्पियन समुद्रकी रेलवेके टर्मिनस वाला इलाका (३) तेहरानसे रूसी काकेशस जाने वाली रेलवेका केन्द्रस्थान तबरेज व (४) तबरेजसे तुर्कीकी ओर जानेवाली सड़कोंपर रूस और ब्रिटेनका अधिकार व पहरा रहेगा।

नये वर्षका तोहफ़ा

ईरानमें अपनी दाल न गला सकनेके कारण जर्मनीने अब टर्की पर अपनी चालें चलना शुरू किया है। टर्की स्थित जर्मन राजदूत फोन पापेनके सब प्रयत्न टर्कीको आत्मसमर्पणके लिये तय्यार करनेमें निष्फल हुए हैं अतः वे वापिस बुला लिये गये हैं। अभी पिछले दिनों रूसी मोर्चेपर सीनोर मुसोलिनीके साथ हर हिटलरकी बराबर ५ दिनतक मन्त्रणा चलती रही है जिससे यह अनुमान किया जाता था कि रूसी युद्धके प्रश्नोंपर विचार विनिमयके साथ २ उनमें यूरोपमें कोई नया गुल खिलानेका भी परामर्श हुआ होगा। इधर वर्त्तमान महायुद्धको प्रारम्भ हुए पूरे दो वर्ष व्यतीत हो गये हैं और विजयश्रीका किसी भी पक्षके प्रति अधिक पक्षपात लक्षित नहीं हो रहा। इससे भी अन्दाज किया जाता था कि निःसन्देह हिटलर इस नववर्षके तोहफेके रूपमें विजयश्री को अधिक आसन्न बनानेके लिये संसारके सामने पेश करेगा। सम्भवतः वह तोहफ़ा टर्कीपर आक्रमण होगा। टर्कीकी सीमापर जर्मन, बलगर और इटालियन फौजोंके करीब १६-१७ डिविज़न इकट्ठे हो चुके हैं जो केवल आक्रमणके आदेशकी प्रतीक्षामें हैं।

रूसी मोर्चेपर

रूसी मोर्चेपर जर्मनोंके दावेके अनुसार उनकी स्थिति बहुत मजबूत हो रही है यद्यपि रूसी दावे इसका खण्डन भी कर रहे हैं। जर्मन फौजोंने इस्टोनियाकी राजधानी टालिनपर अधिकार कर लिया है। उधर फिनिश फौजोंने भी वीपुरी पर अधिकार करके अपनी पुरानी सीमातक फिर अपना अधिकार विस्तार कर लिया है। सम्भव है 'इसके बाद फिनिश फौज़ें युद्ध क्षेत्रसे उपराम ले लें। मार्शल मानेरहाइमको इस विजयके उपलक्ष्यमें हिटलरने 'आयरन क्रास' का विजयोपहार भेंट किया है। लेनिनग्राड और ओडेस्सा दोनोंके मोर्चोंपर जर्मनी जोर पकड़ रहा है। सबसे ताजे समाचारोंमें कहा गया है कि लेनिनग्राड और ओडेस्साके बाह्यरक्षा व्यूहोंको जर्मन वाहिनीने कई स्थानोंपर भेद लिया है।

भारत-बर्मा प्रवासी समझौता

बर्मा और भारतका संबंध शताब्दियों पुराना हैं। दोनों देशोंमें सैंकडों वर्षोंसे निकट सम्पर्क रहा है। धार्मिक एवं सांस्कृतिक दृष्टिसे भी दोनों देश एक दूसरेसे खास विभेद नहीं रखते। अभी कुछ साल पहिले बर्मा ब्रिटिश शासनके अंतर्गत भारतका ही एक प्रान्त माना जाता था। हजारों भारतीय,—हिन्दू और मुसलमान-बर्मामें सदियोंसे आबाद हैं और अभी तक बर्मियोंके साथ उनका बडा अच्छा संबंध रहा है। लेकिन ब्रिटिश शासकोंसे यह संबंध देखा नहीं गया, फलतः एक नये समझौतेके अनुसार दोनों देशोंकी सरकारोंने यह तय किया कि भारतीयोंके बर्मा जानेपर रोक लगा दी जाय और विशेष अवस्थामें उन्हें जाना भी पडे तब पासपोर्टके जरिये ही वे जांय, जैसे विदेश जानेके लिये पासपोर्ट लेना पडता है। इस समझौतेका समस्त देशमें घोर विरोध हुआ। महात्मा गान्धीने इस समझौतेके बारेमें एक विस्तृत वक्तव्य प्रगट करते हुए बताया कि यह समझौता भारत और बर्मा दोनों ही देशोंके लिये एक अवांछनीय कलङ्क है, यह समझौता यह याद दिलाता है कि भारत तथा बर्मा दोनों ही ब्रिटेनके गुलाम हैं।" इस समझौते पर व्यवस्थापिका सभाकी भी राय नहीं ली गई है। वास्तवमें देखा जाय तो यह अंग्रेज शासकोंकी स्वेच्छाचारिताका एक जीता-जागता नमूना है। इसके विरोधमें देशके प्रत्येक पक्षने अपनी आवाज उठाई है। मुस्लिम लीगके पिछले अधिवेशननेंभी इसको भारत और बर्मा दोनोंके लिये समान रूपसे घातक है ऐसा बतलाया है।

श्री. सत्यमूर्ति और सत्याग्रह

श्री. सत्यमूर्ति हालहीमें जेलसे रिहा हुए हैं। जिस दिन आप रिहा हुए उस दिन आपने पत्र प्रतिनिधियोंसे कहा था कि परिस्थितिका अध्ययन किये बिना मैं अपनी राय नहीं देना चाहता। लेकिन उसी शामको एक मीटिंगमें भाषण देते हुए उन्होंने कहा कि गांधीजीको अपने व्यक्तिगत रूपमें सत्याग्रह चलानेकी आजादी रहनी चाहिये, लेकिन प्रांतोंमें कांग्रसजनोंको फिरसे शासनसूत्र अपने हाथोंमें ले लेना चाहिये। श्रीयुक्त सत्यमूर्ति उन राजनीतिज्ञोंमें से हैं, जिनका मुख्य कार्यक्षेत्र व्यवस्थापिका परिषद ही हो सकती है। लेकिन भारतकी ऐसी परिस्थितिमें, देशकी आजादीके लिये लडनेवालोंके लिये व्यवस्थापिका परिषदकी मुलायम गद्दियां उपयुक्त स्थान नहीं रखतीं। अभी जब सत्याग्रह आंदोलन छिडा है और हजारों देशभक्त जेलोंमें बन्द हैं, ऐसे मौकेपर श्री. सत्यमूर्तिका उपरोक्त वक्तव्य देशके लिये हानिकारक और कांग्रेसकी शक्तिको क्षीण करनेवाला है।

बंगाल, पंजाब तथा आसाम के मुस्लिम प्रधान-मंत्रियों का इस्तीफ़ा

पिछले मुस्लिम लीगके अधिवेशनमें मि॰ जिन्ना की नीति आखिर विजयी हुई, और बंगाल आसाम तथा पंजाबके तीनों मुस्लिम प्रधानमंत्रियोंने डिफेंस कौंसिलसे त्यागपत्र दे देनेका निश्चिय किया है। इन तीनों प्रधानमंत्रियों के अलावा बेगम शाहनवाजने भी डिफेंस कौंसिलकी मेम्बरीसे इस्तीफ़ा देना का निश्चय किया है। मि॰ जिन्नाके इस रूख को देखकर भारतमन्त्री मि॰ एमरीको शायद अब होश आया होगा।

(पृष्ठ ६ का शेषांश)

नाज़ी प्रवृत्ति बहुत अधिक बढ़ती जा रही हैं। नाज़ी प्रचारकों एवं पांचवी कतारके बहुतसे लोगोंका ईरानमें एक संघटन तैय्यार हो गया है और उसने रूस और ब्रिटेनके खिलाफ ईरानमें बहुत अधिक प्रचार कर रखा है तथा ईरानके शाह को भी नाज़ी जालमें फंसाने का प्रयत्न किया है। इससे रूस और ब्रिटेन दोनोंके हित खतरेमें पड़ते जारहे हैं। पिछले दिनों ब्रिटेन और रूसने सम्मिलित रूपसे नाज़ी प्रचारकों एवं पांचवीं कतारके खिलाफ कार्रवाही करनेकी ईरानी सरकारसे मांग की थी। ईरानी सरकारने इस मांगके अनुसार कार्रवाही न करके टाल मटूल की नीति अख्तियार कर रखी थी और अपनी आखिरी विज्ञप्तिमें तो उसने यह जाहिर कर दिया था कि जर्मन लोगोंकी ईरानमें मौजूदगीसे ईरानपर कोई खतरा नहीं है और वह जर्मनोंके खिलाफ़ कोई कार्रवाही नहीं करना चाहती। इस विज्ञप्तिको मद्दे नजर रखकर ब्रिटेन व रूसने ईरानके खिलाफ—ईरानको जर्मन प्रभुत्वसे मुक्त रखनेके लिए (?) संयुक्त सैनिक कार्रवाही आरम्भ कर दी है। इस लेखके लिखे जाते समय उत्तरमें रूस, पूर्वमें बलूचिस्तान की ओर से अंग्रेज तथा पश्चिममें ईराककी ओर से भी अंग्रेज सेनाएं ईरानमें कूंच कर रही हैं। ईरान की खाड़ीमें ब्रिटिश जंगी बेड़ेने बंदर शाहपुर पर भी कब्जा जमा लिया हैं तथा ईरान एवं इटली तथा जर्मनी की नौसेना को काफ़ी क्षति पहुंचाई है। बहुत सम्भव है कि रूस और ब्रिटेन बिना किसी बड़ी लड़ाईके ईरान पर अपना कब्ज़ा जमालें।

यहां प्रश्न यह उठता है कि क्या जर्मनी ईरान पर ब्रिटेन और रूसका सहजही प्रभुत्व स्थापित हो जाने देगा। इस प्रश्नका जवाब देना आज सरल काम नहीं है लेकिन जर्मनी जिस तरह रूससे भिड़ा हुवा है और जिस गतिसे वह आगे बढ़ रहा है उसको देखते तो यही प्रतीत होता है कि ईरानको ब्रिटिश एवं रूसी कब्जेमें जानेसे नहीं रोक सकेगा। रूस जिस बहादुरीसे जर्मनीका मुकाबिला कर रहा है उसको देखते तो जर्मनीके द्वारा ईरान को किसी भी प्रकार की मदद किया जाना मुमकिन नहीं हैं। जिसतरह ईराक और सीरिया में जर्मनीके विद्रोह जागृत करने के बावजूद ब्रिटेनका प्रभुत्व बिना किसी बडे युद्ध के हो गया उसी तरह ईरान पर भी रूस और ब्रिटेन का सैनिक कब्जा हो जाने की बहुत अधिक संभवनाएं हैं।

वास्तवमें ईरान का जर्मनीके प्रभाव से मुक्त हो जाना एक जरूरी बात है। ईरानके जर्मनीके हाथोंमे जाने से हिंदुस्तान पर निकट भाविष्य में ही आक्रमण हो सकनें की सम्भावनाएं उत्पन्न हो जाती हैं। ईरान की खाडीसे ब्रिटेनके प्रभुत्व के नष्ट हो जानेसे ब्रिटेनका पूर्वीय साम्राज्य खतरे में पड जाता है। सुदूर पूर्व में, जब जापान अपने हाथ पैर फैला रहा है तब जर्मनीका निकट पूर्वके प्रदेशोंमें प्रवेश वास्तवमें संसारके लिए एक बहुत बड़ा खतरा सिद्ध हो सकता है। अतएव ब्रिटेनकी ईरानके खिलाफ की गई सैनिक कार्रवाही ठीक मौके पर हुई है। ईरानपर प्रभुत्व स्थापित हो जानेसे रूसको युद्ध सामग्री भेजते रहनेका एक नया मार्ग खुल जाता है और रूसको जर्मनीके खिलाफ टिकाए रखनेकी बहुत संभावनाएं पैदा हो जाती हैं।

आगे आनेवाले कुछ दिनोंकी प्रगति इस भीषण सर्वनाश के निश्चयकारी परिणामोंको प्रगट करेगी ऐसा प्रतीत होता है।

गुरुदेवके प्रथम दर्शन और कुछ संस्मरण

● श्री सीतारामजी सेकसरिया ●

विश्वकवि गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुरके नामसे तो सभी परिचित हैं। कितने ही लोगोंको उनके दर्शनका, सामीप्य का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ है। बंगालमें रहनेवाले लोगोंके लिये औरोंकी अपेक्षा उनके दर्शन सुलभ थे। तो भी मैं उनके प्रथम दर्शन सन् १९३४ से पहले न कर सका। सन् १९३४ की ६ अक्तूबरको श्री बनारसीदासजी चतुर्वेदीके साथ मारवाड़ी बालिका विद्यालयकी कुछ लड़कियों और अध्यापिकायों को लेकर गुरुदेवके दर्शनों को गया। अगले दिन गुरुदेवके दर्शन हुए। गुरुदेवके प्रथम दर्शनोंसे, बातचीत से मेरे दिल पर जो प्रभाव पड़ा, वह उस दिन की डायरीसे यहाँ दे रहा हूँ:—

‘ शान्तिनिकेतनकी अन्य चीज़ें देखने के बाद ३ बजे श्री बनारसीदासजी, और लड़कियां तथा मैं गुरुदेवके कमरेमें ले जाये गये। जिस कमरेमें गुरुदेव बैठे थे वह एक साफ-सुथरा और सजा हुआ कमरा था। दीवारों पर गुरुदेव के हाथके बनाए हुए चित्र अंकित थे। फर्शसे चार-पांच फीट ऊँचे तक शीतल चट्टी काठके फ्रेममें लगी हुई थी। गुरुदेव जिस आसन पर बैठे थे, उसपर हाथकी कारीगरीका काम किया हुआ था और सामने सुन्दर फूलोंका गुलदस्ता था। जितनी चीज़ें वहाँ थीं, वे सब-की-सब कलाकी द्योतक थीं। गुरुदेवके शरीरपर रेशमी कुर्त्ता, दूधकी तरह सफेद बाल और सुन्दर चेहरा, बड़ी-बड़ी आँखें विशुद्ध ललाट और लम्बी सफेद दाढ़ी—ऐसी सौम्य, मूर्तिको देखकर किसी प्राचीन ऋषि का स्वाभाविक रूपसे स्मरण हो आता था। हम लोगोंने चरण छूकर गुरुदेवको प्रणाम किया। उन्होंने प्रेमभरी दृष्टिसे देखते हुए कहा—‘बोसुन’। उनकी दृष्टिमें आकर्षण था और स्वरमें माधुर्य। कुशल-समाचार पूछनेके बाद शान्तिनिकेतनके बारेमें कहने लगे—‘ यह संस्था ही मेरा जीवन है। मेरा सब कुछ यहीं है। इसकी उन्नतिके लिये मैं जीता हूँ। मैंने अपना सब कुछ शान्तिनिकेतनको दे दिया। नोबुलप्राइजके रुपये शान्तिनिकेतनको दिये। मेरी पुस्तकोंसे जो आय होती है, वह शान्तिनिकेतनकी ही है। जमींदारी की आयका भी बहुतसा हिस्सा शान्तिनिकेतनमें चला जाता है। आजकल जमींदारीकी आय कम हो गई है। पुस्तकोंकी आय भी कम होने लगी है; इसलिये शान्तिनिकेतन पर कर्ज हो गया है। इस संस्थाके बोझसे मैं दबा जा रहा हूँ। जो हो, मुझे यह बोझ लेकर चलना है। मैं मद्रास जा रहा हूं। इस तिहत्तर वर्षकी उम्रमें मैं बाहर नहीं जाना चाहता। आज मुझमें न तो शक्ति है और न इच्छा कि मैं नाच-गान की पार्टी लेकर फिरूं। पर क्या करूं? शान्तिनिकेतनके लिये धन चाहिये। देशवासी मुझे यहाँ बैठे बैठे धन नहीं देते। वे मेरा नाच-गान और कविता सुनना चाहते हैं। मैं वही करूंगा। शान्तिनिकेतन पर सत्तर हजारका कर्ज है। उस कर्जेको चुकाना चाहता हूं। मैं शान्तिनिकेतन—विश्वभारतीको, बंगालकी नहीं, भारतवर्षकी नहीं संसारकी संस्था मानता हूं और चाहता हूं यह संस्था संसारके तमाम लोगोंकी संस्कृतिका आदर करे और भारतीय संस्कृतिका प्रतिनिधित्व करे। यहां पर सभी संस्कृतियों और भाषाओंके विद्वान् रहें और अपनी-अपनी संस्कृतियोंका अन्वेषण और उन्नति करें। आजसे कई वर्ष पूर्व यहां हिन्दी की पढ़ाई शुरू की गई थी। इसके लिये हमें मद्राससे सहायता मिला करती थी। उसके बन्द होनेपर एक दूसरे सज्जन छः सौ रुपये साल सहायता दिया करते थे। आजकल वह भी बन्द है। पर मैं हिन्दी की पढ़ाई कैसे बन्द कर सकता हूं? हिन्दीके अच्छे विद्वान् श्री हजारीप्रसाद द्विवेदी हमें मिल गये हैं। उनको मैं कैसे छोड़ सकता हूं? मैं चाहता हूं यहां हिन्दीके लिये अच्छी-से-अच्छी व्यवस्था हो, हिन्दी की स्थायी सीट हो, एक हिन्दी भवन हो और सुन्दर पुस्तकालय। तुम्हारी जाति धनी है। यदि ठीक समझो और कर सकते हो तो, इस कामको करना।’ कविके हृदयमें दर्द था, वेदना थी और था हिन्दीके लिये प्रेम। फिर वे लड़कियोंको संबोधन कर कहने लगे—‘तुम तो जननी हो। तुम्हारे हृदयमें प्रेम, दया-सेवा भरी हुई है। तुम्हारे लिये सभी अपने हैं। तुम किसीकी बुराई नहीं कर सकतीं, तुम तो सबको प्यार करती हो, भेद-भाव रहित सेवा करती हो क्योंकि तुम जननी हो।’ कविने और भी बहुत कुछ कहा पर मैं तो उनकी भावना और स्वरके लालित्यमें इतना अपनेको खो चुका था कि कुछ पता ही नहीं चला। इतना बड़ा महापुरुष, जिसने हमारे इस गिरे हुए देशका स्थान संसारमें ऊँचा किया, जिसकी लिखी पुस्तकोंका, कविताओंका संसारके बड़े बड़े विद्वान आदर करते हैं, जिसकी वाणी सुननेके लिये अमेरिका आदि देशोंके लोग भी लालायित रहते हैं, वह रुपयेके लिये—इतनी बड़ी संस्थाके लिये रुपये मांगने-भटकता फिरे क्या यह हम-लोगोंके लिये लज्जाकी बात नहीं है?

इच्छा हुई और दर्द भी हुआ कि गुरुदेवके शान्तिनिकेतन का आर्थिक संकट किस तरह कटे। सोचा, अपनी सामर्थ्य ही कितनी? एक छोटीसी भेंट गुरुदेवके चरणों पर रखनेकी बात बनारसीदासजीसे कही और उन्होंने गुरुदेवसे। वे तो कवि थे; हृदयके भावको जानते थे-पहिचानते थे। उनके सामने वस्तुका मूल्य नहीं, भावनाका मूल्य था। कहा—‘ बहुत अच्छा।’ यहाँ तक कि उसी समयसे मुझ जैसे साधारण व्यक्तिको वे कभी भूले नहीं। अपने परिवारका जैसा संबंध मानने लगे। जब वे धन संग्रह करनेके लिये निकले और उनका पहला व्याख्यान पटनेमें हुआ, तब उस सभामें मेरी उस छोटी-सी भेंटका जिक्र तक किया। वे बहुत ही भावुक थे। मेरे दिल पर भी उस बातका गहरा असर रहा कि शान्तिनिकेतनका ऋण किस तरह चुकाया जाय। मैंने एक बड़े धनी सज्जन से जिक्र किया कि इतना बड़ा आदमी पैसा मांगने के लिये भटके, यह ठीक नहीं। हम लोगोंको इन्हें एक अच्छी रकम देनी चाहिये। सभी जानते हैं, बादमें तो पूज्य गांधीजी की प्रेरणासे शान्तिनिकेतनका सम्पूर्ण ऋण चुका दिया गया। गुरुदेव बहुत जल्द ही इस यात्रासे वापस आ गये। एक ही स्थान पर यात्रा पूर्ण हो गई। गुरुदेवके मन पर भी इसका बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। एक दिन बात करते हुए कहने लगे—। देशवासियोंने मुझे चाहा तो तेरासी या छियासी वर्ष तक जी सकता हूं।’ मैंने कहा—‘ गुरुदेव, देशवासी तो चाहते हैं कि आप बराबर हमारे बीच रहें।’ उन्होंने कहा—‘ मुझे उत्साह मिलना चाहिये न।’ इसके बाद तो कई बार शान्तिनिकेतन जानेका, गुरुदेवके दर्शन करनेका, मौका मिलता रहा।

गुरुदेव कलकत्ते आते तब कभी-कभी कुछ लोगोंको बुलाकर अपनी कविता सुनाया करते। एक छोटा-सा साहित्यिक साहित्य समारोह-सा होता। एक बार ऐसे समारोहमें शामिल

(शेष पृष्ठ २८ के कालम १ पर)

श्रद्धाञ्जलि

श्रीमती लीलावतीजी झंवर एम्. ए., बी. टी.

●

भारत माँ के अविचल श्रृंगार—
तुम चले कहाँ ओ कलाकार !
सूनी कर माँ की हाय क्रोड़,
पल भरमें सब संबंध तोड़।
चढ़ अग्नि शिखाओं के रथ पर, गंगा का कर अंतिम दुलार।
तुम चले कहाँ ओ कलाकार !
विश्वम्भरके गायक पुनीत,
तुम पर थी जगकी अमित प्रीत।
भारत पर तुम को गौरव था, भारत भी था, तुम पर निसार।
तुम चले कहाँ ओ कलाकार !
क्या गए जहाँ हैं कालिदास,
वह बाल्मीकि या तुलसीदास ?
या मिल्टन, गेटे, शेक्सपियर आदिक कवियोंका जहाँ प्यार।
तुम चले कहाँ ओ कलाकार !
जाओ मिलने प्रभुमें उदार,
बस रहें यहाँ स्मृतियाँ अपार।
हम रोक कहाँ सकते ? केवल, लो श्रद्धाञ्जलिमें अश्रुधार।
तुम गए जहाँ ओ कलाकार !

[कवीन्द्र रवीन्द्रके श्राद्धके अवसर पर निर्मित]

विश्वप्रेमी रवीन्द्रनाथ

मानव समाजके आदि युगसे आजतक सभी देशोंमें समयानुसार ऐसे कितने ही महामानव जन्मग्रहण करते आये हैं जिनकी कार्यावलीके पुण्य प्रताप से, उसी देशके समाज का जातीय जीवन समाजके सर्वाङ्गीण क्रमविकासके पथ पर चलता है।

स्वाधीन चिन्ता और मनोवृत्तिके साथ इतिहासके इस युग–सन्धि क्षणमें महामानवों का अविर्भाव होता है, इसी लिये ये सब हैं युग मानव। ये अपने ज्ञानके उज्वल आलोकसे मनुष्यका मुक्तिपथ उद्घाटित करते हैं। युग युगान्तरसे मनुष्य उसी मुक्तिपथ को अवलम्बन करता हुआ मुक्ति का विमल आनन्द उपभोग करनेमें समर्थ हो सका है।

इन सब महामानवोंका केवल एक ही कर्त्तव्य है। वह है मानव समाजकी "सेवा"। इसी सेवा धर्मका ही अवलम्बन करके वे नई नई सभ्यता की रचना करते हैं। युग-युगान्तरसे आजतक जिननी सभ्यता परिपूर्णता लाभ कर सकी है उस सबके पीछे है—मेरुदण्ड स्वरूप कितने ही महामानवोंको "त्याग और सेवा"। इस विश्वकी निगाहमें विश्वकवि रवीन्द्रनाथ उसी श्रेणीके एक विमल विभूतिवाले महामानव थे।

रवीन्द्रनाथ बङ्ग साहित्यके एक नवयुग प्रवर्तक थे। इस युगावतारने अपने असीम प्रतिभा-बलसे बङ्ग–वाणीके सुवर्ण प्रदीपके आलोकको और भी उज्वलतम रूप दिया था। वे सिर्फ़ विश्वकवि नहीं थे। वे थे उच्चकोटिके दार्शनिक, स्वदेशप्रेमी और साहित्यिक। भारतके उज्वल आकाशके थे वे, एक देदीप्यमान जगमगाते नक्षत्र, जिसके उज्वल आलोकसे सारा विश्व जगमगाता था। भारतको आवश्यकता थी ऐसे एक चिन्तानायक विश्व कवि तथा विश्व प्रेमी की। परन्तु संसार चक्र कभी समान नहीं चलता, उसके सन्मुख जन्म-मृत्यु नित्यकी साधारण घटनायें हैं। आखिर एक दिन वह काल आगया जिसने भारत के सौभाग्याकाशके इस उज्वल नक्षत्रको अपने विषाद रूपी मेघसे ढक दिया—और उसकी अलौकिक ज्योतिको चिरकाल के लिये मनुष्यकी दृष्टिके अगोचर कर दिया। गत ७ अगस्तको १२ बजकर १३ मिनिटपर वह काल आया जिसने कि सारे भारत वासियोंके मुखपर एक गंभीर शोक रेखा अंकित कर दी। इस महाकविके लिये आज सारा संसार आँसू बहा रहा है; भारत महान् शोक सागरमें निमज्जित है।

बुद्धदेव और चैतन्यदेवका आगमन हुआ था, भारतीयों को एक नये धर्मकी दीक्षा देनेके लिये। रामकृष्ण परमहंस और विवेकानन्द आये थे हिन्दू समाजका आसन जगतकी दृष्टिमें श्रेष्ठतम रूपमें प्रतिष्ठित करनेके लिये। और रवीन्द्रनाथ आये थे मानव जातिको ज्ञानके आलोकसे दीप्त करने तथा संसारको साम्य और मैत्रीका पथ दिखलानेके लिये।

रवीन्द्रनाथ के काव्यसाहित्यकी समालोचनासे यह सिद्धान्त मिलता है कि उन्होंने मनुष्यको कभी विच्छिन्न करके देखनेका कहीं भी प्रयास नहीं किया। उनकी नजरमें इस जगतमें सिर्फ एक ही जाति है और वह है मनुष्य जाति।

"जगत जुड़िया आछे एक जाति"
से जाहिर नाम मानुष जाति"

यही है उनका विश्वप्रेम और विश्व मानवताका व्यापक विचार।

रवीन्द्रनाथकी यह चिन्ताधारा आजके जगतका एक श्रेष्ठ आदर्श है। पश्चिमका सभ्य समाज इस आदर्शको ही साम्यवाद का नाम देता है। वहां भी साम्यवादको श्रेष्ठ आदर्श गिना जाता है। पाश्चात्य देश के इतिहासमें हेगल, मार्क्स और एञ्जेलसूकी इस चिन्ताधाराका क्रमविकास हुआ है, उनके दर्शन और साहित्यके अन्तःस्थलसे, परन्तु रवीन्द्रनाथकी चिन्ताधाराका विकाश हुआ था उनके काव्य साहित्यके अभ्यन्तरसे। उनके काव्य साहित्यमें दर्शननीति, राजनीति, समाजनीति और अर्थनीति इन सबका समन्वय है। इसी वजह से उनका काव्यसाहित्य–जगतमें श्रेष्ठ स्थान रखता है। संसारके सामने इसी कारण रवीन्द्रनाथ विश्व कवि थे।

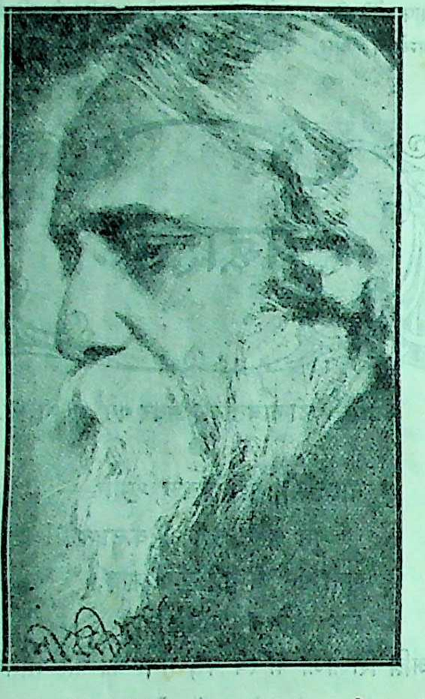

मनुष्य जातिको ही केन्द्र करके रवीन्द्रनाथके काव्यसाहित्य का कर्मजीवन गठित हुआ था। उनकी कार्यसूची ही थी मानव समाजकी सर्वाङ्गीण शिक्षा। इसी पुण्य आदर्शके द्वार ही उन्होंने मनुष्य जातिको उद्बुद्ध किया था। महान आदर्शसे दीक्षित कर्मी के यात्रापथमें उन्होंने जागरण एवं उद्दीपनाकी सृष्टि की थी। निराशाकी जगह आशाका सञ्चार किया था।

रवीन्द्रनाथकी काव्यमाला तथा वन्दना गीति यहीं रुद्ध नहीं हुई। उन्होंने विश्वजनीन सेवाके लिये प्रत्येक सन्तान को आह्वान किया था, क्योंकि सन्तान किसी व्यक्तिविशेषकी सम्पत्ति नहीं है। रवीन्द्रनाथके काव्यमें विश्वप्रेम तथा विश्व-मानवमें प्रगाढ़ विश्वासका निदर्शन अच्छी तरह मिलता है।

● श्री श्रीकृष्णजी मूँधड़ा ●

रवीन्द्रनाथके काव्यसाहित्यकी समालोचनासे विश्वपथमें निस्वार्थभावसे एकाग्र चित्तके साथ आगे बढ़ चलनेका इशारा मिलता है। साहित्यके भीतरसे विश्वकविने जो अमूल्य सम्पदा दान की थी उसी के कारण आज समग्र मनुष्य जातिका व्यक्तिगत जीवन अधिक सुन्दर तथा सुखमय हो उठा है। इन सब महामानवोंका आदर्शवाद आज जगत के श्रेणी विद्वेष की वजह से लुप्त हो रहा है। जो विशाल समाज-शरीर म्लान हो पड़ा है उसीकी सेवा ही विश्वकवि की शिक्षा थी। यहीं है उनकी सार्थकता तथा विश्वप्रेम का परिपूर्ण विकास।

सौ–सौ शताब्दीका श्रेणी स्वार्थ आज श्रेणी-संग्राम का रूपान्तर ग्रहण कर रहा है। मनुष्य आज अनिवार्य रूपसे अन्दर ही अन्दर एक विद्रोहकी घोषणा कर रहा है। इसीसे रवीन्द्रनाथने भी इस अनिवार्य विद्रोहको स्वीकार करके कहा थाः––

"हे मोर दुर्भागा देश, जादेर कोरेछो अपमान,
अपमाने होते होबे सबार समान।"

इस अनिवार्य श्रेणी–संग्रामके फलस्वरूप सर्वत्र जगत् व्यापी एक श्रेणी हीन समाजका संगठन सम्भव होगा। विश्वमैत्रीके पथमें होगा सभ्यता का पुनर्विकास, और सार्थक होगा कविके जीवन का जगत् व्यापी एक जातिके मिलन का मधुर स्वप्न।

यह महामिलनका स्वप्न जगतके मनीषियोंके साथ रवीन्द्रनाथने भी देखा था। इसी वजह भाषाके भीतरसे उसी मिलनके लक्ष्यस्थलमें पहुँचने की एक निर्दिष्ट कर्त्तव्य-सूची उनके काव्य कुञ्जमें परिस्फुट हो उठी थी। मनुष्यके कल्याण और शिक्षा का प्रतीक होकर उनका काव्य साहित्य, समाज शरीरके भीतर आत्मप्रकाश आलोकित कर रहा है। उनके काव्य साहित्यके छन्द–छन्दमें विश्वप्रेम की भाषा फूट उठी है। यही कारण है रवीन्द्रनाथ विश्वसमाजके निकट विश्वकवि और विश्वसमाजके प्रेमी थे।

(पृष्ठ १६ का शेषांश)

ताको मुंशी शाहके भाषणके मुताबिक कार्य करनेको या इसी तरहसे कांग्रेसके आंदोलन में सहायता देनेको कहा। गिरफ्तारी से पूर्व सिकंद्रा राऊके सेकंड ऑफिसरके साथ भी मेरी बातचीत नहीं हुई।

इस्तगासेमें जैसा कहा गया है, वह कालीन और जाज़िम मेरी नहीं है। वह बाबूरामजीकी हैं जिन्हें यहां पर प्रतिवादी की तरफसे साक्षी के तौर पर खड़ा किया गया है—और वह स्वयं यह बात स्वीकार करते हैं।

राजस्थानी संसार

मौसर की राक्षसी प्रथाको बंद करो

उदयपुरमें अभी रामप्रतापजी मोहता की धर्मपत्नी की मृत्यु हो गई–रामप्रतापजीके चार बालबच्चे हैं। साधारण स्थितिके मनुष्य हैं। विशेष पढ़े लिखे नहीं। विश्वसनीय सूत्र से ज्ञात हुआ है कि किसी सज्जनने करिया वर रूपी अमानुषिक प्रथा को बंद करनेके लिये अनुरोध किया तो नानालालजी देवपुरा और नंदलालजी लावठीने उत्तर दिया कि ग़रीब तो करियावर करेगा ही अमीर भले ही न करें।

उपरोक्त दोनों सज्जन राज्यके कर्मचारी हैं और उन्होंने गरीबोंके खून को चूस चूस कर अपने शरीर का पोषण किया है। ऐसी दशामें वर्त्तमान युगधर्म की बात इनके दिमाग पर ठीक इसी प्रकार असर नहीं करती जिस प्रकार चिकने घड़े पर पानी।

उदयपुरके माहेश्वरी समाजमें थोड़े ही सज्जनोंकी आर्थिक दशा ठीक है अन्यथा सबके घरोंकी साधारण स्थिति है। यह भी कह दिया जाय तो अतिशयोक्ति नहीं होगी कि शरीरको स्वस्थ रखनेके लिये दूध, आदि भी प्राप्त नहीं होते। फिर ऐसी जंगली प्रथाओंका पोषण करना कहां तक उचित है।

इस मौसरके अवसरपर कुछ नवयुवक जो सुधारवादी सज्जनोंके सम्पर्कमें आते हैं उन्हें महसूस हो गया है कि वास्तवमें यह प्रथा हमारे जीवनके लिये घातक है। इसीसे प्रेरित होकर श्री मोहनलालजी मूंधड़ा और श्री मदनलालजी धूपड़ने करियावरके भोजन नहीं करनेकी प्रतिज्ञा ली है। अतएव उपरोक्त दोनों युवकोंको इस प्रसंशनीय कार्यके लिये बधाई। साथ ही समाजके अन्य भाइयोंसे भी उपरोक्त नवयुवकोंका अनुकरण करनेकी अपील की जाती है।

संवाददाता

★ राजा कैसा हो ?

[आचार्य कौटिल्यके सुप्रसिद्ध अर्थशास्त्रकी कुछ विचारणीय बातें]

श्री भगवानदासजी केला

प्राक्कथन—

आज-कल बहुतसे आदमियोंको ‘राजा’ शब्द बड़ा अप्रिय मालूम होने लगा है। उन्हें इस शब्दके साथ ही अनियंत्रित और स्वेच्छाचारी सत्ता तथा विविध प्रकारके अत्याचारोंकी कल्पना हो जाती है। इसका कारण यह है कि संसारके दुर्भाग्यसे कितने ही राजाओंने अपने व्यवहारसे लोगोंकी उक्त प्रकारकी धारणा बननेमें सहायता दी है। तथापि स्मरण रहे कि वास्तवमें ‘राजा’ शब्द बहुत कल्याणसूचक है। भारतवर्षके प्राचीन साहित्यमें महाभारत, रघुवंश, उत्तर रामचरित आदिमें बारम्बार यह घोषणा की गयी है कि राजा वह व्यक्ति है जो प्रजाका रंजन करे, अर्थात् उसके सुख, शान्ति और समृद्धिकी व्यवस्था करे।

प्रायः अनुभवमें आता है कि काम क्रोध आदि विकारोंमें ग्रस्त व्यक्ति सदैव दुःखी रहता है, और यदि वह संयोगसे कुछ सत्ताधारी हो, तो वह औरोंके भी दुख का कारण होता है। इस लिए हमारे प्राचीन नीतिकारों ने राजाकी शक्तिको नियँत्रित करने तथा उसे सदाचार-सम्पन्न होने का उपदेश दिया है। उन्हीं का अनुकरण करते हुए राजनीतिज्ञ कौटल्य राज्यके प्रधान सूत्रधार को केवल ‘राजा’ के रूपमें नहीं देखता उसका आदर्श तो उसे ‘राजर्षि’ (King-Philosopher) ही बनाना है। इसके लिए आचार्य कैसे-कैसे नियमों का निर्माण करता है, यह आगे बताया जाता है।

राजा के गुण

आचार्यने राजाके आवश्यक गुणोंका विस्तारपूर्वक उल्लेख किया है। उसके अनुसार राजा को महाकुलीन, धार्मिक, शास्त्र मर्यादा को चाहनेवाला, कृतज्ञ, दृढ़ निश्चयी, विचारशील, दुष्ट पक्ष को त्यागदेनेवाला, निर्भीक, भाषण करनेमें समर्थ, संयमी शत्रुकी विपत्तिमें चढ़ाई करनेवाला, धान्य आदि का ठीक-ठीक विनियोग करनेवाला, दूरदर्शी, उत्साही, संधिके प्रयोग को समझनेवाला, युद्ध करनेमें चतुर, सुपात्रमें दान देनेवाला, प्रजा को कष्ट न पहुंचाते हुए कोषको बढ़ानेवाला, काम-क्रोध-लोभ चपलता और चुगलखोरीसे अलग रहनेवाला, प्रिय बोलनेवाला, वृद्धोंके उपदेश तथा आचार का माननेवाला होना चाहिए। आचार्यके बतलाये हुए राजाके गुणोंमें नैतिक गुण विशेष महत्व के हैं। कुछ गुण तो स्वभाव से होते हैं और कुछ अभ्यास या शिक्षासे प्राप्त होते हैं। जहां तक अभ्यास या शिक्षाका सम्बन्ध है, आचार्यने उक्त गुणोंकी प्राप्ति करानेके प्रयत्नमें कोई कसर उठा नहीं रखी।

गुणोंकी प्राप्ति; राजपुत्रका शिक्षण—

आचार्यने राजकुमारकी शिक्षाका महत्व इन शब्दोंमें प्रकट किया है—“जिस प्रकार घुण (एक प्रकारका कीड़ा जो लकड़ी को भीतरसे खाकर उसे निस्सत्व कर देता है) लगी हुई लकड़ी शीघ्र नष्ट हो जाती है, उसी प्रकार जिस राजकुलके राजकुमार शिक्षित नहीं बनाये जाते, वह राजकुल बिना किसी युद्ध आदिके ही स्वयं नष्ट हो जाता है।” इस बातको भलीभांति ध्यानमें रखते हुए कौटल्यने युवराजकी सुशिक्षा पर बहुत बल दिया है। वह लिखता है कि ‘सुशिक्षा से शिक्षित राजा सम्पूर्ण प्राणियोंके हितमें लगा हुआ तथा प्रजाओंके शिक्षणमें तत्पर रहता हुआ चिरकाल तक निष्कंटक पृथ्वीका उपभोग करता है।’ अतः आचार्य आरम्भसे ही इसकी यथेष्ट व्यवस्था करता है। उसने लिखा है कि (राजपुत्र को) भिन्न-भिन्न विद्याएं उनके योग्य आचार्योंसे प्राप्त करनी चाहिएं, और उनके नियमोंका पालन करना चाहिए। मुंडन संस्कारके बाद अक्षराभ्यास तथा गिनने आदिका विधिपूर्वक अभ्यास करे। उपनयनके अनन्तर सदाचारी विद्वान् आचार्यों से त्रयी और आन्वीक्षकी को, भिन्न-भिन्न विभागोंके अध्यक्षों से वार्ताको, सिद्धान्त और व्यवहार जाननेवालोंसे दंड नीति को सीखे।’

आगे कौटिल्य लिखता है कि ‘सोलह वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचर्य का यथावत पालन करे। इसके अनन्तर गोदान विधिपूर्वक विवाह करे। पश्चात् वह अपने ‘विनय’ (शास्त्र ज्ञान) की वृद्धि के लिए सदैव विद्यावृद्ध पुरुषोंका सहवास किया करे; अनुभवी विद्वान् पुरुषोंकी संगति ही विनयका मूल है।’ यह बात ध्यान देने की है कि शिक्षा-प्राप्तिमें आचार्य संगतिके प्रभावका कितना महत्व मानता है। वास्तवमें किसी मनुष्यका जीवन अच्छा या बुरा होने में संगति का बड़ा भाग होता है।

विशेषतया छोटी उम्रमें जो संस्कार पड़ जाते हैं, वे तो प्रायः अमिट ही होते हैं। इस लिए आचार्य ऐसी व्यवस्था करता है कि राजपुत्रमें उसके जन्मसे ही, नहीं उससे भी पहलेसे, अच्छे संस्कार पड़ें। वह लिखता है कि ‘राजाको यह आवश्यक है कि वह इसका प्रबन्ध कर दे कि जब महारानी ऋतुमती होवे, तब ऋत्विक् इन्द्र और बृहस्पति देवताके उद्देशसे चरुको सिद्ध करे, (इन्द्रको ऐश्वर्यके लिए और बृहस्पतिको विद्या बुद्धिके लिए हविका देना कहा गया है)। जब महारानी गर्भवती होजावे तो शिशु—चिकित्सक गर्भके पुष्ट करने और सुखपूर्वक प्रसव होनेके लिए पूर्ण प्रयत्न करे। महारानीके प्रसूता होजाने पर अर्थात् पुत्र उत्पन्न होजाने पर विद्वान पुरोहित पुत्रका यथोचित संस्कार करें। तदनंतर राजकुमारके समर्थ होजाने पर उन—उन विषयोंके विद्वान उसको भिन्न-भिन्न प्रकार की उचित शिक्षा देवें।

राजपुत्र की दिनचर्या—

सुशिक्षा की प्राप्तिके लिए दिनचर्याका ठीक-ठीक होना बहुत आवश्यक है। अतः कौटिल्य ने इसी प्रसंगमें उसका भी विवेचन किया है। वह लिखता है कि (राजपुत्र) दिन के पहिले भागको हाथी, घोड़े, रथ और अस्त्र-शस्त्र आदि विद्या सम्बन्धी शिक्षाओंमें व्यतीत करे। दिनके पिछले भाग को इतिहास (पुराण, आख्यायिका, प्राचीन वृत्तान्त, धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र) आदि सुननेमें व्यतीत करे। दिन और रातके शेष भागोंको नवीन ज्ञानके ग्रहण और गृहीत ज्ञानके मनन या चिन्तनमें व्यय करे।’

आज-कल बहुतसे राजकुमारोंकी दिनचर्या इस तरहकी है, मानों उन्हें या उनके अभिभावकोंको उनके भावी उत्तरदायित्वका किंचित भी विचार नहीं है। कौटिल्य इस विषयमें यथेष्ठ सतर्क है, उसके विचारोंसे बहुत लाभ उठाया जा सकता है।

इन्द्रिय दमन

सुशिक्षा प्राप्त व्यक्ति प्रायः अपनी इन्द्रियोंको वशमें रखनेवाले होते हैं। तथापि आचार्यको यह आशंका है कि राजकीय ऐश्वर्यमें पला हुआ, विशाल धन—सम्पत्तिका अपने आप को अधिकारी माननेवाला राजा कहीं स्वेच्छाचारी अथवा दुराचारी न होजाय, अथवा इन्द्रियोंका दास होकर अपना एवं प्रजाका हितघातक न बन जाय। इस लिए वह इस विषयमें आदेश करता है कि काम, क्रोध, लोभ, मान, मद, और हर्षके त्यागसे इन्द्रियोंका जय करे; इन्द्रियोंका जय ही विद्या और विनयका हेतु है।’ इन्द्रिय जय का स्पष्टीकरण भी उसने कर दिया है, ‘कर्ण, त्वचा, चक्षु, रसना, और घ्राण इन्द्रियोंको शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध, विषयोंमें प्रवृत्त न होने देना इन्द्रिय जय कहाता है।’ शास्त्रोंमें प्रतिपादित कर्तव्योंका अनुष्ठान भी इन्द्रिय जय है, क्योंकि सम्पूर्ण अर्थशास्त्रका आधार भी इन्द्रिय जय ही है। आचार्य ने अनेक राजाओंके चरित्रोंके उदाहरण देकर यह समझाया है कि शास्त्र विहित कर्तव्योंके विरुद्ध आचरण करनेवाला, इन्द्रिय-परायण राजा, सम्पूर्ण पृथ्वीका अधिपति होता हुआ भी शीघ्र ही नष्ट हो जाता है। और, इस शत्रु षड्वर्गको छोड़कर, जितेन्द्रिय राजा चिरकाल तक इस पृथ्वी का निष्कंटक उपभोग करता है।

कौटिल्यको मनुष्य-स्वभावका अच्छा परिचय है, वह मानवी निर्बलताओंको खूब समझता है, और, उनके लिए समुचित व्यवस्था करनेके लिए यथेष्ठ रूपसे सतर्क है। प्रायः राजकुमारके स्त्री, मद्य, द्यूत और शिकारमें फँसनेकी संभावना होती है; अतः उसको इनसे विरक्त करनेके लिए आचार्य लिखता है कि यदि राजकुमार यौवन मदसे पर-स्त्रियोंमें अपने मनको ले जाता है तो राजा या उसके रक्षकोंको चाहिए कि वे सदा अपवित्र रहनेवाली आर्या (श्रेष्ठ स्त्री) के समान वेष बनाये हुई स्त्रियों के द्वारा, रात्रि के समय एकान्त स्थानमें उसे उद्विग्न करावें; यदि वह मद्यादि पीनेकी कामना करे, तो उसे मद्यमें कोई विरस (जिसका रस बहुत खराब, चित्तको उद्विग्न करनेवाला हो, ऐसी) वस्तु मिलाकर पिलावें। यदि वह जुआ खेलनेकी कामना करता हो, तो उसे कापटिक अर्थात् छल-पूर्वक जुआ खेलनेमें अत्यन्त चतुर पुरुषों के साथ जुआ खिलवाकर खूब उद्विग्न करें। यदि वह मृगया अर्थात् शिकार की कामना रखता हो तो उसे चोरोंका वेष धारण किये हुए पुरुषोंके द्वारा अच्छी तरह खिन्न करें। इन योजनाओं को देखकर आचार्य की कुशाग्र बुद्धि और मनोविज्ञान की अत्यन्त सराहना करनी पड़ती है।

राज्याभिषेक और राजसम्वत्

हिन्दू प्रजातंत्रमें राज्याभिषेक संस्कार चिरकालसे बड़े महत्वका माना जाता रहा है। कौटिल्यने इस संस्कारका उल्लेख कई स्थानों पर किया है। उसने आदेश किया है कि यथेष्ट गुण-सम्पन्न राजपुत्र को ही राजसिंहासन पर अभिषिक्त किया जाय।

प्राचीन शास्त्रकारोंने यह विधान किया है कि यदि कभी संयोगसे ऐसा हो कि एक राजाकी मृत्युके बाद दूसरे शासकका राज्याभिषेक जल्दी ही न हो जाय, तो राज्याभिषेक होनेतकके समयको शासनकाल न माना जाय। अर्थात् कानूनी वर्ष राज्याभिषेकके समयसे माना जाय। कौटिल्यने लिखा है कि ‘राजाके राज्याभिषेक समयसे लगाकर वर्ष, मास, पक्ष, और दिन इन चारोंको ‘व्युष्ट’ कहते हैं।’ इसका तात्पर्य, जैसा कि श्री० उदयवीरजी शास्त्रीने बतलाया है, यही है कि उस राजाके समयमें जो भी कार्य हो, उनके लेखन आदिमें इन चारोंका निर्देश किया जाय, जैसे अमुक राजवर्षके अमुक मास, अमुक पक्ष, और अमुक दिनमें उस पुरुषने इतना धन तथा अन्य कोई पदार्थ दिया, इत्यादि। इस पद्धतिका आज-कल भी पालन किया जाता है।

राजा का व्यवहार

जितेन्द्रिय व्यक्ति ही अपने कार्यों को भलीभांति सम्पादन

लेखककी ‘कौटिल्यकी शासनपद्धति’ नामक नयी रचनाके आधार पर।

कर सकता है, इसलिए कौटिल्य ने राजाके कार्योंका विवेचन करते समय पहले इन्द्रिय-जय विषयपर लिखा है। आगे वह बतलाता है कि '(राजा) वृद्ध विद्वानोंके सहवाससे बुद्धिको विकसित करे, गुप्तचरोंके द्वारा योग और क्षेम सम्पादन करे, राजकीय नियमों द्वारा प्रजाका उसके धर्ममें नियंत्रण करे, विद्या प्रचार द्वारा प्रजाको विनीत और शिक्षित बनावे, आवश्यकतानुसार आर्थिक सहायता देकर प्रजाका प्रिय बना रहे, और प्रजाके हितके साथ ही अपनी लोकयात्रा करे, अर्थात् अपने निजी व्यवहारमें भी प्रजाके हितका ध्यान रखे। इस प्रकार, इन्द्रियोंको वशमें रखता हुआ परस्त्री, परद्रव्य, तथा परहिन्साका सर्वथा परित्याग करे। अनुचित निद्रा, चपलता, मिथ्याभाषण, उद्धतवेष अनर्थकारी कार्यों तथा ऐसे (पुरुषोंके) सहवास को छोड़ दे। अधर्म और अनर्थसे युक्त व्यवहार को भी छोड़ दे।

धर्म, अर्थ और काम का विचार—

अन्य मनुष्यों की भाँति राजाके सामने भी बहुधा यह समस्या उपस्थित हो जाती है कि धर्म, अर्थ और काममें किसे प्रधानता दी जाय। कुछ आदमी धर्म को बहुत अधिक महत्व देते हैं, कुछ काम अर्थात् सुख-भोग की ओर आकर्षित हो जाते है; आधुनिक जगतमें बहुतसे आदमी अर्थ अर्थात् धनके पीछे बे-तहाशा दौड़ रहे है। अतः पाठकोंके मनमें, इस विषयमें कौटिल्यका मत जानने की इच्छा होना स्वाभाविक है। आचार्य लिखता है कि '(राजा) धर्म और अर्थके अनुसारही कामका सेवन करे, सुख-रहित न रहे। अथवा, परस्पर अनुवाद धर्म और कामका बराबर-बराबर सेवन करे, क्योंकि अत्यधिक सेवन किया हुआ इनमें से कोई एक, शेष दोनोंको तथा आत्माको कष्ट पहुँचाता है। इन तीनोंमें अर्थ ही प्रधान है, क्योंकि धर्म और काम अर्थमूलक ही होते हैं, अर्थात् अर्थ ही इन दोनोंका कारण है। इस प्रकार आचार्य न तो चरमसीमाके वैरागके ही पक्षमें है, और न भोग-विलासके ही। वह मध्यम मार्गको ग्रहण करनेका आदेश करता है।

राजाकी दिनचर्या—

आचार्य भलीभाँति अनुभव करता है कि राजाके उन्नतिशील होने पर उसके अमात्य आदि भी उन्नतिशील होते हैं। यदि राजा प्रमादी हो जाय तो वे भी प्रमाद करने लगते हैं और राजकार्यों को नष्ट कर देते हैं; इस प्रकार का राजा शत्रुओं से सदा धोखा खाता है।' इसलिए उसका आदेश है कि 'राजा को सदैव अपने आपको उन्नतिशील बनाने का यत्न करते रहना चाहिए।' इसी विचार से राजाके कार्य-विभागके सुभीतेके वास्ते, दिन और रातके समयको आठ-आठ भागोंमें विभक्त करते हुए वह लिखता है कि दिनके पहले आठवें हिस्सेमें राज्य की रक्षा सम्बन्धी बातें तथा पिछले दिनके आय-व्यय को सुने; दूसरे हिस्सेमें 'पौर जानपद' के कार्य का निरीक्षण करे; तीसरे हिस्सेमें स्नान तथा भोजनादि करे और कुछ स्वाध्याय भी करे, चौथे हिस्सेमें पिछले दिनके शेष धन को सँभाले, और भिन्न-भिन्न कार्यों पर अध्यक्ष आदिकी नियुक्ति करनी हो तो करे; पांचवें हिस्सेमें मंत्रिपरिषदके साथ पत्र आदि भेजकर आवश्यक विषयों पर विचार करे तथा, गुप्तचरोंके कार्य तथा अन्य जानने योग्य गुप्त बातोंको सुने; छठे हिस्सेमें इच्छानुसार विहार अथवा मंत्रणा करे; सातवें हिस्सेमें हाथी, घोड़े, रथ, तथा हथियारों का निरीक्षण करे; आठवें हिस्सेमें सेनापतिको साथ लेकर युद्ध आदिके सम्बन्धमें विचार करे। दिन के समाप्त होजाने पर सायंकालके समय संध्योपासना करे।'

'राजा रात्रिके प्रथम भागमें गूढ़ पुरुषोंको देखे; दूसरे भागमें स्नान भोजन तथा स्वाध्याय करे; तीसरे भागमें गाना बजाना आदि सुनता हुआ सो जावे, तथा पूरे चौथे और पांचवें भागमें शयन करे; छठे भागमें बाजे आदिके शब्दसे उठकर शास्त्र तथा दिनमें किये जानेवाले कार्योंका चिन्तन करे; सातवें भागमें मंत्र अर्थात् गूढ बातों पर विचार करे, और गूढ़ पुरुषोंको जहां भेजना हो, वहाँ भेजे; आठवें भागमें वह ऋत्विक आचार्य और पुरोहितोंके साथ-साथ स्वस्तिवाचन तथा मांगलिक मंत्रपाठोंके सहित आशीर्वाद ग्रहण करे, और चिकित्सक, माहानासिक (राजकीय पाकशाला निरीक्षक) तथा मौहूर्तिक (ज्योतिषी) से मिले। पश्चात् राजा बछड़े सहित गाय और बैल की प्रदक्षिणा करके दरबारमें जाय। शक्ति और अनुकूलताके अनुसार राजा दिन-रातके इस समय-विभागमें परिवर्तन कर सकता है।

ऐसी दिनचर्या वाले राजाको कौन आरामतलब या विलासी कह सकता है? परन्तु कितने राजा ऐसा कर्तव्यनिष्ठ जीवन व्यतीत करते हैं? निस्सन्देह, आचार्यके कथनानुसार दिनचर्या रखनेवाले राजाके लिए शासन कार्य इतना अधिकारोपयोग का प्रश्न नहीं रहता, जितना कर्तव्य-पालनका हो जाता है। यह ऐश्वर्य कांटोंके मुकुटके समान है, जो केवल सेवा भावसे ग्रहण किया जाय।

राजा का नियंत्रण

यद्यपि कौटिल्यने विविध नियमोंद्वारा राजाको संयमी और कर्तव्यमय जीवन व्यतीत करनेवाला बनाया है, तथापि वह अनुभव करता है कि मनुष्य आखिर मनुष्य ही है। वह जटिल या आकर्षक परिस्थितियोंमें कर्तव्य-भ्रष्ट हो सकता है। और क्योंकि राजा की थोड़सी गलतीसे बहुत अनिष्ट होजाने, प्रजाके बहुत पीडित होने की सम्भावना है, अतः कौटिल्य राजाको समुचित रूपसे नियंत्रित करता है। वह लिखता है कि राजा आचार्यों और अमात्यों को अपनी मर्यादा अर्थात् सीमा बनावे, जो उसे बुराइयों की ओरसे रोक सकें। अन्तःपुर आदि एकान्त स्थानोंमें प्रमाद करते हुए राजाको आचार्य अमात्य आदि उसकी दिनचर्या अर्थात् समय-विभागके हिसाबसे, समय का अपव्यय दिखाकर सावचेत करें। यही नहीं, आचार्य कौटिल्य यह स्पष्ट आदेश करता है कि वह पुरोहित का इस प्रकार अनुगामी रहे, जैसे कि शिष्य आचार्य का, पुत्र पिता का और भृत्य स्वामी का होता है।

लोकमतका प्रभाव—

राजा पर प्रभाव डालने वाली और उसको नियंत्रित करने वाली मुख्य संस्था मंत्रिपरिषद और पौर जानपद थी। (इनके विषयमें कुछ विचार प्रकट करनेके लिए एक स्वतंत्र लेखकी ही आवश्यकता है।) इनके अतिरिक्त उस पर लोकमत का भी अच्छा प्रभाव पड़ता था। अन्यान्य व्यक्तियोंमें उसे संन्यासियों और ब्राह्मणों द्वारा बहुत-कुछ नियंत्रित रहना पड़ता था। संन्यासी सांसारिक प्रलोभनों तथ भय आदिसे मुक्त होनेके कारण राजाको निर्भीकतापूर्वक उपदेश कर सकते थे। राजाकी कोई मजाल न थी कि उनके निःस्वार्थ भावसे दिये हुए आदेशोंकी अवहेलना कर सके। यही बात ब्राह्मणोंके विषयमें कही जा सकती है; क्योंकि वे निर्लोभी होते थे, धन या राजकीय पदके भूखे न रहते थे; विद्याध्ययन और ज्ञान-दान तथा परोपकार उनके जीवनका व्रत रहता था। इसलिए राजा उनकी बात सुनी-अनसुनी नहीं कर सकता थी। और, क्योंकि ब्राह्मण प्रत्येक नगर और गांवमें रहते थ, तथा अन्य गृहस्थियोंसे रोजमर्राके व्यवहारमें मिलते रहते थे, वे लोकमतको ऐसा बनाये रखनेमें यथेष्ट सहायक होते थे कि राजा अनियंत्रित न रह सके। कौटिल्य राजाको सावचेत करता है कि "अज्ञानतापूर्वक, अथवा काम या क्रोधके कारण अनुचित रीतिसे प्रयुक्त राजशक्ति वानप्रस्थ और परिव्राजक जैसे निस्पृह व्यक्तियोंको भी कुपित कर देती है। फिर गृहस्थोंका तो कहना ही क्या है।"

ये बातें सभी शासकोंके लिए विचारणीय हैं। और क्योंकि आचार्य कौटिल्य एक भारतीय विद्वान और शासन सूत्रधार था, और उसने अपने ग्रन्थकी रचना भारतीय संस्कृति और शास्त्रोंके आधारपर की है, अतः भारतीय नरेशोंपर तो उसके कथनको अमलमें लानेका विशेष उत्तरदायित्व है। भारतवर्षमें इस समय छोटी बड़ी लगभग छः सौ रियासतें हैं जिनका क्षेत्रफल सात लाख वर्ग मीलसे अधिक और जनसंख्या लगभग नौ करोड़से ऊपर हैं। यदि इन रियासतोंके राजे महाराजे इन बातों पर समुचित ध्यान दें तो वे भारतमाताके भविष्यको उज्वल बनानेमें कितने सहायक हो सकते हैं। क्या वे स्वेच्छासे विचार करेंगे, अथवा उस समयकी प्रतीक्षा करेंगे, जब वे परिस्थिति वश विचार करनेके लिए बाध्य किये जायेंगे?

इधर किसीका ध्यान नहीं!

★

चन्द्रकान्त

कुछ पेंतालीसके ऊपरके बालक बनड़े तीन-चार बार दूल्हा बन चुके हैं पर अभी तक शौक पूरा नहीं हुआ। नई दुलहिनोंकी तलाशमें ही रहते हैं। दुलहिनोंका बाज़ार इन्हींकी बदोलत डबल कोरा सूतकी तरह चढ़ गया है। भाई हमारी रायमें तो बुढ़ापेमें इस शौकसे तौबा करनी चाहिए। पर इधर किसीका ध्यान ही नहीं।

+ + +

इधर कुमारी लड़कियोंको वर नहीं मिलते इस लिये लड़कोंके पिताओंने पढ़े-लिखे लड़कोंके भाव पन्द्रह-बीस हज़ार तक चढ़ा दिये हैं। हमारी रायमें कन्याओंके पिताओं को जब यह भाव नहीं पुसाते तो उन्हें हमारी नयी योजनाकी इन्तज़ार करनी चाहिए जिसके अमलमें आ जानेसे भाव आपसे आप उतर जायंगे। पर इधर किसीका ध्यान ही नहीं।

+ + +

कुछ स्त्रियां लंहगा फडकी बोर पहिनकर हाथमें रिस्टवॉच लगाती हैं। भाई, हमें तो यह बड़ा बेढबसा मालूम होता है। हम कहते हैं कि यदि आपको रिस्टवॉचका शौक है तो यह बोर इत्यादि छोड़ देना चाहिए। पर इधर किसीका ध्यान ही नहीं।

+ + + +

भाई! यदि आप सार्वजनिक कार्य ही करना चाहते हैं तो एक कार्यको हाथमें लेकर उसे सफल करके दिखलाइए, ऐसा करनेसे जनता पर अच्छा असर होगा और आपके हृदयको भी संतोष मिलेगा। अपनी सेवाओंको सन्मान और नेतागिरीका नुस्खा मत बनाइये। पर इधर किसीका ध्यान ही नहीं।

× × ×

समाजके युवकोंका संगठन शिथिल पड़ गया है। यह शिथिलता वृद्धोंका चिन्ह हैं, युवकोंका नहीं। परन्तु युवक अपने-अपने धन्धेमें ही मशगूल हैं। युवकोंके अपनी जिम्मेदारियोंको भूलनेसे काम नहीं चलेगा। पर इधर किसीका ध्यान ही नहीं।

+ + +

बड़ी तीज हर साल आती है और चली जाती है। स्त्रियां दो-तीन मास पहलेसे उसकी तय्यारी शुरू कर देती हैं। लेकिन तीजके इस आने-जानेमें केवल सेतुका ही खर्च नहीं होता। और भी कितने ही रुपयोंपर पानी फिर जाता है। हमारी राय है कि स्त्रियोंको इकानमी करनी चाहिए। मगर इधर किसीका ध्यान ही नहीं।

× × ×

प्रेम क्या चीज़ है यह बहुत कम लोग जानते हैं। स्त्री के प्रति पतिका, बहनके प्रति भाईका, पुत्रके प्रति पिताका और मित्रके प्रति मित्रका जो सात्विक प्रेम है, वह सबको

(शेष पृष्ठ १४ के कालम ३ पर)

विवाह— महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था

[हमारी सामाजिक प्रणालियोंमें विवाह संस्था न सिर्फ हमारे समाजमें बल्कि पश्चिममें भी एक अत्यंत चर्चास्पद प्रश्न बन गया है। माहेश्वरीके पृष्ठोंपर भी हम बहुत बार इस प्रश्नकी चर्चा कर चुके हैं। फिर भी हमारा मंतव्य है कि वैसी चर्चाएं इस संस्थाको समझानेमें तथा उस पर अपना बुद्धिपूर्ण निर्णय बनानेमें हमें अधिक सहायता नहीं दे सकतीं। वैसा विचार निर्णय बनानेसे पहिले, जीव विद्या, मनोविज्ञान, और अन्य सामाजिक दृष्टिकोणोंसे भी उसकी पूरी चर्चा करनी होगी, और शीघ्र ही हम ऐसी चर्चाओं पर ध्यान देने वाले हैं। इस संबंधमें हम एक लेख माला प्रकाशित करनेका आयोजन कर रहे हैं, जिसमें दुनियाके अग्रगण्य विचारकोंके विवाह संबन्धी विचार प्रगट होंगे—प्रस्तुत लेख उसी लेखमालाका प्रथम लेख है। इन विद्वान् विचारकोंमें मनोवैज्ञानिक, लैङ्गिक शास्त्र विशारद, जीवशास्त्रज्ञ, समाजशास्त्री और इसी तरह ज्ञानके विभिन्न क्षेत्रोंमें विचरण करनेवाले अन्य पंडितोंका समावेश होगा जो इस संस्था पर बोलनेके लिये प्रामाणिक गिने जाते हैं। जिन परिस्थितियोंके बीचमें उन्होंने इसका अध्ययन किया है वह अवश्य ही हमारी परिस्थितियोंसे भिन्न हैं और इसी प्रकार दोनोंके दृष्टि कोणोंमें भी अन्तर है। लेकिन यह समझ लेना हमारे लिये आवश्यक है कि जिन चीजोंको हम पकड़े हुए हैं वे क्या सही हैं? एक बात और भी याद रखनी चाहिये कि विवाह एक मानव संस्था है जिसकी बुनियाद मनुष्यकी कुछ मूलभूत अनुभूतियोंमें जमी हुई है। ये अनुभूतियां भौगोलिक सीमाओंका भेद नहीं जानतीं इस लिये यह समस्त मनुष्योंके रसका विषय बन जाता है। इस लिये ऊपर बताई गई कुछ विभिन्नताओंके होने पर भी ये विचारक हमारे पाठकोंको 'विवाह' को समझाने में एवं इस पर बुद्धिपूर्ण विचार-निर्णय बनानेमें अवश्य ही सहायक होंगे। अपने पाठकोंसे हम अनुरोध करते हैं कि वे इन लेखोंको ध्यानपूर्वक तथा मनन करते हुए पढ़ें, और आशा रखते हैं कि ये लेख उन्हें रसप्रद और शिक्षात्मक प्रतीत होंगे।

प्रस्तुत लेख एक प्रसिद्ध अमेरिकन मनोवैज्ञानिक तथा लैङ्गिकशास्त्र विशारद की कलमसे लिखा गया है, जो इस विषयमें अपने अकाट्य परंतु वास्तविक और बुद्धिवादी विचारोंसे सारे संसारमें मशहूर हैं। यह लेख लेखककी एक अतिशय रसप्रद और प्रख्यात पुस्तक "आजके नवयुवकोंका विद्रोह" के कुछ सारतत्वोंका संग्रह है, जो कि सुस्पष्ट, बुद्धिवादी और विचार प्रेरक हैं। हमें विश्वास है कि हमारे पाठक भी इन्हें वैसा ही पायेंगे।

—सं०]

जज बेन लिण्डसे

हमारी एक सामाजिक संस्थाके विषयमें मैं आज लिख रहा हूं जो शायद एक कठोर आलोचना पूर्ण, निषेधात्मक तथा विनाशात्मक प्रतीत हो। मैं जीवनके यंत्रमें पीसे जाते हुए नव शिशुओं, किशोरों और प्रौढ़ोंको जब प्रतिदिन देखता हूं-तब मुझसे ज्यादा देर तक चुप रहा नहीं जाता और अपने कथनको कुछ नरम बनाना मुझे असंभव-सा प्रतीत होता है। इतना होनेपर भी मुझे इसका परिणाम रचनात्मक ही प्रतीत होता है। मनुष्य समाज आज जिन रोगोंका शिकार हुआ है वे वास्तवमें दुःखोत्पादक हैं और मेरा विश्वास है कि यह यंत्रणायें उस परिवर्तनकी ही यन्त्रणा हैं जो अभी पूर्ण हुए नहीं दीख रहे। और तथ्यों की तरफ संकेत करनेका एक यह भी कारण है कि मुझे आशा होती है कि सचाईको बुद्धिपूर्वक समझकर सम्भव है हम अपने सामाजिक विकासको इतना द्रुतगामी कर दें कि मन्द गतिसे आनेवाली शताब्दियोंके बजाय जल्दी-जल्दी चलनेवाली दशाब्दियां कमसे कम कुछ परिवर्त्तनके लिये तो काफ़ी हो ही जायें।

मैं इनके सही हल देनेका प्रयत्न नहीं कर रहा। मेरे पास इसकी कोई अचूक दवा नहीं है। फिर भी मुझे यकीन है कि यदि मनुष्य समाज अपने रोग का निदान करवाये, और उससे संबंध रखनेवाली कुछ चीजोंको स्पष्ट रूपसे समझे, तब हमारी राष्ट्रीय-बुद्धि—या इस तत्वको हम कुछ ही कहें—इसके सही हलको ढूंढ निकालनेके लिये ज़रूर प्रयत्न करेंगी।

मनुष्य समाजमें थोड़े ही कालमें इसके द्वारा जो परिवर्तन लाया जा सकता है उसके बारेमें पूर्व निर्देश तथा भविष्य कथन करने से पहले यह अधिक महत्वपूर्ण है कि हम वर्तमान समाज रचना की कुछ सचाईयों को समझ लें। क्योंकि इस की जानकारी से हम उसके परिणामोंको जल्दी पा सकते हैं और यदि इसी तरह मायावी ढंगसे हम सचाईके अज्ञानमें ही इधर उधर भटका करेंगे, तब तो इससे हमारे अपने विकासमें विलंब होगा और मनुष्य के दुःखों के भोग काल में व्यर्थ ही इतनी वृद्धि होगी। किसी चीज़को समझना और उसके तथ्योंको स्वीकार करना भी एक सुधारका तरीका है। इसी लिये स्पष्टताके साथ हम इसपर विचार करेंगे।

सबसे प्रथम मैं पाठकोंको यह विश्वास दिलाना चाहता हूं कि मेरा विवाह में विश्वास है और मेरी यह अभिलाषा है कि विवाहका अर्थ एक स्त्री और एक पुरुषका प्रेम हो जिसमें पूर्ण अविरोध और सहचार की वृत्ति हो। यदि ऐसा नहीं है तब उसे मैं विवाह नहीं कह सकता, चाहे यह विवाह, संस्कारसे संपन्न हुआ हो या न हो, इस चीज़का मेरे लिये कोई महत्व नहीं। एक पुरुषका दूसरी स्त्रीके लिये जो प्रेम है उसे हम विवाह कहते हैं; किसी अन्य चीज़को नहीं। विवाह संस्कार का केवल यही मतलब है कि पुरुष और स्त्री जो इस प्रकारके संबंधसे संबंधित हैं उन्हें उसकी जनतासे अनुमति मिले, और समाजके लिये यह एक बाहरी पहिचान है कि उक्त संबंध स्त्री-पुरुषके बीचमें कायम है। यदि भविष्यमें ऐसा संबंध कहीं टूट भी जाय तब भी समाजको इस बारेमें कपोल कल्पित बातें जारी रखने का कोई कारण हो यह मेरी समझमें नहीं आता।

लेकिन समाज वैसी कल्पित बातें फिर भी ज़िन्दा रखता है—उस हद तक जारी रखता है कि दोनों पक्षों को लग्न बंधनसे केवल इसी कारण मुक्त नहीं होने दिया जाता कि वे अपनी स्वतंत्रता चाहते हैं। इस प्रकारका समझौता एक "प्रपंच" समझ लिया जाता है और प्रत्येक तलाकके अभियोगके प्रसंगमें इस बातको पृष्ठ भुमिकामें रक्खा जाता है। इसके लिये एक या दूसरा, या दोनों ही व्यभिचार, अत्याचार या उसी तरहके अन्य निन्दनीय आचरणसे दोषित हो ऐसी जानबूझकर बनाई गई गवाहियोंको बतलानेके और इस तरह एक दूसरसे रिश्ता तोडनेके बजाय—समाजकी गलियोंमें खडे होकर एक दूसरे पर दोषारोपण करना यह दोनोंके लिये ही बहुत बार असंभव-सा हो जाता है।

एक प्रणाली जो इस प्रकारकी कपोल-कल्पित बातोंसे रक्षित और टिकी हुई है उसे परिपूर्ण और अपरिवर्त्य मानना बड़ी भयंकर बात होगी। इस लिये विवाह संस्थाको जब तक इतनी लचकीली न बना लिया जाय कि समाज में रहनेवाले व्यक्तियों को सुख और स्वतंत्रता देनेमें वह सहायक सिद्ध हो सके तब तक स्त्री पुरुषोंका एक ऐसा वर्ग बढ़ता ही जायगा जो उस संस्थाको एक प्रकारके असह्य जुएका बोझ ही समझेगा और उसे हरेक उपायसे दूर करनेकी कोशिश करेगा। इसके विषयमें कुछ लिखना बड़े दुर्भाग्य की बात है और उसकी यहां कोई जरूरत भी नहीं।

मैं इस बातको स्वीकार करनेसे बच नहीं सकता कि यदि विवाह संस्थाको समाजके जनसाधारणका सहयोग प्राप्त करना है और उसके परिणामोंको उसके दावोंके साथ खरा उतरना है, तथा उसके द्वारा जो कष्ट हो रहे हैं—उसके मूलमें वर्तमान कठोर नियम ही जिम्मेवार हैं—इन सबके लिये उसे उत्तरदायी होना पड़ेगा। मैं इस सत्यकी चुपचाप अवहेलना नहीं कर सकता कि विवाह संस्था मनुष्यके सुख और कल्याण के हेतु बनायी गई है, न कि मनुष्य इसके लिये बनाया गया है। विवाह अपने आपमें एक साधन है, साध्य हरगिज नहीं। जब जूता हमारे पैरमें बैठता नहीं तब जूतेको हम बदल देते हैं, पैर को नहीं। विवाहकी संभावित दुर्भावनासे बचनेके लिये जो ब्रह्मचर्यका विकल्प बताते हैं—मेरी समझमें वह बिलकुल फिजूल-सा है क्योंकि लोग उसे कभी भी अपना नहीं सकते और शायद अपना लें तब भी इस "आवश्यक अनुभुति" के वशीभूत होकर उसे छोड देंगे।

इतना होनेपर भी मैं यह नहीं कहना चाहता कि विवाह एक असफलता है, और मुक्त प्रेम या किन्हीं दूसरे सामाजिक वादोंको अपनी जगह देकर उसे दूर हो जाना चाहिये। यह संस्था कितनी ही अपूर्ण क्यों न हो हम इसके बिना चल नहीं सकते। उसके नियमोंमें स्वस्थ तथा जागरूक परिवर्तन लाकर हमें उसे बचा लेना चाहिये, ताकि वह लोगोंके जीवनमें सुख की अनुभूति पैदा करे, और योग्य परिस्थितिमें ऐसा किया भी जा सकता है। मुझे विवाह संस्थाकी उपकारक संभावनाओंमें अपरिमित विश्वास है लेकिन इस तथ्य की भी मैं उपेक्षा नहीं कर सकता कि उसे हम उन संभावनाओंकी पूर्तिके लिये अनुमति नहीं दे रहे।

इस लिये समाजमें इस संस्था पर जो कुछ हो रहा है उसे देखकर मुझे भय नहीं लगता। और सच कहा जाय तो यह जितना जल्दी होवे उतना ही अच्छा है। मैं विवाह संस्थाको जरूरी समझता हूं और इसे नष्ट करनेके बजाय उसके स्थानमें काम दे सकें वैसे कुछ परिवर्तनोंके पक्षमें क्यों हूं—यह समझाने के लिये मैंने अबतक काफ़ी परिश्रम किया है। वे परिवर्तन क्या क्या हैं, इसका जिक्र मैं यहां नहीं करना चाहता। वे भविष्यसे ताल्लुक रखते हैं और भविष्य ही उसके लिये जिम्मेवार होगा चाहे

वे कैसे भी क्यों न हों। लेकिन इतना होनेपर भी इस नयी विश्वरचनामें स्त्रियोंकी आर्थिक स्वतंत्रता, जो आज पनप रही है, संतति नियमन, पारस्परिक अनुमतिसे किया गया तलाक, जिसे हमारे कानूनने अबतक मंज़ूरी नहीं दी लेकिन युरोपमें जो साधारण-सा गिना जाता है—अवश्य स्थान पायेंगे। यह अमेरिकाकी परिस्थितियोंसे संबंध रखता है।

इन परिवर्तनोंके आसपास जो भय छिपा हुआ है वह स्पष्ट है, मैं उसे कम करनी नहीं चाहता। मनुष्य समाजने जहां तक जाना है लैङ्गिक अनुभूति एक जबरदस्त अनुभूति है। इसका समुचित प्रयोग यदि न किया जाय तो दूसरी अनुभूतियोंकी अपेक्षा समाजके लिये यह कहीं ज्यादा खतरनाक सिद्ध हो सकती है। इस लिये, वैवाहिक नियमोंमें परिवर्तनकी बात सुनकर जो लोग डर गये हैं उनके भयको हम आसानीसे समझ सकते हैं, क्योंकि वे समझते हैं कि वैसा परिवर्तन मुक्त प्रेमका—अर्थात् अनियंत्रित, उन्मुक्त और असंयत व्यभिचार का रास्ता-खोल देगा। उनका भय इस विश्वास पर टिका है कि मनुष्य जातिमें स्थिरता तथा बुद्धिका इतना अभाव होगया है कि यदि उसे लैङ्गिक स्वतंत्रता दी जाय तो उसे वह व्यभिचारमें परिणत करेगी।

इस बारेमें मैं जो कुछ कहना चाहता हूं वह यह है कि वह मनुष्य, जिसपर कोई बाह्य नियंत्रण रखा गया हो स्वाभाविक तौर पर ही विपरीत रास्ता चुनता है। लेकिन जब उन्हें चुनावके लिये उचित स्वतंत्रता दी जाती है तब उनका झुकाव सही मार्ग को पकड़नेका ही होता है। लैंगिक संबंधमें मैं इस बातको दूसरी बातोंके समान ही सत्य मानता हूं।

इस संबंधमें मुझे एक बात यह भी कहनी है कि मुक्त प्रेम तथा विवाहमें एक चीज समान रूपसे काम कर रही है और वह यह है कि दोनों ही एक प्रकारके अनुत्तरदायित्त्वको उत्तेजित करते हैं। मुक्त प्रेममें सन्निहित अनुत्तरदायित्वको तो हरेक देख सकता है, लेकिन विवाहमें यह किस प्रकार प्रविष्ट होता है इसे समझनेके लिये हमें उसे बहुत नज़दीकसे देखना होगा। विवाहमें अनुत्तरदायित्व तब आ जाता है जब कि विवाहको हम एक आखिरी स्वरूपमें समझने लगते हैं। पति और पत्नी एक दूसरे पर जो इस तरह दुःखका बोझा लाद रहे हैं इसके लिये दूसरा एक भी कारण नहीं मिलता सिवाय एक कानूनके जो उन्हें ऐसा करनेके लिये बल देता है और जिससे बड़ी मुश्किलसे छूटा जा सकता है। कुछ धर्म और देशोंने तलाकके लिये कोई गुंजायश न रखकर परिस्थितिको और भी खराब बनाया है; वे तलाकसे संपर्क रखनेवाली दोनों पार्टियोंके उसके बाद शान्त जीवन बितानेके अधिकारको अस्वीकार करते हैं। इस प्रकार उत्तरोत्तर अनुतरदायित्त्व पैदा होता जाता है और इस तरह, विवाह नियमोंकी कठोरता ही वर्तमान मुक्त प्रेममें आमफहम कारण है। गर्भपात या इसी तरहकी अन्य भयंकर बुराईयां भी इसीसे पैदा हुई हैं।

यह बात बिल्कुल स्पष्ट-सी है कि वर्तमान विवाह लोगोंके लिये नरककी यंत्रणा देने वाला बन गया है।

मैं चुनौतीके साथ किसीको भी कह सकता हूं कि वह आये और भग्न जीवन, दुःखी स्त्री-पुरुषों, अभागे, गृहहीन और तिरस्कृत बालकोंके जुलूसको—जो मेरी अदालतमें आ रहा है—देखे और बतावे कि क्या वह किसी दूसरे नतीजे पर पहुंच सकता है? यह नरक है क्योंकि यह एक स्वेच्छाचारी की तरह उन मानवोंकी स्वाधीनता अपहरण करता है, जो उसके बंधनसे छूटना चाहते हैं क्योंकि उनकी प्रकृतिमें रही हुई एक पुनीततम अनुभूति उन्हें वैसा करनेसे रोकती है।

मैं विवाहको एक धार्मिक अनुष्ठान माननेके लिये पूर्णतया तैयार हूं ठीक उसी प्रकार जैसे कि एक पोशाककी कीमत अदा करनेके समझौतेको एक धार्मिक कृत्य समझता हूं। यदि मैं ईमानदार हूं और कीमत अदा कर सकता हूं तो जरूर करूंगा। और यदि मैं सम्माननीय हूं तो मैं अपनी योग्यताके अनुसार एक अच्छा पति होऊंगा। इन अर्थोंमें संपूर्ण सद्व्यवहार धार्मिक हैं। परंतु विवाहके संबंधमें इस प्रकारका आध्यात्मिक विचार कि वह स्वर्गमें भी जहां कि स्वयं कोई विवाह संस्थायें नहीं हैं— दर्ज हो चुका है, बिलकुल जुदा चीज है। हमें जितना जल्दी संभव हो इस प्रकारके विचारसे मुक्त हो जाना चाहिये।

विवाहके आध्यात्मिक विचारके साथ ही यह विचार भी रहता है कि प्रेम और कानूनी विवाह आवश्यक रूपसे एक ही हैं। यह जरूर सच है कि उनमें एक अत्यंत स्पष्ट संबंध है और वे अपने आपको उन स्त्री पुरुषोंके जीवनमें जो परस्पर प्रेम करते हैं और संन्तानोत्पत्तिका इरादा रखते हैं पूर्ण औचित्यसे मिला देते हैं।

हमें प्रमाद और निष्क्रिय आत्मसंतोषसे उत्तेजित करनेके लिये कुछ आघातोंकी ज़रूरत है। अनुदार और रूढ़ीवादी लोग इन आघातोंमें भी वैसा ही रस लेते हैं जैसा कि शीतल स्नानकी पहली कंपकपीमें। वे लोग आराम चाहते हैं और यदि चुप्पी और ढोंग उन्हें आराम पहुंचा सकते हैं तब वे उसीका पालन करते हैं। यदि सत्य हममेंसे अधिकांशको इतनी अधिक चोट पहुंचाता है कि हम नहीं चाहते कि वह प्रकट हो तो वह उन्हें उससे भी अधिक दुःख देता है जो लोग उसे बताने का साहस करते हैं। मैं जिस चीज़का समर्थन कर रहा हुं वह न्याय है,—वह न्याय जिससे आजतक मानव समाज वंचित रहा है। न्यायाधीश के पद पर बैठकर इस लंबे जीवनमें जो न्याय मैंने देखे हैं उन्होंने मेरे अंदर इतना घोर असंतोष भर दिया है कि वह दबा नहीं रह सकता। इन अन्यायोंके विरुद्ध आंदोलन करनेके लिये मैंने अत्यंत स्पष्ट शब्दोंका प्रयोग किया है जो कि अत्यंत आवश्यक है।

मैं जो अपने वर्तमान सामाजिक मान और प्रथाओंकी आलोचना करता हूं वह इस लिये नहीं कि मैं उनके खिलाफ हूं, बल्कि इस लिये कि मैं उनके पक्षमें हूं। और यही नहीं बल्कि इस लिये भी कि उनमें अंधविश्वास और अज्ञान इतना अधिक घुस गया है और प्रायः वे इतने पुराने और जीर्ण-शीर्ण हो गये हैं कि बहुत हद तक निकम्मे हो गये है। उनके पुनरावर्तनके लिये सामान्य ज्ञान और तर्क की कसौटी पर कसे बिना उन्हें स्वीकार करके, उनका हमने गलत प्रतिपादन किया है। फलतः हम बहुतसे जादूके तरीकोंकी तरह उन्हें स्वयं उद्देश्य समझने लगे हैं और जो आदर्श किसी समय उनके पीछे थे उन्हें पूरा करनेके बजाय जान बूझकर बहुत हद तक नष्ट करने लगे हैं। इस प्रकार हमारे बहुतसे अत्यन्त आवश्यक रिवाज अनाचारके कारण बन रहे हैं जबकि मूलतः उनका उद्देश्य सदाचार था; और इसीसे हमारा सामाजिक वृक्ष न्यायके मधुर फलोंके स्थानपर अन्यायके कड़वे फलोंसे लद गया है। उदाहरणके तौर पर इसी विवाह संस्थाको लीजिये जो संसारकी सबसे अधिक आधारभूत संस्था है, जो ऐसा साधन है जो समझदारीसे प्रयोग करनेपर जातिको पुनर्जीवित और रक्षित कर सकता है। यह कितने सार्वभौम दुःख की बात है कि इस प्रकारकी संस्थाको बगीचेमें लगी घासकी तरहसे अनियमित रूपसे बढ़ने दिया जा रहा है! इस प्रकार की उपेक्षाके खिलाफ विरोध करना निश्चित रूपसे उसका बहिष्कार करना नहीं, बल्कि उसकी संभावनाओंमें प्रगाढ़ विश्वास दिखाना है। आजके नवयुवक विवाह संस्थामें बड़ी उग्रता से परिवर्तन कर रहे हैं। इनमें से कुछ परिवर्तन तो अबुद्धिमत्तापूर्ण हैं, लेकिन इलाज क्या है? नवयुवकोंको इन खतरों से सावधान रहने की प्रेरणा कैसे दी जा सकती है? नवयुवकोंसे बनावटी शत्रुता तथा भयंकर असहिष्णुता रखनेसे क्या यह संभव है? नहीं, इससे केवल चुनौती और असहनशीलता ही उनमें पैदा हो सकती है। और इसका क्या यह इलाज नहीं है कि हम उनसे खुल कर चर्चा करें, सलाह दें और उनसे सहानुभूति प्रदर्शित करें? निस्संदेह, यहां पर मतभेदका कोई कारण नहीं है।

इन बुराइयोंके विषयमें रोष और तिरस्कारको प्रगट किये बिना लिखना कठिन है — जो आवांच्छनीय भी है। मैंने इस चीज़को टालनेकी पूरी कोशिश की है फिर भी यदि कहीं कहीं मैं इस बारेमें असफल रहा हुं तब भी मुझे आशा है कि कमसे कम मैंने यह स्पष्ट कर दिया है कि दूसरे व्यक्तियोंके समान मैं भी आवश्यक प्रथा और परिपाटियोंके पक्षमें हूं। मैं भी विवाह, सदाचार और सतीत्व आदि का उतना ही समर्थन करता हुं जितना कि दूसरा कोई कर सकता है। मैं इनका इसी अर्थमें समर्थक हुं और इसी कारण इनका विरोध करता हुं, जब कि उनके नामपर हमारे सामने कई तरहके पाखंड प्रदर्शित किये जाते हैं।

["Revolt of the modern youth" से]

(पृष्ठ १२ का शेषांश)

सीखना चाहिए। इसके लिये गोस्वामीजीका मानस अद्वितीय ग्रन्थ है। मगर इधर किसीका ध्यान ही नहीं।

+ + +

शास्त्रोंने भक्ति और प्रेमको चिरस्थायी और इस देहको नश्वर बताया है। फिर अब तो जमाना भी लड़ाईका है तब भक्तिमार्गमें आलस्य और देरी न करनी चाहिए। पर इधर किसीका ध्यान ही नहीं।

+ + +

कई भाई घरमें कन्या होनेके कारण दुःखी रहते हैं पर जिसे उस कन्याकी कीमत वसूल करनी है उसके लिये फिक्र की कोई बात नहीं। वह तो उसके पेट भरने की चीज़ है। इसे कहते हैं बिना पूंजीका धन—हल्दी लगे न फिटकरी और रंग भी चोखा आ जाय। स्वार्थ और परमार्थ दोनों ही धनी घरमें कन्या देनेसे ही हैं। फिर भी लोग इस व्यवसायको चलने नहीं देते। ऐसे रोड़े अटकाने वालोंके लिये धारा सभाके सदस्योंको दण्ड विधानकी योजना करनी चाहिए। पर इधर किसीका ध्यान ही नहीं।

× × ×

भाई रामकिशनजी जाजूने नासिक जेलसे यह सन्देशा लिख भेजा है कि बम्बई प्रान्तीय माहेश्वरी सभाका अधिवेशन बहुत 'ओवर ड्यू' हो गया है। हम भी प्रान्तीय सभाके मन्त्री महोदयसे कई दफे अनुरोध कर चुके हैं। मगर प्रान्तीय कार्यकारी समितिके सदस्योंका इधर ध्यान ही नहीं।

× × ×

बम्बई भरमें जगह-जगह लड़ाईकी बदौलत 'वी-फॉर विक्टरीके' के इश्तहारोंकी भरमार है। इससे तिलक धारियोंकी बाछें खिल गयी हैं। चलो साहब मुफ्तमें तिलकका प्रचार हो गया। साम्प्रदायिक आचार्योंको इस पब्लिसिटीसे हर्ष मनाना चाहिए। मगर इधर किसी का ध्यान ही नहीं।

+ + +

आज कल जिस मन्दिरमें प्रसाद ज्यादा बटता है वहीं भक्तोंकी भीड़ भी ज्यादा होती है। अरे भाई, भक्ति भगवान्की करनी है प्रसादकी नहीं। पर ठीक तो है 'भूखे होय न भजन गोपाला'। जहां प्रसाद ज्यादा मिले भक्ति भी वहीं ज्यादा होती है। पर इधर किसीका ध्यान ही नहीं।

+ + +

मौसर किये बिना मृत आत्माके सम्बन्धियोंको शान्ति नहीं मिलती और न ही मृतक भोजन करनेवालोंके पेटको ही शान्ति मिलती है। हमारा ख्याल है कि उन सुधारकोंसे पूछना चाहिए कि भाई मौसर बन्द करवाकर एक ही साथ दोनोंकी शान्तिमें रुकावट क्यों डालते हो। पर इधर किसीका ध्यान ही नहीं।

सरकारका लोमहर्षक अत्याचार

युद्धकी सहायताके नामपर जबर्दस्ती

अलीगढ़के आनरेरी मॅजिस्ट्रेट श्री. यादरामजी जाखेटिया ने अदालतके सामने अपना एक लंबा वक्तव्य देते हुए कहा—

"यह मुकदमा मुझे नीचा दिखानेके लिये और एक पुरानी अदावतका बदला लेनेके लिये मेरे खिलाफ दायर किया गया है। मेरे और जिलेके अधिकारियोंके बीच और खास करके मेरे और आदलतके बीच एक प्रकारकी शत्रुता चली आ रही थी। मैंने ऐसा कोई कार्य नहीं किया है जिससे भारत रक्षा विधानके अन्तर्गत किसी कानूनका भंग होता हो। आगे चलकर आपने उक्त अदालतके मेजिस्ट्रेट व नायब तहसीलदार से लगाकर सिपाहियों द्वारा अपने ऊपर लगाये गये वॉर फन्डमें तथाकथित बाधा देनेके अभियोगकी कहानी सुनाई।

[पुर्दिलनगरवासी श्री यादरामजी जाखेटिया कोल्वार माहेश्वरी समाजके एक होनहार उत्साही नवयुवक कार्यकर्त्ता हैं। उनके राष्ट्रीय विचार भी उच्चकोटिके हैं। जाखेटियाजीने ऑनररी मैजिस्ट्रेट होते हुए भी, आज तक युद्धके लिये कुछ चंदा नहीं दिया और न दूसरी किसी किस्मकी लड़ाईमें मदद की। आप श्री कोल्वार सभाके २१ वें अधिवेशनके स्वागत मंत्री थे, और उस अधिवेशनके पूर्ण सफल बनानेका अधिक श्रेय आप ही को था। आपने जो उत्साह अधिवेशनके समय दिखलाया, उसको देखकर समाज चकित रह गया था और सब यही कहते थे कि अधिवेशन जिस शानके साथ हुआ है वैसा अबतक कहीं नहीं हुआ। यह सब आप हीं की कार्यकुशलताका प्रमाण था। आप उच्च कोटिके शिक्षित व्यक्ति हैं। आपसे, राष्ट्रीय विचार होनेकी ही वजहसे, तमाम जिला अधिकारी नाराज थे। आप पर भारत रक्षा विधानके मातहत युद्ध सम्बन्धी कार्योंमें बाधा देनेका अभियोग लगाया गया था।

यू. पी. के. भूतपूर्व न्याय मन्त्री श्री० कैलाशनाथ काटजूके बयानके बाद आपको पहिले-पहल १० अगस्त को खबर दी गई कि १२ ता. जिरहके लिये मुकर्रर की गई है। श्री. जाखेटियाजीने मेजिस्ट्रेटको ११ ता. को मिस्लके देखनेके वास्ते दरख्वास्त की मगर वह उस दिन मिस्ल मेजिस्ट्रेटके बंगले पर होनेकी वजहसे न देख सके। उनको ता. १२ के ११ बजेके बाद मैजिस्ट्रेटने मिस्ल देखनेको दी। जब वे भूतपूर्व न्यायमंत्री डा. काटजूका बयान लिख रहे थे, कि मैजिस्ट्रेटने उन्हें बुलाया और कागज लेकर फाड़ डाले, कहा कि ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट होकर भी नहीं जानते कि कायदा क्या है? तुम सरकारको धोखा देते हो, नकल नहीं कर सकते। और मिस्ल भी उनसे ले ली गई। इस पर जाखेटियाजीने अपने मुकदमे की जिरह करना ही छोड़ दिया। और उन्होंने ता.१३ को एक दरख्वास्त दी कि वे कायदेमें ही नक्ल कर रहे थे, इस कारण उनके कागजात वापिस कर दिये जावें! इस पर मैजिस्ट्रेट चौकन्ना हुआ! पर १२ ता० को ही १४ अगस्त उनके मुकदमेके फैसलेके वास्ते मुकर्रर हो चुकी थी अतः ता. १४ को शामके पांच बजे श्री जाखेटियाजीका फैसला सुनाया गया और उनको १ सालकी कड़ी कैद व ५००) जुर्मानेकी सजा दी गई और यह भी कहा गया कि जुर्माना न अदा करने पर आपको ६ माहकी और कड़ी कैद दी जाती है। आपको 'सी' क्लासमें रखा गया हैं। आप जिलेके धनी व्यक्तियोंमें हैं और एक प्रमुख जमींदार भी हैं। इस पर भी आपको जेलखानेतक हथकड़ी लगाकर भेजा गया, जो मौजूदा सरकारके हुक्मके भी खिलाफ़ हैं।

श्री. जाखेटियाजी पर सरकारी जिला अधिकारियोंकी तरफसे जो अत्याचार किया गया और जिस प्रकार दृढ़तासे अपने सिद्धान्तोंपर अटल रहनेके कारण उन्हें सरकारकी नृशंस अन्यायपरताका शिकार होना पड़ा, इसका विस्तृत विवरण व श्री जाखेटियाजीका समस्त बयान ता. ६ अगस्तके नेशनल हेराल्डमें छपा है जो यहां उद्धृत किया जाता है।

—सं०]

ता. २ अगस्तको इलाहाबाद सेन्ट्रल जेलमें प्रथम श्रेणीके न्यायाधीश मि. मुरेने अभियुक्त द्वारा साक्षीमें बुलाये गये युक्तप्रांतके भूतपूर्व न्यायमंत्री डॉ. के. एन्. काटजूकी शहादत ली थी। अपने पांच पृष्ठ लंबे व्यक्तव्यमें डॉ. काटजूने बताया कि किन परिस्थितियोंमें उन्हें श्री. यादरामजीका मामला पत्रोंके हवाले करना पड़ा। जिरहके दरम्यान उन्होंने श्री. भाई यादरामजीका मामला आम तौर पर चली आती सरकारी नीतिके अनुसार ही पत्रोंको नहीं दिया बल्कि इस लिये कि उन्होंने उसे जनताके लिये भारी महत्वपूर्ण समझा था। डॉ. काटजूके वक्तव्यको दर्ज कर लेनेके बाद मुकदमा फिरसे सिकंद्रा राऊ, अलीगढ़के संयुक्त मेजिस्ट्रेट मि. एम. लाल की अदालतमें भेज दिया गया।

श्री यादरामजीका वक्तव्य

श्री यादरामजीने अपना वक्तव्य देते हुए कहा कि मैं एक प्रतिष्ठित कान्ग्रेस मेन हूं और उस वक्त जब कि कॉंग्रेसके हाथोंमें प्रान्तीय शासनकी बागडोर थी मैं सिकन्द्रा राऊ अलीगढ़में ऑनरेरी मेजिस्ट्रेटके तौरपर काम करनेके लिये चुना गया था।

ता. २४ अप्रैल १९४० को सिकन्द्रा राऊके तहसीलदार मि. महमद हाफीज़ हुसेनने ता. २६ अप्रैल १९४० को ९ बजे संयुक्त मेजिस्ट्रेट मि. एम. लालकी अध्यक्षतामें युद्धके संबंधमें होने वाली एक सभामें उपस्थित होनेके लिये मुझे जो निमंत्रण दिया वह इस प्रकार था:—

तहसील सिकंद्रा राऊ
अप्रैल २४, १९४०

मकदुम मुकर्रम बन्दा तस्लीम, एक मीटिंग मुतल्लिक मौजूदा जंग बतारीख अप्रैल २६, १९४० बवखत नौ बजे दिन मुकाम तहसील सिकंद्रा राऊ होगी और जनाब जज साहब बहादुर खुद तशरीफ लावेंगे। लिहाजा, तकलीफ दी जाती है कि मीटिंगमें शिर्कत फरमा कर ममनून व मश्कूर फरमावें।

निजामन्द
(सही) **महमद हाफिज हुसेन,**
तहसीलदार सिकंद्रा राऊ

युद्ध समिति

इस मीटिंगमें चन्दा एकत्र करनेके लिये एक कमिटी बनाई गई और दुर्भाग्यसे सिकंद्रा राऊ तहसीलकी युद्ध कमिटीका मैं मंत्री बनाया गया। यद्यपि मैं कॉंग्रेसके प्रति अपने झुकाव के कारण उस सभामें उपस्थित नहीं रहा।

इसके बाद तहसीलदारने मुझे बधाई देते हुए यह बात बतलाई और कहा कि जिलेके अधिकारियोंको पूरा संतोष मिले इस प्रकारसे मैं अपने कर्तव्यका पालन करूं। मुझमें इतना साहस था कि मैं कॉंग्रेसके आदेशके विरुद्ध कार्य करनेसे इनकार कर दूं।

तहसीलदार की सूचना

ता. १७ मईको सिकंद्रा राऊके तहसीलदारने मुझे निम्न पत्र भेजा।

प्रिय बाबू यादरामजी,

ता. २६ अप्रैल को वॉर फन्डके लिये बुलाई गई सभामें आपको निमंत्रण दिया गया था। इस संबंधमें पुर्दिलनगरमें मैंने आपसे उपस्थित होनेके लिये कहा था और आपने उपस्थित रहनेका वचन भी दिया था। लेकिन आप न तो उपस्थित हुए और न ही आपने उक्त सभामें उपस्थित रहनेकी अपनी असमर्थता ही प्रगट की। आप एक शिक्षित व्यक्ति हैं और आपका बर्ताव बहुत ही असभ्यतापूर्ण रहा है। आप एक ऑनरेरी मेजिस्ट्रेट हैं, इसलिये मैं जिला मैजिस्ट्रेटके जरिये यह बात सरकारकी नजरोंमें लाऊंगा।

आपका विश्वसनीय
(सही) **महमद हाफिज़ हुसैन.**
तहसीलदार सिकंद्रा राऊ

इस पत्रको पाकर मैं सिकंद्रा राऊके जॉइन्ट मेजिस्ट्रेट मि. एम. लाल के पास गया और उस पत्रके भावके बारेमें मैंने उनसे शिकायत की।

इसके बाद ता. २२ के आसपास मुझे सिकन्द्रा राऊके तहसीलदारसे भी मिलनेका मौका मिला। उन्होंने मुझे वॉर फन्डमें सहायता देनेके लिये कहा। अधिक जोर देनेपर मैंने उत्तर दिया कि मैं इसपर गौर करूंगा और अगले शनिवारको जॉइन्ट मैजिस्ट्रेटसे मिलूंगा।

ता. २७ मईको तहसीलदारने मुझे यह पत्र लिखा।:—

प्रिय बाबू यादरामजी,

मेहरबानी करके मुझे यह बताइए कि शनिवारको क्या आप जॉइन्ट मैजिस्ट्रेटसे मिले थे? और क्या आपने वार फन्डमें सहायताके रूपमें कोई रकम दी है? जिससे कि वह तहसीलके हिसाबमें शरीक कर दी जाय।

(सही) **महमद हाफिज़ हुसैन**

उक्त पत्रके उत्तरमें मैंने तहसीलदारको लिखा कि मैं जॉइन्ट मैजिस्ट्रेटको अबतक नहीं मिला हूं।

ता. २७ मईको तहसीलदारकी अनुमतिसे मि. रामहरि रजिस्ट्रार कानूंगो की ओरसे एक और पत्र मिला, जिसमें

गवर्नरके युद्ध फंडमें सहायता देनेके लिये मुझपर बहुत दबाव डाला गया था। पत्र इस प्रकार था।

तहसील सिकंद्रा राऊ
मई २७, १९४०

प्रिय. बाबूयादरामजी गुप्ता,

तहसीलदार द्वारा मुझे यह पूछनेके लिये कहा गया है कि क्या आप गवर्नरके युद्ध फंडमें सहायता दे रहे हैं ? पत्र लानेवालेके हाथ उत्तर भेजनेकी प्रार्थना है।

(सही) **राम हरि.**
रजिस्ट्रार कानूगो सिकंद्रा राऊ.

सहायता देनेसे इनकार

ता. ६ जून १९४० को पुर्दिलनगरमें युद्ध फंड एकत्रित करनेके लिये जॉइन्ट मेजिट्रेट मि. एम. लाल आइ. सी. एस. ने एक मीटिंग बुलाई। मुझे भी उस मीटिंगमें उपस्थित रहनेके लिये कहा गया और वहां युद्धफंडमें सहायता देनेके लिये भी मुझसे कहा गया। मेरे मना करनेपर भी मेरे और श्री तोतारामके नामपर रु. २५ की एक संयुक्त रसीद हमसे रुपये पानेकी आशासे बनाई गई। इतना होनेपर भी मैंने फंडमें कुछ नहीं दिया और बहुत ही सभ्यतापूर्ण शब्दोंमें उक्त फंडमें सहायता देनेमें अपनी असमर्थता प्रगट कर दी।

एक बार फिर मैं जॉइन्ट मैजिस्ट्रेटसे मिला और उन्होंनें मुझे इस बातसे सूचित किया कि सिकंद्रा राऊके तहसीलदारने मेरे विरुद्ध एक लंबी रिपोर्ट की है, जिसमें अधिकारियोंसे यह प्रार्थना की गई है कि वे मेरे विरुद्ध भारत रक्षा कानून के अंतर्गत उचित कार्यवाही करें।

ता. १५ जुलाईको जिला मैजिस्ट्रेट द्वारा बुलाये जानेपर मैं उनसे मिला। जिला मेजिस्ट्रेटने मुझसे कहा कि तहसीलदार और पुलिसके सब इन्स्पेक्टरने मेरे विरुद्ध एक रिपोर्ट की है जिसमें भारतरक्षा कानूनके मुताबिक मुझपर कार्यवाही करनेके लिये सिफारिश की गई है। इस पर मैंने उत्तर दिया कि वॉर फन्डमें पैसा देना मेरी सामर्थ्यके बाहर है और साथ ही साथ मैंने उन्हें यह विश्वास दिलाया कि तहसीलदार और सब इन्स्पेक्टरने मेरे विरुद्ध जो शिकायत की है वह निराधार है और यह अत्यधिक आवेगका परिणाम है।

मैजिस्ट्रेटका निमंत्रण

ता. २८ जुलाईको जॉइन्ट मैजिस्ट्रेटने (इसी अदालतके) डिफेन्स लोनके संबंधमें सिकंद्रा राऊमें एक सभा बुलाई। मुझे भी उसमें शामिल होनेका निमंत्रण मिला था; परंतु मैं इसमें उपस्थित नहीं हुआ।

इस पर ता. १ अगस्त १९४० को जॉइन्ट मैजिस्ट्रेटकी ओरसे मुझे एक पत्र मिला जो इस प्रकार है:—

प्रिय श्री यादरामजी,

डिफेन्स लोनके संबंधमें ता. २८ जुलाई १९४० को सिकंद्रा राऊमें बुलाई गई सभामें आपकी अनुपस्थिति मुझे बहुत खटकी। मुझे विश्वास है कि आपको सभामें उपस्थित रहनेका निमंत्रण अवश्य मिला होगा। मैं पुनः कल सिकंद्रा राऊ आ रहा हूं और ता. २ अगस्तकी शामको सात बजे आपसे मिलनेमें मुझे बड़ी खुशी होगी। कृपया अवश्य उपस्थित रहें।

एम. लाल
जॉइन्ट मेजिस्ट्रेट

त्यागपत्र देनेकी सलाह

जॉइन्ट मैजिस्ट्रेट की इच्छा को मान्य कर निश्चित समय पर मैं उनसे मिला। वहां मुझसे वॉर फंडमें सहायता देने, डिफेन्स बॉन्डस खरीदने और उनके साथ सहयोग देने को अथवा ऑनररी मैजिस्ट्रेटके पदसे—उस समय जिसपर होनेका मुझे सौभाग्य प्राप्त था—त्यागपत्र देने को कहा गया।

जॉइन्ट मैजिस्ट्रेट की धमकी के उत्तर में मैंने कहा कि मैं न युद्ध फंड में सहायता दे सकता हूं और न डिफेन्स बोन्डस ही खरीद सकता हूं या आपसे सहयोग ही कर सकता हूं क्योंकि ऐसा करना कांग्रेसके आदेशके विरूद्ध है। लेकिन मैं डॉ. काटजू से परामर्श के पश्चात् मेजिस्ट्रेट पदसे त्यागपत्र देनेके लिये तैयार हूं और मैं अपने निर्णयसे आपको सूचित करूंगा।

डॉ. काटजूका पत्र

मैंने उपरोक्त परिस्थितिके बारेमें डॉ. कैलाशनाथजी काटजू को एक पत्र लिखा, जिसका उन्होंने निम्नलिखित उत्तर दिया।

प्रिय गुप्ताजी,

ता. ५ अगस्तका आपका पत्र मिला। मुझे यह जानकर बहुत दुःख हुआ कि स्थानीय अधिकारी बिना किसी कारण और ज़रूरियातके ही आप पर इतना जोर डाल रहे हैं। सरकार अपनी नीति घोषित कर चुकी है। युद्ध फंडमें सहायता देना हरेक व्यक्ति की इच्छा पर निर्भर है। अधिकारियों द्वारा किसी भी व्यक्ति पर युद्ध फंडमें सहायता देने और उसे डिफेन्स लोनमें अपना पैसा लगाने फुसलाने या मजबूर करनेके लिये दबाव न डाला जाय।

मुझे ऐसा मालूम होता है कि जिलेके अधिकारी आपके साथ कुछ ज्यादतीसे काम ले रहे हैं। लेकिन मुझे कोई कारण नहीं प्रतीत होता कि क्यों जॉईन्ट मैजिस्ट्रेट की सलाहसे आपको ऑनररी मैजिस्ट्रेटके पदसे त्यागपत्र दे देना चाहिये। ऑननरी मेजिस्ट्रेटका यही कार्य है कि वह अपने अदालती कर्तव्योंका बिना किसी पक्षपातके, संपूर्ण सचाईके साथ, भय और तरफदारीकी परवाह किये बिना, पालन करे। अगर वह ऐसा करता है, तो अपने देशवासियोंके मान और पूजाका संपूर्ण अधिकारी है। मेरी आपसे यह सलाह है कि आपको जॉइन्ट मेजिस्ट्रेट या किसी दूसरेकी धमकीके सामने झुकना नहीं चाहिये।

ता. २३ जुलाई १९४० के नेशनल हेराल्डमें प्रकाशित अपने एक लेखमें मैंने कुछ विस्तारके साथ आपके मामलेकी चर्चा की है और ता. १७ मई वाले तहसीलदारके पत्रके अनौचित्यके बारेमें अपना अभिप्राय दृढ़तासे व्यक्त किया है। आपने जो पत्र अभी भेजा है उसके बारेमें मैं आगे कार्यवाही कर रहा हूं।

(सही) **के. एन. काटजू**

अदालतका असंतोष

डॉ. काटजूका पत्र मिलनेके बाद मैं अगस्त १९४० के अन्तमें एक बार जॉइन्ट मैजिस्ट्रेटसे मिला और डॉ. काटजूका पत्र उन्हें दिखाया। इसके अलावा मैंने उनसे यह भी कहा कि डॉ. काटजूकी ऐसी सूचनाके होते हुए मैं त्यागपत्र देनेमें असमर्थ हूं। इसपर वर्तमान अदालत—मि. एम. लाल. आई. सी. एस.—ने धमकीके स्वरमें कहा " अच्छा, मैं देखूंगा कि डॉ. काटजू कहां तक आपको मदद देते हैं।" इसके बाद वर्तमान अदालतकी निगाहोंमें मैं खटकने लगा और अदालतका एक तरहसे मैंने असंतोष प्राप्त किया।

इसके बाद ता. ९ जुलाईको, १७ मईवाले सिकंद्रा राऊके तहसील्दारके पत्रकी जानकारी करानेके लिए मैंने प्रान्तीय कांग्रेस कमिटीके मंत्री, पंडित गोविंद वल्लभ पंत, डॉ. कैलाशनाथ काटजू, और महात्माजीके प्राइवेट सेक्रेटरीके नाम पर एक-एक पत्र लिखा।

फलतः डॉ. काटजूका नेशनल हेराल्डमें तथा प्रान्तीय कांग्रेस कमिटीके मंत्रीका ता. २ अगस्त १९४० के लीडरमें एक लेख प्रकाशित हुआ।

पंतजी की सलाह

मेरे पत्रके उत्तरमें पंडित गोविंद वल्लभ पंतके प्राइवेट सेक्रेटरीने मुझे निम्न लिखित पत्र लिखा।

श्रीमन्,

पंडितजीको आपका पत्र तथा उसके साथ भेजे हुए दूसरे कागज़ात मिले। पत्रोत्तरमें विलम्ब हुआ इसका मुझे खेद है। पंडितजी अपने पुत्रकी बीमारीके कारण पहलेसे ही बहुत व्यस्त थे।

यह आश्चर्यकी बात है कि तहसीलदारने एक धमकी युक्त पत्र आपको लिखा। सरकारने अपनी नीतिको बार बार दुहराया है कि युद्ध फंडके लिये किसी भी प्रकारके बल या दबावका उपयोग न किया जाय। मुझे यह उम्मीद है कि जिला मेजिस्ट्रेटके ध्यानमें इस बातको लानेपर वे इस मामलेकी वास्तविकताको समझेंगे। आप स्वयं ही उनसे इस बातका जिक्र कर लें, तो अच्छा है। जहां तक इस मामलेका कांग्रेससे ताल्लुक है, कार्यदिशा बहुत स्पष्ट है। प्रान्तीय कांग्रेसकी कार्यकारिणी सभाका प्रस्ताव आपने पढ़ा ही होगा।

भूतपूर्व प्रधानमंत्रीकी सूचनाके अनुसार जब मैंने यह मेजिस्ट्रेटको दिखाया, तब वे इस मामलेके सही हेतुको ध्यानमें लेनके बजाय बहुत असंतुष्ट हो गये।

पुलिसद्वारा अपमान

ता. ९ सितंबरको सिकंद्रा राऊ थानेके तीन पुलिस सिपाही और उस समयके थानेके द्वितीय अधिकारीके पिता ठाकुर तोतारामजीने मेरा अपमान किया। मैंने इस बातकी तार द्वारा जिला मेजिट्रेटको खबर दी और उसी दिन थानेमें भी रिपोर्ट भेजी। मेरे तार द्वारा खबर देने पर भी जिला मेजिस्ट्रेटने कुछ नहीं किया। इसके बाद मि. एम. लाल की अदालतमें (इसी आदलतमें) मैंने अपना मुकदमा दायर किया।

इस अभियोगके बारेमें सर्कल इन्स्पेक्टरके द्वारा पूछताछ की गई। पूछताछके दौरानमें मुझसे उन्होंनें कहा:—

" आप अपना इस्तगासा अदालतसे वापिस ले लीजिए। कानस्टेबलानको शिरस्तेकी सज़ा दे दी जायगी। पुलिससे झगड़ा करना ठीक नहीं है।"

ठाकुर तोतारामजीके विरुद्ध अनेक बार समन्स और वॉरन्टस् जारी किए गए। यद्यपि वे करीब एक वर्षसे अपने पुत्रके साथ रहते हैं, तब भी वे कार्यान्वित नहीं किए गये।

इससे यह बात बहुत साफ प्रतीत होती है कि अभियुक्तके पीछे, चूंकि वह सेकंड ऑफिसरका बाप है, पुलिस विभागका बल है।

पुलिस कान्स्टेबल और सेकंड ऑफिसरके बापके विरुद्ध जारी की गई मेरी शिकायतपर जिलेके अधिकारियों द्वारा ध्यान नहीं दिया गया। मुकदमेंके वक्त, अभियुक्त कान्स्टेबलों को बरतरफ भी नहीं किया गया, बल्कि किसी प्रकारके वैयक्तिक बंधनके बिना, उनकी वर्दीमें ही उन्हें अदालतमें बैठने दिया गया।

अलीगढ़के पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट चौधरी बदनसिंह आई. पी. एस. ने मिलनेके लिये मुझे बुलवाया। मिलने पर उन्होंने मुझे अपना मुकदमा—यादराम विरुद्ध बशीर और अन्य – वापिस ले लेनेके लिये कहा और यदि ऐसा न करूं तो जिला अधिकारियोंकी इच्छाके विरोध करनेका फल भोगना पड़ेगा ऐसा कहकर हाथरसके मुरलीधरजी पोद्दारके मुकदमेका हवाला दिया।

गिरफतारी की कहानी

२५ मार्च पुर्दिलनगरमें मुंशी शाहने सत्याग्रह किया। मैं उस सभामें केवल एक दर्शकके तौरपर गया था लेकिन अन्य अभियुक्तोंके साथ मुझे भी गिरफतार किया गया। उनके मुकदमें पहलेसे ही तय हो चुके थे और उन्हें अलग अलग अवधि की सजाएं दी गई।

पुर्दिल नगर में मुंशी शाहने जिस सभामें सत्याग्रह किया था उसकी व्यवस्था मैंने नहीं की थी। न ही मैंने वहां कालीन, जाज़िम आदि बिछाया था और न ही, मुंशी शाहको माला पहनाई, युद्ध विरोधी नारे लगाये, और जन-

(शेष पृष्ठ १० के कालम ३ पर)

हमारा राजस्थान

★

एक राजस्थानी

स्वर्गीय बारहटजी

कोटामें अपने निवासस्थान पर राजस्थानके पुराने, नेता वयोवृद्ध राजस्थान केसरी ठाकुर केसरीसिंहजी बारहटका सात–आठ दिनकी बीमारीके बाद ही १६ अगस्तको स्वर्गवास हो गया। आप बहुत पुराने पत्रकार, साहित्यिक, कवि एवं राष्ट्रीय प्रवृत्तिके उन कर्णधारोंमें से थे जिनपर प्रान्तको सच्चा नाज़ था। आपकी अचल देशभक्तिका सुन्दर बखान श्री शचीन्द्रनाथ सन्यालने "बन्दा बैरागी" पुस्तकमें गौरवके साथ किया है। अपने राजनैतिक विचारोंके लिये कभी आपको पांच वर्षके लम्बे कारावासकी सजा भी भोगनी पड़ी थी और अपने लाड़ले पुत्र प्रतापको भी आपने देशकी बलि वेदीपर भेंट चढ़ा दिया था। १९१९–२० में सेठ जमनालालजी बजाजने जिन राजस्थान प्रेमियोंको वर्धामें इकट्ठा करके "राजस्थान केसरी" नामका साप्ताहिक पत्र निकाला था उनमें आप भी एक थे और इसके निकालनेमें भी आपका मुख्य प्रेरक हाथ था। राजस्थान प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनके प्रधान मन्त्री श्री जनार्दन रायने ३१ अगस्तको आपका स्मृति दिवस मनानेकी अपील की थी। अनेक स्थानोंपर इस दिन शोक सभायें हुईं और आपके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की गयीं।

+ \+ \+

स्वर्गीय चग़ताई

जोधपुरमें मिर्ज़ा अजीमबेग चग़ताईके स्वर्गवास होनेका समाचार भी उतना ही दुःखपूर्ण है। आप हिन्दी और उर्दू दोनोंके हास्यरसके सुप्रसिद्ध लेखक थे। बातचीतमें भी आपका विनोद सदा चलता रहता था। बीमारीके दिनोंमें सहानुभूति प्रकट करनेके लिये आनेवालोंसे विनोदमें आप कहा करते थे कि जब जावरामें चीफ जजी की तब पैसा ऐसा उड़ाया कि हलुवा—पूरी न खा सका। इस लिये अब कुनैन खानी पड़ रही है। आपकी कलममें दिलको छू लेनेकी अजीब शक्ति थी। साम्प्रदायिकता आपको छू तक न गई थी। उस खिचड़ी संस्कृतिके आप विरोधी थे जो पूर्व और पश्चिमके सम्मिश्रणसे बनी थी। धर्मके नामसे कलह पैदा करनेवालोंको आप कुरानकी वह आयत प्रायः सुनाया करते थे जिसमें कहा गया है कि कोई ऐसा मुल्क नहीं, जहां खुदाने अपनी किताब और पैगम्बर न भेजा हो! यही भावना आपकी रचनाओंमें प्रायः सर्वत्र ओतप्रोत है। उर्दूमें आपने खूब लिखा और हिन्दीमें भी लिखना शुरू किया था। उर्दूमें बिक्रीका रिकार्ड उनकी पुस्तकोंने मात कर दिया है। हिन्दी पत्रोंमें भी उनकी कहानियां छपनी शुरू हो गई थीं। "शरीर बीबी" और "कोलतार" नामकी दो पुस्तकें प्रकाशित हुई थीं। 'राजस्थान' के श्री. राजेन्द्रशंकर भट्टने यह प्रस्ताव किया है कि किसी हिन्दी प्रकाशकको उनका साहित्य "चग़ताई ग्रन्थमाला" के रूपमें प्रकाशित करनेका यत्न करना चाहिये। २० अगस्तको ३५ वर्षकी ही अवस्थामें आपका स्वर्गवास हुआ है।

जयपुर

जयपुर राज्य प्रजामंडलकी कार्य समितिका एक महत्वपूर्ण अधिवेशन तोरावाटी जिला कमिटीके केन्द्रस्थान श्रीमाधोपुरमें हुआ था, तोरावाटी जिला कमिटीके प्रधान श्री. छगनलालजी चौधरी और राजस्थान चरखासंघके मंत्री श्री. देशपाण्डेजी भी विशेष निमंत्रण पर उपस्थित थे। श्री देशपाण्डेजीने गान्धी जयन्ती पर मनाये जानेवाले चरखा सप्ताहका कार्यक्रम और योजना पेश की। मण्डलकी सब कमिटियोंसे उसको सफल बनानेके लिये चरखासंघको सहयोग देनकी अपील की गई। तोरावाटी जिला कमेटीकी ओरसे प्रजामण्डलके आगामी वार्षिक अधिवेशनके लिये दिये गये निमंत्रण पर भी विचार किया गया और यह निश्चय हुआ कि यदि अधिवेशन श्रीमाधोपुरमें ही किया जाय, तो इस निमंत्रणको स्वीकार कर लिया जाय। यह निश्चय अन्तिम विचारके लिये जनरल कमिटीके पास भेजा गया है।

+ \+ \+

मण्डलके प्रधान श्री. हीरालालजी शास्त्री ने अगस्तके शुरूसे जयपुरका दौरा शुरू किया हुआ है। श्री. लादूरामजी जोशी भी आपके साथ हैं। तोरावाटी और दौसा निजामत का दौरा आपने पूरा कर लिया है स्थान स्थान पर आपका हार्दिक स्वागत किया गया, आपका जलुस निकाला गया, सार्वजनिक सभाओंका आयोजन किया गया, उनमें आपके भाषण हुए और आपको थैलियां भी भेंटकी गईं। सांभर निजामतका दौरा आपने शुरू किया हुआ है।

+ \+ \+

चिड़ावाके श्री. मातादीनजी भगेरिया को जकात आंदोलनमें दिये गये भाषणों पर दो वर्षकी सजा हुई थी। महाराजके जन्म दिनपर २० अगस्तको आपको रिहा किया गया है। हालांकि आपके रिहाईके सिर्फ बीस ही दिन और थे। इस समय भी आपके साथ अनुदारता एवं कृपणताका ही व्यवहार किया गया। साधारण कैदियोंकी तरह आपको भी पैदल जेलसे महलों तक ले जाया गया और वहां "मानसिंह की जय" के नारे लगवाये गये। रिहाईपर आपका हार्दिक स्वागत किया गया। फूलमालाओंसे आपको लाद दिया गया। दूसरे दिन शहर प्रजामण्डलकी ओरसे आपका स्वागत किया गया। आपने गान्धीजीमें अपनी अगाध श्रद्धा प्रगट की और प्रगट किया कि आपने गान्धीजीपर जेलमें एक काव्य लिखा है, जिसको जल्दी ही प्रकाशित करनेकी आपकी इच्छा है। जयपुरसे आप 'वनस्थली' "राजस्थान बालिका विद्यालय" देखने गये थे। वहांसे चिड़ावा होकर आप दिल्ली आनेवाले हैं। दिल्लीमें भी आपके स्वागतकी चर्चा है।

× + ×

महात्मा गान्धीकी ७३ वीं वर्षगांठके लिये राजस्थान चरखासंघकी ओरसे बनाये गये कार्यक्रमके मुख्य अंग ये हैं। (१) चरखा दंगल, जिसका उद्देश्य कातनेवालोंकी संख्या बढ़ाना और कातनेका प्रदर्शन करना है। (२) खादी स्वावलंबनके लिये प्रचार–लोगोंमें अपनी जरूरतकी खादीके लिये कातनेकी प्रवृत्ति पैदा करना और ऐसे लोगोंसे प्रतिज्ञा लेना इसका उद्देश्य है। (३) गान्धी थैली–७३ वीं वर्ष गांठ होनेसे लोगोंसे ७२ पैसे, ७२ इकन्नी, ७२ दुअन्नी, ७२ चवन्नी, ७२ अठन्नी, और ७२ रुपयोंके रूपमें चंदा इकट्ठा किया जायगा। यह चंदा जहां इकट्ठा होगा, वहां ही के लोगोंकी कमिटियों द्वारा वहां ही खादी प्रचार करनेमें खर्च किया जायगा। (४) सूतका चंदा–७२० गज या ७२०० गज सूत कात कर दिया जाय। प्रचार खादी–बिक्री, और उसकी एजेंसियां कायम करना भी इस कार्यक्रममें शामिल है।

+ \+ \+

जयपुरके दीवान राजा ज्ञाननाथजीके कोचीन जाने और कोचीनके लिये मनोनीत अंग्रेज दीवानके जयपुर आनेकी खबर खूब गरम है। यह भी पता चला है कि इस परिवर्तन से वर्तमान कौंसिलमें फिलहाल कोई परिवर्तन नहीं होगा।

× × ×

भरतपुर

भरतपुर प्रजा परिषदकी कार्य समितिका नया चुनाव हो गया। श्री खेतीशरणजी (आगरा जेलमें) प्रधान चुने गये हैं। उनके रिहा होने तक श्री आदित्येन्द्रजी कार्यकर्त्ता प्रधान रहेंगे। कुंवर रतनसिंहजी प्रधानमंत्री और श्री सत्यप्रियजी कोषाध्यक्ष चुने गये हैं। दसहरे पर प्रजा परिषदका विशेषाधिवेशन करनेका निश्चय किया गया है। प्रधानको अधिकार दिया गया कि वे परिषदकी मांगोंके बारेमें सरकारका निश्चित आश्वासन प्राप्त करनेकी कोशिश करें। लेकिन, राज्यका रुख कुछ सहानुभूतिपूर्ण प्रतीत नहीं होता। २५ अगस्तको भरतपुर शहरमें हुई विराट् सार्वजनिक सभामें जो भाषण हुये, वे काफी रोष एवं असंतोषसे भरे हुए थे। श्री. आदित्येन्द्रजीने कहा कि "हमारी रोटी की मांग पर हमें पत्थर ही मिलता रहा है। यदि ऐसीही स्थिति रही तो दसहरे पर होनेवाले विशेषाधिवेशनमें हमें अपनी वाजिब मांगोंको पूरा करानेके लिए कोई उग्र कदम उठानेका निश्चय करनेको मजबूर होना पड़ेगा।" सभामें म्युनिसिपल सुधारोंकी भी मांगकी गई और मताधिकारको विस्तृत बनानेपर भी गौर किया गया। वैसा न होने पर कहा गया कि परिषद चुनावमें भाग न लेगी और नागरिकोंसे भी चुनावका बहिष्कार करने की अपील की गई।

उदयपुर

प्रजामण्डलके प्रथम वार्षिक अधिवेशन की तय्यारी खूब धूमधामके साथ हो रही है। उदयपुर शहर तहसील कमिटियोंके कार्यकर्ताओंकी एक सभा होकर स्वागत समिति का निर्माण कर लिया गया है और अनेक उपसमितियां बनाकर उनके संयोजक भी नियुक्त कर दिये गये हैं। स्वागताध्यक्ष श्री भूरेलालजी और स्वागतमंत्री श्री मोहनलालजी सुखाड़िया बनाये गये हैं। कार्य समितिसे दसहरेके बजाय दिवाली पर यह अधिवेशन करनेकी प्रार्थना की गई है। इसी अवसर पर एक बृहत् प्रदर्शनी भी होगी।

+ \+ \+

गान्धीजयन्ती पर खादीके प्रचारका कार्य खूब उत्साहके साथ शुरू किया जा रहा है। श्री. भूरेलालजी इसके लिये विशेष रूपसे प्रयत्नशील हैं। सभा, फेरी, प्रदर्शन, कताई दंगल का कार्यक्रम बनाया गया है।

जोधपुर

म्युनिसिपैलिटीके चुनाव और असेम्बलीकी घोषणाके बाद जो अनुकूल वातावरण जोधपुरमें पैदा हुआ था, वह बिगड़ता–सा नजर आ रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि जागीरदारोंकी धमकियां सरकार पर असर कर रही हैं और म्युनिसिपैलिटी पर लोक परिषदके अनपेक्षित एवं अजेय बहुमतने सरकारको चक्करमें डाल दिया है। म्युनिसिपैलिटीमें अडंगा नीतिसे काम लिया जा रहा है। रावराजा नरपत सिंहजीकी गैर हाजिरीसे स्थिति और भी विषम होती जा रही है। सरकारी और लोक परिषदी सदस्योंके बीचकी खाई दिन पर दिन चौड़ी होती जा रही है। म्युनिस्पल स्टाफ भी पूरी तरह सहयोग नहीं दे रहा। बल्कि उसमें यह भावना घर करती जा रही है कि शासनकी आज्ञाओंकी अवज्ञा करना सरकारकी कृपा प्राप्त करनेका सरल उपाय है। हर महकमेमें ढिलाई एवं उपेक्षासे काम लिया जा रहा है। प्रेसिडेन्टके अधिकार एवं भत्तेके सवालोंका भी साफ तौर से कोई निर्णय नहीं दिया जा रहा है। उनके दफ्तरमें टेलीफोन लगानेमें भी अनावश्यक देरी लगाई जा रही है।

(शेष पृष्ठ २८ के कालम ३ पर)

श्रीनिवास कॉटन मिल्स लिमिटेड

बंबई

अपने कलापूर्ण, सुन्दर और टिकाऊ कपड़े के लिये मशहूर है।

★ ★

ट्रेड नेम्स

नरेन्द्र गोल्डन प्लम एस. एन. सी. फॉक्स ग्लोब नगेन्द्र	धुला लांग क्लॉथ
के के के के के ओ ओ ओ ओ ओ हिन्दनो ताज असली फूल बनर्जी यू. पी. एक्सप्रेस सी. पी. एक्सप्रेस मारवाड़ एक्सप्रेस	धुली धोतियां व साड़ियां
डायमण्ड हाल डायमण्ड चेन डायमण्ड बैटरी बंगाल फैशन प्रोमिनेंट लीडर प्रोमिनेंट फैशन	धुली या कोरी पॉपलीन
फ्लाइंग मून मालिनी मिस बिब्बो	चेक वायल

आदि आदि

इस मिल में सब प्रकार का धुला व कोरा कपड़ा—लांग क्लाथ, शर्टिंग, वायल, धोतियां, साड़ियां, मलमल, छपी हुई—छींट, वायल, बोस्की आदि कपड़ा विविध डिज़ाइनों और रंगों में तैयार होता है।

यदि आप उत्तम-सुन्दर-कलापूर्ण, टिकाऊ तथा सस्ता कपड़ा चाहते हैं, तो हमारे मिल के बने हुये कपड़ों से आप को पूर्ण संतोष मिल सकेगा—क्योंकि यह मिल भारतकी सामाजिक, आर्थिक अवस्था, तथा सर्वसाधारण की रुचि को लक्ष्य में रखकर ही सब प्रकार के वस्त्र तैयार करती है।

बाज़ार में कपड़ा खरीदते समय इसी मिल का कपड़ा खरीदिये।

इस मिल का बना कपड़ा इस्तेमाल कर आप निश्चय ही प्रसन्न होंगे।

ट्रेड मार्के

- महाल
- पेटल ब्यूटी
- गोल्डन प्लम
- फॉक्स ग्लोव
- श्रीरामपंचायतन
- चार्मिंग ब्यूटी
- माधुरी
- मुरली
- ईस्टर्न ब्यूटी
- सेक्रेड फ्लूट
- श्रीराम

★ ★

—हमारी विशेषता—

रेडियोगर्ल और नरेन्द्र कालिटी का धुला लांगक्लाथ—इसे बरतकर आप अवश्य सन्तुष्ट और प्रसन्न होंगे।

— हमारे सेलिंग एजेण्ट —

बम्बई
दी बम्बई एजन्सी कम्पनी लिमिटेड
सर विट्ठलदास गली,
मूलजी जेठा मार्केट, बम्बई नं० २

कलकत्ता
मंगनीराम रामकुमार
६५ बोंसतल्ला स्ट्रीट
कलकत्ता।

कानपुर
ज्वालाप्रसाद राधाकिशन,
काहू कोठी, कानपुर

अमृतसर
शामदास कपूर एण्ड कम्पनी
कटरा अहलुवाल
अमृतसर

दिल्ली
हनुमानप्रसाद धूत एण्ड कम्पनी
कटरा नवाब
देहली

पत्र-व्यवहार का पता:—

श्रीनिवास कॉटन मिल्स लिमिटेड

डिलाइल रोड, बंम्बई नं १३.

नफ़रत

★

श्री दामोदरदासजी धूत

झाड़ू ! वह एक महत्वशून्य वस्तु गिनी जाती है । हम उसे रोज देखते हैं और इसीलिए हम उसे अच्छी तरह नहीं देखते ! हम जिसे रोज देखते हैं वह झाड़ू हमको कौनसा दिव्य संदेश देती है इस पर हम गौर नहीं करते ! वह सिखाती है साफ सफाई, पूर्ण स्वच्छता । लेकिन मैं यह अंट-संट क्या लिखने लग गया ? मैं आपको एक घटनाके बारेमें कुछ कहना चाहता था, इस लिए चाहता था कि उस घटनाने मुझे कई दिनतक अशांत परेशान बना रखा था । कागज़ पर, इसके संबंधमें कुछ लिखकर दिलको शांत करनेकी इच्छा थी । लेकिन मैं तो एक सनातनी पंडितकी तरह उपदेशोंकी खैरात करने बैठ गया ।

एक दिन मैं एक झाड़ूवालेकी दुकानपर झाड़ू खरीदने चला गया ।

"क्यों भाई इस झाड़ूका क्या लोगे ?"

"तीन आने सरकार !"

'हं ! तीन पैसेकी झाड़ूके तीन आने ? यह क्या अंधेर नगरी है !' मैंने एक चतुर व्यापारीकी तरह कहा, 'आखिर अंधेर नगरीमें भी वह झाड़ू तीन पैसेमें नहीं मिलती !'

"सेठ, तीन पैसेमें इस तरह की झाड़ू मिलेगी ।" उसने एक रद्दीसी झाड़ू उठाकर कहा, "बाकी ऐसी झाड़ू तो आप हजारों दुकाने ढूंढेंगे तो भी नहीं मिलेगी । झाड़ू क्या है, यह रत्न है । आप जैसे रईस ही इसकी कदर कर सकते हैं ।"

दुकानदारके लिए प्रत्येक खरीदार रईस होता है ? लेकिन इसी वक्त मेरे दिमागमें नई बातें सूझने लगीं ? मैंने उसकी दुकानमें नजर डाली ।

छोटीसी दुकान । करीब बारह फ़ीट लंबी, छः फीट चौड़ी, बीचोंबीच परदा डालकर दो विभाग कर दिये गये थे । परदेके पीछे अंधेरेमें अवश्य ही उसकी पत्नी बैठी होगी । दुकानदार जहाँ खडा था वहाँ हीं एक पांच सालका लड़का खड़ा था । मुंह काला—बंदरसा । हड्डियाँ निकल आई हैं । पेट आगेकी ओर निकल आया है । शायद पंद्रह दिनसे वह नहाया नहीं था । कपड़े मैले......शायद सालभरसे धोये नहीं हों ! और दुकानमें पडी थीं आमकी गुठलियां... अभी हालहीमें लडकेने आम खाया था क्योंकि उसके कपडे पर पडे हुए पीले दाग इसकी साक्षी दे रहे थे । इधर उधर कुछ कागजके टुकडे, झाडुएं बिखरी हुई थीं ।

मैंने दिलमें सोचा, "यह झाड़ूवाला, लोगोंको कचरा साफ करनेके लिए झाडुएं बेचता है...लेकिन खुदके घरमें..."

मुझे उस झाड़ूवालेपर नफरत-सी हुई । मैं कुछ कहे बगैर ही चल दिया वहाँसे । पीछेसे झाड़ूवाला पुकार रहा था, "बाबूजी ? क्या हुवा ?...क्या हुवा ? ढाई आने दीजिये । ......दो आने...छः पैसे...बाबूजी...यहां तो आइये ।" लेकिन मैंने उसकी पुकारकी ओर ध्यान नहीं दिया, क्योंकि मैं उससे नफरत करने लग गया था ।

आज, एक वर्षके बाद, इस टेबलके पास हाथमें फाउंटेन-पेन लेकर मैं जब लिखने लगता हूं, और कुछ देर ठहरकर उस घटनाके बारेमें सोचने लगता हूं तो मुझे प्रतीत होता है कि उस दिन मेरी भूल हुई थी । उसकी परिस्थितिके लिए वह जिम्मेवार नहीं था । जिस तरह उसे समाजने बनाना चाहा, उस तरह वह बन गया । जिस तरह रहनेका हमने उसे आदेश दिया उसी तरह रहनेमें वह आनंद–गौरव मानने लगा । फिर क्यों हम उस बेचारेको दोष दें ? उसकी पुकारमें कितनी वेदना थी ! क्या उसमें उसकी गरीबीकी झलक नहीं दिखाई दे रही थी ? बेचारेको कितना दुःख हुवा होगा ! एक घंटे बैठकर बडी आशासे उसने एक झाड़ू बनाई । और उसकी कलाकृतिका मूल्य भी अधिक नहीं था—सिर्फ तीन आने...अरे ! उसे तो वह छः पैसेमें देने तैयार हो गया था । फिर क्यों मैंने उसका तिरस्कार किया ? क्या अपनी शिक्षाका, अपने सिद्धांत प्रेमका झूठा, खोखला घमंड ही इसके लिए जिम्मेदार नहीं था ?

उसी तरहका गंदापन, उसी तरहके मैले कपड़े मुझे किसी श्रीमंतके घरमें दिखाई देते तो क्या मैं उससे नफरत करता–कर सकता ? दिल पूर्ण विश्वास के साथ 'हां' कहनेको तैयार नहीं है । तो फिर क्या उसका गंदापन, मेरे तिरस्कारका कारण था या सच्चा कारण था उसकी दरिद्रता ।

और एक दिन परीक्षाका समय आ ही गया । मेरे एक मित्रने एक दिन एक महाशयका परिचय कराया । "आप लाला... हैं । आपकी नागपुर, कानपुर इत्यादि कई जगह दुकानें हैं । सादगीको आप बहुत ही पसंद करते हैं । आप बडे दिलदार, रईस हैं ।" उस महाशकी ओर मैंने देखा । उस झाड़ूवालेकी जगहपर उन्हें बैठा दिया जाता तो चल जाता ! कहनेका मतलब यह कि उनकी और झाड़ूवालेकी वेश-भूषामें अधिक अंतर नहीं था । यह सादगीका नमूना था, या कंजूसीका सुंदर उदाहरण ! लेकिन मैंने उनसे नफरत नहीं की–दर असली कर नहीं सका ।

"क्योंजी, मैंने सुना है, आप लेखक हैं ? अच्छा तो क्या लिखते हैं आप ! कहानियाँ ? या राजनैतिक मुआमलेपर-कुछ लिखते हैं ? आप समाजवादी मालूम होते हैं ! आज-

(शेष पृष्ठ २८ के कालम ३ पर)

कमला मिल के कपड़े इस्तेमाल करें ।

आर्टिफिशियल सिल्क ज्योर्जेट साड़ियां साडी क्लाथ और शर्टिंग कपड़ों के लिये यह मिल अपनी विशेषता रखती है !

हेड आफिसः—
गोयनका हाउस
१४५, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट,
कलकत्ता

हर प्रकार की धोती, साडी, कोरा लॉंगक्लॉथ, कोटिंग, केनवास, सूसी, आदि आदि

कमला मिल्स लिमिटेड
तुलसी पाइप रोड, परेल, बम्बई. टे. नं. ६००६४–४५
विक्री-विभागः—

बम्बई : टे. नं. २६९४५
मूलजी जेठा मार्केट

कलकत्ता :
सूतापट्टी

भाग्य या भूल

कहानी

● श्रीमती सत्यवतीजी भैय्या ●

[१]

सौन्दर्यकी प्रतिभा—शोभा गरीबके घरमें पैदा हुई, गरीबीमें ही पली, और गरीबीमें ही बड़ी हुई थी। यद्यपि गरीबीमें उसे सब प्रकारके सुख प्राप्त थे परन्तु फिर भी उसकी इच्छा एक बार अमीरी भोगनेकी अवश्य थी; यद्यपि उसने सुन रक्खा था कि अमीरीमें सुख नहीं होता; अमीर पैसे और विलासके दास होते हैं; उनके हृदय नहीं होता। और यह सब सुनकर वह थोड़ी विरक्त अवश्य हुई थी, परन्तु फिर भी वह लक्ष्मीकी इच्छा छोड़ नहीं सकी थी।

जब वह देखती, उसकी हमजोलियाँ अपनी २ मोटरोंमें हवा खाने जा रही हैं। नित्य नये फैशनोंको सजा रही हैं। वह मनमसोस कर रह जाती। जब उसकी सहपाठिनी विमला अपने वैभव और विलासका वर्णन करती, तब वह स्वयं वह सब सुख भोगनेके लिये लालायित हो उठती। इसी प्रकार हृदयमें एक आकांक्षा लिये हुये शोभाने सोलह बसन्त पार कर लिये।

शोभाके पिता रमाकान्त किसी इन्श्युरेन्स कम्पनीमें तीस–चालीस रुपये माहवार पर क्लर्क थे। जिसमें वे, उनकी पत्नी जान्हवी, एक छोटा शिशु कुमार तथा कन्या शोभा इन चार प्राणियोंका पालन बड़ी मुश्किलसे होता था। फिर भला शौक–सिंगार वहाँ कहाँ स्थान पा सकता था? शौक–सिंगार होता है, पैसे वालों या निठल्लोंके लिये। यहाँ तो पेटकी समस्या ही मुश्किलसे हल हो पाती थी अतः शोभाने कभी सिनेमाका भी दर्शन नहीं किया था। हाँ उसके विषयमें सुन अवश्य रक्खा था। यही सब कारण थे कि लक्ष्मीकी चकाचौंध उसे अपनी ओर बरबस खींचे ले रही थी। और उसने अपने भविष्यजीवनके बड़े ही सुन्दर कल्पनाके महल बना रक्खे थे।

परन्तु वैसे शोभा बड़ी सुशील और सदाचारिणी लड़की थी, उसकी माँने उसे सुयोग्य गृहणीके रूपमें छोड़ा था। सौंदर्यमें वह सैकड़ों सुन्दरियोंको भी लज्जित करनेवाली थी। वास्तव में शोभा की शोभा निराली ही थी। उसके पिता रमाकान्त ने उसे शिक्षण से भी कोरा नहीं रक्खा था, उन्होंने उसे मैट्रिक तक शिक्षण दिया था। इसी वर्ष सफलतापूर्वक शोभा ने मैट्रिक पास की थी। और अब आगे न पढ़ने का साधन था और न पढ़ाने की इच्छा। पिता रमाकान्त चाहते थे कि अब थोड़े खर्च में किसी सुयोग्य पात्र को कन्या दान कर इस उत्तरदायित्व से मुक्त हों और ईश्वरेच्छा से एक सुयोग भी आ जुटा।

एक दिन उसकी सहपाठिनी चन्द्राने आकर शोभा को पिकनिक पार्टी का निमन्त्रण दे डाला। शोभा ने कुछ ना–नू के बाद निमन्त्रण स्वीकार कर लिया। परन्तु फिर भी माता से पूछते उसे कुछ संकोच अवश्य हुआ अतएव चन्द्रा ने माँ जान्हवी से अपनी पार्टी का ज़िक्र किया। पुत्री की इच्छा देख कर माँ ने रोकना उचित न समझा और अन्त में अपनी सम्मति दे दी। शोभा प्रसन्न मन चन्द्राके साथ चली गई। उसी दिनसे उसके भाग्य ने पल्टा खाया। उस दिन चन्द्राके भाई योगेश का मित्र सुधीर भी अचानक ही बम्बईसे आकर उस पार्टीमें सम्मिलित हो गया था। उसने शोभा का रूप देखा और मुग्ध हो गया। और इस प्रकार शोभा और सुधीर का परिचय हुआ।

सुधीर इस वर्ष फाइनल एम. ए. का विद्यार्थी था। मेधावी, सुशील और सुन्दर भी, साथ ही लक्षाधीशका पुत्र। फिर भला शोभा भी उसे पसन्द क्यों न करती? फलत: एक दिन शुभ मुहूर्त्तमें गरीब कन्या शोभा अमीर की पुत्र-वधू बनी।

आज वर्षों बाद शोभा की इच्छा पूरी हुई।

[२]

ससुरालमें आकर शोभाने देखा आलीशान बंगला, बहुत से नौकर–चाकर, मोटर, बग्घी सब कुछ। वह अपने भाग्य पर फूल उठी। अहा! यही सब कुछ तो वह चाहती थी और आज अनायास ही उसे सब कुछ मिला और साथ ही मिला आधुनिक फैशनमें ढला पति। उसकी सखियाँ भी उसके इस सौभाग्य पर ईर्षाकर उठीं। परन्तु शोभाके भाग्यमें क्या था सो केवल दैवने ही जाना।

शोभाकी ससुरालमें उसकी सासको छोड़कर बाकी सब ही प्राणी थे। मुँह दिखाईके वक्त शोभा की जिठानीने शोभाका सुन्दर रूप देखा और ईर्षासे जल उठी। पास पड़ोसियोंने जब शोभा के रूप की प्रशंसा की तब जिठानी मणिमाला व्यंगसे मुँह मटका कर बोली—‘हाँ! रूप तो बुरा नहीं है परन्तु फिर भी देवरजी न मालूम क्या देखकर लट्टू हुए कि कुलरीत भुलाकर यहाँ तक कि बूढ़े बाप की भी परवाह न कर गरीबकी बेटी ले आये।’

ननदने भावजका रूप देखकर प्रशंसा की अवश्य; परन्तु फिर भी अमीरीके घमण्डमें ग़रीब भावजको अपना न सकी। बोली—माना कि भाभी अनुपम रूपवती हैं, परन्तु फिर भी रूपके लिये हैसियत नहीं डुबोई जाती। मुझे जब कोई पूछेगा कि तुम्हारे भाईके श्वसुर क्या करते हैं तब क्लर्क कहते हुए शर्मिन्दा न होना पड़ेगा?

‘ठीक है। बेचारी ठीक ही तो कहती है। हैसियतके अनुसार ही काम करना ठीक होता है।’ पड़ोस की बुढ़ियोंने कहा ‘न मालूम आजकलके लड़कों की अक्ल कहाँ मारी गई है। बस उन्हें रूप चाहिए रूप, भले ही आबरू मिट्टीमें जाय।’

‘इसमें बुराई ही क्या है? और भला ग़रीब बाप की बेटी होनेसे बहू का क्या अपराध?’ कुछ युवतियोंने कहा।

‘अपराध की क्या बात है? ब्याह–सगाई बराबर वालोंमें ही शोभा देती है।’ शोभा की जिठानीने खीज कर कहा।

‘सो है, सो तो ठीक है।’ कहकर बुढ़ियोंने सर हिलाया। किसी–किसीने शोभा का पक्ष लेना चाहा पर नक्कारखानेमें तूती की आवाज़ कौन सुनता है। शोभा इस घरके अयोग्य साबित हुई।

श्वसुर महाशय पहले ही नाराज़ थे क्योंकि सुधीरने २००००) रु. के दहेज़ पर लात मार रायबहादुर हरवंश-लालकी पुत्री मीनाको ठुकरा एक भिखारीकी कन्या शोभासे विवाह किया था। उनकी दृष्टिमें क्लर्ककी हैसियत भिखारी जितनी ही थी।

यहाँका दूषित वातावरण देख शोभाका हृदय व्यथित हो उठा, वह एक अज्ञात भयसे सिहर उठी। उसे मालूम हुआ कि उसने ग़लती की। परन्तु अब उपाय न था। आज उसे सखी हंसाकी बात याद आई—‘शोभा धनमें सुख नहीं, सुख सन्तोषमें है।’ हाय! यह छोटीसी बात तब ही क्यों न समझी। उसने सोचा कि यदि सुधीर भी उन्हीं धनाढ्योंके समान विलासी, निर्मोही हो तो......वह काँप उठी, उसे चक्कर सा आ गया और घूम कर बिस्तर पर गिर गई। उसी समय सुधीरने धीर मन्थर गतिसे अपने शयन कक्षमें प्रवेश किया। शोभाको सुधि न थी; वह रो रही थी आगेका विचार करके। हाय! वह अपरिपक्व बुद्धि थी परन्तु उसके माता-पिता तो सब समझते थे, उन्होंने क्यों इस विवाहकी अनुमति दे, दी और वह शोभा आज अपनी तथा अपने माता-पिताको एक ही भूलसे उनका अपमान कर बैठी।

सुधीरने रोती हुई पत्नीको देखा और अपने हृदयका सारा रस अपनी आँखों और शब्दोंमें उंडेल कर शोभाको उठाते हुए कहा—‘छिः यह क्या शोभा? तुम रो रही हो। क्या तुम्हें घर याद आ रहा है रानी! परन्तु अब तो इसी घरको तुम्हें अपना बनाना पड़ेगा। उठो इस बार तुम्हें जल्द भेज दूँगा।’

शोभाने बड़ी निर्दयतासे आँसू पोंछ डाले और अपने हृदयकी व्यथा दबाते हुए मुस्करानेकी चेष्टा की।

सुधीरने पत्नीको खींचते हुए कहा ‘बोलो शोभा, अब तो कभी इस प्रकार रोकर मुझे व्यथित न करोगी?

शोभाने तमाम लाज और संकोच बटोर कर झिझकते हुए कहा—‘और आप कभी मुझे भूल तो न जायेंगे?’

‘पगली!’ कहकर सुधीरने शोभा के लज्जासे गुलाबी गालों पर एक मीठी चपत लगाते हुए कहा—‘क्या कभी यह भी सम्भव है?’

और शोभा सारा दुःख भूल पतिके प्रेममें विभोर होगई।

[३]

धीरे २ दो वर्ष निकल गये। शोभाने इन दो वर्षोंके अन्दर बहुत कुछ देखा, समझा और अनुभव किया। विवाह के बाद एक दो बार ही वह पीहर जा पाई थी। ससुराल वाले वहाँ भेजनेमें अपना अपमान अनुभव करते थे। यह दो बार भी वह सुधीर की कृपासे जा सकी थी। पर ससुराल वालोंका व्यवहार शोभा के प्रति वैसाही अवज्ञापूर्ण था, केवल सुधीर के आश्वासन पर ही शोभा सब सहन करती आ रही थी।

और इधर सुधीर भी विवाह करके बड़ी विकट परिस्थितिमें पड़ गया था। पिता उससे नाराज़ ही थे, भावज और बहनके व्यंग उसे नित्य छेदे डालते थे। उसका खुश मिजाज़ अब चिड़चिड़ा हो गया था। ज़रा २ सी बात पर वह झुंझला उठता और बिना कारण कभी २ शोभाको कुछ कह बैठता। यद्यपि वह जानता था कि इसमें शोभा का कोई अपराध नहीं, परन्तु बिगड़े दिमागकी औषधि क्या? और शोभा चारों ओरसे निरुपाय हो रो देती।

धीरे २ सुधीर का व्यवहार दिन प्रति दिन शोभाके प्रति कठोर होता जा रहा था। शोभा भी इस परिवर्त्तन को देख रही थी, समझ रही थी। परन्तु परिवर्त्तन रोकनेकी शक्ति उसमें न थी।

उस दिन शोभा की ज़रासी गलतीसे जब मणिमालाकी ३००) रु. की ज़रीकी साड़ी मिट्टीमें भर गई तब क्रुद्ध होकर जिठानीने कहा ‘रानीजी न मालूम किस घमण्डमें भरी रहती हैं! मेरी बेशकीमती साड़ी खराब कर दी। अब ज़रा अपने धन्ना सेठ बापसे कह कर मंगवा दो तब मैं जानूं!’

शोभा नित्य जिठानीका अत्याचार सहती चली आती थी परन्तु आज बापकी ग़रीबी पर व्यंग न सुन सकी। रुआसी होकर बोली—‘जीजी कसूर मुझसे हुआ! मेरे बापको क्यों घसीटती हो। बड़ोंका अपमान छोटे मुँह शोभा नहीं देता।’

710674

शोभाके उत्तरने जिठानी मणिमालाको तेलका बैंगन ही बना दिया—'छोटे मुँह बड़ी बात ! मैं छोटे मुँह बड़ी बात कहती हूँ । ज़रा ज़बान संभाल कर बोलना । मैं भिखारीकी बेटी नहीं हूँ जो तुम्हारी बात सुनूंगी। छोटोंको सर चढ़ानेका यही नतीज़ा है । देवर तुम्हें सर चढ़ायें ! यहाँ किसीका कुछ खाते नहीं जो धौंस सहें...' आदि २ न मालूम कितना गर्जन-तर्जन कर मणिमालाने घर सर पर उठा लिया ।

ननद धीराने आवाज़ सुनी तो दौड़ती आई और बिना कारण सुने एक तरफा न्याय कर दिया—छोटी भाभी बड़ोंके मुँह न लगो । यह रूपका घमण्ड अच्छा नहीं । बड़ी भाभी हमारी माँ समान हैं । मालूम है भय्या किसकी स्नेह छायामें इतने बड़े हुए हैं ? इन्हींकी तो । यह तुमने आज बड़ोंको जवाब दे अपने पिताके घरकी ही कुल रीति दिखलाई है । हाय, भय्याने हमारा कुल डुबो दिया ।

शोभा तो इन आक्षेपोंके बीच पत्थर सी खड़ी रह गई। उसकी संज्ञा जाती-सी रही और अन्तको कोई उपाय न देख अपने कमरेमें आ फूट २ कर रोने लगी ।

सुधीर उन दिनों अपने इष्ट-मित्रोंके साथ सैर सपाटेमें लगा हुआ था । शामको मित्र पार्टीसे लौटकर उसने भावज और बहिनके मुँहसे विशद रूपसे पत्नीकी गुणगाथा सुनी । क्रोधसे भरा वह शोभाकी ओर चला परन्तु रोती हुई पत्नीको देखकर सुधीर का हृदय भर आया। वह उसे कुछ भी न कह सका और धीरे २ पत्नीके सर पर हाथ फेरने लगा । मानो वह शोभा को यह सब अत्याचार सहन करने का आशीर्वाद दे रहा हो । शोभा ने भी कुछ स्वस्थ हो सर उठाया और भरे गले से कहा —'आप ही ने तो कहा था कि मुझे कभी न भूलेंगे ।'

सुधीरने पत्नी की व्यथा समझ कर कहा—'पर मैं भूला कहाँ हूँ शोभा ! यदि तुम्हें भूल सकता तो इस क्लेशका निवटारा न हो जाता ?'

'तब मैं सहर्ष सारी परिस्थिति का सामना करने को तैयार हूँ ।' एक बल पाकर शोभा ने कहा । उसकी छाती पर से एक बोझसा उतर गया ।

[४]

छः महीने और भी निकल गए, घरका वातावरण दिन प्रति दिन मलिन होता गया । शोभाका जीवन नाटकीय हो उठा । सुधीर भी घबरा उठा । उसने बहुत चाहा कि किसी प्रकार घरमें शान्ति स्थापित हो तो अच्छा, परन्तु उसका प्रयत्न विफल हुआ । अब उसने अधिकांश समय बाहर व्यतीत करना शुरू कर दिया । सिनेमा, पार्टियाँ, नाच, रंग, यार, दोस्त इन्हीं सबीको लेकर सुधीर, शोभा और घरको भूल-सा गया ।

शोभा बेचारी अकेली परिस्थितिका शिकार बनी । वह दिन प्रतिदिन घुलने लगी । और उन्हीं दिनों आया योगेश, शोभाकी सखी चन्द्राका भाई । शोभाको उसने देखा और देखता ही रहा। वह पहिचान भी न सका। फूलसी शोभा आज हड्डियोंका ढाँचा ही रह गई थी । उसने वहाँकी परिस्थिति देखी और समझी । उसने सुधीरसे कहा—शोभा चन्द्राकी सखी है और उसे मैं बचपनसे जानता हूँ । वह कितनी सुशील और खुश मिजाज़ थी पहले, आज तुमने उसे क्या से क्या बना दिया है सुधीर । यदि मैं जानता कि तुम उसकी अवज्ञा करोगे तो इस विवाहमें अगुआ बनकर पापका भागी कभी न बनता ।'

'परन्तु मैंने अवज्ञा कब की है योगेश ! हाँ परिस्थिति...'

बीचमें काटकर योगेश बोला-'परिस्थितिको दोष देना व्यर्थ है। परिस्थिति अकर्मण्योंके लिए है। परिस्थिति बनानेवाले हम हैं । उठो अपने पैरों पर खड़े हो । परिस्थिति स्वयं तुम्हारे चरण चूमेगी ।'

सुधीर ने सर झुका लिया । सच ही तो योगेश ने कहा-'परिस्थिति अकर्मण्योंके लिए है । उसने उसे पल्टने का उद्योग ही कब किया ।' योगेश चला गया पर सुधीरके भावोंमें उलट फेर मचाकर । 'तुमने शोभा की अवज्ञा की' बार २ योगेशके ये शब्द सुधीरके कानोंमें गूँजने लगे । सुधीरने परिस्थितिको उलट देने का निश्चय किया। वह शोभा को सुखी करेगा । अवश्य, चाहे उसके लिए उसे कितना ही बड़ा स्वार्थत्याग क्यों न करना पड़े। और आज वह पिता की लाखों की स्टेट भी ठुकरानेको तैयार था।

इन दिनों उसने शोभाके प्रति उदासीनता धारण कर ली थी । आज बहुत दिनों बाद उसने शोभाकी ओर आंख उठाकर देखा । सचमुच कितनी दुबली हो गई थी वह ! और इसका कारण था सुधीरकी उदासीनता । हाय ! कितना अधम है वह । उसने सोचा जो फूल सर पर चढ़ाने योग्य था वह आज उसने पैरोंसे रौंद डाला था ।

सुधीरने शोभासे कहा—'रानी ! तुम्हारी इस दुरवस्था का कारण है मेरी अकर्मण्यता । और अब मैंने निश्चय किया है कि कहीं परदेशमें जाकर भाग्य अजमाऊँ । तुम मुझे जानेकी आज्ञा दो ।'

शोभा सिहर उठी । सुधीर का जाना उसे स्वीकृत न था ।'नहीं, मुझे छोड़कर तुम कहीं न जाना, वर्ना मैं बच न सकूँगी।' शोभा रोने लगी । तब सुधीरने उसे आश्वासन दिया।

पर फिर भी सुधीर बहुत दिनों घर न रुक सका । एक दिन रात्रिमें चुपचाप सुधीर धनकी खोजमें निकल गया ।

उस दिन जब प्रातःकाल शोभाने उठकर सुधीरका बिस्तर खाली देखा उसका माथा ठनका । और जब सुधीर दोपहर और दोपहरके बाद शामको भी न आया, शोभा व्याकुल हो रोने लगी । वही तो उस घर में उसका एक मात्र अवलम्बन था और ईश्वरने उसे भी छीन लिया । वह निश्चय न कर पायी कि क्या करे । सुधीर के मन की अवस्था उससे छिपी न थी और यह उसे निश्चय था कि वह विदेश धन संग्रह करने गया है। परन्तु वह वैसा धन चाहती न थी। आज वह पति के लिए कुबेर के भण्डार को भी लात मारने को तैयार थी ।

नित्य शोभा प्रातःसे सायंकाल तक सुधीर की प्रतीक्षा करते २ बावली सी हो गई । अब वह निराश हो चली । पतिको गये लगभग दो वर्ष हो रहे थे और सुधीर का एक पत्र भी न पा सकी थी । क्या वे जीवित होंगे ? कमज़ोर थी ही, निराशा ने उसे खाट से लगा दिया था ।

पिता रमाकान्त ने सुना तो दौड़े आये । पुत्रीको ले जानेके लिये ज़िद्द करने लगे । परन्तु शोभाने कहा 'बाबूजी वह अवश्य आवेंगे । वह मेरे लिये बहुत-सा धन कमाने के लिए गए हैं । यदि मैं उन्हें यहाँ न मिली तो कितने निराश होंगे । अतः आप जायें मैं न जा सकूँगी । माँसे कहें मेरे लिए दुःख न करें । मैं उनके दामादके साथ उनके चरणोंमें आशीर्वाद लेने आऊँगी ।'

रमाकान्त चुपचाप आँसू गिराने लगे। हाय ! उन्होंने इसी सुखके लिए पत्नीके आपत्ति करने पर भी पुत्रीको पैसेवालोंके यहां ब्याहा था । सब ही तो सुन्दर, सुशील वर और पैसा देखते हैं। उन्होने देखा तो क्या पाप किया जो ईश्वर ने उन्हें दण्ड दिया । रमाकान्त चले गए।

जेठानी मणिमाला का ईर्षा भाव भी शोभाकी यह दुर्दशा देख न मालूम कहाँ तिरोहित हो गया था । स्त्री, स्त्री की व्यथा समझ सकती है । पतिसे परित्यक्ता स्त्री का जीवन स्मशान तुल्य है। अतःआज मणि अपने कृत्य पर स्वयं ही लज्जित थी, व्यथित थी। उसके अत्याचारसे ऊब कर ही तो उसका देवर परदेश चला गया था। मणिने उसी सुधीरके जीवनको बर्बाद कर दिया था जिसे कि सास के मरने पर हृदय से लगाकर पुत्रवत् पाला था। शोभाके श्वसुर भी पुत्र के विदेश चले जानेसे दुःखित हुए थे और शोभा के प्रति सदय हो गए। ननद धीरा ससुराल में थी। और आज शोभा घरवालों की सम्पूर्ण सहानुभूति पाकर भी सुखी न थी। उसका हृदय सुधीरके लिए हा-हाकार कर रो रहा था।

उसे किसीसे शिकायत न थी। यदि थी तो अपने भाग्यसे । श्वसुर महाशयने सुधीरका पता लगाने की कोशिश की, पर पता न लगा । धीरे धीरे पूरे दो वर्ष व्यतीत हो गए ।

कुछ दिनों इधर-उधर भटकने के बाद सुधीर लंका पहुंचा और वहाँ नाना प्रकारसे धन कमाने का उद्योग करने लगा । इस बीचमें सुधीरने घरवालोंको कोई समाचार न दिया था, उसकी इच्छा थी बहुत सा धन कमाकर ले जाकर घरवालों को चकित करे और शोभाको सुखी करे । और इधर जब कि शोभा अपनी भूलसे मृत्युके निकट खिंची जा रही थी सुधीर दोनों हाथों रुपया कमा रहा था ।

सुधीर इस बीचमें खूब पैसेवाला हो गया था और अब वह घर जानेकी बात सोच रहा था । तभी उसने अखबारमें एक प्रवासी पतिकी पत्नीके जिसने घरवालोंके अत्याचारसे ऊब कर आत्मघात कर लिया था, आत्मघातका समाचार पढ़ा । और वह अपनेको रोक न सका । उसी दिन पहली स्टीमरसे भारतकी ओर चल पड़ा । वह सोच रहा था कहीं उसी प्रवासी पतिकी पत्नीके समान मेरी शोभा भी...। आशंकासे वे वह आगे न सोच सका और मनको दूसरी ओर घुमाने लगा ।

[५]

सुधीर जब घर पहुँचा, शोभाकी अवस्था शोचनीय हो गई थी । घरके दरवाज़े पर मोटरके रुकते ही सुधीर थर्रा उठा । यदि शोभा उसे न मिले तो...।

काँपते पैरों वह अन्दर घुसा । चारों ओर एक भयानक सन्नाटा था । आशंकासे सुधीरका दिल बैठ गया । सामनेसे मणि आती हुई दीख पड़ी, निराशाकी प्रतिमूर्त्ति सी । सुधीरने भाभीके पैर छुए और एक दर्द भरी दृष्टि उधर डाली । मणिके नेत्र भरे हुए थे । उसने सुधीरके मस्तक पर हाथ रखते हुए कहा—'आ गये तुम देवरजी ! परन्तु बहुत देरसे । शायद शोभा अब भी...'...और वाक्य पूरा होनेसे पहले ही वह सुधीरको शोभाके कमरेकी ओर खींच ले गई । सुधीर भावजके साथ यन्त्र चालितके समान पत्नीके शयन-कक्षमें पहुँचा ।

शोभा तब प्रलाप कर रही थी । 'तुमने भी मुझे भुला दिये मेरे देवता । तुमने मुझे वचन दिया था कि कभी न भूलूँगा । हाय ! मैं बड़ी आशा लेकर तुम्हारे चरणोंमें आई और तुमने मुझे ठुकरा दिया । मैं गरीब हूँ इसलिए । नहीं, तुम्हारा क्या दोष लक्ष्मी मैंने ही तो चाही थी। उफ ! बड़ा दर्द है । बड़ी प्यास है ।' कराह कर दोनों हाथोंसे हृदय दबाकर शोभाने कहा । 'मेरा सब ले लो परन्तु मेरा सन्तोष, मेरी शान्ति मुझे लौटा दो भगवन् । दे दो मेरे पतिको ।'

सुधीर और न सुन सका, भावजकी उपस्थितिका ज्ञान भी भूल कर पत्नीको हृदयसे लगानेके लिए दौड़ पड़ा । मणिमाला आंसू पोंछती हुई बाहर निकल गई ।

पत्नीको हृदयसे लगाते हुए सुधीरने कहा-"मैं आगया, रानी । अब तुम्हें छोड़कर कहीं न जाऊंगा । दुनियाँकी कोई शक्ति अब मुझे तुमसे पृथक न कर सकेगी, मेरी देवी । चलो वहीं चलेंगे जहाँ सुख है, संतोष है । देखो मैं कितना धन कमाकर लाया हूँ तुम्हारे लिये । क्षमा करना शोभा मैं तुम्हें अभी तक न पहचान सका ।"

शोभाने पतिकी आवाज़ सुनी । उसकी गई हुई चेतना

(शेष पृष्ठ २८ के कालम २ पर)

राजस्थानी संसार

स्व. विश्वेश्वरदासजी डागाके मौसर पर शान्तिमय धरना

(विशेष संवाद दाता द्वारा)

गत मास की १८ तारीखको बम्बईमें माहेश्वरी समाजके सुप्रतिष्ठित व्यवसायी राजा सर विश्वेश्वरदासजी डागा के. टी. के. सी. आई. ई. का अपने निवासस्थानपर स्वर्गवास हो गया था । आपके सुपुत्र श्री खुशहालचन्दजी डागा तथा आपके अन्यान्य कुटुम्बी जनोंने ३० अगस्त को आपका मौसर करने का निश्चय किया । बम्बईके मारवाड़ी समाजसे यह प्रथा प्रायः उठ गयी थी । श्री रामदेवजी पोद्दारने अपने पिता स्व. आनन्दीलालजी पोद्दारका और श्री गजाधरजी सोमाणीने अपने दादा स्व० लक्ष्मीनारायणजी सोमाणीका मौसर नहीं किया था । इस प्रकार बम्बईके समस्त मारवाड़ी समाजसे मौसर की प्रथाका अन्त किया जा चुका था । किन्तु अब सर विश्वेश्वरदासजी डागाके मौसरके रूपमें बम्बईमें इस प्रथाको जब पुनर्जीवित करनेका निश्चय उनके कुटुम्बियोंकी तरफसे किया गया तब समाजके अनेक सम्भ्रान्त व्यक्तियोंको इसका भारी दुःख हुआ । फलतः श्रीयुत रामदेवजी पोद्दार, श्री नारायणलालजी पित्ती तथा श्री राधाकृष्णजी लाहोटीने श्री खुशहालचन्दजी डागा व श्री लक्ष्मणदासजी डागासे भेंट की । आप लोगोंने उन्हें मौसर न करनेके लिये बहुत अधिक समझाया बुझाया । श्री राधाकृष्णजी लाहोटीने 'विश्वामित्र' दैनिकमें लेख लिखकर मौसरके विरोधमें जनमत बनानेका प्रयत्न किया और स्वर्गीय डागाजी के आत्मीय–स्वजनोंसे अपील की कि वे इस प्रथाको फिर जीवित न करें । इसी प्रकार श्री बालकृष्णजी धूत, मन्त्री माहेश्वरी हितकारिणी सभा तथा श्री दामोदरदासजी धूतने भी पत्रिकायें निकालीं । किन्तु कोई विशेष फल नहीं निकला और अन्तमें मौसर करनेका निश्चय ही कायम रहा ।

इस निश्चयके अनुसार ३० अगस्तको सायंकाल ४॥ बजेके लगभग पिंजरापोल पंचायत बाड़ीमें बाकायदा मौसरका आयोजन किया गया । इस अवसरपर बम्बईके मारवाड़ी समाजके अनेक व्यक्तियोंने, जिनमें सर्वश्री कृष्णलालजी बागड़ी, राधाकृष्णजी लाहोटी, प्रतापचंद्रजी पण्डित, मदनलालजी अग्रवाल, बालकृष्णजी धूत, चौथमलजी बियाणी, रामगोपालजी धुत, दामोदरदासजी धूत, मोहनलालजी धूत व कमलकिशोरजी नत्थाणीके नाम विशेष उल्लेखनीय हैं, मौसरके स्थानपर शांन्तिमय धरना दिया और मौसरमें शरीक होनेके लिये आनेवाले महानुभावोंसे भोजन न करनेकी प्रार्थना की । इस प्रथाके सम्बन्धमें उन लोगोंसे लम्बा वार्त्तालाप आदि भी हुआ ।

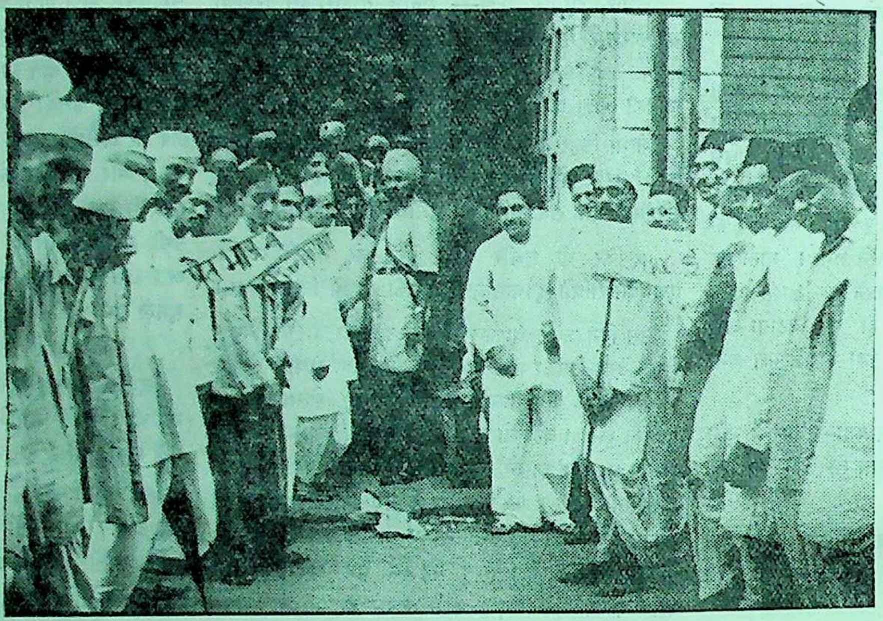

धरनेका एक दृश्य

जान पडता है कि यह मौसर केवल बीकानेरवासी माहेश्वरी भाइयोंतक ही सीमित था क्यों कि बम्बईके अन्य प्रान्तवासी मारवाड़ी भाइयोंने तो इस प्रथाको प्रायः उड़ा ही दिया है । इस अवसर पर जिन–जिन महानुभावोंसे बातचीत और विचार विनिमय हुआ उससे ज्ञात हुआ कि मौसरमें शामिल होनेवाले अधिकांश महानुभाव भी इस प्रथाकी घातकताको समझते हैं और चाहते हैं कि जिसें किसी तरह यह प्रथा समाजसे पूर्णतः उठा दी जाय । किन्तु उनमें इस प्रथाकी बुराइयोंको अनुभव करते हुए भी यह एक कमजोरी है कि वे इस प्रथाको उठानेका साहस स्वयं नहीं कर सकते बल्कि चाहते हैं कि कोई दूसरे बड़े सज्जन व भाइयोंमें से ही कोई महानुभाव इस प्रथाको उठानेका श्रीगणेश करें । इन विचारोंको देखते हुए यह तय है कि इस प्रथाको उठानेमें जो सबसे बड़ी बाधा है वह यही है कि कोई प्रभावशाली व्यक्ति इस कार्यमें पथप्रदर्शन नहीं कर रहे । क्या ही अच्छा होता यदि सर विश्वेश्वरदासजी डागाके स्वर्गवासपर यह मौसर न करके समाजके सामने एक चिरस्थायी और प्रभावशाली आदर्श रखा जाता । इससे जो प्रथा पहले ही समाजसे धीरे-धीरे विदा हो रही है उसे और भी जल्दी विदा करनेमें मदद मिल जाती ।

धरना देनेवालोंने किसी प्रकार की जोर–जबर्दस्तीका सहारा नहीं लिया और केवल शान्तिमय उपायोंको ही बरता गया । धरना ४॥ बजे से ६॥ बजे तक जारी रहा । इस धरनेका असर भी अभिवांछित हुआ और मौसरमें केवल नाम मात्रके ही लोगोंने भोजन किया । यहां तक कि बीकानेरी माहेश्वरी भाइयोंमेंसे भी बहुतोंने भोजन नहीं किया ।

इस मौसरके धरनेके सम्बन्धमें एक बात विशेष उल्लेख योग्य है और वह यह कि धरना देने वालोंके साथ "घरधनी" का व्यवहार बहुत सुन्दर रहा और श्री लक्ष्मणदासजी हरखचन्दजी डागाका व्यवहार भी अत्यन्त सुन्दर और सौजन्यपूर्ण रहा जिसके लिये वे लोग धन्यवादके पात्र हैं ।

मेवाड़में शिष्टमण्डलका भ्रमण

भाद्र कृष्णा चतुर्थीको श्री दिलीपसिंहजी राठी, गणेशलालजी देवपुरा और माणिकलालजी शारदा प्रचार करनेके लिये रवाना हुए । श्री राठीजीका विचार माहोजी, कुरज, कवारिया, गलुन्ड, पछमता, नाथद्वारा आदि स्थानोंमें प्रचार कर पुनः लौटनेका था । माहोली पहुँचे तबतक मार्गमें वर्षाका इतना जोर रहा कि चारों ओर पानी ही पानी दृष्टिगत होने लगा । यह निश्चित विचार करके प्रयाण किया गया कि भाद्र कृष्णा चतुर्थी को दोपहरमें माहोली में सभा बुलाकर कार्य समाप्त कर आगे बढ़ जायेंगे । किन्तु अजस्र वर्षाके कारण दूसरे दिन दोपहर को इंन्द्रदेव की छत्र छायामें ही सभाका आयोजन स्थानीय माहेश्वरी पंचायती नोहरेमें श्री मोतीलालजी देपुराके सभापतित्वमें किया गया । सबसे पूर्व श्री गणेशलालजी देवपुराने समाजकी बिखरी हुई शक्तिको संगठित करनेकी आवश्यकता पर प्रकाश डाला,साथ ही समाजमें फैली कुरीतियोंपर भाषण दिया । इसके बाद श्री माणकलालजी शारदाने स्त्री शिक्षा पर प्रकाश डाला । आपने बताया कि पुरुषोंकी अपेक्षा स्त्रियोंको शिक्षित बनाना विशेष आवश्यक है । क्योंकि नारी ही मानव समाजकी जननी हैं । स्त्रियां शिक्षित होंगीं तो उनके बाल बच्चे भी शिक्षित होंगे । अतएव शिक्षाका प्रचार होना चाहिये । इसके बाद श्री दिलीपसिंहजी राठीने उपस्थित माहेश्वरी बन्धुओंके सामने मेवाड़के माहेश्वरी समाजकी अशिक्षा, निर्धनता, बेकारी आदिका चित्र खींचा । और साथ ही यह भी बतलाया कि समाजमें जो आज कई प्रकार की कुरीतियां प्रचलित हो रही हैं उनका कारण केवल अशिक्षा है ।

मौसर और कन्या विक्रय पर भी प्रकाश डाला । फलस्वरूप निम्न लिखित सज्जनोंने इनके भोजनमें शरीक नहीं होने की प्रतिज्ञा लीः—

कन्या विक्रयमें पास भोजन नहीं करने की प्रतिज्ञा लीः—

(१) सर्व श्री हीरालालजी चेचाणी (२) मगनलालजी चेचाणी, (३) सुन्दरलालजी चेचाणी, (४) सुरजनलालजी चेचाणी, (५) जगन्नाथजी काल्या, (६) मोतीलालजी देपुरा (७) बृजलालजी देपुरा, (८) लेखराजजी दरक, (९) रामजसजी कांबरा, (१०) हरिरामजी काबरा, (११) रामकुमारजी शारदा, (१२) डाड़मचन्दजी शारदा, (१३) ओंकारलालजी राठी की धर्म पत्नी, (१४) केदारमलजी सामरिया की धर्मपत्नी, (१५) मांगीलालजी लड्ढा कपासिन, की धर्मपत्नी, (१६) रामचंदजी लावटी, (१५) बक्षीरामजी शारदा, (१२) मोड़ीलालजी चेचाणी, (१७) रामचन्द्रजी काल्या (१८) फूलचन्दजी बियाणी

करियावरके भोजनमें शरीक नहीं होने वालोंके नामः—

(शेष पृष्ठ २६ के कालम ३ पर)

राजस्थानी संसार

बम्बई

सुधारक शुभविवाह

बम्बईके सुप्रसिद्ध समाजसुधारक श्रीयुत श्रीनिवासजी बगड़काके सुपुत्र श्री परमेश्वरलालजी बागड़का का विवाह अजमेरके प्रसिद्ध सुधारक स्वर्गीय श्री श्रीलालजी अग्रवाल एडवोकेटकी सुपुत्री सौ० शान्तिदेवीजीके साथ अजमेरमें सम्पन्न हुआ। आप दोनों वर-वधू शुद्ध खादी पहनते हैं। विवाहमें भी आप लोगोंने खादीका ही वेश धारण किया और किसी भी तरहकी प्राचीन और भद्दी रूढ़ि या रस्मरिवाज को स्थान नहीं दिया। पर्देका भी सर्वथा बहिष्कार था। केवल सप्तपदीकी धार्मिक रस्म ही की गयी थी। अजमेरके मारवाड़ी समाजमें इसी प्रकारका सुधारक विवाह आजसे चार वर्ष पूर्व वधूकी बड़ी बहन सौ. कमलादेवीजीका प्रो० रामेश्वर प्रसादजी गुप्त एम. ए. सी. टी. के साथ हुआ था। उस सुधारक विवाहमें शामिल होने वाले जाति च्युत कर दिये गये थे। परन्तु अब चार बरस बाद इस सुधारक विवाहकी समाजमें सराहना ही हुई है जो वहांके सामाजिक स्तरके ऊंचा होनेका प्रमाण है।

अकोला

मध्यप्रदेश व बरारप्रान्तीय माहेश्वरी सभा

काटोलके चतुर्थ अधिवेशनका आय-व्यय

श्री मध्यप्रदेश-बरार प्रांतीय माहेश्वरी सभाका चतुर्थ अधिवेशन काटोलमें अकोलाके प्रसिद्ध समाज-सेवक और जन-नायक श्री सेठ सुगनचंदजी तापड़िया की अध्यक्षतामें सम्पन्न हुआ था।

विचार तो यह हुआ था कि प्रांतीय सभाके इस अधिवेशनकी रिपोर्ट विस्तृत रूपसे जल्दी प्रकाशित की जाय, परन्तु अनेक बाधाओंके कारण हमारी यह मनोकामना सिद्ध न हो सकी। अब हम आय-व्यय विवरणके साथ समाजकी सेवामें उपस्थित हो रहे हैं।

आशा है, चाहे विलम्बसे ही हो, इस विवरणको प्राप्त कर विज्ञ जाति-बन्धु संतोष अनुभव करेंगे।

आय-व्यय का संक्षिप्त ब्यौरा

जमा का ब्यौरा

१२७४) श्री चंदा खाते जमा, २०४॥=) श्री प्रतिनिधि फीस खाते जमा, १५७) श्री स्वागत-समिति सदस्य शुल्क खाते जमा, ४) श्री पंडाल खाते जमा, १९७)॥ श्री भोजन-प्रबंध खाते जमा, १२-)॥ श्री खर्च खाते जमा

कुल जमा १८४९)।

खर्च का ब्यौरा

६) श्री चंदा खाते, ५) स्वागत-समिति सदस्य फीस खाते, ११९॥।) पंडाल खर्च खाते, ७६६)। भोजन-प्रबंध खाते, २३७॥) प्रचार खाते, १४॥) जुलूस-प्रबंध खाते, ७७=) स्वयंसेवक दल खाते, १४=)। प्रदर्शिनी खाते, २८॥=) मनोरंजन खाते, ६४॥≡) फुटकर खर्च खाते, १२१॥।) छपाई खाते, २७॥-) रोशनी प्रबंध खाते, ३७॥=) निवास प्रबंध खाते, १५॥≡)॥ आफिस खर्च खाते, २५॥-)॥ स्टेशनरी खाते, ५७=)॥ पोष्टेज-तार टेलीफोन

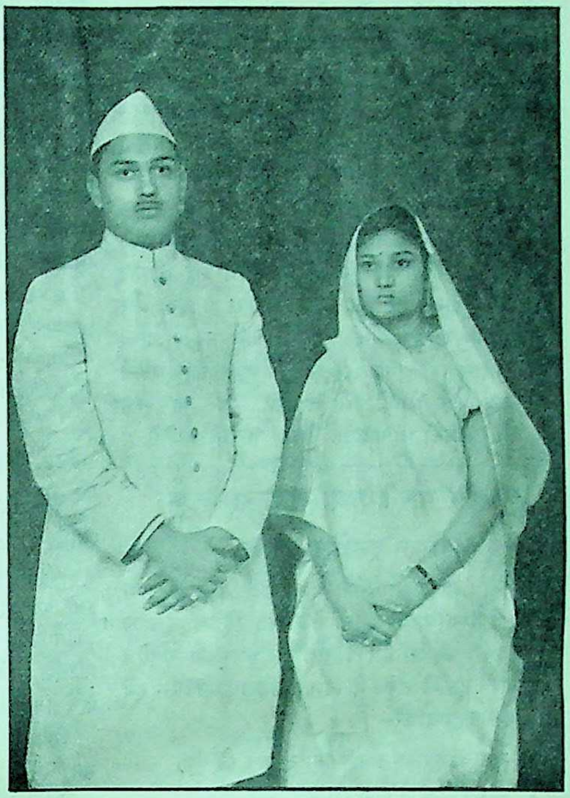

कुल खर्च १६१९॥-)।

शिल्क २२९≡

कुल १८४९)।

विनीत—कस्तूरचन्द चाण्डक
स्वागत मन्त्री

पुस्तक परिचय

रघुनाथसिंह का मुकदमा—लेखक श्री एस्. एम्. गोपा। प्रकाशक मन्त्री राजस्थानी यूथ लीग, १०५-६ गोडाऊन स्ट्रीट, मद्रास। दाम मुफ्त।

यह पुस्तक माहेश्वरी ही नहीं बल्कि समस्त मारवाड़ी युवकोंके पढ़ने की रामायण है। देश-द्रोहियों ने किस प्रकार श्री रघुनाथसिंह मेहता को रुकनुदौला मजफर जंग श्री जैसांण नाथके कान भर कर जेल भिजवाया, माहेश्वरी युवक मंडल जैसी केवल सामाजिक संस्थाको रूस की यूथ लीग की उपमा देकर रुकनुदौला की सरकारने किस प्रकार गैर कानूनी करार दिया, न्यायके नाटकमें कौन कौन से देश-द्रोही और गुर्गे झूठे गवाह बने, ब्रिटिश भारतमें इस गिरफ्तारी का विरोध, श्री कर्णसिंहजी मेहता का दरबारको भेजा गया अल्टीमेटम, रघुनाथसिंह की रिहाईके पश्चात, माहेश्वरी युवक मंडलको अराजक ठहराये रखकर माहेश्वरी युवकों की छातों पर क्यों कील ठोकी गई, इन सबकी यह सुन्दर सच्ची कहानी है। इस पुस्तकमें श्री रघुनाथसिंह मेहता, श्री सौ. लक्ष्मीरानीजी मेहता तथा श्री कर्णसिंहजी का हाफटोन चित्र भी दिया गया है। श्री रघुनाथसिंहजी इस पुस्तकके बारेमें लिखते हैं, "आपने मेरे मुकदमे की घटना को ठीक ढंग से लिखा है"।

बीकानेर

श्री मोहता धर्मशालामें गणेशोत्सव

सदाकी भांति श्री मोहता धर्मशालामें ता. २६।८।४१ गणेश चतुर्थीके दिन श्रीगणेश भगवानका जन्म महोत्सव मध्याह्नको मनाया गया। ३ बजेसे ४½ बजेके मध्यमें श्री मोहता आयुर्वेद महाविद्यालयके छात्रोंने "समाजसुधार" तथा पञ्चोंकी स्वार्थान्धता विषयपर एक मनोरञ्जक अभिनय किया। ६ बजे शामको राव साहेब पण्डित छत्रसिंहजीके सभापतित्वमें श्रीगणेश व्यायाम शालाका पुरस्कार वितरणोत्सव मनाया गया।

यह व्यायाम शाला गत मई माससे ही प्रारम्भ की गई है; तथा शिक्षार्थियोंने रुचिपूर्वक भिन्न-भिन्न व्यायामोंके अभ्यास किए हैं।

व्यायाम शालामें सभी श्रेणीके हिन्दूमात्र शिक्षा पाते हैं। सभापतिजीने १४८ छात्रोंको पुरस्कार दिया। इसी अवसर पर श्री मोहता हाईस्कूलके छात्रोंने भी अच्छा व्यायाम प्रदर्शन किया।

भगवानकी आरती तथा भोजनोपरान्त ८ बजेसे गीता पाठशाला स्थापना महोत्सव प्रारम्भ हुआ। बाहरके तथा शहरके मान्य सज्जन उपस्थित थे।

श्रीमान् सेठ रामगोपालजी मोहताने गीता अध्ययन की आवश्यकता बताते हुए गीता विज्ञानको व्यवहारिक बताते हुए जोर दिया, तथा महाराजा मानसिंजीके बने अनेक पद्योंको गाकर सुनाया। रात्रिके १ बजे इस अधिवेशनका कार्य समाप्त हुवा। हमें आशा है कि मोहता परिवारकी अन्य संस्थाओंकी भांति यह दोनों नवीन संस्थाएं भी जनताके लिए विशेष लाभदायक सिद्ध होंगी।

गुरुकल व्याड़में मकानका उद्घाटन

रामकुंवरदेवी कुकरडा निवासीने जो गुरुकुल व्याडमें भवन बनवाया है उसका उद्घाटन श्री वियाणीजीके जेलसे मुक्त होने पर होगा।

सुधारक या गैर सुधारक विवाह ?

ता. ७ अगस्तके माहेश्वरीके १७ वें पृष्ठ पर "एक प्रतिवाद" शीर्षकके नीचे जो समाचार श्रीबन्सीलालजी तोष्णीवाल हदगांव निवासीके पत्रसे प्रकाशित किया गया है उसके उत्तरमें मनाठानिवासी श्री शिवनाथजी मालीवालने निम्न तथ्य प्रकाशनार्थ भेजे हैं।

श्री नन्दलालजीकी आयु ३२ वर्ष की है। आपकी सगाई होनेके बाद, मारवाड़ी मंडल हैद्राबादके दूसरे दौरेके समय बसमत नगर आने पर श्री. गुलाबचंदजी नागोरी, श्री दामोदरदासजी मूंदड़ा, श्री हरिश्चंद्रजी हेड़ा आदिको श्री नन्दलालके विवाहका पूर्ण समाचार देनेके बाद विवाहमें पधारने की प्रार्थना की गई थी तथा विवाहमें पर्दा आदि रूढ़ियोंको स्थान नहीं दिया जायगा, ऐसा आश्वासन भी दिया था। इसपर श्री गुलाबचंदजी नागोरी व श्री हरिश्चंद्रजी हेड़ाने विवाहमें पधारनेका अश्वासन दिया, व श्री दामोदर दासजी मूंदड़ाने विवाह प्रणाली बतलायी। परंतु योगायोगसे मारवाड़ी मंडल हैद्राबादने विवाहके एक मास पूर्व ही, "वर-वधू की आयुमें १५ वर्षसे ज्यादा अंतर हो ऐसे विवाहमें शरीक नहीं होना" इस आशयका प्रस्ताव पास कर लिया। इस कारण श्री हरिश्चंद्रजी हेड़ा नहीं आ सके।

श्री. गुलाबचन्दजी नागोरी मारवाड़ भ्रमणमें होनेसे नहीं आ सके। श्री. दामोदरदासजी मूंदडाका विवाहके विषयमें शुभ संदेश हमें मिला है।

मैंने और श्री. नन्दलालने अभीतक "विधवा का विवाह विधुर से हो" ऐसी कोई प्रतिज्ञा नहीं ली है।

[भविष्यमें इस सम्बन्धमें और हम कुछ नहीं प्रकाशित करेंगे। हम इस प्रसंगको यहीं समाप्त कर देना चाहते हैं।

—सं०]

राजस्थानी संसार

मूंडवा

श्री वेंकटेश दातव्य औषधालयकी स्थापना

श्रीमान् सेठ रामचन्द्रजी शिवनारायणजी बंग द्वारा ता. ११–२–४१ तदनुसार मिती भाद्रपद कृष्णा ४ को उपरोक्त औषधालयकी स्थापना की गई जिसका उद्घाटनोत्सव स्थानीय श्रीमान् स्वामीजी आत्मारामजी की अध्यक्षतामें हुआ। उपस्थिति काफी थी। सर्व प्रथम मंगलाचरणके उपरांत श्रीमान् पं. कालिकाप्रसादजी स्थानीय स्कूलके हेड-मास्टरने मूंडवा जैसी नगरीमें इस कमीका उल्लेख किया। और इसकी पूर्तिके विषयमें प्रकाश डालते हुए श्रीमान् सेठसाहेबको अनेकानेक धन्यवाद दिये। आपने अपने भाषणमें आयुर्वेद चिकित्सा प्रणाली की उत्तमता पर भाषण देते हुए एकत्रित सज्जनोंको समझाया कि सामाजिक फिजूल खर्चीमें धन का अपव्यय न कर इस प्रकारके अन्य शुभ कार्योंमें दान करनेका आप लोग भी अनुकरण करें, ताकि-नगरकी उन्नति शीघ्रातिशीघ्र हो जाय।

तदुपरान्त वैद्य भूषण श्री मोहनलालजी कोठारी आर. ए. पी. का, जिनकी नियुक्ति इस औषधाल्यमें हुई हैं भाषण हुआ। आपने अपने भाषणमें आयुर्वेदकी प्राचीनता और मूंडवा पर प्रकाश डालते हुए कहा कि श्री मरूधराधीशने अपनी प्यारी प्रजाकी रुग्णावस्था एवं अपनी मातृ चिकित्साको प्रोत्साहन देनेके हेतु अपने राज्यमें आयुर्वेदके उत्थान और प्रचारके हेतु एक एडवाइजरी बोर्ड रायसाहब तनसुखजी बालवैद्यके प्रतिनिधित्वमें स्थापित कर ग्राम २ में सहायता और लाभ पहुँचाना शुरु कर दिया इसके वास्ते हम श्री महाराजा साहबके हृदयसे आभारी हैं। फिर आपने प्राकृतिक स्वास्थ्य पर प्रकाश डालते हुए बताया कि आजकल जो अधिकाधिक बीमारी बढ़ रही है इसके कारण हम ही हैं और यह हमारी गलत फ़हमी और अपने पूर्वजोंके प्राचीन आदर्श नियमोंके न माननेका ही फल है। तदुपरांत मूंडवानगर निवासियोंसे प्रार्थना की कि इस संस्थामें आपलोग पूर्ण सहयोग दे लाभ उठावें ताकि हमें भी आपलोगोंकी सेवा करनेका सुअवसर मिले और सेठ शिवनारायणजी बंगका दिया दान भी सफल हो। इसके बाद जन साधारणसे प्रार्थना की गई कि वे सेठ शिवनारायणजी बंगका अनुकरण कर नगरकी अन्य कमियोंकी पूर्ति का यथासम्भव प्रयत्न करें ताकि नगरकी यथाशीघ्र उन्नति हो सके। तदुपरांत सभा विसर्जित हुई।

[यह हर्षका विषय है कि वैद्यभूषण श्री. मोहनलालजी कोठारी, आर. ए. पी. ने इस औषधालयका कार्यभार सम्भाला है। आप देशनोक (बीकानेर स्टेट) निवासी हैं और इन्डियन मेडीसनबोर्ड यू. पी. गवर्नमेन्ट एवं आयुर्वेदिक कौन्सिल एण्ड स्टेट फेकल्टी दी बंगाल गवर्नमेन्टके रजिस्टर्ड आयुर्वेदिक प्रेक्टीशनर हैं। आपकी चिकित्सा और सेवासे देशनोक और उसके आसपासकी जनता ही नहीं अपितु राजस्थानका समस्त विद्वत्समाज पूर्ण रूपसे परिचित है। आपके चिकित्सा विषयक अनुभव माहेश्वरीमें समय २ प्रकाशित होते रहे हैं। आपने चिकित्सा विषयके कई निबन्ध भी लिखे हैं जिनपर आयुर्वेदिक सम्मेलनों द्वारा आपको कई रजत पदक व प्रमाणपत्र मिले हैं। आपमें समाज सुधार और समाजसेवाकी बड़ी लगन हैं। मूंडवानगर निवासियोंको आपके रूपमें एक सुयोग्य कार्यकर्त्ता और कुशल चिकित्सक मिल गया हैं। मूंडवा वासी आपसे चिकित्साके अलभ्य लाभके साथ २ सामाजिक व नगरकी उन्नतिके कार्योंमें भी विशेषरूपसे सहयोग प्राप्त करेंगे, ऐसी आशा है।

—सं०]

इरकल

मारवाड़ी साहुकारों पर भीषण डाका

दो हजार बुनकरोंका उपप्लव

गत १२ अगस्तको इरकलके करीब दो हज़ार बुनकरोंने वहांके साहूकारों की दुकानें लूटनेका निश्चय किया। फलतः पहले पहल उन्होंने श्री रामनाथजी रामजीवनजी करवाके यहां धावा बोला। आपके यहांसे करीब चालीस हजारका माल–रेशम, नगद रुपये, रेशमी साड़ी, सूत और रंग वगैरह–लूट लिये और उनके हिसाब–किताबकी कापियां, बहियां तक भी फाड़ कर फेंक दीं। इसके बाद श्री चान्दमलजी भण्डारी की दूकानपर भी डाका डाला और अन्दाज़न चालीस हज़ार रुपयेका माल लूट लिया। इसी प्रकार श्री मगनमलजी भण्डारीकी दूकानसे भी करीब पचीस हज़ार का माल लुटा होगा। इतनेमें शेष दूकानदारोंको इस उपद्रवकी खबर हो गयी और उन्होंने दूकाने बढ़ादीं। और जिन स्थानोंपर बुनकरोंनें डाका डालना चाहा वहां वे असफल रहे क्यों कि पुलिस पहुंच जानेसे गोली चला दी गयी। दोपहरसे शाम तक यह दंगा होता रहा और शामको बागलकोट और बीजापूर आदिसे ८ फौजदार, बीजापुरसे कलेक्टर और बेलगांवसे असिस्टेण्ट कमिशनर भी पहुंच गये। अब तक भी बड़ा कड़ा पहरा है और किसी को भी बिना तलाशी लिये किसी माल असबाबके साथ बाहर नहीं जाने दिया जाता। अबतक अन्दाजन ७० फीसदी माल मिल गया है। यह माल सरकारके कब्जेमें है। पुलिसकी तहकीकात चालू है।

इसका कारण यह बताया जाता है कि सूत, रेशम और रंगका भाव बहुत ऊंचा चढ़ जानेसे नया माल मंगाकर साडी तय्यार कराना बहुत महंगा पड़ता था। इस लिये उन्होंने नयी साड़ियां तय्यार कराना बन्द कर दिया। इधर बुनकर भूखे मरने लगे और विवश होकर अपनी भूख मिटानेके लिये उन्हें लूटमार करनी पड़ी।

इस लूटमारसे त्रस्त होकर अब स्थानीय साहुकारोंने एक असोसियेशन बनाकर सफेद कपड़ा—यानी धोती, शर्टिंग, कोटिंग आदि बुनकारोंसे तय्यार कराना शुरू कर दिया है। म्युनिसिपैलिटी भी उक्त घटनाके बादसे प्रति व्यक्तिको एक सेरके हिसाबसे अनाज दे रही है।

अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन

शिक्षा ट्रस्टोंसे अपील

अ. भा. मारवाड़ी सम्मेलन मारवाड़ी समाज द्वारा स्थापित तया परिचालित भारत के समस्त शिक्षण ट्रस्टोंका विवरण इकट्ठा कर रहा है। शिक्षण ट्रस्टोंसे साग्रह अनुरोध है कि अपने ट्रस्टोंके संबंध में निम्न लिखित जानकारी हमें भेज कर अनुगृहीत करें–

१. ट्रस्ट का पुराना नाम व पता २. ट्रस्ट की पूंजी

३. छात्रवृत्तियों के लिये निर्धारित सालाना रकम

४. ट्रस्टियोंके नाम '५. ट्रस्टका विधान व छात्रवृत्तियोंके नियम

६. अन्य ज्ञातव्य बातें

हमें पूरी आशा है कि समस्त शिक्षण ट्रस्ट हमारी इस प्रार्थना पर ध्यान देंगे व हमें आवश्यक जानकारी भेजनेकी कृपा करेंगे।

समाजसे अनुरोध है कि जिन ट्रस्टोंको वे जानते हों, उनके नाम व पते भेजनेकी कृपा करें ताकि हम उनसे पत्रव्यवहार कर आवश्यक जानकारी प्राप्त कर सकें।

—मंत्री अ० भा० मारवाड़ी सम्मेलन,
१५२ बी. हरिसन रोड, कलकत्ता

उदयपुर

श्री रामगोपालजी मोहताका शुभागमन

गत ता. ९ अगस्त को दोपहरको मारवाड़ जंक्शनसे आने वाली गाड़ी द्वारा श्रीमान सेठ रामगोपालजी मोहता उदयपुर पधारे। माहेश्वरी मण्डलके सदस्यों ने आप का फूलोंके हार द्वारा स्वागत किया।

सायंकाल को सभा करनेका आयोजन किया गया। परन्तु वर्षाके कारण सभा स्थगित कर दी गई।

दूसरे दिन ता. १० अगस्त को आप कांकरोली द्वारकाधीशके दर्शनो को पधारे और सायंकाल आपका गीता पर उपदेश और सामाजिक सुधार पर व्याख्यान हुआ।

ता. ११ अगस्त को कई संस्थाओंके डेपुटेशन आपसे मिले। आपने निम्न लिखित संस्थाओंको दान दिया।

१०१) महिला मण्डल, १०१) प्रजा मण्डल, १०१) विद्यापीठ, ५१) माहेश्वरी मण्डल, १०१) राजस्थान कन्या पाठशाला, ५१) आर्य विद्यालय।

सायंकाल को आपने अजमेरके लिये प्रस्थान किया।

मेवाड़ माहेश्वरी सम्मेलन

तिथियां आगे बढ़ीं

उदयपुरमें मेवाड़ माहेश्वरी सम्मेलन किये जाने की तारीखें ३–४ सितम्बर निश्चित की गई थीं। परन्तु मेवाड़ एक बहुत बड़ा प्रदेश है जिसमें लगभग दस हजार गाँव हैं। इतने बड़े प्रदेश में इतने थोड़े समय में प्रचार करना जरा कठिन समझ कर यह निश्चय किया गया है कि "मेवाड़ माहेश्वरी सम्मेलन" दीपावली के पश्चात् किया जाय। इस बीच प्रचार करने के लिये भी समय मिल जायगा।

आशा है मेवाड़ के उत्साही युवक इस महान् यज्ञ में तन, मन, धन से सहयोग दे कर कष्ट उठावेंगे। जो भाई आर्थिक और शारीरिक रूपसे अपनी सेवायें भेंट करना चाहें वे श्री दिलीपसिंहजी राठी से पत्र व्यवहार करने का कष्ट उठावें। श्री राठीजी उन भाइयोंका बड़ा आभार मानेंगे।

शोलापुर

श्री र. ह. अ. माहेश्वरी भवनका

उत्खनन समारम्भ

बहुत दिनोंसे यह महसूस किया जा रहा था कि शोलापुरमें ऐसा कोई माहेश्वरी भवन नहीं है जिसमें सामाजिक कार्य या बाहरसे आगत सज्जनोंके ठहरनेके लिये व्यवस्था व सुविधा हो सके। श्री रामचन्द्रजी मदनलालजी मोहनलालजी अटलके पूर्वजोंने इस कमीको महसूस कर एक निजी मकानको ऐसे कार्यके लिये देनेका विचार कर रखा था और कई दिन पूर्व इस मकानको पुनः बनवाकर समाजके काममें आनेके लिये योग्य बना देने की कल्पना, कराड़ निवासी श्री किशनलालजी लाहोटीमें, जिनका कारोबार शोलापुर में भी है, उद्बुद्ध हुई। उन्होने इस मकान की योग्य कार्यवाही कराकर शोलापुरके कतिपय सज्जनोंके सहयोगसे इस कार्य को करनेका भार उठाया। तदनुसार मिति भाद्रपद कृष्णा त्रयोदशी बुधवारको "श्री रघुनाथदास हणमन्तराम अटल श्री माहेश्वरी भवनका" उत्खनन समारम्भ श्री किशनलालजी लाहोटीके करकमलोंसे सानन्द सम्पन्न हुआ।

कलकत्ता

मारवाड़ बाढ़ पीडितोंके प्रति सहानुभूति

अ० भा० मारवाड़ी सम्मेलनकी स्टैंडिंग कमेटी मारवाड़की बाढ़ पीडित जनताके प्रति अपनी पूर्ण सहानुभूति प्रकट करती है और मारवाड़ी समाजसे साग्रह अनुरोध करती है कि इस दैविक प्रकोपके समय अपनी स्वभावजन्य उदारतासे बाढ़ पीडितोंकी सहायता करें।—मंत्री

राजस्थानी संसार

श्री सेठ गोविन्ददासजी मालपाणीका स्वास्थ्य

आपरेशन की आवश्यकता

(विशेष संवाददाता द्वारा)

गत ता. १३ अगस्त को श्रीयुत गोविन्ददासजी मालपाणी नागपुर सेण्ट्रल जेलसे रिहा कर दिये गये हैं। धारा १७९ (१) के अनुसार आपकी मुक्ति इस बिना पर हुई है कि आपका स्वास्थ्य बहुत अधिक खराब हो गया था। आपके स्वास्थ्य का खराब होना सचमुच आपके इष्ट-जनों व समाजके लिये चिन्ताजनक विषय है। किन्तु आपकी पीठमें रीढ़की हड्डी और बाईं तरफ एक अजीब किस्मका दर्द और जलन है जो पिछले छः माससे ज्योंका त्यों चला आ रहा है। पिछले १५-२० वर्षसे आपको हाइड्रोसील की शिकायत थी पर वह बहुत बढ़ी न थी किन्तु इन छः मासमें बढ़कर वह तिगुनी हो गयी है। इसीसे आपको दाहिनी तरफका हार्निया हो गया है।

कमज़ोरी भी बहुत आगयी है। वजन पन्द्रह पौण्ड घट गया है और खून भी कम मालूम होता है। सन् १९१९ में आपको एन्फ्लूएन्जा हुआ था और उसके बाद एक बार मोतीझरा भी किन्तु इन दोनों बीमारियोंके सिवाय और किसी भी समय आप इतने दुर्बल नहीं हुए।

रावबहादुर डाक्टर नर्मदाप्रसादजी सिविल सर्जन और सेठजीके पारिवारिक डाक्टर श्री बराठसाहबने आपका मुआयना किया है। सिविल सर्जन महोदयका कहना है कि पीठके दर्दका कारण हाइड्रोसील और हार्नियाके खिंचाव हैं। पर बराठ साहबका ख्याल सम्भवतः हड्डीका क्षय है। आपरेशन करना ज़रूरी है किन्तु इस कमज़ोरीकी हालतमें आपरेशन सम्भव नहीं, फिर हार्नियाका मेजर आपरेशन वर्षाकी ऋतुमें (Septic) हो जायगा यह भी डर है। अतः अक्तूबर मास तक आपका आपरेशन सम्भवतः नहीं हो सकेगा।

फिर भी ज्ञात हुआ है कि चिन्ताकी कुछ बात नहीं। इलाज कराने पर शीघ्र ही सब ठीक हो जायगा। हम परमात्मासे प्रार्थना करते हैं कि वह आपको शीघ्र नीरोग करे।

इतना खराब स्वास्थ्य होने पर भी सेठजीने सजाकी अवधि पूरी हुए बिना जेलसे मुक्त होना नहीं चाहा। आपने जेलसे ५ अगस्तको मध्यप्रान्तीय सरकारके चीफ़ सेक्रेटरीको एक पत्रमें लिखा था, "मेरा स्वास्थ्य इतना खराब नहीं कि अवधि समाप्त होनेसे पूर्व छोड़ दिया जाऊं" यह आपकी महत्ता और बलिदान भावनाके अनुरूप ही है। इस त्यागके विचारके लिये हम उनका अभिनन्दन करते हैं।

जातीय सुधार विषयक सभा

श्री माणिकलालजी लड्ढा द्वारा दान

दाढ़ीमे ता. ३० को रामनारायणजी चाण्डक की अध्यक्षतामें एक सभा हुई जिसमें जातीय सुधार प्रमुख विषय था। इसी सभा में श्री कन्हैयालालजी लड्ढा गुरुकुलके व्यवस्थापक भी हाजिर थे जिनका उपयोगी भाषण करीब दो घण्टे तक हुआ। उसी अवसर पर श्री माणिकलालजी लड्ढा दाढी निवासीने अपनी माताकी स्मृतिमें नीचे लिखा हुआ दान किया।

५१) गुरुकुल ब्याड, ५१) संस्कृत पाठशाला सेलू, २१) माहेश्वरी महासभा बम्बई, १५) माहेश्वरी पत्र बम्बई, २१) राजस्थानी वीर पूना, ११) माहेश्वरी हितकारणी सभा बम्बई, ११) माहेश्वरी सभा कलकत्ता, २१) राजस्थान हितकारक मण्डल उमरावती, ११) नवभारत नागपुर, २१) जुगलकिशोर व्यायाम शाला उमरावती, ११) ज्योतिर्बोध मण्डल उमरावती, ११) गोरक्षण संस्था उमरावती।

आय व्ययका विवरण

श्री महासभा कार्यालय

ता. २९-५-४१ से ३१-७-४१ तक

आय

५२)	श्री सहायता खाते जमा
६०)	श्री अ. भा. मा. म. बिड़ला छात्रवृत्ति
११२)	

व्यय

१७॥)	श्री तार-पोस्टेज खर्च खाते
३६)	श्री प्रिंटिंग खर्च खाते नावें
७०)	श्री वेतन खर्च खाते नावें
२-)	श्री खुदरा खर्च खाते नावें
३८॥।-)॥।	श्री भ्रमण प्रचारखाते नावें
६०)	श्री कोषाध्यक्षजी का नावें "बी."
६०)	श्री महासभा कार्यालय सांभर खाते
२०)	श्री कार्यालय भाड़ा खाते नावें
६≡)॥	श्री महासभा इतिहास खाते नावें
३१०॥=)।	

ता. १-८-४१ से ३१-८-४१ तक

आय

३३२५)	श्री सहायता खाते जमा
२५०)	श्री अ. भा. मा. म. बिड़ला छात्रवृत्ति खाते
३५७५)	

व्यय

३५३२)	श्री कोषाध्यक्षजीका नावें
२५०)	,, ,, "बी."
१००)	श्री अ. भा. मा. महिला परिषद खाते नावें
७)।	श्री तार पोस्टेज खर्च खाते
।-)	श्री स्टेशनरी खर्च खाते नावें
१०)	श्री कार्यालय भाड़ा खाते नावें
४॥)	श्री महासभा इतिहास खाते नावें
३९०३॥।-)।	

श्री माहेश्वरी कार्यालय

ता. २९-५-४१ से ३१-७-४१ तक

आय

१७२८)	श्री सहायता खाते जमा
४३९॥।)	श्री ग्राहक खाते जमा
१५६)	श्री विज्ञापन खाते जमा
२३२३॥।)	

व्यय

१३३१=)	श्री प्रिंटिंग खर्च खाते नावें
११७≡)	श्री तार-पोस्टेज खर्च खाते नावें
२३५)	श्री वेतन खर्च खाते नावें
२८॥-)	श्री खुदरा खर्च खाते नावें
२५॥।=)	श्री साप्ताहिक एवं मासिक पत्र खाते
३०)	श्री कार्यालय भाड़ा खाते नावें
१५८)	श्री उदरत खाते नावें
१९२५॥।)	

ता. १-८-४१ से ३१-८-४१

आय

२०७३)	श्री सहायता खाते जमा
६३॥।)	श्री ग्राहक खाते जमा
२१४२॥।)	

व्यय

३००॥)	श्री प्रिंटिंग खर्च खाते नावें
५६।)	श्री तार-पोस्टेज खर्च खाते नावें
१२०)	श्री वेतन खर्च खाते नावें
३॥-)॥	श्री खुदरा खर्च खाते नावें
६।-)	श्री मासिक एवं साप्ताहिक पत्र
।-)	श्री ग्राहक बनानेमें खर्च खाते
१५)	श्री कार्यालय भाड़ा खाते
५४५)	श्री उदरत खाते नावें
१०४६॥।≡)॥	

अ. भा. मा० महासभा सूरत अधिवेशनकी स्वागत समितिका आय व्ययका हिसाब

आय

२२५५)	श्री स्वागत समितिकी टिकिटका प्राप्त हुआ
५३२)	श्री प्रतिनिधि व प्रेक्षक टिकिटका प्राप्त हुआ
६११)	श्री सहायताका प्राप्त हुआ
७२॥।)	श्री परचूरण
३४७०॥।)	

व्यय

१२८३=)।	श्री रसोई खर्च	
४७१।=)।	श्री स्वागत खर्च	
५९८-)	श्री मंडप, रोशनी आदि खर्च	
१३१४।)॥	श्री प्रचार खर्च	
	५४५=)॥	छपाई, स्टेशनरी, ब्लाक्स
	१७५॥)	जामनगर, अहमदाबाद, अजमेर आदि स्थानोंका भ्रमण खर्च
	३५७॥≡)॥।	तार, टेलिफोन, ट्रंक कॉल, पोस्टेज
	२३५॥।=)।	वेतन परचूरण खर्च
	१६५)	७०॥=)।
	१३१४।)॥	
३६६६॥।=)		

(पृष्ठ २२ का शेषांश)

(१) श्री हीरालालजी चेचाणी, (२) श्री मगनलालजी चेचाणी, (३) श्री मोतीलालजी देवपुरा, (४) श्री सुन्दरलालजी चेचाणी, (५) श्री धनराजजी काल्या, (६) श्री डाड़मचंदजी शारदा, (७) श्री ब्रजलालजी देवपुरा, (८) श्री रामकुंवारजी शारदा, (९) श्री सुरजनलालजी चेचाणी, (१०) श्री झंवरलालजी चेचाणी, (११) श्री फूलचंदजी बियाणी, (१२) श्री जगन्नाथजी काल्या, (१३) श्री रामचंद्रजी काल्या, (१४) श्री मोतीलालजी काबरा, (१५) मोतीलालजी चेचाणी,

वर्षाके अधिकाधिक होनेके कारण शिष्टमण्डल आगे न बढ़ कर पुनः उदयपुर लौट गया।

राजस्थानी संसार

कलकत्ता की चिट्ठी

माहेश्वरी और ओसवाल समाजमें भी उत्साह

(विशेष सम्वाददाता द्वारा)

कलकत्तेमें मारवाडी समाजके नाम से होने वाले सार्वजनिक कार्योंमे जिस तरह माहेश्वरी समाज का भाग बहुतही कम है उसी तरह हमारे ओसवाल समाज का भाग भी नहीं के बराबर है। दोनो ही समाजोंके विचार शील नवयुवकोंके जीमें यह बात खटकने लगी है और वे अब अग्रसर होकर अपना उचित स्थान लेने में तत्परता दिखा रहे हैं। अ. भा. मारवाडी सम्मेलनके कार्य क्षेत्रमें दोनों ही समाजोंके कुछ अच्छे अच्छे कार्यकर्ता आये हैं और अपनी लगन से वे सम्मेलनके कार्योंमें खासी प्रगति ला देंगे ऐसा अनुमान होता है। वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितिमें भारतवर्षकी अवस्था कुछ विचित्रसी है और भारतवर्षमें मारवाड़ी समाजकी जो स्थिति है, उसे देखते यह कहा जा सकता है कि सम्मेलनको सब दिशाओंमें काम करनेकी ज़रूरत है। सम्मेलनके कार्य कर्त्ताओंने एक पंचवर्षीय योजना बनाई है, जो अनेक त्रुटियोंके रहते हुए भी यदि कार्यमें परिणतकी जा सके तो एक बहुत बड़ा काम होगा। असलमें सबसे बडा दोष जो हममें आगया है वह यह है कि हम लोग विचार-विमर्ष करनेमें ही सारा समय खो देते हैं और वास्तविक कामकी ओर कम ध्यान देते हैं। किन्तु आशा है कि सम्मेलन श्री रामेश्वरजी नोपानी, श्री सिद्धराजजी ढड्ढा, श्री भंवरमलजी सिंघी और श्री बृजवल्लभदासजी मूंधड़ा जैसे कार्यकर्ता पाकर वास्तविक कामकी ओर अग्रसर होगा।

बंगालमें संगठन कार्य

श्री बृजवल्लभदासजी मूंधड़ा बंगाल प्रातीय मारवाड़ी सम्मेलनके मन्त्री चुने नये हैं और चुने जाते ही आपने बंगालमें मारवाड़ी समाजको संगठित करनेका कार्य भार उठा लिया है। सम्मेलनकी बम्बईकी पिछली वर्किंग कमिटीकी मीटिंगमें यह तय हुआ था कि संमेलन अपनी सारी शक्ति केन्द्रीभुत करके एक निर्धारित समय तकके लिये बारी-बारीसे एक एक प्रान्तमें लगावे और उसे पूर्ण रूपसे संगठित करे। इसी योजनाके अनुसार सर्व प्रथम बंगाल प्रान्त हाथमें लिया गया है और आशा है कि श्री बृजवल्लभदासजी मूंधड़ाके हाथों इसमें अच्छी सफलता मिलेगी। श्री मूंधड़ाजीने बंगालका दौरा आरंभ कर दिया है और आपने पहला स्थान खुलना चुना है। सम्मेलनके अन्यान्य कार्यकर्ता भी बंगालके अलग अलग स्थानोंमें प्रचारार्थ जावेंगे और यों हमें बहुत जल्द ही मालूम होगा कि बंगालमें सम्मेलनको कितनी सफलता मिलती है।

तरुण जैन संघका सत्प्रयत्न

कलकत्तेमें तरूण जैन संघ नामकी एक संस्था कुछ वर्षोंसे काम कर रही है और "तरुण जैन" नामक एक मासिक पत्र भी उसके द्वारा संचालित होता है। श्री पर्यूषण पर्वके उपलक्षमें यह संघ एक व्याख्यान सप्ताह मनाया करता है और इस वार भी ता. १९ अगस्तसे २५ अगस्त तक ऐसा सप्ताह मनाया गया। संघने श्री कालीदास नाग, श्री हजारी प्रसाद द्विवेदी आदि अच्छे अच्छे विद्वानोंके भाषणोंकी व्यवस्था की थी जिससे बड़े बाजारके जैन और जैनेतर लोगोंने जैन धर्मके सिद्धान्तोंकी जानकारी प्राप्त की। बम्बई सरकारके भूतपूर्व कांग्रेसी मन्त्री श्री कन्हैयालाल मुंशीका भी अहिंसा पर भाषण हुआ था और उन्होंने परोक्ष रूपसे हिंसाका ही समर्थन किया। तरुण जैन संघके कार्यकर्ता ऐसे सुन्दर आयोजनके लिये बधाईके पात्र हैं।

श्री नीम्बुतल्ला स्पोर्टिंग क्लब

श्रीगणेश जन्मोत्सव समारोह

ता. २६-८-४१ मंगलवार को रात्रिके ९ बजे से क्लब भवनमें श्रीगणेश जन्मोत्सव मनाया गया। उपस्थिति करीब २०० व्यक्तियों की थी जिनमें विशेष उल्लेखनीय सर्व श्री सुन्दरलालजी डागा M. L. A. Central, भागीरथजी मोहता, चांद रतनजी डागा (सभापति), भीखमचन्दजी मूंधड़ा, सोहनलालजी डागा, चम्पालालजी राठी, वैजनाथजी भण्डारी, चुन्नीलालजी डागा, मदनलालजी सोढ़ाणी, गिरधरदासजी मोहता, दामोदरदासजी डागा, दम्पालालजी झँवर, पुरुषोत्तमदासजी मोहता, जेठमलजी मोहता, रिखभदासजी बिन्नाणी, शिवचन्दजी सोनी, जीवनलालजी भैय्या, छगनलालजी गौरीसरिया, मथुरादासजी माल्ह, श्री लालजी बागड़ी, श्रीगोपालजी मोहता आदि थे।

सर्व प्रथम मुरलीधरजी सोन्थालिया एवं रमणलालजी सादाणीने मंगलाचरण किया तत्पश्चात् रामकृष्णजी बागड़ीके अनुरोधसे सुन्दरलालजी डागाने सभापतिका आसन ग्रहण किया। पश्चात् बंगाल के प्रसिद्ध गायक श्री. तारापदो चक्रवती ने बडे ही मधुर स्वरोंमें ख्याल गाये। श्रीवास्तवजीके गायन भी बडे सुन्दर हुए। संगति समारोह करीब १॥ घंटे तक चालू रहा। इस बीचमें सुन्दर लालजी डागा, भागीरथजी मोहता, भीखम चन्दजी मूंधड़ा, राम कृष्णजी बागडीमें क्लबके विषयमे काफी चर्चा हुई। भीखम चन्दजी मूंधडाने क्लबके सदस्योंसे श्री गोरख बंसरीके कार्यमें हाथ बटानेके लिये कहा। भागीरथजी मोहतानें व्यायामके लिये विशेष जोर दिया; साथ ही साथ स्थानाभावकी तरफ ध्यान आकर्षित किया। इस पर रामकृष्णजी बागड़ीने क्लबके स्थान बढ़ानेके लिये १०००) रुपये की पासकी हुई स्कीम बतलाई, जो इस महीनेसे चालू हो गई। इस पर सुन्दरलालजी डागा एवं भीखमचंदजी मूंधड़ाने क्लबके प्रति सहानुभूति प्रकट करते हुए कहा कि १५०,०० रुपयेकी स्कीम रखी जाय तो ठीक हैं। खुला मैदान होनेसे क्लब काफी कार्य कर सकती है। क्लबके लिये यह रकम कुछ भी नही हैं।

तत्पश्चात सभापतिजीकी आज्ञानुसार भागीरथजी मोहताने समयानुकूल भाषण दिया। आपने कर्तव्यपरायणतापर बहुत ही ललित शब्दोंद्वारा प्रकाश डाला। सभापतिजीने अपने भाषणमें क्लबके प्रति सहानुभूति प्रगट की। किशनचन्दजी बिन्नाणी उपमन्त्रीने भी गणेश उत्सवपर कुछ कह सभापतिजी एवं उपस्थित आगन्तुक महानुभावोंको धन्यवाद दिया। इस बीच रामकृष्णजी बागडीने बधाई दी कि सुन्दरलालजी डागाने २०१) रुपया एवं भागीरथजी मोहताने २०१) रुपया देकर क्लबके आजीवन सदस्य बने रहनेकी घोषणा की है। पश्चात् कार्यवाही समाप्त हुई। संगीत समारोह पूर्ववत् चालू रहा। उपस्थिति संतोषजनक थी।

शोक प्रकाश

क्लबने सर विश्वेश्वरदासजी डागाके देहावसानपर निम्न प्रस्ताव पास कियाः—

क्लबके समस्त सदस्यगण सर विसेसरदासजी डागा के टी. के. सी. आई. ई. के देहावसानपर शोक प्रगट करते हुए ईश्वरसे दिवंगत आत्माको चिरशान्ति और शोकाकुल परिवारको सहनशक्ति प्रदान करनेके लिये प्रार्थना करते हैं।

श्री सुन्दरलालजी मल्ल सरकारके मेहमान

श्री सुन्दरलालजी मल्ल तेल्हाराने ता. २८-७-४१ को सत्याग्रह किया था लेकिन आपको उस वक्त गिरफ्तार नहीं किया गया था परंतु अब ता. २-९-४१ को बलगांवके भाषण पर गिरफ्तार किया गया है। और चार मासकी सजा दी गई है। आपको 'बी' क्लासमें रखा गया है।

जलेसर

श्री माहेश्वरी नवयुवक मंडल का चतुर्थ वार्षिकोत्सव

यहां जन्माष्टमीको श्री माहेश्वरी नवयुवक मंडलका चतुर्थ वार्षिकोत्सव हवन तथा दस घन्टेके अखंड कीर्तनके साथ बड़े धूमधामके साथ मनाया गया। सब माहेश्वरी भाइयोंने उसमें उत्साहसे भाग लिया। नवमीको श्रीरामस्वरूपजी राठीके सभापतित्वमें एक सभा हुई। उसमें भूतपूर्व मन्त्री बाबू पन्नालालजी राठी बी. ए. ने वार्षिक रिपोर्ट सुनाई और नवयुवकोंने कवितायें पढ़ीं तथा भाषण दिये। इसमें श्री राधाकृष्ण राठी का एकतापर, श्री रामगोपाल राठीका समाज सुधार पर, श्री भैरोंप्रसाद राठी का फिजूल खर्ची पर भाषण विशेष उल्लेखनीय हैं। दशमीको श्री कस्तूरचन्दजी राठीके सभापतित्वमें एक सभा हुई जिसमें इस बातका प्रयत्न किया गया कि जो माहेश्वरी भाई मण्डलके मेम्बर नहीं हैं उनको भी मेम्बर बनानेका प्रयत्न किया जाय। परन्तु पक्षपातका सवाल उठनेसे सब भाई मेम्बर न हो सके और इससे लाभ भी यह हुआ कि जिन लोगोंमें मण्डलके विषयमें गलत फहमी फैल रही थी वह दूर हो गई और १३ सदस्यके २१ सदस्य हो गये। दूसरे दिन फिर श्री बालमुकुन्दजी टावरीके सभापतित्वमें मण्डलके पंचम वर्षके पदाधिकारियोंके चुनावके लिये एक सभा हुई। इसमें निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये।

श्री तोतारामजी राठी प्रधान, श्री गंगारामजी राठी उपप्रधान, श्री रामदयालजी राठी मंत्री, श्री भैरोंप्रसादजी राठी उपमंत्री, श्री रामजीवनजी राठी कोषाध्यक्ष।

कार्यकारिणी के सदस्य—

१—श्री पन्नालालजी राठी बी. ए. २—श्री ईश्वरदासजी राठी ३—श्री राधाकृष्णजी राठी ४—श्री गंगाप्रसादजी राठी ५—श्री बद्रीप्रसादजी राठी।

सदस्य इस प्रकार हैं—

१—श्री गिरधारीलालजी राठी २—श्री सुखदेवदासजी राठी ३—श्री भीकचन्दजी राठी ४—श्री बाबूरामजी राठी ५—श्री दीपचन्दजी राठी ६ श्री भीकचन्दजी डागा ७ श्री भीकचन्दजी राठी ८ श्री केशवदेवजी टावरी बीएस. सी ९ पूसारामजी राठी १० प्रेमनारायणजी राठी ११ जयनारायणजी राठी।

भारतीय नवयुवक संघ बम्बई

दाताओंके प्रति कृतज्ञता ज्ञापन

उपर्युक्त संघके विस्तृत कार्य तथा आर्थिक कठिनाईयोंको महसूस कर श्री राजा नारायणलालजी पित्तीने अगस्त माससे रु. १०) मासिक सहायता देनेका वचन दिया है। विनोद समितिके खर्चेके लिये श्री रामरिखदासजी जवेरीने रु. ८) प्रदान किये हैं तथा अन्य कई सज्जनों की तरफसे आमोद प्रमोदके सामान उपलब्ध हुए हैं। इसके अतिरिक्त एक सज्जन की तरफसे संघको पुरस्कार देनेके लिये रु. ३१) प्राप्त हुए हैं। इस उदार दानके लिये उपर्युक्त सज्जनोंको संघकी ओरसे हार्दिक धन्यवाद दिया जाता है। अन्य उत्साही नवयुवकों तथा उदार महानुभावोंसे निवेदन है कि संस्था संचालनमें हाथ बटानेके उद्देश्यसे यथाशक्ति सहायता प्रदान करें।

—संयुक्त मन्त्री

सब प्रकार के बीमे का काम

फायर एण्ड जनरल

यूनिवर्सल

इंस्युरंस कंपनी

अपनी
जिंदगी
का
बी
मा
कराइये

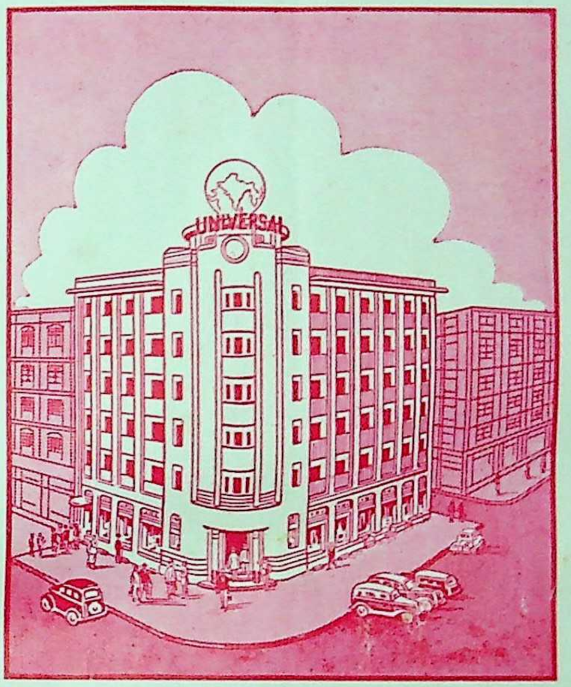

को
ही
दी
जि
ये

इसके डायरेक्टर्स हैं
१. दि. ब. कृष्णलाल मोहनलाल झवेरी एम्. ए. एलएल. बी.
२. सेठ लक्ष्मणदास हरखचंद डागा
३. राजा नारायणलाल बंशीलाल
४. श्री. जे. एच. मोदी सालीसिटर
५. श्री. केशवलाल हरीलाल सेतलवाड़
६. राय साहब केदारनाथ खेतान एम. एल. सी.
७. श्री. रणछोड़दास त्रिभुवनदास पोपावाला (मालपाणी) बी. ए.
८. श्री. कांतीलाल चिमनलाल मुन्शी बी.ए.

आग;
मशीन;
मोटर;
इत्यादि सब
प्रकार के
बीमे के लिये
हमें पूछिये

यह कम्पनी "माहेश्वरी"
द्वारा स्थापित की गई है।
स्व. सेठ वरजदासजी
माईदासजी मालाणी इसके
संस्थापक थे।

सब प्रांतों में एजेन्सियां देनी हैं। आज ही एजेन्सी के आकर्षक नियमों के लिये लिखिये—
मेनेजिंग एजेन्टस--एम. कानजी एन्ड कंपनी

दी यूनिवर्सल फायर एण्ड जनरल इंस्युरन्स कं० लि०
सर फीरोज़ शाह मेहता रोड, बंबई

Printed by Vasant S. B. Shroff, B. A., B. SC., LL. B. at the Bombay Vaibhav Press, Servants of India Society's Building, Sandhurst Road, Bombay 4 and published by him at 70, Tulsi Vihar, Marine Drive, Bombay.

Reg. No. B 4441

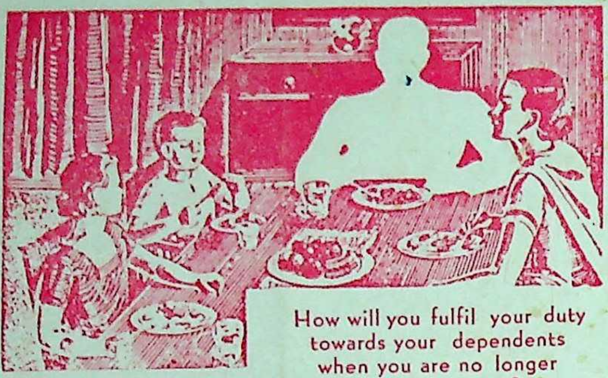

How will you fulfil your duty
towards your dependents
when you are no longer
a breadwinner ?

If you were not there...

कुटुम्बं का संपूर्ण संरक्षण

न्यु एशियाटिक की 'हैपी होम पॉलिसी' बीमा की एक ऐसी अद्वितीय तथा अपूर्व योजना है जिसका कुटुम्ब की संरक्षा अधिक से अधिक प्रमाण में करने के हेतु से निमार्ण किया गया है।

हमारा भारत गरीबी से पीड़ित है। ऐसी दशा में यहां कुटुम्ब की संरक्षा के प्रश्न का हल अधिक आवश्यक है। 'हैपी होम पॉलिसी' में पैसा लगाने से पैसे का अनुचित उपयोग नहीं होता और न वह किसी तरह की जोखम का काम ही है। ५०००) के बीमे से क्या मिलता है:—

५००) और बोनस–मृत्यु के बाद
५०) मासिक–बीमे की शेष अवधि तक
४५००) बीमा की अवधि ख़त्म होने पर

इस रकम से बच्चों की शिक्षा का प्रबन्ध हो सकता है अथवा वे कोई धंधा कर सकते हैं

पूर्ण विवरण के लिये लिखिये—

दी न्यु एशिआटिक लाईफ इंस्युरंस कम्पनी लिमिटेड

मैनेजिंग एजेन्टस्–**बिड़ला ब्रदर्स लिमिटेड**

हेड ऑफिस
कॅनाट सर्कस, नई दिल्ली

शाखाएं और प्रमुख कार्यकर्ता

उत्तरी विभाग
(कॅनाट सर्कस, नई दिल्ली)
लाहोर
रावलपिंडी
पेशावर (केन्टोनमेन्ट)
पटना
कानपुर

पूर्वी विभाग
(८, रायल एक्सचेन्ज प्लेस, कलकत्ता)
ढाका
बर्दवान
जलपाइगुरी
सिलहट
बर्मा

पश्चिमी विभाग
(४५–४७ अपोलो स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई)
हैद्राबाद (दक्षिण)
इर्नाकुलम
बेलगाम
अहमदाबाद
कराची

मध्य विभाग
(भवानी पेठ, जळगांव)
इन्दौर
जबलपुर
नागपुर
अमरावती

दक्षिणी विभाग
(२८९ लिंघा चेट्टी स्ट्रीट, मद्रास)
मद्रास
सीलोन
त्रिचनापल्ली

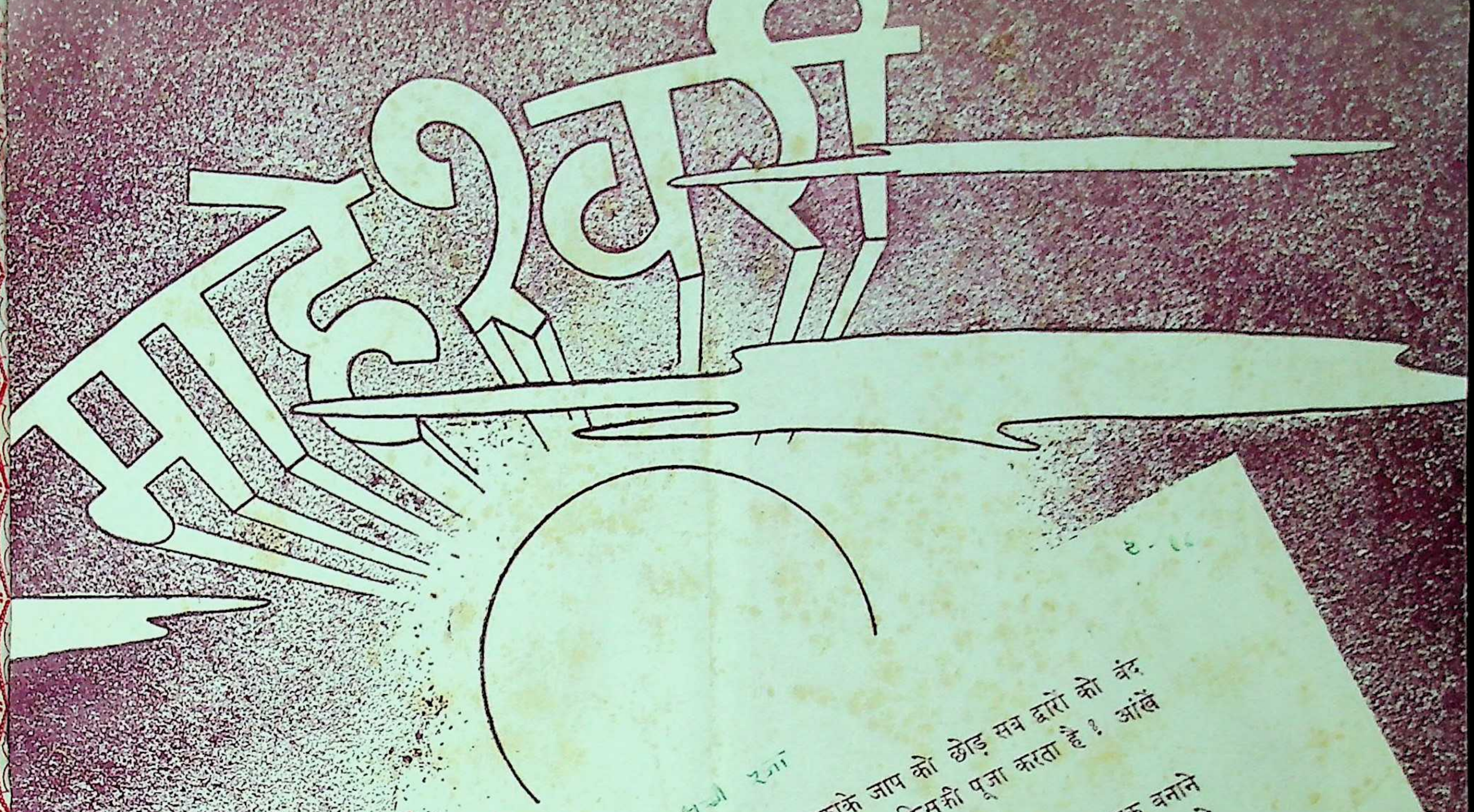

माहेश्वरी

२-६६

सच्ची पूजा

इस पूजा–पाठ, भजन–गान और मालाके जाप को छोड़ सब द्वारों को बंद करके मंदिर के एकान्त अंधेरे कोने में तू किसकी पूजा करता है? आंखें तो खोल और देख ईश्वर तेरे सामने नहीं है।

वह तो वहां है जहां किसान कड़ी भूमि में हल चला रहा है और सड़क बनाने वाला पत्थर तोड़ रहा है। वह धूप और पानी में उनके साथ है और उसके कपड़े धूल से आच्छादित हो रहे हैं। तू अपने पवित्र वस्त्र को उतार डाल और उसके समान धूल भरी भूमि में उतर आ।

मुक्ति कहां मिल सकती है? हमारे स्वामी ने स्वयं अपने आप को सृष्टि के बंधनों में सहर्ष डाला है, वह हम सब के साथ सदा के लिए बंधा है।

ध्यान और समाधि (के जंजाल) से बाहर निकल आ और धूप पुष्पों को एक और छोड़ दे। यदि तेरे कपड़े फट जाएं और उन में धब्बे लग जाएं तो हानि ही क्या है? उससे मिल, उसके संग मेहनत कर और उसके साथ पसीना बहा।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

वर्ष ३२
संख्या १०

वार्षिक मूल्य
३) रुपया

अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभाका मुखपत्र

पाक्षिक

प्रवर्तक—स्व. भागीरथदासजी भूतड़ा

सम्पादक समिति
श्री. लक्ष्मीनारायण मालाणी, श्री. दामोदरदास मूंदड़ा
श्री. राधाकृष्ण लाहोटी

★ प्रवन्ध सम्पादक
राधाकृष्ण लाहोटी ★

प्रकाशक
श्री. वसन्तलाल श्राफ़

कार्यालय—अली चेम्बर्स, डीर लेन, फोर्ट, बम्बई.

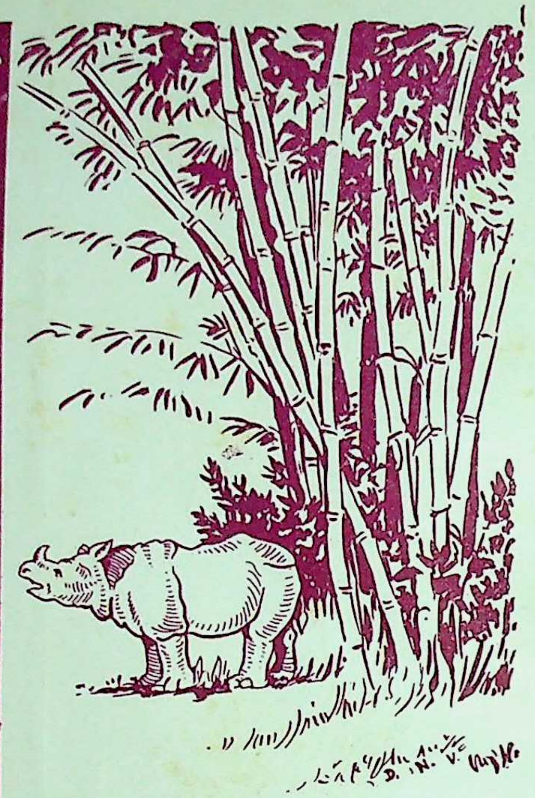

हिन्दुस्तान में
गेंडा – मार्का
क्राफ्ट-पेपर
बनता है
मज़बूत
चीमड़
टिकाऊ
फिर कमज़ोर और भद्दे
कागजों की रैपिंग से
अपने व्यवसाय
को क्यों हानि पहुंचाते
हैं?
ओरिएण्ट पेपर मिल्स लि०
८, रायल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता

केला लुब्रिकेटिंग आइल्स

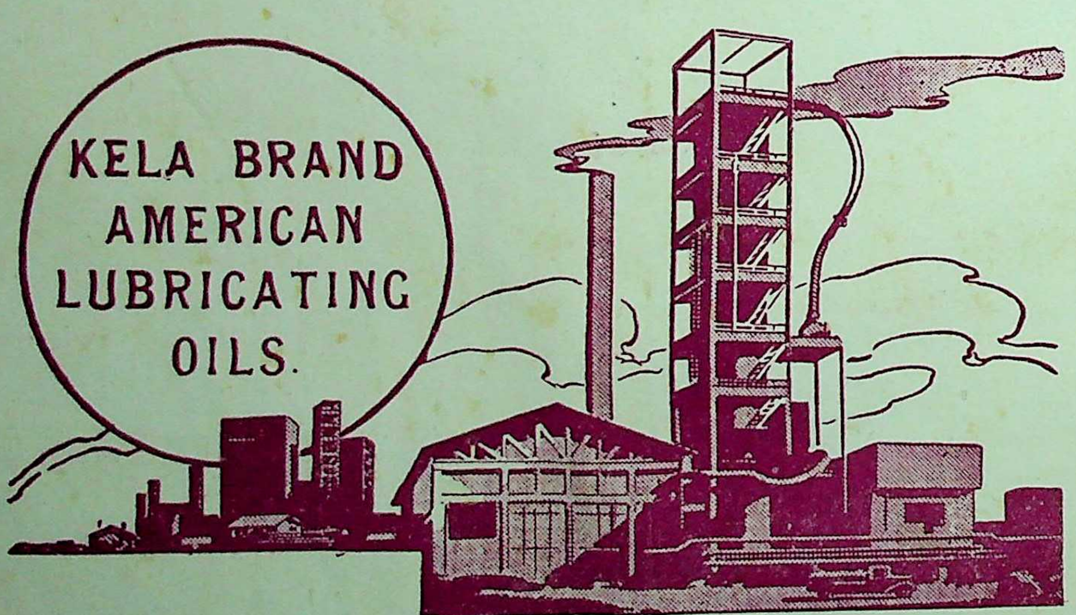

अकेला केला ब्रांड लुब्रिकेटिंग आइल अमेरिकन सर्वश्रेष्ठ कम्पनी का माल है। यह कम्पनी ८,५०० तेल के कुओंमें से इस बढ़िया तेल को आधुनिक ढंग की श्रेष्ठ मशीनरीद्वारा शुद्ध करके विक्रयार्थ प्रस्तुत करती है। तेल निकालने, शुद्ध करने व खरीददार तक पहुँचाने आदिकी शुरुसे अन्त तक सब क्रियाओं पर कड़ी निगरानी रखी जाती है।

A PRODUCT OF MODERN REFINING

आप केला ब्रांड लुब्रिकेटिंग आइल का अपनी किसी भी प्रकार की छोटी-मोटी मशीनरी के लिये इस्तेमाल कर एक दम निश्चिन्त हो सकते है

सोल इम्पोर्टर्स

टे. नं. २५५५२
तार "KELACO"

दि केला कम्पनी

नोवल चेम्बर्स, पारसी बजार स्ट्रीट,
फोर्ट, बम्बई

माहेश्वरी

' उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत '

वर्ष ३२, संख्या १०] बम्बई ता. २१ सितम्बर १९४१ [वार्षिक मूल्य ३ रुपया

चारों ओर अंधेरा छाया !

★

श्री श्रीरामजी आगार

चारों ओर अँधेरा छाया !
मानवताके सिंहासनपर दानवने अधिकार जमाया

चला शांतिके गीत सुनाने ।
किरच और बंदूकें ताने ?
भूला मानव ! फिर पथ भूला, कैसा निष्ठुर
पथ अपनाया ।
चारों ओर अंधेरा छाया !

कण कण बना रक्तका प्यासा,
जीवन केवल एक दुराशा ।
प्यास बुझा पाया कब अपनी,
रक्त बहाया ।
चारों ओर अँधेरा छाया !

आज कहाँ वह ममता क्षमता ?
जिसे प्राप्त कर जग प्रमुदित था !
करुणाजल बरसाने वाले अम्बर ने शोणित
बरसाया ।
चारों ओर अँधेरा छाया !

सड़े शवों पर चढ़ कर अपने ।
देखे शांति स्नेहके सपने !
क्रूर-निरंकुश मानव अपने हिंसक साधन
पर इतराया ।
चारों ओर अँधेरा छाया !

हाहाकार नीड़में, घरमें ?
वायुयान उड़ते अम्बरमें ।
आग लगे ! जल उठे ! कला वह जिसने जग श्मशान बनाया ।
चारों ओर अँधेरा छाया !

नागपुर सेन्ट्रल जेल. २१-८-४१

जुग जुग जीवो !

[गांधीजी केवल हिंदुस्तान के राष्ट्रीय इतिहास के ही नायक नहीं हैं कि जिसकी पुण्यस्मृति कथा के रूप में युगयुगांतर तक प्रतिष्ठित रहेगी । उन्होंने केवल क्रियात्मक जीवन का प्राण बनकर हिंदुस्तानियों में उनकी एकता, उनकी शक्ति और उनकी स्वतन्त्रता की कामना की गौरवपूर्ण चेतना ही नहीं भरदी, बल्कि समस्त पाश्चात्य जनता के हित के लिए उसके ईसामसीह के सन्देश को भी पुनर्जीवन दिया, जो अबतक उपेक्षित या प्रवञ्चित रहा । उन्होंने अपना नाम मानव-जाति के साधु-सन्तों में अंकित कर दिया है, उनकी मूर्ति का उज्ज्वल आलोक भूमण्डल के कोने-कोने में प्रविष्ट हो गया है । —रोमें रोलां]

— अन्तर्ज्वाला —

★

आचार्य "शंकर" शास्त्री

आ देख खुशी होले जालिम घुट घुट मिटना अरमानों का ।
कर में खंजर, दिल में बिजली हंस हंस मरना दीवानोंका ।

मत पीस कुचल मासूम दीन
हद होती अत्याचारों की ।

गमन समय नहीं बांध पोटली
पापी पापाचारोंकी ।

नहीं व्यर्थ जायेगा उष्ण रक्त वीरोंके शुभ
बलिदानोंका ।

नियम विश्व का अटल अचल
जो चढ़ता है गिर जाता है ।

जो सूर्य तपा मध्यान्ह प्रखर
वह सांझ समय ढल जाता है ।

बता ! मुगलके राजमुकुट, कुछ पता-बता
बलवानोंका ।

प्राणोंकी भिक्षा दे किसको
जब मरना है मरकर जीना ।

है पराधीनता पाप विश्वमें
छीन झपट ले ज्यों छीना ।

उत्पीड़न बदला लेनेको आया पिछले अपमानोंका
संहार मचे अंबर कांपे " शंकर " तांडव तूफानोंका ।

माहेश्वरी

" कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन "

बम्बई, ता० २१ सितम्बर १९४१

शिक्षाप्रसार विषयक एक विचारणीय योजना

गत २१ जुलाई के माहेश्वरीमें शिक्षाके विषयको लेकर हम इन्हीं कालमोंमे बहुत कुछ लिख चुके हैं। उस अंकमें हमने इस बात पर प्रकाश डाला था कि किस प्रकार किसी भी समाजको अवनतिके निम्न स्तरसे उन्नतिके उच्च स्तर पर पहुंचानेके लिए शिक्षाकी अनिवार्य आवश्यकता है। वर्तमान संसारके उन्नत और अवनत देशों और कालके परिवर्तनसे अकस्मात् उन्नतसे अवनत और अवनतसे उन्नत हो जानेवाले देशोंके इतिहाससे यह बात और भी स्पष्ट हो सकती है कि किसी भी समाज और राष्ट्रको उन्नत करनेके लिए सार्वजनिक शिक्षा कितना बड़ा कारण है।

आज यह बताते हुए हमें अत्यधिक हर्ष हो रहा है कि माहेश्वरी समाजमें सार्वजनिक शिक्षाके प्रसारके लिए समाजका ध्यान आकृष्ट हुआ है। पिछले दिनों जून मासके अन्तिम सप्ताहमें अ. भा. माहेश्वरी महासभा और महिला परिषद्के शिष्टमण्डलके कलकत्ता भ्रमणके सिलसिले में महासभाके सभापति श्री रामकिशनजी धूत तथा श्री वृजवल्लभदासजी मूंधड़ा, श्री गुलाबचन्दजी नागौरी, श्री दीपचंदजी चांडक आदिने श्रीयुत घनश्यामदासजी बिड़ला से इस सम्बन्धमें बातचीत की थी। श्रीयुत बिड़लाजीने भी इस विचार में बहुत दिलचस्पी दिखाई थी और समाजमें सार्वजनिक शिक्षा प्रचार की कोई उपयोगी योजना पेश करनेके लिए भी कहा था। उस समय इस बातको यद्यपि वहीं समाप्त कर दिया गया था किन्तु शिक्षा का यह विषय महासभाके सामने अब फिर एक महत्वका विषय बन रहा है।

आगामी ८ अक्तूबर को माननीय श्री ब्रिजलालजी बियाणी कारागृहसे मुक्त होकर फिर हमारे बीच आने वाले हैं। उनके मुक्त होनेके बाद जल्दी ही अ. भा. माहेश्वरी महासभाके कार्यकारी मंडलकी एक मीटिंग होने जा रही है जिसमें अन्यान्य विषयोंके साथ-साथ माहेश्वरी समाजमें शिक्षा प्रसारके विषयको लेकर भी चर्चा होगी और आशा की जाती है कि इस विषयकी कोई क्रियात्मक योजना बनाई जायगी जो बड़े पैमानेपर देशभर में फैले हुए तमाम समाज में शिक्षा फैलाने में सहायक हो सकेगी। शिक्षा प्रसार कोई ऐसा-वैसा विषय नहीं और खासकर के जब इस प्रकार की योजना हम बनाने जा रहे हैं जिसका समूचे देश भर के माहेश्वरी समाजपर प्रभाव पड़ेगा तब हमें गम्भीर होकर सोचनेकी जरूरत होगी। आवश्यकता इस बातकी है कि उस योजना को अन्तिम रूप देनेसे पूर्व उसके विभिन्न अंशों और पहलुओंपर अलग-अलग और सम्मिलित रूपमें गहराईसे चार कर लिया जाय ताकि समाजका एक भी अंग उससे छूटने न पाये और शंक्ति और धनका अनावश्यक दुरुपयोग भी नहीं हो।

हम चाहते हैं कि कार्यकारी मण्डल के सदस्य इस विषय पर विचार करनेके लिए इकठे हों, इससे पूर्वही वे किसी खास योजना पर विचार करके, युक्ति प्रत्युक्ति और ऊहापोह द्वारा अपनी एक निश्चित नीति और मत निर्धारित करके ही आवें। इससे कार्यकारी मण्डलकी बैठकमें विचार करनेमें बड़ी सुगमता और अनुकूलता होगी। इसी बातको ध्यानमें रखकर हम यहां शिक्षा-प्रसारके सम्बन्धमें एक योजना प्रस्तुत कर रहे हैं जो कार्यकारी मण्डलके सदस्यों तथा अन्य विचारशील बन्धुओंके लिए विचारणीय होगी।

इस योजनाकी जो रूप रेखा हमने तैय्यार की है उसमें यथा साध्य इस बातका यत्न किया है कि समाजके जितने भी अंग हैं उनपर उचित और पूरा-पूरा ध्यान दिया जाय। जिस अंगको जितना अधिक बल देनेकी जरूरत है उसे उतना ही अधिक बल दिया जाय।

हमारा विचार है कि शिक्षा-प्रसारके लिए जो योजना तैय्यार की जाय उसके अनुसार इस कार्य पर कमसे कम ५००००) रु. प्रतिवर्ष अवश्य खर्च होना चाहिये। ९ लाखकी आबादीके इस विशाल समाज पर एक वर्षमें इतनी धनराशि व्यय होना कोई बड़ी भारी बात नहीं।

इस शिक्षा प्रसारके कार्यका इस प्रकार विभाजन किया जाय कि एक केन्द्रीय अखिल भारतीय शिक्षा प्रसारक संघ कायम किया जाय जो अपने नीचे कुछ प्रान्तीय शिक्षा प्रसारक संघोंका नियंत्रण करे। जहांतक शिक्षा प्रसारका मुख्य कार्य है, वह इन अधीनस्थ प्रान्तीय शिक्षा प्रसारक मण्डलों के जरिये ही होगा और सहायताके रूपमें कुल व्ययका कुछ हिस्सा उनको केन्द्रीय संघसे प्रति वर्ष दिया जाता रहेगा।

इस कार्यके लिए प्रान्तोंको ८ भागोंमें विभाजित किया जाय जिससे देशभरका कोई भी ऐसा भाग छूटने नहीं पाये जिसमें माहेश्वरी समाजके लोग पाये जाते हों। इस कार्यके लिए निम्न विभाजन बहुत उपयोगी होगा—

१ बंगाल, आसाम, ब्रह्मदेश, बिहार, उड़ीसा।
२ युक्तप्रान्त, पंजाब, काश्मीर, दिल्ली।
३ राजस्थान।
४ मध्यभारत।
५ बम्बई-गुजरात।
६ मध्यप्रान्त, बरार।
७ हैद्राबाद निजाम।
८ सिन्ध, काठियावाड़, कच्छ, मैसूर, मद्रास, लंका।

इन ८ प्रान्तीय विभागोंमें से ७ विभाग ऐसे हैं जिनमें माहेश्वरी समाजकी आबादी काफी है। इस लिए ये विभाग प्रमुख हैं और इसी कारण इनके लिए अलग—अलग प्रान्तीय शिक्षा प्रसारक मण्डल कायम किये जाने चाहिए। परन्तु ८ वें विभागमें माहेश्वरी समाजकी जनसंख्या अपेक्षाकृत कम है और इतनी नहीं कि फिलहाल वहां कोई अलग शिक्षा प्रसारक मण्डल कायम किया जाय। या तो वहांकी जनता बहुत कम है यजो कुछ थोड़ी बहुत है, वह इतनी शिक्षित और प्रगतिशील नहीं कि वहां एकाएक इस प्रकारके कार्यकी आशा और सम्भावना हो। इस लिए उस प्रान्तीय विभागकी व्यवस्थाका भार अ० भा० माहेश्वरी महासभाके हाथोंमें सौंप दिया जाय। जो कुछ भी शिक्षा प्रसार ८ वें विभागके इन प्रान्तोंमें हों उन सबकी बागडोर महासभाके हाथोंमें रहे। इससे इन प्रान्तोंके लिए अभीसे ही कोई अलग मण्डल बनानेकी जरूरत नहीं रहेगी। भविष्यमें ज्यों-ज्यों शिक्षाका प्रसार होगा और इन प्रान्तोंमें भी शिक्षा प्रसारक मण्डल स्थायी रूपमें अलग बनानेकी जरूरत होगी तब वह बना लिया जायगा।

५००००) रु. की जो यह योजना हमने बनाई है उसके अनुसार विभिन्न कार्योंके लिए इस प्रकार धनका विनियोग किया जायगा।

१००००)	प्रौढ़ महिलाओं की शिक्षा
५०००)	अनाथ बालक-बालिकाओं की शिक्षा
४०००)	कालेजमें पढ़नेवाले विद्यार्थियोंको छात्रवृत्ति
२०००)	वाचनालयों की सहायता केवल (राजपुतानेके लिए)
९०००)	विदेशमें उच्च शिक्षा प्राप्ति
६०००)	विधवाओं की शिक्षा
३०००)	साहित्यिकोंका पालन
१०००)	योग्यताके पुरस्कारार्थ
५०००)	आफिस खर्च
५०००)	अतिरिक्त आवश्यकताओंके लिए सुरक्षित

इन उपरोक्त धनराशियोंमें से प्रथम ४ धनराशियां प्रान्तीय शिक्षा प्रसारक मण्डलों को केन्द्रीय संघसे सहायताके रूपमें दी जायंगी। यह सहायता उन प्रान्तीय मण्डलोंके कुल खर्चका २५ प्रतिशत होगी। प्रौढ़ महिलाओं की शिक्षाके लिए यह ३५% प्रति शत तक भी दी जा सकेगी। इसका अर्थ यह होगा कि कुल २१०००) की यह सहायता यदि केन्द्रीय संघ की तरफ से दी गयी तो इन चारों कार्योंमें कमसे कम लाख-पौन लाख रुपया सब प्रान्तोंमें मिलाकर खर्च होगा। विधवाओंके लिए जो ६०००) रु. की रकम रखी गयी है उससे प्रतिवर्ष केन्द्रीय संघ २० विधवाओं की शिक्षाका प्रबन्ध करेगा जिनपर प्रतिव्यक्ति २५) मासिक खर्च होगा। ये विधवाएं वनिताश्रमों, विधवाश्रमों या मातृगृहोंमें शिक्षा पायेंगी। विदेशमें उच्च शिक्षा पानेके लिए रखी गयी ५०००) की रकम से प्रतिवर्ष ३ छात्र बाहर भेजे जायंगे जिन्हें २५०) रु. माहवार छात्रवृत्ति दी जायगी। इसी प्रकार साहित्यिकोंके पोषणके लिए निर्धारित ३०००) की रकमसे तीन साहित्यिकोंका वर्षभर के लिए पालन किया जायगा।

इन खर्चोंकी उपयोगिताके सम्बन्धमें हम और भी खुलासा कर देना चाहते हैं। सभी प्रान्तीय शिक्षामण्डलोंका मुख्य कार्य होगा अपने-अपने क्षेत्रोंमें सार्वजनिक शिक्षाका प्रसार करना। इसके लिए जितने भी आवश्यक और उपयोगी उपाय होंगे उनका आश्रय लिया जा सकेगा। उदाहरणके तौरपर इन-क्षेत्रोंके जिन-जिन नगरोंमें स्कूल-कालेज आदिकी व्यवस्था होगी और माहेश्वरी भाइयोंकी संख्या भी पर्याप्त होगी, वहां-वहां विद्यार्थी भुवन, छात्रावास आदि खोले जायंगे। इससे विद्यार्थियोंको, विशेषतः बाहरसे आनेवाले विद्यार्थियोंको बहुत सुविधा होगी। यद्यपि घरपर रहकर भी शिक्षा प्राप्त

की जा सकती है पर छात्रोंके बीच रहकर शिक्षाका जो वातावरण तय्यार होता है वह घरके वातावरणकी अपेक्षा शिक्षा प्राप्तिमें कहीं अधिक मददगार हो सकता है। बाहरसे आनेवालोंको इससे ठौर–ठिकाना मिल जायगा। इससे स्वतःही अपने नगरसे बाहर रहकर भी कॉलेजकी शिक्षा पानेके लिए विद्यार्थियोंको प्रोत्साहन और उत्तेजन मिलेगा।

विद्यार्थियोंको शिक्षा देने में छात्रवृत्तियां देना भी एक महत्वपूर्ण अंग है। हमारे समाजके बहुतसे होनहार छात्र विद्याप्राप्तिसे सिर्फ इसलिए वंचित रह जाते हैं कि उनके पास इतना धन नहीं कि वे शिक्षा प्राप्त कर सकें। आज हमारे देशके देहात और नगर—दोनोंका ही जीवन इतना जटिल और मंहगा हो गया है कि रोटी–कपड़ेकी आवश्यकताओंकी पूर्त्तिके लिए भी मनुष्यको विवश हो जाना पड़ता है। अन्य देशोंकी तुलनामें हमारे देशके लोगोंकी औसत आय कम है। इसीका नतीजा होता है कि जीवनके इस महत्वपूर्ण अंग और आवश्यकता—शिक्षा—से बहुत वार अर्थाभाव के कारण हमारे समाजके छात्र भी वंचित रह जाते है। शिक्षा प्रसार की योजना पर जब हम विचार करने लगे है तब हमें इस बात पर भी विचार करना होगा कि ऐसे साधन हीन विद्यार्थियों की शिक्षाके लिये छात्र वृत्तियों की समुचित व्यवस्था की जाय।

स्त्री शिक्षा और खासकर प्रौढा स्त्रियोंमें शिक्षाका अत्यन्त अभाव है। इसी कारण हमोर समाजकी स्त्रियां अन्ध परम्पराओं और कुरीतियोंकी दास बनी रहती है। उन्हें इस दासतासे शिक्षा देकर मुक्त करना होगा और साथ ही स्त्री और पुरुष दोनों को उन्नतिका समान अधिकार देना होगा। यदि दोनोंमे से एक भी पिछड जाये तो समाज पूर्ण और स्वस्थ नहीं हो सकता। अतः उनकी मदद के लिए भी छात्र वृत्तियों आदि की व्यवस्था करनी होगी। साथ ही समाजमें कुछ बालक बालिकाएं ऐसी भी है जो अपक्व शैशव में ही दौर्भाग्य से अनाथ और अभिभावक हीन हो जाते हैं या कुछ ऐसे हैं जो अभिभावकों के रहते भी अनाथसे हैं। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा की व्यवस्था भी निहायत जरूरी है। फलतः इन तीनों, अर्थात कॉलेजोमें शिक्षा पाने वाले निर्धन छात्रोंके लिए, प्रौढ महिलाओं के लिए और अनाथ या अत्यन्त साधन हीन बालक–बालिकाओं के लिए छात्र वृत्तियों की व्यवस्था का भार भी उन प्रान्तीय शिक्षा प्रसारक मण्डलोंपर रहेगा।

राजस्थान प्रान्तीय मण्डलके पास खास तौर से एक काम और भी रहेगा। उसे अपने क्षेत्रोंमें सार्वजनिक वाचनालय और पुस्तकालय खोलनेकी व्यवस्था करनी होगी जिनमें सर्वसाधारण पत्र–पत्रिकाओं और पुस्तकोंका अध्ययन कर सकें क्यों कि वहां इनका बहुत अधिक अभाव है।

इन सभी कार्योंके लिए प्रान्तीय शिक्षा प्रसारक मण्डलोंकोही अपने–अपने प्रान्तोंके धनीमानी महानुभावों और आम जनतासे धनसंग्रह करना होगा। और कुल खर्चका कुछ हिस्सा सहायता (grant) के रूपमें उन्हें केन्द्रीय शिक्षा प्रसारक संघसे भी मिलता रहेगा। यदि वास्तवमें ही इस प्रकारकी एक संगठित और व्यवस्थित योजना बना ली गयी तो प्रान्तीय शिक्षा प्रसारक मण्डलोंको अपना काम चलानेके लिए आसानीसे धन मिल सकेगा क्योंकि उनको दिया हुआ धन जनताकी ही भलाईमें खर्च होगा। प्रारम्भमें इन प्रान्तीय मण्डलोंके पास केवल यही कार्य रहेंगे पर ज्यों–ज्यों शिक्षा प्रसारका कार्यक्षेत्र बढ़ेगा, शक्ति बढ़ेंगी, त्यों–त्यों कार्यका भी विस्तार होता जायगा।

इसके इलावा शिक्षा प्रसारके लिए एक क्षेत्र अभी और शेष है। जबतक उस पर यथेष्ट ध्यान नहीं दिया जायगा, तब तक शिक्षा प्रसारको पूर्ण नहीं कहा जा सकता। वह है विधवाओं में शिक्षा प्रसार मारे समाजमें विधवाओंकी कैसी दुर्दशा है इस बातपर अधिक प्रकाश डालनेकी आवश्यकता नहीं। यह बात अनेकवार इन्हीं कालमोंसे दोहरायी जा चुकी है और समाज इसे अपने प्रतिदिन के जीवनमें अनुभव कर रहा है कि विधवा होना हमारे समाजने स्त्री के लिए एक मानों भीषण पाप करार दे दिया है। उसे अपना वैधव्य अत्यन्त कष्ट और व्यथाके साथ समाज, कुटुम्बी और आत्मीय स्वजन–सबसे परित्यक्त होकर बिताना पड़ता है विधवाके लिए समाजमें कोई स्थान नहीं। भले ही वह बालपनमें विधवा हो जाय, फिर विवाह कर के पुरुषकी भांति नया संसार बसानेका उसे अधिकार नहीं, खाने–पहरनेका उसे अवसर नहीं। घर में भी वनकी तरह, आबाद नगरमें भी निर्जन की तरह वह रहती है। फिर हमारे समाजमें विशेषकर स्त्रियोंमें शिक्षाका अत्यधिक अभाव है जिससे विधवा हो जानेपर तो उनकी दुर्दशाकी सीमाही नहीं रहती। एकान्त कक्षमें पड़े सड़ने और कभी कभी कुटुम्बी स्त्री—पुरुषोंके वाक्य बाणोंका शिकार होनेके सिवाय उनके जीवनका किसीके लिए उपयोग नहीं। न तो उसका जीवन समाजके लिए सार्थक है और न स्वयं अपने लिए। यदि कभी घरकी अपमान और लांछनासे आहत होकर उसे घरकी देहलीसे बाहर पांव रखना पड़े तो उसके लिए कहीं कोई ठौर-ठिकाना नहीं, कोई उसे पूछने या खाना-कपड़ा देने वाला नहीं। और हमारे समाजमें विधवाओंकी संख्या भी कुछ कम नहीं कि दिलपर पत्थर रखकर भी इस करुण दृश्यको सहन किया जा सके। क्या अमीर और क्या गरीब–सभी घरोंमें विधवाएं मौजूद हैं। इसलिए जैसे भी हो इस कारुणिक दृश्यका अन्त करना होगा। शिक्षा प्रसार इसके लिए अचूक औषधका काम दे सकता है। यदि हमारे समाजकी विधवा बहिनें शिक्षित हों तो वे अपने वैधव्यके निरानन्द दिनोंमें भी आनन्द और उल्लास भर सकती हैं, शिक्षित होनेपर वे समाजके काम आ सकती हैं, अपनी जीविका स्वयं उपार्जन कर सकती हैं और घर-बाहरकी तीव्र लांछनाओंसे बच सकती हैं। इसलिए हमारी इच्छा है कि इस योजनामें विधवाओंकी शिक्षाको भी यथोचित स्थान दिया जाना चाहिए।

समाजमें शिक्षा प्रसारके लिए और भी अनेक छोटी मोटी बातोंका ध्यान रखना होगा। उदाहरणके तौरपर विदेशोंमें या स्वदेशमें ही पर्याप्त शिक्षा पाये हुए युवकोंकी उच्चशिक्षा प्राप्ति (Proficiency) या किसी खास विषय अथवा व्यवसायमें विशेषज्ञता प्राप्तिके लिए उन्हें विदेश भेजने या अपने ही देशमें उच्च शिक्षाके लिए छत्रवृत्तियां देनेकी आवश्यकता होगी। आज भारतमें जितने भी व्यवसाय चल रहे हैं उनमें ऊंचे और जिम्मेवार पदोंपर प्रायः गैर–भारतीयोंको रखा जाता है जिसका एकमात्र कारण यही है कि हमें भारतीय उन व्यवसायोंमें कुशल नहीं मिलते। हमारे अपने समाजके धनी लोगोंके हाथोंमें भी जो व्यवसाय हैं उनमें भी उन्हें दूसरे समाजों या बाहरके देशोंसे उच्च पदाधिकारी लेने पड़ते हैं। यदि अपने ही समाजके प्रतिभाशाली लोगोंकी विदेशमें व्यवसाय सम्बन्धी उच्च शिक्षा प्राप्तिका प्रबन्ध हो जाय तो हमें इन विशेषज्ञोंके लिए दूसरे समाजों या देशोंका मुंह न ताकना पड़े। फिर साहित्यकोंका भी सवाल है। यदि समाजके कुछेक साहित्यक लोंगोको आर्थिक चिन्ताओंसे मुक्त कर दिया जाय तो वे केवल साहित्यिक साधनामें अपना जीवन लगाकर एक अच्छा साहित्य पैदा कर सकते हैं जिसे हमारा समाज गौरव और अभिमानके साथ अपने समाजकी वस्तु कह सकेगा। इस शिक्षा प्रसारकी योजनामें साहित्यिकोंके पालन–पोषणको भी एक अच्छा स्थान दिया जाना चाहिए। साथ ही योग्य और प्रतिभाशाली छात्रोंको पुरस्कार आदि देकर प्रोत्साहन दिया जाय तो वह भी समाजको इस दिशामें बहुत कुछ आगे बढ़ा सकता है।

इस प्रकार समाजका कोई भी अंग ऐसा नहीं बचेगा जिसे अपनी २ योग्यताके अनुसार इस योजनासे सहायता नहीं मिलती हो।

अब प्रश्न यह है कि इस केन्द्रीय शिक्षा प्रसारक संघका संगठन किस रूपमें हो। इस सम्बन्धमें हमारा सुझाव है कि संस्थाके निम्न ५ प्रकार के सदस्य होने चाहिएं।

१. आजीवन सदस्य–जो शिक्षा प्रचारके कार्यमें अपना सारा जीवन अर्पण करनेका प्रण लें।

२. संरक्षक–जो ५००००) या इससे अधिक दान दें।
३. हितचिंतक–जो १००००)से ५००००) तक दान दें।
४. विशेष सदस्य–जो १०००) से १००००) तक दान दें।
५. साधारण सदस्य–जो १०००) से १०००) तक दान दें।

यदि थोड़ेसे भी महानुभाव इस प्रकारकी ऊंची धन राशियां दान करें तो आसानीसे एक ऐसा विशाल फण्ड तय्यार हो सकता है जिससे प्रतिवर्ष ५०००० रु. व्याज मिल जाय और केन्द्रीय संघ निश्चिन्त होकर यह काम चलाता रह सके।

केन्द्रीय संघके कार्यकारी मण्डल की रचना इस प्रकार होनी चाहिए। इसमें समस्त आजीवन सदस्य और संरक्षक लिए जांय। प्रथम ७ प्रान्तोंमेंसे १–१ सदस्य, हिताचिन्तकोमें से ७, विशेष सदस्योंमें से ७, साधारण सदस्योंमें से १० और अ. भा. माहेश्वरी महासभाकी ओरसे ५ सदस्य लिए जांय। एक सभापतिके अतिरिक्त परिस्थिति के अनुसार २ या ४ उपसभापति तथा एक मन्त्री निर्वाचित किया जाय।

हमें विश्वास है कि यदि इस योजना पर अमल किया जाय तो समाजमें शिक्षा प्रसारकी प्रगति अत्यन्त वेगसे होने लगेगी और आगामी १० वर्षोंमें हमारा समाज शिक्षाके क्षेत्रमें बहुत अधिक उन्नति कर सकेगा। समाजका ढांचा ही बदल जायगा और आज जिन कुरीतियोंके कारण हमारा समाज खोखला हो रहा है वे भी आपसे आप निरस्त हो जायंगी। और न सिर्फ समाज बल्कि देश भरमें काया पलट होकर श्री और धी की अभिवृद्धि होगी। हम चाहते हैं कि माहेश्वरी बन्धु और कार्यकारी मण्डलके सदस्य इस योजना पर गम्भीरतासे विचार करें।

स्व० रामकृष्णजी मोहता

स्व० रामकृष्णजी मोहताको इह लोककी यात्रा समाप्त किए आगामी ता. २६ सितम्बरको दो साल पूरे होते हैं। और न जाने यों ही कितने साल बीत जायंगे, किन्तु उनकी कर्त्तव्य परायणता, उदारता तथा देश और समाज सेवाकी उत्कट लगनके कारण जो स्मृति हमारे हृदय पटलपर अंकित हो गयी है वह सदा अमिट बनी रहेगी।

कवि ग्रेने कहा था—

Full many a flower is born to
blush unseen,
Lay its sweetness on the deserted air.

"अर्थात बहुतसे फूल निर्जन एकान्तमें खिलते हैं और बिना किसीके देखे ही मुरझा जाते हैं, उनकी मधुरता सूनी वायुमें ही रह जाती है।" किन्तु रामकृष्णजीके रूप, रस और सौरभके कारण जो वातावरण बना हुआ है वह न जाने कितने समय तक इन्हीं कारणोंको लेकर वैसा ही बना रहेगा।

संसार में कितने मनुष्य पैदा होते हैं, जिन्दगी बसर करते हैं और चले जाते हैं। किंतु कुछ आत्मीय परिजनों को छोड़कर जो कि श्राद्धपक्षमें उस दिन चन्द ब्राह्मणों को खिलाकर उनको याद करते हैं, कोई उनका नाम तक स्मरण नहीं करता। पर वे लोग जो चन्दन की तरह संसारके उपयोगी कार्योंमें अपने जीवन और शरीर को घिसा देते हैं उन्हें ही संसार याद करता है और उन्हीं का जीना सार्थक है।

श्री रामकृष्णजी के सम्बन्धमें हम उनके जीवन चरित्र से पढ़ चुके हैं कि वे बहुत अच्छा गाते थे। उनका कण्ठ बड़ा मधुर था और इस स्वाभाविक माधुरीके कारण ही उनका गायन बहुत अच्छा होता था और विशेष बात तो यह थी कि वे हमेशा ऊंचे दर्जेकी चीजें कहा करते थे। शृंगारकी तरफ उनकी रुचि कभी जाती ही न थी। प्रायः भजन गाते थे। उनका गाना केवल मनोरंजनका साधन नहीं होता था बल्कि ईश्वर भक्तिमें तन्मय होनेका साधन था। यही नहीं, वे अपने गानको अपने जीवनमें उतारनेकी कोशिश करते थे। जो लोग उनके सम्पर्कमें आये हैं और जिन्हें उनके गायन सुननेका अवसर मिला है वे उनका यह पद कभी भूल नहीं सकते—

अगर मंजूर धन रक्षा, तो धनवानो बनो दानी,
कुएंसे जल न निकलेगा, तो सड़ जावेगा सब पानी।
दिया जल हमको बादलने, तो ऊंचा हो गया बादल,
रहा नीचा ही सागर है, अदाताको पशेमानी।
कोई मरता है धन देकर, कोई देता है धन मरकर,
जरासे फर्कके कारण बनता है ज्ञानीसे अज्ञानी।

इस पदको कितनी ही बार उन्होंने गाया है आत्म विभोर होकर, मानों रोम-रोमसे यह पद प्रस्फुटित हो उठा हो, सारी शक्ति इसी पर—इसकी भावना पर केन्द्रीत हो गयी हो। केवल कण्ठका वाद्ययन्त्र ही इससे झंकृत नहीं हुआ था बल्कि इस पदके भीतर जो महान् तत्व भरा है वह उनके जीवनके प्रत्येक क्षण और प्रत्येक पगमें व्याप्त था। समाजमें कितने धनी मानी लोग बैठे हैं किन्तु कितनोंने प्रकृतिकी इस छोटी-सी बातको समझा होगा—'दिया जल हमको बादलने तो ऊंचा हो गया बादल', यद्यपि वे जानते हैं कि लक्ष्मी चंचला है, वह किसी एक की होकर देर तक नहीं रहती—आज जिस घरमें उजियाला है कल वहीं अन्धेरा छा सकता है, आज जहां चहल-पहल है कल वहीं श्मशानका-सन्नाटा हो सकता है। फिर भी शायद ही इस सबकको सीखकर वे ज्ञानी बन सकते हैं कि अपने धनको लोकोपयोगी कार्योंमें लगाकर मरना सीखें।

श्री रामकृष्णजीने जो कुछ दान दिया व जो कुछ सेवाकी वह अत्यन्त मूक थी, आत्मश्लाघाकी आकांक्षासे वह कलुषित नहीं हुई थी। इस लेखके लेखकको भी कुछ दिन उनके साथ रहनेका मौका मिला। शायद ही कोई दिन ऐसा बीता हो जिस दिन उसने उनकी सहज उदारता का परिचय नहीं पाया हो। एक भी दिन ऐसा नहीं गया जब उन्होंने चुपचाप किसी को सहायता नहीं दी हो, जिस दिन किसी गरीबके आंसू नहीं पोंछे हों।

जीवन सन्ध्याके अन्तिम प्रहरमें इस लेखकने चार दिन उनके साथ रहने का सौभाग्य पाया है। बातचीतके प्रसंगमें जब उनसे सार्वजनिक कार्यों से उनकी विरक्तिके लिए दुःख प्रगट किया गया तब वे कहने लगे कि सार्वजनिक कार्योंमें धन की अत्यन्त जरूरत रहती है और जिस समय मेरे पास धन था-तब कोई कार्य करनेमें मुझे उत्साह होता था। पर आज कुछ रहा नहीं। इन कार्योंके लिए मैं दूसरोंसे धन मांगने जाऊँ, यह मुझ से नहीं हो सकेगा। कितने मार्मिक थे उनके ये उद्गार! आज भी याद आ जाती है तब दिल भर आता है। सचमुच ही जब तक धन रहा उनका भण्डार सहायताके लिए हमेशा खुला रहा, पर जीवनके अन्तिम दिनोंमें दूसरोंके आगे जब हाथ पसारनेका समय आया मानों उसमें विष-सा घुल गया। फिर भी उन्होंने खूब किया।

भर भर कितनी बार खजाने तुमने खाली कर डाले।
देश भक्त, दुर्बल, समाजके दुःखियोंके दुःख हर डाले।
कूट-कूट कर भरा हुआ था स्वाभिमान संकल्प उछाह।
उदारतासे भरा हृदय वह रत्नाकर गम्भीर अथाह।

लोग कहते हैं कि उनका आखिरी जीवन सुन्दर व्यतीत नहीं हुआ। यदि उनमें ऐसा परिवर्तन हुआ तो क्यों हुआ?-इसका विचार करनेका शायद ही उन्होंने कष्ट उठाया है। कई ऐसी घटनाएं घट जाती हैं जिनका मनुष्यके मनपर गहरा प्रभाव पड़ता है और वही उसको परिवर्त्तन करनेके लिए बाध्य करता है। हम इतना ही कहते हैं कि जो लोग ऐसा कहते हैं उन्होंने मनोविज्ञानका यथार्थ अध्ययन नहीं किया। समयके प्रवाहमें मनुष्य भूल कर जाता है और उसका सुधार करनेकी कोशिश करता है। पर समाज उसे सुधारनेमें मदद तो करता ही नहीं अवसर भी नहीं देता।

आज श्री रामकृष्णजीकी सेवामें अपनी हृदयकी श्रद्धांजलि आर्पित करते हुए महाकवि टेनीसनके शब्दोंमें हम इतना ही कहेंगे—

My love involves the love before;
My love is vaster passion now;
Though mix'd with God and Nature now;
I seem to love thee more and more.
Far off thou art, but ever nigh;
I have thee still, and I rejoice;
I labour circled with thy voice;
I shall not lose thee though I die.

"मैं तुम्हे पहले जैसा प्यार तो करता ही हूं,
पर अब मेरा वह प्यार व्यापक वासना बन गया है।
यद्यपि तुम ईश्वर और प्रकृतिमें एकरस हो गये हो,
मैं तो तुम्हें पहलेसे भी अधिक प्यार करने लगा हूं।
तुम यद्यपि बहुत दूर हो, पर निकट भी तो हो,
तुम अब भी मेरे पास हो, यही समझकर मैं खुश हूं,
तुम्हारी वाणीसे घिरा मैं चल रहा हूं,
और मर जानेपर भी शायद मैं तुमको नहीं खोऊंगा।"

रा०

एक आशा

मौसरके सम्बन्धमें हम 'माहेश्वरी' के पिछले अंकोंमें बहुत कुछ लिख चुके हैं ओर पहले भी लिखते रहे हैं। इस प्रथाकी घातकताके सम्बन्धमें जो कुछ कहा जाय थोड़ा है और यह हर्षकी बात है कि अब समाज इस प्रथाकी घातकताको खूब महसूस करने लगा है और इसे त्यागनेके लिए कटिबद्ध हो गया हैं। अभी पिछले दिनों हमें मिर्ज़ापुर (यू. पी.) के मारवाड़ी नवयुवक संघसे एक पत्र मिला है जिससे ज्ञात हुआ है कि वहांके मारवाड़ी समाजने एक प्रस्ताव करके मौसरको पूर्णतः विदा कर दिया है। वे लोग यह भी चाहते हैं कि इस कार्यके लिए खूब प्रचार किया जाय और जैसे भी सम्भव हो इस बुरी प्रथासे समाजको बचाया जाय। उनका कहना है कि यह कार्य धनकी नहीं बल्कि सच्चे लगनशील प्रचारकोंकी अपेक्षा रखता है। उन्होंने ऐसे प्रचारकोंकी मांग भी की है। इस शुभ कार्य और निश्चयके लिए उनका जितना अभिनन्दन किया जाय थोड़ा है।

इससे पूर्व महासभाके राजस्थानके गत भ्रमणके समय नांवाके माहेश्वरी समाजने भी मौसरको सदाके लिये परित्याग कर एक सुन्दर उदाहरण पेश किया था। बीकानेरमें श्रीयुत रामगोपालजी मोहता तथा श्री मथुरादासजी मोहता आदिके प्रयत्न इस प्रथाको उड़ानेके लिए जारी हैं ही। श्री मथुरादासजी मोहताने तो गत अप्रैल मासमें हिंगणघाटकी एक सभामें भाषण देते हुए कहा था कि मेरी समाजसे एक प्रार्थना है कि मौसरकी प्रथाको विदा कर दिया जाय। इन सब बातोंको देखते हुए हमें निश्चय है कि बीकानेरसे भी यह प्रथा बिल्कुल उठ जायेगी। आवश्यकता इस बातकी है कि कुछ साहसी युवक आगे आकर इस प्रथाको हटानेके लिए समाजके सामने सुन्दर आदर्श पेश करें।

अन्तमें हम इस बातका उल्लेख किये बिना भी नहीं रह सकते कि जमखण्डीके माहेश्वरी समाजने भी एक प्रस्तावके द्वारा मौसरकी प्रथाका अन्त कर दिया है। और समाजके इस प्रस्तावको मान देकर श्री रामनाथजी डागाने अपनी स्वर्गस्थ पत्नीका मौसर नहीं किया। इस सत्कार्यके लिए श्री रामनाथजी डागा तथा जमखण्डी निवासी माहेश्वरी समाज बधाईका पात्र है। हम उस शुभ दिनकी प्रतीक्षामें हैं जब न सिर्फ कुछ स्थानोंसे बल्कि सारे समाज से ही यह प्रथा उड़ जायगी।

मेवाड़ माहेश्वरी कान्फ्रेन्स, उदयपुर

प्यारे भाइयो!

या बात तो आपने मालूम ही है कि मेवाड़ प्रदेश में माहेश्वरी वंधुओंकी जन संख्या लगभग ४०००० चालीस हजारके वेगा अतरी बड़ी तादादकी जातीमें कतरा भाई आच्छा अंग्रेजी हिन्दीका जानकार है? माणों तो ख्याल है कि सैंकडा पीछे एक आदमीकी गीणतीभी आछा पढ्या लिख्या की नहीं नीकलेगी। जदी आपणां समाजकी असी दुर्दशा वे रही है तो फेर आपांने गहरी नींद किस तरह सुं सोइ ज़ावणों चावे? समाजमें आच्छी शिक्षा नहीं होवा सुं धर्म अधर्म ने पेहचाणवो भूल गया। लकीर का फकीर वेगया। अणींज वजह सुं आपणीं दशा दिन २ पहला करता वगड़ती जावे है। अगर अणीं तरक्की का जमानामें भी आपां नही संभलांगा तो फेर आपणां समाज को नामो निशान नही रहेगा। आपणीं आज जो हालत है वीं पर विचार नही करोगा तो आपणें पाछे आवा वाली संतान की दशा आवार है वीसुं भी वती खराव हो जावेगा।

शिक्षाकी नजरसुं तो आपणों समाज बीलकुल ही गयो बित्यो है। पण साथ ही साथ गरीबी (बेकारी) भी समाजमें अतरो घर कर लियो है कि वंडा पंजासु निकलवाके वास्ते आपां कदी सोचवा की कोशिश ही नही कीदी। भाई २ में संभोग नहीं है जद काम चाले कठासुं। जमानो तो आपाने शिक्षा दे रयो है कि एकता रा सूत्रमें बंधने सब काम करो जमानारी कणके मुजीब आपां चालां तो आज आपणीं बीगड़ी हालत फेर भी जट सुधर सके हाल कई बीयो नही।

आणि वास्ते कुछ सुधारवादी भाइयों के भरोसे आशिक्षा और गरीबी को समाज में से दुर करवाने मेवाड रा माहेश्वरी भाइयांने इकट्ठा करवा के वास्ते दीवाली के बाद ही माहेश्वरी सम्मेलन बुलावा को निश्चय कीदो है। अणी मौका पर मेवाड़ का सब ही माहेश्वरी भाई उदयपुर में जरूर पधारेगा। आपणी जाती रा बड़ा २ तपस्वी त्यागी नेता भी पधारेगा जांरा दर्शन और अमृत वाणी सुनवा को घणों आछो अवसर मिलेगा।

माणों तो विश्वास है कि अणीं मौका को लाभ उठावा के वास्ते कोई भी भाई पाछे रहेगा नही। जणीं भी भाई को वीचार थोड़ो वे वीने भी जरूर उदयपुर आवणों चावे।

क्योंकि उदयपुर भी देखया जस्यो शहर है जीरे वास्ते कई अंग्रेज भी हर साल आवे है। ठहरावा, भोजन वगैरा को इन्तजाम अठे आप भाइयां रे वास्ते मौजुद रहेगा।

मौजुदा हालतमें अशिक्षाने मिटावाके वास्ते माहेश्वरी बोर्डींग हाउस कायम कीदो है। जीरी पूरी फीस देवाकी शक्ती नही होवे वां बालका ने भी राखवाको प्रबन्ध कीदो है जो भी भाई आपणां बालकाने भेजणों चावे वीं के लिये लीखा पढ़ि करें।

विनीत—
स्वागताध्यक्षः-मदनलाल राठी
उप ,, हनुमान सौढाणी
प्रधान मन्त्रीः-दिलीपसिंह राठी
उप ,, मदनसिंह देवपुरा
प्रचार-मन्त्रीः-जमनालाल लड्ढा
उप ,, श्यामसुन्दरलाल राठी

★ स्व० रामकृष्णजी मोहता ★

> Life of great men all remind as,
> We can make our life sublime.
>
> Longfellow

महान् पुरुषोंके चारित्र हमें अपने जीवन सुधारनेमें सहायक होते हैं।

सम्वत १९५३ की आश्विन शुक्ला चतुर्थीको रामकृष्णजी मोहता का अपने बीकानेरके पैतृक भवनमें जन्म हुआ था और सन् १९३९ की २६ सितम्बर को उन्होंने उसी विशाल भवनमें देह त्याग किया। उनका यह अल्प जीवन मानव जातिके परम सौभाग्य का विषय है।

'स जीवति मनो यस्य मननेन हि जीवति' यानी जीना उसीका सत्य है जिसका मन मनन द्वारा जीता रहता है।

मनन और आनन्दानुभूति तथा साहित्य और सेवाकार्योंमें उनका जीवनव्यापी प्रकाश लोकोत्तर विराट् पुरुष रामकृष्णजीके व्यक्तित्व का एक अंश मात्र है। उनके साथ यद्यपि मेरा सहवास काफी दीर्घकाल तक रहा है तथापि मैं यह दावा नहीं करता कि मैंने उन्हें खूब अच्छी तरह पहचाना और समझा है। इस लेखमें मैं उनके विविध कार्यों का केवल सामान्य परिचय मात्र ही दूंगा।

एक भक्तकी

यद्यपि रामकृष्णजीका श्रेष्ठ परिचय दाताका परिचय ही है। तथापि उनमें दयालुता, सौजन्य, सरलता, मधुभाषिता देश तथा समाजसेवा आदि अनेक दैवी सम्पदाएं मौजूद थी।

श्री. मोहताजीका शिक्षण बहुत ही साधारण था फिर भी उनकी बुद्धि प्रखर होनेके कारण उनका साहित्यिक ज्ञान उच्च कोटिका था। वह स्वयं अच्छे लेखक और सुवक्ता थे एवं सार्वजनिक सस्थाओंका संचालन बड़ी खूबी के साथ किया करते थे। जहां तक मेरा ख्याल है कलकत्ता नगरमें शायद ही कोई हिन्दी भाषा-भाषी संस्था मिलेगी, जिसको श्री. मोहताजीने किसी न किसी रूपसे सहयोग प्रदान न किया होगा एवं हिन्दी भाषा-भाषी शायद ही कोई साहित्यसेवी उनकी सहकारितासे वंचित रहा होगा।

श्री मोहताजीने लगभग १७-१८ सालकी उमरमें व्यवसायिक जगतमें पदार्पण किया और अल्प कालमें ही अपने क्षेत्रमें प्रथम श्रेणीके व्यापारियोंमें स्थान प्राप्त किया। उनका प्रधान व्यापार हैसियन और जूटका था। और इस व्यवसायमें देशी तथा विदेशी व्यापारी उनकी प्रतिभाकी भूरि २ प्रशंसा किया करते थे। हैसियन तथा पाट के बड़े २ कुशल व्यापारी उनकी व्यापारिक धारणा का अत्यधिक मान करते थे जो सन्मान क्वाचित् ही उनके समकालीन व्यवसाइयों को प्राप्त हुआ होगा।

श्री मोहताजी सिद्धहस्त व्यापारी तो थे ही पर साथ ही साथ उनमें व्यापारिक उदारता भी कूट कूट कर भरी हुई थी। मेरा ख्याल है कि उनके आफिस में आने जाने वालों में से शायद ही कोई ऐसा अभागा दलाल होगा जिसका गृहस्थी का खर्चा श्री. मोहताजी की अनुकम्पासे न निकलता हो और आज भी वह भाई उनके बिछोहसे विलखते नजर आते हैं।

श्री. मोहताजी की स्मरणशक्ति भी विलक्षण थी। अक्सर ऐसा देखा जाता था कि कई सालों के निर्यात-आयात (Export-Import) के आंकड़े उनको कण्ठस्थ रहते थे एवं उनकी संकलनता का विच्छेद नहीं हो पाता था। जब कभी वह लिखा करते थे तो कितनी भी बाधा (Disturbances) क्यों न हो उनकी विचारधारा में कोई रुकावट नहीं आती थीं।

● श्री कृष्णलालजी वागड़ी ●

श्री. मोहताजी उदार दानी थे। समाजके बड़े २ नीतिज्ञोंने भी उनकी उदारताको परिमाण रहित माना है और उनके निकटस्थ सम्बन्धी तथा परम हितैषी जन उनकी उदारता को 'विवेक हीनता' की संज्ञा देनेमें भी नहीं हिचकते थे। परन्तु श्री. मोहताजीने श्री. गोसाईजी की इन पंक्तियों "मंगन लहहिं न"को इतना हृदयंगम कर लिया था कि 'येन केन विधि दीनहुं दान करें कल्याण" यह उनके जीवनका मोटो (Motto) होगया था।

श्री. मोहताजीकी आर्थिक परिस्थिति सर्वदा उल्टती पल्टती रही थी। उनके पास किसी समय विशेष सम्पत्ति अधिक काल तक नहीं टिकी थी फिर भी उनकी दानकी प्रवृत्ति उत्तरोत्तर वृद्धिंगत ही दिखाई पड़ती थी। इस सम्बन्ध में वह स्वयं एक बड़ा अच्छा पद गाते थे।

अगर मंजूर धन रक्षा तो धनवानो बनो दानी !
कुएँ से जल न निकलेगा तो सड़ जायेगा सब पानी।
दिया जल हमको बादल ने तो ऊंचा होगया बादल,
रहा नीचा ही सागर है अदाता को पशेमानी।
कोई मरता है धन देकर कोई देता है धन मरकर,
जरा से फरक के कारण बनते हैं ज्ञानी से अज्ञानी

यदि आज भी हमारे देश के धनीमानी सज्जन उपरोक्त पद की अन्तिम पंक्तियों का मनन करें तो श्री. मोहताजी के रिक्त स्थान की शायद पूर्ति हो सकेगी।

श्री. मोहताजी का हृदय इतना सरल और दयालु था कि शायद ही कोई दूसरा धनिक ऐसा सरल व दयालु हो। उनकी शारीरिक विशालता उनकी आत्मिक विशालता से साम्यता रखती थी। उनका मुखमंडल सर्वदा प्रफुल्लित रहता था। उनकी मधुर मुस्कान उनके भिन्न विचार रखने वाले सज्जनों को भी अपना वशवर्ती कर लिया करती थी। वह कभी रुष्ट होते नहीं देखे गये। उनकी व्यंग्योक्ति इतनी रुचिकर और भावुक होती थी कि बड़े बड़े साहित्यज्ञों की भी कलम टूट जाया करती थी।

श्री. मोहताजी संगीतमें भी अच्छा स्थान रखते थे। अक्सर उनके मित्रवर उनके संगीत पर मुग्ध हो जाया करते थे। वस्तुतः वह बड़ा अच्छा गाते थे। उनका कण्ठ बड़ा मधुर था। और उनके गायनमें सबसे बड़ी उल्लेखनीय बात यह होती थी कि वह हमेशा ऊंचे दर्जेकी चीज तथा भजन ही गाया करते थे।

श्री मोहताजी में समाज सुधार की बड़ी भारी लगन थी और यह कहनेमें अतिशयोक्ति न होगी कि अगर माहेश्वरी महासभा और 'माहेश्वरी' पत्रके जीवन कालसे श्री. मोहताजी का सहयोग निकाल दिया जाय तो या तो इन दोनों संस्थाओंका अस्तित्व ही नहीं रह जाता और यत्किंचित रह भी जाय तो वह अवांछनीय स्वरूपमें होगा। ऐसी अवस्थामें माहेश्वरी समाज श्री. मोहताजी का चिरऋणी रहेगा और इस नौ लाख जन समुदायमें समय २ पर श्री. मोहताजी जैसे सच्चे समाजसेवी, निष्ठावान् व्यक्ति आगे आवें तो अल्प काल ही में यह समाज भारतके सुसंस्कृत समाजोंका मुकुटमणि बन जाय।

श्रद्धाञ्जलि

प्रकृति का क्रम निराला है। मानव समाज भी बड़ा कृतघ्न है। यह मोहताजी के अन्तिम दिनोंको देखकर समझमें आजाता है। जिन व्यक्तिके लिए श्री मोहताजीने तन, मन, धन अर्पण किया यदि वह लोग उसका शतांश भी उनके उपकारोंको कर्त्तव्य समझ कर उनकी विपरीत अवस्था में सहकारी होते तो बहुत सम्भव था कि श्री. मोहताजीका अन्त काल भी सुखमय कटता परन्तु दैवी विधान को हम नहीं मिटा सकते एवं यह मानकर कि उत्थान-पतन, सुख-दुःख, यश-अपयश इन द्वन्द्वोंसे कोई नहीं बचता, स्वर्गीय मोहताजीके अन्तिम चित्र पटल पर हम सन्तोष कर लेते हैं, एवं समाजके स्वनाम धन्य व्यक्तिओंसे आशा करते हैं कि वह अपने समकालीन मनुष्योंकी अपनी भूल संशोधन करनेकी सदैव उदारता प्रदान किया करेंगे।

वधूकी आवश्यकता

एक सुंदर सुशील शिक्षित, कुलीन एवं स्वस्थ [illegible]५ वर्षीय माहेश्वरी युवकके लिये, जिसकी स्वतंत्र मासिक १००) है, एक सुयोग्य, गृह कार्यमें दक्ष वधू की आवश्यकता है। विवाह आधुनिक रीतिसे होगा। लड्डा और काल्या खांप वाले पत्रव्यवहार न करें। कन्या पक्ष दस्सा माहेश्वरी होगा तो भी कोई आपत्ति नहीं होगी।

पत्रव्यवहार इस पतेसे करें।

बी. डी. राठी एण्ड सन्स
हिंगणघाट, जिला वर्धा (सी. पी)

जर्मनीके सैन्य संचालक दिमाग

सेना विशेषज्ञोंने देखा है कि नाजियोंकी चमत्कारिक विजयोंका एक ही कारण है और वह है युद्धकी सब शाखाओंमें पारस्परिक पूर्ण सहयोग। पोलैंडके युद्धसे लेकर फ्रांसके युद्ध तक और उसके बाद हालके पूर्वी भूमध्यसागरके समय तक प्रत्येक बडे संग्राममें, जब कभी जरूरत पडी जर्मनीकी हवाई सेना, पदाति सेना, तोपखाने, इंजिनीयर दल, यांत्रिक सेना और जल सेनाने घडीकी-सी निश्चित और समान गतिसे कार्य किया। युद्धके नये यंत्रोंके साथ सथ नाजी सेनाधिकारियोंने उन यंत्रोंको चलानेके लिये एक नये ढंगके सैनिक का भी निर्माण किया है।

सन् १९३८ के प्रारम्भमें एक दिन जर्मन सेनाधिकारी वर्गके प्रधान, जनरल हैल्डरने हिटलरके सामने एक क्रांतिकारी प्रस्ताव रखा। उसने कहा कि सेनाके सर्वश्रेष्ठ ३० अधिकारियोंसे दो वर्षके लिये जलसेनामें काम लिया जाय, जिससे वे स्वयं अपने अनुभवसे जलसेना की कलाओंका अध्ययन कर सकें। नौ सेना और स्थल सेनाके उच्च अधिकारियोंने इसका घोर विरोध किया। परंतु हिटलर इस प्रस्ताव से प्रभावित हो गया था। फलतः सैनिक अधिकारियोंको पनडुब्बियों, विध्वंसक तोपों, और जंगी जहाजोंमें काम करनेके लिये नियुक्त कर दिया गया। उन्होंने "धावा बोलकर समुद्र तट पर उतरनेवाले दलों"का संचालन और पोत-समूहोंका संगठन किया। जल सेना क्या क्या कर सकती है और किस प्रकार यह उन्होंने सीखा?

ये ३० आदमी जो आज जर्मन फ़ौजके प्रमुख सेनापति हैं, सेना विभाग की प्रायः तमाम शाखाओंका साक्षात् अनुभव ले चुके हैं। १९३५ में उन सबको एक साथ हवाई फौजमें लगाया गया था। 'स्टुका' से लेकर युंकर तक सब तरहके वायुयानोंका परिचालन उन्हें सिखाया गया। इन लोगोंने बमवर्षाकी विधिका अध्ययन किया, हवाई जहाजोंसे नीचे उतरने तथा आकाश मार्गसे स्थल सेनाको रसद पहुंचाने आदिकी कलाओंका तबतक अभ्यास किया–जब तक कि वे हवाई युद्ध कलाके प्रत्येक दावपेचमें कुशल नहीं हो गए। अब उन लोगोंका उपनाम ही "थ्री डायमेन्शनलिस्ट" (त्रिविध आकृति ज्ञाता) पड गया है क्योंकि उन्हें समस्त फौजी, और नौसैनिक उपकरणोंका पूर्ण ज्ञान है। इन विशेषताओंके कारण सैन्य संचालनकी जो योग्यता जर्मन सेनाधिकारियोंमें है, वह संसारमें अन्य किसी देशके सेनाधिकारियोंको प्राप्त नहीं है।

हवाई और स्थल सेनाके सम्मिलित संचालनकी जो शिक्षा हैल्डरने दी थी-उसके परिणाम सर्वप्रथम पोलैंडमें दृष्टिगोचर हुए। जब कभी किसी मजबूत पोलिश सेना द्वारा जर्मन फौज या यांत्रिक सेना का कोई टुकड़ा रुक जाता था तो रेडियोपर खबर भेजकर फौरन 'गोताखोर' बमवर्षक बुलाये जाते थे जो कुछ मिनटोंमें ही आकर दुश्मनकी खाइयों और टैंकनाशक तोपोंकी धज्जियों उडा देते थे। नॉर्वेमें इन दो सेनाओं–हवाई और स्थलसेनाके साथ जलसेनाका सहयोग और बढा दिया गया था।

फ्रांसके युद्धमें सम्मिलित और सहयोगपूर्ण कार्यके बहुत बड़े चमत्कार देखनेमें आये। टैंक, गोताखोर बमवर्षक, पुलोंकी योजना वाले इंजिनीयर, तेज रफ्तारका अत्यंत भारी तोपखाना और रसद ले जानेवाली रेल गाडियां–सब ऐसे अंदाजसे आगे बढते और पीछे हटते थे कि सेनापति सर एडमंड आयरन साइड को कहना पडा कि "मालूम होता है इन सब को कोई एक ही दिमाग संचालित कर रहा है। परंतु यह असंभव है"।

वास्तवमें यह असंभव नहीं था। फ्रांसके उस महान् युद्धमें लगभग एक सौ जर्मन सेनाधिकारी विविध कार्यों का संचालन करते थे–पर उन सबके ऊपर एक ही आदमी जनरल फ़ोन रीशेनोका दिमाग था। सारे युद्धमें मित्र-राष्ट्रोंके सेनाधिकारी आपसमें झगड़ते रहे। सेनापति आयरन साईड और सेनापति वेगांको उनके अमूल्य घंटोकी इंतजार करनी पडी थी–जब कि वायुयान टैंक और पदातिसेनाके झगड़ालू अधिकारी इस विषय पर विवाद करनेमें लगे हुए थे कि किन हथियारोंका और कहां पर प्रयोग किया जाय।

फ्रेडरिक सॉन्डर्न

(मैक क्ल्योर न्यूज पेपर सिन्डिकेट का
भूतपूर्व मध्य यूरोप का संवाददाता)

परंतु दूसरी ओर जर्मनीकी बढती हुई सारी सेना जनरल फोन रीशेनोकी उंगलीके इशारोंपर थी, क्योंकि वह व्यक्तिगत रूपसे अपनी पदाति सेना, तोपखाना, टैंकों और स्टुका वायुयानोंका अनुभव ले चुका था और इस कारण वह एक ही लहमे भरमें कोई भी नया कदम उठानेका फैसला कर सकता था।

जब जर्मन सेनाके आक्रमण के फलस्वरूप बेलजियममें मित्रराष्ट्रों की लाईन का एक भाग कमजोर पड गया तो यह जर्मन सेनापति अपनी तमाम हवाई और यांत्रिक 'रिजर्व' सेना को उस कमजोर हिस्सेपर फौरन ही दौडा सका था। उसकी फौजें उस दुर्बल भागको भेद कर अन्दर घुस गयीं। उन्होंने फ्रांसकी रसद पहुंचाने की लाइनोंको काट दिया और आगे बढती हुई ब्रिटिश फौजको घेर लिया–जिसे बुरी तरह मुंहकी खाकर डंकर्कमें पीछे हटना पडा था। सेडानमें भी वही हुआ–और इतनेमें ही फ्रांसका युद्ध समाप्त हो गया। यह युद्ध जनबलसे नहीं बल्कि सैन्य संचालनकी एकता और पूर्ण समय पालनके चमत्कारसे जीता गया था।

हेल्डरकी बतायी हुई शिक्षाको पचानेके लिये जनरल स्टाफ ऑफिसरमें असाधारण योग्यता होनी चाहिये। लेकिन तरक्की देनेकी जर्मन पद्धति असाधारण शक्तिशाली आदमिओंको ही महत्त्वके पदोंपर नियुक्त करती है, जब कि दूसरी सेनाओंमें ऐसा नहीं होता। वे योग्यताको ही तरक्कीकी कसौटी मानते हैं, उनके लिये दीर्घकालकी नौकरी गौण महत्वकी है और राजनैतिक लोगोंसे परिचिति तो उनके लिये कतई महत्व नहीं रखती।

जिस क्षणसे जर्मन युवक फौजमें भरती होते हैं, कार्यकर्ता अफसर उनकी पूरी जांच करते हैं और उनकी कुशलता, चतुराईयोंका पूरा ज्ञान करते हैं। मैदानके एक सिरे पर बन्दूकधारी सिपाहियोंकी पल्टन खडी है। उसे प्रकृतिके प्रत्येक बचाव स्थान जैसे कि चट्टानें, पेड़ और खाईयां इन सब का फायदा उठाते हुए मैदान पार करनेको कहा गया है। दुश्मनके तेज़ निशानेबाजोंके आगे जो सैनिक ज्यादा देर खडा रहता था उसके ड्रिल-कार्डके आगे अफसर निशान लगा देता था और जिसके कार्डमें सबसे कम निशान लगे हुए होते थे उसे पुरस्कार तथा अधिक छुट्टियां दी जाती थीं। अफसर एक आदमीकी ओर संकेत करके बोला, "उसे देखो, उसका दिमाग है, और वह उसका फायदा उठाता है, उसके हमले कितने नपेतुले होते हैं!" इस परेडके खतम होनेके बाद स्क्रिम्ट नामक सैनिकको बुलाया गया। उससे प्रश्न पूछे गये। उससे पूछा गया कि तुम्हें बंदूक कैसी जंची? क्या इन हालातमें छुपी पोशाकमें मैदानोंमें गुजरना सैनिकोंको मददरूप हो सकता है? उसके जवाब बुद्धियुक्त थे इसके बाद वह कोरपोरल बना दिया गया।

उसको सैनिकोंका एक छोटासा दस्ता शिक्षणके लिये दे दिया गया। उसके आदमी दूसरे कोरपोरलोंके सैनिकोंसे बहुत जल्दी काल्पनिक मशीनगनोंके अड्डों पर गोले फेंक सकते थे। और थोड़ेही सप्ताहके बाद स्क्रिम्टको सार्जेन्ट बना दिया गया। दो मासके बाद उसे एक सैनिक शिक्षालयमें कमिशनके अध्ययनके लिये भेजा गया। एक सालके बाद वह लेफ्टीनेन्ट बना दिया गया। यह सन् १९३८ की बात है। करीब एक साल पहले मैंने सुना कि ३० साल की आयुमें वह अब मेजर के पद पर है और लडाई की गोलाबारीमें उसके आदमियों की सफल नेतृत्व शक्ति के कारण उसे आयरन क्रॉस, और फर्स्टक्लास दिया गया है। स्क्रिम्ट की बात कोई असामान्य बात नहीं थी। वह न तो पक्का नाजी था और न ही उसके प्रभावशाली मित्र थे। लेकिन उसमें सैनिक योग्यता अवश्य थी।

दूसरी वार दिनभर मैंने देखा कि निर्णायक लोग अपना निर्णय बना रहे हैं जब कि एक कैप्टनके बाद दूसरा कैप्टन अपने दलके साथ कुछ फार्म बिल्डिंगसके ऊपर हमला कर रहा था–जहां पर शत्रुकी दो मशीनगनें तथा उनकी सेना छिपी हुई है ऐसा मान लिया गया था। जिस नपे तुले ढंग तथा वेग के साथ कैप्टन अपने आदमिओंको स्थान पर नियुक्त करता था, तरीकोंका चुनाव करता था सैनिक नियंत्रण करता था उस पर उसकी तरक्की निर्भर रहती थी। दूसरे दिन मैंने देखा कि एन्जिनियर अफसरोंकी पुल बांधनेके कार्यपर और यन्त्रवाही दलोंके कमाण्डरोंकी किलोंपर आक्रमण करनेके कार्यमें परख हो रही है। एक यन्त्रवाही दलका कमाण्डर अपनी फौजको एक ऐसी जगह घुसा ले गया, जहां मेरे जैसा साधारण व्यक्ति भी यह समझ सकता था कि वह दम भरमें मिट्टीमें मिला दिया जायगा। मैंने देखा कि निर्णायकोंने उसके ड्रिलकार्ड पर लिख दिया था कि वह कमाण्डर होनेके अयोग्य है।

लडाई छिडनेके तीन साल पहले मैंने देखा कि म्यूनिक कमान्ड के यांत्रिक सैन्य के लिये सेनापतियोंका चुनाव हो रहा है। वह गडबड़ी सच्चे युद्ध जैसी थी और सैनिकोंको वैसी ही मुसीबातोंमेंसे गुजरना पड़ता था जैसे कि तीन साल पीछे फ्लेंडर्सके युद्धमें उन्हें गुजरना पड़ा था। आकाश हवाई जहाजोंसे घिरा हुआ था, जो अफसर अपने टैंक और गाडियोंको छोड़ देते थे–उनकी दुर्दशा थी। एक बमवर्षक रास्ते या मैदानके ऊपरसे गुजरता हुआ रंगीन सरेससे मिले हुए आटेके छोटे छोटे थैलोंसे आक्रमण करता था। गाडियोंपर लगे हुए वे निशान सरेसके कारण मिट नहीं सकते थे जिससे यह जाना जा सकता था कि किसका निशाना अचूक रहा और किसका नहीं और यदि किसी कमाण्डरके सिपाही अपने कार्यमें लापरवाह दीखते उनके ड्रिल कार्ड पर तुरन्त उसका चिन्ह अंकित कर दिया जाता था।

एक परीक्षक ने मुझे स्पष्ट शब्दोंमें पीछे से कहा "यदि कोई व्यक्ति हवाई और जमीन सैन्यके बीच पूर्ण मेल को नहीं समझ सकता तो उसे हम दूर कर देते हैं।"

मैंने उन्हें बतलाया कि एक शाखाके अफसरके लिये दूसरे किसी अफसरसे तात्कालिक सहायता मांगना सैन्य की प्रथाओंके कारण मुश्किल सा है । उन्होंने इसका जवाब देते हुए कहा कि हमारे सैन्य की सबसे बड़ी सफलता यही है कि हम यह भूल गए हैं कि हम पदाति सैनिक हैं, तोप चलाने वाले हैं, एन्जिनियर हैं, या हवाई जहाज चलानेवाले हैं। हम एक दल हैं। आप–जैसे एक अमेरिकनको इसके फायदेको समझना चाहिये। मैं उनकी बात समझ गया लेकिन लंडन या पेरिसके विश्वस्त कार्यालयोंको मैंने जब इस बातसे सूचित किया, तब मुझे जवाब मिला कि यह विचार सर्वथा असंगत है।

एक अफसर जब कर्नलके पदपर पहुंचता है, इसके बहुत पहले ही उसके ड्रिलकार्ड, कार्य शक्तिक विवरण तथा उसके विशेष ज्ञानके बारेमें युद्ध मण्डलके कार्यकर्तागण परामर्श कर लेते हैं और जान लेते हैं कि उसकी योग्यता जनरल स्टाफके लिये कहां तक उपयोगी सिद्ध हो सकती है। हमारे सैन्य विभाग–में, फ्रांस और जर्मनीके बारेमें जिसे अत्यंत व्यापक जानकारी है वैसा व्यक्ति भी सैन्य विभागके कोरपोरल जैसे एक मामूली पद पर छिपा रह जाता है—इस प्रकार का मानव शक्ति का दुर्व्यय उनमें नहीं होता। जर्मनीमे ऐसे आदमी को परख लिया जाता है और योग्य सिद्ध होनेपर उसे उसी स्थान पर नियुक्त किया जाता है, जिससे उसका ज्यादासे ज्यादा लाभ उठाया जा सकता है।

हरसाल युद्धके मंत्रीमंडल की ओरसे युद्धके अनेक विषयोंके संबंधमें पारितोषिक—निबंध लिखवाये जाते हैं। हाइ कमान्डके द्वारा निष्पक्षताके लिये चुने गए जनरल स्टाफ के अफसर उनका श्रेणी विभाजन करते हैं और इन निबंधोंसे बहुत से मार्कके विचार मिल जाते हैं जिन्हें दूसरे साधारण सैनिक रद्दीकी टोकरीमें डाल दें, जैसेकि हवाई जहाजोंके द्वारा फौजोंको उतारनेके विचारका अमेरिकामें काल्पनिक कहकर मज़ाक उडाया गया था जबकि जर्मन लोग उसे क्रेटमें सफलतापूर्वक करनेकी तैयारी कर रहे थे।

जब कोई अफसर किसी खास विषय पर कुछ लिखता है तब उसके स्टाफके लोग उसका पुराना रेकार्ड देखते हैं। या तो वह किसी विषयका विशेषज्ञ हो सकता है जो कि वायुयान तोडक तोपखानेकी तरक्कीमें काम आ सके या जल, स्थल और वायुसेनाका कमांडर हो सकता है । यदि वह जल, स्थल और वायुसेनाका कमांडर है, तब निश्चित ही उसने हैल्डरके सैनिक विद्यालयमें अपनी सैनिक शिक्षा प्रारंभ की होती है; सर्व प्रथम वह पदातिसेना की विभिन्न शाखाओंमेंसे (जिन्हें वह नहीं जानता) गुजरता है। उसके बाद वायु सेनामें और अंतमें नौ सेनामें । और तब कहीं ४५ वर्षकी आयु होते न होते जनरल बन पाता है।

वे लोग जो सैनिक क्षेत्रमें कोई अध्यक्षपद प्राप्त करनेका यत्न नहीं करते, उन्हें भी अपनी शिक्षाका तबतक विशेष अभ्यास करना पड़ता है जबतक कि वे अपने खास कार्यमें पूरे दक्ष न हो जांय। आक्रामक सेनाके जिन इन्जिनीयरोंने एल्बर्ट केनालके दारोमदार–एबन एमेलके बेलजियन किले पर हमला किया था, उन्होने पूर्वीय प्रशियामें बनाए हुए एक नकली किले पर महीनों अभ्यास किया था। हर रोज स्टुका बम बरसाते, और इंजिनीयर लोग धुएं के परदेके नीचे टी. एन. टी. (ट्राइ-नाइट्रो टाल्वीन नामक विस्फोटक) को किलेकी दीवारोंके छेदोंमें लंबे बांस डालकर पहुंचाते और चिनगारीको ठीक स्थान पर रखते । जब वास्तविक आक्रमण किया गया तब जर्मन लोगोंने इतना निश्चित और नपातुला कार्य किया जितना कि प्रकृतिके नियम करते है । यह बिलकुल सत्य है।

सन् १९३९ में मैंने जर्मन सैनिकों को ब्लैक फोरेस्टमें टैन्कोंका अभ्यास करते हुए देखा है। वह आर्डेन्सके हमले की ही तैयारी थी, जिसे फ्रेंच अफसर असंभव समझते थे। यांत्रिक सैन्योंने कई दिनों तक एक साथ घण्टों तक वह अभ्यास किया था। परेड खतम होनेके बाद सैनिक बिलकुल थक जाते थे। उनमेंसे एक सैनिक ने मुझसे पूछा कि "क्या आप टैन्कोंकी पेरेडमें कभी छः छः घण्टे तक पिले हैं?" मैंने कहा, कभी नहीं। उसने जवाबमें कहा "कभी नहीं ?' और पांच मिनटके अनन्तर मैंने देखा कि वह गाढ़ निद्रामें सो रहा है। और कुछ मासके बाद मैंने देखा कि वह टैन्कोंके साथ छः छः घन्टों तक फलाँगें भर रहा है।

जर्मन सैनिकके दिवस का एक क्षण भी व्यर्थ नहीं जाता । सिविलियन सैन्य विभागके जो सैनिक लड़ाई लड़नेमें असमर्थ होते हैं उनसे हिसाब–किताब, पाकशाला, और अन्य कई तरहके काम लिये जाते हैं। जर्मन सैनिक का हरेक दिन 'स्टैन्डर्ड प्रेक्टिस' में जाता है। उसकी तरफ हाथोंसे फेंके जाने वाले छोटे गोले फेंके जाते हैं और जल्दीसे जल्दी उसे उसको वापिस फेंकना होता है । उसे जंगलमें से गुजरना पड़ता है और अपने रास्तेमें यकायक खड़े किये गए निशान की ओर दोनों पांवोंके बीचमें से बंदूक चलानेके लिये कहा जाता है । अपने पैर की रक्षा करते हुए उसे शेल से पड़ी हुई दरारमें गुजरना पड़ता है। उसे कंटीले तारोंमें फंसनेसे अपने टोपको बचाते हुए बाहर निकलनेका अभ्यास कराया जाता है। जनरल स्टाफके एक अफसरने मुझसे कहा—"इसके अभ्यास के अभाव के कारण पिछले महायुद्ध में अनेक दुर्घटनाएं हुई थीं। लेकिन इस बार हम ७५ प्रतिशत कम कर देंगे।" फ्रांसके युद्ध की संख्यायें इसकी सचाई बतलाती है।

जर्मनीकी शॉक ट्रुप्स–जिन्होंने उत्तरी अफ्रीकामें वॅवेलके हमलोंको पीछे हटा दिया था, उनको पहले लीबियामें दो मास तक रेगिस्तान की असली परिस्थितियोंमें शिक्षा दी गई थी और जर्मनी छोड़नेसे पहले उनकी चमडी अफ्रीकन गरमीको सह सके इसलिये उनको सूर्य के समान तपते हुए लैम्पों की गरमी का उपचार दिया गया था।

कार्य क्षमताका यह उदाहरण हमारे युद्ध विभागके लिये एक गंभीर चेतावनी होना चाहिये। पश्चिमी अफ्रीकाके जर्मनाधीन अड्डोंके विरुद्ध तथा लैटिन अमेरिकाके जर्मन–शासित हिस्सोंके विरुद्ध, जहां कि भारी यातायातके हवाई जहाजों द्वारा नाजी सेना उतारी जा सकती है, संभाव्य सामरिक हलचल केवल तभी सफल हो सकेगी जब कि हमारी सारी ताकतोंमें निकट सहयोग तथा शिक्षा हो। बम वर्षक हवाईजहाज, जो दुश्मनके हवाई अड्डोंका नाश करते हैं और उतरनेवाले हमारे सैन्यकी रक्षा करते हैं, समुद्री जहाज जो हमारा असबाब ले जाते हैं, गोताखोर हवाई जहाज तथा टैन्क जो जर्मनीकी बड़ीसे बड़ी किलेबंदीको भेद सकें, इन सब का उपयोग एक ऐसे 'हाईकमाण्ड' के अधिकारमें होना चाहिये जो हरेकके कार्योंको भलीभांति जानता हो।

युद्ध और नौ विभागके कितने ही अग्रगण्य अफसर अब भी अपने आपको अपनी विशेष शाखा की दृष्टिसे ही देखते हैं। पदाति सेनाका अफसर समझता है कि वह पदाति सेनाका अफसर है, आश्वारोही सेनाका अफसर समझता है कि वह अश्वारोही है, और नौसेनाका अफसर भी अपनेको केवल नौसेनाकी दृष्टिसे ही देखता है; मानों युद्ध उन सबका अभिन्न कार्य नहीं, बल्कि उनकी पारस्परिक प्रतिस्पर्धा है। हमारी बख्तरदार फौजोंके लिये आज भी यह असम्भव है कि वे टैंको और गोताखोर हवाई जहाजोंके आवश्यक सहयोगके अभ्यासके लिए पर्याप्त हवाई जहाजोंकी सहायता

(शेष पृष्ठ २४ के कालम ३ पर)

(पृष्ठ ८ का शेषांश)

इसलिये वह क्षुब्ध नहीं होता। उद्विग्न और क्षुब्ध व्यक्तियोंका चीनी समाजमें मानों अस्तित्व ही नहीं मिलता। उनका स्वभाव जिन्दादिल होता है, और स्वभावके विषयमें उनका यह ख्याल रहता है कि उसे दबाना खतरेका काम है। उम्र, और बुद्धि मनुष्यको सिखलाते हैं कि क्रोध करना व्यर्थ है। इस लिये क्रुद्ध आदमीको जब तक कि उसका क्रोध खत्म न हो जाय चिल्लाने, रोने, और बिलखने दिया जाता है। बहुत ही जल्दी उसका क्रोध खत्म हो जाता है क्योंकि उसके चारों ओर लोग बिलकुल शांत और अन्यमनस्कसे खड़े होते हैं।

एक औसतन चीनी दृढ विश्वाससे व्यक्तिवादी होता है। व्यक्तिवादी होनेसे वह आनंदोपभोग अवश्य करता है लेकिन उसमें दूसरोंके व्यक्तिवादके द्वारा दी हुई स्वतंत्रतामें शरीक होनेकी भी अपूर्व क्षमता होती है। वह जैसा कि अन्यत्र पाया जाता है। अपने विचारों आनन्द उपभोगों, और रहन–सहनके तरीकोंसे दूसरोंको प्रभावित करनेका यत्न नहीं करता। वह अपनी स्वतंत्रताके लिये प्रयत्नशील है जबकि वह दूसरोंको स्वतंत्रता देता है। दूसरोंको समझनेकी इस योग्यताके कारण वह जरूरत पड़ने पर अपनी स्वतंत्रताका परित्याग कर सकता है और शक्तिके साथ जनताके बीच अपना पार्ट अदा कर सकता है जो कि अधिक परिपूर्ण है क्योंकि वह जानता है कि यह शक्ति न स्थायी है और न अन्तिम है।

चीनी जनताकी एकता मज़बूत है। वे एक हैं और शताब्दियोंसे एक रहे हैं। वे एक ही जातिके हैं जिनकी चमड़ीका रंग बल और आंखें एक सी हैं। शताब्दियोंके इतिहासने, जो सबपर एक-सा ही बीता है उनको एक बना दिया है।

अपने धर्मोंमें भी वे एक हैं। उनके तीन प्रमुख धर्मोंमें कोई भी धर्म ऐसा नहीं है जो दूसरे धर्मोंमें विश्वास करनेसे रोकता हो। परिणामतः एक ही आदमी एक ही समयमें कन्फ्यूशियन, टॉइस्ट और बौद्ध तीनों धर्मोंका अनुयायी हो सकता है।

उनके विशाल प्रदेशोंमें सामाजिक प्रथायें यदि बिलकुल एक नहीं तो एक–सी अवश्य हैं, उनकी लिखित भाषा साहित्य, कला, और बोल चालकी भाषा भी एक–सी है। इतनी गहरी और चिरस्थायी एकताओंके होने पर क्या इसमें किसीको आश्चर्य हो सकता है कि एक औसतन चीनी राजकीय एकता को अपेक्षाकृत कम महत्व की समझता है? पश्चिमके लोग इसका महत्व समझते हैं लेकिन चीनके लोगोंसे बिलकुल जुदे तौर पर। चीन राजकीय एकताकी दृष्टिसे कमजोर है, क्योंकि लोग इसे सबसे कम महत्वपूर्ण समझ रहे हैं। इतिहासकी दृष्टिसे देखा जाय तो चीनीयोंके लिए सरकार स्थानीय और एक घरकी वस्तु रही है। चीनके सीधेसादे लोगोंने एक असाधारण और अनोखे ढंगपर अपने ऊपर शासन किया था। बेलॅट पत्रिका और चुनावोंके द्वारा नहीं बल्कि वास्तवमें अपने घरेलू ढंगसे। अपराधी को राज्यकी ओरसे जांच कराकर दंड नहीं दिया जाता था। वह अपने गांव और कुटुंबियोंके पास जाता था, और उसके भाग्यका निर्णय ऊपरसे बनाये गए कानूनोंके मुताबिक नहीं लेकिन सीधे सादे लोगोंके वे कानून—जो बहुत समय तक साथ साथ रहनेसे बने हैं–उनसे होता था। सीधेसादे लोगोंका इतनी भारी जनता जो आत्मशासनकी आदी रही है, और अपने जीवनोंके लिये खुद जिम्मेदारी लेनेकी अभ्यस्त रही है उसमें फासिस्ट आधिपत्यका योग्य उपादान मिलना कठिन था। यदि पश्चिमके प्रजातंत्रराष्ट्र इस बातको नहीं समझेंगे तो वे घाटेमें रहेंगे। यह शक्तिशाली मित्र राष्ट्र उनकी राह देख रहा है।

['एशिया' जुलाई १९४१]

चीन के सीधे सादे लोग

मिस एस पर्ल बक

चीनकी जनताको आज भविष्यके लिए वचन दिये जा रहे है। वह किस मार्ग पर जायगी ? मैं जानती हूं कि अपने ही। दूसरा मार्ग उसके लिये असंभव है। आजके दिनोंमें जबकि संसारका एक एक देश, एक एक जाति और यहां तक कि एक एक व्यक्ति फ़ासिज्म और प्रजातंत्रवादके बीच विभक्त हो रहे हैं, वे (चीनके लोग) एक हैं। राष्ट्रों, जातियों और परिवारोंके बीच यह दरार इतनी गहरी हो चुकी है कि मनुष्यके घरमें ही मनुष्यके शत्रु किसी विचित्र या भयंकर रूपमें मिल सकते हैं। यह सच है कि इसमें कोई नवीनता नहीं है, क्योंकि फासिज्म और प्रजातंत्रवाद पुराने तथ्योंके ही नये नाम हैं, पुराने समयके प्रचलित शब्दोंका प्रयोग करें तो मनुष्य पैदा ही दो तरहके होते हैं—प्रतिक्रियावादी और उदार। इन शब्दोंमें इस सचाईको ही प्रगट करनेका यत्न किया गया है कि समस्त प्रकृतिमें ही दो महान् विरोधी तत्व हैं एक तो नियंत्रित अप्रगतिशील तत्व जो अपनी तीव्र गति के दावेके बावजूद फासिज्म के रूपमें विद्यमान है, और दूसरा उन्नतिशील सर्जनात्मक तत्व जिसे बहुत से सहजात विकारोंके बावजूद हम प्रजातंत्र वादका सिद्धान्त कह सकते हैं।

चीनके लोगोंने बहुत पहलेसे ही संसार की इन दो विरोधी शक्तियों को पहिचाना है और इनका नाम यांग और यीन रक्खा है। यांग आज प्रजातंत्रात्मक विचारोंके परीक्षणोंका प्रतिनिधि है तो यीन फासिज्मकी प्रतिक्रियाशील प्रवृत्तियों का। समस्त इतिहास तथा संसारकी विद्यमान समस्त प्रजाओंमें चीन के लोग स्वभावमें सबसे ज्यादा यांग है। यह एक आश्चर्य की बात है कि पिछले चार हजार सालसे चीनी लोग बिना किसी अवरोधके अपने अस्तित्वको टिकाये हुए हैं। वे अपने आप इतिहासके इतने विशाल और विपुल संस्मारक हैं कि हम उसके परिमाणको देखकर चकित रह जाते हैं। यह राष्ट्र जो संसारका सबसे बड़ा राष्ट्र है, जिसके पास विशाल और विस्तृत भू-भाग है, और जिसमें संसारकी आबादीका छठा भाग बस हुआ है, जो अब भी कई पहलुओंमें मध्यकालीन-सा है, और जो दुनियाकी, गतिकी परवाह किये बिना तरक्कीके अपने ही खास पैमाने पर आगे बढ़ रहा है; और जो राष्ट आजके लश्करी यंत्रोंकी शक्तियों जिस पर विज्ञानने अपनी पूरी ताकत खर्च की है—आक्रान्त हुआ भी अपने विस्तृत प्रदेशोंसे किसी बाहरी साध नोंकी श्रेष्ठताको प्राप्त किये बिना जी रहा है और अपने अस्तित्वको टिकाए हुए है, वह वास्तवमें युद्धकी शुरुआतसे आज कहीं ज्यादा शक्तिशाली है। यह चीन है, और एक अत्यंत सूचक और महत्वपूर्ण भावमें उसका अर्थ है चीनके लोग और उनकी भूमि।

किसी दूसरे राष्ट्रकी परिभाषा करते वक्त हम उसकी जनता और भूमिके अतिरिक्त और भी बहुतसी बातोंका उल्लेख करते हैं। उसके समुद्री बंदरगाह, हवाई ताकत, व्यापार, प्रकृतिके उपादान, आयात और निर्यात, लश्करी शक्ति, इन सभी बातोंको हम गिनाते हैं। लेकिन चीन केवल चीनी लोग और उनकी भूमि ही है। समुद्री बंदरगाह उनके पास इस समय एक भी नहीं है—और पहले भी बहुत नहीं थे। उसकी हवाई ताकत भी बहुत थोड़ी है, और ऐसा प्रतीत होता है कि मजबूत हवाई ताकत बनानेमें वे समर्थ ही नहीं हुए हैं। आजकलके दृष्टिकोणके अनुसार उनका व्यवसाय भी पनप नहीं सका है और कुछ शहरोंके आसपास पहले जो कुछ व्यवसाय पनपे थे वे अब उनके पास नहीं रहे। प्राकृतिक उपादानोंके बारेंमें खेती को छोड़ कर उन्होंने दूसरी चीज़ों का महत्व ही नहीं महसूस किया। दूसरे देशोंके साथ व्यापार-धंधेमें वे बहुत अनिच्छापूर्वक उतरे—क्योंकि इससे आज जिस जालमें वे फंस गये हैं उसका उन्हें बहुत पहलेसे ज्ञान था। लश्करी ताकत को वे सदियों से तुच्छ समझते आये हैं, इस विश्वाससे कि श्रेष्ठ मनुष्य युद्धमें कतई शामिल नहीं होते।

यह दृष्टिकोण जो आजकी दुनियासे कम संगत है उसकी हम शायद ही कल्पना कर सकें। जब लश्करी दृष्टिसे बढ़े-चढ़े जपानी आक्रामकोंने चीन पर आक्रमण किया, उस समय वहां बहुतसे ऐसे लोग थे जिन्होंने चीनकी भूतकालीन विजयी शक्ति पर संदेह प्रगट किया—जब कि विज्ञानने मृत्युके राक्षसी यंत्रोंको परिपूर्ण बना दिया है। सहज बुद्धिके दृष्टिकोणसे देखें तो चीन इस रक्षणात्मक युद्धमें बिलकुल तैयारीके बिना ही कूद पड़ा है। उसके पास अशिक्षित सेना थी। हवाई जहाज नहीं थे, और आजकलके दारूण युद्धोंके अनुभवोंका नितान्त अभाव था। लेकिन विजयका कोई भी क्रियात्मक तर्क नहीं था। लेकिन जनताकी एक सामान्य अनुमतिसे उन्होंने लड़ाईकी मांगकी। वे रक्षाके लिये लड़ाईमें उतरे हैं, लेकिन उस जमीनकी रक्षाके लिये नहीं जिसे युद्धके कारण उन्हें छोड़ कर पीछे हट जाना पडा है। उन शहरों और नगरोंकी रक्षाके लिये नहीं जिन्हें वे या तो छोड़ चुके हैं या अपने हाथोंसे ही जिनमें उन्होंने आग लगा दी है, और अपने जीवनकी रक्षाके लिये भी नहीं, जिसे वे दुश्मनकी मशीनोंके आगे लापरवाहीसे फेंक रहे हैं। नहीं, चीनके लोग उस अधिकारकी रक्षाके लिये लड़ रहे हैं, जिससे वे अपनी इच्छाके मुताबिक स्वतंत्र और अपराजित लोगोंकी तरह जी सकें। शहरों और नगरोंको दुबारा बसाया जा सकता है, जमीन वापिस की जा सकती है, क्योंकि कानून मूलतः स्थिर और अक्षत रहता है, लेकिन चीनके लोगोंको दूसरोंका शासन नामंजूर था, चीनकी प्रजा किसीकी गुलामी नहीं सह सकती क्योंकि वह फांग जाती है।

वे चीनके लोग कौन हैं ? बहुत कुछ अंशोंमें वे सीधे-सादे सरल लोग हैं। जब कभी वे अपनी मांगोंको प्रकाशित करते हैं उनके पीछे सारा राष्ट्र बोल रहा होता है। इस प्रकार जब उन्होंने जापानके खिलाफ संरक्षणात्मक युद्ध मांगा, तब लड़ाई घोषित कर दी गई, यद्यपि चीनी सरकारके नेता यह अच्छी तरह जानते थे कि रक्षाके साधन उनके पास कितने थोड़े हैं। और वे यह भी जानते थे कि सबसे ज्यादा तो उन्हें जनताकी भावना की ही रक्षा करनी है।

आज जबकि राष्ट्र अपने अंदर लगे हुए घुनके कारण भूमिसात् होते जा रहे हैं, दुष्ट भावना की परीक्षा करना उचित मालूम होता है।

चीनका राष्ट्र लुढ़क कर गिर जाने वाला राष्ट्र नहीं है। वह न तो अपने आक्रामक शत्रुओंके सामने झुका है और न अपने शांति चाहने वाले देशवासियोंके सामने। अपनी अनेक सामाजिक प्रणालियोंमें प्राकृतिक साधनों, यंत्रों और व्यावसायिक उन्नतिमें तो निश्चित ही वह मध्यकालीन है, लेकिन कमसे कम वह अब तक गिरा नहीं है। पर्याप्त कर प्रणाली और आजके प्रजातंत्रात्मक शासनके समुचित ढाँचेके बिना, राजकीय और सामाजिक धीमी क्रांतिके आधे रास्तेमें ही, जब कि उसके समस्त कौशल प्रयोगावस्थामें थे चीनको अपने रक्षात्मक युद्धके लिये रूकना पड़ा। अनेक विषयोंमें मतभेद होनेपर भी और अनेक उच्च पदोंका लोभ होने पर भी उनकी मौलिक एकता कायम है। इन कौशलोंके बावजूद भी चीनके लोगोंमें कुछ एकताके गहरे नियम काम कर रहे थे। आजके संकटके दिनोंमें भी चीनी लोग जीवनके अपने ही चुने हुए मार्गमें विश्वास कर रहे हैं। वे चिल्लाते नहीं है कि प्रजातन्त्रवाद विफल गया है, क्योंकि कुछ आदमी चाहे वे उच्च पदस्थ ही क्यों न हों बुरा होना ही पसंद करते हैं।

एक औसत चीनी विशेष रूपसे फिलासफर होता है। प्रलोभनोंकी ताकतसे वह अच्छी तरह सावधान रहता है। और आजके अस्थिर दिनोंमें तो खास तौर पर। लेकिन जब कोई व्यक्ति पैसे और पदोंके मोहमें फंस जाता है तब भी चीनी अपने मूल विश्वाससे विचलित नहीं होता। उदाहरण के तौरपर नानकिंग की कठपुतली सरकार ऐसी हास्यास्पद बन गई है कि जिससे खुद जापानियोंको भी लज्जा आती है।

कुछ हिचकिचाहट और कुछ तमाशेके साथ जापानने वान्ग चिंग वेईको चीनका मनोनीत प्रधान बना दिया। वह अपने इस उच्च पद पर अब तक भी डांवाडोल और सबके द्वारा उपेक्षित है। उसे यहां तक कि जर्मनी ने भी नहीं स्वीकारा लेकिन दूसरे किसीका अस्वीकार इतना अधिक उपेक्षापूर्ण नहीं हो सकता जितना कि वह चीनी जनतासे अत्यंत हास्यास्पद ढंगसे हो रहा हैं। उसको उन्होंने कभी भी महत्व नहीं दिया क्योंकि वे यह बात अच्छी तरह जानते हैं और सोचते हैं कि उसे अपना कठपुतला बना कर जापानियोंने अपने ऊपर एक जुआ ही रक्खा है। उन कठपुतलोंकी उपेक्षा करके और उनका अस्तित्व केवल उनकी खिल्ली उड़ानेके लिये है ऐसा सोच कर चीनियोंने जापानी कठपुतलोंको बिलकुल मूर्ख-सा बना दिया है। मनुष्यको एक फिज़ूल-और मूर्ख बनाने के अतिरिक्त और कोई चीज इतनी अधिक विघातक नहीं हो सकती यह बात चीनमें हर कोई जानता है।

कई बार मुझे इस बातमें पूरा यकीन होता है कि यह चीनी लोगोंकी अविनाशी हास्यवृत्ति ही चीन की अमर आत्मा है। हंस लेने की योग्यता स्वस्थता का चिन्ह है, और स्वस्थतामें ही आशा का संचार होता है। वही आदमी अपने वैयक्तिक जीवनको दूसरोंके संपर्कमें आये हुए देख सकता है। औसतन चीनी न तो अपना मूल्य ज्यादा आंकता है और न ही अपने साथियों का। इस परिपूर्ण प्रमाण ज्ञान से ही, अपने को एक अंश के तौर पर शामिल करके न कि समस्तके रूपमें, वह संसारको देखता है और हजारों चीज़ोंके प्रति पागलपन और चिडचिड़ेपन से नहीं बल्कि हृदयके आनंदके साथ हंस सकता है। जीवन की प्रत्येक परिस्थितिके आनन्दोपभोग की शक्ति, चीनियों की छठी इन्द्रियके है यह शक्ति वैयक्तिक जीवन की गहराई और विशालता को बढ़ाती है और प्रमाण ज्ञानकी असाधारणता उस शक्ति को गति देती है। योंतो उसके आनन्दोपभोगका सबसे बड़ा स्रोत है उसका प्रत्येक वस्तु और प्रत्येक व्यक्तिके प्रति कुतूहल। चीनी प्रत्येक क्षणका मज़ा लेता है क्यों कि वह कहता है कि हरेक क्षण उसके जीवनका एक हिस्सा है जिसका स्थान कोई नहीं ले सकता जैसे कि समय का स्थान कोई नहीं ले सकता। और क्षुब्ध होना व्यर्थ है।

(शेष पृष्ठ ७ के कालम ३ पर)

हमारा इतिहास हमें पुनर्जीवित करेगा !

कुमारी लीलावती शारदा

इतिहास वह अमूल्य निधि है जिसकी रक्षाकर कोई भी जाति सम्पत्तिशालिनी कहला सकती है। यह वह आधार-शिला है जिसके ऊपर राष्ट्रकी आलीशान इमारत खड़ी की जाती है। दूसरे शब्दोंमें हम कह सकते हैं कि जातियोंका जीवन उनके इतिहासके पुराने पोथोंमें बड़े सुरक्षित रूपमें बंद रहता है। इसीलिये अनादिकालसे लोगोंमें इतिहास लेखन और संरक्षणकी प्रथा चली आती है। भारतमें आड़े समयपर हमेशा ही देश हितैषियोंको इतिहासकी प्राचीन पंक्तियोंसे प्रोत्साहित किया जाता रहा है। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान रामचंद्रको भी मिथिलाके नरेन्द्रमण्डलमें जयमाला पहननेका सौभाग्य इतिहासके इन्हीं शब्दों पर मिला था "रघुकुल रीति सदा चली आई, प्राण जाई पर वाचन न जाई"। यही नहीं विगत शताब्दियों तक उठने और जूझने की घड़ियोंमें राजपूतानेके चारण वीर योद्धाओंके दिलोंमें उनका पुरानी गाथाके द्वारा मृत्युको चुनौती देनेका भाव भरा करते थे। सच बात तो यह है कि जबतक जातियोंके पास उनके पूर्व पुरुषोंका निश्चित किया हुआ यह अमोघ अस्त्र मौजूद रहता है, वे मरते नहीं और भेड़ बकरियोंकी भांति पददलित और पीडित नहीं होते।

संसारके इतिहासमें विजय पराजय का चक्र अनादि है, आक्रमणोंका तूफान और लूटमारके भयानक दृश्य भी पुराने हैं। भारतकी आंखोंने भी यह खराब दिन देखे हैं। सिकन्दर, गौरी, गजनी, तैमूर और नादिरके किस्से हमारे इतिहासमें बहुत पुराने नहीं। देशने अपनी कमजोरियों, त्रुटियों और विश्वासघातियोंके कारण इनकी चपेटें सहीं, किन्तु इनके शासनके जुएको अपने गलेका गौरव नहीं माना इसका एकमात्र कारण है इनके इतिहासका जिन्दा रहना और उनके सम्मानका सजग रहना?

किन्तु कुछ शताब्दी पूर्वसे हमारे लहूमें फर्क पड़ गया है। हम विदेशी शासनके नीचे आगये। अन्य विजेताओंकी भांति हमने भी भारतीय इतिहासको भ्रष्ट किया मनमाने ढंगसे। भारतीयोंका सब कुछ चला गया और साथमें तेज छुरीसे हलाल कर दिया गया हमारे इतिहासको। फिर क्या, पराधीन जातिमें व्याख्यानों, लेखों, और पुस्तकों द्वारा हमारी दीनता, हीनता और कायरताका खुल्लमखुल्ला प्रचार होने लगा। दासत्वके दलदलमें फंसी हुई जातिमें यह घोषणा कर दी गई कि हममें सदाचारकी कमी है और अपने शासन करनेकी योग्यताका दिवाला है। राष्ट्रका बच्चा—बच्चा समझ गया कि साम्राज्यवादियोंका यह शासन हमारी रक्षा और भलाईका ठेकेदार है। बस, हमने सोनेकी बेड़ियां हाथ, पैर और गलोंमें जेवर समझ कर डाल लीं। पेट भरना, लंबी तानना और शासकों को दुआयें देना यही हमारे जीवनका ध्येय बन गया और हम इसी चर्खेमें अपने इतिहासको भूल गये। अपनी महत्वाकांक्षाओंको गंवा बैठे। हमारा अपनापन तक धूलमें मिल गया। आत्मविस्मृतिकी इस अवस्थामें शासनभार भी बड़ी तेजीसे हमारे सिर पर लदता गया और आज यही सदियोंकी पराधीनताका पाप बोझ इतना भारी हो गया कि हम अपने शरीरको मुंहके बल गिरनेसे नहीं बचा सकते। हमारा गौरव इतना नष्ट हो चुका है कि हम येन केन प्रकारेण सांसे लेना ही सौभाग्य समझ बैठे हैं। स्वराज्यका मानवमात्रके जन्मसिद्ध अधिकारका सवाल हमारे हृदयमें आशंका और भयका संचार कर देता है। यह है इतिहासके नष्ट—भ्रष्ट होनेका सर्वनाशी परिणाम।

इस विषम परिस्थितिमें, इस गुजरी हालतमें, हम कौन थे, क्या बन गये, बस इन्हीं दो प्रश्नोंको हल करनेके लिये स्वदेशवासियोंके सामने अतीतके इतिहासका यह उज्वल चित्र उपस्थित किया है। अतीत और वर्तमानका मुकाबला करनेसे सब कुछ समझमें आजायेगा। गडरियेकी लकड़ीके नीचे और भेडोंके झुंडमें पले हुए शेरके बच्चेको पता लग जाय कि वह शेर है, भेड़ बकरी नहीं तो स्वयं दहाड़ उठेगा, वातावरण कांप जायगा, लकड़ी और चरवाहेका पता न चलेगा।

इतना ही नहीं किन्तु राजनैतिक गुलामी और आर्थिक परवशताका अभिशाप हमें अपने आपका तिरस्कार करनेके लिये ऐसा सबक पढ़ाता है कि हमारी प्रत्येक चीज़, वह कितनी ही महत्वपूर्ण, उपयोगी, अमूल्य क्यों न हो, आँखोंमें कांटेकी भांति खटकने लगती है। यही अवस्था आज सर्वत्र व्यापी हुई है। हमारे अधिकांश आधुनिक युवक, किसी भी, अपनी पुरानी बातको माननेके लिये तैयार नहीं होते जबतक कि उनके पीछे विदेशियोंका लंबा चौड़ा सर्टीफिकेट न लगा हो। इसी दृष्टिकोणसे पाश्चात्य इतिहासज्ञों, यात्रियों, दर्शकों और विद्वानोंकी निगाहसे ही उन्होंने प्राचीन विशाल, वैभवसंपन्न और भव्य भारतको देखा है।

हमारे चारित्र पर साम्राज्यवादी एवं उच्छृंखल विदेशी पर्यटक जिस पक्षपात पूर्ण भावनाको लेकर दोषारोपण करते हैं उसीका उत्तर अंग्रेज राजदूत टॉमस, मुनरो, प्रो. विलसन और मार्कोपोलोद्वारा इस तरह दिया गया है। "शायद मानव समाजमें ये ही लोग ऐसे हैं जो मानवताको सबसे कम क्षति पहुंचाते हैं। वे हिन्दु रास्तेमें खड़े शेरसे भी भय नहीं खाते।"

इतना ही नहीं आजका भारत सदैवसे रोटीके एक टुकड़े और तन ढांकनेके कपड़ेका कभी भिखारी नहीं रहा। वह अपने गुजरे जमानेमें धन सम्पत्तिके लिये हीरे जवाहरातोंके लिये संसारके आकर्षणका केंद्र था। सिकन्दरने इसकी ओर अपना मुंह मोड़ते हुए प्राचीन फारसकी भूमि पर खड़े होकर कहा था "हम उस स्वर्ग भारतकी ओर चल रहे हैं, जहां अपरिमेय सम्पत्ति है। धनधान्यमें फारस उसके सामने कुछ भी नहीं। अंग्रेजोंके विचारसे भारत अनन्त सम्पत्तिका देश है। यहांके वस्त्रोंकी सुंदरता और मज़बूती पर मुग्ध होकर बड़े बड़े अंग्रेजोंने उन्हें, मनुष्योंद्वारा बने हुए, माननेमें संदेह प्रकट किया है। कलाकौशलमें यह देश इतना बढ़ा चढ़ा था कि चीनी यात्रीके कहने पर भी लोगोंको विश्वास न हुआ कि पाटलीपुत्रकी कला मानवनिर्मित है। इसके साथ साथ ही कितने ही माने हुए विद्वानोंने सिद्ध किया है कि खुश्कीकी राहसे हिंदुस्तानी काफले समुद्रकी छातीपर चौबीस घंटे विदेशोंकी ओर चला करते थे। कई विद्वानों और वैज्ञानिकोंने यह बात भी सिद्ध की है कि पुरातन कालमें भारतीय विशेषज्ञ ऐसे बढ़े चढ़े थे कि आधुनिक सायंसकी बुद्धि वहां पर नहीं पहुंच सकती। वर्तमान विशेषज्ञ इस विज्ञानका संकेत भी नहीं समझते जिसके द्वारा आक्रमणकारी सेनाको वे विषाक्त गैसों और भयानक छायारूपी आकृतियों और आवाजोंसे वायुमंडलको दूषित कर पूर्णतया नष्ट भ्रष्ट कर डालते थे। हमारी सायंसका कोई बिरला सिद्धांत ही ऐसा होगा जो उनके लिये नवीन हो। पानीके पेटसे फाड़ कर बिजली निकालनेकी तरकीब इसी देशसे निकली है। पंडितोंने इस बड़वाग्निको मुक्तकंठसे स्वीकार किया है।

जिस देशकी झुकी हुई कमर पर आज हमारे उदार शासक टूटनेके भय से सुधारोंका बोझ नहीं रखते, जहाँ की जनता आज पेटकी ज्वालासे दुःखकी आहें भरती हैं, जिस सुशासनमें लूट, मारकाटके बाजार गर्म रहते है, उस देशकी जनता बड़े गर्वसे अधिकारपूर्ण शब्दोंमें अपने संरक्षकों को सूचित किया करती थीः—

"जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी
सो नृप अवशि नरक अधिकारी।"

जिन भारतीयोंको आज हमारे शासक स्वराज्यके अयोग्य बतलाते हैं उनकी ही छत्रछायामें किसी दिन संसार सुख शांतिकी नींद सोता था। जिसका धर्म आशावादका स्रोत हो, जिसकी जन्मघुट्टीके साथ "अदीनाः स्याम शरदः शतम्" का अमृत भरा प्याला पिलाया जाता हो तथा जो "कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्" की उत्साहगर्भित शिक्षासे दीक्षित हो उस भारतभूमिको हमारी देशभक्तिकी भावनाके लिये नैसर्गिक वरदान विश्वात्माकी ओरसे प्रथमतः ही प्राप्त है। हमारे देशकी प्राकृतिक शोभा कितनी मनोहर है। देशका किरीट हिमालय पर्वत है जिसकी हिमराशिमें प्रकृति अपना कोमल रूप निहार कर नित्य नवीन बनी रहती है। काश्मीरकी उपत्यकाओंमें फूल स्वर्गके छोटे २ टुकड़े बने हुए हैं। निर्झरोंमें विश्वसंगीत मचलता हुआ बह रहा है।

ऊंचे २ चिनार वृक्षोंकी घनी छायामें जैसे विश्वकी शांति विश्राम कर रही है। सफेद वृक्षोंकी पंक्ति प्रकृतिके सैनिकोंकी भांति सौंदर्यकी रक्षा कर रही है। गंगा और यमुनाके पवित्र प्रवाहमें जैसे देशके अध्यात्मवादका तरल स्वर अनंतकालसे निसृत हो रहा है। विन्ध्या और सतपुड़ाकी श्रेणियोंमें जैसे भारतकी कल्पना गूढ़ होकर नर्मदाका आह्वान कर रही है। तीनों ओरसे ही परिक्रमा कर जैसे सागर अपनेको धन्य मान रहा है। यह है हमारी भारतमाताका चित्र। हमें दुःख है कि इसी अखंड भारतको टुकड़े २ करनेपर विधर्मी उतारू होगये हैं। हमारा प्यारा देश जबतक अपनेको पहिचानता रहा, इसके निवासी जबतक मृत्युकी मुलाकातको 'जीर्णानि वस्त्राणि' समझते रहे संसार उसके झंडेके नीचे सर झुकाकर खड़ा था। आज वे "कर्मण्येवाधिकारस्ते माफलेषु कदाचन" के पाठ को भूल गये। स्वर्ग भारतका अतीत उनके लिये आसान बन गया। भारतीय नौजवान आज फिर अपनी पुरानी चीज़को दुहरा जावें, हम अपनेको पहिचान लें, भूत, वर्तमानकी तुलना करें, भविष्यके चिन्तनका रास्ता स्वयं साफ होजायगा। इतिहास मुंह मोड़कर एक न एक दिन अवश्य देखेगा, और हमें पुनर्जीवित करेगा। क्योंकि हमारी भारत माता कितने निर्बल हृदयोंमें शक्तिका संचार कर रही है। वह पराधीन है तो क्या हुआ? उसकी आत्मामें अब भी गौरव है, उसके रूपमें अब भी विश्व—विजयकी आकांक्षा है, उसके दर्शनमें अभी अमर होनेका वरदान है, "के बोले मां तुमि अबले?" वह सजला है शस्य श्यामला है। क्या इस माताकी वन्दना नहीं होगी? होगी। और वह ३० नहीं बल्कि ३५ करोड़ भारतीयोंके गद्गद् कण्ठसे होगी।

[अजमेर

[७ अगस्त १९४१ के अंक से आगे]

स्वदेशी समाज

स्व. रवीन्द्रनाथ ठाकुर

गृहस्थका दृष्टिकोण अपने घर या गांव तक ही सीमित नहीं होना चाहिये। उसे विशाल दृष्टिवाला बनना चाहिये—इस प्रकारकी हिंदुधर्मकी शिक्षा है। पंचमहायज्ञ करना चाहिये, इस प्रकारकी जिस गृहस्थको धर्म शिक्षा देता है, क्या वह अपने देशके लिये कुछ न कर सकेगा? क्या हम अपने देशके लिये रोजाना मुट्ठीभर चावल और एक पैसा अलग नहीं रख सकते? हमारे इस महान देशकी जो एकता है, उसे आचरणमें लानेके लिये सबको प्रयत्न करना चाहिये या नहीं? मुट्ठीभर चावल और एक धेला क्या अधिक है? ऋषियोंकी तपोभूमिमें, वीरोंकी कर्म भूमिमें और देवताओंकी इस प्रिय भूमिमें, इतनी अपेक्षा करना क्या मुश्किल है? हमारे देशके सारे सार्वजनिक कामोंसे हमें अपना संबंध जोड़ना चाहिये या नहीं? क्या हम अपने काम परायोंको सौंपकर खुद उदासीन बन जायेंगे?

हमारे देशसे, संपत्तिका प्रवाह लगातार बाहर जा रहा है, इसलिये हम दिनरात कोलाहल मचा रहे हैं। किन्तु हमारे मनका स्वजनोंसे दूर होते जाना, यह बात उससे सौ गुना अधिक दुःख की है या नहीं? सरकारको यह करना चाहिये, वह करना चाहिये ऐसा कहनेमें ही क्या हमारी देशभक्ति है? नहीं। यह हमारा स्वभाव नहीं है। दिनभर परिश्रम करनेके उपरान्त जो चौथाई रोटी मिलेगी वह अपने दीन दुर्बल भाइयोंके साथ खाने की हमारी सनातन आदत है। और ऐसा करनेमें हम बड़ा त्याग करते हैं, ऐसा हमारे दिलमें भी नहीं आता। ऐसे प्रेमी और मेहनती भारतवासी को क्या अपनी माताका भार होगा? पराये आदमीको हमारी माताकी दीनता हटानी चाहिये, क्या इस प्रयोजनके लिये हम दूसरेके द्वारपर भीख मांगने बैठेंगे? नहीं, नहीं, नहीं। वह हम पसंद नहीं करेंगे। अपने देशका भार हरेकको अपने सिर पर लेना चाहिये। इसीमें हमारा मोक्ष है। 'मैं' अपने ही लिए हूं यह कहनेके दिन बीत गये। व्यक्ति कितना ही क्षुद्र हो, उसकी उपेक्षा नहीं होनी चाहिये। अत्यंत क्षुद्र की भी अवहेलना नहीं होनी चाहिये। माताकी सेवा उसे भी करने दो, वह सेवा भी श्रेष्ठ है।

आज अगर किसी युवकसे कहा जाय कि 'जा और समाज सेवामें अपने आपको अर्पण कर दे,' तो वह दुविधामें पड़ जायगा। उसे कौनसा काम करना चाहिये, किसके बलपर करना चाहिये, खानपानका इन्तज़ाम कैसे करना चाहिये, कहां रहना चाहिये—ऐसी अनेक समस्यायें उस युवकके सामने खड़ी हो जाती हैं। हमारे कार्यकी योजना एक व्यक्ति नहीं बना सकता। उसके लिये संघटना चाहिये। एकाध आश्रम चाहिये। किन्तु एकाध आश्रम, एकाध संस्था शुरू होती है, काम भी होने लगता है। पर आगे जाकर टिकता नहीं। इसका मुख्य कारण यह है कि कार्यकर्ता संस्थासे एकरूप नहीं होते। हरेक व्यक्ति अपनी जिम्मेदारी कम करने लगता है और संस्थाकी इतिश्री हो जाती है। ऐसे कैसे चलेगा? जिन परायोंको हमें मुंह दिखाना है, वे अत्यंत सुसंघटित और कार्यक्षम हैं। उन्होंने हमारे आसपास अनेक जाल डाल रखे हैं। हमारे देशकी पाठशालाओंसे लगाकर दुकानों तक उन्होंने अपना जड़ मूल दृढ़ किया है। यह धृतराष्ट्रके द्वारा भीमके साथ किया हुवा आलिंगन है। यह कालियका कृष्णको जकड़ना है। इस जकड़नसे और इस मारक आलिंगनसे मुक्त होनेके लिये स्वदेशी समाज को दृढ़ताके साथ खड़ा होना चाहिये। ढिलाई दूर करनी चाहिये। अनुशासन, संघटना, इनका पूरी तरह पालन करके, जिस किसी व्यक्तिको हम अपना नेता बनायें उसको खड़ा होना चाहिये। वह हमारी ऐकताकी निशानी, ऐक्यका प्रतिनिधि होगा। वह हमारे एकत्वका सूर्य है और हम सब उसकी प्रदक्षिणा करनेवाले ग्रहोपग्रह। उसकी आज्ञा शिरोधार्य करनेमें और उसका पालन करनेमें हमें हलकापन माननेकी ज़रूरत नहीं। कारण, हमारी स्वतंत्रताका सच्चा स्वरूप उस नेताके द्वारा, उस महान् कर्णधारके द्वारा प्रतीत होता है।

इस प्रकारका जो समाजपति या राष्ट्रपति चुना जायगा वह कभी उत्तम होगा और कभी न होगा। किन्तु समाजपति किसी प्रकारका भी हो, उससे बिगाड़ नहीं हो सकता। इतना ही नहीं, किन्तु सर्वोत्तम नेता अगर किंचित कम दर्जेका मिला, तो उसमें भी कल्याण ही है। कारण, हम अधिक दक्ष और तत्पर रहेंगे। अपने उस प्रतिनिधिकी शक्तिमें जनता अपनी शक्ति देखेगी और समाज अजेय बन जायगा। इस समाजपतिके मातहत दूसरे दूसरी श्रेणीके नेता रहेंगे। वे देशके अलग अलग हिस्सोंमें काम करेंगे। उन भिन्न भिन्न हिस्सोंमें जो आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य होंगे, उनके लिये वे जिम्मेवार समझे जाएँगे। उन कामोंके सबंधमें वे समाजपातिके प्रति उत्तरदायी होंगे।

समाजके व्यक्ति मात्रका यह धर्म होना चाहिये कि देशके लिये प्रतिदिन कुछ न कुछ चंदा अलहदा निकालकर रखे। देशका रोज स्मरण होना चाहिये और स्मरणके प्रतीकके रूपमें कुछ न कुछ त्याग करना चाहिये। उत्सवोंमें और विवाह आदि प्रसंगोंके समय जो हम खर्च करते हैं उसमेंसे कुछ अंश भेंटके रूपमें हमें निकालकर रखना चाहिये। वह नित्यका दान और यह नैमित्तिक दान। इस दो प्रकारके दानसे हमारे समाजके पास, कार्यके लिये पर्याप्त पैसा इकट्ठा हो जायगा। पहले प्राचीन कालमें, हमारे देशमें बड़े बड़े आश्रम और विद्यापीठ कैसे चलते थे? लोग स्वयंस्फूर्तिसे जो दान देते थे उसके बलपर ही उन भारतभूषण संस्थाओंका खर्च चलता था। हमारे उसी देशमें आज फिर सार्वजनिक कार्यके लिये पैसा नहीं मिलेगा, ऐसा मैं नहीं सोचता। ऐसे आश्रमोंका योगक्षेम चलेगा। यह आश्रम उत्तम कार्य करने लगेंगे तब उदार लोगोंका दान ग्रहण करनेका अधिकार उन्हें प्राप्त हो जायगा।

ऐसा एक मध्य बिन्दु होना चाहिये जहां, हमारी सारी दानशक्ति बहकर आवे। वहीं सब दान इकट्ठा होना चाहिये और वहांसे उचित मात्रामें सहायता दी जावेगी। ऐसी जो मध्यवर्ती संस्था होगी उसके लिए हमें प्राणोंसे भी ज्यादा जतन करना चाहिये। उसे अंदरसे रोग न होने देनेकी दक्षता प्राप्त करनी चाहिये। बाहरसे आक्रमण हुआ तो आंतरिक जीवनशक्तिके बलपर हम उसे हटा सकेंगे। अंदरसे अगर वृक्ष खोखला न बना होगा, तो वह संकटोंको झेलकर अचल रहेगा। लड़कर अधिक जटिल होगा। आंतारिक जीवनशक्तिका यह धर्म ही है कि वह बाहरके जखमों को शेष कर दे। जिसके शरीरकी बाढ़ हो रही है ऐसे युवकपर कितने ही आघात हों फिर भी उसकी जीवनशक्तिसे वे शीघ्र ही ठीक हो जाएँगे। शरीरस्थ जीवनशक्ति शरीरमें एक-सूत्रता रखती है। संस्थाकी जीवनशक्तिको भी सब प्रयत्नोंकी एक परिणति रखना, सर्वत्र चैतन्यका संचार करना आदि बातें करनी चाहिये।

राष्ट्रमें इस प्रकारकी जिस महान् संस्थाका हम निर्माण करेंगे, उसे भारतमाता आशीर्वाद देगी, जनता दुआ देगी। अच्छे कामों के लिये पराई सरकार भी पदवियां देती है। किन्तु हमें पराई सरकारके खिताबोंकी परवाह नहीं है। माताकी आशीष मिलनेसे सब कुछ मिल जाता है। कार्य करनेवाली संस्थाको, सेवा के बल प्रैमैक्य निर्माण करनेवाली संस्थाको, अगर समाज आशीर्वाद न देगा तो संस्थाको सच्चा समाधान नहीं हो सकता। समाजको अच्छे काम करनेवालोंकी वाह-वाह करनी चाहिये।

आज हमें हिंदु-मुसलमानोंका ऐक्य सबसे प्रथम निर्माण करना होगा, यह बात किसीको नहीं भूलनी चाहिये। हिंदु मुसलमानोंके झगड़ोंको हमें दूर करना चाहिये। सबके प्रति हमें न्याय और समानताका वर्ताव करना चाहिये। पक्षपात न होने पाये इसके लिये सतर्क रहना चाहिये। दोनोंके हित संबंध देखने चाहियें। आपसमें निबटारे करने चाहियें। बड़ा त्याग करके भी दिलजमाई करनी चाहिये। हमें इस ऐक्यके संबंधमें अगर सफलता न मिली तो बार-बार कलहाग्नि भडकेगी, द्वेष-मत्सर बढ़ेंगे और देश दिन-ब-दिन अधिक दुर्बल और पंगु बनता जायगा।

इन झगड़ोंको मिटानेकी हममें शक्ति है इसप्रकारका आत्मविश्वास हमें रखना चाहिये। प्रेम रज्जुसे सबको संभाल रखनेकी कला भारतवर्षके सारे जीवनमें आज सैंकड़ों वर्षोंसे नजर आती है। तरह तरहकी विकट परिस्थितिमें भारत वर्षने बारंबार सुव्यवस्था निर्माण की है। और इसी कारण यह महान् देश आज तक खड़ा है। ऐसे इस भारत वर्ष पर मेरी श्रद्धा है। भारत वर्षकी आजकी परिस्थितिमें सुव्यवस्था निर्माण करनेके लिये आइये, सब लोग आइये। सुखलोलुप बनकर क्या माता को आप सताते रहेंगे? आपके रक्तके छींटे उसके शरीपर उड़ने देंगे? नहीं। ऐसा न होगा और न कदापि होना ही चाहिये।

बाहरकी दुनिया से भारत वर्षका आजका यह पहला ही संबंध नहीं है। प्रथम आर्य आये और यहांके निवासियोंसे उनका भयंकर कलह हुआ। किन्तु विजयी आर्योंने अनार्योंका उच्चाटन नहीं किया। अमेरिका या आस्ट्रेलियामें जैसा गोरे लोगोंने किया वैसा यहां नहीं हुवा। अनार्योंके आचार-विचार, रहन-सहन, देवता आदि सब भिन्न थे। तब भी आर्योंकी समाज रचनामें उन्हें स्थान मिल गया। आर्योंके समाजमें विविधता और विचित्रताका समावेश करके अनार्योंने भी उनका ऋण अदा किया।

आगे जाकर बुद्धकालमें भारतवर्षका बाहरकी दुनियासे संबंध, जोरोंसे बढ़ता गया। आमद रफ्त (आवागमन) बढ़ती गई। इस प्रकारकी मित्रता बाज वक्त शत्रुताकी अपेक्षा भी गंभीर स्वरूपकी होती है। अनजानमें हम दूसरेके भक्ष्य बन जाते हैं। जिस समय वैर नही रहता, झगड़े नहीं होते, उस समय आत्मसंरक्षणका विचार भी मनमें नहीं आता। स्वस्थता निश्चित होती है। दो ग्रास ज्यादा हुए तो क्या और कम हुए तो क्या। बुद्धकालमें ऐसी ही स्थिति थी। सहस्रों लोगोंसे संबंध आये। बाहरकी नाना जातियों तथा जमातोंसे व्यवहार होने लगा। बुद्ध धर्मकी लहर एशियाभरमें फैली और परस्पर विरुद्ध आदर्श और परस्पर विरुद्ध संस्थायें, इनका हिंन्दुस्तानमें अप्रतिरुद्ध संचार होने लगा।

किन्तु, ऐसे उस अनिश्चितताके समय यद्यपि भारतवर्ष दिङ्मूढ़ हो गया था, तब भी एकता और सुव्यवस्था

(शेष पृष्ठ २३ के कालम ३ पर)

हमारा राजस्थान

★

एक राजस्थानी

राजस्थानकी जनगणना

राजस्थानकी जनगणनाके सम्बन्धमें "ये दस लाख" शीर्षकसे आम जनताकी जानकारीके लिए एक सचित्र पुस्तक प्रकाशित की गयी है, जिसमें जनगणनाके सम्बन्धमें कुछ दिलचस्प आंकड़े दिये गये हैं। इन दस वर्षोंमें राजपुतानामें १८ प्रतिशत और अजमेर–मेरवाड़ामें १५ प्रतिशत आबादी बढ़ी है। राजपुतानाकी आबादी १३६७००० और अजमेर–मेरवाड़ाकी ८४००० है। पिछले ५० वर्षोंमें अजमेर–मेरवाड़ाकी आबादी १०१०००० बढ़ी है जब कि उसका क्षेत्रफल सिर्फ २४०० वर्गमील है। लेकिन डूंगरपुरकी जनसंख्यामें वृद्धि १७५००० की हुई है जब कि उसका क्षेत्रफल सिर्फ १४६० वर्गमील है। बीकानेरकी आबादी ३८ प्रतिशत बढ़ी है और राजधानी बीकानेर शहरकी ४५ प्रतिशत।

बेकारी

साक्षरता और बेकारीके बारेके आंकड़े भी काफ़ी दिलचस्प हैं। साक्षरतामें ७·२ प्रतिशतकी वृद्धि हुई है। ईसाई और जैनी सबसे अधिक साक्षर हैं। इनमेंसे प्रति दो के पीछे एक पढ़ालिखा है। भील, मीना आदि सर्वथा निरक्षर ही हैं। जहां इन जातियोंकी प्रधानता है वहां साक्षरताका दरजा बहुत कम है। बीकानेर और जैसलमेर सबसे आगे हैं। इनमें ८ प्रतिशत साक्षर हैं। बांसवाड़ामें सबसे कम २·८ प्रतिशत हैं। राजपुतानामें १००० पीछे ५ और अजमेर–मेरवाड़ामें ३३५ अंग्रेजी पढ़ेलिखे हैं। १७–२६ वर्षके शिक्षित इण्टरमीजिएट, ग्रेज्युएट और पोस्टग्रेजुएट अधिक बेकार हैं।

शिशु हत्याके सम्बन्धमें आंकडे पहली ही बार तय्यार किये गये हैं। बाल-माताओंसे उत्पन्न बच्चोंकी मृत्युसंख्या बहुत ही भयानक है। ९ से १३ वर्षतककी आयुकी माताओंसे उत्पन्न होने वाले ६६ प्रतिशत बच्चे कालके ग्रास हो जाते हैं। कितनी भीषण यह स्थिति है ?

+ + +

जोधपुरमें संकट

जोधपुरमें अति वर्षासे आयी बाढ़से पैदा हुई तबाहीका कुछ परिचय उस अपीलसे मिलता है जो मारवाड़के लोकनायक नेता श्री जयनारायणजी व्यासने पिछले दिनों प्रकाशित की है। आपने बताया है कि करीब ३० हजार मकान नष्ट हो गये हैं। इतने ही पशुओंकी हानि हुई है। जानोंका इतना अधिक नुक्सान नहीं हुआ। उपजाऊ जमीन पर रेता छा गयी है। कुएँ रेतसे भर गये हैं। हरिजनोंकी अवस्था तो एकदम असह्य हो गयी है। उनके पास कुछ भी नहीं रहा। उनमेंसे ८० फीसदी बिल्कुल बे-घरबार हो गये हैं। आवाजावीके साधनों, सड़कों व पुलोंकी भीषण हानि हुई है। मोहरान नदीकी १२ में से १० मेहराबें टूट गयी हैं। सुमेरपुरके पासका पुल भी टूट गया है। जालोर, जसवन्तपुरा और सांचोर जिलेमें रेलवेलाइन तक कई स्थानोंपर बह गयी है। सरकार और लोक–परिषद दोनोंकी ओरसे सेवा एवं सहायताके कार्य शुरू हो गये हैं। लोक-परिषद की अपीलका अच्छा स्वागत हुआ है। परिषद्के लगभग १०० कार्यकर्त्ता किसानोंमें काम करनेमें लगे हुए हैं। श्री व्यासजीने अपीलके अन्तमें कहा है कि मुख्य समस्या पुनर्निर्माण की है। गांवोंको नये सिरेसे बसाना है और गरीबोंके झोंपड़े भी फिरसे तय्यार करने हैं। जिन किसानोंकी जमीनें चौपट हो गयी हैं उनको काम दिलानेकी समस्या भी साधारण नहीं है। लोक परिषद्की ओरसे चरखे बांटे जा रहे हैं। जनतासे आपने लोक परिषद्की सहायता करने का अनुरोध किया है।

+ + +

जोधपुरमें ए. आर. पी.

महात्मा गान्धीसे श्री जयनारायणजी व्यासने पता किया था कि जोधपुर सरकारने जोधपुर निवासियोंकी हवाई हमलोंसे रक्षा करनेके लिए जो योजना बनायी है, उसमें उनका क्या रुख होना चाहिए। महात्माजीने लिखा है कि—

"जो नीति ब्रिटिश हदमें अख्तियार की गयी है, वह देशी राज्योंमें भी चलनी चाहिए, ऐसा 'नियम' न माना जाय। मेरी निजी राय तो यह है कि जो अहिंसा नीतिका पालन करना चाहते हैं वे चालू झंझटोंमें न पड़ें। बापूके आशीर्वाद"

+ + +

२० और ३१ सितम्बरको मारवाड़ लोक परिषद् की कार्यसमिति एवं प्रतिनिधि सभाकी अत्यन्त महत्वपूर्ण बैठकें हो रही हैं। इनमें असेम्बलीके चुनाव, जागीरी समस्या और बाढ़ पीड़ितों तथा अकाल पीड़ितोंको सहायताके सम्बन्धमें विचार होगा।

+ + +

राजस्थानमें चरखा जयन्ती

गान्धी जयन्तीकी सारे ही राजस्थानमें प्रायः चारों ही ओर जोर-शोरसे तय्यारियां हो रही हैं। राजस्थान चरखा संघको इस अवसरके लिये गान्धीजीने निम्न सन्देश भेजा है:— "चरखा जयन्तीके निमित्त राजपुतानामें तो चरखा और खादीका प्रचार खूब होना ही चाहिए। जब अन्य प्रान्तोंमें चरखेका लोप हो रहा था तब राजपुतानेमें, थोड़ा ही क्यों न हो, चरखा चल ही रहा था। अब तो कोई भी घर चरखेसे खाली नहीं रहना चाहिए और न किसी घरमें सिवा खादीके और कोई कपड़ा काममें आना चाहिए।

× × ×

जयपुर और जोधपुरकी कशमकश

वनस्थली (जयपुर) के राजस्थान बालिका विद्यालयका उत्सव इस साल नहीं हो रहा। संस्थाकी ओरसे जारी की गयी विज्ञप्तिमें इसका कोई कारण नहीं दिया गया है। श्री हीरालालजी शास्त्रीने साम्भर निजामतका गत सप्ताह दौरा शुरू किया है। साम्भर और मलेश दो ऐसे इलाके हैं जिनके साथ जयपुर सरकारका बहुत ही विचित्र व्यवहार है। साम्भरको तो जोधपुर और जयपुरका शामलातका इलाका माना जाता है। वहां दोनों सरकारोंकी हुकूमत चलती है। लेकिन वहां वालोंको दोनों सरकारोंकी बुराइयोंसे हानि ज़रूर उठानी पड़ती है, लेकिन किसीकी भी अच्छाइयोंका लाभ नहीं मिलता। जयपुरके संस्कृत कालेजमें वहांके लड़कोंको गैर जयपुरिया बताये जाने तक की शिकायत है। अभी स्थानीय युवक परिषद्की ओरसे इसका विरोध तक किया गया है। फुलेरा रेलवे स्टेशनके पासकी बस्तीके गैर इलाका कहलाये जानेपर वहांके लोग भी अजीब मुसीबतमें फंसे हुए हैं। गांवोंसे जाने वाले हर सामान पर वहां जकात ली जाती है और वही सामान यदि बाहर ले जाया जाता है तब भी जकात देनी पड़ती है। गांव वालोंके लिए भी यह स्थिति संकट कारण है। लेकिन देशी राज्योंमें जो न हो, सो थोड़ा है।

कोटामें ज्यादती

कोटामें पुलिस कानून की दफा ३७ व नुक से अमन को सख्तीसे काममें लानेके परिणाम स्वरूप जनतामें काफी असन्तोष पैदा हो गया है।

प्रजामण्डलका यह दावा है कि स्वर्गीय महाराव द्वारा स्थापित परम्पराके यह सर्वथा प्रतिकूल है और राजनीतिक संस्थाओं पर ऐसी पाबन्दी लगाना उसके प्रारम्भिक नागरिक अधिकारोंका अपहरण करना है। इसी विचार से प्रजामण्डलने इसके विरोधमें अपना काम शुरू कर दिया है। ४ सितम्बरको मांगरोलमें ठाकुर हीरासिंहजीके सभापतित्वमें एक सार्वजनिक सभा हुई जिसमें सेठ मोतीलालजीने इस नीति की तीव्र आलोचना की। सांगोदके कार्यकर्त्ताओं पर चलाये गये मुकदमे की भी आपने चर्चा की। उनमें से दो अर्जी नवीसोंका अर्जी नवीसीसे एक–एक मासके लिए मोअत्तिल कर दिया गया है। उनके नाम श्री जयनारायणलालजी और श्री छगनलालजी हैं।

+ +

सिरोहीमें सजाएं

सिरोहीमें प्रजामण्डलके प्रमुख कार्यकर्त्ताओं श्री शान्तिलालजी शाह और श्री बाबूलाल शाह पर चल रहे मुकदमोंका फैसला सुना दिया गया है। दोनों को क्रमशः ४ मास की सजा एवं ५०) रु. जुर्माना और ३ मास की सजा एवं २५) रु. जुर्माना किया गया है। श्री. शान्तिलालपर अभियोग यह था कि उन्होंने एक हरिजन की झूठी दरख्वास्त पुलिसके विरुद्ध आई. जी. पी. को लिखी थी। श्री. बाबूलाल इसमें उनके सहायक थे। अभियुक्तोंने अदालतके रवैय्ये के विरोधमें मुकदमेंमें भाग लेने से इनकार कर दिया था और उनके वकील भी मुकदमे से हट गये थे। सिरोही राज्य भरमें सभाएं होकर आप दोनों को बधाई दी गयी है। श्री शान्तिलाल आबू रोड प्रजामण्डल शाखाके मन्त्री और आबू रोड म्युनिसिपैलिटीके उपसभापति हैं। ७ सितम्बर को म्युनिसिपिलिटीकी बैठकमें सभापतिकी ओरसे आपके अभिनन्दनका प्रस्ताव पेश किया गया। उसके पास होनेपर उस दिन सजाके विरोधमें बैठक मुल्तवी कर दी गयी। आप दोनोंके साथ साधारण कैदी–सा व्यवहार हो रहा है। पैरोंमें बेड़ियां डालकर बागीचेमें काम लिया जाता है। इस पर भी सर्वत्र असन्तोष प्रगट किया जा रहा है।

+ + +

अपने मुंह मियां मिट्ठू

देशी राज्योंके अपने मुंह मियां मिट्ठू बननेकी एक रोचक कहानी भरतपुरसे प्राप्त हुई है। सरकारी सहयोग समिति महकमें से 'सहयोग' नामका पाक्षिक पत्र प्रकाशित होता है। इसके १ सितम्बरके अंकमें १८८१ से १९४१ तक की जनगणनाके आंकड़े देकर यह बतानेकी कोशिश की गयी है कि किस प्रकार राज्यमें चहुं–मुखी प्रगति हो रही है। १९४१ में आबादी १८०४ बढ़ गयी है जो कि भरतपुरकी आम खुश हाली और वर्त्तमान सुशासनका परिणाम है। इसी प्रकार यह भी बताया गया है कि शिक्षितोंमें भी २ प्रतिशत वृद्धि हुई है। बेरोजगार सिर्फ १ सैकड़ा बताया गया है और लिखा गया है कि "बेकारीकी जो समस्या अन्य स्थानों पर इतनी भीषण है, वह यहां नितान्त नगण्य–सी है।" सौ वर्षकी आयु वालोंके बारेमें कहा गया है कि १९२१ में ऐसे सिर्फ दो आदमी थे, १९३१ में १८ और अब १९ हैं। इस पर यह सम्मति प्रकट की गयी है कि "यहांके लोगोंकी आयु निरन्तर बढ़ रही है। यह भी वर्त्तमान सुशासनका ही परिणाम है।" यदि सुशासनकी यही कसौटी है तो भारतमें ब्रिटिश नौकरशाहीकी निन्दा करनेका साहस कौन कर सकता है ?

कमला मिल के कपड़े इस्तेमाल करें।

आर्टिफिशियल सिल्क ज्योर्जेट
साडियां साडी क्लाथ और
शर्टिंग कपड़ों के लिये
यह मिल अपनी
विशेषता
रखती
है

हेड आफिसः—
गोयनका हाउस
१४५, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट,
कलकत्ता

हर प्रकार की धोती, साडी,
कोरा लॉंगक्लॉथ,
कोटिंग, केनवास,
सूसी, आदि
आदि

कमला मिल्स लिमिटेड

तुलसी पाइप रोड, परेल, बम्बई. टे. नं. ६००६४—६५

विक्री-विभागः—

बम्बई : टे. नं. २६९४५
मूलजी जेठा मार्केट

कलकत्ता :
सूतापट्टी

यूनियन बैंक आफ़ इन्डिया लिमिटेड

★ बम्बई में सन १९१९ में स्थापित ★

हेड ऑफिस—अपोलो स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई

शाखाएँ
१ कॉटन एक्सचेन्ज बिल्डिग
कालबादेवी रोड़ बम्बई
२ कत्था बजार. मांडवी, बम्बई
३ राजकोट सिविल स्टेशन

सेफ डिपाज़िट वाल्ट
काटन एक्सचेंज बिल्डिग
कालबादेवी रोड, बंबई
स्त्रियों के लिये ख़ास सुविधा

चुकाया हुआ धन रु. ३९,९० ०००
रिझर्व फंड रु. १०,००,०००
डिविडन्ड इक्वालाइजेशन फंड
रु. ६०,०००
जमा हुआ धन (ता. ३१-१२-४०)
रु. १,९६,७२,०००

डायरक्टर्स

सेठ एम. एस. केप्टन, चेअरमेन
सेठ वेहराम एन. करंजिया
सेठ लछमनदास हरखचंद डागा
सेठ विठ्ठलदास कानजी
सेठ के. आर. पी. श्राफ़
सेठ हरिदास माधवदास
सेठ रामदेव आनन्दीलाल पोदार
सेठ दीनशा डी. रोमर

चालू डिपाज़िट खाता खोला जा सकता है। हररोज़ की रु. दो लाख तक की बचत पर प्र. व. ¾ प्र. श. के हिसाव से व्याज दिया जाता है।

कम ज्यादा समय की डिपाझिट बहुत ही लाभकारी शरतों पर स्वीकार की जाती है।

सेविंग बैंक—इस खाते में रु. १०००० तक की कम से कम मासिक बचत पर प्र. व. १॥ प्र. श. के हिसाब से व्याज दिया जाता है। सप्ताह में दो बार इस खाते से आप चेक द्वारा पैसा निकाल सकते हैं।

मान्य की गई जामिनगीरी पर पैसा दिया जाता है। बैंकिंग का हर किस्म का काम किया जाता है।

वी. एम. भार्गव, सेक्रेटरी

★ देश विदेशकी चर्चा ★

★

[संकलन कर्त्ताकी कलमसे]

१६ सितम्बरको ईरानी पार्लिमेंटमें प्रधानमन्त्री मि० फरूगीने घेोषित किया है कि ईरानके शाह रज़ाशाह पहलवी मोटर द्वारा अन्यत्र चले गये हैं। तेहरानके रेडियोने कहा है कि अस्वस्थताके कारण शाहने गद्दी छोड़ी है। इस अस्वस्थता और साधारण परिस्थितिमें होनेवाली अस्त्रस्थतामें, यदि यह सत्य है तो, आकाश-पातालका अन्तर है। इसी वर्ष हंगेरीके प्रधान मन्त्री काउण्ट तेलेकीने आत्महत्या करली थी। जिस प्रकार उस आत्महत्या और साधारण अवस्थाकी आत्महत्यामें आकाश-पातालका अन्तर था उसी प्रकार क्या यहां भी वह अन्तर न होगा? काउण्ट तेलेकीने आत्मघात किया था इस लिए कि उसपर जर्मनोंने अनुचित दवाव डाला था और उससे यूगोस्लाविया और रूसपर हमला करनेके लिए फौजें और खाद्य सामग्रीकी इतनी बड़ी मांग की थी जिसे पूरा करना उसकी शक्तिसे एकदम बाहर था। उसी भान्ति निःसन्देह ईरानके शाहने अस्वस्थ होकर यदि गद्दीका परित्याग किया है तो उसका क्या यह कारण नहीं होगा कि उसपर ब्रिटेन और रूसने अनुचित दवाव डाले होंगे? शाहकी राजगद्दी त्याग करनेकी घटनासे शेक्सपीयरकी यह पंक्तियां दिमागमें ताजी हो गयी हैं—Uneasy lies the head that wears a crown अर्थात् जिस सिरपर ताज पड़ा हुआ है वह कभी सुखी और निश्चिन्त नहीं हो सकता और सचमुच ही शाहको सुखी जीवन नहीं मिला।

रज़ाशाह पहलवी

ईरानका शहंशाह सर्वशक्तिमान्की छाया, खुदाका वाइस रीजेण्ट और विश्वका केन्द्र है रज़ाशाह। वह साधारण प्रजासे उठा हुआ आधुनिक सीज़र या क्रौमवेल है जो अपने ही उद्योग से धैर्य्य और साहसिकताके जोरसे सामान्य धरातलसे इतिहासके इतने ऊंचे स्थान पर पहुंच गया है। कैस्पियन समुद्रके पास मजान्देरन प्रदेशमें ६६ वर्ष पहले उसका जन्म हुआ था। ४० वर्षकी आयुमें वह एक मामूली अफसर था और ५० वर्ष पार करते ही ईरानका शाह रज़ाशाह पहलवी बन गया।

उसके बचपन और शुरू की जवानीकी बातें बहुत नहीं सुनीं। हाँ, यह निश्चित है कि उसके परिवारके स्थिर रूपसे जमे होने पर भी उसे धनी नहीं कहा जा सकता था। उसने शिक्षा भी अधिक नहीं पायी होगी क्योंकि जब वह लोगोंके सामने अपने बड़े रूपमें आया, उस समय वह एक तरहसे अशिक्षित ही था। शायद अपने बचपनके साथियोंकी तरह मजान्देरनमें उसने भी भेड़ें चरायी होंगी, मिट्टीकी झोंपड़ीमें रातें बितायी होंगी और भूख मिटानेके लिये भेड़ोंके टुकड़े खाये होंगे।

शाहको सुना है, घुड़दौड़से बड़ा प्रेम है, पर बीच २ में जय पराजयके सवालको लेकर उसका फौजी खून भी खौल पड़ता है। एकबार सन् १९३३ में एक तुर्की कबीलेवालेने तेहरानकी घुड़दौड़में नामवर एक ईरानी अफसरको एक दौड़में हरा दिया। अन्यविदेशी प्रतिनिधियों और ईरानके सभ्य लोगोंकी उपस्थितिमें वह अभागाविजेता शाहके सामने लाया गया। उसे देखकर शाहके खूनने जोर मारा और उसने एक छोटा लैक्चर देकर, बढ़कर उस विजेताके पेटमें लात मारी।

कहा जाता है कि शाहकी महारानीने कुछ वर्ष पूर्व फातिमाकी समाधपर कुममें पूजा करते हुए अपना मुख थोड़ा-सा उघाड़ दिया, जिसपर समाधके पुजारीने उसकी भर्त्सना की। उसके खिलाफ सर्वत्र प्रदर्शन किये गये। शाहको जब यह मालूम हुआ तो उसने टैंक और सशस्त्र मोटरें लेकर उस पर चढ़ाई कर दी और जूते पहने-पहने समाज का अपमान करनेके लिये मस्जिदमें प्रवेश किया और अपने ही हाथसे दरगाहके पुजारी की मरम्मत की।

रजाशाह की राष्ट्रीयता बड़ी कट्टर और तीव्र है। मिसालके तौर पर बाजारों और गलियोंके साइन-बोर्ड इरानी लिपिमें ही होने लाजिमी हैं। विदेशी लोगोंके नामोंके बोर्ड भी, अगर फारसी लिपिमें नहीं होंगे तो उखाड़ दिये जायंगे। सड़कों पर लगे हुए किलोमीटरके पत्थरोंपर भी फारसी लिपिमें ही संख्यायें लिखी रहती हैं। बीमारी की अवस्थामें वह ईरानी डाक्टरोंके लिये ही आग्रह करता है।

उसकी राजनैतिक बुद्धि, होशियारी और चालाकी बड़ी तीव्र है। एकबार शक्तिशाली बख्तियारी कबीलेके प्रतिनिधि युद्धसचिवकी वफ़ादारी पर उसे सन्देह हो गया। अपने सन्देहकी पुष्टिके लिये उसने झूठ-मूठ ऐलान करा दिया कि वह बीमार है। उसकी बीमारीकी खबर पाते ही बख्तियारी कबीलेने सिर उठाकर विद्रोह करने की ठानी जिससे उसका सन्देह पुष्ट हो गया। उसने तुरन्त युद्धसचिवको बर्खास्त कर दिया और कबीलेका खात्मा कर दिया।

ईरानमें प्रायः कोई भी सार्वजनिक कर्ज नहीं। वहां का बजट हमेशा समतुलित रहता है।

तेल तथा अन्य कई राष्ट्रीय उद्योगोंका मालिक स्वयं रज़ा है, और उन सबकी आय सार्वजनिक कार्योंमें लगाई जाती है। शाहने हाल ही में अपना तमाम निजी सुवर्ण देशकी खातिर दानकर दिया है और वे सब राजकीय रत्न जिनका कोई ऐतिहासिक मूल्य नहीं, बेच दिये गये हैं।

अन्य सभी डिक्टेटरोंकी तरह वह भी खूब श्रम करता है। सुबह ५ बजे उठता है और मन्त्रिमंडलका कोई भी सदस्य या अन्य अफसर किसी भी समय दरबारमें बुलाया जा सकता है।

कैबिनेटकी बैठकोंमें वह मन्त्रियोंसे खूब काम लेता है और उन्हें देशके गौरव और अभिमानका स्मरण कराके काममें खूब उत्साहित करता है।

उसे विद्रोहकी बहुत आशंका रहती है और यही कारण है कि तमाम गुप्त हल्चलोंसे परिचय रखनेके लिये प्रति दिन सबसे पहले वह सेनाकी गुप्त पुलिसके, फिर नागरिकोंकी खुफिया पुलिसके और अन्तमें साधारण पुलिसके अध्यक्षसे मुलाकात करता है। इसके बाद दूसरोंका दरबार शुरू होता है। रज़ाशाह प्रायः हरेक वस्तुकी गहराई और विस्तार तक पहुंचना चाहता है। विदेशी राजनीतिज्ञोंसे वह तपाकसे मिलता है और प्रायः कहा करता है कि वह तो एक मामूली सिपाही है।

जब शाह यात्रा या दौरेपर निकलता है तो खूब शानसे रहता है। उसे स्वयं अपनी आंखोंसे घूम फिर कर देशको जानने और उसे सुधारनेकी इच्छा रहती है।

शाहका पहला नाम रज़ा ही ईरान भरमें मशहूर है। यह इमाम रज़ा नामक एक शिया सन्तके नामसे लिया गया है। उसने अपने राजवंशके लिये पहलवी नाम चुना है, जो पहले फारसी भाषाका नाम था।

सोवियटके स्टालिनाबाद, स्टालिन्स्क और स्टालिनग्राड की तरह ईरानमें भी रज़ाशाह पहलवीके नामपर उसमिया का रज़ाइयें और एनज़ली का पहलवी आदि नाम रख दिया गया है। फारस का नाम ईरान भी उसीने रखा है क्यों कि फारस नाम वहांके एक छोटेसे प्रान्तके नाम पर था, जब कि ईरान, टर्की और अफगानिस्तानके बीच फैले सारे प्लैटोका नाम है।

रज़ाशाहके विरोधी कहते हैं कि वह क्रूर और स्वेच्छाचारी है। ईरान उनकी रायमें एक बहुत बड़ा कारागार है जिसपर भयका शासन है। कोई नहीं जानता कि वह कबतक शाहका कृपापात्र है और कब उसे उखाड़कर फैंक दिया जायगा। शाहके राज्यमें कोई न्याय नहीं, कोई नियमित दण्ड नहीं। उसका वचन ही न्याय और कानून है।

कुछ लोग कहते हैं कि वह सनकी है। वह रेलकी पटरी बिछानेसे पहले ही स्टेशन बनालेना चाहता है। तेहरानकी नयी "औफीसर्स क्लब" पर वह २० लाख तमन यानी २ लाख ४० हजार पौण्ड प्रतिवर्ष खर्च करता है, जब कि इतनी रकमसे सारे शहरमें सफाईका इन्तजाम किया जा सकता है। वह डिक्टेटर है और चाहता है कि उसके कहने भर से ही सब कुछ हो जाना चाहिये। कुछ समय पूर्व अपनी मैडिकल सर्विस की मन्द उन्नतिसे अधीर होकर उसने आदेश दिया कि नर्सें तीन वर्षकी शिक्षा दो ही वर्षमें समाप्त कर डालें। लोगोंके समझानेपर भी उसने अपनी आज्ञामें परिवर्त्तन नहीं किया।

['जौन गन्थर' के आधारपर]

मुस्तफा कमालका प्रभाव

इसमें सन्देह नहीं कि शाहके जीवनपर सबसे अधिक प्रभाव पड़ा मुस्तफा कमाल पाशाका। सन् १९३४ में उसने कमाल अतातुर्कसे भेंट की—यह ईरानसे बाहर जानेका उसका प्रथम अवसर था। दोनोंने अपना जीवन फौजी सिपाहीसे प्रारम्भ किया है, लेकिन यहां पर ही उनका जीवन समाप्त नहीं हो गया; उन्होंने अपने देशवासियोंमें नया जीवन और नयी रूह फूंकी। दोनोंके जीवनमें पुराने कट्टरपन्थी शासन और रीतिरिवाजोंको तिलांजलि देकर राष्ट्रके चेहरेको पश्चिमीय ओर नवीन रंगमें रंगदेनेकी प्रेरणा रही है।

उसके अधिकांश सुधारोंमें टर्कीके कमाल पाशाकी ही प्रेरणा है। न्याय और दण्ड विधानको धर्मगुरू मुल्लाओं और काजियोंसे छनिकर नये ढंग की कानूनी व्यवस्था उसने जारी की। स्कूल खोले और उनमें सह शिक्षा शुरूकी। पुरानी जागीरी प्रथाका अन्त किया। ईरानके इतिहासमें पहले पहल रज़ाशाहने ही मैडिकल कालेजोंमें मनुष्य शरीरकी चीरफाड़ को शिक्षा का अंग बनाया। विवाह और तलाक प्रथामें सुधार किया। मुल्ला लोगोंने इन सुधारोंका घोर विरोध किया, पर रज़ाशाहने उनका दमन करके इस विरोध को खत्म कर दिया।

स्त्रियोंकी पर्दा प्रथा और गुलामी का भी रजाशाहने अन्त किया। असूर्यम्पश्या ईरानी स्त्रियों को उसने हरमसे बाहर निकाल कर सूर्यालोकित संसारके दर्शन कराये। इससे पहले कुरानके विधानके अनुसार स्त्रियां ९ वर्षकी आयुमें ही

विवाह कर दी जाती थीं, पर रजाशाहने कानूनन विवाहकी आयु ९ से १५ कर दी।

शाहको विदेशियोंके साथ बिल्ली-चूहेका खेल खेलना बहुत पसन्द है। कुछ समय तक उसने जर्मन लुफ्टहान्सा कम्पनीको देशमें एक हवाई सर्विस चालू रखनेकी आज्ञा दी, पर फिर इस आज्ञाको रद्द कर दिया। ब्रिटिश इम्पीरियल एयरवेजको उसने ईरानके ऊपरसे आकाश मार्गसे गुजरनेसे भी रोक दिया है, इसलिये उसे फारस की खाड़ीकी तरफसे होकर लम्बे रास्तेसे जाना पड़ता है। परन्तु डच के. एल. एम. लाइनको उसने ईरानके पूर्वीतटके ऊपरसे उड़नेकी आज्ञा दे रखी है और जास्क पर उतरनेका अधिकार भी उसे दे दिया गया है। डच लोगोंको हर दो मासके बाद यह आज्ञा नये सिरेसे लेनी पड़ती है।

कुछ भी हो, शाहके जीवन और चरित्रमें सामान्य लोगोंसे कुछ अधिक नवीनता और विशेषता है। उसने अपने मुर्दा और पिछड़े देशको अपने सामान्य बल और अदम्य उत्साहसे फिर जीवित जागृत बना दिया है।

नये शाह

रिज़ाशाहके बाद उनके बड़े लड़केको जिसकी उम्र इस समय २२ वर्ष है गद्दी मिली है। उनका जन्म सन् १९१९ की २६ अक्तूबरको तेहरानमें हुआ था। १५ मार्च सन् १९३९ में उन्होंने मिस्रके शाह फरूखकी बड़ी बहनसे शादी की थी।

रूसी मोर्चेपर भीषण संग्राम

रूसी मोर्चेपर भीषण संग्राम जारी है। कीव, ओडेस्सा, स्मोलेन्स्क और लेनिनग्राड इन चार स्थानोंके लिए मुख्य संघर्ष हो रहा है। लेनिनग्राडका मोर्चा सबसे अधिक भीषण है। कहा जाता है कि लेनिनग्राडके चारोंतरफ सात परकोटे हैं जो सन्तरीकी तरह सभी दिशाओंसे नगरकी रक्षा कर रहे हैं। इन परकोटोंको भेदना जर्मन सैन्यके लिए आसान नहीं पर यह निश्चित् है कि जर्मन सेनाओंकी पुरानी परम्पराओंको देखते हुए यह कार्य उसके लिए सर्वथा असाह्य नहीं है। जर्मनी इस मोर्चेका जल्दीसे जल्दी अन्त कर देना चाहता है, इसीलिए उसने यह योजना बनायी है कि चारों तरफसे घेरकर नगरके लोगोंके बाहर जानेके तमाम रास्ते बन्दकर दिये जांय। यही कारण है कि इस योजनाके अनुसार उन्होंने नगरको सब तरफसे घेर लिया है और अब नगरपर अधिकार करनेके लिए जबर्दस्त संघर्ष हो रहा है। रूसियों का कहना है कि वे जर्मनोंका खूब विनाश कर रहे हैं। उन्हें अब भी निश्चय है कि नगरका पराजय नहीं हो सकता। पर जर्मन दावोंमें यही कहा गया है कि लेनिनग्राडका विजय टेढ़ीखीर भले ही हो पर यह अधिक देरकी बात नहीं। ओडेस्सा और कीवके मोर्चेपर भी संघर्ष हो रहा है। दूसरी तरफ नीपर नदीको पार कर लेनेके कारण जर्मन वाहिनीने रूसको संकटमें अवश्य डाल दिया है। दक्षिणमें मार्शल बुदेनीकी सेनाएं सुदृढ़ स्थितिमें नहीं है। मार्शल तिमोशेंकोंकी फौजें, इसके विपरीत जबरर्दस्त प्रत्याक्रमण कर रही हैं। कहा जाता है कि वे स्मोलेंस्कसे केवल १५ मीलकी दूरी पर रह गयी हैं। कृष्णसागरमें ओडेस्साके नागरिकों और सिपाहियोंको रसद व युद्धसामग्री पहुंचानेके लिए जलयान लगे हुए हैं और यह तप-सा है कि यदि यही स्थिति जारी रही तो ओडेस्साका पतन इतना शीघ्र सम्भव नहीं होगा और वह कृष्णसागरसे मिलनेवाली सहायताके जोरसे सांस लेता ही रहेगा।

बलगेरियाको धमकी

बल्गेरिया यद्यपि जर्मनीके ही पंजेमें है पर रूसके खिलाफ अभी तक वह स्पष्ट रूपसे मैदानमें नहीं उतरा। किन्तु पिछले दिनों यह खबरें मिली थीं कि वहां टर्की पर आक्रमण करनेके लिये सैन्य संग्रह हो रहा है। सम्भव है इस सैन्य संग्रहका यह भी उद्देश्य रहा हो कि बलगेरियाकी मददसे रूस पर आक्रमण करके एक नये मोर्चेका सृजन किया जाय। यह अभी तक स्पष्ट नहीं हो पाया कि इसमें सचाई कहांतक है पर इन्हीं तय्यारियोंको देख कर रूसने बलगेरिया को धमकी दी थी कि यदि उसकी यह हलचलें जारी रहीं तो रूसके साथ उसके सम्बन्ध कटु और विच्छिन्न हो जायंगे।

फिनिश युद्धका खात्मा ?

फिनलैण्डने अपनी फिनिश-रूस युद्धसे पहले की सीमातक फिर अपने देशका विस्तार कर लिया है। ख्याल किया जाता है कि अब फिनलैण्डके युद्धका अन्त हो जायगा। अभी इन्हीं दिनों फिनिश फौजोंके कुछ दस्ते वापिस भी बुला लिए गये हैं। वीपुरी और लाडोगा झील तक का हिस्सा उन्होंने रूसियोंसे छीन ही लिया है। अब और अधिक युद्धकी उन्हें आवश्यकता भी नहीं।

स्पित्सवर्गन काण्ड

अभी पिछले दिनों आर्कटिक महासागरमें नारवेके समुद्रतटके निकटवर्त्ती स्पित्सबर्गन नामके द्वीप समूहको ब्रिटिश फौजोंने अपने अधिकारमें कर लिया है। ब्रिटिश राजनैतिक व फौजी हलकोंमें इस मामूली-सी घटनाको बहुत अधिक तूल दिया जा रहा है। कहा जाता है कि इस द्वी.की स्थिति जिस स्थान पर है वहां भी जर्मनीकी गश्ती पनडुब्बियां बहुधा पहुंच जाती हैं। इस द्वीप पर अधिकार कर लेने से रूसको ब्रिटेनकी तरफसे रसद और फौजी सामग्रीकी मदद पहुंचाना भी आसान हो जायगा। पर ऊपरसे देखने पर इस घटनामें कुछ अधिक महत्व नहीं दिखाई देता।

ब्रिटिश हवाई जहाज रूसके मोर्चेपर

ब्रिटिश रसद विभागके मन्त्री लार्ड बीवर ब्रुकने एक घोषणामें कहा है कि रूसकी मदद के लिए ब्रिटेनके हवाईजहाज बहुत बड़ी तादादमें भेज दिये गये हैं और वे भी रूसी हवाई सेनाके साथ मिलकर जर्मनीके खिलाफ संघर्ष करेंगे। यह अभी तक निश्चित् नहीं हो पाया कि ये जहाज मास्कोकी रक्षाके लिए नियुक्त रहेंगे या लड़ाकू जहाजोंके साथ मिलकर मोर्चेपर बमवर्षाका काम करेंगे।

अमेरिकाकी जर्मनीको चेतावनी

अमेरिकन विध्वंसक जहाज ‘ग्रीपर’ के विनाशके बादसे अमेरिकाके अनेक जहाज विभिन्न सागरोंमें डुबा दिये गये हैं। इन जहाजोंके डुबानेसे जर्मनीके विरुद्ध अमेरिका बहुत विक्षुब्ध हो उठा है। अमेरिकाके प्रेज़ीडेंट रूज़वेल्ट, गृहसचिव मि० कौर्डेल हल, नौमन्त्री कर्नल नॉक्स तथा वेण्डल विल्की आदिने बहुतसी वक्तृताएं और धमकियां जर्मनीको दी। धमकियोंमें इस बात को स्पष्ट करके कहा गया है कि इन हरकतोंसे जर्मनी संयुक्तराष्ट्र अमेरिका को जबरदस्ती रणक्षेत्रमें घसीट रहा है और यदि वास्तवमें ही जर्मनीने यह हरकतें बन्द नहीं की तो अमेरिका की रक्षाके लिए अवश्यक समुद्री क्षेत्रमेंसे जर्मन पनडुब्बियों को निकाल भगानेका बीड़ा अमेरिकन नो-विभाग को उठा लेना पड़ेगा।

इन धमकियों का जर्मनी पर उतना ही असर हुआ है जितना कि गेण्डेपर कंकरीका असर होता है। जिस दिन यह घोषणा की गयी है ठीक उसी दिन जर्मनीने मानों अत्यन्त धीर और उद्धत भावसे एक और अमेरीकन जहाज डुबा दिया है। इस प्रकार बार बार जर्मनी की तरफसे युद्धकी चुनौती मिलने पर भी अमेरिका केवल गीदड़-भभकियां दिखा रहा है पर युद्ध में नहीं आता वह केवल इसी लिए कि उसमें अभी दम ही नहीं। अमेरिकाने जिस शान्ति और चैनकी बंसी आजतक बजायी है उससे कोई भी राष्ट्र एकाएक युद्धमें नहीं आ सकता।

जापान और अमेरिकामें खटकेगी ?

सुदूर पूर्व में जापान और अमेरिकाके दर्म्यान खटकने की खबरें आम तौर पर आकस्मिक उल्कापात की तरह बीच-बीचमें मिलती रहती हैं। इस वार भी सुननेमें आया है कि जापान और अमेरिकामें खटकेगी भी और केवल इसी बात की राह देखी जा रही है कि अन्तिम डिण्डिमका घोष हो। पर मालूम होता है कि यह भी केवल मांदमें बैठ कर चुनौती देने और आंख दिखाने से अधिक मूल्य नहीं रखता। फलतः सुदूर पूर्वमें अभी कोई आशंका नहीं।

अटलांटिक घोषणा

मि० चर्चिल की साफ गोई

अटलांटिक महासागरमें प्रेज़ीडेंट रुज़वेल्ट और मि० चर्चिल की मुलाकातके बाद ‘अटलांटिक चार्टर’ के नामसे आठ धाराओं की जो एक लम्बी घोषणा शान्ति की परिभाषाओंके रूपमें की गयी थी, उसको लेकर हमारे देशके बहुत से नरम, उदार और सरकारके खैरख्वाह लोगोंमें आशाओंका समुद्र उमड़ आया था। उन्हें विश्वास था कि जब शान्ति संसारके अन्यान्य देशोंको बांटी जायगी तो भारत ही उससे क्यों वंचित रहेगा। इस घोषणा से उनकी खुशामदी और परमुखापेक्षिता की वृत्ति को जबर्दस्त आत्मसन्तोष मिला था। पर समझदार लोग उस समय भी स्पष्ट समझते थे कि संकट कालमेंकी गयी इन घोषणाओंका कोई मूल्य नहीं। ब्रिटेन और जर्मनीके तानाशाह सभी एक ही थैलेके चट्टे-बट्टे हैं। जिस प्रकार एक प्रतिज्ञा करके उसे ठुकरानेमें जर्मनीको कुछ कठिनाई महसूस नहीं होती, कोई लज्जा नहीं अनुभव होती और साथ ही घोषणाओंकी भाषाको इतना लचकीला बना लिया जाता है कि इच्छानुसार उनका अर्थ जो चाहे किया जा सके तब भारतके लिए भी इन घोषणाओंका मन माना अर्थ नहीं लगाया जा सकेगा इसकी क्या गारण्टी है। और गारण्टी हो या नहीं; यदि एक बार प्रतिज्ञा और आश्वासन देनेके बाद भी उन्हें सरकार पूरा नहीं करे तो कौन उसको पकड़ने जायगा। यह कोई अनहोनी बात हो सो भी नहीं, इस प्रकारकी घटनाएं हमारे ही इस हतभाग्य देशके साथ पहले घट चुकी हैं। गत महासमरके समय भी माण्टेग्यू चेम्सफोर्ड सुधारों की घोषणा भी की गयी थीं और न जाने इसी तरहके और भी कितने आश्वासन बीच-बीचमें भारतको दिये गये हैं पर क्या वे पूरे ही हुए हैं? तब इस प्रकार अपने आपको प्रवंचित करके हमारे नर्म दली नेताओंने क्या पाया, यह समझ नहीं आता। और अन्तमें ब्रिटिश प्रधानमन्त्री मि० चर्चिलने ही स्वयं अपने हाथोंसे इन नादान दोस्तोंके मानसिक सन्तोषका प्रासाद खण्ड-खण्ड कर दिया है। उन्होंने पार्लिमेंटमें इस बातकी स्पष्ट घोषणा कर दी है कि “अटलाण्टिक चार्टर” का भारतके साथ कोई सम्बन्ध नहीं। उसकी स्थिति अब भी पहलेकी-सी है उसे और कोई नयी आशा बान्धनेका कारण नहीं। “अगस्तकी आफर” से हम एक कदम भी भारतके सम्बन्धमें नहीं बढ़ सकते। इस घोषणासे उन लोगोंकी आंखें खुल गयी होंगी जो मि० चर्चिल और प्रेज़ीडेंट रुज़वेल्टको धर्मावतार और न्यायका देवता समझ बैठे थे। आशा करनी चाहिए कि भविष्यमें वे ऐसी झूठी उम्मीदें नहीं पालेंगे जिनके बातकी बातमें टूट-फूट जानेका खतरा हो।

रस्सी जल गयी पर बल नहीं गये

इस घोषणासे एक बात समझमें आ जाती है कि मि० चर्चिलमें और कोई गुण हो या नहीं पर एक असाधारण गुण है कि वे अन्तिम दम तक, खूनकी अन्तिम बूंद तक जूझनेवाले व्यक्ति हैं। महाभारत में दुर्योधनने जो प्रतिज्ञाकी थी—“सूच्यग्रनैव दास्यामि-

(शेष पृष्ठ २४ के कालम ३ पर)

शिक्षा और स्वास्थ्य

श्री मनोहर शर्मा

दुबला पतला शरीर, चेहरे पर पीलापन, आँखें फीकी और दांत कुछ मैले-से–ये सारी बातें एक साथ जब मैंने उस विद्यार्थीमें देखीं तो मैंने पूछा–“ क्यों भाई इन दिनों बीमार थे क्या ? ” उसने अपनी गंभीरता को कायम रखते हुए उत्तर दिया—“ नहीं तो, मैं बिलकुल ठीक हूँ। इन दिनोंमें मुझे कोई बीमारी नहीं आई ।” बात भी ठीक थी। देखने वाले को वह विद्यार्थी बीमार मालूम होता था, परन्तु वह अपनेको पूर्ण स्वस्थ्य समझता था । उसका शरीर गिरा हुआ था, मगर उसका उससे कोई हर्ज नहीं हो रहा था। और उसकी पढ़ाई सानन्द और सपरिश्रम चल रही थी। वह दर्जेमें बड़ा तेज था और इसी कारण अध्यापकों में और सहपाठी छात्रोंमें उसका कुछ सन्मान भी था। उसके सम्बन्धमें एक बात और भी मालूम हुई; वह यह कि वह गांवमें “ कैरमबोर्ड ”का “ चेम्पियन ” था।

कहना न होगा कि चालू शिक्षाने विद्यार्थी समाजके स्वास्थ्यको बहुत कुछ गिरा दिया है। गरीबीके कारण खानेपीनेके लिए उचित मात्रामें पौष्टिक पदार्थ नहीं मिलते और पाठ्यविषयोंकी अधिकता स्वास्थ्यको सुधरने नहीं देती । फल यह होता है कि शिक्षा प्राप्त करनेके बाद जीवनसंग्रामकी कठिनाइयोंके आगे शिक्षित बाबूका शरीर असफल साबित होता है और यदि आगेकी यात्रा कुछ जरा भी कठिन हुई तो यात्रीको अपने सामने निराशाकी आंधी उठी हुई नज़र आने लगती है। परिणाम यह होता है कि यौवनका बसन्त भी देहलताके लिए दबे पांव आनेवाला और चुपचाप खिसक जाने वाला अतिथि साबित होता है।

यद्यपि हम यह जानते हैं कि शिक्षाका अर्थ है विकास और विकास का मतलब है पहले शारीरिक उन्नति और उसके पीछे या साथ २ दिमागी तरक्की। परन्तु फिर भी उन्नतिके असली पहलूकी तरफ विद्यार्थी–समाज उदासीन रहता है। स्कूल– कॉलिजोंमें शारीरिक विकासकी तरफ भी ध्यान दिया जाता है मगर उस ध्यानको लापरवाही भी कह दें तो अनुचित नहीं। आज का व्यायाम शरीरको पुष्ट करनेके कम गुण रखता है। मनोरंजन की मात्रा ही उसमें अधिक होती है। जहां लड़कोंको चेम्पियन होनेका पुरस्कार मिलता है वहां भी पैरेलल बार आदिके द्वारा बनाया हुआ सुन्दर और फलस्वरूप कम टिकाऊ स्वास्थ्य और पुष्टता ही नज़र आती है, वहां भी अखाड़े द्वारा मिले हुए लौह स्वास्थ्य की कमी ही नज़र आती है।

शिक्षित समाज शारीरिक परिश्रम वाले कामों को नीची नज़र से देखता है। इस मनोवृत्तिने हमें कमजोर बनाया है। जिसमें शरीर पर जोर पड़ता है या कपड़ों पर धूल लगती है उन कामों को पढ़े लिखे लोग अपने लायक नहीं समझते। उन्हें क्लर्कगिरी ही सर्वोत्तम पेशा नज़र आता है और फलस्वरूप वे अपनी स्मृति को अधिक से अधिक लदू बनाने की चेष्टा करते हैं और अपने दुबले पतले शरीर की लचक को और ऊपरी टीपटाप को भद्र जनोचित समझते हैं। जब विचारधारा ही इस कदर गुलाम हो गई है, तो फिर जिस्मानी ताकत को कौन क्या समझेगा। लोग सोचते हैं विद्यार्थीजीवन में अखाड़े की धूल वे चाटेंगे जिनको पहलवानी करनी है या किसी दंगल में मुर्गों की लड़ाई देखनेके लिए विशाल जन समूह को इकट्ठा करना है।

हम देखते हैं कि देहात का रहने वाला हर एक जवान इस बातके लिए पूरी चेष्टा करता है कि वह अपने गांव भर में सबसे ज्यादा ताकतवर हो। वहां उन लड़कों की तारीफ भी कम नहीं होती जिनका शरीर देखने लायक होता है। वहां डण्ड बैठक और कुश्तीका चक्कर सा चलता रहता है, जिसमें सब जवानो को स्फूर्ति और पुष्टता का इनाम मिलता है। इधर शहरों में देखिए तो हरेक लड़का इस कोशिशमें लीन रहता है कि उसे ही कक्षामें अधिकसे अधिक नम्बर मिलें। उन लड़कोंके अभिभावक बड़ा आनन्द मनाते हैं, जो कक्षामें पहला स्थान प्राप्त करते हैं। फल यह होता है कि देहाती लड़का किसान होनेपर आनन्दसे अपने खेतोंमें काम करता है और शहरी छात्र कहीं आफिसमें क्लर्की प्राप्त करने पर जैसे-तैसे टॉनिक दवाइयोंके सहारे शरीर की गाड़ीको लचर पचर खेंचता है। देहाती लड़केमें एक बड़ी भारी कमी रह जाती है कि किताबी ज्ञानसे उसका कोई सम्बन्ध नहीं रहता मगर फिर भी जीवन क्षेत्रको सफल बनानेके लिए वह अपने साथी बैलसे कम ताकत वाला नहीं है। इधर शहरी लड़के के लिए उससे भी बड़ी भूल होती है जब कि स्कूलका काफी ज्ञान प्राप्त करने पर भी वह अरब सागरको कागज़की नावसे पार करना चाहता है और उसका पढ़ा लिखा ज्ञान उसे ज्यादा फायदा नहीं देता।

प्राचीन कालके आश्रम इस दिशामें पूर्ण सचेष्ट थे और शरीर विकासका ध्यान उस समयके विद्या स्थानोंमें बहुत ऊँचा उठा हुआ था। खुली हवामें सारा काम होता था और दिनचर्या तपस्यामय एवं बँधी हुई थी। उन सत्यपूत स्थानोंमें पचीस वर्ष तक रहनेका फल यह होता था कि अध्ययनके साथ साथ शरीर भी पूर्ण विकासको प्राप्त हो जाता था। इतना सब हो चुकने पर हमारा स्नातक गृहस्थाश्रममें प्रविष्ट होता था। ऐसी हालतमें एक एक गृही राष्ट्रका स्तंम्भ रूप होता था और जीवनके कर्तव्य को बड़े आनन्दके साथ निभा सकता था। इसके बाद चालू जमाने की तरफ देखें तो अतीतमें जीवन दिखाई देता है और वर्तमानमें सड़ान। जब होना यह चाहिए कि पुरातनसे नूतन किसी प्रकार भी पिछड़ा न हो क्योंकि पुराने अनुभवों का यदि लाभ नहीं उठाया जाय तो फिर प्राचीन साहित्यके गौरवमय होने का अर्थ ही क्या रह जाता है। इससे ज्यादा अफसोस और क्या होगा कि हमारा छात्र यौवनके आनेसे पहले ही पढ़ाई समाप्त करके गृही बन जाता है और फिर हम यह सोचने बैठते हैं कि देखें उसके शरीरमें जवानी का उफान कब आता है।

कहना न होगा कि यौवन किसी अवस्थाका नाम नहीं है। वह तो शरीरके पूर्ण विकासका ही नाम है। हमने यहां अवस्थाके चढ़ आनेको हो जवानी नाम देकर बड़ी भारी भूलकी है। कई आदमी उम्र होने पर भी जवान नहीं हो पाते और कई अवस्था गिरते समय भी युवकही नज़र आते हैं। यह खास अंतर है कि कई आदमी उम्र पाने पर भी यौवन नहीं पाते या उसकी एक छाया सी ही देख पाते हैं, जब हरेक प्राणीके लिए यौवन न पाना संसारमें न आनेके बराबर है क्योंकि शरीरका पूर्ण विकास ही तो यौवन है।

जिस छात्र के सामने पहिले–धर्मार्थ काममोक्षाणां मूलं मुख्यं कलेवरम् “ आदर्श वाक्य रहता था, अब उसीके आगे और कुछ नहीं सिर्फ B. A. की डिग्री रहती है और क्लर्क बननेका ध्येय। मगर हमें जल्दीसे जल्दी इस दिशामें वापिस लौटनेकी जरूरत है क्योंकि शिक्षा संस्थाओंमें ही राष्ट्रकी इमारतकी नींव पड़ती है। सिर्फ किताबी ज्ञान और मानसिक विकासका नाम ही शिक्षा नहीं है। यह शिक्षा तो आधीसे भी कम है यदि हमने शरीरको तैयार नहीं किया और उसको हर तपस्या या कठिनाईके लिए समर्थ नहीं बनाया। यदि जवानीमें ही बुढ़ापा मिला तो इसका स्पष्ट अर्थ है कि जीवनमें ही मृत्यु मिली।

दूसरी बात यह है कि जब जीवनसंग्रामकी कठिनाइयां दिन-ब-दिन ज्यादा ज्यादा बढ़ती जा रही है, तो फिर उसके लिए हर सिपाहीको हर प्रकारसे और भी अधिक तैयार होना चाहिए। ऐसी अवस्थामें पुष्ट शरीरकी तो पहली आवश्यकता है क्योंकि उसी बैलको घाणीमें जुतना है। जो छात्र कमजोर शरीरको लेकर जीवनमें प्रवेश करते हैं कहना न होगा कि उनके लिए संसार एक खतरा साबित होता है, जहाँ पद पद पर विघ्न-बाधा दिखाई देते हैं।

परदा

श्रीमती सुशीला गट्टानी

परदे के हामी प्राचीन मर्यादाके नाम पर इस प्रथा को जीवित रखना चाहते हैं। मगर परदा हमारी प्राचीन मर्यादा का द्योतक नहीं है। आप किसी चित्रशाला में जाइये जहाँ सीता, सावित्री, द्रौपदी, दमयन्ती के चित्र हों–क्या उनको आप परदे में पायेंगे? परदा प्रथा बहुत पुरानी नहीं। हिन्दुओं की कमजोरी के कारण मुसलमानों का भारत पर आधिपत्य हुआ । मुसलमान बने मालिक और हिन्दु हुए गुलाम। और यह ज़रूरी बात है कि मालिक की संस्कृति की छाप गुलाम पर पड़ती ही है। क्या यह बात आज–कल भी हम नहीं पाते? क्या अंग्रेजी सभ्यता व संस्कृति हमारे भारतीय जीवनकी नस-नसमें फैली हुई नहीं है?

मुसलमानोंका प्रभाव उत्तरी भारत पर अधिक रहा और इसलिये परदा प्रथा उत्तर भारतमें ही अधिकतः पाई जाती है।

मुसलमानोंके स्वेच्छाचारसे बचनेके लिये भी संभवतः यह प्रथा अपनाई गई हो; परन्तु आज कल इस प्रथाको कायम रखनेकी आवश्यकता नहीं।

जो आदमी प्राचीन ग्रन्थोंके नाम पर, धर्म एवं सभ्यता की दुहाई देकर इस प्रथा की प्रशंसा करते हैं वे जनताको गुमराह करते हैं।

आजकल परदा तो दो तरहके लोग करते हैं। अव्वल तो वे जो स्त्री को पुरुषकी बांदी समझते हैं, जो समझते हैं कि घरकी चहार दीवारीमें सीमित रहना ही स्त्रियोंका काम है, ‘ पुरुष हुकूमत करनेके लिये ’ ये भाव लेकर ही जो जन्मे हों। और दूसरे हैं वे पुरुष जो परदेको अपनी इज्जत व शान समझते हैं, बड़े धनकी निशानी समझते हैं। उनके, घरमें चाहे भूंजी भांग न हो पर थोथे अभिमानमें पले होनेके कारण, अपन कुटुम्बकी मर्यादा (?) के कारण उस प्रथाको पालना अपना कर्तव्य समझते हैं। एक शब्दमें यह सब अशिक्षा एवं कुशिक्षाका फल है।

परदे की बुराइयां गिनाने की ज़रूरत नहीं। वे बहुत हैं और उन्हें सब लोग, परदा करने वाले एवं न करने वाले जानते हैं। पर तरस तो इस बात पर है कि सब कुछ जानते हुए भी हम आंखें बन्द किये पड़े हैं।

परदा हमारी गुलामी का दूसरा रूप है। जिस मुल्कमें पुरुष स्त्रियों को परदेमें रख हमेशा गुलाम बनाये रखनेके प्रयत्नमें हो वह मुल्क भला आजादी पाने का अधिकारी अपने आपको कैसे समझे? भारत जब तक अज़ाद था उसमें परदा नहीं था। जब से भारतमें परदा है वह गुलाम है। इस सही बात से हम क्यों सीख लेने को तैयार नहीं हैं?

★ **रूबी प्रगति पथपर** ★

लोकप्रियता का अकाट्य प्रमाण ★ **दृढ़ता का सच्चा सबूत**

★

१०० %

- स्वदेशी
- टिकाऊ
- दृढ़

बीमा कंपनी

★

प्रगतिके आंकड़े

विभाग	प्रिमियम की आवक	
	सन् १९३७	सन् १९४०
आग	रु. ६,५५,०४७	रु. १४,१७,०११
मोटर और अकस्मात्	रु. ७३,९८६	रु. २,४६,७८१
समुद्रीय	रु. ७२,२८१	रु. ४,६६,५९०
पूंजी	रु. १७,९४,३४२	रु. २७,९४,१४५

जिंदगी १९४० के प्रथम वर्ष में किया गया कामकाज .... रु. ३०,६५,१००

- आग
- मोटर
- अकस्मात्
- जिंदगी
- समुद्रीय

और

- मजदूरोंके बदले आदि के बीमेका कामकाज किया जाता है

रूबी जनरल इन्श्युरंस कं. लि.

टे. नं. २०५६० और ३१९२९
टेलिग्राम्स : 'सनशाइन'
'SUNSHINE'

चेअरमन
श्री बी. एम. बिड़ला

जनरल मेनेजर इनचार्ज, बम्बई डिविज़न
श्री बी. के. सेतलवाड़

ऑफिस—४५-४७ अपोलो स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई

विवाह— इतिहास और विश्लेषण

एडवर्ड वैस्टरमार्क

विवाह शब्द साधारणत: एक सामाजिक संस्थाके रूपमें प्रयुक्त किया जाता है। इस प्रकार विवाहकी परिभाषा करें तो कहा जा सकता है कि विवाह एक पुरुष या अनेक पुरुषोंके एक या अनेक स्त्रियोंके साथ संबंधका नाम है-- ऐसा संबंध जो रूढी और कानून द्वारा मान्य है और जिसके अन्तर्गत, संबंध में बंधने वाले दोनों पक्षों, स्त्री तथा पुरुष और उनसे होनेवाली संतानोंके कुछ अधिकार और कर्तव्य भी शामिल हैं। विवाह में विषयभोग का अधिकार भी आजाता है, परंतु इसका अर्थ यह नहीं कि विवाह नियत विषयभोगका ही नाम है—यह इससे कुछ अधिक है। यह एक आर्थिक संस्थान है और इसका विवाह करने वाले पक्षोंके मिल्कियतके अधिकारों पर अनेक प्रकारसे असर पड़ता है। प्रायः विवाह नये पैदा होने वाले व्यक्तिका उसकी जातिकी सामाजिक रचनामें क्या स्थान है, इस बातका भी निर्णय करता है। परंतु यही इसका प्रधान कार्य नहीं है।

जहां तक विवाहके आदिस्रोतका सम्बन्ध है, मैं समझता हूं यह संभवतः मनुष्यकी अत्यंत प्राचीन कालिक आदतसे विकसित हुआ है। यह माननेका कारण है कि बहुत प्रारंभ के समयमें भी पुरुष और स्त्री (एक या अनेक) की एक साथ रहने, एक दूसरेके साथ विषय संबंध रखने और संतानोंको पालने की आदत थी। पुरुष कुटुम्बका पालक और रक्षक होता था जबकि स्त्री घरमें बच्चोंकी देखभाल करनेवाली पुरुषकी सहायिका होती थी। यही आदत पहले रूढ़ि और परंपरा द्वारा मान्य हुई और बादमें कानून द्वारा और परिणामस्वरूप अंतमें एक सामाजिक संस्थानके रूपमें परिणत हो गयी।

परिवार और कुटुम्ब अत्यंत घनिष्ट रूपमें परस्पर संबंधित हैं। शुरूमें नवजात शिशु के पालनपोषण के लिये ही स्त्रीपुरुष एक साथ रहते थे। वास्तवमें सिर्फ विवाहका रिवाज पूरा करने या सगाई हो जाने से ही सच्चा विवाहित जीवन संतानके उत्पन्न होने के बाद प्रारंभ होता है। बहुतसे मामलों में तो तबतक विवाह नियत ही नहीं होता जबतक संतान उत्पन्न या स्त्री गर्भवती नहीं हो जाती। बहुत बार ऐसा भी होता है कि जिन संबंधोंसे संतान उपन्न होती है, वे पहिले होते हैं और विवाह उसके बाद। कभी कभी वे संबंध ही विवाहको अनिवार्य बना देते हैं। इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि कुटुंबमें ही विवाहका मूल है, विवाहमें कुटुंबका मूल नहीं।

मनुष्यकी असभ्य जातियों में भी विवाहका अस्तित्व है, बल्कि हमारी अपेक्षा भी उनमें विवाहका प्रचलन अधिक है। कितने अधिक विवाह हों, यह तो पुरुषकी विवाह–योग्य आयु पर ही निर्भर होता है। अब विवाह करना कम हो गया है क्योंकि आजके समाजमें कुटुंबके भरण-पोषणकी कठिनाइयां बहुत बढ़ गयी हैं। साधारण आर्थिक दशाके उन्नत होनेपर भी, सुखसाधनोंके निरंतर बढ़ते हुए स्टैंडर्डके कारण लोग विवाहका साहस करनेसे कतराते हैं। परिणाम स्वरूप विवाहों में कमी आगई है, और विवाहोंका खात्मा होता जा रहा है। विवाहमें कमी होनेका एक दूसरा कारण स्त्रियोंकी बढ़ती हुई आर्थिक आत्म–निर्भरता भी है। एक आधुनिक लेखकने ठीक ही लिखा है कि "शिक्षा और संस्कृतिके प्रसार तथा इस युगके नवीन आविष्कारों और अनुसंधानोंके फलस्वरूप एवं व्यापार, संभोग और धनकी वृद्धिकी वजहसे पुरुषों और स्त्रियोंकी रुचियां बहुत व्यापक हो गयी हैं, उनकी अभिलाषाएं बढ़ गयी हैं तथा नवीन मनोरंजन और आनंदके साधन समाज द्वारा उन्हें मिलने लगे हैं। जीवनके आनंद–साधनोंके बढ़ जानेके कारण, लोगोंकी नजरोंमें विवाहका आनंद या सुख बहुत कम रह गया है। अब जीवनमें गृहस्थीका पहिले जैसा बड़ा स्थान नहीं रह गया। पुरुष हो या स्त्री—दोनोंके लिये ही अब गृहस्थ जीवन बहुत कम महत्वपूर्ण है। एकाकी जीवनकी अपेक्षा विवाहित जीवनका जो लाभ था अब वह जाता रहा है। अब इतने विविध प्रकारके मनोरंजन उपलब्ध हैं, जिनका आनंद शादीके बगैर भी कहीं ज्यादा लिया जा सकता है।" इसके अतिरिक्त "समस्त जातिमें अधिक श्रेष्ठ संस्कृतिके प्रसारके कारण पुरुष या स्त्री को ऐसा योग्य व्यक्ति मुश्किलसे मिल पाता है जिसे वे अपना जीवन–संगी बनाना चाहें। उनकी आवश्यकताएं बहुत बढ़ी-चढ़ी हैं और योग्यताका स्टैंडर्ड भी ऊंचा हो गया है। उन्हें ऐसे व्यक्ति बहुत कम मिलते हैं जो उनके आदर्शके अनुरूप हों और न वे स्वयं ही किसी दूसरेके आदर्शके अनुरूप हो सकते हैं।"

समाज विवाहको कई प्रकार से नियंत्रित करता है। एक तो वह साथियोंके चुनावके संबंधमें कुछ खास नियम निर्धारित करता है। एक जातीय विवाहके कुछ नियम एक ऐसे व्यक्तिको जो कि दूसरी जातिका है विवाह करने से रोकते हैं। कुछ अन्तर्जातीय विवाहके नियम हैं जो कि एक ही जातिके लोगों को उसी जातिके लोगोंके साथ विवाह करने का निषेध करते हैं। (हमारे समाजमें जाति, गोत्र और कुटुंब की विवाह प्रथा उन्हीं नियमोंकी द्योतक है) आधुनिक संस्कृति थोड़े या बहुत प्रमाणमें उन बंधनों को ढीले करने, या तोड देने की कोशिश कर रही है, जिनके कारण जातियां, राष्ट्र, धर्म, और समाज की विभिन्न श्रेणियोंके बीच इतना अलगाव पैदा हो गया है। इसने इस लिये एक जातीय विवाहके नियमोंको शिथिल और ढीले बना दिया है, और उसकी सीमाको इतनी विस्तृत बनाया है जिसमें स्त्री-पुरुष विवाह कर सकें और आम तौरपर कर रहे हैं। मानव इतिहासमें यह उपक्रम अत्यंत महत्व रखता है। एक जातीय विवाह प्रायः जातीय या वंशाभिमान या धार्मिक सहिष्णुतामें जन्म लेता है और इन संकीर्ण भावनाओंको कायम रखता और दृढ़ करता है जब कि अंतर्जातीय विवाहके बाहुल्यका इसके ठीक विपरीत असर होता है। विजातीय विवाहकी भावनाका मूल, इसके विपरीत, एक विचित्र लैङ्गिक प्रवृत्ति, बचपनसे ही साथ रहनेवाले व्यक्तियोंमें पारस्परिक लैंगिक संबंधके प्रति घृणा और एक ही जातिमें संतति–विकासके हानिकर परिणामोंमें है। इसलिये इन्हीं नियमोंको अधिकांश माना और पालन किया जाता है।

इसी प्रकार विवाहके ठेकेके भी कई तरीके हैं। एक तो स्त्रीको उसकी तथा उसके संबंधियोंकी अनुमति के बिना ही बलपूर्वक हथिया लेना। यह अपहरण विवाह है और संसार के कई भागोंमें पाया जाता है। बहुतबार खास तौरसे वधू की ओरसे और भी विरोध या कष्ट प्रदर्शित किया जाता है और कहा जाता है कि पुराने अपहरण-विवाहका ही यह एक अवशेष है। इसके आधार पर प्रायः बहुतसी रुढ़ियाँ बन जाती हैं। वधू की यह दिखावेकी अनिच्छा व रुदन, समस्त इन्डो–युरोपियन प्रजाओंमें पाया जाता है। गृह्यसूत्रमें वधूके इस रुदन के संबंधमें एक प्रार्थना का भी उल्लेख मिलता है, जिससे सिद्ध होता है कि प्राचीन हिन्दू विवाह प्रथामें, जैसा कि अब भी है, यह रुदन एक आवश्यक अंग समझा जाता था। रोमन वधू अपनी माताकी गोदमें बैठकर भाग जाती थी और दूल्हा और उसके मित्र उसे बलपूर्वक उठा ले जाते थे। स्पार्टा के वर बनावटी आक्रमण कर के वधू को उठा ले जाते थे। जिस प्रकार वधू का विरोध या रुदन उस पुरानी अपहरण–विवाहकी प्रथाके अवशेष हैं उसी प्रकार उसके संबन्धियोंका विरोध भी उसी प्रथा का अवशेष है।

क्योंकि स्वभावतः ही उसके संबंधी उसे विदा करना नहीं चाहते या विदा करते हुए दुःखी होते हैं। इस लिए उनसे अलग होते वक्त वह भी दुःखी होती है और इस प्रकार दोनों ओरसे विवाहके समय रोने-धोनेकी विधि पूरे प्रदर्शनके साथ होती है।

विवाह न केवल ठेकेवाले पक्षोंसे ही ताल्लुक रखता है, बल्कि दूसरे व्यक्तियोंसे भी उसका संबंध है। इसलिये विवाह करते वक्त उनकी सम्मति भी आवश्यक हो सकती है, या उन्हींके द्वारा यह संबंध जोड़ा जा सकता है। दूसरी तरफ इस बारेमें वर-वधूकी इच्छाको बिलकुल छोड़ा भी जा सकता है। छोटे बालक-बालिकाओंकी सगाई आज भी कई असभ्य जातियोंमें चालू है, ऐसे मामलेमें तो दोनों पक्षकी स्वीकृतिका सवाल हो ही नहीं सकता। युवा पुरुषकी अपेक्षा युवा स्त्री अपने साथी के चुनाव के मामले में दूसरों की इच्छा पर बहुत ज्यादा आश्रित होती है। जबकि विवाह के द्वारा दो अपरिचित कुटुंब, या संबंधियोंका विशाल वर्ग समीप आ रहा होता है, हमारे बुजुर्ग, मातापिता या सगे संबंधी इस मामले में अपनी राय देना चाहें, तो इसमें आश्चर्य ही क्या? कुटुंबके अलग अलग व्यक्तियों के बारेमें कुटुंबके प्रधान आदमी को हस्तक्षेप करने का हक ज़रूर है। मातापिता, चूंकि उनमें स्वाभाविक श्रेष्ठता है, अपने बालकों पर अधिकार रखते हैं खास कर जबकि वे असहाय होते हैं। इसी वजहसे पुत्री बड़ी होने पर भी अपने पिताकी सुरक्षामें रहती हैं। इसके अलावा कुछ अंशोंमें मातापिता संतानों पर स्वामित्व के अधिकार रखते हैं क्यों कि वे उनके जन्मदाता और पालक हैं और कई बार पिताको स्वामी समझा जाता है क्यों कि वह उनकी माताका स्वामी है। खासकर अरब संस्कृति में संतानोंकी नम्रता तथा धार्मिक विश्वासोंमें निकट संबंध माना जाता है। संतानोंके कर्तव्योंका वह धार्मिक स्वरूप हिन्दू और मुसलमानोंमें भी महत्व का स्थान रखता है। प्राचीन हिन्दू विचारके अनुसार माता–पिता और गुरु ये तीनों वेदों, तथा ब्रह्मा–विष्णु और महेश इन तीनों देवोंके तुल्य हैं। जो व्यक्ति इन के प्रति आदर नहीं दिखता उसे धार्मिक क्रियाओंके लाभोंसे च्युत कर दिया जाता है। लेकिन यह परिवार संस्था धीरे धीरे अपने महत्व को खो रही है और आधुनिक समय में कुछ ऐसे तत्व संबद्ध हो रहे हैं, जो पितृत्व की सत्ताको खत्म करके छोड़ेंगे।

छोटी जातियोंमें विवाहका सम्बन्ध जोड़नेवालोंको इस सम्बन्धकी अनुमति यों ही मुफ्तमें नहीं दे दी जाती। कई बार वधूके पिता या दूसरे रिश्तेदारोंके सामने कुछ खास विचार पेश किया जाता है या तो इस रूपमें कि वे एक कन्या देनेके बदलेमें वर पक्षकी एक कन्या अपने कुटुम्बमें विवाहके लिए लें या कन्या लेनेके उपकारके बदलेमें वे वर पक्षकी कोई सेवा करें या किसी तरहकी सम्पत्ति दें।

हिंदुस्तानमें लडकीके लिये योग्य पतिको ढूंढनेकी कठिनाईके कारण ही वधूकी खुले आम बिक्री होती है। जब हलकी जातियां अपने वधूके लिये पैसे देती हैं तब ऊंची जातियां वरके लिए। और कई बार खासकर जब

(शेष पृष्ठ २४ के काल्म २ पर)

श्रीनिवास कॉटन मिल्स लिमिटेड

बंबई

अपने कलापूर्ण, सुन्दर और टिकाऊ कपड़े के लिये मशहूर है।

★

ट्रेड नेम्स

नरेन्द्र गोल्डन प्लम एस. एन. सी. फॉक्स ग्लोब नगेन्द्र	धुला लांग क्लॉथ
के के के के के ओ ओ ओ ओ ओ हिन्दनो ताज असली फूल वनर्जी यू. पी. एक्सप्रेस सी. पी. एक्सप्रेस मारवाड़ एक्सप्रेस	धुली धोतियां व साड़ियां
डायमण्ड हाल डायमण्ड चेन डायमण्ड बैटरी बंगाल फैशन प्रोमिनेंट लीडर प्रोमिनेंट फैशन	धुली या कोरी पॉपलीन
फ्लाइंग मून मालिनी मिस बिब्बो	चेक वायल

आदि आदि

★

इस मिल में सब प्रकार का धुला व कोरा कपड़ा—लांग क्लाथ, शर्टिंग, वायल, धोतियां, साड़ियां, मलमल, छपी हुई—छींट, वायल, बोस्की आदि कपड़ा विविध डिज़ाइनों और रंगों में तैयार होता है।

यदि आप उत्तम-सुन्दर-कलापूर्ण, टिकाऊ तथा सस्ता कपड़ा चाहते हैं, तो हमारे मिल के बने हुये कपड़ों से आप को पूर्ण संतोष मिल सकेगा—क्योंकि यह मिल भारतकी सामाजिक, आर्थिक अवस्था, तथा सर्वसाधारण की रुचि को लक्ष्य में रखकर ही सब प्रकार के वस्त्र तयार करती है।

बाज़ार में कपड़ा खरीदते समय इसी मिल का कपड़ा खरीदिये।

इस मिल का बना कपड़ा इस्तेमाल कर आप निश्चय ही प्रसन्न होंगे।

★

ट्रेड मार्क

महाल
पेटल ब्यूटी
गोल्डन प्लम
फॉक्स ग्लोब
श्रीरामपंचायतन
चार्मिंग ब्यूटी
माधुरी
मुरली
ईस्टर्न ब्यूटी
सेक्रेड फ्लूट
श्रीराम

★

—हमारी विशेषता—

रेडियोगर्ल और नरेन्द्र क्वालिटी का धुला लांगक्लाथ—इसे बरतकर आप अवश्य सन्तुष्ट और प्रसन्न होंगे।

— हमारे सेलिंग एजेण्ट —

बम्बई
दी बम्बई एजन्सी कम्पनी लिमिटेड
सर विठ्ठलदास गली,
मूलजी जेठा मार्केट, बम्बई नं० २

कलकत्ता
मंगनीराम रामकुमार
६५ बॉसतल्ला स्ट्रीट
कलकत्ता

कानपुर
ज्वालाप्रसाद राधाकिशन,
काहू कोठी, कानपुर

अमृतसर
शामदास कपूर एण्ड कम्पनी
कटरा अहलुवाल
अमृतसर

दिल्ली
हनुमानप्रसाद धूत एण्ड कम्पनी
कटरा नवाब
देहली

पत्र-व्यवहार का पताः—

श्रीनिवास कॉटन मिल्स लिमिटेड

डिलाइल रोड, बंम्बई नं १३.

राजस्थानी संसार

माहेश्वरी वालचर मण्डल शाहपुराका प्रथम वार्षिकोत्सव

माहेश्वरी बालचर मन्डलका प्रथम वार्षिकोत्सव ता. २७ अगस्त से ३ सितम्बर तक श्रीयुत जयदेव प्रसादजी जैथल्या बी. एससी. के सभापतित्वमें सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस उत्सवमें स्टेटके अधिकारी वर्ग व शहरके धनी-मानी सज्जन, हाईस्कूल के छात्र व अध्यापकगण तथा माहेश्वरी जातिके आबालवृद्ध सभी सज्जनोंने भाग लिया और उत्सवको सफल बनाया।

प्रतिदिन फुटबाल, कबड्डी, दौड़, गोला फेंक, कुश्ती, दंगल आदिकी धूम रही। जो जो बालक सर्व प्रथम विजयी हुए उनको इनाम दिया गया।

यज्ञोपवीत संस्कार

ता. १ सितम्बरको प्रातःकाल माहेश्वरी भवनमें ठीक ८ बजेसें बृहद् यज्ञ हुआ। उसमें निम्न सात बच्चोंनें आर्यसमाजके उपदेशक श्रीमान् पंडित विश्वेश्वरजी शर्मा विशारदद्वारा यज्ञोपवित ग्रहण किया।

रामस्वपरू झंवर
गुलावचन्द चेचाणी
रामस्वरूप गोपा
बालमुकुन्द वेहड़िया
मूलचन्द मून्दड़ा
रामराय जाखेटिया
नाथूलाल सोमाणी

यज्ञोपवीत संस्कार बड़े समारोहके साथ सम्पन्न हुआ! इसके वाद श्रीयुत कस्तूरचन्दजी तोष्णीवालका बड़ा ओजस्वी भाषण हुआ। आपने यज्ञोपवीत धारण करनेकी विधिपर शास्त्रोक्त रीतिसे प्रकाश डाला और वताया कि जन्मसे ही यज्ञोपवीत धारण करनेके अधिकारकी जो रूढ़ि वन गयी है वह सर्वथा त्याज्य है। वैदिक धर्म इस रूढ़िको त्याज्य समझता है।

यज्ञोपवीतसे बालकोंको क्या शिक्षा लेनी चाहिए यह भी आपने वताया।

वालचरोंमें इस समय जोश था। उस समय एक घटना घटी। दो विद्यार्थियोंके पिताओं व संरक्षकोंने उनको यज्ञोपवीत नहीं लेने और उठा लेनेकी कोशिश की, पर बालकोंके उत्साहके आगे वे असफल हुए।

इसपर उनके रूढ़िवादी पिताओंने उन्हें जंगलमें ले जाकर उनके जनेऊ उतरवा दिये और उन्हें पीटा और भय भी दिखाया। किन्तु अन्त तक वे बच्चे अपनी दीक्षापर दृढ़ रहे जो बालचरोंकी भावना और दृढ़ताका द्योतक है।

खुला अधिवेशन

शामको ७॥ से १० बजे तक मण्डल की ओरसे खुला अधिवेशन श्रीमान् स्वागताध्यक्ष गुलावचंदजी चेचाणी तथा मनोनीत सभापति श्री जयदेवजी जैथल्याकी अध्यक्षतामें प्रारम्भ हुआ।

संर्व प्रथम ईश-विनय श्री रामविनोदजी बिड़ला द्वारा की गई। तत्पश्चात् नेताओंके आये हुए सन्देश सुनाये गये। सन्देश भेजनेवालोंमें मुख्य श्री रामकृष्णजी धूत, सभापति अ. भा. माहेश्वरी महासभा, श्रीमती लीलावतीजी झंवर अध्यक्षा अ. भा. माहेश्वरी महिला परिषद, देशभक्त कुंवर चांदकरणजी शारदा, श्री बसन्तीलालजी नोगजा थे। बाद में स्वागताध्यक्ष गुलाबचन्दजी चेचाणीका भाषण हुआ। आपने भाषणके प्रारम्भमें सभापति श्री जयदेवप्रसादजी जैथल्याका स्वागत किया और उनसे कार्य संचालनकी प्रार्थना की।

बादमें सर्वश्री रामनिवासजी मून्दड़ा, आनन्दीरामजी कोठारी, हरचन्दजी झंवर, बन्सीलालजी माहेश्वरी, सोहनलालजी शारदा इत्यादि वक्ताओंके समाज सुधार, कुरीतियोंपर सुन्दर भाषण होनेके पश्चात् श्रीकस्तूरचंदजी का सुन्दर भाषण हुआ। आपने वतलाया कि कुरीतियोंके निवारणार्थ बालकोंको कष्ट सहकर कार्य करनेका अभ्यास करना चाहिए। अभी बालकोंको वहुत काम करना है। मगर मैं साधारण परीक्षाके तौरपर आप लोगोंसे छोटीसी अपील करता हूं की आप मौसर छोड़नेका दृढ़ विचार करें। उनसे होनेवाली कठिनाईका सामना करनेसे आपकी आत्मामें दूसरी कुरीतियोंको छोड़नेका भी बल और साहस आ जायगा।

अन्तमें श्रीमान् सभापतिजीका बड़ा ओजस्वी भाषण हुआ जिसका प्रभाव बालकोंपर अच्छा रहा। प्रारम्भिक आभार प्रदर्शनके बाद आपने कहा—

“बालचर शब्द ही कितना रोचक है। यह दो शब्दसे बना हैं। बाल और चर। बालक कितना मनोहर, कितना सरल, निष्कपट और प्रेमकी मूर्ति होता है, किसीसे छिपा नहीं हैं। परन्तु जब इसके साथ चर जुड़ जाता हैं उसमें एक महान परिवर्तन होता हैं चरका मतलब चलना होता है। उसे अपनेमें ही महान् शक्तियोंका आभास होता हैं जिसके हर्षसे वह फूला नहीं समाता और कभी-कभी अज्ञानतावश कुछका कुछ कर बैठता हैं, जिससे उसका भावी जीवन दुखमय हो जाता हैं।

अतएव यही अवस्था है कि उन सब गुणोंको, सब कर्त्तव्योंको व सदाचारके नियमोंको पूर्ण रूपसे अनुशीलन कर लेना चाहिए-अन्यथा जीवन सचमुच ही भाररूप हो जाता हैं। आवश्यकता इस बात की हैं कि हम निराशाको झाड़ कर फैंक दें। इस मिथ्या ज्ञानको हृदयसे निकाल दें। और स्पष्ट कह दें; वरन करके दिखा दें:—

Life is real, Life is earnest;
And grave is not its goal.

इस उद्देश्यकी पूर्ति किस प्रकार की जा सकती है। यह मैं संक्षेपमें आपको बतलाना चाहता हूँ। हमें जिन बातोंकी आवश्यकता है वे हैं शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक और राजनैतिक विकास। शारीरिक शक्ति हमारे मकान की नींव हैं। जिस पर जीवन रूपी विशालभवन का निर्माण करना हैं।। यदि नींव आरम्भ में ही निर्बल बनी तो भवन का बोझा उठाने में असमर्थ रहेगी। इस लिये बालचरोंका परम कर्तव्य है कि अपने शरीर को हृष्टपुष्ट और सबल बनाने का भरसक प्रयत्न करें और कोई भी अवसर हाथसे न जाने दें कि पीछे पछताना पड़े।

जब हमारा शरीर पुष्ट होगा और सब इन्द्रियां सुचारू रूपसे अपना २ काम करनेमें समर्थ होंगी तो अनायास ही बुद्धिका विकास होने लगेगा। फिर भी बुद्धि विकासके लिये शिक्षा परम आवश्यक है। बिना शिक्षाके किसी समाज की प्रगति नहीं हो सकती और न इसके बिना मनुष्य का विकास ही सम्भव हैं। हमारी समाज शिक्षामें अभी बहुत पिछड़ा हुआ है। मैं चाहता हूं कि अपने समाजका हरएक बालचर अधिकसे अधिक विविध रूपकी शिक्षाएं ग्रहण करे। यह एक अत्यन्त खेदका विषय है कि हमारे समाजका ध्यान स्त्री शिक्षाकी ओर तो है ही नहीं पुरुषोंके ही समान स्त्रियोंको भी उच्च शिक्षा मिलनी चाहिए।

जब हम अपनी सामाजिक दशापर विचार करते हैं तो ऐसी दुःखपूर्ण बातें दिखाई देती है कि जिनसे किसी भी समाज प्रेमीका हृदय बिना दुःखी हुए नहीं रह सकता। हमारी जातिकी कुछ बुराइयोंको, जो कि जातिकी जड़को खोखला बना रही हैं, मिटानेका भरसक प्रयत्न करना चाहियें। कुछ बुराइयां, जैसे स्त्री शिक्षाका अभाव, फिजूल खर्ची, ब्याह और मौसर इत्यादि ये पुराने रीतिरिवाज और कार्य प्रणालियोंमें अन्ध विश्वासों, ये जल्दी दूर होनी चाहियें।

संगठनकी महिमा

इन सब बातों के साथ २ हम लोगों को पारस्परिक संगठन बढ़ाने की ओर पूर्ण ध्यान देना चाहिये। इसके लिये मैं आप से अनुरोध करूंगा कि आप जगह २ अपनी बैठकें, शाखायें इत्यादि खोलकर आपस में प्रेमभावका संवाद करें। और यदि किसी जगह कोई ऐसा कार्य होता हो जो आपकी संस्था दूषित समझती है तो उसको रोकने का प्रयत्न करें।

अन्तमें मुझे आप लोगों से यही निवेदन करना है कि समाज आपकी ओर आशा भरी दृष्टि लगाये है।

इसलिये हमको हर प्रकारसे योग्य बन कर उसकी आशाओंको पूरा करनेका भरसक प्रयत्न करना चाहिये। आपका जीवन-मन्त्र होना चाहिए—

होगी सफलता क्यो नहीं।
कर्तव्य पथमें दृढ़ रहो॥

स्वदेशी वेशभूषा अपनाइए!

ता. २ सितम्बरको सुबह ४ बजेसे ६ बजे तक शहरमें प्रभात फेरी निकाली गई। ७॥ सें ९॥ बजे तक यज्ञ हुआ। रातको ठीक ८ बजे अधिवेशनकी कार्यवाही शुरू हुई। सर्व प्रथम बन्सीलालजी माहेश्वरी द्वारा ईशवन्दना गाई गई। बादमें लक्ष्मीदत्तजी शर्मा ने राष्ट्रीय वेशभूषा अपनानेके विषयमें अपील की जिसकी श्री मोहनलालजी गुप्ता हेडमास्टर साहेब दर्बार हाइस्कूल व कस्तूरचंन्दजी तोष्णीवालने ताईद की तथा जोरदार शब्दोंमें यह बतलाया कि देशकी गरीबीको दूर करनेका सबसे पहला यही साधन है। इस वास्ते बालचरों को चाहिए खद्दर ही उपयोगमें लावें। बादमें युवक शौकतअलीजीने ऐक्य पर बहुत कुछ बतलाया।

पारितोषिक वितरण

कान्तिचन्द्रजी शर्म्माके भाषणके पश्चात् खेलमें उत्तीर्ण हुए बालचरोंको पारितोषिक श्री मोहनलालजी गुप्ता. एम. ए., बी. टी. के करकमलोंसे वितीर्ण किया गया। तथा तीन पदक उन सज्जनों को भी दिये गये जिनमें सुधार की पूरी लगन है और जो इसके लिए कष्ट सहकर आगे कदम बढ़ा रहे हैं। पदक पाने वाले महानुभाव ये हैं।

सोहनलालजी चेचाणी
गुलाबचन्दजी चेचाणी
रामस्वरूपजी झंवर

इसके पश्चात् हिन्दी शिक्षक श्री त्रिलोकरामजी बी. ए विशारदने ऐक्य पर भाषण दिया।

मौसर-भोजन त्यागिये!

अन्तमें श्री कस्तूचन्दजी द्वारा एक जोरदार अपील की गई कि बालचरों को आजसे मोसरका भोजन त्यागने की प्रतिज्ञा लेनी चाहिए। और कमसे कम एक मारवाड़ी पार्टी बनाकर स्टेटमें कानून द्वारा मौसर बन्द कराने की कोशिश करनी चाहिए। इस अपील का सभी श्रोताओं ने जो कि

(शेष पृष्ठ २२ के कालम ३ पर)

राजस्थानी संसार

इन्दौर

इन्दौर म्यु. परिषदका सफल अधिवेशन

देशी रियासतोंमें प्रथम आयोजन

इन्दौर राज्य प्रजा मंडलकी ओरसे इन्दौर राज्य म्यु. परिषद (कान्फ्रंस) ता: ६ और ७ को स्थानीय महाराजा शिवाजीराव हाईस्कूलके हालमें सिंध असेम्बलीके कांग्रेस पार्टीके सदस्य और करांचीके भूतपूर्व मेयर श्री. आर. के. सिधवाके सभापतित्वमें बहुत सफलता पूर्वक हुई। इसका उद्घाटन ग्वालियर राज्यके अनुभवी जनसेवक और वर्तमान मिनिस्टर ' लोकल सेल्फ गवर्नमेंट ' श्री तखतमलजी जैन ने किया।

ता: ६ को प्रातःकाल ९ बजे वंदे मातरम् गायनके साथ कार्यवाही प्रारंभ हुई। प्रारंभमें स्वागताध्यक्ष श्री भानूदासजी शाह, एम. एससी., एलएल. बी. ने उपस्थित महमानोका स्वागत करते हुए स्वागत भाषण पढ़ा जिसमें इन्दौरके म्यु. इतिहास व समस्याओं पर प्रकाश डाला। इसके बाद श्री तखतमलजीने इन्दौरके कार्यकर्ताओंका आभार मानते हुए अपना भाषण पढ़ा। आपके विस्तृत भाषणमें खासकर देशी रियासतोंकी म्यु. समस्याओंका विवेचन करते हुए उनका हल किस तरह किया जा सकता है इस पर अपने महत्वपूर्ण विचार प्रकट किये।

इसके बाद इन्दौर राज्य प्रजामंडलके वयोवृद्ध अध्यक्ष श्री सरवटे वकील साहबने श्री आर. के. सिधवाका परिचय देते हुए सभापतित्वके लिये उनका नाम प्रस्तावित किया। इस प्रस्तावका नगरके व जिलोंके म्यु. प्रतिनिधियों द्वारा समर्थन होनेके पश्चात् श्री सिधवाने आसन ग्रहण करके अपना भाषण प्रारंभ किया।

श्री सिधवा साहबने अपना भाषण प्रारंभ करते हुए कहा कि रियासतोंके आंदोलनोंमें स्थानीय स्वराज्यका विषय भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। मैं इस बातका पक्षपाती हूं कि रियासतोंके प्रश्न रियासतोंके भीतर ही निपटाये जावें। इसीलिये आपने इन्दौरमें ही जो यह आयोजन किया है इसके लिये मैं मुबारिकबाद देता हूँ।

'स्थानीय स्वराज्य' का सच्चा अर्थ यह है कि उसमें जनताके चुने हुए प्रतिनिधियोंके हाथोंमेंही अधिकार हों। नामजदगोंके लिये उसमें कोई गुंजाइश नहीं है। स्थानीय स्वराज्यके दो अर्थ नहीं हो सकते। परंतु जनताको अधिकार देनेके लिये उसकी अयोग्यताका हवाला दिया जाता है। परंतु हिन्दुस्तानके लोग अब हैवान नहीं रहे। वर्षोंसे वे जाग चुके हैं अपना कर्त्तव्य, अधिकार वे समझने लग गये हैं। कॉंग्रेस मिनिस्टरियों ने अपने थोड़े से कार्य कालमें जो कुछ किया वह इतिहास में अभूतपूर्व है। देशी रियासतों की जनता भी जागृत हो गई है।

इन्दौर की स्थिति का भी मैंने अध्ययन किया है। यहां नगर म्यु. में. बहुमत चुने हुए सदस्यों का है परंतु प्रेसीडेन्ट अभी तक सरकारी नामजद ही है यह बड़े दुःख की बात है। मैं नामजदगी की प्रथा की पूरी मुखालफत करता हूं। इसका तो जमाना ही चला गया है। कहीं यहां तक देखा गया है कि चुनावमें हारे हुए सदस्य को भी सरकार नामजद कर देती है। यह पीछेके दरवाजे से बुलाने की प्रथा अच्छी नहीं है। आपको इन सब बातोंके अधिकारोंके लिये लड़ाई लड़ना होगी। जब प्रेसीडेन्ट ही आपका प्रतिनिधि नहीं है तब आपका भला कैसे हो सकता है।

इसके बाद मतदाताओंके उत्तरदायित्व, मजदूर व हरिजनोंके लिये अच्छे मकानोंका प्रबन्ध आदि अनेक बातोंपर निजी अनुभवके साथ विस्तृत प्रकाश डालते हुए आपने कहा कि इन्दौर म्यु. में सांप्रदायिक-चुनावकी प्रथा नहीं है यह खुशीकी बात है। परंतु धारासभाके चुनावमें अब सांप्रदायिकताको स्थान दिया गया है मैं इसके सर्वथा विरुद्ध हूं और आप लोगोंको चेतावनी दे देना चाहता हूं कि आप इसे जारी न होने दें। अल्प संख्यकोंके प्रश्नपर आपने अपना करांचीके चुनाव का, जहां कि हिन्दु मतदाता ने हिन्दु सभाके उम्मीदवारके खिलाफ आपको भारी बहुमतसे चुना था, उदाहरण देते हुए कहा कि वास्तवमें जनतामें सांप्रदायिक भाव नहीं है। यह तो उत्पन्न किया जाता है। देशी रियासतोंमें भी अधिकतर राजा लोग खुद सांप्रदायिकताको उत्पन्न नहीं करना चाहते हैं परंतु जो बाहरी अधिकारी आते हैं वे इन चीजोंको पैदा करते हैं।

लगभग १॥ घंटेतक आपका धारा प्रवाह भाषण होता रहा। जनता मंत्रमुग्ध होकर भाषण सुनती रही।

परिषदमें लगभग एक हजारकी संख्यामें जनता उपस्थित थी जिनमें इन्दौरके लगभग सभी सार्वजनिक कार्यकर्ताओंके सिवाय श्रीयुत पं. हरिभाऊजी उपाध्याय, ग्वालियर राज्यके नेता श्रीयुत पुस्तके वकील सा०, इन्दौरके गण्यमान्य प्रतिष्ठित नागरिक व्यापारी, सरकारी लोगोंमें म्यु. कौन्सिलके प्रेसिडेन्ट रा. ब. सेठ हीरालाल, कई अमीन व सूबा, लीगल रिमेम्बरेन्सर, हाय कोर्ट जज, एज्युकेशन डायरेक्टर आदि उपस्थित थे।

विशेष संवाददाता द्वारा

दोपहर में विषय निर्वाचिनी समितिकी बैठक हुई जिनमें म्यु. विषयक लगभग २७ प्रस्ताव पेश किये गये। इन्दौर में हाऊस टेक्स की मौजूदा पद्धति है उसके स्थानपर ग्रेडेड् (Graded) हाऊस टेक्स लगाया जाय। सारे इन्दौर राज्य और मध्य भारत को तमाम देशी रियासतों के म्यु. संगठन करने के लिये एक केन्द्रिय संस्था की नियुक्ति, बालिग मताधिकार, निर्वाचित प्रेसडिन्ट, अधिकार वृद्धि, सरकार से एक लाख रु. सालाना की ग्रॅान्ट की माँग आदि प्रस्तावोंपर काफी बहस होकर सबके सब मंजूर हुए।

दूसरे दिन ता. ७ को प्रातःकाल ८ बजेसे फिर खुला अधिवेशन प्रारंभ हुवा! विषय निर्वाचिनीमें पास हुए प्रस्तावोंपर बहस और भाषण होकर तमाम प्रस्ताव स्वीकृत किये गए। लगभग १२ बजे सभापतिजीके अंतिम भाषणके साथ कान्फ्रेंसकी कार्यवाही समाप्त हुई। प्रजा मंडलके प्रधानमंत्री श्री बैजनाथजी महोदय बी. ए. ने सभीके प्रति प्रजामंडलकी ओरसे आभार प्रदर्शित किया। आज सरकारी नामजद म्यु. प्रेसिडन्ट रा. ब. सेठ हीरालाल कान्फ्रेंसमें अनुपस्थित थे। म्यु. संबंधी ऐसे महत्वपूर्ण आयोजनमें म्यु. प्रेसीडेन्ट की हैसियतसे आपकी यह अनुपस्थित व उपेक्षा लोगोंको बहुत खटकी।

परिषद का सारा कार्यक्रम बहुत ही सफल और प्रभावशाली रहा। परिषदके संयोजक व इन्दौर म्यु. पार्टीके नेता श्री कोठारी वकील श्री फड़नवीस वकील, श्री मं. वि. परांजपे, श्री हस्तीमलजी जैन आदि लोगोंने इसके लिये बहुत परिश्रम किया।

आम सभामें स्वागत समारम्भ व भाषण

ता. ७ सितम्बरको रात्रिके ८ बजे स्थानीय माणिक चौकमें श्रीसरवटे के सभापतित्वमें आम सभा हुई जिसमें श्री आर. के. सिधवा और श्री तखतमलजी जैनका स्वागत किया गया और दोनोंके बहुत ही गंभीर व ओजस्वी भाषण हुए। श्री सिधवा साहबने कोलंबोंके अपने ताजे अनुभव सुनाते हुए हिन्दुस्तानके गरीब मज़दूर और बाहरके मज़दूरोंकी स्थितिकी तुलना करते हुए हिन्दुस्तानके मजदूरोंकी दुर्दशाका चित्र खींचा। इन्दौरके मज़दूरोंकी स्थिति और खासकर उनके रेल्वेके मकानातकी हालत पर आपने असंतोष प्रकट करते हुए सरकार और मिल मालिकों पर इसका उत्तरदायित्व बतलाया। इन्दौरकी जनताको भी आपने बतलाया कि उसके नागरिक कर्तव्य व अधिकार क्या हैं और उसे क्या करना चाहिये।

ता. ६ को रात्रिमें स्थानीय क्रिश्चियन कॉलेजमें और ता. ८ को होल्कर कॉलेजमें श्री. सिधवाके प्रभावशाली भाषण हुए। आपके भाषणोंकी इन्दौर की जनतामें खूब प्रशंसा की जा रही है। ऐसे भाषण बहुत कम सुननेको मिलते हैं।

सौ. भागीरथी देवीके महिलावर्गकी ओरसे भी ता. ७ को दोपहरमें महिलाओंकी आम सभामें श्री पुखराजबाई जैनकी अध्यक्षतामें आप दोनोंके भाषण हुए।

ता. ६ और ७ को आप लोगोंने इन्दौरकी कई संस्थाओंका, सार्वजनिक वाचनालयोंका और नगर व गंभीर वाटर वर्क्सका निरीक्षण किया।

इन्दौर राज्य प्रजामण्डलका अधिवेशन होगा

इन्दौर राज्य प्रजामंडलका अधिवेशन जो कि महिदपुरमें सरकार द्वारा रोक दिया गया था और जिस पर सत्याग्रह हुवा था अब पुनः ता. ५ और ६ को अक्टोबरको महिदपुर में होगा। अधिवेशनके अध्यक्ष श्री भानूदासजी शाह एम. एससी. एलएल. बी. हैं। स्वागताध्यक्ष श्री पहलेकर वकील होंगे।

ता, २० और २१ सेप्टेम्बरको सनावदमें प्रजामंडलकी ओरसे जिला राजनैतिक परिषद होगी जिसके अध्यक्ष इन्दौरके सुप्रसिद्ध वीर जगसेवी श्री पहलेकर वकील (महिदपुर) होंगे। इसके उद्घाटनके लिये इन्दौरके जनसेवक श्री मिश्रीलालजी गंगवालसे प्रार्थना की गई है।

गांधी जयंती और खादी प्रचार

राजस्थान चर्खासंघके संचालक श्री देशपांडेजी ता. ६ को इन्दौर पधारे। ता. ८ को प्रजामंडलके आफिसमें इन्दौरके कार्यकर्ताओंकी एक बैठक हुई जिसमें इन्दौरमें खादी प्रचार किस तरह बढ़ाया जाय और आगामी गांधी जयंती किस तरह मनाई जावे इस पर विचार हुवा। गांधी जयंती पर खादी प्रदर्शिनी करने का निश्चय किया गया है। यह प्रदर्शिनी इन्दौर महिला परिषद की तरफ से की जाएगी। इन्दौर राज्यमें चर्खासंघ की ओरसे खादी उत्पत्ति केन्द्र खोलने का भी निश्चय हो गया है।

सिरसागंज

अ. भा. मा. वैश्य त्रयोदश अधिवेशन महोत्सव

ता. २६, २७, २८ सितम्बर सन् १९४१ ई० शुक्र, शनि और रविवारको बड़े समारोहके साथ सिरसागंज जिला मैनपुरी (यू० पी०) में श्रीमान बा. श्रीरामजी गुप्त विशारद एम्. ए.; एल्एल्., बी., वकील हाईकोर्ट, आगराके सभापतित्वमें उपरोक्त महोत्सव मनाया जायगा। इस अवसर पर महिला सम्मेलन, शिल्प प्रदर्शिनी, स्वयंसेवक रैली, स्वजातीय संस्था मन्त्री मण्डल कान्फ्रेंस, व्यायाम प्रदर्शन सेवक दल सम्मेलन, व विराट कवि सम्मेलन आदि २ अनेक उपयोगी, मनोरंजक और लाभदायक कार्य्य होंगे। समस्त स्वजातीय बन्धु माथुर वैश्योंसे साग्रह प्रार्थना है कि इस स्वर्ण अवसरको हाथसे न जाने दें वरन् अधिकसे अधिक संख्यामें पधारकर अधिवेशनको सफल बनावें।

अधिवेशनकी तैय्यारियां बड़े जोरोंसे हो रही हैं।

श्यामसुन्दरलाल गुप्त, अजमेर
ता. १२-९-४१ ई० : संयोजक-प्रकाशन विभाग

राजस्थानी संसार

डालमिया नगरमें समारोह

बिड़लाजीको सोत्साह मानपत्र

श्री. सेठ जुगलकिशोरजी ने ता. १५ सितंबर को डालमिया नगरमें डालमिया नगर निवासियोंके दिये हुए मानपत्रके लिये धन्यवाद देते हुए कहा कि जो कुछ उन्होंने देश और समाजके लिया किया है उसमें प्रशंसा की कोई बात नहीं है । उन्होंने केवल अपना कर्तव्य भर किया है। होना तो यह चाहिये कि जनतासे जो पैसा उपार्जन किया जाय वह उन्हीं की भलाईमें खर्च कर दिया जाय । तत्पश्चात् उन्होंने श्रीयुत डालमियाजीके साहस, प्रतिभा, बुद्धि, त्याग और दान की बड़ाई करते हुए कहा कि ऐसा पुरुष मारवाड़ी समाजमें ही नहीं, सारे भारतवर्षमें भी ऐसा पुरुष मिलना कठिन है, व्यापारमें तो इन्होंने सफलता प्राप्त की ही है, यदि यह राजनैतिक मार्गमें जाते तो इसमें लेश मात्र भी संदेह नहीं कि यह देशको विशेष लाभ पहुंचाते । वह अपने घरमें अक्सर डालमियाजीकी बड़ाई करते हुए उनके अदम्य साहस और महत्त्वाकांक्षाकी सराहना किया करते हैं। उन्होंने आगे कहा कि बिहारमें प्राचीन कालमें चन्द्रगुप्त और अशोक जैसे प्रतिभाशाली राजा और चाणक्य जैसे अपूर्व राजनीतिज्ञ हो चुके हैं, परंतु आजकल वैसे आदमी नहीं पाये जाते। यहांपर प्राकृतिक संपत्ति उदाहरणार्थ खानें आदि बहुत हैं परंतु बिहारवासी उनसे लाभ नहीं उठाते । उन्होंने इसके लिये भी लोगोंका प्रोत्साहित किया। फिर उन्होंने सिख, बौद्ध और जैन धर्मग्रंथोंसे उदाहरण देते हुए कहा कि उनके और हमारे धर्ममें कोई अन्तर नहीं है। सब धर्म एक ही बात कहते हैं। अन्तमें उन्होंने हिन्दुओंको शारीरिक कमजोरियों दूर करनेके लिये व्यायामकी उपयोगिता पर जोर दिया ।

अंतमें श्री डालमियाजीने भाषण देते हुए कहा कि बिड़लाजीने स्नेहके कारण ही उनकी प्रशंसा की है। श्री डालमियांजीने बिड़लाजी की सराहना करते हुए कहा कि उन्होंने जो कुछ दान दिया है उसका वर्णन नहीं हो सकता । वे दसों लाख रुपया प्रतिवर्ष दानमें दे देते हैं और वह दान दुःखी प्राणियोंके पास जाता है फिर भी अखबारोंमें मोटे अक्षरोंमें छपता नहीं । वे जो कुछ कमाते हैं, सब कुछ दान कर देते हैं । हिंदू धर्म और हिन्दू संगठनके प्रति बिड़लाजीके प्रेमका वर्णन करते हुए डालमियाजीने कहा कि जब उनके भाई विलायत जाते समय उन्हें प्रणाम करने आये तो उन्होंने कहा कि यदि तुम्हारा धन, जीवन और धर्मके लिये है तो फलो-फूलो, नहीं तो तुम्हारे धर्मसे मुझे आनंद नहीं । आगे उन्होंने कहा कि उन्होंने जो कुछ देश और समाजके लिये किया वह सब परमात्माकी इच्छासे हुआ है, वे तो केवल कारण मात्र रहे हैं।

मेवाड माहेश्वरी कान्फ्रेंन्स

मेवाड तथा उसके आसपास के माहेश्वरी बन्धुओं को यह जान कर प्रसन्नता होगी कि उदयपुर नगर में मेवाड़ माहेश्वरी कान्फ्रेंन्स के लिये बड़ी धूमधाम और सरगर्मी के साथ तय्यारी हो रही है। तारीख १२ सितम्बर को माहेश्वरी बोर्डिङ्ग हाऊस में श्रीहनुमान प्रसादजी सोढाणी मैनेजिङ्ग डाईरेक्टर मेवाड़ मिनिरल कम्पनी के सभापतित्व में उदयपूर और कुमाळगढ के कई उत्साही वयोवृद्ध और नवयुवकों की एक मीटिङ्गद्वारा स्वागत समिति का निर्माण किया गया है। स्वागताध्यक्ष श्री. हनुमान प्रासादजी सोढाणी, प्रधान मंत्री श्री. दिलीप सिंहजी राठी, उप प्रधान श्री. मदन सिंहजी देवपुरा, वकील हाईकोर्ट, प्रचार मंत्री श्री. जमनालालजी लड्ढा, उपमंत्री श्री. शामसुन्दरलालजी राठी निर्वाचित हुए। कान्फ्रेन्स का उद्देश्य समाजमें फैली हुई अशिक्षा और बेकारी को दूर करना है। इस कांफ्रेन्स के साथ साथ महिला सम्मेलन का भी आयोजन किया जा रहा है।

श्री मुरलीधरजी लोया

आप पूना म्युनिसिपैलिटीके उपाध्यक्ष निर्वाचित हुए हैं। इस सन्मानके लिए हम आपका अभिनन्दन करते हैं।

श्री रामकिशनजी धूत हैदराबादकी मारवाड़ी संस्थाओंसे अलग हुए

हैदराबादमें गत इक्कीस वर्षोंसे मैं मारवाड़ी समाजके एक नम्र सेवकके नाते कार्य करता रहा हूं तथा इसके फल स्वरूप समाजने मुझे जो विश्वास एवं प्रेमका स्थान प्रदान किया है उसके लिये मैं अत्यन्त आभारी हूं।

गत दो वर्षोंसे मैं ऐसा अनुभव कर रहा हूं कि मेरे सहयोगी तथा अन्य कार्यकर्ता मेरी कार्य प्रणाली आदिसे असंतुष्ट है और यह असंतोषकी मात्रा दिन प्रतिदिन बढ़ती हुई नजर आ रही है तथा इसके फलस्वरूप आपसमें अकारण ही गल फहमी फैल जाती है। इसलिये मैं यह चाहता हूं कि यह कशमकश हमेशाके लिये समाप्त हो जाय जिससे सार्वजानिक संस्थाओंकी प्रगतिमें रुकावट व समाजके अभ्युदयको हानि न पहुंचे। इसलिये बहुत सोच विचारके बाद मैं इस निश्चयपर पहुंचा हूं कि अपने दोषोंके प्रायश्चित स्वरूप मैं अब हैदराबादकी सारी मारवाड़ी संस्थाओंसे पृथक हो जाऊं। मुझे ऐसा निश्चय करनेमें किसी व्यक्ति विशेष या कार्यकर्तासे द्वेष या रुष्टता नहीं है। हां, मैं अपनी प्यारी संस्थाओंसे पृथक होनेमें जबरदस्त वेदनाका अनुभव अवश्य कर रहा हूं।

फिलहाल मैंने अपने आपको मारवाड़ी समाजकी सार्वजनिक संस्थाओंसे ही पृथक किया है किन्तु यदि मुझे ऐसा महसूस हुआ कि खादी प्रचार संघ आदि अन्य स्थानीय सार्वजनिक संस्थाओंकी भलाईके लिये इसी कदमकी आवश्यकता हुई तो उनसे भी मुझे त्याग-पत्र देते तनिक संकोच न होगा।

अब उन सारे व्यक्ति व कार्यकर्ता जिनको जान या अनजानमें मैंने किसी प्रकारका कष्ट पहुंचाया हो उनसे हार्दिक क्षमा मांगता हूं।

उपरोक्त सारी संस्थाओंके अभ्युदयकी शुभ कामना करते हुए मैं परमात्मासे पार्थी हूं कि देश व समाजके लिये ज्यादा से ज्यादा त्याग और बलिदान करनेका मुझे बल प्रदान करे।

समाजका नम्र सेवक,

रामकिशन धूत.

सारड़ा हाईस्कूल गणेशोत्सव

ता. ३-९-४१ को गणेशोत्सवके निमित्त सभा हुई। इस सभामें गुरुकुल ब्याड़के संचालक श्री कन्हैयालालजी लड्ढा का शिक्षा पर भाषण हुआ। आपने अपने भाषणमें विद्यार्थियोंमें राष्ट्रीय भावना पैदा करनेकी आवश्यकता पर जोर दिया।

पश्चात् स्कूल को गुरुकुल ब्याड़के ढंग पर चलानेके लिए एक कमिटी बनाई गई।

मारवाड़ किसान परिषदका सफल अधिवेशन

शानदार स्वागत, मान-पत्र व जोरदार भाषण।

गत तारीख ३१ अगस्त व १ सितम्बरको रामदेवजीके प्रसिद्ध मेलेके सुअवसर पर रुणेचेमें राजस्थान व मारवाड़के सुप्रसिद्ध नेता राजस्थानी वीर श्री. कन्हैया लालजी कल्यंत्रीकी अध्यक्षतामें मारवाड़ किसान परिषदका प्रथम अधिवेशन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

श्री कलयन्त्रीजीको स्टेशन पर स्वयंसेवकोंने सलामी दी। पश्चात् बैंडबाजे और झंडोंके साथ जुलूस सभामंडप तक ले जाय गया। रात्रिके आठ बजे स्वागत गानके पश्चात् स्वागताध्यक्ष श्री गोपीलाल बाड़मेराने अपना लिखित भाषण पढ़कर सुनाया। इसके बाद सभापतिके लिये प्रस्ताव करते हुए आपने कहा कि श्री कलयन्त्रीजी मारवाड़ की राष्ट्रीय जाग्रतिके जनक हैं। आप लगभग पांच हजार गांवोंमें किसानोंकी सेवार्थ गत २२ वर्षोंसे तन, मन, धनसे अथक रूपसे सेवा कर रहे हैं। गत भयंकर दुष्कालके समय पूरे दो वर्षों तक अहोरात्र किसानोंकी निःस्वार्थ सेवा करके आपने किसानोंके हृदयोंको जीत लिया है। अतः आपसे बढ़कर इस पुनीत कार्यको प्रारम्भ करनेका अधिकार किसको हो सकता है? अनेक समर्थनोंके पश्चात् श्री कलयन्त्रीजीने हर्षध्वनिके बीच सभापतिका आसन ग्रहण किया।

सभापतिजीका मौखिक जोरदार भाषण जनताने मन्त्रमुग्ध होकर सुना। सभापतिने अपने भाषणमें कहा कि किसान शताब्दियोंसे अपने ही घरमें बेगाने बनाये हुए हैं। पीढ़ियोंसे जोतने, बोने और रहनेवाली जमीनके वे केवल किरायेदार बने हुए हैं। उनसे आज भी बेगार, भेंठ और लागें ली जा रही हैं; खासकर जागीरोंमें। पुरानी सड़ी गली रस्म रिवाजोंने किसानोंको बराबर कर रक्खा है। अतः ऐसी रस्मको दफना देना चाहिये। संसारमें किसान ही सर्वोपरि, हितकारी हैं। फिर भी अनेको प्रकारके सितम गैरों और घरके कहे जानेवाले राजा ठाकुर आदि द्वारा उन पर जान और अनजानमें हो रहे हैं। इसका एक मात्र कारण यह है कि वे असंगठित हैं। मारवाड़का किसान दुगुने जुल्मोंका शिकार है। सत्ताधारियोंके इलावा दुष्कालकी तेज़ तलवार उस पर टूट पड़नेका सदा खतरा बना रहता है। अतः हम सिर्फ़ इतना ही चाहते हैं कि किसानोंके साथ मनुष्यता और न्यायका व्यवहार होना चाहिये क्योंकि किसान भी तो मनुष्य ही हैं। पश्चात् दस महत्वपूर्ण प्रस्ताव भी स्वीकृत हुए।

गणेशोत्सवकी धूम राजस्थानी मंडलका कार्यक्रम

(निज संवाददाता द्वारा)

प्रतिवर्षके अनुसार इस वर्ष भी राजस्थानी मंडलकी ओरसे बड़े उत्साहके साथ गणेशोत्सव मनाया गया। इस उत्सवके शुभ अवसर पर महासती उज्वल कुमारीजीका " राष्ट्रीयत्व " विषय पर गंभीर भाषण हुआ। ता. ७-९-४१ को " श्रवणकुमार " तथा ता. ३-९-४१ को " हिंदमाता " का जोरदार नाटक खेला गया। नाटक देखनेके लिये पांच हजारके ऊपर दर्शकजन उपस्थित थे। सर्व श्री मथुरादासजी मोहता, गोपालदासजी मोहता, जानकीदासजी मोहता, जमनादासजी डागा तथा मंडलके सभापति श्री पुरवराजजी कोचर भी उपस्थित थे। नाटक समाप्त होनेके बाद श्रीमान सेठ गोपालदासजी मोहता, एम. एल. ए. के द्वारा मंडलका पारितोषिक वितरण सम्पन्न किया गया। अन्तमें मंडलकी ओरसे श्री मुरलीधरजी व्यासने उपस्थित सज्जनोंका धन्यवाद माना। यह लिखते हुए बड़ा हर्ष होता है कि मंडलके नवयुवकों तथा मंडलके सभापति रामलालजी शल्य एवं भूतपूर्व मंत्री श्री हरि किशनजी मोहताके परिश्रम से इस वर्षका कार्यक्रम बड़े उत्साहके साथ समाप्त हुआ।

राजस्थानी संसार

श्री द्वारकादासजी पुगलिया जेलमें

"श्रीयुत् द्वारकादासजी पुगलिया रायपुर निवासी ता. ७-७-४१ को दो माहकी सजा काटकर घर आये थे। फिर सत्याग्रह करनेका आदेश मिलनेसे ता २२-७-४१ को मौजा पाडुका, जो कि रायपुरसे ४० मील दूर है, में आपने सत्याग्रह किया और वहां पर गिरफ्तार रायपुर लाये गये। रायपुरमें उनको ६ माहकी सजा हुई है। आप नागपुर जेलमें रखे गये हैं।

श्रीमती चम्पाबाईजी भट्टड़ रिहा

सातारा निवासिनी श्रीमती चम्पाबाईजी भट्टड़ को दूसरी वार सत्याग्रह करने के कारण तीन मासके लिये कारावासका दण्ड मिला था। वे यह सजा पूरी करके मुक्त हो गयी हैं। देशकी खातिर इस कष्टके लिए हम उनका अभिनन्दन करते हैं।

श्री गोवर्धनदासजी बिंझाणी की मुक्ति

श्री गोवर्धनदासजी बिंझाणीको गत १० जून को यू. पी. सरकारने आगरामें गिरफ्तार किया था और ९ मासकी सख्त सजा दी थी। गर्मीकी मौसममें स्वास्थ्य बिगड़ने और रोगी हो जाने के कारण उनको सरकारने 'पैरोल' पर छोड़ दिया है। आज कल आप देहली में 'हरिजन कॉलेनी' में हैं।

हैद्राबाद स्टेट मारवाड़ी सम्मेलन

स्वागत समितिका चुनाव

हैद्राबाद स्टेट मारवाड़ी (राजस्थानी) सम्मेलन का द्वितीय अधिवेशन औरंगाबाद में करने का निश्चय किया गया है। औरंगाबाद की मारवाड़ी जनता की ओर से स्वागत समिति का चुनाव निम्न लिखित प्रकारसे हुवा।

सर्व श्री माणिकचंदजी पहाड़, हायकोर्ट वकील स्वागताध्यक्ष, मुरलीधरजी सीकची, रायबहादुर नथमलजी मुगदिया, कचरदासजी बाकलीवाल, हीरालालजी अग्रवाल, मोहनलालजी कन्हैयालालजी, शेषमलजी देवड़ा, बजरंगलालजी। टीबड़ीवाला, रतनचंदजी गटानी उपस्वागताध्यक्ष, शेषमलजी (ब) देवड़ा स्वागत मन्त्री, ताराचंदजी पुनमचंदजी, दामोदरदासजी मूंदड़ा उपस्वागतमन्त्री, का. गो. राठी सहाय्यक मंत्री, मोहनलालजी देवड़ा, खेमचदंजी लालचंदजी, राजा बन्सीलालजी, मीरादेवीजी मूंदड़ा उपस्वागत मन्त्री, मुरलीधरजी टकसाली कोषाध्यक्ष, लालचंदजी मालाणी सावलारामजी मालु, माणिकचंद देवड़ा, धीसुलालजी गादिया, जसराजजी बोरा, सुरजमलजी पारिख, पन्नालालजी दरख, फुलचंदजी आधारीवाल, आसारामजी भुगदीया, संग्रामसिंह चौव्हान, पन्नालालजी खटोड़, बद्रीनारायण दरगड़, लछमीनारायणजी अग्रवाल, मिश्रिलाल पारीख, अमोलकचंद माणिकचंद, मन्नालाल अग्रवाल सदस्य।

सम्मेलनकी तारीखें १२, १३, १४, नवम्बर हैं। चंदा वसूल करनेके लिये निम्न सज्जनोंकी कमिटी बनायी गई है।

सर्वश्री मुरलीधरजी सीकची, शेषमलजी बकतावरमलजी, मुरलीधरजी टकसाली, शेषमलजी जीवराजजी, चीरंजीलालजी टीबड़ीवाला, कचरदासजी बाकलीवाला, पूनमचंदजी, ताराचंदजी, राजा बन्सीलालजी, सावलारामजी मालू, माणिकचंदजी पहाड़े।

चंदा-वसूली कमिटी अपना कार्य कर रही है।

का. राठी,
सहायक मंत्री
है. मा. सम्मेलन

श्रद्धेय जाजूजी गुजरात काठियावाड़ के दौरे पर

श्रद्धेय श्रीकृष्णदासजी जाजू अखिल भारतीय चर्खा संघ की गुजरात और कठियावाड़की शाखाओंका निरीक्षण करने के लिए इन प्रान्तों का दौरा करने के लिए निकल पड़े हैं।

श्री माहेश्वरी हितकारिणी सभा

श्री माहेश्वरी हितकारिणी सभा की साधारण बैठक ता. ३१-८-४१ रात्रिके ९ बजे श्री द्वारकादासजी बांगड़के सभापतित्वमें स्थानीय श्री नृसिंह भवनमें हुई! सर्व प्रथम संस्थाके प्रधान मंत्री बाबू रघुनाथदासजी बांगड़ने संस्थाकी पिछली रिपोर्ट पढ़कर सुनाई इसके बाद आपने कार्यकारिणी सभाद्वारा पास हुये निम्न प्रस्तावोंको पेश किया।

प्रस्ताव नं १ यहां दूसरे या तिसरे विवाहों की न्यात की रजा दी जाती है यह प्रथा बहुत बुरी है एवं फिजुल खर्च को बढ़ाने वाली है इसलिए यह सभा इस मत की है कि पहले विवाहके सिवाय दूसरे तीसरे आदि विवाहमें न्यात की रजा न दी जावे। प्रस्तावक श्री रतनलालजी बांगड।

उदार सहायता

महासभा

११) श्री मुरलीधरजी सिंगी, शोलापूर

माहेश्वरी

५१) श्री श्रीकिशनजी सीतारामजी शारदा, अहमदनगर
(स्व. श्रीकिशनजी शारदा की स्मृति में)

१०१) ,, खुशहालचन्दजी डागा, बंबई
११) ,, केदारनाथजी सिंगी, बंबई

उपरोक्त महानुभावोंने महासभा और 'माहेश्वरी' को दान दिया है जिनके लिये महासभा और 'माहेश्वरी' उनके प्रति कृतज्ञ हैं।

प्रस्ताव नं. २ "इस सभा द्वारा माहेश्वरी जातिके हितार्थ किये गये कार्यों एवं पास सुदा प्रस्तावों का प्रचार करना अत्यन्त आवश्यक है। समाचार पत्रोंमें खबर निकालना या जगह जगह सभायें करके जनता को अपने विचारोंकी ओर आकर्षित करना आदि। इस लिये सभाकी यह राय है कि इस कार्यके संचालनके लिये तीन या पांच सदस्योंकी एक समिति बनाई जाय जो "प्रचारकारी विभाग" के नामसे पुकारी जाय।"

प्रस्तावक—जनार्दनदासजी बांगड़।

उपरोक्त दोनों प्रस्ताव सर्व सम्मतिसे पास किये गये।

द्वितीय प्रस्तावको कार्य रूपमें परिणित करनेके लिये निम्नलिखित पांच महानुभावोंकी एक समिति बनाई गई।

(१) मन्त्री श्री तुलसी रामजी मूंदड़ा
उपमन्त्री श्री रतनलालजी बांगड़
सदस्य सर्व श्री श्रीनिवासजी पसारी, सत्यनारायणजी मूंधड़ा, पन्नालालजी लड्ढा।

श्रीमाहेश्वरी युवक मंडल का नवीन वार्षिक चुनाव

मंगलवार ता. २-९-४१ को माहेश्वरी भवन गोराकुंडमें रात्रिके आठ बजे मंडलकी कार्यकारिणी समितिका चुनाव श्रीयुत श्रीकृष्णजी झंवरके सभापतित्वमें हुआ। सर्व प्रथम वार्षिक रिपोर्ट एवं आय-व्ययका हिसाब स्वीकृत हुआ। तत्पश्चात् निम्नलिखित पदाधिकारी एवं सदस्य चुने गये।

सभापति-श्री. घीसालालजी साबू उप सभापति-श्री श्रीकृष्णजी झंवर प्रधान मंत्री-श्री कनैय्यालालजी भट्टड़

मिर्जापुर

मारवाड़ी नवयुवक संघका सत्प्रयत्न

मारवाड़ी नवयुवक संघको स्थापित हुए १८ वर्ष हुए हैं। इस अल्प कालमें संघने समाजकी बहुत बड़ी सेवाकी है। समाजमें चिरकालसे प्रचलित मृतक भोजकी बुरी प्रथा का इस संघने समूलोन्मूलन कर दिया है। इस कार्यमें हमें मारवाड़ी समाज अग्रवालका सहयोग प्राप्त हुआ है। इन्हींके कारण हमको इस कार्यमें पूर्ण सफलता मिली है। सबसे बड़ी प्रसन्नताकी बात तो यह है कि मारवाड़ियोंकी बहुत संख्याने यह मान लिया है कि वे न तो मृतक भोज में साथ देगें और न स्वयं करावेंगे हम चाहते हैं कि यह बुरी प्रथा समाजमें से सदाके लिये समाप्त हो जावे। इसके लिये हमको धनकी इतनी जरूरत नहीं जितनी प्रचारकों की, इस संघका मुख्य आफिस कलकत्तामें है। इसकी एक शाखा बम्बईमें भी है। इस संघकी ओर से प्रचारक अनेक स्थानोंपर जाकर समाज सुधारके लिये व्याख्यान देते हैं। संघ चाहता है कि समाज इस शुभ कार्यमें अधिकसे अधिक सहयोग व सहायता उसे दे।

देवली

देवलीमें गणेशोत्सव

इस साल माहेश्वरी समाजके नवयुवकोंने प्रथम वर्ष होते हुए भी श्री गणेशोत्सव अच्छे ढंग से मनाकर बुजुर्गों की और अन्य समाजके लोगों की काफी सहानुभूति प्राप्त की।

श्रीगणेशोत्सवका काम करनेके लिये जो मंडल बनाया गया उसका नाम "राजस्थानी गणेशोत्सव मंडल" था। उसमें अध्यक्ष श्री लक्ष्मीनारायणजी चांडक, मंत्री माणिकलालजी टावरी और अन्य सभासदोंः— अपनी अपनी जिम्मेदारियां निभाई।

श्री गणेशोत्सवमें नगदी और अनाज मिलाकर रुपये ९५) का चंदा जमा हुवा। उत्सवके निमित्त करीब ५०० भीखमंगोको भोजन मिला।

यहां एक राजस्थानी मंडल स्थापन करने की इच्छा है जिसका काम समाजको और अन्य समाजी लोगों को भी मदद पहुंचना वगैरह रहेगा।

(पृष्ठ १९ का शेषांश)

सभी जातियोंमें से थे, बहुत स्वागत किया। तथा अधिकांश युवकों, विद्यार्थियोंने सभा स्थल पर ही श्री कस्तूरचंदजीके सामने हाथ उठा उठा कर प्रतिज्ञा की कि हम आइन्दा मौसर का भोजन नहीं खायेंगे।

अन्तमें श्रीमान् सभापतिजी व स्वगताध्यक्षजी द्वारा धन्यवादके आदानप्रदानके साथ कार्यवाही समाप्त की गई। तदुपरान्त शान्ति पाठ होकर कार्यवाही समाप्त हुई।

नया निर्वाचन

ता. ३ सितंबरको रातको ८ वजे, आगामी वर्षका चुनाव हुआ जो इस प्रकार है।

प्रधान-गुलाबचन्दजी चेचाणी, उपप्रधान-रामनारायणजी बिड़ला, मन्त्री-रामस्वरूपजी झंवर, उप मन्त्री-अनन्दीरामजी कोठारी, कोषाध्यक्ष-मोहनलालजी शारदा, पुस्तकाध्यक्ष-रामस्वरूपजी लोया, प्रचार मन्त्री-लादूलालजी बसेर, सम्पादक 'माहेश्वरी सुधारक' -रामनिवासजी मूंधड़ा

सहायक मंत्री- श्री राधाकृष्णजी राठी प्रचार मंत्री- श्री बाबूलालजी परवाल कोषाध्यक्ष-श्री सीतारामजी अजमेरा आयुर्वेद भिषक, दलपति- श्री श्रीनिवासजी झंवर बी. ए.। निम्न लिखित सज्जन कार्यकारिणीके सदस्य चुने गये।

सर्वश्री श्रीनिवासजी आगार एम. एसधी, कल्याणमलजी लखोट्या, गोरधनदासजी काबरा, दत्तूमलजी मालू, सीतारामजी भराणी, माणकचंदजी पहाड़े। अन्य दो स्थान रिक्त रखे गये हैं। और कार्यकारिणी समितिको रिक्त स्थानोंकी आवश्यकतानुसार पूर्ति करनेका अधिकार सौंपा गया।

प्रचार मंत्री—**बाबूलाल परवाल**

सब प्रकार के बीमे का काम

फायर व जनरल

यूनिवर्सल

इंस्युरंस कंपनी

अपनी
जिंदगी
का
बी
मा
कराइये

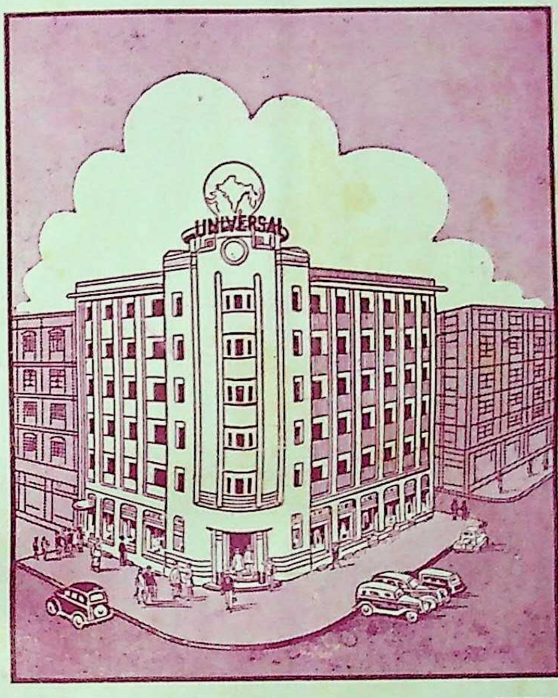

को
ही
दी
जि
ये

इसके डायरेक्टर्स हैं

१. दि. ब. कृष्णलाल मोहनलाल झवेरी एम्. ए. एलएल. बी.
२. सेठ लक्ष्मणदास हरखचंद डागा
३. राजा नारायणलाल बंशीलाल
४. श्री. जे. एच. मोदी सालीसिटर
५. श्री. केशवलाल हरीलाल सेतलवाड़
६. राय साहब केदारनाथ खेतान एम. एल. सी.
७. श्री. रणछोड़दास त्रिभुवनदास पोपावाला (मालपाणी) बी. ए.
८. श्री. कांतीलाल चिमनलाल मुन्शी बी.ए.

आग;
मशीन;
मोटर;
इत्यादि सब
प्रकार के
बीमे के लिये
हमें पूछिये

यह कम्पनी " माहेश्वरी " द्वारा स्थापित की गई है। स्व. सेठ वरजदासजी माईदासजी मालाणी इसके संस्थापक थे।

सब प्रांतों में एजेन्सियां देनी हैं। आज ही एजेन्सी के आकर्षक नियमों के लिये लिखिये—

मेनेजिंग एजेन्टस--एम कानजी एन्ड कंपनी

दी यूनिवर्सल फायर एण्ड जनरल इंस्युरन्स कं० लि०

सर फीरोज़ शाह मेहता रोड, बंबई

Printed by Vasant S. B. Shroff, B. A., B. SC., LL. B. at the Bombay Vaibhav Press, Servants of India Society's Building,
Sandhurst Road, Bombay 4 and published by him at 70, Tulsi Vihar, Marine Drive, Bombay.

Reg. No. B 4441

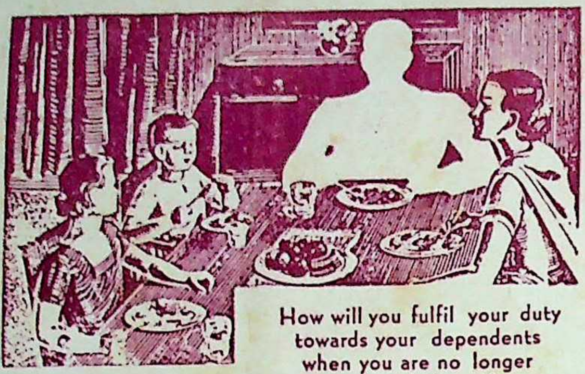

How will you fulfil your duty
towards your dependents
when you are no longer
a breadwinner ?

If you were not there...

कुटुम्बं का संपूर्ण संरक्षण

न्यु एशियाटिक की 'हैपी होम पॉलिसी' बीमा की एक ऐसी अद्वितीय तथा अपूर्व योजना है जिसका कुटुम्ब की संरक्षा अधिक से अधिक प्रमाण में करने के हेतु से निमार्ण किया गया है।

हमारा भारत गरीबी से पीड़ित है। ऐसी दशा में यहां कुटुम्ब की संरक्षा के प्रश्न का हल अधिक आवश्यक है। 'हैपी होम पॉलिसी' में पैसा लगाने से पैसे का अनुचित उपयोग नहीं होता और न वह किसी तरह की जोखम का काम ही है। ५०००) के बीमे से क्या मिलता है:—

५००) और बोनस-मृत्यु के बाद
५०) मासिक-बीमे की शेष अवधि तक
४५००) बीमा की अवधि खत्म होने पर

इस रकम से बच्चों की शिक्षा का प्रबन्ध हो सकता है अथवा वे कोई धंधा कर सकते हैं

पूर्ण विवरण के लिये लिखिये—

दी न्यु एशिआटिक लाईफ इंस्युरंस कम्पनी लिमिटेड

मैनेजिंग एजेन्टस्-**बिड़ला ब्रदर्स लिमिटेड**

हेड ऑफिस

कॅनाट सर्कस, नई दिल्ली

शाखाएं और प्रमुख कार्यकर्ता

उत्तरी विभाग
(कॅनाट सर्कस, नई दिल्ली)
लाहोर
रावलपिंडी
पेशावर (केन्टोनमेन्ट)
पटना
कानपुर

पूर्वी विभाग
(८, रायल एक्सचेन्ज प्लेस, कलकत्ता)
ढाका
बर्दवान
जलपाइगुरी
सिलहट
बर्मा

पश्चिमी विभाग
(४५–४७ अपोलो स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई)
हैद्राबाद (दक्षिण)
इर्नाकुलम
बेलगाम
अहमदाबाद
कराची

मध्य विभाग
(भवानी पेठ, जळगांव)
इन्दौर
जबलपुर
नागपुर
अमरावती

दक्षिणी विभाग
(२८९ लिंगा चेट्टी स्ट्रीट, मद्रास)
मद्रास
सीलोन
त्रिचनापल्ली

T
RNER

माहेश्वरी

इतना तो शुद्ध सत्य है कि गान्धीजीके आविर्भावने इस देशमें एक आशा, एक उत्साह, एक उमंग और जीवनमें एक नया ढंग पैदा कर दिया है, जो हज़ारों सालके प्रमादके बाद एक बिल्कुल नयी चीज़ है।

घनश्यामदास बिड़ला

'बापू' से]

वर्ष ३२
संख्या ११

वार्षिक मूल्य
३) रुपया

खिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभाका मुखपत्र

पाक्षिक

प्रवर्तक—स्व. भागीरथदासजी भूतड़ा

सम्पादक समिति
श्री. लक्ष्मीनारायण मालाणी, श्री. दामोदरदास मूंदड़ा
श्री. राधाकृष्ण लाहोटी

प्रबन्ध सम्पादक
राधाकृष्ण लाहोटी

प्रकाशक
श्री. वसन्तलाल श्राफ़

कार्यालय—अली चेम्बर्स, डीन लेन, फ़ोर्ट, बम्बई.

बापू

चरमोन्नत जग में जब कि आज विज्ञान ज्ञान,
बहु भौतिक साधन, यंत्र यान, वैभव महान,
सेवक हैं विद्युत् वाष्प शक्ति : धन बल नितांत,
फिर क्यों जग में उत्पीड़न ? जीवन यों अशांत ?

मानव ने पाई देश काल पर जय निश्चय,
मानव के पास नहीं मानव का आज हृदय !
चर्वित उसका विज्ञान ज्ञान : वह नहीं पचित :
भौतिक मद से मानव आत्मा हो गई विजित !
है श्लाघ्य मनुज का भौतिक संचय का प्रयास,
मानवी भावना का क्या पर उसमें विकास ?
चाहिए विश्व को आज भाव का नवोन्मेष,
मानव उर में फिर मानवता का हो प्रवेश !

बापू ! तुम पर हैं आज लगे जग के लोचन,
तुम खोल नहीं जाओगे मानव के बंधन ?

['ग्राम्या' से] सुमित्रानंदन पंत

हिन्दुस्तान में
गैंडा-मार्का
क्राफ्ट-पेपर
बनता है
मज़बूत
चीमड़
टिकाऊ
फिर कमज़ोर और भद्दे
कागजों की रैपिंग से
अपने व्यवसाय
को क्यों हानि पहुंचाते
हैं ?
ओरिएण्ट पेपर मिल्स लि०
८, रायल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता

माहेश्वरी

'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत'

वर्ष ३२, संख्या ११] बम्बई ता. ७ अक्टोबर १९४१ [वार्षिक मूल्य ३ रुपया

सुख क्या है?

आजकल चारों ओरसे यही नाद सुनाई पड़ता है कि हमारा जीवन किस प्रकार सुखी हो? लोग अपने जीवनको सुखी बनानेके अनेक प्रयत्न भी सोचते हैं तथा भरसक उन्हें कार्य रूपमें परिणत भी करते हैं। बड़े बड़े विद्वान सुख शोधके लिये अनेक यात्राएं करते हैं, और पुस्तकोंके भण्डार पढ़ पढ़ कर समाप्त कर देते हैं पर बार-बार यही प्रश्न हमारे समक्ष आता है कि आखिर वास्तविक सुख है क्या?

सुख का साधारण अर्थ है 'आनन्द' अर्थात् जिस मनुष्य को किसी प्रकार की ऊनता न हो वही सुखी है। उदाहरणार्थ जिसके पास धनधान्य, लड़के-बच्चे होते हैं वही सांसारिक दृष्टिसे सुखी समझा जाता है। एक प्राचीन भारतीय कविने अपनी एक कवितामें सुख की परिभाषा निम्नांकित रूपमें दी है:—

"जिसका पश्चिम तरफ खेत हो, सुबह हल लेकर वह खेतमें जाय उस समय भी छाया और सन्ध्या को घर लौटे उस समय भी पीठ पीछे सूर्य हो, नियमित समय पर वर्षा हो दो जून रोटी मिले व शरीर ढकने को पर्याप्त वस्त्र, वही सुखी है।"

और वास्तवमें प्रत्येक स्त्री-पुरुष इतनी ही कामना रखता है। गांवोंकी शुद्ध हवा, ग्रामीणोंका सुबह चार बजे उठना, पुरुषोंका भैरव राग अलापना, स्त्रियोंकी चक्की का मधुर संगीत, छाछ बिलोनेका हृदयग्राही स्वर, बच्चोंका मक्खन के लिये मचलना आदि ही मेरी समझमें सच्चा आनन्द है। वास्तवमें ग्रामीणों के ये कार्यकलाप हम लोगों को नवजीवन प्रदान करते हैं। उनमें न ईर्ष्या है न द्वेष और कलह के लिये तो वहां कोई स्थान ही नहीं है।

मेरे उपरोक्त कथन से पाठिकायें यह शंका भी कर सकती हैं कि आप महलोंमें बैठी बैठी इस बातकी कल्पना कर सकती हैं कि ग्रामीण जीवनमें ही वास्तविक सुख है। यदि सुख समझती हैं तो स्वयं करके दिखलावें। परन्तु यहां करने न करनेका तो प्रश्न ही नहीं है। यह तो निर्विवाद सिद्ध ही है कि गांवकी शुद्ध वायु स्वास्थ्यवर्धक होती है। स्वास्थ्य ठीक रहनेसे मन भी प्रसन्न रहता है और बुद्धि भी तीव्र होती है यदि सब लोग ग्रामीणोंका सादा जीवन पसन्द करने लगें तो उनका जीवन सुखी हो जाय और साथ ही साथ उन्हें शान्ति भी मिले। परन्तु आजकल तो अशान्ति प्रवर्तक शस्त्रोंका जमाना है, यहां शान्तिके उपदेशको सुनेगा ही कौन? इन्हीं शस्त्रोंके प्रयोगसे जो राष्ट्र कल स्वतंत्र थे आज परतंत्रता की बेड़ीमें बंध गये हैं और कइयोंके तो नाम भी मिट चुके हैं। खैर! इसका कारण भी इच्छा की अधिकता है।

आजकल हमारी बहनों का बाह्य सौन्दर्य की ओर अधिक ध्यान जाता है क्यों कि इससे वे आकर्षक बनने का प्रयत्न करती हैं और दूसरों को अपनी ओर आकर्षित करना भी तो एक प्रकार का सुख ही है। परन्तु इसके साधन खर्चीले होते हुए भारत की जल-वायुके प्रतिकूल भी हैं, जैसे पाउडर लगाना, होठ रंगना, नाखून रंगना आदि। इन सब बातोंसे स्वास्थ्य को तो हानि पहुंचती ही है साथमें पैसे की खराबी व समय की बरबादी भी होती है। पर तारीफ यह कि हमारी भोली बहनें समझती हैं कि हम सुन्दर बनती हैं जब कि वास्तवमें वे अपने प्राकृतिक सौन्दर्य्यसे भी हाथ धो बैठती हैं। एक उदाहरण होठ रंगनेका ही ले लीजिये। यदि हम होठ रंगती हैं तो होठों पर एक प्रकारका निशान पड़ जाता है, फिर यदि न रंगा जाय तो वह दाग़ बुरा लगता है, अतः अनिच्छा होते हुए भी फिर रंगना ही पड़ता है और इससे तो ऊंची दुकान और फीके पकवान वाली कहावत ही चरितार्थ होती है कि बाह्य आडम्बर तो बहुत होता है पर अन्दर एकदम खोखलापन रहता है। वास्तविक स्वास्थ्यकी कमीसे उनका शरीर पीला पड़ जाता है, नाखून सफेद हो जाते हैं और सुस्ती घेर लेती है। तत्पश्चात् इन्हें छिपाने के लिये इन बाह्य उपकरणों के प्रयोग का कौशल रचना पड़ता है। उसीके स्थान पर यदि हम पान खातीं तो हमारा मुख भी सुगन्धित होता, निशान भी न पड़ते और हमारे शरीरमें रक्त की वृद्धि होती, पर हम तो फैशनमें पाश्चात्यता का अनुकरण करना चाहती हैं तब हमारे देश की ये सीधी बातें हमारे ध्यानमें कैसे आवेंगी? यहां यह भी याद रखने योग्य बात है कि हम पाश्चात्य रमणियोंके दुर्गुणों का ही अनुकरण करती हैं उनके गुणों का कदापि नहीं। उनकी निडरता, सेवाभाव, प्रेमका बर्ताव, परस्पर सहानुभूति, वीरता, साहस, छोटेसे छोटे काममें हिचकिचाहट न होना, आदि गुणों पर तो हम दृष्टिपात ही नहीं करतीं। हमें स्व० लार्ड विलिंगडनका जो भारतके वायसराय थे, अनुकरण करना चाहिये, जिन्होंने मातृभूमिके लिये झाडू देने या एक साधारण सिपाही का काम करने में भी हिचकिचाहट न की।

यह नित्य देखने में आता है कि हमारी बहनें थोड़ा-सा सुख मिलने पर अनेक कार्यों को तिलांजलि दे बैठती हैं और मौका पड़ने पर इन कामों के अयोग्य सिद्ध होती हैं। वे अपने हाथों कुछ काम करना पसन्द नहीं करतीं, वरन बिल्कुल नौकरों के अधीन हो जाती हैं। वे इसी में अपना बड़प्पन समझती हैं कि हमारे यहां रसोइया रसोई बनाता है और खर्च मुनीम करता है। उनका समय तो सिनेमा, क्लब, शौपिंग, किसका गहना कितना अच्छा है, किसने फैशनसे बाल संवारे, किसने सुन्दर कपड़े पहने आदि प्रपंचों ही में बीत जाता है। आज यदि हमें दो मील चलनेको कहा जाय तो कमसे कम ५० प्रतिशत बहनें इनकार कर देंगी और कहेंगी 'मुझसे तो चला नहीं जाता'। कारण यही है कि वे आरम्भ से ही परिश्रम करनेसे हिचकती रही हैं। वे टहलनेकी आदत नहीं डालतीं इस लिये कुछ दूर भी चलनेमें झिझकती हैं और इस प्रकार अनेक रोगोंकी शिकार होकर कष्ट पाती हैं। यह प्रायः देखा जाता है कि स्त्रियां ही हिस्टिरिया रोगसे पीड़ित होती हैं और स्त्रियोंमें भी खास कर धनी। कारण स्पष्ट है कि वे मेहनत नहीं करना चाहतीं और न करती हैं।

मेरे मतमें सुख प्राप्तिका एक मात्र साधन है शारीरिक परिश्रम। परिश्रम करनेसे मन भी प्रफुल्लित होता है, रोग भी पास नहीं फटकते, और हमारे पिता, भाई, पति आदिको भी हमारी ओरसे चिन्ताग्रस्त नहीं रहना पड़ता। इस प्रकार हमारा पैसा भी डाक्टरोंकी जेबमें नहीं जाता और हम अपने परिवार सहित सुख व शान्तिका अनुभव भी करती हैं।

● श्रीमती शारदादेवीजी बिड़ला ●

माँ से

माँ, तेरे आँगन में—
क्यों हाहाकार मची है,
क्यों सिसक रहा है जीवन?
री, प्रलय-नृत्य करता क्यों—
यह मानव ही दानव बन?
निशि-दिन अशांति हँसती है—
माँ, तेरे कनकन में!
माँ तेरे आँगन में!

माँ, शोषित की आहें—
जगका जो जीवन दाता,
बेमौत मरे वह क्यों कर?
दाताका शोषण! कैसा—
आघात आज आहत पर!
जगतीतल जल जावेगा—
माँ, ये करुण कराहें!
माँ, शोषित की आहें!

माँ, यह रक्तिम होली!
इन शोषित के शोणित से,
चढ़ इनकी ही छाती पर,
हैं खेल रहे शोषक, क्यों
टूट न पड़ते इनके कर?
फैली है इस वसुधा पर—
खून भरी, माँ झोली!
माँ, यह रक्तिम होली!

माँ, चिर-शांति कहाँ है?
यह महाप्यास की ज्वाला,
जलता है इसमें मानव,
कब तक नभ में गूँजेगा
यह 'प्यास! प्यास!!' भीषण रव?
घर-घर में, हृदय-हृदय में—
माँ, बस क्रान्ति यहाँ है!
माँ, चिरशान्ति कहाँ है?

काछी बड़ौदा] **रमेशचन्द्र माहेश्वरी 'प्रदीप'**

माहेश्वरी

“ कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ”

बम्बई, ता० ७ अक्टोबर १९४१

युगावतार गान्धी

विश्ववन्द्य महात्मा गान्धीने गत २ अक्तूबर को अपने जीवनके ७२ वर्ष पूरे कर के ७३ वें वर्षमें पदार्पण किया है। उस दिन सारे राष्ट्रने उनकी वर्षगांठ धूमधाम और समारोह के साथ मनायी है। यह दिन हमारे देशके राष्ट्रीय जीवनमें एक उत्सव और पर्व का दिन है जब हम अपने देश के गौरव और प्राण बापूके रूपमें अपने राष्ट्रका स्मरण करते हैं। राष्ट्रोंके जीवनमें इस तरहके दिनों का बहुत बड़ा महत्व है जब अपने गौरव और स्वाधीनताकी चिर आकांक्षा फिर उनमें उद्बुद्ध होती है।

महात्मा गान्धी हमारे देश की जाग्रति व स्वाधीनता की उत्कट अभिलाषा के मूर्तिमान् प्रतीक है। आज देशमें जो व्यापक जागरण दिखायी पड़ता है, देश के बच्चे-बच्चेके हृदयमें अपनी हीन दुरवस्थाके प्रति आत्मग्लानि होकर उससे मुक्त होने की जो प्रबल अभिलाषा नजर आ रही है, अत्याचारी शासकके विरुद्ध सीना तानकर खड़े होने की जो आत्मिक शक्ति हमारे देशके मुर्दा दिलोंमें पैदा होगयी है वह महात्मा गान्धी की जीवनकी चिरसाधनाकी सम्पत्ति है। आजसे कुछ ही बरस पहले जिस देशके लोग स्वाधीनता और स्वराज्य का स्वप्न भी नहीं लेते थे, आत्मसम्मानसे अपने मानवीय अधिकारोंका उपभोग किस तरह किया जाता है इसका ख्याल भी नहीं कर सकते थे वही आज अपने मानवीय अधिकारों व जन्मसिद्ध स्वाधीनताके अधिकारकी प्राप्तिके लिए बड़ेसे बड़ा बलिदान करनेको तयार हैं। सारा देश मानों किसी दैवीय शक्तिकी प्रेरणासे इस अल्प कालमें ही उठ खड़ा हुआ है और अब वह समय भी दूर नहीं जब इस बन्दी राष्ट्रकी बन्धनकी श्रृंखलाएं भी छिन्न भिन्न होकर खिसक पड़ेंगी। देशका यह महान् कायापलट बापूके तप और साधनाका फल है इस बातसे इन्कार नहीं किया जा सकता।

एक साधारण मानवके रूपमें जीवनके प्रथम अध्यायमें प्रवेश करनेवाला पुरुष आज असाधारण महापुरुषोंकी कोटिमें आ गया है और एक राष्ट्र—बल्कि उससे भी परे राष्ट्रकी क्षुद्र सीमाओंको लांघ कर समूचे विश्वके लिए उपास्य और आराध्य बन गया है। महात्मा गान्धीकी इस महिमाका रहस्य उनकी सत्यनिष्ठा और विश्व प्रेम व अहिंसाके अस्खलित और अविचलित विश्वासके भीतर निहित है। जिस दिन गान्धीजीने अपने देशके कोटि-कोटि मनुष्योंको दुःख और दारिद्र्य तथा विदेशी शासकके असह्य अत्याचारोंसे पीड़ित होते देखा तब मानों उन अत्याचारोंकी व्यथासे उठे हुए उत्कट चीत्कारने उनके भीतर एक विद्रोहकी आग लगा दी। उसी समयसे उन्होंने राष्ट्रकी स्वाधीनता, दीन-दुखियोंकी पीड़ा व कष्टके निवारण और शोषितोंके शोषणका प्रतिकार करनेका संकल्प किया। और इस संकल्पके भीतरसे ही आजके उनके विश्व प्रेम और अहिंसाके दर्शनका जन्म हुआ।

आज सारे संसारमें दर्पोद्धत हिंस्र और बर्बर मानव पशुओंके द्वारा मानवताका गला घोंटा जा रहा है। सत्य, अहिंसा, प्रेम-इन सबके लिए आजके इस विनाशोन्मुख सभ्य कहलानेवाले युगमें कोई स्थान नहीं। आज संसारमें मानवतासे पशुता बलवान् हो उठी है और इस विपन्न मानवताके उद्धारके लिए ऐसे ही किसी महापुरुषकी आवश्यकता थी जो संसारको युद्ध, अशान्ति, विनाश और संहारके अपथसे बचा कर सुरक्षा और शान्तिकी सच्ची राह पर ला सके। पश्चिममें अहिंसा और प्रेमके अवतार महात्मा ईसाके अनुयायी राष्ट्रोंमें हिंस्र बल और बर्बरताकी विजय पताका फहरा रही है और दूसरी तरफ़ सुदूर पूर्वमें भी अहिंसाके उपदेष्टा भगवान् बुद्धके अनुयायी तोप गोलोंकी शक्तिसे निरीह और शान्ति प्रिय मनुष्य समाजका विनाश कर रहे हैं। उस समय भारतमें दो हज़ार वर्ष पहलेके शान्ति, प्रेम, मानवता और अहिंसाके सिद्धान्त और आदर्शकी प्रतिष्ठा हो रही है। इसी आदर्शकी भित्तिपर हमारे देशकी स्वाधीनताकी लड़ाई लड़ी जा रही है। जीवनका प्रत्येक पहलू प्रेम, अहिंसा विश्वास और मानवताकी दृष्टिसेही देखो–अहिंसा और मानवतामें विश्वास ही मानवताकी मर्यादाकी रक्षा कर सकते हैं—शत्रुको मित्र बनकर आसानीसे जीता जा सकता है शत्रु बनकर नहीं–यही महात्मा गान्धीके उपदेशोंका सार है। जब हम कहते हैं कि हम संसारमें चरम शान्ति की स्थापनाके लिए युद्ध का सहारा ले रहे हैं तब हम मानवताके प्रति घोर अविश्वास प्रकट कर रहे हैं। हम यह नहीं कहना चाहते कि संसार की रक्षा हम विनाशके द्वारा कर सकते हैं, उसे मारकर जिन्दा कर सकते हैं। आजके पश्चिमी राजनीतिज्ञोंकी राजनीतिमें यहीं एक घोर आत्मविरोध की छाया है। मौत जिन्दगी का तरीका नहीं। यह तो ठीक इसी प्रकार है मानों पश्चिम के राजनीतिज्ञ, शक्तिवादी और डिक्टेटर ज्वालामुखी के मुख पर या बारूद के ढेरपर राष्ट्रके लिए एक गृहका निर्माण कर जाना चाहते हैं। युद्धसे शान्ति स्थापित करनेका तरीका ऐसा ही तरीका है।

महात्माजीका इस हिंसा और युद्धमें विश्वास नहीं। उनके दर्शन, उनकी फिलासफीकी यही आत्मा है। इस अहिंसाके मूलमें ही एक प्रकारसे निर्भयता और दृढ़ताका रहस्य छिपा है। जो पुरुष प्रेमसे अपने शत्रुको भी किसी प्रकारका कष्ट दिये बिना अपने आपको मिटाकर कुछ पाना चाहता है उसकी इस अपनेको मिटाकर जीतनेकी भावनामें निर्भयता और प्रचण्ड शक्तिका कितना महान् स्रोत है। और हमारे देशके समान दुर्बल देशमें जिसके पास अस्त्र-शस्त्र नहीं, यहां तक कि आततायीसे अपनी रक्षा करनेके लिए मामूली लाठी तक नहीं—शत्रुके आक्रमण करने पर आत्मरक्षाके लिए द्वार बन्द करके भीतर बैठ रहनेके सिवाय जिसके पास और कोई उपाय नहीं, उसके लिए अहिंसा और प्रेम की भावनासे बढ़ कर अस्त्र हो ही क्या सकता है।

महात्माजी की यह अहिंसा की भावना समय की आवश्यकता का परिणाम नहीं। उनको इसमें अखण्ड विश्वास है और इसे वे अवसरवादी बनकर कभी छोड़नेके लिए भी तय्यार नहीं हुए। इसी लिए उन्होंने कहा था कि “ भारत की सेवाके लिए मैं इंग्लैण्ड या जर्मनी को कष्ट नहीं पहुंचाऊंगा। ” युद्धमें–अपने जीवन मरणके संघर्षमें–पड़े हुए इंग्लैण्डके विरुद्ध भी उन्होंने ऐसा कोई काम नहीं किया जिससे उसे कष्ट पहुंचे। अपने सिद्धान्त और विश्वासके प्रति कितने लोग हैं जो इतनी सचाई रख सकते हैं। २० मार्च सन १९४० को ब्रिटिश लार्ड सभामें आर्क बिशप आफ कैण्टरबरी ने भी, जो इंग्लैण्डमें ईसाइयत–अहिंसाके अवतार महात्मा ईसा की ईसायत–के एकमात्र प्रतिनिधि हैं, अपनी अहिंसाको युद्धके आतंकसे न्यायकी दुहाई देकर कलुषित कर दिया था। उन्होंने कहा था कि कभी कभी न्याय शान्तिसे अधिक बल्वान हो जाता है और उसकी रक्षाके लिए हमें शक्तिका संचय करना चाहिए। परन्तु महात्मा गान्धी की अहिंसा विशुद्ध अहिंसा है। उसमें अवसरवादिता नहीं। समय को देख कर उनका धर्म परिवर्त्तित नहीं होता। उनकी अहिंसामें हिसाब नहीं चलता।

इसी अहिंसा, प्रेम और मानवता की भावनासे प्रेरित होकर भारतके कोटि दरिद्रोंके कष्ट निवारणके लिए उन्होंने खादी और स्वदेशी को प्रोत्साहन दिया। देश की रक्षाके लिए साम्प्रदायिक विद्वेष हटानेका प्रयत्न किया। हरिजनोद्धारका आन्दोलन किया। इस सबमें उनको कहां तक सफलता मिली यह आज की भारतकी परिस्थितिको देखकर समझा जा सकता है। फलसे उनके कार्यका निर्णय किया जा सकता है। आज भारतमें अहिंसाकी सेनाके जो इतने सैनिक तय्यार हो गये हैं जो हंसते हंसते अपना बलिदान कर सकते हैं, आज देशमें जो जागृतिकी लहर फैल गयी है, वह सब उन्हीं का कर्तृत्व है।

भले ही उनके प्रयत्नकी चरम परिणति आज नहीं हुई। अत्याचारीके अत्याचारका अन्त अभी नहीं हुआ और देश अभी तक स्वाधीन नहीं हो पाया, तो भी बहुत आशा है। हम अपनी मंज़िल बहुत दूर तक तय कर चुके हैं। अन्याय और पापसे कोई कितना ही फले फूले पर एक दिन उसका ज़रूर समूल नाश हो जायगा।

महात्माजीके प्रयत्नोंकी चरम परिणति करनेके लिए स्वयं हमारा भी प्रयत्न अपेक्षणीय है। हमने उनकी जयन्ती मनायी है पर उनकी सच्ची जयन्ती यही है कि महात्मा गान्धीने जिन प्रवृत्तियों और कार्योंको शुरु किया है, उनमें अटूट विश्वास रखते हुए हम संलग्न हो जांय। स्वयं महात्माजीने कहा है कि मेरी प्रवृत्तियोंके इलावा मेरी और कोई शक्ति नहीं। उनमें यदि देश संलग्न हो जाय तभी मुझे सच्चा सन्तोष प्राप्त होगा।

अन्तमें हम हृदयसे कामना करते हैं, बापू चिरंजीवी हो !

एक व्यावसायिक योजना

‘ माहेश्वरी ’ पत्रके ता. २१ सितंबरके अङ्कमें सम्पादकीय स्तंभमें शिक्षा प्रसार विषयक एक विचारणीय योजना प्रकाशित हो चुकी है।

यदि हमें मारवाड़ी समाजकी सर्वांगपूर्ण उन्नति देखनी है तो ऐसी-ऐसी योजनाओंको मूर्त्त स्वरूप देनेके लिए आगे बढ़ना चाहिए। समाजको शिक्षित बनानेके साथ–साथ समृद्ध भी बनाना वांछनीय है। यों समाज शिक्षित, समृद्ध बनता चला गया तो इसमें कोई सन्देह नहीं कि वह दिन जल्दी ही देखना मिलेगा जिसकी तमन्ना भारतके कोने–कोनेमें व्याप रही है। वही दिन हमें पुनः देखनेको मिलेंगे जिनको हम आये दिन “ सुजलां सुफलां सस्य श्यामलां मलयज शीतलां ” के द्वारा स्मरण करते रहते हैं। आज हम समाजके सन्मुख एक और नयी योजना रख रहे हैं और उस पर समाजका ध्यान आकर्षित करते हैं। समाज इसे मनन करे और समाजका औद्योगिकीकरण करनेमें पूरा २ सहयोग प्रदान करे।

वर्तमानकाल व्यावसायिक युग है। अतः हमारे दानी समाजकी दानप्रणाली भी व्यावसायिक बुद्धिसे परिमार्जित होती रहनी चाहिये। हमें युरोप, अमेरिका और जापान तथा अन्यान्य भारतीय समाजोंसे इस विषयमें शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। यूरोप, अमेरिका, जापान प्रभृति व्यवसायी वर्गके लोग जो काम बड़ी आसानीसे थोड़े अर्सेमें कर सकते हैं उसी कार्यको छोटे दायरेमें करना हमारे समाज के लिये दीर्घ कालीन योजना हो जाया करती है। इस पर भी उसे सफल बनानेकी शंका सिरपर सवार रहा करती है।

भारतीय समाज बड़ा ही धर्मभीरू है। गोरक्षाके नामपर असंख्य पैसा प्रतिसाल इकट्ठा होता है और व्यय हो जाता

110674

है, परंतु शायद ही कोई गोशालायें स्वावलंबी होंगी; और इन अल्प नामांकित गोशालाओंमेंसे भी थोड़ी ही वैज्ञानिक ढंगसे स्वच्छ और स्वास्थ्यप्रद मिलेंगी। इसके विपरीत अमेरिका, यूरोप चीन और जापानमें गोरक्षण संस्थाएं (Dairies) इतनी सुंदर और वैज्ञानिक ढंगपर चलायी जाती हैं, जिसकी कल्पना हमारे पाठक शायद ही कर सकें। साथ ही साथ उन देशोंमें ये गोरक्षण संस्थाएं धार्मिक संस्थाएं नहीं मानी जातीं बल्कि उनका निर्माण और संचालन व्यवसायिक पद्धतिपर किया जाता है, और उन देशोंके व्यवसायी इन संस्थाओंसे अत्यधिक आर्थिक लाभ भी उठाते हैं।

इसी तरह भारतीय समाजका मन्दिरों और मठोंके प्रति किया हुआ दान अधिकांशमें व्यर्थ जाता है, और उनसे कोई भी प्रतिलाभ देश और समाजको नहीं मिलता। इसके विपरीत अमेरिका, यूरोपकी मिशनरियां कितना अधिक देशोपयोगी और समाजोपयोगी कार्य किया करती हैं, यह हमारे चर्मचक्षुओंका विषय नहीं हैं।

हमारे देशकी शिक्षण संस्थाएं भी अपंग हैं। कारण, देशकी पद्धतिके अनुसार प्रत्येक व्यक्तिका झुकाव निःशुल्क शिक्षालयोंमें अपने बच्चोंको प्रवेश करवानेकी तरफ़ होता है। इन संस्थाओंमें न तो आधुनिक ढंगका विकासमय शिक्षण ही उपलब्ध होता है और न उन शिक्षण संस्थाओंका भी स्वतंत्र अस्तित्व है। अगर देशकी कुल छोटी-बड़ी शिक्षणशालाओंकी तालिका बनाई जाय तो संभवतः २ प्रति सैंकड़ा शिक्षण संस्थाएं ऐसी मिलेंगी जिनके पास पर्याप्त कोश है, अन्यथा ९८ प्रतिशत संस्थाएं आये दिन झोली लिये भीख मांगती नजर आती हैं।

यहां प्रश्न यह उठता है कि समाज का इतना धन व्यय होते हुए भी यह हालत क्यों है? इसका उत्तर एक ही हो सकता है कि इन संस्थाओंके निर्माणकर्ताओंके पीछे व्यावसायिक बुद्धि नहीं रही। फलस्वरूप यह अवांछनीय अवस्था आज उपस्थित होगई है।

यह व्यावसायिक बुद्धिसे हमारा मतलब यह है कि समाजके लोग संस्थाओंका निर्माण करते समय अथवा संस्थाओंको दान देते समय विचार करें कि उन संस्थाओंको जीवित रखने के लिये कोई योजना है या नहीं? यदि है तब तो ठीक ही है, अन्यथा ऐसी योजना निकालनी चाहिये जिससे दानका सदुपयोग हो सके, नहीं तो दिया हुआ दान उन संस्थाओंके अस्तित्वके साथ ही नष्ट-भ्रष्ट हो जायगा।

योजनासे हमारा मतलब यह है कि कोई ऐसी प्रतिक्रिया होनी चाहिये, जिसके द्वारा उस संस्थाके लिये कुछ निश्चित कार्यकी व्यवस्था की जा सके। इसका कारण यह है कि दाताका समय और विचार सर्वदा एक समान नहीं रहता और इससे किसी भी विपरीत परिस्थितिमें वह निरवलम्ब संस्था भग्नावशेषमें परिणत हो जायगी।

आज हम एक योजना पाठकोंके सन्मुख रख रहे हैं, जिसका विस्तृत विवरण तो हम बादमें देंगे परन्तु इसकी रूपरेखा (Outlines) यहां दे रहे हैं। हमारा उद्देश्य एक १० लाख रुपयों की लिमिटेड कम्पनी स्थापित करना है। और यह १० लाख की रकम कम्पनीके प्रिफरेन्स और ओर्डिनरी शेयर्स उठाकर एकत्रित करना है। कम्पनीके प्रिफरेन्स शेयरों पर निश्चित मुनाफा (व्याज) दिया जायगा जो प्रौढ़ावस्थाके भाई-बहनों तथा संस्थाओंके लिये सुरक्षित (Reserve) रहेगा। कम्पनीके ओर्डिनरी शेयर्स पर कम्पनीके संचालकों (Directors) की सिफारिशोंके अनुसार मुनाफा दिया जायगा। शेष आमदनी संचालक-समितिकी इच्छानुसार समाजोपयोगी कार्योंमें लगायी जायगी।

उपरोक्त कंपनीको हम होल्डिंग कंपनी (दूसरी कंपनियोंके अधिकांश हिस्से खरीदनेवाली कंपनी) कहेंगे। इस होल्डिंग कंपनीके डायरेक्टर्सका किसी भी प्रकार कंपनीके साथ व्यापारिक ताल्लुक नहीं रह सकेगा। डायरेक्टरोंको सभामें उपस्थित होनेके लिये निश्चित फ़ीस तथा सफ़र-खर्च दिया जायगा। और इसके अलावा कुछ मनोनीत डायरेक्टर भी होंगे जो अपनी सेवायें कम्पनीको समर्पित करेंगे।

जब इस होल्डिंग कंपनीका निर्माण हो जायगा तब इसमें कार्य करनेवाले विशेषज्ञ कंपनीके डायरेक्टर बोर्ड के समक्ष नयी औद्योगिक और व्यापारिक योजनाएं रक्खेंगे, और जब होल्डिंग कंपनीके डायरेक्टर्स उन योजनाओं को व्यावसायिक दृष्टिसे व्यवहार्य (Feasible) समझेंगे, तब यह पूर्वकथित होल्डिंग कंपनी अन्यान्य पृथक् पृथक् कम्पनियोंकी आयोजना करेगी, और स्वयं उन आयोजित कम्पनियों (Floating Companies) की प्रबन्धक आढ़तिया (Managing Agents) बनेगी। इसी प्रकार उन आयोजित कंपनियोंमें अपने हितोंकी रक्षार्थ अपने प्रतिनिधि निर्वाचित करेगी तथा प्रबंधक एजन्टकी योग्यता (Qualification) के लिये आयोजित कंपनियोंके शेयर्स लेकर अपनी पूंजी लगायगी।

इस पद्धतिसे जो आमदनी होल्डिंग कंपनीको होगी उससे कंपनीके हिस्सेदारों (Shareholders) को व्याज (Dividend) दे चुकनेपर जो शेष मुनाफा बचेगा वह डायरेक्टरोंकी इच्छासे समाजहितके कार्यमें लगाया जायगा।

इस होल्डिंग कंपनीके शेयर्स लेनेवाले भाई-बहन अपनी रकमको सुरक्षित रखते हुए केवल एक निश्चित डिविडेन्ड पानेके ही अधिकारी नहीं होंगे बल्कि होल्डिंग कंपनीसे होनेवाले समाजपयोगी कार्यमें हाथ बटाकर पुण्यके भागी बनेंगे। साथ ही होल्डिंग कंपनी तथा उसकी संचालित कंपनियों द्वारा असंख्य भाई-बहनोंको आजीविका मिला करेगी, एवं शिक्षा और समाजहित के अन्य कार्योंसे अध्ययन का तिमिरोच्छेद होकर समाज सर्वांग सुंदर बनता जायगा। हमें विश्वास है कि पाठकवृंद इस योजनाको अपनायेंगे, एवं अपने विचारोंसे हमें समयोपयोगी सूचनाएं देंगे; जिससे समाज उत्साहित होकर शीघ्रातिशीघ्र इस योजनाको क्रियात्मक रूप देनेमें अग्रसर हो सके।

कृष्णलाल बागड़ी
राधाकृष्ण लाहोटी

शिक्षा-प्रसार विषयक योजनापर विचार

धनी मानी सज्जन आगे आयें

शिक्षा-प्रसारके विषयका ता. २६-९-४१ का पत्र प्राप्त हुआ। बड़े हर्षका विषय है कि आप महानुभावोंका ध्यान इस परम आवश्यक विषयकी ओर गया है। यह विषय अ. भा. माहेश्वरी महासभाके अजमेर अधिवेशनमें "औद्योगिक कॉलेज" के रूपमें पास हो चुका है, परन्तु श्री मनोनीत प्रधानजीके कांग्रेसके कार्यमें लग जानेके कारण उक्त प्रस्ताव को अमली जामा न पहनाया जा सका, जिसकी आवश्यकता थी। अस्तु, इस समयकी योजनाको कार्यान्वित करनेके लिये भगीरथ प्रयत्नकी आवश्यकता होगी जिससे कि "शक्ति और धनका दुरुपयोग" न हो।

१—मेरी समझमें इस स्कीमका आवश्यक अंग विद्यार्थियोंको देश और विदेशमें छात्रवृत्तियां देना है।

२—दूसरे स्थानपर विधवाओंका पालन और शिक्षा है।

३—तीसरे स्थानपर अनाथ बालक-बालिकाओंका पालन-पोषण और शिक्षा है।

४—चतुर्थ स्थान पर साहित्यिकों तथा उपदेशकोंके लिये निधि स्थापित करना है।

५—पांचवां पुरस्कार निधिकी आवश्यकता है।

उपरोक्त निधियोंकी पूर्तिके लिये माहेश्वरी समाजके प्रख्यात धनीमानी सज्जनोंको आगे आना चाहिये। इनके आगे आनेसे शिक्षाप्रसारक संघकी स्थापना हो सकती है, और आजीवन सदस्योंको स्वयमेव अपना जीवन अर्पण करनेके लिये निकलना संभव है।

साधारण सदस्य १००) से १०००) तक दान देने वालोंकी अपेक्षा यदि इस रकमको १०) से १००) तक कर दिया जावे तो मेरी समझमें अधिक संख्यामें सदस्य मिल सकेंगे। हर्षका विषय है कि पूज्य श्री. ब्रिजलालजी बियाणी ता. ८-१०-४१ को आपके मध्यमें आ रहे हैं। यदि ऐसे महारथी इस शिक्षा प्रसारके कार्यके लिये सन्नद्ध हो जावें तो उपरोक्त स्कीम जल्दी सफलीभूत हो सकती है।

खेद है कि मैं जर्जर अवस्थामें हूं, अन्यथा आजीवन सदस्य बननेका प्रयत्न करता।

अजमेर] **केशवदेव कपूरिया**

शिक्षा कैसी हो?

ता. २१ सितम्बर १९४१ के "माहेश्वरी" में शिक्षा विषयक जो योजना प्रकाशित हुई है, वह सर्वथा प्रशंसनीय है। पर साथ ही यह विचार विमर्श होना अत्यावश्यक है कि शिक्षा का क्रम कैसा हो। क्योंकि आधुनिक शिक्षा पद्धति सर्वथा अनुपयुक्त, दोषपूर्ण, एवं खर्चीली है। यदि वास्तविकरूपसे उन्नति अभीष्ट है तो पूर्वसे ही शिक्षा क्रम पर विद्वानों द्वारा निर्णय होजाना चाहिये जो प्राचीन हिन्दू संस्कृति व धर्म के रक्षक तथा सच्चे देश हितैषी हों।

बंबई] **रामरतन मोदाणी**

औसर या गंगाप्रसादी?

श्री बालकृष्णजी धूत

गत ता. २१ जुलाई १९४१ के 'माहेश्वरी' के अंकके अग्रलेखमें संपादक महोदयने गंगाप्रसादीको औसर माननेका विचार प्रकट किया था। परन्तु संपादकजी के इन विचारोंसे जोधपुरका हरेक व्यक्ति सहमत नहीं हो सकता। मैं भी कई वर्षोंसे इस विषयमें सोचता रहा, आखिरमें मैंने तो यही निर्णय किया कि गंगाप्रसादीको औसरका रूपान्तर तो नहीं कहा जा सकता। जहाँ तक मेरा ख्याल है इस परसे कहा जा सकता है, कि मारवाड़ी समाजमें औसर यानी न्याती भोज तेरहवें दिन होता है, हालांकि जोधपुरमें अन्य प्रान्तोंकी तरह तेहरवें दिन औसर न करके बाहरवें दिन ही सगे सम्बन्धियोंको निमन्त्रित किया जाता है। बाहरवें दिन जब भोज हो जाता है, तो उसे औसर मान लिया जाता हैं। अब प्रश्न यह उठता है, कि क्या कोई व्यक्ति तीर्थ यात्रा करके आवे, और वह गंगा की प्रसादी करे तो उसे हम किस प्रकार औसर मान सकते है। जहां तक मेरा ख्याल है, उसपरसे कहा जा सकता है, कि यदि कोई भाई ५-७ वर्षोंके बाद तीर्थ यात्रा करके आवे और वह न्याती भोज करे, तो वह औसर नहीं कहा जा सकता। औसरकी मर्यादा १३ दिनों तक ही सीमित रखी जा सकती हैं। आगे चल कर संपादकजी लिखते हैं, कि आखिर गंगाजल का कलश भरकर गंगाप्रसादी करना मृत्युके तेहरवें दिन बाद ही क्यों किया जाता हैं। उपरोक्त प्रश्नका उत्तर तो सीधा ही है, कि हमारी समाजमें एक ऐसा रिवाज पड़ गया है, कि जहां तक घरमें बुड्ढे बडेरे बैठे हुये होते हैं, वे तीर्थयात्राको जाना उचित नहीं समझते। यही वजह है, कि हम गंगाप्रसादीको औसर नहीं कह सकते। हां यदि कोई व्यक्ति तेहरवें दिन के भीतर ही गंगाका कलश भरकर ले आवें और वह गंगाप्रसादी करे, तो अवश्य ही हम उसे औसर मान सकते हैं। [बम्बई

यह हम कभी नहीं भूल सकते कि जब जर्मनीने यूरोप पर हमला किया, उसके पहिले ही उसे खुद अपने आदमियों से लड़ाई करना पड़ी। हालमें तो इतना ज्यादा होता है कि हम यह बिलकुल ही भूल जाते हैं कि गत सात वर्षोंमें जर्मनीने अपने सैकड़ों हजारों आदमियोंको लूटा, तकलीफें दीं, कैदी बनाया और देशसे निकाल दिया।

जब वह इनसे पिण्ड छुड़ा सका तभी वह फ्रान्स और ब्रिटेनके विरुद्ध कार्रवाही शुरू कर सका। इसके पहले वह कार्रवाही शुरू ही नहीं कर सकता था। मैंने कहा था कि यह युद्ध १९१४ के महायुद्धके समान नहीं है। और यहाँ उसका प्रमाण है। १९१४ के महायुद्ध के पहिले जर्मनी में न तो ये निर्दयताके काम हुए थे और न सैकड़ों हजारों दुःखी और निर्दोष आदमी निर्वासित किये गये थे।

जर्मनीने

जर्मनी ने जर्मनों के साथ कैसा बर्त्ताव किया, उसके कुछ नमूने यह हैं। मैं एक लेखक की हालतमें हूँ और मुझे संस्कृति और दिमाग सम्बन्धी बातों से ज्यादा मतलब है। नाज़ियों के द्वारा दिये हुए शारीरिक कष्टों की घटनाओं की अपेक्षा, मैं नाजियों के द्वारा दिमाग को प्रताड़ित और भयभीत करने के प्रयत्नों से विशेष सम्बन्ध रखूंगा। ये लोग कोई मूर्ख नहीं है। इसलिए इनकी हँसी उड़ाना हमारी बहुत बड़ी गलती है और जो कुछ वे कहते हैं वह शुरू में बहुत युक्ति संगत और श्रेष्ठ मालूम पड़ता है।

एक नमूना लीजिए। वे कहते हैं कि निसर्गज वृत्ति तर्कशक्ति से श्रेष्ठ है और आचरण पुस्तकीय ज्ञानसे बेहतर है। मैं मानता हूँ। वाल्टर फोन शिराच, जो कि हाल तक नाज़ी नवयुवकोंका नेता था, कहता है, "नाज़ियोंकी क्रान्ति आत्माकी क्रान्ति है और सदैव रही है। यह उस शक्तिको प्रकट करती है जिसको बुद्धिवादी नहीं मानता है क्योंकी इस शक्तिकी धारणा उतना ही कठिन है, जितनी कि ईश्वरकी—जिसने कि वह शक्ति प्रदान की है—आत्मा और भावनाकी शक्ति।

यह लगता तो ठीक है, पर ज़रा ठहरो। यहाँ एक सूराख मालूम पड़ता है। इस आत्माको हरदम मशीनगनकी ज़रूरत क्यों पड़ती है और आचरण बुद्धिका बंदोबस्त सिर्फ उसी समय क्यों करता है जब कि वह बुद्धिको 'कन्सेन्ट्रेशन केम्प' में पाता है और स्वयं हाथमें कोड़ा रखता है। निसर्गज वृत्ति इतनी उत्कटताके साथ क्यों सताई जाती है और भावना का अर्थ बेसमझी क्यों है? ऊपरसे तो नाज़ी कौम कोई ज्यादा खराब नहीं दिखती पर ज़रा अंदर देखिए तो आपको असहष्णुता और क्रूरता ही मिलेगी।

मैं जर्मनीके पिछले सात वर्षोंमें सताए गये, उन लेखकों, चित्रकारों, मूर्तिकारों, गाने-बजाने वालों, दार्शनिकों, वैज्ञानिकों और वेदान्तियों का बयान नहीं कर सकता। इसके लिए मुझे बहुत समय चाहिए। परन्तु महात्मा आइन्सटाइन, जो आजकल का सबसे बड़ा वैज्ञानिक है और जिसने कि विश्वके सम्बन्धमें हमें नया ज्ञान दिया, वह भी निर्वासित है। मनोविज्ञान-वेत्ता फ्रूडके बारेमें सोचिए। वह भी निर्वासित अवस्थामें मर गया। थौमस मान जो कि जर्मनीका सबसे अच्छा लेखक है, वह भी निर्वासित है क्यों कि वह उपन्यास अपने ही तरीके पर, स्वतंत्रतासे लिखकर शान्तिसे रहना चाहता है। फिर ज़रा मामूली आदमियों की हालत तो सोचिए। मैं अपने एक लेखक मित्रको जानता हूं। वह 'वियेना' से निकलकर बच गया। उसका अपराध सिर्फ यह है कि वह यहूदी है। एक दूसरे लेखकका जो कि बिलकुल आर्य ही था, अपराध यह था का वह सिर्फ सोचता था। कितने ही आदमी अपमानित किये जाते हैं और नीचा दिखाए जाते हैं फिर भी नाज़ी क्रान्ति आत्मा की क्रान्ति है। मुझे आश्चर्य होता है। कुछ ही समय हुआ जब कि एक समय के लिए विश्वविख्यात 'हेडिल बर्ग' की युनिवर्सिटीने अपना २५० वाँ वार्षिकोत्सव मनाया। शिक्षा और विज्ञानके मंत्रीको व्याख्यान देनेका अच्छा मौका मिला। उनका विषय था कि विज्ञान का वह पुराना ख्याल अब जाता रहा है। पहिले विज्ञान का काम सदैव यथार्थता की खोज करना था पर अब वही विज्ञान शासकों के मातहत ही काम कर सकता है और इसका निश्चय शासकोंके हाथमें होगा कि किस बातकी खोज की जाय जिससे कि देशको लाभ हो।

अब कलाकी ओर नज़र डालिये। कुछ ही अरसा हुआ जब कि म्युनिकमें हिटलरने कला की बाबत एक व्याख्यान दिया था। उसमें हिटलरने कहा था कि "यहूदी लोगोंने अपनी तथा-कथित कलामय आलोचनाओंसे जनता के दिलमें गड़बड़ी पैदा कर दी है और कलाको वर्ष-वर्ष बदलनेवाले फैशन के दर्जेमें रख दिया है। हिटलर ने यह भी कहा कि न तो कला फैशनेबल है और न अन्तर्राष्ट्रीय, किन्तु वह सदैव ही जर्मनी की राष्ट्रभावनाके अनुकूल रही है और यदि कोई कलाकार कोई भी कृति तैयार करे तो वह कृति उसका स्मारक न होकर देश का स्मारक होनी चाहिए"।

जर्मनोंके साथ

जब कि हिटलर कला और फैशनमें अन्तर बताता है तो शायद आप उससे सहमत होंगे। पर ज़रा ठहरिए। वह आगे यह भी कहता है कि "पतित कलाकारों से मैं सिर्फ यही कहूँगा कि वे अपने तथा-कथित अनुभवों को जनताके सिर पर न लादें। यदि उनको खेत हरे दिखते हैं तो उनका दिमाग ठिकाने नहीं है और उन्हें पागलखाने में जाना चाहिए। और यदि वे सिर्फ खेतों को हरा देखने का बहाना करते हैं तो वे गुनहगार हैं और उन्हें जेल जाना चाहिए। मैं देश को ऐसे आदमियों से मुक्त कर दूंगा और उनके पतनमें किसी को भाग नहीं लेने दूंगा। उनके दण्ड का दिन ज़रूर आयगा।

ज़रा गौर कीजिए। "जिस तरह कि एक वैज्ञानिक इस बात को तय न करे कि किन वस्तुओं पर उसे प्रयोग करना है उसी तरह एक कलाकार भी यह निश्चय न कर सके कि उसे अपने विचारों को किस तरह प्रगट करना है। दोनों बातों में हाकिम ही इस बात को तय करता है। चूंकि हाकिमने किसी भी खेत का रंग कभी भी नीला नहीं देखा इस लिये हाकिमद्वारा यह सदैव के लिये तय हो जाता है कि खेतों का रंग क्या है।" यह भाषण बड़ी फटकार के बाद समाप्त होता है और श्रोतागणों को चित्रशालासे ले जाकर कन्सेन्ट्रेशन केम्प में बन्द कर दिया जाता है। वहाँ वे तब तक बन्द रहते हैं जब तक कि वे अपने लक्षण नहीं सुधार लेते और हिटलर जिसे सुन्दर कहता है उसमें आनंद नहीं लेने लगते।

ई. एम फॉर्स्टर

यह निर्वासित करनेकी धमकी तमाम संस्कृतिमें भरी हुई है। यह ख्याल कि एक आदमी एक चीज़ पसंद करे और दूसरा दूसरीको, उन्हें बिल्कुल असहनीय है। जब तक वह दूसरेको धोखा न दे उसे आनंद नहीं आता। मुझे भी कोई खेत हरे नहीं दिखते। परन्तु यदि किसीको हरे दिखें तो मुझे क्रोध नहीं आता और उदाहरणार्थ जब गोंध जैसे कलाकारको खेत हरे दिखते हैं तो क्षणभरके लिये मैं उनकी आखोंसे भी देख लेता हूँ।

अब साहित्यके विषयमें। मुझे ग्रन्थोंके जलानेवाली उस प्रसिद्ध घटनाकी याद दिलाने दीजिए क्योंकि वह और किसी घटनाकी अपेक्षा इस बातको ज्यादा अच्छे तरीके पर प्रस्तुत करती है कि जर्मनी जर्मनोंके साथ किस तरहका व्यवहार करता है। नाज़ियोंने यह चाहा था कि उपरोक्त घटना उनकी सांस्कृतिक रीति-नीतिका चिन्ह स्वरूप हो और मुझे विश्वास है कि होगी भी। १३ मई १९३३ की रात्रिको लगभग ४०००० व्यक्तियोंके सामने बर्लिनके विश्वविद्यालयके बाहर २५००० ग्रन्थ जलाकर भस्म कर दिये गये। अधिकाँश आदमी ज्वाला देखकर खुश होते हैं और ऐसा कहा जाता है कि इस ज्वालाको भी देखकर आदमी बहुत खुश हुए थे। उन किताबों में कुछ यहूदियों की लिखी थीं, कुछ साम्यवादियों की थीं, कुछ उदार दल वालों की और कुछ "अवैज्ञानिक" थीं और सबकी सब "अजर्मन" थी।

क्या-क्या "अजर्मन" है, इसका निश्चय करना गवर्मेन्ट के हाथ में था। उपरोक्त घटना के सिलसिले में बड़ी रस्म अदा-की गई थी। एक के बाद एक नौ नेता आए और उन्होंने मन्त्रोच्चारण के साथ एक एक ग्रन्थकार की कृतियों को अग्नि में स्वाहा कर दिया। उदाहरणार्थ चौथे नेता ने कहा, "युद्धके खतरों की अत्युक्ति करके आत्मा के क्रमशः क्षय करने के सम्बन्धमें मनुष्य की लगन की श्रेष्ठता को मानते हुए मैं सिगमंड फ्रायड की रचनाओं को अग्नि के समर्पण करता हूँ। सातवें नेताने कहा, "विश्व युद्धके सैनिकों की शिक्षाके गुमराह करनेके विषयमें इस बात की ताईदके साथ कि हमारी प्रजा की शिक्षा यथार्थता की भावनाके साथ होनी चाहिए, मैं "All Quiet on the Western Front" के लेखक एरिच मेयर रेमाके की कृतियों को अग्निमें स्वाहा करता हूं।

क्या किया!

प्रान्तोंमें भी यह अग्नि काण्ड मचाया गया था। विद्यार्थियों को यूनिवर्सिटीके बाहर "अपयशके स्तम्भ" खड़े करने की हिदायतें दी गईं थीं। स्तम्भ एक 'मोटी पेड़ की पींड का ५ या ६ फुट लम्बा' होना चाहिए। और उस पर उन आदमियोंके कहे हुए शब्द लिखे जाने चाहियें जिन्होंने आचरण की बदनामीके कामोंमें (नाज़ियोंके अनुसार) भाग लिया और जिनकी जर्मन नागरिकता छीन ली गई थी।

'आचरण' की ओर जो संकेत किया गया है, उस पर गौर कीजिए। यह बिलकुल साफ है। 'आत्मा' के समान 'आचरण' भी क्रूरताके लिये एक मौका है। पुस्तकोंको जलानेके बाद साहित्यपर बाकायदा अधिकार जमा लिया गया था। सार्वजनिक पुस्तकालयोंकी जाँच करनेके लिये एक संस्था स्थापित की गई थी। पुरानी पुस्तकोंकी दुकानें भी बन्द कर दीं गईं थीं। लायसन्सके बिना पुस्तकें

(शेष पृष्ठ ६ के कालम ३ पर)

अमेरिकामें जर्मनीका व्यापारिक जाल

इस लेखके विद्वान् लेखक श्री. थर्मन आर्नोल्ड संयुक्त राष्ट्र अमेरिकाके एन्टी–ट्रस्ट डिविज़नके पिछले तीन सालसे प्रमुख रहे हैं, और इस समय वे वहांके न्यायविभागमें आसिस्टेंट एटोर्नी जनरलके पद पर हैं। ऐसे महत्वके स्थान पर रहते हुए उन्होंने प्रजातंत्र राष्ट्रों की अर्थ प्रणाली की जो क्षतियां बतायी हैं, वह वास्तवमें विचारणीय हैं। इस लेखमें उन्होंने बतलाया है कि संयुक्त राष्ट्र अमेरिकाके कोरपोरेशनोंनें पेटेन्टों को विभाजित करने तथा संसारके बाजारों का बंटवारा करनेके लिय जर्मनी से जो समझौते किए, उससे अमेरिका का युद्धोत्पादन व रक्षा का कार्य कितनी बुरी तरह संकटग्रस्त हो गया है।

● थर्मन आर्नोल्ड ●

देखा जाय तो आजका यह युद्ध जंगी सेनाओंके बीच उतना संघर्ष नहीं है जितना कि औद्योगिक सेनाओंके बीच। आज हम देखते हैं कि युद्धमें सैनिक उतने मरते नहीं जितने कि वे मशीनोंके द्वारा असहाय और निर्बल बना दिये जाते हैं।

क्या कारण है कि जर्मनी जैसा एक दिवालिया राष्ट्र इंग्लेंड जैसे एक महाजनी राष्ट्रको युद्ध सामग्रीके कुछ आधारभूत युद्ध सामग्रियोंके उत्पादनमें पछाड़ देनेमें समर्थ हुआ? और क्यों कर अमेरिका आज दो वर्षोंसे खतरेके बढ़ते हुए भी, यह महसूस कर रहा है कि यौद्धिक शस्त्रास्त्रोंका भंडार आज वैसी युद्धसामग्रीसे खाली पड़ा हैं?

इसका कारण यह है कि कई वर्षों तक, कुछ व्यापारिक एकाधिकारी (Monopolists) अपने अधिपत्यकी रक्षा करनेके लिये प्रतिस्पर्धाका गला घोंटते रहे हैं। इसीने यौद्धिक साधनोंकी उत्पत्तिको धीमा करने और हिटलरको आगे बढनेका मौका दिया है।

इस विषयमें सबसे अद्‌भुत बात तो यह है कि प्रजातंत्र राष्ट्रोंको अपने उत्पादन पर अंकुश रखनेमें हिटलर किस प्रकार सफल हुआ, जब कि वह अपने उत्पादनको बढ़ाता जा रहा था, और उसने इन देशोंके अधिक उत्पादनके खतरेकी, और कीमतको टिकाये रखने तथा अपने कब्जेको दृढ़ करनेकी इच्छाका किस प्रकार लाभ उठाया।

उसका तरीका यह था कि जर्मन फर्मों और अमेरिकन फर्मों के बीच व्यापारिक संबंध बांधा जाय, ताकि अपने देशमें प्रतिस्पर्धा को हटाने के लिये अमेरिकन व्यवसायी अपने विदेशी बाजार जर्मनीके हवाले कर दें। इसका यह मतलब हुआ कि अमेरिकामें उत्पादनपर नियंत्रण रक्खा जाय। और अब हम यह देख ही रहे हैं कि रक्षा की कुछ अत्यावश्यक सामग्री को उत्पन्न करनेके लिए हमारे पास साधनों की तथा कुशल कारागरोंकी कितनी कमी है।

इसका एक सुंदर उदाहरण लीजिए। युद्धसे पहले युनाइटेड स्टेट्समें सेनाओंकी ऐनकों व दूरबीनों आदि का 'बोश एण्ड लोम्ब' के पास एकाधिकार था। 'बोश एण्ड लोम्ब' कंपनी यहां (अमेरिकामें) प्रतिस्पर्धा नहीं चाहती थी, अतः सन् १९२१ में उसने ज़ाईस नामक एक जर्मन कंपनीसे यह समझौता किया कि यदि वह 'बोश और लोम्ब' के एकाधिकारमें यहां दखल न दे तब 'बोश और लोम्ब' शेष सारी दुनियामें उसका मुकाबला नहीं करेगी। इस प्रकार हमने यहां पर उत्पन्न हो सकनेवाले अनेक यंत्रोंको बननेसे रोका, जिनके ज़रिये अनेक कुशल कारीगर—जिनकी आज सख्त जरूरत है—पैदा हो सकते थे। और यह हम जानते हैं कि इन चीज़ोंका हमारे पास नितान्त अभाव है। इसी तरह हमने दक्षिण अमेरिकामें मुख्य बाज़ार देकर जर्मन आर्थिक प्रवेश को भी मदद दी है, और अन्तमें इंग्लैंडको मजबूर किया कि वह यहांके बजाय, जर्मनीसे सैनिक यंत्र खरीदे।

सन् १९३५ में फ्रेंच एण्ड अंग्रेजोंने तोपों, बन्दूकों और पनडुब्बियोंके लिए आवश्यक दूरबीनोंके लिये १५००००० डालरका 'बोश एण्ड लोम्ब' को आर्डर दिया। लेकिन 'बोश एण्ड लोम्ब' ने उस आर्डरको नामंजूर किया, क्योंकि समझौतेके अनुसार समस्त विदेशी व्यापार तो जर्मनीके हवाले कर दिया गया था। इसे देखकर कौन कह सकता है कि हमारा देश प्रजातंत्र राष्ट्रों का शस्त्रागार बन रहा हैं। 'बोश एण्ड लोम्ब' को इस गैरकानूनी समझौतेके लिये जुर्माना अदा करना पडा है और आज वह क्षतिपूर्तिके लिये यत्न कर रहा है। लेकिन लड़ाई छिडनेसे पहले ही यदि हम शेरमैन एक्ट को जारी कर देते तो परिस्थिति कुछ दूसरी ही होती।

टंगस्टन कार्बाइड का ही उदाहरण लीजिए। इससे काटनेके ऐसे औजार बनाये जाते हैं जो हीरे को छोड़कर और सबसे अधिक कठोर होते हैं। इनका प्रयोग उत्पादन के वेगको अत्यधिक बढ़ा देता है। और दूसरे, तेज करनेके लिये हमें यंत्रोंको बंद कर देनेकी आवश्यकता भी नहीं रहती। जिन मशीनोंमें इसके उपयोगके लिए नये ढंगके औजार लगाये गये हैं उनमें टंगस्टन कार्बाइडने मशीन चलानेके तरीकोंको एकदम बदल डाला है। लेकिन निष्णात लोगोंका कहना है कि जर्मनीमें अमेरिकाकी अपेक्षा टंगस्टन कार्बाइड २० गुना ज्यादा बरता जाता है। ऐसा क्यों है?

जर्मनी की क्रुप कंपनी तथा हमारी जनरल इलेक्ट्रिक कंपनी ने अमेरिकन कीमतों को ऊंची रखनेके लिये परस्पर समझौता किया। और जब कीमत कृत्रिमता से बढ़ायी जाती है, उत्पादन गिर जाता है। टंगस्टन कार्बाइड की कीमत इस देशमें (अमेरिकामें) अत्यंत ऊंची हो गई थी। उसकी ज्यादासे ज्यादा कीमत ४५३ डालर प्रति पौंड और कमसे कम २०५ डालर प्रति पौंड रही है, जब कि उसका उत्पादन मूल्य २५ डालर प्रति पौंड था। लेकिन इतना ही सब कुछ नहीं, उसके साथ वही पुराना समझौता भी जुड़ा हुआ था, जिससे बाधित होकर जनरल इलेक्ट्रिक कम्पनी विदेशी बाजारोंमें अपना माल नहीं बेच सकती थी और क्रुप कंपनी यहां प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकती थी।

अब हमें उस समझौते का मूल्य अदा करना पड़ रहा हैं। फर्थ–स्टर्लिंग–स्टील कंपनी के प्रमुख जेराल्ड फर्थने सन् १९४१ में कहा था कि "टंगस्टन कार्बाइडके पेटेन्टों पर जनरल इलेक्ट्रिक तथा क्रुप कंपनी का नियंत्रण ही कीमत को इतना ऊंचा ले जानेमें कारण है। आज जब कि संकट सामने खड़ा है, न तो हमारे उद्योग शास्त्रियोंको टंगस्टन कार्बाइड के प्रयोग की ही जानकारी है, और न हमारे पास वैसी मैशीनें, वैसे चतुर कारीगर, और वैसा शिल्प ही है जैसा कि हमारे पास हो सकता था अगर यह सामग्री हमें भी जर्मनी की भांति सस्ते दामोंमें उपलब्ध होती।

न्याय विभागके एन्टीट्रूस्ट डिविजनके द्वारा जनरल इलेक्ट्रिक और क्रुपकंपनी पर दोषारोप करनेके बाद टंगस्टन कार्बाइडकी कीमत २०५ डालर से ४८ डालर प्रति पौंड कर दी गई, हालां कि बाजारमें मशीनोंके उपकरणोंकी मांग पहलेसे खूब बढ़ गई है।

लेकिन जर्मन-नियंत्रित व्यापारिक प्रतिबन्धसे उत्पन्न हुए घाटेकी क्षतिपूर्तिके लिये कमसे कम एक साल लगेगा।

इस व्यावसायिक युद्धमें दवाईयां और चिकित्साके साधन दो कारणोंसे बहुत महत्वकी चीजें समझी जाती हैं। एक तो इस लिये कि वह सैनिकों और नागरिकोंके लिये एकसी आवश्यक चीजें हैं। दूसरी बात यह कि जहाजोंमें एक फुट जगहमें जितनी दवाइयां आती हैं उनकी कीमत उतनी जगह घेरनेवाले दूसरे मालसे कहीं ज्यादा होती है।

इसलिये ब्रिटिश घेरबन्दीके बीच भी दक्षिणी अमेरिकामें जर्मनीका व्यवसाय कायम रखनेके लिये यह आदर्श चीजें हैं।

अमेरिकाकी दवाई फ़रोश कंपनियां मूर्खतापूर्वक जर्मनीको मदद देती रहीं। उन्होंने यह समझौता किया कि यदि जर्मनी कुछ दवाइयां यहां (संयुक्तराष्ट्र अमेरिकामें) न बेचे, तो वे दक्षिण अमेरिकामें उन दवाइयोंका निर्यात नहीं करेंगी। यह एक सरलतम उपाय था क्योंकि जर्मनी ने ऐसी दवाइयां बनानेमें बहुत कौशल प्राप्त किया है लेकिन इस चीजने हमें दवा बनानेके अपने कौशलको विकसित करनेसे वंचित रखा। हमारी कंपनियां यह कहती हैं कि यदि प्रतिस्पर्धाके अधिकार का त्याग करके उन्होंने समझौता न किया होता तो वे इन दवाइयोंको बनानेमें बिलकुल असमर्थ रहतीं। यह एक ऐसा विचार है जिसमें एकाधिपत्य वाले लोगोंका हमेशासे विश्वास रहा है। इससे, जैसा कि 'लण्डन इकोनोमिस्ट' ने, व्यावसायिक एकाधिकारने ब्रिटिश उत्पादनको कैसे कमजोर बना दिया है इस विषय पर लिखते हुए कहा है, "प्रगतिकी मन्द गति और संभावनाको सीमामें बांधनेकी प्रवृत्ति" पैदा हो जाती है।

इस प्रकार दक्षिण अमेरिकामें औषधोंके निर्यात पर जर्मनीने कब्जा कर लिया। और इस वक्त क्योंकि व्यापारिक घेरे बन्दीके कारण जर्मनी पर्याप्त मात्रामें दक्षिण अमेरिकामें माल नहीं भेज सकता, वह अमेरिकन ड्रग कंपनियोंसे जर्मन ऑर्डरोंको पूरा करनेके लिये सहायता चाहता है और उसके मुनाफेसे जर्मन प्रचारके लिये धनसंग्रह किया जाता है।

एक अमेरिकन कंपनी तो वास्तवमें ऐसे आर्डरोंको पूरा करनेके लिये अपने भेजे जानेवाले मालपर जर्मन लेबल्स लगाती थी। कुछ फर्मोंने और खास तौरपर स्टर्लिंग प्रोडक्ट्स कंपनीने ही जर्मन नियंत्रणसे छुटकारा पानेकी कोशिश की, लेकिन दूसरोंने ऐसा नहीं किया।

युनाइटेड स्टेट्समें बहुत कम लोग यह जानते हैं कि बेरिलियम क्या चीज है, क्योंकि जर्मन–नियंत्रित पेटेंटोंने इसके विकासको यहां दबा रखा था। यह एक अद्‌भुत धातु है। तांबेके साथ २ प्रतिशत बेरिलियम मिलानेसे बहुतसी स्टीलोंसे भी ज्यादा मजबूत चीजें उत्पन्न होती हैं। अच्छेसे अच्छे स्टीलके स्प्रिंग ३० लाख कंपनोंसे टूट जाते

है। लेकिन बेरिलियम मिश्रित स्प्रिंगें ३-४ अरब कंपनोंसे कंपाने पर भी नहीं टूटतीं।

जर्मनी सन् १९३८ में हवाई जहाजों में बेरिलियम का उपयोग करता था। अमेरिकन कोरपोरेशन के छद्मवेशमें जर्मन कंपनियां इस देशमें ऐसी पेटेन्ट चीजें निकालती थीं, जो कि शायद गैरकानूनी तौरसे बेरिलियम का उत्पादन रोकने के लिये प्रयुक्त की जाती थीं।

बेरिलियम उत्पन्न करने के अधिकार के प्राप्त करने के लिये एक अमेरिकन कंपनी को जर्मनोंसे एक ऐसा समझौता करना पड़ा जिससे लड़ाई छिड़ने पर वे अमेरिकन कंपनीको यह हुक्म दे सकें कि वह इंग्लेंड माल न भेजे।

पेटेन्टों के दुरुपयोग के द्वारा जर्मनी के अन्य देशोंके व्यापारमें घुसने के दूसरे भी उदाहरण हैं, जिनको प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

असिस्टँट एटर्नी जनरल फ्रान्सिस एम. शीने पेटेन्टोंके बारेमें नियुक्त कांग्रेसकी एक कमिटीके सामने प्रमाण पेश करते हुए कहा था, "अमेरिकाका पेटेन्ट कार्यालय जर्मन एजंटोंके लिये शिकार करनेका एक उत्तम क्षेत्र रहा है। जब खोजसे किसी संभावित नवीन आविष्कारका पता चलता है, तब कोई भी चालाक आदमी ऐसी व्यापक और अस्पष्ट भाषामें पेटेन्टके लिये अर्जी दे सकता है कि उसमें सारा उद्योग ही आ जाय। सिमेन्स और हाल्स्के कंपनी, क्रुप कंपनी, और ए. जी. फार्बेनिन्डुस्ट्री—इन कंपनियोंने इस तरहके ऐसे अनेक पेटेन्ट दाखिल किये हैं, और इनके बारेमें अमेरिकन कंपनियां सख्त शिकायत करती रही हैं।"

हवाई जहाजोंके निर्माणमें एल्यूमीनियम और मैग्नेशियम ये दोनों अत्यावश्यक धातुएं हैं। इन दोनों धातुओंमें जर्मनी हमसे कहीं अधिक आगे है, इसका क्या करण है?

सन् १९३१ में एल्यूमीनियम की उत्पत्ति इतनी अधिक हुई कि अमेरिका की एल्यूमीनियम कंपनीके सामने यह खतरा पैदा हो गया कि कहीं बाहरका एल्यूमीनियम आनेसे उसके एकाधिकारमें बाधा न पड़ जाय। इस पर उस कंपनीने एल्यूमीनियम लिमिटेड नामसे कैनेडामें एक नई शाखा खोल दी—यह सोच कर कि इससे वह एन्टी ट्रस्ट कानूनोंसे बच जायेगी, और अधिक पैदावारके नियंत्रण द्वारा संसार की प्रतियोगिता रोकनेके लिये अन्य देशों की एकाधिपत्यवाली कंपनियोंसे मिल सकेगी। संसारके बाजारोंका बंटवारा कर दिया गया। अमेरिकाकी एल्यूमिनियम कंपनीको संयुक्त-राष्ट्र मिल गया, और उसकी केनेडाकी शाखाको शेष संसारका २९ फीसदी हिस्सा मिल गया। इसी प्रकार फ्रेंचों को २१ फीसदी, जर्मनोंको २० फीसदी और स्विस तथा ब्रिटिश लोगोंको १५ फीसदी मिला। तब इन संयुक्त कंपनियोंके सदस्योंने एक स्विस कंपनीमें अपनी सारी शक्ति लगा दी, जिससे वे संसारकी अधिक हुई उत्पत्तिको स्वयं खरीद कर बाजारसे दूर रखा सकें। संसारकी उपजको बुरी तरहसे सीमाबद्ध कर दिया गया। और संसार भरके बाजारोंके लिये न्यूनतम कीमतें नियत कर दी गई।

इस तरह संसारकी उत्पत्तिको नियंत्रणमें करके कीमतें बढ़ानेका ढंग खूब मजेसे चलता रहा, जब तक हिटलर प्रभुत्वमें नहीं आगया। जर्मनी की उपज पर नियंत्रण रखना उसे बिलकुल नापसंद था, लेकिन दूसरे देशोंमें उत्पत्ति पर नियंत्रण रहे इस विचारसे वह खुश था। और इस प्रकार हिटलरने अपने देशमें असीमित मात्रामें उत्पादन करनेकी अनुमति लेकर एल्यूमीनियम की संयुक्त कंपनियोंको यह वचन दे दिया कि वह अपना निर्यात नहीं बढ़ायेगा और न ही उन कीमतोंमें फर्क आने देगा जिन्हें उन कंपनियोंने कायम रखा हुआ है। इस तरह प्रजातंत्र राष्ट्र जर्मन प्रतियोगिताके भयके बिना अपनी अपनी नीतिका अनुसरण करनेमें स्वतंत्र थे। इस व्यवस्थाके अनुसार हिटलरने हवाई जहाज और अन्य युद्ध सामग्री बनानेके लिये अपने देशमें एल्यूमीनियमका उत्पादन तिगुना कर लिया जब कि अन्य प्रजातंत्र राष्ट्र वहींके वहीं खड़े रहे।

फ्रांसके पतनके बाद भी एल्यूमीनियम कंपनियोंकी नींद नहीं खुली और वे इस बातको महसूस नहीं कर सकीं कि उत्पादन पर नियंत्रण रखनेकी नीतिसे एल्यूमीनियमकी कितनी खतरनाक कमी हो गई है। सिर्फ इतना ही नहीं, "एन्टीट्रस्ट डिविजन" जब यह सिद्ध करनेकी कोशिश कर रहा था कि युद्धकी आवश्यकताओंको देखते हुए एल्यूमीनियम कंपनीने इस बातका प्रतिवाद किया, हम लोगोंने इन वक्तव्योंको बड़े आरामके साथ अपने गलेके नीचे उतार दिया।

हमें अब पता चला है कि एल्यूमीनियमकी कमी है। हम अपना कीमती समय और मूल्य बांट सामग्री बचा लेते, यदि हमने उन लोगोंकी बातोंको न सुना होता, जिनका आर्थिक हित ही युद्धके बाद भी अपने एकाधिपत्यको कायम रखनेके लिये उत्पादनका विरोध करनेमें था।

विभक्त वफादारी और उत्पादनकी प्रतियोगिताके भयने हमारे अर्थशास्त्रको इतना मंद बना दिया है कि वह अन्य आधारभूत सामग्रियोंकी आवश्यकताको जल्दी पूरा नहीं कर सकता।

मैग्नेशियम मिश्रित धातुएं एल्यूमीनियम की अपेक्षा एक तिहाई ज्यादा हलकी होती हैं और अनेक उपयोगों में अधिक उत्तम भी। उदाहरण के तौर पर एक हवाई जहाज, एल्यूमीनियम बमों की अपेक्षा २५ प्रतिशत ज्यादा मैग्नेशियम बम उठा सकता है। जर्मन डाई ट्रस्ट ने मैग्नेशियम मिश्रित धातुओं को बनाने के लिये अधिकार प्राप्त कर लिये थे। अमेरिकन एल्यूमीनियम कंपनीने भी ऐसा ही किया। जर्मनी चाहता था कि उसकी अपनी मैग्नेशियम की उत्पत्ति बढ़े लेकिन हमारी कम हो। अमेरिकन एल्यूमीनियम कंपनी अपने मैग्नेशियम के उत्पादन पर अंकुश रखना चाहती थी ताकि कहीं उसके एल्यूमीनियम के एकाधिकार के साथ यह प्रतिस्पर्धामें न आ जाय। इन दोनों विभिन्न इच्छाओंका उद्देश्य एक ही था। जर्मन डाईट्रस्ट और अमेरिकन एल्यूमीनियम कंपनीने अपने पेटैन्टोंको सम्मिलित कर लिया। उन्होंने यह समझौता किया कि अमेरिकामें ४ हजार टनसे ज्यादा एल्यूमीनियम नहीं उत्पन्न किया जायगा। उन्होंने यह भी निश्चित किया कि इंग्लैंडको प्रतिवर्ष ३०० टनसे ज्यादा माल न भेजा जाय। उन्होंने डो केमिकल कंपनी नामकी सिर्फ एक ही अमेरिकन फर्मको मैग्नेशियम बनानेकी इजाजत दी। और इसीका यह फल हुआ कि सन् १९४० से पहले किसी भी साल २५०० टनसे ज्यादा मैग्नेशियम अमेरिकामें नहीं उत्पन्न हुआ। जब लड़ाई छिड़ी तब इंग्लेंड अपनी ३५ फीसदी मैग्नेशियमकी जरूरतोंके लिये अपने दुश्मन पर आश्रित था।

सन् १९४० में कहीं हमें होश आया। सरकारी दबावसे बाधित होकर हम अपने उत्पादनको ६ हजार टन तक बढ़ा सके। लेकिन इस बीच जर्मनी २५ हजारसे ५० हजार टन तक पैदा कर रहा था और मैग्नेशियमसे मिश्रित धातु बनाने, ढालने तथा उसके यंत्र बनानेके अनुभवोंमें हमसे कहीं आगे बढ़ा हुआ था। आज शेर्मैन एक्टके अनुसार अभियोग लगाये जानेके कारण यह व्यवसाय फिरसे स्वतंत्र हो गया है। परंतु यदि हम शुरूसे ही सजग रहते तो ऐसी योजनाओंको हमने कई साल पहले ही रोक दिया होता।

हिटलर बड़े घमंडके साथ कहता है कि प्रजातंत्र राष्ट्र अपनी आर्थिक प्रणालीसे इतने जकड़े हुए हैं कि वे युद्धके हथियारोंका निर्माण नहीं कर सकते। पर हम जानते हैं कि औद्योगिक प्रजातंत्रमें कोई नया कदम उठानेकी जो व्यक्तिगत स्वतंत्रता है उसके कारण भविष्यमें भी संसारका सबसे बड़ा उत्पादन कार्य किया जा सकता है—जैसा कि भूतकालमें भी हुआ है।

हमारे पास क्षतिपूर्तिके लिये समय है क्योंकि हम दूसरे राष्ट्रकी नौ सेनासे रक्षित हैं, लेकिन ऐसा करनेके लिये हमारे उद्योग-धंधोंको उन व्यक्तिगत दलोंके पंजेसे मुक्त हो जाना चाहिए जिनका भला ही उत्पादनका गला घोटने में है। इसीलिये हम कहते हैं कि शेर्मैन एक्ट—उत्पादनको बाधाओंसे बचानेका एकमात्र साधन—इस औद्योगिक युद्धके समय उठाकर ताक पर नहीं रख दिया जाना चाहिये। हमारे लिये यह असंभव होगा कि हम उन बंधनोंसे जकडे हुए, जिन्होंने मंदीके समय हमारी उत्पादन शक्तिका ह्रास कर दिया था, इस औद्योगिक युद्धकी होडमें शामिल हो सकें। हम हिटलरके घमंडको सच्चा नहीं होने दे सकते।

"रीडर्स डाइजेस्ट, जुलाई १९४१" से

माहेश्वरी भाइयोंसे प्रार्थना

वर्त्तमान युद्धकी विषम परिस्थितिमें जब कि सब कुछ महंगा हो जानेसे जीवनके लिए आवश्यक वस्तुएं दुर्लभ हो गयी हैं, माहेश्वरी भाइयोंसे हमारी प्रार्थना है कि वे दीपावलीके निमित्त पानसुपारी समारंभ न करें बल्कि उस खर्चको बचाकर अनाथ और गरीब लोगोंमें अन्न और कपड़ा वितरण करनेके लिए एक फण्ड कायम करें। आशा है समाज इधर ध्यान देगा।

पूना] —ताराचन्द बियाणी

(पृष्ठ ४ का शेषांश)

प्रकाशित नहीं की जा सकतीं थीं और पुस्तकों पर समालोचना लिखनेके लिये भी लायसन्स लेना पड़ता था।

दुर्भाग्यसे ये सब पुस्तकें नाजियोंके लिये वर्तमान समय की नहीं थी। जर्मनीका प्राचीन साहित्य बहुत बढ़ा चढ़ा था और उनको उसके बारेमें कुछ करना जरूरी था। ये लोग 'गोथे' और हेनी द्वारा खूब तंग किये गये थे। हेनी जबसे यहूदी हुआ तबसे लोग उससे खिंचेसे रहे। उन्होंने कहा कि हेनी जर्मनीका सबसे विषैला प्राणी है। आत्माके विषैला और नष्ट करने वाला। (ज़रा 'आत्मा' शब्द पर ध्यान दीजिए) और उसकी कृतियोंको नष्ट कर दिया।

गोथेके साथ अच्छा बर्ताव करना पड़ा। मैं समझता हूं कि गोथेको किसी बन्धनमें नहीं बांधा पर उन्होंने इसे अपना सबसे बड़ा शत्रु माना क्योंकि गोथे सहष्णुताका अनुयायी था, ऐसा राष्ट्रीय था जो महान राष्ट्रीयता की ओर झुके। वह ऐसा जर्मन था जो कि जर्मनी को बुद्धि और गुणोंसे दुनिया को फायदा पहुँचाना चाहता था। जब इस पागलपन और क्रूरता का अंत होगा तब उसकी भावना एक दफे फिर चमकेगी।

मैं और भी नमूने पेश कर सकता हूँ। परन्तु मैं समझता हूं कि इसके बाबत कि जर्मनीने जर्मनोंके साथ कैसा बर्त्ताव किया है, मैं काफी कह चुका हूँ। जब जर्मनीने अपने आदमियोंसे पिण्ड छुड़ाया तब वह हमारे विरुद्ध हुआ। उसकी इस लड़ाईका अभिप्राय लेखकों, कलाकारों, वैज्ञानिकों और तमाम आदमियोंको बन्धनमें बांधना है। ,, लिसनर " से

बाल विधवाकी अवश्यकता है

एक ३६ वर्षीय माहेश्वरी भाईके लिये एक सुयोग्य माहेश्वरी बाल विधवाकी अवश्यकता है, जिसकी उम्र १६ से २० वर्ष तक होनी चाहिये। युवक सुंदर सच्चरित्र, शिक्षित तथा स्वस्थ है और मासिक आय स्वतंत्र कार्यसे ७५) है। लड्डा खांपवाले पत्रव्यवहार न करें। पत्र व्यवहारका पता—

बॉक्स नं. १५
C/o **माहेश्वरी** डीन लेन, फोर्ट, बम्बई

★ देश विदेशकी चर्चा ★

[संकलन कर्त्ताकी कलमसे]

रूसो-जर्मन संघर्ष

रूसो-जर्मन संघर्ष की विभीषिका दिन-दिन बढ़ती ही जा रही है। नीपर नदी का बांध तोड़ कर एक ओर दक्षिण-पूर्वी सैक्टरमें जर्मन फौजें मार्शल बुदेनी की फौजों को परास्त करती हुई आगे बढ़ रही हैं। दूसरी तरफ क्रीमिया पर जर्मन सेनाने आक्रमण शुरू कर दिया है। वहां स्थल डमरूमध्य पैरिकोप में जर्मन फौजें घुस भी गयी हैं। ओज़ोव सागर पर जर्मनी का आधिपत्य हो गया है और क्रीमियन प्रायद्वीप की स्थिति बहुत खतरेमें है। ओडेस्सा की स्थिति भी कम खतरनाक नहीं। क्रीमियामें जर्मन फौजें पैराशूटोंका उपयोग कर रही हैं इसलिए सम्भव है कि क्रीमिया को कब्जेमें करनेमें उन्हें अधिक समय नहीं लगे।

यह तो पूर्व और दक्षिणके मोर्चे की स्थिति है। मध्यके मोर्चे की हालत भी अच्छी नहीं। यद्यपि केन्द्रीय मोर्चेपर मार्शल तिमोशेंको की फौजें स्मोलेंस्क पर फिर आक्रमण करके उसे वापिस छीन लेनेका प्रयत्न कर रही हैं और कहा तो यहां तक जाता है कि वे स्मोलेंस्कसे केवल १२ मील की दूरीपर रह गयी हैं पर इस दावेमें कुछ विशेष सार नहीं।

वास्तवमें मो० स्टालिनने युद्धके श्रीगणेशके समय मास्कोमें भाषण देते हुए जो घोषणा की थी उसके अनुसार रूसी फौजोंने जिन-जिन नगरों को खाली किया है उन्हें जला कर खार-छार कर डालने की नीति अख्तियार कर ली है। इस नीतिका यह अर्थ तो निःसन्देह है कि जर्मनीको वहां ऐसा कुछ नहीं मिलता जिससे वह अपनी विजय पर गर्व कर सके या उससे कुछ लाभ उठा सके पर यह भी स्पष्ट है कि इस प्रकारके विध्वस्त प्रदेशोंको यदि रूसकी सेनाएं फिरसे प्राप्त भी कर लें तो उनको कोई लाभ नहीं। इस लिए स्मोलेंस्क या इसी प्रकारके अन्य स्थानोंके सम्बन्धमें पुनः अधिकार करने व प्रत्याक्रमणके जो दावे या प्रयत्न हो रहे हैं उनसे युद्धकी स्थितिपर कोई महत्वपूर्ण असर नहीं पड़ता।

कीवका पतन

इधर मध्य मोर्चेपर युक्रेनकी राजधानी कीव नगरको जर्मनीने अपने कब्जेमें कर लिया है। जर्मनोंकी इच्छा थी कि इस नगरको वे ज्योंका त्यों ले लें और इसे विध्वस्त नहीं किया जाय। इस लिए उसे सब तरफसे घेरकर उन्होंने उसके भीतर जानेके सब मार्ग बन्द कर दिये। विवश होकर खाना-पीना यहां तक कि ४–५ दिन पानीके लिए भी नगरवासी मोहताज हो गये। दाना-पानीके लिए तरसनेवाले इन लोगोंको विवश होकर अन्तमें प्राण रक्षाके लिये आत्मसमर्पण कर देना पड़ा। यद्यपि कहा जाता है कि मार्शल बुदेनीकी अधिकांश सेनाएं इस घेरेबन्दीसे निकल भागी हैं पर इसमें सन्देह नहीं कि इस नगरके पतनने समस्त पूर्व-मध्य मोर्चेकी रक्षाके लिए लड़नेवाली मार्शल बुदेनी की फौजोंकी कमर तोड़ दी है। जो सिपाही बचकर भाग भी निकले हैं वे अत्यन्त अस्तव्यस्त हो रहे हैं जिसका यह नतीजा है कि उनका पुनः संगठन करनेमें रूसको बड़ी कठिनाईका सामना करना पड़ेगा।

कीव का महत्व

कीव रूसके यूक्रेन प्रदेशकी राजधानी है और उसके पतनसे रूसको एक भारी क्षति उठानी पड़ी है। यूक्रेन रूसकी स्य श्यामला और सचमुच वसुन्धरा भूमि थी जो माताकी तरह रूसको प्राण दान कर रही थी। उसके लहलहाते खेत और अनाजसे भरे खलिहान रूसको जीवन और बल दे रहे थे। यूक्रेन की जमीनमें लोहा, मैंगनीज़, एल्यूमीनियम, सीसा और मग्नेशियम इन सभी धातुओंकी खाने थीं। सभी दृष्टियोंसे यह प्रदेश रूसका सबसे अधिक समृद्ध प्रदेश था। कीव के पतनसे अब यूक्रेन का रूसके लिए मानों कोई अस्तित्व नहीं रहा। यूक्रेनके पराजय से रूसकी लोहे, मैंगनीज, एल्यूमीनियम, सीसा और मग्नेशियम की प्रायः सारी की सारी उपज जर्मनीके हाथ में आ गयी है। जर्मनीका इस युद्धमें यही प्रायः सबसे बड़ा लक्ष्य था। रूस ऐसा विशाल और विस्तृत प्रदेश है कि उसे आसानीसे विजय नहीं किया जा सकता। हिटलर इस बातको समझता था। वह जानता था कि यदि उसने यूक्रेन प्रदेश, लेनिनग्राड और क्रीमियाके मार्गसे काकेशसपर अधिपत्य समय रहते नहीं जमा लिया तो आगामी शरत् ऋतुमें युद्धकी गति मन्द हो जाने पर रूसको फिरसे तय्यारी करनेका अवसर मिल जायगा। किन्तु अब यूक्रेनपर अधिकार हो जानेसे साराका सारा उद्योग और कच्ची धातु जर्मनीके हाथमें आगयी है। काकेशस भी जर्मनीकी आजकी प्रगति को देखते हुए कुछ ही दिनोंका मेहमान है। हिटलरने यह भी आदेश दे दिया है कि चाहे जितनी भारी कीमत चुकानी पड़े लेनिनग्राड ले ही लेना होगा। इन सब बातोंको देखते हुए यह स्पष्ट है कि यदि हिमपातके कारण युद्धकी गति मन्द हो जाय तो भी स्टालिनको युद्धकी तय्यारीका अवसर नहीं मिल सकता। बाहरसे मिलने वाली सहायताके लिए भी लेनिनग्राड तथा इस्टोनियन खाड़ीके ओएसल द्वीपके जर्मनीके आधिपत्यमें आ जानेपर रास्ते बन्द हो जायंगे। इस प्रकार रूसकी स्थिति सचमुच बड़ी खतरनाक हो गयी है। कौन जानता है कि अब उसका भविष्य क्या होगा। लेनिनग्राडके लिए घमासान युद्ध हो रहा है, पोल्टावा (ख़ारकोवके समीप) जर्मनोंके अधिकारमें आ गया है। मुरमांस्कपर भी फिनिश फौजोंने खतरा उपस्थित कर दिया है। यह सब स्थिति ऐसी विषम है कि रूसके भविष्यमें निश्चिन्त होकर कुछ भी कहना सम्भव नहीं। जान ऐसा पड़ता है कि रूसका पतन हो जायगा और यदि ऐसा हो गया तो जर्मनीकी अन्तिम विजयकी बड़ी आशा रहेगी। जर्मनीकी विजय और रूसकी पराजयका एक मात्र अर्थ है बर्बरता की विजय और मनुष्यता की पराजय।

ब्रिटेन व अमेरिकामें रूसको सहायता देनेकी योजनाओंपर विचार हो रहा है।

मास्कोमें त्रिशक्ति कान्फरेंस

रूसकी राजधानी मास्कोमें इसी विषयको लेकर रूस, ब्रिटेन और अमेरिकाके प्रतिनिधियोंके दर्म्यान एक कान्फ्रेंस हो रही है। ब्रिटेन और अमेरिकाका प्रतिनिधित्व क्रमशः लार्ड बीवरब्रुक और मि० हैरीमैन कर रहे हैं। वे अपने अपने देशके नायक मि० चर्चिल व प्रेजीडेंट रूज़वेल्टके संदेश भी रूस की सरकारके लिये ले गये हैं और यह घोषणा की जा रही है कि दोनों देश रूसको सब तरह की मदद पहुंचानेकी योजनाओंपर गम्भीरतासे विचार कर रहे हैं।

नृशंसताकी हद : जर्मनीका ज़ेकोंपर अत्याचार

यूरोपमें इस समय रूसके सिवाय युद्धके ही सदृश भयंकर व लोमहर्षक घटनाओंका केन्द्र यदि कोई दूसरा देश बना हुआ है तो वह ज़ेकोस्लोवाकिया है। जेकोस्लोवेकियामें जर्मनोंके आधिपत्यके बादसे ही भीतर भीतर अशांति और विद्रोहकी आग भड़क रही है। अत्याचार और क्रूरताके जिन तरीकों पर जर्मनीने अपने इस बृहत्तर जर्मन राष्ट्रकी बुनियाद कायम की है उनके नीचे पीसी जाती हुई मानवीय प्रजा कभी सुखी और सन्तुष्ट नहीं रह सकती। जेकोस्लोवेकियासे बीच-बीचमें भी इस प्रकारके समाचार सुननेको मिलते रहे हैं कि वहां शासक जर्मन जातिके विरुद्ध जनतामें आग-सी लग गयी है और कभी-कभी तो मार्च करनेवाली फौजों पर ईंट-पत्थर फेंकने तक के भी समाचार मिलते रहे हैं। इन सब समाचारोंको देखकर यह अनुमान पहले ही हो गया था कि वहां जर्मन सरकारकी तरफसे कोई नवीन असाधारण लोमहर्षक घटना घटनेवाली है। इन्हीं दिनों जर्मनीकी सरकारके द्वारा बोहेमिया और मोराविया पर नियुक्त किये गये प्रोटैक्टर हर फोन नॉयरथको जर्मन सरकारने बन्दी बना लिया है और उनके स्थानपर नारवेके प्रोटेक्टर जनरल हाइड्रिखको नियुक्त किया गया है। हाइड्रिख गेस्टापोके प्रमुख हर हिमलरका चेला है और नारवेमें दमन, अत्याचार और नाज़ी नीतिको सफलतापूर्वक प्रतिष्ठित करनेकी योग्यताका नमूना वह पेश कर चुका है। हर फोन नॉयरथ जिस दमनको नहीं कर सके उसे हाइड्रिख निःसन्देह कर सकेगा क्यों कि उसने आते ही जेकोस्लेवेकियाकी प्रजाके १२६ व्यक्तियोंको गोलीका शिकार बना दिया व फांसी पर लटका दिया है। इस प्रकार उसके अत्याचारोंसे सब तरफ भयानक आतंक छाया हुआ है। यह जर्मन नीतिका दिवाला है कि वहां कलाकार शिल्पकार, साहित्यिक, वैज्ञानिक और यहांतक कि सेनापति तक की कद्र नहीं। नाज़ीवादके तनिक भी खिलाफ़ जानेपर उन्हें मौतके घाट उतारा जाता है। इन्हीं दिनों जेकोस्लोवेकिया के भूतपूर्व प्रधानमन्त्री जनरल आलोइस एलियस भी नजरबन्द करके बर्लिन पहुंचा दिये गये हैं और अदालतने उन्हें प्राणदण्डकी आज्ञा दे दी है। यद्यपि बर्लिनसे पत्रोंके संवाददाताओंका कहना है कि वे अभी तक जीवित हैं और अपने दण्डके विरुद्ध न्यायालयमें अपील भी करने जा रहे हैं किन्तु यह सन्देह है कि उनकी अपीलकी इस बेइन्साफ़ी और अत्याचारके लिए प्रसिद्ध न्यायालयमें कोई सुनवाई होगी।

जनरल एलियस साधारण व्यक्ति नहीं हैं। आज ५२ वर्ष उनकी आयु है। सारा जीवन उनका स्वाधीनताके संघर्षोंमें बीता है। गत महायुद्धके पहले वर्षोंमें वे रूसमें थे और वहींसे आस्ट्रो-हंगेरियन आक्रमणके विरुद्ध रूसी सेनाओंका संचालन करते थे। उनके जैसे योग्य और वीर पुरुषको भी प्राणदण्डकी आज्ञा जर्मन न्यायालयने सुना दी है। उनपर आरोप यह लगाया गया है कि उन्होंने अमेरिका स्थित भूतपूर्व जेक प्रेजीडेंट डा. बीनसके साथ अपना सम्पर्क कायम किया हुआ है और जर्मनीके खिलाफ़ जेकोस्लोवेकिया की स्वाधीनताके लिए वे भीतर ही भीतर प्रयास और षड्यन्त्र कर रहे हैं। इसमें सचाई कहां तक है इसका निर्णय

(शेष पृष्ठ १० के कालम १ पर)

हमारा राजस्थान

✶

एक राजस्थानी

राजा और प्रजामें संघर्ष

इस सप्ताह सबसे अधिक चिन्ताजनक समाचार जोधपुर और भरतपुर से प्राप्त हुए हैं। दोनों ही स्थानों पर राजा और प्रजामें संघर्ष होनेके लक्षण दीखनेमें आ रहे हैं। देशी राज्यों की प्रगति के मार्गमें ठिकाने बहुत बड़ी रुकावट हैं। कभी कभी तो वे चीन की दीवार बनकर खड़े होजाते हैं। उनके आंसू पोंछने के लिए रियासतों के प्रगतिशील अधिकारियों को भी अपनी नीति को प्रतिगामी, अनुदार एवं असहिष्णु बनाने के लिए बाधित होना पड़ जाता है। उनकी सारी प्रगतिशीलता सहसा प्रतिगामी कृति में परिणत होजाती है। जोधपुर में पिछले दिनों में ऐसा ही हुआ है। म्युनिसिपल चुनावमें लोक परिषदको प्राप्त हुई अजेय सफलता और कल्पनातीत महान् विजय ने जागीरदारों की आंखोंमें चकाचौंध पैदा कर दी है। दूसरी ओर जनतामेंउससे लोक परिषद की जो धाक जमी अधिक है, उसमें सर डोनाल्ड फील्ड की सरकारके उन हुक्मोंसे और वृद्धि हुई है, जो जागीरदारोंके अत्याचारोंसे प्रजाको राहत देनेके लिए जारी की गयी थीं। इन पर भी जागीरदार काफी बौखला उठे। उन्होंने लोकपरिषदके विरुद्ध जहाद बोलनेके साथ साथ जोधपुरकी सरकार को भी कुछ इतना सताना शुरू कर दिया कि उसको लड़ाईके बारेमें जारी किये गये अपने हुक्म को सहसा लौटा लेना पड़ा और एडवाइजरी असेंबलीके चुनावोंकी व्यवस्था भी जागीरदारोंको खुश करनेकी दृष्टिसे ही की गई। जागीरदारोंको खुश करनेकी इस नीतिसे पैदा हुई असंतोषकी ध्वनि मारवाड़ लोक परिषदकी कार्यसमिति और प्रतिनिधि सभाकी फलोदीमें हुई बैठकोंमें सुननेमें आई है।

+ + +

व्यासजी स्तीफ़ा देंगे?

मारवाड़ लोकपरिषदने सुधारोंका बहिष्कार करनेका ऐलान करते हुए जनताके चुनावोंमें कोई दिलचस्पी न लेनेकी सलाह दी है। जागीरदारोंके संबंधमें स्वीकार की गई सरकार की प्रतिगामी नीतिकी कड़ी आलोचना करते हुए एक लम्बा प्रस्ताव पास किया है। साथ ही गत दुर्भिक्षके सरकारी काममें हुए गड़बड़ घोटालेकी जांचकी परिषदकी मांगके बारेमें सरकारके साथ हुए पत्रव्यवहारको प्रकाशित करनेका भी फैसला किया गया है। यह सब हवाका रूख बतलनेको काफी है। म्युनिसिपैलिटियोंके कामकाजमें भी संघर्षकी सी स्थिति पैदा होती नजर आती है। प्रेज़ीडेण्टके अधिकारोंके बारेमें व्यासजीने सरकारसे खुलासा मांगा था। जो खुलासा उन्हें महकमा खाससे मिला है, वह इतना अस्पष्ट, अपर्याप्त और असंतोषप्रद है कि कोई भी स्वाभिमानी और लोक सेवाकी इच्छा रखनेवाला व्यक्ति उन अधिकारोंके साथ प्रेजीडेन्ट बना रहना स्वीकार नहीं कर सकता। आश्चर्य नहीं कि म्युनिसिपैलिटियों के बारेमें भी लोकपरिषद को अपना रवैय्या बदलना पड़ जाय और व्यासजी सभापति पद से स्तीफा दे दें। यदि ऐसा हुआ तो जोधपुरमें संघर्ष होना निश्चित ही समझा जाना चाहिए।

+ + +

भरतपुर किधर?

इसी प्रकार भरतपुर की सरकारका रूख भी भरतपुर राज्य प्रजा परिषद के प्रति एकाएक बदल गया जान पड़ता है। उसके प्रधानमंत्री कुंवर रतनसिंहजीको राजद्रोहके अपराधमें गिरफ्तार किया जा चुका है। विजया दशमी पर हुए परिषद के विशेषाधिवेशन के लिए सरकारी जमीन देनेसे इनकार कर दिया गया और अन्य स्थान प्राप्त होनेमें भी काफ़ी असुविधाका सामना करना पड़ा। जयपुर राज्य प्रजामण्डलके प्रधान श्री हीरालालजी शास्त्रीने अधिवेशनका उद्घाटन किया। सम्मेलन सफलताके साथ सम्पन्न हो गया। गत अधिवेशन की मांगोंको एक बार फिर दुहराया गया।

+ + +

जयपुर राज्य प्रजामण्डलका आगामी अधिवेशन भी माधोपुरमें होना तय हो गया है। प्रधान कार्यालयसे जनरल सभाके सदस्योंकी सम्मति लिखित रूपमें मांगी गई थी। तीस सदस्योंकी स्वीकृति आ जानेसे और विरोधमें एक भी पत्र न आनेसे इसके बारेमें बाजाप्ता घोषणा कर दी गई है।

+ + +

नाजायज़ ज्यादती

हिण्डोन जिला कमिटीके सदस्य सूराठीनिवासी श्री मूलचंदजी शर्मा पर गंगापुर की अदालतमें जो मुकदमा चल रहा था, उसमें उनको दो वर्ष की सज़ा दे दी गई है। साथ में ५०) का जुर्माना भी किया गया है। मामला यह था कि उन्होंने युद्धमें चन्दा जमा करानेके लिए जारी किये गए एक हुक्मके बारेमें यह जवाब दिया था कि उनका इरादा उसके विरुद्ध होने से वे उसमें सहयोग नहीं दे सकते। फिर उनपर यह दोष लगाया गया कि वे लोगों को चंदा देनेके विरुद्ध भड़काते हैं। दौलपुरा के किसानों को लगान न देने के लिए उकसाने के अपराधमें लगान आर्डिनन्समें दौलपुरा के श्री लादूलालजी जैन पटवारी को सांचर की अदालतसे रु. ५०) जुर्माने की सजा दी गई है।

+ + +

किसान बनाम जागीरदार

शेखावाटी के बन्दोबस्त के बारेमें किसानोंमें काफ़ी असंतोष है। सीकर के किसानोंने खतौनिया लेनेसे इनकार कर दिया। पीछे रेवेन्यू मिनिस्टर मि. ब्राउनसे एक शिष्ट मण्डल मिला था। मि.ब्राउनने बहुत सहृदयतासे बातचीत की और दिलासा दिलाया कि उन्नदारियों पर पूरा ध्यान दिया जायगा। पंचपाने के इलाके में जो कुछ भी होगा उसमें किसानोंको अंधेरेमें नहीं रखा जायगा। उन्होंने यह भी बतायाकि उन्होंने किसानोंको मौरूसी हक देनेकी भी सिफारिश की है जिस पर कौंसिल विचार कर रही है। लेकिन, इधर फिर कुछ चिंताजनक समाचार प्रकाशित हुए हैं; जिनसे पता चलता है कि किसानोंको अंधेरेमें रखकर जागीरदारोंको कुछ अनुचित और बेजा अधिकार दिये जा रहे हैं। ३० सितम्बरको किसानोंके कुछ प्रतिनिधि मि. ब्राउनसे फिर मिलने वाले थे।

+ + +

एक सत्प्रयत्न

उदयपुरकी सरकारने कर्जेकी वजहसे होनेवाली मुकदमेबाजी में गरीब किसानोंको होनेवाली कठिनाइयोंको दूर करनेके लिए एक कर्जा-निवारण कमिटी १२ सदस्योंकी नियुक्त की है। उदयपुरके वकील श्री जीवनसिंहजी चोरड़िया बी. ए., एलएल. बी. इसके सभापति और श्री मदनसिंहजी देवपुरा बी. ए. एलएल. बी. इसके संयोजक हैं।

+ + +

राजस्थानी साहित्य की शोध

राजस्थान प्रांतीय सम्मेलनके जोधपुरमें होनेवाले अधिवेशनकी स्वागत समितिसे श्री जयनारायणजी व्यासने स्तीफा दे दिया है। सम्मेलनके तत्वावधानमें उदयपुरके हिन्दी विद्यापीठकी ओरसे राजस्थानी साहित्यके अनुसंधानका कार्य किया जा रहा है। इस समय डिंगल साहित्यके अन्वेषणका कार्य किया जा रहा है। मेवाड़ मिनरल कंपनीके मालिक श्री श्रीगोपालजी मोहताने ५००) इस कार्यकी सहायताके लिए दिये हैं।

+ + +

सिरोहीमें धांधली

सिरोहीमें श्री बाबूलाल शाह और श्री शान्तिलाल शाह पर पीछे एक मुकदमा चलाया गया था, जिसमें उनको सजा हो गई थी। मुकदमेका आधार वह अर्जी थी, जो उन्होंने किसी हरिजनकी ओरसे पुलिसके सम्बन्धमें लिखी थी। श्री शान्तिलाल शाह आबूरोड म्युनिसिपैलिटीके वाइस प्रेजीडेन्ट भी थे। इस मुकदमेमें सजा हो जानेसे उनको ऐसा कोई कानून न होने पर भी म्युनिसिपैलिटी के सदस्य पदसे पृथक कर दिया गया है।

+ + +

अग्रसेन जयंतीका उत्सव इधर खूब लोकप्रिय होता जा रहा है। कई स्थानोंपर तीन-तीन और सात-सात दिनका कार्यक्रम बताया जाता है। भरतपुरमें अग्रवाल सम्मेलनका आयोजन कलकत्ता के सुप्रसिद्ध समाज-सुधारक श्री वसन्तलालजी मुरारकाके सभापतित्वमें किया गया था। श्री मुरारकाजी अब शेखावटीमें समाज सुधार के लिए दौरा करेंगे।

बम्बई हिन्दी विद्यापीठ

बम्बई हिन्दी विद्यापीठ बम्बई में हिन्दीका प्रचार बड़ी तत्परता और सफलतासे पिछले कुछ अर्से से कर रहा है। इस अल्पकालमें ही उसने असाधारण उन्नति की है। सन १९४०-४१ के वार्षिक विवरणको देखनेसे प्रतित होता है कि हिन्दी प्रचार का काम विद्या पीठने बहुत प्रशंसनीय रीतिसे किया है। विद्यापीठ की तरफसे प्रति वर्ष फरवरी और सितम्बर मासमें हिन्दी प्रथमा, हिन्दी मध्यमा, हिन्दी उत्तमा और हिन्दी भाषा रत्न—यह चार परीक्षाएं होती हैं। सन् १९३९ और ४० में इन परीक्षाओंमें कुल २३४२ विद्यार्थी बैठे जिनमेंसे १७६१ उत्तीर्ण हुए। साथ ही 'हिन्दी भाषारत्न' परीक्षा हिन्दी साहित्य सम्मेलनके द्वारा मान्यकी जा चुकी है और उसको पास करनेवाले विद्यार्थी सम्मेलनकी मध्यमा (विशारद) परीक्षा में सीधे बैठे सकते हैं। संस्थाके कार्योंकी लोकप्रियता और सफलताके ये दो बातें काफ़ी पुष्ट प्रमाण हैं।

विद्यापीठकी तरफ़से हिन्दीके वर्ग नगरके विभिन्न केन्द्रोंमें चलते है जिनमें मराठी, गुजराती, कन्नड़, कोंकणी, तामिल, तेलगु, मलयालम, बंगला, नेपाली, पंजाबी, सिन्धी, कच्छी और उर्दू भाषा भाषियोंने लाभ उठाया है। इन सब भाषा भाषियोंने परीक्षाएं भी दी हैं। इन सब विभिन्न प्रान्तके लोगोंमें बम्बई जैसे सर्व प्रान्त वासियोंसे बसे हुए नगरमें हिन्दीका यह प्रचार एक प्रशंसनीय वस्तु है।

एक पुस्तकालय और वाचनालय भी विद्यापीठकी तरफसे चलता है जिसमें पुस्तकोंकी संख्या लगभग १००० है। विद्यापीठकी प्रवृत्तियोंका एक महत्वपूर्ण अंग यह भी है कि हिन्दी साहित्यसे सम्बन्ध रखनेवाले विभिन्न विषयोंपर बम्बई नगर व बाहरके विद्वान् पुरुषोंके भाषणोंकी व्यवस्था की जाती है। इस प्रवृत्तिके द्वारा न सिर्फ हिन्दी भाषामें बल्कि हिन्दी साहित्यमें भी हिन्दी विद्यापीठ दिलचस्पी पैदा कर रहा है। हम विद्यापीठकी उन्नति व सफलता चाहते हैं।

विवाह—

नैतिक पहलू से

[विवाहके सम्बन्धमें हम अब तक दो प्रख्यात लेखकों—जज बेन लिण्डसे, और वेस्टरमार्कके लेख दे चुके हैं। यह तीसरा लेख बर्ट्रेण्ड रसेलका है। हम इस विषयको लेकर एक दर्जन लेखोंकी एक माला प्रकाशित करना चाहते हैं। इससे विवाह जैसी महत्त्वपूर्ण सामाजिक संस्थापर हमारे पाठकोंको विभिन्न पहलुओं और दृष्टिकोणोंसे विचार करनेका मौका मिलेगा। हम एकबार फिर निवेदन करना चाहते हैं कि हमारे पाठक इन लेखोंका ध्यानसे मनन करें।
—सं०]

★ बर्ट्रेण्ड रसेल ★

सबसे पहले मैं विवाह की, संतानोंके प्रश्नका जिक्र किये विना केवल स्त्री-पुरुषके एक संबंध की दृष्टिसे ही आलोचना करना चाहता हूं। निःसन्देह विवाह दूसरे लैङ्गिक संबंधोंसे इस दृष्टिसे भिन्न है क्यों कि यह एक कानूनी संस्था है। बहुत सी जातियोंमें यह एक धार्मिक संस्थाके रूपमें भी समझा जाता है, लेकिन इसका कानूनी पहलू ही ज्यादा महत्वपूर्ण है। विवाह की कानूनी संस्था केवल उसी आचार को मूर्तिमान करती है, जो (आचार) आदिम युगके मनुष्योंमें ही नहीं बल्कि बंदर इत्यादि प्राणियोंमें भी पाया जाता है। जानवरोंमें प्रजोत्पत्तिके लिये मादा को जब नरके सहयोगकी आवश्यकता पड़ती है तब उनमें भी एक ऐसा अनुष्ठान होता है जो एक प्रकारसे विवाह ही है। सभ्य मानव जातिमें भी एक-विवाह प्रवृत्तिके धुंधले चिन्ह कई बार दृष्टिगोचर होते हैं। फिर भी मानव प्राणियों में एक प्रकारकी मानसिक विचित्रता है, जिसमेंसे उनके दुर्गण और बुद्धि पैदा होते हैं। वह विचत्रता है आदतोंको तोड़ने और आचारके नये विधानोंको प्रारम्भ करनेकी कल्पना करनेकी शक्ति।

बहुत संभव है कि आदिम युगका एक-विवाह सबसे पहले आर्थिक हेतुओंके बीचमें आ पड़नेसे टूटा हो। प्राचीन खेतिहरों और चरवाहोंकी जातियोंमें स्त्री और संतान दोनों ही पुरुष की आर्थिक संपत्ति समझे जाते थे। फलतः सबसे ज्यादा शक्तिशाली मनुष्य अधिक से अधिक स्त्रियां प्राप्त करना चाहता था। और चूंकि समाजमें स्त्रियोंका आधिक्य नहीं है, इस लिए बहु विवाह किसी समाजमें शायद ही जन साधारणका आचार बन सके। अतः यह कुछ मुखियों तथा पैसेवालोंका ही विशेषाधिकार रह जाता था। अधिक स्त्रियां तथा अधिक संतानोंका होना एक कीमती संपत्ति मानी जाती थीं, और इससे वह अपने मालिककी स्थितिको जो पहलेसे ही ऊंची है और भी ज्यादा बढ़ा देता था। इस तरह स्त्रीका प्रधान कार्य मुनाफा देनेवाले घरेलू प्राणीका कार्य था और लैङ्गिक कार्य एक गौण कार्य रह जाता था। बहुत-सी अर्धसभ्य जातियोंके व्यभिचार संबंधी भाव इसी दृष्टिकोणके अंशरूप हैं। एक पुरुष यदि दूसरे पुरुषकी स्त्रीके साथ संभोग करता तो वह तो कानूनसे भी अपराधी समझा जाता था, लेकिन यदि एक पुरुष किसी अविवाहित स्त्रीके साथ संबंध करता तो तब तक उसे कोई भी दोष नहीं दिया जाता था जबतक उसके द्वारा उस स्त्रीका विवाहके बाज़ारमें मूल्य कम नहीं हो जाता। किन्तु ईसाई धर्मके आगमनके साथ इस दृष्टिकोणमें परिवर्तन आ गया।

जब हम वर्तमान जगतकी ओर दृष्टि डालें और अपने आपसे पूछें कि वैवाहिक जीवनमें सुख तथा दुःखके लिये सामान्य तौर पर क्या क्या शर्तें आवश्यक प्रतीत होती हैं, तब हम एक विचित्र परिणाम पर पहुंचते हैं। हमें प्रतीत होता है कि मनुष्य जितना जितना अधिक सभ्य होते जाते हैं, उतने ही उतने एक संगी के साथ वे आजीवन सुख प्राप्त करनेमें अयोग्य प्रतीत होते हैं। आम तौरपर जहां मनुष्य मनुष्यके बीच भिन्न नहीं होती वहां विवाह अत्यधिक सरल बन जाता है। यदि एक पुरुष दूसरे पुरुष से या एक स्त्री दूसरी स्त्रीसे भिन्न न हो, तो किसी दूसरे व्यक्ति से विवाह न होने से दुःखी होनेका कोई खास कारण नहीं रह जाता। विवाहमें सुखप्राप्ति की एक दूसरी शर्त यह है कि अविवाहित स्त्रियोंकी संख्या बहुत कम हो, और विवाहित पुरुष संभ्रान्त स्त्रियों से जहां मिलते हैं, ऐसे सामाजिक प्रसंगोंका अभाव हो। और यदि अपनी स्त्री को छोड़कर दूसरी स्त्रीके साथ लैङ्गिक संबंध करने की संभावना ही न रहे, तो अधिकांश मनुष्य इस परिस्थितिका अच्छेसे अच्छा फायदा उठायेंगे, और कुछ असाधारण प्रसंगों को छोड़कर वह उन्हें असह्य भी नहीं लगेगी।

विवाह इस अवस्थामें भी सुखमय हो सकता है जबकि दोनों पक्ष विवाह करनेके पश्चात् अधिक सुख की अपेक्षा न रखें। सामाजिक रूढ़ियोंकी अचलता भी तथाकथित दुःखी विवाहोंको रोकनेका यत्न करती हैं। आधुनिक जगतके सुसंस्कृत लोगोंमें तथाकथित सुखी विवाह की एक भी शर्त का अस्तित्व नहीं है और इस प्रकार हम देखते हैं कि ऐसे विवाहोंकी संख्या अधिक नहीं जो प्रारम्भके कुछ वर्षोंके बाद भी सुखमय बने रह सकें। इस दुःखके कुछ कारण तो हमारी सभ्यताके साथ जुड़े हुए हैं, लेकिन कुछ कारण, स्त्री-पुरुष जैसे कि वे आज हैं उससे यदि ज्यादा सभ्य बन जांय तो, दूर हो जायंगे। और इन दूसरी श्रेणी के कारणोंमें सबसे मुख्य कारण लैङ्गिक शास्त्र की निकृष्ट शिक्षा है। अधिकांश पुरुष यह नहीं समझते कि विवाहके अनन्तर संवनन (Wooing) अत्यावश्यक है, और अधिकांश सुखमें पली हुई स्त्रियां भी यह नहीं समझतीं कि गुमसुम रह कर और शरीरका सम्पर्क न करके वे विवाह जीवनको कितना नुकसान पहुंचा रही हैं। यही भाव स्त्री और पुरुषके बीच में निःसंकोच संगीपन को असंभव बना देते हैं।

दुःखके कुछ अन्य आधुनिक कारण ऐसे भी हैं जिनको आसानीसे दूर नहीं किया जा सकता। मेरा ख्याल है कि अधिकांश अप्रतिषिद्ध (स्वतन्त्र) सभ्य व्यक्तियोंमें चाहे वे स्त्री हों या पुरुष, आम तौर पर अनेक विवाहकी ही प्रवृत्ति होती है। नैतिकता की रक्षाके लिये यद्यपि इस प्रवृत्ति को नियंत्रित किया जा सकता है, लेकिन इसके अस्तित्वको रोकना बड़ा मुश्किल काम है। स्त्रियोंकी स्वतंत्रता की वृद्धि के कारण पहलेकी अपेक्षा आज विवाहित व्यक्तियों की बेवफ़ाई का अवसर भी कहीं अधिक बढ़ गया है। अवसर विचारको पैदा करता है, विचार इच्छाओंको उकसाता है, और किसी भी प्रकारके धार्मिक नियंत्रण के अभावमें इच्छा क्रिया को जन्म देती है।

स्त्रियोंकी मुक्तिने विवाह प्रश्नको अनेक प्रकारसे और भी मुश्किल बना दिया है। पहले स्त्रीको पुरुषके अनुकूल बनना पड़ता था, पुरुषको स्त्रीके अनुकूल नहीं। लेकिन इन दिनों, स्त्रियोंके अपने व्यक्तित्व एवं जीवनवृत्तिके अधिकारोंको पा लेनेके कारण बहुतसी पत्नियां एक खास हद्के परे अपने आपको पुरुषोंके अनुकूल ढालनेके लिये तय्यार नहीं होती। इसके विपरीत पुरुष जो कि आज भी पुरानी "पुरुषोंके आधिपत्य" की रूढ़िको पकड़े हुए हैं, यह नहीं समझ सकते कि उन्हें इस प्रकार अनुकूल क्यों बनना चाहिये। आधुनिक विवाहके मार्गमें एक दूसरी भी कठिनाई है जिसे प्रेमके मूल्यको समझने वाले ही खासतौर पर जान सकते हैं। प्रेम केवल तबतक पनप सकता है जब तक वह स्वतंत्र और सहज हो। किन्तु प्रेम कर्त्तव्य है, इस प्रकारके विचारसे वह मुरझा जाता है। यदि यह कहा जाय कि "तुम अमुक व्यक्तिसे प्रेम करो क्यों कि यह तुम्हारा फर्ज है" तो निश्चय ही उस स्त्री या पुरुषके प्रति तुम्हारे मनमें घृणा पैदा हो जायगी। विवाह जो कि प्रेम और कानूनी बंधनोंका मिश्ररूप है, इस तरह न इधरका रहता है न उधरका।

इन सब कारणोंसे विवाह एक मुश्किल चीज़ बन गयी है, और यदि उसे सुख प्राप्तिमें बंधनरूप नहीं बनना है तो उस पर एक नये तरीकेसे विचार किया जाना चाहिए। सभ्य स्त्री-पुरुषोंके लिये विवाहमें सुख प्राप्त करना संभव है, यद्यपि इसके लिये उन्हें अनेक शर्तोंको पूरा करना होगा। दोनों पक्षोंको परस्पर पूर्णरूपसे समानता की दृष्टिसे देखना चाहिये, उनकी पारस्परिक स्वतंत्रतामें कोई दस्तन्दाजी नहीं होनी चाहिये, उन दोनोंके बीच शारीरिक एवं मानसिक घनिष्टता होनी चाहिए और मूल्योंके स्टैन्डर्डके संबंधमें भी दोनोंमें एक प्रकारका सादृश्य होना चाहिये। यदि इन शर्तोंको निबाहा जाय तो मेरा विश्वास है कि दो मानव जीवोंके बीच विवाह सबसे अच्छा और महत्वपूर्ण संबंध बन सकता है। और आजतक इसे इस दृष्टिसे सोचा नहीं गया इसका मुख्य कारण यही है कि स्त्री और पुरुष अपने आपको एक दूसरेके चौकीदार समझते आये हैं। यदि विवाह को अपनी सब संभवनाएं प्राप्त करनी हैं तो स्त्री और पुरुषोंको यह अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि कानून चाहे कुछ भी कहे, अपने वैयक्तिक जीवनमें वे स्वतंत्र हैं।

लैंगिक सम्बन्धमें आर्थिक हेतुका प्रवेश हमेशा थोड़े या बहुत प्रमाणमें खतरनाक सिद्ध हुआ है। लैङ्गिक संबंध केवल दोनों पक्षोंकी सहज प्रवृत्तिके द्वारा प्रयोजित एक आनन्द ही होना चाहिये। और जहां ऐसा नहीं है वहां कोई भी कीमती वस्तु नहीं रहती। ऐसे घनिष्ट रूपमें किसी दूसरे व्यक्तिको उपयोग करनेका यही अर्थ है कि हममें मानवके प्रति उस आदर की कमी है, जिसमेंसे समस्त सच्ची नैतिकताका प्रादुर्भाव होता है। यह कथन केवल वेश्यावृत्ति पर ही लागू नहीं होता बल्कि विवाह पर भी लागू होता है। अधिकांश स्त्रियोंके लिये विवाह, जीविका निर्वाहका ही एक सामान्यतम तरीका है, और सम्भवतः वेश्यावृत्तिकी अपेक्षा विवाहमें अवांछित विषयभोग स्त्रियोंको कहीं ज्यादा सहन करना पड़ता है। लैङ्गिक संबंधोंमें नैतिकताका अर्थ, जब कि वह अन्य विश्वासोंसे मुक्त होती है—प्रधानतः होता है दूसरे व्यक्तिका आदर, उसे उसकी इच्छा या अनिच्छाकी उपेक्षा करके केवल अपने व्यक्तिगत वैषयिक सुखके लिये साधन बनानेकी इच्छाका अभाव। और क्योंकि वेश्यावृत्ति इस सिद्धान्तके प्रति घोर पाप करती है इसलिये वह हमेशा अवांच्छनीय रहती है।

तलाकको एक संस्थाके रूपमें अनेक युगों और अनेक

देशोंमें कुछ खास कारणों से स्थान दिया गया है। तलाक का हेतु यह कभी नहीं माना गया कि यह एक-विवाहके लिये एक विकल्प है। उसका केवल यही हेतु रहा है कि वह संकट और कठिनाइयों को कम कर दे जब कि किन्ही खास कारणोंसे विवाह संबंध निभाना असह्य हो गया हो। तलाकके बारेमें सबसे विचित्र बात है वह विभिन्नता जो कानून तथा रूढ़िमें कई बार पायी गई है। तलाकके सरलतम नियम सर्वदा तलाककी संख्या को बढ़ाते हैं, ऐसा हम नहीं कह सकते। विवाहको प्रधानरूपसे मैं लैङ्गिक भागीदारी नहीं मानता, बल्कि इन सबसे ऊपर मैं इसे प्रजोत्पत्ति और संतानोंके पालनपोषणके लिये सहकार की जिम्मेवारी लेना समझता हूं। तलाक दो प्रकारके कारणों से वांछनीय हो सकता है। एक तो वे कारण जो एक साथीके दोषों, यथा पागलपन शराब पीने का दुर्व्यसन या कानूनी अपराध से पैदा होते हैं, और दूसरे वे जो स्त्री पुरुष के आपसी संबंध से ताल्लुक रखते हैं। यह हो सकता है कि दोनों पक्षोंमेंसे किसी एकमें दोष हुए बिना भी किसी विवाहित युगल के लिये परस्पर शांति पूर्वक या कोई गंभीर बलिदान दिये बिना साथ रहना असंभव बन जाय। यह भी हो सकता है उनमेंसे प्रत्येक को कोई महत्व का कार्य करना हो और इस कार्य के लिये दोनोंका पृथक् पृथक् स्थानपर रहना ज़रूरी हो। और यह भी हो सकता है कि उनमें एक, दूसरे पक्ष से घृणा किये बिना भी किसी अन्य व्यक्ति पर घनिष्ट रूपसे आसक्त हो, इतना घनिष्ट कि उसे विवाह एक असह्य बंधन मालूम होने लगे। यदि इस अवस्थामें कोई कानूनी इलाज नहीं तो यह सर्वथा निश्चित है कि इससे घृणा पैदा हो जायगी। और वास्तवमें ऐसे मामले, जैसा कि सब कोई जानते हैं, हत्यायें तक भी करा सकते हैं। जब विवाह संबंध एक संगी की प्रतिकूल या किसी अन्य व्यक्तिके साथ उसकी प्रबल वासनामय आसक्तिसे टूट जाता है, उस वक्त जैसा कि अब पाया जाता है परस्पर दोषारोपण करने का संकल्प नहीं रहता। इस कारण, ऐसे अवसरोंमें तलाक का उत्तम आधार तो पारस्परिक अनुमति ही है। पारस्परिक अनुमतिके अलावा दूसरे आधार की तभी आवश्यकता होती है जबकि विवाह, एक साथी की किसी खास कमीके कारण निष्फल बन गया हो।

कैथोलिक मतमें विवाह का एक उद्देश्य संतान समझा जाता है, परंतु यह मान्यता एकतरफा है। इसका यह अभिप्राय होता है कि संतानोत्पत्तिके निमित्त न होने वाला संयोग पाप है। यह मानते हुए भी कैथोलिक मत यह आज्ञा नहीं देता कि स्त्रीके वन्ध्या होने पर विवाह का विच्छेद कर दिया जाय। सचाई यह है कि विवाह का मुख्य उद्देश्य-अर्थात् संतानोत्पत्ति बहुत गौण रह गया है, और उसकी जगह मुख्य उद्देश्य बन गया है, पाप का निवारण जैसाकि सेंट पॉलने भी माना है। विवाहका प्रधान उद्देश्य तो अब भी विषयभोग ही है और इसे (विवाहको) अपेक्षाकृत कम शोचनीय विकल्पके रूपमें ही समझा जाता है। कैथोलिक सम्प्रदायने विवाहके इस हीन रूपको छिपानेके लिये इस सिद्धान्तका आविष्कार कर दिया है कि विवाह एक पवित्र संस्कार है। इस सिद्धान्तका क्रियात्मक असर यह हुआ है कि लोगोंमें यह धारणा बन गयी है कि विवाह अविछेद्य है। कोई विचार यदि बहुत व्यापक रूपसे जनतामें प्रचलित हो जाय तो उसका यह अर्थ नहीं है कि वह विचार बेहूदा नहीं हो सकता। वास्तवमें मनुष्य जातिकी अधिक संख्या मूर्ख ही है इस लिये अधिक व्यापक तथा लोगोंमें फैला हुआ विश्वास मूर्खतापूर्ण होगा-इसकी ही ज्यादा संभावना है। ईसाइयोंके आचार शास्त्रने लैंगिक धर्म पर ज्यादा जोर देकर स्त्रियोंकी स्थितिको बहुत नीचा कर दिया था। नीतिशास्त्र की रचना करनेवाले पुरुष थे इस लिये उन्होंने ऐसा दिखाया कि जैसे स्त्रियां प्रलोभनमें फंसानेवाली मायाविनी हैं। यदि नीतिशास्त्र की रचना स्त्रियोंने की होती तो यह "पार्ट" पुरुषोंको मिलता। क्योंकि स्त्री मायाविनी थी अतः यह उपयुक्त समझा गया कि उसकी स्वतंत्रता कम कर दी जाय जिससे वह कमसे कम पुरुषको प्रलोभन में फंसा सके। परिणामतः भली स्त्रियोंको खूब बंधनोंमें जकड दिया गया। जो स्त्रियां शरीफ नहीं थीं और पापी मानी जाती थीं, उनके साथ तो अत्यंत घृणाका व्यवहार किया जाता था। स्त्रियों को वैसी आजादी जैसी कि एक समय रोमन साम्राज्यमें उन्हें थी फिर प्राप्त किए हुए अभी बहुत समय नहीं हुआ स्त्रियोंको गुलामीमें कुरुढ़ परंपरा का भी बहुत बड़ा हाथ रहा है लेकिन यह परंपरा ईसाई मतके अभ्युदयके पूर्व ही नष्ट होने लगी थी। कांन्स्टेन्टाइनके बाद स्त्रियोंकी स्वतंत्रता उनको पापसे बचानेके बहाने फिरसे कम कर दी गई। आजकल सिर्फ पापके विचारमें एकदम परिवर्तन होनेका ही फल है कि स्त्रियोंको पुनः स्वतंत्रता प्राप्त होने लगी है। उस जमानेमें तो स्त्रियोंको पापका द्वार और समस्त मानवीय बुराइयोंकी जननी समझा जाता था। तत्कालीन विचारके अनुसार स्त्रीको इस बात पर ही लज्जित होना चाहिये कि वह स्त्री है। उसे अभिशापोंके कारण हमेशा संताप और तपस्याका जीवन व्यतीत करना चाहिये। उसे अपनी वेशभूषा पर लज्जित होना चाहिये क्योंकि वह उसके पतनका स्मारक है। खासकर उसे अपने सौंदर्यपर लज्जित होना चाहिये क्योंकि वह शैतानका साक्षात् हथियार है। शारीरिक सौंदर्य, बहुत समय तक धार्मिक निंदाका विषय रहा है। जायदाद और पैतृक संपत्तिके कानूनोंमें भी स्त्रियोंके विरुद्ध ही उन्हीं भावोंके अनुसार परिवर्तन होते रहे। और यह फ्रेंच राज्यक्रांतिके स्वतंत्र विचारकों के प्रयत्नका ही फल था कि पुत्रियोंको उनके पैतृक अधिकार फिरसे प्राप्त हो गये।

मैं जिस सिद्धान्तका प्रचार करना चाहता हूं वह दुराचार का सिद्धान्त नहीं है। मैं भी आत्मनिग्रहको उतना ही महत्व देता हूं जितना कि लौकिक रूढ़ मत देते हैं। लेकिन अपनी स्वाधीनताको नियंत्रित करनेकी अपेक्षा दूसरेकी स्वाधीनतामें दखल देनेसे बचनेके लिये आत्मनिग्रह की अधिक आवश्यकता है। मैं समझता हूं कि दूसरोंके व्यक्तित्व और स्वाधीनताके प्रति आदरके ये भाव प्रारंभसे ही सच्ची शिक्षा देनेसे अपेक्षाकृत सरल हो जायेंगे, लेकिन हममेंसे वे लोग जो शुरूसे ही यह मानते हैं कि दूसरोंके कार्योंमें सदाचारके नामपर हस्तक्षेप करनेका उन्हें अधिकार है, उनके लिए तो निस्संदेह ही अत्याचारके इस बहुमान्य स्वरूपको छोड देना बड़ा कठिन, और बहुत बार असंभव भी हो जाता है। लेकिन इससे यह नहीं सोचना चाहिये कि यह उनके लिये भी असंभव है जो शुरूसे ही एक कम प्रतिबन्धक नैतिकताकी शिक्षा पाते आये हैं। श्रेष्ठ विवाहका सार है पति-पत्नीमें एक दूसरेके व्यक्तित्वके प्रति आदर, वह आदर जिसमें कि शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक घनी मित्रता जुड़ी हुई है, जो स्त्री-पुरुष के बीच गंभीर प्रेम—जो कि समस्त मानवीय अनुभवोंमें सबसे अधिक उत्पादक है,—उत्पन्न करता है। ऐसे प्रेमको भी प्रत्येक महान् और मूल्यवान वस्तुकी तरह अपने निजी नैतिक नियमोंकी आवश्यकता है, और अकसर महान्के प्रति अल्पके बलिदानमें उसकी परिणति होती है, परन्तु ये बलिदान स्वेच्छासे ही होना चाहिये, क्योंकि जब ऐसा नहीं होता, तब वह प्रेम के उस आधारका ही उच्छेद कर देता है, जिसके लिये उसकी अवतारणा हुई है।

"मैरेज एण्ड मौरल्स" से

(पृष्ठ ७ का शेषांश)

तो नहीं हो सकता। जनरल एलियसके प्राणदण्डकी आज्ञाके कारण प्रेजीडेंट हाशाने भी त्यागपत्र दे दिया है किन्तु उनका त्यागपत्र प्रोटेक्टर हाइड्रिखने स्वीकार नहीं किया।

अमेरिकामें तटस्थता कानूनमें परिवर्त्तन ?

अमेरिकाके Neutrality act (तटस्थता कानून) में परिवर्त्तनकी चर्चाएं गरम हो रही हैं। स्वयं प्रेजीडेंट रूज़वेल्टने भी इस विषयको लेकर मि॰ कार्डेल हलसे चर्चा की है और शीघ्र ही वे इस विषयको लेकर कांग्रेसमें प्रस्ताव पेश करने जा रहे हैं। इन सब चर्चाओंसे जान पड़ता है कि अमेरिका तटस्थता कानून भंग करके या परिवर्तन करके शीघ्र ही युरोपीय युद्धको विश्वयुद्धका रूप दे देगा। इस सम्बन्धमें अभी हाल ही में जो "गैलप पॉल" हुआ है उसके आंकड़े यह बताते हैं कि इस "न्यूट्रेलिटी ऍक्ट" में परिवर्त्तन करनेके पक्षमें अमेरिकाका ४६ प्रतिशत, विरोधमें ४० प्रतिशत और उदासीन १४ प्रतिशत जनमत है। किन्तु रूसपर आक्रमण होनेसे पूर्व पूंजीवादी अमेरिकाके श्रमिक वर्गने वहांके कलकारखानेंमें जो हड़तालें की हैं उनको देखते हुए स्पष्ट प्रतीत होता है कि वहां का शासक वर्ग (पूंजीवादी) कभी भी रूसको सहायता देने के पक्षपाती नहीं हो सकते। बहुतसे अमेरिकन लेखकोंका तो यह भी मत है कि रूसने अमेरिकाके पूंजीवादी वर्गके खिलाफ़ एक बड़ा षड्यंत्र रच रखा है और समय आनेवाला है, यदि इस साम्यवादी तत्वको दबा नहीं दिया गया तो वह सारे अमेरिकाको अपने पावोंतले रौंद डालेगा। इस प्रकारके लेखोंको देखकर यह सहज ही अनुमान होता है कि रूसको कोई क्रियात्मक मदद अमेरिकाके द्वारा नहीं दी जायगी और जो कुछ मिलेगी वह इतनी नगण्य होगी कि रूसको उससे कोई लाभ नहीं होगा, उसके विपरीत अमेरिकाको आर्थिक दृष्टिसे जरूर लाभ हो जायगा।

बलगेरिया और टर्कीपर दवाव

बलगेरिया और टर्की की सरकारोंपर जर्मनी की तरफसे दबाव डाला जा रहा है कि वे रूसके खिलाफ़ जर्मनी की तरफसे लड़ें और टर्की जर्मनीको दर्रे दानियालके रास्तेसे काकेशस तथा पूर्वकी तरफ बढ़ने दे। यदि ऐसा नहीं हुआ तो परिणाम उनके लिए बहुत खतरनाक होगा। इसके साथ ही जर्मनी टर्कीके साथ एक व्यापारिक सन्धि भी करना चाहता है। इसी उद्देश्यसे जर्मनी के दो प्रतिनिधि फोन पापेन (कूटनीतिक) व डा॰ क्लोडियस (व्यापारिक) इस समय भी टर्कीमें हैं और टर्कीको अपने फन्देमें फंसानेकी फ़िक्र में हैं।

गान्धी जयन्ती

देशके प्राण और विश्वविभूति महात्मा गान्धी अपने जीवन के ७२ वर्ष पूरे करके ७३ वें वर्षमें पदार्पण कर रहे हैं। २ अक्तूबरको उनकी वर्षगांठ देशके कोने-कोने में मनाई गयी है। इस अवसर पर खादीका प्रचार, जनतामें अपने लिए स्वयं खादी तय्यार करनेकी स्वावलम्बनकी भावनाको पैदा करना—इन दोनोंका खूब प्रचार किया गया है। महात्मा गान्धीकी जन्मतिथि हमारे देशका एक राष्ट्रीय पर्व है जो एक नयी रूह फूंकनेके लिए हर बरस नया-नया पैगाम लेकर आता है। महात्मा गान्धीने देशके लिए जो कुछ किया है आज उसे बतानेकी ज़रूरत नहीं। मुर्दा और पंगु देशको महात्मा गान्धीने आत्म सम्मान और स्वाधीनताकी प्रचण्ड भावना भर कर खड़ा कर दिया है। महात्माजीने अहिंसाकी जिस नीतिको जन्म दिया है और क्या राष्ट्र, क्या समाज और क्या जातीय व धार्मिक जीवन सभीमें उसे एक प्रमुख स्थान दिया है वह आजके इस विनाशोन्मुख संसारके लिए निःसन्देह एक नयी और अद्भुत देन है। अहिंसाकी फिलासफी (दर्शन) जीवनका दर्शन है मृत्युका दर्शन नहीं। अहिंसाके दर्शनमें आशावाद है, प्रगति उसकी आत्मा है, उसमें मुर्दा defeatism नहीं बल्कि सजीव आशा है। हमारे देशके राष्ट्रीय आन्दोलनको ही नहीं, बल्कि धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आन्दोलनको भी महात्मा गान्धीने एक नया दिग्दर्शन कराया है। आज ऐसे भी लोग मिलेंगे जो महात्माजीकी नीतिमें विश्वास नहीं करते हों या विश्वास करके अन्तमें हार थक गये हों और सम्भव है उनकी नीति

(शेष पृष्ठ १३ के कालम २ पर)

कन्यापक्षका दर्जा छोटा क्यों?

● निवेदक ●

रामनाथ सोनी अहमदनगर, मुरलीधर लोया पूना, पन्नालाल लाहोटी संगमनेर

हमारा घर फल-फूला हो, धन-धान्यकी वृद्धि हो, यह इच्छा हरेक संसारी व्यक्ति की होती है। इसी आशयका शुभ आशीर्वाद ब्राह्मण या घरके बड़े-बूढ़े देते हैं तब कितनी खुशी होती है। मनमें आता है कि आज जो मंगल आशीर्वाद मिला है वह एक न एक दिन जरूर फलेगा। प्राचीन-कालमें बेटीको आशीर्वाद दिया जाता था, "अष्ट पुत्रैः सौभागयवती भव"। इसीसे यदि घरमें धन-धान्य हो, रुपया-पैसा हो, दास-दासी हों, हुकूमत हो पर पुत्र न हो तो वह सब धन-वैभव किस काम का? ऐसी बात सब लोगोंके मनमें प्रायः बैठ गयी है। इसलिए जब कोई स्त्री गर्भवती होती है तो उसके साथ खूब स्नेह किया जाता है। घर-भरमें खुशी छा जाती है, भोजनादि समारम्भ होते हैं, लेन-देन होता है। महाराष्ट्रीय उसे ओटी भरन कहते हैं और हमारे राजस्थानी समाजमें उसे धोलो जीमन कहा जाता है।

इस खुशीके वातावरणमें लोग पूछते हैं, लड़का होगा या लड़की? सब कोई कहते हैं, लड़का होगा। और इच्छा भी सबकी यही होती है। पर यदि कोई भूलसे कह दे कि लड़की होगी तो वह बड़ा अशुभ और अपशकुन समझा जाता है।

बादमें यदि इस नवागन्तुक प्राणीके पूर्वजन्मके सद्भाग्यसे उसे लड़केके रूपमें जन्म मिले तो खुशीके मारे लोग थाल बजाते हैं, दाईको गेहूं दान किया जाता है और पेड़े बंटते हैं। बधाई दी जाती है, खूब खुशियां मनाई जाती हैं। प्रसूताको भी खुशी होती है और उसके पतिको भी। पर यदि लड़केके बजाय लड़की हो जाय तो सब मामला बिगड़ जाता है। फिर थाल-वाल नहीं बजते, दाईको गेहूंके बदले जवार तक नहीं मिलती। पेड़ेके बदले बर्फी तक नहीं बांटी जाती। बधाईकी तो बात ही क्या? सबके मनमें एक प्रकारका क्लेश-सा छा जाता है मानों कोई भारी संकट घरमें आ जन्मा हो। उसीदिन से घर भरके दिमागपर चिन्ता सवार हो जाती है। आखिर क्यों? कारण और कुछ नहीं, सिवाय इसके कि शिशु कन्याके पिताके मनमें बार-बार विचार आने लगते हैं कि इसकी सगाई करनी होगी; वर ढूंढना होगा। ब्याह-शादीपर पैसा खर्च होगा और और भी न जाने क्या-क्या देना पड़ेगा। इस प्रकारके विचारोंके दिलमें उमड़नेपर निराशाके अन्धेरेमें कन्याके प्रति स्नेहका उजाला यदि नहीं मिले तो आश्चर्य ही क्या?

धीमे-धीमे दिन बीतते जाते हैं। लड़की भी घास-फूसकी तरह बड़ी होती है। उसका पालन-पोषण होता है पर उस तरह नहीं जिस तरह लड़केका होता है। लड़के जितना जतन उसे नहीं मिलता। फिर भी वह बढ़ती तो जाती है। पढ़ाईका समय आता है तब भी वही होता है। "उसे ज्यादा पढ़ा-लिखाकर क्या करना है? आखिर तो लड़की की जात है। ज्यादा पढ़ानेसे बिगड़ जायगी। हमारी आंखोंके सामने रहकर भी तो वह पढ़ती है।" इस तरहके तर्क उठाकर बेचारी अभागी कन्याकी पढ़ाई-लिखाई का रास्ता बन्द कर दिया जाता है।

जहां लडकी की उमर नव-दस हुई कि फिर ब्याह और सगाई की फिकर विकराल रूप धारण करके आ जाती है। लड़की बेचारीके लिये भी झंझट हो जाता है। अब जमाने के बदलनेके साथ कुछ लड़कियोंपरसे तो संकट थोड़ा बहुत टलं गया है। शारदा एक्ट बन गया है और अमलमें भी आने लगा है। उस एक्ट की मेहरबानीसे लड़की को ब्याहकी झंझटसे कुछ समयके लिए छुट्टी मिल जाती है। यह कानून लड़कीके पिताके लिए खुशी और गम दोनों ही का कारण है। खुशीका इस लिए कि शादी का खर्चा इससे थोड़ी देरके लिऐ टल जाता है और गमका इसलिए कि शादी करनेकी चिन्तामें घुलनेके दिन बढ़ जाते हैं। घरमें रोज यही चर्चा रहती है कि जरा लड़का तो ढूंढो। लड़कीकी हालत देख रहे हो; किस तरह बेतहाशा बढ़ी जा रही है। उसे भी तो ठिकाने लगाना है।

हम पूछते हैं कि आखिर क्या वरको वधूकी आवश्यकता नहीं है? यदि है तो फिर वधूके लिये ही इतना झंझट क्यों है। गाड़ी भी एक चाकसे नहीं चलती तब यह संसार यात्राका रथ कैसे चल सकेगा? वधूके पिताने समाजका क्या अपराध किया है कि उसे ईश्वरने अपराधके दण्डस्वरूप कन्या दी। महाराष्ट्रमें एक कहावत प्रचलित है, "ज्याच्या पदरी पाप त्याला कन्या आपोआप।" क्या यह बात सच है। हमें तो रंज होता है उस समाजकी दशा देखकर। जरा कल्पना तो कीजिए ऐसे समाजमें कन्याको जन्म देनेवाले पिताकी जो चिन्ताके मारे घुला जा रहा है। कई लोग तो महीने-दो महीनेके लिए इस चिन्ताके मारे खाट पकड़ लेते हैं। इसलिए पिता सोचता है कि इस संकट की जड़ कन्या ही है।

हमारे पुराने शास्त्रकारोंने भी वर पक्षके साथ पक्षपात किया है। उसी को ऊंचा करके दिखाया है। पाठक क्षमा करें कि हम शास्त्रकारों पर भी कलम चलाने की धृष्टता कर रहे हैं। पर समाजके सामने यह बात लाना आवश्यक भी तो है। मनु महाराजके ज़मानेमें समाजकी जो रचना होगी उसमें उनके बनाये श्लोक और आईन-कानून भले ही मुआफ़िक़ बैठते हों पर आजकी स्थितिमें वह ठीक नहीं बैठते, यह हमारा स्पष्ट मत है। लड़कीके जन्मसे लेकर जीवन भर जो कुछ उसे और उसके अभिभावकों को देखना पड़ता है उसका चित्र हमने आपके सामने रखा है। क्या वह सच नहीं? क्या वह आपका, बल्कि सारे समाजका घर-घर होने वाला रोजमर्राका अनुभव नहीं? यदि यह आपका दैनिक अनुभव है तो फिर भी समाजमें यह सब क्यों होता है? यही आज आपके सामने सबसे बड़ा सवाल है। छुटपनसे ही लड़कीको पालन-पोषणकी ऐसी प्रक्रियामेंसे गुजरना पड़ता है जो लड़केके पालन-पोषणसे कहीं हीन होती है। बड़ी होनेपर यदि सगाईमें ज़रा भी देर हो जाय तो कुछ मत पूछिए। घर भर पर मुसीबतका पहाड़ टूट पड़ेगा। ज़रा शरीरसे स्थूल हो जाय तो भी उसकी आफ़त है। खाना-पीना कम कर देना होगा ताकि वह पतली और कृश हो जाय। लड़की पर यह कितना घोर अन्याय होता है। वह मां-बापकी आंखोंमें नहीं समाती। इन सब अत्याचारोंका बुरा नतीजा यदि भविष्यमें मातृपद पानेवाली लड़कीके स्वास्थ्यपर पड़े तो जीवन भरके लिए उसका शरीर रोगोंका घर ही बन जाय। यह सब बातें लड़काके माता-पिताके ध्यानमें तबतक नहीं आतीं जबतक कि उसका कहीं ठौर ठिकाना नहीं लगा दें। शादी पार हो जानेपर ये सब बातें सोचनेका उन्हें समय मिलता है।

शादीमें भी वधूको यही आशीर्वाद मिलता है, "पुत्रवती भव" अर्थात् पुत्रोंकी माता बन। और ज्यों-ज्यों समय बीतता जाता है पुत्रीके रूपमें जन्म लेकर कष्ट सहन करनेवाली लड़की भी यही सोचती है कि उसके पुत्री नहीं, पुत्र हो। पुत्रीकी कामना करनेवाली मां तो शायद ही कोई मिले। इसका एक मात्र कारण यही है कि आजके ज़मानेमें कन्या को जन्म देना खतरेसे खाली नहीं। पर इस प्रकार कन्याका दर्जा कम करनेका कारण क्या है?

वरको भी वधूकी उतनी ही आवश्यकता है जितनी कि वधूको वरकी। वरका काम भी चलना तब तक सम्भव नहीं जब तक कि वधूके साथ उसका गठबन्धन नहीं हो जाय। वधूके घर में आनेपर ही घरकी वृद्धि होती है, वंश आगे चलता है, वरका जीवन सुखी होता है। राजाधिराज भी पत्नी पाकर अपने राज्य और वंशके उत्तराधिकारीकी आकांक्षा करते हैं। तब भी स्त्री का ही दर्जा कम है। स्त्री तो वास्तवमें कुलका रत्न है—उसे पाकर उसके दाताके प्रति हमें अहसान मानना चाहिए पर वैसा न करके हम कन्यापक्षको हेय निगाहसे देखते हैं। उनसे आदानकी ही आकांक्षा करते हैं, देनेका विचार कभी नहीं करते। आदान भी मामूली नहीं, आदानके लिए कितने बहाने, कितने अवसर और कितने उत्सव-पर्व हम लोगोंने बना डाले हैं। स्त्री गर्भवती हो, प्रसूता हो या उसकी भानजी की शादी हो, सभी अवसरोंपर हमने कन्यापक्षसे लेनेका मानों अधिकार-सा समझ लिया है।

कभी-कभी जी में आता है कि शायद शास्त्रकार पुत्रके ही पिता होंगे, कन्याके नहीं। इसीसे तो कन्यापक्षके सिरके ऊपर वरपक्षकी प्रतिष्ठा कर गये हैं। यह ठीक है कि कुछ लोगोंको पुत्र पानेका सौभाग्य मिला है, पर जो लड़कीके पिता हैं उन्हें ही हम अभागा क्योंकर कह सकते हैं। सौभाग्य और दौर्भाग्यके इस बेहिसाब मापका नतीजा यह हुआ है कि आजके व्यापारिक युगमें पुत्रके पिता "पुत्र फेक्टरी" का प्रोडक्शन बढ़ता देखकर खुश होते हैं और कन्या के पिता इस भयसे कि न जाने कब "कन्या फेक्टरी" लिकीडेशन में चली जाय फूंक-फूंक कर व्यापारमें कदम रखते हैं।

यह हालत है हमारे समाज की। ईश्वरने आपको धन कमाने की बुद्धि दी है। व्यापार करनेके कितने ही तरीके हैं, उनके द्वारा आप जितना चाहें धन कमा सकते हैं, इज्ज़त भी पा सकते हैं। फिर इन भद्दे तरीकोंसे-पाप क्यों कमाते हैं। हम तो चाहते हैं कि कन्या और वर दोनों के पिताओंका, दोनों पक्षोंका दर्जा एक बराबर हो। यह लेन-देन की रीति बन्द होनी चाहिए। पुत्रीका लालन-पालन भी वैसा ही होना चाहिए जैसा कि पुत्रका होता है। वह खूब पढ़े-लिखे, देश व समाजके लिए कल्याण-कारिणी हो। मातृपद पाकर संसार की जननी बने। पुत्रीके माता-पिता भी वही दर्जा पायें जो पुत्रके पिता पाते हैं।

कुछ शास्त्रकारोंके मारे और कुछ वर पक्षके जुल्मके मारे बेचारे कन्या पक्षका आज जो जीना दूभर हो रहा है उसकी न्याय्यता हमारी समझमें नहीं आती। कन्या पक्षकी तरफसे यदि रंच मात्र भी भूल हो जाय तो वर पक्षके लोग मानों

(शेष पृष्ठ २४ के कालम २ पर)

हमारी दो समस्याएं

श्री मुरलीधरजी लोया

(१) विवाह समस्या

विवाह समस्या दिन पर दिन कठिन होती जा रही है। सगाई-विवाहमें कितनी शक्ति और द्रव्य खर्च होता है इस पर जमाखर्च रखने वाले समाजको जरूर विचार करना चाहिए। सगाई विवाहमें शास्त्रका क्या कथन है और रूढ़ी कहांतक बढ़ रही है इसका भी कुछ ठिकाना है? दो-तीन लाखके मालिक विवाहमें बीस हज़ार खर्च कर देते हैं पर इसका समाज पर क्या असर होता है? शारदा एक्ट बन जाने पर भी कन्या पैदा होते ही उसके विवाह शादी की फिकर शुरू हो जाती है। और जहां वह अष्टवर्षीया हुई, फिर तो कुछ पूछना ही नहीं। यह चिन्ता दौड़ धूपमें परिणत हो जाती है। विवाहसे चार-चार पांच-पांच साल पहले सगाइयां हो जाती हैं और यदि विवाह का मुहूर्त्त न मिले तो यह अन्तर एकाध साल और बढ़ जाता है। और समाजोंमें जहां तक देखा गया है विवाह वाग्दानके बाद दस-पन्द्रह दिनके भीतर ही हो जाता है। पर हमारे समाजके ढंग निराले हैं। सगाईमें इतनी जल्दबाजी तो होती ही है पर विवाह की रस्म अदा करनेमें भी महीने-दो महीने का समय लग जाता है दूसरे समाजोंमें विवाह की सब रस्में दो दिन में पूरी हो जाती हैं। उनके सन्तानें भी उत्तम पैदा होती हैं। सब व्यवहार ठीक चलता है। फिर—धनका जमा-खर्च रखनेवाला हमारा मारवाड़ी समाज ही ऐसा क्यों करता है? हमारे समाजकी विवाहकी रस्म पर जरा विचार कीजिए। एक महीना तो तय्यारीमें जाता है। दस-पंद्रह दिन खुद विवाहकी रस्ममें बीतते हैं। फिर पन्द्रह-बीस दिन इस सब साज-सरंजामको समेटनेमें लगते हैं। कितने आदमी काम पर दिनरात लगे रहते हैं कुछ ठिकाना है? तब कहीं काम पूरा होता है। उस पर कहीं थोडी-सी कोर-कसर रह गयी तो सब बिगड़ जाता है। किये कराये पर पानी फिर जाता है। समाजकी मनोवृत्ति अत्यन्त संकुचित रहनेसे लोग कहते हैं, "व्याव बिगड़ गयो।"

फिर भी हम यह सब ज्यों का त्यों करते हैं केवल व्यर्थ की लोकलाजके भयसे अपनेको दबाकर। पर व्यर्थ की लोकलाजके वश हर काममें दबते रहना बड़ा भारी दोष है, पाप है। आजकल हर एक युवक कहता है, क्या करें, इच्छा तो नहीं थी किन्तु समाजके लिए करना पड़ा। भला सोचिए समाजके दबावमें आकर यह सब करनेकी दलील क्या कुछ अर्थ रखती है।

हमारा विचार है कि विवाहमें शास्त्रीयपद्धति क्या है, क्या क्या रूढ़ियां बीचमें आ पड़ी हैं और उन्हें हटा कर किस तरह अपने समाजका भला किया जा सकता है इस पर युवकोंको पूर्णतः प्रकाश डालना चाहिए। बम्बईमें एक रिवाज है, पूनामें दूसरा, शोलापुरमें तीसरा और सातारामें चौथा। कहनेका तात्पर्य यह कि एकही समाजके लोगोंमें रीति-रिवाज तक एक नहीं। स्त्रियां इन भद्दी रीतियोंको शास्त्रीय पद्धतिका नाम देकर करनेका पक्ष ग्रहण करेंगी। वे समाजको भी कोल्हूके बैलकी तरह आंखें बांधकर हांकना चाहती हैं। इस स्थितिसे छुटकारा पाना अत्यन्त आवश्यक है। इसलिए विवाहमें कमसे कम और ज्यादासे ज्यादा रीति रिवाजोंकी एक मर्यादा बांध दी जानी चाहिए। इस पर विचारशील भाई बहनोंको अपने विचार प्रकट करने चाहिएं। चाहे वे पुराणमतवादी हों और चाहे नये जमानेके समर्थक दोनोंके ही विचारोंको सुनना चाहिए और बादमें उनका कुछ प्रतिष्ठित व्यक्ति सार निकालें जिसपर सारा समाज बाकायदा अमल करनेका व्रत ले।

अभी पिछले दिनों बारामती निवासी वर्णाश्रम धर्माभिमानी रा. सा. लाठीजीके पुत्रने तोरण न मारकर विवाहपद्धतिमें सुधार किया। इसपर श्री लाठीजी बहुत नाराज हुए, ऐसा सुननेमें आया। तोरण न मारनेमें ऐसी क्या सुधारणा है, इस पर श्री लाठीजी प्रकाश डालेंगे ऐसी आशा है। तोरण मारना हमारे पुराने समयमें क्षत्रिय होनेकी निशानी है।

इस घटनासे हमारे मनमें यह विचार आया है कि विवाहकी एक मर्यादा निश्चित रूपसे कायम कर दी जानी चाहिए। यदि ऐसा हो जाय तो सुधारक और गैर-सुधारक का बखेड़ा मिट जायगा और विचारपूर्वक किये गये मर्यादित नियमोंसे निरर्थक खर्च और अज्ञानमूलक रीति-रिवाज भी खत्म हो जायंगे।

---

(२) मारवाड़ी समाज और सीख की रस्म

सीखका अर्थ है दो उपदेशप्रद अच्छी बातें कहना। विदा होते समय अपनेसे छोटेको बड़े उपदेश देते हैं कि आगे जानेपर उसे किस प्रकार चलना, बोलना और व्यवहार करना चाहिए। यही सीखका सीधा-साधा अर्थ है। किन्तु हमारे मारवाड़ी समाजमें कन्या और दामादको विदा करते समय एक अद्भुत शिक्षा दी जाती है। वह शिक्षा है एक रुपये से लेकर एक सौ एक रुपये तक का कपड़ा गहना। अर्थात्, जो उसके पास है वही उसे दिया जाता है, जो सीख नहीं वही सीखके नामसे दिया जाता है।

विदा होते समय यदि अच्छी शिक्षा वृद्ध पुरुष दिया करें तो विदा लेने वाले के ध्यानमें भी वह रहे। वह सोचेगा कि विदा होते हुए गुरुजनोंने ऐसा करनेको कहा था इस लिए मुझे वैसा ही करना चाहिए। किन्तु हमारे समाजके पास अब रुपया जरूरतसे ज्यादा होगया है इस लिए हरेक व्यापारमें, हरेक काममें, हरेक चेष्टा और रीतिरिवाजमें वह बाहर निकलनेका रास्ता खोजा करता है। धन ही का सब जगह प्रदर्शन है प्रेमका नाम भी नहीं। जन्मसे लेकर मृत्यु पर्यन्त रुपया ही रुपया दिया जाता है। जन्मके समय रुपयोंसे बधाई दी जाती है। दसवें दिन सूर्यपूजाके समय अंचल खोलते हुए रुपये, बच्चेको देखनेके समय रुपये, बच्चा पांव-पांव चलने लगे तब रुपये, सगाईके समय, रुपये, विवाहके समय रुपये। और मृत्युके समय भी रुपये की ही कानाफूंसी होती है। कहाँ तक गिनाया जाय सब जगह यही हालत है। मृत्युका समय उपदेश, सत्य-विचारका समय है। शास्त्रोंने कहा है "अंते मतिःसा गति।"—अर्थात् मरते समय जो मति रहेगी वैसा ही आगेका जन्म मिलेगा। इस शास्त्र वचनानुसार भी विदाई उत्तम ही रहनी चाहिए।

माता कौशल्याने सीताजीको रामचन्द्रजीके साथ वन जाते समय बहुत प्रकार की सुन्दर सीख दी थी—

> सीताहि सासु असीस सिख,
> दीन्ह अनेक प्रकारा।
> चली नाइ पद पद्म शिर,
> पति हित बारम्बारा॥ ७८ अ० का०॥

सीखके ऐसे उदाहरण पुराने ग्रंथोंमें बहुत हैं पर अपना समाज उसे कैसे अपनायेगा। यहां तो रुपया फेंक दिया और काम हो गया। प्रेमकी बात भी नहीं। मारवाड़ी समाजमें जो अनेक दोष हैं उनमें से यह भी एक है। इसीलिए इसकी थोड़ी बहुत चर्चा की है। आशा है विचारशील भाई-बहन इस पर विचार करके प्रकाश डालेंगे। [पूना

पहले अपना घर बनाइये!

श्री सुरेशजी राठी

युवकों को चाहिए कि वे सर्वप्रथम अपना ही घर सुधार कर समाजके सामने एक प्रभावशाली आदर्शके रूपमें उसे रखनेका प्रयत्न करें। मैं मानता हूं कि यह कार्य पवित्र होते हुए भी अत्यन्त कठिन है, लेकिन कुलका दीपक और समाजका आधारस्तम्भ युवक यदि दिलसे प्रयत्न करे तो उसके लिए यह असाध्य नहीं।

किसी भी राजस्थानी घरमें चले जाइए, प्रायः सभी जगह युवक आपको सुधारक विचारोंमें दिलचस्पी रखने वाले ही मिलेंगे, क्योंकि वे जानते हैं कि विवाह-शादियोंपर अनावश्यक रूपसे महज समाजमें अपनी धाक जमानेके लिए अन्धाधुन्ध खर्च करना निरर्थक है। और चाहे कितना भी खर्च किया जाय कुछ न कुछ तार-तम्य रह ही जाता है और वही अन्तमें हमारी निन्दाका विषय बन जाता है।

भारतकी आर्थिक दशा अच्छी नहीं। पेटकी ज्वाला शान्त करनेके लिए खून, चोरी, डाके और अपराधोंकी संख्या दिन-दिन बढ़ती जा रही है। फिर भी लाखों मनुष्य दिन-रात पेटका सवाल हल करनेके लिए इधर-उधर भटकते रहते हैं। यह समाजका एक दृश्य है।

एक दूसरा दृश्य भी है जहां केवल दो-एक दिनके शानदार जीमणके लिये हजारों रुपये स्वाहा कर दिये जाते हैं। दोनों दृश्योंमें कितना अन्तर है! दान-धर्मके नामपर श्राद्ध और मौसरमें यदि कभी कुछ दिया भी तो उससे ब्राह्मणोंकी अकर्मण्यता और आलस्य वृत्तिको बढ़ानेके सिवाय क्या लाभ होता है। दूसरेकी उदासीनता और निष्क्रियताको बल देना भी अपने आपमें पाप है। इस पापसे बचनेके लिए दोनों दृश्योंके बीच यदि सामंजस्य स्थापन की चेष्टा की जाय, यदि दोनोंके बीचका मार्ग खोजा जाय तो कहीं अच्छा हो। युवक लोग अब जानने लगे हैं कि सच्चा दान क्या है, सत्कार्य क्या है। प्रतिष्ठाका झूठा मोह निरर्थक है। सत्पात्रमें दान देना, असहायको सहारा देना, गरीबका पेट भरना और तन ढांपना यही सच्चे धर्म हैं। मिठाई-पूरी खिलाकर, दान-दक्षिणा देकर या पाखण्डियोंके लिए बड़ी-बड़ी धर्मशालाएं बनाकर समाजका भला नहीं किया जा सकता। भला है इसमें कि ऐसे उद्योग खोले जाएँ जहां गरीबों और बेकारोंको काम मिले, उन्हें आश्रय मिले।

समाजकी अभिशाप स्वरूप एक और कुप्रथा है। वह है वृद्ध विवाह-अनमेल विवाह। युवक इस प्रथाकी हीनता और जंगलीपनको भी समझ गये हैं। पचास बरसके बूढ़ेके हाथमें पन्द्रह बरसकी कन्या का हाथ थमा देना कितना पाप है यह वे समझ रहे हैं। चांदीके टुकड़ोंके बदले सुन्दरताको खरीदने की घातक प्रथा को अन्यायी वृद्धोंने जन्म दिया है। नतीजा होता है यह कि विधवाओंकी तादाद बढ़ती जाती है और उनकी कष्टभरी आहोंसे समाज कलंकित होता रहता है। युवक

(शेष पृष्ठ २४ के कालम १ पर)

प्रत्यक्ष कृति करो !

श्री परशुरामजी राठी

[श्री परशुरामजी राठी उन चन्द मूक कार्यकर्त्ताओंमें से हैं जिन्होंने अपना सारा जीवन देश और समाजकी भलाईके लिए अर्पण कर दिया है। श्री राठीजीसे माहेश्वरी समाज भलीभांति परिचित है ही। वे गत ७ सालसे सन्यस्त वृत्तिसे शोलापुर जिलेमें वैराग के पास एक छोटे-से देहातमें रहकर ग्रामीण समाजकी सेवामें रत हैं। अधिक तर वहांके देहातियोंमें शिक्षा, ग्राम सफाई, चरखा एवं ग्रामोद्योग का प्रसार और उनमें दवाई आदि बाटनेका काम करते हैं। 'माहेश्वरी' की ओरसे उन्हें कई बार अपने विचार समाजके सामने रखनेके लिए प्रार्थना की गयी थी जिसपर आपने यह विचार भेजे हैं।

मुझे 'राजस्थानी वीर' और 'माहेश्वरी' संपादकों की तरफसे आग्रह रहता है कि मैं कुछ लिखूं। मैं इन दोनों पत्रों को देखा करता हूं। उनमें विद्वान लेखकोंके लेख अच्छे आते हैं। नवीन २ अच्छे लेखक बढ़ रहे हैं। यह समाजकी उन्नतिके शुभ लक्षण हैं। पर्दा प्रथा, मौसर आदिके बारेमें कुछ प्रत्यक्ष कृति भी हो रही है। तब भी इस समयके क्रांति (दो बरसोंमें जर्मन राष्ट्रने क्या आश्चर्य कर दिखाया है!) युगमें मारवाड़ी समाजमें यह कार्य बिल्कुल अपर्याप्त होनेसे किसको संतोष होगा? मारवाड़ी समाजमें विवाहोंमें गहना, विदेशी कपड़ा, लड्डु-जलेबीके भोजन, बाग-बाड़ी आदिमें कितना फिजूल खर्चा हो रहा है। महिलाओंमें कितना अज्ञान भरा पड़ा है। छोटी २ रूढ़ियों (रास्तों पर गीत गाना, पतली २ फॅशनेबल ओढ़नी ओढ़कर मुख दिखाना, किन्तु घूंघट नहीं छोड़ना आदि) को भी छोड़नेका विचार नहीं आया। पुरुषोंमें विचार शक्ति बढ़ी है; किन्तु कृति करनेका धैर्य नहीं। बोलते हैं, क्या करनाजी, महिलाएं मानती नहीं। देहातियों (किसान, हरिजन) में शिक्षण न होनेसे रूढ़िके नामपर फिजूल खर्चा हो रहा है। वे लोग विवाहोंमें डेढ़ सौ-दो सौ रुपये खर्च करते हैं। इस खर्चेके लिये कर्ज लेते और सवायेके हिसाबसे व्याज देते हैं और डेढ़ गुना लौटानेके वचन पर अनाज साहुकारोंसे लेते हैं। तब मैं उनसे कहता हूं कि यह खर्च क्यों करते हो। विवाह दस बीस रुपयेमें कर लो। जब कहता हूं तब, मारवाड़ी समाज शिक्षित होकर भी पांच-पांच, दस-दस हजार रुपया विवाहोंमें खर्चा करता है, यह मनमें आते ही हृदय काँप उठता है। आज मज़दूर श्रम करके, पसीना बहाकर-रोजाना ढाई आना कमा पाता है और खेतोंमें श्रम करके तो यह मजूरी भी नहीं मिलती, ऐसी किसानों और मज़ूरोंकी हालत है। और उन्हींके पसीनेपर हमने धन कमाया है। हमने कभी भी धनके लिये पसीनेसे अपनी कमीज़को भिगोया नहीं। इस तरह पसीनेसे, श्रमसे पैदा होनेवाले धनको हम कैसी मूर्खतासे बरबाद कर रहे हैं, यह विचार जब मनमें आता है, तब मनकी क्या दुःखित स्थिति होती है यह शब्दोंसे लिख नहीं सकता। हम सनातन धर्मका दावा करनेवाले लोग यह विचार नहीं करते कि इस फिजूल खर्चेमें कितना महापाप भरा पड़ा है। पैसे २ के लिये लोग देशमें मोहताज हैं, नंगे और भूखे रहते हैं। मैं तो यह दावेके साथ कहूंगा कि जो आदमी, पैसा कहांपर, किस तरह, कितना खर्च करना चाहिए, देशकी हालत क्या है इसका विचार न करते हुए फिजूल पैसा बरबाद करता है, वह कितना भी धार्मिक आचरण करता हो, उसका आचरण अविचार मूलक अंधश्रद्धाका द्योतक व दांभिक ही समझा जायगा। मेरा यह स्पष्ट मत है कि पैसा खर्च करनेसे पहले विचार कर लेना यही महापुण्य कार्य है। सोचना चाहिए, मैं पाता क्या हूं, मैंने पानेके लिये कितना श्रम किया, सचाईसे पाया है या झूठसे। झूठके बहुत तरीके हैं। कोई अज्ञानी खुल्लम-खुल्ला झूठ बोलते हैं। कोई-कोई समझदार चालाकी या बुद्धिमत्तासे झूठ बोलकर धन कमाते हैं। देशके श्रमजिवियोंका गाढ़े श्रमका पैसा विदेशको भेजकर पापमय धन कमाते हैं। इस तरह जब प्रारम्भ से ही उन्होंने पापका रास्ता पकड़ा हुवा है तो आगे पुण्यका, खर्चेका रास्ता कहांसे सूझेगा। मैं यह भी मानता हूं कि पचानवे फीसदी व्यवसाय विदेशी शासनके कारण विवश होकर झूठ और फरेब से करने पड़ते हैं। यदि ऐसा होता है तो कमसे कम हम लोगोंको इस पापके लिये मनमें चिंतित और दुःखी होना चाहिये। फिजूल खर्ची करके झूठा बड़प्पन व मानपाने की आकांक्षा नहीं करनी चाहिये। और वही धन जनसेवा, देशसेवामें अर्थात महात्माजी जो विधायक मार्ग बता रहे हैं (चरखासंघ, हरिजनसंघ, वर्धा शिक्षण, ग्रामोद्योग संघ आदि) उसमें लगाकर उस पापका आंशिक प्रायश्चित्त करना चाहिये।

हमारा दूसरा सामाजिक कर्तव्य यह है कि जहां कहीं भी फिजूल खर्ची होती हो उसमें भाग न लें अर्थात् असहकार करें। उदाहरणार्थ लड्डु-जलेबीके मीठे भोजन पंचोंकी परवानगी लेकर किये जाते हैं। उस पंचायतीमें और भोजनमें हमें कभी भाग नहीं लेना चाहिये। फिजूल खर्चेके विवाहोंमें भी नहीं जाना चाहिये। मीठे भोजनका यह अल्प त्याग करना कोई मुश्किल बात नहीं। किन्तु बहुतसे अपनेको सुधारक कहनेवाले, और ऐसे लोग जो सुधारपर अच्छा विचार कर चुके हैं, खाली मुंहसे सुधार की बातें करते हैं, लेख लिखते हैं; किन्तु प्रत्यक्ष कृति नहीं करते। मैं इन्हीं सुधारक भाइयोंसे प्रार्थना करता हूं कि इतना छोटा-सा त्याग करनेका निश्चय वे ज़रूर करें। खाली बड़े २ विचारोंसे कुछ लाभ नहीं होगा। जो कुछ थोड़ी-बहुत बन सके उतनी कृति करो। बड़े २ विचारोंसे छोटी कृति ज्यादा महत्व रखती है। मैं आशा करता हूं कि सुधारक ऐसी कृति करनेका निश्चय करेंगे जब प्रत्यक्ष कृति करने। लगेंगे, जो अपनेको जंच गया, उसका अमल करने लगेंगे, तो मैं समझता हूं मारवाड़ी समाज शीघ्रतासे उन्नति कर सकेगा; और यही उन्नतिका सच्चा मार्ग है। नहीं तो, क्या पुराणमतवादी और क्या सुधारक दोनों ही समाजका सुधार नहीं कर सकेंगे। उन दोनोंको ही समाज की दयनीय स्थितिके लिये कोई चिंता नहीं है। इस लिये ऐसा न होकर सुधारक अपना कर्तव्य प्रत्यक्ष कृति करके पूरा करते रहेंगे तो मैं समझता हूं समाजमें क्रांति शीघ्र गतिसे होगी। और समाज सुधारका रास्ता, आदर्श लोगोंके सामने आयगा। यह क्रांतिका युग है। समय अनुकूल है। इसलिये सब सुधारकोंको मनकी दुर्बलताको, मोहको छोड़कर फिजूल खर्ची व अंधश्रद्धाकी समाज विघातक रूढ़ियोंसे असहकार करनेमें लग जाना चाहिये। असहकार, सत्याग्रहका शिक्षण महात्माजी आज बाईस बरससे दे रहे हैं। इस लिये असहकार, सत्याग्रहके बारेमें ज्यादा लिखनेकी आवश्यकता नहीं।

(पृष्ठ १० के कालम ३ का शेषांश)

सफलतामें उन्हें सन्देह हो किन्तु महात्माजीका जो व्यक्तित्व है उसमें वे सन्देह नहीं कर सकते। भारतकी आज की परिस्थितियोंमें बहुतसे लोग महात्माजीको बाद देकर एकदम आगे बढ़ जाना भलेही चाहें, पर वे यह जरूर स्वीकार करेंगे कि इस स्थितिमें आज जो वे पहुंच पाये हैं उसका श्रेय महात्माजीको है। उन्होंने सर्व प्रथम स्वाधीनताका स्वप्न देखा था और मुमकिन है यह स्वप्न उनके जीवनकालमें पूरा नहीं हो पाये पर उनके बाद आनेवाली सन्ततियां जरूर स्वाधीन होकर उनके इस स्वप्नको यथार्थ देखेंगी।

देशके प्राण राष्ट्रकी चिरसाधना विश्वकी वन्दनीय-महनीय विभूति महात्मा गांधी युग-युग जीए यह हमारी कामना है।

मि० एमरीका वक्तव्य

अभी हाल ही में पार्लमेंटमें एक प्रश्नका उत्तर देते हुए भारत सचिव मि. एमरीने कहा है कि ब्रिटिश सरकारको इस समय युद्धके लिए प्रात दिन लगभग १३० लाख पौण्ड खर्च करना पड़ रहा है। इस रकममें से वह भारतसे कुछ भी नहीं ले रहा। इसमें शक नहीं कि भारतसे ब्रिटिश सरकार क्या ले रही है इसका पता अन्य देशों की जनता को ठीक-ठीक नहीं लग सके परन्तु भारतमें युद्ध प्रचार विभाग जो कार्य कर रहा है और सरकार की तरफसे युद्ध फण्डमें रकमें इकट्ठी करनेके लिए जो अनेक समितियां व उपसमितियां बनी हैं और जनता पर इन रकमों को देनेके लिए जिस तरह से दबाव डाला जा रहा है वह मि० एमेरीके शब्दोंका उत्तर देनेके लिए काफी है। इस सम्बन्धमें पुर्दिलनगरके श्रीयुत यादरामजी जाखेटिया की कहानी "माहेश्वरी" में दी जा चुकी है जो इस प्रकार की आये दिन होने वाली घटनाओंका एक नमूना है। इस प्रकारकी घटनाएं नित्य कितनी घटती होंगी इसका कुछ ठिकाना नहीं। फिर भी मि. एमरीने निहायत सादगीसे मानों एकान्त निर्दोषितासे कहा है कि भारतसे युद्ध संचालनके लिए एक पाई भी नहीं ली जा रही।

वधुकी आवश्यकता

एक २४ वर्षीय सुंदर कुलीन स्वस्थ माहेश्वरी युवकके लिये गृहकार्यमें दक्ष सुयोग्य पढ़ी लिखी सुंदर एवं सुशील कन्याकी आवश्यकता है।

युवककी मासिक आय ५०) है। सोनी और चांडक खांपवाले पत्रव्यवहार न करें।

पत्रव्यवहार निम्न पतेसे करें।

वी. डी. राठी एंड सन्स,
हिंगणघांट, जिला वर्धा (सी. पी.)

वधूकी आवश्यकता

एक स्वस्थ, शिक्षित युवकके लिए जिसकी आयु २० वर्ष है, एक सुंदर, शिक्षित, कुलीन तथा गृहकार्यमें दक्ष वधू की आवश्यकता है। शारदा, मूंदड़ा लोया, गगगड़ खांपवाले पत्र-व्यवहार न करें।

पत्र व्यवहारका पता:—

लक्ष्मीनारायण शारदा
सेक्रेटरी-हरिजन हेन्डी-क्राफ्ट इन्स्टीट्यूट
२७ मेचीमेन मार्केट रोड, कराची।

हमारी सामाजिक समस्याएं

• श्री नारायणदासजी राठी •

अपनी सामाजिक समस्याओंका व्यापक दृष्टीकोणसे विचार करना आज हमारा कर्तव्य है। समाज सुधारकी भावनाके पीछे हमारा उद्देश्य सुंदर, सुसंस्कृत, प्रगतिशील समाजकी स्थापना है। जिसमें हमारी संस्कृतिका उत्तम आदर्श हो, जिसमें सत्य और सुंदर की झलक हो, जो हमारे जीवनको विकासमय बनाये, जो संसारमें सामाजिक जीवनका आदर्श उपस्थित करे। ऐसा समाज निर्माण करनेके लिए हमें अज्ञान, रूढ़ि, समयके फेर आदि कारणोंसे जो बातें अनुचित, असंगत और असामायिक हों, समाजको बाधा पहुँचाती हों या हमारे स्वतंत्र भावनाओंका उच्छेदन करना चाहती हों, उन सब का बिना किसी हिचकिचाहटके मूलोच्छेदन करना होगा। यह कार्य जितने अधिक साहस व शीघ्रताके साथ पूरा हो उतना ही अच्छा है।

समाजमें विद्याका प्रचार होनेसे समाजके दोष प्रायः आप ही सुधर जायेंगे ऐसा सुननेमें आता है। यह कथन सर्वथा ठीक है क्योंकि विद्वान मनुष्य अपने जाति भाइयोंमें सुबुद्धि और विद्याका प्रचार कर समाजके सब दोषोंको दूर करते हैं। लेकिन क्या जब तक विद्या का प्रचार न हो तबतक हमारा चुपचाप बैठे रहना ठीक होगा ? तबतक क्या हम समाजके विक्षिप्त बंधनमें जकड़े ही रहेंगे ? हमें आज अपने समाजमें विद्या प्रचार और समाज संगठनका कार्य एक साथ शुरू कर देना चाहिये। सामाजिक सुधारके लिये केवल विद्या ही नहीं बल्कि समाज संगठनकी भी ज़रूरत है। बिना इसके हमारी सामाजिक समस्याओंका हल होना कठिन है।

ऊपर जिस समाज की कल्पना की गई है इसके लिये हमें कई छोटे मोटे सुधार करनेकी ज़रूरत है और अज्ञानमूलक कुरीतियोंको दफ़नाने की ज़रूरत है। हमारे शास्त्रकारोंने भी समय समय पर देश, काल, परिस्थितिके अनुसार समाज व्यवस्थाके नियम बनाये हैं। अतः यह कहना कि हजारों वर्ष पहिले जो नियम बनाये गये थे वे ज्यों के त्यों आज भी उपयोगमें लाने चाहियें, हास्यास्पद होगा। संसार परिवर्तनशील है, समयका चक्र बड़ी तेज गतिसे चलता रहता है। अतः बुद्धिमानी इसीमें है कि देश, काल और परिस्थितिके अनुसार ही समाज–व्यवस्थाके नियम बनाये जावें।

इस लेख का उद्देश्य बाल, वृद्ध, अनमेल विवाह, औसर—मौसर, गन्दे गीत, फजूल खर्ची, कन्या विक्रय, परदाप्रथा, देहजप्रथा कृत्रिम शोक आदि कुरीतियों पर विस्तारपूर्वक विचार करना नहीं है। इन बातों की ओर तो ज़नता का ध्यान काफ़ी आकर्षित किया गया है। तथापि हमारा कर्तव्य है कि इन्हें जोर का आघात पहुँचायें ताकि समाज प्रगतिकी ओर तेजी के साथ कूच कर सके।

अब वह समय आ चुका है कि छोटे छोटे प्रश्नों में फंसे न रहकर हम व्यापक और महत्वके सामाजिक प्रश्नों में शक्ति लगावें। पर्दा-प्रथा, विधवा विवाह, अन्तर्जातीय विवाह, वैवाहिक समस्याएँ आदि प्रश्नों पर गम्भीरतासे विचार कर उनका हल निकालना चाहिये। हमारी सामाजिक समस्याओं को आज तीव्र गतिकी आवश्यकता हैं।

हमारे समाजमें विधवाओंका प्रश्न एक बड़ी जटिल समस्या है। संसारके सारे समाजोंकी अपेक्षा हिन्दू समाजमें विधवाओंका जीवन कठिन, भाररूप तथा अपमानजनक है। ऐसा कौन सहृदय व्यक्ति होगा, जिसका हृदय हमारे समाज की नन्हीं नन्हीं बाल विधवाओंके करुण क्रंदन को सुनकर न पिघलेगा ? इसलिये विधवाओंको पुनर्विवाह की इजाज़त देकर उनकी सुविधाओंकी ओर ध्यान देना आज हमारा कर्तव्य है। क्या हमारा समाज इस ओर ध्यान देगा ?

पर्दा प्रथाकी बुराइयोंको अब समाज अच्छी तरह समझ चुका है। तथापि आज उसमें वह दृढ़ता नहीं, जो समाज सुधार का मुख्य अंग है। इसके साथ वैवाहिक विषयोंके सम्बन्धमें हमें अपनी भावनाएँ सुधारनी होगी। वैवाहिक सम्बन्ध इस बन्धनमें बंधने वाले दो प्राणियों से मूल सम्बन्ध रखता है और उनका भावी जीवन इसी पर निर्भर रहता है। अतः वर वधूके चुनावमें हमें उन्हें स्वतंत्रता देनी चाहिए। मातापिता उन्हें योग्य सूचनाएँ कर सकते हैं, उनके अन्य पहलू उन्हें बता सकते हैं, पर उनकी इच्छाका दमन करना तो उचित नहीं है।

यह बात सभी जानते हैं कि, स्त्रियाँ समाज का अर्धांग और महत्वपूर्ण अंग है। उनके विकासके बिना समाजके उत्थान की कल्पना करना व्यर्थ है। समाजका वास्तविक सुधार स्त्रियों द्वारा हो सकता है। वे गृहदेवियाँ हैं, जिनके द्वारा बच्चों का चरित्र निर्माण होता है। किन्तु आज वे पुरुषोंकी गुलाम बनकर अशिक्षित और अज्ञान की जंजीरोंसे जकड़ी हुई हैं। स्त्री-शिक्षा, स्त्री सुधार आज हमारे सामाजिक सुधारों का मुख्य अंग होना चाहिये। हमारे समाज का ध्यान अब इन बातों की ओर आकर्षित हो रहा है। लेकिन उतना नहीं, जितना आकर्षित होना चाहिये।

(शेष पृष्ठ १७ के कालम ३ पर)

कमला मिल के कपड़े इस्तेमाल करें।

आर्टिफिशियल सिल्क ज्योर्जेट
साडियां साडी क्लाथ और
शर्टिंग कपड़ों के लिये
यह मिल अपनी
विशेषता
रखती
है

हेड आफिसः—
गोयनका हाउस
१४५, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट,
कलकत्ता

हर प्रकार की धोती, साडी,
कोरा लाँगक्लॉथ,
कोटिंग, केनवास,
सूसी, आदि
आदि

कमला मिल्स लिमिटेड
तुलसी पाइप रोड, परेल, बम्बई. टे. नं. ६००६४–६५
बिक्री-विभागः—

बम्बई : टे. नं. २६९४५
मूलजी जेठा मार्केट

कलकत्ता :
सूतापट्टी

सुधार कैसे हो

श्री दामोदरजी रावत

अभी तक राजस्थानी समाजकी बुरी रस्म रिवाजोंको मिटानेका जितना प्रयत्न किया गया है, उस अनुपातसे सफलता न प्राप्त हुई है, न हो रही है। समाजके प्रगमनशील नेताओंने, काफी प्रमाणमें, समय तथा धनको व्यय किया है और अभी भी प्रचुर मात्रामें इस दिशामें धन व्यय हो रहा है। फिर भी कोई कहने लायक कार्य होने नहीं पाया। इसका क्या कारण होना चाहिये। क्या सचमुच कोई बुराइयाँ हममें नहीं है, या हम (समाज) कुरूढियोंके इतने आदी हो गये हैं कि हमको इसका ज्ञान ही नहीं रहा। या समाजके नेताओंका प्रभाव ही समाज पर नहीं पड़ने पाता?

यह बात निर्विवाद सिद्ध है कि समाज इन सड़े गले रस्म रिवाजोंमें इतना फँस गया है, इतना पतित हो गया है कि समाजको इस बातका सचमुच ही भान नहीं रहा कि इसमें कोई बुराई है भी या नहीं। कीचड़में रहनेवाले कीड़ोंको उसीमें आनंद होता है और यदि उनको बाहर निकाला जाय तो शायद दुःख भी होता ही होगा। ठीक ऐसी ही दशा हमारी है। समाजके नायक हमें जगा रहे हैं फिर भी हम इस शोचनीय दशासे बेफिक्र होकर सो रहे हैं। ऐसी दशा तो समाजकी है। किन्तु इसकी दूसरी बाजू (Side) भी कम विचारणीय नहीं है। अक्सर समाजकी बुराइयोंकी तरफ ध्यान आकर्षित करानेवाला, या उनको मिटा देनेको कहनेवाला वर्ग सुधारक इस नामसे पुकारा जाता है। यह समाजका नेतृत्व करनेवाला वर्ग ही इस दिशामें प्रयत्न कर रहा है।

मेरे मनमें अक्सर यह विचार उठा करते हैं कि हम (सुधारक) समाज हित की बातें समाजके आगे रखते हैं और इसमें हमारा व्यक्तिगत कोई स्वार्थ न होते हुये भी समष्टि रूपमें समाज हमारी विचार धारा को अंगीकृत नहीं कर सका, क्या कारण होना चाहिये? क्या हमारा समाज इतना निकम्मा है कि अच्छी बातें बतलाते हुए भी नहीं मानता या फिर हममें ही दोष है।

यदि अनुभवोंका कुछ मूल्य है तो मेरी स्पष्ट राय है कि हममें दोष है और इसी कारणसे हमारा (सुधारकोंका) समाज पर कोई स्थायी प्रभाव नहीं पड़ता। एक कहावत है 'आप मिसरजी कातरा मारे दूसरोंको परमोद सिखावे' ठीक हम लोग ऐसी ही कार्य प्रणालीसे कार्य करते हैं। करीब १० वर्षोंसे, राजस्थान की प्रत्येक समाजिक हलचलोंसे मैं कुछ कुछ परिचित-सा होता आया हूं। इन दस वर्षोंके अनुभवोंके बादमें उपरोक्त निर्णयपर पहुंचा हूं। थोड़ी देरके लिये आप कल्पना कीजिये कि आप किसी सभामें औसर मौसरके खिलाफ पुरजोश व्याख्यान देते हैं और उसके थोड़े ही दिन बाद आपके यहां ही किसी की मृत्यु होती है और समाजके, बुजुर्गोंके, रिस्तेदारोंके, मित्रोंके, दबावसे या मृत व्यक्ति की इच्छासे आप मौसर (मृतक भोजन) करते हैं। ऐसी दशामें आपका समाज पर क्या प्रभाव पड़ेगा और आपका स्थान क्या रहेगा। समझ लीजिये मृतक भोजनके पश्चात् आप सभाओंमें अपने विचार प्रगट करना बंद भी कर दें इतना ही नहीं आपके यहां आकर दूसरा भाई औसरके खिलाफ कितना ही जोशीला भाषण दें, पर उस से समाज प्रभावित नहीं हो सकता।

अजमेर माहेश्वरी कार्यकर्ता सम्मेलनके अवसर पर समाजके कई नेताओंने भी ऐसे ही विचार प्रगट किये हैं। यहां पर मेरा उद्देश मेरे खुदके अनुभव प्रगट करनेका है जिससे नये कार्यकर्ता उनसे लाभ उठा सकें और समाज सुधारके पथ पर सच्ची मुसीबतें कौन-सी हैं और कौन खड़ी करता है इस बात का, उन्हें पूरा पूरा ज्ञान हो जाय। सबसे पहले मैं यहां पर औसर संबंधी अपने अनुभव प्रगट करता हूं। मेरा उद्देश किसी व्यक्तिपर छींटे उछालनेका नहीं है और न किसीको ऊंच नीच ही बतलानेका है।

आजसे ठीक १० साल पहले मलकापुरमें "मृत्युभोज-निवारक मंडलकी" स्थापना हुई थी। जहां तक मेरा अनुभव है भारत वर्षमें सबसे पहले सक्रिय कदम इस दिशामें मलकापुरसे ही उठाया गया था। हम लोग जहां पर मृत्यु-भोजन होता था वहां पर पिकेटिंगके मार्गका अनुसरण किया करते थे। मंडलकी स्थापना होनेके बाद दूसरा या तीसरा हमारा पिकेटिंग था। स्थापना होनेके बाद उस बिरादरीमें वह पिकेटिंगका पहला ही मौका था। हम लोगोंने जोर शोरसे पिकेटिंगका आयोजन किया था। उस बिरादरीके मौसर त्यागने वालोंकी सहियोंसे (गांवके तथा बाहरगांवके) रोज पत्रिकाएँ प्रसिद्ध की जाती थीं। बाहरसे भी पिकेटिंग करनेको कई सज्जन पधारे थे। मंडलके एक प्रमुख सभासदने जो हर समय सामाजिक पत्रोंमें लेख लिखा करते थे, व्याख्यान आदि भी दिया करते थे, हर सभा सोसाइटीमें प्रमुख भाग लिया करते थे अपने रिश्तेदारोंके दबावमें आकर एक पत्रक निकाला और गांवमें प्रसिद्ध किया कि मेरा मण्डलसे कोई संबंध नहीं है। ऐसी दशामें क्या हमारी हालत रही होगी। एक प्रसिद्ध माहेश्वरी सुधारक घराना है। तीन या चार भाई हैं, सभी सुधारक खयालातके हैं। एक भाई कुछ काल पूर्व एक सामाजिक पत्रके संपादक भी रह चुके हैं, उनके फोटो इत्यादि भी विशेषणोंसे युक्त प्रसिद्ध हो चुके हैं। एक या दो साल पहले की बात है उनके यहां किसीकी मृत्यु हुई। रिस्तेदारोंने दबाव डाला कि मौसर किया जावे। उन्होंने एक मध्यम मार्ग निकाल ही लिया। जो व्यक्ति हजारोंको सभा मँचसे उल्लू बना सकता हो उसके लिये मार्ग निकालना कौन-सी कठिन बात है। न सांप मरे न लाठी टूटे। मृत्यु भोजनको प्रेम भोजनका रूप दिया। न सुधारक नाराज न पुराने खयालातके लोग नाराज।

इस प्रेम भोजनकी पत्रिकाएँ छपाकर हर जगह भेजी गयीं। बड़े आदमी या नेता लोग तो ऐसे मार्ग ढूंढ सकते हैं लेकिन गरीब या मामूली आदमी कैसे और कौनसे मार्ग ढूंढें? उन्हें तो चक्कीमें पिसना ही पड़ता है। उनकी तो समाजके आगे चल ही नहीं सकती। इस संबंधमें और अधिक उदाहरण न देते हुए एक और उदाहरण देकर मैं मौसर संबंधी अपने अनुभवोंको समाप्त करूंगा।

पिछले जाड़ोंकी बात है। हमारी जातीके एक वयोवृद्ध धनवान व्यक्तिकी मृत्यु हुई। उनके सुपुत्र एक सुधारक खयालातके सज्जन हैं। अपने नगरके प्रमुख सुधारकोंमें वे गिने जाते हैं। सुधार कार्योंमें काफी आर्थिक सहायता भी दिया करते हैं। पिताजीके कट्टर पुराने विचारोंके होने के कारण वे खुलकर किसी सामाजिक हलचलमें भाग नहीं लिया करते थे और हर समय जैसे आज्ञाधारी पुत्र पिताकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं करता वैसा वे दिखावा किया करते थे। उनके पिताकी मृत्यु होने के बाद मौसर न करने के संबंधमें मैंने उनसे प्रार्थना की और लिखा, अब आपके पिताजी तो नहीं है आपको अपनी सुधारकताका परिचय देना चाहिये। मौसर में होने वाली धनराशिको आप उचित समझें तो समाज हितकारी कामों में लगायें। उनके उत्तर की कुछ पंक्तियाँ नीचे दे रहा हूं:—

"आपसे विशेष प्रार्थना यह करनी है कि आपने मौसर सरीखी घृणित तथा नींदनीय प्रथाको बंद करने की शुभ सलाह दी इस लिये आपको हार्दिक धन्यवाद है। आपके विचारोंसे सहमत ही क्यों, उन विचारोंके समर्थकोंमें से मैं भी एक हूं। लेकिन मैं पूज्य पिताजी की इच्छासे ही यह कार्य कर रहा हूं इसका मुझे अत्यंत खेद है। मैं सार्वजनिक कार्योंमें यथा शक्ति दूंगा ही। आपकी शुभ सम्मतिके लिये फिरसे धन्यवाद।"

यह है बड़ों का हाल, ऐसी हालतमें हम समाजके आगे किस मुँहसे आयें! क्या हमारी खिल्लियाँ नहीं उड़ेंगी? जिनकी परिस्थिति अनुकूल है वे लोग ही ऐसा करें तो फिर सामान्य जीविकावालों का क्या हाल होगा? सामान्य लोगोंको तो समाज की रायमें ही राय मिलानी पड़ती है नहीं तो विषम परिस्थितिका सामना करना पड़ता है। यह तो वही जान सकते हैं जिनकी आर्थिक परिस्थिति अच्छी नहीं है, और समाज सुधारकी बातें करते हैं या सचमुचमें सुधारक हैं, उनकी कठनाइयां सब अनुकूल परिस्थिति वाले नहीं जान सकते। इस लिये हर एक जाति नेताको खूब सोच समझकर ही कदम उठाना चाहिये नहीं तो उनकी सिर्फ हंसी ही न होगी बल्कि उनके समर्थकों की पूरी पूरी फजीहत होगी।

राजस्थानी संसार

मौसर करना पाप है

इस बातसे तो कोई भी सज्जन इन्कार नहीं कर सकता कि घरका कोई व्यक्ति मर जानेके बाद ११ दिनतक रुदन-विलाप करके १२ वें दिन उसके घरवाले सब अमीर गरीब ब्राह्मणोंको बुलाकर उन्हें मिष्टान्न भोजन कराकर बादमें २ रुपयेसे ४ आने तक दक्षिणा पल्लेमें बांधकर और फिर जातिके सब भाइयोंको गरमागरम जलेबी या नुक्ती खिलाकर पुण्यकी जो आशा करते हैं, वह एकदम व्यर्थ है। व्यर्थ ही नहीं, बल्कि पाप और हमारी मानवताका दिवाला है। पुण्य अपात्रको और इस शोक विलापके समय मिष्टान्न भोजन देनेसे नहीं, बल्कि सुपात्रको दान देनेसे ही हो सकता है।

अभी इन्हीं दिनों नासिकके प्रख्यात व्यापारी श्री लछमनदासजी लढ्ढ़ने अपनी गृहलक्ष्मीके अपना फलता-फूलता घर छोड़कर दिवंगत हो जानेपर मौसर करके पुण्यका अपने लिए द्वार खोल दिया! उन्होंने अपनी ३५ वर्षीया गृहलक्ष्मीके निधनपर उसका मौसर किया है। जीमन नुक्ती का था। सभी जाति बान्धव उपस्थित थे, जिनमें सर्वश्री श्रीकृष्णजी राठी, कुन्दनमलजी मून्धड़ा, लक्ष्मीनारायणजी व गुलाबचंदजी जाजू आदि सज्जन उपस्थित थे। सुना है कि इस जीमनमें स्थानीय राजस्थानी मण्डलके प्रमुख कार्यकर्ता श्री शिवनारायणजी राठी और श्री कन्हैयालालजी लड्ढा भी उपस्थित थे। यदि यह बात सच है तो हम अपनेको सुधारवादी कहनेवालोंके के लिए यह नितान्त लज्जास्पद होगा।

श्रीमान् राकाजीने संगठन, सुशिक्षा और कुरीतियोंके अपाकरणके उद्देश्यसे ही इस मण्डलकी स्थापना करीब ३ वर्ष पूर्व की थी। मण्डलने अपने सेवा कार्यका तीसरा वर्ष शुरू कर दिया है। अब सवाल यह है कि क्या मण्डल अपने तीन वर्षके प्रयत्नसे भी अपने दो लालोंको इस मौसरके जीमणके प्रलोभनसे परावृत्त नहीं कर सका?

समाज सुधारका कार्य सिर्फ़ लेख लिखने या लेक्चरबाजीसे ही नहीं होता। यह कार्य अत्यन्त कठिन है। हमें सोच समझकर ही इसके मार्गपर चलना होगा। श्री लड्ढाजी व राठीजी मेरे सुहृद् हैं और सौहार्दसे ही मैंने उनके बारेमें यह बात लिखी है। मुझे विश्वास है कि भविष्यमें वे इस अनुचित कार्यमें सम्मिलित नहीं होंगे।

सुरेश राठी, नासिक

पंच और पंचायत

★

श्री सीतारामजी चितलांगिया

समाजकी व्यवस्था कायम रखनेके अभिप्रायसे पंचों तथा पंचायतोंकी स्थापना हुई। समाजके निश्चित नियमोंके विरुद्ध यदि कहीं कोई झगड़ा-टन्टा खड़ा होता, कोई व्यक्ति धार्मिक सिद्धान्तोंको तोड़कर उच्छृंखलता फैलानेका दुःसाहस करता या जमीन जायदादके बारेमें आपसी मनमुटाव फैलानेकी कोई सम्भावना हुई तो ये सब मुआमले पंचायतोंमें पंचोंके सामने पेश किये जाते थे। मुद्दई और मुद्दायला अपनी अपनी तरफसे दो-दो पंच मुकर्रर करते। फिर एक बुद्धिमान् अनुभवी और समाज हितैषी पुरुषको दोनों पक्षवालों की रायसे मुखिया या सरपंच बनाया जाता था। ये पांच पुरुष 'पंच' कहलाते। वे अपनी रायसे जो फैसला करते थे वह दूधका दूध और पानी का पानीं होता। वह निष्पक्ष फैसला सर्वमान्य होता। वह जमाना था जब पंच अपनी कर्तव्य निष्ठा को समझते थे और समाजके लोग उनका आदर करते थे। 'पांच पंच तहां परमेश्वर' यह कहावत स्पष्ट बतलाती है कि उन श्रेष्ठ पंचोंमें और उनकी सचाईमें जनताका और समाजका कितना दृढ़ विश्वास था। जिस प्रकार माली वृक्षोंको खाद पानी देकर उनकी रखवाली करके बागको हरा भरा बनाता है, जिस प्रकार पिता अपनी संतानको स्वयं सैकड़ों मुसीबतें झेल कर भी सुयोग्य सदाचारी और संसार यात्रामें सफलता प्राप्त करने योग्य बनाता है, जिस प्रकार राजा अपनी प्रजापर प्रेम करता है उसी प्रकार प्राचीन कालमें पंच लोग समाजकी बागडोर अपने हाथमें सम्हालते थे। वे समाजसे प्रेम करते और समाजके हितचिंतक होते थे। जैसे कर्णधार नावको समुद्री तूफानों, भयंकर जीवजंतुओं, लहरों और पानीके थपेड़ोंसे बचाता हुवा किनारे ले जाता है उसी प्रकार समाजके कर्णधार समाजको कामियोंकी काम ज्वालाओंसे, विधर्मियोंके आक्रमणोंसे, गरीबोंको धनवानोंकी लपेटसे बचाते हुये, समयानुसार सामाजिक नियमोंमें हेरफेर करते हुए उचित न्याय करके समाजका उद्धार करते थे। समाज उन्हें अपना सर्वस्व समझता था और वे समाजको अपना सर्वस्व समझते थे।

किसी गांवमें एक गरीब हिंदु अपनी एक विवाह योग्य कन्या को किसी बूढ़के हाथ बेचकर काफी रकम एंठना चाहता था। पर कोई आंखका अंधा और गांठका पूरा न मिलने के कारण कन्याका विवाह उचित समय तक न हो सका।

कन्या सयानी व चतुर थी। उसने जब अपने पिताकी नीयत कन्या विक्रय की देखी तो किसीसे कुछ न कहा और अपने अनुरूप वर तलाश करके गांधर्व विवाह कर लिया। कुछ दिनों तक यह बात गुप्त रही किन्तु जब गांधर्व विवाहका फल प्रगट हुआ तब समाजके लोगोंने पंचायत बुलाई। किसीने कहा, लड़की बदमाश है, इसने कुल को दाग लगा दिया। किसीने कहा, लड़का नालायक है, इसे जातसे निकाल दो, इसका बहिष्कार करो। इसी तरह किसीने कुछ कहा और किसीने कुछ। लेकिन पंचोने लड़कीसे सारा हाल पूछा और जब उन्हें असलीयत मालूम हुई तब सरपंचने फैसला दिया कि लड़की विवाह योग्य है वह आगा-पीछा समझती है। अगर उसने गांधर्व विवाह कर लिया है तो कोई अनुचित नहीं किया। लड़का अथवा लड़की जाति च्युत नहीं किये जा सकते क्योंकि यह धर्म और समाज दोनोंको कालिमा लगाने वाली बात है। लड़का और लड़कीका जो गांधर्व विवाह हो चुका है वह हमें 'खुलासा

(शेष पृष्ठ २४ कालम १ पर)

यह खून की प्यास क्यों?

मानव-मानव के खूनका प्यासा हो उठा है। दुनियामें भीषण रक्तपात मचा हुआ है। एक राष्ट्रके नागरिक दूसरे राष्ट्रके नागरिकोंका खून बहानेमें अपना गौरव समझते हैं। एक धर्मको मानने वाले लोग दूसरे मज़हबको मानने वाले अपने ही समान लोगोंकी जान लेना बहादुरी समझते हैं। भाई, भाई के खूनका प्यासा है। पड़ौसी, पड़ौसी की जान लेनेपर उतारू है। कल तक के मित्र आजके दुश्मन हैं।

एक ओर रणचण्डीका भीषण ताण्डव हो रहा है। एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्रको निगल जाना चाहता है। एक राष्ट्रका निर्दोष एवं निरीह मूक किसान दूसरे राष्ट्रके उतने ही निर्दोष, निरीह एवं मूक श्रमजीविकी हत्या करनेमें जरा भी नहीं हिचकिचाता। दूसरी ओर एक ही राष्ट्रके नागरिक महज़ मज़हबके नामपर पारस्परिक ईर्ष्या, द्वेष एवं फूटकी भावनासे उत्प्रेरित किए जाकर एक दूसरेकी जान ले रहे हैं।

संहारके भीषण दृश्य आए दिन देखने को मिलते हैं। आदमीके जान मालकी कोई हिफ़ाजत नहीं। मनुष्य जीवनकी कोई कीमत नहीं—मानवताका कोई मूल्य नहीं। मानव प्राणोंसे फाग खेलना एक मामूली बात हो गई है। जीवन असुरक्षित हो उठा है। मानव कराह उठा है। मानवता सिहर उठी है।

एक भयंकर आग अपनी लपलपाती ज्वालाओंसे संसारकी तमाम प्रगतिशील (?) सभ्यता संस्कृति, ज्ञानविद्या एवं साहित्य और जीवनके उपकरणोंको निगलती जा रही है।

जीवनमें मृत्यका उद्घोष हो रहा है। मृत्यु जीवन पर विजय पा रही है।

एक प्रश्न उठता है, एक आवाज़ आती है, एक विचार दिमागको परेशान करता है कि यह मानवताका संहार क्यों? यह खूनकी प्यास क्यों?

इस प्रश्नका उत्तर अधिक खोजनेकी आवश्यकता नहीं है। वह तो स्पष्ट है। आजकी समाज व्यवस्थाका असमानता एवं पारस्परिक शोषणकी नींवपर आधारित होना। संसारके कुछ मनुष्य एक बहुत बड़े मानव समुदायका शोषण कर रहे हैं। मनुष्यकी कीमत मनुष्यके रूपमें नहीं है। उसकी कीमत तो आंकी जाती है उसके श्रमके रूपमें। उसके श्रमका अधिकसे अधिक शोषण किया जाता है और उसे कमसे कम पारिश्रमिक प्राप्त होता है।

वह अधभूखा, अधनंगा तथा अशिक्षित रहनेके लिए बाध्य किया गया है। वह अपरिवर्तनवादी है, रूढ़िग्रस्त है। कठमुल्लापन एवं अन्धश्रद्धा उसमें कूट कूट कर भरी है।

उच्छोषित और अज्ञान मानव—अपनी वासनाओं एवं क्षणिक भावनाओंका गुलाम मानव—क्या समझेगा—समानता, बन्धुत्व और जनतंत्रके आदर्शों को? तहज़ीबके वह क्या मतलब लगाएगा, और क्या समझेगा सब धर्मोंकी समानताके मूल सिध्दान्तोंको? उसके लिए सत्य, अहिंसा आदि विचार लीडराने कौम एवं मुल्ला मौलवियों तथा धर्मगुरुओंके मुंहसे सुननेके काम के हैं। मानवता का वह क्या मूल्य आंक सकता है?

उसे तो सारी चिन्ता है पेट भर रोटियों की, तन ढकनेके लिए थोड़े से कपड़ोंकी—रात को सोने के लिए थोड़ी सी ज़मीन की। जब उसे ये सब पूरी तरह मयस्सर नहीं हैं तो क्या करे वह इन लुभानेवाले बड़े बड़े लोगोंके लिए ही सम्भवतः बनाए गए सभ्यता और संस्कृतिके उपकरणों का। इस तरह अज्ञान एवं उच्छोषित है वह तो!

और जब शोषक वर्ग के लोग अपने स्वार्थों पर आक्रमण होता देखकर आवाज़ बुलन्द करते हैं-जन तंत्र खतरेमें है-देश खतरेमें है-मज़हब खतरेमें है-तो उसे भी अनुभव करना पड़ता है-कुछ तो क्षणिक भावनाके आवेश के कारण और कुछ चमकते हुए चांदीके टुकड़ोंके लिए-जनतंत्र खतरेमें है-देश खतरेमें है-मज़हब खतरेमें है। वह तो ठहरा पेट का गुलाम-अपने आपको-अपने मनुष्यत्व को बेचने वाला-कुछ चांदीके टुकड़ों की आवश्यकता उसे बिक जानेके लिए-मृत्युका आह्वान करनेके लिए बाधित करती है। वह और भी ज़ोरोंसे चिल्ला उठता है-जनतंत्र खतरेमें है-देश खतरेमें है-मज़हब खतरेमें है। इस प्रकार मानव अपने ही समान दूसरे मानवके खून का प्यासा हो जाता है-एक राष्ट्र का गरीब किसान दूसरे राष्ट्रके मज़दूर की हत्या कर डालता है-एक धर्मको मानने वाला दूसरे मज़हब को मानने वाले का गला घोंट डालता है। यह खून की प्यास?

मगनलाल कोठारी बी. ए.

सुधारकों के प्रति

चारों ओरसे यही आवाज़ आती है कि समय बड़ा खराब है; रोजगार मन्दा है; कमाई इतनी है कि दुकानका खर्च निकालनेमें भी कठिनाई हो रही है। यही हालत सब लोगों की है; पर हमारे समाज की अवस्था विशेष चिन्ताजनक है। न शिल्प उद्योग रहे, न स्वतंत्र रोजगार ही। शराफी धंधा था, वह भी अब न रहा। रोज़गारके अभावमें अथवा बिना परिश्रम ही धन बटोरने की लालसासे सट्टे फाटके की शरण ली गई। जिस चीज़का फाटका किया जाय वह चीज़ साथ रहे तब तो कमाई की आशा की भी जा सकती है, पर जिस चीज़ को जानते नहीं उस पर हज़ारों का दाव रख देते हैं। इससे जो हालत हुई है वह सबको भली प्रकार ज्ञात है।

इस प्रकारकी संकटापन्न अवस्थामें भी दिन प्रतिदिन सामाजिक खर्चोंकी वृद्धि होती जा रही है। यह कितने आश्चर्य और क्षोभका विषय है। विवाहशादीके मौकों पर फ़िज़ूल ख़र्ची एवं कुप्रथाएँ इतनी बढ़ गई हैं कि उनकी गणना करना कठिन हैं। आये हुए सम्बन्धियोंकी जहां पान सुपारीसे ख़ातिर की जाती थी वहां पर उन्हें ठण्डाई, रबड़ी आदि नाना प्रकारके मिष्टान्न खिलाये जाते हैं। कन्या पक्षवालों को वर पक्षवालोंकी अथवा वर पक्षवालोंको कन्या पक्ष वालोंकी भेंट स्वरूप विवाहके पहिले कुछ न कुछ पेशगी दिये या ठहराव किये बिना योग्य वर अथवा वधू नहीं मिलते।

क्या विवाह आडम्बर शून्य नहीं हो सकता? क्या विवाह दिखावेकी चीज़ है? वह तो दो हृदयोंके मधुर मिलनका एक सामाजिक संस्कार मात्र है। उसमें फिज़ूल ख़र्चीका बोझ बढ़ा कर जीवन भर कर्ज़ेके भारसे लदे रहना और चिन्ता-चितामें जलकर राख हो जाना भला कहां की बुद्धिमानी है। विवाहके समय लड़कीके माता पिताको जिन तकलीफों और कठिनाइयोंका सामना करना पड़ता है वह कदापि मुनासिब नहीं कहीं जा सकतीं। इसी तरह और भी कितनी बुराइयां, औसर-मौसर, परदा, अनमेल विवाह, कन्या-विक्रय, बाल-विवाह, गहनोंकी अधिकता, स्त्रियोंमें अशिक्षा, चूड़ा, बाल-विधवाओंका कन्दन, बेकारी आदि-इस समाजमें मौज़ूद हैं, जिनका उल्लेख इस छोटेसे लेखमें नहीं किया जा सकता।

युवक समाज के जीवन हैं। समाजके उत्थान और पतनकी जिम्मेदारी युवकों पर ही होती है। अगर युवक साहसी और प्रगतिशील हैं तो समाज भी साहसी और प्रगतिशील होता है। इसके विपरीत युवक अगर कायर हैं तो समाज भी पतनके गर्तमें जा पड़ता है और दुनिया उसको अपमानकी नज़रसे देखती है। अतएव युवक ही सब कुछ हैं और जो सर्वस्व है उसीके सामने सुख और दुःख की कहानी कही जाती है।

"दुनियामें समाज सेवाके मौलिक सिद्धान्त प्रायः एकसे हैं। उसमें कोई खास फर्क नहीं। उन समस्त कीटाणुओंमें आपसी सहयोग होता है जो समाजोंकी जड़ोंको खोखली किया करते हैं। इसलिये, उन ज़हरीले कीड़ोंका नाश करने वालोंमें आपसी सहयोग होना चाहिये।" "संगठनसे हम उठते हैं और फूटसे हम गिरते हैं। फिर संगठनके इस महामन्त्रको अपनानेके लिये हम तैयार नहीं होते। कैसी विडम्बना है।"

युवकोंका मत

अधिकांश युवकोंको इस बात पर यह कहनेका मौका मिल सकता है कि समाजके कर्णधार वे नहीं बल्कि उनके बड़े बुजुर्ग हैं। थोड़ी देरके लिये हम यह मान लेते हैं कि समाज की कुञ्जी बुजुर्गों के हाथ में है, लेकिन बड़े अदब के साथ हम यह पूछ सकते हैं कि बुजुर्गों के कृत्यों का परिणाम आगे चलकर किन्हें भुगतना पड़ेगा? उसका परिणाम युवकों को ही भोगना पड़ेगा और उनके बाद फिर उन्हें जो फूल की तरह कोमल बालक हैं और जिनके भावी-पथ के निर्माण का उत्तरदायित्व हम पर है। इसलिये बुजुर्गों पर दोषारोपण कर देने मात्रसे हमें अपनी ज़िम्मेदारियों से छुटकारा नहीं मिल सकता।

माहेश्वरी जाति कैसे बनी, यह सब समझते हैं। इसकी प्रचलित कथा की चर्चा मुझे नहीं करनी है। मैं उसे रूपक मानता हूं कि हमारे पूर्वज राजपूत थे और फिर वैश्य हुए। संभव है उस समय बुद्ध धर्म या जैन धर्म का प्रभाव पड़ा हो पर यह बात निश्चित है कि हमने वैश्यकर्म स्वीकार किया और इस प्रकार यह परिवर्तन हुआ। ऐसा ही कुछ हुआ है। लेकिन जैसे भी यह घटना घटी हो हमारे पूर्वजोंका यह काम बहुत हिम्मतका था। जहां हम छोटी २ बातोंमें परिवर्तन करनेसे घबराते हैं, वहां एक वर्णको छोड़कर दूसरे वर्णको ग्रहण करना कितना कठिन कार्य था। यह सहजमें ही समझा जा सकता है। आगे का इतिहास हमको यह बताता है कि उसके बाद भी समय-समयपर बहुतसी क्षत्रिय जातियां हममें आकर मिलीं। यह विलक्षण शक्ति उस समय हमारे भीतर थी और हमारे पूर्वजोंने इस शक्तिके बलपर बड़े काम किये, सामाजिक कुरीतियोंको दूर करनेके लिये संगठन बनाये।

सुधार की बातें समय-समयपर हुआ करती हैं। उनके लिये योजनाओंके मनसूबे भी बांधे जाते हैं। पर दुःख की बात तो यह है कि जब घरमें कोई काम आकर पड़ता है। तो वे सारी बातें काफुर हो जाती हैं। अश्लील गीत, फिज़ूल खर्ची एवं दिखावे के आडम्बरोंमें पड़कर समझदार व्यक्ति भी लक्ष्यभ्रष्ट हो जाते हैं। अपनी नाक रखनेके भारमें एवं गरीबी प्रकट न करने की विडम्बनासे भीतर ही भीतर तकलीफें सहते हुए भी बाहरी आडम्बरोंमें धनी लोगोंसे कम नहीं रहते। यदि मध्यवृत्तिके लोग धनवानों की देखा देखी न करें और साहसकर कुप्रथाओंको तोड़नेके लिये आगे बढ़ें तो उनके धन तथा समय की बचत हो और समाज का उपकार हो।

युवकों और युवतियों का कर्त्तव्य है कि वे अपने समाजको प्रकाश प्रदान करें। युवकों को यह प्रवृत्ति छोड़ देनी चाहिये कि वे कमजोर हैं-असमर्थ हैं। अगर वे अपने को पहचान लें तो फिर उनके मार्ग को कोई अवरुद्ध नहीं कर सकता। उनको अपनी शक्ति, क्षमता और सुअवसरों पर विश्वास करना चाहिये जिसके द्वारा वे आश्चर्य जनक कार्य कर सकते हैं। साथही साथ क्रियाशील समझदार व्यक्तियों और नवयुवकों का यह कर्त्तव्य होना चाहिये कि जिस किसीके यहां शादी हो अथवा मौसर हो उन्हें रोकनेके लिये प्रोत्साहित करें एवं साहसी बनावें।

बी. काम. फाइनल, **जेठानन्द शारदा**
इलाहाबाद विश्वविद्यालय.

(पृष्ठ १४ का शेषांश)

अन्तमें यह कहना आवश्यक है कि समाज सेवा, सर्व साधारण जनताकी सेवा व उनके प्रति सद्भाव हमारे कर्तव्य हुए बिना हमारी सामाजिक समस्यायें ज्यों की त्यों बनी रहेंगी। हमें समाजको अपना मुक्त सहयोग देना चाहिये, सामाजिक कार्य व्यापक ढंगसे संपन्न करने चाहिये। अपने विचारोंका तथा संस्थाओं का संकुचित रूप मिटाकर उन्हें सर्व साधारण के लाभकी वस्तु बनानी चाहिये। One for all and all for one यह हमारा ध्येय हो, परोपकार ही हमारा कर्तव्य हो और विद्या हमारा बल हो। हमारा दृष्टि बिन्दु सदा सहानुभूतिपूर्ण, सद्भावमय और सेवा लिप्त रहना चाहिये। एकमात्र इसी दृष्टिकोणको अपनानेमें हमारे जीवनकी सार्थकता है और हमारे यही विचार हमारे सामाजिक सुधारोंकी नींव हैं।

[वर्मा

अजमेरके माहेश्वरी भाइयोंसे अपील

● श्री अमरचन्द तापड़िया ●

सन् १९३४ में जब हमारे शहरमें माहेश्वरी महासभाका एकादश अधिवेशन हुआ था, उस समय श्रीयुत बाबू गोविन्ददासजी मालपाणी एम. एल. ए. के सभापतित्वमें यह प्रस्ताव पास हुआ था कि राजस्थानमें एक विश्वविद्यालयकी आवश्यकता है अतः उसे आरम्भ करनेका प्रयत्न किया जाय। परन्तु ज्ञात होता है उस तरफ हमारे नेतागणका ध्यान बहुत कम गया है और इस ओर बहुत कम प्रयत्न किया गया है। एक विश्वविद्यालयके लिये तो बहुत कठिन, अथक प्रयत्न तथा प्रचुर धनकी आवश्यता होती है, परन्तु उसकी सूक्ष्मरूप एक पाठशाला अथवा स्कूलके लिये न तो प्रचुर सम्पत्तिकी ही आवश्यता है और न कठिन प्रयत्न की ही जरूरत है! यदि हमारी जाति के धनी मानी लोग इस ओर तनिक भी ध्यान दें तो माहेश्वरी जाति की एक पाठशाला चाहे वह आरम्भमें अंग्रेजी की पांचवी कक्षा तक ही क्यों न हो, चलानेमें कुछभी कठिनाई न हो। हमारी जाति विद्याप्रेमियोंसे खाली नहीं है परन्तु वे उत्साही कार्यकर्त्ता धनाभावके कारण अपने इस पाठशाला चलानेके इरादेको कार्य रूपमें परिणित नहीं कर सकते।

हमारे इस अजमेर नगरमें आज अग्रवाल, ओसवाल तथा जैन जातियोंके औषधालय, पाठशाला तथा हाईस्कूल इत्यादि विद्यमान हैं, परन्तु अत्यंत लज्जा तथा खेद की बात है कि हमारे इस माहेश्वरी समाजकी कोई ऐसी नाम लेने योग्य संस्था अजमेरमें विद्यमान नहीं है, गोकि हमारी माहेश्वरी जातिके यहांपर लगभग २५० कुटुम्ब हैं और उनमें कई लक्षाधीश तथा श्री सम्पन्न हैं और यदि चाहें तो अपने दानसे पाठशाला तथा औषधालय दोनों संस्थायें सुविधा पूर्वक चला सकते हैं! यदि किसी तरह यहां पर माहेश्वरी स्कूल आरम्भ हो जाय और उसके लिये थोड़ा सा धन एकत्रित हो जाय तब तो फिर बाहर से भी माहेश्वरी जातिके धनी मानी तथा विद्याप्रेमियोंसे स्कूलके लिये धन एकत्रित किया जा सकता है तथा एज्यूकेशन डिपार्टमेंट से सहायताके लिये प्रार्थना की जा सकती है। मुख्य कठिनाई तो स्कूलके आरम्भ करने की है। वह कठिनाई केवल धनी मानी लोग ही अपनी उदारता से मिटा सकते हैं। आशा है अजमेरके माहेश्वरी भाई मेरी इस अपील पर ध्यान देंगे और इसे व्यर्थ न जाने देंगे!

श्रीनिवास कॉटन मिल्स लिमिटेड

बंबई

अपने कलापूर्ण, सुन्दर और टिकाऊ कपड़े के लिये मशहूर है।

★

ट्रेड नेम्स

नरेन्द्र गोल्डन प्लम एस. एन. सी. फॉक्स ग्लोब नगेन्द्र	धुला लांग क्लॉथ
के के के के के ओ ओ ओ ओ ओ हिन्दनो ताज असली फूल बनर्जी यू. पी. एक्सप्रेस सी. पी. एक्सप्रेस मारवाड़ एक्सप्रेस	धुली धोतियां व साड़ियां
डायमण्ड हाल डायमण्ड चेन डायमण्ड वैटरी बंगाल फैशन प्रोमिनेंट लीडर प्रोमिनेंट फैशन	धुली या कोरी पॉपलीन
फ्लाइंग मून मालिनी मिस बिब्बो	चेक वायल

आदि आदि

★

इस मिल म सब प्रकार का धुला व कोरा कपड़ा—लांग क्लाथ, शर्टिंग, वायल, धोतियां, साड़ियां, मलमल, छपी हुई–छींट, वायल, बोस्की आदि कपड़ा विविध डिज़ाइनों और रंगों में तैयार होता है।

यदि आप उत्तम-सुन्दर-कलापूर्ण, टिकाऊ तथा सस्ता कपड़ा चाहते हैं, तो हमारे मिल के बने हुये कपड़ों से आप को पूर्ण संतोष मिल सकेगा–क्योंकि यह मिल भारतकी सामाजिक, आर्थिक अवस्था, तथा सर्वसाधारण की रुचि को लक्ष्य में रखकर ही सब प्रकार के वस्त्र तयार करती है।

बाज़ार में कपड़ा खरीदते समय इसी मिल का कपड़ा खरीदिये।

इस मिल का बना कपड़ा इस्तेमाल कर आप निश्चय ही प्रसन्न होंगे।

★

ट्रेड मार्क

- महाल
- पेटल व्यूटी
- गोल्डन प्लम
- फॉक्स ग्लोब
- श्रीरामपंचायतन
- चार्मिंग व्यूटी
- माधुरी
- मुरली
- ईस्टर्न व्यूटी
- सेक्रेड फ्लूट
- श्रीराम

★

—हमारी विशेषता—

रेडियोगर्ल और नरेन्द्र कालिटी का धुला लांगक्लाथ—इसे बरतकर आप अवश्य सन्तुष्ट और प्रसन्न होंगे।

— हमारे सेलिंग एजेण्ट —

बम्बई

दी बम्बई एजन्सी कम्पनी लिमिटेड
सर विट्ठलदास गली,
मूलजी जेठा मार्केट, बम्बई नं० १

कलकत्ता

मंगनीराम रामकुमार
६५ बोंसतल्ला स्ट्रीट
कलकत्ता

कानपुर

ज्वालाप्रसाद राधाकिशन,
काह्नू कोठी, कानपुर

अमृतसर

शामदास कपूर एण्ड कम्पनी
कटरा अहलुवाल
अमृतसर

दिल्ली

हनुमानप्रसाद धूत एण्ड कम्पनी
कटरा नवाब
देहली

पत्र-व्यवहार का पताः—

श्रीनिवास कॉटन मिल्स लिमिटेड

डिलाइल रोड, बंम्बई नं १३.

राजस्थानी संसार

संयुक्त प्रान्तके माहेश्वरी समाजमें सनसनी

युवक द्वारा पत्नीकी गुप्त हत्या ?

[हमारे पास ता. १३ सितंबर सन् १९४१ को माहेश्वरी युवकमंडल अलीगढ़की ओरसे "माहेश्वरी समाजकी सेवामें आवश्यक निवेदन' शीर्षक एक पत्रिका आयी थी। इस पत्रिकामें ता. ७-९-४१ की उक्त मंडलकी आवश्यक बैठकमें श्री. मोतीलालजी राठी (सहारनपुर) की सुपुत्री श्रीमती राजकुँवरीदेवीके—जो कि कासगंज निवासी श्री. किशनलालजी टावरी की धर्मपत्नी थीं—संदेह जनक देहावसानके संबंधमें निन्दा व चेतावनी सूचक कई प्रस्ताव दिये थे। इन प्रस्तावोंको प्रकाशन देनेके लिये हमारे पास यह पत्रिका आयी थी, लेकिन इस पत्रिकासे कोई स्थिति साफ समझमें नहीं आ रही थी, इससे हमने माहेश्वरी युवक मण्डल अलीगढ़ के मन्त्री से इस पर प्रकाश डालनेके लिये अनुरोध किया था। इंसी बीच सहारनपुरके माहेश्वरी समाजकी ओरसे कतिपय सज्जनोंके हस्ताक्षरोंवाली एक पत्रिका आयी थी। इससे मालूम होता है कि यह मामला एक सामाजिक महत्व रखता है। अतः पाठकों की जानकारीके लिये हम उक्त मण्डलके मन्त्री श्री ईश्वरदासजी धीरनका पत्र ज्यों का त्यों प्रकाशित कर रहे हैं। हमारे पास लगभग इसी आशयका श्री कृष्णगोपालजी भट्टड का भी एक पत्र आया है। इस विषय पर हम अधिक नहीं लिखते क्योंकि यह मामला कानूनी दृष्टिसे विचाराधीन है। इस पत्रसे ही पाठक सब मामला समझ सकेंगे।]

सराय मिश्र, अलीगढ
ता. १८-९-४१

मान्यवर महोदय !

सादर वन्दे। आपके ता० १३-९-४१ के पत्र सं. १३०० के उत्तरमें निवेदन है कि किशनलालजी टावरी कासगंज निवासी, घरके एक साधारण स्थितिके व्यक्ति हैं। उनकी शादी सहारनपुर निवासी से० मोतीलालजी राठीकी पुत्रीसे ३ वर्ष पूर्व हुई थी। लड़की विशेष सुंदर न थी। किशनलालजीने पहिले कई बार अपने साथियोंसे जिक्र किया था कि मुझे अपनी वर्तमान पत्नी पसंद नहीं है, मैं दूसरी शादी करूंगा। इन्जीनियरिंग क्लासमें यह उनका अन्तिम वर्ष था। से० मोतीलालजी उनको पढ़ाई के खर्चे के लिये ५०।६० मासिक भी देते थे।

यह घटना ता. २१ की प्रातःकालकी है। ता. १९-९-४१ मंगलवारको किशनलालजी अपने एक ब्राह्मण नौकरके साथ जो कालेपानीकी सजा पाये हुये था सहारनपुर पहुंचे और अपने ससुरसे अपनी माताकी बीमारीका बहाना बनाकर अपनी पत्नीको शीघ्र विदा कर देनेका आग्रह किया। मार्गमें यह घटना हुई। इसकी रिपोर्ट श्रीमती राजकुंवरी देवीके नैहरवालोंकी ओरसे पुलिसमें कर दी गई, जो निम्न आशय की है:—

"मेरी लड़कीकी शादी ३ साल पहिले किशनलाल टावरी कासगंजवालोंके साथ हुई थी। उन्होंने कईबार अपने कासगंज व रूड़कीके साथियोंसे जिक्र किया था कि मुझे अपनी वर्तमान पत्नी पसंद नहीं है, मैं दूसरी शादी करूंगा। लड़की ४-५ माससे सहारनपुर हमारे पास ही थी। ता. १९ को किशनलाल अपने एक काले पानीके सजायाफ्ता ब्राह्मण नौकरके साथ आये और अपनी माताको बीमार बताकर राजकुंवरीको शीघ्र विदा कर देनेका आग्रह करने लगे। हमने बुध व ब्रहस्पतिको दिशाशूल होनेके कारण शुक्रको विदा करनेका वचन दिया। लेकिन उनकी हठके आगे हमारी न चली और लड़की बुधको ही विदा करनी पड़ी। चलनेसे पहिले उन्होंने कहा कि सफरका मामला है, जेवर वगैरा न पहनाना, बक्समें रख देना नहीं तो हम रास्तेमें उतरवा लेंगे। हमने उन्हें स्टेशन तक पहुंचानेके लिये कहा लेकिन हमारी जानेकी कोई जरूरत न बतलाते हुए हमें साथ नहीं लिया। लड़के वालेने बताया है कि लड़कीने रुड़की पर कालिज देखनेकी इच्छा प्रकट की और इसलिये ये लोग रातके २-३ बजे रुड़की उतर पड़े। स्टेशनपर जेवरातके बक्सको स्टेशन मास्टरके सुपुर्द कर यह लोग नहरकी ओर चल दिये। कहा जाता है कि नहर बरसातकी वजहसे १५ दिनसे बन्द थी और उसमें कोई नहीं डूब सकता। इसके बाद ये लोग अपना सामान लेकर कासगंज चले गए। वहांसे ता. २२ को एक तार हमें दिया कि राजकुंवरी मर गई, रूड़की पहुंचो। हम लोग रूड़की पहुंचे। किशनलालके भाई व दो एक और आदमी एक वकीलके साथ वहां आ गये थे। देखभाल करने पर हमें डूबनेके वहां कोई आसार न दिखाई दिये और हम सहारनपुर वापिस आगये। हमारे कुटुम्बको पूरा विश्वास है कि या तो इन लोगोंने लड़कीको खुद डुबाया है या उसका कत्ल कर दिया है। लिहाजा तहक़ीकातके लिये आपको यह इत्तिला दी गई है।"

निकट भूतमें इसी प्रकारकी दो घटनाएं इधरकी समाजमें हो चुकी हैं, जिनमें एकमें पतिने पत्नीको जहर देकर तथा दूसरीमें ससुरने पुत्रवधूका इसी प्रकार वध कर डाला है। इस कारण इधरकी समाजमें बड़ी सनसनी फैली हुई है और आम समाजका विश्वास है कि यदि ऐसी घटनाएं यों ही होती चली गईं तो समाजमें उत्तरोत्तर उच्छृंखलता बढती जायगी और महिलाओंका जीवन अधिकाधिक संकटमय बनता जायगा।

पुलिस मामलेकी जाँच कर रही है किन्तु इसका कुछ फल निकलेगा या नहीं यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता।

विस्मय तो यह है कि इस घटनाके दूसरे ही दिनसे विधुरके सम्बन्धके लिये बड़े बड़े प्रतिष्ठित एवं सुशिक्षित घरानोंसे बातचीत चलने लगी है।

हमें आशा है कि आप इस घटना पर समुचित प्रकाश डालकर समाजकी आंखें खोलेंगे।

आपका विनम्र बन्धु
ईश्वरदास धीरन —मन्त्री

बम्बई

भारतीय नवयुवक संघ

भारतीय नवयुवक संघ की ओरसे ता. २०-१०-४१ को सरदार पृथ्वीसिंहजी की अध्यक्षता में मारवाड़ी चेम्बर भवन में गांधी जयन्ती मनायी गई। उपस्थिति सराहनीय थी। संघ के अध्यक्ष महोदय श्री केदारनाथजी अग्रवालने उपस्थित सज्जनोंका स्वागत करते हुए गांधी जयन्ती पर प्रकाश डाला। इसके पश्चात् अन्य बहुतसे वक्ताओं ने भी गांधी जीवन पर अपने २ दृष्टिकोणसे प्रकाश डाला।

जोधपुर

सनातनधर्म महासम्मेलन

होनेवाला अधिवेशन स्थगित

मारवाड़ प्रान्तीय सनातन धर्म प्रतिनिधि सभाका पंचम वार्षिक अधिवेशन और सनातन धर्म महासम्मेलन जोधपुरमें मिति आश्विन शुक्ल १५ कार्तिक कृष्ण १।२ तदनुसार अक्टूबर ५।६।७ को जगद्गुरु श्री शंकराचार्यजी भारती कृष्णतीर्थजी महाराज गोवर्धनपीठ, पुरीकी अध्यक्षतामें होनेवाला था सो समयाभावके कारण फिलहाल स्थगित हो गया है।

स्वागत !

आगामी ९ अक्टूबर को माननीय बृजलालजी बियाणी नागपुर सेण्ट्रल जेलसे अपनी कारावासकी अवधि समाप्त करके फिर हमारे बीच आने वाले हैं। इस शुभ अवसरपर हम आपका हृदयसे अभिनन्दन करते हैं।

लखनऊ

श्री द्वारकाप्रसादजी टावरीकी मुक्ति

पचमढ़ी निवासी बाबू द्वारकाप्रसादजी टावरी बी. एससी. एलएल. बी. ता. २६ सितंबर को बरेली सेन्ट्रल जेलसे अपनी सज़ाकी अवधि पूर्ण करके मुक्त कर दिये गये हैं। आप आगरेमें दिल्ली जाते समय गिरफ्तार कर लिये गये थे, उस समय तक आप पचमढ़ी (महाकोशल) से आगरे तक ५०० मीलकी पैदल यात्रा कर चुके थे और उस बीचमें आपने करीब १५० गावोंका भ्रमण भी कर लिया था। आगरा डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट द्वारा आपको चार माहकी कठिन कारावासकी कैद दी गई थी और आप आगरा जिला जेलमें "सी" क्लासमें रख दिये गये थे। वहां आपको पेटकी बीमारी शुरू हो गई और खूनके दस्त होने लगे जिससे आपका १३६ पौंड वजनसे केवल १२१ पौंड रह गया। दो माह बाद आपको यू. पी. गवरमेन्ट ने "सी" क्लास से "बी" क्लास करके आगरा सेन्ट्रल जेल में तबादलाकर दिया और फिर आप वहां से बरेली सेन्ट्रल जेल भेज दिये गये। मुक्त होते समय जेल फाटक पर आपके मित्र श्री कृष्णस्वरूप गुप्त एम्. एससी. श्री नरेशकुमार श्रीवास्तव एम्. एससी. तथा डाक्टर काशीप्रसाद आपकी अगवानी करने के लिये उपस्थित थे। आप यहां से शीघ्र ही सी. पी. पहुंच कर अक्टूबर माह के प्रथम सप्ताह में दुबारा सत्याग्रह करेंगे।

वधूकी आवश्यकता

एक सुंदर, सुशील, शिक्षित, कुलीन एवं स्वस्थ ३५ वर्षीय माहेश्वरी युवकके लिये, जिसकी स्वतंत्र मासिक आय १००) है, एक सुयोग्य गृह कार्यमें दक्ष वधू की आवश्यकता है। विवाह आधुनिक रीतिसे होगा। लड्ढा और काल्या खांप वाले पत्रव्यवहार न करें। कन्या पक्ष दस्सा माहेश्वरी होगा तो भी कोई आपत्ति नहीं होगी।

पत्रव्यवहार इस पतेसे करें।
बी. डी. राठी एण्ड सन्स
हिंगणघाट, जिला वर्धा (सी. पी.)

[गत २१ सितम्बरके अंकके ५ पृष्ठ पर यह आवश्यकता प्रकाशित हुई थी जिसमें ३५ के स्थानपर भूलसे २५ छप गया था। अतः कृपया पाठक गण सुधार लें। इस अंकमें हमने यह सुधार दिया है।]

कलकत्ताकी चिट्ठी

माहेश्वरी सभाके द्वारा गान्धी जयन्तीका आयोजन

माहेश्वरी सभामें जनताका जमाव

रविवार तारीख २८ सितम्बरको माहेश्वरी सभाके उद्योग तथा स्थानकवासी जैन-गुजराती-सेवा-संघके सहयोगसे माहेश्वरी भवनमें गान्धी-जयन्ती मनाई गई। उस दिन माहेश्वरी भवनको राष्ट्रीय झंडोंसे भलीभाँति सजाया गया था। दिनके ११ बजे दूकानोंसे प्रदर्शनी सज गई। दोपहरमें माहेश्वरी विद्यालयके विद्यार्थियोंके द्वारा व्यायाम-प्रदर्शनका प्रोग्राम था; किन्तु उस समय वर्षा हो जानेके कारण वह प्रोग्राम स्थगित कर देना पड़ा। अढाई बजे सभाका प्रबन्ध था। सभा-भवन लोगोंसे खचाखच भरा हुआ था। उपस्थित लोगोंमें सर्वश्री सीतारामजी सेकसरिया, अन्नदाप्रसाद राय चौधुरी, व्रजवल्लभदासजी मूंधड़ा, गणेशप्रसादजी माहेश्वरी, बालकृष्णजी मोहता, चम्पालालजी बागड़ी, मदनलालजी सोढ़ानी, रामनिवासजी हुरकट, ओंकार मलजी सराफ, शिवरतनजी मोहता, सुन्दरलालजी दम्माणी, रमणीकलालजी मेहता, रविशंकरजी रावल, चाँपशीभाई उदेशी, मूलराज अंजारिया, नन्दलालजी नागरदास, बृजलालजी दोमहिया, श्रीमती कमलादेवी मून्धड़ा, श्रीमती बृजकुँअरजी माहेश्वरी, श्रीमती मायारानीजी दम्माणी, श्रीमती बासन्तीदेवी जी सराफ, श्रीमती स्वर्णलतादेवीजी सराफ, कुमारी बेनाबाई रामदास, कुमारी हेमलता जगमोहनदास आदि के नाम प्रमुख हैं। श्रीसीतारामजी सेकसरिया के सभापतित्वमें सभा की कार्यवाही शुरु हुई। पहले माहेश्वरी विद्यालय के बालकों ने 'वन्देमातरम' गया। उसके बाद गुजराती लड़कियोंने महात्माजी का प्रिय गीत "वैष्णवजन तो तेने कहिये" बड़े मधुर ढंगसे गाया। सबसे पहले गुजरात के सुप्रसिद्ध चित्रकार तथा राष्ट्रकर्मी श्री रविशंकरजी रावलने भाषण दिया। आपका भाषण गुजरातीमें हुआ। अपने भाषणमें आपने गान्धीजी के तत्वदर्शन की बड़ी मोहक व्याख्या की। बंगाल के सुप्रसिद्ध नेता श्री अन्नदाप्रसाद राय चौधरीने प्रांजल, सरल और शुद्ध हिन्दीमें अपना भाषण दिया। आपने सबसे पहले महात्माजीके दीर्घजीवनकी कामना की। आपने कहा कि यह बड़े हर्षकी बात है कि आज बड़ा बाजारके प्रमुख व्यक्तिगण गान्धीजीकी जयन्ती मनानेके लिए एकत्रित हुए हैं। आज पचास वर्षोंसे महात्माजीने केवल राजनैतिक ही नहीं, सभी समस्याओंका हल किया है, सभी मार्गोंका प्रदर्शन किया है। महात्माजीकी एक बहुत बड़ी विशेषता है कि वे जीवनकी समस्याओंका विभाग नहीं बनाते। वह सब कुछ समष्टिरूपसे हल करते हैं। दूसरे लोगोंका ख्याल है कि सामाजिक और राजनैतिक समस्यायें अलग-अलग चीज़ें हैं; लेकिन गान्धीजी ऐसा नहीं समझते। शहरों की चमक-दमक देख कर हम शहरवाले देहातों को भूल चुके थे। वहाँ की करोड़ों जनता गिरी हुई हालतमें अपने दिन काट रही थी। लेकिन महात्माजीने उन्हें नहीं छोड़ा। उन्होंने कहा, देहातों को बिना जगाये हिन्दुस्तान आगे नहीं चल सकता। उन्होंने ही सबसे पहले चर्खे की बात चलाई। आज भारतमें करोड़ों की खादी बनती है। उन्होंने ही सबके आगे अहिंसा की बात रखी। आज सारी दुनियामें लड़ाई चल रही है। इस लड़ाई से दुनिया तभी बच सकती है जब वह महात्माजीके सिद्धान्तोंके अनुकूल चले। महात्माजीने केवल राजनीति और ग्रामोद्योग की ही बात नहीं की; उन्होंने हरिजन-उत्थान आदि सभी प्रकारके सिद्धान्त स्थिर किये।

श्री अन्नदाप्रसाद राय चौधुरीके भाषणके बाद सुप्रसिद्ध कवि श्री चाँपशी भाई उदेशी ने गुजरातीमें अपना भाषण दिया। आपने बतलाया कि महात्माजीके सारे सिद्धान्तोंमें मानवता है। जब कि सारी दुनिया दानवता और हिंसक प्रवृत्तियों को प्रश्रय दे रही है वैसे समयमें केवल महात्माजी ही हैं जो मानवता और अहिंसाके पथपर दृढ़ हैं। भारतवर्षकी राजनीति पर महात्माजीका जितना प्रभाव है उताना ही प्रभाव वे गुजराती साहित्य पर भी रखते हैं।

श्री उदेशीजीके भाषणके पश्चात श्री बालकृष्णजी मोहता ने कहा—गान्धीजी मनुष्योंको सुखी देखना चाहते हैं। वे चाहते हैं कि लोगोंका भरपेट अन्न मिले, साफ-सुथरा कपड़ा मिले, रहनेके लिये घर मिले। लेकिन लोग आज किस दुरवस्थामें अपने दिन काट रहे हैं। लोगोंको खानेके लिये अन्न नहीं मिलता, पहनेनेके लिये कपड़ा नहीं मिलता, रहनेके लिये मकानोंकी तो बात ही अलग है। इसका कारण क्या है? कारण है राजपद्धतिमें भूल, समाज नीतिमें भूल। गान्धीजी उसे सुधारना चाहते हैं;। मगर समाज नीति और राजपद्धति उनकी बात नहीं मानती। वे लोग आटे में नाक के बराबर हैं; लेकिन उनमें नमक की तेजी है। इसका उपाय गान्धीजीने सत्याग्रह बतलाया है। सत्याग्रह में मुख्य बात है अहिंसक रहना। मेरे हिसाबसे गान्धीजीका आजतक का सत्याग्रह आदिका कार्य सफल हुआ है। कुछ आदमी उसे सफलता नहीं मानते; किन्तु मेरे विचारसे हिन्दू जाति की मनोवृत्ति के अनुसार जितना लाभ हो सका है उतना और दूसरे नेताओंके जीवन काल में नहीं बना। किन्तु गान्धीजीकी बातों का हम केवल पाठ मात्र ही करके न छोड दें, उसे समझ कर कार्यरूप में पारिणित करना चाहिये।

श्री बालकृष्णजी मोहताके पश्चात श्री बालकृष्ण चतुर्वेदी तथा श्री कमलेशजीका कविता पाठ हुआ। कमलेशजीकी कविता सामयिक तथा सुन्दर थी। पश्चात् सभापति श्री सीतारामजी सेकसरियाने अपने भाषणमें चर्खा, खादी-प्रचार और ग्रामोद्योगोंको अपनानेके विषय पर बहुत जोर दिया। महात्माजीके कई सुन्दर तथा आदर्श संस्मरणोंका उल्लेख करते हुए आपने कहा-यह महात्माजी ही हैं जो अपने देशकी नाड़ीको समझते हैं। यदि हम महात्माजीके कार्यक्रमके अनुसार खादी और ग्रामीण उद्योग-धन्धोंको अपनाते हैं, तो हम महात्माजीके हाथोंको मजबूत करते हैं। हम लोगोंको खादी अपनानेकी प्रतिज्ञा लेनी चाहिये।

सारी उपस्थित जनता ने दो मिनट तक मौन रह कर गान्धीजी के दीर्घजीवन की कामना की। तत्पश्चात श्री व्रजवल्लभदासजी मूंधडा ने श्री रमणीकलाल डाह्याभाई, सभापति महोदय तथा आगत सज्जनों को बड़े अच्छे ढंग से धन्यवाद दिया और सभा विसर्जित हुई।

नुक्ते की घातक प्रथाका अन्त कीजिए

माहेश्वरी समाज की दीन-हीन दशा देखकर मुझे बड़ा रंज होता है। और इस दीनताका कारण जब खोजने लगता हूं तब जान पड़ता है कि परस्पर संगठन का अभाव और पारस्परिक विद्वेष भावना की अभिवृद्धि होनेके कारण समाज एक दूसरे को सनातन रीति रिवाजोंके पहियेमें पीस देने की जो कोशिश करता है उसीमें उसकी दरिद्रता छिपी हुई है। उचित तो यह है कि दूसरे को सुखी और उन्नति की तरफ अग्रसर देखकर हम सुखी हों और उसके लिए कामना करें किन्तु अज्ञानवश दूसरे की उन्नति और सुख देखने की ताब हममें नहीं। हम उसे घसीट कर झट ज़मीन पर ला पटकना चाहते हैं। और इसके लिए आड़ लेते हैं सनातन रूढ़ियों और रीति रिवाजों की। सनातन रीति रिवाज यदि मनुष्यकी मुक्तिके साधन होते तो क्या ही अच्छा होता, पर आज वही हमारे लिये संकट और दुःख का पहाड़ लाने वाले बन गये हैं।

हमारे जावदमें ही संगठन की यह हालत है कि माहेश्वरी समाजमें तीन धड़े हैं। दो धड़े वाले बाजा बजानेके हिमायती हैं और एक धड़े वाले बाजा बजानेके खिलाफ। इस छोटी-सी चीज़को आसानीसे निबटाया जा सकता था पर निबटानेके बदले उससे तो विद्वेषकी मात्रा बराबर बढ़ रही है। अभी गत चैत्र सुदी ११ सम्वत् १९९८ को मेरी दादीका स्वर्गवास हो गया। मैं उस समय बाहर गया हुआ था। पांच-छः दिन बाद जब यह समाचार मैंने सुना तो मैं सीधा अपने गांव वापिस आया। वहां मुझे मालूम हुआ कि मेरे पिताजी मेरी दादीका नुक्ता नहीं कर रहे, केवल ब्राह्मण भोजन व सम्बधियों को जिमायेंगे। किन्तु ब्राह्मण भोजन जिस दिन हुआ, घटनाका रूप ही बदल गया था। ब्राह्मणोंके निमन्त्रण तीसरे तड़के, जो मूंदड़ोंका तड़ा कहाता है, कोटवारसे दिलाये गये थे जिस पर बिगड़कर दूसरे दो तड़ोंके सम्बन्धियोंने आने से इन्कार कर दिया। यद्यपि फिर दूसरे तड़के कोटवारसे भी न्यौते दिलाये गये और शान्ति स्थापन करनेकी चेष्टा की गयी पर नतीजा इसके विपरीत हुआ। दूसरे तड़के लोगों ने अपने कोटवारसे, जिन को न्यौता दिया जा चुका था उन ब्राह्मणों को तो मना करवा दिया कि हमारे यहां रसोई नहीं और बाकी सारे माहेश्वरी समाजमें ब्राह्मणों को न्यौते दिलवा दिये। ब्राह्मण भोजनके अवसर पर उन मना किये हुए ब्राह्मणों को लेकर कहीं बाधा या झगड़ा उपस्थित न हो इस पर एक सज्जनने तो भोजन के स्थानपर दो कारखानेके आदमी भी पहरे पर नियुक्तकर दिये।

इस प्रकार ब्राह्मण भोजन तो हो ही गया। और दूसरे दिन जातिके पंच व गांवकी सरकारी कमिटियोंके चौधरी व मेम्बर कहानेवालेंने मेरे पिताजीसे जबरदस्ती ५ मनके करीब शकर मेरी दादीके नुक्तेके लिए डलवायी और जबर्दस्ती नुक्ता करवा दिया। लेकिन उन पंचोंने यह नहीं सोचा कि उनके एक दिनके जीमन ने हमारे घर पर कैसा कहर बरपा कर दिया। इस नुक्तेमें पिताजीका ३७५ रु. लगा। यदि यही रकम अपना कर्जा चुकाने या कुछ पूंजी लगाकर अपने बालकोंकी परवरिशमें लगा सकते तो कितना अच्छा होता। मेरे दादाकी जो कुछ कमाई दादीके पास थी वह इसमें लग गयी और ५९) रु. अब भी बकाया है जो चुकाया नहीं जा सका। पिताजी को अपना मकान ११।≈) रु. में गिरवी रखनेकी नौबत आ गयी। यदि पंच व मण्डी कमिटीके चौधरी महाशयोंमें जरा भी दूरदर्शिता होती तो हम इस प्रकार उजड़ नहीं जाते। एक दिनकी जीमनमें इतना रुपया उजड़ गया जो यदि सुरक्षित रहता तो एक परिवारका सहारा होता। हमारा तो जो हुआ सो हुआ पर हमारी इच्छा है कि पंच व चौधरी लोग इस प्रकार गरीबोंको उजाड़नेके इस व्यवसायका अन्त कर दें। इस रफ्तारसे ही यदि गरीबोंका गला घोंटा जाता रहा तो उनके लिए कोई ठौर ठिकाना नहीं रहेगा। भविष्यमें भी यदि इस चीज़ पर उचित ध्यान दिया जाय और इन चीज़ोंका—घातक नुक्ते व अन्य प्रथाओंका अन्त कर दिया जाय तो समाजकी दशा सुधारनेके लिए अभी बहुत समय और गुंजाइश है।

जावद (मालवा) —**मोहनलाल मूंदड़ा**

राजस्थानी संसार

सूरत

श्रद्धेय जाजूजीका आगमन

काठियावाड़का दौरा समाप्त कर पू. जाजूजी चरखा संघके कार्यका निरीक्षण करनेके लिये सूरत पधारे। सूरत स्टेशनपर स्थानिक चरखा संघके कार्यकर्ता तथा श्री नटवरलालजी जागीरदार और श्री रतनलालजी कोटेचा स्वागत करनेके लिये हाजिर थे। पू. जाजूजीके आगमनका लाभ उठानेके लिये यहां के माहेश्वरी (गुजराती और मारवाड़ी) समाजके कार्यकर्ताओंकी एक सभा बुलाई गयी थी। सभामें गुजराती महिलाओंकी अच्छी उपस्थिति थी। कार्यकर्ताओंने विविध विषयोंपर पू. जाजूजीसे प्रश्न पूछे।

"परदे से स्त्रियों के शील की रक्षा होती है, इस दलीलमें कहांतक सत्य है" प्रश्न पर जाजूजीने कहा कि वगैर परदेवाली स्त्रियां शीलवती नहीं रहतीं ऐसा नहीं है। हिंदुस्तानके विभिन्न प्रांतोंमें परदा नहीं है, तो क्या यह हम कह सकते हैं कि वहांकी स्त्रियां शीलवती नहीं हैं? परदेमें भी रहकर स्त्रियां अशीलवती रह सकती हैं। परदेका और शीलका कोई संवंध नहीं है।

अस्पृश्यता के प्रश्नपर वोलते हुए उन्होंने कहा कि माहेश्वरियों को मानवता की दृष्टि से अछूतपन को नहीं पालना चाहिये। यदि भंगी स्वच्छ होकर हमारे पास आता है तो उसे हमें अछूत नहीं मानना चाहिये। सामने वैठी हुई महिलाओं को उद्देश कर उन्होंने निर्देश किया कि वहनो! आखिर तुम भी अपने लड़के-लड़कियों की भंगी तो हो न? हरेक आदमी को थोड़े वहुत अंशमें भंगीका कार्य करना पड़ता है। वास्तवमें देखा जाय तो भंगी हमारी उच्च सेवा करते हैं। पहले जमानेमें भंगीका नामोनिशान नहीं था। मुसलमान वादशाहोंने जवरदस्ती कुछ हिन्दुओंको भंगी वनवाया। आगे वोलते हुए उन्होंने कहा कि हमारे कुछ नवयुवक ऐसा कहते हैं कि छूनेके बाद विवाह आदिका प्रश्न भी हमारे सामने उपस्थित होगा, लेकिन यह एक भ्रमोत्पादक दलील है। दूसरे समाजोंको छूनेके वक्त हमारे सामने विवाहका सवाल नहीं आता, तो फिर हरिजनोंको छूते वक्त यह सवाल कैसे आयगा?

इसके बाद आत्मरक्षाके प्रश्न पर उत्तर देते हुए पू० जाजूजीने वतलाया कि आत्मरक्षा हिंसक या अहिंसक इन दो उपायोंसे हो सकती है। हरेकको अपनी श्रद्धासे आत्मरक्षा करनी चाहिये। लेकिन डरपोक होकर घरमें बैठे रहनेकी वनिस्वत हिंसक साधनोंसे भी आत्मरक्षा करना अच्छा है। यदि अहिंसामें पूर्ण विश्वास हो तो यह एक उत्तम वात है। फिलहाल हिन्दुस्तान हिंसक साधनोंसे भी रक्षा नहीं कर सकता, क्यों कि हमारे पास वैसे साधन मौजूद नहीं हैं, और सरकार हमें हिंसक संगठन करने न देगी। ज्यादा से ज्यादा हम लाठी रख सकते हैं, लेकिन वमगोलोंके सामने लाठी क्या कर सकती है? वाकी रहा अहिंसक साधनोंका सवाल। यह तो वीरोंका हथियार है, और जिसमें मरनेकी ताकत हो वही उसका उपयोग कर सकता है।

इसके वाद पू० जाजूजीने महिलाओंको उद्देश्य कर कहा कि उन्हें लड़के और लड़कियोंमें भेद नहीं मानना चाहिये। घरोंमें अक्सर लड़कियोंसे काम लिया जाता है, परंतु लड़कोंसे भी घरका काम करवाना चाहिये। बीस सालका एक नवजवान लड़का अपनी वृद्धा मातासे धोती धोनेका कहता है, क्या यह शर्मजनक नहीं है? लड़के जव जव घरमें निठल्ले रहें, उन्हें घरका काम करने को कहना चाहिये। यह एक दुःख की वात है कि हमारी महिलाएं अपनेको पुरुषोंसे हलकी समझती हैं। यदि स्त्रियों का दर्जा वढ़ाना हो तो शरीरश्रम का भेद हमें निकाल देना चाहिये। जव तक शरीरश्रम का भेद न उठ जाएगा, तव तक आप लड़कियों को वी. ए, पढ़ाइए तो भी लड़कियोंका दर्जा उच्च होने वाला नहीं है। अन्तमें उन्होंने महिलाओंसे अपील की कि वे पुरुष वर्ग से काम कराना शुरू कर दें। मैं जानता हूं कि पुरुष वर्ग इस वातको पसंद नहीं करेगा, लेकिन कष्ट सहन करते हुए भी महिलाओंको अपने अधिकारों की रक्षा करनी चाहिये, और अपना समान दर्जा हासिल करना चाहिये।

सभा का कार्य समाप्त होने पर पू० जाजूजी को हार अर्पित किये गए और उसी शाम को वारडोली जानेके लिये वे सूरत से रवाना हुए।

वम्बई

सीताराम पोद्दार वालिका-विद्यालय का २५ वाँ वार्षिकोत्सव

दो उदारतापूर्ण दान

गत ता. २८-९-४१ को सीताराम पोद्दार वालिका-विद्यालय का २५ वाँ वार्षिकोत्सव स्थानीय स्मॉलकॉज़ेस कोर्ट के प्रधान न्यायाधीश माननीय श्री. इन्द्रनारायणजी की अध्यक्षतामें सम्पन्न हुआ। विद्यालयकी छात्राओंने भावपूर्ण सुन्दर गरवाका प्रदर्शन और "जयंत" नामक नाटकका सुन्दर अभिनय किया। आगत व्यक्तियोंने वालिकाओं के कार्य की प्रशंसा की और उनको कई पदक तथा अन्य पारितोषिक प्रदान किए।

श्रीमती वासन्तीदेवीजी सेकसरिया

मंत्रीजीकी विद्यालयके पुस्तकालय सम्वन्धी अपील पर ध्यान देकर, श्रीमती वासंतीदेवीजी गोविन्दराम सेखसरियाने रु. १००००) दस हजार रुपयोंका दान दिया। इसके लिए हम उनके कृतज्ञ हैं।

दूसरे दिन, ता. २९-९-४१ को वालिका-समितिकी ओरसे केवल महिलाओंके लिए उत्सव हुआ। इसकी अध्यक्षा श्रीमती राजकुमारीदेवी नारायणलाल पित्ती थीं। इस दिनका कार्यक्रम भी पूर्णतया सफल रहा।

इस दिन श्रीमती दुर्गेश्वरीदेवी गंगाधरजी माखरियाने वालिका-समितिको रु. १०००) एक हज़ार रुपये प्रदान किए। इसके अतिरिक्त अन्य महिलाओंने भी छात्राओंको पदक आदि प्रदान कर, उन्हें प्रोत्साहन दिया।

मन्त्री

वागलकोट

वार्षिकोत्सवकी धूम

स्थानीय माहेश्वरी भुवनमें हिंदी वाचनालयका ४ था वार्षिकोत्सव तथा मारवाड़ी युवक मण्डलका ७ वां वार्षिकोत्सव श्री जगन्नाथजी वागमारकी अध्यक्षतामें वड़ी धूमधामके साथ मनाया गया। स्थानीय मारवाड़ी समाज वड़ी संख्यामें उपस्थित था। कई वक्ताओंके भाषण हुए। पश्चात् ८ प्रस्ताव सर्वानुमतिसे पास हुए। फलाहारके पश्चात् कार्य सम्पन्न हुआ।

व्यायाम संघकी स्थापना

मारवाड़ी युवक व्यायाम संघकी स्थापना ता. २२ सितंवरको की गई। वर्तमानमें करीव ४० युवक इसका लाभ उठा रहे हैं। इस समय तक निम्न व्यक्तियोंने व्यायाम संघको सहायता प्रदानकी है। २५) श्री नथमलजी मूंदड़ा, २१) श्री राधाकिशनजी तोष्णीवाल, २१) नथमलजी राठी।

औरंगावाद

हैद्रावाद राजस्थानी सम्मेलन

स्थानीय राजस्थानी भाई सम्मेलनको सफल वनाने में बड़े जोश और उत्साहके साथ जुट गए हैं। चारों ओर उत्साह का वातावरण छाया हुआ है। सम्मेलनको सफल वनानेके कार्यमें सर्वश्री शेषमलजी देवड़ा, राजा वंसीलालजी, मुरलीधरजी टकसाली, माणिकचन्दजी पहाड़े, चिरंजीलालजी शाह, रतनचंदजी गट्टानी विशेष रूपसे कार्य कर रहे हैं। अध्यक्षपदके लिए राजा नारायणलालजी पित्तीका नाम स्थानीय जनतामें सुना जा रहा है।

दार्जीलिंग

जिला मारवाड़ी सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन

जिला मारवाड़ी मर्चेन्ट्स् एसोसिएशन का तृतीय अधिवेशन

उक्त संस्थाओं का क्रमशः प्रथम व तृतीय अधिवेशन ता. २ अक्टूवर को दार्जीलिंग में वड़े समारोह के साथ होने जा रहा है। इस अवसर पर एक स्वास्थ्य प्रदर्शनी का भी आयोजन किया जा रहा है। सर्वश्री श्रीरामजी लड्ढा, ईश्वरदासजी थीरानी और रामनाथजी अग्रवाल क्रमशः स्वागताध्यक्ष, उप स्वागताध्यक्ष और स्वागत मन्त्री निर्वाचित हुए हैं।

हरदा

विजयादशमी उत्सव

हरदामें विजयादशमीके शुभ अवसर पर नगरकी कन्याशालाने वार्षिक उत्सव नगरके तरुण एवं उत्साही कार्यकर्ता श्री अंवालालजी विलासरायकाके सभापतित्वमें बड़े समारोहसे मनाया। वालिकाओंके स्वागत गानके पश्चात् मन्त्रीजीने वार्षिक रिपोर्ट पढ़ी। सभापतिजीके वालिका-शिक्षा पर सारगर्भित भाषणके बाद खेल-कूद आदि प्रतियोगिताओं में विजयी वालिकाओंको पारितोषिक आदि दिया गया।

श्री अम्वालालजी विलासरायकाने इस अवसर पर १०१) शालाको दान दिया।

वधु की आवश्यकता

एक सुयोग्य सुन्दर, कमाऊ २४ वर्ष की उम्रके एक युवकके लिए एक सुयोग्य कन्या की आवश्यकता है। युवककी वार्षिक आय रु. ४००)-५००) है धूत व मोदानी खांप वाले पत्रव्यवहार न करें। पत्रव्यवहार का पता:—

दुर्गाप्रसाद धूत
C/o लक्ष्मणदास मूलचन्द
नमक मण्डी, आगरा।

राजस्थानी संसार

इन्दौर

खादी प्रदर्शिनी

महिला परिषदका सराहनीय कार्य

इन्दौर महिला परिषदकी ओरसे पूज्य महात्मा गांधीकी जयंतीके उपलक्ष्यमें खादी प्रदर्शिनीका सुन्दर आयोजन किया गया है। कल ता. २२ की शामको स्थानीय माणिक चौकमें उद्घाटन समारंभके सिलसिलेमें महिला परिषद्की अध्यक्षा श्री पुखराजबाई जैनकी अध्यक्षतामें विशाल आम सभा हुई। सर्व प्रथम वंदेमातरम् गायनके पश्चात् श्रीयुत श्रीलालजी पटवाने इन्दौरके प्रसिद्ध राजनैतिक कार्यकर्ता श्री हजारीलालजी जड़िया, जिनके हाथों इस प्रदर्शिनीका उद्घाटन करवाया गया, की सेवाओंका परिचय उपस्थित जनताको दिया। इसके बाद परिषद्की प्रधान मंत्राणी श्री रुक्मिणीबहन शर्मा, उपाध्यक्षा सौ. शांताबहन पटेल, श्रीयुत मिश्रीलालजी गंगवाल और श्री कन्हैयालालजी खादीवालेके खादीके महत्व और उसकी उपयोगिता पर प्रभावशाली भाषण हुए। श्री गंगवालजी ने इस प्रदर्शिनी की विशेषता बतलाते हुए कहा कि इसका आयोजन महिला परिषद द्वारा किया गया है अतः इन्दौर की जनता का यह कर्तव्य है कि वह अधिक से अधिक खादी खरीद कर महिलाओं का उत्साह बढ़ावें।

इसके बाद श्री पुखराजबाई और श्री जड़ियाजीके भाषण हुए और उद्घाटन क्रिया संपन्न हुई। शामको प्रजामंडल वार्ड नं. १ की ओरसे सिवागंजमें खादी प्रचारके लिये आम सभा हुई जिसमें कई वक्ताओंके भाषण हुए।

महीदपुर

जिलेमें हैजा

सनावदकी घटनाके पश्चात् यहां हैजेकी आशंका की जा रही थी। आजके सरकारी गॅझेटसे वह सही साबित हो गई है। महीदपुर जिले में भी आस पास के कुछ विस्तारमें सरकारी तौरसे हैजा घोषित कर दिया गया है। यद्यपि अभीतक महीदपुर खासके लिये इस तरहका कोई सरकारी ऐलान नहीं किया गया है। सरकारी आज्ञामें बतलाया गया है कि महीदपुरके पास धाराखेड़ा नामक गांव में हैजेका आक्रमण हो चुका है। स्मरण रहे आगामी अक्टूबर की ता. ५ और ६ को प्रजामंडलकी ओरसे महीदपुर में वार्षिक अधिवेशन करनेकी तैयारियां की जा रही हैं। अतः इस नवीन स्थितिसे प्रजामंडलके कार्यकर्ताओंके सामने एक समस्या उत्पन्न होगई है। —संवाददाता

कानपुर

श्री मित्रबाल सभाका द्वितीय अधिवेशन

रविवार ता. १४ सितंबर को श्री सूरजमलजी सोमाणी की अध्यक्षतामें बड़े समारोहसे हुआ। गत वर्ष की रिपोर्ट सुनानेके पश्चात् चालू वर्षके लिए निम्न सज्जन निवार्चित किये गयेः—

श्री सूरजमलजी सोमाणी—अध्यक्ष, श्री भोलानाथजी अग्रवाल—उपाध्यक्ष, श्री जे. पी. श्रीवास्तव—मंत्री, श्री कैलाशनाथजी त्रिपाठी—उपमंत्री, श्री महावीरप्रसादजी गुप्त—कोषाध्यक्ष, श्री जयकृष्णजी बल्दुआ—ऑडीटर। सदस्य सर्वश्री पुरुषोत्तमदासजी भुराड़िया, वसन्तस्वरूपजी गुप्त, शिवप्रसादजी शुक्ल, गणेशनारायणजी सोमाणी।

सितंबर १७ को संस्था का जन्मोत्सव मनाया गया।

बम्बई

स्कूल कमिटीके मंत्रीपद पर महिलाका निर्वाचन

कु. कपिला खांडवाला की सफलता

स्थानीय म्युनिसिपल कारपोरेशनकी स्कूल कमिटीके मंत्रीपदके चुनावमें कु. कपिला खांडवाला अन्य पांच उम्मीदवारोंसे बहुत अधिक मत पा निर्वाचित हुई हैं। आप सर्व प्रथम महिला हैं जो इस महत्वके स्थान पर निर्वाचित हुई हैं। करीब ६ मास पूर्व बम्बई यूनिवार्सिटीके सीनेटके चुनावके समय भी आप बहुत अधिक मतोंसे निर्वाचित हुई थीं। ऐसे महत्वके स्थान पर महिलाका निर्वाचन स्त्रियोंके लिए गौरव की बात है।

कुमारी कपिला खांडवाला ने यूरोप, अमेरिका, चीन, जापान आदि देशों का भ्रमण कर शिक्षा पद्धति का अभ्यास किया है। आपमें कार्य करने का उत्साह और लगन है।

अब तक भावी नागरिकोंकी शिक्षा का कार्य पुरुषोंके हाथमें रहा है किन्तु अब यह महत्व का स्थान एक महिलाके हाथमें हैं। अब बम्बई म्यूनिसिपौलिटीके स्कूलोंमें शिक्षा पानेवाले एक लाख बालक इस विदुषी बहनके निरीक्षणमें शिक्षा पायेंगे। हमें विश्वास है कि कुमारी खांडवाला की इस क्षेत्रों की सेवाओं से इन बालकोंके माता-पिताओं को पूर्ण सन्तोष मिलेगा। कुमारी कपिला खांडवालाके इस निर्वाचन पर हम उनका अभिनंदन करते हैं।

मारवाड़ रिलीफ सोसायटी

श्री बिसवाजीका आगमन

२७ सितम्बर

हालमें ही राजपूतानेकी अरावली पर्वतमालापर जो अकस्मात भारी वर्षा हुई थी, उससे मारवाड़के दक्षिण-पश्चिम भागपर तबाही आगयी है। विशेषतः जो गांव जवाई, सुकरी, मिठरी, बांदी और लूनी नामक बरसाती नदियोंके आसपास थे, उनमें सैकड़ों नर-नारी गृहद्वार विहीन हो गये हैं। उनके पशुओंका नाश भी होगया है और उनकी फसलें भी नष्ट होगयी हैं। सब तरह वे निराश्रित होगये हैं।

यह पहला ही अवसर है जब कि जलकी कमीके लिये मशहूर मारवाड़ प्रदेशमें जलकी अधिकतासे हाहाकार मच गया है।

समाचार मिलते ही जोधपुर नरेशकी आज्ञासे संकट निवारण और सहायता दानका काम राजकर्मचारियोंने शुरू कर दिया था। मारवाड़ लोकपरिषद, मारवाड़ किसान सभा, हिन्दू सेवा मण्डल और मारवाड़ी बजाजमण्डलने भी स्वेच्छापूर्वक सहायताका काम जारी कर दिया था। किन्तु तबाही, विनाश, और संकट इतना अधिक है कि पीड़ितजनोंको यथेष्ट सहायता देनेके लिये बहुत बड़ी दरकार है।

इस विषयमें मारवाड़के धर्म और दयाप्रधान महानुभावोंने विशेषकर दानवीर सेठ श्री मंगनीरामजी बांगड़ की उदार सहायतासे मारवाड़ रिलीफ सोसायटी नामक संस्था बनाकर सहायताका काम शुरू कर दिया है। इसी संस्थाके मन्त्री श्री राधाकृष्णजी बिसावा बम्बईमें सहायता-संग्रहके लिये आये हुए हैं। श्री गजाधरजी सोमाणी, श्री वसन्तीलालजी मालपाणी और श्री राजा नारायणलालजी की सहायतासे बहुत कुछ काम कर भी चुके हैं।

श्रीनिवास कॉटन मिल्स लिमिटेड बम्बई ने और राजा बंशीलालजी नारायणलालजी पित्ती ने इस काममें रु. ११००) की बड़ी रकम प्रदान कर उदारतापूर्वक सहायता की है, एतदर्थ वे धन्यवादके पात्र हैं।

रिलीफ सोसायटीकी रचना महाराज श्री गुमानसिंहजी साहबकी अध्यक्षतामें गत ७ सितम्बरको हुई थी। थोड़े दिनोंमें ही कमेटीने बहुत प्रभावपूर्ण रीतिसे काम शुरू कर दिया है। गत १४ सितम्बरकी सार्वजानिक सभामें जोधपुर की महारानीजी और महाराज साहबने भी अपने सन्देशे भेजकर इस काममें परमोत्साह प्रदान किया था। उन्होंने इसका संरक्षक बनना भी स्वीकार कर लिया है। इसीलिये इस सोसायटीके नामके साथ महारानीजी भट्यानीजी साहिबाका नाम भी जोड़ दिया गया है। इस तरह यह सोसायटी सम्पूर्णतः नियंत्रित और संरक्षित रूपमें परमोत्साहसे काम करनेमें लग गयी है।— संवाददाता

सांगली

माहेश्वरी युवक मंडल का वार्षिक सम्मेलन

मिति आश्विन शु. १० को मंडलका ७ वां वर्ष समाप्त होता है। श्रीमान् बाबूलालजी नेमाणी बंबईनिवासी की अध्यक्षतामें मंगळवार ता. ३०-९-४१ की शामको ५ बजे नवीन वर्ष दिन मनाया गया।

जयपुर

राजपुताना हरिजन सेवक संघ

राजपुताना हरिजन सेवक संघ के प्रतिनिधि के तौर पर श्री हीरालालजी शास्त्रीने अक्टूबर १९४१ से संघ का कार्य-भार संभालना स्वीकार किया है। श्री ओमूदत्तजी शास्त्री संघ के सहकारी मंत्री की हैसियत से श्री हीरालालजी शास्त्री की मदद करेंगे। संघ का कार्यालय जयपुर शहर में रहेगा। भविष्य में राजपुताना के हरिजन कार्यके संबन्धमें जिन्हें पत्र-व्यवहार करना हो वे कृपया संघ के जयपुर स्थित कार्यालयसे करें। विभिन्न स्थानीय समितियां एवं शाखाओं के सितम्बर १९४१ तक की सहायता कलकत्ता आफिससे पहिले की भांति भेज दी जायगी। बादमें सहायताके विषयमें भी जयपुर आफिससे ही पत्र-व्यवहार करना होगा।

आशा है कि इस नई व्यवस्थासे प्रान्तके हरिजन कार्य को प्रगति बल मिलेगा और कार्यकर्ता बन्धु श्री हीरालालजी शास्त्री जैसे परखे हुए समाज सेवी जननायकके सहयोगका पूरा लाभ उठायेंगे।

मोतीलाल लाठ, मंत्री

उदयपुर

स्वर्गीय रामकृष्णजी मोहता की पुण्य-तिथि

ता. २६ को सायंकाल ७ बजे माहेश्वरी मण्डल की ओर से स्थानीय बोर्डिंग हाउसमें एक सार्वजनिक सभाका आयोजन स्व. रामकृष्णजी मोहता को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करने के लिये किया गया। सभा की कार्यवाही श्री सच्चिदानन्दजी दरगड़ के सभापतित्वमें प्रारम्भ हुई।

श्री दिलीप सिंहजी राठीने मोहताजी के जीवनपर भाषण देते हुए उपस्थित बन्धुओंसे यह अनुरोध किया कि आप अपने जीवन को सार्थक बनाने चाहते हैं तो देश और समाज की सेवामें हंसते हंसते जीवन उत्सर्ग कर दें। महा पुरुषों की जीवनियां हमें यही शिक्षा देती हैं कि हम भी उनके पथ पर चल कर समाज और देश को उन्नत बनायें। अन्तमें वक्ताने स्व. मोहताजी की भिन्न क्षेत्रों की सेवाओंकी प्रशंसा करते हुए श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। तत्पश्चात श्री श्यामलालजी देपुराने स्व. रामकृष्णजी मोहताकी जीवनी पर प्रकाश डाला। अन्तमें सभापतिजीने स्वर्गीय रामकृष्णजी मोहताकी जीवनी पर प्रकाश डालते हुए सब उपस्थित सज्जनोंको धन्यवाद दिया।

सब प्रकार के बीमे का काम

फायर श्री व जनरल

यूनिवर्सल

इंस्युरंस कंपनी

अपनी
जिंदगी
का
बी
मा
कराइये

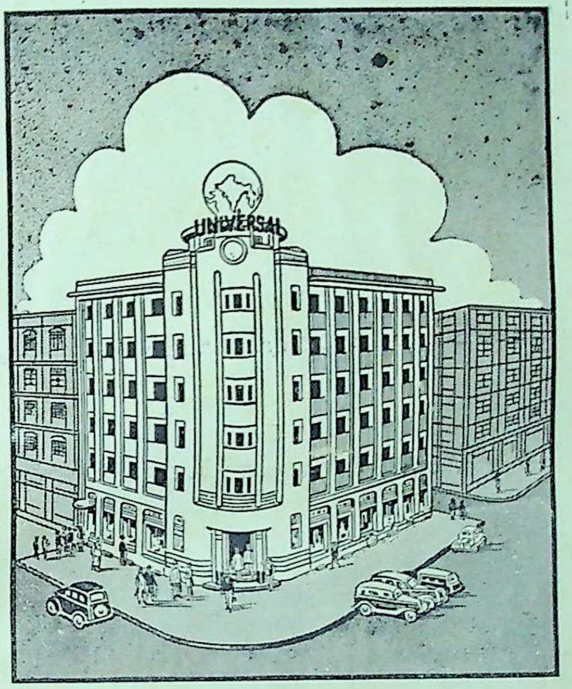

को
ही
दी
जि
ये

इसके डायरेक्टर्स हैं
१. दि. ब. कृष्णलाल मोहनलाल झवेरी एम्. ए. एलएल. बी.
२. सेठ लक्ष्मणदास हरखचंद डागा
३. राजा नारायणलाल बंशीलाल
४. श्री. जे. एच. मोदी सालीसिटर
५. श्री. केशवलाल हरीलाल सेतलवाड़
६. राय साहब केदारनाथ खेतान एम. एल. सी.
७. श्री. रणछोड़दास त्रिभुवनदास पोपावाला (मालपाणी) बी. ए.
८. श्री. कांतीलाल चिमनलाल मुन्शी बी.ए.

आग;
मशीन;
मोटर;
इत्यादि सब
प्रकार के
बीमे के लिये
हमें पूछिये

यह कम्पनी " माहेश्वरी "
द्वारा स्थापित की गई है।
स्व. सेठ वरजदासजी
भाईदासजी मालाणी इसके
संस्थापक थे।

सब प्रांतों में एजेन्सियां देनी हैं। आज ही एजेन्सी के आकर्पक नियमों के लिये लिखिये—

मेनेजिंग एजेन्टस--एम. कानजी एन्ड कंपनी

दी यूनिवर्सल फायर एण्ड जनरल इंस्युरन्स कं० लि०

सर फीरोज़ शाह मेहता रोड, बंबई

Printed by Vasant S. B. Shroff, B. A., B. SC., LL B. at the Bombay Vaibhav Press, Servants of India Society's Building
Sandhurst Road, Bombay [illegible] 72, Tulsi Vihar, Marine Drive, Bombay.

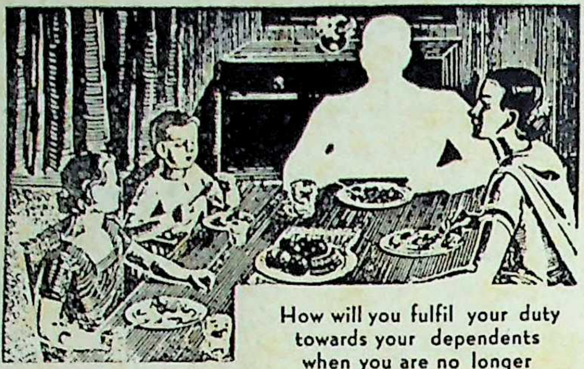

How will you fulfil your duty
towards your dependents
when you are no longer
a breadwinner ?

If you were not there...

कुटुम्बं का संपूर्ण संरक्षण

न्यु एशियाटिक की ' हैपी होम पॉलिसी ' बीमा की एक ऐसी अद्वितीय तथा अपूर्व योजना है जिसका कुटुम्ब की संरक्षा अधिक से अधिक प्रमाण में करने के हेतु से निमार्ण किया गया है ।

हमारा भारत गरीबी से पीड़ित है। ऐसी दशा में यहां कुंदुम्ब की संरक्षा के प्रश्न का हल अधिक आवश्यक है। ' हैपी होम पॉलिसी ' में पैसा लगाने से पैसे का अनुचित उपयोग नहीं होता और न वह किसी तरह की जोखम का काम ही है। ५०००) के बीमे से क्या मिलता हैः—

५००) और बोनस-मृत्यु के बाद
५०) मासिक-बीमे की शेष अवधि तक
४५००) बीमा की अवधि खतम होने पर

इस रकम से बच्चों की शिक्षा का प्रबन्ध हो सकता है अथवा वे कोई धंधा कर सकते हैं

पूर्ण विवरण के लिये लिखिये—

दी न्यु एशिआटिक लाईफ इंस्युरंस कम्पनी लिमिटेड

मैनेजिंग एजेन्टस्—**बिड़ला ब्रदर्स लिमिटेड**

हेड ऑफिस

कॅनाट सर्कस, नई दिल्ली

शाखाएं और प्रमुख कार्यकर्ता

उत्तरी विभाग
(कॅनाट सर्कस, नई दिल्ली)
लाहोर
रावलपिंडी
पेशावर (केन्टोनमेन्ट)
पटना
कानपुर

पूर्वी विभाग
(८, रायल एक्सचेन्ज प्लेस, कलकत्ता)
ढाका
बर्दवान
जलपाइगुरी
सिलहट
बर्मा

पश्चिमी विभाग
(४५–४७ अपोलो स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई)
हैद्राबाद (दक्षिण)
इर्नाकुलम
बेलगाम
अहमदाबाद
कराची

मध्य विभाग
(भवानी पेट, जळगांव)
इन्दौर
जबलपुर
नागपुर
अमरावती

दक्षिणी विभाग
(२८९ लिंगा चेट्टी स्ट्रीट, मद्रास)
मद्रास
सीलोन
त्रिचनापल्ली

वर्ष ३२
संख्या १३

माहेश्वरी

स्व० चम्पाबाई भट्टड़

बता जीव, क्या इसी लिए है यह जीवनका फूल हाय!
पका और कच्चा फल इसका तोड़ तोड़ कर काल खाय?

अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभाका मुखपत्र

स्व. भागीरथदासजी भूतड़ा
पाक्षिक
कार्यालय—अली चेम्बर्स, डीन लेन, फोर्ट, बम्बई.

श्री राजा नारायणलालजी पित्ती

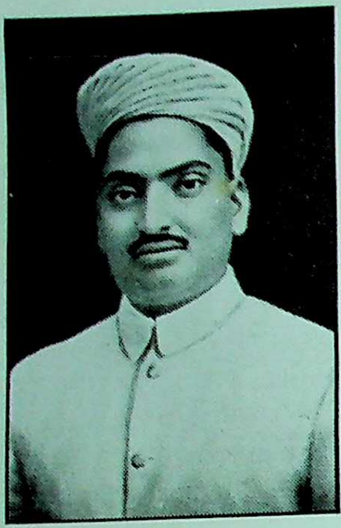

औरंगाबादमें आगामी १२, १३, १४ नवम्बरको होनेवाले हैद्राबाद स्टेट मारवाड़ी [राजस्थानी] सम्मेलन के आप सभापति चुने गये हैं।

श्रीमती रतनदेवीजी राठी, हैद्राबाद

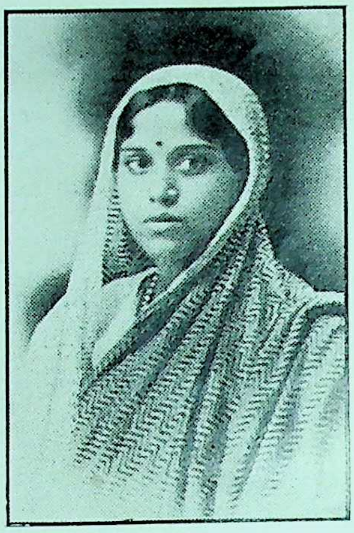

औरंगाबादमें आगामी १२, १३, १४ नवम्बरको होनेवाले हैद्राबाद स्टेट मारवाड़ी [राजस्थानी] सम्मेलनके अवसरपर होनेवाली महिला परिषदकी आप सभानेत्री चुनी गयी हैं।

हिन्दुस्तान में
गेंडा-मार्का
क्राफ्ट-पेपर
बनता है
मज़बूत
चीमड़
टिकाऊ
फिर कमज़ोर और भद्दे
कागजों की रैपिंग से
अपने व्यवसाय
को क्यों हानि पहुंचाते
हैं?
ओरिएण्ट पेपर मिल्स लि॰
८, रायल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता

सम्पादक समिति
श्री. लक्ष्मीनारायण मालाणी,
श्री. दामोदरदास मूंदड़ा,
श्री. राधाकृष्ण लाहोटी

माहेश्वरी

'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत'

प्रबन्ध सम्पादक
श्री. राधाकृष्ण लाहोटी
प्रकाशक
श्री. बसन्तलाल श्राफ़

वर्ष ३२, संख्या १३] बम्बई ता. ७ नवम्बर १९४१ [वार्षिक मूल्य ३ रुपया

प्रदर्शन और प्रचार

श्री गंगाप्रसादजी भोतीका एम. ए., बी. एल.

किसी भी उपयोगी वस्तु की उपयोगिताको सर्वसाधारण की जानकारीमें लानेके लिये प्रदर्शन और प्रचार (Show and Propaganda) बहुत उपयोगी सिद्ध हुए हैं। आधुनिक समयमें समय-समयपर प्रदर्शिनियां इसी उद्देश्य से की जाती हैं जिससे लोगों को मालूम हो कि अमुक वस्तु कैसी है और वह कहां प्राप्त हो सकती है। इसी प्रकार किसी नवीन वस्तुको जनताके सामने लानेके लिये उसका काफी प्रचार भी किया जाता है। इस प्रचारके, वर्तमान युगमें, अनेक प्रकारके साधन बन गये हैं जिनका विस्तृत वर्णन एक स्वतंत्र लेखका विषय बन सकता है। कहनेका अभिप्राय यह है कि यदि वस्तु वास्तवमें उपयोगी हो, तो उसे लोकप्रिय बनानेके लिये प्रदर्शन और प्रचार अत्यावश्यक हैं। किन्तु यदि कोई वस्तु हानिकर हो, तो उसका प्रदर्शन और प्रचार देश और समाजको काफी हानि भी पहुंचता है।

आज हमें प्रदर्शन और प्रचारकी उपयोगिताके सम्बन्धमें कुछ कहना नहीं है। इसके सम्बन्धमें जानकारी हासिल करनेके लिये पर्याप्त साधन मौजूद हैं। हमें यहां बतलाना यह है कि वर्तमान समयमें इनका किस प्रकार दुरुपयोग किया जाता है। पहले प्रदर्शनको ही, जिसे दूसरे शब्दोंमें 'दिखावा' कह सकते हैं, ले लीजिये। सामाजिक क्षेत्रमें इस दिखावेके कारण न जाने कितने कुटुम्ब बर्बाद हो गये। दहेज-प्रथाकी भयंकरताको बढ़ानेमें दिखावेने कम अनिष्ट नहीं किया है। यदि दिखावा न किया जाय, तो हमारे दूसरे भाइयोंको यह पता ही न चले कि हमने दहेजमें क्या लिया और क्यों दिया। ऐसी अवस्थामें समाजके सामने कोई बुरा उदाहरण उपस्थित नहीं हो सकता जिससे लोग यह समझें कि अमुकने इतना दिया तो हम कम कैसे दें। प्रत्येक मनुष्य अपनी परिस्थितिके अनुसार लेन-देनका व्यवहार कर सकता है। यदि दहेजका दिखावा और प्रचार न हो, तो लोगोंकी दृष्टिमें उसका महत्व बहुत-कुछ घट जाता है। न केवल दहेजमें ही, किन्तु विवाह आदिके दूसरे कामोंमें भी दिखावा फिजूल खर्चीको काफी प्रोत्साहन देता है। लोग अपना बड़प्पन दिखलानेके लिये ऐसे अवसरोंपर किसी-न-किसी प्रकारकी विशेषता लाना चाहते हैं और वह विशेषता बहुतसे अंशोंमें तभी आती है जब अधिक धन व्यय किया जाता है। बिना धनकी बर्बादीके प्रदर्शन या दिखावा हो ही कैसे सकता है। जो पुरानी रूढ़ियोंके पक्षपाती हैं वे भिन्न-भिन्न प्रकारके नेगचारों और बड़े-बड़े भोजोंमें धनका अपव्यय करते हैं तो जो सुधारक विचारोंके होते हैं वे मण्डपके सजाने और सन्देशोंके मंगाने आदि में धनका उपयोग करते हैं! मनुष्यकी स्वाभाविक प्रवृत्ति यह रहती है कि लोग उसके कामोंको देखकर उसकी प्रशंसा करें। अतः वह किसी न किसी रूपमें जनताकी प्रशंसा का पात्र बनना चाहता है। यदि लोग इन दिखावों और प्रदर्शनोंको वास्तवमें घृणा या अवहेलना की दृष्टिसे देखने लग जांय, तो किसीको प्रदर्शन करनेका प्रलोभन ही न हो। मनुष्यके जीवनमें अन्य कामोंके समान विवाह आदि अवसर भी हैं। उनमें जो कुरीतियां घुस गयी हैं उनको दूर करना तो आवश्यक है, किन्तु स्वयं उन्हें ही विशेष महत्वकी वस्तु बना देना सर्वसाधारणके सम्मुख एक अनुचित उदाहरण उपस्थित करना है।

सामाजिक क्षेत्रमें तो प्रदर्शनोंद्वारा बहुत बड़ा अनिष्ट हुआ ही है, किन्तु अन्य क्षेत्रोंमें भी झूठे प्रदर्शनों द्वारा जनताका कम अपकार नहीं हुआ है। राजनीतिमें जिन लोगोंने लम्बे-चौड़े प्रदर्शन किये, उनके द्वारा देशका कुछ भी हित नहीं हुआ। यदि कहा जाय कि उन्होंने देशका अनिष्ट किया, तो कोई अत्युक्ति न होगी। देखा जाता है, बहुतसे मजदूर नेता मिल मालिकोंसे पैसा ऐंठनेके लिये मजदूरोंमें झूठा-सच्चा प्रचार करके हड़ताल करवा देते हैं और यदि उन्हें पैसा मिल जाता है, तो मजदूरोंको धर्नेहक दे देते हैं और यदि पैसा नहीं मिलता, तो जनतासे मजदूरोंके नाम पर अपील करते हैं और किसी तरहसे अपनी विफलताको छिपानेकी चेष्टा करते हैं। कई एक राजनीतिक और सामाजिक नेता ऐसे भी हैं जो वास्तवमें काम तो करते हैं और समय आनेपर त्याग भी करते हैं, किन्तु साथही अखबारोंमें अपनी प्रशंसाके पुल बांधनेकी चेष्टा भी करते रहते हैं! यह काम वे स्वयं न करके दूसरोंके द्वारा करवाते हैं और इसको वे समाज और देशमें अपना प्रभाव बनाये रखनेके लिये आवश्यक भी समझते हैं। कहा नहीं जा सकता उनकी यह धारणा कहां तक उचित है।

प्रचार भी प्रदर्शनका ही दूसरा रूप है। प्रदर्शन वस्तुको सामने लाकर किया जाता है और प्रचार उस वस्तुकी उपयोगिता बतलाकर किया जाता है। आजकल प्रचारका भी काफी दुरुपयोग किया जा रहा है। वर्तमान युद्धको ही ले लीजिये। यदि जर्मनी द्वारा भेजी हुई खबरोंपर विश्वास करें तो यह धारणा हो जाय कि रूसकी शक्ति बहुत अधिक नष्ट हो गयी है, और यदि रूसकी खबरोंपर विश्वास करें तो ऐसा प्रतीत होने लगे कि जर्मनीको काफी क्षति उठानी पड़ रही है। बात असलमें यह है कि दोनोंकी ही बहुत अधिक शक्ति क्षीण हो रही है, किन्तु क्षतिके सम्बन्धकी जो संख्याएं प्रकाशित की जा रही हैं वे दोनों ही तरफसे बहुत बढ़ा चढ़ाकर की जा रही हैं। यह भी वे दोनों जानते हैं कि हमारी बातोंका दूसरे लोग पूरा विश्वास नहीं करेंगे, फिर भी वे ऐसा करते हैं। आजकलका प्रचार विशेष करके झूठे प्रचारका रूप धारण कर रहा है जिससे भोले-भाले लोगोंको धोखा हो जाता है जिससे वे ठगे जाते हैं और चालाक लोग लाभ उठा लेते हैं। समाचारपत्रोंमें जो विज्ञापन छपते हैं उनमेंसे अधिकांशमें अत्युक्ति भरी बातें रहती हैं। जिससे साधारण जनता धोखा खा जाती है और उनके धोखेबाज विज्ञापनदाताओंके पंजेमें आकर अपने धन और स्वास्थ्यको नष्ट कर देती है।

राजनीतिक क्षेत्रमें प्रचारका एक दूसरा कूटनीतिक रूप भी देखनेमें आता है। किसी विषयकी सत्यता जाननेके लिये अफवाहके रूपमें कोई कल्पित संवाद प्रकाशित कर दिया जाता है। जिसके सम्बन्धमें वह संवाद प्रकाशित होता है उसे जनतामें फैले हुए भ्रमको दूर करनेके लिये उसका प्रतिवाद निकालना पड़ता है। महात्मा गांधीजीको

(शेष पृष्ठ ७ के कालम २ पर)

किसको कल है

श्री कुंवरप्रसाद गुप्त 'रवीन्द्र'

विकल सकल, कह किसको कल है?
कल न प्रकृति को, क्या कल सदगति को?
पग पग पर दुर्मति छल है।

बर्बर व्याकुल बर्बरता को,
मानव चिन्तित मानवता को।
है मानव या दानव जिसको,
रक्त पानकी प्यास प्रबल है।
विकल सकल, कह किसको कल है!

कांप रहे हैं दिग्दिगन्त सब,
होगा इसका करुण अन्त कब?
असद् जलद भव नभ छाया,
सत् प्रबल पवन भी क्या न सफल है?
विकल सकल, कह किसको कल है?

रे, वायुयान बम बरखेसे,
क्या तोल अहिंसा चरखेसे।
वह सृष्टि संहारक, यह उद्धारक,
वह उथला, यह गहरा जल है!
विकल सकल, कह किसको कल है?

विकल निठुर, उद्विग्न अहिंसक,
न्यायी आकुल, व्याकुल हिंसक,
रे हिंसा आर अहिंसामें है,
कौन ग्राह्य, यह प्रश्न प्रबल है।
विकल सकल, कह किसको कल है?

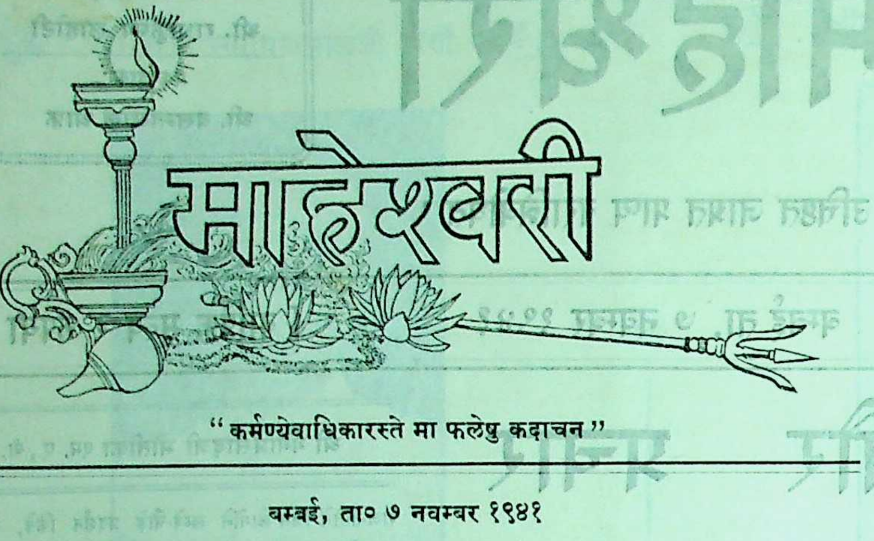

माहेश्वरी

" कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन "

बम्बई, ता० ७ नवम्बर १९४१

श्रीमती चम्पाबाई भट्टड़का दुःखद असामयिक देहावसान

आज इन पंक्तियोंको लिखनेकी हमने स्वप्नमें भी कल्पना नहीं की थी। इन पंक्तियोंको लिखते हुए हमारे हाथ कांप रहे हैं, हृदय स्तम्भित है और मस्तिष्क सुन्न है। शरीरके सारे अवयव शिथिल हैं। नेत्रोंसे अश्रुधारा बहती है और मस्तिष्क दुःखके विचारोंसे व्याप्त है। एक मास पूर्व जेलसे छूटते ही हमारा शरीर और मन जिस व्यक्तिका स्वागत करनेके लिए आगे बढ़ रहा था उसी व्यक्तिका अन्तिम संस्कार करते हमारे पांवोंको मानों लकवा मार गया है। श्रीमती चम्पाबाईजी भट्टड़के स्वर्गवासका दुःखद समाचार 'माहेश्वरी' के पाठकोंको सुनानेका दौर्भाग्य हमारे लिए ही बदा था। गत ता. २७ अक्टूबर को श्रीमती चम्पाबाईका अपनी स्वल्प आयुमें संसारसे चल बसनेका समाचार हमने सुना तो उसपर हम सहसा विश्वास नहीं कर सके। किन्तु ऐसी बातें मनुष्यके चाहने पर भी असत्य नहीं होतीं।

श्रीमती चम्पाबाईका जन्म सन् १९१८ में बम्बईमें श्री गोवर्धनदासजी बियाणी मालिक फर्म श्री सीतारामजी कनीरामजीके यहां हुआ। आपकी शिक्षा प्राथमिक दर्जे तक बम्बईमें ही हुई। सन् १९३२ में आपका विवाह सुप्रसिद्ध कार्यकर्त्ता श्री बंसीलालजी भट्टड़के साथ हुआ। विवाहके पश्चात् ज्यों-ज्यों सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्रमें कार्य करनेवाले कार्यकर्त्ताओंके साथ सम्पर्क बढ़ा, त्यों त्यों आपमें सार्वजनिक कार्य करने की प्रेरणा होने लगी। सन् १९३६ में पर्दा प्रथाको तिलांजलि देकर आपने सार्वजनिक क्षेत्रमें कार्य करना प्रारम्भ कर दिया। घर-घर जाकर चर्खा और खादी का प्रचार, साक्षरता का प्रसार आदि कांग्रेसके विधायक कार्योंमें खूब दिलचस्पी लेनी शुरु कर दी थी। अखिल भारतवर्षीय राष्ट्रीय महासभाका फैज़पुरमें जो अधिवेशन हुआ उसमें भी आपने स्वयंसेविकाके नाते लगनसे अहर्निश सेवाकार्य किया। और देशकी आज़ादीके लिए अपने को निछावर करने की मांग आते ही अपनी आहुति देनेमें भी आप पीछे नहीं रहीं। दिन दिन त्याग की भावना उनमें बढ़ती ही गयी। घी, शकर आदि का त्याग तो आपने किया ही किन्तु स्वभावतः स्त्रियों को आभूषण-आवरण का जो शौक रहता है उसको भी आपने जलांजलि दे दी।

श्रीमती चम्पाबाई ने मानों यह निश्चय ही कर लिया था कि देशकी आज़ादीके लिए वे ज्यादासे ज्यादा कुरबानी करेंगी। उन्होंने दो बार तीन-तीन मासके लिए जेलकी यात्रा की और तीसरी बार उस पथपर जानेकी तय्यारी ही थी कि विषमज्वरने आ घेरा। श्रीमती चम्पाबाईने स्त्री समाजकी उन्नतिके लिए कई बातें सोची थीं। स्त्री शिक्षाके लिए, उनका आग्रह था कि जल्दीसे जल्दी कोई उपयुक्त कार्यवाही की जाय। किन्तु यह सारे कार्य सत्याग्रह आन्दोलनकी समाप्ति पर ही निर्भर थे।

श्रीमती चम्पाबाई अपनी तेईस वर्षकी स्वल्प आयुमें ही कितनी लोकप्रिय हो गयी थीं इस बातका अन्दाज इसीसे लगाया जा सकता है कि उनके स्वर्गवासपर सातारा की आम जनताकी शोक प्रकाशनके लिए जो सभा हुई वह इतनी विशाल थी कि साताराके इतिहासमें वैसी सभा कभी नहीं हुई।

पता नहीं विधाताका क्या विधान है। किन्तु श्रीमती चम्पाबाईके निधनसे सामाजिक जीवनमें जो क्षति पहुंची है उसकी पूर्ति नहीं हो सकती। २१ साल पूर्व मारवाड़ी समाजके क्षितिजपर ऐसा ही एक उज्वल तारा श्री परशरामजी राठीकी धर्मपत्नीके रूपमें उदय हुआ था जिन्होंने बम्बई प्रान्तके सोये हुए मारवाड़ी समाजको और खासकर स्त्री समाजको जागृत करनेका बीड़ा उठाया था, उसके अचानक अस्त हो जानेसे वह कार्य अधूरा ही रह गया था। फिर श्रीमती चम्पाबाईके रूपमें ऐसा ही एक देदीप्यमान नक्षत्र दीख पड़ा और वह भी यों अकस्मात ही लोप हो गया। यह समाजका परम दौर्भाग्य है।

माताने पुत्री खोयी, पतिने एक अजोड साथीके रूपमें पत्नी खोयी, सम्बन्धियोंने एक प्रिय जन खोया और समाजने एक अमोल रत्न खोया। इन सबके लिए यह हानि अपरिमित है। जैसे उनके परिवारके लिए यह दुःखद घटना है वसे ही समाजके लिए भी कम दुःखकी बात नहीं। विधाताने श्रीमती चम्पाबाईको पार्थिव रूपसे हमारे बीचसे अचानक उठा कर चाहे उनके शरीरपर विजय पायी हो किन्तु हम माननीय बियाणीजीके शब्दोंमें यही कह सकते हैं कि गुणोंके कारण उन्होंने जन-जनके हृदयमें जो स्थान बना लिया था उसे छीननेमें वह समर्थ नहीं हो सका। श्रीमती चम्पाबाई समाजके बीच अपनी यशोगाथासे वैसे ही विद्यमान हैं जैसी कि वे शरीरसे विद्यमान थीं। ईश्वर उनकी आत्माको शान्ति प्रदान करे।

हैद्राबाद स्टेट मारवाड़ी (राजस्थानी) सम्मेलन

हैद्राबाद स्टेट मारवाड़ी (राजस्थानी) सम्मेलन का द्वितीय अधिवेशन आगामी १२, १३, १४ नवम्बरको औरंगाबादमें होने जा रहा है। इस सम्मेलन की स्वागत समितिने सम्मेलन एवं इसी अवसर पर होने वाले युवक सम्मेलन एवं महिला सम्मेलनके सभापतियों व सभानेत्री को चुनने में जो बुद्धिमत्ता एवं कसे हुए कार्यकर्त्ताओंका गौरव करनेका परिचय दिया है उसके लिए हम उसका हार्दिक अभिनंदन करते हैं।

राजस्थानी समाज सारे देशभरके कोने-कोनेमें फैला हुआ है। कोई भी स्थान या ग्राम-नगर ऐसा नहीं जहां राजस्थानी लोग पहुंचे हुए न हों। भारतके अधिकांश बड़े-बड़े नगरोंमें उनके व्यापार-व्यवसायकी धूम है। फिर भी मारवाड़ी समाज उतना अधिक सामाजिक दृष्टिसे उन्नत नहीं देखा जाता। दूसरे समाजोंकी दृष्टिमें उसकी वह प्रतिष्ठा नहीं, जो होनी चाहिए। इसलिए आवश्यकता इस बातकी है कि देशभरमें फैले हुए इस राजस्थानी समाजका संगठन किया जाय और उसे सामाजिक दृष्टिसे भी उन्नत बनाया जाय। इस कार्यके लिए इस प्रकारके विविध सम्मेलन आदि का होते रहना नितान्त आवश्यक है जिससे उस-उस प्रान्तका राजस्थानी समाज संगठित हो सके और अधिकाधिक एक दूसरेके निकट आये और यही नहीं, परस्पर संगठित होकर कार्यकर्तागण और सर्वसाधारणमें सामाजिक उन्नति के उपायोंपर विचार विनिमय हो। इससे समाजको उन्नत बनानेमें बहुत बड़ी मदद मिल सकती है।

सम्मेलनके सभापति पदके लिए श्री राजा नारायणलालजी पित्तीका नाम चुना गया है। और सम्मेलनके अवसरपर होनेवाले नवयुवक सम्मेलन व महिला सम्मेलनके लिए क्रमशः श्री हरिश्चन्द्रजी हेड़ा बी. ए., एलएल. बी. व श्रीमती रतनदेवीजी राठीको चुना गया है। इन तीनों महानुभावोंका निर्वाचन अत्यन्त सुन्दर और आशाप्रद हुआ है। राजस्थानी सम्मेलन जैसे समारोहमें विभिन्न सभापति पदोंके लिए इन तीन महानुभावोंके चुने जानेसे हमें न सिर्फ इस सम्मेलनकी सफलता बल्कि हैद्राबादके समस्त मारवाड़ी समाजकी सामाजिक उन्नतिकी आशा दीख रही है। सभा सम्मेलनोंके नायकोंके हाथमें जो संचालन सूत्र दिया जाता है वह भविष्यमें होनेवाले कार्यपर बहुत बड़ा असर रखता है। यदि सम्मेलन सफल हो गया और उसमें भविष्यके संगठन व सामाजिक सुधारके लिए कोई ज़ोरदार योजना बनी तो निःसन्देह एक बहुत बड़ा काम हो सकता है।

सम्मेलनके मनोनीत सभापति श्री नारायणलालजी पित्तीका सम्बन्धमें हम इतना ही कहना काफ़ी समझते हैं कि सम्मेलनने सभापतिके रूपमें उन्हें निर्वाचित करके बहुत बड़ी दूरदर्शिताका परिचय दिया है। इस अवसर पर रहीमकी एक उक्ति स्मरण हो आती है।

धूर धरत नित शीशपर, कहु रहीम किहि काज।
जिहि रज मुनि पत्नी तरी, सो ढूंढत गजराज॥

अर्थात् गजराज अपनी सूंडसे अपने सिरपर बारबार धूल डाल रहा है, इस आशासे कि उसमें शायद ऐसा कोई रजकण निकल आय जिससे अहल्या तर गयी थी और उसका भी भवसागरसे निस्तार हो जाय। हमारा समाज भी ऐसे लोगों की तलाशमें रहता है जिनसे वह तर सके। एक न एक दिन यह आशा समाज की पूरी होगी। उसका प्रयत्न व्यर्थ नहीं होगा। हैद्राबाद मारवाड़ी सम्मेलनने श्री राजा नारायणलालजी पित्ती जैसे दान वीर समाज सुधारक व उत्साही नेताको सभापति पदके लिए चुनकर एक बहुत बड़ी आशा की है और हमें विश्वास है कि यह आशा व्यर्थ

नहीं जायगी। श्री राजा नारायणलालजी के सभापतित्वमें यह सम्मेलन होनेपर हैद्राबाद के मारवाड़ी समाजमें जरूर नवजागृति पैदा होगी और वह समाज सुधारके कार्यमें ज़ोरशोर लग जायगा। श्री राजा नारायणलालजी के बारेमें अधिक क्या कहा जाय। उनमें समाज सुधार और विशेषकर स्त्री शिक्षाके कार्यमें कितनी लगन है यह कौन नहीं जानता? और केवल लगन ही नहीं उन्होंने स्त्री शिक्षाके लिए ठोस कार्य भी किया है। आर्यकन्या महाविद्यालय बड़ौदा उन्हीं की बदौलत चल रहा है। वही उसके प्राण हैं। इस कार्यमें मुक्तहस्त होकर उन्होंने दान किया है। उनकी दानवीरता के लिए क्या कहा जाय?

तरुवर फल नहीं खात हैं, सरवर पियहिं न पान।
कहि 'रहीम' परकाज हित, सम्पति सुचहिं सुजान॥

कवि रहीमका यह दोहा उनपर ठीक चरितार्थ होता है। जिस प्रकार फलों के भारसे झुके हुए पेड अपने फल स्वयं नहीं खाते, जिस प्रकार तालाब अपना पानी स्वयं नहीं पीता उनके फल और जल दूसरों की ही भूख और प्यास मिटानेके काम आते हैं उसी भांति सुजान लोग अपनी सम्पत्तिका भी अपने लिए नहीं दूसरोंके लिए दान करते हैं। उनकी दानवीरता शिक्षाके कार्यमें खुब प्रकट हुई है। सम्भव है आज हममेंसे बहुतसे लोग दूसरे विषयोंमें उनसे मत भेद रखें पर उन्हें उनकी समाज सुधारकी लगनका सिक्का तो मानना ही होगा। राजनैतिक कार्यमें भी गत सन् १९३० में उन्होंने हिस्सा लिया था और आज उस विषयमें मतभेद हो जानेपर भी वह मतभेद केवल मत तक ही सीमित है, उनका व्यवहार आज भी अपने रास्तेपर वैसाही सौम्य है।

नवयुवक परिषद्के सभापति श्री हरिश्चंद्रजी हेडा भी हैदराबादके राजस्थानी समाजके उन गिने-चुने नवयुवकोंमेंसे हैं जिन्हें वहांकी जागृति और समाज सुधारकी प्रगतिका श्रेय दिया जा सकता है। वे एक सच्चे युवक हैं, विद्वान् और मनीषी हैं। ज्ञान और कार्यक्षमता दोनोंमें ही वे अपने ढंगके अनोखे हैं। उनके सभापतित्वमें सम्मेलनकी यह नवयुवक परिषद राजस्थानके युवकोंको निःसन्देह कुछ नया सन्देश, नयी स्फूर्ति और नयी प्रेरणा दे सकेगी।

महिला परिषद्की सभानेत्री श्रीमती रतनदेवीजी भी राजस्थानकी इनी गिनी विदुषी महिलाओंमेंसे हैं। उनके हाथों इस सम्मेलनमें एक बहुत बड़ा काम हो सकेगा इसमें सन्देह नहीं। विद्वत्ताके इलावा समाज सुधारकी लगन और समाजपर धाक–ये दोनों वस्तुएं उन्होंने अपने भीतर से तो पायी ही हैं, पर बपौतीमें भी इन्हें प्राप्त किया है। उनकी माताजीकी अपने समयमें वहांके समाज और पंचायत पर इतनी धाक और प्रभाव था कि वहांकी पंचायत उनकी अनुमतिके बिना कुछ कर नहीं सकती थी। हमारे समाजमें यों ही स्त्रियोंका बहुत कम स्थान है और उसपर इतनी बड़ी धाक होना तो प्रायः कल्पनासे बाहरकी वस्तु है। पर उन्होंने अपनी योग्यताके बलपर वह धाक पैदा कर ली थी। उन जैसी महिलाकी पुत्रीके रूपमें श्रीमती रतनदेवीजीसे बहुत बड़ी आशायें होना स्वाभाविक ही है।

सम्मेलनकी स्वागत समिति और प्रचार विभागसे जो समाचार मिले हैं वे सम्मेलनकी भावी सफलताके द्योतक हैं। सम्मेलनकी सफलताकी आशाके लक्षणोंसे यह स्पष्ट जान पड़ता है कि अब हैद्राबादका मारवाड़ी समाज निःसन्देह जाग उठेगा और समाजसुधार, संगठन और उन्नतिकी दिशामें बहुत बड़ा कदम उठा सकेगा। हम सम्मेलनकी हृदयसे सफलता चाहते हैं।

सुधारकोंसे शिकायत

'माहेश्वरी' कार्यालयमें अनेकबार ऐसे लेख या पत्र आते हैं जिनमें उनके लेखक या प्रेषकका न तो नाम ही रहता है और न उनके पते ठिकानेका ही कोई उल्लेख होता है। ऐसे लेख व पत्र प्रायः किसी व्यक्ति विशेषकी या उसके कार्यकी आलोचना करनेके लिए ही लिखे जाते हैं। इन्हें प्रकाशित करना न समाजके लिए हितावह है और न हमारे ही लिए। इस प्रकारकी कड़ी आलोचनाओंमें यदि कोई सज्जन आलोच्य व्यक्ति या जनताके सामने अपने आपको खुले आम प्रकट करनेका नैतिक बल न रखते हों तो भी उन्हें सम्पादकसे अपना नाम नहीं छिपाना चाहिए अन्यथा जिन व्यक्तियोंपर आक्षेप किये गये हैं और उन आक्षेपोंका आधार जिन घटनाओंको बनाया गया है उनके सत्य या असत्य होनेका निर्णय किसी भी तरह किया नहीं जा सकता। ऐसे लेखकोंके लेखोंको जो आक्षेप करके अपना नाम तक प्रकट करनेका नैतिक साहस नहीं दिखा सकते और सम्पादकको आगे करके आड़से काम करना चाहते हैं, फाइलमें रख देनेके सिवाय और कोई महत्व नहीं दिया जा सकता।

यदि कोई भाई किसी व्यक्तिकी या उसके किसी कार्यकी आलोचनाकर सच्चे हृदयसे उसे सुधारना चाहता है तो उसका पहला फ़र्ज़ है कि वह प्रकट रूपसे आगे आये। दूसरी बात यह कि समचार पत्रों का सहारा लेनेकी अपेक्षा उन मित्रोंसे रूबरू मिल कर बात चीत द्वारा परिस्थिति का उसे ज्ञान करा दे तो वह स्वयं उसके हक़में भी ठीक होगा और उसके आलोच्य मित्रके हक़में भी। और यदि किसी खास कारणसे वह सामने नहीं आ सके तो भी जिस सम्पादक पर सब उत्तरदायित्व वह डाल देना चाहता है उसके सामने तो उसे अपना नाम प्रकट कर देना चाहिए। ऐसी अवस्थामें ही उस आलोचनाकी कुछ कीमत होगी और उसका महत्व और सचाई आंकी जा सकेगी।

इन गुमनाम पत्रोंपर यहां लिखनेकी आवश्यकता नहीं पड़ती। किन्तु अभी हाल हीमें हमारे पास एक ऐसा पत्र आया है जिसमें कुछ इस प्रकारकी बातें लिखी हैं जिन्हें ध्यानमें रखते हुए यहां प्रकाश डालना आवश्यक होगया है। इस पत्रके प्रेषक महोदय की शिकायत है कि जो सामाजिक कार्यकर्त्ता समाजसुधारके लिए प्रचार करते हैं यदि वे उन सुधारोंको अपने घरसे ही शुरु करें तभी वे जनतापर प्रभाव डाल सकते हैं। परन्तु विपरीत इसके वे सुधार उनके अपने ही घरोंमें नहीं होते। उदाहरणके तौर पर उन्होंने पर्दाप्रथाको लेकर लिखा है कि जो सज्जन दूसरे पुरुषोंकी स्त्रियोंको घूंघट उड़ानेका उपदेश देते हैं पर अपनी स्त्रियोंका घूंघट नहीं उड़ाते उनका असर समाजपर बहुत बुरा पड़ता है। इन भाईसे व इन्हींके सदृश विचार रखनेवाले महानुभावोंसे हमारा निवेदन है कि जो सुधार दूसरे व्यक्तियोंसे सम्बन्ध रखते हैं उनका उनके द्वारा पालन होना या न होना—फिर चाहे वे लोग स्वयं सुधारका प्रचार करने वाले महाशयके घरके ही क्यों न हो—स्वयं उन्हीं पर निर्भर करता है। कल्पना कीजिए कि एक सज्जन हैं जिनके हृदयमें समाज सुधारकी लगन है, उत्साह है और जिन सुधारोंका वे जनतामें प्रचार करना चाहते हैं, उनका सम्बन्ध जहां तक स्वयं व्यक्तिसे है, उन्हें अपने जीवनमें उतारना भी चाहते हैं। किन्तु दूसरे व्यक्तियोंसे सम्बन्ध रखनेवाले सुधारोंके मामलोंमें उनके परिवारके लोग उदाहरणार्थ उनकी पत्नी, माता या भाई–बहन आदि यदि उनमें आस्था नहीं रखे तो इसमें उनका क्या दोष है और समाज पर उसका बुरा असर भी क्यों हो? प्रकृतिने प्रत्येक व्यक्तिको विचार करने की स्वतन्त्रता दी है और हरेकको विचार करनेकी शैली भी जुदा—जुदा है। अपने अनुकूल विचार कराने के लिए दूसरों पर सख्ती या जबर्दस्ती नहीं की जा सकती। समाज सुधार का प्रचार सख्ती का प्रचार नहीं वह तो उपदेशात्मक प्रचार है। जिन्हें प्रचारकोंकी बातोंमें कुछ तथ्य और सचाई मालूम हो वे उन्हें अपने जीवनमें उतारें। इसी प्रकार इस बात को परिवार पर भी लागू किया जा सकता है। सुधारकोंके लिए सुधारके क्षेत्रमें अपने और परायेका भेद सम्भव नहीं। जिन बातों को वे समाज से कहते हैं उन्हें ही अपने परिवार वालों से भी कहते हैं पर वे दूसरों की ही तरह उन्हें भी बलप्रयोग से बाधित नहीं कर सकते। यही शान्तिमय सुधारकी मर्यादा है जिसका उल्लंघन कहीं भी नहीं हो सकता। हां, यदि उन सुधारों को स्वयं अपने व्यक्तिगत जीवनमें वह नहीं उतारे तो उसका समाजपर कोई असर नहीं होगा क्यों कि उसकी ईमानदारी और गम्भीरतामें सन्देह किया जा सकता है। इस बातको प्रायः सुधारक लोग स्वयं महसूस करते हैं और इतना ही नहीं, इस मर्यादाका उल्लंघन करने पर उनकी लज्जाकी भी सीमा नहीं रहती।

एक व्यक्तिके विचार सामाजिक दृष्टिसे बहुत परिष्कृत हैं, वह एक अच्छा विचारक है और अपनी धुनमें पक्का है। किन्तु उसकी स्त्रीके विचार उसके विचारों से मेल नहीं खाते, सिर्फ इतने से ही उसे अपने विचारों का प्रचार करनेमें क्यों बाधा आनी चाहिए? यदि कोई यह समझता है कि स्त्री समाजसे पर्दा उठ जाना चाहिए, पर उसपर–अपने घरमें या बाहर–कोई जबर्दस्ती नहीं की जानी चाहिए तो इसमें अनुचित क्या है? यह विचार रखने की उसे स्वतंत्रता है। पर इतने से ही उसे इस अधिकार और स्वतन्त्रतासे वंचित नहीं किया जा सकता कि वह हृदयमें इस बातको अनुभव करे कि स्त्री समाज से पर्दा उठ जाना उसके हितमें बहुत अच्छा है और वह इस बातका प्रचार भी कर सके। सुधार करना उचित है पर सख्ती करना सुधार नहीं और उचित भी नहीं। प्रत्येक व्यक्ति जो काफी समझदार है, उसे दृष्टिकोण की इतनी उदारता जरूर रखनी चाहिए कि सुधारक लोगों को उनके सम्बन्धी समाजकी जो भयंकर रूढ़िग्रस्त अवस्था है उसमें वह इतने कड़े दृष्टिकोणसे नहीं मापें। आशा है कि इस पत्रके लेखक व उनके ही सदृश विचार रखने वाले दूसरे लोग इस दृष्टिकोणसे विचार करेंगे।

श्री हीरालालजी लाहोटीका दुःखद अवसान

समस्त माहेश्वरी समाजमें इस समाचारसे दुःख अनुभव किया जायगा कि गुलबर्गाकी सुप्रसिद्ध फर्म श्री दयारामजी सूरजमलजीके मालिक श्री सेठ हीरालालजी लाहोटीका ७२ वर्षकी आयुमें गत १ नवम्बरको हैद्राबादमें स्वर्गवास हो गया है। आपके देहावसानसे माहेश्वरी समाजका एक प्रतिष्ठित और कुशल बुद्धि व्यवसायी उठ गया है। यह आपकी व्यावसायिक पटुताका ही फल है कि आज श्री दयारामजी सूरजमलजी फर्म हैदराबाद रियासत की मारवाड़ी फर्मोंमें एक अच्छा स्थान रखती है। आपने इसकी खूब उन्नति की।

व्यापारिक क्षेत्रमें पटुता ही नहीं, विचारोंके क्षेत्रमें उदारता भी आपमें उतनी ही पायी जाती थी। आप विचारोंकी स्वाधीनताके प्रबल पक्षपाती थे और स्वयं चाहे जैसे विचार रखनेपर भी दूसरोंके विचारोंकी स्वाधीनतामें उनका विश्वास था।

उनके निधनसे व्यवसायी व माहेश्वरी समाजमें बहुत बड़ी क्षति महसूस की जायगी। भगवान् उनकी दिवंगत आत्माको शान्ति प्रदान करे।

(पृष्ठ १५ के कालम ३ पर)

हिटलर एशिया में

फ़्रिट्ज़ स्टर्नबर्ग

हम जानते हैं कि ब्रिटिश साम्राज्यमें कई दल हैं जो ब्रिटिश शासक श्रेणीसे ख़ार खाते हैं और किसी भी अवस्थामें वे ब्रिटिश साम्राज्यको वर्तमान रूपमें नहीं अपनायेंगे। हमें मालूम है कि जब मार्शल ग्रेज़ियानी की फौजोंने मिश्रपर चढ़ाई की, तब ब्रिटेन मिश्रसे युद्धकी घोषणा करानेमें असफल रहा। ब्रिटिश शासनादेश के खिलाफ अरबोंके विद्रोहको हम जानते हैं।

द्वितीय विश्वयुद्धके पहले डेढ़ सालने अर्थात् हिटलरके बाल्कन प्रदेशोंकी विजयके पूर्व ालने खास एशिया पर अप्रत्यक्ष तौर पर प्रतिक्रिया की है। फ्रान्सके शीघ्रपतनने जापानके इन्डोचायनामें आक्रमण करनेकी संभावना प्रदान की। ब्रिटेनके कमजोर बनने और भूमध्य तथा अटलान्टिक महासागरमें बहुत बड़े जहाजी बेड़ेको रोके रखनेकी आवश्यकताके कारण जापानकी इच्छाको सहारा मिल गया और उसने अपनी परराष्ट्र नीति चीनमें से हटाकर दूर दक्षिणमें आक्रमण करनेके लिए बदली। दूसरी ओर, यूरोपीय युद्धका हरेक चरण, रूसो-जापान संबंधोंके लिये अत्यंत महत्वपूर्ण था और अब भी है, और इसका स्वरूप एशियाके भविष्यके लिये अत्यधिक अर्थसूचक हो गया है। बाल्कन युद्धोंके खत्म होनेसे पूर्व ही यह सब साफ साफ नज़र आता था। तभीसे किसी प्रकार यह यूरोपीय युद्ध खास एशियामें फैला है, और एक दूसरी बातको सिद्ध करता है कि यह दूसरा युद्ध वास्तवमें 'विश्वयुद्ध' है।

ब्रिटिश साम्राज्यमें युद्ध जारी रखनेके इटलीके सब प्रयत्न निष्फल हुए, जब कि जर्मनीके सब प्रयत्न आसानीसे विजयकी ओर ले जा सकते थे। जर्मनोंने लीबियामें यह सिद्ध कर दिखाया कि उसकी मोटर-सेना एक शक्तिशाली सेना थी जो कि मार्शल ग्रेज़िआनी की सेना से बहुत भिन्न थी। हमें यह समझ लेना चाहिए कि जो सेनाएं एशिया और अफ्रीकामें जमा की जांय, और अगर जर्मन हाइकमांड इन प्रदेशोंमें बड़े प्रमाणमें लड़ाई लड़ना चाहे तो—वह जनरल वावेलकी ब्रिटिश सेना से कहीं अधिक श्रेष्ठ होनी चाहिये—और चर्चिलके शब्दोंमें कहा जाय तो वह पांच लाख सैनिकों की होनी चाहिये।

क्या क्या संभवनाएं हैं? नाज़ी जर्मनी को एशियामें विजय प्राप्त करके क्या क्या मिल सकता है? हम यहां अत्यंत प्रतिकूल संभावनाओंका भी जिक्र करेंगे। हम मान लेते हैं कि हिटलरको स्वेज़ की नहर, तथा ईराकके तेलके कुआका स्वामित्व मिल गया, और ईरानको भी उसने अपने प्रभाव-क्षेत्रमें शामिल कर लिया, और वह सचमुच हिंदुस्तान तक युद्धको खींच लानेमें सफल हुआ। लेकिन इससे उसे क्या लाभ होगा? उसके द्वारा प्राप्त की हुई सिद्धियां चाहे जैसी भी हों, लेकिन वे मामूली नहीं हैं, और उनकी कीमत कम आंकना बड़ी भारी भूल होगी। एशियामें हिटलर की विजयें बहुत प्रतिक्रिया पैदा करेंगी।

सबसे पहले, नाज़ी जर्मनी महत्वपूर्ण कच्चे मालके उत्पत्ति स्थानोंपर अंकुश जमायेगा। मिश्रकी रूईके पश्चात् ईराकके और शायद ईरानके तेलके कुओंकी जर्मन व्यूहरचनामें अत्यंत उपयोगिता है। तृतीय राइखने यह द्वितीय विश्वयुद्ध तीन विभिन्न चीजोंकी गंभीर कमीके साथ शुरू किया है; वे हैं—खाद्य पदार्थ, कच्चा लोहा और तेल। आज दो वर्षके बाद विशाल जर्मनीमें समग्रतया अनाज की परिस्थिति युद्धकी शुरुआतसे ज्यादा खराब है। तृतीय राइखने सारे यूरोपको जीत लिया है। और जीते हुए तथा अपनी एड़ीके नीचे दबाए हुए देशोंके १५ करोड़ मानवोंपर, फ्रांससे हंगरी तक, नीदरलेंडसे युगोस्लाविया तक, डेन्मार्कसे बल्गेरिया तक विशाल जर्मनीको अनाज पहुंचानेके लिये बाधित किया। इन सब देशोंकी अपनी प्रजाके लिये अनाजकी परिस्थिति दिन ब दिन बिगड़ती जा रही है, केवल एक जर्मनीकी स्थिति ही अब भी भलीभांति स्थिर है।

यूरोपकी विजयके कारण जर्मनी कच्चे लोहे की दृष्टिसे अच्छी तरह स्वाश्रयी बन गया है; इस धातु का कोयलेके बाद दूसरा स्थान है; फौलादके लिये अत्यंत महत्वपूर्ण कच्चा पदार्थ है और इसी प्रकार युद्धके लिये भी उपयोगी है। फ्रांस एवं स्वीडन के कच्चे लोहेका उत्पादन जिसके यातायात पर ब्रिटिश घेरेबंदी का कोई असर नहीं—और साथही जर्मनीका अपना उत्पादन, यह सब मिलकर जर्मनीके फौलादके उद्योग की आवश्यकताओंके लिए पूरी तरह पर्याप्त होते हैं।

तेलकी गंभीर तंगी पहले भी थी, और आज भी किसी प्रकार ज्यों की त्यों है। रूमानियाको ले लेनेके बाद कुछ हद तक इसकी स्थिति उच्च हुई है, क्योंकि उसका उत्पादन करीब ६०००००० टनका है, और वह जर्मनीके यूरोपमें अधिकृत देशों तथा उसके साथ जर्मनीके अपने तेल-उत्पादनको मिलाते हुए भी इन सबसे ५० फी सदी ज्यादा है। अब यदि जर्मनी ईराकके तेलके कुओं, (जिनका उत्पादन १९३९ में ४१२०००० टनका था) और ईरानके तेलके कुओं (१९३९ में १०३७०००० टनका उत्पादन था) पर भी अधिकार स्थापित कर ले तो उसके पास अपने उपयोगके लिये पहलेसे दुगने तेलके उत्पत्तिकेन्द्र हो जांय।

क्या ये परिस्थितियां समस्त ब्रिटिश घेरेबंदीको निष्फल नहीं बना सकतीं? यहां पर यह घेरे बन्दी बहुत सादी तथा यांत्रिक है, ऐसा विचार करनेसे पहले हमें विशेष सावधान होना चाहिए। यह बात बार बार मान ली गई है कि सफल घेरेबन्दी—जिससे तृतीय राइख़को अनाज व कच्चा माल मिलना बिलकुल बन्द हो जायगा—स्वभावतः ही अकाल और कच्चे मालकी तंगी इतने प्रमाणमें पैदा करेगी कि केवल यही अकेली चीज़ हमें विजय दिला सकती है। परंतु यहां तक कि यह बात प्रथम विश्वयुद्धमें भी सच्ची नहीं थी, जब कि ब्रिटिश घेरे बन्दी आजकलकी अपेक्षा कहीं अधिक शक्तिशाली थी, क्योंकि द्वितीय विलियम 'इकोनोमिक जनरल स्टाफ' के बिना ही युद्धमें उतरे थे, और जर्मनोंके उस समयकी यूरोपकी विजयों का आजकी विजयों से कोई मुकाबला ही नहीं किया जा सकता। यहां तक कि प्रथम विश्वयुद्धमें भी चार वर्षके युद्धके पश्चात् केवल घेरे-बन्दी ही विजय प्राप्त करानेमें निष्फल थी। पश्चिमीय मोर्चेपर मित्रराष्ट्रों की फौज़ी सफलताओं से ही वह विजय मिली—सफलताएं जो घेरे बंदीके परिणामस्वरूप जर्मन-सेनाको भयंकर हानियां पहुंचने से सरल हो गई थीं। इन सफलताओंके अभावमें द्वितीय विलियम का जर्मनी युद्धके पांचवें वर्ष सन् १९१९ में भी युद्ध चालू रखनेमें सचमुच समर्थ हुआ होता।

प्रथम महायुद्धके बारेमें यह ठीक हो सकता था। परंतु चालू द्वितीय विश्वयुद्ध तृतीय राइखने, इकोनोमिक जनरल स्टाफ—जिसने प्रथम विश्वयुद्धके कड़वे अनुभवोंके द्वारा शिक्षा प्राप्त की है—की मददसे शुरू किया है। खाद्य पदार्थकी तथा अन्य आवश्यक पदार्थोंकी उत्पत्तिका इसमें पूर्ण ध्यान रखा गया है। इसके अलावा, तृतीय राइख़को अब यूरोपीय महाद्वीपसे सारा कच्चा माल मिल सकता है और निकट भविष्यमें एशियासे भी, बहुत संभव है, खास खास साधनोंको पानेमें वह समर्थ हो। इसी कारण आज इसकी परिस्थिति पहलेसे कहीं अधिक अच्छी है। दूसरी ओर ब्रिटेनके लिये घेरेबन्दी एक पूरक (Supplemental) हथियार है, और एशियामें हिटलरकी पलटनोंके साथ भी वैसा ही होगा। यह द्वितीय विश्वयुद्ध और किसी भी समयके युद्धकी अपेक्षा अधिक उद्योगों और कारखानोंका युद्ध है। जन-शक्तिसे दूसरे दर्जेमें साधन शक्ति आती है जो लड़ाइयोंका फैसला करती हैं, और वैसे साधनोंको तैयार करनेमें सारे शत्रु राष्ट्र तथा मित्र राष्ट्र उद्योगों को खूब आगे बढ़ाते हैं। यूरोपमें ब्रिटिश घेरेबंदी हिटलरके द्वारा शासित देशोंको खाद्य सामग्रीके लिये चिंतित कर रही है और जर्मनीको इस बातके लिये बाधित कर रही है कि वह कब्ज़ा करनेवाली नाज़ी सेनाका निर्वाह करे जब तक कि अन्य किसी प्रकारकी व्यवस्था न हो जाय। यह आवश्यकता नाज़ी डिविज़नोंकी संख्याको मर्यादित कर देती जिनका युद्धके कार्यमें उपयोग लिया जा सकता था।

इससे भी आगे, घेरेबंदी मनुष्योंकी क्रियाशक्तिको घटा देती है, और अनुत्पादक कार्योंकी शृंखला उत्पन्न करती है। दूसरे शब्दोंमें औद्योगिक पैदावार गिर जाती है, और यह उद्योगकी लड़ाई १९४१ के आगे भी चलती रहे। तो पैदावार की यह मन्दी शायद एक निर्णायक चीज़ ही बन जाय।

प्रथम महायुद्धमें युद्ध प्रारंभ होनेके दो वर्ष बाद ही यानी १९१६ के पश्चात् यह बात अधिक स्पष्ट रूपसे दिखाई देने लगी थी। लक्षण आज भी हमें बतलाते हैं कि कुछ साधनोंके अभावके कारण और मजदूरोंके सिर पर अधिक बोझ लद जानेसे जर्मनीकी मालकी पैदाइश फिरसे घटने लगी है। 'नौए त्सौरख़र त्साइटुंग' अखबारके बर्लिन स्थित संवाददाताने जर्मनी और यूरोपमें सबसे बड़ी शस्त्र सामग्री तैयार करनेवाली क्रुप कंपनीका उस अखबारके आय संबंधी कॉलममें उसकी हाल ही की आयका ब्यौरा दिया है। हमारे मतलबके लिये तो सिर्फ़ इतना ही समझ लेना महत्वपूर्ण है कि गतवर्ष कलपुर्ज़ोंकी साफ सफाईका कार्य भी क्रुप कंपनीके लिये कठिन बन गया था। उसका वक्तव्य निम्न है, "पिछले वर्ष के दरम्यान यंत्रोंको बदलनेमें इतनी तेज़ी नहीं आ सकी जैसी कि शुरूमें सोची गयी थी। फलस्वरूप ऐसे खाते जैसे कि "अधूरे नये यंत्रों की जमावट" में खूब वृद्धि आगई है। इस तरह हम पिछले सालोंमें लिए गए लोन का उपभोग करनेमें असमर्थ रहे ... बढ़ते हुए यांत्रिक कामकाजके कारण, कलपुर्जों की दुरुस्तीमें भी उसी प्रमाणमें वृद्धि हुई, यद्यपि इन ज़रूरतों को पूर्णरूपेण संतोषकारक बनानेमें हम असफल रहे।"

और यदि क्रुप कंपनी तक को ऐसी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है तो एक तरह से जर्मनीके सारे उद्योगोंको अपने कार्योंमें कई गुनी अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा होगा।

सारांश यह है कि एशियामें हिटलर कई प्रकारसे जर्मनीके कच्चे माल की हालत सुधार सकने योग्य हो जायगा। परंतु अन्नतो गत्वा ब्रिटिश घेरेबंदीका शस्त्र दूसरे शस्त्रोंके लिये पूरक बनकर सफल रहेगा।

दूसरे, कच्चा माल प्राप्त करनेमें सफल हो जानेके अलावा एशियामें हिटलरके प्रहारका आगे चलकर महत्वपूर्ण कार्य

क्या चाहता है

हमें मालूम है कि हिंदुस्तान की सरकारने, यहांतक कि इंडियन नेशनल कांग्रेससे, जिसमें हिन्दुस्तानकी जनसंख्याका बहुमत है, बिना अनुमति लिए ही जर्मनीके खिलाफ युद्ध घोषित कर दिया है। हम यह भी जानते हैं कि जवाहरलाल नेहरू अभी भी जेलके सीकचोंके भीतर हैं। जैसा कि आयरमें हुआ, यदि हिटलर एशियामें युद्ध प्रारम्भ कर दे तो ब्रिटेनकी प्रतिक्रियावादी शासकश्रेणीके पापोंके लिये उसे बड़ी भारी क्षति उठानी पड़ेगी।

यह हो सकता है कि वह ब्रिटिश साम्राज्यको अंदरसे पूरी तरह खोखला बनानेके लिये अपनी सारी शक्तियोंको कार्यान्वित कर दे। हम जानते हैं कि ब्रिटिश साम्राज्यमें कई दल हैं जो ब्रिटिश शासक श्रेणीसे खार खाते हैं और किसी भी अवस्थामें वे ब्रिटिश साम्राज्यको वर्तमान रूपमें नहीं अपनायेंगे। हमें मालम है कि जब मार्शल ग्रेज़ियानी की फौजोंने मिश्र पर चढ़ाई की, तब ब्रिटेन मिश्रसे युद्धकी घोषणा करानेमें असफल रहा। ब्रिटिश शासनादेश के खिलाफ अरबोंके विद्रोहको हम जानते हैं। हमें मालूम है कि हिंदुस्तान की सरकारने, यहांतक कि इंडियन नेशनल कांग्रेस, जिसमें हिन्दुस्तानकी जनसंख्याका बहुमत है, बिना अनुमति लिए ही जर्मनीके खिलाफ युद्ध घोषित कर दिया है। हम यह भी जानते हैं कि जवाहरलाल नेहरू अभी भी जेलके सीकचोंके भीतर हैं। जैसा कि आयरमें हुआ, यदि हिटलर एशियामें युद्ध प्रारम्भ कर दे तो ब्रिटेनकी प्रतिक्रियावादी शासकश्रेणीके पापोंके लिये उसे बड़ी भारी क्षति उठानी पड़ेगी। आयरके दीर्घदृष्टिवाले राजनीतिज्ञ जानते हैं कि यदि नाज़ी जर्मनीकी विजय हो गई तो देश अपनी सारी राजकीय सत्ताएं खो बैठेगा, और यूरोपके अन्य देशोंकी भांति गुलाम बना दिया जायगा। परंतु कई पीढ़ियोंसे ब्रिटेनकी निरंकुश शासक श्रेणीके द्वारा पैदा हुई शत्रुताने इतनी गहरी छाप जमायी है कि आयरिश प्रजाका बहुमत अब तक भी ब्रिटेनको पनडुब्बियें और हवाई अड्डेका उपयोग करनेके लिये अनुमति नहीं देता।

एशियाके कई भागोंमें परिस्थिति ऐसी ही होगी। हिंदुस्तानी नेता नाज़ीवादके विरुद्ध सबसे ज्यादा स्पष्टवादी हैं। वे देशको उत्तरोत्तर उन्नति करनवाले सुधारोंके पक्षपाती हैं, और नाज़ी प्रभुत्वके खिलाफ हैं क्योंकि वे महसूस करते हैं कि इससे कई कठोर परिश्रमोंके पश्चात् प्राप्त किए अधिकारोंसे उन्हें शीघ्र वंचित होजाना पड़ेगा। परंतु हिंदुस्तानके लाखों करोड़ों लोगों का नाज़ियोंसे प्रत्यक्ष कोई संबंध नहीं। यद्यपि उनके संबंधमें उन्होंने पढ़ा है–बशर्त्तेकि वे पढ़ सकें–उन्होंने अभी तक उन्हें देखा नहीं है; उनसे उनका कोई सीधा व्यवहार नहीं रहा है। अन्तर यही है कि कई पीढ़ियोंसे वे ब्रिटिश शासक श्रेणी, उनके सिपाही और उनकी पुलिस को देखते आये हैं, और कई दशाब्दियोंसे उनके बीच शत्रुता चलती आयी है, जो अब भी जारी है। हिंदुस्थानको प्रथम महायुद्धमें दिये गए वचनोंको ब्रिटेन निभा नहीं सका है, और यह बात कोई अघटित घटना नहीं है कि ब्रिटेन को ऐसे समयपर जब कि उसे हर तरह की मदद की ज़रूरत है, पिछले महायुद्ध की अपेक्षा बिलकुल नहीं के बराबर हिंदुस्तानी ब्रिटिशसेनामें लड़ रहे हैं।

जर्मनीके एशियापर प्रहार का तीसरा परिणाम यह होगा कि शायद जापान और तृतीय राइखके बीच आपसी संबंध अधिक सरल और प्रत्यक्ष बन जायगा। इससे तृतीय राइख़ को ब्रिटेन और एंग्लो-सैक्सन दुनियाके खिलाफ युद्धमें अन्य कई लाभदायक मुकाम प्राप्त हो जायेंगे। अबतक तृतीय राइख ब्रिटेन और संयुक्तराष्ट्र अमेरिकाके विरुद्ध जापानपर अधिक कड़ा रुख अख्त्यार करनेके लिये पूरा दबाव डालनेमें असमर्थ रहा है। बर्लिनमें मात्सुओकासे मुलाकातके वक्त हिटलर इस बातको स्पष्ट रूपसे महसूस करने लग गया था।" न्यूयार्क हेराल्ड ट्रिब्यून" ने इन बातचीतों को विस्तारसे प्रगट किया था। इसका महत्वका हिस्सा नीचे दिया जाता है।

"विश्वस्तसूत्रसे पता चला है कि जापान जर्मनीकी इन बार बार की गई मांगोंका, कि उसे बाल्कन, व भूमध्य प्रदेशोंपर जर्मनीके द्वारा पायी गई सफलताका ध्यान रखकर अपनी नीति धुरीराष्ट्रोंके अनुकूल बना लेनी चाहिये—विरोध करता है"

"जापान, स्पष्टतः ही इस वक्त यूरोपीय परिस्थितिको देखना एवं जर्मनीसे सर्वथा स्वतंत्र अपनी 'आटोनोमस' नीति पर चलना पसंद करता है, यद्यपि धुरी राष्ट्रोंके द्वारा ब्रिटेनपर किए गये आक्रमणमें उसकी सहानुभूति है।"

"यह मालूम हुआ है कि जाते वक्त सरकारकी ओरसे दी गई सूचनाओंके मुताबिक विदेशमंत्री योस्कि मोत्सुओकाने अपनी बर्लिन की ताज़ा मुलाकातमें कुछ भी निश्चित विचार नहीं प्रगट किए थे। फ्यूररके द्वारा ब्रिटनके खिलाफ तुरन्त ही धावा बोलनेके आमंत्रणका जब उसने अस्वीकार किया, तब दोनों नेताओंके बीच एक भयानक दृश्य उपस्थित होगया, जिसमें हिटलर मेज पर हाथ पटक कर कह रहा था कि ब्रिटेन को हराना ही होगा"।

"उसके लौटने पर उस दृश्यका वर्णन करते हुए मात्सुओकाकी पार्टीके एक सदस्य कर्नल यात्सुजु नागचीने कहा था कि "हिटलर बातचीतके दौरेमें गर्म हो गया था। और अंतमें वह वहांसे उठा ले जाया गया क्योंकि ऐसा प्रतीत होता था कि वह यह भूल गया था कि वह किससे बात कर रहा है।"

जापानकी यह हिचकिचाहट समझना अतिशय आसान है। जापानने केवल यहीं आकर इस भय को पहिचान लिया कि यह क्रियामें परिणत करनेके योग्य नहीं है। एक बार जर्मन सेना एशियामें घुस आवे और स्वेज़ नहर पर कब्जा करले, तो यह दृश्य तुरन्त बदल जाय। एक बार यदि नाज़ी लोग भूमध्य प्रदेश तथा स्वेज़ नहर पर आधिपत्य जमालें, जापान तक एक सीधा रास्ता स्थापित हो सकता है। फलतः जापानको कार्यवाही करनेके लिये शीघ्रगामी बनाने, तथा उसकी नीति धुरी राष्ट्रोंके प्रयत्नोंके अनुरूप बनानेके लिये अनेक प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष उपाय बरते जा सकते हैं।

हिटलरके एशियामें प्रहार करनेका चौथा परिणाम यह होगा कि इससे ब्रिटेन एवं एंग्लो सेक्सन जगत्के लिये तृतीय राइखके खिलाफ पदाति सेनासे युद्ध शुरू करना कठिन बन जायगा। जब तक ब्रिटिश नौसैन्यका भूमध्य सागर पर शासन है, तब तक हिटलरके जर्मनीके लिये एक खतरा रहेगा–जो अब भी है। ब्रिटिश आक्रामक सेना, नौसैन्यके तथा बलवान् हवाई दलके रक्षणके साथ यूरोपमें नये अड्डे स्थापित कर सकती है। हमें भूमध्य सागरके अनेक देशों की इतनी दूरी, जिससे जर्मनी अलग-सा पड़ गया है, तथा उनकी ट्रेनोंकी लड़ाईके सामान को ले जानेकी असुविधाओंकी भी उपेक्षा नहीं करनी चाहिये। यदि हिटलर एशियामें आ घुसे, और स्वेज़ तथा जिब्राल्टर को कब्जेमें करले, तथा ब्रिटिश नौसेनाको भूमध्य सागर खाली कर देना पड़े, तब तो ब्रिटिश सेनाके लिये यूरोपमें अपने पैर स्थिर रखना अत्यधिक दुष्कर हो जायगा, और आक्रामक युद्ध चालू करनेके अवसर भी इस दृष्टिसे बहुत कम रह जायेंगे।

इसका पांचवा परिणाम–जिसे यहां विस्तारसे लिखनेकी कोई आवश्यकता नहीं है,–यह होगा कि ब्रिटेन राजकीय तथा सेना की दृष्टिसे कमजोर बन जायगा। स्वेज़का पतन तथा हिटलरकी सेनाके एशियामें प्रवेशका अर्थ है ब्रिटिश साम्राज्यके जीवन-सूत्रका टूट जाना; और इससे साम्राज्य-निवासियोंको अपनी मातृभूमिकी रक्षा करना भी अधिक कठिन हो जायगा। इसके अलावा समस्त एशिया तथा अफ्रीका पर इसकी विस्तृत प्रतिक्रिया होगी। उनके लिये या तो नाज़ी जर्मनीको सहायता देना या शांतिप्रिय देशोंकी–सी तटस्थता धारण करना–दो ही मार्ग शेष रहेंगे।

छठा परिणाम यह होगा कि हिटलर युद्ध विरामके लिये शांतिकी अपनी शर्तें बढ़ाता ही जायगा। ब्रिटिश द्वीपमें हिटलरके आक्रमणोंका प्रतिकार करना जारी रहे, तब भी हिटलरको हरानेके अवसर बहुत कम रह जाते हैं, क्योंकि उसकी भूमध्य सागर और एशियाके कुछ भागोंमें विजय उसे यूरोपमें स्थलीय आक्रमणसे बचाये रखेगी और इधर ग्रेट ब्रिटेन और संयुक्त राष्ट्र अमरिकामें "किसी भी हालतमें शांति" वाली प्रवृत्तियां उत्तरोत्तर बढ़ती जायेंगी।

अबतकका विश्लेषण साफ़ साफ़ बतलाता है कि अफ्रीका और एशियाकी युद्ध प्रवृत्ति तथा युद्धसे उपस्थित होनेवाली अन्य अवस्थाएं ब्रिटेनके लिये अत्यंत महत्वपूर्ण हैं और यह निर्विवाद बात है कि ब्रिटेनको चप्पा चप्पा जमीनके लिये लड़ना पड़ेगा। फिर भी यह बात पूरे ज़ोरसे नहीं कही जा सकती कि ब्रिटेनके लिये भूमध्यसागरका हिस्सा, स्वेज़, जिब्राल्टर और एशिया सिर्फ मामूलीसे युद्ध क्षेत्र हैं। ब्रिटिश द्वीप तथा अटलान्टिक युद्धके प्रमुख क्षेत्र हैं। यदि हिटलरको अटलान्टिकका कब्जा पानेमें और ब्रिटेन पर चढ़ाई करनेमें सफलता प्राप्त हो गई तो जिब्राल्टर, स्वेज़ और साम्राज्यके बड़े हिस्सेके भाग्यका अपने आप निर्णय हो जायगा, चाहे फिर ये प्रदेश पहले न भी जीते गये हों।

यदि हिटलरका ब्रिटेन पर आक्रमण असफल हो जाय और अटलांटिक समुद्रसे आनेवाले मालके आयात के मार्ग रोककर ब्रिटेन को घुटने टेक देनेके लिये बाधित करनेवाले उसके सारे प्रयत्न भी निष्फल जांय तो जिब्राल्टर, स्वेज़ नहर, उत्तरी अफ्रीका, सीरिया और पेलेस्टाइन, ईराक और हिंदुस्तान किसी भी हालतमें आश्रित न हो सकेंगे फिर चाहे उसने इन प्रदेशों पर क्षणिक सफलता भी प्राप्त कर ली हो।

इससे स्पष्ट ज़ाहिर होता है कि ब्रिटेन अपनी सारी सैनिक ताकतको ब्रिटिश द्वीपमें ही क्यों केन्द्रित करना चाहता है?

बाल्कन युद्धके समय यह स्पष्ट था कि जर्मन हाइ कमाण्ड और हिटलरके लिये बाल्कन प्रदेश एक गौण लक्ष्य था। एशिया और अफ्रीकाके आक्रमणोंके लिये भी यही बात है। परन्तु भविष्यमें क्या होगा? सन् १९४१ के आरंभ कालमें जर्मन प्रेस और कई अर्ध-सरकारी पत्रों द्वारा समय समय पर बार बार घोषित किया गया था कि सन् १९४१ युद्धके लिए निर्णायक वर्ष होगा और कहा गया था कि अमेरिका की सहायता प्राप्त होनेसे परिवर्तित दृश्य उपस्थित होनेके पूर्व ही ब्रिटेन हरा दिया जायगा। १० मार्च १९४१ के "नौए त्सौर्खर त्साइटुंग" के बर्लिन स्थित संवाददाताके

(शेष पृष्ठ १३ के कालम २ पर)

सभ्यता पर संकट

लियोनार्ड वुल्फ

मानव जाति का इतिहास सभ्यताके ज्वार और भाटेका इतिहास है। सभ्यता का यह ज्वार और भाटा राजनीति, और प्रजाओं और राष्ट्रोंके अपने संघीय जीवनके तरीकोंमे हमेशा ही अत्यंत स्पष्टतासे देखा जा सकता है। कुछ सैंकड़ों-हजारों साल पहले मनुष्य सिर्फ एक जानवर ही था, जंगलकी राजनीति ही उसकी राजनीति थी। जंगल का भी अपना संघीय जीवन, अपनी राजनीति, और यहां तक कि अपने कानून होते हैं, परंतु यह संघीय जीवन, राजनीति और कानून बर्बर होते हैं। ये सब जोर-जुल्म, अज्ञान, अंधविश्वास, भय, वासना, भूख और प्याससे निर्धारित किये गए हैं।

जबसे आदि मनुष्यने अपनी बुद्धिका उपयोग करना शुरु किया, तबसे उसने जनावरोंकी अपरिवर्त्यताके वज्रबंधन तोडे हैं, और उसके लिये तबसे ही विश्वास करना, जानना, समझना, खोजना, बातचीत करना, अपने आपको व अपने समाजको परिस्थितियोंके अनुकूल बना लेना, और परिस्थितियोंको अपने अनुकूल बना लेना संभव हुआ है। अपनी बुद्धिशक्तिके उपयोगसे ही आदि मनुष्य ने बर्बर जानवरों और जंगलोंकी जिन्दगीसे इतनी अधिक तरक्की की है। अनाजको बोनेसे लेकर आग पैदाकरनेवाले पत्थरके उसके चतुर आविष्कार, आज लंडन व पेरिसके सभ्य-जीवन की बुनियादके रूपमें मौजूद हैं। बुद्धिने उसे अपनी इन्द्रियोंकी यांत्रिक यंत्रणाओंसे मुक्त किया, और वह अपने चारों ओरकी परिस्थितियों व उस पर होनेवाली अपनी प्रतिक्रियाओं को थोडा बहुत काबू कर सका। मानव परिवारमें पहली बार उसने राजनैतिक समाज और संघकी रचना की। यहां तक कि उसके कुतूहलने उसे कला व विज्ञानके आदिम स्वरूप, तथा प्राथमिक परमेश्वर की खोज करनेके लिये प्रेरणा दी।

आदि मनुष्यने जिस नींव पर अपने जीवन व अपने समाज की रचना की थी वह है प्रकृति के स्वरूप तथा जादू की शक्तिमें उसका विश्वास। यह गलत विश्वास था, लेकिन गलत विश्वासोंको मजबूतीसे पकड़ रखनेका परिणाम प्रायः सही विश्वासोंसे जादा शक्तिशाली और खतरनाक होता है। सही विश्वासका उस पत्थरसे अधिक कोई महत्व नही जिसपर पांव रखकर हम किसी अन्य विश्वास पर पहुंच सकें। वह मनको प्रवहणशील व गतिमान् रखता है, और नये साहसके लिये प्रवृत्त करता है। हमारे गलत विश्वास ही हमें सबसे अधिक महत्वपूर्ण लगते हैं, और सचमुच यह हमारे गलत विश्वास ही हैं, जिन्हें हम पूर्ण सत्य की पवित्रता तक ऊंचा उठा देते हैं, जिनके लिये मर मिटनेको तैयार हो जाते है, और इससे भी अधिक खुशीसे काफिरों (अविश्वासियों) को जला देने तक के लिये तैयार हो जाते हैं। सभी पूर्ण सत्य गलत विश्वास हैं, और सभी गलत विश्वास पूर्ण सत्यके रूपमें परिवर्तित हो सकते हैं।

आदि मनुष्यकी जड़ताके कई मूल कारणोंमेंसे एक कारण यह है कि उसके प्रकृतिके स्वरूप तथा जादूकी शक्ति संबंधी मूलभूत विश्वास गलत थे। उसके वे गलत विश्वास पूर्ण सत्यके रूपमें परिवर्तत होगए, और इन सचाईयोंसे पैदा हुए भय, रूढ़ियां, व अंधविश्वासोंसे खुद वह, तथा उसका वैयक्तिक व सामाजिक जीवन, अज्ञात एवं अटूट शृखलाओंमें बंध गया। और क्योंकि उसके विश्वास गलत थे, उसके बुद्धि व तर्कशक्तिके उपयोगने उन्हें (विश्वासोंको) व उनके साथ ही समाजकी बर्बर आधाराशिला को भी उखाड़ दिया होता। सभ्यताके इस खतरेको, गलत विश्वासें पर—जो पूर्ण सत्य समझे जाते थे—सतत बढ़ती हुई धार्मिक पवित्रताका रंग चढ़ाका आसानीसे दूर किया गया। समस्त जीवन पर उन दिनों पाखंडियोंके पाखंड का ही राज्य था। जादूगर और वर्षा पैदाकरनेवाले मन्त्रज्ञ शक्तिशाली बन गए, संस्कार व विधियां अधिकाधिक जटिल बनती गईं, और प्रतिबंध अधिकाधिक विचित्र तथा मनमाने बना दिये गए। इस प्रकार उस बर्बर का मन और उसका समाज अत्यंत सरलतासे रूढ़ियों, आदतों और अधविश्वासोंके लौह-जालमें जकड गया।

एकके बार एक हजारों साल तक मनुष्यका मन इस तरह अंधेरे बर्बरताके कारागारमें अचल रहा, जबकि पृथ्वीके तलपर पाखंडियोंके पाखंडके अलावा और कुछ नहीं सुनाई देता था। इतने लंबे अर्सेके पश्चात् मनुष्य अंतमें क्योंकर और किस लिये अपने निजी मनके कारागारसे निकल सका और उसने सभ्यताकी रचना की, यह हम नहीं जानते। लेकिन हरेक महान् सभ्यतामें, उसकी वृद्धि और विकास कालमें व्यक्ति एवं समाज दोनोंमें सहज प्रवृत्ति, आदतों, तथा, अंधविश्वासों पर बुद्धि, तर्क व ज्ञान का प्रभुत्व देखा जा सकता है। यह बात अपरिहार्य रूपसे ऐसी ही है।

सभ्यताओंका उत्थान होता है, लेकिन उनका पतन भी होता है, उनमें ज्वार आता है, परंतु भाटा भी आता है। और जब कभी सभ्यतामें स्खलन और असफलता का ज़रा सा भी चिन्ह होता है तभी एक लक्षण अवश्यमेव प्रकट हो जाता है। बुद्धि और तर्कके खिलाफ आवाजें उठती हैं, बर्बर आदमीके वही अंधविश्वास एकाएक प्रचलित और आदरसे ग्राह्य समझे जाते हैं, जादूगर और ओझा फिर नये छद्मवेशमें उपस्थित होते हैं, और एक बार फिर सर्वत्र पाखंडियोंके पाखंड खुले आम और बिना लज्जाके सुनाई देते हैं। इस बातकी व्याख्या करना सरल है। हरेक व्यक्तिके अंदर, यहांतक कि अत्यंत सभ्य व्यक्तिमें भी सभ्यता का मनोविज्ञान—जो कि बुद्धि संस्कृति और मानवता की एक पतली तह है, जिसके द्वारा जानवरकी उग्र वासनाएं और अनुभूतियां, तथा बर्बरके असभ्य भ्रम ढके रहते हैं—अपेक्षाकृत आधुनिक समयकी चीज है। लण्डनकी किसी गलीमें मोटरकी झपेटमें आनेसे बाल-बाल बचनेपर जो भयकी अनुभूति होती है, वह सभ्य मानवका बुद्धियुक्त व नियंत्रित भय है। एकवार इस लेखका लेखक एशियाके जंगलमें एक रात भटक गया और उसने अपने मनकी सतहके नीचे एक दूसरे ही प्रकारके भयको छिपा हुआ महसूस किया; जिससे चांदनीमें वृक्षकी शाखाको पवनके झकोरेसे हिलती देखकर हरिणोंके झुंडमें आतंकसे भगदड़ मच जाती है, जिससे पवनसे पैदा हुई सूखी पत्तियोंकी मर्मरध्वनिसे भयत्रस्त होकर बंदर शाखाओंपर चिपट जाते हैं। यह विशुद्ध जानवरोंका आंतक जानवरोंकी अन्य इच्छा व अनुभूतियोंके साथ ही, हमारे इर्दगिर्दकी सभ्यतासे मूर्छित एवं सभ्यताके मनोविज्ञानसे दबकर हमारे मनमें प्रसुप्तावस्थामें पड़ा रहता है, लेकिन अनुकूल परिस्थितियोंमें उचित उत्तेजन मिलते ही जाग उठता है। जादू की शक्तिमें विश्वास, जो कि बर्बरोंके मनोविज्ञान और प्राथमिक समाजरचना का एक प्रधान तत्व है, हरेक व्यक्तिके मनमें पाया जाता है। साधारण समयमें और साधारण व्यक्तियोंमें जादू और अंधविश्वासों को सभ्यता दबा देती है, क्योंकि सभ्यता को तो जाद और अंधविश्वासों पर बुद्धि, तर्क तथा विज्ञानके द्वारा प्रभुत्व प्राप्त करना होता है। इसलिये जादू साधारण-तया वैयक्तिक जीवन तक ही सीमित रहता है, जहां वह "विचित्र पुरानी रूढ़ियों" व अंधविश्वासों जैसे कि टेबल पर १३ संख्यामें बैठना, शीशा टूटना, और सीढीके नीचे चलना आदि—में प्रगट होता है; जब कि सार्वजनिक जीवन तथा राजनितिमें उसका प्रवेश निषिद्ध है सिवाय इसके कि वह भावुकता पूर्ण विश्वासके रूपमें प्रविष्ट हो जिसे राजा, राजपरिवार, शासक श्रेणी और 'झण्डे' के लिए रखनेको हरेक साधारण व्यक्तिको प्रोत्साहन दिया जाता है और जिसकी उससे आशा भी की जाती है।

हरेक सभ्यता जिसकी वृद्धि व विकास होता है, उसे एक न एक दिन आंतरिक संकटोंका सामना करना पड़ता है, और यदि उसे सभ्य जीवनको विस्तृत तथा रक्षित बनानेके द्वारा सुलझाया नहीं जाता, तो वे (संकट) उसको नष्ट कर देते हैं। पृथ्वी पर अबतक जिनका अस्तित्व रहा है, वैसे समस्त मानवीय समाज एक छोटीसी अल्प संख्यासे बने होते थे, जिनके पास शक्ति, धन, और विद्याका एकाधिकार होता था, जबकि विशाल बहुसंख्या सिर्फ गुलाम ही बनी होती थी। यह समझा जा सकता है कि सभ्यताका जन्म व उसके प्रारंभिक वर्षोंका विकास अल्पसंख्यक वर्गोंमें हुआ है। लेकिन सभ्यताका खमीर–जैसे कि बुद्धि, तर्क, संस्कृति, मानवता, ज्ञान—हम उन थोड़ेसे व्यक्तियों तक सीमित नहीं रख सकते। यह तो समस्त समाजमें फैलना शुरू होता है। व्याप्तिकी यह शक्तिशाली प्रक्रिया अपरिहार्य रूपसे संकट पैदा करती है। सभ्यताके ये प्रारंभिक वर्ष बहुत बड़े प्रमाणमें शक्ति, संपत्ति, ज्ञान तथा संस्कृतिमें असमानता पैदा करते हैं, जोकि अल्पसंख्यकों और बहुसंख्यकोंके बीच पहले ही से मौजूद होती है; और क्योंकि परिवर्तनकी प्रक्रिया का आरंभ अल्पसंख्यकोंमें ही होता है, नये ज्ञानके अध्यात्मिक एवं भौतिक दोनों ही तरहके लाभोंका जिसने जीवन, उत्साह और आविष्कारोंको गति दी होती है—वे ही उपभोग करते हैं।

हरेक सभ्यताकी वृद्धिमें ऐसा संकटकाल आता है, जब कि वह बहुसंख्यामें फैलने लगती है। इसके बाद यदि सभ्यताको जिन्दा रहना है, और विकास करना है, तो अल्पसंख्याके लिये यह आवश्यकता उपस्थित हो जाती है, कि वह उसके (सभ्यताके) फल को जन साधारणके लिये भी बांटे। लेकिन इसका अभिप्राय यह है कि शासक-श्रेणी भौतिक संपत्तिके उपभोगके अपने विशेषाधिकारोंकी शक्ति तथा श्रेष्ठता को छोड़ दे। पर यह शक्तिका त्याग बहुसंख्यक और अल्पसंख्यकोंके बीच धन और शक्तिकी महान् विषमताके कारण दुःसाध्य और नीरस बना दिया जाता है और यह विषमता अनिवार्य रूपसे और भी बढ़ना शुरु होगी जब कि सभ्यताका-ज्वार एक समाज की सीमाओंके भीतर ही फैलने लगेगा।

मानवजातिके इतिहासमें ऐसे संकट और चुनावके समय, अनेक बार विभिन्न जातियों, राष्ट्रों और समाजोंके बीच आये हैं। अब तक अल्पसंख्याने हमेशा ही समाजके हरेक वर्गको सभ्यताका हिस्सेदार बनाने, व बहुसंख्याको अपने समान सुसभ्य बनने की इजाजत देनेके बजाय अपनी सभ्यता को नष्ट करने का मार्ग ही चुना है। यह सिर्फ उनके हठ, दुष्टता और शक्ति तथा संपत्तिकी लोलुपताके कारण नहीं हुआ है। यह सब अंशतः इस वजहसे हुआ है कि हमारे मनकी सतहके बिलकुल

(शेष ७ पृष्ठके कालम ३ पर)

विलायतकी एक याद और सीख

*

डा. हेमचंद्रजी जोशी डी. लिट

इंगलैंडका गरम मौसम था। चारों ओर सुरम्य हरियाली, भीनी भीनी ठंडी हवा और स्वच्छ निर्मल आकाश एक विशेष आनंद दे रहे थे । उस समय मैं देहातमें था और एक स्काट करोड़पतिके साथ नौकरी करता था । यह स्काट सेठ बरसों जावा, हॉंगकॉंग, शंघाई आदिमें व्यापार करता था । उसने करोड़ों रुपये बनाये और फिर इंगलैंड वापस आगया । लंडनके स्टाक एक्सचेंजका मेंबर है और व्यापारी समाजका प्रमुख व्यक्ति है ।

इसके दोनों पांव निकम्मे हो गये हैं । इससे चल नहीं सकता । आरामकुर्सीके साइज़ की एक रोल्सरायस गाड़ी बनवायी है । उसे खुद चलाकर इधर उधर घूमता है और उसीपर सवार हो कर लिफ्टमें जाता है और खुद-ब-खुद लिफ्टपर चढ़कर दोतल्लेमें अपने कमरेमें पहुंच जाता है । पांव पंगु हो जानेसे इसका सारा जीवन पलट गया है। यह फाटकेबाज है, पर स्टाक एक्सचेंज की सूरत भी इसने नहीं देखी । लंडनसे ३५ मील दूर सरे जिलेमें रहता है और अपने बंगलेसे टेलिफोन द्वारा सौदा करता है । इसे हरदम लंडनसे बाजार भावकी खबरें मिलती हैं और उनपर यह लेवा बेची करता है ।

एक छोटा कमरा इसने अपने लिए सजा रखा है । उसीमें दिन भर बैठा रहता है और टेलीफोनसे लंडन, हॉलंड, जर्मनी आदि देशोंसे बातें करता है । इसके ये हाल-चाल देख मैं समझा कि पूरा बनिया होगा । मैंने इसका यह मतलब लगाया कि बड़ा मक्खीचूस होगा । पर कुछ दिनोंमें अजीब आंखें खुलीं ।

मि. ब० को चिट्ठी लिखनेके कागज़की आवश्यकता थी। एक खास तरहका कागज़ उसे पसंद था । उसने अपने सेक्रेटरीसे कहा कि अमुक नोटपेपर मंगवा लेना । सेक्रेटरीने कहा–ठीक है । शायद यह छःशिलिंग को मिलता है। मैंने जब यह सुना तो कहा कि अमुक दुकान सस्ती है । वहां यही चीज़ ५ शिलिंग को मिलती है । यह बात सुनकर मि. ब० बोले-" जोशी, हमारे घरमें तुम सब बातें करना पर सस्ते का नाम मत लेना।" यह सुनकर मुझे बहुत दुःख हुआ, क्योंकि मैंने मि. ब० के हितकी बात कही थी। इससे मेरी सूरत कुछ बिगड़ गयी; चेहरेसे साफ मालूम हो गया कि मुझे बुरा लगा है । मि. ब० खूब गौरसे मेरी ओर देख रहे थे । वे ताड़ गये कि इसे बहुत बुरा लगा है । तब कहने लगे— 'जोशी ! तुम्हें बुरा लग गया है ? पर बुरा लगनेकी कोई बात नहीं है।' मैंने तपाकसे उत्तर दिया—" मि. ब०, मैंने जो बात कही वह आपके फायदेके लिए कही थी, न कि अपने लाभके लिए । इस हालतमें बुरा लगना स्वाभविक है । हमारे देशमें तो चाहे कोई कितना बड़ा सेठ क्यों न हो, जहांसे चीज़ सस्ती मिलती है वहींसे लेता है । विलायतकी अर्थनीति विलायतवाले ही जानें ।" यह सुनकर मि. ब० मुसकराये । और बोले—" सुनो, तुम्हारा देश इसी लिए अभी तक गुलाम है । भारतकी फिलासफीका मैं कायल हूं । पर वहांका अमली जीवन असत्य रास्तेपर चलता है । यही हाल चीनका है । परिणाम यह हुआ है कि चीन भी कोई विशेष उन्नति नहीं कर पा रहा है। देखो, मेरे पास बहुत रुपया है । अगर मैं सस्ती चीज़ों या सस्ता बेचनेवाले दुकानदारोंका ग्राहक बनूं तो हमारे देशमें जो बड़ी बड़ी दुकानें हैं वे कैसे चलेंगी । और सुनो, सस्ती चीजें बेचनेवाले दुकानदारोंको प्रोत्साहन देनेसे देशमें दाम कम करनेकी प्रतिद्वन्द्विता चलेगी। परिणाम यह होगा कि दुकानदारोंको कम लाभ होगा । और इसका फल यह होगा कि दुकानोंके कर्मचारियोंका वेतन घटेगा और वे सस्तेमें अपना जीवन निर्वाह करेंगे । उनका स्वास्थ्य बिगड़ेगा । देश कमजोर पड़ेगा और अंतमें वह निकम्मा बन जायगा । बताओ तो सस्ते मालपर टूटनेका परिणाम कैसा भयंकर होगा ? अब इसका दूसरा पहलू लो । मैं धनी हूं तब मैं ही सस्ता माल ढूंढूं तो मेरे देशकी कलाकी उन्नति कैसे होगी ? बढ़िया और महंगा माल कौन खरीदेगा ? तब उच्च कोटिके कलावंत, गुणी और आविष्कारक क्यों पैदा होंगे ? बड़ी बड़ी दुकानें कैसे पनपेंगी ? समृद्धि देशभरमें सर्वत्र कैसे फैलेगी ? ब्रिटेन सबल कैसे होगा और हम कैसे अपनी स्वाधीनताकी रक्षा करनेके उपयुक्त बनेंगे ? मतलब यह कि सस्ती चीज़को भी महंगे दामोंमें खरीदनेसे लाभ है । समझे, इसलिए मैं सस्ती चीजें खरीदनेके विरुद्ध हूं । जोशी ! अब तुम मेरा अभिप्राय भली भांति समझ गये होगे ।" मैं यह सब सुनकर अवाक् था । ऐसी चुप्पी मुझे लगी कि हां, या ना कुछ न कर सका ।

पर इस व्याख्याने मुझे भारतकी दरिद्रता और पराधीनता का रहस्य समझा दिया । मैं मि. ब० को महात्माके रूपमें देखने लगा और जब गला खुला तो मैंने मि. ब. से कहा— 'मि. ब. आपने मेरी आंखें खोल दीं, मैं आपको गुरु मानकर आपको बार बार प्रणाम करता हूं ।'

१९ केशवचंद्रसेन स्ट्रीट
कलकत्ता

[डॉ० हेमचंदजी जोशी डी. लिट कई वर्षतक यूरोपमें प्रवास कर चुके हैं । आप हिन्दीके विख्यात लेखक हैं और वर्षों तक कलकत्तेसे 'विश्ववाणी' नामक साप्ताहिक पत्रका सम्पादन करते रहे हैं । यूरोप प्रवासमें आपने अनेक अनुभव प्राप्त किये हैं । यह लेख आपके एक अनुभवका ही वर्णन है । आशा है यह हमारे पाठकोंके लिए लाभदायक होगा । —सं०]

वर की आवश्यकता ।

एक शिक्षित, सुन्दर, सुशील, १४ वर्षीय माहेश्वरी कन्याके लिये, सुयोग्य वर की । कन्या ७ वीं क्लास तक अंग्रेजी पढ़ी हुई है तथा पैतृक सम्पति द्वारा उसे लगभग ५०) मासिक की आय है । वर कमसे कम मैट्रिक अवश्य होना चाहिये ।

जन्म कुण्डली तथा चारों खांप सहित पत्र-व्यवहार करें ।

नन्नूमल बल्दुवा
C/o प्राग आइल मिल्स, अलीगढ़ (यू. पी.)

(पृष्ठ १ का शेषांश)

इस प्रकारकी झूठी खबरोंका कई बार प्रतिवाद करना पड़ा है, किन्तु फिर भी मौका आनेपर समाचारपत्रोंवाले अपनी घृणित चालोंसे नहीं चूकते । विदेशोंमें भी इस प्रकारके संवाद समय-समयपर निकलते रहते हैं और साथ ही उनके प्रतिवाद भी प्रकाशित होते रहते हैं । इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रदर्शन और प्रचारके साधनोंका जहां सदुपयोग होता है, वहां इनका दुरुपयोग भी काफ़ी मात्रामें होता है । इस दुरुपयोगसे जनताका काफ़ी अनिष्ट हुआ और हो रहा है और यह होता ही रहेगा जबतक मानवसमाजमें सत्यकी प्रतिष्ठा और विश्व-बन्धुत्वकी भावनाका समावेश न होगा ।

(पृष्ठ ६ का शेषांश)

नीचे ही अब भी जानवरोंकी अनुभूतियां व बर्बर मनस्तत्व छिपा हुआ है । हरेक समाजमें-यहांतक कि अत्यंत सभ्य समाजमें भी—बहुसंख्यक व अल्पसंख्यक दोनों ही श्रेणियोंमें वस्तुतः ऐसे व्यक्ति बड़ी भारी संख्यामें हैं, जिनका मनस्तत्व प्रधानतः जानवरों व बर्बरोंका ही रहा है ।

हम ऐसे ही युगमें रह रहे हैं । १९ वीं शताब्दीके अंत भागमें यह बात स्पष्ट-सी प्रतीत होती थी कि पाश्चात्य समाजरचनामें किसी महान् संकटका आना शुरू हो गया है । यूरोप सभ्य बननेके गंभीर खतरेमेंसे गुजर रहा था । औद्योगिक एवं वैज्ञानिक तरक्कीसे संसारके इतिहासमें पहली बार सभ्यताके आर्थिक व भौतिक और उसी प्रकार आध्यात्मिक लाभों को अल्प संख्यासे बहुसंख्यकों तक भी शीघ्र ही फैलाने की संभावना पैदा हुई थी । यूरोपियन सभ्यताकी तरक्कीके लिये आवश्यक शर्तें भी स्पष्ट रूपसे दिखाई देती थीं; उदाहरणार्थ आर्थिक उत्पादन व वितरण पर सामाजिक नियंत्रण, वैयक्तिक संपत्तिके 'अधिकारों' की कांट छांट, अंतर्राष्ट्रीय संघ व शासन की रचना, राजाके प्रकृतिदत्त अधिकारों एवं एक राष्ट्रके खिलाफ दूसरे राष्ट्रको लड़ाई लड़नेके अधिकारों को कम करना । और एक बार फिर से जैसा कि मानव इतिहासमें कई बार हुआ है, अल्प संख्याने-जिसके हाथमें सभ्यता की हरेक कुंजी थी—दरवाजे खटखटाती हुई बहुसंख्याके लिये दरवाजा खोलने से इन्कार किया । उन्नीसवीं शताब्दी की सभ्यता का जोश एकदम घटने लग गया, प्रगति और सर्जनक विचार की जिस लौ ने व्यक्तियों और राष्ट्रोंको प्रेरणा दी थी, टिमटिमायी और बुझ गयी । परिणामतः वे समस्त जीवन और शक्तियां, जो कि सभ्यताको अधिक विकसित और उसे समाजमें आध्यात्मिक व भौतिक रूपसे बद्धमूल कर सकती थीं, यूरोपियन सभ्यताके हृदयमें गृहकलहके रूपमें परिवर्तित हो गयीं । यही अवसर था जिसकी हमारे बीच मौजूद बर्बर लोग अलक्षित एवं नैसर्गिक रूपसे बाट देख रहे थे । उन्होंने अपने आपको बड़े आनंदके साथ इस श्रेणी विग्रहमें इस तरफ़ या उस तरफ़ फेंका । उन्होंने "डेलीमेल" और "डेलीएक्सप्रेस" की रचना की, उन्होंने 'बोअर युद्ध' तथा 'मेफेकिंग दिन' बनाया, उन्होंने ट्राईकसको डेविल आइलैंडमें भेजा, और निश्चय किया कि चाहे आकाश टूट पड़े वे उसे वहीं रखेंगे, क्योंकि बर्बरताका यही न्याय है । उन्होंने जर्मनीमें चमचमाते बख्तर पहने, और 'पोन्थर' को अगादिरमें भेज दिया, उन्होंने बेन्शाविरके रहनेवालोंको फांसीपर लटकाया और बेल्जियम कोंगोके बहुत बड़े प्रदेशको उजाड़ दिया, उन्होंने पेकिन्गमें 'विन्टर पेलस' को जला दिया, उन्होंने विन्टर पेलेसके सामने पीटर्सबर्गमें मजदूरोंकी हत्यायें कीं और इसके बाद अंतमें उन्होंने विश्वयुद्ध शुरु किया ।

मैं यहां श्रेणीयुद्ध, प्राकृतिक युद्ध, अंतर्राष्ट्रीय अराजकता, या आर्थिक साम्राज्यवादकी बात नहीं कह रहा । वे यूरोपियन सभ्यताको खत्म करेंगे, किन्तु वे इस खात्मेके अपेक्षाकृत कम महत्त्वके कारण हैं । वे तो उस मृत्युके आखिरी चिन्ह हैं, रोगीको जो रोग मार रहा है, उसके चिन्ह नहीं । पाश्चात्य समाजको मौतके घाट उतारनेवाला रोग श्रेणीयुद्ध व साम्राज्यवाद नहीं है, न ही वह कम्यूनिज्म व फासिज्म है, यह तो अल्पसंख्या द्वारा बहुसंख्या को सभ्यता व उसके लाभ का हिस्सा देनेसे इन्कार करना है । यह सभ्यताके बीचोंबीच एक श्रेणी युद्ध है, और उसने अवश्यम्भावी रूपसे उन लोगोंकी बर्बरोंके साथ अपवित्र मैत्री करायी है, जिन्हें सभ्यताके अगुआ होना चाहिये था ।

"Quack Quack" से

★ देश विदेशकी चर्चा ★

रूसी मोर्चेपर भीषण युद्ध

रूसी मोर्चेपर सभी तरफ भीषण संग्राम छिड़ा हुआ है। जर्मन सेनाओंका अधिक ज़ोर मास्कोकी तरफ और दक्षिणमें क्रीमियामें है। रणक्षेत्रके ताजे समाचारोंके अनुसार क्रीमियाकी राजधानी सिमफेरोपोल पर जर्मन फौजोंका अधिकार हो गया है। सोवियट सरकारने यद्यपि इस जर्मन दावेकी पुष्टि नहीं की और केवल क्रीमियामें भीषण संग्राम होनेका ही ज़िक्र किया है तब भी अधिक सम्भावना यही है कि जर्मनीने सिमफेरोपोलपर अधिकार कर लिया है। जर्मनीका तो यह भी दावा है कि उन्होंने सेवेस्टोपोल और केर्चे नामक बन्दरगाहोंपर भी बमवर्षा की है। युद्धविशारदोंका ख्याल है कि अब क्रीमियन मोर्चेपर जर्मनीकी कोशिश यही रहेगी कि वह सेवेस्टोपोल और केर्चपर अधिकार कर सके। केर्चका विशेष महत्त्व इसलिए भी है कि इसे आधार बनाकर जर्मन फौजें काकेशसके तेलक्षेत्रोंमें अभियान कर सकती हैं। यद्यपि काकेशसके तेलको अपने अधिकारमें करनेके लिए जर्मनी-रोस्टोवपर कब्जा करनेकी कोशिशमें है जहांसे काकेशसके तेलकी पाइप लाइन गुजरती है। किन्तु यदि दोनों तरफसे ही वह आगे बढ़ सका तो इस इलाकेका भाग्यनिर्णय जल्दी और आसानीसे हो जायगा।

दूसरी तरफ जर्मन फौजोंका आक्रमण मास्कोपर निरन्तर बढ़ रहा है। मास्कोसे आक्रान्ता फौजें अब केवल ३० से ४० मीलके फासलेपर ही रह गयी हैं। मास्कोको विभिन्न ५ दिशाओंसे घेरनेकी कोशिश है। उत्तर-पश्चिममें कालिनिन और पूर्व-दक्षिणमें तुलाके मोर्चोंपर तो स्वयं रूसकी सरकारने भी निरन्तर बढ़ता हुआ खतरा स्वीकार किया है। पिछले दिनों मास्कोपर हवाई जहाजोंसे भी जर्मनोंने जबर्दस्त संहारकारी हमले किये हैं। यद्यपि रूसकी सरकार कज़ानमें स्थानान्तरित कर दी गयी है, तब भी रूसियोंका कहना है कि मास्कोकी यथाशक्ति रक्षा की जायगी और न सिर्फ रक्षा ही की जायगी बल्कि अपनी रक्षक सेनाओंकी हिम्मत बंधानेके लिए स्वयं मो० स्टालिन वहीं मौजूद है। इन सब घटनाओंसे यह प्रत्यक्ष है कि रूसी लोग अन्तिम दमतक लड़ेंगे।

ओडेस्साके सम्बन्धमें हम पहले ही लिख चुके हैं कि जर्मन फौजोंकी घेरेबन्दीके दबावके कारण सब तरफसे खाद्य-सामग्री व युद्धसामग्रीका यातायात बन्द हो जानेसे ढाई मासकी दृढ़ताके बाद उन्हें वह खाली कर देना पड़ा। खारकोवकी भी यही दशा हुई है। खारकोव मध्यरूसका एक प्रमुख व्यावसायिक केन्द्र है और जर्मनोंने दावा किया था कि उन्होंने इस शहरको पहले ही अपने कब्जेमें कर लिया था पर अब रूसियोंने भी स्वीकार कर लिया है कि खारकोव खाली किया जा चुका है।

रूसके प्रधान व्यवसायिक केन्द्रोंमेंसे अभी लेनिनग्राड बचा हुआ है। जर्मन फौजोंने घेरे बन्दी डालकर इस नगर को सब तरफसे काट दिया है। यद्यपि नेवा नदीके पास जर्मन और रूसी फौजोंमें परस्पर मुठभेड़ हो जाती है परन्तु रूसी फौजें जर्मन फौजोंको खदेड़ सकनेमें अभी कामयाब नहीं हुईं। जर्मन हवाईसेना क्रोन्स्टाट और लेनिनग्राडपर निरन्तर बमवर्षा की है।

रूसके अधिकांश स्थानोंपर हिम और शीतका प्रकोप शुरू हो गया है और—युद्धको ठीक तरह चलाना कठिन हो गया है फिर भी जर्मन सेनाओंने अब तक रूसका प्रायः बहुत सारा हिस्सा अपने कब्जेमें कर लिया है जिससे तय्यारी करने व युद्धको उग्र करनेमें रूसियों को कुछ मदद मिल सकती। और अभी शीतका प्रायः प्रारम्भ ही है अतः सम्भव है कि कड़ाकेका जाड़ा पड़नेसे पहले ही जर्मन लोग अपना काम पूरा करलें और निर्दिष्ट मंज़िलपर पहुंच जांय।

किन्तु इतना अवश्य है कि जर्मन फौजें जाड़ा पड़ने से और ऋतुके खराब हो जानेके कारण शिथिल पड़ गयी हैं। पिछले दिनों जर्मन लोगोंने ऋतुके सम्बन्धमें कहा था कि ऋतुका देवता या तो यहूदी है या रूसी। इसीसे वह हमारा शत्रु है और हमारे मार्गमें रुकावटें डाल रहा है।

अनेक विशेषज्ञोंका कहना है कि जर्मनी काकेशसके बाद कास्पियन समुद्रके तटपर बाकूके तैल क्षेत्रोंको भी लेने की कोशिश करेगा। इसलिए रूसके युद्ध में पूर्व और दक्षिण के मोर्चेका विशेष महत्व है क्योंकि वहां रूस और ब्रिटेनकी फौजें मिलती हैं। डोन बेसिनका भी बहुतसा हिस्सा जर्मनीने छीन लिया है।

रूस और जापानमें खटकेगी ?

पिछले दिनों समाचार था कि रूस और जापानकी सीमापर सीमांतरक्षक दस्तोंमें परस्पर मुठभेड़ हो गयी है और वहां और भी अधिक भीषणता फैलनेकी सम्भावना है। किन्तु लक्षण ऐसे नहीं जान पड़ते क्योंकि यह मुठभेड़ बहुत अस्थायी थी और पारस्परिक समझौतेके साथ इसका अन्त भी हो गया है।

जापान और थाइलैंड !

लंडनमें मैनिलाके इस समाचारसे सनसनी फैली हुई है कि जापान थाइलैण्डपर आक्रमण करनेकी तय्यारीमें है। इस बारेमें यह भी कहा गया है कि जापानी हलकोंने इस समाचारका प्रत्याख्यान नहीं किया जिसका अर्थ अनिश्चित है। सम्भवतः इसका उद्देश्य यह रहा हो कि जापान सारे संसारका और विशेषतः चीनका ध्यान थाइलैण्डकी तरफ हटाना चाहता है ताकि चीनके यूनान प्रान्तपर आक्रमण करनेके लिए उसे चुपचाप उपयुक्त अवसर मिल सके।

अमेरिका और जर्मनीमें जंग छिड़ेगा ?

वर्त्तमान यूरोपीय महायुद्धको छिड़े हुए आज दो वर्षसे कुछ ऊपर हो गया है और प्रायः प्रारम्भसे ही अमेरिका और जर्मनीमें परस्पर जंग छिड़नेके आसार दीखनेके समाचार मिलते रहे हैं। दोनों देशों और विशेषकर अमेरिकाके राजनीतिज्ञ धमकियां दे-देकर और कुन्दे तौल-तौलकर रह गये हैं परन्तु उनमें परस्पर संघर्ष छिड़ नहीं सका। अब फिर गत सप्ताह अटलांटिक महासागरमें 'रूबेन जेम्स' नामक अमेरिकन जहाजके डुबाये जानेसे इसी तरह की अफवाहोंका बाज़ार गर्म हुआ है। प्रेजीडेंट रूजवेल्ट तथा अमेरिकाके अन्य अनेक प्रभावशाली राजनीतिज्ञोंने इस वाग्युद्धमें हिस्सा लिया है। कहा तो यहां तक गया है कि इस घटना का यह स्पष्ट अर्थ है कि अमेरिका और जर्मनीमें युद्ध छिड़ गया है भले ही स्पष्ट रूपमें उसकी घोषणा नहीं हुई हो। किन्तु इस तरह की बातें इस युद्धमें अनेक बार पहले भी कही जा चुकी हैं किन्तु अमेरिका और जर्मनी की फौजोंने एक दूसरे पर चढ़ाई करनेके लिये कूच नहीं की। जर्मनी अब भी उसी बेफिक्रीसे अमेरिकाके जहाज डुबा रहा है मानों इसमें चिन्ता या युद्धके खतरे का कोई कारण ही न हो। दूसरी तरफ अमेरिका चुपचाप इस हानिको सहन कर रहा है केवल बीच-बीचमें मामूली-सा गुर्राकर रहजाता है।

फ्रांसमें जर्मनीका कत्लेआम

फ्रांसमें एक नात्सी अफसरकी गुप्त हत्याके कारण षड़यन्त्रके अभियोगमें बहुत बड़ी संख्यामें फ्रांसीसी नागरिकों का जर्मन अधिकारियोंने गिरफ्तार किया था और उन सबको प्राणदण्ड दिया गया था किन्तु मार्शल पेतांके बीचमें पड़नेके कारण यह दण्ड तब तकके लिए स्थगित कर दिया गया है जबतक कि इस मामले की पूरी-पूरी जांच न हो जाय। मार्शल पेतेंने इस मामले की जांच करानेके लिए जर्मन अधिकारियोंसे यह भी निवेदन किया था कि इसके लिए वे अपनी जानको जमानतके तौर पर रखनेके लिए तय्यार हैं।

अफगानिस्तानसे जर्मन नागरिकोंका निर्वासन

अफगानिस्तानमें भावी विद्रोह या युद्ध की चिनगरी फैलने की आशंकासे ब्रिटिश सरकार की प्रार्थनापर वहांकी सरकारने तमाम जर्मन नागरिकोंको अफगानिस्तानसे निकाल दिया है। अफगान सरकारको ब्रिटिश सरकारने यह वचन दिया है कि अफगानिस्तानके इन नागरिकोंको वह भारतके रास्ते अपने देश पहुंचानेमें पूरी मदद करेगी। फलस्वरूप जर्मन नागरिकोंके एकके बाद एक अनेक जत्थे जिनमें कई बड़े बड़े अफसर भी हैं अफगानिस्तानसे निकल रहे हैं। अबतक दो जत्थे पेशावर सुरक्षित पहुंच भी चुके हैं।

ये घटनाएं इस बातको सूचित करती हैं कि एशिया भी इस महायुद्धके खतरेसे बच नहीं सकता। समस्त यूरोप और विशेष कर रूसके विजित प्रदेशोंसे हिटलरको इतनी बड़ी तादादमें युद्धसामग्री व खाद्यसामग्री मिल गयी है कि वह एक लम्बे अरसे तक और भी युद्धको चला सकता है और यदि वह अपनी पूर्वघोषित योजनाओंके अनुसार जर्मन राष्ट्रके लिए 'लेबेन्सराऊम' पानेके लिए एशियामें भी पांव पसारे तो पसार सकता है।

महात्माजी और सत्याग्रह

पिछले दिनों सत्याग्रह को लेकर बहुत तरह की चर्चाएं देशभरमें होती रही हैं। आम जनता और जेलसे छूटकर आनेवाले लोगोंमेंसे बहुतोंका उत्साह भंग हो गया है। उनका विचार यह बन गया है कि सत्याग्रह जिस रूपमें चलाया जा रहा है वह सर्वथा निरर्थक है। उससे कुछ होने-जाने वाला नहीं। लोग ऐसा सत्याग्रह देखते-देखते और करते-करते थक गये हैं। उन्हें, अब और कोई तेज़ 'टानिक' दिया जाना चाहिए। इन दिनों एक साथ सरकारने तमाम बड़े बड़े नेताओंको जेलसे मुक्त कर दिया है। केवल पं. जवाहरलाल नेहरू और मौलाना अबुल कलाम आजाद ही अब जेलमें रह गये हैं। इन सब बड़े बड़े नेताओंने वर्धामें इकट्ठे होकर महात्माजीसे परामर्श किया है।

सत्याग्रहके विषयमें समाचार पत्रोंमें भी बड़ी निराशा दिखाई पड़ती है। भारतीय और राष्ट्रवादी कहे जानेवाले पत्रोंमेंसे भी 'नेशनल हेराल्ड' को छोड़कर प्रायः किसी भी प्रमुख दैनिक पत्रने सत्याग्रहको और आगे चलानेका समर्थन नहीं किया।

देशभरमें बढ़ती हुई इस निराशाको देखकर महात्मा-गान्धीने गत २८ अक्तूबरको वर्धासे एक लम्बा वक्तव्य निकाला है। इस वक्तव्यमें उन्होंने यह साबित किया है कि कांग्रेसके पास इसके सिवाय दूसरा कोई रास्ता ही नहीं कि वह सत्याग्रहको इसी रूपमें व्यक्तिगत आन्दोलनकी शक्लमें चलाती रहे। जो लोग सत्याग्रहमें अविश्वास करने लगे हैं वे प्रायः वही हैं जिन्हें पहले ही पक्का विश्वास नहीं था। सत्याग्रह अवश्य फल लायेगा यदि पूरी निष्ठा और सचाईके साथ किया जाय। सत्याग्रहमें संख्याका महत्व नहीं। वह तो यज्ञ है—यज्ञीय युद्ध है जिसमें व्रत और निष्ठाका ही महत्व है। महात्माजीको तो यह भी विश्वास है कि सत्याग्रहका असर धीमे धीमे अव्यक्त रूपसे हो रहा है।

विवाह—

स्वास्थ्य के दृष्टिकोणसे

★ डाक्टर वान डी वेल्ड ★

क्या मैं अपने स्वास्थ्य की दृष्टिसे—क्योंकि यहां पर इस प्रश्नके मनोवैज्ञानिक, सामाजिक एवं प्रजनन संबंधी पहलुओंका मैं विचार नहीं कर रहा—विवाह करनेके योग्य हूं? और इसी प्रकार स्वास्थ्यकी दृष्टिसे क्या मुझे (स्त्री या पुरुष) इस पुरुष या इस स्त्रीसे विवाह करना चाहिये? ये प्रश्न हैं जो विवाहके उम्मीदवारोंके लिये महत्व रखते हैं—यदि वे कमसे कम अपनेसे इस तरहके प्रश्न पूछें। और क्योंकि इनका उत्तर संबंधित व्यक्तिके लिंग पर आश्रित है, हम इन्हें निम्न रीतिसे विभक्त करते हैं।

(अ) क्या मैं (पुरुष) स्वास्थ्यकी दृष्टिसे विवाहके योग्य हूं?

(ब) क्या मैं (स्त्री) स्वास्थ्य की दृष्टिसे विवाहके योग्य हूं?

(क) क्या मुझे (अपने स्वास्थ्यके दृष्टिकोणसे) इस पुरुषसे विवाह करना चाहिये?

(ड) क्या मुझे (अपने स्वास्थ्यके दृष्टिकोणसे) इस स्त्रीसे विवाह करना चाहिये?

यद्यपि कई अवस्थाओंमें विवाह जिन्दगीके खतरोंसे हमारी रक्षा करता है, और खास कर जो व्यक्ति अब तक तंदुरुस्त हैं, उसका तो विशेष रक्षक है, फिर भी दूसरी तरफ वह बहुत हद तक रोगोंका कारण भी हो सकता है। यह बात दूसरे साथीमें मौजूद रोगके संक्रमण पर और इस तथ्य पर भी निर्भर रहती है कि जब एक साथी शारीरिक दृष्टिसे दूसरेसे कुछ कमजोर हो, तो संबंधित व्यक्ति विवाहसे बढ़ी हुई मांगोंकी पूर्ति नहीं कर सकता।

यह एक दृष्टिकोण है, जिसका प्रश्न (अ) तथा (ब) से संबंधित व्यक्ति उत्तर दे सकते हैं, अर्थात् जबकि एक व्यक्ति अपने दिलमें सिर्फ अपने ही स्वार्थका ध्यान रखता है। दूसरा दृष्टिकोण है, अपने साथीके प्रति जिम्मेवारीका ख्याल रखना, अर्थात् परोपकारकी भावना। लेकिन फिर भी यह बात ख्यालमें रखनी चाहिये कि इस परोपकारकी भावनाकी अपने स्वार्थके लिए भी उपेक्षा नहीं करनी चाहिये, क्यों कि एक व्यक्ति अनुत्तरदायित्व से अपने साथीको जो नुकसान पहुंचाता है वह विवाहके मामलेमें निःसंदेह अपनेको भी उठाना पड़ता है।

और अब यदि हम विवाहके उम्मीदवारके बारेमें प्रथम प्रश्न पूछें, तो यह बात सब से प्रथम और सबसे मुख्य कही जा सकती है कि वह इसे विश्वासपूर्वक कर सकता है यदि वह शारीरिक दृष्टिसे स्वस्थ और मजबूत है तथा उस की शक्ति एवं इन्द्रियां सम अवस्थामें हैं और यदि वह किसी गंभीर बीमारी का शिकार नहीं बना जो कि अपने पीछे कोई खतरा छोड़ गयी है, और जिसके प्रजनन अवयवोंमें कोई रोग संक्रान्त नहीं हुआ। विवाह उसे किसी प्रकार दोषी नहीं ठहरा सकता। उसे किसी प्रकार का स्थायी नुकसान नहीं हो सकता और न वह अपने साथी को ही किसी भी प्रकार की हानि पहुंचा सकता है।

विवाह के प्रत्येक पुरुष उम्मीदवार को यहां तक कि समस्त रूपसे पूर्ण स्वस्थ उम्मीदवार को भी मेरी सलाह है कि वह अपना डाक्टरी मुआयना करावे; (ठीक उसी प्रकार जैसे कि जिन्दगी का बीमा करवाते वक्त डाक्टरी मुआयना होता है) क्योंकि जीवन पथमें कई ऐसे स्थल आते है जहां मनुष्यको सामान्य पथ छोड़कर दूसरी राहसे चलना चाहिए। यद्यपि पथिकोंके लिए इन स्थलों पर कोई खतरे का संकेत नहीं है फिर भी विवाह जैसे मामलोंमें वह सामान्य पथका परित्याग अत्यंत महत्वका होता है।

असाधारण अवस्थाओंका जिसमें मनुष्य का अपना ही लाभ है—खास ध्यान रखना चाहिये, सब से पूर्व हमें यह बात ध्यानमें रखनी चाहिये कि रुधिर संचारके अंगोंमें कहीं खराबी तो नहीं आ गई है! क्योंकि विवाह की खास क्रियाओंमें इनका ही सबसे ज्यादा काम पड़ता है। उदाहरणतः, हृदय जीवन की साधारण मांगों की आसानी से पूर्ति कर ले, और अपने मालिक पर अपनी अशक्तिका एक भी स्पष्ट लक्षण प्रगट न करे तो भी जब उसे अधिक बढ़े हुए कामका बोझ संभालना होता है, तब संभव है कि वह उसका साथ न दे सके; और विशेषतया उस अवस्थामें तो कतई नहीं जब कि वह बोझ बारबार तथा अत्यंत जल्दी दुहराया जाता हो।

इसके अलावा एक और बात मनुष्यको ख्यालमें रखनी चाहिये कि वह अपने वैवाहिक संभोगकी तीव्रताको अपनी शक्तिके अनुकूल कर ले। एक बात जो बारबार देखी गई है वह यह है कि विवाहके प्रारंभिक दिनोंमें प्रेमोद्रेकमें बहता हुआ पुरुष अपनी स्त्रीको प्रेम प्रकाशनके क्रियात्मक अन्त (संभोग) तक खींच ले जाता है, और इसका देर तक जारी रहना अन्तमें उसके लिये हानिकारक सिद्ध होता है। उसे यह बात नहीं भूलनी चाहिये कि वैवाहिक संभोग स्त्रीकी अपेक्षा उसे कहीं अधिक थका देता है, और इसके अलावा कई बार यह पाया गया है कि वह (पुरुष) अपने कार्यकी चिन्ताओं तथा जिन्दगीके संघर्षसे थका मान्दा घर लौटता है, जब कि स्त्री, जिसे घरसे बाहरके बोझको उठाना नहीं होता, और जिस पर घर-गृहस्थी की झंझटोंका भी विशेष भार नहीं है, अपने पतिसे स्वस्थ और यौवनकी ताज़गीके साथ मिलती है। इसीलिये मैं इस बात पर जोर देता हूं कि विवाहके मामलेमें आदमीको अपना प्रेम व्यवहार अपनी शक्तिके अनुकूल बनाना चाहिये। ऐसी अनुकूलता सर्वथा संभव है। इस प्रसंगमें मुझे बाल्ज़ाकके यह शब्द बहुत उपयुक्त प्रतीत होते हैं, कि "पुरुषके लिये स्त्री वैसीही है, जैसा कि उसने (पुरुषने) उसे (स्त्रीको) बनाया है" तब भी ये शब्द निश्चयसे उस अवस्थामें उपयुक्त नहीं किये जा सकते जब कि स्त्री वैसी "बनी बनाई" ही विवाह करती है—इस विचार की वर्त्तमान समयमें बहुधा उपेक्षा कर दी जाती है जिस का परिणाम स्त्री और पुरुष दोनोंके लिए हानिकर है।

एक ऐसे हृदयके बारेमें, जो भले ही उतना बोझ न संभाल सके, जितने की उससे अपेक्षा की जाती है, किन्तु फिर भी स्वस्थ है, जो कुछ कहा गया है वह स्वभावतः ही वास्तवमें मौजूद हृदयरोगके बारेमें भी ठीक, बल्कि अधिक ठीक उतरता है। यही बात अन्य रोगोंके बारेमें भी कही जा सकती है। उदाहरणतः गुर्दे व खाद्य पदार्थसे होनेवाली शरीर-रचना संबंधी रोग हैं। कहनेका अभिप्राय यह है कि यदि विवाह करनेवाली स्त्रीको इन परिस्थितियोंके खतरे तथा हानियोंका पता हो तो साधारण अवस्थाओं तथा अनुकूल परिस्थितियोंमें विवाहकी इजाजत दी जा सकती है। परंतु गंभीर अवस्थाओंमें उन्हें इससे रोकना चाहिये। इस विचारसे देखा जाय तो यह प्रश्न विवाहके उम्मीदवार बीमार पुरुषकी अपेक्षा भावी पत्नीके लिए अधिक हितका है। ऐसे दुःखी बीमार पुरुषकी पत्नी बनना लेशमात्र भी स्पृहणीय नहीं है। निस्संदेह वह उस पुरुषको हर तरहका संतोष दे सकती है, लेकिन स्वयं उसके पास इसके सिवाय और कुछ नहीं रहता कि वह इसी बातमें सन्तोष मान ले कि वह सदा बलिदान करनेके लिए तय्यार है।

क्षयकी बीमारीकी बात बिलकुल जुदा है। इसके गंभीर केसोंमें, खासकर जब दूसरों (पत्नी तथा बाल बच्चों) का सवाल उठता है पुरुषको विवाह नहीं करना चाहिये, और निश्चय ही ऐसा करनेसे स्वयं उसकी हालत भी खराब होनेके बजाय अच्छी ही हो जाती है, बशर्ते कि बाह्य परिस्थितियां अनुकूल हों। साधारण केसोंमें भी ऐसा करना उसके लिए वांछनीय है और अधिक वांछनीय है। प्रजनन अवयवोंकी बीमारियोंके बारेमें पुरुषके लिये निर्णय करना बहुत बार उतना मुश्किल नहीं होता जितना कि कठोर होता है, लेकिन सलाह देनेवाले डाक्टरोंके लिये यह निर्णय करना उतना ही कठिन भी होता है जितना कि कठोर। क्योंकि जहांतक पुरुषका संबंध है यह बात साफ है कि उसे पूर्ण स्वस्थ हुए बिना विवाह नहीं करना चाहिए किन्तु तब भी डाक्टर, जिसे इस बात का निर्णय करना है कि वास्तवमें रोग दूर हुआ है या नहीं, दुस्तर कठिनाईयोंमें पड़ जाता है।

अन्तमें हम नपुंसकताके बारेमें विचार करते हैं। साधारण केसोंमें इस रोगकी अवस्था की जांच करना बहुत बार रोगी एवं डाक्टर दोनों ही के लिये असाधारण दुष्कर कार्य हो जाता है। यद्यपि मैं इस बारेमें अत्यधिक चिन्ता करनेके खिलाफ हूं, फिर भी विवाह-करने या न करनेका निर्णय बनानेमें एकदम ढील देनेकी सलाह नहीं दे सकता। सबसे उत्तम वस्तु तो यह है कि ऐसे केसमें व्यक्ति अपने आपको इस विषयके किसी निष्णात आदमीके हाथोंमें तुरंत छोड़ दे, जो कि सबसे पहले रोगको मनोवैज्ञानिक, व मनोवैज्ञानिक चिकित्सा पद्धतिसे जांच करेगा।

अपने दूसरे प्रश्न की चर्चा करते हुए भी, कि एक युवती शारीरिक दृष्टिसे विवाहके कहां तक योग्य है, डाक्टरी जांचको छोडकर इस बातका निर्णय करनेके लिये दूसरा कोई उपाय नहीं है। मेरा कहने का यह आशय नहीं है कि इसके लिये ही हमेशा ऐसी जांच की जरूरत है। बल्कि दूसरी तरफ कई सावधान मातापिता हैं जो अवसर मिले तो ऐसी जाँच बहुत पहले ही करा लेते है। लेकिन यदि उस लड़कीके सामने जिसे कि पत्नी बनना है, और उसी तरह उस पतिके सामने उन भयानक आश्चर्यों की संभावना प्रदर्शित नहीं करनी हो, तो वैसी जाँच होनी ही चाहिए।

यह सिर्फ असली प्रजनन-अवयवों पर ही आश्रित नहीं है। प्रजनन कार्यके लिये स्त्रीका संपूर्ण शरीर क्रियारत रहता है, और यदि वर्तमान युगके सभ्य आदमी, यह कार्य बिना किसी अवरोधके पूर्ण करना चाहते हैं, तो, विवाहमें पदार्पण करनेके समय ही यह बात सामान्य रूपसे सोच लेनी चाहिये कि इसके लिये शरीर योग्य है या नहीं? यदि मैथुन क्रियामें अधिक श्रम पुरुष को पड़े और स्त्री आवश्यकता हो तो अ० न

(शेष पृष्ठ २० के कालम १ पर)

कृष्ण कुमारी

श्री सेठ गोविन्ददासजी मालपाणी
एम. एल. ए.

[एक ऐतिहासिक एकांकी नाटक]

[गताङ्कसे आगे]

['कृष्ण कुमारी' नाटक ऐतिहासिक एकांकी नाटक है जिसका सन् १८०८ ई. के मेवाड़के इतिहाससे सम्बन्ध है । इसका उपक्रम गत २१ अक्टूबर १९४१ के अंकमें दिया जा चुका है जिसमें ग्वालियरके महाराज सींधिया द्वारा मेवाड़की राजकन्या कृष्ण कुमारीके परिणयके प्रस्तावका वर्णन है]

पहला दृश्य

स्थान—राजप्रासादके 'रावल' में नजरबाग

समय—प्रातःकाल

[पीछे की ओर ऊँची दीवार दिखायी देती है, जो हरी लताओं से आच्छादित है । दीवालके समीप फलोंके वृक्षों की कतार है । दीवाल से सामने की ओर तथा दोनों तरफ फव्वारों की चौपड़ है, जिसमें नज़दीक नज़दीक अगणित पत्थरके फव्वारे हैं । फव्वारे कुण्डमें हैं । कुण्डमें केशरी रंग भरा है और फव्वारों से केशरी रंग ही उड़ रहा है । फव्वारे की चौपड़के चारों ओर उससे लगा हुआ पत्थर की चीपों से पटा मार्ग है । इस मार्गके बाद क्यारियाँ हैं, जिनमें वसन्तके कारण विविध वर्णोंके फूल फूले हुए हैं । मार्गपर कृष्णकुमारी अपनी कई सखियोंके साथ होली खेल रही है । कुण्डमें से पिचकारियां भर भरकर रंग चल रहा है और गुलाल उड़ रहा है । कृष्णकुमारीकी अवस्था लगभग सोलह वर्ष की है । वह गौर वर्णकी ऊंची, किन्तु दुबली-सी अत्यंत सुन्दर युवती है । यौवनके कारण उसकी सुन्दरता निखर-सी गयी है । उसकी सहेलियां १८ और २० सालके बीच की हैं । कोई गोरी हैं, कोई गेहुएं वर्णकी और कोई सांवली, सभी सुन्दर दिख पड़ती हैं । सब घाघरा, कांचली और ऊपरसे ओढ़नी धारण किये हुए हैं । वसन्तके कारण सबके वस्त्र वसन्ती रंगके हैं और चमकते हुए रूपहरी गोटे तथा गोखरू आदिसे युक्त । वस्त्रों पर रंग पड़नेसे वे गीले होकर शरीरसे चिपट गये हैं । कृष्णकुमारी आभूषणोंसे भी लदी हुई है । शेष युवतियाँ भी भूषण पहने हैं । गान हो रहा है ।]

गान

फागुन नैन नचावत नाचत डोलत लार न छोरत मोरियाँ ।
बीन बजाय अबीर उड़ावत गावत आवत गोरियाँ होरियाँ ॥
फाग खिलारि नये भये मोहन नाहिं करौ अब जोबन जोरियाँ ।
रोरियाँ मीड़ि के रंग में बोरियाँ कान्ह पिछानी मैं चोरियाँ तोरियाँ ॥

एक सहेली—बाई साहब, हमारे साथ तो यह अन्तिम होली है ।

दूसरी—हाँ, अबकी तो जोधपुरके रावलमें होली होगी ।

तीसरी—नहीं नहीं, जयपुरके हवा महल में ।

चौथी—मैं तो जहाँ भी होगी, साथ चलूंगी, बाई साहब ।

कुछ सहेलियाँ—(एक साथ) हम सब, हम सब चलेंगी ।

पाँचवी—क्यों, बाईसाहब, हम में से किस किस को ले चलोगी ?

[सब एक टक कृष्णकुमारीकी ओर देखती हैं । वह कोई उत्तर नहीं देती । कुछ देर निस्तब्धता ।]

छठवीं—सासरे की बात पर बाई साहब कभी बोल ही नहीं सकतीं ।

सातवीं—अच्छा यह कहो, बाईसाहब, महाराजा मान पसन्द हैं, या राजा जगत !

[फिर सब एक टक कृष्णकुमारी की तरफ देखती हैं । वह फिर भी कुछ नहीं बोलती । कुछ देर निस्तब्धता ।]

आठवीं—चलो, भैनो, चलें, जब बाई साहब बोलती ही नहीं, तब हमारे यहाँ रहनेसे लाभ ?

कुछ सहेलियाँ—(एकसाथ) हाँ, हाँ, चलो चलो ।

[सब जाने लगती हैं तब कृष्णकुमारी दौड़ कर सबका रास्ता रोकती और खिलखिला कर हँस पड़ती है ।]

कृष्णकुमारी—तुम सब मुझे कितना तंग करती हो ?

एक—तंग करती हैं ।

दूसरी—जब हृदय आनन्दसे उल्लसित रहता है तब मुख से निकलता है—तंग तंग तंग ।

तीसरी—मानो बजता हो होली का चंग चंग चंग ।

[सब हँस पड़ती हैं]

चौथी—विवाह की बातसे बाईसाहब को इतना हर्ष होगा कि......इतना......इतना हर्ष होगा कि कि......

कृष्णकुमारी—(गुलाल तीसरीके मुख पर मलते हुए) क्यों नहीं मानेगी, ऐं !

[कई सहेलियाँ पिचकारी से कृष्णकुमारी पर रंग डालती हैं ।]

कृष्णकुमारी—मैं न बोलूं तो आफत, बोलूं तो आफत !

पांचवीं—(कृष्णकुमारी पर प्रेमपूर्वक गुलाल फेंकते हुए) इस बार...इस बार तो रंग गुलाल डालकर मनकी निकाल लेने दो, बाई साहब ।

कृष्णकुमारी—(दोनों आंखें हाथोंसे बन्द करते हुए) मैं नाहीं करती हूं ?

सातवीं—अच्छा यह तो बताओ कि महाराजा मान पसंद हैं या राजा जगत ?

कृष्णकुमारी—(लम्बी सांस लेकर) जैसे मैंने किसीको देखा है ?

सातवीं—गुण तो सुने हैं । मनुष्य उससे भी प्रेम कर सकता है जिसे कभी न देखा हो । यथार्थमें सच्चा प्रेम, जो कुछ दिखता है, उससे नहीं, पर जो नहीं दिखता, उससे होता है ।

कृष्णकुमारी—जैसे मेरे प्रेम से कुछ होने जाने वाला हो ।

छठवीं—क्यों, मुझे विश्वास है दरबार और पटरानी जी, जिससे तुम कहोगी, तुम्हारा विवाह कर देंगे ।

कृष्णकुमारी—(गंभीरता से) पर मैं कहने वाली हूँ कौन सखि ? अब इस देशमें स्वयंवर नहीं होते ।

पांचवीं—स्वयंवर चाहे न होते हों, पर, बाई साहब, आप पर दरबार और पटरानी जी का इतना स्नेह है कि आपका कहना कभी टल सकता है ?

कृष्णकुमारी—(फिर लंबी सांस लेकर) राजस्थानके रावलोंमें पुत्रियाँ नहीं, वे हैं राजस्थानकी राजनैतिक शतरंजकी प्यादियाँ । तुम सब राजकुमारियोंकी अपेक्षा अधिक स्वतंत्र हो, इसीलिये कहा कि इस प्रकार हँसी कर रही हो । सखियो, राजस्थानकी कन्याओंके लिये न विवाह हर्षकी बात है, न विवाहके पश्चात्का जीवन । (कुछ रुककर) इतिहास देखो—कितनोंका विवाह उनकी इच्छाके अनुसार हुआ है ? और कितनी विधर्मियों तकको दे दी गयीं ? विवाहके पश्चात् भी किस किसको किस किस परिस्थितिका सामना करना पड़ा ? तुम मेरी हँसी उड़ा रही हो, मेरे भाग्यमें भी न जाने क्या बदा है ?

आठवीं—पर, बाईसाहब, शिशोदियोंकी कोई राजकुमारी राजपूतके अतिरिक्त किसीको नहीं दी गई । किसका साहस है कि वह उदयपुर के रावल पर दृष्टि...

[एक गोली का प्रवेश । वह आकर कृष्णकुमारी का अभिवादन करती है ।]

गोली—बाईसाहब, कुंवर ज्वानसिंहजी आपसे मिलने को पधारे हैं ।

कृष्णकुमारी—ज्वानसिंहजी ! छारंडीके दिन और इतने तड़के ?

गोली—हाँ, बाईसाहब । कहलाया है अत्यंत आवश्यक कार्य है ।

कृष्णकुमारी—अच्छा, आई ।

[कृष्णकुमारी गोली के साथ जाने लगती है । उसी समय छींक होती है ।]

एक सहेली—(कृष्णकुमारी के निकट बढ़कर उसे रोकते हुए) बाई साहब, छींक हुई है, आप थोड़ी देर ठहर जांय ।

कृष्णकुमारी—(हँसते और जाते हुए) मैं इन सब व्यर्थ की बातोंको नहीं मानती ।

[नेपथ्यसे कुछ शृगालों का शब्द आता है ।]

दूसरी सहेली—(आगे बढ़कर) बाई साहब, ठहर जाइये, ठहर जाइये ।

कृष्णकुमारी—(ठहरकर) क्यों, हुआ क्या ?

वही सहेली—दिनको सियाल बोल रहे हैं, बाई साहब...

कुछ सहेलियाँ—(एक साथ घबड़ाहटसे) हाँ, हाँ, खोटे, बड़े खोटे सगुन हैं।

कृष्णकुमारी—(हँसते और जाते हुए) अरे, छोड़ो भी ये बातें।

[कृष्णकुमारी गोलीके साथ जाती है। कुछ सहेलियाँ चिन्ताकुल दृष्टिसे एक दूसरे की ओर देखती हैं।]

(लघुयवनिका)

दूसरा दृश्य

स्थान–रावलमें कृष्णकुमारीका महल

समय–प्रातःकाल

[महल एक कमरा है। दीवालों और छतपर बादली तैल रंग है, जिसपर यथा स्थान रंगबिरंगे बेलबूटे। खिड़कियोंपर संगमर्मर की जाली है और दरवाजोंकी चौखटों और किवाड़ोंपर खुदाईका काम। छतसे बिल्लौरके झाड़ लटक रहे हैं। सुन्दर कालीन हैं। कालीनपर सफेद चादरसे ढकी हुई गद्दी है, जिसपर सफेद खोलीसे आच्छादित मसनद लगे हुए हैं। ज्वानसिंह बेचैनीसे इधर उधर टहल रहा है। उसका मुख अत्यंत म्लान और अत्यधिक चिन्ता एवं उद्विग्नता से व्याप्त दिख पड़ता है। इस समय वह जामा न पहनकर सफेद रंगका लंबा अंगरखा पहने है। अंगरखेके नीचे धोती दिखती है। सिरपर वसंती रंगकी पगड़ी है और कमरमें उसी रंगका दुपट्टा, पर दुपट्टेमें तलवार या कटार नहीं दिखती। कृष्ण कुमारीका प्रवेश। उसने अपने भीगे हुए वस्त्र बदल दिये हैं। ओढ़नी है वसंती, घाघरा लाल और काँचली हरी। सब वस्त्रों पर गोटेकी भरमार है। उसने स्नान भी कर लिया है, पर मुखके रंग और गुलाल बिलकुल नहीं छूट पाये हैं। रंग एवं गुलालकी झांईके कारण उसकी सुंदरतामें और वृद्धि हो गई है। कृष्णकुमारीकी आहट पाकर ज्वानसिंह चौंक-सा पड़ता है और कृष्णकुमारीकी ओर देखता है।]

कृष्णकुमारी—(ज्वानसिंहकी ओर देखते हुए) मुझे बुलाया, भाया ?

ज्वानसिंह—(भर्राये हुए स्वरमें) हाँ, भैन, क्षमा करना, तुम्हारे होलीके खेलमें बाधा पहुँचाई।

कृष्णकुमारी—(गद्दी पर बैठते हुए) नहीं, नहीं, मैं तो नहाने आ ही रही थी। बैठो। कोई आवश्यक काम होगा।

ज्वानसिंह—(गद्दीके एक कोने पर बैठते हुए गला साफ कर उसी प्रकारके स्वरमें) आवश्यक ... हाँ, आवश्यक कार्य ही है, (कुछ रुककर) नहीं नहीं ... ऐसा ... ... ऐसा आवश्यक तो नहीं ... पर ... पर ... (चुप हो जाता है।)

कृष्णकुमारी—(ध्यानपूर्वक ज्वानसिंह की ओर देखते हुए) आज किस प्रकार बोल रहे हो, भाया ?

ज्वानसिंह—(उसी तरह) किस ... ... किस प्रकार बोल रहा हूँ ? ठीक ... ठीक नहीं बोल रहा हूँ भैन ?

कृष्णकुमारी—(और भी ध्यानपूर्वक ज्वानसिंह की ओर देखते हुए कुछ आश्चर्य से) ठीक ! ठीक क्या, मैंने इस तरह कभी तुम्हें बोलते हुए सुना ही नहीं; न ऐसे स्वरमें, न इस मुद्रा से।

ज्वानसिंह—(बहुत देर तक गला साफ करते तथा बगलें झाँकते हुए)...ऐं;......ऐसा......ऐसा...(चुप हो जाता है।)

कृष्णकुमारी—(आश्चर्य और चिन्ताकुल स्वर में). भाया, क्या......क्या बात है; मुझे तो चिन्ता—सी होने लगी।

ज्वानसिंह—(जल्दी से) कुछ नहीं......कुछ नहीं, भैन। मैं समझता हूँ मेवाड़पर जो आपत्ति आ रही है उसीका कदाचित मुझपर भी प्रभाव होगा।

कृष्णकुमारी—(अत्यंत आश्चर्य और अत्यधिक चिंतासे) मेवाड़ पर आपत्ति ! कोई नई बात हुई है ?

ज्वानसिंह—(फिर गला साफ करते हुए) नई...... नई बात तो ऐसी कुछ नहीं, पर एक पुरानी... ...पुरानी बात ने ही नया रूप धारण कर लिया है।

कृष्णकुमारी—(उत्सुकतासे) किस बात ने भाया ?

ज्वानसिंह—क्या...क्या करोगी तुम उसे सुनकर, भैन ?

कृष्णकुमारी—क्यों, क्या मैं मेवाड़ की नहीं हूँ ? इसी पृथ्वीसे मेरा शरीर नहीं बना है ? इसीके वायुमंडलमें नहीं पला है ?

ज्वानसिंह—यह तो ठीक है, भैन, परन्तु...परन्तु...

कृष्णकुमारी—किन्तु, परन्तु कुछ नहीं, भाया। मुझे भी मेवाड़की आपत्ति जानने का अधिकार है।

ज्वानसिंह—(उठकर इधर उधर टहलते हुए) अधिकार...अधिकार...तो...अधिकार... (चुप हो जाता है।)

कृष्णकुमारी—(उठकर ज्वानसिंह का हाथ पकड़ उसे बैठा उसकी ओर ध्यानपूर्वक देखते हुए) भाया, तुम्हारी तो विचित्र...विचित्र दशा है ! आज पर्यंत मैंने तुम्हें कभी भी ऐसी हालतमें नहीं देखा !

ज्वानसिंह—(गला साफ कर बगलें झांकते हुए) ऐसा...ऐसा...

कृष्णकुमारी—है क्या भाया ? मुझे होली खेलतेमेंसे बुलाया, आवश्यक काम है। जब आयी और काम पूछा तब पहले बोले 'हाँ आवश्यक कार्य ही है', फिर उसी साँस में बोल उठे 'ऐसा आवश्यक तो नहीं। चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही हैं, स्वर भर्रा रहा है। कारण पूछा तो बोले–'मेवाड़ पर जो आपत्ति आ रही है कदाचित उसीका प्रभाव होगा' आपत्ति पूछती हूं तो बताते नहीं। निरर्थक शब्दोंको दुहराते हो—'किन्तु...किन्तु' 'परन्तु...परन्तु' 'ऐसा...ऐसा'। है क्या भाया, है क्या ? अब तो मेरा कलेजा भी मुँहको आ रहा है। मेरा चित्त भी अत्यंत अस्थिर हो उठा है।

ज्वानसिंह—(कुछ सँभलकर लंबी साँस ले) भैन, आपत्तियोंको पुरुष ही सहन कर लें तो अच्छा है। स्त्रियों तक वे बातें न पहुँचने देना ही पुरुषोंका कर्त्तव्य होना चाहिये।

कृष्णकुमारी—व्यर्थकी बातें न करो भाया, जीवन रथके स्त्री और पुरुष दोनों चक्र हैं। मेवाड़ने तो सदा यही माना है। जब जब देश पर आपत्ति आई है, उसके निवारणका, उसके लिये बलिदानका, दोनोंने समान रूपसे प्रयत्न किया है।

[ज्वानसिंह कोई उत्तर न देकर सिर झुका विचारमग्न सा हो जाता है। कृष्णकुमारी एकटक उसकी ओर देखती है। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

कृष्णकुमारी—(एकाएक) भाया, तुम्हें सौगन्ध है मेरी, यदि तुम सब बातें स्पष्ट रूपसे मुझे न बताओगे।

जवानसिंह—(धीरे धीरे सिर उठाकर लंबी सांस ले) भैन, तुम सौगन्ध दिला रही हो, क्या कहूँ ? तुम्हारे दिन हैं खेलने हंसनेके, जीवनके यथार्थ आरंभके समय, जीवनके वसंतके बीच, जीवनकी समाप्तिका संवाद—जीवनके पतझड़का संवाद सुननेकी अपेक्षा सुनाना कदाचित कहीं कठिन कार्य है। भैन, मैंने तुम्हें पालनेमें अपने अंगोंको हिलाते, रोते और मुस्कराते देखा है। तुम्हें गोदमें खिलाया है और तुम्हारे साथ खेला भी हूं। तुम्हें पढ़ाया और तुम्हारे साथ पढ़ा भी हूं। प्रेमीको प्रेमिकाके सौंदर्यको देख यदि उमंगे उठती हैं, तो भाईको भैनका सौंदर्य देख उल्लास उठता है। प्रेमीकी दृष्टिमें यदि वर्षा ऋतुका मद रहता है, तो भाई की दृष्टिमें शरदकी स्वच्छता। भैन, तुम मेरी ही नहीं, रावलकी स्फूर्ति हो, स्नेह–प्रतिमा हो। (कुछ रुककर) क्या—क्या कहूं तुमसे, इस आपत्तिका कारण तुम्हें सुनाने का मेरा साहस नहीं होता।

[सिर झुका लेता है।]

कृष्णकुमारी—(एकटक ज्वानसिंह की ओर देखते हुए) क्यों, क्या मैं अबला हूँ, इसलिये ? पर तुम्हें समझना चाहिये कि राजपूतनियां अबला नहीं, सबला हुआ करती हैं।

ज्वानसिंह—(सिर उठाकर) नहीं, नहीं ... इसलिये ... इसलिये नहीं, भैन, पर ... पर ... (फिर सिर झुका लेता है।)

कृष्णकुमारी—(सोचते हुए) तब ... तब क्या इसलिये कि आपत्ति का मैं कारण हूँ, भाया।

[ज्वानसिंह सिर उठाकर कृष्णकुमारी की ओर केवल देखता है, पर कुछ बोलता नहीं]

कृष्णकुमारी—(ज्वानसिंह की ओर देखते हुए कुछ देर बाद) समझी, मैं ही आपत्ति का कारण हूँ। (कुछ रुक कर) मेरे विवाहके संबंधमें जो झगड़ा उठा हुआ है, उसने कोई उग्र रूप धारण किया होगा ?

[ज्वानसिंह चुपचाप कृष्णकुमारी की ओर देखता रहता है, कुछ बोलता नहीं। कृष्णकुमारी सिर झुकाकर कुछ सोचने लगती है। कुछ देर निस्तब्धता।]

कृष्णकुमारी—(एकाएक जोश भरे स्वर में सिर उठाकर) भाया, मैं क्षत्राणी हूँ, सुना, सच्ची राजपूतनी। क्षत्राणियों की वीर गाथाएं पहले पहल तुम्हींने मुझे सुनाना आरंभ किया था। फिर...फिर तो वे मेरे भजन...हाँ, भजनकी सामग्री हो गयीं। जिन वीर माताओं, जिन वीर पत्नियों, जिन वीर पुत्रियोंने अपने कुल, अपनी जाति, अपने देश, अपने धर्म के लिये सहर्ष उत्साह और उमंग से कष्ट सहन किये हैं, अपने प्यारे प्राण दिये हैं, वन वन भटकी हैं, और अग्नि की तप्त ज्वालाओंको भी शीतल हिमके सदृश आलिंगन किया है, उनके जीवन, उनके जीवनोंके दृश्य मेरे सामने घूमते रहते हैं। अनेक बार मैं उनके स्वप्न देखती हूँ। उनके प्रति पूज्य...परम पूज्य भावनाएं रहते हुए भी मेरे हृदयमें उनके प्रति अनेक बार डाह—सी उत्पन्न होती है। मेरे मनमें उठता है, मुझे...मुझे भी कभी ऐसा अवसर प्राप्त हो सकता है जब मैं अपने जीवन को अपने कुल, अपनी जाति, अपने धर्म, अपने देशके लिये उत्सर्ग कर सकूँ। (कुछ रुककर) भाया, यदि मैं आपत्ति का कारण हूँ, मेरे किसी भी प्रकारके त्याग, अरे, शरीर तक के अर्पण से, यदि वह आपत्ति दूर हो सकती हो, तो कहो...कहो, भाया, वह...वह संवाद तो मेरे लिये दुःख नहीं, हर्षका, खेद नहीं उल्लास का विषय होगा।

ज्वानसिंह—(गद्गद स्वरमें) धन्य...धन्य हो, भैन, धन्य हो तुम। तुम सच्ची वीर बाला हो। तुम सच्ची क्षत्राणी हो, सच्ची राजपूतनी। (कुछ रुककर) भैन, तुम्हारे विवाहके झगड़े ने ही उग्र रूप धारण किया है। महाराजा मान और राजा जगतकी ही तुम्हारी मांग नहीं है, एक नयी महान् समस्या और उपस्थित हो गयी है।

कृष्णकुमारी—कैसी ?

ज्वानसिंह—सींधियाने तुमसे विवाह करनेका प्रस्ताव किया है।

कृष्णकुमारी—ऐसा !

ज्वानसिंह—हाँ, उसने दरबारके सामने रखा है कि या तो वे राठौरों, मराठों, और अंग्रेजों, सबसे युद्ध करें या तुम्हारा विवाह उससे करें।

(शेष पृष्ठ २० के कालम १ पर)

श्रीनिवास कॉटन मिल्स लिमिटेड

बंबई

अपने क़लापूर्ण, सुन्दर और टिकाऊ कपड़े के लिये मशहूर हैं।

★

ट्रेड नेम्स

नरेन्द्र गोल्डन प्लम एस. एन. सी. फॉक्स ग्लोब नगेन्द्र	धुला लांग क्लाथ
के के के के के ओ ओ ओ ओ ओ हिन्दनो ताज असली फूल बनर्जी यू. पी. एक्सप्रेस सी. पी. एक्सप्रेस मारवाड़ एक्सप्रेस	धुली धोतियां व साड़ियां
डायमण्ड हाल डायमण्ड चेन डायमण्ड बैटरी बंगाल फैशन प्रोमिनेंट लीडर प्रोमिनेंट फैशन	धुली या कोरी पॉपलीन
फलाइंग मून मालिनी मिस बिब्बो	चेक वायल

आदि आदि

★

इस मिल म सब प्रकार का धुला व कोरा कपड़ा—लांग क्लाथ, शर्टिंग, वायल, धोतियां, साड़ियां, मलमल, छपी हुई—छींट, वायल, बोस्की आदि कपड़ा विविध डिज़ाइनों और रंगों में तैयार होता है।

यदि आप उत्तम-सुन्दर-कलापूर्ण, टिकाऊ तथा सस्ता कपड़ा चाहते हैं, तो हमारे मिल के बने हुये कपड़ों से आप को पूर्ण संतोष मिल सकेगा—क्योंकि यह मिल भारतकी सामाजिक, आर्थिक अवस्था, तथा सर्वसाधारण की रुचि को लक्ष्य में रखकर ही सब प्रकार के वस्त्र तयार करता है।

बाज़ार में कपड़ा खरीदते समय इसी मिल का कपड़ा खरीदिये।

इस मिल का बना कपड़ा इस्तेमाल कर आप निश्चय ही प्रसन्न होंगे।

★

ट्रेड मार्क

- महाल
- पेटल ब्यूटी
- गोल्डन प्लम
- फॉक्स ग्लोब
- श्रीरामपंचायतन
- चार्मिंग ब्यूटी
- माधुरी
- मुरली
- ईस्टर्न ब्यूटी
- सेक्रेड फ्लूट
- श्रीराम

★

—हमारी विशेषता—

रेडियोगर्ल और नरेन्द्र कालिटी का धुला लांगक्लाथ—इसे बरतकर आप अवश्य सन्तुष्ट और प्रसन्न होंगे।

— हमारे सेलिंग एजेण्ट —

बम्बई
दी बम्बई एजन्सी कम्पनी लिमिटेड
सर विठ्ठलदास गली,
मूलजी जेठा मार्केट, बम्बई नं० २

कलकत्ता
मंगनीराम रामकुमार
६५ बांसतल्ला स्ट्रीट
कलकत्ता

कानपुर
ज्वालाप्रसाद राधाकिशन,
काहू कोठी, कानपुर

अमृतसर
शामदास कपूर एण्ड कम्पनी
कटरा अहलुवाल
अमृतसर

दिल्ली
हनुमानप्रसाद धूत एण्ड कम्पनी
कटरा नवाब
देहली

पत्र-व्यवहार का पताः—

श्रीनिवास कॉटन मिल्स लिमिटेड
डिलाइल रोड, बंम्बई नं १३.

शिक्षा प्रसारकी एक योजना

★ श्री कर्णसिंहजी मेहता ★

जैसा मैं अपने प्रथम लेखमें कह चुका हूं, भारत वर्षमें फैले हुए प्रवासी भाइयोंके लिये शिक्षा प्रसार की योजना हम केवल माहेश्वरी समाजके लिये ही नहीं बना सकते। केवल थोडेसे माहेश्वरी समाजके युवकों को शिक्षित बनाकर हम प्रवासमें अपना कल्याण नहीं कर सकते। प्रवासी भाइयोंमें माहेश्वरी समाज तो मारवाडी समाज का एक छोटा सा अङ्ग है, इसलिये प्रवासमें यदि हमें अपना गौरव बनाये रखना है तो हमें शिक्षाके प्रसारके विषयमें कुछ विस्तृत भाव लेना होगा।

मेरी शिक्षा प्रसार की योजना इस प्रकार है। स्वतंत्र रूपसे एक मारवाड़ी शिक्षा प्रसारक बोर्ड कायम होना चाहिये। उसको कायम करनेके लिये माहेश्वरी महासभा अग्रणी बन सकती है। महासभा की कार्यकारिणी कमेटी इस काम को इस तरहसे हाथमें ले। कमेटी मारवाड़ी समाज के चुने हुए नेताओंकी एक कान्फरन्स बम्बई या कलकत्तामें बुलावे। मेरा मतलब यहां चुने हुए शब्दसे Elected नहीं है, यहां मतलब है Selected। इस कान्फरन्सके लिये अग्रवाल, ओसवाल, माहेश्वरी, ब्राह्मण इत्यादि जातियोंके नेताओंको और ऐसे कार्यकर्त्ताओंको जो सामाजिक सुधारोंमें भाग लेते रहते हैं, निमंत्रण दे।

इस कान्फरन्स का केवल उद्देश प्रवासी मारवाड़ी समाजमें शिक्षा प्रसार पर विचार विनिमय करना व ऐसी योजना पास करना हो जो प्रवासी भाईयोंके लिये आवश्यक हो। कान्फरंसके सामने महासभाकी तरफसे ऐसा एक प्रस्ताव पेश किया जावे कि मारवाडी शिक्षा प्रसारक बोर्ड स्थापित किया जावे जो एक स्वतंत्र संस्था रहे। ऐसी संस्थाका संगठन करनेके लिये कान्फरंस एक कमेटी १० या १५ सज्जनोंकी बनादे। कमेटीके मेम्बर प्रभावशाली व्यक्ति होने चाहियें, कुछ ऐसे भी व्यक्ति हों जो सामाजिक भलाई के कामों में रात दिन निरत हों। कमेटीमें अग्रवाल, ओसवाल माहेश्वरी ब्राह्मण इत्यादि सबका प्रतिनिधित्व रहना चाहिये। कमेटीके लिये आदेश यह हो कि वह इस बोर्डके लिये प्रथमतः ५०० मेम्बर बनावें। मेम्बर वही बन सके जो मासिक १०) या ज्यादा चन्दा देना स्वीकार करें। मेम्बर ऐसे सज्जनोंको ही बनानेकी चेष्टा की जानी चाहिये जिनकी आर्थिक अवस्था मजबुत हो और जो बडे प्रेमसे मेम्बर बनना स्वीकार करें। सारे भारत वर्षमें अग्रवाल, ओसवाल, महेश्वरी इत्यादि समाजोंके धनाढयोंमें एसे ५०० मेम्बर बनना कोई मुश्किल बात नहीं। ५०० मेम्बर बननेसे माहवारी ५०००) या इससे अधिक क्योंकि कई मेम्बर १०) माहवारसे ज्यादा देना भी अवश्य कबूल करेंगे, पक्की आमद संस्थाको होजाना निश्चय है। बोर्डकी कार्यप्रणाली इस प्रकार हो। बोर्ड आमदके अनुसार मासिक ५०) वेतन पर शिक्षक व शिक्षिकाएं नियत करे, यह नियम रहे कि शिक्षिकाओंकी संख्या शिक्षकोंसे कम न रहे। जहां कहीं कमसे कम पचास मारवाड़ी गृहस्थोंकी बस्ती हो उस बस्तीको उस बस्तीकी तरफसे मांग आनेपर एक शिक्षक या एक शिक्षिका एक वर्षके लिये मुफ्त भेज दी जावे। उस शिक्षक या शिक्षिका का यह कर्तव्य हो कि ऐसे स्थान पर जाते ही वह पढाईकी क्लासें खोल दें, साथमें अपने स्थान पर एक छोटा वाचनालय रख लें। योग्य शिक्षक दो तीन महीने में ही वहांके मारवाडी समाजमें एक आकर्षक व्यक्ति बन सकता है। लोगोंमें अच्छा प्रभाव पैदा करनेके बाद वह अपना कार्यक्षेत्र बढावे। अपने स्थानको शिक्षाका केन्द्र बनावे और साथमें ही स्वतंत्र रूपसे वहांकी बस्तीकी तरफसे उस स्थानके शिक्षा केन्द्रके लिये कोई आमदका जरिया कायम कराकर (यदि और कोई आमदका रास्ता न बने तो मासिक फीस पढ़नेवालों पर लगाई जावे) व उस स्थानके शिक्षा केन्द्रको मजबूत बनाकर अपना कार्य समाप्त करे और वह शिक्षक वहांसे एक वर्ष बाद उठा लिया जावे व अन्य स्थानपर भेजा जावे। हरएक १० शिक्षकोंपर एक इन्सपेक्टर रहे। शिक्षिकाओंके लिये स्त्री-इन्सपेक्टर रहे। ये इन्सपेक्टर अपने अपने दायेरेमें हमेशा दौरा करते रहें और कार्यका निरीक्षण करते रहें, साथमें शिक्षकोंको गाइड भी करते रहें कि उनको किस ढंगसे अपने अपने स्थानोंमें स्वतंत्र रूपसे चलनेवाला शिक्षाकेन्द्र बनाना चाहिये और उनको अपने अपने स्थानोंमें किस ढंगसे एक आकर्षक व्यक्ति बनाना चाहिये, इत्यादि।

२०० मेम्बर बन जानेपर ही बोर्डका चुनाव हो जाना चाहिये और बोर्डकी नियमावली व कार्यप्रणाली नियत होजानी चाहिये और कार्य भी शुरू होजाना चाहिये। ज्यों ज्यों मेम्बर बढते जावें त्यों त्यों कार्यका क्षेत्र बढाया जाय।

इस तरह ५०० मेम्बर बननेपर १०० शिक्षक व शिक्षिकाएं नियत की जा सकती हैं जो एक वर्षमें १०० स्थानोंमें मारवाडी समाजमें शिक्षाप्रसारका कार्य जोरोंसे कर सकेंगे। पांच वर्षमें पांचसौ स्थानोंको शिक्षित बनानेका कार्य पूर्ण हो सकता है। शिक्षिकाएं ऐसे स्थानोंमें भेजी जावें जहां पुरुषोंकी शिक्षाका काफी सुभीता हो परन्तु स्त्री शिक्षाका अभाव हो। ऐसे शिक्षाप्रसारके साथ साथ प्रवासी भाईयोंका अच्छा संगठन भी बन जानेकी सम्भावना रहेगी व अन्य सुधार स्वतः होने लगेंगे।

मारवाडी शिक्षाप्रसारक बोर्डका आफिस (Head-quarters) बम्बई या कलकत्ता जैसे केन्द्रीय स्थानमें ही रहना चाहिये और यह एक केन्द्रीय संस्था ही रहे। इसकी प्रान्तीय शाखाएं बनानेकी कोई आवश्यकता नहीं और न कोई प्रान्तीय भाव दिखानेकी जरूरत है। जहां जैसी मांग हो व जैसी आवश्यकता समझी जावे वहां ही यह संस्था बिना किसी भेद भावके निःशुल्क रूपमें शिक्षा प्रसारमें मदद दे।

शिक्षक बना किसी चार्जके मुफ्त देनेसे नतीजा यह होगा कि ऐसे व्यक्तियोंका प्रभाव विशेष रहेगा व उस गांव व कस्बेवाले विशेष प्रेमसे शिक्षाकी तरफ झुकेंगे और ऐसे शिक्षकोंको उन स्थानोंमें शिक्षा प्रसारकी स्वतंत्र रूपसे चलनेवाली संस्थाएं खोलने व संघटन बनानेमें बहुत सुभीता रहेगा और उन स्थानोंके लोगोंसे वेतन भी न रहनेके कारण ऐसे शिक्षक विशेष मानकी दृष्टिसे देखे जावेंगे।

(पृष्ठ ५ का शेषांश)

अनुसार गोबेल्सने विदेशी समाचारपत्रोंके संवाददाताओंकी एक छोटी सभामें घोषित किया था कि उसे ऐसा आभास होता था कि पूर्ण जर्मन विजय बिलकुल निकट थी। उसने अपने विचार पिछले राजकीय और सैनिक विकासके परिणामों पर निर्धारित किये थे और इस बात पर जोर दिया था कि अभी तक किसी भी नेशनल सोशलिस्ट नेताने किसी खास कार्यकी पूर्णताके विषयमें पहलेसे ही आगाही नहीं की थी। यह अब पहली बार ही हुआ है जब हिटलरने कहा कि इसी वर्षके दरम्यान ब्रिटेनको हरा दिया जायगा। इस कथन द्वारा जर्मन राष्ट्रके नेताओंने एक मौलिक जिम्मेवारी अपने ऊपर ले ली जो उन्हें निभानी थी।

अभी हाल ही में हमने जर्मनीसे बिल्कुल ही जुदी आवाज आती हुई सुनी है। फ्यूरर ने ४ मईको राइखस्टागके व्याख्यानमें यह निर्देश किया था कि युद्ध संभवतः सन् १९४२ में भी चालू रहे। यह इन्हीं प्रतिक्रियाओंके आधारपर किया है कि अमेरिका युद्धमें दखल देगा। यह बात Dienst aus Deutschland अखबार की टिप्पणीमें प्रगट हुई थी।

फिर भी हिटलर और जर्मन सैनिक हाई कमान्ड जानते हैं कि सन् १९४१ में ब्रिटेन पर आक्रमण तथा अटलान्टिक युद्धमें असफलता के मानी हैं कि वे संभवतः किसी हालतमें विजय नहीं पा सकें। यदि सन् १९४१ में हिटलर ब्रिटेन पर अपनी हवाई श्रेष्ठता नहीं जमा सका तो सन् १९४२ में ऐसा करनेके लिये उसके अवसर और भी कम हो जायेंगे क्योंकि सन् १९४१ के प्रथम छः मासमें हर मासके हिसाब से सिर्फ ३०० हवाई जहाज संयुक्त राष्ट्रसे ब्रिटेनको प्राप्त हुए थे, परन्तु सन् १९४२ में इससे दुगुनेसे भी कहीं अधिक हवाई जहाज उसे मिल सकेंगे। यदि सन् १९४१ में जर्मनीके प्रहार कारगर न हो सकें जब कि ब्रिटेन सिर्फ अर्ध शस्त्र-सज्ज है, तो सन् १९४२ में उसकी विजयके मौके अत्यंत कम हो जायेंगे, जब कि ब्रिटेन पूरी तरह शस्त्र सज्ज राष्ट्रके रूपमें बदल जायगा। यही कारण है कि हिटलरने एशियाको युद्धका एक महत्वपूर्ण मोर्चा जानते हुए भी, अपनी शक्तिशाली फौज और सेनाका बड़ा हिस्सा ब्रिटेनके विरुद्ध युद्धहीमें अब तक जुटाये रखा है।

किसी कारण वश यह परिस्थिति बदल जाय और भूमध्य-सागरका युद्ध और एशिया का रणक्षेत्र हिटलरके युद्धके लिये मुख्य मोर्चेके रूपमें परिवर्तित हो जाय तो जर्मनीके लिये यह मानी हुई बात है कि उसका हाई कमान्ड ब्रिटेन पर पूरा विजय पाने, आक्रमण करने और अटलान्टिक पर संपूर्ण प्रभुत्व जमानेके लिये असफलता ही पायेगा।

सोवियेट रूसके खिलाफ हिटलरने जब युद्ध शुरू किया तब यह लेख यहां तक लिखा जा चुका था। मैंने यह जो कहा है कि हिटलरका बाल्कन प्रदेशोंमें युद्ध, उसके अफ्रीका एवं निकट पूर्वके युद्धके समान ही गौण महत्व का है, यह बात उसके रूसके खिलाफ युद्धके लिये नहीं मानी जानी चाहिये। यहां, जर्मनीकी सेना तथा हवाई दल की मुख्य ताकतें केन्द्रित की गई हैं क्योंकि फिलहाल ब्रिटिश शाही हवाई सेनाने इंग्लिश चेनलके किनारे अपनी श्रेष्ठता सिद्ध की है।

हिटलरका सोवियेट रूसके विरुद्ध युद्ध यह बात निस्संदेह जाहिर करता है कि जर्मन सेनाका हाई कमाण्ड इस समय इंग्लैंड पर चढ़ाई करना बहुत खतरनाक समझता है। नहीं तो उसने इसके लिये अवश्य कोशिश की होती, क्योंकि यदि वह उसे (इंग्लैंडको) जीत लेता तो रूसको तो अपनी मुट्ठीमें ही रख सकता था। परंतु एशिया पर तेज़ रफ्तारसे फतह, साथ ही युक्रेनका गेहूं, और काकेशसका तेल भंडार मिलकर बिलकुल जुदी ही चीज़ होगी। इसतरह प्रत्येक दिन जो रूस जर्मनीका सामना करता है वह इंग्लैंडकी सहायता देनेवाला दिन है। रूसकी लड़ाईमें नष्ट होता हुआ जर्मनीका प्रत्येक हवाई जहाज, इंग्लैंडके खिलाफ उपयोगमें कभी भी नहीं लाया जा सकेगा। रूस व एशियामें हिटलरकी हरेक फतहके कारण ब्रिटनको जो क्षति हुई है, उसकी पूर्तिसे ज्यादा उसे प्राप्त हो सकता है, यदि इसी बीच इंग्लैंड नार्वेसे फ्रांस तकके जर्मन आक्रमण अड्डोंको नष्ट करनेमें सफल हो, जिससे हिटलर सन् १९४१ में इंग्लैंडके विरुद्ध जंगी मोर्चा लेनेमें असमर्थ होगा।

रूस तथा निकटपूर्वमें हिटलरके लिये बड़े भारी प्रमाणमें फतह पाना संभव है। इंग्लैंड तथा अमेरिकाके साथ कर इस अवस्थाके सारे प्रयत्न इतने बढ़ जायेंगे कि उसकी पूर्वीय समस्त सफलताओंके बावजूद भी हिटलरके लिये युद्धको बंद कर देना असंभव बन जायगा।

('एशिया' अगस्त' ४१ से)

★ शिक्षा प्रसार विषयक योजना पर कुछ विचार ★

विधवाओं की समस्यापर अधिक ध्यान दें

आजकल हमारे समाजमें बड़े नगरों तथा शहरोंमें कन्या शिक्षा करीब २ सब घरोंमें है लेकिन ग्रामोंमें कन्याशिक्षाका अभाव है। इसके साथ-साथ राजस्थानमें प्रौढ़ महिलाओंकी शिक्षाका तो हर जगह अभाव है चाहे वह नगर हो या ग्राम। शहरों में भी कुछ घर ऐसे हैं जो अपनी कन्याओंकी शिक्षाका भार नहीं सम्भाल सकते। इस लिए मेरी रायमें महासभा को राजस्थानके ग्रामोंमें प्रौढ़ महिलाओं तथा कन्याओंकी शिक्षाओंपर पूर्ण ध्यान देना चाहिए। अन्य प्रान्तोंमें तो हर जगह शिक्षाकी सुविधा है। इस लिए महासभाको ज्यादा धन राजस्थानके ग्रामोंमें शिक्षापर खर्च करना चाहिए जो धन इस योजनामें प्रौढ़ महिलाओं की शिक्षापर खर्च करनेका विचार किया है वह बहुत कम है। महासभाको ५० फीसदी खर्च देना चाहिए।

आपने अनाथ बालक बालिकाओंकी शिक्षापर ५०००) रुपये खर्च करनेका निश्चय किया है। आप अनाथकी परिभाषा क्या करेंगे? मेरी रायमें महासभाको एक माहेश्वरी अनाथालय स्थापित करना चाहिए और वहां पर जो अनाथकी परिभाषामें आ जांय उनको रखा जाय और उनकी विद्याका प्रबन्ध किया जाय।

आपने २० विधवाओंकी शिक्षापर ६०००) रुपये एक सालमें खर्च करनेकी योजना रखी है। लेकिन मैं इससे भी सहमत नहीं हूं। मैं यह चाहता हूं कि महासभा विधवाओंको दूसरे विधवाश्रम तथा वनिताश्रमों में रखनेके बजाय माहेश्वरी विधवाश्रम हर एक प्रान्तमें खोले। अगर हर एक प्रान्तमें नहीं खोल सके तो दो या तीन या एक माहेश्वरी विधवाश्रम तमाम भारतवर्षकी माहेश्वरी विधवाओंके लिए खोलें और उनमें उन विधवाओंको Literary Education के साथ साथ Technical Education भी दें। शिक्षाके बाद अगर विधवा चाहे तो अपने स्थानको जा सकती है। अगर वहीं रहना चाहे तो उसको काम दें और उसकी मेहनतसे जो कुछ प्राप्त हो वह उसके पालनमें खर्च करे। महासभाको इसपर विशेष खर्च नहीं करना पड़ेगा। इस समय महासभाको विधवाश्रम और अनाथालय खोलना चाहिए। कारण, इन चन्द वर्षोंमें कई स्त्रियां बाल्यावस्थामें ही विधवा हो गयी हैं और दिनों दिन ऐसी विधवाओंकी संख्या बढ़ती ही जाती है। हमारे समाजमें विधवा विवाहकी रीति प्रचलित नहीं होनेके कारण कई विधवाओंका जीवन बड़ा शोचनीय हो जाता है। ऐसी सताई हुई विधवाएं तथा अन्य विधवाएं जो अपने आपको नहीं सम्भाल सकती हों, उनको इस आश्रममें शरण दें और उनमें से जो विवाह करना चाहें उनके विवाह कर दिये जांय और जो अपना जीवन वहीं बिताना चाहें बितावें। वे अनाथ बालकोंको भी पाल सकती हैं तथा शिक्षा प्राप्त कर सकती हैं। आशा है कार्यकारी मण्डल सबसे पहले इस ओर ध्यान देगा। इसमें कोई शककी बात नहीं कि महासभाको इसके इन्तजाममें बड़ा Strict रहना पड़ेगा और इस कार्यके लिए सच्चे कार्यकर्ताओंका भी खोजना पड़ेगा।

वाचनालय राजस्थानके ग्रामोंमें खोले जायें तो बड़ा अच्छा हो। "माहेश्वरी" पत्र हर ग्राममें भेजा जाय और इसमें सामाजिक खबरोंके साथ २ अन्य खबरें भी काफी तादादमें दें। इसके लिए ५० फीसदी खर्चा देना चाहिए।

आपने साधारण सदस्यकी फीस बहुत ज्यादा रखी है। आपको चाहिए कि मासिक या वार्षिक चन्दा नियत करें जो साधारण स्थितिका पुरुष भी समाजसेवाके लिए दान कर सके। इससे आपको ज्यादा धन प्राप्त हो सकता है और काम भी अच्छी तरह चल सकता है। आजीवन सदस्य वे हैं जो शिक्षा प्रचारके कार्यमें अपना सारा जीवन अर्पण करनेका प्रण लें। यह साफ समझमें नहीं आया, कि क्या आप इससे यह मतलब लेते हैं कि जो अन्य कार्य छोड़ कर शिक्षाके कार्यमें लग जांय या अन्य मतलब। कृपा कर इसे साफ़ करें।

महासभाने मदद देनेका Percentage बहुत कम रखा है। अगर ५० फीसदी रखे तो काम बड़ी सुगमतासे चल सकता है। अन्य बातों से मैं सहमत हूं। मेरी पूर्ण इच्छा है कि आप विधवाओं की हालत पर पूरा ध्यान दें।

बालमुकुन्द झंवर बी. ए., एलएल. बी.
नयाबाज़ार, अजमेर]

स्त्रियों की शिक्षा विशेषतः घरेलू हो!

शिक्षा हमें विवेकशील प्राणी बनाती है। उसके बिना अधिक अच्छे और अधिक सुखी जीवनके लिए सुधारका हरेक प्रयत्न निष्फल होता है। यही बुनियाद है जिसपर जीवन की इमारत खड़ी की जाती है।

सबसे प्रथम आवश्यकता इस बातके विचार की है कि शिक्षा किस प्रकार की दी जाय। इस पर आपने कुछ लिखा नहीं। मेरी निजी रायमें स्त्रीशिक्षा, चाहे वह बालिकाकी हो, चाहे युवती की और चाहे विधवा की, केवल सामान्य अंकगणित तक, जो घरका हिसाब किताब रखनेमें सहायक हो, और लगभग उतने ही हिन्दी भाषाके ज्ञान तक, जो गीता और रामायणके हिन्दी अनुवाद और सामाजिक सुधार सम्बन्धी साहित्यको समझने को पर्याप्त हो, सीमित रहनी चाहिए। बाकी उनकी शिक्षा स्वास्थ्य, पाक विज्ञान, सिलाई, बच्चों के पालनपोषण व परिचर्या आदिके पाठोंके रूपमें होनी चाहिए।

पुरुषों की शिक्षा पूर्णतः टैकनिकल होनी चाहिए जिसमें कृषि भी शामिल हो। किन्तु इसका उद्देश्य सरकारी मुलाज़मत पाना नहीं होना चाहिए। इस लिए यदि सम्भव हो तो यह शिक्षा सरकारी संस्थाओंके ज़रिये होना जरूरी नहीं क्यों कि उनमें समय और धन दोनों ज्यादा लगते हैं।

कालिजों की शिक्षाके लिए दी जाने वाली छात्रवृत्तियां कमसे कम हमें उन बन्धनों से मुक्त कर सकें जिनसे हम अबतक बंधे हुए हैं। अंग्रेजी शिक्षा और खासकर एफ. ए., बी. ए. और एम. ए. की शिक्षा की तरफसे तो युवकोंको विमुख करना चाहिए। इससे केवल विद्यार्थियांके मातापिताओंको जेबों और स्वयं विद्यार्थियोंके कण्ठ स्वरपर काबू किया जा रहा है।

विदेशमें शिक्षा देने का अंग अभी निकाल देना चाहिए क्योंकि प्रारम्भके कुछ वर्ष तो निरक्षरता दूर करनेमें लगने चाहिएं ताकि ९ लाख माहेश्वरियोंमेंसे निरक्षरों को तो साक्षर बना लिया जाय।

साहित्यिकों का पोषण करने व उन्हें प्रोत्साहन देनेमें इस बातका ध्यान रखना चाहिए कि उनकी साहित्यसाधना का फल सामाजिक विज्ञानसे सम्बद्ध हो। निःसन्देह हमारा समाज एक राष्ट्रीय समाज होना चाहिए।

भारत का प्रान्तोंमें जो विभाजन किया गया है वह सर्वोत्तम है। केंद्रीय संघके लिए प्रतिवर्ष ५००००) रु. की रकम और प्रान्तों की रकम इकट्ठी करनेके लिए भी पहले शिक्षा और शिक्षा के लिये दान करने का वातावरण पैदा करना ज़रूरी है। कुशल दानसंग्रह करनेवाले सम्भव है कुछ वर्षोंतक सफलता पाते रहें पर अन्तमें प्रान्तोंके प्रमुख व्यक्तियों को भी थकावटका सामना करना पड़ेगा जो उनकी कमर तोड़ देगी। इससे सारी योजना बिगड़ जायगी।

बार असोसियेशन, अजमेर] **मदनकृष्ण राठी, वकील**

वैज्ञानिक विषयों के छात्रों को प्रोत्साहन दें

कुछ अर्सा हुआ श्रीयुक्त घनश्यामदासजी बिड़लाका एक लेख 'बिखरे विचारोंकी एक भरौटी' अथवा इससे मिलते जुलते शीर्षकका पढ़ा था। श्री. बिड़लाजीने बताया था कि आजकलकी शिक्षा किस प्रकार उद्देश्यहीन होती है और उससे मैं बिलकुल सहमत हूं। मैट्रिक पास किया, आगे कुछ करनेको नहीं और इसलिये फिर आगे पढ़ना शुरू किया। जबतक किसी खास उद्देश्यको लेकर न पढ़ा जाय तबतक शिक्षासे कोई लाभ नहीं। वर्तमान शिक्षा प्रणालीको बहुतेरे विज्ञ महानुभावोंने हमारे लिये अहितकर और घातक बताया है। नौकरी करनेकी प्रवृत्ति बढती है और दिन प्रतिदिन बेकारी बढती है। इसलिये मेरी समझमें तो आम तौरसे विद्या-प्रचारकी किसी योजनासे अधिक लाभ होना संभव नहीं।

किन्तु अगर कई एक खास वैज्ञानिक विषयोंको निश्चित करके छात्रवृत्तियां देकर छात्रोंको Special study करनेमें प्रोत्साहन दिया जाय तो उससे लाभ ही होगा। ऐसे विद्यार्थियोंको विदेश भेजा जा सकता है अथवा हिंदुस्तानमें ही रिसर्च करनेके काममें उन्हें मदद दी जा सकती है। मेरी समझमें प्रचार योजनाका दायरा विस्तीर्ण न रख कर सिर्फ (१) किसी खास विषय पर Special study (२) विधवाओंकी शिक्षा और (३) साहित्यिकोंका पालन शीर्षकोंकी ओर ही ध्यान दिया जाय तो अच्छा हो सकेगा। विधवाओंकी शिक्षा भी ऐसे ढंगसे होनी चाहिए जिससे, वे अगर आवश्यकता आ पड़े तो, स्वावलम्बी होकर जीवन बिता सकें।

प्रान्तोंके विभाजन के संबंधमें मेरा अनुमान है कि उड़ीसा और मद्रास को एक साथ रखना अच्छा होगा।

टैगोर रोड कलकत्ता,] **पन्नालाल कोठारी**

धर्मादे की सम्पत्ति से मदद करें

दर असल यह योजना अत्यन्त सराहनीय और स्तुत्य है। ऐसी उपयुक्त योजना समाज हर्षसे बना लेगा इसमें सन्देहका कोई कारण नहीं है। सारे भारतके इतने बड़े माहेश्वरी समाजके लिए यह सिर्फ पचास हजारके वार्षिक खर्चकी योजना कोई ऐसी बड़ी योजना नहीं है जो कि असम्भव प्रतीत हो। धनिक माहेश्वरी समाज आसानीके साथ इतना धन दे सकता है जिसका व्याज पचास हजार ही क्या पांच लाख तक प्राप्त हो सकता है। सिर्फ एक बातकी ओर समाज ध्यान दे तो सहज ही में धन इकट्ठा हो सकता है। हमारा जहां तक ख्याल है माहेश्वरी समाजके पास धर्मादायकी इतनी बड़ी रकम पड़ी है कि उसका अभी तकका व्याज ही सिर्फ दे दें तो इतनी काफी रकम हो जाय कि कार्यकर्त्ताओंको किसी प्रकारकी दिक्कत उठानी ही न पड़े। हम विश्वासके साथ कह सकते हैं कि समाजके पास धर्मादाय की रकम इतनी ही बड़ी तादादमें मौजूद है इस बातसे कोई इन्कार नहीं कर सकता। समाजके धनीमानी सज्जनोंसे हमारी विनम्र प्रार्थना है कि वे सहयोगी 'माहेश्वरी' की इस उपयुक्त योजनापर गौरसे विचार करें और सिर्फ विचार ही न कर इस योजनाको जितना शीघ्र हो कार्यरूपमें परिणत करनेमें सहायभूत हों।

—'राजस्थानी वीर' के
सम्पादकीय स्तम्भसे

शिक्षा प्रसार योजना पर विचार

यह योजना बहुत उपयोगी और सराहनीय है परन्तु बारीक बातोंमें संशोधन आवश्यक है। ५००००) रु. की धनराशि जो प्रतिवर्षके व्यय के लिये नियत की गई है, इस महान् कार्य को प्रयोगात्मक दृष्टिसे चलानेके विचार को लेते हुए आरम्भमें ठीक ही है। बादमें सब बातोंको विचार कर इसमें घटा बढ़ी की जा सकती है। एक केन्द्रीय अखिल भारतवर्षीय संघ कायम किया जाय और उसके मातहत प्रान्तीय शिक्षा संघ रहें यह योजना ठीक है।

मेरे विचारमें इस केन्द्रीय संघ का नाम अखिल-भारत-वर्षीय-माहेश्वरी शिक्षा-प्रसारक-संघ रक्खा जाए जो कि अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा का ही एक उपविभाग हो जैसे कि 'माहेश्वरी' पत्र संपादन विभाग है।

२१ अक्तूबरके 'माहेश्वरी' में कुछ सज्जनों ने योजना का क्षेत्र विशाल बनाने की सलाह दी है जिससे कि इसमें समस्त हिन्दूभाई आजाएं और एक महाशय ने अग्रवालों तथा ओसवालोंके लिये भी अपील की है। मेरे ख्यालसे अभी इतना बड़ा क्षेत्र बनानेमें लाभ नहीं। इसके लिए बहुत धनकी आवश्यकता होगी जो आरम्भमें न मिल सकेगा और सारी योजना फ़ेल हो जाएगी। काम उतना ही करना चाहिए जितनी सामर्थ्य हो।

शिक्षा-प्रसार योजनाको कार्य्यरूपमें लानेके लिये जो आठ विभाग किए हैं वह ठीक ही हैं परन्तु मेरे विचारसे इन आठों विभागोंका कार्य संचालन यदि वहाँ प्रांतीय माहेश्वरी सभाएँ हों तो उनके एक उपविभागके रूपमें और उनके न होनेपर स्वतंत्र रूपसे उस विभागके शिक्षा प्रचारक मण्डल द्वारा किया जाए। इन आठों विभागोंका नियंत्रण केन्द्रीय विभागके हाथमें हो और उसकी सलाहसे हो सब काम किया जाए। इस केन्द्रीय संघ की कार्य्यकारिणीके सदस्योंके चुनावके लिये समाजके विद्वान और ज़िम्मेदार पुरुषोंके नाम आमंत्रित किए जाएँ। मेरे विचारमें केवल ८ वां विभाग ही माहेश्वरी महासभा के हाथमें न होकर सब ही उसके शिक्षा-प्रसार-विभाग के मातहत हों। इससे असुविधा भी न होगी और बतौर नामके एक अलग संस्था भी नहीं रहेगी। फिर बादमें ज्यों २ उन्नति हो आवश्यकतानुसार काम किया जाए।

इसके अलावा इस ५००००) रु. की योजनामें जो भिन्न २ कार्य्यों के लिए धन का विनियोग किया गया है उसमें विचार की आवश्यकता है। १००००) रु. की रकम प्रौढ़ महिलाओं की शिक्षा के लिये अनावश्यक है क्योंकि उन्हें गृहकार्य्यों आदि में ही संलग्न रहने के कारण समय कठिनता से बच पाता है और फिर उन्हें आवश्यक शिक्षा दी भी नहीं जा सकती और न वे शीघ्र प्रभावित ही हो सकती हैं। उन्हें तो व्याख्यानों आदिसे ही प्रभावित करना उचित है तथा थोड़ी बहुत शिक्षा भी कर दी जाए जिससे मानसिक शक्तियां कुछ तो विकसित हों। इस कार्य्य पर मेरे विचारमें ५०००) रु. रखना ही उचित होगा बल्कि अनाथ बालक तथा बालिकाओं की शिक्षा पर ही विशेष ध्यान देना चाहिए क्योंकि वे हमारे समाज के होनेवाले स्तम्भ हैं। उन पर बजाय ५०००) रु. के ८०००) रु. खर्च करना अधिक उपयोगी होगा।

स्कूल तथा कालिजमें पढ़नेवाले विद्यार्थियों की छात्रवृत्ति के लिये जो ४०००) रु. रक्खा गया है वह मेरे विचारमें ६०००) रु. होना चाहिए। जितनी भी अधिकसे अधिक सहायता इन छात्रवृत्तियों (Scholarships) द्वारा दी जाएगी उतनी ही अशिक्षा की कमी होगी और समाजमें पढ़ी लिखी जनता की संख्या बढ़ेगी जिससे देश का उपकार होगा।

विधवाओं की शिक्षा पर पुनःविचार करना चाहिए। प्रत्येक विधवा की शिक्षा के लिये २५) रु. मासिक व्यय करना कुछ अनुचित सा प्रतीत होता है। इस हिसाबसे केवल २० विधवाएं ही प्रति वर्ष कुछ शिक्षा पा सकेंगी। कम व्यय करने पर संख्या अधिक बढ़ सकेगी।

विदेशमें उच्च शिक्षा प्राप्तिके लिये जो धनराशि रक्खी गई है यदि उसमें कमसे कम १०००) रु. और बढ़ा दिए जाएं तो अनुचित न होगा। इतना रुपया सुरक्षित धनमें से निकाला जा सकता है। छात्रवृत्ति २५०) रु. मासिक पर नियत नहीं करनी चाहिए क्योंकि किसी देशमें कम खर्च की आवश्यकता होती है और कहीं अधिक। छात्रवृत्ति केवल औद्योगिक और वाणिज्य सम्बन्धी विषयोंके लिए ही दी जाए मेरे विचारमें यह बात ठीक नहीं। सब प्रकारके विषयोंके लिए समानता होनी चाहिए परन्तु यदि चाहें तो व्यवसायिक धन्धोंके लिये विशेष ध्यान रक्खा जाए जैसे डाक्टरी, कानून; कृषि, उद्योगधन्धे, कामर्स (commerce) सम्बन्धी विषय जैसे हिसाब (Accountancy), बैंकिंग (Banking), इन्श्योरेन्स (Insurance) आदि। परन्तु साधारण पढ़ाई करनेवालोंको इस सुविधासे वंचित नहीं करना चाहिए।

यहाँ एक बात कह देना अति आवश्यक होगा कि अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी शिक्षा प्रसार के संघ को एक अपना उपविभाग 'बेकारी निवारक विभाग' (Emplyment Bureau) के नाम से कायम करना चाहिए जिसका उद्देश्य देश तथा विदेशके लिये दी गई छात्रवृत्ति वाले नवयुवकों को जो उच्च शिक्षा तथा ट्रेनिंग पाए हुए हैं, अच्छे पदों पर नियुक्ति करवाना हो। इस विभागका मेल देशके बड़े २ व्यवसायियों (Industrialists) से होना चाहिए जो अपनी आवश्यकताके अनुसार छोटे तथा ज़िम्मेदार ओहदोंके लिए इस विभाग से पत्रव्यवहार जारी रक्खें और जैसे ही कोई अवसर आए यह विभाग उनको लिखे और अच्छी जगह दिलाए।

मेरे अपने विचार से तो छात्रवृत्तियां कर्ज़के रूपमें न देकर, कर्तव्य समझते हुए समाजके हितके लिए सहायताके रूपमें दी जाएँ। देशमें पढ़नेके लिये दी गई छात्रवृत्तियोंके लिए समझौता करने की कोई आवश्यकता नहीं क्योंकि उसमें थोड़ा धन देना होता है। यह पाने वाले की इच्छा पर निर्भर रहे चाहे वह काम लगने पर लौटा दे या न लौटाए। यदि लौटाने का समझौता न किया जाएगा तो वह स्वयं ही अपना कर्तव्य समझ कर पाए हुए धन से अधिक ही दान स्वरूप केन्द्रीय संघ को लौटा देगा। हां विदेशी छात्रवृत्तियोंके लिये छात्रोंके साथ एक लिखित सुलहनामा (Written agreement) होना आवश्यक है जिससे वह काम लगने पर अपनी आमदनीके अनुसार शीघ्र ही आधा रुपया अवश्य ही वापिस कर दें और अपने अन्य भाईयों की भलाई करें और बाक़ी आधा रुपया उनकी इच्छा पर निर्भर रहे।

फिर साहित्यिकों के पालन तथा योग्यता के पुरस्कारार्थ जो धन नियत किया गया है उस पर अधिक प्रकाश डालने की आवश्यकता है। कोई माहेश्वरी सज्जन यदि किसी उपयोगी विषय पर कोई पुस्तक लिखना चाहता है और धनाभाव में है तो उसको केन्द्रीय संघ की ओर से उसके लिखने पर उचित आर्थिक सहायता दी जाए। नए लेखकों को तथा सदैव के लिखते रहने वालों को जो 'माहेश्वरी' में अपने लेख भेजते हैं, यदि वह संघ की दृष्टि में अच्छे समझे जांए तो संघ स्वयं ही कुछ पुरस्कार धन के रूप में अथवा पुस्तकों के रूपमें भेज दे। इससे लेखकों का उत्साह बढते रहने से 'माहेश्वरी' में अच्छे लेख आते रहेंगे और इस पत्र का Standard भी ऊँचा हो जाएगा और 'माहेश्वरी' के Subscribers की संख्या भी बहुत बढ़ जाएगी।

अतः मेरे अपने विचार में ५००००) रु. के धनका विनियोग निम्नप्रकार से होना चाहिए:—

५०००)	प्रौढ़ महिला शिक्षा
८०००)	अनाथ बालक-बालिकाओंके लिए
६०००)	छात्रवृत्तियों में
२०००)	वाचनालयों में
१००००)	विदेश के लिए
६०००)	विधवा शिक्षा के लिए
४०००)	साहित्यकों तथा योग्यता के पुरस्कार पर
५०००)	आफिस खर्चके लिए
४०००)	अतिरिक्त आवश्यकताओं के लिए सुरक्षित

केन्द्रीय शिक्षा प्रसारक संघके संगठनके लिये मेरे विचारमें ६ प्रकारके सदस्य होने चाहिएं। प्रथम चार तो ठीक ही हैं। पांचवे प्रकारके सदस्य 'सहायक सदस्य' के नामसे रहें और छठवें प्रकारके सदस्य 'साधारण सदस्य' के नामसे रहें, जो १०) से १००) तक दान दें। इनमेंसे भी कार्य्यकारी मण्डलके लिये १० सदस्य लिए जाएं। अधिक जनता हमें ऐसी ही मिलेगी जो कि १०) से १००) रु. तक दान दे सकेगी और इस प्रकार धन काफ़ी मात्रामें एकत्रित हो जाएगा। थोड़ा धन देते हुए किसीको भी आपत्ति नहीं हो सकेगी। इस श्रेणीके सदस्य तो अवश्य ही होने चाहिएं।

६३, मेस्टन होस्टल, **नरेन्द्र कुमार लाहोटी**
लखनऊ विश्वविद्यालय एम्. ए., बी. कॉम्., एलएल्. बी.

संपादकीय

(पृष्ठ ३ का शेषांश)

प्रेमी ग्राहक बन्धुओंसे

"माहेश्वरी" के ग्राहकोंकी सेवामें उनका चंदा खत्म हो जानेकी सूचना भेजी गई है और जैसे २ जिनका चंदा खत्म हो जायगा उनको भी भेजी जायगी। हमारा सबसे अनुरोध है कि जिन लोगोंके पास सूचना पहुंच चुकी है वे कृपा कर अपना मूल्य मनीऑर्डर द्वारा तुरंत ही भेज दें क्योंकि यदि समय पर सूचना न मिली तो हमे लाचार होकर उनके नाम पत्र भेजना बन्द कर देना पड़ेगा।

कृपया इस काममें आलस्य या उदासीनता न रखें। हम उनसे यह भी प्रार्थना कर देना चाहते हैं कि उनके पास कोई मूल्य मांगने के लिए आये इस बातकी अपेक्षा वे न रखें। जो समाज व्यवहारी है उसे अधिक लिखनेकी आवश्यकता नहीं। "माहेश्वरी"का मूल्य भी इतना कोई बड़ा नहीं है जिसे भेजनेमें उन्हें विचार करना पड़े! "माहेश्वरी" किस रूपसे समाज की सेवा कर रहा है यह बतलाने की आवश्यकता नहीं क्योंकि उनकी सेवामें बराबर १२ माससे "माहेश्वरी" पहुंच रहा है। हो सकता है हमारे इतने प्रयत्नोंके बावजूद उनकी दृष्टिसे "माहेश्वरी" को हम अधिक सुंदर नहीं बना सके हों। पर इसका यह मतलब नहीं है कि हम अपने प्रयत्नोंमें किसी प्रकार की कमी रखेंगे। हमें उत्साहित करने का काम भी तो उनका ही है जो अपना निजका वार्षिक मूल्य जल्दी से जल्दी भेज दें और साथ ही अधिकसे अधिक ग्राहक बनाने की कोशिश करें। कोई भी व्यवहारी आदमी उधारका खाता चलाये रखना पसंद नहीं करेगा। फिर "माहेश्वरी" तो व्यवहारी समाज का ही पत्र है। फिर इसके यहां ही उधार खाता क्यों?

आशा है हमारी इस प्रार्थना पर उदार बंधु अवश्य ही ध्यान देंगे।

—व्यवस्थापक

कमला मिल के कपड़े इस्तेमाल करें।

आर्टिफिशियल सिल्क ज्योर्जेट
साडियां, साडी क्लाथ और
शर्टिंग कपड़ों के लिये
यह मिल अपनी
विशेषता
रखती
है

हेड आफिसः—
गोयनका हाउस
१४५, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट,
कलकत्ता

हर प्रकार की धोती, साडी,
कोरा लॉंगक्लॉथ,
कोटिंग, केनवास,
सूसी, आदि
आदि

कमला मिल्स लिमिटेड

तुलसी पाइप रोड, परेल, बम्बई. टे. नं. ६००६४-६५

विक्री-विभागः—

बम्बईः टे. नं. २६९४५
मूलजी जेठा मार्केट

कलकत्ता:
सूतापट्टी

लोकप्रियताका अकाट्य प्रमाण] रूबी प्रगति पथपर [दृढ़ता का सच्चा सबूत

१००%
- स्वदेशी
- टिकाऊ
- दृढ़

बीमा कंपनी

प्रगतिके आंकड़े

विभाग	मीमियमकी आवक	
	सन् १९३७	सन् १९४०
आग	रु. ६,५५,०४७	रु. १४,१७,०११
मोटर और अकस्मात	रु. ७३,९८६	रु. २,४६,७८१
समुद्रीय	रु. ७२,२८१	रु. ४,६६,५९०
पूंजी	रु. १७,९४,३४२	रु. २७,९४,१४५

जिंदगी १९४० के प्रथम वर्ष में किया गया कामकाज........ ....रु. ३०,६५,१००

- आग
- मोटर
- अकस्मात
- जिंदगी
- समुद्रीय

और
- मजदूरोंके बदले आदि

के बीमेका कामकाज किया जाता है

रूबी जनरल इन्श्युरंस कं. लि.

टे. नं. २०५६० और ३१९२९
टेलिग्राम्स 'सनशाइन'
'SUNSHINE'

चेअरमैन
श्री बी. एम. बिड़ला

जनरल मैनेजर इनचार्ज, बम्बई डिविज़न
श्री बी. के. सेतलवाड़

ऑफिस—४५-४७ अपोलो स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई

राजस्थानी संसार

स्व० चम्पाबाई भट्टड़ के स्मारक के लिए अपील

अतो न रोदितव्यं हि क्रियाः कार्याः स्वशक्तितः

श्रीमती चम्पाबाईजी भट्टड आज हमारे बीच नहीं रहीं। विधाता ने उन्हें हमारे बीचसे हठात् उठा लिया है। उनके इस निधनसे सारे समाज को दुःख होना अत्यन्त स्वाभाविक है। देश, समाज और जाति की सेवा के लिए जो लगन और प्रबल आकांक्षा उनके हृदय में थी और जिस अदम्य उत्साह और त्याग की भावनासे उन्होंने अपने जीवन के इस लक्ष्य के लिए तन-मन अर्पण कर दिया था, उससे उन्होंने अपने लिए हम सबके हृदयोंमें एक खास श्रद्धा का स्थान बना लिया था। आज उनके पीछे हम लोगोंपर यह उत्तरदायित्व आगया है कि उनके नाम और कीर्ति को अमिट बनाने और उनके द्वारा उठाये गये कार्य को चिरस्थायी बनाने का यत्न करें। उनके विछोहसे जो दुःख, शोक और परिदेवना हुई है उसका एक दिन अन्त हो जायगा और उस दिन कहीं हम उन्हें भूल नहीं जांय इसलिए इस बात की जरूरत है कि हम उनके कार्य को आगे बढ़ायें ताकि उनकी याद सदा हम लोगों के हृदयों में बनी रहे। इस शोक और विलाप से उनके कार्य को आगे बढ़ाना कहीं अधिक जरूरी और महत्वपूर्ण है।

श्रीमती चम्पाबाई भट्टड़ के अन्तिम दर्शन

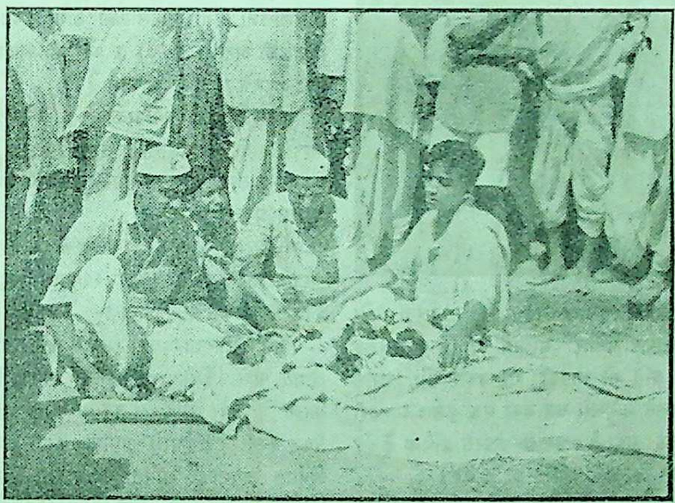

श्रीमती चम्पाबाईजी के हृदय में स्त्री जाति के उत्थान के लिए प्रबल आकांक्षा थी। उनकी यह साध थी कि स्त्री समाज पुरुषों से पीछे नहीं रहे और अशिक्षा, कुरीतियों और प्राचीन कुरूढ़ियों के कारण जो हीन अवस्था उसकी है उससे उसका उद्धार किया जाय और देश, समाज और जाति की उन्नतिके लिए जो भी काम किया जाय उसमें स्त्रियों का भी पूरा सहयोग रहे। अपने जीवन काल में स्त्री समाज को जगाने और उन्नत करने का काम उन्होंने किया पर आज भी वह काम बहुत बाकी है। उनके पीछे इस कार्य को पूरा करने का भार उस समाज पर है जो उनके प्रति प्रेम रखता था और उनके कार्यमें विश्वास करता था। इसलिए उनके पीछे स्त्री शिक्षाका प्रचार हम लोगोंको खुब जोर शोरसे करना चाहिए। इसीमें ही श्रीमती चम्पाबाई भट्टड़के प्रति हमारा सच्चा प्रेम प्रकट होता है। हम चाहते हैं कि उनके स्मारकके रूपमें एक फण्ड संग्रह किया जाय और उससे छात्राओंको शिक्षा पानेके लिए मदद दी जाय। यह फण्ड श्रीमती चम्पाबाईका एक चिरस्थायी स्मारक रहेगा जो न सिर्फ उनके नामको संसारमें जीवित रखेगा बल्कि इनके मिशनको भी बहुत अंशमें पूरा करेगा। यदि समाज श्रीमती चम्पाबाईके प्रति अपनी जिम्मेवारी समझकर सच्ची लगन से सहयोग दे तो यह फण्ड इकट्ठा होने में तनिक भी कठिनाई नहीं होगी।

माहेश्वरी विद्या प्रचारक मण्डल पिछले कई वर्षोंसे बम्बई प्रान्तमें मारवाड़ी समाजमें विद्याप्रचार का कार्य अत्यधिक लगन और निष्ठा के साथ करता आ रहा है। हम चाहते हैं कि श्रीमती चम्पाबाई भट्टड़ की स्मृतिमें संग्रह किया जानेवाला यह फण्ड भी उसकी ही संरक्षामें रहे और वही इसकी उचित व्यवस्था करे।

हमें विश्वास है कि समाज हमारे इस निवेदनपर अवश्य ध्यान देगा और श्रीमती चम्पाबाई भट्टड की स्मृति को चिरस्थायी बनाने के इस महान् कार्यमें यथा शक्ति अपना सहयोग देगा।

निवेदक

राधाकृष्ण लाहोटी, मुंबई. लक्ष्मीनारायण जाजू, सातारा. मोतीलाल गांधी, मुंबई. लक्ष्मीनारायण राठी, शोलापुर. मुरलीधर लोया, पूना.

श्री बंसीलालजी भट्टड़ द्वारा दान

दिवंगता पत्नी की स्मृतिमें

श्री बंसीलालजी भट्टड़ने अपनी स्वर्गीया पत्नी श्रीमती चम्पाबाईजी भट्टड़ की स्मृतिमें निम्न प्रकारसे दान किया है—

१२५) साताराके मारवाड़ी समाजके उपयोगार्थ
१००) सातारा शहरके स्त्री समाज विषयक राष्ट्रीय कार्यके लिए
१००) माहेश्वरी विद्याप्रचारक मण्डलको योग्य छात्राको एक वर्षकी छात्रवृत्ति देनेके लिए
१००) आमीमल वैद्यक विद्यालय हॉस्पिटल
१००) खादी कार्यालय सातारा
२५) शाहू बोर्डिंग सातारा
२५) कन्याशाला सातारा
११) राजस्थानी वीर
११) राष्ट्रीय सेवादल सातारा

६०८

श्रीमती चम्पाबाईजी भट्टड़का स्मारक

विविध उदारतापूर्ण दान

श्रीमती चम्पाबाईजी भट्टड़का स्मारक बनानेके लिए समाजके निम्न महानुभावोंने निम्न रकमें प्रदान की है।

२५०) श्री लक्ष्मीनारायणजी राठी, शोलापुर
२०१) श्री किशनलालजी लाहोटी, कराड़
२००) श्री मुरलीधरजी लोया, पुना,
२००) श्री लक्ष्मीनारायणजी जाजू, सातारा
२००) श्री राधाकृष्णजी लाहोटी, बम्बई
५१) एक भावुक,
५१) श्री चतुर्भुजजी झंवर, शोलापुर
२१) श्री मोतीलालजी गान्धी, बम्बई
११) श्री रामजीवनजी झंवर, शोलापुर

सातारा

विशाल शोकसभा

श्रीमती चम्पाबाई भट्टड़के प्रति श्रद्धांजलि

श्रीमती चम्पाबाईजी भट्टडके स्वर्गवासपर शोक प्रकाशनके लिए साताराकी आम जनता की एक बृहत् शोक सभा हुई जिसमें स्वर्गीय आत्माके लिए शान्ति की प्रार्थना व सन्तप्त परिवार के प्रति समवेदनाके सहित एक शोक प्रस्ताव पास किया गया। स्वर्गीय आत्माके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए अनेक भाषण हुए। यह भी ज्ञात हुआ है कि साताराकी आम जनता उन की स्मृति में एक योग्य स्मारक बनानेका विचार कर रही है।

अहमदनगर

श्रीमती चम्पाबाई के निधनपर शोक सभाएं

अहमदनगरमें ता. ३०-१०-४१ गुरुवारको आढ़त बाजारमें रातके ८॥ बजे श्रीमती चंपाबाईजी भट्टड़के निधनपर शोक प्रकाशित करनेके लिए राजस्थानी समाजकी एक सार्वजनिक सभा हुई। सभापति का स्थान कुं. सो. फिरोदियाने ग्रहण किया। करीब ३०० की उपस्थिति थी। श्रीयुत मदनलालजी झंवरने एक शोक प्रस्ताव पेश किया। इस प्रस्तावपर सौ. पद्मादेवी, श्रीमती जानकीबाई आपटे (अध्यक्ष शहर कांग्रेस कमेटी), श्री हीरालालजी काबरा, व फिरोदियाजीके भाषण हुए। अन्तमें प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

प्रस्तावका रूप निम्न था

अहमदनगर राजस्थानी समाज की यह सभा दे. भ. सौ. चम्पाबाईजी भट्टड़के आकस्मिक दुःखद देहावसानपर हार्दिक शोक प्रकट करती है। सौ. चम्पादेवीजीका अल्पावस्थामें संसारसे उठ जाना न केवल उनके परिवारकी अपितु समस्त राजस्थानी समाजकी क्षति है। सामाजिक सुधार व देशके राष्ट्रीय आन्दोलनमें उनके द्वारा की गयी सेवाएं निःसन्देह चिरस्मणीय रहेंगी। यह सभा परमपिता परमात्मासे प्रार्थना करती है कि वह मृतात्मा को शान्ति व उनके कुटुम्बीजनोंको धैर्य प्रदान करे।

माहेश्वरी युवक मण्डलने भी एक सभाद्वारा इसी आशयका शोक प्रस्ताव पास किया है।

राजस्थानी संसार

श्री सेठ हीरालालजी लाहोटी का दुःखद स्वर्गवास

हैद्राबाद राज्य के मारवाड़ी व्यापारी समाजकी भारी क्षति

यह समाचार समस्त माहेश्वरी समाज को दुःख पहुंचाने वाले हैं कि गुलबर्गा की सुप्रसिद्ध व्यावसायिक फ़र्म श्री दयारामजी सूरजलालजी के मालिक श्री सेठ हीरालालजी लाहोटी का ७२ वर्ष की आयुमें गत १ नवम्बर को हैदराबाद में स्वर्गवास हो गया है। श्री सेठ हीरालालजी का जन्म संवत् १९२६ में हुआ था। निजाम स्टेट तथा आसपासके माहेश्वरी समाजमें आपकी बहुत इज्ज़त थी। आपका कुटुम्ब दक्षिण के प्रमुख और सम्पन्न कुटुम्बोंमें गिना जाता है। आपके बड़े भाई स्व० श्री सूरजमलजी लाहोटीने अपनी व्यापार कुशलतासे जिस पैतृक व्यापार को प्रगति दी थी और शाखा प्रशाखाओंमें उसका विस्तार किया था उसे आपने भी खूब लगन और कुशल बुद्धिसे आगे बढ़ाया। गुलबर्गा की महबूब शाही गुलबर्गा मिल्स को आपने सन् १९२६ में उसके मालिक खानबहादुर सेठ दारा सापुरजी एदलजीसे खरीदा और स्वयं तथा अपने पुत्रों व भतीजोंके परिश्रमसे इसकी खूब उन्नति की। आपके समयमें आपके व्यापार--व्यवसायमें जो प्रखर उन्नति हुई उसका इससे बड़ा सुबूत और क्या हो सकता है कि ५००) के महबूब शाही मिल्सके शेयर्सपर इस कम्पनीने सन १९३९ में डिविडेण्ड, जुबिली तथा बोनस मिलाकर १२०) तक मुनाफा बांटा है। आप की इस फर्मकी गुलबर्गा, सिकन्दराबाद और लातूर में शाखायें चल रही हैं जो दिन दिन तरक्की कर रही हैं।

व्यापार कुशलताके इलावा विचारोंकी उदारता और स्वाधीनता भी आपमें पर्याप्त मात्रामें थी। सामाजिक सुधारके कार्योंके प्रति भी आपकी दृष्टि उदार और विशाल थी। आपके निधनसे माहेश्वरी समाजका एक कुशल व्यापारी और व्यवसायी उठ गया है। हमारी ईश्वरसे प्रार्थना है कि वह उनकी दिवंगत आत्माको शान्ति प्रदान करे।

माहेश्वरी विद्याप्रचारक मण्डल

संगमनेरके प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता श्री पन्नालालजी शिवनाथजी लाहोटीने माहेश्वरी विद्याप्रचारक मण्डल पूना को ५०१) रु. देनेका आश्वासन दिया है। मण्डल उनकी इस उदारताके लिए आभारी है।

लश्कर

अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा अधिवेशन समिति

अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभाके सूरत अधिवेशन के समय मध्यभारतकी ओरसे दिये गये निमंत्रणके अनुसार महासभाका आगामी अधिवेशन 'श्री माहेश्वरी मित्रमंडल' लश्करके तत्वावधानमें ग्वालियरमें किया जाना निश्चय हुआ है। उसके लिये ३१ सदस्योंकी एक "अधिवेशन-समिति" का निर्माण किया गया है।

अधिवेशनको सफल बनानेके लिये सर्वश्री रामकृष्णजी भूत, लीलावतीजी झंवर व गुलाबचंदजी नागोरी तथा मध्यभारतके कतिपय सज्जनोंका 'शिष्ट-मण्डल' प्रचारार्थ आगामी जनवरी-फरवरीमें मध्यभारत का भ्रमण करेगा। अतएव समस्त महासभा प्रेमी बन्धुओंसे निवेदन है कि उनकी दृष्टिमें कौन कौनसे स्थान भ्रमणके लिये उपयुक्त होंगे, किस प्रकार प्रचारका आयोजन किया जाना उचित होगा, मध्य-भारतके किन किन स्थानोंमें माहेश्वरी बंधु कितनी तादादमें रहते हैं, कौन सज्जन इस समितिमें और सम्मिलित किये जावें इत्यादि तथा अधिवेशन संबंधी अन्य सूचनाएँ या सुझाव जो भी आप भेजना चाहें या भेज सकें वे सब इस समितिके मंत्रीके पास भेजनेकी कृपा करें।

उक्त समितिके वर्तमान प्रस्तावित सदस्योंके नाम नीचे दिये जाते हैं।

समितिके वर्तमान सदस्यः—

श्रीयुत मदनमोहनजी शारदा, लश्कर (अध्यक्ष)
,, रामनिवासजी बांगर्ड, ,, (मंत्री)

सदस्य लश्कर

सर्वश्री दामोदरदासजी नागोरी, जेठमलजी बियाणी, श्रीकृष्णदासजी छापरवाल, मुरलीधरजी बाहेती, मदनगोपालजी कसेरा, भैंरोलालजी सोडानी, रामप्रसादजी सोमानी, गोविंद-दासजी लढ्ढा, रूपचंदजी भूतडा, श्रीकृष्णदासजी पटवा।

सदस्य ग्वालियर

रामकुमारजी बिरला जे. सी. मिल्स, बाबूलालजी बिरला, लक्ष्मीचंदजी बिरला।

सदस्य इन्दौर

रामनिवासजी साबू श्रीनिवासजीआगार, शिवचंद्रजी इन्नाणी, श्रीकृष्णजी झंवर। वृन्दावनदासजी बजाज भोपाल सीतारामजी जाजू नीमच। जमनालालजी मालपानी रतलाम। हीरालालजी सोनी बासोदा।

नोटः—समितिके बाकी सदस्य और Co-opt किये जा रहे हैं जिनकी सूचना बादमें दी जा सकेगी।

रामनिवास बांगर्ड मंत्री
अ. भा. मा. महासभा अधिवेशन समिति

शोलापुर

माहेश्वरी विद्याप्रचारक मण्डल

कार्यसमितिकी बैठक व व्यायाम शालाका उत्खनन समारम्भ

माहेश्वरी विद्याप्रचारक मण्डलकी कार्यसमितिकी बैठक श्री सन्तोकीराम रामसुख विद्यार्थी भवनके निरीक्षण व व्यायाम शालाके उत्खनन समारम्भके सिलसिलेमें शनिवार १ नवम्बर को सर्वश्री किशनलालजी लाहोटी, लक्ष्मीनारायणजी जाजू और राधाकृष्णजी लाहोटी शोलापुर पहुंचे। इसी अवसर पर आप लोगोंने श्री. लूणकरणजी चाण्डक, श्री मदनलालजी लोया बी. ई., श्री लक्ष्मीनारायणजी राठी, श्री बालकृष्णजी मर्दा बी. एससी., एलएल, बी., श्री रामजीवनजी झंवर और श्री चतुर्भुजजी झंवर आदिके सहित शोलापुरके अनेक महानुभावोंसे विद्याप्रचारक मण्डलके कार्य और कोषके बारेमें मुलाकात की। इसपर निम्न महानुभावोंने मण्डलके कोषमें उदारतापूर्वक दान दिया। मण्डल उनका आभारी है।

५०१)	श्री मुरलीधरजी रामकिशनजी हुरकट
२०१)	श्री लक्ष्मणदासजी रामगोपालजी भूतड़ा
१२१)	श्री जेठमलजी बिहारीलालजी बल्दुआ
१०१)	श्री रामजीवनजी झंवर
५१)	श्री रामचंद्रजी अटल

इसके अतिरिक्त सर्वश्री मुरलीधरजी सारड़ा, श्रीकिशनजी राठी, मुरलीधरजी भट्टड़, मांगीलालजी शंकरलालजी लाहोटी, भीकूलालजी डागा, पन्नालालजी डागा व मोतीलालजी मदन गोपालजी अटलसे ६०७) के और भी आश्वासन मिले हैं। मण्डल इनके प्रति भी आभारी है।

दूसरे दिन २ नवम्बरको ११ बजे श्री मुरलीधरजी भट्टड़के हाथों श्री सन्तोकी राम रामसुख विद्यार्थीभुवनमें व्यायामशालाका उत्खनन समारम्भ सम्पन्न हुआ।

शोक प्रस्ताव

माहेश्वरी विद्या प्रचारक मलण्डकी कार्यसमितिने श्रीमती चम्पाबाईजी भट्टड़के दुःखद स्वर्गवास पर निम्न लिखित शोक प्रस्ताव भी पास किया।

"माहेश्वरी विद्या प्रचारक मण्डल कार्य समितिकी यह सभा श्रीमती चम्पाबाईजी भट्टड़के निधन पर हार्दिक दुःख प्रकट करती है और उनके सन्तप्त परिवारके प्रति सम वेदना प्रकट करती हुई ईश्वरसे प्रार्थना करती है कि वह उनकी दिवंगत आत्माको शान्ति प्रदान करे और उनके दुःखी परिवार को धैर्य्य धारण करने की शक्ति दे।"

माहेश्वरी विद्याप्रचारक मंडल

कराड़के सुप्रसिद्ध कार्यकर्त्ता श्री शंकरलालजी मांगीलालजी भट्टड़ने माहेश्वरी विद्याप्रचारक मण्डलको १०१) का उदार दान किया है। मण्डल उनकी उदारताके लिए कृतज्ञ है।

राजस्थानी संसार

अकोला

मा. बियाणीजी का स्वागत

व्यापारी मंडलकी ओरसे ४५१२) रु.की थैली भेंट

स्थानीय व्यापारी मण्डलकी ओरसे श्री किशनलालजी गोयनका की अध्यक्षतामें ता. २७ अक्तूबरको माननीय श्री बियाणीजीका स्वागत और रु. ४५१२) की थैली भेंट करनेके लिए काटन मार्केटमें एक सभा बुलायी गई थी। इस अवसर पर सब कौमके व्यापारी बड़ी संख्यामें उपस्थित थे।

श्री किशनलालजी गोयनकाने स्वागत करते हुए कहा कि श्री बियाणीजीके राष्ट्र सेवाके कार्यसे निद्रामें पड़े व्यापारी-समाजमें जागृति आई है।

पश्चात् मोहता मिलके मुनीम श्री सूरजमलजी सिंघीने श्री बियाणीजीको रु. ४५१२) की थैली भेंट की और इस कार्यमें जिन जिन व्यापारियोंने सहयोग दिया उनका आपने आभार माना।

रवीन्द्र मण्डलकी ओरसे 'बियाणी अंक' अर्पण करते हुए श्री श्रीरामजी शर्माने कहा कि जिन्होंने अपना जीवन समाजसेवाके लिए दे दिया हो उनका ऋण अदा करनेकी जिम्मेवारी समाज पर है।

श्री श्रीरामजी गोयनकाने भाषण करते हुए कहा कि इस समारंभसे व्यापारी वर्गका कांग्रेसके प्रति प्रेम जाहिर हुआ है और कांग्रेसकी प्रतिष्ठा बढ़ी है। यह उनका अपना गौरव नहीं अपितु उनके त्याग और सेवाका गौरव है।

जनाव नूरमहमद मूसाने बियाणीजीका स्वागत करते हुए कहा कि हमने श्री बियाणीज व राष्ट्रके प्रति प्रेमके कारण ही इस समारंभमें हिस्सा लिया है। पश्चात् और भी कई सज्जनोंके समयोचित भाषण हुए।

मा. श्री बियाणीजीका भाषण

श्री बियाणीजीने स्वागतके लिए व्यापारी मण्डलका आभार मानते हुए कहा कि मेरे जीवनका ध्येय राष्ट्रको स्वतंत्र करना है और इस ध्येयके प्रति आप लोगोंने जो आत्मीयता जाहिर की उसके लिए मैं आपका आभारी हूं। मनुष्यके जीवनमें हार-जीत, आशीर्वाद-श्राप जैसे प्रसंग अनेक बार आते हैं पर ऐसे प्रसंगों से हमें विचलित नहीं होना चाहिए। हमें तो अपना कार्य और भी अधिक दृढ़तासे करना चाहिए। यही मनुष्यत्वकी सच्ची कसौटी है, संकट के समय अपने तत्व की सच्ची कसौटी है।

आगे बोलते हुए आपने कहा कि इस सम्मान को मैं अपना सम्मान नहीं समझता। यह सम्मान उस कार्य का सम्मान है जिसके लिए मैं लड़ रहा हूं। यह कांग्रेस का सम्मान है, इससे आपका राष्ट्रप्रेम व्यक्त होता है। इस थैली को अर्पण करनेवाले हिन्दू-मुसलमान व्यापारी हैं। यह थैली इस बात का द्योतक है कि राष्ट्रहित के लिए हिन्दु-मुसलमान सभी एक हो सकते हैं। यह ऐक्य चिरस्थायी होनेपर परदेशी सरकार कभी नहीं टिक सकती।

जातीय पक्षभेद नष्ट करने के लिए मैं सतत प्रयत्न करूंगा और अहिंसातत्व के अनुसार आत्म समर्पण करनेसे भी मैं पीछे न हटूंगा।

आगामी उप-चुनावमें कांग्रेसने अपना उम्मीदवार खड़ा किया है। जनता कांग्रेसके उम्मीदवार को मत प्रदान कर अपना युद्ध विरोध जाहिर करेगी।

पश्चात् श्री बियाणीजी ने थैली कांग्रेस कार्य के लिए देने की घोषणा की और इस कार्य के लिए निम्न ६ व्यक्तियों की एक समिति घोषित की:—श्री किशनलालजी गोयनका, श्री सूरजमलजी सिंघी, श्री हीरालालजी खंडेलवाल, श्री शिवजीभाई, श्री अकबरभाई, श्री सुगनचंदजी तापड़िया।

उम्रिस

श्री माणिकलालजी बंगका शुभकार्य

उम्रिस निवासी श्री. माणिकलालजी बंग की वृद्ध माताजीका स्वर्गवास ता. १६-९-४१ को हुआ। श्री. माणिकलालजी बंग उम्रिसके एक प्रतिष्ठित एवं धनी सज्जन होने से उनकी माताजीके देहान्त के बाद वे औसर करते हैं कि नहीं इस ओर सब लोगोंकी दृष्टि लगी हुई थी।

ता. १७-९-४१ को स्थानिक माहेश्वरी समाजके कुछ भाइयोंने श्री माणिकलालजी बंग पर औसर करनेके बारेमें दबाव डालनेका प्रयत्न किया। इस अवसर पर श्री माणिकलालजी बंग के बहनोई अकोलानिवासी श्री माणिकलालजी सोमाणी बी. ए. एल एल. बी ने औसर प्रथा का विरोध किया तथा एकत्रित लोगोंको इसकी हानियों के बारेमें समझाया। उम्रिसके अन्यान्य उत्साही कार्यकर्ता श्री अट्टलजी तथा हीरालालजीने भी सोमाणीजी की इस बात का समर्थन किया।

ता. २७-९-४१ शनिवारके ब्रह्मभोजके अनन्तर सर्वश्री माणिकलालजी सोमाणी वकील अकोला, भोगीलालजी बंग कामरगांव, कन्हैयालालजी इन्नाणी कारंजा, तथा उम्रिस निवासी अट्टलजी की प्रार्थनाको मान देकर श्री. माणिकलालजी बंगने निम्न संस्थाओंको सहायता दी।

'माहेश्वरी' पत्र बम्बई	रु.	२१
अ. भा. माहेश्वरी महासभा	,,	११
श्री बालाजी संस्थान मंन्दिर उम्रिस	,,	२१
गौरक्षण संघ उम्रिस	,,	२१
कबूतरखाना उम्रिस	,,	११
ग्रामसुधार केन्द्र माना	,,	१५
		१००

इसके बाद अपनी माताजीके संस्मरणार्थ कोई स्थायी स्मारक बनानेके लिये रु. २०००) के करीब और भी सहायता देनेके बारेमें उन्होंने अपने विचार शीघ्र ही जाहिर करनेका आश्वासन दिया।

नाथद्वारा

माहेश्वरियोंकी विशाल सभा

१८-१०-४१

गत. ता. १४-१०-४१ को नाथद्वारेमें बड़ी धर्मशालाके सामने माहेश्वरी बंधुओंकी एक विराट् सभा हुई, जिसमें बाहरके कई ग्रामोंके माहेश्वरी बंधु भी श्री. मेघराजजी भूतडाके गंगोत्सवमें सम्मिलित हुए थे।

सभापति श्री. नानालालजी काबरा की अध्यक्षतामें और श्री. जीवनलालजी बिडलाके प्रबल प्रयत्नों से सभामें बड़ा ही आनंद आया। सामाजिक सुधार पर सर्व श्री रघुनाथजी पालीवाल, गहरीलालजी नांदीसुख, नरेन्द्रपालजी चौधरी और आगन्तुक दो सन्यासी महानुभावोंके भाषण हुए।

सरदार शहर

रा. प्रा. वैद्य सम्मेलनके सभापति पदका चुनाव

राजपूताना प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन की स्वागत समिति द्वारा निम्न पांच नाम सभापति पदके लिये निश्चित किये गये हैं।

१ वैद्य श्री नन्दकिशोरजी भिषगाचार्य, जयपुर
२ ,, ,, तनसुखजी व्यास, जोधपुर
३ डॉ. ,, अम्बालालजी शास्त्री, अजमेर
४ वैद्य ,, सागरमलजी, पिलानी
५ ,, ,, एस. एम. शर्मा, बम्बई

राजपूताना प्रान्तीय वैद्योंसे प्रार्थना है कि वे जिस किसी एक सज्जनको इस पदके लिये उपयुक्त समझें उसका नाम ता. १०-११-४१ तक स्वा० स० कार्यालयमें भेज दें।

जोधपुर

हिन्दू सेवा मण्डल सरदारपुराका वार्षिकोत्सव

३०-१०-४१

हिन्दू सेवामण्डलकी शाखा सरदारपुराका वार्षिकोत्सव १६-११-४१ से १९-११-४१ तक मनाना निश्चित हुआ है। इस अवसरपर श्री चन्द्रगुप्त वेदालंकार, श्रीमती शारदादेवी बी. ए. व श्री. रामकृष्णजी पांडे आदि पधारेंगे। इस समारोहको सफल बनानेके लिये कार्यकर्तागण प्रयत्न कर रहे हैं।

मद्रास

श्री वेङ्कटेश मारवाड़ी सम्मेलन

ता. ३०-१०-४१

दक्षिण भारतमें जगह जगह उत्तर भारतीयोंकी तौहीनकी जाती है, व उन्हें उपेक्षाकी दृष्टिसे देखा जाता है। खासकर देवस्थानों पर दर्शनार्थ जाते हुए यात्रियोंको अनेक प्रकारकी मुसीबतोंका सामना करना पड़ता है। गत दशहराकी ही बात है कि अनेक विभिन्न प्रान्त निवासी दर्शनार्थी लोग श्री वेंकटेशजीके दर्शनके लिये श्री बालाजीके पहाड़ पर गए थे, लेकिन समुचित प्रबंधके अभाव तथा दर्शनार्थी जनताकी भीड पर पुलिस कर्मचारियोंके डंडोंके प्रहारके कारण अनेक यात्रियोंको बहुत कष्ट उठाना पड़ा था।

इस कष्टको दूर करनेका एक मात्र उपाय उत्तर भारतीयोंमें पारस्परिक सहयोग व सामूहिक कार्यप्रणालीका अवलंबन ही है, इसी उद्देश्यको लेकर "श्री. वेंकटेश मारवाड़ी सम्मेलन" की स्थापना की गई है। इस सम्मेलनके कार्यकर्ता निम्नप्रकार चुने गये हैं।

सभापति श्री नारायणदासजी सोमाणी पूना। उपसभापति श्री पूरणमलजी लाहोटी, गुलबर्गा। संयुक्तमंत्री बृजलालजी चौधरी मद्रास, श्री बजरंगलालजी राठी, लातूर श्री जेठमलजी बल्लारी

कार्यकारिणी समितिके सदस्य गण

सर्वश्री रतनलालजी बजाज वकील अहमदपूर, पंढरीनाथजी वकील नीलंगा, अमरचन्दजी भट्टड नारायणपट, बनवारीलालजी त्रिवेदी मद्रास, रतनलालजी दाहिमा मद्रास, रामकरणजी वरंगल, मांगीलालजी मानधनजी वरंगल, हीरालालजी बाहेती सांगलीस्टेट, देवीकिशनजी बाहेती शाहाबाद, हीरालालजी भूतडा शोलापूर, रामवल्लभजी काबरा मुरम, बाबूलालजी रामप्रतापजी काबरा नांदेड़, भागीरथप्रसादजी अलीगढ़, सूरजमलजी राठी सावरगांव, भेरूमलजी चौथमलजी बार्शी।

इस सम्मेलन में इस आशयका एक प्रस्ताव पास हुआ कि "श्री बालाजीका मंदिर समस्त भारतवर्षके हिन्दू धर्मावलंबी भाइयोंका एक प्रधान मन्दिर है। यहांपर कमिश्नर रूपये लेकर प्रसाद भेंट चढ़ानेके लिये बाध्य करता है--यह हमारे धार्मिक मतके विपरीत है......हम देवस्थान के अधिकारियोंसे सानुरोध प्रार्थना करते हैं कि हम लोगोंके दर्शन के लिये किसी नियत समय पर नियत दरवाजेसे विशेषकर ब्रह्मोत्सव के अवसर पर दर्शनका प्रबन्ध करनेकी कृपा करें।

इसी बात पर उत्तर भारतीयोंका एक डेपुटेशन कमिश्नर से मिला, और उनका ध्यान दर्शनार्थियों की असुविधाओं एवं पुलिस के अत्याचार की ओर आकर्षित किया गया। कमिश्नरने उस वक्त तो आश्वासनके वचन कहे लेकिन फिलहाल सम्मेलनके मंत्री के नाम उनका जो पत्र आया है, उससे साफ जाहिर होता है कि वे अपने दिये हुए वचनसे मुकरना चाहते है।

सम्मेलन के कार्यकर्ता गण कमिश्नर महोदयसे पुनः सानुरोध प्रार्थना करते हैं कि वे इस ओर उचित ध्यान देकर दर्शनार्थियोंकी असुविधाएं दूर करें।

राजस्थानी संसार

लश्कर

महासभाके आगामी अधिवेशनकी तैयारियां

अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभाको आगामी अधिवेशनके लिये मध्यभारतकी ओरसे सूरतमें निमंत्रण दिया गया था, तदनुसार महासभाका अधिवेशन सन् १९४२ में सुविधानुसार लश्कर गवालियरमें करनेका निश्चय हुआ है। स्थानीय माहेश्वरी मित्रमंडलने निम्नलिखित सदस्योंकी एक 'महासभा अधिवेशन समिति' बनाई है । इस समितिको महासभा संबंधी सब कार्य करनेका पूर्ण अधिकार दिया गया है। साथ ही और भी जिन सज्जनोंको वह आवश्यक समझें सम्मिलित करनेका अधिकार दिया गया है ।

"माहेश्वरी महासभा अधिवेशन समितिके सदस्योंके नाम"

(१) श्री मदनमोहनजी शारदा—अध्यक्ष, (२) श्री रामनिवासजी बांगर्ड—मंत्री, (३) श्री श्रीकृष्णदासजी छापरवाल, (४) श्री मुरलीधरजी बाहेती, (५) श्री मदनगोपालजी सोमानी, (६) श्री दामोदरदासजी (तोषनीवाल) नागोरी, (७) श्री जेठमलजी बिहानी ।

निमंत्रण पत्र

हैद्राबाद स्टेट मारवाड़ी (राजस्थानी) सम्मेलन

द्वितीयाधिवेशन

औरंगाबाद (दक्षिण)

आदरणीय भाइयो !

आपको यह ज्ञात ही है कि उपरोक्त सम्मेलनका अधिवेशन हमारे इतिहास प्रसिद्ध औरंगाबाद शहरमें बडे ठाटबाटके साथ होने जा रहा है । उक्त सम्मेलनका महत्व आप महानुभावोंको बतलानेकी आवश्यकता नहीं, क्यों कि दो वर्ष पहिले इसका प्रथमाधिवेशन हैद्राबादमें सुसम्पन्न हुवा था। साथ ही जिस संगठनकी नींव उस समय हैद्राबादमें डाली गयी थी, उस दृढ़ करने तथा वर्तमान विकट परिस्थितिको सामुदायिक रूपसे सुलझानेके लिए ही उपरोक्त सम्मेलनकी आयोजना की गयी है । इसके पूर्व आपकी सेवामें प्रार्थना पत्रिकाएं भेजी जा चुकी ह । रियासतके सुदूर स्थानोंपर बसनेवाले जातीय भाईयोंके शुभ दर्शन एवं परिचय, बाहरसे पधारे हुए सन्माननीय नेताओंके विद्वत्तापूर्ण सुश्राव्य भाषण व औरंगाबाद तथा आसपासके अनेक प्रेक्षणीय स्थानादिसे लाभान्वित होनेका यह सुवर्ण सुयोग है । यह निमंत्रण-पत्र आपकी सेवामें इसी दृढ़ आशासे भेजा गया है कि आप सर्व राजस्थानी भाई-बहनें इस शुभ अवसरपर अपने इष्टमित्र एवं कुटुम्ब-परिवार सहित अधिकाधिक संख्यामें उपस्थित होकर सम्मेलनको पूर्ण सफल व यशस्वी बनानेमें सहायक होंगे ।

विनीत

माणिकचद पहाडे,
(हायकोर्ट वकील)
स्वागताध्यक्ष

सेठ ब. शेषमल देवडा,
प्र. स्वागत मंत्री

(पृष्ठ १२ का शेषांश)

कृष्णकुमारी—और दरबारने क्या कहा ?

ज्वानसिंह—एक शूद्रके साथ दरबार तुम्हारे विवाहकी कल्पना तक नहीं कर सकते ।

कृष्णकुमारी—(कुछ रुककर) फिर क्या......क्या उपाय सोचा है भाया, पिताजी युद्ध करेंगे ?

ज्वानसिंह—(सहमे हुए स्वरमें) युद्ध ! युद्ध, भैन, मेवाड़, एक ओर राठोरों और कछवाहों, दूसरी ओर मराठों, तीसरी ओर अंग्रेजों और चौथी ओर मुसलमानों, सबसे युद्ध करनेमें समर्थ नहीं है ।

कृष्णकुमारी—तो सबने मेवाड़के विरोधमें बीड़ा उठाया है !

ज्वानसिंह—हां, आज मेवाड़ सर्वथा अकेला है ।

कृष्णकुमारी—फिर ?

ज्वानसिंह—(भर्राये हुए स्वरमें) क्या...क्या कहूं भैन ?

[कुछ देर निस्तब्धता रहती है। एकाएक ज्वानसिंहके अंगरखके नीचेसे कटार पृथ्वी पर गिर पड़ती है ।]

कृष्णकुमारी—(कटार देखकर) हैं ! यह कटार तुमने कमरबन्दमें न बोध अंगरखेके नीचे रखी थी ।

ज्वानसिंह—(जल्दी भर्राये हुए स्वरमें) हाँ...हाँ... नहीं...नहीं...वह ..वह तो...(चुप हो जाता है ।)

कृष्णकुमारी—(कटार उठाकर) भाया, यह कटार तुम छिपाकर किसलिये लाये थे ।

[ज्वानसिंह उठकर इधर उधर टहलता है, पर बोलता कुछ नहीं ।]

कृष्णकुमारी—(ज्वानसिंहके सामने जाकर खड़े हो) भाया !

[ज्वानसिंह रो पड़ता है । कुछ देर निस्तब्धता । एकाएक ज्वानसिंहका प्रस्थान ।]

कृष्णकुमारी—(ज्वानसिंहके पीछे पीछे जाते हुए) भाया ! भाया !

[ज्वानसिंह नहीं लौटता । कृष्णकुमारी एकटक कटारकी ओर देखती है ।] (लघुयवनिका) (क्रमशः)

(पृष्ठ ९ का शेषांश)

आपको अपेक्षाकृत अविचलित रख सके तो भी इस कार्यका परिश्रम उस पर (स्त्री पर) पुरुषकी अपेक्षा ज्यादा पड़ता हैं। इसलिये स्त्री, पुरुष की अपेक्षा कुछ बीमारी की हालतोंमें भी मैथुन को पुरुषकी अपेक्षा कम क्षतिके साथ सहन कर सकती है। पुरुषके लिए—यदि संकुचित अर्थोंमें शब्दप्रयोग किया जाय तों—अपना लैंगिक पार्ट अदा करनेके बाद इसकी समाप्ति हो जाती है, लेकिन स्त्रीके लिये तो वह उस समय आरंभ ही होता है, और जो खतरे ऐसी बीमारी के मामलेमें उपस्थित होते हैं, वे उसके लिए ही ज्यादा होते हैं । इसलिये प्रजनन कार्य के विषयमें—जो विवाह में किया जाता है स्त्री के लिये यह बात पुरुष की अपेक्षा बहुत ज्यादा आवश्यक रहती है कि वह पूर्ण स्वस्थ एवं तंदुरस्त अंगोंके साथ विवाहमें पदार्पण करे ।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है हृदय और गुर्दोंका सबसे पहले ध्यान रखना चाहिये। क्षय तथा स्वास्थ्यकी साधारण स्थिति का भी ख्याल रखना कम महत्वका नहीं है। इसके बाद प्रजनन अवयवोंकी वृद्धिमें संभाव्य बाधाओंका भी ख्याल रखना चाहिये। सबसे अंतमें प्रजनन संबंधी रोगोंका सवाल आता है। जहां तक अपने साथीके प्रति स्त्रीकी जिम्मेवारी का सवाल है, यह बात पुरुषकी जिम्मेवारीके समान ही समझनी चाहिये, सिर्फ भेद यह है कि उसके बारेमें डाक्टरी जाँच करना, पुरुषकी अपेक्षा कहीं ज्यादा कठिन काम है। परन्तु जहांतक उसके अपने (स्त्रीके) खतरेके अवसरोंका सवाल है, यह बात उसके पतिके बजाय उसके लिये कहीं ज्यादा लाभ की है कि वह विवाहमें सिर्फ तभी प्रवेश करे, जब कि वह पूर्णरूपसे स्वस्थ हो; क्योंकि विवाहमें लैंगिक क्रियाओंके साथ, बीमारी पुरुषकी अपेक्षा स्त्रीमें बहुत तेजीसे स्थान पा लेती है, और पुरुष की अपेक्षा उसे इससे नुकसान भी ज्यादा भुगतना पड़ता है ।

अब यह सवाल आता है कि स्वास्थ्यकी दृष्टिसे स्त्रीको किसी खास पुरुषसे विवाह करना चाहिये या नहीं ? जो विचार पुरुषके लिये उपयोगी हैं, जब वह सोंचता है कि वह विवाहकी जिम्मेवारी उठा सकता है या नहीं, वही विचार स्त्रीके लिये भी इस प्रश्नके निर्णायक हो सकते हैं। फिर भी कठिनाई इस बातको जाननेमें है कि शारीरिक अवस्था कैसी है ? यहींपर डाक्टरी विवाह प्रमाणपत्रकी समस्या उपस्थित होती है।

यदि किसी स्त्री को किसी सम्मान्य आदमीके साथ विवाह का निश्चय करना है जिसे कि खुद अपनी जिम्मेवारीका ख्याल है, तब उसके इस दृढ कथनसे ही सर्वथा संतुष्ट हुआ जा सकता है कि जहांतक वह अपनेको जानता है उसका स्वास्थ्य बिलकुल ठीक है। एक दूसरी बात पति चुनाव करते समय स्त्रियोंको ख्यालमें रखनी चाहिए, कि वह व्यक्ति अपने कार्यमें कहां तक प्रवीण है। इस विचार पर शायद ही कोई ध्यान न देता हो कि पुरुषका कार्य वैवाहिक क्रिया है। इस लिये कार्य करनेके लिये पुरुषकी क्षमता वैवाहिक योग्यताके लिये एक अत्यावश्यक विचार है।

पुरुषको किसी खास लड़कीसे विवाह करना चाहिये या नहीं, यह प्रश्न भी इन्हीं दृष्टियोंसे तय किया जा सकता है। कुछ आवश्यक परिवर्तनोंके साथ, हरेक आदमी जनन संबंधी अवयवोंका अपना अपना परिणाम निकाल सकता है। पुरुष भी स्त्रीसे वही बातें चाहेगा जो कि वह पुरुषसे चाहती है—अर्थात् अवयवोंकी स्वस्थता एवं पूर्णता । पुरुषकी शक्ति तथा उसकी वैवाहिक क्रियाओंकी अभिरुचिके मुताबिक स्त्रीको अपनी शक्ति, मातृत्वकी अभिलाषा और घर-गृहस्थी की व्यवस्था अनुकूल करनी पड़ती है। पुरुषको जब वह स्त्रीके साथ वैवाहिक एकता स्थापित करने जा रहा है उसकी (स्त्रीकी) शारीरिक क्षमताकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिये। यह कहनेकी जरूरत नहीं कि दोनों की शारीरिक योग्यता पर समान ध्यान देना चाहिये। लेकिन इस शारीरिक योग्यता पर अलग अलग विचार किया जा सकता है।

—" Fit or Unfit for Marriage " से

सब प्रकार के बीमे का काम

फायर एण्ड जनरल

यूनिवर्सल

इंस्युरंस कंपनी

अपनी
जिंदगी
का
बी
मा
कराइये

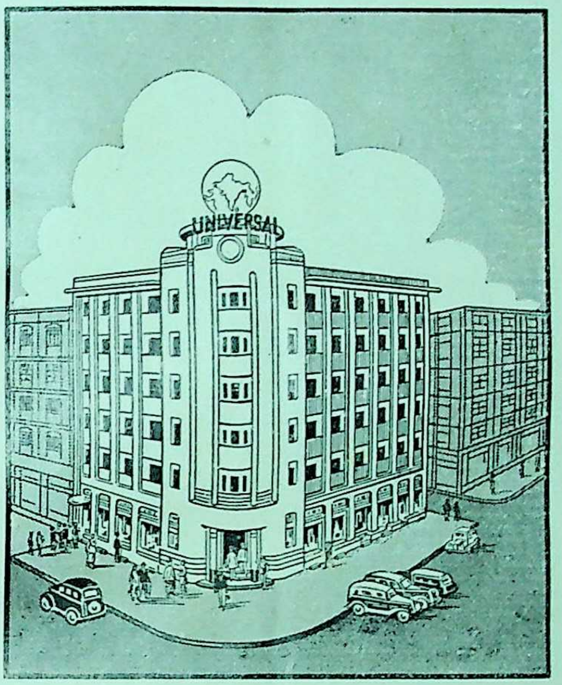

को
ही
दी
जि
ये

इसके डायरेक्टर्स हैं

१. दि. ब. कृष्णलाल मोहनलाल झवेरी एम्. ए. एलएल. बी.
२. सेठ लक्ष्मणदास हरखचंद डागा
३. राजा नारायणलाल वंशीलाल
४. श्री. जे. एच. मोदी सालीसिटर
५. श्री. केशवलाल हरीलाल सेतलवाड़
६. राय साहब केदारनाथ खेतान एम. एल. सी.
७. श्री. रणछोड़दास त्रिभुवनदास पोपावाला (मालपाणी) बी. ए.
८. श्री. कांतीलाल चिमनलाल मुन्शी बी.ए.

आग;
मशीन;
मोटर;
इत्यादि सब
प्रकार के
बीमे के लिये
हमें पूछिये

यह कम्पनी "माहेश्वरी" द्वारा स्थापित की गई है। स्व. सेठ वरजदासजी भाईदासजी मालाणी इसके संस्थापक थे।

सब प्रांतों में एजेन्सियां देनी हैं। आज ही एजेन्सी के आकर्षक नियमों के लिये लिखिये—

मेनेजिंग एजेन्टस—एम. कानजी एन्ड कंपनी

दी यूनिवर्सल फायर एण्ड जनरल इंस्युरन्स कं० लि०

सर फीरोज़ शाह मेहता रोड, बंबई

Printed by Vasant S. B. Shroff, B. A., B. SC., LL. B. at the Bombay Vaibhav Press, Servants of India Society's Building
Sandhurst Road, Bombay 4 and published by him at 70, Tulsi Vibar, Marine Drive, Bombay.

Reg. No. B 4441

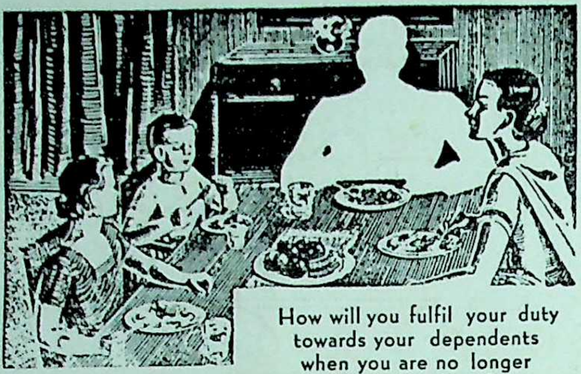

How will you fulfil your duty towards your dependents when you are no longer a breadwinner ?

If you were not there...

कुटुम्बं का संपूर्ण संरक्षण

न्यु एशियाटिक की 'हैपी होम पॉलिसी' बीमा की एक ऐसी अद्वितीय तथा अपूर्व योजना है जिसका कुटुम्ब की संरक्षा अधिक से अधिक प्रमाण में करने के हेतु से निमार्ण किया गया है।

हमारा भारत गरीबी से पीड़ित है। ऐसी दशा में यहां कुटुम्ब की संरक्षा के प्रश्न का हल अधिक आवश्यक है। 'हैपी होम पॉलिसी' में पैसा लगाने से पैसे का अनुचित उपयोग नहीं होता और न वह किसी तरह की जोखम का काम ही है। ५०००) के बीमे से क्या मिलता है:—

५००) और बोनस-मृत्यु के बाद
५०) मासिक-बीमे की शेष अवधि तक
४५००) बीमा की अवधि खत्म होने पर

इस रकम से बच्चों की शिक्षा का प्रबन्ध हो सकता है अथवा वे कोई धंधा कर सकते हैं

पूर्ण विवरण के लिये लिखिये—

दी न्यु एशिआटिक लाईफ इंस्युरंस कम्पनी लिमिटेड

मैनेजिंग एजेन्टस्—बिड़ला ब्रदर्स लिमिटेड

हेड ऑफिस

कॅनाट सर्कस, नई दिल्ली

शाखाएं और प्रमुख कार्यकर्ता

उत्तरी विभाग
(कॅनाट सर्कस, नई दिल्ली)
लाहोर
रावलपिंडी
पेशावर (केन्टोनमेन्ट)
पटना
कानपुर

पूर्वी विभाग
(८, रायल एक्सचेन्ज प्लेस, कलकत्ता)
ढाका
बर्दवान
जलपाइगुरी
सिलहट
बर्मा

पश्चिमी विभाग
(४५—४७ अपोलो स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई)
हैद्राबाद (दक्षिण)
इर्नाकुलम
बेलगाम
अहमदाबाद
कराची

मध्य विभाग
(भवानी पेठ, जळगांव)
इन्दौर
जबलपुर
नागपुर
अमरावती

दक्षिणी विभाग
(२८९ लिंत्रा चेट्टी स्ट्रीट, मद्रास)
मद्रास
सीलोन
त्रिचनापल्ली

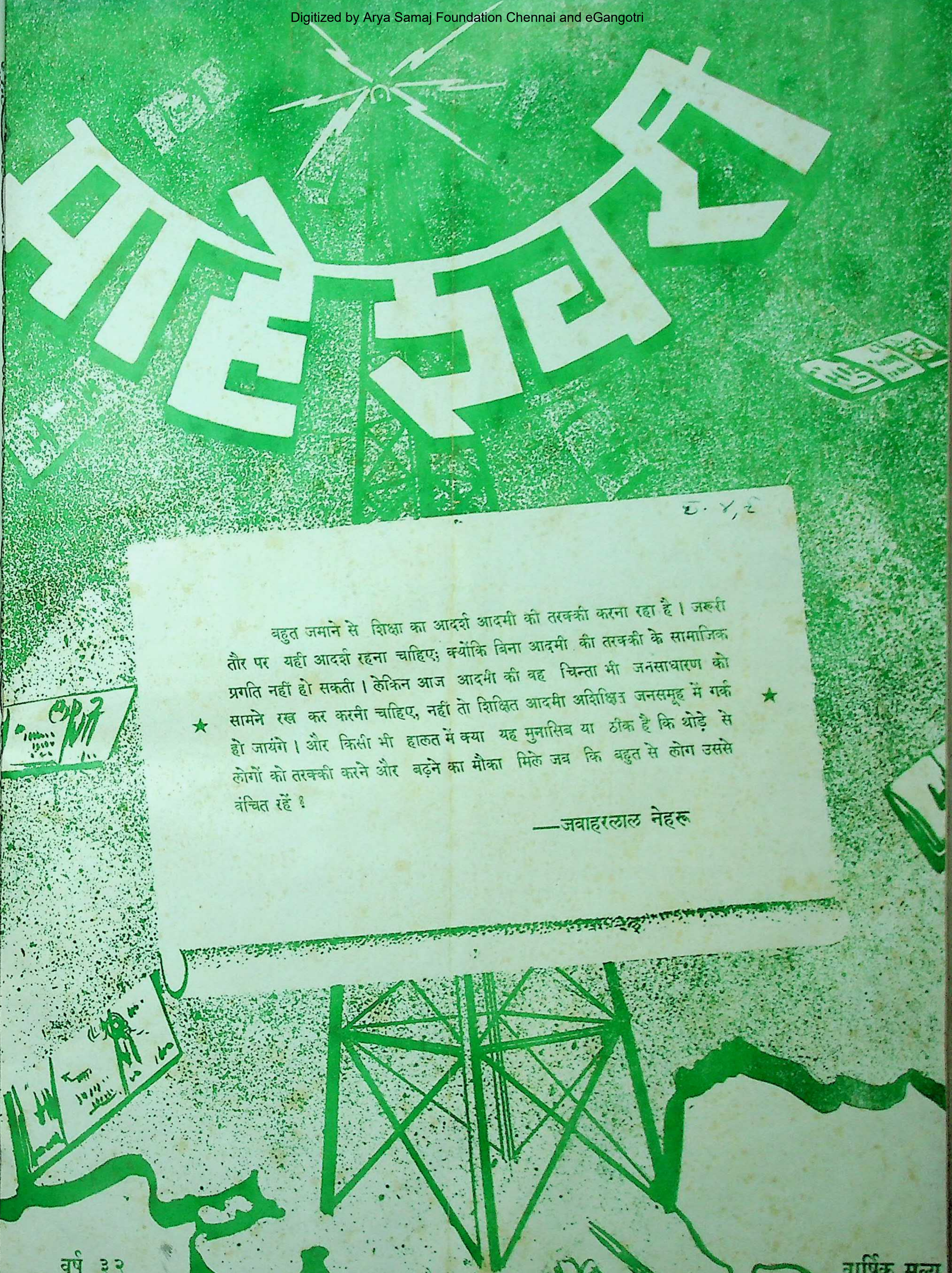

माहेश्वरी

द. ४, ६

बहुत जमाने से शिक्षा का आदर्श आदमी की तरक्की करना रहा है। जरूरी तौर पर यही आदर्श रहना चाहिए; क्योंकि बिना आदमी की तरक्की के सामाजिक प्रगति नहीं हो सकती। लेकिन आज आदमी की वह चिन्ता भी जनसाधारण को सामने रख कर करनी चाहिए, नहीं तो शिक्षित आदमी अशिक्षित जनसमूह में गर्क हो जायंगे। और किसी भी हालत में क्या यह मुनासिब या ठीक है कि थोड़े से लोगों को तरक्की करने और बढ़ने का मौका मिले जब कि बहुत से लोग उससे वंचित रहें?

—जवाहरलाल नेहरु

वर्ष ३२
संख्या १४

वार्षिक मूल्य
३) रुपया

खिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभाका मुखपत्र

प्रवर्तक—स्व. भागीरथदासजी भूतड़ा

पाक्षिक

कार्यालय—अली चेम्बर्स, टीन लेन, फोर्ट, बम्बई.

हिन्दुस्तान में
गेंडा – मार्का
क्राफ्ट-पेपर
बनता है
मज़बूत
चीमड़
टिकाऊ
फिर कमज़ोर और भद्दे
कागजों की रैपिंग से
अपने व्यवसाय
को क्यों हानि पहुंचाते
हैं?
ओरिएण्ट पेपर मिल्स लि०
८, रायल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता

सम्पादक समिति
श्री. लक्ष्मीनारायण मालाणी,
श्री. दामोदरदास मूंदड़ा,
श्री. राधाकृष्ण लाहोटी

माहेश्वरी

प्रबन्ध सम्पादक
श्री. राधाकृष्ण लाहोटी
प्रकाशक
श्री. वसन्तलाल श्राफ़

' उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत '

वर्ष ३२, संख्या १४] बम्बई ता. २१ नवम्बर १९४१ [वार्षिक मूल्य ३ रुपया

[औरंगाबादमें हैद्राबाद स्टेट राजस्थानी सम्मेलन में आनेवाले प्रतिनिधियों के स्वागतमें यह स्वागत गान पढ़ा गया था। ग्रॅण्डकाकाका यह गान बहुत लोकप्रिय होगया था। हम यहां इसे दे रहे हैं।]

★ ग्रॅन्ड काका, नागोरी ★

स्वागत–गीत

स्वागत थांको करां प्रेमशूं स्वागत को स्वीकार करो
भूलचूक सब माफ करो, प्रिय ! स्वागत को स्वीकार करो ॥

सामेळो स्टेशनपर होग्यो, तोरण मारण आई जान।
मांडावालाको स्वागत अब स्वीकारो प्यारा मेहमान।
मीठो फीको जो कुछ हाजर, लेलो, मत इनकार करो ॥

ठाठ बाटशूं जान बणाकर, सजधजकर सब आया हो।
लेण, लावणो, दापो, दिखणा देवाने के लाया हो ?
अंट्यां ढीली करद्यो, झटपट, जाती बेड़ा पार करो ॥

तोरणपर म्हे नही अडावां, तोभी इत्तो कहशां म्हे।
मूंडो धोया पेली ज्यूंही, अबके तो नही रहशां म्हे।
जाती गंगाका पंडाने दिखणा दे सत्कार करो ॥

ओसर मोसर आदि कुरितां, फिरकेवाराना कानू।
कमर कसो अबके सब मेटो, टाळाटाळी ना मानू।
हाण लाभ चाहेसू भुगतो, जातीको उद्धार करो ॥

राज–निमंत्रण पाकर **पूर्वज**, मानपानशूं आया हा।
गौरवशूं **आसफजाही**की, स्पेशल सनदा पाया हा।
“ **पगडी** ” की अब रही न इज्जत, क्यूं झूटो इन्कार करो ॥

आद्यधर्म, कृषिकर्म वैश्यको, बढकर दूजो कोई नहीं।
काळो कानू बोले म्हाने, “ काश्तकार थे हो ही नहीं। ”
'राजा' ने समजावो '**राजा**' दुष्ट कायदा ठार करो ॥

बाड रुकाई करशी बहणा, जद ब्याने थे दे दीजो।
बिनती ब्यांकी पूरी पूरी पूरीकर जस ले लीजो।
अबलाने सबला करबाको थे राजा निर्धार करो ॥

'राजा' का हो 'मल्ल' आप या 'मल्लां' का हो थे राजा।
'**ललवाणीराजा !**' बोलो ना ? बाजे झट स्वागत बाजा।
ताळो सरकारी लाग्यो, मत, 'ललवाणी ललकार' करो ॥

श्री '**पीती**-कुल-कमल-दिवाकर, **नारायण राजा**' म्हांको।
स्वीकारो स्वागत म्हे कीनो रूखो सूखो जो थांको।
' हिन्दी ' जातीका सब दुखड़ा, मेटणको निर्धार करो ॥

' युवक-हृदय-सम्राट ' आपको स्वागत ! **हरिश्चन्द्र राजा ! !**
सत मत छोडो, टेक निभावो चाहे जो आफत आ जा।
निर्भयताको शंख फूकद्यो, जाति यश विस्तार करो ॥

' महिला-मंडल-गगन-चंद्रिका तेजःपुंज **रतन राणी**
स्वीकारो स्वागत अरु राखो ललना जगकी थे बाणी।
जो जो आवे संकट ब्यांशूं, लड़बाको निर्धार करो ॥

बल्दाका साराही राजा, रानी बणकर आया छे।
यथाशक्ति ब्यांका स्वागतका गीत बधावा गाया छे।
'पुष्प' नहीं तो पुष्प पांकळी लेलो मत इन्कार करो ॥

बल्दावाला ज्यूं ही दूजा, अजलावाला जान्याको।
स्वागत सगला राजस्थांनी, नाई, बामण, बाण्याको।
तलवार उठावो, चीड़ी मारो क्यूं तोरणने वार करो ?॥

बेटीका बापाने स्वागत सगळाको करणो पडशी।
इंतजाम ब्यांको करवाने, भाग दोड़ मरणो पडशी।
इत्तापर भी रीसासी बे, चाहे ज्यूं मनवार करो ॥

भूल हुई जबरी म्हाराशूं, बहणाने म्हे भूल गयो।
राणी–राजा–स्वागत में ही बण कुप्पो म्हे फूल गयो।
माफ करो सब प्यारी बहणा, चुप मत अब दुत्कार करो ॥

जोरामर्दी मांडी बण बेव्योड़ा '**लिछमी राजा**' को।
आदो स्वागत करशूं, जाणूं, होसी दावो हर्जा को।
जान्या ज्यूं नही स्वागत होवे, चाहे ज्यूं तकरार करो ॥

चोखा सुंदर प्रस्तावां का देशां थाने मीठा भात।
'**नारायण**' '**हरी** ' '**रतन**' प्रभृति, राजी होशी सभी बरात।
रुच रुच सब आरोगो जानी, मत तोरण ने वार करो।

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन"

बम्बई, ता० २१ नवम्बर १९४१

नैतिक साहसका अभाव क्यों ?

'माहेश्वरी' मे अनेकवार मौसरकी कुप्रथाके सम्बन्धमें प्रकाश डाला जा चुका है। बार-बार समाजसे इस कुप्रथाको त्यागनेके लिए अनेक प्रकारसे अनुरोध किया गया है। और यह भी पाया गया है कि मौसरके विरोधमें काफ़ी लोकमत है। कई लोगोंसे इस प्रथाके उठा देनेमें समाजकी विवक्षित मनोवृत्तिका कठोर परिचय भी मिला है। किन्तु इस प्रथाको जितना जल्दी तिलांजलि मिल जानी चाहिए वह मिली नहीं, यह अत्यधिक खेदका विषय है।

कई लोगोंसे अनेक बार यह सुननेमें आया है कि वे इस प्रथासे उकता गये हैं और जितना भी जल्दी हो सके, वे इस प्रथाके समूल नाशका स्वागत ही करेंगे। फिर भी समय आ पड़ने पर इस प्रथाको तोड़नेमें उनकी ओरसे नैतिक साहसका परिचय नहीं मिलता। यह भी देखा गया है कि जब कभी सामूहिक रूपसे भी इस प्रथाके सम्बन्धमें जनमतके जानने का अवसर मिल्ता है तब भी यही पाया जाता है कि मौसरकी प्रथाको उठा देनेमें अधिक जनमत अनुकूल हैं। अभी उस दिन हैदराबाद स्टेट मारवाड़ी (राजस्थानी) सम्मेलनमें भी, जो कि राजा नारायणलालजी पित्ती की अध्यक्षतामें औरंगाबादमें सम्पन्न हुआ है, इस मौसर की प्रथाको उठा देनेके सम्बन्धमें प्रस्ताव पेश हुआ और उस पर बहस भी हुई। और जब मतगणना हुई तब यह ज्ञात हुआ कि इस प्रस्तावके विरोधमें इतने कम लोग थे कि उनकी संख्याको एकदम उपेक्षणीय और नगण्य ठहराया जा सकता था। मत गणनाके समय बारबार उपस्थित लोगों को अच्छी तरह समझा दिया गया कि इस प्रस्ताव का हेतु है मौसर उठा देना और कभी भी मौसर नहीं करना। अतः जो भाई यह मानते हों कि मौसर प्रथा समाजमें रहे, मौसरों का दौर चलता रहे वे अपनी राय इसके विपक्षमें दें। इस तरह ठीक-ठीक लोकमत जाननेके लिए और किसी प्रकारका भ्रम व गलतफ़हमी न रहे इसके लिए भरसक यत्न किया गया, तब भी यही पाया गया कि उन्हीं और उतने ही लोगोंने प्रस्तावके विपक्षमें मत दिया। हालांकि सभामें उपस्थिति लगातार ढाई तीन हजार की रहती थी और कभी-कभी तो यह संख्या इससे भी अधिक हो जाती थी; फिर भी इतने बड़े समूहमें चार-आठ लोग ही प्रस्तावके विपक्षमें मत दें इसका आशय और क्या समझा जाय। इससे तो यही जाहिर होता है कि समाज इस प्रथाका जल्दीसे जल्दी अन्त कर देना चाहता है फिर भी हमें समझ नहीं पड़ता कि यह प्रथा आज भी पांव क्यों जमाए है।

एक तरफ तो औरंगाबादमें हैदराबाद स्टेट मारवाड़ी सम्मेलनमें उपस्थित मारवाड़ी बन्धु मौसर प्रथाके विरोधमें अपनी आवाज़ बुलंद करते हैं उसी समय दूसरी ओर उसी स्टेटकी धनीमानी फर्म दयारामजी सूरजमलजीके मालिक श्री हीरालालजी लाहोटीके परलोकगमन पर उनके परिजन कुटुम्बी और खासकर रा. सा. पन्नालालजी लाहोटी जैसे जिम्मेवार सामाजिक उन्नतिके अभिलाषी सिकन्दराबादके पंचोंसे उनके मौसरकी अनुज्ञा मांगते हैं और पंच लोग भी बिना आपत्ति किये अनुमति दे देते हैं। यह एक विचित्र गोरखधंधा है जो आसानीसे समझ नहीं पड़ता।

औरंगाबादकी माहेश्वरी पंचायतने आजसे ८ वर्ष पूर्व पंचायतद्वारा अपने यहां सदाके लिए इस प्रथाका अन्त कर दिया था। इसका अनुकरण परभणीकी माहेश्वरी पंचायतने भी किया। राजा इन्द्रमलजी लूणिया तथा सेठ रघुनाथमलजी बैंकरने औसर न कर स्तुत्य नैतिक सत्साहसका परिचयभी ८ वर्ष पूर्व दिया था। उनके साहसपूर्ण कृत्यका आज तक समाजने कभी विरोध नहीं किया। हैदराबाद राज्यको इस दिशामें इतना आग्रगामी देखकर जब हम सिकंदराबादमें स्व० हीरालालजीके मौसरकी बात सुनते हैं तो स्वभावतः ही हृदयमें एक गहरी वेदना होती है। क्या औरंगाबादमें उपस्थित रहनेवाला इतना विशाल प्रतिनिधि दल व जनसमुदाय, सारे का सारा कर्मठ सुधारकोंका समुदाय था। यदि यह बात मान ली जाय तो हम निश्चित रूपसे कह सकते हैं कि जिन प्रस्तावोंको औरंगाबादकी सभामें पास किया गया वे कदापि नहीं करने पड़ते। और हरेक सभामें उन्हीं उन्हीं कुरीतियोंके बारेमें विचार-विनिमय, युक्ति-प्रयुक्ति, बहस मुबाहसा और प्रस्तावोंका जो दौर दीख पड़ता है वह कदापि नहीं दीख पड़ता। इससे तो यही पाया जाता है कि लोगोंको अपनी जिम्मेवारीका न तो विचार है और न उसपर दृढ़ रहनेकी चिन्ता व हिम्मत ही है। पाठक हमें क्षमा करें, हमारी तो मान्यता है कि यदि हम अपने मत और विचारों पर दृढ़ रहते तो कोई कारण नहीं कि आये दिन हमलोगोंको एक ही मसलोंपर विचार करनेका मौका पड़ता।

हमें अफसोस है कि हम में मानसिक गुलामी इतनी व्यापक है कि जिस चीजको हम बुरा मानते हैं और जिसके बुरे होनेमें हमारा अटल विश्वास है उसे निकाल फेंकनेके लिए ज़रा भी आगे नहीं बढते। इसमें न तो साहसकी आवश्यकता है न वीरताकी। जरूरत है केवल अपनी जिम्मेवारी का ख्याल रखने की। किन्तु होता इसके ठीक विपरीत है। हम अपनी जिम्मेवारी की तरफसे आखें फेरे रहते हैं।

जब रा. सा. पन्नालालजी लाहोटी जैसे समझदार व्यक्ति अपने यहां से इस प्रथाको उठा देनेके लिए जरा भी प्रयत्न नहीं करते तब दूसरे लोगोंको स्वभावतः एक बहाना मिल जाता है। हम ऊपर रा. सा. पन्नालालजी लाहोटीके स्व. पिताजीके मौसर की चर्चा चुके हैं। जब लोगोंने यह बात सुनी तो कई लोगोंने हमें उपालम्भ भी दिया और ललकारा कि अब हम लोग क्या करने वाले हैं। हमने उन मित्रोंसे जो बात कही उसे फिर यहां दोहरा देते हैं। हमने उनसे, क्या पत्र द्वारा और क्या मौखिक रूपसे, बार-बार यही निवेदन किया कि वे इस प्रथा को अपने यहांसे उठा दें क्यों कि हम यह जानते और मानते हैं कि उनके यहांसे इस प्रथाको तिलांजलि मिल जाना निजाम स्टेट में इस प्रथाके कफ़नमें एक बड़ी भारी कील का काम करता। किन्तु हमें अफ़सोस है कि हमारे एवं अन्य मित्रोंके समझानेके बावजूद उन्होंने मौसर करनेमें ही अपना यश और कीर्ति मानी। हमारा कथन था कि ये सहस्रों रुपये इस मौसके लिए खर्च करनेके बजाय किसी समाजोपयोगी कार्यमें खर्च होते तो यह प्रथा उठा देनेका यश भी उन्हें मिलता एवं उन रुपयोंका सुन्दर ढंगसे वीनियोग करनेका रास्ता भी दूसरोंके लिए खुल सकता।

इस विषयमें हम और अधिक क्या लिखें। जिन बातोंको हम बार बार दोहराते आये हैं उन्हींको यहां फिर कह देना चाहते हैं। जिन भाइयोंका विश्वास है और जो यह मानते हैं कि ये कुप्रथाएं हमारे समाजके लिए हानिकर हैं वे दूसरोंके आगे आनेकी अपेक्षा किये बिना ही अपने यहांसे उन्हें उठा देनेका कार्य करें। सामाजिक उन्नतिका यही राजपथ है।

प्रेमी ग्राहक बन्धुओंसे

"माहेश्वरी" के ग्राहकोंकी सेवामें उनका चंदा खत्म हो जानेकी सूचना भेजी गई है और जैसे २ जिनका चंदा खत्म हो जायगा उनको भी भेजी जायगी। हमारा सबसे अनुरोध है कि जिन लोगोंके पास सूचना पहुंच चुकी है वे कृपा कर अपना मूल्य मनीऑर्डर द्वारा तुरंत ही भेज दें क्योंकि यदि समय पर सूचना न मिली तो हमें लाचार होकर उनके नाम पत्र भेजना बन्द कर देना पड़ेगा।

कृपया इस काममें आलस्य या उदासीनता न रखें। हम उनसे यह भी प्रार्थना देना चाहते हैं कि उनके पास कोई मूल्य मांगने के लिए आये इस बातकी अपेक्षा वे न रखें। जो समाज व्यवहारी है उसे अधिक लिखनेकी आवश्यकता नहीं। "माहेश्वरी" का मूल्य भी कोई इतना बड़ा नहीं है जिसे भेजनेमें उन्हें विचार करना पड़े! "माहेश्वरी" किस रूपसे समाज की सेवा कर रहा है यह बतलाने की आवश्यकता नहीं क्योंकि उनकी सेवामें बराबर १२ माससे "माहेश्वरी" पहुंच रहा है। हो सकता है हमारे इतने प्रयत्नोंके बावजूद उनकी दृष्टिसे "माहेश्वरी" को हम अधिक सुन्दर नहीं बना सके हों। पर इसका यह मतलब नहीं है कि हम अपने प्रयत्नोंमें किसी प्रकार की कमी रखेंगे। हमें उत्साहित करने का काम भी तो उनका ही है। वे अपना निजका वार्षिक मूल्य जल्दीसे जल्दी भेज दें और साथ ही अधिकसे अधिक ग्राहक बनाने की कोशिश करें। कोई भी व्यवहारी आदमी उधारका खाता चलाये रखना पसंद नहीं करेगा। फिर "माहेश्वरी" तो व्यवहारी समाजका ही पत्र है। फिर इसके यहां ही उधार खाता क्यों?

आशा है हमारी इस प्रार्थना पर उदार बंधु अवश्य ही ध्यान देंगे। —व्यवस्थापक

दोष आदर्शोंका या हमारा?

श्री श्रीकृष्णदासजी जाजू

२१ अक्तूबरके 'माहेश्वरी' में श्रीयुत रामगोपालजी मोहताका एक लेख "अव्यावहारिक आदर्श" शीर्षकसे छपा था। उसमें, हमारे ऋषिमुनियोंने दीर्घ कालतक सांसारिक प्रवृत्तियोंका गहरा अध्ययन कर और स्वयं कठोर तपश्चर्या कर मनुष्यका कल्याण किसमें है इसका सही मार्गदर्शन करानेके लिये "न हि सत्यात् परो धर्मः," "अहिंसा परमो धर्मः" आदि जो आदर्श जगतके सामने रखे, वे अव्यावहारिक अर्थात् गलत बतलाये गये हैं। अपना मंतव्य स्पष्ट करनेके लिये उन्होंने सत्याग्रहका उपहास किया है, विधवाओंको दोष दिया है, देशसेवाके लिये त्याग तप करने वालोंको भूले भटके माना है, सत्तर-पचहत्तर लाख साधुओंका ब्रह्मचर्य व्रत पालन करनेके लिये साधु बनना माना गया है। आखिरमें यह भी लिखा है कि, "शरीर और इंद्रियोंका धर्म उनके लिये श्रेष्ठ है और आत्माका धर्म आत्मा के लिये है" जिसका मतलब यह भी निकल सकेगा कि आत्मा के लिए शरीर और इन्द्रियोंकी साधना की आवश्यकता नहीं है। कुछ वेदांती ऐसा मत प्रतिपादन करते पाये जाते हैं कि आत्मज्ञानसे नैतिकताका संबंध नहीं है। जिसे लोग अनीति समझते हैं उससे आत्माका स्पर्श नहीं होता। इंद्रियां अपने अपने विषयोंमें प्रवर्तमान होती हैं पर आत्मा उनसे अलिप्त रह जाता है। यह मत मुमुक्षुओंके लिये कितना खतरनाक है इसकी कल्पना सहज ही की जा सकती है।

ऊपर लिखी हुई कई बातें मुझे आक्षेपार्ह मालूम होती हैं। पर इस लेखके लिये अप्रस्तुत होने के कारण मैं उनके विषयमें कुछ भी लिखना नहीं चाहता। मुझे तो केवल उनके मुख्य मंतव्य के बारे में ही थोडा सा लिखना है और वह भी फिर और इस संबंधमें न लिखने के इरादेसे ही। मेरे ख्याल से उनके द्वारा उठाया हुआ प्रश्न केवल बौद्धिक ऊहापोहसे, वादविवादसे या युक्तिप्रयुक्तिसे हल नहीं हो सकता है। अपनी प्रत्यक्ष साधनासे ही वह हल होना संभव है। सामान्य लोगोंके मुँहसे यह बात कई बार सुनने में आती है कि, "शास्त्रोंकी बातें तो बड़ोंके लिये हैं, हम पामर सांसारिक जीव हैं, हमसे वह नहीं निभ सकतीं।" यह भाषा सरल, समझने लायक है। पर जब अपनी कमज़ोरीके लिये शास्त्रोंको दोष दिया जाता है, तत्वज्ञानका पसारा फैलाया जाता है और सद्ग्रंथोंका आधार ढूंढा जाता है, तब हमें सावधान हो जानेकी ज़रूरत है। उक्त लेखकी विचारसरणिसे मेरा मतभेद है इसलिये मुझे यह लेख लिखनेकी इच्छा हुई।

यों तो सब स्वीकार करते हैं कि मनुष्यकी उन्नतिके लिये सत्य और प्रेम आवश्यक है, मानव समाजकी संस्कृति इन पर निर्भर है। भारतवर्षमें इन आदर्शोंपर बहुत ज़ोर दिया गया और इनके लिये बड़े बड़े व्यापक प्रयोग भी किये गये। कोई आदमी इनको सिद्धांतकी दृष्टिसे बुरा कहनेका साहस नहीं करेगा तथापि जब कि एक ओर पू. गांधीजी उन आदर्शों को व्यवहारमें लाने की कोशिश कर रहे हैं तो दूसरी ओर केवल किताबोंमें लिखे रहने लायक या केवल साधुसंतों के काम के कह कर उनका जोरोंसे विरोध भी किया जा रहा है। हम सद्ग्रंथों का या संतों का आश्रय न लें तो भी इन आदर्शों के सही होने का एक ही प्रमाण काफी है कि हरएक व्यक्ति यही चाहता है कि दूसरे सब मुझसे सचाई और प्रेमसे पेश आयें। तब खुद को वैसा ही व्यवहार करने के लिये सदा तत्पर क्यों न रहना चाहिये? यह बात कैसे मानी जा सकती है कि परायों के लिये एक नियम हो और अपने लिये दूसरा। यह भी तर्क किया जाता है कि व्यक्ति के लिये व्यक्तिगत दृष्टिसे यह आदर्श भले ही श्रेष्ठ हों पर वे सामुदायिक जीवन के काम के नहीं या सामुदायिक जीवनमें निभ नहीं सकते। क्यों? समाज व्यक्तियोंसे ही बनता है या और किसीसे? जो बात व्यक्ति के लिये भली है वह समाज के लिये क्यों नहीं? कुछ भिन्न सामुदायिक जीवन के लिये भी इन आदर्शोंकी श्रेष्ठता मान लेते हैं पर कहते हैं कि समाजमें जबतक बहुतेरे इन आदर्शोंके पाबन्द न हों तबतक कुछ व्यक्तियोंके ही उनके कायल रहनेसे क्या लाभ? यहाँ एक यह प्रश्न खड़ा होता है कि परमार्थ बड़ा या स्वार्थ? दूसरा यह कि यदि समाजमें अधिक लोग सत्य और प्रेमकी परवाह नहीं करते, तो हम उनको उच्च आदर्शकी ओर ले जानेकी कोशिश करें या स्वयं भी अपना आदर्श छोड़ दें? मेरे ख्यालसे यही उत्तर सरल हो सकता है कि यदि आदर्श अच्छे हैं तो हम उनका भरसक पालन करें और दूसरोंको भी उसी मार्गसे ले जानेकी कोशिश करें।

सोचिए, हम कैसा खेल खेलते हैं। सत्यको अच्छा मानते हुए भी मैं आर्थिक व्यावहारिक हानिके या किसी दूसरेके भयसे असत्याचरण करता हूं। इसमें कमजोरी मेरी ही है। मुझे सीधा स्वीकार कर लेना चाहिए कि सत्य सर्व श्रेष्ठ है, मुझे उसीपर दृढ़ रहना चाहिए पर लोभसे या भयसे मुझसे असत्याचरण होता रहता है। यह मेरी कमज़ोरी है, ईश्वर वह हटानेके लिए मुझे बल दे। परंतु मैं अहंकारसे भरा पड़ा हूं, अपने को छोटा माननेको तैयार नहीं; फिर लिखा पढ़ा विद्वान भी हूं; काफी बहस कर सकता हूं, युक्तिसे अपनी कमजोरी छिपाकर सभामें बड़ा बना रह सकता हूं। अब मैं बुद्धि लड़ाकर बहस करने लगता हूं कि सत्य परम धर्म तो है ही पर व्यवहार कुछ झुकके बिना चल ही नहीं सकता; इसलिए आटेमें नमक की तरह असत्य का किंचित् आश्रय लेनेमें हर्ज नहीं है। फिर यह नमक कितना मिलावें, कितना नहीं, इसका माप कैसे किया जा सके और उसकी क्या मर्यादा बांधी जा सके? मेरी सुविधा हो उतना मिला लेनेमें क्या हर्ज है? इस प्रकार आटे का परिमाण नमक को मिल जाता है और नमक का आटे को।

यही बात दूसरे ढंगसे भी कही जाती है। आदर्श तो ठीक है पर हरएक नियमके कुछ अपवाद तो होते ही हैं। अंगरेजीमें एक कहावत भी है कि अपवादों से ही तो नियम की महानता सिद्ध होती है। सत्य को श्रेष्ठ मानें पर वाणिज्य व्यापारमें, व्यवहारमें, अदालतमें सामाजिक कामोंमें उसका आग्रह रखने से हमारा काम उल्टे बिगड़ता है; राजकाजमें, पर धर्म वालों से, परदेश वालों से सत्य और प्रेम का आग्रह रखना गलत ही होगा। जो हम से सचाई से और प्रेम से पेश नहीं आते उनसे सचाई और प्रेम का व्यवहार रखने का तो सवाल ही नहीं रहता। पाठक सोचें कि इस प्रकार अपवाद करते करते बाकी हमारे आदर्श पालनके लिए कितना सा क्षेत्र रह जाता है? और जो व्यक्ति अनेकों क्षेत्रोंमें असत्याचरण क्षम्य मान लेता है उस से बाकी बचे थोड़े से क्षेत्रमें सत्याचरण करने की आशा कैसे रखी जा सकती है? आखिर व्यक्तिका अंतःकरण तो एक ही है न? यह कैसे बन सकता है कि उसका एक जगह एक रूप हो और दूसरी जगह दूसरा? फिर भी द्विजिव्हता का अनुभव बहुत जगह आता है। चूंकि ऐसा असत्याचरण या व्यावहारिक सत्य (?) बड़े पैमाने पर चल रहा है और बड़े लोग भी उसका अवलंबन करते हैं इस लिए सभ्य समाजने उसे ढकने के लिए कुछ सुंदर शब्द भी गढ़ लिये हैं। व्यापारिक जगत में वह Business honesty (धंदादारी), राजनैतिक क्षेत्र में Diplomacy (राजनीती), वकालत आदि बुद्धिजीवी धंदोंमें Professional honesty कहाता है। वास्तवमें वे हैं सब Dishonesty (अनीति) के प्रकार, पर सुन्दर शब्दों की आड़में कमजोरी छिपाकर आत्मवंचना कर ली जाती है।

प्रेमकी कहानी भी कुछ ऐसी ही है। अहिंसा शब्द अभावात्मक है। कभी कभी उसका संपूर्ण अर्थ स्पष्ट होने में कठिनाई होती है; उस की जगह प्रेम शब्दका उपयोग कर लेने से विषय समझने में कुछ आसानी हो जाती है। हम दूसरों से प्रेम चाहते हैं तो हम भी सबसे प्रेम करें। पर उसमें कुछ अपवाद कर लेना चाहते हैं। जो हमें हानि पहुंचाता है, हमारे मार्गमें आड़े आता है, हमसे द्वेष करता है उस पर हम प्रेम क्यों करें? परधर्म वालोंपर, परदेशवालों पर, पर प्रांत वालों पर, पर जाति वालों पर, पराये घर वालों पर, परायों पर प्रेम करनेकी जरूरत क्या? इस प्रकार हमारी विचार धाराका तांता बंध जाता है। बादमें केवल हमारा घर ही हमारे प्रेमके लिए बच रहता है, पर वहां भी झगड़े कम नहीं रहते। मनोंके विकार बढ़ कर एक दूसरेसे द्वेष करनेकी बाजी लगती है। कहीं-कहीं व्यक्तियोंका विरोध जीवन भर टिकता है, पर जहां समूहोंमें द्वेष बढ़ता है वहां बदला लेनेकी भावना पीढ़ियों तक चलती है। इस चक्रमें दोनों ओर दुःख, क्लेश बढ़ता जाता है। मनुष्यकी इस गति देखकर ही संतोंने सुझाया कि द्वेषका मुकाबला प्रेमसे और बुराईका भलाईसे करो।

श्री रामगोपालजीके लिखनेका सारांश यह निकलता है कि प्रकृतिके अनुसार आदर्श निश्चित करना चाहिये। पर मनुष्य मनुष्यकी प्रकृति भिन्न भिन्न होती है। हरएकके लिये अलग अलग आदर्श नहीं बनाये जा सकते। यदि यह कहें कि सामान्य मनुष्यकी मर्यादाका ख्याल करके आदर्श निश्चित करें तो जातियोंकी विभिन्नता, देशोंकी विभिन्नता, विकासकी विभिन्नता, सामाजिक जीवनकी विभिन्नता, समय और परिस्थितिकी विभिन्नता आदिका ख्याल करते हमको भिन्न भिन्न आदर्श तो रखने ही होंगे। आदर्श मुकर्रर करने पर भी जब व्यवहारमें प्रत्यक्ष जटिल प्रश्न खड़े होंगे तब कुछ मार्ग निकालना होगा, अर्थात् अंतमें मौका देखकर निर्णय करना होगा। परंतु यह कोई आदर्शकी बात नहीं रह जावेगी। वह हमारी सुविधाकी बात होगी। इसलिये आदर्श प्रकृति आदिपर निर्भर न रखते हुए उचसे उच्च ही रखने चाहियें। यह बात दूसरी है कि हम अपने अधूरे विकासके कारण उन्हें पूरे न समझ सकें या अपनी कमजोरीके कारण उनका अमल न कर सकें। पाठक, उच्च आदर्श मानकर अपनी कमजोरी महसूस करना और अपनी कमज़ोरीके अनुसार छोटा आदर्श मानना—इसका भेद अच्छी तरह समझनेकी कोशिश करें। पहली बातमें हमारे कुछ सुधरनेकी आशा है। जबतक हम उच्च आदर्श नजरमें रख कर उसके अनुसार चलनेकी कोशिश करेंगे तबतक हम अपना विकास करते रहेंगे; परंतु यदि आदर्श प्रकृति के अनुसार ठहराया जायगा तो हम उसे

[शेष पृष्ठ ५ के कालम ३ पर]

विवाह—मनोवैज्ञानिक पहलू

★ डाक्टर वान डी वेल्ड ★

मनुष्यके छोटेसे छोटे या बड़ेसे बड़े हरेक कार्यके लिए तीन शर्तें आवश्यक हैं। पहली यह कि वह उस कार्यको कर सके, दूसरी यह कि उसमें उस कार्यके लिए इच्छा हो और तीसरी यह कि उसे वह कार्य करनेका अधिकार हो।

शारीरिक स्वास्थ्य, निःसन्देह, जीवनके उपभोग और मनको सुख और दुःखसे बचाकर साम्यावस्थामें रखनेके लिए अत्यन्त आवश्यक है। और शारीरिक अस्वस्थता निराशा और दुःखका एक प्रमुख कारण है। किन्तु इस बातकी हम उपेक्षा नहीं कर सकते कि वास्तवमें यह इस बात पर ही मुख्यतः निर्भर है कि कोई व्यक्ति शारीरिक कष्टोंको किस रूपमें सहन कर सकता है। बहुतसे अन्धे और लंगड़े अनेक शारीरिक दृष्टिसे स्वस्थ मनुष्योंसे ज्यादा सुखी हैं। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि क्यों बहुतसे विवाहित दम्पती नाजुक शारीरिक और आर्थिक कष्टोंके बीच भी सुखी और परस्पर अनुकूल जीवन बिता सकते हैं। मनकी यह प्रेरक शक्ति "इच्छा" है, पर सामान्यतः "इच्छा" शब्दसे जो अर्थ लिया जाता है उसकी अपेक्षा यह "इच्छा" गुरुतर वस्तु है। क्यों कि यह निर्विवाद है कि जिसमें विवाह करनेकी इच्छा नहीं वह विवाह का अधिकारी नहीं और इस तर्क की कसौटी पर अधिकांश व्यक्ति विवाह के अयोग्य हैं, भले ही वे कहें कि उनमें विवाह की इच्छा है। किन्तु कहा जा सकता है कि हरेक मनुष्य निःसन्देह जानता है कि वह क्या चाहता है! तब मनुष्य की इच्छा और अनिच्छाका यह बखेड़ा क्यों? लोगोंको मैंने कहते सुना है, "हमारी चेतन इच्छा पर्वतमाला के उस उच्चतम शिखर की तरह उज्वल है जो उदीयमान सूर्यसे उद्भासित हो रही है, जब कि उसका समस्त विस्तीर्ण अधोदेश छायाच्छन्न पड़ा है।" जिस प्रकार उंगलियों की तनिक स्नायवीय गति समस्त निश्चेष्ठ शरीर के ऊपर प्रतिष्ठित है उसी भांति इच्छाका चेतनामय कार्य मनके समग्र अचेतन प्रेरणात्मक जीवनके ऊपर स्थिति है। इस लिए, हम जानते हैं कि हम क्या चाहते हैं, पर हम इच्छा नहीं करते बल्कि इच्छा हममें होती है; इन अर्थोंमें हम जीवित नहीं, बल्कि 'जीवन हममें है।' हम इच्छाके निर्धारणमें तबतक स्वतन्त्र नहीं, जबतक हम यह नहीं जानते कि किसी चीजको हम क्यों चाहते हैं; जबतक कि हमारा तर्क हमारी इच्छाके कारणों का अनुसंधान नहीं कर लेता।

जो व्यक्ति किसी वस्तु के लिये इन कारणोंका अनुसंधान करना चाहता है, वह यकायक मुझसे कहेगा, अच्छा, मैं अपनी और अपने चुने हुए संगी (स्त्री या पुरुष) के गुणोंको जानता हूं, तो भी किस तरीकेसे वे एक दूसरे के अनुकूल और पूरक हो सकते हैं? इस बातको स्पष्ट करनेके लिये हमें पहले यह पता लगाना चाहिए कि नर और नारीमें शारीरिक प्रभेद ठीक-ठीक है कहां। इस प्रश्नका उत्तर देनेके लिए मनुष्यको प्रायः अपार कठिनाइयोंका मुकाबला करना पड़ता है। इसमें शक नहीं कि नर और नारीके बीच सीधा विभेद दिखा देना और नरको बुद्धि, आचार और सौन्दर्यसे सम्पन्न और नारीको तर्क और बुद्धिसे हीन, दुर्वृत्त और सर्वथा विलासिनी कह देना आसान है। परन्तु ऐसा करते हुए मनुष्य यह भूल जाता है कि बुद्धि और आचार जैसे गुणोंको, जिनका अपने विशुद्ध रूपमें न पुरुषके साथ कोई सम्बन्ध है और न स्त्रीके साथ, वह इस आधारपर पौरुष या स्त्रैण धर्म बना देता है। एकान्त निरपेक्ष और लिंगसे सम्बन्ध न रखने वाले गुणोंको—जैसे कि सहायता देनेके लिए सदा तत्पर रहना, रक्षा करनेकी आन्तरिक प्रेरणा, बुद्धि, विद्वेष, शक्ति—निहायत सहज और अकुण्ठित भावसे एक खास लिंगके गुण मान लिया जाता है, जब कि वास्तवमें वे नर और नारी दोनोंमें ही पाये जाते हैं। निःसन्देह एक ही गुण नर और नारी, दोनोंमें, विभिन्न रूपोंमें प्रकट हो सकते हैं। परन्तु इस प्रकारके गुणोंका रूप भिन्न-भिन्न इस लिए हो जाता है कि वे अलग अलग व्यक्तिमें आविर्भूत हैं। तुलनाके लिए ज़रा सोचिए कि एक ही कांच की प्लेट कितनी जुदा-जुदा मालूम होती है जब कि हम उसमें से क्रमशः एक अत्यन्त प्रकाशमान और एक अत्यन्त अन्धेरे कमरेमें देखते हैं।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि नर और नारीमें कही न कहीं एक वास्तविक भेद अवश्य है, चाहे वह सब गुणों पर प्रभाव नहीं डालता हो। इतना ही नहीं, बल्कि नर और नारीके शुक्राणु भी भिन्न हैं—एक गतिमान है, दूसरा निष्क्रिय। इससे यह भी निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि उनकी प्रकृतियां भी इसीसे भिन्न होती हैं।

किन्तु इस प्रकार प्रकट करने पर यह निष्कर्ष, उतनी पूर्णता से निर्णायक नहीं है जितना कि पहले पहल दीख पड़ता है। अथवा क्या यह सम्भव है कि नारी की अनुभूति की महत्तर प्रेरकता और गति शीलताका मूल उसकी सहज उदासीनतामें ही ढूंडा जा सके? कुछ भी हो, यह दृष्टिकोण कि नरकी क्रियाशीलता एक गतिशील शक्ति है जब कि नारीके भीतर की शक्ति एक सांचेमें ढालने की शक्ति है और नरकी गतिशील शक्ति उसके ऊपर होती है, सत्य आधार पर आश्रित है, यद्यपि उसे और अच्छे रूपमें पेश किया जाना चाहिए। ज़रूरत केवल इस की है कि इसमें दो बातें और जोड दी जांय, और ये दोनों बातें भी गर्भाधान की प्रक्रियामें ही दीख पड़ती हैं। पहली यह कि नरका शुक्राणु नारीके रज अणुको ढूंडता है और दूसरा यह कि नारीका रज अणु नरके शुक्र अणु द्वारा क्षत होता है।

नर और नारी की प्रकृतियोंमें खूब अच्छी तरहसे देखे गये मानसिक भेद इन तथ्यों के सर्वथा अनुकूल हैं। विश्लेषण करने पर जान पड़ेगा कि नर उस संसारमें रत है जो उसके निजके बाहर है और नारी अपने निजी संसारमें—अपने भावनाओं के संसारमें प्रवृत्त है। गौरसे देखा जाय तो यह भी मालूम होगा कि जो वस्तुतः नर है और जो वस्तुतः नारी है उन दोनोंमें ही हमेशा कुछ न कुछ अंश दूसरे लिंगके गुणोंका भी होता है।

इस दृष्टिकोणसे मैं लिंगों के आधारपर मानसिक भेदों पर विचार करता हूं। नारी की अपेक्षा नर की महत्तर प्रवृत्ति सबसे अधिक उसके वैषयिक जीवनमें देख पड़ती है। वह "स्वतन्त्र वैषयिक चुनाव" चाहता और करता है। किन्तु इस स्वतन्त्र चुनाव के कार्यमें नारी का कुछ भी मूल्य नहीं, ऐसा भय करने की ज़रूरत नहीं। इस भयसे हम सुरक्षित हैं क्योंकि नरके स्वतन्त्र चुनाव की अन्तिम परिणति नारी की स्वीकृति या अस्वीकृति के निर्णयपर ही प्रायः अधिक निर्भर है। वास्तविक विषय भोगमें भी सदा मनुष्य ही अधिक क्रियाशील और असंशय रूपसे नियन्ता है। और सबसे अधिक उसकी क्रियाशीलता उसके कार्यमें अपने को अभिव्यक्त करती है। महत्व के कामोंमें भी जिन्हें नर और नारी मिलकर करते हैं, प्रायः, किन्तु हमेशा नहीं, नर और नारी की क्रियाशीलतामें एक भारी विभेद नजर आता है, यदि हम तुलना करके देखें कि नर आनेवाले कार्य के प्रति पहलेसे ही सतर्क रहता है और उसका कुछ प्रयोजन भी होता है पर उसके मुकाबलेमें बहुत सी स्त्रियां जो काम करती हैं वह प्रायः निष्प्रयोजन होता है।

तो भी इस क्रियाशीलतामें भी निर्णय इस बातसे होता है कि यह क्रियाशीलता बाह्य बृहत्तर संसारकी तरफ प्रवृत्ति रखती है या निजी आभ्यन्तर जीवनकी तरफ। पुरुष जिन चीज़ोंसे घिरा हुआ है वे उसके अपने अन्तरके व्यक्तिपर अधिक हावी हो जाती हैं। वह उनपर विजय पाना, उन्हें अपने कार्योंसे एक विशेष रूपमें ढालना और उनपर शासन करना चाहता है। इसलिए उसकी प्रवृत्तिका जो लक्ष्य है और उसका जो सार है वह उसके काम और विचारके लिए निर्णायक है—न कि उनके द्वारा उद्बुद्ध की गयी अनुभूतियां। पुरुषके लिए संसार एक 'प्राप्य वस्तु' है जिसे वह अपने भीतर समा लेना चाहता है। इस बाह्य संसार की पृथक २ वस्तुएं भी, इसलिए, अपने वास्तविक तर्कसिद्ध सम्बन्धों से परस्पर जुड़ी हुई हैं। प्रेम पात्रके चुनावमें भी बाह्य भौतिक स्वरूप ही निर्णायक है। उदाहरणके तौर पर, पुरुष सुन्दर सुकोमल हाथों या सुन्दर बालों पर हठात् ही आसक्त हो सकता है। उसका संभोग भी अधिकतर संभोगके अंगों का आनंद लेनेके लिए होता है। और इसमें शक नहीं कि यही सबसे बड़ा कारण है कि साधारण विषय की उत्तेजना नरमें नारी से सर्वथा विभिन्न तरीकेसे होती है—वह अतिशीघ्र पैदा होती है और केवल कुछ निश्चित अंगों और क्रियाओं से सम्बन्ध रखती है। इससे यह बात भी कुछ हद तक स्पष्ट हो जाती है कि क्यों पुरुष प्रायः अपने लिए एक दूसरा प्रेम पात्र भी रखता है; अर्थात् उसे जो वस्तु एक प्रेमपात्रमें आकृष्ट करती है वह दूसरेमें नहीं होती या जो दूसरेमें आकृष्ट करती है वह पहलेमें नहीं होती।

बाह्य संसारमें पुरुषकी जो स्थिति है उसके अनुसार वैषयिक उत्तेजनको उच्च बनानेकी योग्यता भी उसमें होती है। उसकी उत्तेजनाको हरेक वस्तु इतना अधिक केन्द्रित कर सकती है कि तमाम प्राप्य शक्तियां उसमें खिंच आती हैं।

स्त्रीकी प्रकृति उसके आयभ्न्तर अनुभवोंकी तरफ ही ज्यादातर प्रवृत्त है। अपने चारों ओरके संसारके बारेमें जो कुछ भी वह अनुभव करती है वह स्वयं पदार्थ नहीं, बल्कि उसके द्वारा उसमें उद्बोधित अनुभुतियां हैं। इस प्रकार ऐसा लगता है कि नारीमें पुरुषकी अपेक्षा वास्तवमें ही अधिक प्रबल अनुभूतियां होती हैं। सच तो यह है कि वह केवल अनुभूतियोंमें ही जीवित है। साथ ही अनुभूतियोंका हरेक प्रभाव स्वयं उससे भी परेतक फैल जाता है; वह अपने साथ दूसरी जुड़ी हुई तंत्रियोंको भी झंकृत कर देता है। नारीकी यह विशेषता इस बातपर प्रकाश डालती है कि क्यों वह भावनाओंकी दृष्टिसे अधिक उत्तेजित की जा सकती है। नारीका यह गुण बहुत सी ऐसी प्रतिक्रियाओंको भी स्पष्ट कर देता है जो शरीरविज्ञानकी दृष्टिसे समझमें नहीं आतीं क्यों कि वे अनुभूतियोंपर निहित है; वह उसकी बहुत सी किसी क्षण विशेष की मुद्राओंसे उत्पन्न उत्तेजनात्मक क्रियाओंकी व्याख्या करता और जिसे मनुष्य निहायत सादगी से चंचलता कह कर उड़ा देते है उसकी भी व्याख्या करता है। स्त्री की क्रियाएं, यदि

उनका अभिप्राय ' बुद्धियुक्त ' इरादोंसे हो, किसी बाह्य वस्तु की तरफ कम प्रवृत्ति रखती हैं; उनका उद्देश्य तो होता है सुखकी अनुभूतिको ज़ोरसे पकड़ लेना।

उसके रति जीवनमें यह विशेषतः साफ़ दीख पड़ता है। साधारणतया कहा जाय तो एक स्त्री अपनी अनुभूतियों के अनुसार एक खास ' समग्र पुरुष ' के प्रति ही आसक्त होती है उसकी किसी खास वस्तु या बारीकी के प्रति नहीं। उसकी वैषयिक प्रवृत्ति केवल किसी निश्चित अंग, निश्चित हावभाव या निश्चित मुद्रा के लिए ही नहीं होती। उसकी कामना समग्र शरीरके लिए होती है क्योंकि वह स्वयं समग्र शरीरमें काम की उत्तेजना अनुभव करती है। उसकी कामोत्तेजना अधिक सुदीर्घ कालव्यापिनी होती है।

यह बात बार-बार देखी जा रही है कि विषयेच्छा स्त्रीके समग्र शरीर-मन को भर देती है। यह सत्य है और केवल विषयेच्छा ही नहीं उसकी समस्त अनुभूतियां उसे पूर्णतः व्याप्त करती हैं। हरेक भावना के प्रति वह पूर्णतः आत्मसमर्पण कर देती है। इस आत्मसमर्पणसे उसकी मातृत्वकी विशेष योग्यताएं, दूसरोंके मानसिक जीवनके अन्दर गम्भीर स्फुरणात्मक अन्तर्दृष्टिमें पुरुषोंको भी मात कर देनेवाली योग्यताएं (उदाहरणार्थ उसका मानव समाजका स्वभावजन्य ज्ञान और क्रियात्मक प्रश्नोंमें प्रायः चमत्कारिक रूपसे खरे उतरनेवाले निश्चय) उत्पन्न होती हैं। परन्तु इससे ही चेतनामें खलल भी पड़ जाता है और भावनाओंसे पैदा होनेवाली रुग्ण अवस्थाएं भी पैदा हो जाती हैं।

सबसे अन्तमें, शायद उससे भी आगे, नारीकी प्रवृत्तिकी जिस खास विशेषताका, जिसका अभी जिक्र किया गया है, स्थान है वह है उसका पुरुषके द्वारा आक्रान्त और क्षत होना। नारीकी तमाम लैंगिक प्रक्रियाओंमें एक क्षत ज़रूर पाया जाता है— मासिक धर्म, डिम्भका पतन, प्रथम मैथुन, डिम्भका गर्भधारण, और सन्तान प्रजनन इन सबमें ही स्त्री क्षत होती है। सम्भव है इसी कारण से लगता है कि नारी शारीरिक प्रक्रियाओंमें अपनी रक्षा अधिक करना चाहती है; किन्तु दूसरी तरफ उसके शारीरिक कार्योंके डांवाडोल असमतुलनके कारण भी जिनका अनेक वार वर्णन किया जा चुका है, यह रक्षाकी प्रवृत्ति पैदा होती है।

यह विचारपद्धति, जिससे नर और नारीकी केवल आधारभूत विशेषताओंको-यह कहने की आवश्यकता नहीं कि मातृत्वकी भावना स्त्रियोंमें होती है-टिपिकल मानसिक लैंगिक विशेषता कहा जाता है, किन्तु बादकी घटनाओं से उत्पन्न हरेक चीज की व्याख्या की जाती है, इन लिंगों का कोई मूल्य और तारतम्य नहीं निर्धारित करती। साथ ही इस विचारका सम्बन्ध व्यक्तिगत विशेषताओंके समस्त क्षेत्रसे है जो इन आधारभूत विशेषताओंसे उत्पन्न होती हैं। यदि कोई व्यक्ति नर और नारीकी इन आधारभूत विशेषताओंको नहीं जानता हो तो यह कोई बड़ी बात नहीं कि वह विवाहके लिये अयोग्य प्रतीत हो। पर यह ' कमी ' का प्रश्न नहीं, केवल भेदका प्रश्न है।

कुछ अत्यन्त संक्षिप्त और साधारण उदाहरण यहां दिये जा सकते हैं। ये उदाहरण मैं अपने निजके अनुभवोंमें से दे रहा हूं। एक युवतीने एकवार रोते हुए मुझसे शिकायत की कि उसका पति उसे अब प्यार नहीं करता क्योंकि अब वह एक पुस्तकालयका सदस्य बन गया है और वहां हर रोज़ घण्टा-दो घण्टा पढ़ता है; और सगाई या हनीमूनके दिनोंमें वह कभी भी ऐसा नहीं करता था। वह अनजान भोली स्त्री यह नहीं जानती थी कि एक पुरुषका प्रेम उसे केवल थोड़े समय तक ही पूर्णतया विभोर रख सकता है। इसी तरह एक नव जवान भी मेरे पास आया। वह अपनी प्रेयसीके सच्चे प्रेममें सन्देह करने लगा था क्योंकि उसकी अपने प्रियके द्वारा प्यार और दुलार पानेकी आसक्तिमें बहुत अन्तर आ गया था। वह अपनी प्रेयसी की इस काम वासनाके सहज परिवर्तनको चंचलता समझता है क्योंकि वह उसकी शारीरिक क्रियाओंके उतार चढ़ावका परस्पर सम्बन्ध नहीं जानता। एक और परिणय प्रार्थी है जो अपनी भावी पत्नीमें अपने वैज्ञानिक कार्योंका एक संगी पाना चाहता है और उसे इस बातका भय है कि उसकी प्रेयसी जिसे वह अन्य सब दृष्टियोंसे प्रेम करता है इस संगीपन के लिए मानसिक दृष्टिसे उपयुक्त नहीं क्योंकि बुद्धिमती होते हुए भी वह उसकी निरन्तर चेष्टाओंके बावजूद उसकी सैद्धान्तिक गवेषणाओंको समझ नहीं पाती। मैंने यह बात उस पर स्पष्ट कर दी है कि एक युवती पुरुषके लिए दूसरे क्षेत्रमें एक अत्यन्त मूल्यवान सहयोगी साबित हो सकती है किन्तु उसकी गवेषणाओंका सैद्धान्तिक हिस्सा उस के विशुद्ध स्त्रैण मनसे परे की वस्तु है। एक और स्त्री है जो विवाहित जीवन के अनेक वर्ष बिना चुकनेपर भी इस बात का उपाय नहीं ढूंढ सकी कि उसका पति मैथुन के बाद तुरन्त सो जाता है जब कि वह और भी कुछ देरतक उससे प्रेमालाप करती रहना चाहती है। उस विवाहित पति पत्नीको मैंने समझाया कि पतिको अपनी पत्नीकी देरसे चली आरही प्रेमालाप की आकांक्षा का कुछ ख्याल करना चाहिए पर पत्नी को भी अपने पति की वासनाके शीघ्र शान्त हो जानेकी आदत को रोकना नहीं चाहिए।

बुद्धि ही मनुष्य को मनुष्य बनाती है। बुद्धिका उपयोग किये बिना किये गये विवाह और जानवरों के परस्पर साथ रहनेमें कोई अन्तर नहीं। किन्तु बुद्धि के पीछे और भी अधिक महत्वपूर्ण शक्तियां हैं। बुद्धि के प्रयोग में कमियों का होना, जो लोगों को विवाहके लिए उस के अनुपातसे ही अयोग्य बनाता है, विवाह की योग्यता की दूसरी मानसिक बाधाओंकी अपेक्षा आसानीसे दूर किया जा सकता है। सबसे बढ़कर, अनुभुतियों की मात्रासे अधिक प्रबलता या निर्बलता, और आम तौर पर स्नायवीय दुर्बलता व हिस्टीरिया लोगोंको विवाहके अयोग्य बनाते हैं। किन्तु आधुनिक मानसचिकित्सा विज्ञानने इस उपचेतन मानस के क्षेत्रमें भी चिकित्सा का मार्ग ढूंढ लिया है। किन्तु सर्वोत्तम चिकित्सक तो प्रेम है। प्रेमका आकर्षण न केवल शारीरिक और मानसिक दोषोंपर, बल्कि अनुभूति के विकास की कमज़ोरियों पर भी विजय पा लेता है। प्रम की अनुभूतियों को अनुकूल बनाना न केवल विवाह को थामे रखनेका एक स्तम्भ है, बल्कि स्नायवीय रोगों की चिकित्साका एक उपाय भी है। यदि इस दिशामें अपनेको अनुकूल बनाने की गम्भीर इच्छा और आवश्यक समझदारी व अनिवार्य मनोवैज्ञानिक पूर्वज्ञान हो तो बहुतसे अपेक्षाकृत विवाह के लिए अयोग्य व्यक्ति विवाह के पूर्ण योग्य बन सकते हैं। उत्तेजना की तमाम शक्तियां, चेतन इच्छा शक्तिसे लेकर अचेतन सहज प्रवृत्ति तक सबकी सब मिल कर पूर्ण व्यक्तिका निर्माण करती हैं। कुछ हदतक वे जन्म परम्परासे आती हैं, कुछ अंशमें विकाससे निर्मित होती हैं और कुछ अंशमें आत्म-ज्ञानसे सुधरती भी हैं। इस लिए जिस प्रकार एक गाड़ीमें जुते हुए अनेक घोड़े अलग-अलग दिशाओंमें गाड़ीको खींचना चाहते हैं फिर भी परिणाम यह होता है कि गाड़ी एक खास दिशामें खिंचती है उसी प्रकार प्रत्येक मनुष्यके विविध कार्य अन्य रूपमें एक ही दिशामें जुड़े हुए हैं। बहुत इधर उधर होते हुए भी एक अनुकूल दूरीसे एक खास पथको पकड़ा जा सकता है। इसे मानवकी जीवन दिशा कहा जाता है।

यह बात आसानीसे समझमें आ सकती है कि कमसे कम जहांतक इस चीजका ताल्लुक है एक पर्याप्त व्यापक समझौता पति और पत्नीमें हो जाना चाहिए ताकि भावनाओं, चरित्र, मानसिक क्षमता तथा अन्य बातोंमें होनेवाला अन्तर उन्हें एक दूसरेसे अलग करनेके बजाय एक दूसरेका पूरक बना सके। इस जीवन दिशा (Life Directrix)—इसका यह नाम वैयक्तिक मनोवैज्ञानिक ऐल्फ्रेड ऐडलरने रखा है जो बिल्कुल ठीक है—का अर्थ है आधारभूत स्थिति जो मनुष्य जीवनकी हरेक वस्तुमें फलतः विवाहमें भी, प्राप्त करता है। उनकी महान् विषमता जो कठिनाइयां वैवाहिक जीवनके लिए पैदा कर सकती है, उनको आसानीसे समझा जा सकता है यदि लोग, मसलन यह सोचें कि पुरुष को अपने जीवन की सार्थकता सार्वजनिक प्रतिष्ठा, बाह्य सन्मान, सामाजिक सम्बन्ध, और बड़ी तनख्वाहोंमें दीखती है, किन्तु उसकी पत्नी अपने जीवन का आदर्श एक शान्तिपूर्ण घर, आन्तरिक सन्तोष, अपने और अपने स्वामी के एकान्त और सन्ततियोंके पालनमें ढूंढती है। यह बिल्कुल स्पष्ट है कि इतनी भिन्न जीवन दिशाओं पर चलने वाले लोग एक समता पूर्ण विवाह पर नहीं पहुंच सकते। वे अपेक्षाकृत एक दूसरेके लिए विवाहके अयोग्य हैं। अधिक उच्च आनन्द की तलाश, और केवल एक उच्च ' उद्देश्य ' की खोजमें मैं मानवीय प्रेम का विकास होता देखता हूं और मनोवैज्ञानिक दृष्टि से बहु विवाह और स्त्री-पुरुषकी टिपिकल ईर्ष्याके कारण उत्पन्न अवैध प्रेम-सम्बन्धोंके गुलत रास्तोंमें मैंने केवल ऊंचा जानेकी भावनाको ही पाया है। इस लिए विवाहके लिए पूर्ण अर्थोंमें वही योग्य हैं जिनकी भावनाएं प्रेमके चुनावकी एकताका यह मार्ग पा लेती हैं और जिन्होंने अपनी एकान्त वैषयिक भावनाको दूसरी मानवीय भावनाओंमें अन्तर्हित कर दिया है। किन्तु अपने लक्ष्योंतक पहुंचनेके लिए उन्हें अपने संगीके रूपमें उसीको चुनाना चाहिए जिसकी जीवन दिशा मुख्य चीजोंमें उनकी दिशाके ठीक समानान्तर हो।

(पृष्ठ ३ का शेषांश)

घटाते चले जायेंगे, अपनी कमजोरी छिपाते रहेंगे, उसका कृत्रिम समर्थन करते रहेंगे, अनेक अपवाद अस्तित्वमें लायेंगे, जिनसे सुधरने के बदले दिनोंदिन नीचे गिरते जायेंगे। सत्य और अहिंसा बाह्य वस्तु नहीं हैं। वह हमारे जीवन का अंग, अंतःकरण की वृत्ति का केन्द्र बनना चाहिये। इतनी स्वाभाविक हो जानी चाहिये कि हमारी सारी करनी उसीसे प्रेरित हो।

इससे घबराने की जरूरत नहीं कि जगतमें सद्गुण अल्प परिणाममें पाये जाते हैं। हम अपूर्ण हैं। हमें पूर्ण की ओर जाना है। प्रयत्न करते रहनेमें भी आनन्द है। कल्याण के मार्गमें कुछ व्यावहारिक हानि भी होती है, कष्ट भी सहन करना पड़ता है, परंतु परमार्थ के मार्गसे ही हमारा और जगत का विकास होगा। यदि हम यह विचारधारा छोड़ देंगे तो फिर हम भौतिकता की ओर ही झुकेंगे और मनुष्यमें जो विशेषता है वह भूल जानी होगी। सत्य और अहिंसा के आदर्श खड़े होनेके कारण बहुत गहरे हैं। संतोंने, सत्य ही ईश्वर है—Truth is God, प्रेम ही ईश्वर है—Love is God, नहि सत्यात् परो धर्मः; अहिंसा परमो धर्मः आदि सिद्धांत बतलाये हैं वे जगतके कल्याणके ही मार्ग हैं। उनमें श्रद्धा शिथिल करनेसे हानि ही होगी।

(पृष्ठ १४ का शेषांश)

देंगी तो जेवर भी धीरे २ कम होता जायगा और कुछ समय बाद घूंघट भी उठ जायगा फिर उन्हें शिक्षा मिलनी चाहिये और शिक्षित माताओं व बहनोंसे देश और जातिके कल्याणके लिये अपनी भावी सन्तानको सुशिक्षा देते रहनेके लिये भी प्रेरणा मिलती रहनी चाहिये।

छोटी बहनों व लड़कियोंको घाघरे व लूगड़े न पहनने देनेसे उनका परदा तो बड़ी आसानीसे चला जायगा। आशा है इस ओर भी पूरी तरह ध्यान दिया जायगा।

मैं आप लोगोंसे एक बार फिर अनुरोध करता हूं कि बिना इसके उठाये हमारा कल्याण कदापि नहीं हो सकता, अत एव इसके लिये शीघ्र ही यथा शक्ति ईमानदारीसे प्रयत्न शुरू कर देना चाहिये। [गवर्नमैंट कॉलेज, अजमेर]

★ रोमांचक काकेशस ★

हिटलर की पागलपन भरी कुरानमें यह भविष्यवाणी मिलेगी : यदि यूराल और कॉकेशस अपनी कच्चे माल की अगणित संपत्तिके साथ राष्ट्रीय समाजवादी नेतृत्वके पीछे चलने वाले जर्मनीके कब्जेमें आ जांय, तो जर्मनी फल-फूल कर मस्त हो जायगा।

कॉकेशस—पौराणिक कथाओंका प्रदेश—स्टालिन और पुराणकालीन आर्यजाति की जन्मभूमि प्रेमेथिअस की दारुण यंत्रणाओं का स्थान और गरूड तथा साहसिकोंका निवासस्थान है, लेकिन इन सबसे भी ज्यादा महत्वपूर्ण तेलका भंडार है।

पन्द्रहवीं शताब्दी का यात्री, जोसॅफाट बार्बरो यह नहीं जानता था कि तानाशाही युद्धोंको चलानेके लिए तेल एक अत्यंत उपयोगी चीज बन जायगी। ऐज़रबैज़न-एडरबेहेगन-आगका बगीचा—जहां पर उसने असह्य दुर्गंध युक्त काला तेल उगलने वाला पर्वत देखा था, गुलाब और बुलबुलों से आबाद नहीं था लेकिन तेल लालच और ईर्ष्याका कारण, बना इससे भी पहले कॉकेशस कई स्वामी देख चुका था। रूस और एशियाके विस्तृत मैदानों को निकटपूर्वीय बहुफलदायी और परस्पर संबद्ध साम्राज्योंसे विभक्त करने वाले, उसके ऊंचे अवरोधक पर्वतों को अगणित जातियां पार कर चुकी थीं।

इतिहास के ज्वार की लहरें कॉकेशस परसे गुजर जानेके बाद, समूचे राष्ट्रोंका—भाषाओं, रूढ़ियों, और देवी देवताओंका तो जिक्र ही क्या—हास्यास्पद ध्वंस उसकी चोटियोंमें छिपा रह गया। पुरातत्व और भाषाविज्ञानके अनेक अनुसंधान भी तनिक निश्चितताके साथ यह नहीं बतला सके कि कल्पना का क्षेत्र कहां खत्म होता है और तथ्य कहां शुरू होता है।

इनमें भाषा और धर्मसंबंधी कालगणनाकी गलतियोंकी भरमार है। जार्जियामें प्राचीनकालमें स्त्रियोंका प्रभुत्व प्रमाणित किया गया है और उसका आधार यह तथ्य है कि माताके लिए ज्योर्जियन भाषामें 'डेडा' शब्द है, और पिताके लिये 'मामा'। अनेक शताब्दियों पूर्व ज्योर्जियाकी खेवसर्स नामक एक जातिने ईसाई धर्ममें दीक्षित होनेके लिये बप्तिस्मा लिया था, और अपने चंद्र-देवता 'अर्मोझी' को सेंट ज्योर्जके रूपमें बदल दिया था। अपनी प्रार्थनाओंमें, वे कहते हैं, "हे ईश्वर, तू पवित्र ज्योर्ज है, तू हमारी मदद कर।" वे या तो अपने धर्मसंस्थापकके बारमें बिलकुल अनभिज्ञ हैं, या अपनी पूजनविधिमें उसे सिर्फ गौण स्थान देते हैं।

सुनहरी ऊनकी खोजमें निकला हुआ जेसन अपने साथ जो सूत ले गया था, वह रिकार्ड किए गए यात्रियोंका संभवतः सबसे ज्यादा लंबा सूत है। वह मानता था कि कोलचिस—काला सागरका कॉकेशस पर्वत की तरफ का तट—में सुनहरी ऊन पैदा होती है। उसे वास्तवमें धोखा हो गया था क्यों कि पर्वतीय जलप्रवाह और झरनों के बहावमें आनेवाली सुवर्ण राशिसे उनकी चमड़ी कुछ कुछ रंगी हुई थी।

कॉकेशस के पहाड़ी लोगों का कहना है कि नूह की नौका अबतक अॅराराट पर्वत की उपत्यका पर पड़ी है। वह एक पत्थर की नौका है जो सच्चे धार्मिक लोगोंके लिये चमत्कार के समान सुरक्षित है जब कि परमात्मा उस समय तब भी यहूदियों का पक्षपाती था।

पोम्पी रोमन सैनिकोंको कॉकेशियाके पार ले जानेमें असफल रहा। कई लोगोंका कहना है कि उन्होंने उसका नाम व उसके सैन्यदलोंकी संख्या पर्वतोंके ग्रेनाइट पत्थरोंपर खुदी हुई देखी है। अभिमानी रोमन वहांकी शांतिसे स्तब्धसे रह गये और घाटियोंमें उन पर हंसने वाले कॉकेशियनोंको गुलाम बनाकर रोम नहीं ले जाया गया। उन खोए हुए सैन्यदलोंके वंशज लोग जो भाषा बोलते हैं, उसमें आज भी जब तब लेटिन शब्द पहचाने जा सकते हैं।

मैले-कुचैले बदन वाले, कामुक और पेलेस्टाइनकी लूटके मालसे परिपूर्ण पराजित और छितराये हुए धर्मयुद्धके सिपाहियोंने, पूर्व एंग्लिया तथा प्रोवेन्सकी अपनी पतिव्रता स्त्रियोंके पास जानेसे इनकार किया। ऐसा प्रतीत होता है उन्होंने पहाड़ोंकी सर्केशियन कुमारिओंको ही अधिक पसंद कर लिया था, जिनके बारेमें ऐतिहासिक कहते हैं कि उनकी आंखें अंगूर की लता पर जमा हुए रजकणोंकी भांति नील लोहित रंगकी थीं। आज भी अनेक पहाड़ी लोग धर्मयुद्ध लड़नेवाले सिपाहीके बख्तर तथा चौडी तलवारसे सुसज्जित रहते हैं।

उदाहरणतः 'इंगुश' जाति का नाम अंग्रेजीसे इतना मिलता-जुलता है कि हमें यह कल्पना होती है कि वह 'इंग्लिश' ही है। तो भी उनमेंसे किसीने ब्रिटिश रईसोंके सगोत्र होनेका दावा नहीं किया है, यद्यपि उनमेंसे हरेक व्यक्ति अपने आपको अभिमानके साथ राजा कहता है।

★ डेविड ट्रटाफ़ ★

कॉकेशसमें एक जर्मन गांव है। जिससे भाषासंबंधी गड़बड़ी और भी बढ़ जाती है। स्वच्छता, मकानोंकी रचना, तथा भाषा, सबमें वह जर्मन है। वहांके निवासी जिनकी संख्या लगभग हजार है, सत्रहवीं शताब्दीके तीस-वर्षीय धार्मिक युद्धके शरणार्थी थे। मौका आ पड़नेपर क्या स्टेलिनको इस बातका विश्वास है कि हिटलर उन्हें अपने पीडित बन्धु नहीं कहेगा?

बेबिलोनकी अन्तिम संतानें, अपनी विषाद भरी आंखोंके साथ, और उससे भी अधिक विषादमय गीतोंके साथ आर्मेनियाकी पुष्पवासित घाटियोंमें रहती हैं। यहूदी लोग जिस प्रकार 'ज़िओन' के गीत गाते हैं, इसी प्रकार ये लोग "निनेवेह" की विगत महिमा पर शोक गीत आलापते हैं। उनके 'हिट्टिटि' वंशके अंतिम अवशेष उनकी नासाकृतिमें पाये जाते हैं।

अरब, पर्शियन और चंगेजखांके वंशज तथा उन निकम्मे कज्ज़ाकोंके पौत्र-प्रपौत्र जो किसी समय मास्कोके ज़ारोंके लिये लड़े थे—सबके सब वहां पाये जाते हैं। कज्ज़ाकों की ये सन्तानें पहाड़ियोंके किन्नरोंकी तरह रहती है, अपनी बैसाखियोंको वे टट्टुओं से बांधी हुई रखती हैं। उनमें से कुछ लोग ऐसे हैं जो ज़ारशाहीके नीच सिपाहियोंके अत्याचारों के कारण कॉकेशसकी समृद्ध दलदल भूमि पर भाग आये, जहां न तो तार्तार खानों के लंबे तीर पहुंच सकते थे, और न ही कीव के श्वेत राजकुमार वहां उनसे बदला ले सकते थे।

साम्राज्योंकी प्रतिस्पर्धामें, ज्योर्जिया और अर्मेनियाके कॉकेशियन राज्य—असंख्य छोटे मोटे राज्य और खान लोगोंके प्रदेशोंका तो जिक्र ही क्या—पार्शियन तथा तुर्कों के साथ षडयंत्रोंके द्वारा छिन्नभिन्न होगये और परस्परनाश करने वाली वंशों की लड़ाइयोंमें उनकी संख्या बहुत कम हो गयी। बारहवीं शताब्दीकी 'ज्योर्जिया की एलिजाबेथ—रानी 'तमारा' की वीरता जल्दी ही विस्मृत हो चुकी थी। केवल उसके दरबारी कवि रुस्तवेली के गीत, उमरखय्याम के गीतों के ही साथ पूर्व के बाज़ारोंमें सुदूर देहली तक सुनाई देते थे।

रूसियों का प्रवेश

तुर्क और पार्शियन लोगों के लिये कॉकेशस मानवशक्ति का एक विपुल भंडार था। तुर्कों के सुलतान अपने महाप्रतापी सरदारों की इन्हीं पहाड़ी लोगोंमेंसे भर्ती करते थे। पर्शिया के शाह केवल सोना और मूल्यवान पत्थरों का ही कर वसूल नहीं करते थे, बल्कि अपने ज़नानखानों के लिये सर्केशियन कुमारिकाओंको भी मांगते थे। नीली आंखों वाले कॉकेशियन अपने मालिकों के स्थानापन्न जनरल और वायसराय एवं मोरोक्को, मिश्र तथा अरब के गवर्नर बने।

लेकिन ये रूसी ही थे जिन्होंने अंतमें कॉकेशसपर नेतृत्व स्थापित किया। रूसने महसूस किया कि शान्ति—जैसा कि वह पहाड़ी लोगोंके साथ अपने युद्धके विषयमें कहता है—आसान काम नहीं था। सन् १८०३ में कॉकेशस तथा ज्योर्जियाको, एक रूसी प्रान्तका दर्जा दिया गया; इस बातका सारा श्रेय एक ज्योर्जियन रईसके पौत्र पॉल त्जिजिअनोवको है, जिसे देशनिकाला दिया गया था। निर्वासनसे वह कॉकेशस और जार्जियाके लिए अपने साथ इस अधिकारको लेकर लौटा। मि. डब्ल्यू. ई. डी. एलन अपने "ज्योर्जियन प्रजाका इतिहासमें" में कहते हैं कि "सरदारों और खानोंको मार भगाकर त्जिजिअनोवने जनताका भला ही किया"।

कॉकेशसकी शांतिने न केवल कॉकेशसको रूसके पास ला दिया, लेकिन रूस भी इससे कॉकेशसके निकट आगया। उसके सर्वश्रेष्ठ कवि पुश्किन तथा लर्मोन्टोव, उसके कलाकार, और लेखकगण दक्षिणकी ओर निकल पड़े, और उनके साथ बीमारों तथा वातरोगोंसे पीड़ित लोगोंकी भी बड़ी तादाद थी जिसने किस्लावोडस्कके स्वास्थ्य प्रद गंधकके झरनोंमें शान्ति पायी।

कबीलेवालोंको पराजित करनेमें तथा उन्हें दुर्गम पहाड़ियोंमें भगानेमें एक शताब्दीसे भी ज्यादा समय लगा। सन् १८६४ तक सब किले तोड़ दिये गए। कबीलेवालोंका कत्ले आम किया गया या उन्हें निर्वासित कर दिया गया और सर्वत्र कज्ज़ाक सैनिकोंके दल छा गए। काकेशियन लोगोंमेंसे कमसे कम आरमीनियन लोगोंके पास ज़ारको उसके संरक्षणके लिए धन्यवाद देनेका एक बहुत बड़ा कारण है कि उसके संरक्षणने उनकी फसलोंको सीमापर हमला करनेवाले तुर्कोंके हाथ पड़नेसे बचाया।

तेल की खोज, या यों कहा जाय कि उसकी व्यावसायिक संभावनाओंके कारण—क्यों कि बहुत पुराने कालसे तेल या तो जलानेके लिये या ऊटों को खुजली इत्यादि रोगोंसे बचानेके लिये काममें लाया जाता था—कॉकेशसमें राज्यके द्वारा विशेष स्वीकृति पाने वाले विदेशी व्यापारी लोग जाते थे। बाकू की इस दृष्टिसे बहुत तरक्की हुई, और उसका महत्व बढ़ गया। इसके अलावा, जलवायु तथा प्राकृतिक दृश्योंके कारण बढ़ती हुई संख्यामें यात्री लोग इस "समुद्रतटवर्ती स्विटजरलेंड" में गये।

ज़ारने कॉकेशसकी राष्ट्रीयता को गंभीरतासे न लेकर गलती की। खासकर उनकी भाषाओं पर दबाव डालने का कार्य तो अत्यंत मूर्खता पूर्ण था। रूसियोंके लिये, कॉकेशस एक तरहका आयरलैंड बन गया। वे लोग कॉकेशसके लोगों की बहादुरी, उनकी रंगीन पोशाक, लेस्गियन नृत्य और तेज शराब को बहुत चाहते थे।

सन् १९१७ में जब ज़ारशाहीका खात्मा हुआ, और केरेन्स्कीने रूसकी प्रजातंत्रिक क्रांतिको बातोंमें उड़ा दिया, तब कॉकेशसके राष्ट्रवादियोंके दिलमें आशा बंधी। रातोंरात कॉकेशसमें गण तंत्र पैदा हो गए, लेकिन इसका नतीजा सिर्फ परस्पर लड़ना-झगड़ना तथा दोषारोपण करना ही निकला।

(शेष पृष्ठ २४ के कालम १ पर)

भारतीय नारीत्वका आदर्श

श्री. एम. एन. राय

प्राचीन भारतीय आदर्शोंके संरक्षक लोग स्त्री और पुरुषके बीच समानताकी बात तकको सहन नहीं कर सकते। लेकिन इन कल्पित आदर्शोंके स्तुतिवचनोंके बावजूद भी पुरुष जातिके द्वारा शासित मध्ययुगीन समाज अतीत भर रहा गया है। वह अब खंडहर हो चुका है जिसकी सफ़ाई ही होना बाकी है। समयके थपेडों और वर्तमान सभ्यताकी टक्करोंसे सामाजिक बुनियाद खोखली हो जानेसे, प्राचीन आदर्शोंने अपनी सारी शक्ति खो दी है। अगर उसका बचाव करने वाले लोग प्राचीन आदर्शोंको नुकसान पहुंचाने वाले आम प्रतिक्रियावादियोंके पार्टको अदा नहीं करना चाहते तो उनकी रक्षाके लिए वे जो हेतु पेश करेंगे, वह हेतु नहीं, बल्कि हेत्वाभास ही होंगे।

हिन्दू समाजमें स्त्रियोंके उच्च स्थानके बारेमें अनेक कल्पित कथाएं रची गई हैं। इन कथाओंसे महाग्रंथ भरे पड़े हैं। यहां तक कि आज भी इन कल्पित कथाओंको केन्द्रित करके गीतिकाव्य बनाये जाते हैं। कहा जाता है कि हिन्दू धर्म स्त्रियोंकी पूर्ण समानताको स्वीकार करता है। परिवारोंकी विविधता के द्वारा उन्हें देवियोंका स्थान दिया गया है। और इस दैवी स्थानको पानेके बाद उन्हें सांसारिक अधिकारों व विशेषाधिकारोंकी लालसा क्यों होनी चाहिए? हिन्दू समाजमें ऐसी क्षणभंगुर और अत एव उपेक्षणीय चीजोंका स्त्रियोंकी पूर्ण समानतामें समावेश नहीं किया जाता। उनके जीवनकी परिसमाप्ति पतिके साथ एक रहस्यमय और अविच्छेद्य एकता में है। वे किसी वैयक्तिक, सामाजिक, या आध्यात्मिक अस्तित्व की इच्छा की स्वार्थ परतासे परे हैं। प्रेम उनके लिये वासना नहीं जो हीन होकर दैहिक सम्बन्ध बन गयी हो। यह समर्पण का एक आध्यात्मिक आवेग है, और क्योंकि अपने आपको भेंट करना सर्वोत्तम उपहार है अतः वे अपनेको अपने प्रियतम के चरणोंमें रख देती हैं, चाहे वह उसी रूपमें उस उपहारका प्रतिदान करे या न करे। वे प्रेम पानेकी प्रत्याशाके बगैर ही प्रेम करती हैं और बदलेमें कुछ मांगे बिना ही देती हैं। उन्हें देनेमें व प्रेम करने में आनंद प्राप्त होता है।

हिन्दू स्त्री निःस्वार्थता की प्रतिमूर्ति है। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं कि पुरुष उसके (स्त्रीके) सद्गुणों की प्रशंसा करें और उसे गृहस्थ मंदिरमें देवता की तरह प्रतिष्ठित करें, जहां वह अनन्य विशेषाधिकारों का-जिसमें अवांछित सन्मानों को पैदा करना भी शामिल है-उपभोग करती है। आध्यात्मिक एकात्मता की इस कल्पनासे चल-संपत्ति की गुलामी की उत्पीड़क बेड़ियोंको आकर्षक बनाया जाता है।

फिर भी ये सभी कल्पित कथाएं, मिथ्या किंवदंतियां एवं गीतिकाव्य किसी सत्यशोधकको इस तथ्यसे बेखबर नहीं रख सकते कि मनुस्मृतिके विधानने स्त्रियोंको हरेक प्रकारकी स्वतंत्रतासे वंचित रक्खा है। जीवन पर्यंत उसे हमेशा ही किसी न किसी पुरुषके संरक्षणमें रहना पड़ता है। संरक्षण, गुलामीका ही एक कम अभद्र नाम है। वस्तुतः देखा जाय तो मनुने स्त्रीके जीवनकालको निर्धारित कर दिया है, जिसमें उसे क्रमशः पिता, पति और पुत्रके 'आधीन' रहना पडता है, और मनुस्मृतिने बार बार इस बात पर बल दिया है कि स्त्री कभी भी स्वाधीन नहीं हो सकती। मनुस्मृतिके बारेमें कहा गया है कि वह उच्चतम और श्रेष्ठ सामाजिक आदर्शोंका खजाना है। आज भी हमारी अगणित नवीन स्त्रियाँ उन बनावटी जवाहिरोंसे मोहित होती हैं। लेकिन कुछ ऐसी भी स्त्रियां हैं जो अपनी स्थिति की वास्तविकाता को समझने लगी है। अभी उस दिन, उनमेंसे एकने बड़े प्रेमसे पाले हुए भ्रमके बुलबुलेको तोड़ दिया, और हिन्दूसमाज में स्त्रियोंके उच्च स्थानके बारेमें असत्यका नग्न स्वरूप बतलाया।

"शताब्दियोंसे हिन्दुस्तानमें स्त्रियोंके जीवन-नाटकका कठपुतलियोंके रंग मंचपर, जिसमें निःसार, विफल, और दुःखी पात्रों की भीड़ है, अभिनय होता आरहा है। और यह एक ऐसा नाटक है जिसने उच्चतम धार्मिक भावनाओं को पनपाया है। नियत विधि-विधानोंके सामने उनका इस प्रकार मूकभावसे झुक जाना स्त्रीत्वके उच्चतम सद्गुणों के प्रगटीकरण का पर्याय बन गया, और यह यश की वस्तु मान ली गई। अन्याय और अत्याचार को जितना अधिक वह बिना आपत्ति किये सहती गई, और जितना ही अधिक उसने अपना वैयक्तिक जीवन आदिम जमींदारों की जातियोंके आदेशों के अधीन कर दिया, वह उतनी ही अधिक स्त्री-गुणसंपन्न, तथा गुणवान समझी गई। शताब्दियों तक स्त्रीको एक जीवित माल असबाब के रूपमें समझा जाता था, जिसे कि किसी पुरुष के आधीन रहना चाहिए, इस लिये उसका, जितना संभव हो, जल्दीसे जल्दी विवाह कर दिया जाता था। और एक बार अधीन होने पर उसे आजीवन पुरुष के कब्जेमें रहना पड़ता था, खेल के साथी के रूपमें नहीं, और यहां तक कि खिलौनेके रूपमें भी नहीं, बल्कि सिर्फ कब्जे की वस्तु की तरह ही। (नीलिमा देवी-हिंदुस्तान स्टांडर्डमें)

भारतीय रीतिरिवाज और भारतीय संस्कृतिके आदर्शोंके पवित्र संरक्षक लोग नयी पीढ़ीकी शिक्षित नारियोंमें पाश्चात्य प्रभावको फैलते हुए देखकर व्यग्र हो रहे हैं। वे न केवल इस मनोवृत्तिको शोचनीय ही बतलाते हैं, बल्कि भारतीय नारियोंके उच्च आदर्शोंको मटियामेट करनेवाली इस भ्रष्टतापर खुले आम प्रहार करते हैं। परंतु ऐसा करते हुए, वे अपने आप ही चिरकालसे पाले-पोसे हुए उन आदर्शोंके महत्वका रहस्योद्घाटन कर देते हैं।

प्राचीन भारतीय आदर्शोंके संरक्षक लोग स्त्री और पुरुषके बीच समानताकी बात तकको सहन नहीं कर सकते। लेकिन इन कल्पित आदर्शोंके स्तुतिवचनोंके बावजूद भी पुरुष जातिके द्वारा शासित मध्ययुगीन समाज अतीत भर रह गया है। वह अब खंडहर हो चुका है जिसकी सफ़ाई ही होना बाकी है। समय के थपेडों और वर्तमान सभ्यता की टक्करोंसे सामाजिक बुनियाद खोखली हो जाने से, प्राचीन आदर्शोंने अपनी सारी शक्ति खो दी है। अगर उसका बचाव करने वाले लोग प्राचीन आदर्शों को नुकसान पहुंचाने वाले आम प्रतिक्रिया वादियोंके पार्ट को अदा नहीं करना चाहते तो उनकी रक्षाके लिए वे जो हेतु पेश करेंगे, वह हेतु नहीं, बल्कि हेत्वाभास ही होंगे। तब भी गुत्थियां बढती ही जा रही हैं।

शिक्षित युवा नारियां, जिनकी संख्या तेजीसे बढ़ती जा रही है, उन कपोल कल्पित बातोंसे मोहित होने और "वर्तमान ऋषियों" के मिथ्यावादानुवादोंमें पकड़ाई देनेसे इन्कार करती हैं। वे बदलती हुई सामाजिक परिस्थितियोंमें जी रही हैं, और उसीके परिणाम स्वरूप नये आदर्शोंकी छूतसे वे बच नहीं सकतीं।

अभिशप्त पश्चिमसे आये हुए विचित्र विचारोंकी ओर स्त्रियां आकर्षित होने लगती हैं तो धार्मिक सिद्धान्तों पर खड़ी हुई सामाजिक व्यवस्थाके संरक्षक लोग स्वभावतः चौंक पडते हैं। समानता और स्वाधीनता चाहनेवाली स्त्रियोंकी धृष्टता भारतीय संस्कृतिके दिग्गज योद्धाओंको इस सचाईको प्रकट करनेके लिये बाधित करती है कि प्राचीन भारत वर्षके पुण्यात्मा नियम-विधाताओंने स्त्रियोंको कैसा स्थान दिया था। नवीन विचारोंको देखकर उनका धैर्य टूट जाता है। और जब वे उत्तेजित हो जाते हैं, स्त्रियोंको उनका असली स्थान बड़ी कठोरतासे बतलाते हैं। उदाहरणतः वर्तमान स्त्रियोंकी मांगोंका तिरादर करते हुए, डॉ० भगवानदासने एक बार हिन्दू विवाह और परिवारके सिद्धान्तकी व्याख्या की थी।

"हिन्दू-विवाह कोई 'पिकनिक' नहीं है, यह एक अनुशासन है, जिसका लोगोंको पालन करना चाहिए। स्त्रियां और पुरुष यदि विवाहकी पवित्रताको भूल जायें, और उसे महत्व न दें तो समाज टूट जायगा। हिन्दुस्तानमें समाजकी इकाई परिवार है, जब कि पश्चिममें व्यक्ति। निस्संदेह हमारी सामाजिक प्रणाली ही श्रेष्ठ है। भारतीय लोग व्यक्तिवादमें विश्वास नहीं करते। हमारा आदर्श मानव समाजवाद, परिवारवाद है।"

यह एक "वर्तमान ऋषि" द्वारा बतलाया गया नग्न सत्य है। स्त्री और पुरुषके बीचके संबंधकी इसमें स्पष्ट रूपसे व्याख्या की गई है। स्त्रीत्वका भारतीय आदर्श वास्तविकतावादी सिद्धान्तके रूपमें वर्णित किया गया है। और यह आदर्श स्पष्ट रूपसे विध्यात्मक है। नियम-पालन होना ही चाहिये, कुलपतियोंके समाज को शासन करनेके लिये जो कानून बनाये गए हैं, उनका पालन होना ही चाहिये, और यहां तक कि आज बीसवीं शताब्दी में भी। हमें कहा जाता है कि विवाह 'पिकनिक' नहीं है। इसका क्या मतलब हो सकता है? इसका यही मतलब है कि विवाह सहचार नहीं है। यह एक अविच्छेद्य बंधन है, जो स्त्रीकी हरेक स्वतंत्रता को छीन लेता है और उसके निजी अस्तित्वके अधिकार तक से इनकार करता है। विवाहित स्त्री मनुष्य नहीं है। उसे जो कुछ करना है वह सिर्फ कर्तव्य पालन है; किन्तु इच्छा से नहीं बल्कि कठोर अनुशासन में रह कर यह अनुशासन का सिद्धान्त, जो यहां तक कि विचार-स्वातंत्र्य का भी निषेध करता है, व्यक्ति को स्वयंचालित यंत्र के रूपमें परिणत कर देता है। यन्त्रचालित मनुष्योंसे बना हुआ समाज, जो विचार नहीं करता, बल्कि सिर्फ आज्ञाका पालन करता है, कारागार है। कानून केवल तभी श्रेष्ठ हो सकते हैं, जब कि जन-साधारण की अनुमतिसे उनकी रचना की गई हो। निःसन्देह सामाजिक आचरण और पारिवारिक संबंधोंमें अनुशासन होना चाहिए, लेकिन यह अनुशासन ऊपरसे थोपा नहीं जाना चाहिए। वह ऐच्छिक होना चाहिए, अन्यथा वह जुल्म ही है।

यदि सभी संबंधित व्यक्ति अनुशासन चाहें तब इस स्वेच्छाचारी सामाजिक व पारिवारिक संबंधोंके सिद्धान्त के लिए कुछ बहाना मिल सकता है। परंतु बात ऐसी नहीं है। यह युक्ति या सिद्धान्तका सवाल नहीं है। तथ्य यह है

(शेष पृष्ठ २० के कालम १ पर)

कृष्ण कुमारी

श्री सेठ गोविन्ददासजी मालपाणी
एम. एल. ए.

[एक ऐतिहासिक एकांकी नाटक]

[गताङ्क से]

तीसरा दृश्य

स्थान—रावल में पटरानी का महल

समय—प्रातःकाल

[महल एक कमरा है; प्रायः वैसा ही जैसा कि कृष्णकुमारी का था, किन्तु दीवालों और छत का रंग उस कमरेसे भिन्न है। इनपर गुलाबी तेल का रंग है और उसपर रंगबिरंगे बेल-बूटे। कालीन भी गुलाबी जमीन का है और उस पर विविध रंग की बेलें और बूटे हैं। कृष्णकुमारी का प्रवेश। उसकी वेशभूषा दूसरे दृश्य के सदृश ही है; इतना ही अंतर है कि कमरमें ज्वानसिंह की कटार खुसी हुई है।]

कृष्णकुमारी—(जोरसे) माँ ! माँ !

नेपथ्यसे—आई, बाई।

[पटरानी का प्रवेश। उसकी अवस्था लगभग चालीस वर्ष की है। वह गौर वर्ण की ऊँची पूरी और भरे हुए शरीर की सुन्दर स्त्री है। बैंगनी रंग का घाघरा, लाल रंग की कांचली और वसंती रंग की ओढ़नी धारण किये है। सब कपड़ों पर गोटा लगा हुआ है। रत्न-जटित आभूषणों से उसके अंग प्रत्यंग जगमगा रहे हैं।]

पटरानी—(निकट आ) खेल हो गया, बेटी ?

कृष्णकुमारी—हाँ, मा, अभी स्नान करके ही आ रही हूँ।

पटरानी—आज जल्दी हो गया खेल ?

कृष्णकुमारी—बहुत जल्दी तो नहीं, मां।

पटरानी—सब भाई बेटोंके यहाँ से बाइयाँ और बींदनियाँ, तेरी सब सहेलियाँ, आई थीं ?

कृष्णकुमारी—प्रायः सभी आई थीं, माँ।

पटरानी—(कृष्णकुमारी का मुख ध्यान से देखते हुए) और किस प्रकार नहाई है तू ? रँग गुलाल तक अच्छी तरह मुख से नहीं छूटे।

कृष्णकुमारी—ज्वान आ गये थे, मां, इसलिये जल्दी जल्दी नहाई।

पटरानी—अच्छा, इतने तड़के ? वह कहीं होली खेलने नहीं गया ?

कृष्णकुमारी—उन्हें मुझसे कुछ आवश्यक कार्य था, मां।

पटरानी—(कुछ आश्चर्यसे) उन्हें तुझसे आवश्यक काम था ?

कृष्णकुमारी—हां, मां, (कटारकी ओर संकेत कर) देखती नहीं हो, यह कटार ?

पटरानी—(कटारकी ओर देखकर) यह कटार तू क्यों लगाकर आयी है ?

कृष्णकुमारी—यह मेरी कटार नहीं है, मां।

पटरानी—तब ?

कृष्णकुमारी—यह ज्वानकी कटार है।

पटरानी—(आश्चर्यसे) ज्वानको तुझसे आवश्यक कार्य था, यह ज्वानकी कटार है, और इसे तू लगाकर आयी है, मेरी समझमें कुछ नहीं आया।

कृष्णकुमारी—(लंबी साँस लेकर) बैठ जाओ, माँ, तो सब हाल कहूँ। लंबी, बड़ी लंबी कहानी है।

[दोनों गद्दी पर बैठ जाती हैं। कुछ देर निस्तब्धता। पटरानी एकटक कृष्णकुमारी की ओर देखती है और कृष्णकुमारी कुछ देर सोचती है।]

कृष्णकुमारी—क्यों, माँ, पुरुषके चाहे जितने विवाह हों, पर स्त्री का तो एक ही विवाह हो सकता है न ?

पटरानी—इसमें भी कोई सन्देह है ?

कृष्णकुमारी—और पुरुष के विवाह के संबंधमें स्त्रियाँ चाहे न लड़ें, पर स्त्री के विवाह के संबंधमें पुरुष प्रायः क्यों लड़ते हैं ?

पटरानी—इसलिये कि वे स्त्री को निर्जीव नहीं तो एक जीवित पदार्थ मानते हैं। वे समझते हैं जिस प्रकार राज्य, धन, संपत्ति इत्यादि पर मालकियत प्राप्त करने का उन्हें नैसर्गिक अधिकार है, उसी प्रकार स्त्री पर भी ?

कृष्णकुमारी—(गंभीरता से) ऐसा ... ऐसा माँ ? (चुप हो जाती है।)

पटरानी—पर यह तो बता इस सबसे ज्वानके तेरे पास आने और इस कटार से क्या संबंध है ?

कृष्णकुमारी—माँ, मेरे पाणिग्रहण की माँग अब केवल जयपुर और जोधपुरमें ही केन्द्रित नहीं है, वह और आगे बढ़ी है।

पटरानी—(आश्चर्य से) अच्छा !

कृष्णकुमारी—श्रीमन्त सींधियाजी मुझसे विवाह करना चाहते हैं।

पटरानी—ऐसा ?

कृष्णकुमारी—हाँ, उन्होंने भाईजी से कहा है कि या तो वे उनसे मेरा विवाह कर दें, या मेवाड़ पर केवल जोधपुर का ही नहीं, मराठों तथा अँग्रेजों का भी आक्रमण होगा।

पटरानी—और दरबार ने क्या कहा ?

कृष्णकुमारी—दरबार शूद्रसे मेरे विवाहकी कल्पना तक नहीं कर सकते।

[पटरानीका सिर झुक जाता है। वह कुछ देर तक कुछ नहीं बोलती। कृष्णकुमारी एकटक उसकी ओर देखती है]

पटरानी—(एकाएक सिर उठाकर) ऐसा। तो फिर..... फिर एक बार मेवाड़में रणचंडी जागेगी। एक बार... एक बार फिर सारे भारतकी शक्तियां एक ओरसे और मेवाड़ अकेला दूसरी ओरसे संग्राम करेगा। बप्पा रावल और सांगा, परताप और राजसिंहकी सन्तति, मेवाड़के सोलहों क्षत्रिय घरानेके सरदार और उनके अनुयायियोंको, भीलोंको साथ ले, इन शत्रुओंसे संग्राम करनेका अवसर प्राप्त होगा। फिरसे चारण जन समुदायको जगावेंगे। शंख तथा भेरी बजेंगी। जन समुदाय उठ उठ कर योद्धाओंके रूपमें मेवाड़के लाल झंडेके नीचे एकत्रित हो, युद्धकर, अपना और शत्रुओं का रक्त बहा उस रक्त की रणचंडी की वेदीमें आहुति डालेगा। जीत हुई तो हम नारियां इन वीरों का अपूर्व स्वागत करेंगी और हार हुई तो जौहर कर सीधी, हां, सीधी, स्वर्ग को जायंगी। (कुछ रुककर) पर...पर...बाई, इस...इस सबसे ज्वानसिंह के तेरे पास आने और...और...(कटार की ओर देखते हुए) इस...इस कटारसे क्या संबंध है ?

कृष्णकुमारी—यह, माँ कि यह...यह सारा... रक्तपात बच जावे। एक...एक मेरी ही आहुति दे रणचण्डी की अग्नि को मेरे रक्तसे शान्त कर दिया जाय।

पटरानी—(चिल्लाकर) तेरी...हत्या की जाय ?

कृष्णकुमारी—हत्या नहीं, माँ, बलिदान। और ... और उचित ... बलिदान। हमारे प्राचीन शास्त्रों तक का मत है कि एकके बलिदान से यदि कुल की रक्षा होती हो तो उसका बलिदान ही उचित है। यहाँ तो मेरे बलिदान से केवल कुल की ही नहीं, सारी प्रजा और देश की रक्षा होती है। (कुछ रुक कर) माँ ... माँ ... मैंने ... मैंने बाल्यावस्था से मेवाड़ की वीर बालाओंके इतिहास पढ़े हैं। उनकी कथाओं को पढ़ पढ़ कर मेरा हृदय न जाने कितने बार बांसों और हाथों उछला है। मेरे सारे शरीर की रोमावली शल्यों और बाणोंके सदृश सीधी और तीखी खड़ी हुई है। मुझे ... ... मुझे भी क्या जीवनमें वैसे बलिदान का अवसर मिलेगा, यह सोच सोच कर न जाने कितने ... कितने बार मेरे मस्तिष्कमें विचारों की चक्कियां चली हैं। (गद्गद् स्वरसे) मां...मां मुझे...मुझे जीवनका यह अपूर्व अवसर मिल गया। तुम्हारी कोखको मैं पवित्र कर सकूंगी। जन्मभूमिके गौरवकी मुझसे वृद्धि होगी और एक...एक मेरे रक्त बह जाने पर मेवाड़के अगणित निवासियोंकी रक्षा हो जायगी। यह...यह बलिदान तो......

पटरानी—क्या...क्या कहती है, बेटी, यह...यह बलिदान नहीं, हत्या...घृणित हत्या है, और पुरुष वर्गकी स्त्री की हत्या करके अपने बचावकी कुत्सित चेष्टा।

कृष्णकुमारी—पर...पर, मां, स्त्री तो मिटनेके लिये ही बनी है, चाहे वह हत्यासे मिटायी जाय या स्वयं अपना बलिदान करे।

पटरानी—किन्तु, बेटी, स्त्रियोंकी ऐसी हत्या, उनके ऐसे बलिदान पर मेरा विश्वास नहीं। मैं नहीं मानती कि स्त्री मिटने के लिये ही बनी है। इस संसारमें जितना अधिकार पुरुष को जीवित रहने का है, उतना ही स्त्री को। आनंद भोगने का पुरुष जितना अधिकारी है उतनी ही स्त्री। अब तक पुरुषोंने स्त्रीपर, राज्य, धन, संपत्ति के सदृश अपनी मालकियत रखने का प्रयत्न किया है, उन्हें अपनी क्रीड़ा के लिये खिलौना माना है। स्त्री अपनी इस परिस्थितिमें परिवर्तन करेगी। यदि उसे पुरुषने सब बातोंमें समान अधिकार नहीं दिया तो वह विप्लव करेगी और फिर तो वह स्वयं पुरुष का स्थान प्राप्त कर उन्हें अपनी जगह देगी।

कृष्णकुमारी—किन्तु, माँ, इस समय मेवाड़ पर जो आपत्ति आई है उससें पुरुष और स्त्री का प्रश्न नहीं है। वह तो दोनों ही वर्गों पर समान रूपसे आई है।

पटरानी—पर उसमें पुरुषवर्ग एक स्त्री की हत्या करके बचना जो चाहता है। समान रूपसे आई हुई आपत्तिका हम समान रूपसे सामना करनेके लिये तैयार हैं। पुरुष केसरिया बाना पहनकर युद्धको निकलें। हमें उन्होंने युद्ध

(शेष पृष्ठ २० के काल्म १ पर)

विधवाओं का प्रश्न

श्री नरेन्द्रकुमारजी लाहोटी

M. A., B. COM., LL. B.,

उन्नतिके शिखर पर पहुँचे हुए भारतवर्ष की आधुनिक दशा आज इतनी शोचनीय है कि वह दासता की जटिल बेड़ियोंमें जकड़ा हुआ है । सब से अधिक निन्दनीय दशा यहाँ पर हिन्दू स्त्रीसमाज की है । वह समाज जिसमें २० या २५ प्रतिशत विधवाएँ हों । किसी प्रकार से भी सभ्य नहीं कहा जा सकता । जन-संख्या पर विचारने पर प्रतीत होगा कि १५ वर्ष से कम आयु वाली विधवाओं अर्थात् बाल-विधवाओं की संख्या अधिक है । बहुत सी स्त्रियां जो विधवा कहलाने योग्य नहीं हैं, स्वार्थी समाज द्वारा जबरन विधवाओंकी श्रेणींमें फेंक दी गई हैं। इनमें ऐसी २ विधवाएँ हैं जिन्होंने अपने पतिदेवके भले प्रकार दर्शन भी नहीं किए। इस विषय पर प्रकाश डालते हुए एक विद्वानने लिखा भी है—

‘The Bride and the Bridegroom do not become united in gotra, pinda and sotuka till consummation and hence there is no real widow-hood of the bride.’

अर्थात्—‘पति तथा पत्नी गोत्र, पिण्ड तथा सोतकमें समागम होनेके पूर्व एक नहीं होते इसलिए यदि सहवासके पूर्व ही पति मर जाय तो वास्तविक वैधव्य नहीं होता।’

महात्मा गान्धीने भी अपनी ‘Young India’ में लिखा है—‘It is a sin to call a girl below 15 a widow.’ अर्थात् पंन्द्रह वर्षसे कम आयुकी बालिकाको विधवा कहना पाप है। इसके अतिक्ति अधिक आयुवाली विधवाओं की संख्या तो बेहद है। क्या वह समाज जिसकी इतनी शोचजनक अवस्था हो, कभी सुख-सम्पन्न रह सकता है। सर्वप्रथम हमें इसी बात पर विचार करना है कि विधवाओं की इतनी संख्या बढ़ने का कारण क्या है। इसके मुख्य कारण हैं—बाल विवाह, अधेड़ पुरुषों का पुनर्विवाह और विधवा-विवाह की प्रथा का संचालन न होना। इन सब विपत्तियों को दूर करने का सुलभ उपाय इन कारणों को दूर करना है। बाल-विवाह समाज को शीघ्रसे शीघ्र ही छोड़ देना चाहिए। यद्यपि शारदा-बिल पास होनेसे इस कुप्रथा पर पर्य्याप्त प्रभाव पड़ा है, फिर भी अभी बहुत सुधार की आवश्यकता है । प्रति दिन कहीं न कहीं ऐसे किस्से सुनने को मिलते ही रहते हैं । वृद्ध पुरुषों का बालिकाओं से विवाह करना भी सर्वथा त्याज्य है। फिर विधवा-विवाह की प्रथा का अनुकरण होना चाहिए क्योंकि इस प्रकार के विवाह से अभागिनी बहनों का कष्ट निवारण हो सकता है।

इस प्रथा का अनुकरण किस प्रकार होना चाहिए, यही मुख्य प्रश्न हमारे सम्मुख है। भिन्न २ आयु वाली विधवाओं को श्रेणियोंमें बांटना चाहिए । प्रथम श्रेणीं में १६ या १७ वर्ष तक की विधवाएं हों जिनके पुनर्विवाह का पूरा भार उनके माता-पिता पर होना चाहिए और उनका विवाह अवश्य ही कर देना चाहिए। दूसरी श्रेणीमें १७ वर्षसे २५ वर्ष तककी आयु वाली विधवाएं हों जिनका विवाह उनके सास-स्वसुर द्वारा होना आवश्यक है और उनके न होनेपर उनके मातापिता द्वारा यह कार्य्य सास-स्वसुरको अपना धर्म समझते हुए कर देना चाहिए। तीसरी श्रेणीमें २५ वर्षसे अधिक आयुवाली विधवाएं आनी चाहिएं। इनका पुनर्विवाह इनकी इच्छा तथा सम्मति पर छोड़ देना चाहिए क्योंकि इस आयुमें वह उचितानुचितका पूर्णतया विचार कर सकती हैं। यदि इस आयुवाली विधवा सहमत है तब उसके मातापिता तथा सास स्वसुर दोनोंको मिल कर अपना परम कर्त्तव्य समझते हुए उसका विवाह कर देना चाहिए। यदि कोई पक्षवाला नहीं है तो निकटतम सम्बन्धी द्वारा होना चाहिए। यदि विधवा सन्तानवाली है तो उसका पुनर्विवाह परिस्थातिको देखकर कर देना चाहिए। हमारे विचारमें यह जटिल समस्या इस प्रकारसे बहुत कुछ सुलझ सकेगी।

इन विवाहोंसे समाजको तथा भारतवर्षको कितना लाभ हो सकता है इस सब पर विचार करना उपयुक्त है। पहला लाभ विधवा-विवाहसे आर्थिक है अर्थात् यदि किसी कुटुम्बमें कमानेवाला व्यक्ति एक ही हुआ और विधवाएँ कई हुई तो उस पुरुषका भार अपनी सन्तान आदिको मिला कर दूना हो जाता है जिसका फल यह है कि कोई भी सुखसे नहीं रह पाता। फिर अकेला मनुष्य धन का व्यय बिना कुछ परवाहके करता है और गृहस्वामिनीके आनेसे बहुत कुछ दरिद्रता दूर हो सकती है।

इसके अतिरिक्त दुखसे पीड़ित विधवाएँ पुनर्विवाहसे सब सुखोंको भोग सकती हैं तथा शान्तिमय जीवन व्यतीत कर सकती हैं। एक लाभ यह भी है कि इन दुखी विधवाओंका धर्म भ्रष्ट न हो सकेगा। वे सुरक्षित रह सकेंगी। यह तो साधारणसी बात है कि किसी दुःखी व्यक्तिको जो संसारके सब सुखोंसे वंचित है तथा जिसके लिए समाजमें कोई सम्मान नहीं है यदि दूसरे मतके अनुयायी प्रत्येक प्रकार से सुविधा देने को प्रस्तुत हैं तो यह निश्चय जानिए कि वह उन प्रलोभनों के सम्मुख अवश्य नतमस्तक हो जाएगा। अतः यह बात स्वयं ठीक है कि विधवाविवाह की प्रथा समाज की दुखी बहनों को बचा सकेगी। इससे वंशकी रक्षा होगी।

विधवा-विवाह का सबसे बड़ा लाभ यह है कि व्यभिचार बहुत कम हो जाएगा। विधवाओं में गुप्त व्यभिचार का होना स्वाभाविक सा है जिसका परिणाम यह होता है कि घर में अन्य बालिकाओं तथा युवा स्त्रियों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। नवयुवकों पर भी इसका बुरा प्रभाव पड़ता है। भ्रूण-हत्या तो विधवाओं द्वारा न जाने कितनी संख्या में होती है। वे गर्भपातके उद्योगके फेरमें पड़ कर अनेक प्रकारके रोगोंसे ग्रसित हो जाती हैं। घरसे निकाल दी जाती हैं जिससे निस्सहाय हो कर इधर उधर गुण्डोंके चंगुलमें फंस जाती हैं जो उनके शारीरिक रूप पर मुग्ध हो कर उन्हें आश्रय देते हैं और कुछ साल बाद त्याग देते हैं। तब उनके लिए भिक्षा मांगने या अन्य निन्दनीय कार्योंमें प्रवृत्त होनेके अतिरिक्त कोई उपाय नहीं रह जाता। वे किसी दूर स्थान पर जाकर घृणा और अपमानका जीवन व्यतीत करती हैं तथा बहुतसी आत्महत्या कर डालती हैं।

वेश्याओंमें आज अधिक संख्या हिन्दू विधवाओंकी है। प्रत्येक वेश्याके पीछे कोई न कोई कहानी अवश्य छिपी होती है। इनकी संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। क्या अपने ही नेत्रों द्वारा हमें अपनी इन बहूबेटियों को वेश्याओं के रूपमें देखना बुरा नहीं जंचता? इस प्रकार के सैकड़ों किस्से सुननेमें आए हैं कि मनुष्योंने जिन विधवाओं को घरसे निकाल दिया था वह किसी अन्य शहरमें जाकर वेश्यावृत्ति करने लगीं और दैवयोगसे वह लोग जब वेश्याओंको देखने निकले तो अपने घरकी ही स्त्रियोंको देख कर भौंचक्के हो गए और उन्हें मुंहकी खानी पड़ी।

यह बहुधा देखा जाता है कि मनुष्य शास्त्र तथा धर्म आदिके द्वारा विधवा-विवाहका विरोध करते हैं। यह सर्वथा अनुपयुक्त है क्योंकि विधवा-विवाह तो सामाजिक विषय है, इसका धर्म-विषय से तो तनिक भी सम्बन्ध नहीं। वेद तथा शास्त्रोंमें तो, बल्कि, विधवा विवाहके अनुकूल प्रमाण मिलते हैं। यहाँ पर कुछ श्लोकों का प्रमाणार्थ उद्धृत करना उचित होगा।

वैशम्पायन ऋषि का वचन है—

पुरुषाणामिव स्त्रीणां विवाहा बहवो मताः।
भर्तृनाशे पुनः स्त्रीणां पुंसां पत्नीक्ष्ये यथा॥

अर्थात् ‘पुरुषों की भांति स्त्रियोंके भी बहुत से विवाह हो सकते हैं जैसे स्त्रीके मरने पर पुरुष का दूसरा विवाह होता है वैसे ही पतिके देहान्त पर स्त्री का भी विवाह फिर हो सकता है।’

यजुर्वेदमें लिखा है कि—

उदीर्ष्व नार्यभिजीवलोकमितासुमेतमुपशेष एहि।
हस्तग्राभस्य दिधिषोस्त्वमेतत्पत्युर्जनित्वमभि सम्बभूथ॥

‘हे स्त्री, तू इस मरे हुए पतिके साथ लेट रही है, उठ और जीते हुए मनुष्यों की भीड़ के आगे और किसी विधवा का हाथ पकड़ने वाले और पुनर्विवाह की इच्छा करने वाले पति की स्त्री हो।’

इसके अतिरिक्त अगस्ति ऋषि ने यह कहा है कि—

‘भर्त्रभावे वाः स्त्रीणां पुनः परिणयो मतः’

अर्थात्—पतिके जाते रहने पर युवा स्त्रियों का दूसरा विवाह होना उचित है।

(शेष पृष्ठ २२ के कालम १ पर)

आग कौन लगा रहा है?

श्री सूरज रतनजी चाण्डक “सूर्य”

चहुँ दिशिमें कैसा यह क्रन्दन,
दुनियांमें क्यों यह कोलाहल?
मानव-उर की व्याकुलता को,
यह कौन बढ़ाता है प्रतिपल?।

पश्चिममें यह लाली कैसी,
फैला यह कैसा करुण राग?
क्या ज्ञान-सूर्य का, अस्त हुआ,
या खूं से है खेला फाग?

क्या अम्बुधिसे है उठी आग,
या यह बनका दावानल है?
अथवा क्रोधी शिवशंकरके,
ताण्डव का ही यह प्रतिफल है?

क्यों उठती है आवाज़ यहां,
गूंजा यह कैसा ध्वंसराग?
कितने बलिवेदी पर चढ़ते,
कितनों का लुट जाता सुहाग॥

क्या युद्ध दावानल जगत को,
भस्मभूत बना रहा है?
आग कौन लगा रहा है?

★ देश विदेशकी चर्चा ★

★

[संकलन कर्ताकी कलमसे]

रूस और जर्मनीके बीच युद्धकी प्रगति पर शीतके कारण बड़ा असर पड़ा है। कहा जाता है कि रूसके प्रायः सभी मोर्चोंपर, यहां तक कि क्रीमियामें भी खूब जोरोंसे हिमपात शुरू हो गया है। इस हिमपात के कारण सेनाओंके कितने ही सिपाही मौतके शिकार हो रहे हैं और टैंक आदि भी जमीनमें बरफसे ढंककर रुक गये हैं। इससे युद्धकी गति अत्यन्त मन्द हो गयी है। प्रायः सभी मोर्चोंपर हिटलरने अपनी सुरक्षित सेनाएं बड़ी तादादमें जमा करना शुरू कर दी थीं और जोर शोरसे नवीन आक्रमणोंकी तय्यारी थी परन्तु हिमपातने उसके मनसूबोंपर पानी फेर दिया है। कालिनिन, वोलोकोलाम्स्क, टुला, टिखविन और डोनेवेसिनमें—सर्वत्र जर्मन फौजों की प्रगतिको रूसियोंने रोका हुआ है। लेनिनग्राड के मोर्चेपर भी पिछले दिनों जर्मनीने नये हमले किये थे पर वे सब प्रायः निष्फल साबित हुए हैं। मास्को मोर्चेपर तो जर्मन फौजोंको पीछे हटाकर कुछ गांवों पर रूसका पुनः अधिकार हो गया है।

क्रीमियामें केर्चकी ओर जर्मन फौजोंका हमला जारी था। सबास्टोपोलपर भी उन्होंने बमवर्षा की थी किन्तु अभी तक पूरी तरह अपने अभियानमें उन्हें सफलता नहीं मिली। केर्च और सेवास्टोपोलपर जर्मनोंका यदि अधिकार हो गया तो इसका स्पष्ट अर्थ होगा कि रूसके काले सागरके जहाजी बेड़ेका संकटमें पड़ जाना और काकेशसके तैल क्षेत्रोंपर भावी खतरेकी सम्भावना। कालेसागरके रूसी बेड़ेके लिए इसके सिवाय और कोई मार्ग नहीं रहेगा कि वह बातुमके रूसी बन्दरगाहमें आश्रय ले और बढ़ते-बढ़ते यदि यह संग्राम और भी फैल गया तो बातुम भी खतरेसे बचेगा नहीं। काकेशसपर हमला करनेके लिए केर्चके रूपमें एक मज़बूत आधार जर्मनीको मिल जायगा। इन सब दृष्टियोंसे भौतिक कारणोंसे अभी जर्मनोंकी जो प्रगति रुक गयी है उसने रूसकी बड़ी भारी मदद की है। जर्मनीको इन कारणोंसे यदि मोर्चे पर रुक जाना पड़ा तो रूसको और ब्रिटेनको जर्मनीके विरुद्ध फिर सिर उठानेका मौका मिल जाएगा। इसमें शक नहीं कि रूसके प्रायः वे सभी क्षेत्र जिनसे उसे कच्चा माल मिलता था और जहां शस्त्र व युद्धसामग्रीके निर्माणके लिए उसने व्यापारिक केन्द्र खोले हुए थे, जर्मनीने अपने अधिकारमें कर लिए हैं किन्तु उन स्थानोंसे अधिकांश फैक्टरियां आदि रूसने पहलेही समय रहते उठा कर उत्तरके निरापद स्थानोंकी तरफ रवाना कर दी थीं। कीव, ओडेस्सा, खारकोव आदिसे इस प्रकार उठाकर अन्यत्र सुरक्षित भेजी जानेवाली फैक्टरियोंकी संख्या एकदम नगण्य नहीं हैं। फिर इन व्यावसायिक नगरोंमें जर्मनीको कुछ विशेष हाथ भी नहीं आया। इस दृष्टिसे रूसको जर्मन आक्रमणसे जो क्षति उठानी पड़ी है वह उपेक्षणीय नहीं तो भी इतनी महान् नहीं कि उससे भयभीत हुआ जाय। यूरालके आंचलमें और काकेशसकी कोखमें जो कारखानोंका समूह दिनरात युद्ध सामग्री व अन्यान्य साधन उगल रहा है वह भी जर्मनीका मुकाबला करनेमें एक प्रचण्ड शत्रुकी तरह सहायता दे सकेगा।

हालहीमें रूसके तानाशाह म० स्टालिन और रूसके ब्रिटेन स्थित राजदूत म० मेस्कीने जो अपीलें रूसकी सहायताके लिए निकाली हैं उनमें सबसे अधिक बल इस बातपर दिया गया है कि रूसकी सहायता टैंकों द्वारा की जाय। रूसपर आक्रमण होनेसे पूर्व और उससे भी पहले यही सुना जाता रहा है कि रूसके पास टैंकोंका संख्यातीत भण्डार है और उसके समाप्त होनेकी कोई सम्भावना नहीं किन्तु अब जो अपीलोंमें टैंकोंका अभाव सुना जा रहा है वह सहसा चौंका देनेवाला है। आजके युद्धमें और विशेषत; रूस और जर्मनीके बीच चल रहे युद्धमें तो निश्चय ही टैंकोंका सबसे ज्यादा महत्व है। स्थलीय युद्धमें हवाई जहाजोंसे यद्यपि बहुत बड़ी मदद ली जा सकती है तो भी टैंकोंके द्वारा जबतक जमीन पर अधिकार नहीं कर लिया जाय तब तक इस विजय का कोई स्थायित्व नहीं और न ही उसकी कुछ वास्तविकता ही है। यदि रूसके अधिनायकोंकी इन अपीलोंपर ध्यान देकर ब्रिटेन और अमेरिका द्वारा टैंकोंकी कुछ सहायता उसे मिल गयी तो उसके सम्हलने की बहुत बड़ी आशा है।

'आर्क रायल' डूबा

ब्रिटेनका सबसे बड़ा हवाई जहाज ले जाना वाला जलयान 'आर्क रायल' आखिर डूब ही गया है। गत १४ नवम्बर को जर्मन टारपीडोका शिकार होकर उसकी जल समाधि बन गयी है। जर्मन प्रोपेगेण्डा मन्त्री डा० गोयबल्स अपनी घोषणाओंमें ६ बार इस जहाजके डूबने की घोषणा कर चुके हैं किन्तु ब्रिटिश नौविभागने कभी इसे स्वीकार नहीं किया किन्तु अब ब्रिटिश नौसेना विभागने भी यह स्वीकार कर लिया है अतः उसके डूब जानेमें कोई सन्देह नहीं रहा। सर्व प्रथम सन १९३९ में अबसे दो वर्ष पूर्व जहाजके डूबनेका दावा जर्मन प्रोपेगेण्डा मिनिस्ट्री की तरफ से किया गया था। कहा जाता है कि जर्मनीके और इटलीके करीब १०० वायुयान इस २२००० टनके महादैत्यने तोड़े हैं। ब्रिटेनने कभी स्वप्नमें भी यह आशंका नहीं की थी कि यह जहाज डुबाया जा सकेगा। ब्रिटिश नौसेनाके जहाजोंमें इतना बड़ा जहाज और कोई नहीं था।

धुरी शक्तियां बनाम अमेरिका

संयुक्त राज्य अमेरिकाकी कांग्रेसने और सीनेटने अमेरिकन जहाजोंपर तटस्थता कानूनके अनुसार लगायी गयी पाबन्दियोंको हटाकर उनको शस्त्र सज्जित करनेका प्रस्ताव पास कर दिया है और प्रेज़ीडेंट रूज़वेल्टके द्वारा स्वीकृत कर लिये जानेके कारण उसे कानूनमें भी परिवर्तित कर दिया गया है। फलतः अमेरिकन जहाजोंको भी आत्मरक्षाके लिए आवश्यक शस्त्रास्त्रोंसे सुसज्जित कर दिया जायगा। इस घटनाके साथ-साथ ही अटलाण्टिक महासागरमें जर्मन यू-बोटों और अमेरिकन जंगी जहाजोंकी मुठभेड़का समाचार मिला है। कहा जाता है कि इस मुठभेड़में जर्मन पनडुब्बियोंको या तो अमेरिकन जंगी जहाजोंने पकड़ लिया है या डुबा दिया है।

दूसरी तरफ जापान भी प्रशान्त महासागरमें पांव फैलानेकी योजना बना रहा है और जनरल तोजोके भाषणों और इशारोंसे यह जान पड़ता है कि वे अपने देशको बलात् खींचकर युद्धमें घसीट ले जाना चाहते हैं। यह बात अब स्पष्ट हो चुकी है कि जापान अक्ष शक्तियोंके शिविरमें जा शामिल हुआ है। जापानकी स्थिति दिन-दिन अनिश्चित और संकटकालीन बनती जा रही है। कुछ भी निश्चय से नहीं कहा जा सकता किन्तु जापानकी युद्धमें कूदने की योजना क्या है यह अभी तक ज़रा भी स्पष्ट नहीं हो पाया। आक्रमण करने व मैदानमें उतरने के लिए जापान को आखिर अपना एक लक्ष्य तो निश्चित करना ही पड़ेगा। किन्तु जापान की धमकियों और गुर्राहटमें जो दम नहीं नज़र आ रहा उसका एकमात्र कारण यही है कि जापान का युद्धमें रुख क्या होगा यह निश्चित नहीं हो पाया।

अमेरिकाके श्रीमन्त वर्गमें असन्तोष

अमेरिकाकी कोयलेकी खानोंके मजदूर हड़तालपर उतर आये हैं। करीब ५३००० मजदूरोंने कामपर जानेसे इन्कार कर दिया है। मजदूरों के नेता मि० जॉन लुइसने हड़तालको खूब प्रगति दी है इस प्रकार के समाचार अमेरिकासे समय-समय पर आते रहते हैं जो यह बताते हैं कि युद्धकी वजहसे काम बढ़ जानेपर निःस्वार्थ त्याग से और कष्ट उठा कर भी अमेरिकन तथाकथित रक्षाकार्यमें मदद देनेके पक्षपाती नहीं। लार्ड हैलीफैक्स जो अण्डोंकी मार और अमेरिकन स्त्रियोंके ब्रिटेन विरोधी नारों और असन्तोषकी जो खबरें मिली हैं उनसे यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि पड़ौसी के मकानमें लगी आगको अपने मकान तक फैलनसे बचानेके पूर्व ही बुझानेके लिए प्रेज़ीडेंट रूज़वेल्ट जो यत्न करना चाहते हैं अमेरिकाका साधारण जनमत उसके अनुकूल नहीं।

देवली कैम्प या रौरव

भारतीय नज़रबन्दों के प्रख्यात कैम्प देवलीको लेकर एक जबर्दस्त काण्ड उठ खड़ा हुआ है। देवली के कैम्प के सम्बन्धमें देशभरमें जबर्दस्त तहलका-सा मच गया है। केन्द्रीय असेम्बलीसे लेकर आम बाबू श्रेणी के समाजमें भी इसकी चर्चा रही है। देवली कैम्प के राजबन्दियों के साथ जिस ढंग का बर्ताव सरकार की तरफसे किया जा रहा है वह निसन्देह मानवताहीन और निष्ठुरतासे परिपूर्ण है। उनको सामान्य सुविधाओं और दैनिक व्यवहार की खतरेंसे हीन वस्तुओंसे भी वंचित रखा जाता है। इन सुविधाओंको पानेके लिए देवली के राजबंदियोंने अनशन के अगतिकगति उपाय का आश्रय लिया था किन्तु महात्माजीने उन लोगोंसे श्री जयप्रकाशनारायण की मार्फत अपील की है कि वे अनशन बंद कर दें। देवली के कैम्पमें राजबन्दियोंपर जो खर्च किया जा रहा है यद्यपि उसे गणित के नाप जोखसे साबित किया जा सकता है कि वह औसत भारतीय की आमदनीसे कहीं ज्यादा है किन्तु इस प्रकार नाप तोल रखने वाले लोग यह भूल जाते हैं कि एक दरिद्र भारतीयकी जो औसत आय है उस पर ही हरेकको जीवित रहनेके लिए बाधित नहीं किया जा सकता। महात्मा गान्धी ने भी सरकारसे अपील की है कि वह देवली कैम्पके राजबंदियोंकी शिकायतें सुने और उन्हें कुछ सहूलियतें दे। जब कि भारतमें आये हुए इटालियन युद्धके कैदियोंको राजकुमारोंकी तरह रखा जाता है तो भारतीयोंको ही क्यों अपने देशमें इतना जलील किया जाता है।

(पृष्ठ १५ का शेषांश)

जीवन गुजारती है। परदा और ढीले-ढाले कपड़ोंके कारण स्टोव या सिगड़ी जलाते समय अग्निकी ज्वालाएं उनके कपड़ों को पकड़ लेती हैं और उनका जीवन दीप बुझ जाता है।

ऐसे सामाजिक कुरिकमजोंको, जिन्होंने हमें निर्बल बनाया है, हमारी बुद्धिको कुंठित कर दिया है, हमारा आयुष्य कम कर दिया है, । और देशको गुलाम बनाये रखनेमें मदद दी है, उनका समूलोच्छेद करनेके लिये जब शिक्षित बहनें कटिबद्ध होंगी तभी हमारा स्त्री-समाज आर्थिक, सामाजिक, और राजनैतिक क्षेत्रमें स्वतंत्रता प्राप्त करके देशको स्वाधीन बनानेके लिये पूरा सहयोग दे सकता है। [शान्ताक्रुज, बम्बई ।

आह !!!

श्री दीपचन्दजी चाण्डक

आह! क्या हुआ? किससे पूछूं? क्या करूं? दो साल पहले मैंने उन्हें न देखा था न जानती थी। सखियोंने बतलाया—वे वैसे हैं। कैसे हैं? ऐसे हैं। मनमें गुदगुदी-सी हो रही थी। मनसूबे बांध रही थी।

सगाईकी रीत हुई। विवाहकी तैयारी हुई। बरात आई। बराती आए। वे आये। फेरोंका समय हुआ। विवाह मण्डपमें लेजाई गई। मुंह नीचा था और वह भी ढक दिया गया था। उन्हें देखनेका मनसूबा मन ही में रह गया। हाथसे हाथ मिला। बिजली-सी दौड़ी। परन्तु फिर भी देख न सकी। नाइन काकी ने ही तो समझाया था कि नाक नीची रखना। विवाह हो चुका। गीतों ने बतलाया कि अब पराई हो गई। विदा हुई। सुसराल गई। नाइन काकी को छोड़ सब नये ही नये थे। बूढ़ी-जवान औरतें आईं। मुंह दिखलाया। पांव लगी। रुपये मिले।

शाम हुई। बड़ी जिठानीजीने मजाक करना शुरू किया। तीसरी होनेके कारण और दोनों जिठानियोंसे ये उमरमें छोटी थीं। बड़ी सीधी व हंस-मुख थीं। इनके मीठे मजाकोंसे बाग-बाग हो गई।

रात हुई। ऊपर कोनेके कमरेमें जिठानीजी पकड़ कर ले गईं। कमरा सजा-सजाया था। सोहाग रातके लिए जरूरत पड़ने लायक सब सामग्री तैयार थी। हाथ छुड़ाकर जिठानीजी भाग गईं। अकेली हो गई। बाहर निकलने का सोच कर चली कि वे अन्दर घुसे। शर्मा गई व डर भी गई। एकदम अपरिचित व्यक्तिसे क्या बोलूं व कैसे बोलूं। आखिर उन्होंने शान्ति भंग की। कहने लगे डरने व शरमाने की बात नहीं। आओ, बैठो। धीरे २ झिझक मिट गई। परिचय बढ़ते बढ़ते प्रेम का रूप लेने लगा। स्वामीके नाते हिन्दु स्त्री की श्रद्धा तो बिना परिचयके ही हो जाती है।

पीहर से तीसरी बार सुसराल आई तो मालूम हुआ कि बड़ी जिठानीजी को दूसरा बच्चा होनेके बाद हलका बुखार रहने लग गया है। उनके चेहरे पर वह पहले की सी चमक न रह गई। वे मुझे बहुत चाहने लग गईं थीं। मेरा जी भी उनको सुस्त देखकर सुस्त होजाया करता था। धीरे धीरे रोग बढ़ने लगा। एक दिन डाक्टर भी उदास हो कर चला गया। शाम को वे बेचारी दो अपने व तीन पहले वालियोंके बच्चों को छोड़कर चल बसीं। घरमें रोना मचा। बाहर की औरतें बैठने को आईं। दो दिन बाद आने-जानेवालियोंमें से एक ने कहा, 'फलानचन्दजी की अभी उमर ही क्या है।' बात का सिलसिला बदल गया। मैं आश्चर्य करने लगी। ये मातम पुरसी करने आई हैं या सगाई। बारह दिन किसी तरह पूरे हुए। पन्द्रहवें दिन वसन्त पंचमी थी। जेठजी की चौथी सगाई हो गई। फागुन सुद २ का साग निकला। विवाह की तैय्यारियां हुईं और विवाह भी होगया।

मैंने पतिदेवसे पूछा कि क्या आप लोगों का प्रेम ऐसा ही होता है जैसा जेठजी का देख रही हूं। उत्तर न मिला फिर पूछा, 'स्त्रियां इस तरह की तकलीफ पड़ने पर क्या करती हैं, आप जानते हैं। उन्हें क्या करना चाहिए?' उनके फिर भी चुप रहने पर मैंने बात बदल दी।

एक रातको मैंने पतिदेवसे कहा कि आज एक नई बात कहूंगी। आज दिनमें जब मैं कमरेमें थी तब रामू कहार को बड़ी जिठानीजीसे हंस हंस कर बातें करते मैंने सुना। इसी बीच जिठानीजीको यह कहते सुना कि अभी नहीं अभी नहीं अभी वह कमरेमें हैं। इस पर पतिदेवका चेहरा एक बार तमतमाया और फिर एकदम सुस्त होगया। मैं डरी कि यह बात मैंने इन्हें कही ही क्यों। बात बदलने की बहुत कोशिश की पर उस रात फिर उन्हें प्रसन्न न कर सकी।

उनकी सुस्ती धीरे धीरे बढ़ने लगी। यहां तक कि उनका चेहरा कुम्हलाता गया व शरीर दुबला होता गया होते होते खाट भी पकड़ ली। इलाज शुरू हुआ। मर्ज के साथ साथ डॉक्टर व वैद्यों का तांता भी बढ़ने लगा। घर भर परेशान। मैं भी परेशान। हर समय कोई न कोई उनके पास रहता था। अतः दूर से देखने के सिवा कभी बात नहीं कर सकती थी। मन मसोस कर रह जाती।

बेचारी उन जिठानीजी की बिमारी की हालत का दृश्य सामने आजाता। उन्हें भी तपेदिक की बीमारी बतलाई गई। आखिर वही हुआ जो जिठानीजीका हुआ था। वे चल बसे। और मैं? सख्त हो गई! न रोते बना न चुप रहते। क्यों और कैसे यह कौन जाने।

घरमें रोना मचा। मातम पुरसीको औरतें आने लगीं। रोते रोते बातें भी शुरू हुईं। किसीने कहा, बहुत खोटी हुई। दूसरी आवाज़ आई, भगवान की मरजी; लिखे को कौन टाले। फिर सुना, बेचारी छोटीके भाग्य फूट गये। यह उमर कैसे कटेगी। इसके भाग्य ही ऐसे थे। इसी तरहकी बातोंमें यह भी सुननेमें आया कि अपने भाग्यके संग छोटेको भी ले बैठी।

सप्ताह बीता। महीना बीता। सब काम अपनी गतिसे होने लगे। जिठानीजी दिनमें प्रायः अपने कमरे ही में रहतीं। शामको बच्चोंका हो हल्ला रहता। खाना-पीना होता। पुरुषोंके बाहर चले जाने पर औरतें खा-पी अपने अपने कमरोंमें चली जातीं। इस सप्ताहसे सासजी भी अपने कमरेमें सोने लगीं। बाकी रह जाती मैं व छोटी ननद। इन बेचारी पर ३-३॥ साल पहले दुःख पड़ा था। मुश्किलसे ६-७ मास शादीको हुए थे। ये ससुरजीके छोटे भाईकी इकलौती बेटी हैं। उन दोनोंके छोटी उमरमें ही गुजर जानेके कारण ससुरजीने ही इनको पाला-पोसा व शादी की थी। उनसे इनका विशेष प्रेम था अतः उनकी बीमारी पर आ गईं थीं।

मुझे रोती देखकर कहतीं—भौजाईजी, रोने से क्या होगा। यह जानती हूं कि हम अबलाएं रोनेके सिवा और कर ही क्या सकती हैं। पर रोनेसे भी क्या होता है। भाभी, जिनको मैंने पूरी तरह से देख भी नहीं पाया उनके नाम पर जीवन होम रही हूं। तुम्हें भी ऐसा ही करना होगा। ईश्वर भी 'साठी बुद्धि नाठी' वाली करने लगा। वह भी पुरुष ही जो ठहरा। भला हो इस पुरुष जातिका। अपने लिए चार-चार विवाह जायज़। गैरों की उन्हें क्या पड़ी। भाभी धीरज धरो और दिन काटो। [कलकत्ता

खादी के मूलतत्व

श्री नारायणदासजी राठी

"खादी तथा अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघ के कार्यको कॉंग्रेसने इसलिये नहीं अपनाया कि वह भारतमें उपन्यास-कुतूहल पैदा करेगा लेकिन इसलिये अपनाया है कि यही कार्य भारतमें क्रांति पैदा कर उसे ऊंचा उठायेगा"। हमारे एक राष्ट्रनेता के यह शब्द आज हमारे अंदर क्रांति पैदा कर, हमको प्रेमसे समझाकर, इस बातके लिये दृढ़निश्चयी बना रहे हैं कि खादी पहनो, ग्रामोद्योगों को अपनाओ—इसीमें भारतका व तुम्हारा भला है।

खादीका महत्व जाननेके लिये हमें अपने देशके मशीन-युगकी दो विभिन्न परिस्थितियोंमें तुलना करना होगी। एक तो आजका मशीनयुग जो कि विदेशी सरकारके बलपर जो भारतकी शारीरिक, औद्योगिक, राष्ट्रीय व आर्थिक अवनति चाहती है जीवित है और दूसरा वह मशीन युग जब हमारी सरकार हमारी अपनी होगी और भारतीय मशीनोंको प्रोत्साहन देगी। इन दो परिस्थितियों का ख्याल रखते हुए हमें निम्न ४ बातोंको सोचना चाहिये।

१. भारतकी उत्तरोत्तर बढ़ती हुई आबादी।

२. इस आबादी की आज की दुर्दशा।

३. ग्रामोंमें रहनेवाली ८४ प्रतिशत आबादी, जो कि मुख्यतः खेतीपर निर्भर है।

४. इस बढ़ती हुई आबादी की रोटी का प्रश्न क्यों कि खेती पर अब निर्भर न रहा जा सकेगा चूंकि खेती पर तो अभी बोझ ज्यादा होगया है।

इस बढ़ती हुई आबादी की रोटी का प्रश्न दो ही बातोंसे हल हो सकता है। एक मशीनों का बढ़ाना और दूसरा भारत के ग्रामोंमें छोटे छोटे धंधों की पुनरावृत्ति करना। लेकिन विदेशी शासन के नीचे रहकर मशीनें बढाकर, भारतको औद्योगिक बनाना व इस बढ़ती आबादी का प्रश्न हल करना तो आज कठिन है। क्यों कि सरकार की मदद के बिना यह प्रश्न हल नहीं हो सकता। तथा आजतक हमारे यहॉं जो बड़े धंधे शुरू हुए वे इतने कम प्रमाणमें हैं कि वे १ प्रतिशत आबादीका भी प्रश्न नहीं हल कर सके। अतः हमारे लिये आज यही हो सकता है कि हम गांव-गांवमें खादी तथा अन्य छोटे धंधे शुरू कर दें जिससे हमें मूलधन भी कम लगेगा और हम सब भाइयोंको काम दे सकेंगे। इस प्रणालीसे हम पूंजीवाद भी नष्ट कर सकेंगे।

४० लाख रुपयोंकी पूंजीसे एक बड़ी मिलकी स्थापना की जा सकती है। यह मिल २००० मजदूर और ३० व्यवस्थापकोंको काम दे सकती है। लेकिन यदि यह ४० लाख रुपया चरखा संघको दे दिया जाय तो वह २७६,००० मजूरों व २९३३ व्यवस्थापकोंको काम दे सकता है। इन ४० लाख रुपयोंसे चरखा संघ ५३४५१ देहातोंमें खादीका काम शुरू कर सकता है, ६०८ देहातोंमें खादी-उत्पत्ति केंद्र बना सकता है व २८४ खादी बेचनेकी दूकानें खोल सकता है। कितना अन्तर हो यदि मिलके ४० लाख रुपये खादीमें लगाये जांय? यह आँकड़े हमें कुछ कल्पना दे सकते हैं कि खादी बेकारी को किस तरह दूर कर सकती है।

(शेष पृष्ठ १४ के कालम ३ पर)

श्रीनिवास कॉटन मिल्स लिमिटेड

बंबई

अपने कलापूर्ण, सुन्दर और टिकाऊ कपड़े के लिये मशहूर है।

★

ट्रेड नेम्स

नरेन्द्र गोल्डन प्लम एस. एन. सी. फॉक्स ग्लोब नगेन्द्र	धुला लांग क्लाथ
के के के के के ओ ओ ओ ओ ओ हिन्दनो ताज असली फूल बनर्जी यू. पी. एक्सप्रेस सी. पी. एक्सप्रेस मारवाड़ एक्सप्रेस	धुली धोतियां व साड़ियां
डायमण्ड हाल डायमण्ड चेन डायमण्ड बैटरी बंगाल फैशन प्रोमिनेंट लीडर प्रोमिनेंट फैशन	धुली या कोरी पॉपलीन
फलाइंग मून मालिनी मिस बिब्बो	चेक वायल

आदि आदि

★

इस मिल में सब प्रकार का धुला व कोरा कपड़ा—लांग क्लाथ, शर्टिंग, वायल, धोतियां, साड़ियां, मलमल, छपी हुई—छींट, वायल, बोस्की आदि कपड़ा विविध डिज़ाइनों और रंगों में तैयार होता है।

यदि आप उत्तम-सुन्दर-कलापूर्ण, टिकाऊ तथा सस्ता कपड़ा चाहते हैं, तो हमारे मिल के बने हुये कपड़ों से आप को पूर्ण संतोष मिल सकेगा—क्योंकि यह मिल भारतकी सामाजिक, आर्थिक अवस्था, तथा सर्वसाधारण की रुचि को लक्ष्य में रखकर ही सब प्रकार के वस्त्र तय्यार करती है।

बाज़ार में कपड़ा खरीदते समय इसी मिल का कपड़ा खरीदिये।

इस मिल का बना कपड़ा इस्तेमाल कर आप निश्चय ही प्रसन्न होंगे।

★

ट्रेड मार्क

- महाल
- पेटल ब्यूटी
- गोल्डन प्लम
- फॉक्स ग्लोब
- श्रीरामपंचायतन
- चार्मिंग ब्यूटी
- माधुरी
- मुरली
- ईस्टर्न ब्यूटी
- सेक्रेड फ्लूट
- श्रीराम

★

—हमारी विशेषता—

रेडियोगर्ल और नरेन्द्र कालिटी का धुला लांगक्लाथ—इसे बरतकर आप अवश्य सन्तुष्ट और प्रसन्न होंगे।

— हमारे सेलिंग एजेण्ट —

बम्बई
दी बम्बई एजन्सी कम्पनी लिमिटेड
सर विठ्ठलदास गली,
मूलजी जेठा मार्केट, बम्बई नं० १

कलकत्ता
मंगनीराम रामकुमार
६५ बाँसतल्ला स्ट्रीट
कलकत्ता

कानपुर
ज्वालाप्रसाद राधाकिशन,
काहू कोठी, कानपुर

अमृतसर
शामदास कपूर एण्ड कम्पनी
कटरा अहलुवाल
अमृतसर

दिल्ली
हनुमानप्रसाद धूत एण्ड कम्पनी
कटरा नवाब
देहली

पत्र-व्यवहार का पताः—

श्रीनिवास कॉटन मिल्स लिमिटेड

डिलाइल रोड, बम्बई नं १३.

परदा हटाइये

श्री घनश्यामदासजी चौधरी

पर्दा प्रथाके लिये आवश्यकतासे अधिक लिखा जा चुका है और मैं समझता हूँ कि लिखने वाले व इस विषय पर पढ़ने वाले व्यक्ति थकान भी महसूस करने लग गये होंगे। पर जिस प्रकार थक जाने पर भी हमें अपने निर्दिष्ट स्थान पर पहुँचना ही होता है उसी प्रकार अब भी हमें इस प्रथा पर लिखना व पढ़ना जरूरी है। स्वयं मैं भी इस विषय पर थोड़ा बहुत लिख चुका हूं पर अजमेरके एक सुधारक सज्जन की बदौलत मुझे इसकी फिर प्रेरणा मिली। वे कहा करते हैं कि ‘ पर्दा प्रथाका त्याग ही समाज-सुधार हो ऐसी बात नहीं है। इसके रहते हुए भी हम अपना सुधार कर सकते हैं। प्रत्यक्षके लिए प्रमाणकी क्या आवश्यकता है। अजमेरमें ही मदार गेटकी कूंजड़ियोंने पर्दा उठा कर कौनसा समाज सुधार कर लिया। इसलिये पर्देके विषयमें बात न कर और और विषयोंमें बात कीजिये।”

इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि हम सरीखे ग्रामीण माहेश्वरियोंके ऐसे विचार हो सकते हैं पर अजमेर शहरमें रहनेवाले सुधारकोंके ऐसे विचार होना समाज सुधारके लिये कितना जबर्दस्त रोड़ा है ? उनकी यह दलील कि ‘ मदारगेट की कूंजड़ियों ने पर्दा उठाकर क्या करलिया ’-कोई विशेष बल नहीं रखती। उनकी स्त्रियों व अपनी स्त्रियोंमें तो बहुत अन्तर रहेगा। मुसलमानोंमें परदेमें रहनेवाली औरतों व उन कूंजड़ियोंमें अन्तर मालूम कीजिये। कूंजड़ियां कितनी निडर हैं, पैसे कमानेमें कितनी चतुर हैं, अपने आप पता लग जावेगा।

शिक्षित और अशिक्षित सभी मनुष्य शिक्षाकी आवश्यकताको महसूस करते हैं। ग्रामीण भाइयों व नागरिकोंमें इतना ही भेद तो है कि ग्रामीण सज्जन स्त्री जाति की शिक्षाको कोई महत्व नहीं देते। इसका कारण यह है कि वे शिक्षाको रूपयेसे तोलते हैं। वे कहते हैं ‘ कि लड़केको तो पढ़ लिख कर कमाके खाना है, लड़कीको कौनसी नौकरी करना है कि जिससे उसे पढ़ाया जाय ’। शहरवाले अच्छी तरह समझ गये हैं कि शिक्षाका जीवनमें क्या स्थान है। चूंकि मेरा विषय ‘ शिक्षा ’ नहीं है इसलिये मैं इस पर विशेष नहीं लिखता पर इतना जरूर कहूंगा कि इसका होना दोनों-स्त्री और पुरुष-के लिये आवश्यक है। इसके बिना पर्दा नहीं उठ सकता और पर्दा उठे बिना शिक्षा नहीं प्राप्त हो सकती। जब शिक्षिता माताएं एवं बहनें अपनी भावी सन्तान को प्रारम्भ से ही ऐसे सांचेमें ढालेंगी कि आगे इस प्रकार की कुप्रथा अपना स्थान ही न पासके तब ही परदा उठ सकेगा। यदि स्वयं माताएं व बहनें ही अशिक्षित हैं, परदा रखती हैं तो वे भावी सन्तान को बिगाड़ेंगी ही, सुधारेंगी नहीं।

मैं यह नहीं कहता कि शिक्षा पाश्चात्य ढंगसे दी जाय। हमारा आदर्श सामने रखते हुए स्त्रियोंको उनकी आवश्यकतानुसार पढ़ा कर गृह कार्य सिखाना आवश्यक है। उनके हृदयमें शिक्षाद्वारा समाज सुधार की लगन पैदा की जाय और यह काम हरएक सुधारक अपने २ घरमें आसानीसे कर भी सकता है।

पर्दा तभी हट सकता है जब स्त्रियां घाघरा—लूंगड़ा छोड़ कर धोती व साड़ियां पहनना शुरू करें। साड़ी पहननेसे उनके पहनने के जेवरमें भी कमी आजायगी। घाघरा पहने हुए आजतक कहीं घूंघट नहीं उठा और साड़ी पहनते हुए औरतों को खूब जेवर पहने नहीं देखा। इससे उनमें स्फूर्ति आजायगी, जीवन एकदम सादा हो जावेगा। कई व्यक्ति यह आक्षेप करते हैं कि फिर वे औरतें एकदम पाश्चात्य ढंगसे रहती हैं, फैशन के फेरमें पड़ कर न घर का काम करती हैं और न खर्च का ध्यान रखती हैं। कुछ हद तक यह बात ठीक है पर जहाँ तक मैं समझता हूँ यदि हर एक व्यक्ति सादगी पसन्द कर अपना जीवन सादा बना अपनी बहन बेटियों को सादगी की शिक्षा दें तो वे उसको अवश्य स्वीकार करेंगी उनको मनवाने के लिये अपना आदर्श उपस्थित करना आवश्यक है।

जेवर बनाने के विपक्ष में मैं नहीं लिख रहा हूं। जेवर बनाना और उन्हें घर पर सुरक्षित रख देना बात दूसरी है और पहन कर गाँव को दिखाना एक दम दूसरी ही बात है। हम रात दिन देखते हैं कि हमारी स्त्रियों का जेवर अपहरण किया जाता है। कई दफा इसके कारण उनकी इज्जत बर्बाद की जाती है। वे स्वयं इसके कारण एक दूसरे से ईर्ष्या रखने लगती हैं। पर जेवर पर्दा रखते हुए और लहंगे व ओढ़नी से नहीं हट सकता। उसके लिये साड़ी व कम जेवर पहनना (अर्थात् सादा जीवन बिताना) अनिवार्य होगा। लिखनेका तात्पर्य यह है कि इसके पूर्णतः उठनेके पहले ही इसकी तरफ कदम बढ़ानेसे ही हमें लाभ प्रतीत होने लग जावेंगे।

कई व्यक्ति यह कहते हैं कि जेवर घरमें रखा रहनेके लिये नहीं बनाया जाता, वह तो पहननेके लिये ही है। यदि एक स्त्री दूसरी स्त्री को अधिक जेवर पहनते देख अपने पतिसे अधिक बनवानेके लिये कहे तो इससे समाजको तो लाभ ही होगा, हानि नहीं। पर जहाँ तक मेरा विचार है इस प्रकार की प्रतियोगिता समाजके लिये हानिकारक है। सब की परिस्थिति सदा एक नहीं रहती। कोई अधिक जेवर पहन सकती है, कोई कम। यदि घरमें जेवरकी कमी या अधिकतासे अशांति रहे तो बतलाइये भावी सन्तान—समाज की आशा, पर उसका क्या प्रभाव पड़ेगा ? कुछ लोगों का विचार है कि घाघरे यद्यपि नुक्सान करते हैं पर साड़ी या धोती रात को तो पहनाई जा सकती है, दिन भर और बाहर जाने पर उसका रखना बड़ा कठिन है। यदि इतनासा ही कठिन है तब तो हम लोगों से समाज सुधार की आशा ही क्या रख सकता है। यह तो पर्दा उठवाने का पहला और सबसे साधारण कदम व मामूली-सा ही त्याग है। यदि स्त्रियों को ईमानदारी से समझाया जाय तो वे इसे मानने को सहर्ष-तैयार हो जायंगी। हाँ, यह बात जुदा है कि आप स्वयं पर्दा उठवाना चाहते हैं या नहीं।

जब उनका पर्दा हट जावेगा तो उन्हें ताजी हवा सेवन करने का आनन्द भी मिल सकेगा। इससे उनके कई रोग दूर हो जावेंगे। ये रोग उनका ही नहीं उनकी भावी सन्तान का स्वास्थ्य भी खराब रखते हैं। वे गुण्डोंसे बचने के लिये अपना उपाय स्वयं ही कर सकेंगी। सुसंगति करनेसे उनके विचार पलटने लगेंगे और इससे अनमेल विवाह, वृद्ध विवाह, कन्या विक्रय, वर विक्रय, बाल विवाह, मौसर इत्यादि फिजूल खर्ची एवं घातक प्रथाएं रोकने के लिये वे भी अपना पूर्ण सहयोग दे सकेंगी। अभी जब उनको इनके दुष्परिणाम पता नहीं, उनको नई दुनियां की हवा लगती नहीं, हम कैसे उनके सहयोग की आशा रख सकते हैं। अभी उनकी इच्छाके विरुद्ध उन्हें रोकना पड़ता है बादमें वह स्वयं रुकनेके साथ २ अपनी भावी सन्तानको भी घातक प्रथाओं में भाग लेनेसे रोकेंगी और उनका भविष्य उज्ज्वल और जीवन सार्थक बनानेके कई प्रयत्न करेंगी। इस प्रकार वह अपनी जिम्मेदारियोंको पूरा करनेमें सफल हो सकेंगी।

हां, एक बात जरूर है। हमें हरएक कार्य करते समय यह बात पूर्णतः ध्यानमें रहे कि हम भारतीय हैं और हमें अपनी सभ्यताका सदुपयोग करना है। वही भारतीय आदर्श माताओं और बहनोंमें भरना है जिससे भावी सन्तान किसी बुरे नतीजे पर न पहुँचे।

इतने लाभ होते हुए भी यदि कोई सज्जन सिर्फ यह कह कर ‘फिर भी प्राचीन प्रथा है इसलिये अच्छी ही है। बड़ेरे मूर्ख नहीं थे कि फिजूल बातें रखते,’ इसे अपनाये रखें तो मैं यही कहूंगा कि वह पूर्णतः लकीर के फकीर हैं। उनमें अपना दिमाग नहीं। वे दूसरों के ही भरोसे अपना गाड़ी चला रहे हैं। क्या पुरानी और क्या नई, हर एक प्रथामें गुण और दोष होते हैं। जिसमें गुणोंकी मात्रा अधिक है उसे हमें अपनाना है और जिसमें हानियां अधिक है उसे छोड़ना है। यह तो समय ही बतला सकता है कि कौनसा रिवाज ठीक है। हाँ, मैं तो स्वयं ही मानता हूं कि बुजुर्ग कमसे कम इस प्रथाको उस समय चलाकर तो बहुत ही बुद्धिमान साबित हुए अन्यथा हमारी बहूबेटियों की इज्जत कौड़ीके भावमें बिक जाती। पर उन्होंने यह नहीं लिखा कि हमारी सन्तान को इस प्रथाको नहीं हटाना चाहिये। मेरा विचार है कि उन बेचारोंको यह स्वप्नमें भी ख्याल नहीं था कि उनकी भावी सन्तान ऐसी कायर और लकीरकी फकीर होगी कि वह अपने दिमागसे समयानुकूल बात ही न सोच सकेगी और हमारी कारणवश चलाई हुई प्रथाको ही पूर्ण सचाई समझ लेगी। यदि उन्हें पता होता कि यही प्रथा घातक रूप धारण कर वर्षों तक हमें गुलामीके बन्धनमें बांध देगी, हमें अपने कल्याण करनेमें बाधा डालेगी तो, मैं समझता हूँ, वे इस हेय प्रथासे अपना बचाव न कर कोई और ही उपाय सोचते।

माता-पिता के तुल्य सास-ससुर के सामने हाथ भर लम्बा घूंघट निकाल कर बैठ जाना और कोई बात पूछने पर बैलको हांकने के समान ‘ टच टच ’ करके जवाब देने में ही पर्दा नहीं है। यह तो पर्दे का पाप है। ‘ आंखो की शर्म ही परदा है ’। हमें अपनी माताओं व बहनों को परदे की वास्तविकता बतलानी चाहिये जिससे वे सार्थक बात को प्राप्त करने का प्रयत्न शुरू कर दें। उन्हें यह बतलाना भी अत्यन्त आवश्यक है कि इसी से हमारा शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास रुका हुआ है और हम दिन-प्रति दिन गिरते जा रहे हैं। उनकी सुशिक्षासे प्राप्त हुई सुबुद्धि हमारी सब बुराइयों को धीरे २ निकाल बाहर करेगी।

राजस्थानमें जिन २ सज्जनोंके यहाँ इसके उठानेका श्रीगणेश नहीं हुआ है उन्हें आजसे ही धैर्यके साथ सहानुभूति पूर्वक इमानदारीसे प्रयत्न शुरू कर देना चाहिये। मैं मानता हूँ कि इसका उठाना बड़ी टेढ़ी खीर है पर जहाँ तक मेरा विचार है यदि ठीक ढंगसे इस पर चोट की जाय तो जल्दी ही इसका नाश हो जावेगा। घर पर माताओं व बहनों को समझाकर धोती पहनाना शुरू करना चाहिये। यदि वे दिनमें पहनने में आना कानी करती हैं तो रात को ही सही, पर शुरू करवा दीजिये। फिर सुबह शाम, फिर बाहर जाते समय भी और इस प्रकार प्रीति भोजों में भी वे धोती में ही जांय, उन्हें इतनी दृढ़ बना दीजिये। बिना शिक्षा दिये उनमें इतनी हिम्मत आना कठिन होगा। जब वे धोती पहनना शुरू कर

(पृष्ठ ५ के कालम ३ पर)

★ शिक्षा प्रसार विषयक योजना पर कुछ विचार ★

बालमंदिरोंकी भी जरूरत है

योजना आदर्श, जरूरी और समाजकी दृष्टिसे हितकारक तथा कार्यरूपमें परिणित हो सके, ऐसी है।

योजना की उपयुक्तता शब्दोंमें मैं नहीं लिख सकता। योजना सर्वव्यापी है इस बारेमें कुछ भी संदेह नहीं।

इस योजनामें नीचे लिखी हुई बातें और भी यदि जोड दी जांय तो मेरे ख्यालसे सोनेमें सुगन्ध का काम हो जायगा।

केन्द्रीय अखिल भारतीय शिक्षा संघकी ओरसे एक वार्षिक वादविवाद रखा जाय जिसमें सभी प्रान्तोंके दो-दो नुमायन्दे भाग लें। और कामयाब होनेवाले प्रान्तको पारितोषिक दिया जाय। उसी मुताबिक उसी वक्त बिना तय्यारी भाषण देनेकी प्रतियोगिता भी रखी जाय जिसमें प्रथम तथा द्वितीय आनेवालेको पुरस्कार दिये जांय।

केन्द्रीय संघ की ओर से एक मासिक चलाया जाय जिसमें विभिन्न प्रान्तीय माहेश्वरी विद्वानोंके लेख हों तथा-प्रान्तीय संघों की ओर से तथा केन्द्रीय संघ की ओर से किये हुए कार्य का उसमें सार आया करे। यह मासिक माहेश्वरी विद्यार्थीजगतके सामने आदर्श रखने तथा समाजमें जागृति निर्माण करने का काम करेगा।

जिन २ शहरोंमें माहेश्वरी भाईयों की संख्या अधिक हो वहां परीक्षण के तौर पर ४।५ जगह केन्द्रीय संघ की ओर से बालक मंदिर चलाएं जाए। आपको मालूम ही है कि ४ से लगाकर ७ वर्ष तक की उमरके बच्चों का समय जिस अच्छे वातावरणमें बीतना चाहिये उसमें नहीं बीतता। घर पर बच्चे न खेलने लायक खेल तथा न करने लायक बातें करते है; खासकर मातापिताकी गैरहाजिरीमें। मातापिता अपने२ काममें लगे रहने सें अपने छोटे बच्चोंकी तरफ ज्यादा ध्यान नहीं दे सकते। इस लिये ऐसे बालक-मंदिरों की अवश्यकता है जहां कि उपर्युक्त उमरके बच्चे बालक-मंदिरोंमें रोज ११ से लगाकर ४ बजे तक जावें तथा वहां अच्छे वातावरणमें अपना समय व्यतीत करें।

फंड इकट्ठे करनेकी बाबत आपकी योजना अत्युत्तम है। किन्तु इस बारेमें मेरे विचार हैं कि केन्द्रीय संघकी ओरसे एक लॉटरी रखी जाय जिसमें आया हुआ सारा पैसा इस संघको दिया जाय। इसके १) २) ५) रूपये के टिकिट रखे जांय जिनको कि आम माहेश्वरी जनता खरीदे। 'लकी' नंबरको कुछ पुरस्कार भी दिये जांय। इस तरह चन्दा इकट्ठे करनेमें काफी फायदा उठा सकते हैं। लोग इसका टिकिट मदद देनेके इरादेसे खरीद सकते हैं। खुदको कुछ पुरस्कार मिलेगा इस इरादेसे भी खरीद सकते हैं। जो भाई ज्यादा रकम चन्देके रूपमें नहीं दे सकते उनके लिये इस तरहसे पैसे देनेके काफी सहूलियत रहेंगी।

अकोला] **माणिकलाल सोमाणी,**
बी. ए. एलएल. बी.

छात्रवृत्तियाँ छात्राओं को भी मिलें

शिक्षा प्रसार योजना जैसा कि पढ़ने से ज्ञात कर सकी, उद्देश्यानुसार अति उत्तम है।

आरम्भ के विचारसे धनराशि उपयुक्त है परन्तु इसका सन्देश देहातों तथा छोटे कस्बों तक पहुँचाने के लिये एक बड़े संगठन की आवश्यकता होगी जो इस वर्त्तमान कार्यक्रम को पूर्ण रूप से सुधारने पर ही प्राप्त हो सकेगा।

मेरे विचार में क्षेत्र अभी अधिक विशाल न बना कर केवल अपने समाज तक ही सीमित रक्खा जाए। योजना में जो विभिन्न कार्य रक्खे गए हैं वे ठीक हैं परन्तु धन का विनियोग एक नियत धनराशि पर न रख कर उसमें आवश्यकतानुसार घटा बढ़ी जारी रक्खी जाए।

जैसा मैं विचार सकी, छात्रवृत्तियों के निर्णय में पुनः विचार की आवश्यकता है। देश तथा विदेश के लिए दी जाने वाली छात्रवृत्तियों में छात्रों के साथ छात्राओं के लिए भी स्थान होना चाहिए। किसी भी समाज की उन्नति के लिए स्त्री पुरुष दोनों का ही सहयोग आवश्यक है और विशेषकर स्त्रियों की अधिक जिम्मेदारी है क्योंकि उनके सुशिक्षित रहने से सन्तान भी हर प्रकारसे योग्य होगी। मातृत्वका प्रभाव ही सन्तान पर अधिक होता है।

छात्राओंको उनके योग्य उपयोगी विषयों पर ही छात्रवृत्तियां दी जाएँ जैसे संगीत, ड्राईंग, गृहविज्ञान, धर्मशिक्षा आदि। विदेशी छात्रवृत्तियाँ, यदि छात्राएँ उस योग्यता तक पहुँच गई हैं कि वे विदेश जाकर उसका अधिक उपयोग करें, तो केवल चुने हुए विषयोंके लिए ही देना उपयुक्त होगा जैसे गृहविज्ञान (Domestic science), शिक्षा-विभाग सम्बन्धी पढ़ाई (Higher University Education), पेंटिंग (Painting), डाक्टरी या कोई अन्य उपयोगी विषय।

फीरोज़पुर]

चंद्रकला लाहोटी

'पैसा' फण्ड से धन संग्रह कीजिए

ता. २१ जुलाईके अंकमें प्रकाशित शिक्षा प्रसार विषयक योजना ठीक है। लेकिन आजके माहेश्वरियोंमें संगठनके अभावके कारण तथा धन देनेवाले कम होनेसे इतनी बड़ी रकम पूरी होना मुश्किल है। शिक्षण दिया जाय इसमें मतभेद नहीं। वह तो हर हालतमें दिया ही जाना चाहिए। लेकिन कार्यकर्त्ताओंमें संगठनके अभावमें इतनी बड़ी स्कीम चलाना सम्भव नहीं। फिर भी दान देनेकी भावना तो माहेश्वरियोंमें है ही। अतः यदि निम्न योजनाके अनुसार काम किया जाय तो अवश्य ही लाभ होगा।

सर्व प्रथम माहेश्वरियोंका एक मण्डल स्थापित हो। उसके कार्यकारी मण्डल द्वारा प्रान्त-प्रान्तमें हेडक्वार्टर्स हों। हरेक प्रान्तमें जिला मण्डल हों। उन मण्डलोंके सदस्यों द्वारा योजनाको अमलमें लाया जायगा। हरेक माहेश्वरी भाई जो महासभा की उन्नति की इच्छा रखता हो एक पेटी (जो मण्डल द्वारा दी जायगी) अपनी दुकान या घरमें रखे और उसमें हर रोज एक पैसा डाले। महीने या दो महीने बाद जब मंडल द्वारा पेटी खोली जायगी तब जितने दिन बाद पेटी खुली हो उतने पैसे पूरे लिये जांय। उस पेटी पर एक कार्ड रहेगा जिसपर दस्तखत करके रकम लिख दी जायगी। यदि किसीकी पेटीमें रकम ज्यादा निकले तो वह 'दान' में गिनी जाय। इस प्रकार एक पेटीसे एकमासमें साढ़े सात आना इकट्ठा होगा और बम्बई प्रान्तमें हरेक जिलेमें यदि ९०० पेटियां ऐसी हों तो एक मासमें एक जिलेसे ९३॥।) व एक बरसमें ११२५) रु. होंगे। बम्बई प्रान्तके ११ जिलोंमें से ८ जिलोंमें माहेश्वरियों की बहुत आबादी है अतः इन जिलोंमें यदि संगठनपूर्वक काम हो तो कुल ९०००) रु. जमा हो जायगा।

इस फंडका नाम **माहेश्वरी सहायक निधि** हो। जो भाई पेटी रखें व नियमसे एक वर्षकी पूरी रकम दें वे इसके सदस्य होंगे। इसकी जिला कमेटियां रकम वसूल कर प्रान्तीय हेड आफिसमें भेज देंगी। ९०००) रु० जो इकट्ठा होगा उसका विनियोग जिला कमेटियोंकी सूचना व प्रान्तीय बोर्डकी सलाहसे किया जाय। मेरी रायमें इस निधिके चार विनियोग हों।

(१) जो माहेश्वरी लड़के पढ़ना चाहते हों उन्हें कपड़ा, पुस्तक तथा अन्नके रूपमें सहायता देनेके लिए २२५०) रु. रखा जाय। इसके लिए प्रार्थना पत्रके साथ निधिके दो जिला सदस्योंकी सिफारिश होना जरूरी है।

(२) माहेश्वरी समाजकी गरीब असहाय विधवा स्त्रियों व वृद्ध स्त्रीपुरुषों तथा अनाथ बालकोंको एक वर्षके अन्न वस्त्रादिके रूपमें सहायता देनेको २२५०) रु. रखा जाय।

(३) माहेश्वरी समाजमें सामाजिक, धार्मिक एवं राजनैतिक कार्यों व सुधारों तथा सामाजिक एकताके लिए प्रचारके निमित्त २२५०) रु. खर्च किया जाय।

(शेष पृष्ठ २४ के कालम ३ पर)

(पृष्ठ ११ का शेषांश)

हमारे आशावादी भाई आज यह मानने को तैयार हैं कि खादी ही बेकारी दूर कर सकती है। लेकिन वे खादीको केवल इसी लिये नहीं अपनाते कि भारत के स्वतंत्र होजानेके बाद खादी और ग्रामोद्योग अपने वेगमें बहुत कम होनेके कारण भारतको कभी आगे नहीं बढ़ा सकते। उस वक्त तो हमें बड़े प्रमाणपर धंधों की ज़रूरत पड़ेगी। हमारे इन भाइयोंका यह विचार गलत है। क्यों कि जब तक हम खादी व ग्रामोद्योगों से काम ले सकते हैं, और जब तक हम दूसरी तरफ प्रगति नहीं कर सकते तबतक हमें इन्हीं विधायक कार्यों को जारी रखना चाहिये। जब हमारी सरकार हो जाय तब हम इन छोटे धंधों का खेल खतम कर उन्हीं मज़दूरों को मिलों आदिमें स्थान दे सकते हैं। लेकिन यह परिस्थिति जब तक नहीं आती तब तक तो इन्हीं ग्रामोद्योगोंको अपनाकर उन्हे बढ़ाना चाहिये। वरना न बेकारी का प्रश्न हल होगा, न पेटभर रोटी मिलेगी।

हमें यह भी ख्याल रखना होगा कि, स्वतंत्र होनेके बाद भी, इन बड़े धंधोंके बढ़ते हुए क्षेत्रकी कुछ मर्यादा रखना होगी। अन्यथा एक व्यक्ति या एक समाज प्रवीणता पाकर अपने बलसे प्रजातंत्रशाही को नष्ट कर सकता है। तब व्यक्ति का कोई अस्तित्व नहीं रहेगा। उसे रोटी खाने भर अधिकार होगा। और यदि हमें इस डरसे बचना है तो हमें ग्रामोद्योगों को फिर भी जारी रखना होगा ताकि पूंजीवादका प्राधान्य न हो सके। आज प्रजातंत्र राष्ट्रों को पूंजीवाद के प्राधान्य के कारण दो बातोंसे लड़ना पड़ता है। एक पूंजीवालों द्वारा गरीबों का आर्थिक शोषण और दूसरी इस शोषण की वजहसे हिंसा। ग्रामोद्योग प्रजातंत्र राज्यको इन दो बातोंसे बचाता है। पूंजीवादका प्राधान्य न होनेसे देशका आर्थिक शोषण नहीं होता, जो हिंसाका मुख्य कारण है। और राजाजीका यह कथन कि ग्रामोद्योगोंके कारण यह मशीन प्रधान युद्ध भी न हो सकेगा, सच है।

अतः हमें मानना होगा कि खादी ही आज भारतका मुख्य साधन हो सकती है। वही आज भारतके सामयिक प्रश्नोंका हल कर सकती है। वही आजके मशीनयुद्ध बंद कर अंतर्राष्ट्रीय हिंसा बंद कर सकती है। आज खादी और ग्रामोद्योगोंकी महात्माजीने जो पुनरावृत्ति की है, वह केवल महात्माजीका ही भूषण नहीं, भारतका भूषण है। आशा है हरेक भारतवासी अपने इन भूषणोंको अपनायेगा।

[धामणगांव

सामाजिक कुरीतियां

★ श्रीमती नर्मदा बहन पारिख ★

जो समाज कुरिवाजोंका पोषण करता है वह प्रगतिको रोकता है, प्रकृति द्वारा प्राप्त स्वतंत्रताका नाश करता है, उन्नतिको रोकता है और उसके प्राणघातक परिणामोंको सहता है। जब कि वर्तमान समय संसारको स्वतंत्रताकी प्रेरणा दे रहा है, नवजीवन दे रहा है, तब भी हिन्दु समाजमें विधवा विवाह पर प्रतिबन्ध लगा हुआ है। आज ऊंची जातियोंमें चौदह और इससे अधिक उम्रकी लाखों विधवाओंसे जबर्दस्ती वैधव्य जीवन पालन कराया जाता है। यदि कोई बहन जातिके रिवाजोंका विरोध कर पुनर्विवाह करती है तो उसकी जाति और उसके सम्बन्धी उसका आर्थिक और सामाजिक बहिष्कार कर देते हैं।

समाज चालीस–पचास वर्षके वृद्धको चाहे जितनी बार और चाहे जितनी स्त्रियोंसे विवाह करने की इजाजत देता है। इस प्रकारके विवाह कन्या विक्रयको उत्तेजन देते हैं। कन्या का पिता आर्थिक परिस्थिति खराब होनेके कारण अपनी कन्याका, एक वस्तुकी तरह जो उसकी अधिक कीमत देता है उसके साथ विवाह कर देता है। पूंजीपति अपनी वासना पूर्ति के लिए और वृद्धावस्थामें अपनी सेवा टहल करवानेके लिये रिवाजोंके नाम पर सुकुमार कन्याको खरीद लेते हैं। उनकी उम्रमें पचीस-तीस वर्ष या इससे भी अधिक अन्तर होता है। इन तथाकथित युगलों के जब दिल नहीं मिलते तब प्रेम के लिए तो फिर स्थान कहां हो सकता है? इस तरहका सामाजिक अन्याय अब भी हम चलाये रखना चाहते हैं।

बाल विवाह

बाल विवाहमें तेरह-चौदह वर्ष की सुकुमार कन्या का, जिसे लग्न की पवित्रता, व जिम्मेवारी का कोई ज्ञान नहीं होता, उसके मातापिता अपनी पसन्द के किसी व्यक्ति के साथ विवाह कर उसे की बढ़ती हुई जवानी व इच्छाओंको दबाने के लिए उसे मजबूर करते हैं। माता-पिता अपने लड़के-लड़कियों के विवाह का मज़ा लेने के लिए, और समाजमें अपना बड़प्पन बनाये रखने के लिए अपने बच्चों का विवाह कर अपने को जवाबदारीसे मुक्त हुआ मानते हैं। अज्ञान नवोढा पर घर के काम का सारा बोझ आ पड़ता है। सास जेठानी, ननद और अन्य व्यक्ति उसपर हुकूमत करने का प्रयत्न करते हैं। लड़के को बहकाकर नवोढ़ा को पिटवाते हैं और यदि इस नवोढ़ाके मातापिताकी ओरसे कोई करियावर कम होता है तो ताने मारते हैं। यह सारे दुःख उसे चुपचाप सहन करने होते हैं क्योंकि उसका पति स्कूल-कालेजमें पढ़ता होता है और बहुतबार वह अपनी स्त्री तथा बालकोंके साथ स्वतंत्र रहकर जीवन निर्वाह करनेके लिये असमर्थ होता है। इस प्रकार वह अपनी स्त्री और बच्चोंको दुःखसे मुक्त करनेके बजाय उनके दुःखका कारण होजाता है।

हिन्दु समाजमें अधिकांश माता पिता अपनी कन्याओंको न तो स्कूल-कॉलेजमें पढ़नेका अवसर देते हैं और न उन्हें कोई औद्योगिक शिक्षा ही देते हैं जिससे अवसर आने पर वह अपने पतिकी सहायता कर सके और अपनी उन्नति कर सके। जब स्त्री जाति व समाजसे लड़कर आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करेगी तब ही वह अबला से सबला बन सकेगी।

परदा

श्वसुर से परदा किया जाता है और कहीं कहीं तो उन स्त्रियों से भी परदा किया जाता है जिनके साथ रह कर उसे अपना जीवन बिताना है। इस प्रकार उसे अन्त्यजों से भी गया-बीता जीवन बिताना होता है। अंत्यजों से बातचीत करने की स्वतंत्रता रहती है पर घर की इस अंत्यजा का हाल तो यह होता है कि आदमी मरता हो या बीमार हो तब भी उससे बातचीत नहीं की जा सकती, फिर सेवा चाकरी की तो बात ही कहां रहती है। यह रिवाज मुट्ठी भर लोगों को छोड़ कर हिन्दु-जातिमें सर्वत्र ही प्रचलित है। शिक्षित भाई-बहनों को इस रिवाज को दूर करनेके लिये आगे आना चाहिए क्योंकि खराब आर्थिक परिस्थिति के कारण बम्बई जैसे शहर में आठ–दस या इससे भी अधिक व्यक्तियोंको एक-दो कमरोंमें अपना गुजर करना पड़ता है। कहीं कहीं तो सूर्यका प्रवेश भी नहीं हो सकता, ऐसे अंधेरे कमरे होते हैं। ऐसे स्थानोंमें, डूबते हुए मनुष्य की तरह, सांसारिक बंधनोंमें दबी हुई अबला अपना

(शेष पृष्ठ १० के कालम ३ पर)

राय साहेब रेखचंद मोहता
स्पिनिंग ऐण्ड वीविंग मिल्स
हिंगणघाट (सी. पी.)
हिंगणघाट की महशूर रूई से बनाया हुआ सुन्दर और टिकाऊ कपड़ा इस्तेमाल कीजिये

★ ★ ★

हमारी शाखाएँ
मथुरादास गिरधरदास
नागपुर, गोंदिया, बारासिवनी
रा. सा. रेखचंद मोहता
राजनंदगांव, द्रुग, भाटापारा, अकलतारा
मथुरादास मोहता
झारसुगड़ा (B. N. R.)

बाज़ार में कपड़ा खरीदते समय इसी मिलकी छाप देखकर खरीदिये और अपने पैसोंका सदुपयोग करके प्रसन्नता प्राप्त कीजिये।

इस मिल में हर प्रकारका सूत व धुला कोरा कपड़ा, लाँगक्लाथ, शर्टिंग, धोतियां, साड़ियां, हरक, गादीपाट, सफेद एवं रंगीन चादरें, टावेल्स, टेबल क्लाथ आदि कपड़ा बनाया जाता है।

हमारी खास विशेषताएँ
इस मिल में कपड़ेपर माड़ी बिलकुल आवश्यक तथा बहुत कम प्रमाणमें दी जाती है। इसलिये निख़ालिस सूत कपड़ेमें रहने के कारण कपड़ा धोनेके बाद बहुत अधिक टिकाऊ तथा मुलायम एवं सुन्दर निकलता है।

ट्रेडमार्क
लक्ष्मीनाथजी की छाप
पान छाप
● सूतका ट्रेडमार्क ●
राय साहेब रेखचंद मोहता
(सेठ छाप)
★

साधारण जनता की परिस्थिति एवं उसकी मांग की ओर विशेष ध्यान देकर कपड़ा बनाया जाता है।

कमला मिल के कपड़े इस्तेमाल करें।

आर्टिफिशियल सिल्क ज्योर्जेट
साडियां, साडी क्लाथ और
शर्टिंग कपड़ों के लिये
यह मिल अपनी
विशेषता
रखती

हेड आफिसः—
गोयनका हाउस
१४५, मुक्ताराम बावू स्ट्रीट,
कलकत्ता

हर प्रकार की धोती, साडी,
कोरा लॉंगक्लॉथ,
कोटिंग, केनवास,
सूसी, आदि
आदि

कमला मिल्स लिमिटेड

तुलसी पाइप रोड, परेल, बम्बई. टे. नं. ६००६४—६५

विक्री-विभागः—

बम्बई : टे. नं. २६९४५
मूलजी जेठा मार्केट

कलकत्ता :
सूतापट्टी

लोकप्रियताका अकाट्य प्रमाण] रूबी प्रगति पथपर [दृढ़ता का सच्चा सबूत

१००%

- स्वदेशी
- टिकाऊ
- दृढ़

बीमा कंपनी

प्रगतिके आंकड़े

विभाग	प्रीमियमकी आवक	
	सन् १९३७	सन् १९४०
आग	रु. ६,५५,०४७	रु. १४,१७,०११
मोटर और अकस्मात	रु. ७३,९८६	रु. २,४६,७८१
समुद्रीय	रु. ७२,२८१	रु. ४,६६,५९०
पूंजी	रु. १७,९४,३४२	रु. २७,९४,१४५

जिंदगी १९४० के प्रथम वर्ष में किया
गया कामकाज ....रु. ३०,६५,१००

- आग
- मोटर
- अकस्मात्
- जिंदगी
- समुद्रीय

और

- मजदूरोंके बदले आदि के बीमेका कामकाज किया जाता है

रूबी जनरल इन्श्युरंस कं. लि.

टे. नं. २०५६० और ३१९२९
टेलिग्राम्स 'सनशाइन'
'SUNSHINE'

चेअरमैन
श्री बी. एम. बिड़ला

जनरल मैनेजर इनचार्ज, बम्बई डिविज़न
श्री वी. के. सेतलवाड़

ऑफिस—४५-४७ अपोलो स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई

हैदराबाद स्टेट मारवाड़ी (राजस्थानी) सम्मेलन

औरंगाबादमें उत्साहपूर्ण वातावरण

तारीख १२, १३ व १४ नवम्बर को औरंगाबादमें हैदराबाद स्टेट मारवाड़ी (राजस्थान) सम्मेलन बड़ी धूमधाम और उत्साहके साथ सम्पन्न हुआ।

ता. १२ को ४॥ बजे सुबह श्री राजा नारायणलालजी पित्ती वे ९। बजे हैदराबादसे अन्य सब मेहमान औरंगाबाद पधारे। हैदराबाद वालों का स्वागत सेलू, मानवत, परतूर और सबसे अच्छा जालनामें हुआ। जालनामें उन्हें दुग्धपान व नाश्ता कराया गया। हैदराबादसे १५० के लगभग प्रतिनिधि आये थे। प्रमुख राजा पन्नालालजी पित्ती, राजा गोवर्धनलालजी पित्ती, राजा बंकटलालजी बद्रूका, राजा बंसीलालजी बद्रूका, राजा इन्द्रमलजी लूणिया, सेठ रघुनाथमलजी बैंकर, सेठ मोतीलालजी कोठारी सम्पादक हैद्राबाद बुलेटिन, राजा नारायणदासजी पित्ती, सेठ मेघराजजी कोठारी, सेठ श्रीकिशनजी धूत, राजा गोवर्धनजी राठी, व सेठ रामगोपालजी थे।

अध्यक्षोंका स्वागत

औरंगाबाद स्टेशनपर युवक सम्मेलनके अध्यक्ष श्री हरिश्चंद्रजी हेडा व महिला-सम्मेलन की अध्यक्षा श्रीमती रतनदेवीजी राठी का शानदार स्वागत हुआ। स्वागतके लिए जालना स्टेशनपर ३०० से व औरंगाबादपर ५०० से अधिक राजस्थानी उपस्थित थे। दो बजे तीनों अध्यक्षों का जुलूस निकाला गया। जुलूसमें ७-८ हजार आदमी सम्मिलित थे। जुलूस अत्यन्त प्रभावशाली रहा। कतिपय स्थानोंपर अध्यक्षोंका स्वागत इत्रपान आदि से हुआ।

ठीक ३॥ बजे कार्यवाही शुरू हुई। सर्व प्रथम स्वागताध्यक्ष श्री मानिकचंदजी पहाड़ेकी प्रार्थनापर कुमारी पानकुंवर कोटेचाने खादी प्रदर्शनीका उद्घाटन किया। स्वागताध्यक्षके भाषणके बाद श्री गुलाबचंदजी नागोरीने स्वागत गान गाया जो बहुत लोक प्रिय हो गया। अध्यक्षीय भाषणके बाद आला हज़रतके प्रति अटल वफ़ादारीका प्रस्तावकर पहली बैठक समाप्त हुई। रातको विषय निर्वाचिनीकी बैठक हुई। दूसरे दिन सुबह ९ बजेसे तथा दोपहरमें ३ बजेसे खुला अधिवेशन हुआ। रातको पुनः विषय निर्वाचिनीकी बैठक हुई। तथा तीसरे दिन भी इसी प्रकार कार्यवाही हुई।

अध्यक्ष राजा नारायणलालजी पित्तीने सुचारू ढंगसे सभाका संचालन किया। (भाषण अन्यत्र दिया गया है।)

विधवा विवाहके प्रस्तावपर सरगर्मी

विषय निर्वाचिनी सभाकी बैठक में ता. १३ की रातको श्री हरिश्चंद्रजी हेडाने विधवाविवाहका प्रस्ताव पेश किया। प्रस्तावकने बताया कि यदि कोई विधवा त्याग तथा संयम से जीवन व्यतीत करे तो वह हम सभीकी श्रद्धा तथा आदर की पात्र है परन्तु विवाह एक आवश्यकता की पूर्ति करता है और यह आवश्यकता सभीके लिए हो सकती है। अतः विधवाओंको इस अधिकारसे वंचित रखना कदापि न्यायोचित नहीं हो सकता। श्री गुलाबचंदजी नागोरीने इसका समर्थन किया। श्री रूपचंदजी सिकचीने इसका विरोध करते हुए बताया कि औरंगाबादका पूर्ण मत इस प्रस्तावके विरोधमें है। इसका तात्कालिक खण्डन श्री माणिकचंदजी देवड़ाने किया। आपने कहा कि औरंगाबादमें बहुमत प्रस्तावके पक्षमें है। श्री शेषमलजी देवड़ाने प्रस्तावका विरोध करते हुए बताया कि उन्हें यह आश्वासन दिया गया था कि यह प्रस्ताव सम्मेलनमें नहीं लाया जायगा। इस प्रस्तावपर औरंगाबादका धनिक वर्ग अत्यंत क्षुब्ध हो उठा और वह सम्मेलनसे वाक-आऊट करनेका निश्चय कर रहा था कि श्रीमती ज्ञानकुमारी हेडाने ऐसे क्षुब्ध वातावरणको एक सुन्दर भाषणसे सन्तोषित किया। आपने बताया कि इस प्रस्तावका उद्देश्य केवल इतना ही है कि हम लोग विधवाओंको इन्सान समझें; बालविधवाएं जब जेवरोंसे लदी हुई और असात्विक वातावरणमें रहती हैं तब उनसे त्याग और संयमपूर्ण जीवनकी आशा करना व्यर्थ है। अगर हम चाहते हैं कि हमारी विधवा बहुएं तथा बेटियें भारतका आदर्श स्थापित करें तो हमारा यह कर्तव्य हो जाता है कि हम सर्व प्रथम उनकी सुशिक्षाका प्रबन्ध करें। सुशिक्षाका परिणाम यह होगा कि न सिर्फ उनमें सात्विक जीवन आयेगा, अपितु समाजसेवाकी ओर भी वे अग्रसर होंगी। इसके पश्चात् प्रस्तावक महोदयने अपने भाषणमें यह स्पष्ट किया कि यद्यपि सारे समाजका बहुमत प्रस्तावके पक्षमें है तब भी युवकोंकी यह कामना है कि सारे समाजको साथ लेकर चलें। इस प्रस्तावका विरोध प्रायः वृद्ध करते हैं परन्तु खुशी की बात है कि वृद्धोंमें भी एक वर्ग ऐसा निर्माण हो चुका है जिसने वर्तमान दूषित सामाजिक व्यवस्थाके कारण इस आवश्यकताको स्वीकार किया है। यह वर्ग गरीब अविवाहित वृद्धोंका है। यह वर्ग संगठित नहीं इस लिए इसकी आवाज अभी समाजके कानोंमें नहीं पहुंच रही। दूसरा वर्ग ऐसे वृद्धोंका है जिन्हें अपने जीवनमें विधवा विवाहकी कभी आवश्यकता प्रतीत नहीं हुई। किन्तु उन्होंने देखा कि विधवा विवाह न होनेके कारण होनहार, कमाऊ किन्तु गरीब युवक १०-१५ हजारमें एक लड़कीको खरीदकर विवाह नहीं कर सकते। यह वर्ग विधवा विवाहका समर्थन खुले तौरपर तो नहीं करता परन्तु जिन्होंने विधवा विवाह किया है उनपर समाजकी ओरसे अत्याचार न होने देनेका सबसे अधिक प्रयत्न करता है। तीसरा वर्ग ऐसे धनिक वृद्धोंका है जो समाजका दुःख देखनेसे इन्कार करते हैं और यही लोग विधवा विवाहके विरोधमें सबसे आगे और सबसे अधिक गर्म रहते हैं। इसके बाद प्रस्तावकने प्रस्ताव वापिस ले लिया।

युवकोंकी अनियमित सभा

युवक सम्मेलनके लिए निजाम सरकारकी आज्ञा न मिलनेसे विशेष कर युवकोंमें क्षोभ पैदा हो गया था। निजाम सरकारको कार्यकर्ताओंकी ओरसे आश्वासन दिया गया था कि युवक सम्मेलनमें राजनैतिक कार्य नहीं होगा। इसपर भी इजाजत नहीं मिली। युवकोंके आग्रह पर उनकी एक Informal meeting १३ तारीखको हुई जिसमें २०० से ज्यादा युवक बहुत ही स्वल्पकालिक सूचना पर उपस्थित हो गये। उक्त सभामें श्री हरिश्चन्द्रजी हेड़ाने अपने भाषणमें स्पष्ट किया कि निजाम प्रान्तमें सर्वव्यापी जागृति हो चुकी है। समाज नवीन सुधारोंको अपनाने के लिए तय्यार है। विरोध नाम मात्र का रह गया है। यही कारण है कि औरंगाबाद तथा परभणी की माहेश्वरी पंचायतोंने औसर मौसर कतई बन्द कर दिया है और दूसरे स्थानों, हिंगोली, नान्देड़, बसमतनगर आदि के पंचोंने भी मौसर न करने का विरोध करना छोड़-सा दिया है। श्री इन्द्रमलजी लूणिया व श्री रघुनाथमलजी बैंकर ७-८ वर्ष पूर्व मौसर न करके कतिपयस्थानों के लिए एक सन्मार्ग खोल चुके हैं। यदि माहेश्वरी तथा अग्रवाल धनिक भी इस पथ के अनुसरण का साहस दिखावें तो निजाम प्रान्तमें मौसर केवल भूत कालकी वस्तु रह जाती। इसी प्रकार पर्दे का विरोध भी बहुत ही कम रहा है। अतः युवकों की जिम्मेवारी बढ़ जाती है और अपने विचारों पर अमल करना लाजिमी हो जाता है। परन्तु युवकों के लिए यह नीति स्वीकार करना ही अधिक श्रेयस्कर होगा कि वे धनिक व वृद्ध कार्यकर्ताओंको, जो कुछ हद तक आगे बढ़ कर काम करना चाहते हैं मारवाड़ी सम्मेलन जैसी बड़ी-बड़ी संस्थाओं का संचालन पूर्णतया करने दें। युवक कार्यकर्त्ताओंको चाहिए कि इन प्रभावशाली महानुभावों के साथ पूरा २ सहयोग करें परन्तु उन्हें अपने सिद्धांतोंसे या उस पर अमल करनेसे जरा भी पीछे नहीं हटना चाहिए। उन्हें अपना आन्दोलन मारवाड़ी मण्डल जैसी दूसरी संस्थाओंके द्वारा करना चाहिए। भाषणके अन्तमें श्री हेड़ाजीने एक गम्भीर सूचना दी कि प्रायः ऐसा होता है कि युवक एक अच्छे निश्चय की घोषणा करते हैं और कुछ समय पश्चात् दूसरे विपरीत आचरण करते दीख पड़ते हैं। इसके फलस्वरूप सारा युवक समाज बदनाम होता है और हमारे कार्यमें कुछ शिथिलता व निरुत्साह आने लगता है। अतः ऐसे युवकोंका यह कर्तव्य हो जाता है कि वे पब्लिक वक्तव्यों द्वारा यह स्पष्ट कर दें कि क्यों वह अपने विचारोंपर अमल नहीं कर सक रहे। इससे उनकी स्थिति भी स्पष्ट बनी रहेगी और आन्दोलनमें भी बाधा नहीं पड़ेगी।

श्री दामोदरदासजी मून्दड़ाने भी एक बहुत ही सुन्दर और सामयिक भाषण दिया।

महिला सम्मेलनकी प्रथम बैठक १३ ता. को सुबह हुई। और दूसरी बैठक १५ ता. की प्रातःकाल हुई। दोनों बैठकोंमें महिलाओंकी उपस्थिति तीन-चार सौ की रही। निजाम सरकारने उक्त परिषद्को सम्मेलनके पण्डालमें करनेकी इज़ाजत नहीं दी थी अतः कार्यकर्त्ताओं व महिलाओंको बड़ी असुविधा रही। (अध्यक्षीय भाषण अन्यत्र दिया गया है।)

मारवाड़ी सम्मेलनका नवीन निर्वाचन इस प्रकार हुआ—

अध्यक्ष—श्री राजा नारायणलालजी पित्ती
उपाध्यक्ष—श्री मानिकचंदजी पहाड़े
प्रधानमंत्री—श्री राजा लक्ष्मीनिवासजी गनेरीवाल,
सहायकमंत्री—श्री लक्ष्मणदासजी गुप्ता
,, श्री ऋषभचंन्द्रजी जैन
कोषाध्यक्ष—श्री राजा बंकटलालजी बद्रूका

महिला सम्मेलनका निर्वाचन—

अध्यक्षा—श्रीमती रतनदेवीजी राठी
उपाध्यक्षा—श्रीमती मीरादेवीजी मूंदड़ा
प्रधानमन्त्राणी श्रीमती पानकुंवरजी कोटेचा
सहकारी मन्त्राणी—श्रीमती ज्ञानकुमारीजी हेड़ा
,, ,, ……………

मारवाडी सम्मेलन को अन्य समाजों के लोगों की पूरी २ सहानुभूति व सहकार प्राप्त था। सुप्रसिद्ध कांग्रेसी नेता मौलवी सिराजुल हसन-तिरमिजी, पण्डित जनार्दनराव देसाई अध्यक्ष कर्नाटक परिषद, पं. नरेन्द्रजी सक्सेना आर्यसमाजी नेता, पं० रामाचार्य, लक्ष्मणराव मानूं, श्री चौसाळकर, श्री गोरीकर, तथा अन्य कतिपय कार्यकर्ता उपस्थित थे।

सम्मेलनको सैकड़ों सन्देश प्राप्त हुए। विशेष उल्लेखनीय नाम डा० राजेन्द्रप्रसाद, श्री जमनालालजी बजाज व श्रद्धेय श्रीकृष्णदासजी जाजू के हैं।

महिलाओंसे कुरीतियां हटानेके लिये अपील

श्रीमती रतनदेवी राठीका महिला परिषद्में भाषण

श्रीमती रतनदेवीजी राठीने हैद्राबाद स्टेट मारवाड़ी सम्मेलन के अवसर पर हुई महिला परिषद के अध्यक्षपदसे भाषण देते हुए कहा:—

माननीय स्वागताध्यक्षाजी, आदरणीय माताओ और स्नेहमयी बहनो !

आजका दिन हमारे लिए आनन्दका दिन है। हमें परमपिता परमात्माका आभार मानना चाहिए जिसकी कृपासे आज हमें यह सुअवसर प्राप्त हुवा है कि हम निजाम प्रान्त की मारवाडी बहिनें इकट्ठी होकर अपने अपने दिलके भाव प्रकट कर समाजकी एवम् अपनी भलाई करनेमें अग्रसर हुई हैं। मैं आशा रखती हूं कि यह प्रथम महिला अधिवेशन आपके सहयोगसे सफल होगा।

१ शिक्षा

हमारे समाजमें शिक्षाका इतना अभाव है कि स्वाभाविक तौरपर पहले २ उसी पर ही ध्यान जाता है। आप जानती हैं कि सारे समाजोंसे हमारा समाज हर कार्यमें पिछडा हुवा है, और इसका मुख्य कारण शिक्षाका नितान्त अभाव है। इस वास्ते सबसे मुख्य प्रश्न हमारी शिक्षाका है। शिक्षाके बगैर, फिर वह चाहे पुरुष हो या स्त्री, उसका जीवन बिल्कुल निरर्थक है। अगर हममें सब गुण हों और शिक्षा न हो तो उसका कुछ उपयोग नहीं जैसे न फलने वाला वृक्ष; क्योंकि गुणको शिक्षा ही प्रकट करती है। अगर हम में थोडा भी लिखने पढनेका ज्ञान हो तो हम कमसे कम यह तो जान लेंगी कि प्राचीन समयके क्या २ धार्मिक ग्रन्थ हैं, उस समयमें क्या २ रीति रिवाज थे, कैसी २ वीर एवम् सुयोग्य देवियाँ हो चुकी हैं, और उन्होंने कैसे २ सत्कार्य किए हैं और हमें उनके उदाहरणसे क्या शिक्षा लेनी चाहिए। लेकिन हम इन सब बातोंसे अनभिज्ञ हैं!

आज भी दुनियांमें कैसी जबरदस्त खलबली मची हुई है, हममेंसे शायद बिरली ही बहिनें जानती होंगी। युरोपमें जबरदस्त रण संग्राम मचा हुआ है। लाखों करोडों आदमियों की जानें कटी जा रही हैं। वहां हमारी बहिनें पुरुषों का साथ दे रही हैं। अगर आप रूस और बरतानिया का हाल सुनेंगी तो आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि पुरुषोंके सब काम स्त्रियों ने संभाल लिये हैं। यहां तक कि टेलीफोन, पोस्ट ऑफिस, खेती और फौज आदि का काम वे अच्छी तरह से चला लेती हैं। इसका क्या कारण है? केवल शिक्षा। वे शिक्षित हैं इस लिए बहिन भाई का हाथ बटाती है, पत्नी पति का सहयोग करती है और माता पुत्र को प्रोत्साहन देती है। विचार करो यदि भारत पर कुछ संकट आ जाए तो हम बहिनें अपने भाई, पति और पुत्र का कैसे साथ दे सकेंगी। हमारी तरफ से पुरुषों को क्या सहायता मिलेगी। हम तो शिक्षा की कमी के कारण किसी काम में उनकी मदद नहीं कर सकेंगी। हम सिवाय काम चलाऊ गृह कार्य के कुछ भी नहीं जानतीं। आज तो शिक्षा बहुत ही आवश्यक हो गयी है क्यों कि विवाहरूपी सूत्र से बंधने से पहिले वर पक्ष से इसकी पूछ ताछ की जाती है। लडके शिक्षित लडकियों से विवाह करना ही ज्यादा पसन्द करते हैं। हमें यह भी विचार कर लेना चाहिए कि इन भावी माताओंके कंधे पर आने वाले जमाने का भार है। यदि ये अच्छी शिक्षित होंगी तो इनके होनहार लाल इनके सदुपदेश से अच्छे शूरवीर होंगे जो कि भावी भारतका उत्थान कर सकेंगे और अपने पिछडे हुए समाज को आगे ला सकेंगे। संक्षेपमें इतना कहना पर्याप्त होगा कि स्त्रियों की छोटी से लेकर बड़ी समस्याएं बिना शिक्षाके हल नहीं हो सकतीं। शिक्षित स्त्रियाँ ही समाज और राष्ट्र की उन्नतिशील नींव को अटल रख सकती हैं।

२. वेष भूषा

अपने समाज की रहन सहन एवम् वेश भूषा की ओर दृष्टिक्षेप करने पर मुझे बहुत दुख होता है। दूसरे समाज हमारे इस पहराव की जो टीका करते हैं वह सुनकर दिल में अत्यंत खेद एवम् वेदना का अनुभव होता है। लेकिन क्या किया जाए, अपना पहराव ही ऐसा है। हमारे वे बड़े बड़े घागरे, पाँव के मोटे २ चांदी के गहने जो कि ठीक बेड़ियों के समान नजर आते हैं, हाथ के बड़े २ गोखरू, डंड कडे, बाजूबन्द आदि इतने वजनदार होते हैं कि उनको पहनकर चलना ही मुश्किल जान पडता है। हमारी बहिनों को जेवर का शौक ही ऐसा है कि पूछिए मत। पैर से लेकर सिर तक सब गहने ही पहने रहती हैं। मेरी समझ में नहीं आता कि इस में क्या फायदा है। मैं अपनी बहिनों से यह पूछती हूं कि जेवर ज्यादा और भारी पहनने से क्या इज्जत बढती है? क्या खूबसूरती बढ़ती है? मुझे तो इसमें कुछ भी फायदा नजर नहीं आता बल्कि हानि ही नजर आती है। स्वास्थ्य की दृष्टि से भी देखिये? खेद तो इस बात का है कि हमारे यह गहने शरीर को साफ सुथरा रखने में बाधा पहुंचाते हैं। कई ऐसे भी गहने हैं जो किसी भी समय शरीर से उतारे नहीं जाते। शरीरकी सफाई न होनेकी वजहसे अनेक बीमारियां फैलती हैं। दूसरा नुकसान यह है कि हमारे हजारों रुपये घडाई बनवाईके रूपमें चले जाते हैं।

३. परदा प्रथा

हमारे समाजमें सबसे भद्दा रिवाज परदा प्रथा है। परदेसे हमारे समाजमें बहुतसी कुरीतियां फैली हुई हैं। उनको दूर करना अत्यंत आवश्यक है। वास्तवमें देखा जाए तो यह परदा बहुत पुराने जमाने का रिवाज नहीं है। यदि प्राचीन धार्मिक ग्रंथ देखेंगी तो आपको पता चल जायगा कि सीता, कैकेयी आदि स्त्रियां परदा नहीं करती थीं और अपने पतिके हर एक काम में हाथ बंटाती थी। यह तो किसी प्रसंगवश हमारे पूर्वजोंने शुरू किया था। जबसे यह अपने समाजमें आगया है उसने अपना घर सा जमा लिया है। उसका निकलना ऐसा मुश्किल हुवा है कि जैसे कीचडमें फंसा हुवा हाथी। अब उसके लिए हमें बडे २ आन्दोलन करने पड रहे हैं। अपने समाजमें एक प्रकार की रूढि पड गई है कि जो काम अपने पूर्वजोंने किया है, फिर वह वर्तमान समयके लिए भला हो या बुरा हम उसे करते ही चले जाएं। किन्तु वे यह तो नहीं सोचतीं कि इससे क्या हानि होगी या इससे क्या फायदा होगा। परदेसे जो बुराइयां हैं वे आपसे छिपी हुई नहीं हैं। स्वास्थ्य की दृष्टिसे भी परदा बहुत हानिकारक है। खुली हवा और धूप न मिलने की वजहसे शरीर स्वस्थ नहीं रह सकता। स्त्रियोंमें क्षय रोग का मुख्य कारण परदा ही है। पूज्य महात्मा गांधीजीने परदे की कड़ी आलोचना की है। परदे के विषयमें महात्माजी के यह विचार हैं कि "परदा तोडनेमें मुख्य हेतु संयम है तो उसको तोडना कर्तव्य है और वह टूट सकता है। परदा तोडनेमें स्वच्छन्दता भी हेतु हो सकता है। ऐसी अवस्थामें परदा टूट नहीं सकता। सच्ची बात तो यह है कि परदा बाह्य वस्तु नहीं है, आंतरिक है। बाह्य परदा करनेवाली कितनी ही स्त्रियां निर्लज्जा पायी जाती हैं। जो बाह्य परदा नहीं करती, परन्तु आंतरिक परदा जिसने कभी छोडा नहीं वह स्त्री पूजनीया है। परदेसे होनेवाली हानियां स्वयंसिद्ध हैं।

(१) स्त्रियोंकी शिक्षामें यह बाधक है।

(२) स्त्रियोंकी भीरुताको बढाता है।

(३) स्त्रियोंके स्वास्थ्यको बिगाडता है।

(४) स्त्रियों और पुरुषोंके शुद्ध सम्बन्धको रोकता है।

(५) स्त्रियोंकी कनिष्ट वृत्तिका पोषक बनता है।

(६) परदा स्त्रियोंको जगतसे अनभिज्ञ रखता है।

उपरोक्त बातोंसे आपको मालूम हो गया होगा कि पूज्य गांधीजी जैसे महान् व्यक्तिने भी इस कुप्रथाकी कितनी कडी आलोचना की है और उसके एक २ शब्दसे हमें स्पष्ट आदेश मिलता है कि इसे जल्दीसे त्याग देना चाहिए।

४ बाल विवाह

बाल विवाह की प्रथा समाजमें बहुत ही जबरदस्त है। यह प्रथा अभी २ कुछ कम हो गई है, किन्तु प्रगति संतोषजनक नहीं प्रतीत होती। पहले जमानेमें विवाह तो छोटी अवस्थामें कर दिया जाता था लेकिन लडकी को अपनी सुसराल बगैर ज्ञान आए नहीं भेजा जाता था। उसको सुसराल उसी वक्त भेजा जाता था जब कि वह अपने उत्तरदायित्व को समझने लगे। हमारे समाजमें मुकलावे का जो रिवाज है, वह इसी हेतु रखा गया था, किन्तु उसका अर्थ आज नाम मात्रको रह गया है। इस जमानेमें वह विधि शादी होते ही चन्द दिनों बाद कर दी जाती है और लड़कीको सुसराल भेज दिया जाता है। वह बेचारी न गृह कार्य ही जानती है और न विवाहका उद्देश्य क्या है यह समझ सकती है। हम लोग बच्चों की शादी क्या करते हैं घरमेंसे एक प्रकार की आफत निकाल देते हैं। माता पिता को ख्याल नहीं आता कि यह लडकी आगे चलकर एक घर की लक्ष्मी और माता बनने वाली है। वे इसकी शिक्षा की तरफ बिल्कुल ख्याल नहीं करते। अपने समाजमें विवाह का हेतु सिर्फ सांसारिक सुख ही नहीं अपितु उसमें धार्मिक बन्धन भी है। पति पत्नी को एक दूसरेके प्रति निष्ठा और प्रेमयुक्त आचरण से समान भूमिका से कर्तव्य पालन करते रहना चाहिए और धीरे धीरे घर, समाज व देश की सेवाके साथ २ आत्म कल्याण का पथ लेना चाहिए। इसी उद्देश्य को ध्यानमें रखते हुवे विवाह होना चाहिए। प्राचीन कालमें स्वयंवर की पद्धति थी, उस से आप समझ सकती हैं कि उस जमानेमें बाल विवाह नहीं किया जाता था। स्वयंवर का मतलब ही यह है कि वधु अपने योग्य वर को स्वयं पसन्द करे लेकिन आज कल तो विपरीत ही नजर आता है। लड़की नौ दस वर्ष की और लडका बारह तेरह वर्षका होने पर उनको विवाह रूपी बन्धनमें जकड दिया जाता है। शिक्षण पूर्ण और शरीर सुदृढ नहीं होने पाता। अब बतलाइये ऐसे दम्पतिसे भविष्यमें क्या आशा की जा सकती है? ऐसी कन्या भी कमजोर होती हैं और किसी न किसी न किसी रोग की शिकार बन जाती है, और वही परिस्थिति बालकों की होती है। क्या वे देश की इस मांग की पूर्ति कर सकते हैं कि उसको ऐसे

(शेष पृष्ठ २३ के कालम १ पर)

मारवाड़ी समाजकी उन्नतिके लिये पंचवर्षीय योजना बनाइये

शिक्षणप्रसार और कुरूढ़ियोंका निवारण कीजिए

राजा नारायणलालजी पित्तीका

हैद्राबाद स्टेट मारवाड़ी सम्मेलनमें भाषण

⁂

सन्नारियों तथा सज्जनो !

आपने इस द्वितीय अधिवेशनका प्रधानपद मुझे प्रदान कर मेरे प्रति जो प्रेम और सद्भाव प्रगट किया है उसके लिये मैं आपका अनुग्रहीत हूं। भारतवर्ष की इस महान् ऐतिहासिक जाति की सेवा करने का सद्भाग्य प्राप्त कर मैं अपने आपको गौरवशाली मानता हूं।

हमारी महान राष्ट्रीय हिन्दूजाति

मारवाड़ी जाति उस महान् हिन्दु जाति का एक गौरवशाली अंग है जिसका संस्कृति नाद एक समय समस्त विश्वमें गुंजायमान हुआ था। भारतवर्ष की राष्ट्रीय संस्कृति आर्य ही है। यह संस्कृति हमें उत्तराधिकारमें ऋषि मुनियोंसे प्राप्त हुई है। हमारे देशके इतिहास और भूगोल की इसीकी नींव पर रचना हुई है। हमारी संस्कृतिके विकास और प्रचार का इतिहास ही हमारी राष्ट्रीयता का इतिहास है। हमारी संस्कृति उस वट वृक्षके समान है जो सबको शीतल छाया प्रदान करती है।

अंग्रजोंने हम पर विजय प्राप्त की, वे भारतवर्षके स्वामी हैं। भारतके स्वामी होते हुए भी वे हमारे हृदयोंके स्वामी नहीं हैं, हम अपने दासत्वसे शीघ्र मुक्ति पाना चाहते हैं, परन्तु मैकालेने, जो एक महान् राजनीतिज्ञ था, कहा "मैं तुम पर साँस्कृतिक विजय करूँगा तुमको रंगसे काला रख विचारोंसे ठेठ अंग्रेज बना दूंगा।" मैकालेकी विजय साँस्कृतिक विजय होगी—अतः हम अंग्रेजी पढ़ कर भी घरोंकी भाषा अंग्रेजी नहीं बनाना चाहते। अंग्रेजी और उर्दूसे ज्ञान लेना ठीक है पर हम स्वभाषा, अपने आचार-विचारको तिलाँजलि दे सब बातोंमें उनका अनुकरण करें तो यह हमारी भयंकर हार होगी। सँस्कृतिके नाशके पश्चात् हमारी जातिय हस्ती ही मिट जावेगी।

संगठन बल का महत्त्व

आजका यह सम्मेलन एक यज्ञरूप है। शास्त्रकारोंने यज्ञ का अर्थ संगतिकरण किया है। संगतिकरणका अर्थ संगठन है। मारवाड़ी समाजमें जातीय उत्थानके लिये सबसे प्रथम परस्पर मेल होना परम आवश्यक है।

हम शान्तिप्रिय रहें, कायर नहीं

मारवाड़ी जाति व्यापारी होनेके कारण स्वभावसे शान्तिप्रिय है। हमारी शान्तिप्रियता हमारी निर्बलता नहीं है। हम उसी राजस्थानके वासी हैं, जिसने अनेक वीरोंको उत्पन्न कर भारतका इतिहास समुज्ज्वल बनाया है। हमें कायर व भीरु मानना भारी भूल है। समय पड़ने पर हम अपनी शक्तिका परिचय करा सकें ऐसी तैयारी हमें करनी चाहिए।

हमारी सामाजिक रचनामें इस समय कुछ निर्बलता दृष्टि गोचर होती है उसका कारण अविद्याके कारण हमारे अंदर रुढ़िवादका साम्राज्य है।

हिन्दू धर्म क्या है

हिन्दू समाजकी नींव हिन्दू धर्म है। हम में धर्म शुद्ध स्वरूपका नहीं रहा। हिन्दू धर्मकी आधार शिला वेद है। किन्तु इस समय वेद क्या है यह हम नहीं जानते। हमारा धर्म केवल पाठ पूजा और कुछ क्रियाओंका समूह बन गया है। धर्ममें तर्क विचार और बुद्धिका प्रयोग नहीं है; धर्म केवल विश्वास है और वह भी अन्ध विश्वास, यह सूत्र उत्तम नहीं है। शास्त्रकारोंने कहा है "यतोभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः" जिससे इह लोक और परलोक दोनोंमें हमारा कल्याण हो वही धर्म है।

हमारे समाजकी रचना धर्म पर हुई है अतः हमारे सामाजिक विचार और रिवाज भी शीघ्र नहीं बदले जा सकते। पर हमारी सामाजिक रचना सच्चे सिद्धान्तों पर न रह केवल रूढ़िवाद पर तथा सम्प्रदायवाद पर स्थित है। अछूत, स्त्रियोंका न पढ़ना, परदेकी प्रथा, मृतभोज, विधवा विवाह निषेध, अनमेल विवाह, वृद्ध विवाह, बाल विवाह, बिरादरियोंकी संकीर्णता, यह सब धर्मके नाम पर ही प्रचलित हैं।

अछूतोद्धार की समस्या को ही ले लीजिये। अपनी जाति के नाम पर उन्हें ठुकराकर विधर्मियों के हाथमें दे देना कितना हानिकारक है।

इसी प्रकार इस समय बाल-विवाह जन समाज में अरुचिकर हो रहा है। शास्त्र ने जो २५ और १६ वर्ष का आदर्श लिखा है उस ओर मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। युवावस्था के पूर्व बालकों को गृहस्थी के जंजालमें डालना नहीं चाहिये। यदि आप अधिक न कर सकें तो शारदा एक्ट के अनुसार चौदह (बालिका के लिये) और अठारह (कुमार के लिये) के नियम का तो कदापि भंग न करें।

सामाजिक प्रश्न

बाल विधवाके प्रति हमारी सहानुभूति बढ़ रही है और पुनः विवाहकी उपयोगिता अब हम स्वीकार कर रहे हैं। लाखों युवती विधवाओंकी समस्या का निराकरण पुनर्विवाह द्वारा ही होगा। विधवाओंके प्रति सामाजिक अन्याय को दूर करने का हम प्रयत्न करें यह परम आवश्यक है।

किसी भी कालमें हमारे देशमें परदे की प्रथा नहीं थी। किन्हीं दूसरों का अन्ध अनुकरण करके हमने यह अवैदिक प्रथा दाखिल कर स्त्रियोंके प्रति अन्याय किया है अतः इसका परित्याग कर देना चाहिये।

मुझे दुःख है कि अभी मृत भोज, औसर मौसर की प्रथा पूरी तौर पर बन्द नहीं हुई। कोई भी सभ्य समाज मृत भोज की प्रथाको पसन्द नहीं करेगा। यह प्रथा एकदम बन्द हो जाय ऐसा प्रयत्न आपको करना चाहिये।

विद्या प्रचार की आवश्यकता

हमारे समाजमें विद्या प्रचारकी भारी आवश्यकता है। किसी भी समाजकी उन्नति विद्याके बिना नहीं हो सकती। भारतवर्षके शिक्षितों की संख्या अन्य देशोंके मुकाबलेमें बहुत कम है। मारवाड़ी समाजमें विद्या की ओर रूचि बढ़ रही है परन्तु इस दिशामें हमें बहुत कुछ करना बाकी है। जिस समाजमें शिक्षित कुमारों की ही संख्या अल्प हो वहां कन्याओंका शिक्षण नाम मात्र ही हो इसमें आश्चर्य ही क्या ? "मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद" इस सूत्र के अनुसार माता पिता और आचार्य तीन गुरु हैं। विदुषी माता ही उत्तम गुरु का कार्य कर सकती है, इसलिये हमें माताओंके शिक्षण की ओर गम्भीरता पूर्वक ध्यान देकर विदुषी देवियां तैयार करनी चाहिए।

शिक्षा का अर्थ

शिक्षणका अर्थ केवल बी. ए. पास करना नहीं है। हमारे युवकों को चाहिये कि वे बडी संख्यामें इन्जीनियर, केमिस्ट, इलेक्ट्रीशियन तथा उद्योगों के अनेक विभागोंका शिक्षण ले कल कारखानों को भरदें। इस यंत्र युगमें जिसके कि हम कल (यंत्र) युग कहते हैं, हमें कलोंका ज्ञान होना चाहिये। मैं तो चाहूंगा कि हमारा समाज हिन्दू विश्व विद्यालयके समान एक कला और व्यापार का आदर्श विश्व-विद्यालय स्थापित कर सच्चे शिक्षण का दृष्टान्त रक्खे। इसी प्रकार आयुर्वेद विद्यालय तथा हमारी अन्य संस्कृति का उत्कर्ष करने वाले विद्यालय और छात्रालय खोलकर हम राष्ट्र की सच्ची उन्नति करें।

हम सच्चे व्यापारी बनें

वर्त्तमानमें जो मारवाड़ी अपना प्रांत छोड़ अन्य स्थलोंमें बसे हैं उनका ध्येय केवल व्यवसाय है। मारवाड़ी समाज व्यापार धन्धेमें लगा हुआ है। यह वस्तु प्रशंसनीय है—परन्तु हम जापान और युरोपवासियों की नांई सच्चे व्यवसायी बनें, यह परम आवश्यक है। केवल ब्याज बटाव या सट्टे को ही हम व्यापार न मान बैठें—व्यापार का सम्बन्ध उद्योग से भी है।

बेकारीकी समस्या

हमारे समाजमें बेकारी का प्रश्न ही उपस्थित नहीं होना चाहिये। नीतिकार ने कहा है "उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः"—उद्योगी वीरों को लक्ष्मी स्वयं ही प्राप्त होती है। हमारे युवकों को जिस प्रकार पूर्व मैं आपको बतला चुका हूं नये युगके अनुसार नये-नये धन्धों को हस्तगत करके बेकारी से बचना चाहिये। धनिकों का भी कर्त्तव्य है कि वह जाति के युवकों को नये-नये धन्धोंमें लगाकर उनकी साहसिक वृत्ति को प्रोत्साहन दें। हमारी जातिके अन्दर साहसिकता और व्यापार करने की क्षमता अनादिकालसे ही चली आ रही है। हमारे पूर्वजोंने दूर-दूर स्थलोंमें जाकर भी अपनी साहसिकताके कारण अपने व्यापार की जो वृद्धि की उसके अनेक उज्ज्वल दृष्टांत आपके सामने हैं।

दातव्यमिति यद्दानम् दीयतेऽनुपकारिणे
देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्विकं
स्मृतम् ॥

किसी भी बदले की आशा किये बिना, देशकाल और पात्र का विचार करके जो दान किया जाता है वही दान सात्विक है। वर्तमान में यदि दान भी किसी बदले की आशा से दिया जाय तो वह दान, दान न रहकर व्यापार हो जावेगा। इसी प्रकार देश काल और पात्र का विचार किये बिना दिया हुआ दान व्यर्थ हो जावेगा। हमारे दान का प्रवाह जाति के बालक-बालिकाओं के निर्माण में उत्तम पाठशालाओं और कलाभवनों में, उत्तम विद्यालयों और महाविद्यालयों में व्यायामशाला और पुस्तकालयों के निर्माण, वेदादि सत्शास्त्रों का प्रचार करने में, हिन्दू संगठन और सैनिक दल निर्माण करने में, हिन्दू धर्म का प्रचार करने में होना चाहिये। यदि हमारे समाज का दानप्रवाह ठीक मार्ग पर हो जावे तो समस्त देश का कल्याण शीघ्र हो सकता है।

इस समय हमें चाहिए कि अपने देशकी स्वतन्त्रताके लिये प्राणपण से चेष्टा करें। जिसे जो भी मार्ग व नेता पसन्द हो वह उसका अनुसरण करे। देशकी स्वतन्त्रतामें विक्षेप करने वाले देशद्रोही हैं। उनसे हमें दूर रहना चाहिए। हमारा भारत एक महान् राष्ट्र है। उसकी अखंडता ही राष्ट्रीयता है। जो संप्रदायवादी भारतके टुकडे करनेकी बात करें वे देशद्रोही हैं, हम जो राष्ट्रवादी हैं प्रतिदिन शंखध्वनि करके यह घोषित करें कि कोई भी राष्ट्रवादी चाहे वह हिन्दू

(शेष पृष्ठ २२ के कालम २ पर)

कृष्ण कुमारी

(पृष्ठ ८ का शेषांश)

करना सिखाया होता, तो हम भी उनके साथ निकलतीं। हम उसमें असमर्थ हैं, पर मरनेमें नहीं। उनकी हार पर हम जीवित न रहेंगी। मेवाड़में कभी ऐसा हुआ भी नहीं। जब रणभूमिमें उनके बलिदानका समय उपस्थित होगा तब हम रावलमें जौहर करेंगी। जितने साहस, जितने उत्साह, जितनी उमंग, जितने आनंदसे वे अपने सिरोंकी आहुति रणचंडीकी वेदी पर चढ़ायेंगे, उससे भी अधिक साहस, उससे भी अधिक उत्साह, उससे भी अधिक उमंग, उससे भी अधिक आनंद से हम अपने सारे शरीरों का उस प्रबल अग्निमें होम कर देंगी, किन्तु ... किन्तु बेटी, तेरी ... तेरी इस प्रकार की हत्या ... ठंडी हत्या मुझे स्वीकार नहीं। ... बाई, मैं यह सोच ही नहीं सकती–ऐसी अधम ... ऐसी निकृष्ट बात, ऐसी ... ऐसी कुत्सित कल्पना ... मेरे हृदयमें नहीं उठ सकती। (कुछ रुक कर) क्या ... क्या ज्वानसिंह इस कटार से तेरी हत्या करनेके लिये तेरे पास आया था ?

कृष्णकुमारी—सो ... सो तो मैं नहीं कह सकती, माँ, किन्तु ... किन्तु ...

[भीमसिंह का प्रवेश । भीमसिंह इस समय न जामा पहने हैं न मंडील बाँधे हैं। लंबा अंगरखा, धोती और केसरी रंग की पगड़ी धारण किये हैं। उसका मुख एकदम उतरा हुआ है।]

भीमसिंह—(आगे बढ़ते हुए भर्राये हुए स्वरमें) ज्वान, मेरी...मेरी अनुमतिसे हत्यारा बनकर आया था... मेरे...मेरे कहनेसे उस कटार को लाया था। अधम पिता... हत्यारे पिताने अपनी पुत्री का रक्त चूसने उसे रावलमें... छारंडी के दिन...एक त्योहार के दिवस भेजा था...आह।

[पटरानी और कृष्णकुमारी दोनों भीमसिंह का शब्द सुनते ही खड़ी हो गई थीं। कृष्णकुमारी दौड़कर भीमसिंह के गले से लिपट जाती है। पटरानी एकटक दोनों की ओर देखती है। उसकी दृष्टिमें क्रोधसे युक्त महान् शोक दिखाई पड़ता है। भीमसिंह के नेत्रोंसे आंसू बहते हैं। वह अपने हाथ कृष्णकुमारी की पीठ पर फेरता है।]

कृष्णकुमारी—भाई जी...भाई जी...आप...आप अपने को अधम, अपने को हत्यारा यह क्या...क्या कह रहे हैं ?

भीमसिंह—(और भी भर्राये हुए स्वरमें) और क्या कहूँ, बेटी ? शिशोदिया कुलके किस कुलकलंक ने अपनी पाली पोसी, विवाह योग्य की हुई कन्याके वधका ऐसा षड्यंत्र......

कृष्णकुमारी—(बीच ही में) भाईजी, ऐसी...ऐसी बातें मुखसे न निकालिये। आपने कोई षड्यंत्र नहीं किया। मेरी हत्याका नहीं, मेरे बलिदान, और बलिदान ही नहीं, कल्याणका यह आयोजन है, और उचित आयोजन, भाईजी। आप मेरा विवाह किसी एक ही व्यक्तिसे तो कर सकते थे। उसकी प्रसन्नता न जाने कितनोंकी अप्रसन्नताका कारण होती। एक मेरे कारण मेवाड़ पर कदाचित् अभूतपूर्व आपत्ति आती। इस परिस्थितिमें आपने जो निर्णय किया है उससे अच्छा निर्णय संभव ही न था।...... आप देश की रक्षा, प्रजा की रक्षाके यज्ञमें अपनी सबसे प्रिय वस्तु का बलिदान कर रहे हैं, हत्या नहीं। अधम नहीं, आप महान हैं पिताजी

पटरानी—(क्रोध से) बेटी ... बेटी, यह बलिदान नहीं हत्या, सीधी सादी, घृणित और कुत्सित हत्या है, अपनी पुत्री की ऐसी हत्या......।

कृष्णकुमारी—(फिर बीच ही में) माँ, तुम नहीं समझ रही हो। यह पुत्री की हत्या नहीं, यह है समष्टिके लिये व्यष्टि का बलिदान !

पटरानी—यह है पुरुषों का अपने बचावके लिये स्त्री का संहार। महान् कहे जाने वाले पुरुषों का अपने जीवनके लिये अपनी जीवित संपत्ति का भी ...।

कृष्णकुमारी—(फिर बीच ही में) मैंने कहा था, फिर कहती हूँ यहाँ पुरुष और स्त्री का प्रश्न ही नहीं है, और यदि हो भी, तो महान् तो वही है जिसका बलिदान होता है, या जो बलिदान करता है। (भीमसिंहसे) आपने ज्वान को इस प्रकार निरर्थक भेजा, मुझे बुला लेते। मैं अबला नहीं, सबला राजपूतनी हूं। आपका रक्त, राजसिंह और परताप का रक्त, सांगा और कुंभा का रक्त, हमीर और बप्पा रावल का रक्त मेरी नाड़ियोंमें भी बह रहा है। देशके लिये, प्रजाके लिये, मैं इन प्राणोंके बलिदान का साहस रखती हूँ। अपने धर्म की रक्षाके लिये मैं शरीर को तुच्छ से तुच्छ वस्तु मानती हूँ। आप मुझे बुला लेते, आपकी आज्ञा पाते ही तत्क्षण मैं मृत्यु का आलिंगन करती। तैयार हूँ, भाईजी, तैयार हूँ मैं, धर्मके लिये, देशके लिये, कुलके लिये, आपके लिये इन प्राणों को उत्सर्ग करनेके लिये मैं तैयार हूँ।

भीमसिंह—(आंसू बहाते उसी प्रकारके भर्राये हुए स्वरसे लिपटी हुई कृष्णकुमारीकी पीठपर हाथ फेरते हुए) बेटी... बेटी...

पटरानी—आह ! आह !

[पटरानी मूर्च्छित होकर गिरती है। भीमसिंह और कृष्णकुमारी दोनों दौड़कर उसे सम्भालते हैं।]

(लघु यवनिका) (क्रमशः)

भारतीय नारीत्वका आदर्श

(पृष्ठ ७ का शेषांश)

कि जहां स्त्रियोंके लिये शास्त्रविहित अनुशासन पूर्ण बंधन है वहां पुरुषोंके लिये यह सिर्फ बाह्याचार ही है। वास्तवमें, यहांतक कि सिद्धान्तमें भी, अनुशासनका भार, समानरूपसे नहीं बांटा गया। पुरुष पिता और पति होनेके कारण नियम स्थापित करनेवाला है, और इस प्रकार नियमपालनका साराका सारा बोझ स्त्रीको ही उठाना पड़ता है। हिन्दू विवाह–विधि सहचार (Companianship) संबंधकी स्थापना नहीं करती। वह स्त्रीको पुरुषके संरक्षणमें रख देती है। और शक्तिशाली राष्ट्रोंके दुर्बल राष्ट्रोंपर राजनैतिक संरक्षणकी अपेक्षा स्त्री पर पुरुषके इस सामाजिक संरक्षणमें जीवनके लिए साहचर्य और परस्पर लाभका तनिक भी अधिक भाव नहीं। दोनों ही में संरक्षण मिलकियतका छद्म रूप है। हिन्दू-विवाहके रूढि-रिवाज समस्त पौराणिक गीतिकाव्योंको, हेत्वाभाससे भरे हुए उसके भाष्यको और उसके द्वारा स्थापित संबंधको झूठा सिद्ध करते हैं।

स्त्रियोंके सामाजिक दासत्वका बचाव करने की उद्देश्य सिद्धिके लिये वर्तमान ऋषिगण चाहे शास्त्रों को तोड़–मोड़ सकते हैं परंतु शास्त्र अपने आप ही सत्यके द्योतक हैं; और अगर स्त्रियों को परंपरासे निश्चित किए आदर्शों पर ही चलना और शास्त्र सूचित नियमों का पालन करना है, तब तो उन्हें संस्कार–विधियोंके मुताबिक शास्त्रादेशों का अनुसरण करना चाहिए। उन्हें त्याग, भक्ति तथा कर्तव्यका जीवन जीना चाहिए। ये आदर्श अपनी भावनाकी समस्त चमकदमकके साथ किसी भी स्वत्वाभिमानी स्त्री को आकर्षित नहीं कर सकते।

स्त्रियोंके लिये तो निश्चित रूपसे हिन्दू–विवाह 'पिकनिक' नहीं है। यह प्रेमका भी सवाल नहीं, सिवा इसके कि वे यह सोचकर अपने आपको जबरदस्ती विश्वास दिलावें कि जब उनका विवाह हो ही गया है, उन्हें प्रेम करना चाहिए। विहित कानूनोंके नीचे दोनों पक्षोंके द्वारा निभाया जानेवाला विवाह एक ऐच्छिक सम्बन्ध भी नहीं है। स्त्रियां सिर्फ अपने नये स्वामियोंको सौंपी जाती हैं, जिनके साथ उन्हें आजीवन बंधे रहना पड़ता है। जब उत्तरदायित्व ऐच्छिक रूपसे नहीं उठाया जाता, नैतिक रूपसे हम अनुशासन की आशा नहीं रख सकते। स्त्रियों को चुनाव करने दो, और विवाह उनकी विचारपूर्वक अनुमति पर ही होने दो और तब अनुशासन की बात करो। अनिच्छासे हुए संबंधमें—जो संबंध केवल मालिकोंकी तबदीली से स्थापित होता है—अनुशासन की अपेक्षा करना, विशुद्ध अत्याचार है। हिन्दू-विवाह स्त्रियों को कुछ भी अधिकार नहीं देता, वह केवल उन पर अहसान लादता है। अनुशासन इन परिस्थितियोंमें, अनिच्छापूर्वक लादे गये उत्तरदायित्व पूरे करनेके लिये जबरदस्ती मात्र है। और उत्तरदायित्वका नैतिक बल कुछ भी नहीं है, जब तक कि वह इच्छापूर्वक नहीं लिया जाता। एक व्यक्ति उन कार्योंका जिम्मेवार नहीं हो सकता जो उसने किए ही न हों। जिस कार्यकी जिम्मेवारी मैंने कभी ली ही नहीं, उसे पूरा करना मेरा कर्तव्य नहीं हो सकता। कर्तव्य और जिम्मेवारीका विचार ही इस बातका द्योतक है कि पहले एक समझौता हो चुकना चाहिये। पूर्व समझौतेके अभावमें कर्तव्य और जिम्मेवारीका कोई अर्थ नहीं। इस प्रकार हिन्दू-विवाहके द्वारा स्थापित संबंधमें अनुशासनका सवाल ही नहीं उठता।

इसलिये, ऐतिहासिक आधारोंपर पैदा हुआ और सामाजिक दृष्टिसे आवश्यक, नारीका यह विद्रोह, किसी पाश्चात्य विचारोंसे भ्रष्ट हुई मध्यमश्रेणीकी महिलाका उत्पात नहीं है। यद्यपि स्वभावतः स्त्रियां अपनी अपनी निजी समस्याओंसे बेतरह घिरी हुई हैं, फिर भी, वे अपनी जाति (स्त्री) की मूक बहुसंख्याके चिरकालसे चले आरहे दुःखोंको व्यक्त करती हैं। ये समस्याएं, खासकर मध्यमश्रेणीकी महिलाओंके सन्मुख उठनेवाली समस्यायें, समाजकी आमूल चूल पुनर्रचनाके बिना हल नहीं हो सकतीं। क्योंकि कई युगोंतक स्त्रियोंके साथ भारवाही पशु-सा व्यवहार रखनेवाली स्थापित समाज व्यवस्थाके ह्रासमें ही ये समस्यएं पैदा हुई हैं। इस तरह शिक्षित स्त्रियां दूसरी स्त्रियोंके लिए ही भारतीय स्त्रीत्वके आदेशोंके खिलाफ विद्रोह करती हैं और सामाजिक क्रांति की मांग कर रही हैं।

हिन्दू परिवारमें स्त्रियां पराधीन हैं। स्त्रीत्व का आदश इस बातको बदल नहीं सकता, वह तो केवल कपोल कल्पना हैं। कानून और व्यवहार में असमानता और अन्याय की भावना भरी पडी हैं। स्त्री और पुरुष की प्राकृतिक समानता बहुपति विवाह के पुनरुद्धार के द्वारा स्थापित की जा सकती है, जो कि सान्दिग्ध है। यदि हिन्दू कानून के अनुसार पुरुषों के द्वारा उपभोग किए जानेवाले विशेषाधिकारों का खात्मा नहीं करना है तो, न्याय और समानता के कट्टर संरक्षक लोगोंको स्त्रियों के लिये इस अधिकार की मांग करनी चाहिए। परंतु बहुपति विवाह निश्चित रूपसे परिवार प्रणाली को छिन्नभिन्न कर देगा। किसी प्राचीन जमानेमें यह मानी हुई प्रथा थी। लेकिन कोइ भी वर्तमान स्त्री इसका पुनरुद्धार नहीं चाहती। वे जिन चीजों को चाहती हैं वह हैं चुनावमें स्वतंत्रता, और मेल न रहने पर अलग होने का अधिकार। यदि अन्त तक विश्लेषण किया जाय तो मालूम होगा कि आर्थिक स्वतंत्रता ही मूलभूत मांग है। प्राचीन समाज व्यवस्थाके ध्वंस से पैदा होने वाली कठिन परिस्थितिमें से बचने का यही एक मात्र मार्ग शेष रहता है। न्याय और आम सामाजिक कल्याण की दृष्टि से भी स्त्रियों के लिये इस स्वतंत्रता का स्थापन आवश्यक है। वास्तवमें वर्तमान स्त्रियां जो स्वतंत्रता चाहती हैं, वही केवल परिवार—प्रणाली को, जहांतक कि वह एक आवश्यक सामाजिक संस्था है, विनाशके गर्त से बचा सकती है, और सामाजिक प्रलय के खतरे से पार कर सकती है। वर्तमान स्त्रियां सामाजिक प्रलय नहीं पैदा करना चाहतीं। वे ऐसे प्रलय के बीचमें डाल दी गई हैं, वे सिर्फ उससे बाहर निकलने के लिये कोशिश कर रही हैं। उनके गले में बंधे हुए भारतीय स्त्रीत्वके कपोल-कल्पित आदर्शके चुंबक पत्थर से उनके रास्तेमें बाधा नहीं पड़नी चाहिए।

"दि आइडियल आफ इण्डियन वोमनहुड" से

राजस्थानी संसार

भारतीय ग्रन्थमाला द्वारा ५० सेट प्रदान

श्री भगवानदासजी केलाने महासभा की ओरसे भारतीय ग्रन्थ मालाके ५० सेट, एक एक सेटमें लगभग रु. २१ की पुस्तकें, बिना मूल्य देने की घोषणा अजमेर कार्यकारी मंडलमें की थी। तदनुसार अभी तक जिन जिन संस्थाओं को यह सेट दिये गये हैं उनकी सूची निम्न प्रकार है। महासभाकेपास २५ सेट और रहे हैं। जो संस्था अपने पुस्तकालयका ब्योरेवार विवरण एवं माहेश्वरी महासभाकि कार्यकारी मंडलके सदस्योंको पत्र भेजेंगी उनको एक एक सेट दिया जावेगा। ३० नवंबर के पहले प्रार्थना पत्र पहुंच जाने चाहिएं। जो संस्थाएं पोस्टपारसलके लिये रु. २॥), रेलेवपारसलके वास्ते रु. १॥) और पूरी जानकारी भेजेंगी उन्हें ही सेट दिया जायगा। अन्यथा आये हुवे पत्रों पर विचार नहीं होगा। यह सेट मारवाड़ी संस्थाओं को ही दिये जावेंगे दूसरी संस्थायें कष्ट न करें।

१ माहेश्वरी मंडल उदयपुर (राजपुताना)
२ मारवाड़ी शिक्षा मंडल कॉमर्स कॉलेज वर्धा (सी. पी.)
३ महिला सेवा मंडल वर्धा (सी. पी)
४ माहेश्वरी पुस्तकालय व वाचनालय कानपुर (यू. पी.)
५ माहेश्वरी वाचनालय व पुस्तकालय लक्ष्मणगढ (राजपुताना)
६ श्री महावीर जैन मंडल पनवेल (महाराष्ट्र बंबई)
७ श्री माहेश्वरी रा. वि. मिडलस्कूल इंदौर (मध्यभारत)
८ माहेश्वरी पुस्तकालय कलकत्ता (बंगाल)
९ माहेश्वरी बालचर मंडल शाहापुरा स्टेट (राजपुताना)
१० श्रीकरणी मंडल देशनोक (राजपुताना)
११ राजस्थानी गुरुकुल ब्याड (बरार)
१२ आर्यकन्या महाविद्यालय बड़ोदा (बंबई)
१३ माहेश्वरी मंडल बाडमोर (राजपुताना)
१४ थार विद्यार्थी मेंडल मिठी (सिंध)
१५ माहेश्वरी नवयुक मंडल ब्यावर (राजपुताना)
१६ श्री सार्वजनिक पुस्तकालय गंजबासोदा (मध्यभारत)
१७ श्री माहेश्वरी बोर्डिंग ब्यावर (राजपुताना)
१८ श्री बाल अमर समिति सिरसा (पंजाब)
१९ महिला मंडल उदयपुर (राजपुताना)
२० श्रीराम वाचनालय व पुस्तकालय खटाली (मध्य भारत)
२१ मारवाड़ी क्लब माटुंगा (बंबई)
२२ हिंदीविद्यापीठ बंबई
२३ गोपाल वाचनालय मूंडवा (राजपुताना)
२४ माहेश्वरी पाठशाला नागौर (,,)
२५ माहेश्वरी मंडल अजमेर (,,)

२०।११।४१
सुलत न बजार
हैद्राबाद–दक्षिण

रामकिशन धूत
सभापति
अ. भा. माहेश्वरी महासभा

इन्कमटैक्सकी अदायगीमें अत्याचार

अ. भा. मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा असन्तोष

अ. भा. मारवाड़ी सम्मेलनकी स्टैंडिंग कमेटीमें निम्नलिखित प्रस्ताव ता. ६ नवम्बर १९४१ को पास किया गया तथा इस आशयका तार हिज़ एक्सेलेन्सी वायसरायके पास भेजा गया।

प्रस्ताव

अ. भा. मारवाड़ी सम्मेलनकी स्टैंडिंग कमेटी भारतीय व्यवसायी और विशेष कर एक भारतीय समाज, केन्द्रीय इन्कमटैक्स डिपार्टमेंट द्वारा जिस अनुचित, निरंकुश और जुल्मी तरीकेसे टैक्ट आयद करके तंग किया जाता है, उसको अत्यंन्त क्षोभ की दृष्टिसे देखती है। मसलन कलकत्तेके एक भारतीय व्यवसायी पर टैक्सकी जो अत्यधिक मांग की गई है, उसे भारतीय व्यवसायिक समाज प्रतिशोध पूर्ण समझता है और उससे भारतीय व्यवसयियोंके दिलमें भय और आतंकका संचार हो गया है। कमेटी की रायमें यदि इस प्रकार, के निरंकुश तरीकेसे टैक्स आयद किये गये और व्यवसायिकों को तंग किया तो पूरे भारतीय व्यवसायिक समाज के हितों को बहुत ज्यादा धक्का पहुंचेगा और अन्तमें पूरा भारतीय व्यापार, व्यवसाय नष्टप्राय हो जायेगा।

कमेटी, इसलिए, भारत सरकारसे प्रार्थना करती है कि भारतीय व्यवसायिक समाज के हितों को इन्कमटैक्स कानून के निरंकुश और अहितकर ढंगसे काममें लाए जानेसे बचावे और विशेष कर इन मामलोंमें जाति विशेष का भेदभाव काममें लाए जानेसे बचावे।

इन्दौर

माहेश्वरी समाज में धड़ेबन्दी

माहेश्वरी समाजमें इस दीपावलीके पश्चात् दो तीन ऐसी घटनाएं हो चुकी हैं जिनसे समाजके कुछ 'बड़े' कहे जानेवाले रूढ़िग्रस्त दुराग्रही लोगोंकी मनोवृत्तिका परिचय मिलता है।

माहेश्वरी विद्या प्रचारक मण्डलको

श्री किशनलालजी लाहोटी, कराड़ द्वारा

स्तुत्य भेंट

हमें यह सूचित करते अत्यन्त आनंद होता है कि माहेश्वरी विद्या प्रचारक मण्डलके श्री सन्तोकीराम रामसुख विद्यार्थी भुवनमें व्यायाम शाला, जिमखाना पैविलियन आदि बनवानेके लिए समाज प्रेमी कराड़ निवासी श्री किशनलालजी लाहोटी ने इस मण्डलको २०००) रु. प्रदान किये हैं। इस लिए हम उनके कृतज्ञ हैं। मण्डल उनका सदैव आभारी रहेगा। हम समाज से भी अपील करते हैं कि श्री किशनलालजी लाहोटीकी तरह वह भी समाजमें शिक्षा प्रसारके कार्यमें मण्डलको सहयोग दें।

मुरलीधर लोया, तुलसीराम बांगड़
मन्त्री मा. वि. प्र. मण्डल

छत्रीबागमें श्री वेंकटेश्वर भगवानका मंदिर है। इस मंदिरमें प्रतिवर्ष कार्तिक शुक्ला पंचमीको अन्नकूट होता है और इस इस अन्नकूटमें डीडवाना थोककी प्रधानता रहती है। डीडवाना साथमें कई वर्षोंसे दो धड़े है। पहिले एक धड़ेमें लगभग १० घर थे और दूसरेमें लगभग १४०। परंतु हरिजन प्रकरणके बाद १० घरवाले धड़ेमें लगभग ५० घर हो गये। दूसरेमें जो लोग सुधारवादी मनोवृत्तिके थे उन्होंने इसमें सम्मिलित होकर अपनी स्थिति मजबूत बनाली। इसके सिवाय श्री कल्याणमलजी लखोटिया और श्री बाबूलालजी परवाल ये दो घर जो कि नागोरके थोक में थे वे उससे अलग होकर इसी ५० घरवाले थोकसे मिल गये। यद्यपि हरिजन प्रकरण के पश्चात् उस संबंधी जितने झगडे थे वे समाप्त हो चुके हैं इस आशयका पंचायती ऐलान हो चुका था परंतु कुछ झगड़ालू मनोवृत्तिके लोग इस, शांतिसे प्रसन्न नहीं थे और अबतक वे लोग कोई न कोई बहाना लेकर हर समय समाजमें अनिच्छित प्रसंग उपस्थित करते ही रहते हैं। डीडवाणा थोक के १०० घरके कुछ लोग और नागोर थोक के प्रमुख पंच जो कि उक्त दो घरोंका थोक छोडकर चला जाना अपनी एक बडा तौहीन समझते हैं।

इस वर्ष भी प्रतिवर्षानुसार पंचमी को उक्त मंदिर पर अन्नकूट था। मंदिर की ओर से डीडवानाके दोनों थोकोंमें और अन्य शिष्य सेवकोंमें निमंत्रण लग चुके थे। मिठाई आदि रसोई का सामान लगभग पूरा तैयार हो चुका था कि पंगतके केवल ४ घंटे पूर्व डीडवाणा थोकके १०० घरों की ओरसे उनके थोकमें ऐलान हो गया कि आजके अन्नकूटमें न जावें। हमारे थोक का अन्नकूट परसों होगा। बस फिर क्या था दो एक घरों को छोड़ कर कोई भी उसदिन नहीं आया। सौभाग्य से मंदिराधीश पूज्य स्वामीजी श्री बालमुकुंदाचार्यजी महाराज भी भोगके समय पर कन्नौज से पधार गये थे। उन्होंनें अपनी ओर से खास आदमी को भेजकर १०० घरके थोकके कुछ प्रमुख व्यक्तियों को बुलवाया भी, परंतु वे लोग भगवानके प्रसादके साथ साथ पूज्य स्वामीजी की आज्ञाकी भी अवहेलना कर गये। कोई भी नहीं आया। भला कैसे आते। धर्म डूब न जाता। अस्तु फिर क्या था जो आजतक नहीं हुआ था वही हुआ। एक अन्नकूट की जगह दो अन्नकूट हुए। 'भगवान' को भी धड़ेबंदी में शरीक होना पडा।

दूसरी घटना इससे भी अधिक विचित्र है। गोराकुंड पर श्री जानकीनाथ भगवान का मान्दिर माहेश्वरी समाज का प्रमुख मंदिर है। इस मंदिर की भजन कीर्तन कमेटी ने सप्तमी को इस मंदिर पर अन्नकूट करने का निश्चय किया। अन्नकूट के लिये पानडी लिखवाई गई जिसमें श्री कल्याणमलजी लाखोटिया से भी जो कि कीर्तन कमेटी के मेम्बर भी हैं और कमेटी को १) मासिक चंदा दे रहे हैं अन्नकूट के व्यवस्थापकों ने पानड़ी में भी २) लिखवाये। अन्नकूट के निमंत्रण के पत्रों में श्री लखोटियाजी का नाम भी लिखा गया। इतना सब कुछ हुआ, परंतु इसके बाद जैसे ही समाज के उन 'बड़े' कहे जाने वालोंको मालूम हुआ कि बस फिर क्या था अन्नकूटके व्यवस्थापकोंको रातोरात बुलवाया गया और श्री लखोटियाजीका नाम निमंत्रणके पन्नेमेंसे कटवा दिया। यह सारा षडयंत्र इतनी गुप्ततासे किया गया कि व्यवस्थापक कमेटीके कुछ मेम्बरों तकको शामके पंगतके समय तक यह पता न चला कि श्री लखोटियाजीका नाम काट दिया गया है।

जब कभी कोई आधुनिक विचारोंसे संबंधित प्रश्न पैदा होता है तो ये 'बड़े' लोग चिल्ला कर कहने लगते हैं कि ये आजकलके छोकरे समाजमें कलह फैलाते हैं। परंतु समाजके गंभीर विचारशील लोगोंको इन घटनाओं पर विचार करना चाहिये कि आजकलके छोकरे कलह फैलाते हैं? या उक्त कर तूतों वाले हलकी मनोवृत्ति वाले समाजके कुछ 'बड़े' कह जाने वाले लोग?

स्थानीय गाड़ी अड्डा के महावीर स्वामी के यहां भी अन्नकूट था और उसमें कुछ चित्तौड़े भाइयों को भी निमंत्रण दिया गया था। स्मरण रहे कि सामाजिक दृष्टिसे चित्तौड़ा समाज के साथ माहेश्वरी समाज का खानपान चालू नहीं है परंतु वहां डीडवाणा १०० घर थोक वाले कुछ कट्टर लोग आनंदसे प्रसाद लेकर आये। वहां धर्म को किसी तरह का खतरा नहीं हुआ।

इसी तरह त्रयोदशीको गंगाजीकी बगीचीमें अन्नकूट था। वहां भी सभी जातके भक्त लोग निमंत्रित थे परंतु वहां भी उक्त सौ घरके थोक वालोंको कोई आपत्ति नहीं हुई। उन्हें तो आपत्ति है तो केवल ऐसेही लोगोंसे है जो सुधारवादी मनोवृत्तिके हैं और अवसर आनेपर कांग्रेसके सत्याग्रहमें शामिल होकर अपने समाजका गौरव बढ़ाते हैं।

संवाददाता

(पृष्ठ ९ का शेषांश)

इसी प्रकार अत्रिमुनि ने भी अपनी स्मृति में यही लिखा है। पाराशर ने भी इस विषय में स्पष्ट लिख दिया है। इसी प्रकार अगस्तमुनि ने भी कहा है कि—

भर्त्रभावे वयः स्त्रीणां पुनः परिणयो मतः।
न तत्र पापं नारीणामन्यथा तद्गतिर्नहि॥

अर्थात्—पति के न रहने पर जवान स्त्रियां दूसरा विवाह करने योग्य हैं। इसमें उन्हें कोई दोष नहीं लगता। दूसरे प्रकार से उनकी गति नहीं है।"

ब्रह्मपुराण में भी लिखा है कि—

'यदि सा बालविधवा बलात्त्यक्ताथवा क्वचित्
तदा भूयस्तु संस्कार्या गृहीत्वा येन केनचित्॥

'जो स्त्री बालविधवा हो या हठपूर्वक छोड़ दी गई हो उसका दूसरा विवाह कर देना चाहिए और कोई भी उसको अंगीकार करले।

इन सब श्लोकोंसे यह सिद्ध हुआ कि स्त्रीका पुनर्विवाह करनेमें शास्त्र बाधक नहीं है और न पुरुष ही ऐसा करनेमें किसी प्रकारसे निन्दनीय है। आज हम अपने देशमें देखते हैं कि कितने ही विद्वान तथा, विचारशील व्यक्तियोंने विधवा विवाहकी महत्ताको समझकर इसके अनुकरण करनेका बीड़ा उठाया हुआ है। Widow Remarriage act भी इस सम्बन्धमें पास हो गया है। महात्मा-गान्धीने भी इस विषयपर काफी प्रकाश डाला है और जनतासे इसको अपनानेकी अपील की है।

अनेक लोग इस बातका तर्क किया करते हैं कि प्राचीन कालमें विधवा-विवाह प्रचलित नहीं था। मैं इस बात से सहमत नहीं हूं। इस बात के बहुत से प्रमाण मिलते हैं। प्रथम तो विधवाएँ होती ही कम थीं सो भी अधिक आयुवाली जो अपना शेष जीवन यदि वह सती न हुई (पहले सती की प्रथा का चलन था) तो ईश्वराराधना में व्यतीत कर देती थीं। वह सांसारिक सुखोंसे तृप्त रहती थीं इसलिए उनके किसी भी प्रकार से कलंकित होने की सम्भावना नहीं रहती थी। उस समय में आर्थिक दशा भी अच्छी रहती थी। परन्तु वर्तमान समय बिल्कुल बदला हुआ है। आजकल भी विधवाओंकी एक बड़ी संख्या बालविधवाओं की ही है। इन कन्याओंने संसार-सुख का भोग किया ही नहीं और यदि कुछ किया भी है। तो कुछ मास अथवा अल्प समयतक। सांसारिक सुखसे इनकी तृप्ति नहीं हुई है और ऐसी दशामें जीवन भर उनको कामवासनाओंसे बचाए रखना दुष्कर प्रतीत होता है। यह तो स्पष्ट है कि यौवनावस्था आरम्भ होते ही स्त्री तथा पुरुष दोनों के अन्दर कामाग्नि प्रज्वलित होने लगती है और यदि काफ़ी समय तक इसकी तृप्ति नहीं हुई तो साधारणतया स्त्री तथा पुरुष पागल तक हो जाते हैं। ऐसी दशामें एक बाल विधवा या छोटी आयु की विधवा के लिए जीवनभर संयमसे रहना असम्भव सा प्रतीत होता है। उस अभागिनी विधवा को संयमी बनानेको उसके वंशज कहाँ तक सहायता देते हैं इसपर भी तो तनिक विचार कीजिए। एक ओर तो जिस घरमें विधवा रहती है, उसी घरमें उसके भाई तथा अन्य नातेदार वैवाहिक जीवन का नग्न नाच करते हैं। वह विधवा बेचारी हर समय यह सब बात देखती है। ऐसे वातावरणमें किस प्रकार उसके हृदयमें निग्रह के भाव जाग्रत हो सकते है। हर कोई उसे अनदर की दृष्टिसे देखता है। इन सब बातों का उसपर यह प्रभाव पड़ता है कि घरवालों के प्रति उसके हृदयमें अनेक प्रकारके बुरे भाव उत्पन्न होते हैं। वह मन-मन उनको कोसती हैं और छिप २ कर इधर उधर अपनी अग्नि को शान्त करनेके लिए अनुचित कार्य्योंमें अग्रसर होती हैं जिसका घरवालोंको कभी स्वप्नमें भी ध्यान नहीं होता। बादमें यह सब मामला प्रत्यक्ष रूपमें उनकी आखोंमें सामने आता है और उन्हें निन्दित होना पड़ता है।

इन सब बातों पर विचार करनेसे यही निष्कर्ष निकलता है कि एक असम्भव बात पर विधवाओंको टिकाए रखने और फिर अपनी आंखोंके सामने पाप, व्यभिचार और भ्रूण हत्याओंको देखनेसे यह कहीं अच्छा है कि उनका पुनर्विवाह कर दिया जाए जिससे वे अपना जीवन सुखसे, प्रेमसे, तथा आदरसे बिता सकें। इस पुनर्विवाहकी जिम्मेदारी किसके ऊपर हो, इस विषयमें अपने विचार लेखके आरम्भमें ही प्रगट कर चुका है।

इसी समय पाठकगण यह प्रश्न अवश्य करेंगे कि यदि विधवा विवाह समाज अपनाए तो फिर उन विधवाओंका पुनर्विवाह कुँवारे युवकोंके साथ हो या विधुरोंके साथ। मेरे विचारमें तो विधुरोंको ही करना चाहिए परन्तु इस विषयमें कोई विशेष नियम नहीं। जैसी परिस्थिति हो उसीके अनुकूल मान-मर्यादा रखते हुए जिम्मेदार पुरुषोंको लग्नबन्धन कर लेना चाहिए। इस बात पर इतना कहना ही काफ़ी होगा।

इस समयमें हमारे समाजको अपने मान रखने तथा उन्नति करनेके ख्यालसे विधवा विवाह प्रथाको अपनानेमें पूरा यत्न करना चाहिए। [लखनऊ विश्व.विद्यालय]

(पृष्ठ १९ का शेषांश)

हो या मुसलमान, मारवाड़ी हो या गुजराती, भारतके विभाग को नहीं सहन करेगा। भारत अविभाज्य राष्ट्र रहे यही हमारा जीवनध्येय है। हिन्दू तथा मुस्लिम दोनों भारतीय हैं। भारतीय होनेके नातेसे उनके राजनैतिक-अधिकार अलग नहीं-धार्मिक भिन्नता दो राष्ट्र नहीं उत्पन्न करती।

इस समय समस्त संसार युद्ध के दावानल में लिप्त है। भारत इस युद्ध की परिस्थितिसे दूर नहीं रह सकता। मेरा नम्र मत है कि हमें विदेश के समाचारों को पढ़कर ही संतोष कर बैठ न रहना चाहिये। प्रत्येक भारतीय में चाहे वह मारवाड़ी हो, पंजाबी हो, हैद्राबादी हो, गुजराती हो, राष्ट्र की रक्षा करने की शक्ति उत्पन्न होनी चाहिये। संकट समय हिंसा अहिंसा के चक्करमें न पड हमें आत्म-रक्षण तथा आत्म समर्पण की भावनासे तैयार होना चाहिये। मेरा नम्र मत यह है कि शक्तिहीन दुबले पतले अशक्त भारतीय अपने देश के द्रोही हैं। हममें व्यायाम का प्रेम हो साथमें अनुशासन पालन भी होना चाहिये।

व्यायाम हिंसक य अहिंसक नहीं हैं। व्यायाम का प्रयोग हम आर्य संस्कृति के सिद्धान्त पर करें अर्थात् हम बल का उपयोग दीनों की, असहायों की रक्षामें करें। हम उसका उपयोग दूसरों को दुःख देनेमें न करें। मारवाड़ी समाजमें व्यायाम शालाओंका अभाव मुझे खटकता है। राजस्थानी वीर आज दब्बू भीरु कायर समझा जा रहा है। अतः आप व्यायाम, सदाचार, ब्रह्मचर्य के महत्वको मारवाड़ी समाजमें दाखिल कर सच्चे देश प्रेमी बनें।

देश की वर्तमान राजकीय स्थितिकी तरफ भी आपका ध्यान आकर्षित करना उचित होगा। १९३५ का शासन विधान इस समय स्थगित हो गया है। मध्यवर्ती विभाग में १९३५ का शासन विभाग अब अतीतकाल की वस्तु हो गया है। अब देशको वही शासन दिया जावेगा जिस पर हिन्द की लघुमतियों की मोहर हो। वायसराय तथा भारत मंत्री की इस स्पष्ट घोषणा के पश्चात् हम १९१६ से भी पीछे हट गये हैं। लघुमतियां इस घोषणा का लाभ देश के विभाजन (पाकिस्तान) द्वारा ही उठाना चाहती हैं। अब हमारा भावी प्रोग्राम देश को जिन्हा के चार्टर से बचाने का होगा। किसी भी लघुमति का इस प्रकार बहुमति को पंगु करने के लिए उपयोग करना यह, उत्तम राजनीति नहीं है।

देशी राज्योंमें भी रिफार्मुस दाखिल करनेकी प्रथा चल रही है। देशी राज्य भी लोक शासनके सिद्धान्तको स्वीकार कर रहे हैं। प्रगतिशील देशी राज्योंमें धारा सभायें स्थापित हो चुकी हैं। कुछ समय पूर्व हमारे हैद्राबाद राज्यमें भी कुछ रिफार्मुस देनेकी घोषणा हुई थी परन्तु कौन जाने क्यों अभी तक वह रिफार्मुस दाखिल नहीं हुए।

इन रिफॉर्मसको न देनेका कारण वर्तमान युद्धमें हैदराबाद राज्यकी व्यग्रता है यह बात ठीक नहीं है। हैदराबादका नया शासन विधान फंक्शनल रीप्रीझेन्टेशनका जो सिद्धान्त स्वीकार करता है वह ठीक नहीं है। इसी प्रकार हिन्दुओंकी बहुमतिकी उपेक्षा जो उसने की है उससे भी मैं सहमत नहीं हूं। और भी छोटी मोटी अनेक त्रुटियां हैं जिनके बदलनेकी आवश्यकता है। हमें नागरिकताके अधिकारोंके उपभोग में हमेशा तत्पर रहना चाहिए। हैदराबाद राज्यके भाइयोंसे मैं विशेष प्रार्थना करूंगा कि वह संघ अधिकारों के उपभोग की शक्ति उत्पन्न करें। हमें कायर का जीवन कभी भी बिताना न चाहिये। किसी भी जाति या व्यक्तिके प्रति दुर्भावना ने रखते हुए हमें अपने अधिकारोंके उपभोगके लिए भी कटिबद्ध रहना चाहिये।

इस प्रकार मैंने अल्पसमयमें हमारे समाजसे संबंधित मुख्य मुख्य प्रश्नोंपर प्रकाश डालनेकी चेष्टा की है। मैं आशा करूंगा कि आप प्रस्ताव पास करके ही अपने कर्तव्यकी इतिश्री न मानेंगे किन्तु आगामी पांचवर्षोंके लिये रचनात्मक कार्यक्रमकी एक पंचवर्षीय योजना अवश्य बनाकर उस योजनाके अनुसार कार्यमें जुट जायेंगे। मेरी दृष्टिसे हम निम्न लिखित विषयोंपर यदि अपना ध्यान केंद्रित करें और एकनिश्चित योजनाके अनुसार उसपर अमल करें तो हमारा निश्चित कल्याण होगा।

(१) **शिक्षण प्रसारः**—हम अक्षर ज्ञानका आयोजनकर समाजके सब स्त्री पुरुषोंको पठित बनादें और पाठशाला आदि द्वारा अविद्याका नाश करें।

(२) **व्यायाम प्रचारः**—जातिके प्रत्येक युवक और युवतीको व्यायाम आदि द्वारा सुदृढ़ बनादें।

(३) **व्यापार वृद्धिः**—संगठित व्यापार वृद्धि व्यापार और उद्योगके अनेक क्षेत्रोंमें झुकादें।

(४) **कुरूढ़ि नाशः**—जातिको खोखला बनानेवाली सब कुरूढियां जैसे कि बाल विवाह, वृद्ध विवाह, ओसर मोसर आदिकी प्रथा, इन सबका नाश करदें।

(५) **देश भक्तिः**—उत्पन्न करनेके लिये देशवासियोंमें स्वसंस्कृतिका प्रेम, स्वभाषा प्रेम, स्वदेशी प्रेम इत्यादिकी भावना उत्पन्न करें।

आशा है आप उपस्थित महानुभाव प्रेम से इन विचारों को अपना कर एक महान् संगठन उत्पन्न करनेमें समर्थ होंगे।

वरकी आवश्यकता

राजपूतानेके एक प्रतिष्ठित घरानेकी माहेश्वरी बालविधवाका पुनर्विवाह उसके माता-पिता एक प्रतिष्ठित घरानेके सुशिक्षित वरके साथ करना चाहते हैं, जिसकी आयु २५ सालसे अधिक न हो और शरीर आरोग्य, सबल तथा सुडौल हो।

पत्रव्यवहारका पता—

बाक्स नं. १६
C/o "माहेश्वरी"
अली चेम्बर्स, डीन लेन, फोर्ट, बम्बई.

वर चाहिए

एक सुसंस्कृत, स्वस्था कार्य कुशल १३ वर्षीय माहेश्वरी बालिकाके लिए वर चाहिए। विवाह ठहर कर किया जा सकेगा। पत्रव्यवहार करें।

मंत्री
माहेश्वरी मित्र मंडल
लश्कर-ग्वालियर

(पृष्ठ १८ का शेषांश)

सपूतों की आवश्यकता है जो शूरवीर, सुशिक्षित और सुयोग्य हों, जिनके कंधे भारत माताका भार संभाल सकें। अब सवाल यह है कि विवाहके समय वर वधुकी आयु क्या होनी चाहिए? बहुतसे लोग १८-१४ वर्षके पक्षमें तथा बहुतसे १६-१२ के पक्षमें हैं। ब्रिटिश इन्डियामें १८-१४ का कानून पास हुवा है और अमलमें है! रियासत हैदराबादमें भी इसी प्रकारका प्रस्ताव कौन्सिलमें पेश हुवा था किन्तु अफसोस, मंजूर न होने पाया। सरकारको चाहिए था कि इसको कुछ फेरफारसे कानूनमें परिणित करती। हमें तो कमसे कम यह नियम ले लेना चाहिए कि अपने पुत्र पुत्रियोंका जल्दी विवाह न करें और यदि पुरुष उसे करनेमें अग्रसर हों तो अपनी पूरी शक्ति लगा कर उसे रोकनेका प्रयत्न करें।

फैशन

हममें सुधार तो अवश्य होता जा रहा है लेकिन साथही फेशनकी बुराई घर करती जा रही है। इस फेशनने हमारे घरोंमें कतिपय विदेशी चीजोंका अड्डा-सा जमा लिया है। फेशनकी अकसर वस्तुएं विदेश ही से आती हैं और इन्हें खरीदनेमें हर साल लाखों करोडों रुपये विदेशमें जाते हैं। यदि यह लाखों करोडों रुपया अपने गरीब भाई बहनोंके निर्वाहके लिए लगाया जाए तो कुछ अंशमें आर्थिक समस्या हल हो सकती है।

खादी

पूज्य महात्मा गांधीजीने खादीका काम शुरू कर बेकारी दूर करनेका एक बहुत बडा साधन निकाला है। प्राचीन समयमें जबतक मशीनके बने हुए कपडे ने खादीको जडसे उखाड कर नहीं फेंका था तब तक वास्तवमें यहां सब जगह खादीका बोलबाला था। लगभग १८ वीं शताब्दीके अंतमें भारत वर्षमें खादीका प्रचार घटने लगा और १९ वीं शताब्दीके प्रायः मध्यमें विदेशी कपडे ने अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया। इससे पहले भारत वर्ष खादीके तैयार करनेका सर्व श्रेष्ठ स्थान था और मलमल और केलिको (कालीकटके कपडे) बे जोड तथा उत्तमताके लिए संसारभरमें मशहूर थे। इससे न सिर्फ अपने देशकी पूर्ति होती थी अपितु लाखों रुपयोंका माल दूसरे मुल्कोंको भेजा जाता था यह प्रगति विदेशी भाई न देख सके और उन्होंने यहां पर कई प्रकारके कानून बनाए, टेक्स आदि लगाए और यहां इस कारीगरीको बन्द करनेका दुष्ट प्रयत्न किया। लेकिन हिंदुस्तानी भाइयोंने इतना कष्ट उठा कर भी उस को जारी रखना चाहा क्यों कि वह उन के उदर निर्वाह की सबसे बड़ी कला थी और करोडों आदमियों के पेट पलते थे परंतु वे आखिर में हताश हुवे। उन भाईयों के हाथ कटवा कर इस कला का खातमा किया गया। इस के बाद यहां पर मिलोंने अपना अड्डा जमा लिया और आज इन मिलों की वजहसे थोड़े आदमियोंसे कम समयमें ज्यादा काम होने लगा। इसका नतीजा यह हुआ कि हिंदुस्थान के बहुतसे लोग बेकार होगए। हिन्दुस्थान दरिद्रनारायण बन गया और यह बेकारी दिन प्रति दिन बढने ही लगी। राजनैतिक क्षेत्रमें पैर रखते ही महात्मा गांधीजीने यह सब देख लिया कि बेकारी का मूल कारण यह पश्चिमीय मशीनरी है और जबतक इसे अपने यहांसे न हटा दिया जाए तब तक बेकारी का सवाल हल नहीं हो सकता। उन्हों ने खादी को फिर से उत्थान देकर विदेशीके खिलाफ आन्दोलन शुरू किया और खुशी की बात है कि उन्हें इसमें काफी सफलता प्राप्त हुई। फल स्वरूप आज हिन्दुस्थानमें फिर से खादी का प्रचार काफी बढ गया है लेकिन जबतक देशके सुशिक्षित एवम् शौकीन लोग, भिन्न २ वर्गके नेता और धनवान लोग आदतन खादी पहन कर उसे व्यापक रूपमें न अपनाएंगे तब तक खादी का महत्व नहीं बढता जो कि जीवन निर्वाह का एक अंश है। विदेशी वस्त्रों का ज्यादा शौक हमारी बहनोंमें पाया जाता है। कारण, विदेशी वस्त्र उन्हें आकर्षक दिखाई देते हैं। उन्हें देखकर बहनों का दिल ललचाया जाता है और बडे वे शौकसे खरीदती हैं। उस वक्त हमारी बहनें यह नहीं सोचतीं कि हमारे कतिपय भाई आधे पेट रहते हैं। यह पैसा विदेशमें क्यों भेजा जाए। ऐसी कौन कठोर हृदय की बहने होंगी जो अपने भाई बहनों को भूखा देख सकेंगी। इस लिए मेरी आपसे नम्र प्रार्थना है कि आज से ही खादी पहनने का व्रत धारण कर महात्मा गांधी के इस महत्वपूर्ण काम को पूरा करें और हिंदुस्थान में पूर्ववत् सुखमय और स्वर्गीय जीवन बनाएँ।

फ़ज़ूल खर्ची

कई एक ऐसे रिवाज हैं जिनमें बहुत ही फिज़ूल खर्च होता है। सर्व प्रथम विवाह सम्बन्ध ही को लीजिए। सगाई होते ही देन लेन का श्रीगणेश हो जाता है। तीज शियाला मिलनी आदि आदि कई प्रकारके लड़की वालों को अपने संबंधियों को देना पडता है। कई २ जगह तो सम्बन्ध होनेके पूर्व ही इसका सौदा कर लिया जाता है। इस प्रकार विवाहमें भी ऐसे कई फज़ूल खर्चेके रीति रिवाज अमलमें लाये जाते हैं जैसे कि मायना, छोटे और बडे भात इत्यादि। मेरा इससे यह मतलब नहीं कि विवाहमें सगे सम्बन्धियों को न खिलाया पिलाया जाए। सगे सम्बन्धियों का आदरातिथ्य तो जरूर करना चाहिए, किन्तु व्यवस्थित रूप से जिस से कि ज्यादा अपव्यय न हो। ओसर, मोसर दहेज आदि कई और भी ऐसे रिवाज हैं जिनमें हजारों रुपयोंकी बर्बादीकी जाती है। यदि यही रकम सार्वजनिक संस्थाओं जैसे अनाथाश्रम, विधवाश्रम, पाठशालाएं, पुस्तकालय आदिको दानके रूपमें दी जाएं तो इस का कितना सदुपयोग होगा।

रास्ते चलते गीत

दिन प्रति दिन गानेका रिवाज कम तो हो रहा है लेकिन जितना होना चाहिए उतना नहीं। रास्ते चलते गाना बहुत ही बुरा है। इससे कुछ भी फायदा नहीं बहुत से लोग हमारी तरफ देख कर हंसी उडाते हैं। और निन्दा भी करते हैं। गीत बुरी चीज़ नहीं है, शुभ गीत अवश्य गाना चाहिए, मगर सड़कों पर नहीं।

हमा में शादी आदि में बहुत ही अश्लील गीत गाए जाते हैं। हम परदा करती हैं, किसी से बात नहीं करती लेकिन गीत गाते समय हमारी आवाज पुरुष नहीं सुन सकते। उस वक्त हमारी वह शरम कहां चली जाती है? कैसा बुरा रिवाज है। गायन अच्छी चीज है। मनोरंजन का साधन है। लेकिन अच्छे ढंग से गाया जाए। अपनी इन कुरीतियों के कारण हमें अन्य समाज से अपमानित होना पड़ता है।

कन्या विक्रय

साधारण कुल के लोग अपनी कन्या का पैसा लेकर उसे किसी पुरुषके साथ ब्याह देते हैं। यह भी रिवाज अपने समाजमें कहीं २ पाया जाता है। कन्याका पिता बेटीका विक्रय करते समय लडकेका शील, गुण और उमर की ओर तनिक भी ध्यान नहीं देता है। वह तो उस साहुकारको ढूंढता, है जो अपनी कन्याकी कीमत ज्यादासे ज्यादा देता है। ऐसा व्यवहार करनेवालेका मेरे ध्यानमें सार्थक नाम 'कसाई' जंचता है। अपने पेटके गोलेको बेचकर उस धनपर अपना निर्वाह करना निर्दय कार्य है। हर एक बहन का काम है कि ऐसे रस्मों को सर्व प्रथम रोकें, और समाज को बतलायें कि हम महिलायें भी अपनी कन्याका और समाजका भला चाहती है। हमें तो पुरुषों को यह बता देना चाहिये कि जिस घरमें लडकी का जीवन सुखमय हो उसी घरके अच्छे युवक के साथ अपनी कन्या का विवाह कर देवें।

स्त्रियोंके हक

हिन्दू धर्मके कानून ऐसे बने हुए है कि उनमें हमें बहुतही थोडे अधिकार दिये गये है। धर्मशास्त्रमें भी हमें कहीं बहुत आदरसे देखा गया तो, कहीं हमारा स्थान बहुतही नीचा दिखाया गया है। कहीं स्त्री पूजनीया है, तो कहीं ताडनेकी अधिकारिणी है। यह क्यों? यह तो शास्त्रकारोंका अपना २ विचार है। किन्तु हमारे भाईयोंका कर्तव्य है कि सुधारपर अग्रसर होते हुए साथ २ स्त्रियोंको भी लेकर बढें।

संगठन

ऊपर मैंने जो २ चीजें आपको बतायी हैं, उनके पूरी होने के लिये हम में शक्ति चाहिये, और उस शक्ति का नाम ही संगठन है। जबतक हम बहिनें संगठित न हो जायं तबतक उसमें सफलता मिलना कठिन है। यदि एक बहन किसी अच्छे कार्य को लेकर उसका प्रचार करने लगे तो अन्य बहनें उसको यह सोचकर हंसी उडाती हैं कि यह कुछ तो भी बोल रही है। लेकिन यदि वही कार्य हम कुछ बहनें मिलकर करें तो ऐसी भावनायें हमारी अन्य बहनों के दिलों में शायद ही आयंगी। हमें जगह २ संस्थाएं स्थापन करनी चाहियें और उनमें अच्छा ठोस कार्य कर दिखाना चाहिये। संस्थाएं कई प्रकार की होनी चाहियें—शिक्षा, गृहकार्य, समाजकार्य आदि स्त्रियों के सब काम सिखलाने वाली। महीने में कम से कम ३-४ सभाएं होनी चाहियें, जिन में अच्छे २ विद्वानों एवम् विदुषियों के भाषण हों, आपसमें वादविवाद हों। इससे बहिनोंके जीवन में काफी प्रगति हो सकती है, क्यों कि यह जमाना ही प्रगति का है।

मैंने अपने विचार आपके सामने संक्षेप में रखे हैं, वह भी जिन विषयोंसे स्त्रियों का खास सम्बन्ध आता है। समाज में अनेक कुरीतियां है जिन पर मारवाडी सम्मेलन में विचार प्रकट किये जायेंगे तथा प्रस्ताव भी स्वीकृत किये जायेंगे। यदि उन प्रस्तावों को सफल बनानेमें महिलावर्ग ने साथ नहीं दिया तो निश्चित समझिए कि पुरुष कुछ भी नहीं कर सकेंगे। मैं बहिनोंसे दो ही शब्द कहूँगी और वह यह कि यदि समाज को रूढियोंसे मुक्त करना हो तो आजही निश्चय करलें कि जिन बातों पर सोच विचार कर हम या पुरुष समाज निर्णय करें उसे कृति का रूप देनेका हम निश्चय कर लें अन्यथा केवल सभा करने और व्याख्यान देनेसे कोई लाभ नहीं होगा।

सरदार शहर

बी. रा. सा. सम्मेलनका

हिन्दी साहित्य-सम्मेलनसे सम्बन्ध

१२५) रुपये की सहायता

बी. राज्य साहित्य-सम्मेलन का हिन्दी साहित्य-सम्मेलन प्रयागसे सम्बन्ध होगया है और उसने अबोहरमें होनेवाले हिन्दी साहित्य-सम्मेलनके लिए डा. राजेन्द्रप्रसाद, मैथली शरण गुप्त एवं श्रीश्यामसुन्दरदासके लिए अपना मत दिया है।

रामस्नेही सम्प्रदायके आचार्य वैद्यरत्न स्वामी रामनारायण जी महाराज आनन्दाश्रम बीकानेरने सम्मेलनके प्रकाशन-विभागको १२५) रुपए दिये हैं। तदर्थ उनको सम्मेलन धन्यवाद देता है। और अन्य शिक्षा-प्रेमी सन्त-महन्त दानवीर सेठ साहूकार एवं विद्वज्जनोंसे इसी प्रकार सहायता देनेकी अपील करता है।

आचार्य ओङ्कारनाथ शास्त्री
प्रधान मन्त्री

रोमांचक काकेशस

(पृष्ठ ६ का शेषांश)

ज्योर्जिया, अर्मेनिया तथा ऐज़रबैज़नके स्वशासित प्रजातंत्र युगों पुराने नारे बुलन्द करनेमें व्यस्त रहे, जिनका जनता पर कोई खास असर नहीं होता था। चरम राष्ट्रवादियों ने मेन्शेविकोंको आगे आने दिया, और वे भी अन्तमें लाल रूसके भयंकर आक्रमणके सामने गायब होगए।

जर्मन सहायता, तथा कैसरके दरबारमें कुछ ज्योर्जियन लोगोंके षडयंत्रोंके होने पर भी जर्मनी और सोविएट रूसके बीचकी ब्रेस्ट लिटोवस्ककी संधि, इस बातको बतलाती थी कि जर्मन लोग इन तीन प्रजातंत्रोंका देर तक टिके रहना राजनैतिक दृष्टिसे सम्भव नहीं मानते थे। ब्रेस्ट-लिटोव्स्ककी शर्तोंमें एक शर्त यह भी थी कि लाल रूसको बाकूमें तेलके कुओंमें वृद्धि करनी चाहिए, और कुल उत्पादनका एक चौथाई हिस्सा शाश्वत करके रूपमें जर्मनीको देना चाहिए।

यह बात शुरूसे ही स्पष्ट थी कि इन तीन प्रजातंत्रोंका अस्तित्व देर तक संभव नहीं था। परंपरासे झगड़ालू होने और अनेक भिन्न जातियोंसे निर्मित होनेसे वे (प्रजातंत्र) एक दूसरे पर संदेह रखते थे, और परस्पर सहकार करनेसे इनकार करते थे। जर्मनोंने सन् १९१८ में 'टिफ्लिस' छोड़ दिया। अंग्रेज बाकूसे वापिस लौट गये। तुर्क वापिस आ गये। अंतमें जनरल डेनिकिनकी श्वेतसेनाने भी हमेशाके लिये रूसका किनारा छोड़ दिया। इस तरह सोविएट सत्ता सर्वोच्च रही।

वर्साई की संधिके द्वारा प्रजाओंके आत्मनिर्णयको जो वेग मिला था, वह लाज़िमी तौरपर अपना असर कॉकेशस पर भी छोड गया। सोवियेट रूसको उन तीनों पुनः स्थापित प्रजातंत्रोंको नाम मात्रकी स्वतंत्रता देनेमें राजनैतिक या आर्थिक बाधा नहीं दीखी। कॉकेशस अनेक स्वयं शासित जिलोंके रूपमें बंट गया, जो कि अपनी भाषा एवं प्रथाओंके परिचालनमें स्वतंत्र थे, लेकिन साम्यवादी विचार धारा और आर्थिक संरक्षणसे स्वतंत्र नहीं थे।

लेनिन इस बातको जल्दी ही समझ गया था कि कॉकेशसका प्रधान उत्पादन स्टेलिन ही नहीं है। किन्तु सन् १९२४ में ही उसकी मृत्यु हो जानेसे वह तेलके उद्योगमें महान् उन्नति नहीं देख सका।

सोविएट कॉकेशस के प्रारंभिक वर्षों में वहांके बचे खुचे स्वतंत्र राष्ट्रीयताके विचारने संस्कृतिको अधिकांशमें प्रगति दी लेकिन ऐसे अवसर भी आये जब यह राष्ट्रीयता आर्थिक मतभेदों के रूपमें प्रगट हो उठती थी। यद्यपि वह इतनी नहीं बढ़ी कि उन्होंनें सोवियट यूनियनसे संपूर्ण संबंध त्याग की मांग की हो।

सोविएट के व्यवसायोंमें तेलका उद्योग अत्यंत मुनाफा देखनेवाला तथा चलता उद्योग था, डालर तथा स्टार्लिंग के रूप में इसके मुनाफे के द्वारा दूसरे महत्वपूर्ण उद्योगों के लिये आवश्यक यंत्र खरीदे गये। अनेक कॉकेशस निवासियों ने यह महसूस किया कि कॉकेशस की संपत्ति, लोहे कोयले और बिजलीके उद्योगों जैसे अप्रमुख उद्योगोंमें नहीं बांटी जानी चाहिए।

सोवियेट के साथ असंतोष होनेका संभवतः यही सबसे प्रबल कारण था। यह एक ऐसी चीज थी, जिसकी, कॉकेशसके स्वशासनवादी एवं पृथकतावादी लोगोंने अपने प्रचारमें कभी उपेक्षा नहीं की लेकिन सोवियेट स्टैंडर्डसे देखा जाय तो यह एक स्वार्थपूर्ण दृष्टिकोण है, और समग्र रूपसे कॉकेशियनोंने ऐसा सोचा भी नहीं।

कॉकेशियनों का राष्ट्रवाद एक अत्यंत गंभीर चीज है। उदाहरणतः, वे अपने आपको कभी भी रूसी नहीं कहेंगे। वे हमेशा ही अपने आपको ज्योर्जियन, अर्मेनियन, ऐज़रबैज़न, या डाजस्टन, अथवा सैंकड़ों अन्य राष्ट्रोंमेंसे किसी एक का नागरिक बतलायेंगे। लेकिन सामान्यतया कहा जाय तो, उन सबमें एकता की भावना का प्रवेश हो चुका है।

सोवियेट रूसने, अपने खास ढंगसे कॉकेशियन तथा सोवियेट यूनियन की अन्यान्य जातियोंमें सहकार की भावनाको बढ़ाने का प्रयत्न किया है। ज़ार के राजप्रसाद, और साथ ही साथ उनके सरदारों के निवासस्थान, सेनेटोरियम, तथा मजदूरों के लिये छुट्टियोंमें रहनेके कैम्प के रूपमें बदल दिये गए हैं। वहां की स्निग्ध धूप, तथा प्राकृतिक सौंदर्य की संपत्ति कारखानेके मजदूर के लिये, तथा बच्चों का पालन-पोषण करनेवाली माताके लिये स्वास्थ्यप्रद टॉनिकका कार्य करते हैं, और इसके अलावा, यहांपर मॉस्को की ऋतुकी कठोरता, और मशीनोंकी अविरत झनझनाहट भूल जाना संभव है। साथ ही रूस एक विशाल देश है और ज़ार भी हट चुका है। किन्तु यदि आज कम्यूनिज्मके स्थानपर रूसके ज़ारको फिर गद्दीपर बिठा दिया जाय तो आम प्रजाकी सुखसुविधाके यह आदर्श एक तरफ रख दिये जायगे और केवल एक आदमी--सिर्फ ज़ार--अर्द्ध उष्णदेशीय सूर्य और भूमध्य सागरके सदृश गर्म और नीलवर्ण सागरमें स्नान करनेका आनंद लेने लगेगा।

कॉकेशस, अपने कॉकेशियन राष्ट्रीय संघके स्वयं-निर्णीत नेताओंके नीचे अधिक सुखी हो या न हो, एक बात तो निश्चित है : उनके पिछले रिकॉर्डमें ऐसा कोई प्रमाण नहीं कि वे आम कॉकेशियन जनता के लिये प्रीतिकर हो सकें। उनके राष्ट्र-प्रेम और भक्तिकी पतली पताकाओंके पीछे, उनका संरक्षक-नाज़ी जर्मनी-खड़ा है।

कॉकेशसमें हिटलरकी भावी फूरर-श्रेणीकी प्रवृत्तियोंसे मॉस्कोमें ग्रंथालय भरे जा रहे हैं। उनपर हिटलरने जो धन खर्च किया है, वह सहानुभूतिकी सद्भावनासे अधिक किसी विशेष भावको सूचित करता है। जर्मनीमें प्रकाशित अगणित पत्र-पत्रिकाएं एवं पुस्तिकाएं, जो प्रायः समस्त यूरोपीय एवं निकट पूर्वीय भाषाओंमें छापी जाती हैं, इस बातके प्रमाण हैं कि हिटलर देशद्रोहियोंको उकसानेसे कुछ अधिक चाहता है। सन् १९३४ से लेकर वह उनका अधिकाधिक उपयोग कर रहा है।

कॉकेशियन राष्ट्रवादियोंकी प्रवृत्तियां विशेषतया तुर्कीमें पहचानी गई हैं। यहांपर उन लोगोंने कई साल तक खुल्लम-खुल्ला 'बृहत्तर' तुर्कीमें संयुक्त एक कॉकेशियन संघकी रचनाका समर्थन किया था। तुर्की स्वाधीनताके युद्धका धार्मिक-सिपाही होनेवाला था। जर्मनीके साथ उसने भी युक्रेन पर आक्रमण करना था।

इस राजनैतिक सिद्धान्तको और अधिक बल देनेके लिए यह कहा गया कि, एक करोड़ अस्सी लाख तुर्क जनसंख्या, जो कि तुर्कीके अनातोलिया प्रान्तमें बसनेवाली तुर्क जनसंख्यासे भी ज्यादा है, सोवियेट तुर्किस्तानमें बसी हुई है इसलिये यह बिलकुल स्वाभाविक ही है कि उन्हें एक हो जाना चाहिए और रूसको धता बताकर एक अलग राज्य स्थापित करना चाहिए।

सन् १८३८ में, जब कमाल अतातुर्कने 'रासमीगेज़ेटा'में एक विशेष घोषणा द्वारा कॉकेशियन आन्दोलनके नेताओंको देशसे निकाल दिया तब उन प्रवृत्तियोंका यकायक अन्त हो गया। उसने उन पर यह दोष लगाया कि वे तुर्कीका प्रचारके अड्डेके रूपमें और क्रान्तिकारी खुफ़िया विभागके रूपमें उपयोग करते हैं जिसका उद्देश्य एक मित्र राष्ट्रके विरुद्ध एक तीसरे राष्ट्रके पक्षमें एक और राष्ट्रको उकसाना है।

इस 'तृतीय राष्ट्र' का नामोल्लेख करनेकी कोई जरूरत नहीं थी। इस आंदोलनके नेता, ए. केन्टिमीर तथा हैदर बम्मारे ने बड़े सुरम्य शब्दोंमें अपने निर्वासनका स्पष्टीकरण किया। उन्होंने कहा कि "डूबता आदमी सांपको भी पकड़ लेता है। तुर्कीको अपने इतिहासके संकटकालमें, जबकि वह मित्रविहीन था, बाधित होकर रूसी सांप को पकड़ लेना पड़ा। लेकिन अब, जब कि उसके पास साथी और शक्तिशाली मित्र हैं, मोस्कोके सांपको पकड़ रखने की आवश्यकता दिन दिन कम होती जा रही है।" तुर्की स्पष्टरूपसे ही ऐसा नहीं सोचता था, और उसने सोवियेटसके साथ अच्छा पड़ोसीपन निभाना जारी रखा।

टर्कीके निर्वासित लोगों को "शान्तिपूर्ण व्यापारी" कहा जाता था क्यों कि उस समय 'टूरिस्टों' का आविष्कार नहीं हुआ था। वे अपना 'व्यवसाय' बर्लिन ले गए, जहांपर कि उन्हें युक्रेनियन पृथकता वादी संघमें मिला लिया गया। टर्कीसे उन लोगों की विदाईके समय सोवियट कौंसल भी उपस्थित था जो प्लेटफार्मपर खूब शान से अपने कोट पर लाल 'कारनेशन' लगाये हुए कॉकेशियन देशद्रोहियों को तिरस्कारपूर्ण विदाई देने की इन्तजार कर रहा था।

संभव है कि यह तथ्य नज़र अन्दाज हो जाय कि कॉकेशियन लोग केवल सोवियेट यूनियन तक ही सीमित नहीं हैं। अरब, मिश्र, और ईरानमें उनके विशाल उपनिवेश मौजूद हैं। उनकी दो भाषाएं होना, और फासिस्टोंके साथ उद्देश्य की एकता, निस्संदेह जर्मनोंके लिये षडयंत्र तथा प्रचारमें उपयोगी हुई है। यद्यपि जर्मनी सोवियेटके साथ अपने घनिष्ट सम्बन्ध का दावा करता है तो भी हिटलरने न तो कॉकेशियन और यूक्रेनियन आंदोलन कारियोंको हटाया है, और न ही उन्हें सहायता देना बन्द किया है। शायद स्टेलिन के साथ अपने आतंक युद्ध में वह उनको 'ट्रम्पकार्ड' के रूपमें रख रहना चाहता है।

तेलके प्रदेशोंकी यह लड़ाई अपनी प्रथम मंजिल पर पहुँची है। भविष्य की राजनीति का रंगमंच चाहे जैसा हो हिटलर, जेसन के ही पदचिह्न पर चलने के लिये लालायित होगा, लेकिन सुनहरी बालों की खोजके लिये नहीं, और न ही नील लोहित आंखों वाली पहाड़ी कुमारिकाओं की खोजमें, बल्कि युद्ध के अमृत-तेल-की खोजमें।

—"वर्ल्ड रिव्यू जुलाई १९४१"से

(पृष्ठ १४ का शेषांश)

(४) रु० २२५०) सुरक्षित रहें जो किसी बैंकमें प्रेजीडेंट, मन्त्री या कोषाध्यक्ष के नामसे रहें।

मेरी रायमें समाजमें इस योजनासे शिक्षा, प्रचार और एकता तीनों काम एक साथ अच्छी तरह हो सकेंगे। अ. भा. माहेश्वरी महासभा का कार्यकारी मण्डल इस योजनापर विचार कर इसे अमलमें लाये तो बड़ा काम हो सकता है। "जलबिन्दु निपातेन क्रमशः पूर्यते घटः" की कहावतके अनुसार पैसा-पैसा इकट्ठा करके बड़ी रकम इकट्ठी हो जायगी और योजनापर अमल भी आसानीसे हो सकेगा।

राजस्थान चौक,
संगमनेर (नगर) } **पन्नालाल लाहोटी**

भूलसुधार

गत ता. ७ नवम्बरके 'माहेश्वरीमें १९ पृष्ठपर दूसरे कालममें जो समाचार छपा है उसमें स्थानका नाम भूलसे 'डीग्रस' की जगह उग्रिस छप गया है। साथही इसमें श्री माणिकलालजी सोमाणीको श्री माणिकललाजी बंगका बहनोई लिखा गया है किन्तु वस्तुतः श्री माणिकलालजी बंग श्री माणिकलालजी सोमाणीके बहनोई हैं। पाठक ये दोनों भूलें सुधार लें।

सब प्रकार के बीमे का काम

फायर एण्ड जनरल

यूनिवर्सल

इंस्युरंस कंपनी

अपनी
जिंदगी
का
बी
मा
कराइये

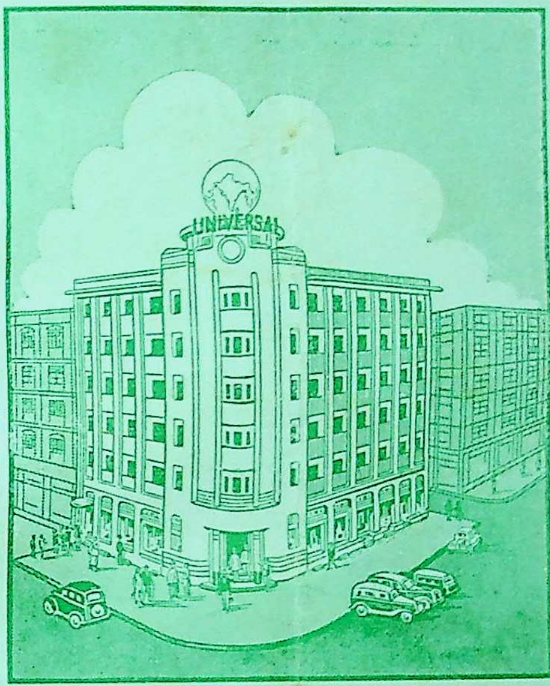

को
ही
दी
जि
ये

इसके डायरेक्टर्स हैं

१. दि. ब. कृष्णलाल मोहनलाल झवेरी एम्. ए. एलएल. बी.
२. सेठ लक्ष्मणदास हरखचंद डागा
३. राजा नारायणलाल बंशीलाल
४. श्री. जे. एच. मोदी सालीसिटर
५. श्री. केशवलाल हरीलाल सेतलवाड़
६. राय साहब केदारनाथ खेतान एम. एल. सी.
७. श्री. रणछोड़दास त्रिभुवनदास पोपावाला (मालपाणी) बी. ए.
८. श्री. कांतीलाल चिमनलाल मुन्शी बी.ए.

आग;
मशीन;
मोटर;
इत्यादि सब
प्रकार के
बीमे के लिये
हमें पूछिये

यह कम्पनी "माहेश्वरी" द्वारा स्थापित की गई है। स्व. सेठ वरजदासजी भाईदासजी मालाणी इसके संस्थापक थे।

सब प्रांतों में एजेन्सियां देनी हैं। आज ही एजेन्सी के आकर्षक नियमों के लिये लिखिये—

मेनेजिंग एजेन्टस—एम. कानजी एन्ड कंपनी

दी यूनिवर्सल फायर एण्ड जनरल इंस्युरन्स कं० लि०

सर फीरोज़ शाह मेहता रोड, बंबई

Printed by Vasant S. B. Shroff, B. A., B. SC., LL. B. at the Bombay Vaibhav Press, Servants of India Society's Building Sandhurst Road, Bombay 4 and published by him at 70, Tulsi Vihar, Marine Drive, Bombay.

Reg. No. B 4441

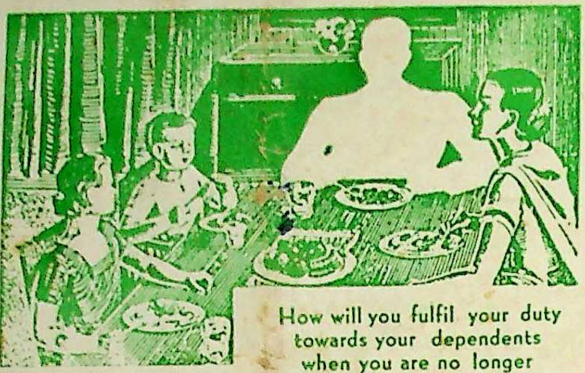

How will you fulfil your duty
towards your dependents
when you are no longer
a breadwinner ?

If you were not there...

कुटुम्ब का संपूर्ण संरक्षण

न्यु एशियाटिक की 'हैपी होम पॉलिसी' बीमा की एक ऐसी अद्वितीय तथा अपूर्व योजना है जिसका कुटुम्ब की संरक्षा अधिक से अधिक प्रमाण में करने क हेतु से निमार्ण किया गया है।

हमारा भारत गरीबी से पीड़ित है। ऐसी दशा में यहां कुटुम्ब की संरक्षा के प्रश्न का हल अधिक आवश्यक है। 'हैपी होम पॉलिसी' में पैसा लगाने से पैसे का अनुचित उपयोग नहीं होता और न वह किसी तरह की जोखम का काम ही है। ५०००) के बीमे से क्या मिलता है:—

५००) और बोनस-मृत्यु के बाद
५०) मासिक-बीमे की शेष अवधि तक
४५००) बीमा की अवधि ख़त्म होने पर

इस रकम से बच्चों की शिक्षा का प्रबन्ध हो सकता है अथवा वे कोई धंधा कर सकते हैं

पूर्ण विवरण के लिये लिखिये—

दी न्यु एशिआटिक लाईफ इंस्युरंस कम्पनी लिमिटेड

मैनेजिंग एजेन्टस्–**बिड़ला ब्रदर्स लिमिटेड**

हेड ऑफिस

कॅनाट सर्कस, नई दिल्ली

शाखाएं और प्रमुख कार्यकर्ता

उत्तरी विभाग
(कॅनाट सर्कस, नई दिल्ली)
लाहोर
रावलपिंडी
पेशावर (केन्टोनमेन्ट)
पटना
कानपुर

पूर्वी विभाग
(८, रायल एक्सचेन्ज प्लेस, कलकत्ता)
ढाका
बर्दवान
जलपाइगुरी
सिलहट
बर्मा

पश्चिमी विभाग
(४५–४७ अपोलो स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई)
हैद्राबाद (दक्षिण)
इर्नाकुलम
बेलगाम
अहमदाबाद
कराची

मध्य विभाग
(भवानी पेठ, जळगांव)
इन्दौर
जबलपुर
नागपुर
अमरावती

दक्षिणी विभाग
(२८९ लिंगा चेट्टी स्ट्रीट, मद्रास)
मद्रास
सीलोन
त्रिचनापल्ली

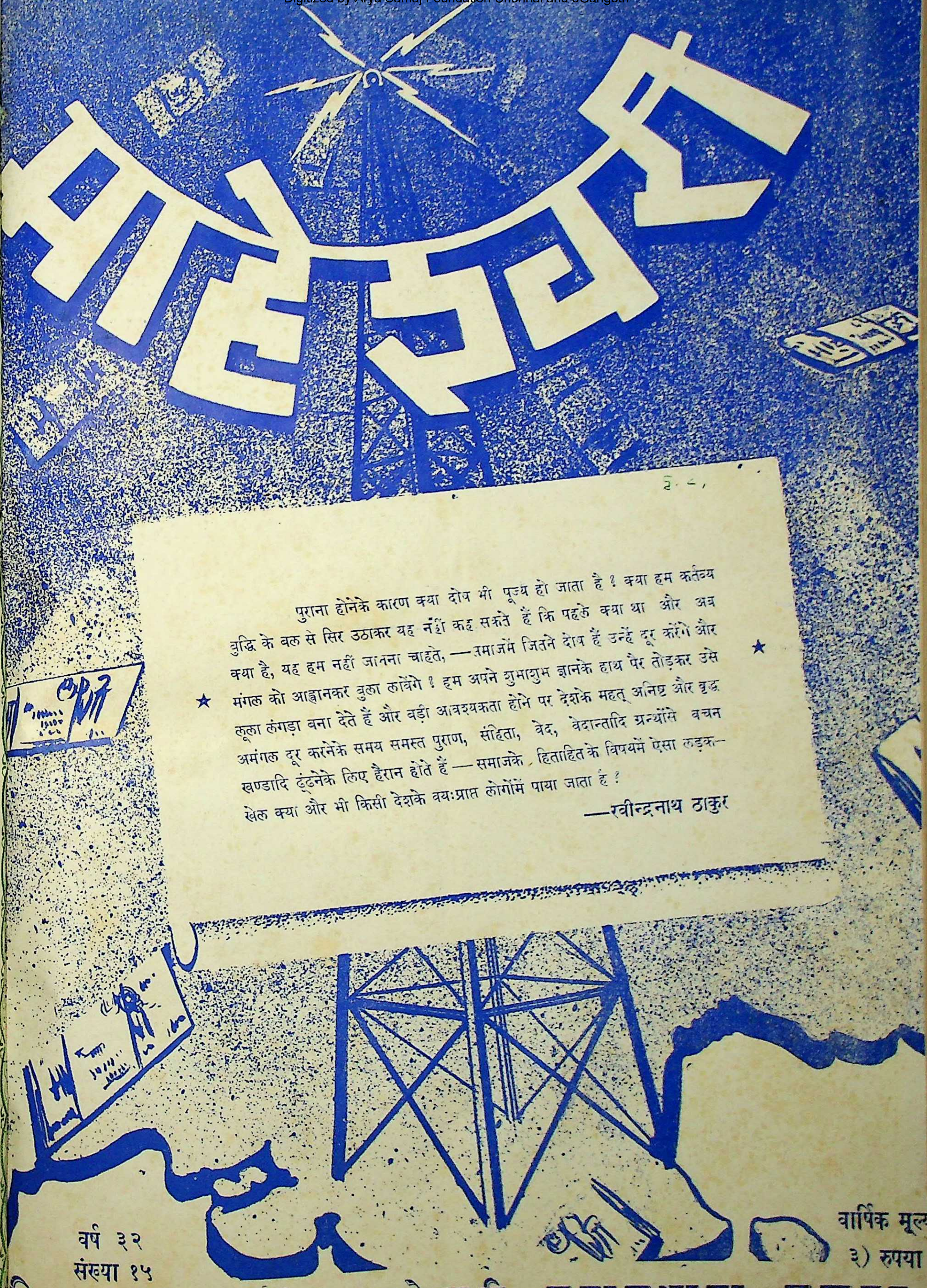

माहेश्वरी

५.८,

पुराना होनेके कारण क्या दोष भी पूज्य हो जाता है ? क्या हम कर्तव्य बुद्धि के बल से सिर उठाकर यह नहीं कह सकते हैं कि पहले क्या था और अब क्या है, यह हम नहीं जानना चाहते, —समाजमें जितने दोष हैं उन्हें दूर करेंगे और मंगल को आह्वानकर बुला लावेंगे ? हम अपने शुभाशुभ ज्ञानके हाथ पैर तोड़कर उसे लूला लंगड़ा बना देते हैं और बड़ी आवश्यकता होने पर देशके महत् अनिष्ट और वृद्ध अमंगल दूर करनेके समय समस्त पुराण, संहिता, वेद, वेदान्तादि ग्रन्थोंसे वचन खण्डादि ढूंढनेके लिए हैरान होते हैं —समाजके हिताहित के विषयमें ऐसा लड़कखेल क्या और भी किसी देशके वयःप्राप्त लोगोंमें पाया जाता है ?

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

वर्ष ३२
संख्या १५

वार्षिक मूल्
३) रुपया

खिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभाका मुखपत्र

पाक्षिक

प्रवर्तक—स्व. भागीरथदासजी भूतड़ा

कार्यालय—अली चेम्बर्स, डीन लेन, फोर्ट, बम्बई.

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद ★ **पं० जवाहरलाल नेहरू**

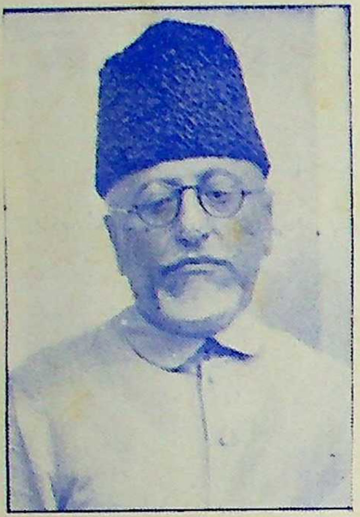

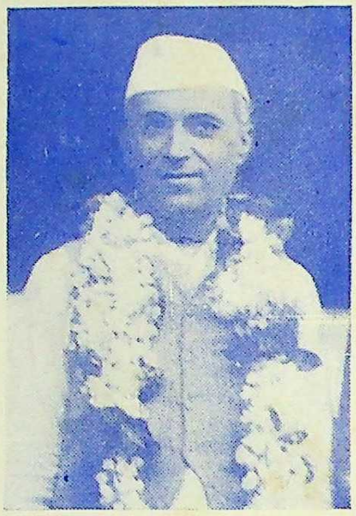

आप दोनों को भारत सरकारने कारागृहसे मुक्त कर दिया है। भारत के राजनैतिक संकट को दूर करने की दृष्टिसे ही सरकारने यह कदम उठाया है।

हिन्दुस्तान में
गेंडा – मार्का
क्राफ्ट-पेपर
बनता है
मज़बूत
चीमड़
टिकाऊ
फिर कमज़ोर और भद्दे
कागजों की रैपिंग से
अपने व्यवसाय
को क्यों हानि पहुंचाते
हैं ?

ओरिएण्ट पेपर मिल्स लि०
८, रायल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता

सम्पादक समिति
श्री. लक्ष्मीनारायण मालाणी,
श्री. दामोदरदास मूंदड़ा,
श्री. राधाकृष्ण लाहोटी

माहेश्वरी

प्रबन्ध सम्पादक
श्री. राधाकृष्ण लाहोटी
प्रकाशक
श्री. वसन्तलाल श्राफ़

‘ उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत ’

वर्ष ३२, संख्या १५] बम्बई ता. ७ दिसम्बर १९४१ [वार्षिक मूल्य ३ रुपया

बात मेरी मान लेते !

सच, नहीं कुछ भी बिगड़ता,
—दूर होती किन्तु जड़ता।
रक्त-पंथी, आज का मानव,
न मानव से झगड़ता।
दूर की मंजिल चले थे, पथ जरा पहिचान लेते।
बात मेरी मान लेते !

नाश में उल्लास पाकर,
विजय या कि विनाश पा कर,
जय बनी चेरी, चले तुम
दुंदुभि जय की बजा कर।
दूर उस घर के रुदन का, तनिक कर अनुमान लेते।
बात मेरी मान लेते !

चीखती करुणा यहाँ है,
ठौर उसको अब कहाँ है।
वे छिपे से खंडहर हैं,
रुदन है आँसू जहाँ है,
इस विजय का मूल्य इस विध्वंस से तुम जान लेते।
बात मेरी मान लेते !

ध्येय की आराधना में,
नाश की या साधना में,
रत हुए ! सोचा कभी यह
आज क्या से क्या बना मैं ?
सोचते, सहसा न यों तब मानवों के प्राण लेते।
बात मेरी मान लेते !

विजय की है, नाम होगा,
यश, धरा-धन-धाम होगा,
क्रूरता की इस कहानी पर
तुम्हें अभिमान होगा,
किन्तु वैभव व्यङ्ग होगा, यह कभी कर ध्यान लेते।
बात मेरी मान लेते !

वर्धा
१-११-४१

रच०—श्री श्रीरामजी आगार

माहेश्वरी

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन"

बम्बई, ता० ७ दिसम्बर १९४१

माता–पिताओंकी जिम्मेवारी

आज कल शादी–विवाहों की हमारे समाजमें धूम मच, गयी है। मंगलवाद्य और तोरण–बन्दनवारों से जगह–जगह मण्डपों का कोना–कोना मुखरित और अलंकृत किया जा रहा है। कुलकन्याएं वधूका वेश परिधान करके सौभाग्यका वरण करने जा रही हैं। पर आज भी हमारे देखनेमें आता है कि कहीं–कहीं इस मंगल आयोजनके बीच एक अस्फुट हाहाकार उठ कर इसे विरस बना रहा है। हमारे समाजके बन्धु अपने पुत्र-पुत्रियों को परिणयके बन्धनमें बांध रहे हैं किन्तु यह बन्धन कितनी ही कन्याओं और कितने ही कुमारोंके लिए स्नेह और मंगल का बन्धन नहीं, बल्कि एक दारुण लौह शृंखलाओंका बन्धन बन रहा है। आये दिन हमारे सुननेमें आता है कि समाजमें अल्पायुमें ही लड़के–लड़कियों का बाल विवाह कर दिया जाता है। कहीं–कहीं विगलितयौवन वृद्ध पुरुष अपने यौवनका सुख भोग चुकने पर भी तृष्णा नहीं मिटनेसे कुमारी कन्याओंके यौवनको खरीद रहे हैं और उन अभागी कन्याओंके माता–पिता भी धनके लोभमें अपनी कन्याओंको बीच बाजार बेच रहे हैं। इस प्रकार हमारे समाजकी विवाह प्रथा कितने ही रूपोंमें अनमेल और दूषित हो गयी है। स्त्री और पुरुषके सम्बन्धकी पवित्रता का अनादर करके इतनी अवहेलना और अवज्ञाके साथ उस पर जो यह अत्याचार हो रहा है वह इस अत्याचार पर ही समाप्त नहीं हो रहा। इससे हमारे देशमें उत्तरोत्तर भावी सन्तानोंका जीवन नष्ट हो रहा है। अनमेल विवाहों से दुर्बल सन्तानें उत्पन्न होकर देशका बलवीर्य क्रमशः क्षीण हो रहा है।

लड़के–लड़कियों के जो माता–पिता बचपनमें ही अपरिपक्व अवस्थामें विवाहके बन्धनमें बांधकर उन्हें संसारमें ढकेल रहे हैं वे यह नहीं समझते कि विवाह कर देना ही माता-पिता का अन्तिम कर्तव्य नहीं। उनके कर्तव्यकी इतिश्री यहीं नहीं हो जाती कि वे अपनी सन्तानों को गृहस्थाश्रममें ढकेल भर दें। स्व. बंकिमचन्द्र चटर्जी के ये शब्द हमें इस अवसर पर याद हो आये हैं—"लड़का होनेसे ब्याह करना ही होगा, हर एक मनुष्य को ब्याह करना ही चाहिए और लड़कपनमें ब्याह कर देना भी प्रधान कार्य है, ऐसा भयानक भ्रम जिस देशमें सर्वव्यापी है उस देश की भलाई कहांसे हो सकती है? जिस देशमें मां–बाप लड़केके तैरना सिखनेके पहले ही स्त्री रूप पत्थर उसके गलेमें बांधकर दुस्तर संसार सागरमें डाल देते हैं उस देशकी उन्नति कैसे हो सकती है?" उनके इन शब्दोंमें एक महान् सत्य, एक ध्रुव सत्य छिपा हुआ है। हमारे देशमें व समाजमें आज सर्वत्र विवाह विधिके प्रति इतने घोर अनुत्तरदायित्व से मानवतापर एक दुःसह भार लादा जा रहा है। जिन बालक बालिओंका यौवन इन अनमेल विवाहोंसे अकालमें ही नष्ट हो रहा है उनका हाहाकार क्रमशः समाज की बुनियादको हिला देनेके लिए भीतर ही भीतर संचित हो रहा है।

बचपन और यौवन, जो मनुष्यके सफलता और मनुष्य समाजके उच्च शिखरपर पहुंचकर वास्तवमें मनुष्य बननेके अवसर हैं, इन बालविवाहोंके द्वारा असमयमें ही बलात् उनसे छीन लिये जाते हैं। संसारकी प्रगतिकी दौड़में आगे बढ़नेका जो नवप्रभात है उसीमें उनका सूर्य अस्ताचल की ओर चल पड़ता है! सफलता और उन्नति जिस समय उनकी राह देखती है तब वे अपनेको असहाय, पंगु और मूक पाते हैं और जब उनमें कभी वह शक्ति आपाती है, तब सफलता उनसे कोसों दूर होती है।

क्या हमारे समाजने कभी इस बातपर भी गौर किया है कि जिस कन्या या जिस लड़केके सामने विवाहमण्डलमें विवाहका अनुष्ठान सम्पन्न किया जा रहा है, वेदमन्त्रोंका उच्चारण हो रहा है, पण्डित अनर्गल श्रुति वचन बोल रहा है, वे उनके अर्थको, विवाहके महत्व और गम्भीरता को समझते भी हैं या नहीं। एक सुदीर्घ जीवनके लिए जो महान् उत्तरदायित्व उनके कन्धोंपर लादा जा रहा है, उसे वहन करनेकी शक्ति भी उनमें है या नहीं, यह भी कभी उन्होंने सोचा है? जिसके कन्धोंमें बल नहीं उसपर अनावश्यक रूपसे बोझ लाद देनेका जो परिणाम होता है वही परिणाम आज हमें अपने समाजमें भी दीख रहा है। आजके युवक–युवतियां बचपनसे ही घर-गृहस्थी का बोझ उठानेसे अशक्त और अकाल वृद्ध हो रहे हैं। माता-पिता अपनी सन्तानोंको मनुष्य बनानेसे पूर्व ही गृहस्थी बनाने का जो यह कार्य कर रहे हैं वह समाजके लिए कितना घातक साबित हो रहा है, उसकी कोई सीमा नहीं। अब समय आ गया है जब कि हमें आंखें खोलना होगी और अपनी इस भयानक भूलको समझकर इससे बचना होगा। अपनी विवाहप्रणालीको विशुद्ध बनाकर सुखपरिणामिनी बनाना होगा अन्यथा विवाह आनंद और सुखका साधन न होकर अभिशापका प्रतीक बन जायगा।

विवाहकी धूम-धामके इन मंगल दिवसोंमें समाजका ध्यान हम इस तरफ आकृष्ट करना चाहते हैं। हम चाहते हैं कि वह अपनी सन्तानोंके प्रति अपने सच्चे कर्त्तव्यको पहिचाने और अनमेल विवाह, बालविवाह और वृद्ध विवाह आदि घातक कुरूढ़ियोंका अन्त कर दे। तभी विवाह स्त्री और पुरुषके बीच सुखका सम्बन्ध बन सकता है अन्यथा श्रुतिवचनों, वेदमन्त्रों, सप्तपदियों, और निरर्थक आशीर्वादोंसे भी उसे मंगलमय बनाना माता-पिताओंकी शक्तिसे बाहर है।

राजस्थानमें एक सुन्दर आयोजन

राजस्थानी माहेश्वरी कार्यकर्ता सम्मेलनने राजस्थान के सामाजिक जीवनमें जिस महत्वपूर्ण अध्यायका सूत्रपात किया था उसे और भी आगे बढ़ानेका एक महान् सुवर्ण अवसर फिर राजस्थानमें आनेवाला है। इस सम्मेलनमें जो योजनाएं बनाई गयी थीं कालक्रमसे आज उनमें कोई उत्साह नहीं नज़र आ रहा। राजस्थान के युवकोंका उत्साह मन्द पड़ गया है, उसे फिरसे प्रदीप्त और प्रज्वलित करने के लिए एक महत्वपूर्ण अयोजन की आवश्यकता थी। इसी दिसम्बर मासके अन्तिम सप्ताहमें ता. २७ व २८ दिसम्बर को उदयपुरमें होने जा रहे अखिल राजस्थानी माहेश्वरी सम्मेलनसे युवक कार्यकर्त्ताओं के क्षीण उत्साह के फिर प्रदीप्त और प्रज्वलित होने की आशा है। इस महत्वपूर्ण सम्मेलन का हम हृदयसे स्वागत करते हैं। अन्य प्रान्तोंमें जिस प्रकार प्रान्तीय सभाओंके सम्मेलन प्रायः होते रहते हैं और उनसे वहांके सामाजिक जीवनपर उनका गम्भीर असर होता है उसी भांति राजस्थानमें भी इन सम्मेलनों के महौषध की आवश्यकता थी। राजस्थान के कार्यकर्ताओं के सत्प्रयत्नसे अब इस कमी की पूर्त्ति होने जा रही है।

इस राजस्थानी माहेश्वरी सम्मेलन के अवसर हम राजस्थानके युवकोंको अपने कर्त्तव्यका ध्यान करा देना चाहते हैं। यह बात किसीसे छिपी नहीं कि राजस्थान आज सबसे पिछड़ा प्रान्त है। सदियोंकी कुरूढ़ियों और कुप्रथाओंके भारसे आज उसकी कमर टूट चुकी है और सीधा होकर खड़े होनेकी शक्ति तक उसमें नहीं रही। आत्म सम्मानकी रक्षा करना और अन्य प्रान्तोंके लोगोंके उपहाससे अपनेको बचा सकनेका सामर्थ्य तक उसमें नहीं। 'मारवाड़ी' शब्द कितना निन्दा, अवज्ञा और अपमानका सूचक होगया है! राजस्थानपर यह जो कलंक लगा हुआ है उसका एक मात्र कारण है राजस्थानकी कुरीतियों और रूढ़ियोंकी गुलामी। राजस्थानमें शिक्षाकी बहुत कमी है और इस शिक्षाके अभावमें ही कुरूढ़ियोंके प्रति मानसिक गुलामी पैदा हो गयी है। राजस्थानके वृद्ध लोग सदियोंसे गुलामी करते-करते अपने वास्तविक स्वरूपको, अपनी शक्तिको पहचानना तक भूल गये हैं और अपने सम्मानकी रक्षाके लिए शास्त्र और सनातन परम्पराओंकी दुहाई देकर समाजको बांधे रहना चाहते हैं। इस सामाजिक निश्चलता और दलदलसे राजस्थानको बचानेकी शक्ति यदि किसीमें है तो वे हैं उसके युवक। उन्हें अपने स्वरूपको, अपनी शक्तिको पहचानना चाहिए। अनादि कालसे युवकोंके हाथों असम्भव सम्भव होता आया है। युवक समाजके जीवन, जागृति और जोशका प्रतीक है। उसके हृदयमें लगन, समाजके प्रति प्रेम, उत्साहका अथाह समुद्र है, सूर्यके समान ज्योति और आग है, सदागति वायुके समान अबाध वेग है, दारुण पृथ्वीकी तरह संसार के आघात–प्रतिघातोंके सामने खड़े रहनेकी अटूट शक्ति और सामर्थ्य है! आवश्यकता है केवल इस बातकी कि वह अपने भीतर झांके। अन्तरकी झांकी लेते ही वह पायेगा कि जिस शक्तिके लिए वह बाहरके संसारमें मारा-मारा फिर रहा है उसका निरुद्दाम प्रवाह स्वयं उसके भीतर है! युवकका शरीर केवल हाड़-मासका ढांचा ही नहीं, वह एक अजेय प्राकार है जिसमें बैठकर उसे समाजके कालुष्य और कुरूढ़ियोंसे लड़ना है।

हमें विश्वास है कि राजस्थानके युवक इस अवसरसे पूरा पूरा लाभ उठायेंगे और आगामी अखिल राजस्थानी माहेश्वरी सम्मेलनमें बड़ीसे बड़ी तादादमें उपस्थित होकर न केवल उसे सफल बनाएंगे बल्कि उसमें बनायी गयी योजनाओंको कार्यान्वित करके अपने युवक होनेकी कसौटी देंगे।

(शेष पृष्ठ १९. के कालम ३ पर)

प्रजातन्त्रकी आसन्न विजय

थॉमस मान

[थॉमस मान एक प्रख्यात जर्मन लेखक हैं। हिटलरके सत्तारूढ होनेके पश्चात जिन लोगों को जर्मनी छोड़ देना पड़ा उनमें से वे एक हैं । सन् १९२९ में उन्हें साहित्यमें नोवल पुरस्कार मिला था । उनकी लिखी हुइ किताबोंमें Buddenbrooks, The Magic mountain, Post Masters and other Peoples, Stories of three decades, ये अत्यंत मशहूर हैं। यह लेख, सन् १९३८ में अमेरिकामें " प्रजातंत्र की आसन्न विजय " के नामसे दिये हुए उनके व्याख्यानका ही सारसंग्रह है, जो अब उसी नामसे पुस्तकाकारमें प्रकाशित हुआ है।— सं०]

'उल्लुओंको एथेन्स ले जाना' यह जर्मनीमें एक प्रसिद्ध दिल्लगीभरी उक्ति समझी जाती है । इससे एक व्यर्थ प्रयत्नका कार्य सूचित होता है: जैसे कि एक चीजको उस जगह ले जाना, जहां पर पहले ही वह बहुतायतसे मौजूद हैं। क्योंकि उल्लू एथेन्सका पवित्र पक्षी था, और एथेन्समें उल्लू बहुत थे, इस लिये कोई भी व्यक्ति जो एथन्समें उल्लुओंकी संख्या बढ़ाना सोचता था, वह उपहासास्पद बन जाता था। प्रजातंत्रके बारेमें बोलते हुए मैं महसूस करता हूं कि मानो मैं भी उल्लुओंको एथेन्स ले जा रहा हूं। (हिन्दीमें इसके लिए कहावत है—" उल्टे बांस बरेलीको ")

अमेरिकाको प्रजातंत्रके बारेमें उपदेश देनेकी कोई आवश्यकता नहीं । परंतु उपदेश देना एक बात है, और स्मृति, चिंतन, पुनः परीक्षण, तथा आध्यात्मिक व नैतिक अधिकारको स्मरण करना—जिनके बारेमें अपने आपको अत्यंत सुरक्षित एवं विश्वस्त समझना खतरनाक हो सकता है—दूसरी बात है। किसी भी उचित अधिकारको अवहेलना नहीं की जा सकती। संसार भरमें इस समय प्रजातंत्रको स्वीकार करना एक जोखिम सा बन गया है। और फ़ासिज्मकी आक्रामक पाशविक शक्तियां जब इतने दुःखद रूपसे विजयी दीख रही हैं, उस वक्त प्रजातंत्रकी आसन्न विजयके बारेमें भाषण देना सरल बात नहीं है।

प्रजातंत्र की विरोधी प्रवृत्तियोंका सबसे बड़ा लाभ या बाह्य लाभ है, उनका नवीनता का आकर्षण। यह एक ऐसा आकर्षण है जिसे मानवजाति हमेशा ही ग्राह्य समझती आयी है । मनुष्यके भाग्यमें यही लिखा है कि किसी भी अवस्था या किसी भी परिस्थितिमें वह इस पृथ्वी पर पूर्ण रूपसे स्वस्थ नहीं बन पाता, जीवनका कोई भी स्वरूप उसे पूर्णतया अनुरूप या पूर्णतया संतोषजनक नहीं प्रतीत होता । ऐसा क्यों होना चाहिये, और क्यों पृथ्वी पर इस प्राणीके लिये अपूर्णता, असंतोष व दुःख की अल्प मात्रा सदा ही शेष रहती है, यह एक रहस्य है । यह रहस्य मनुष्यके लिये आदरणीय भी बन सकता है, एवं अत्यंत दुःखदायक भी । जो कुछ भी हो, इसका यह परिणाम हुआ है कि मानवजाति बड़ीसे बड़ी और छोटीसे छोटी हरेक चीजके अंदर विविधता, परिवर्तन, तथा नवीनता पानेके लिये प्रयत्नशील रहती है, क्योंकि यह उसे उन्नति की, व उसकी शाश्वत अर्धदुःखपूर्ण अवस्थाको कम करने की आशा देती है।

इसी बातको मैं दूसरे शब्दोंमें यहां दोहारता हूं—प्रजातन्त्रके लिए जो विचार और प्रवृत्तियां आज खतरा बन रही हैं और जिनकी वजहसे वह स्वयं एक बड़ी समस्या बन रहा है उनकी सबसे बड़ी ताकत तथा प्रधान मनोहारिता है उनका नवीनताका आकर्षण। इसी पर फ़ासिस्ट लोग बहुत जोर देते हैं और इस पर वे इतना घमंड करते हैं। उनके क्रांतिकारी आचरण, और उनका यौवनपूर्ण एवं अवसरवादी दृष्टिकोण, समस्त विश्वके युवकोंको अपनी और आकर्षित करनेके लिये था, और कमसे कम यूरोपमें ऐसा करते हुए वह वारंवार सफल भी हुआ है। मेरी रायमें ऐसे आकर्षण पर मोहित होने वाले युवक छले जाते हैं। मेरा विश्वास है कि इन प्रवृत्तियोंमें क्रांतिकारी अवसरवादिता और मिथ्या नवप्रभातोंकी चमक आंखोंको धोखा देनेवाला जादू है।

न केवल इस बातमें परन्तु खास इसी बातमें फ़ासिज़्म पूर्णरूपसे इतना झूठा है कि समस्त विश्वमें संभ्रांत युवकोंको इसके साथ किसी भी प्रकारका संबंध रखनेके लिये लज्जित होना चाहिए।

फासिज्म निर्भीक एवं चतुर है, और जैसा कि पहले मैं संकेत कर चुका हूं, नवीनताके प्रति मानवजातिके इस दुःखपूर्ण औत्सुक्य को संतुष्ट करनेमें भी वह कुछ हद तक सफल हुआ है। मुझे यह बात आवश्यक लगती है कि अपने आपका पुनरन्वेषण करके प्रजातंत्रको इस फासिस्ट व्यूहरचनाका जवाब देना चाहिए। इसके द्वारा उसमें भी नवीनताका वही आकर्षण—जो फासिज्म प्रगट करना चाहता है, उससे भी अधिक उच्च आजायगा। उसे (प्रजातंत्रका) अपने आपको स्वतः-सिद्ध समझने तथा आत्म-विस्मरणकी आदत छोड़ देनी चाहिए। उसे अपने आपको जानकर अपनेको ताज़ा और नवयौवनसंपन्न बनानेके लिये इस एकदम अकल्पित रूपसे उपस्थित हुई परिस्थितिका पूरा लाभ उठाना चाहिए। क्योंकि प्रजातंत्रकी शक्ति और यौवनके स्रोतोंका, फ़ासिज्म कभी अधिक अन्दाज़ नहीं लगा सकता, और यदि तुलना की जाय तो मालूम होगा कि फ़ासिज्मकी यौवनपूर्ण धृष्टता केवल विभीषिका दिखानेके लिये बनाई गई डरावनी शकला मात्र है। फ़ासिज्म समय की सृष्टि है—एक अत्यंत आक्रमक सृष्टि—और जो कुछ इसका यावन है वह इसने समयसे ही प्राप्त किया है। परंतु प्रजातंत्र शाश्वत रूपसे मानवीय है, और शाश्वतता हमेशा एक प्रकारके शक्तिशाली यौवनका सर्जन करती है, जिसको केवल विचार और भावनामें मूर्तिमान करनेकी ही आवश्यकता है, ताकि उसे जीवन व सौंदर्यके हरेक प्रकारके क्षणभंगुर यौवनाकर्षणसे बहुत ऊंचे उठाया जा सके।

प्रजातंत्रकी हमें व्याख्या करनी चाहिए कि वह सरकार व समाजका एक ऐसा स्वरूप है जो कि मनुष्य की प्रतिष्ठा, की भावनाओं व विचारों को मान कर चलता है। 'मनुष्य की प्रतिष्ठा'—क्या इन शब्दों का प्रयोग करते हुए हम चाकते नहीं ? और हमें थोड़ा बहुत वह हास्यास्पद नहीं महसूस होता ? क्या इन शब्दोंमें क्षीण व दुर्बल आशा वाद की, तथा मनुष्यके रोजमर्रा जीवन की कटु व कठोर सचाइयोंके साथ जिसका कोई मेल नहीं, वैसे पेट भर लेने के बाद निश्चिंतता के साथ दिये गए व्याख्यान की बू नहीं आती ? हम इस सचाईको जानते हैं। मानव स्वभाव से, या ज्यादा निश्चितता के साथ कहा जाय तो मनुष्यों के स्वभावसे, हम बेखबर नहीं हैं, और इस विषयमें हम किसी भी भ्रमको स्थान नहीं दे रहे। मानवता और उसका अन्याय व द्वेष, उसकी क्रूरता, तथा उसकी औसतन मूर्खता व अन्धापन, ये सब पर्याप्त रूपसे बतलाये गए हैं, उसका अहंकार पागलपन है, उसकी धोखेबाजी कायरता है। उसकी समाजविरोधी सहज प्रवृत्तियां, हमारे दैनिक जीवनके अनुभवोंका निर्माण करती हैं, अनुशासन पूर्ण नियंत्रणका भार उसे किसी भी युक्तियुक्त शासनमें रखनेके लिये आवश्यक है। हम इस मनुष्य कहे जानेवाले विचित्र प्राणीकी क्रूरताको सजा नहीं सकते, जो कि प्रायः अपने भविष्यपर निराश नहीं होता और सृष्टिके आदि कालसे परमात्माके द्वारा इस पहेलीरूप प्राणीके लिये ली गई अज्ञेय दिलचस्पीके प्रति स्वर्गके फरिश्तोंके द्वारा रक्खी गई घृणाके साथ सहानुभूतिभी नहीं रखता। और इतना होनेपरभी यह तथ्य और आज पहलेसे कहीं अधिक सत्य है कि हम इस अत्यधिक सुप्रतिष्ठित संदेहवादिताके बलपर मानवताके प्रति घृणा नहीं कर सकते। मनुष्यमें जो महान् और आदरणीय है,—जो अपने आपको कला, विज्ञान, सत्यके लिये उत्कंठा, सौंदर्यका सृजन, और न्याय का विचार इन रूपोंमें प्रकट करता है—उसको भूल नहीं सकते। और यह भी सत्य है कि उस महान रहस्यसे जिसे हम 'मनुष्य' या 'मानवता' शब्दोंसे स्पर्श करते हैं अप्रभावित बने रहना आध्यात्मिक मृत्यु है। प्रजातंत्रका मानवताके बारेमें चाहे जो विचार हो पर इसके इरादे उसके प्रति सर्वोत्तम ही हैं। प्रजातंत्र मानवजातिको ऊंचे उठाना चाहता है, उसे विचार करना सिखलाता है, तथा उसे स्वतंत्र करना चाहता है। संस्कृतिमेंसे वह विशेषाधिकारकी छाप दूर करनेकी कोशिश करता है और जनतामें उसका प्रचार करना चाहता है—एक शब्दमें कहें तो वह शिक्षाकी ओर निर्देश करता है। शिक्षा एक आशावादी एवं मानुषीय विचार है, और मानवताके प्रति आदरकी भावना उसके साथ अभिन्न रूपसे जुड़ी हुई है। मानवजातिके विरोधी और उससे घृणा करनेवाले ठीक इससे प्रतिकूल विचारका नाम है "प्रोपेगेन्डा', जो कि साधारण जनता एवं लश्करी सिपाहियोंको युद्धकार्य, तथा विशेष करके तानाशाही शासन प्रणालीको कायम रखनेके उद्देश्यसे मूर्ख व बेहोश सा बनाये रखना चाहता है। 'प्रोपेगेन्डा'का शिक्षणके उद्देश्यसे उपयोग किया जा सकता है लेकिन तानाशाहोंके हाथमें यह मानवताके प्रति घोर घृणाका एक हथियार बन जाता है। प्रजातंत्र उसके पुराने व जीर्ण अर्थमें बुद्धिवादी नहीं है। प्रजातंत्र एक विचार है, लेकिन इस विचारका जीवन व आचारके साथ ताल्लुक है।

यदि 'मनुष्य की प्रतिष्ठा' का मूल्य समझना प्रजातंत्र की नैतिक व्याख्या है, तो उसकी मनोवैज्ञानिक व्याख्या, ज्ञान और कला, मन और जीवन, तथा विचार और आचारमें समन्वय व संगति पानेके निश्चयमें मिलती है। निस्संदेह इस विचार को गलत समझने तथा उसके दुरुपयोग करने की पूरी संभावना है । आधुनिक बुद्धिविरोधीवाद का हास्यजनक चित्र, जिसका प्रजातंत्रके साथ कोई संबंध नहीं, हम अपने सामने देख रहे हैं। यह तो पवित्र बुद्धि का तिरस्कार करना है, सत्ता और राज्यके हितके लिये सचाई का इनकार व भंग करना है, हीन वासनाओंको उत्तेजित करना है, बुद्धि व तर्क के अनुशासन से मूढता एवं दुष्टता को मुक्त करना, एवं बदमाशी को खुले आम सत्ता दे देना है। संक्षेपसे कह जाय तो यह एक असभ्य समूह आंदोलन है,

(शेष पृष्ठ २४ के कालम २ पर)

ज़िओनिज़्म—

यहूदियोंके लिए राष्ट्रीय घरका आन्दोलन

● लियोन साइमन ●

[यहूदी जाति एक ऐसी जाति है जिसने संसारको उसके जीवनके विभिन्न क्षेत्रोंमें कतिपय प्रधान व्यक्ति दिये ह । इस-छोटी सी जातिने प्रख्यात वैज्ञानिक, दार्शनिक, विचारक, लेखक, व्यापारी, एवं राजनीतिज्ञ दिये ह । यहूदियों की इन देनोंसे मानवजातिकी विरासत समृद्ध बनी है, लेकिन फिर भी उन्हें अवणनीय यातना और दुःख भोगने पड़े हैं । उनके दुर्भाग्यको समझनेका अर्थ होगा मनुष्यके द्वारा किये गए एक महत्तम अपराधको समझना । प्रस्तत लेख, उनके लिये एक राष्ट्रीय घरके स्थापनके आंदोलनके स्वरूपका विश्लेषण करता ह । वर्तमान इतिहासके इस दुःखद अध्यायको समझनेमें हमारे पाठकोंको मदद मिले इस दृष्टिसे यहूदी आंदोलनके बारेमें हम थोडंसे और लेख भी प्रकाशित करना चाहते हैं । —स०]

ज़िओनिज्म को समझने के मुख्य दो मार्ग हैं । एक मार्ग उन यहूदियोंसे शुरू होता है, जो यहूदी होनेके कारण सताये जाते हैं, और दूसरा उन अल्पसंख्यक लोगोंसे शुरू होता है, जो सताये नहीं जाते । प्रथम अवस्थामें ज़िओनिज्म के मानी हैं, यहूदी जनताका उन्हें स्पष्ट रूपसे न चाहने वाले देशोंसे उस देशमें तबादला, जिसे वे अपना कह सकें, दूसरी अवस्थामें उसके मानी हैं पेलेस्टाइनमें हिब्रू टाइप के जीवन को पुनर्जीवित करना जिसे कि समस्त यहूदी अपने विशिष्ट दृष्टिकोण और आदर्शों का मूर्तरूप समझेंगे और जिससे यहूदियोंकी अपने आपको दुनिया से अलग जाति समझने की भावना को त्याग करनेकी अनिवार्य प्रवृत्ति को हटानेमें मदद मिलेगी, जब कि उन पर बाहर की कोई बाधाएं नहीं रह जायंगी ।

ज़िओनिज्मकी इन दो विचारधाराओंमें प्रथम विचारधारा अधिक प्रत्यक्ष और स्पष्ट रूपसे आकर्षक है। यह सचाई कि यहूदी जनता केवल इस अपराधपर कि वह यहूदी है एवं रहना चाहती है, सतायी जाती है, इतनी प्रकट हो चुकी है कि इस आन्दोलनके प्रचारके लिये इसे बताना आवश्यक नहीं । और यद्यपि यह सच है कि कुछ देशोंमें यहूदियोंपर लगाई गयी पाबन्दियां जहांतक कानूनसे सम्भव है, दूर कर दी गई हैं, तब भी उससे जो कठोर अनुभव मिलते हैं उनसे इस विचार पर संदेह होता है कि सार्वभौमिक स्वतंत्रता यहूदियोंकी यातनाओंके लिये सर्वरोगहर औषधिका काम कर सकेगी । सबसे पूर्व, वे देश भी जिनमें यहूदियों की अधिकतम आबादी है, सबके सब उन्हें पूर्ण समानता देनेको उत्सुक नहीं और दूसरी बात यह कि जो देश समानता देते भी हैं वहां यहूदियोंके प्रति घृणाके भाव इतने अधिक उग्ररूपमें प्रकट होते हैं कि वे वहां रहना न तो पसन्द करेंगे और न उन्हें वहां आराम ही मिलेगा ।

इसलिये, एक यहूदीके दृष्टिकोणके अनुसार जो कि अपनी जातिके लोगोंको, संसारमें आज और पिछली कुछ शताब्दियोंसे ज्यादा समृद्ध एवं सुखी देखना चाहता है, ऐसी योजनाको पेश करनेकी बहुत गुंजाइश है जो कि यहूदी–विरोधी आंदोलनमें सताये जाते हुए लोगोंको उनके निजी प्रदेशमें भेजकर, दुःखके मूलको काट देना चाहती है। इस पूर्णरूपसे सरल एवं बुद्धिगम्य विचारके विपरीत, ज़िओनिज्म की दूसरी विचारधारा अतिगूढ और एकदम पारलौकिक–सी प्रतीत होती है । वह जिस समस्या का हल पेश करती है, उसकी आवश्यकता तो क्या, सत्ता तक को भी साधारण नर-नारी अनुभव नहीं करते । यहूदी–जनताकी हीन अवस्थाको एवं उन्हें एक सुरक्षित शरणस्थानमें भेजनेके औचित्यको समझनेके लिये विचार तथा कल्पना को ज्यादा बल देने की जरूरत नहीं । इस बात को समझना कम आसान है कि स्वतंत्र यहूदी, यहूदियोंके जीवित बने रहने की दृष्टिसे कमसे कम परतंत्र यहूदियोंके जितनी ही कठिन समस्याएं उपस्थित करते हैं, और विभिन्न देशोंमें उनकी आर्थिक व राजनैतिक स्वतंत्रता पर लगाई हुई पाबन्दियोंको हटाने ही से जो स्थिति पैदा होती है वह यहूदियोंकी विशेषताओं व विशेषाधिकारोंकी रक्षाके लिए, उनपर किये गये अत्याचारोंसे भी ज्यादा हानिकर है, और यह समझना भी कम आसान है कि परिणामतः एक प्राचीन प्रजाका विध्वंस, जिसके साथ संसारकी एक महान् संस्कृतिका नाश भी संयुक्त है, आम यहूदी जनताके भौतिक कष्टोंसे भी ज्यादा दुःखान्त है, और, कि 'यहूदी भावना' के लिये एक सुरक्षित आश्रयस्थान दिया जाना चाहिये । यही समयकी सबसे बड़ी मांग है। संक्षेपसे ऊपर आलेखित की गई यह तर्कश्रृंखला हमें सूक्ष्म तथा आध्यात्मिक विचारधाराके उस जगतमें ले जाती जिससे कि एक साधारण–जन अधीर हो उठता है । यह विचारधारा इस बातको मानकर चलती है कि किसी समाजके जीवनकी वास्तविकता उसकी विशेष भावनामें निहित होती है, जिससे कि दूसरे समाजोंसे उसे पृथक् किया जा सकता है, और एक समाज तभी तक जिन्दा रहता है जब तक वह उस भावना को सामूहिक अस्तित्व के व्यवस्थित स्वरूपों तथा क्रियाओंमें स्वेच्छा पूर्वक मूर्तिमान करनेके लिये समर्थ हो । इस विचारधारा के अनुसार समाज व्यक्तियोंके कुलयोगसे, जिससे कि उसका किसी कालमें निर्माण हुआ होता है, कुछ अधिक है; उसका भी निजी व्यक्तित्व होता है, जिसकी एक विशिष्ट आत्मा व जीवन है, और इतिहास भी हैं । इस विचारधारासे समाजका कल्याण उसके वैयक्तिक सदस्योंकी भौतिक समृद्धि तथा राजनैतिक स्वतंत्रताके अर्थोंमें नहीं मापा जा सकता। यह विचारधारा बतलाती है कि जहांतक यहूदी जातिका संबंध है, समस्याका अत्यंत पेचीदा स्वरूप इस तथ्य पर निर्भर है कि वर्तमान परिस्थितियोंमें सर्जनात्मक आत्माभिव्यक्ति करनेके लिये यहूदी जातिका राष्ट्रीय व्यक्तित्व असमर्थ है, और वह यहूदी जातिको उसकी आत्माभिव्यक्तिके लिए एक दूसरे युगकी सम्भावना प्राप्त करके बचाये रखना चाहती है और यह सम्भावना केवल उसी देशमें सम्भव है जिसे यहूदी जाति हरेक अर्थमें अपना कह सकें । इस टाइपका ज़िओनिज्म, जो बहुधा आध्यात्मिक ज़िओनिज्म कहलाता है, अधिक दुर्बोध्य और मौलिक है. अपेक्षया ज़ियोनिज्मके दूसरे भेदके जिसे 'राजनैतिक ज़ियोनिज्म' कहा जाता है जो कि ठीक नपा तुला नाम नहीं । दार्शनिक आधारपर इसकी पुष्टि हो सकती है, और इसमें दुर्बोध्यता होनेपर भी एकदम स्पष्ट आधारोंपर इसकी रक्षा हो सकती है। पर वह अपनी वाणीमें आवाहनका वह बल नहीं ला सका है जिसकी गर्जना सुनकर लाखों लोग उसके झंडेके नीचे एकत्रित हो जांय ।

इसलिये इस बातमें कोई आश्चर्य नहीं कि सन् १८७५ से पूर्व ज़िओनिज्म ने आम आंदोलन का रूप नहीं धारण किया, जब कि थिओडोर हर्ज़ल ने अपनी युडेन्स्टाट (Judenstaat) नामक किताबमें सुंदर ढंगसे इस सरल विचारकी स्थापना की थी कि जो यहूदी अपने आसपास की परिस्थितिके साथ पूर्णरूपसे मिल नहीं सकते, उनके लिए पृथ्वीतलके किसी कम बसे हुए हिस्सेपर स्वतंत्र आश्रय स्थान ढूंढा जाय । हर्ज़ल ने इस विचारकी स्थापनासे और भी अधिक कार्य किया । उसने अपने अवशिष्ट स्वल्प चिंताग्रस्त दिवसोंको उसी विचारको मूर्तिमान् बनानेमें खर्च किया । उसने ज़िओनिस्ट संघकी, व ज़िओनिज्म राजनैतिक कार्य को आर्थिक दृष्टिसे पुष्ट करनेके लिये यहूदी औपनिवेशिक ट्रस्ट (Jewish Colonial Trust) की तथा पेलेस्टाइनमें ज़मीन खरीदनेके लिये यहूदी राष्ट्रीय फण्ड (Jewish National Fund) की रचना की। उसने यहूदी जनता को आशा एवं दृष्टि दी जिनके लिये अज्ञातरूपसे वे तडप रहे थे, उनकी कल्पना को उसने उत्तेजित किया, जो पिछले कई वर्षों से प्रसुप्त पड़ी थी। लेकिन उसकी वास्तविक योजना फलीभूत नहीं हुई। संसारमें ऐसा एक भी देश नहीं था जिसे यहूदी राष्ट्रके रूपमें परिवर्तित किया जा सकता । केवल एक ही देश जिसे यहूदी लोग साधिकार अपना कहने को तय्यार थे, पेलेस्टाइन था। वैयक्तिक रूपसे वे लोग पूर्वीय यूरोप से उन देशोंमें, जो पहलेसे ही उन्नत थे, जा बसनेके लिये तय्यार थे और उन दिनों वे ऐसा कर भी सकते थे। तथा उन देशोंके राष्ट्रीय ढँचेके मुताबिक अपने आपको यथाशक्ति अनुकूल बनानेके लिये भी वे तैयार थे, लेकिन अपने राष्ट्रीय घरके लिये वे पेलेस्टाइन और केवल पेलेस्टाइनको ही चाहते थे । परंतु पेलेस्टाइन, शीघ्र ही बहुतसे लोगोंको बसानेके लिये उपयुक्त नहीं था, और यदि उपयुक्त होता तब भी इसके लिये आवश्यक राष्ट्रीय परिस्थितियों एवं जरूरी आर्थिक साधनोंकी कमी थी। यदि ज़िओनिस्ट संघके जीवनका मक़सद एक निश्चित समयके भीतर ही सामूहिक देशान्तरगमन व स्वतंत्र राज्य स्थापित करना होता, जो कि हर्ज़लकी मूल योजना का सारतत्व है, तब तो वह दस साल तक भी ज़िन्दा न रहता। वस्तुतः, इसके पीछे विशाल किन्तु अव्यवहार्य दृष्टिके अलावा और भी कुछ था । 'आध्यात्मिक ज़िओनिज्म' अपने आप जनताको अपील न कर सकने पर भी, आवश्यकता के अवसर पर एक ऐसा ध्येय देनेके योग्य था, जिससे कि अपने अस्तित्वके मूल निमित्तके नष्ट होनेपर भी संघ कायम रह सके। यद्यपि, यह बात नहीं थी कि संघने आध्यात्मिक ज़िओनिज्मके दर्शन (Phylosophy) को अपना दर्शन मान लिया था। उसका कार्यक्रम, उसका शब्दविन्यास और उसकी दृष्टि–इनमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ । लेकिन वास्तवमें देखा जाय तो—पेलेस्टाइनकी तरक्कीके क्षेत्रमें—अपेक्षाकृत छोटे पैमानेके कार्यों तक ही वह सीमित रहा। पेलेस्टाइन की भूमि पर कुछ हजार यहूदियों का बसा लेना उसके प्रमुख नगरोंमें यहूदियों के व्यवसायों की एक साथ वृद्धि, स्थान–स्थानपर हिब्रू–पाठशालायें खड़ी कर देना, और इसी तरहके दूसरे कार्य आधुनिक युगकी परिस्थितियोंमें अपने निजी जीवन के स्वरूपोंका पुनर्निर्माण करनेकी यहूदियोंकी अश्रान्त क्षमताका प्रदर्शन करने

और पैलेस्टाइनमें यहूदी लोगोंकी क्रियात्मक दिलचस्पी को पुनर्जीवित करने के साधनके रूपमें भले ही महत्वपूर्ण हों, पर यहूदी जातिके असंख्य अत्याचार पीड़ितों के लिए एक सुरक्षित घर और शरणगृह स्थापित करनेके विचार के साथ उनका कोई सहजगम्य सम्बन्ध नहीं। और बहुत हद तक सिद्धान्त पर व्यवहार का भी प्रभाव पड़ा।

ज़िओनिस्टों ने न केवल यही समझा कि पूर्वीय युरोपकी यहूदी जनताको पेलेस्टाइनमें ले जानेका विचार मृगमरीचिका है, बल्कि यह भी कि अपेक्षाकृत छोटे प्रमाणमें पैलेस्टाइनमें यहूदी जनताका एक केन्द्र स्थापन करना यहूदी धर्मकी दृष्टिसे जो कि अपनी भाषा बोलती हो, तथा सुदृढ़ आर्थिक संगठनके आधारपर अपनी निजी संस्कृतिको विकसित कर रही हो, विधेयात्मक मूल्य भी रखता है, लेकिन जब तक पैलेस्टाइन तुर्कोंके अधीन रहा, तबतक इस केन्द्रके राजनैतिक भविष्यके प्रश्न ने क्रियात्मक महत्व नहीं प्राप्त किया।

सन १९१७ की बाल्फोर घोषणा, और पेलेस्टाइन के ब्रिटिश शासनादेश से परिस्थिति में दो तरहसे परिवर्तन आगया। पैलेस्टाइन में एक प्रगतिशील एवं मित्रतापूर्ण शासन स्थापित होनेसे गतमहायुद्ध से पूर्व यहूदियोंके सामने आनेवाली अनेक बाधाएं दूर हो गईं। और ज़िओनिज्मने इसप्रकार दिये गये महान् अवसरोंका पूरा फायदा उठाया क्योंकि इस तथ्यको स्वीकार कर लिया गया कि युद्धोत्तर जगतमें यहूदी प्रजाने भी दूसरोंकी अपेक्षा दरिद्रता तथा थकावट का निश्चित रूपसे कम अनुभव नहीं किया है। पिछले बारह सालमें पैलेस्टाइन में यहूदियोंकी जनसंख्या दुगुनेसे भी अधिक हो गई, और आज उनकी संख्या १,६०,००० के आसपास है, अर्थात् पेलेस्टाइनकी समूची आबादी का पाँचवा हिस्सा है। यहूदियोंने कृषि एवं व्यवसायके आधुनिक तरीकोंका विकास किया है, दलदल भरी भूमिको सुखया तथा ऊजड़ जमीनको कृषिके योग्य बनाया। वे उस देशके आम रोगोंके साथ, सफलताके साथ लड़े और तंदुरुस्ती एवं स्वास्थ्यकी साधारण सतहको ऊंचा करनेमें उन्होंने बहुत कुछ किया। उन्होंने अपनी शिक्षाकी इमारतको हिब्रू विश्वविद्यालयसे विभूषित किया और एकबार फिर उन्होंने हिब्रू भाषाको अपनी भाषा बनाया। भाषाके पुनरुद्धारकी आधारशिलापर वे कमसे कम व्यक्ति तथा जीवनके उस नमूनेकी उत्क्रांतिके प्रथम सोपानपर पहुंच गये, जिन्हे हम बिना हिचकिचाहटके यहूदी तथा हिब्रू कह सकते हैं। जहांतक उनका एक विशाल परित्यक्त प्रदेशकी उन्नतिके साथ ताल्लुक है, ये सुधारकार्य संसारकी दृष्टिसे भी कुछ महत्वके हैं। पैलेस्टाइनके अरबोंके लिये भी वे लाभकारी हैं, क्योंकि इनके द्वारा उन्हें विशाल सांस्कृतिक अवसर तथा जीवनकी उच्च सतह प्राप्त हुई है। संसारभरके यहूदियोंके लिये इनका अत्यधिक महत्व केवल इसलिये नहीं है कि इनके द्वारा पूर्वीय यूरोपके हजारों यहूदियोंको अधिक उच्च व स्वस्थ जीवनके मार्ग मिले, बल्कि इसका और भी अधिक क्रियात्मक महत्व यह है कि जो जाति आजतक दूसरोंकी आंखोंसे देखते हुए अपने आपको असाध्यरूपसे पराश्रयी समझती थी और जुल्म दबाव तथा मुक्तिके मीठे आशावचनोंसे जो यह भूल गई थी कि उसकी भी अपनी एक महान नैतिक एवं बुद्धिपूर्ण विरासत है, उसकी उत्तरोत्तर विकास करती हुई सर्जनात्मक शक्तियोंपर इसका पुष्टिकारक असर हुआ। पैलेस्टाइनमें जिओनिस्ट कार्योंका एक महत्वपूर्ण फल यह भी हुआ कि इससे संसार भरके यहूदियोंमें इस भावनाका संचार हो गया कि आध्यात्मिक दृष्टिसे वे सब एक साथ मिले हुए हैं, और इस बातका उदाहरण पैलेस्टाइनके लिए 'निर्मित ज्यूइश एजेंसी' में ज़िओनिस्ट व गैरज़िओनिस्ट लोगोंमें हाल ही में जो एकता हुई है, उसमें मिलता है।

इसके साथ ही साथ "बाल्फोर घोषणा पत्र" तथा 'शासनादेश' ने स्वयं पैलेस्टाइनके यहूदी समाजके राजनैतिक दर्जे व उसकी माली हालतके बारेमें अबतक प्रसुप्त प्रश्नोंको सामने ला दिया। घोषणापत्र यहूदी प्रजाके लिये पेलेस्टाइनमें राष्ट्रीय घर की स्थापनाके बारेमें विचार करता है। वह पैलेस्टाइन स्थित यहूदियोंके, जो कि उस यहूदी प्रजा के छोटे से भाग से ज्यादा कुछ नहीं है, और न ही हो सकते हैं जिन्हें राष्ट्रीय घर का वचन दिया गया था—दर्जेके बारेमें स्पष्ट रूपसे कुछ नहीं कहता है। लेकिन लेने वाले और देने वाले दोनों ने ही स्वभावतः इस बातको समझ लिया था कि यहूदी प्रजाका जो भाग अपने राष्ट्रीय घरमें पहले से ही है और आगे भी रहेगा उसे राष्ट्रीय दर्जा प्राप्त हुआ है। इस बातमें किसी को संदेह नहीं है कि ब्रिटिश शासनादेश पैलेस्टाइनके यहूदियों को देशके एक राष्ट्रीय समुदायके रूपमें स्वीकार करता है—और यह स्वीकृति, हिब्रू भाषा पेलेस्टाइन की एक सरकारी भाषा मान ली गई है, इस बात से अत्यंत स्पष्टता से प्रमाणित होती है। घोषणापत्रका दूसरे शब्दोंमें यह अर्थ है कि पैलेस्टाइन, जैसाकि कुछ लोग अब भी उसे समझते हैं, एक अरब राष्ट्र नहीं है जिसमें यहूदियोंको जानेकी इजाज़त दी भी जा सकती है और नहीं भी दी जा सकती। वह एक ऐसा राष्ट्र है, जिसे किसी भी यहूदीको अपना कहनेका अधिकार है; और कुछ अर्थोंमें वह यहूदी राष्ट्र है। लेकिन, कितना अधिक और कितना कम, इस बातका व्यवहारमें अर्थ क्या है? पेलेस्टाइनको इस अर्थमें एक संपूर्ण यहूदीराष्ट्र बनानेका इरादा था कि उसके भाग्यनिर्णय की बागड़ोर केवल यहूदियों के ही हाथमें रहे, और दूसरे बाशिन्दोंको वे ही अधिकार दिये जांय जो यहूदी लोग ठीक समझें? अगर यह परिस्थिति अविचारणीय है, जबकि यहूदी लोग अल्पसंख्यामें हैं, क्या उनकी बहुसंख्या होने पर यह संभव हो सकती है?

न्याय और साधारण समझ इन प्रश्नोंका उत्तर नकारमें देते हैं। यहूदी तथा अरब, ये राष्ट्रीय समुदाय जो कि पैलेस्टाइनके वासी माने गए हैं, दोनोंको राजनैतिक समानताके आधारपर साथ साथ तरक्की करनी चाहिए। अरबोंपर यहूदियोंके शासनकी व अरबों द्वारा यहूदियोंके निकाल भगाने की संभावना नहीं होनी चाहिए। अल्पसंख्या और बहुसंख्याके प्रश्नसे इस समय या भविष्यमें भी राष्ट्रीय समानताके सिद्धान्त को कोई क्षति नहीं पहुंचनी चाहिए। परन्तु बाल्फर घोषणापत्रमें इस प्रकारका कुछ भी स्पष्टरूपसे नहीं लिखा गया था, और यदि ऐसा लिखा भी होता, तब भी

इस बातका क्या सबूत है कि पैलेस्टाइनके अरब, इस विचार को युक्ति संगत मान लेते। क्योंकि यहूदियोंकी राष्ट्रीय आकांक्षाओंको स्वीकार कर लेनेका, एक विरोधी परिणाम यह निकला है कि इससे पैलेस्टाइनका अरब राष्ट्रवाद उत्तेजित हो गया है, जिसका गत महायुद्धसे पूर्व शायद ही अस्तित्व था, और इस राष्ट्रवादको मुखरित करने वाले नेता जो इस देशमें यहूदियोंके समानाधिकारों को भी स्वीकार नहीं करना चाहते, स्वाभविक रूपसे दुनियाको यह बतलाते हैं कि यहूदी लोग समानाधिकार नहीं बल्कि प्रभुत्व चाहते हैं।

दूसरी बात यह है कि इस विचार पर जो कि सरकारी ज़िओनिस्ट घोषणापत्रसे सर्वथा विपरित है, कम उत्तरदायी ज़ियोनिस्टों की बड़ी चड़ी बातों के कारण रंग चढ़ गया, और इससे आम राजनैतिक परिस्थिति की अस्पष्टता में इसे अनुकूल वातावरण मिल गया है। अरबोंकी असहयोगी वृत्ति ने स्वभावतः यहूदियोंको दो राष्ट्रीय समुदायोंके बीच सहयोग पूर्ण क्रियात्मक नीति को अख्तियार करने में प्रोत्साहन नहीं दिया जो कि इसलिए कठिन रहा होगा कि दोनों की सांकृतिक सतह में अन्तर था, और क्योंकि यहूदी लोग पूर्ण रूपसे 'पैलेस्टानियन' नहीं बन पाये थे, इसलिये उस देशमें अपनी स्थिति प्राप्त करने के लिये ही उन्हें अपने सारे प्रयत्न सीमित करने पड़े। फलतः दोनों राष्ट्रीय समुदाय एक दूसरे से इतने अलग पड़ गए कि उनमें पारस्परिक विश्वास की भावना नहीं पनप सकी, और इसीसे शायद यहूदियोंकी काल्पनिक महत्वाकांक्षाओंसे डरे हुए अरब राजनीतिज्ञोंको अनेक अवसरोंपर जनतामें उत्तेजना फैलानेमें कठिनाई नहीं प्रतीत हुई। सन १९२९ के अगस्त मासमें जो शोचनीय हिंसक उत्पात फूट निकला था उसने इस बात को पराकाष्ठा तक पहुंचा दिया। यद्यपि इस चीजका ज़िओनिस्ट उद्देश्यों के मूल औचित्य पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा, परंतु फिर भी इस प्रश्नको समय और शिक्षा के भरोसे छोड़ देनेकी अपेक्षा दोनों प्रजाओंके बीच समझौता स्थापित करनेके लिये कोई क्रियात्मक कदम उठानेकी आवश्यकता प्रबल हो गयी। अरबोंकी तरफसे तो अबतक बाल्फोर घोषणा पत्रको दफनानेकी मांगके अतिरिक्त और किसी भी ज्यादा रचनात्मक नीतिको अवलम्बन करनेकी आवश्यकता को पूरा करनेका संकेत नहीं। लेकिन ऐसी महज़ निषेधात्मक नीति सरकारके अपने घोषणापत्रको सक्रिय रूप देनेवाले स्पष्ट वक्तव्यके सामने शायद ही टिक सकेगी, और इस बातसे निराश होनेकी आवश्यकता नहीं कि स्थायी शांतिकी स्थापनाके लिये कोई न कोई हल निकल आवेगा। ज़िओनिस्टोंकी ओरसे ऐसा हल ढूंढ़नेमें कोई बाधा उपस्थित होगी, यह सोचनेका कोई कारण नहीं, यद्यपि यह बात माननी पड़ती है कि "शासनादेशकी सत्ता" के द्वारा परिस्थितिको संभालनेके हालमें जो प्रयत्न हो रहे हैं, उनसे उन ज़िओनिस्टोंकी ताकत नहीं बढ़ी है जिन्हें नर्म उदारताकी नीतिकी न्याय्यता तथा विवेकपूर्णतामें दृढ विश्वास है।

"About Zionizm" की भूमिकासे

(पृष्ठ ११ का शेषांश)

कृष्णकुमारी की ओर। उसकी आंखों से चौधारे आंसू बहते हैं। भीमसिंह का अजीतसिंह के साथ प्रवेश। भीमसिंह के मुख पर महान् शोक छाया हुआ है। भीमसिंह शीघ्रता से कृष्णकुमारी की ओर बढ़ता है।]

भीमसिंह—(जल्दी से कृष्णकुमारी के पास बैठते हुए) बेटा...बेटा......

[कृष्णकुमारी की दृष्टि भीमसिंह की ओर घूमती है। उसके ओठों पर मुस्कराहट आ जाती है, पर उसी समय उसके नेत्र बन्द हो जाते हैं। भीमसिंह और पटरानी उच्च स्वर से रो पड़ते हैं।]

(यवनिका)

उपसंहार

स्थान—राज श्मशान

समय—संध्या

[पीछेकी ओर कई ऊँची ऊँची छतरियाँ (समाधियाँ) दिखती हैं, जिनके सोनेके कलश डूबते हुए सूर्यकी सुनहरी किरणोंमें चमक रहे हैं। बीचमें चिता जल रही है। दाहिनी और अनेक व्यक्ति जमीन पर बैठे हुए हैं। सबोंके सिर पर सफेद पोतिए (शोकके समय के सिर पर बँधे हुए वस्त्र) हैं। बाँई ओर ज्वानसिंह और संग्रामसिंह खड़े हैं। इन दोनोंके सिर पर भी पोतिए हैं। संग्रामसिंहकी अवस्था लगभग २५ वर्षकी है, वह कुछ सांवले रंगका, ऊँचा, पूरा दोहरे शरीरका युवक है; ऊपर चढ़ी हुई मूंछें हैं।

संग्रामसिंह—(लम्बी साँस लेकर) कँवरजी, यह चिता कृष्णकुमारीकी नहीं, यथार्थमें राजपूत जातिकी है।

(शेष पृष्ठ १२ के कालम ३ पर)

शिक्षा प्रचार–

श्री रामयशजी झंवर

अगस्त ७ के 'माहेश्वरी' की सम्पादकीय टिप्पणीसे समस्त माहेश्वरी विद्यार्थी जगतमें आशा और संतोष की लहर विकीर्ण होगी, ऐसा मेरा अनुमान है। हर्ष का विषय है कि अन्धकारसे आच्छादित समाज युग की पुकारके अनुसार आगे बढनेको अग्रसर हुआ है। काफी लम्बी अवधिसे 'माहेश्वरी-सभा' तथा अन्य संस्थायें समाज–सुधार की ओर अथक परिश्रम कर रही हैं पर यदि यह कहा जाय कि वे सुधारके क्षेत्रमें अधिक कार्य करनेको समर्थ नहीं हो सकीं, तो कोई अत्युक्ति न होगी। उन्होंने कार्य करनेका प्रयत्न ज़रूर किया परन्तु जिस रूपमें यह प्रयत्न किया गया वह प्रणाली जनताको ठीक मार्गपर लानेके लिये कसौटीपर खरी न उतर सकी। यद्यपि इन्होने समाजके विभिन्न अंगों की ओर प्रकाश डाला; विधवा-विवाह, बाल-विवाह, पर्दा-प्रथा, दहेज आदि कुरीतियों और सामाजिक प्रतिबन्धों को लेकर अपना मार्ग प्रशस्त किया; किन्तु उन्होंने अब तक समाज की आशा, समाज की उन्नति का आधार-स्तम्भ और समाजके निर्माण कर्ता विद्यार्थी–जगत की और वह ध्यान नहीं दिया जो उसे देना चाहिए था। मैं सभा के सम्पूर्ण कार्योंसे अभिज्ञ नहीं हूँ। इसलिए मैं इतना कहने का साहस भी नहीं कर सकता कि इस ओर से सभाने बिल्कुल मुँह मोड़े रखा। मेरा अभिप्राय यह है कि विद्यार्थी धन का इच्छुक नहीं हुआ करता दुनियांदारी से वह परे रहना पसन्द करेगा क्यों कि एक सच्चे विद्यार्थी के लिये तो त्रैलोक्यका सौंदर्य और तीनों काल की सम्पदा उसके स्वाध्याय में अन्तर्हित रहती है। उसकी विश्ववाटिकामें विवेक और विचार का सरोवर है। वह मानव बनना चाहता है। इसके लिये आवश्यकता है पूर्ण अध्ययन की। बहुधा लोग कहते देखे गये हैं कि आज के विद्यार्थी इस तरह के नहीं हुआ करते ? इस विषय में मैं एक बात कहना चाहता हूँ कि प्रत्येक मानव का जीवन उसके आसपास के वातावरणसे बनता और बिगडता है। यह आधुनिक शिक्षा प्रणाली है जो विद्यार्थी को अपनेसे परे ले जारही है। यही नहीं—माहेश्वरी विद्यार्थियों को तो धनी—मानियों की ओर से विशेष प्रोत्साहन प्राप्त न हो सका; अतः जीवन को ढोने के लिये उन्हें अपने पथसे च्युत होना पड़ा। कारण यह है कि यह विद्या प्राचीन समय की तरह गुरु–सेवाके हेतु विद्यार्थियों की आत्म–बलि नहीं चाहती, कड़ी परीक्षाये इसका कोई सम्बन्ध नहीं; यह तो उनकी रुचिको कुचल देना चाहती है जिससे वे आगे बढ़ न सकें। यह बलि चाहती है-धन की। गरीबों के लिये शिक्षा नहीं। आखिर वे भी इधर-उधर क्लर्की तलाश कर 'जी हुजूर' के अभ्यासमें ही अपने अध्ययन की इतिश्री समझते हैं। अतः शिक्षा–प्रसार के लिये 'माहेश्वरी' के सम्पादक ने जो सुझाव रखा है उसका प्रत्येक धनी-मानी सज्जन स्वागत करेगा, ऐसी मेरी धारणा है। जैसा कि सम्पादक ने प्रकाशित किया 'बिड़ला छात्रवृत्ति,' 'माहेश्वरी विद्याप्रचारक मंडल' आदि हैं किन्तु ये छात्रवृत्तियाँ अधिक शिक्षा दिलानेमें उन्हें सहायक न हो सकीं; क्योंकि आठ–दस रुपये की साधारण छात्रवृत्ति पाकर उनके लिये अपना अध्ययन जारी रखना दुर्भर हो गया है, बी. ए., एम. ए. पढना उनके लिये दुश्वार हो गया। अतः इस छात्रवृत्तिसे अधिकांश व्यक्तियों ने अपना जीवन–यापन करना अवश्य सीख लिया पर वे अपना कर्तव्य पहचान न पाये। उनके हृदयकी शक्तियोंका पूर्ण विकास न हो सका। ऐसे विद्यार्थियोंसे देश प्रेमकी आशा रखना निरर्थक होगा। अस्तु, समाजका कर्त्तव्य हो जाता है कि ऐसे साधन प्रस्तुत करनेका प्रयत्न करें जिनसे विद्यार्थियोंको खूब विद्याध्ययन करनेका अवसर मिले। जहांतक इस दृष्टि कोणसे सम्बन्ध है कि एक ही विद्यार्थीको अधिक छात्रवृत्ति न देकर थोड़ी थोड़ी करके ज्यादाको देकर शिक्षित नवयुवकों की अभिवृद्धि की जाय— मैं इस पक्षका हृदयसे स्वागत करता हूं पर दूसरी ओर उक्त सुझाव की ओर समाजका ध्यान आकर्षित कर देना भी अपना कर्त्तव्य समझता हूं।

राष्ट्रका प्रत्येक व्यक्ति चिल्ला रहा है कि "छात्रका बस इतना ही कर्त्तव्य नहीं है कि वह परीक्षा पास कर ले परन्तु उसे तो पूर्ण कर्मठ बनना चाहिये अर्थात् उसे जीवन-तरणिका एक निपुण नाविक होना चाहिये। स्वाधीनता संग्राममें वह विजय प्राप्ति रूपी विद्याको पूर्णतया पढ सकनेमें समर्थ हो। सामने भारतीय स्वतंत्रता का प्रश्न रखने से ही काम नहीं चलेगा बल्कि संघटन शक्ति द्वारा देशको संगठित तथा बलवान बना अपनी ओजसनी वाणीसे शत्रुओं के कर्ण–कुहरों का भेदन करते हुए 'हम स्वतंत्र हैं' का निनाद करें" आदि। समाज विद्यार्थी वर्ग की ओर से ऐसी ही अनेक आशायें बाँधे हुए हैं पर समाज को यह पता नहीं कि इसके लिये भारतीय संस्कृति और सभ्यता का पाश्चात्य सभ्यता से समन्वय करते हुए अध्ययन की अत्यंत आवश्यकता हैं। यदि समाज पूर्ण कर्मठताके सिद्धांत को सुनकर ओजपूर्ण, उत्तेजनात्मक बातें सुनना और सोचना पसन्द करता है और यदि वह व्यावहारिता की कसौटी पर कसकर उन ऊँची उड़ानों की परीक्षा करने को तत्पर नहीं होता तो ऐसे समाज सुधारक तो उसे दुर्दिन और दैवकी कृपासे पहले ही बहुत मिले हुए हैं। अब उनकी बढती करके वह समाज को अज्ञान वश और भी अन्धकार में ढकेलेगा।

पर आजकल हो क्या रहा है ? समाज के धनी सज्जन सुधारकों की लिस्टमें अपना नाम पहिले देखना चाहते हैं, इसके बाद शायद सुधारक बनने की इच्छा करते हों। यही मैं सबसे खास कमी पाता हूँ। अपने आपको पहले वे कर्मशील कहलवाना चाहते हैं तत्पश्चात—कार्य करनेकी सोचते हैं। यह प्रतिष्ठा पानेकी जो प्रवृत्ति हमारे सुधारवादियोंके दिमागमें प्रवेश कर चुकी है, इसे दूर करना होगा। आज जितनी भी सामाजिक संस्थायें हैं उनके संचालक, प्रधान आदि की फेहरिस्तमें उत्साही नवयुवकों का नाम तक नहीं। जिसने कुछ पैसा दिया कि बन गये किसी भी संस्थाके सदस्य। उनमें से कितने हैं जो ठोस कार्य करने की क्षमता रखते हैं। अखबारोंमे ऐसे महानुभावोंकी दानशीलता और परोपकार वृत्ति की धूम पर मुग्ध होकर आज का आशावादी विद्यार्थी भी महान आशाके पाशमें बंधकर अपनी कमनीय भावनाओं की झोली भरनेके लिये ऐसे ही व्यक्तियों से शतशः प्रार्थना करता है, आत्म—सम्मान को पंगु बनाकर गिडगिडाता है, केवल—अनित्य धन की एक छोटी सी पोटलीके लिये। किन्तु ओह, कितना दुरवगाह्य है, दुष्प्राप्य है। वह दुत्कारा जाता है। ठंडे हृदयसे यदि कोई विचार करे कि किस कारणसे आजका पूंजी पति वर्ग सभा-संस्थाओंको दान दे देता है, समाजके कार्योंमें किस कारणसे कुछ दिलचस्पी लेने लगा है; तो स्पष्ट होगा कि पर्देकी ओटमें छिपी पड़ी है एक नारकीय भावना और वह है सम्मान, नामवरी और प्रतिष्ठा पानेकी उत्कट लिप्सा। बिरले ही जन ऐसे हैं जो संभवतः इस भावनासे प्रेरित न हों। ऐसे समयमें 'माहेश्वरी' का सम्पादक विद्यार्थियोंकी दशा पर 'अवर्णनीय-वेदना' प्रकट करता है इससे हमारी आशा-कली, जिसपर तुषारपात हुआ जा रहा था, फिरसे सजीव हो उठी।

पर केवल सहानुभूति प्रकट करने ही से काम नहीं चलेगा इसके लिये परिश्रम (Effort) की आवश्यकता है।

सामाजिक सुधारका एकमात्र प्रश्न

जान पड़ता है अब 'माहेश्वरी' भी अपनी असफलताके पश्चात्ताप स्वरूप वास्तविकताको अपनानेके लिये उद्यत हुआ है। शायद श्री घनशामदासजी बिड़लाके इस वाक्यसे कि 'समाज सुधारके लिये भी विद्याकी आवश्यकता है,' हमारे माननीय सम्पादककी निविड़ निद्रा भंग हो गई है, इससे उन्हें चेतना और स्फूर्ति मिली है। यही कारण है कि शिक्षाके महत्वको उन्होंने इतने जोरदार शब्दोंमें समाजके सन्मुख रक्खा है। हम स्टेज पर खड़े होकर पर्दा प्रथा, बाल विवाह, पंचायतवाद आदिकी चर्चा बहुत करते और सुनते हैं, फिर भी जनताकी नैतिक और मानसिक प्रवृत्तिमें कोई परिवर्तन नहीं होता। इसका कारण सुधारकोंने 'रूढि' शब्दसे प्रकट कर दिया। पर जहां एक ओर इसका कारण रूढिवाद है वहां दूसरी ओर हमारे सुधारोंका घृणावाद और असहानुभूतिवाद भी है। प्रतिष्ठा पानेके इच्छुक धन-मद-मत्त मानव सुधारके क्षेत्रमें पहुँच जाते हैं पर उनमें से इने गिने व्यक्तियोंको छोड़ ये लोग अपने आपको बुद्धिवादी समझ समाजकी अस्वच्छता और कुरीतियों आदिसे कुढ़ कर उससे घृणा करने लगते हैं। फिर इच्छा करते हैं कि समाज इनकी बातोंसे प्रभावित हो। यह असंभव है। जो आदमी यह चाहता है कि समाज उसके पथका अनुगामी बने उसे पहले स्वयंको उस पथका पूर्ण साधक बनाना होगा, फिर समाजसे कधेंसे कंधा मिलाकर चलना होगा ! महात्माजीका हरिजन समस्यावाला सिद्धांत भी तो यही सिखाता है। अतः समाजकी गंदगीमें अव्यक्त रूपसे कुछ समयके लिये अपने आपको भी ढकेलना होगा; तिल–तंडुलकी भांति नहीं, दूध–पानी की तरह मिलकर रहना होगा और ऐसे समय समाजका अपना बन उससे सहयोगकी आशा रखना भी सार्थक हो सकेगा।

इसके अतिरिक्त जो मैं इस असफलताका कारण समझता हूँ वह है प्रयत्नका थोथापन। प्रतिदिन पत्र-पत्रिकाओंमें निकलता है और भाषण भी दिये जाते हैं कि पर्दा-प्रथा अच्छी नहीं है, विधवा विवाह होना चाहिये आदि। इनकी अच्छाइयाँ भी दी जाती है बुराइयाँ भी। ये बातें तो बच्चे से बुड्ढे तक हरेक जानता है और स्वीकार भी करता है, फिर भी समय पड़नेपर उनकी पूर्व रुचियाँ नहीं बदलती ? यही समाजको सोचना है। वास्तवमें जिस समाजने अपना सम्पूर्ण जीवन इन कुरीतियोंको अपनानेमें व्यतीत कर दिया है वह उन्हें छोड़ना नहीं चाहता। ये रूढियां तो उसके सारे जीवनकी साधना हैं। यद्यपि समाजने कुरीतियोंको अपनाया है परन्तु प्राचीनता की आड़में वह इनके इतना निकट पहुँच गया है कि इनसे उसको मोह हो गया है। इसका कारण है उसकी अज्ञानता, विवेकशून्यता। और इस अज्ञानता का प्रमुख कारण है शिक्षा की कमी। इस विषयमें माननीय सम्पादक ने बहुत कुछ लिख दिया है। अतः अब मैं समाज पर ही छोड़ता हूँ कि वह अपना निर्णय करें। यह बात ध्रुव सत्य है कि अज्ञानता को दूर करनेके लिये शिक्षाही सफल हो सकती है। शिक्षित हो जाने पर समाज अपने आप भले बुरे का ज्ञान करने लगेगा। हम भी सुधार वादी बन रहे हैं। आखिर यह प्रेरणा कैसे मिली ? इसका कारण शिक्षा

(शेष पृष्ठ २३ के कालम ३ पर)

काका के पत्र

['माहेश्वरी' में चिट्ठी-पत्री देनेका यह उपक्रम हमने जारी किया है। हेतु यह है कि जो लोग समाजकी कुरुढ़ियों और रीतिरिवाजों पर तथा सार्वजनिक जीवनके महत्वके अन्य प्रश्नोंपर विचार करते हैं उनके विचार समाज तक पहुंचे और वे भी उन पर गम्भीरता से सोचें और उनका समाधान निकालें।]

पूज्य काकाजी,

बहुत दिनोंसे आप मुझे पत्र लिखनेका आग्रह कर रहे थे। मैं भी पत्र लिखना चाहती थी किन्तु सकुचाती थी कि कैसे लिखूं ? सामाजिक रीतिरिवाजोंके विषयमें बहुत मर्तबा मेरे मनमें विचार उठते रहे हैं और उन्होंने मेरे हृदय को तूफानकी तरह झकझोर दिया है किन्तु तब भी आज तक मैंने अपने विचार अपने तईं ही रखे हैं। पर बार-बार आपका आग्रह और विचारोंका प्रबल द्वन्द्व देखकर और इन्हें छिपाये नहीं रह सकूंगी। इसीसे सोचा है कि जब-तब अपने विचार आपको लिखकर जी हलका कर लूंगी। मुझे विश्वास है कि आप उनपर अपनी राय जरूर देते रहेंगे।

अभीकी बात है। हमारे गांवमें विवाहोंकी धूम है। सुबह शाम विवाह घरधनीके यहां गीत गानेके लिए सेवक घर-घर बुलावा देते रहते हैं। मां मुझे भी गीतोंमें जानेका आग्रह करती हैं और कभी-कभी उनके जोर देनेपर मैं चली जाती हूं और कभी टाल भी देती हूं। मेरे न जानेसे रूणाकी सुपारी और नारियल जब नहीं आते तो उन्हें बड़ा दुःख होता है और कभी-कभी इस दुःखके अवेशमें उनके वाक्य-बाण भी मुझे सहने पड़ते हैं। पर, खैर जानेदो इस बात को।

मैंने बहुत सोचा है कि अखिर इन गीतों का क्या लाभ है, पर कुछ समझ नहीं पायी। दिन-दिन इन गीतों से मेरी रुचि हटती जा रही है। सच कहती हूं, काकाजी, इनमें शरीक होनेको किसी भी तरह मन तय्यार नहीं होता। गीतोंका दृश्य ही जब आंखोंके सामने आजाता है तो मन लज्जाके मारे छोटा हो जाता है। घरधनीके मकानके आगे सडकपर ही पाल बिछाई जाती है जिसपर बैठकर स्त्रियां अपने मधुर (?) गायनका प्रदर्शन करती हैं। यदि सौभाग्यसे कुछ स्त्रियां मधुर कण्ठसे गा भी रही हों तो भी कुछेक स्त्रियां अपना बेसुरा राग मिलाकर सारा वातावरण विरस कर देतीं है। समझ नहीं पड़ता कि ऐसे गीत गानेसे घरधनी को या वरवधू को क्या आनंद आता है या देवी-देवताओंकी क्या तृप्ति होती है। यह गीत गवानेकी एक प्रणाली ही पड गयी है और गीतोंकी अच्छाई-बुराई, स्वरके माधुर्य या कर्कशताकी परवा किये बिना केवल रिवाजके लिए गीत गाये जाते हैं। हमारे समाजमें गायनके प्रति कोई रुचि नहीं। संगीत क्या है, इसकी कोई कल्पना तक हमारे समाजके लोगोंमें नहीं। अभी उस दिन हमारे विद्यालयका वार्षिक समारम्भ हुआ था। उस समय गायन–वादनका एक लम्बा चौडा प्रोग्राम रखा गया था। उन बहनोंने कितनी ही तरहके वाद्य बजाये और कितनी ही सुरीली चीजें गायी। मेरे मनमें भी आया कि मैं भी वाद्य बजाना सीखूं और संगीतका अभ्यास करूं। पर यह बात भैय्या या माँसे कहूं कैसे ? हमारे मोहल्ले भरमें न तो कोई साज है और न संगीत सीखनेका कोई आयोजन ही। अपने पड़ोसकी बूढ़ी दादी से एक दिन मैंने यों ही गायन सीखनेकी बात कही तो सुनते ही वे बिगड़ उठीं। डाटते हुए कहने लगीं, 'तुझे क्या गाने बजानेका धन्धा करना है ?'

क्यों, काकाजी, क्या सब स्त्रियां गाना-बजाना सीखकर यही पेशा अख्तियार करती हैं और साज सरंजाम लेकर बाजारमें बैठती हैं ? कितनी ही बार आपके मुंहसे समाज सुधारकी बातें सुन चुकी हूं पर एक दिन भी आपने इस बात पर प्रकाश नहीं डाला। बल्कि आपने तो कहा था कि संगीत कला है, वह दिव्य वस्तु है जो मनुष्यके हृदय और मस्तिष्कको शान्ति प्रदान करती है। ईश्वरके साथ एक और समरस होनेका एक साधन है। इसीसे तो इस संगीतमें ही एक वेदकी रचना हुई है। फिर अपनेको धर्मप्राण कह कर अभिमान करने वाला हमारा समाज इस कलाको इतनी उपेक्षा और हीनताकी दृष्टिसे क्यों देखता है।

मैं आज बहुत लिख चुकी। मेरा यह लिखना आपको पसन्द आयगा या नहीं, यह भी नहीं जानती। फिर भी आपसे कुछ पानेके लिए, कुछ जाननेके लिए, मैंने अपने मनोभाव लिखे हैं। आप इस पर जरूर लिखें।

आगरा,
२५ नवम्बर, ४१ }
आपकी
सुनन्दा

प्रिय सुनन्दा,

तुम्हारा पत्र मिला। पढ़कर बहुत खुशी हुई। पर तुम्हें मुझसे संकोच किस बातका था ? मैंने तो कितनी ही बार कहा है कि अपने समाजमें प्रचलित रीतिरिवाज, रहन-सहन और आचार-विचार पर तुम विचार करती रहो और अपनी सखीसहेलियों और हमजोलियोंमें इसकी चर्चा करती रहो। सामाजिक विषयों पर विचारोंका प्रवर्त्तन करनेका सदा उद्योग करते रहना चाहिए, ऐसा मेरा विचार है। जब कभी मैं देखता हूं कि सामाजिक विषयोंपर इस प्रकारकी विचार प्रवर्त्तना हमारे भाई-बहनोंकी तरफसे हो रही है तो मेरे हर्षका ठिकाना नहीं रहता। तुम्हारा पत्र पढ़कर मुझे आज इसी तरहकी खुशी हुई है।

तुमने विवाहके समयके गीतोंके बारेमें लिखा है और सचमुच ही हमारे समाजमें इस अवसर पर दामादके आनेपर जो गीत गानेकी प्रथा प्रचलित है उसमें सुधारकी बड़ी आवश्यकता है। गांवकी सभी सजातीय स्त्रियोंको निमन्त्रण देकर गानेके लिए जो बुलाया जाता है, वह सर्वथा त्याज्य है। इससे कोई आनंदप्रद वातावरण पैदा नहीं होता। आनेवाली प्रत्येक स्त्री चाहती है कि वह अपने कण्ठस्वरका प्रदर्शन करे चाहे उसमें सुरीलापन, सरसता और मृदुता रहे या न रहे। एक की आवाज़ दक्षिणकी ओर जाती है तो दूसरीकी उत्तर की ओर। जो दो-चार स्त्रियां मधुर स्वरमें गाती हैं उनके बीचमें वे अपनी बेसुरी और बेमेल तान मिलाकर सब बीभत्स कर देती हैं। उसमें कोई आकर्षण, कोई श्रवणमधुरता बाकी नहीं रहती। और भला इसमें क्या बुद्धिमत्ता है कि खुले आम किसी दूकानके आगे पाल बिछाकर उन्हें गानेके लिए बिठाया जाय ? इससे तो यह कहीं अच्छा हो कि इस प्रकारके निरानंद और असंस्कृत रागकी प्रथाका स्थान शहनाई आदि वाद्य बजानेवाले ले लें और विवाह मंडपका वातावरण आनंदमय बनाएं। यह रूणा आदिकी प्रथा पंचायतकी ओरसे प्रचलित है इसे पंचायतका लागा समझा जाता है इस लिए मजबूरन घरधनीको मुहल्लेकी तमाम स्त्रियोंको गानेके लिए बुलाना पड़ता है। पहले तो इस प्रथाको उठा देनेका उद्योग होना ज़रूरी है।

जब हमारे समाज की स्त्रियों रास्ता चलते गीत गाती हैं तब का दृश्य तो अत्यन्त अभद्र और कुत्सित मालूम होता है। उस समय की पोशाक और वेश-भूषा भी हमारे समाज की दूसरे समाजमें नितान्त निन्दा और उपहास कराने वाली है। मैं सोचता हूं कि उस भद्दे दृश्यको देख कर क्या हमारी बहिनोंके मनमें स्वयं विचार नहीं उठते होंगे ! कितना लज्जाकर है यह वेश और कितनी अभद्र है यह भूषा ! मैं चाहता हूं कि तुम सरीखी कन्यायें इस पर विचार करें, अपनी सहेलियोंमें चर्चा करें और समाजमेंसे इस प्रथाको उठा देनेका भरसक यत्न करें। यद्यपि वेष भूषा और गीत गानेकी यह बात कितनी छोटी मालूम होती है पर यही हमारे समाजकी कीर्ति और गौरवमें बट्टा लगानेका कारण बन जाती है। तुम इसपर सोचो और इसकी गम्भीरता अपनी सखियोंको समझाओ।

समाजमें कलाके अभावकी बात तुम कह रही हो, सुनंदा। पर हमारे समाजमें जब तक शिक्षाका ही प्रसार नहीं तब तक कलाकी उपासनाकी बात करना बेकार है। शिक्षित हुए बिना लोगोंमें अच्छे और बुरेके विवेककी क्षमता ही पैदा नहीं होगी। मारवाड़ी समाजकी आज जो गिरी हुई दशा है और जिसने तुम्हारे मनमें द्वन्द्व छेड़ा हुआ है वह मूलतः इस शिक्षाके नितान्त अभावके ही कारण तो है ! उनके जीवनमें से कला एक अर्सेसे निर्वासित हो चुकी है और उसके बीजके पनपनेके लिए वहां शिक्षाकी योग्य भूमि ही नहीं रही। गायन जैसी कला के लिए उनमें कोई सदभिरुचि नहीं। जो कुछ गाना वे गाते हैं या जिसके वे अभ्यस्त हो चुके हैं उसमें कोई छन्द नहीं, ताल नहीं और राग भी नहीं। स्त्रियोंके कण्ठमें जो सहज माधुरी और मृदुता होती है वह भी पथभ्रष्ट हो चली है और इसके विकासकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया जानेसे वह भी अब कुण्ठित हो गयी है। केवल पुराण मतवादी लोगोंने ही इस कलाको दीन हीन दरिद्रता और निर्वासनकी अवस्थामें उपेक्षासे डाल दिया हो, ऐसा नहीं; प्रत्युत जो अपने आपको विचारशील कहनेका अभिमान करते हैं उनका भी यही हाल है।

एक बार एक ऐसे महानुभावसे मिलनेका और साथ रहनेका अवसर मुझे मिला जो संगीत की ओर काफी रुचि रखते हैं और जिन्होंने काफी खर्च करके एक संगीत शाला भी चला रखी है। उनके एक छोटी नातिन थी जिसका कण्ठ सहज मधुर था और वह कभी–कभी गुन-गुनाया भी करती थी। मैंने उन महानुभावसे पूछा कि क्या वे अपनी नातिन को संगीतकी शिक्षा देते हैं। इसपर कुछ लापरवाहीसे उन्होंने उत्तर दिया कि लडकियोंको संगीत सिखाना मुनासिब नहीं है। यह उत्तर मेरे मनमें तीरकी तरह चुभा और उससे मेरी जो विचित्र स्थिति हुई, यह मैं बता नहीं सकता। कैसे विचित्र विचार हैं ! अपनी बहन, बेटी या नातिन के बारेमें इस प्रकार के संकुचित और क्षुद्र विचार मनमें लाना क्या उन्हें सोहता है ? क्या संगीत सीखने का अपथ और कुमार्ग पर जाना ही एक मात्र परिणाम है ? मारवाड़ी समाजके सिवाय दूसरे समाजों की जो बहू–बेटियां संगीत सीखती और उसमें निपुणता प्राप्त करती हैं, वे क्या केवल कुमार्ग पर ही प्रवृत्त हो जाती हैं ? संगीत सुननेके लिए हम लोग सिनेमा, नाटकघरों और थियेटरोंमें कितनी ही संध्याएं बिता देते हैं और जब बाहर निकलते हैं तो उनके गानों की तारीफ़के पुल बांध देते हैं। रात–रात रेडियोके गानोंसे

(शेष पृष्ठ २४ के कालम १ पर)

विवाह—

विवाहका प्रथम उद्देश्य सन्तानों की उत्पत्ति और उनका तबतक पालन करना है जबतक कि वे स्वयं अपने को सम्भालने योग्य न हो जांय। इस दृष्टिकोणसे देखा जाय तो मनुष्य तमाम स्तनपायी पशुओं व अधिकांश पक्षियों की ही कोटिमें आजाता है। वस्तुतः यदि इस उद्देश्य के मूलतः कम महत्वपूर्ण हिस्से—सन्तानों के लालनपालन—को छोड़ दें तो विवाहका यह उद्देश्य न केवल प्रमुख बल्कि सामान्यतः समूचे स्तनपायी जगत्में लैंगिक सम्बन्धका एकमात्र उद्देश्य है। नैसर्गिक भावना के रूपमें इस सम्बन्ध की परिणातिसे तृप्ति और स्वास्थ्य की भी प्राप्ति होती है किन्तु तृप्ति का यह आकर्षण प्रकृति का एक साधन मात्र है, अपने आपमें वह कोई उद्देश्य नहीं जिसकी कोई खास उपयोगी क्रिया होती हो, जब कि गर्भधारण की सम्भावना न हो। यह बात इससे अधिक स्पष्ट हो जाती है कि जानवरोंमें मादा ही गर्भाधान की ऋतुमें लैंगिक सम्बन्ध की वासना (दोहद) अनुभव करती है और वह वासना गर्भाधान होते ही विलुप्त हो जाती है, जबकि नरमें इस प्रकार की लैंगिक सम्बन्ध की आकांक्षा केवल थोडी-सी ही प्राणिजातियोंमें पायी जाती है और स्पष्टतः इसका कारण यह है कि यदि उस (पुरुष) की लैंगिक सम्बन्धकी कामना और योग्यता इतने स्वल्प कालतक सीमित रहें तो मादाके उपयुक्त नरसे ठीक समय पर संश्लिष्ट होनेके अवसर बहुत ही कम हो जायंगे। इसका साफ़ अर्थ है कि नर का मादाके प्रति उत्कण्ठा और जिज्ञासाका भाव, जो आज भी मनुष्य जातिमें कभी-कभी पाया जाता है, केवल व्यक्तिगत तृप्तिके लिए उत्पन्न वासनाका परिणाम नहीं, बल्कि वह मादाके लाभके लिए और सन्तान प्रजननके प्रथम उद्देश्यकी पूर्त्तिके लिए प्रकृतिके द्वारा नरमें प्रतिष्ठित किया गया है। इस प्रथम उद्देश्यको हम विवाहका जान्विक उद्देश्य कह सकते हैं।

आम तौरपर यह उद्देश्य मनुष्यकी निम्न जातियोंमें विवाहका केवल प्रमुख उद्देश्य ही नहीं बल्कि एक मात्र उद्देश्य रहता है। प्रेमका विचार अपने गंभीर अर्थोंमें मनुष्य समाजमें बहुत धीमे-धीमे उद्भूत हुआ है। यह सच है कि यह विचार कुछ निम्न जातियोंमें पाया गया है और कुछ बहशी जातियोंमें तो विशुद्ध मानसिक अर्थोंमें प्रेमजन्य आनंदके लिए एक शब्द भी पाया जाता है। किन्तु साधारणतः मनुष्य जातिमें, यहां तक कि यूरोपीय मनुष्य जातिमें भी, इसका विकास बहुत देरसे हुआ है। धर्मने, जो जीवनके अत्यन्त पुरातन और प्रारम्भिक विचारों को सुरक्षित रखता है, इस (सन्तान प्रजननके) विचार को भी पवित्र करार दिया है। ईसाइयतने प्रारम्भमें मनुष्यके सामने केवल दो ही विकल्प रखे थे—या तो वह अविवाहित रहे या विवाह करे तो केवल सन्तान प्रजननके लिए ही।

तब भी मानव इतिहासके एक प्राचीन युग से लैंगिक सम्बन्धका एक गौण कार्य धीमे-धीमे विकसित होता रहा है और आज वह विवाहके प्रधान उद्देश्योंमें गिना जाने लगा है। यह कहा जा सकता है कि जानवरोंमें और कभी-कभी मनुष्यमें भी लैंगिक सम्बन्ध की उत्तेजना, एक वार पैदा हो जाने पर मस्तिष्कमें से केवल एक छोटासा और तेज चक्कर लगा कर चरम अवस्थाको पहुंच जाती है। किन्तु जब लैंगिक जीवन की कठिनाइयों से ही बहुत अधिक सहायता पाकर मस्तिष्क और उसकी शक्तियों का विकास हो जाता है, तो लैंगिक संयोग की उत्तेजनाको अधिक लम्बे और पीड़ाजनक मार्गों से अधिक मन्द गति से अपने अन्तिम उद्देश्य तक पहुंचनेके लिए चलना पड़ता है और कभी २ तो वह अपने उद्देश्य पर पहुंच ही नहीं पाती। इसका अभिप्राय है कि लैंगिक भावना क्रमशः तमाम उच्च और सूक्ष्म मानवीय भावनाओं और क्रियाओं—सामाजिक सम्बन्धकी विशुद्धता, हरेक क्षेत्रमें उच्च साहस, कला, धर्म—के साथ गुंथ जाती है। प्रारंभिक जान्विक उत्तेजना, जिसका एक मात्र उद्देश्य सन्तान प्रजननके द्वारा सृष्टि चलाना है, अपने इस उद्देश्यके मार्गपर जाते-जाते उन समस्त मानसिक शक्तियोंके लिए प्रेरक व उत्तेजक बन जाती है जिन्हें हम सभ्यतामें सबसे अधिक मूल्यवान् समझते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि लैंगिक सम्बन्धका यह कार्य केवल एक आनुषंगिक परिणाम है। किन्तु जैसा कि हम जानते हैं, मानवीय मशीनमें भी आनुषंगिक रूपसे उत्पन्न होनेवाली वस्तु कभी कभी अधिक कीमती होती है और मानवीय विकासके क्रिया सम्बन्धी परिणामोंकी दृष्टिसे तो यह आनुषंगिक फल ही अधिक कीमती है। हाथ प्राणियोंके आगेके अंगके विकाससे ही बना है और इसका प्रमुख उद्देश्य था उस वस्तुको पकड़ सकना जिसकी हमें वस्तुके रूपमें आवश्यकता हो परन्तु इसी हाथने आनुषंगिक (गौण) फलके रूपमें पियानो व वायोलिन बनाने और बजानेके कार्यका भी विकास किया है और हाथ के इस कार्य संबंधी आनुषंगिक फलको हम, पैसे के आनुमानिक माप की दृष्टि से भी, उसके प्रमुख उद्देश्य से अधिक कीमती समझते हैं, चाहे वह वास्तविक दृष्टिसे कितना ही कम आवश्यक क्यों न हो। किन्तु फिर भी परिवर्त्तित लैंगिक शक्ति का केवल थोड़ेसे और अति प्रकृत (विशेष शक्ति और योग्यता पाये हुए) लोगोंमें ही, सामान्य दैहिक रूपसे बाहर निकले बिना भी, केवल अपने ही लिए बहुत अधिक मूल्य हो सकता है। अधिकांश लोगोंमें लैंगिक संबंधका यह गौण फल वास्तविक फलके साथ अन्त तक संबद्ध रहता है; इस प्रकार विवाहके प्रारंभिक जान्विक उद्देश्य के साथ एक गौण उद्देश्य मिल जाता है जो गौण होते हुए भी आश्चर्यजनक रूपसे पवित्र व विशेष रूपसे मानवीय है। इसे विवाह का आध्यात्मिक उद्देश्य कहा जा सकता है।

दाम्पत्य प्रेम की दृष्टिसे

आध्यात्मिक शब्द से हमें किसी रहस्यमय व अतिप्रकृत गुण का अभिप्राय नहीं लेना चाहिए। यह तो सरलता के लिए रखा गया नाम मात्र है जो उसे जान्विक उद्देश्य से पृथक कर देता है और साथ ही उन सब उच्चतर मानसिक और भावनात्मक प्रक्रियाओंका समावेश कर लेता है जिनपर मानवीय विकासमें अधिकाधिक बल दिया जा रहा है। लैंगिक संबन्ध के इस आध्याभिक उद्देश्यके विभिन्न अंगोंका परिगणन करनेकी यहाँ जरूरत नहीं क्योंकि हरेक व्यक्तिका परिगणन विभिन्न तरीकसे और विभिन्न क्रममें हो सकता है। इस आध्यात्मिक उद्देश्यमें न केवल उस सबका ही समावेश है जो प्रेमको एक सम्माननीय और सुन्दर वैवाहिक कला बनाता है, बल्कि जहाँ तक प्रेम केवल जान्विक तृप्ति ही नहीं प्रत्युत उससे भी अधिक है, आनंद के समूचे तत्वका इसमें समावेश होता है।

अब हमें इस प्रश्नके दूसरे पहलूको देखना चाहिए। जब हम 'लैंगिक क्रिया' के बारेमें सुनते हैं तब आमतौर पर उसका अभिप्राय हम एक ऐसी क्रियासे समझते हैं जिसकी प्रवृत्ति साधारणतः जाति विस्तारकी तरफ होती है। जब लैंगिक सम्बन्ध के परित्याग पर बहस होती है या लैंगिक परितृप्तिकी उपादेयता या हेयताका फैसला किया जाता है अथवा स्त्रियोंके विवाह सम्बन्धी अधिकार व आवश्यकताओंका विचार होता है तब हमेशा यही क्रिया अपने दैहिक परिणामोंके सहित हमारे मनमें रहती है। इस प्रकारका विचार सामाजिक जगत्में ऐसे कामोंके लिए पर्याप्त नहीं जिनका कुछ क्रियात्मक मूल्य हो।

हमने देखा है कि लैंगिक सम्बन्धमें, जिसे प्राणिशास्त्रकी भाषामें हम विवाह कहते हैं, सभ्य मानव समाजमें दो मुख्य क्रियाएं होती हैं। एक है सन्तान प्रजनन की प्रमुख शारीरिक क्रिया और दूसरी उच्च मानसिक और भावनात्मक प्रक्रियाओं को विकसित करनेवाली गौण आध्यात्मिक क्रिया। लैंगिक उत्तेजना की यह दो मुख्य क्रियाएँ हैं और लैंगिक सम्बन्ध के और किसी भी दूर के उद्देश्य को समझने अथवा विवाह के गौण उद्देश्यमें जिन वस्तुओं का समावेश होता है उन सबको समझने के लिए, हमें चेतन हेतुओंसे आगे बढ़ना चाहिए और शारीरिक व मानसिक लैंगिक उत्तेजना के स्वरूपपर जैसी कि वह मानवीय शरीरमें आबद्ध है, विचार करना चाहिए।

हम जानते हैं कि मनुष्य का शरीर, एक यन्त्र है जिसमें बाहरसे उत्पन्न होनेवाली उत्तेजनाएं स्नायुओं और मस्तिष्कमेंसे होती हुई आन्तरिक क्रियापर प्रभाव डालती हैं और चमत्कारिक रूपसे ग्रन्थि संस्थानको उत्तेजित करती हैं। इन कुछ वर्षोंमें ग्रंथि संस्थान, और खासकर प्रणालिका रहित ग्रंथि संस्थान, का महत्व तो बहुत अधिक बढ़ गया है। इन प्रणालिका रहित ग्रन्थियोंसे 'होरमोन' या रासायनिक सन्देशवाहक प्रसूत होते हैं और रक्तमें मिल जाते हैं, जिनकी एक जटिल किन्तु नियमित क्रियासे उत्तेजना पैदा होती है और वे सब शारीरिक व मानसिक क्रियाएं पैदा होती हैं जो सामान्य व उत्पादक, दोनों दिशाओंमें एक परिपूर्ण जीवनका निर्माण करती हैं जिससे कि उनकी समतुलित क्रियाएं स्वस्थ और पूर्ण जीवनके लिए आवश्यक हो गयी हैं। प्रारम्भिक व अविकसित रूपमें ये क्रियाएं हमारे प्राचीन तम पूर्वजोंमें भी, जिनमें मस्तिष्क था, पायी जाती हैं। उस युगमें आन्तरिक मानसिक और भावनात्मक शक्तियोंको उत्तेजित करनेके लिए प्रधान घ्राण इन्द्रिय थी, दूसरी इन्द्रियां पीछेसे क्रमशः विकसित हुई। और यह बात और भी अधिक महत्व की है कि पिट्यूटरी ग्रन्थि, जो आज हम लोगोंमें विकसित एक प्रमुख प्रणलिकारहित ग्रन्थि है, उस समय भी घ्राण शक्तिके स्नायवीय केन्द्र और मुखकी झिल्लीके द्वारा विकसित अवस्थामें थी। समस्त शारीरिक यन्त्र-संस्थानकी शक्तियां, बाह्य संसारसे उत्पन्न होनेवाली उत्तेजनाओंसे जो घ्राणेन्द्रियके मार्गसे भीतर पहुंचती हैं, कार्यमें रत होती थीं। समयके साथ-साथ आज सारा यन्त्रसंस्थान अत्यधिक विकसित हो गया है तब भी उसकी स्वस्थ क्रिया अन्ततः बाह्य संसारकी भरी-पूरी और विभिन्न क्रियाओं-प्रतिक्रियाओंपर निर्भर है। यह बात आज अधिकाधिक स्वीकार की जा रही है कि अनेक ग्रन्थियोंकी अपूर्णता, जिसके कारण ऐन्द्रियिक समतुलन और अनुकूलता नष्ट हो रही है, बाह्य संसारके साथ घनिष्ट सम्पर्क पैदा करने वाली शारीरिक व मानसिक उत्तेजनाओंसे निराकरण की जा सकती है। साथ ही, इस क्रिया व प्रतिक्रियामें हम लैंगिक उद्देश्यों और सामान्य उद्देश्योंमें भेद नहीं कर सकते। प्रणालिका हीन ग्रन्थियों और उनके 'होरमोनों' की क्रियाएं दोनों प्रकारके उद्देश्यों को इस ढंगसे पूरा करती हैं कि उनमें भेद किया ही नहीं जा सकता। इस विषयके एक विख्यात और प्रामाणिक लेखकका कहना है कि "प्रत्येक मैटाबोलिज्म (खाद्य पदार्थोंसे शरीरमें होने

★ हैवलक एलिस ★

वाले परिवर्तन) प्रजननात्मक मैटाबोलिम हैं।" इस प्रकार मानव प्राणीके रूपमें इस संसारमें हमारी सम्पूर्ण क्रियाओंकी स्थिरता, चाहे वस्तुतः हमारी इर्दगिर्दकी परिस्थितियोंके साथ चल रहे शाश्वत और बहुमुखीन खेल पर अन्तिम रूपसे निर्भर न भी हो, तो भी वह उससे सहकार जरूर पा रही है। इस प्रकार विचार करनेपर हम 'खेलकी क्रिया' के महत्व पर पहुंचते हैं और इस प्रकार ही हम यह महसूस करते हैं कि यद्यपि यह क्रिया इस क्षेत्रसे परे तक फैली हुई अवश्य है, पर तो भी वह उस क्षेत्रको अछूता छोड़ नहीं देती, उस क्षेत्रमें भी रहती है। खेलकी प्राणिशास्त्रसम्बन्धी भावनाको समझनेके कमसे कम तीन विभिन्न तरीके हैं। इस खेलको एक विचारसे 'शिक्षा' का नाम दिया गया है जिसपर ग्रौसने बहुत अधिक बल दिया है। बिल्ली चूहेके साथ खेलती है और उस खेलसे चूहेको पकड़नेके लिए आवश्यक होशियारी की शिक्षा पाती है। हमारी समस्त मानवीय खेलें जीवनमें आवश्यक गुणों को सीखने की प्रणाली हैं। और इसी लिए हम अंग्रेज लोग ड्यूक आफ वैलिंगटन को इस उक्तिके लिए कि "वाटरलूका युद्ध ईटनके क्रीड़ा क्षेत्रोंमें जीता गया है" इतना श्रेय देते हैं। खेलका एक और भी विचार है, जिसके अनुसार उसका अभिप्राय है जीवनके क्रियात्मक व्यवहारमें उपयोग न की जा रही व्यर्थ नष्ट होने वाली अतिरिक्त शक्तियों का कलामें उपयोग। खेल की यह विस्तारक और समत्वोत्पादक क्रिया, निम्न श्रेणियोंमें तुच्छ कामोंमें व्यर्थ नष्ट भी हो सकती है परन्तु उच्च श्रेणियोंमें वह महत्तम मानवीय कृतियों की जननी है। किन्तु खेलका अभी एक तीसरा विचार भी है जिसके अनुसार यह स्वयं क्रीड़ा करने वालेके समूचे इन्द्रिय संस्थान पर सीधा आन्तरिक प्रभाव—स्वास्थ्यदायक, और विकास व साम्यावस्था पैदा करने वाला प्रभाव—डालती है।

मैं व्यक्तिके लिए खेल की क्रियाके द्वारा वैवाहिक व्यक्तित्वके विकासकी, और मानव समाजके लिए प्रेमकी कला की प्राप्तिका महत्व दिन दिन अधिकाधिक अनुभव कर रहा हूं।

साथ ही साथ मेरे आश्चर्यका भी ठिकाना नहीं रहता जब कि मैं वैवाहिक प्रेमसे भरे व्यक्तित्वकी कमी और प्रेमकी कलाकी अनभिज्ञता देखता हूं। प्रेमपूर्ण व्यक्तित्वका अभाव और प्रेमकी कलाकी अनभिज्ञता उन स्त्री-पुरुषोंमें भी है जो उत्पादक शक्तिके उपयोगमें अनुभवी हैं और जिनमें हम बड़े विश्वासके साथ इस व्यक्तित्वके विकास और कलाकी आशा करते हैं।

वास्तवमें इस क्षेत्रमें प्रवेश करते हुए हमें न केवल सत्यज्ञानको पाना होगा, बल्कि मिथ्या ज्ञानको भी दूर करना होगा और सबसे बढ़कर, अपने हृदयको अन्धविश्वासोंसे, जिनका वर्त्तमान ज्ञानके साथ किसी भी तरहका सम्बन्ध नहीं, मुक्त करना होगा। हमें यह विचार मनसे निकाल देना होगा कि जो व्यक्ति सन्तान प्रजननके कार्यसे केवल अपने आपको मिलनेवाला आनंद पाना ही प्रेमका अन्तिम विधान समझता है वह प्रशंसाके योग्य है। उस स्त्रीको हमें घृणाकी दृष्टिसे देखना होगा जो नीचतासे, यह कार्य और उसमें स्वयं निष्क्रिय रहना ही अपना कर्त्तव्य समझती है। हमें यह समझना होगा कि प्रेमकी कला का दुराचारसे और प्रमपूर्ण व्यक्तित्वका विषयित से कोई सम्बन्ध नहीं। किन्तु हमें यह भी जानना होगा कि प्रेमकी कला परिष्कृत और ऐशो इशरतसे भरे स्वार्थकी उपलब्धिसे बहुत दूर है और प्रेमपूर्ण व्यक्तित्वके सम्पादनकी तब तक कोई कीमत नहीं जब तक कि वह समस्त व्यक्तित्वको उसके सभी पहलुओं में दृढ़ और विशाल न बना दे। पर यह अत्यंन्त कठिन है और कुछ लोगोंके लिए पीड़ा जनक भी है। बोनेकी अपेक्षा उखाड़ फेंकना कहीं अधिक कठिन है; यह सब एक ही दिनमें नहीं हो सकता।

यह नहीं समझना चाहिए कि जीवनमें प्रेमको खेल बनानेके विशाल और गहरे विचारको प्रविष्ट करनेका कोई सीधा या शीघ्र फलदायी तरीका है और न ही ऐसा कोई तरीका है जिससे जीवनमें प्रेम सम्बन्धी ऐसी भावना भरी जा सके जो व्यक्तिका विकास, विवाह सम्बन्धकी समृद्धि और समाजकी नैतिक समता पैदा कर सके। ऐसी कल्पना इस दैवीय और दुर्बोध रहस्यको केवल सामान्य कोटिमें लायगी और मूर्खता पूर्ण साबित करेगी। धीरे धीरे और अप्रत्यक्ष तौर पर ही यह संभव है कि हम ऐसी क्रांति ला सकें जो इस दिशा हममें फिर नवजीवन ला दे। इस क्रांति के लिए मार्ग तय्यार करने का सर्वश्रेष्ठ तरीका यही है कि हम उन परम्परागत अभद्र विचारोंको उखाड़कर फेंक दें जो इतने प्राचीन कालसे चले आ रहे हैं कि जन्मसे ही हृदयके विष और आत्माके रोग की तरह हमारे भीतर जम गये हैं। सत्य और सुन्दर ज्ञान के लिए रास्ता बनाने को हमें इन पुराने विचारों की, जड़ें उखाड़ फेंकना होंगी जो किसी समय चाहे सत्य और सुन्दर रहे हों पर अब असत्य और विषाक्त हैं। प्रेम पाप और अपवित्र है, इस प्रकार का विचार निकाल फेंकने पर हमारा हृदय मंदिर इतना पवित्र और निर्मल हो जायगा कि वहां प्रेम का अवर्णनीय पवित्रता के रूपमें स्वागत किया जा सकेगा।

इस संबंधमें हम आजके मनोवैज्ञानिक विश्लेषणकारियोंसे शिक्षा ले सकते हैं, पर इसका अभिप्राय यह नहीं कि मानसिक विश्लेषण प्रेमके ज्ञान की प्राप्तिका आवश्यक रूपसे वांछनीय या सम्भव तरीका है। बुद्धिमान् मनोवैज्ञानिक विश्लेषकों का तो यह कहना है कि व्यक्ति को बाह्य और आभ्यन्तर प्रभावोंसे, जो उसकी शक्तियों को दबा देते या विकृत कर देते हैं, मुक्त करने की प्रक्रियापर, उसकी प्रकृति के स्वतन्त्र खेलपर लगे हुए निषेधों का हटा देनेका बडा असर होता है। यह सच्चे अर्थोंमें शिक्षाकी प्रक्रिया है, प्राकृतिक उत्तेजनाओंको दबाने की नहीं, उन्हें नियन्त्रित करने के लिए उनपर सुन्दर नियम और उक्तियां लादने की भी नहीं; और न व्यक्ति की विशेष प्रवृत्तियों को भीतर दबाने की ही; बल्कि यह तो उन प्रवृत्तियों का बाहर की तरफ मार्गप्रदर्शन करने की प्रक्रिया है। यह मनुष्यपर बाहरसे लादे गये निषेधों या स्वयं ज्ञात और अज्ञात रूपसे अपनेपर लगाये गये निषेधोंको श्रेष्ठतम नैतिक अभिप्रायोंसे हटाती है। और ऐसा करके यह अधिक बड़ी, अधिक स्वतन्त्र और अधिक सहज स्वेच्छापूर्ण नैतिकताको खेलमें आने का अवसर देती है। लैंगिक सम्बन्ध के क्षेत्रमें, जहां मनुष्य की सहज उत्तेजनाओंपर सबसे अधिक जोरसे इस प्रकार के निषेध लगाये जाते हैं, जहां स्वाभाविक प्रवृत्तियां निषेधों और भयोंसे, जिनपर विरोधी और जीर्ण परम्पराओंसे प्राप्त अपवित्रता और हीनताका कृत्रिम रंग चढ़ा रहता है, सबसे अधिक घिरी रहती हैं, इस प्रक्रियाका सबसे बढ़कर असर होता है। इस प्रकार, शरीर क्रियाविज्ञान, मनोविज्ञान और जीवनके घनिष्ट अनुभवोंसे जो शिक्षा हम पाते हैं, उसे मनोवैज्ञानिक विश्लेषकों के स्वास्थ्यदायक अनुभवोंसे और अधिक बल मिलता है।

हमने देखा है कि लैंगिक संबंधकी क्रिया केवल एक नग्न सन्तान प्रजनन का ही कार्य नहीं, और न ही, यदि सन्तान प्रजनन को छोड़ दिया जाय तो, यह कोई उत्तेजित रक्ताणुओंकी उत्तेजनाको मुक्ति देने का कार्य है। यह तो, प्रत्युत, महान् सामाजिक संस्थाओंकी बुनियादसे भी कुछ अधिक है। यह एक ऐसा कार्य है जिससे शरीरकी भौतिक और मानसिक दोनों तरह की तमाम सूक्ष्मतर क्रियाओंको विकसित और तृप्त किया जा सकता है। यह कहा जा चुका है कि वासनाके समान—जिसका प्रयोग आज निकृष्टतम ऐन्द्रियिक आनंद के लिए किया जाता है—गंभीर वस्तु और कोई नहीं और अब हम यह और कह देना चाहते हैं कि प्रेमके सदृश मनोरंजन भरी भी और कोई वस्तु नहीं। मनोरंजन प्रधानतः दिमागको उत्तेजना देनेवाला कार्य है पर मस्तिष्कके इस कार्यमें शरीर का धर्म अत्यंत निपुणता से जुड़ा हुवा है। लैंगिक प्रवृत्तियोंमे जो खेल और मनोरंजन का कार्य है उसमें शारीरिक और मानसिक, दोनों तरहकी क्रियाएं अत्यंत अद्भुत, विभिन्न और परस्पर समरूपमें मिश्रित हैं। यहां हम शरीर क्रिया विज्ञानकी दृष्टिसे मस्तिष्कके अवयवों और प्रजनन अंगोंके समान महत्व और समान प्रतिष्ठाको सबसे अच्छे रूपमें समझ सकते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि सबसे अधिक प्रभावशाली प्रणालिकाहीन 'ऐड्रिनल' ग्रन्थियां मस्तिष्क और प्रजनन अंगोंके साथ खास तौरसे और घनिष्ट रूपसे जुड़ी हुई हैं। प्राणियोंकी श्रेणियोंमें जितना जितना हम ऊपर चढ़ते हैं उतना उतना हम देखते हैं कि मस्तिष्क और 'ऐड्रिनल' ग्रन्थियां भी शरीरके परिणाहके साथ समानान्तर चलती हैं और साथ ही लैंगिक क्रियाएं और 'ऐड्रिनल' ग्रन्थिसे जन्य क्रियाएं एक दूसरेके साथ एक ही अनुपातमें रहती हैं।

प्रेमी जन, जब उन परम्पराओंसे मुक्त हो जाते हैं जो उन्हें प्रेममें खेलके तुच्छ और अतिस्थूल विचारमें बांधे रहते हैं, तब वे अपने खेलमें शरीर और आत्माके उच्चतम मानवीय कार्य करते हैं। वे लोग परस्पर उस पवित्र सोमरस का घूंट एक दूसरेको दे रहे हैं जो स्त्री और पुरुष दोनोंको अनिर्वचनीय आनंद देता है। वे लोग निपुणतासे वे स्नेहमय बन्धन पाश बुन रहे हैं जो पति और पत्नीको धर्मगुरूके मन्त्रोंसे भी अधिक दृढतासे बांध देते हैं। और यदि अन्तमें वे मुक्त और परिपूर्ण तादात्म्यकी चरम अवस्था तक पहुंच जांय तो उनका वह मानवीय खेल सृष्टिकर्त्ताके उस दैवीय खेलसे साथ एक हो जाता है, जिसमें, कवि सम्प्रदायके अनुसार, प्रलयंकर रुद्रने पृथिवीकी मिट्टीसे अपने ही अनुरूप मनुष्यका सृजन किया था।

'बुक आफ मैरिज'से

वधुकी आवश्यकता

एक २४ वर्षीय माहेश्वरी ग्रेजुएटके लिये १६-१७ वर्षीय सुयोग्य लड़कीकी आवश्यकता है। स्वनिर्वाचन की स्वतंत्रता को माननेवाले अभिभावक ही फोटो सहित विशेष विवरणके लिये लिखें:—

फोटो बाक्स नं. १३
C/o "माहेश्वरी"
अली चेम्बर्स, डीन लेन, फोर्ट बम्बई

कृष्ण कुमारी

श्री सेठ गोविन्ददासजी मालपाणी
एम. एल. ए.

[एक ऐतिहासिक एकांकी नाटक]

[गताङ्क से]

चौथा दृश्य

(स्थान—कृष्णकुमारी का महल)

(समय—मध्यान्ह)

[कृष्णकुमारी गद्दी पर बैठी हुई अपने सामने रखी हुई कटार की ओर देख रही है । कृष्णकुमारी की दृष्टिमें एक प्रकार की शून्यता और पटरानी की मुद्रामें अत्यधिक उद्विग्नता है ।]

कृष्णकुमारी—(कुछ देर बाद एकाएक उठकर पटरानी की ओर देखते हुए) तो, माँ, ... ऐसे ... ऐसे महान् कार्यके लिये आत्मबलिदान करने पर भी मुझे आत्महत्या का पाप लगेगा ?

पटरानी—आत्महत्या, आत्महत्या ही है, बाई, चाहे वह किसी कामके लिये भी क्यों न की जाय ?

कृष्णकुमारी—और जौहरमें जो आत्महत्यायें की जाती हैं ?

पटरानी—(कुछ विचारते हुए) वे...वे आत्महत्या नहीं। जौहर स्त्रियों की स्वीकृत रणभूमि है।

कृष्णकुमारी—और पति के पास चितामें सती होना ?

पटरानी—वह...वह भी धर्म द्वारा स्वीकृत मृत्यु है, वह (कटार की ओर देख) इस ... इस कटार ... कटारसे ... (चुप हो जाती है।)

[कुछ देर निस्तब्धता। कृष्णकुमारी फिर उसी प्रकारकी दृष्टि से कटार की ओर और पटरानी वैसी ही मुद्रासे कृष्णकुमारी की ओर देखने लगती है।]

कृष्णकुमारी—परन्तु माँ, मैं नहीं मानती कि मेरा स्वयं अपने हाथसे निधन आत्महत्या है। यह है आत्मबलिदान, समष्टि के लिये व्यष्टि का आत्मसमर्पण। जौहर और सती होना यदि बलिदान है, हत्या नहीं, तो यह भी वही है चाहे पद्धतिमें भिन्नता हो । मैं किसी प्रकारके आवेशमें आकर या दुख से बचनेके लिये अपना निधन नहीं कर रही हूँ, मैं कर रही हूँ कुल, जाति, समाज और देशकी रक्षाके लिये। फिर यह पाप कैसे हो सकता है, यह हत्या क्यों हो सकती है ? यह पुण्य है, पुण्य । यह बलिदान है, महान् बलिदान ।

पटरानी—मैं यह नहीं मानती, बाई, मैं तुझसे सहमत नहीं। (कुछ रुककर) यदि मरना...मरना ही है तो जा, कह अपने पितासे वे किसी जल्लादको बुला देंगे । आत्महत्याके पापसे तो बच जायगी !

कृष्णकुमारी—माँ, तुम भाई जीको वृथा दोष लगा रही हो। सारी परिस्थितिको जान लेनेके पश्चात् भी तुम्हारा...

पटरानी—(बीच ही में) जान ली...जान ली सारी परिस्थिति । अपने बचावके लिये क्या पुरुषोंका यह घृणित आयोजन, कायर बाप का बेटीकी हत्याका यह षडयंत्र ...

कृष्णकुमारी—षड्यंत्र क्यों माँ, जब भाईजी स्वयं स्वीकार कर गये कि ज्वानको उन्हींने भेजा था, तब यह षड्यंत्र कहाँ रह गया ? और पुरुषोंके बचावका प्रश्न ही कहाँ है ? यह है एक व्यष्टिके बलिदानसे समष्टिके बचावका सवाल जिसमें पुरुष, स्त्रियां, बालक सभी हैं। माँ, तुम क्षत्राणी हो, राजपूतनी हो, तुम मृत्युसे क्यों डरती हो।

पटरानी—(आश्चर्यसे) मैं मृत्युसे डरती हूँ !

कृष्णकुमारी—और नहीं तो यह क्या है ?

पटरानी—मैं मृत्युसे नहीं डरती बाई, राजपूतनीके लिये मृत्यु भयकी वस्तु नहीं, परन्तु मैं या तो वीरोचीत मृत्यु चाहती हूँ, या स्वाभाविक मृत्यु । यदि पुरुष केसरिया बाना पहन युद्धके लिये निकलें और युद्धभुमिमें अपना बलिदान कर दें तो मैं जौहर कर मृत्युका अलिंगन करनेको तैयार हूँ। जिस दिन काल आ जाय उस दिन भी मैं मृत्युके हाथ अपनेको सौंपनको प्रस्तुत हूँ, परन्तु...... ...परन्तु तेरी मृत्यु के लिये जैसी रचना रची गई है उसे देखते हुए यह न वीरोचित मृत्यु है और न स्वाभाविक।

कृष्णकुमारी—यह इन दोनों प्रकार की मृत्युओंसे महान् मृत्यु है, यह है समष्टि के लाभ के लिये व्यष्टि की मृत्यु। यह......यह......

[अजितसिंह का प्रवेश]

पटरानी—(अजीतसिंह की ओर देखकर) ओह अजित! (कुछ रुककर) कहो, अजित, अब, तुम कौनसा संवाद लाये हो ?

अजीतसिंह—(कालीनपर बैठते हुए) मैं......मैं पटरानी जी ?

पटरानी—हाँ, क्यों यों ही मेवाड़में छारंडी का दिन नये संवादों का दिन होता है, और (लम्बी सांस लेकर) इस साल छारंडी का दिन तो...(गला भर आने के कारण चुप हो जाती है।)

कृष्णकुमारी—(पटरानीसे) नहीं माँ, अजित संवाद लेकर नहीं, संवाद ले जाने के लिये आये हैं। (अजीतसिंहसे) ठाकुरां, आपको कृष्णा न मिलकर कृष्णाकी लाश ही मिलती, परन्तु प्रश्न उठ गया है आत्महत्याके पापका । (कटार उठाकर) आप इसे मेरी छातीमें भोंक दीजिये ।

अजीतसिंह—आपकी वीरता धन्य है, राजकुमारीजी, और वीरकर्मके कारण महान् पुण्य प्राप्तकर आप उच्चतम लोकको जायंगी । परन्तु जब मैंने सारा वृत्त सुना तब आपकी इस यात्राके लिये इस क्रूर कटारकी जगह दूसरा मृदु मार्ग सोचा है। परिस्थितिके कारण आपको यह लोक छोड़ना ही होगा, पर न आत्महत्याकी आवश्यकता है और न अन्य किसीको इस कटारके उपयोग की ।

कृष्णकुमारी—तब ?

अजीतसिंह—राजकुमारीजी, मैं भी भावुक व्यक्ति हूं, परन्तु परिस्थितिके अनुसार क्रूर से क्रूर कर्तव्य करनेके लिये मैं अपने को किसी प्रकार तैयार कर लेता हूँ।

कृष्णकुमारी—क्यों नहीं, आप राजपूत हैं, सच्चे क्षत्रिय हैं।

अजीतसिंह—मैंने आपके विष-पान की व्यवस्था की है, राजकुमारी ।

कृष्णकुमारी—(प्रसन्नतासे) ठीक, इससे अच्छा उपाय सोचा नहीं जा सकता था । आप शीघ्र मनवार प्याला लायें, ठाकुराँ। मैं इस समय की स्थिति का, शीघ्र से शीघ्र अन्त कर देना चाहती हूँ।

अजीतसिंह—(लंबी साँस लेकर) राजकुमारीजी, इस कठोर, इस क्रूरतम कार्यको करनेके लिये मैंने अपने हृदय को, अपने मस्तिष्क को किस प्रकार तैयार किया है, यह मैं आपको और पटरानीजीको शब्दोंमें नहीं बता सकता, पर...पर कर्तव्य......क्रूर कर्तव्य भी पालन करना ही पड़ता है। कुल, जाति, समाज और देशके लिये इस समय आपको बलिदान करना और हमें उसमें सहायता देना ही होगी।

कृष्णकुमारी—मैं सब समझती हूँ, ठाकुरां। आप शीघ्र ही प्याला लायं । मैं जानती हूँ कि कर्तव्य कैसा ही क्यों न हो पूर्ण होने पर वह संतोषका ही कारण होता है।

[अजीतसिंह धीरे उठकर जाता है। पटरानी रो पड़ती है।]

कृष्णकुमारी—माँ, माँ ! कितना...कितना समझाऊँ, तुम्हें ! तुम्हारा स्नेह तो मोह में परिणत हो गया है। (जब पटरानीके आँसू नहीं रुकते तब अपनी ओढनीके छोरसे आँसू पोंछते हुए) क्यों, माँ, मृत्युको मुझे सुख और उत्साहके साथ आलिंगन न करने दोगी ?

[कुछ देर निस्तब्धता । अजीतसिंह का स्वर्णके रत्नजटित प्यालेमें विष लिये प्रवेश ।]

पटरानी—(अजीतसिंह को देखकर रोते रोते भर्राये हुए स्वरमें) अजित...अजित...

कृष्णकुमारी—(जल्दीसे प्याला लेकर) बस शान्ति... शान्ति, माँ ।

पटरानी—(और जोरसे रोते हुए) बाई...बाई,... मृत्युके साथ खेल रही है।

कृष्णकुमारी—जो जीवनके साथ खेलता है उसे अवसर पड़ने पर मृत्युके साथ खेलने को भी तैयार रहना चाहिए, माँ। (प्याले और उसमें भरे हुए विष को देखते हुए) प्रिय प्याले, कितने...कितने सुन्दर हो तुम और कितना... कितना शान्त है तुममें भरा हुआ यह विष ! (भरे हुए विषको संबोधन कर) हे हलाहल ! तुमने महादेवके महाकंठको आकाशके सदृश नीला, शून्य, किन्तु महान् बना दिया। हे मृत्युके प्रतीक ! पहुंचा ..पहुंचा दो मुझे अपने प्रभुकी गोदमें जो सुखद और शान्त है। हे मृत्युके सोपान, गरल होने पर भी तुम कैसे सरल दिखते हो, थोड़ेसे कंपसे भी कैसी छोटी छोटी ऊर्मियां उठती हैं तुममें। वही हाल तुम्हारे प्रभुकी गोदका भी होगा। मृत्युसे अधिक सदय और शान्त कौन है, जो हीन, दीन,

दुःखी और दुर्बलका त्राता है; उससे अधिक सदय और शान्त कौन हो सकता है ? पहुँचा, पहुँचा दो मुझे उसीकी गोदमें, शान्ति दे दो मुझको और शान्त कर दो मेरे कुल, मेरी जाति, मेरे समाज, मेरे देशकी इस अशान्तिको।

[कृष्णकुमारी एक सांसमें प्याला खाली कर कालीन पर रख देती है ।]

कृष्णकुमारी—माँ, यह तो मैं नहीं जानती कि मृत्यु अच्छी चीज़ है, या बुरी पर मुझे इसमें सन्देह नहीं, कि मैं एक महान् कार्य सम्पन्न करनेके लिये उसका आलिंगन कर रही हूँ। फिर यदि यह नहीं कहा जा सकता कि मृत्यु अच्छी चीज है या बुरी तो उसे बुरा मान लेना भी अनुचित है; साथ ही उससे भयभीत होना तो कायरता है।

पटरानी—(रोते रोते) बेटी, बाई, बाई...तू क्या... क्या......

(हिचकियाँ बंध जाती हैं ।)

कृष्णकुमारी—माँ, तुम तो मुझसे...भी छोटी बन रही हो ? मृत्युके लिये इतनी कातरता, इतना शोक, इतना भय ? माँ, जिसने कभी कोई बुरा काम नहीं किया, वह न जीवन में किसी कामसे भयभीत हो सकता और न उसे मृत्यु के बाद कोई वस्तु कष्टप्रद होगी, इसका ही भय रह सकता है। मृत्यु या तो सदा के लिए आराम से सो जाना है या किसी अन्य लोक को जाना है और या इसी लोक को पुनः लौटकर आ जाना है । पहिली बात अच्छे और बुरे दोनों के लिए समान रूप से अच्छी है। बिना स्वप्नोंकी रात किसे नहीं अच्छी लगती ? और दूसरी दो बातोंसे अच्छी बातें अच्छे व्यक्तिके लिये तो हो नहीं सकतीं क्योंकि अच्छा व्यक्ति या तो इस लोकसे किसी अच्छे लोकको जायगा अथवा इस लोकमें और अच्छी योनि पायगा । यात्रा मुझे कितनी प्रिय है, यह तुम जानती हो । माँ, (खिड़कीसे बाहर देखते हुए) और अरावली पहाड़ियों की यात्राएं, भगवान एक लिंग के मन्दिर और जय समन्द के घाटों की यात्राएं ही मुझे कितना सुख देती थीं फिर इस यात्रामें तो मुझे न जाने क्या क्या देखने को मिलेगा ? किसी अच्छे लोकमें पहुँचने के पश्चात् कैसा अच्छा संग पाऊँगी वहाँ । इस लोकमें तो अच्छे बुरे दोनों प्रकार के व्यक्ति हैं। उस लोक में तो सत्कर्म करनेवाले ही पहुँचते होंगे, वहां तो सभी अच्छे होंगे, माँ। और यदि इसी लोकमें नयी योनि मिली तो वह भी एक सत्कर्म करने के कारण इससे तो अच्छी...कहीं अच्छी होगी। एक तो परिवर्तन ही सुखद है और फिर अच्छा परिवर्तन तो कहीं अधिक सुखद।

अजीतसिंह—(जो खड़े खड़े ही कृष्णकुमारी की ओर देख उसका यह भाषण सुन रहा था) क्यों, राजकुमारीजी पैरोंमें कुछ भारीपन मालूम होता है ?

कृष्णकुमारी—(पैर पृथ्वी पर ठोंकते हुए) नहीं, ठाकुरां, मुझे तो कुछ नहीं जान पड़ता ।

अजीतसिंह—और कोई बात मालूम होती है ?

कृष्णकुमारी—(कुछ देर सोचकर) नहीं, मुझे तो कुछ भी नहीं मालूम होता ।

अजीतसिंह—(आश्चर्य से) ऐसा !

कृष्णकुमारी—(प्याला उठाकर) एक प्याला और दो ठाकुरां । (प्याला अजीतसिंह को देती है ।)

अजीतसिंह—(प्याला लेते हुए) ऐ ... ऐसा ... ऐसा ... (प्रस्थान ।)

पटरानी—(दुःख से) दुष्ट ।

कृष्णकुमारी—माँ, तुम निरर्थक ही दुःखी हो रही हो ।

[भरे हुए प्यालेके साथ अजीतसिंहका प्रवेश । कृष्णकुमारी उसके हाथसे प्याला ले उसे भी एक साँसमें खाली कर कालीन पर रख देती है ।]

कृष्णकुमारी—माँ, जो मृत्युसे डरते हैं, वे अनित्य वस्तुओंके प्रेमी हैं जैसे अच्छा भोजन, उत्तम वस्त्राभूषण, आलीशान महल, हरेभरे बागबगीचे । ये सब एक न एक दिन छूटनेवाले ही हैं, फिर इनमें आसक्तिसे लाभ ? और अनित्य की आसक्ति तो धीरे धीरे गुलामीमें परिणत हो जाती है जो क्षण क्षणपर मृत्युका आलिंगन है। हर क्षण अनित्यके छूटनेका भय, मृत्युका—सा भय है आत्मा या तो शरीरके साथ ही नष्ट हो जाती है और तब उसके नाशका शोक ही निरर्थक है, क्योंकि शरीरका नाश तो अवश्यम्भावी है, और या आत्मा अमर है । अमर आत्माका प्रेम चाहिये नित्यके साथ, और उस प्रेमके पश्चात तो यह आवागमन उन यात्राओंके सदृश है जो पल पल पर परिवर्तित हो नया आनन्द देती हैं । हाँ, नित नये जन्म के बाद इस अनित्यका संपर्क भी होता है पर वह तो यात्राके साथियोंके सदृश माना जाना चाहिये । (कुछ रुककर खड़े हुए अजीतसिंहसे) ठाकुरां, कैसा तुम्हारा विष है ?

अजीतसिंह—(आश्चर्यसे) क्या कोई असर नहीं हुआ, राजकुमारी ?

कृष्णकुमारी—थोड़ा भी तो नहीं, ठाकुरां ।

पटरानी—(उत्साहसे) कभी नहीं होगा, कभी नहीं, तेरे शरीरमें अम्बामाताने प्रवेश किया है, बाई । तू साक्षात् दुर्गा हो गयी है । इन कापुरुषोंके घृणित षड़यंत्रों, इन कायरो की कुत्सित ......

कृष्णकुमारी—(बीच ही में अजीतसिंह को प्याला देते हुए) और......और लाओ, ठाकुरां । तेज...खूब तेज लाओ ।

[अजीतसिंह का प्याला ले नीचे मुख किये हुए प्रस्थान ।]

पटरानी—(और उत्सुकतासे) चाहे कितना...कितना ही विष तू पिये बेटी, तुझ पर विष का कोई असर न होगा। तुझपर शस्त्र भी प्रहार न कर सकेंगे। तुझे अग्नि भी न जला सकेगी ।

[अजीतसिंह का भरे हुए प्यालेके साथ प्रवेश । कृष्णकुमारी उसे ले उसकी ओर देखती है ।]

कृष्णकुमारी—तीसरी बार भी धोखा न देना । क्या... क्या मृत्यु भी मेरे लिये इतनी-इतनी महंगी हो गयी ? क्या मृत्युकी गोदमें भी [कृष्णकुमारी इस प्याले को भी खाली कर कालीन पर रखती है ।]

कृष्णकुमारी—माँ, यह निश्चयपूर्वक न जाननेपर भी कि मृत्युके बाद क्या होता है, एक निश्चित बातसे मुख मोड़ लेना तो निर्बुद्धिता का द्योतक है। मृत्यु के पश्चात् क्या होगा यह मैं निश्चय पूर्वक नहीं जानती, पर यह जानती हूँ कि मेरी मृत्युसे मेवाड़ पर आये हुए सारे संकट दूर हो जायेंगे । तब मैं ऐसी निर्बुद्धि तो नहीं कि अनिश्चितता के भयसे निश्चितासे मुख मोड़ लूँ। फिर एक न एक दिन मृत्यु आयगी यह भी निश्चय है और जीवन चला तो उसमें सुख पाऊँगी या दुःख यह अनिश्चित।ऐसी दशामें अनिश्चित सुख के लिये एक न एक दिन आनेवाली निश्चित मृत्युको, जब वह एक उत्तम अवसर देखकर आयी है, क्यों छोड़ दें। आगे तो कदाचित् वह ऐसे समय आये जब उसमें कोई विशेषता ही न रहे । आज मेरी मृत्यु की विशेषता यह है कि उससे सबके संकटोंका निवारण होता है । माँ, ऐसी मृत्यु......ऐसी......महान् मृत्यु........ किस-किस के भाग्य में बदी होती है । (कुछ रुककर अजितसिंह से) अरे, कैसा...कैसा विष है तुम्हारा ठाकुराँ ?(प्याला देते हुए)...कसूंबा...कसूंबा का तेज...तेजसे तेज विष लाओ । अब इस शरीर को क्षण...क्षण भर भी नहीं रखना चाहती ।

[अजीतसिंह का चुपचाप प्याला लेकर प्रस्थान ।]

पटरानी—(प्रसन्नतासे) परन्तु...परन्तु...बाई, माता अंबा ...माता अंबाकी कृपा से तेरा शरीर रहने वाला ही है । तेरा बाल...बाल तक बांका नहीं हो सकता ।

[अजीतसिंह का प्रवेश]

कृष्णकुमारी—(प्याले को देखते हुए) राजस्थान में, मेवाड़ में, शुभ और अशुभ, जन्म और मृत्यु सबको तू रंग देता है कसूंबा । जैसा गहरा तेरा रंग है वैसा ही गहरा तेरे विष का असर। मुझे विश्वास है तू........ तू मेरी प्रार्थना सुनेगा...अवश्यमेव सुनेगा । तू मुझे धोखा न देगा, कभी नहीं ।

[इस प्याले को भी कृष्णकुमारी खाली कर कालीन पर रखती है ।]

कृष्णकुमारी—माँ, मनुष्यको केवल एक बात सोचना चाहिये कि वह ठीक कार्य कर रहा है या नहीं । जीवन मृत्यु की परवाह किये बिना सुख दुखकी चिन्ता किये बिना, अरे, अवस्था तककी ओर न देखकर उसे केवल इस बातको अपना ध्रुवतारा बना सब कुछ करना चाहिये । ऋषि महर्षियोंने, ब्रह्मर्षि और राजर्षियोंने कभी जीवन-मृत्युकी ओर दृष्टि नहीं डाली । दधीचि ने अपनी अस्थियां दे दीं और न जाने किस-किसने क्या क्या किया ? राजपूतनियोंने तो प्राणोंको सदा हथेली पर ही रखा है, एक-दो ने, दस-बीस ने, सौ-दो सौ ने नहीं, हजारों ने। (अजीतसिंह की ओर देखकर) हां, ठाकुरां, इस बार तुम सफल हुए ।

[पटरानी की सारी प्रसन्नता हवा हो जाती है । वह झपट कर कृष्णकुमारी को गोदमें लिटा लेती है । अजीतसिंह निकट बैठ जाता है]

कृष्णकुमारी—माँ, धैर्य रखना ... भाईजी ... भाईजी को सँभालना । उन्होंने बुरा ... बुरा नहीं उत्तम ... उत्तम से उत्तम कार्य किया है । यह न सोचना कि उन्हें मुझसे प्रेम नहीं था । संसारमें कदाचित मुझसे अधिक वे किसीको नहीं चाहते । पर राज ... राजधर्ममें दीक्षित होनेके कारण व्यष्टि की ओर न देख समष्टि की ओर देखना और अपनी निकट से निकटतम वस्तु का भी अपने धर्मके लिये बलिदान दे देना उनका कर्तव्य ही है। और फिर उन्होंने मुझे...मुझे कैसी महान् मृत्यु दी है ! (अजीतसिंहसे) ठाकुरां, दरबार को ला सकोगे ? वे इस दृश्यको नहीं देखना चाहते इसीलिये यहां नहीं हैं, यह मैं जानती हूँ, परन्तु अन्तिम समयमें उनके दर्शन चाहती हूँ। मेरे पैर सुन्न हो गये हैं, शून्यता बढ़ रही है ।

[अजीतसिंह का चुपचाप प्रस्थान । पटरानीके आँसू बहने लगते हैं ।]

कृष्णकुमारी—(सामने की ओर देखते हुए) माँ... माँ...देखो ...देखो...सामने...सामने मुझे दधीचि... दधीचि ऋषिके दर्शन हो रहे हैं । (कुछ रुककर) और... और देखो...देखो वह...वह...राजपुतनियोंके जौहर... जौहर दिख रहे हैं। आह ! कैसे...कैसे सुख...कैसे...कैसे हर्ष...कैसे...कैसे...उत्साह...कैसे...कैसे...साहस...से ये वीर बालाएं अग्निमें कूद कर उसकी ज्वालाओं, उसकी लपटोंके साथ स्वर्ग को जा रही हैं। (कुछ रुककर) और...और...देखो... देखो माँ... करो...करो दर्शन मीरा...मीरा देवीके । वे...वे...किस... किस शान्ति...किस अखंड शान्ति किस अपूर्व शान्तिसे विषका मनवार प्याला पी गिरिधर गोपाल...हां, माँ, गिरिधर ...गोपालमें लीन हो रही हैं ।

[कृष्णकुमारी एक टक सामनेकी ओर देखती है । पटरानी

(शेष पृष्ठ ५ के कालम ३ पर)

राजस्थान और स्त्री शिक्षा

राजस्थान में न मालूम क्यों शिक्षा को बहुत ही कम महत्व दिया गया। जहाँ कि लड़कों को भी शिक्षा देने में झिझक रही, जहाँ के मातापिता यह सोचते रहे कि लड़का पढ़लिखकर आचारभ्रष्ट हो जायगा, आज्ञाकारी न रहेगा, उसका कार्यक्रम अनियन्त्रित हो जायगा; वहां पर बेचारी कन्याओं की शिक्षा के विषय में सोचना तो एक भूल होती और इस ख्यालवाले मातापिताओं के सामने तो यह एक अक्षम्य अपराध एक महान् पाप ही होता जो उनको उनके उच्च और उज्वल आदर्शों से नीचे ला ढकेलता। मेरे कहने का यह तात्पर्य है कि राजस्थान में शिक्षा को अधिक असहयोग ही मिला। किन्तु समय ने पल्टा खाया और शिक्षाके बाह्यरूपने, उसके प्रत्यक्ष लाभ ने, धीरे धीरे समाजको अपनी ओर आकर्षित करना शुरू किया और फलस्वरूप असहयोग भी सहयोग में बदलने लगा। मैंने यहां यह कहा कि शिक्षाके बाह्यरूप ने उसके प्रत्यक्ष लाभ ने राजस्थानमें शिक्षाको अपनानेमें मदद दी। तो फिर वह बाह्यरूप और प्रत्यक्ष लाभ क्या है जिसने इतनी उथलपुथल मचाई और जिसने अपने विरोधियों को भी अपने पक्षमें किया? मेरी तरफसे उसका सीधासादा उत्तर है जीविकोपार्जन का प्रश्न। मेरा मतलब यह नहीं कि शिक्षाका उद्देश्य यहीं पर ख़त्म होगया है। मैंने तो पहले ही कह दिया है कि यह तो सिर्फ बाह्यरूप है, केवल प्रत्यक्ष-रूप। किन्तु यह रूप इतना प्रबल रहा कि यदि यह सामने न आता तो बेचारी शिक्षाको हमारे राजस्थानमें तनिक भी सहायता, तनिक भी योग न मिलता और उस बेचारी को अपना सा मुंह लेकर खाली हाथ लौटना पड़ता। हां, तो मातापिताओं ने अपनी जिम्मेदारियां समझनी शुरू की। वे समझने लगे कि यदि अपने पुत्रों को शिक्षा न दी जायगी तो वे समयसे बहुत पिछड़ जायेंगे, उन्हें समयसे पिछड़नेका ख्याल भी इतना न सताने लगा जितना उनकी रोटीका प्रश्न और उन्होंने चाहे पूरे मनसे हो या अधूरे मनसे अपने पुत्रोंको पाठशालाओंमें, स्कूलोंमें और आगे चेलकर कालिजोंमें भेजना शुरू किया। जब इतना हुआ तो पुरुष समाजमें तो धीरे २ शिक्षा फैलने लगी और जब यह क्रम शुरू हो गया तो धीरे २ बढ़ने भी लगेगा। किन्तु अब आता है अपना मुख्य विषय, कन्या शिक्षा या स्त्री शिक्षा। उसकी ओर अब तक भी राजस्थानी समाजका ध्यान विशेष रूपसे नहीं जा सका है। जैसा मैंने पीछे कहा है कि लड़कोंके शिक्षा प्रसारमें तो उनके जीवनसंग्राम ने मदद दी किन्तु कन्याओंको मदद देनेमें ऐसी महत्वपूर्ण चीज कोई सामने न आई जो कि उनको शिक्षित बनानेमें समर्थ होती। उस राजस्थानमें जहाँ कि कन्या का जन्म ही एक दुर्भाग्य समझा जाता था, जहाँ पर कन्याओं का भरणपोषण भी एक भार सा था वहाँ पर उनको उच्च बनाने का, उनको योग्य कन्या व आगे चल कर योग्य वधू बनानेके विषयमें सोचने का अवसर ही कहां से आता। वे तो अपनी जिम्मेदारी को यहीं तक समझते थे कि वे अपनी कन्या की शादी कर दें और फिर इससे अधिक उनका और कोई भी काम नहीं। इसका फल यह हुआ कि छोटी उम्रमें ही जब कि उनको गृहिणीके कर्तव्यों का भी ज्ञान नहीं होता वे गार्हस्थ्य जीवनमें बाँध दी गई और फिर बचपनमें ही, जहाँ पर कि उनका स्वतन्त्र क्षेत्र रहा, वे जब कुछ शिक्षा न पा सकीं तो फिर आगे चल कर एक बन्धनमें बंध कर वे क्यों कर उसे पा सकतीं। तो फिर इसी तरह हमारी कन्याओं व बहनों की शिक्षा का प्रश्न एक प्रश्न ही रह गया। परन्तु समय सब कुछ करा लेता है और वही समय अब इस तरफ भी बढ़ा है। राजस्थानी समाजसे इतर समाजमें शिक्षा ज्यादा प्रभाव दिखा पाई और इसीसे अन्य प्रान्तों की स्त्रियोंमें शिक्षा का विशेष प्रचार हो सका। राजस्थान के भी उन लोगोंमें जिनका इनसे संपर्क रहा जो अपनी कन्याओं का राजस्थानसे बाहर विवाह करने की सोचने लगे उनमें भी यह अपना प्रभाव दिखाने लगी। परन्तु राजस्थान के गाँवमें यह अपने पंजे जमानेमें पूरी सफल न हो सकी। जैसा मैंने कहा है कि राजस्थानमें भी यह नहीं कि कन्याओं में शिक्षा फैली ही नहीं वहांपर भी लोग अब कन्याओं की शिक्षा पर ध्यान देने लगे हैं। और उसका कारण जहाँ तक मेरी समझ में आ पाया है, है अशिक्षित बालिकाओं को योग्य वर मिलने की बाधा। किन्तु यह बात सिर्फ धनाढ्य घरानों में ही लागू हुई और कुछ मध्यम और निम्न लोगोंमें यह अस्त्र अपना वार न कर सका। कारण, उन्होंने इसे कुछ भी महत्व नहीं दिया। मगर ज्यों २ पुरुष समाजमें शिक्षा अधिक बढ़ने लगेगी, ज्यों २ समाजके युवक अधिक से अधिक शिक्षित होने लगेंगे त्यों २ कन्या शिक्षा भी अधिक महत्व पाने लगेगी और यही कारण है कि उन सब बातोंको सोच कर यह प्रश्न भी धीरे २ हमारे सामने अधिक महत्व पाने लग गया है। और इसीसे यह आवश्यक भी हो गया है कि हम अपनी कन्याओंको पढ़ावें उन्हें सब प्रकारसे योग्य गृहिणी बननेकी शिक्षा दें जिससे आगे चलकर जब उन पर जननीकी जिम्मेदारियां आ पड़ें तो वे उसमें सफल रहें और भविष्यके समाजको अधिकाधिक शिक्षित और योग्य बना सकें।

तो, हम यह तो अनुभव करते हैं कि कन्याओं की शिक्षा की आवश्यकता है। और कुछेक मातापिता भी इसे मानने लगेंगे, यदि मैं यह कहूं कि कन्याओंके अशिक्षित रहनेमें समाज का उत्थान पूर्ण सम्भव नहीं। आजकी कन्या कलकी माता है यह दलील तो हमारे सामने सदा रखी जाती है और हम उससे अभ्यस्त भी हैं कि और जब माताएं ही अशिक्षित होंगी जब उनपर ही अज्ञान का पर्दा पड़ा होगा तो फिर उनके पुत्र जो नूतन भारतके निर्माता होंगे उनमें यह पूर्ण शिक्षा किस प्रकार आ सकेगी। किताबी शिक्षा तो वे अवश्य स्कूलों और कालिजोंमें पा लेंगे, मगर वास्तविक शिक्षा, आचार, विचार, सुन्दर रहन–सहन और अन्य जितने भी गुण हैं जो कि नित्यके जीवन की पहेलियोंसे ही हल हो सकते हैं, वह सब तो उनमें अधूरे ही रह जायंगे। दूसरी बात जो हमारे सामने स्त्रीशिक्षाको आवश्यक समझनेमें सहायता देती है वह यह है कि जब तक स्त्रियोंमें शिक्षा न आ जाय तब तक हमारा गृहस्थ जीवन भी पूर्ण शान्तिमय नहीं हो सकेगा। यह तो हम सब जानते ही हैं कि पुरुष और स्त्री दोनों गृहस्थ रूपी गाड़ीके दो पहिये हैं यदि एक पहिया ठीक और एक गड़बड़ रहा तो भला गाड़ी क्यों कर ठीक चलने लगी। उसमें तो पग पग पर झंझट और खराबी ही है और मेरे विचार से तो हमारे समाज में गार्हस्थ्य जीवन इसी कमीसे अपूर्ण और अशान्त पाया जाता है। और जब हम यह देखते हैं कि बगैर स्त्रियोंके शिक्षित हुए हमारे वर्त्तमान जीवन और भविष्यकी सन्तति दोनों पर बुरा असर पड रहा है तो फिर इससे ज्यादा और क्या प्रमाण हमें अपनी बहनों को शिक्षित बनाने के लिये चाहिये।

अब प्रश्न यह आता है कि जब हम यह नितान्त आवश्यक समझते हैं कि स्त्रियों को शिक्षा दी जाय, तो फिर वह शिक्षा किस प्रकार की हो? आया वह सिर्फ स्कूली पुस्तकों की शिक्षा हो या उनको पूर्ण गृहिणी बनाने को। इस विषय में मेरे विचार आज कल की स्त्री शिक्षा से भिन्न हैं।

● **श्री मोतीलालजी जैथलिया** ●

जहां कहीं मैंने स्त्री शिक्षा की ओर देखा है वहाँ पर आज कल माता पिता कन्याओं को स्कूली फिर कालेजी शिक्षा देकर ही यह समझ लेते हैं कि उन्होंने अपने समाज की इस महान कमी को पूरा कर दिया। किन्तु वह तो पूर्ण शिक्षा योजना का एक अंश मात्र है। मैं यह नहीं कहता कि उनको स्कूली या कालिजी शिक्षा न दी जाय किन्तु यह अवश्य कहूंगा कि वह सिर्फ इतनी ही दी जाय जितनी की आवश्यकता हो। मैंने "आवश्यकता" शब्द इसी लिए प्रयोग किया है कि वह विस्तृत है।

भिन्न-भिन्न मनुष्योंकी भिन्न-भिन्न आवश्यकताएं होती हैं। और जो माता पिता यह समझें कि उनकी कन्याओंके लिये कॉलिजी शिक्षा जरूरी है उन्हें अवश्य ही वह देनी भी चाहिये। मगर साधारणतया मैं ज्यादा स्कूली या कॉलिजी शिक्षाके पक्षमें नहीं, किन्तु इतना अवश्य मानता हूं कि उनको स्कूली शिक्षा मिलनी ज़रूर चाहिये। कन्याओंके लिये जिस शिक्षाको मैं अधिक महत्व देता हूं वह है ऐसी शिक्षा जो कि उनको सफल मातृत्वकी ओर, योग्य गृहिणीपनकी ओर ले जानेमें सहायक हो। और उसके लिए उनको ऐसी पुस्तकें दी जांय जिनमें नित्यके जीवनके प्रश्न सुलझाये गये हों। उनको गायनविद्या, पाकशास्त्र, सिलाई वगैरह चीजोंमें, जिन्हें हम समझते हैं उनके जीवनमें आयेंगी, शिक्षित करना चाहिये।

स्त्रीशिक्षा किस प्रकारकी हो–यह तो मैं ऊपर लिख ही चुका हूं। अब यह सवाल सामने आता है कि उनको शिक्षा किस तरहसे दी जाय याने उनके शिक्षणका कार्य्यक्रम किस तरह बांधा जाय। जैसा कि मैं पहले बता चुका हूं कि मैं केवल स्कूली शिक्षाके पक्षमें विशेष नहीं; उससे अधिक मैं उनकी जीवनकी पहेलियोंको सुलझानेवाली शिक्षा पर अधिक महत्व देता हूं। तो फिर यह किस प्रकार सम्भव है? दूसरी बात यह है कि वे यदि स्कूलोंमें ही पढ़ती रहें तो फिर वह जरूरी चीज यों ही छूट जायगी। इसके लिए मेरे ख्यालसे उन्हें स्कूलोंमें भेजा जाय मगर सिर्फ उतने ही समयके लिये जिससे उनको उनकी खास शिक्षाका भी पूरा समय मिल सके। ज्यादातर कोई ऐसा शिक्षक या शिक्षिका मिले जो प्रतिदिन उनके हरएक कार्य्य को उन्हें सुचारू रूप से करनेमें व सीखनेमें मदद करें। इसी से अधिक लाभ उन्हें तब पहुंच सकता है जब कि उनको उनके घरके ही लोग, माता, पिता, भाई व सहेलियां सदा समझाते रहें तथा उनकी शिक्षा की ओर ध्यान दें। और ज्यादा सेवा इस क्षेत्रमें शिक्षित बहनें ही कर सकती हैं। यदि वे इसे अपना कर्त्तव्य समझ ले तभी स्त्रीशिक्षा का प्रचार अधिक व्यापक, अधिक सफल और अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकेगा।

मेरे ख्याल से तो हम स्त्रियोंमें सिर्फ शिक्षा का प्रचार ही शुरू करें तो हमको उन्हें दूसरी सामाजिक कुरीतियों की ओर आकृष्ट ही न करना होगा और पर्दा प्रथा, गन्दे गीतोंकी प्रणाली, हास्यजनक वेशभूषा, अनमेल विवाह आदि आदि जो भी बुराइयां उनमें घर कर चुकी हैं, अपने आप ही भाग जायगीं। मेरा तो यही कहना है कि "एक ही साधे सब सधे" वाली कहावतको सामने रखकर हमको इसी तरफ विशेष ध्यान देना और कार्य करना चाहिये। फिर और चीजें तो स्वतः ही सुधरने लगेंगी।

भारत शुगर मिल्स लिमिटेड,
सिधवालिया, (बी. एण्ड एन. डब्लू. आर.)

जोधा

[वी० एल०]

[कहानी]

बाल बिखरे, बदन पर आधी बाहों की मैली कमीज़, बटन खुले, पाँवोंमें टूटी जूतियाँ, गर्दन लचकती हुई, जोधा भंगी "मलाई की बरफ़ ठंडा-मीठा बरफ़" की आवाज़ लगाते हुए गाँवमें दिन भर चक्कर लगाया करता है। यह उसका ख़ास पेशा है। लेकिन वह भंगी नहीं, जाति से वह ब्राह्मण है। भंगी तो उसका लाड़ का नाम है और उसका यह नाम गाँववालों ने रख छोड़ा है।

"ठंडा मीठावाला, यह मेवेवाला" आदि अनेक विशेषण बता-बताकर जोधा वर्फ बेचता है। मगर उसकी एक आवाज अक्सर अजनबी को आश्चर्यमें डाल देती है। कभी कभी वह कहता है "खाये वह भी पछताये और न खाये वह भी पछताये।" स्पष्टीकरण इसका यह है कि "जो खाता है वह इसलिए पछताता है कि मेरी बरफ सिर्फ बखाल के पानी और शक्कर से बनी है। मलाई और मेवा तो सहज़ मेरी जबान पर ही है। और जो नहीं खाता, वह यह सोचकर पछताता है कि न जाने जोधा की बरफ के क्या-क्या मजे होंगे?" क्या हाजिर मगर माकूल जवाब है! जोधा कहता भी है कि जो कहीं मैं थोड़ा पढ़ लिख लेता तो किसी बड़ी रियासत का दीवान बन जाता।

जोधा कहा करता है कि हम एक ही इल्म जानते हैं, ऐसी बात नहीं है। यहाँ तो हर फ़नके उस्ताद हैं। जोधाके पंसारी की दूकान है। सोडा-लेमन भी बनाता है, लकड़ी पर पालिश करता है, वैद्यराज है, टोपियाँ बनाता है, बदन का गोदना भी करता है। अक्सर गर्मियोंमें आगरे और नीमच छावनियों का दौरा करता है और गोरे सिपाहियों को अपने हुनर से खुश करके अच्छे पैसे बना लेता है। और भी कई धंधे हैं जिनका जोधा उस्ताद है। इन सब चीज़ों को मिलाकर उसकी आमदनी आज कलके एक अच्छे डाक्टर या वकील की आमदनी से किसी हालत में कम नहीं है।

जोधा की लड़की की शादी हुई। बरात आयी। जोधा ने समधी से यह पहले ही करार कर लिया था कि शादी वैदिक रीति से होगी। फिजूल खर्च कुछ नहीं होगा। समधी साहब ने, जोधराजजी के पास काफी पैसा है, यह तारीफ सुन ली थी। सोचते थे कि कमसे कम अपनी लड़की को तो दहेज दे ही देगा; इसी आशा में प्रसन्नचित्त थे। फेरों के थोड़ी देर पहिले समधीजी ने कहा 'जोधराजजी, इस गांव के जितने हमारी जातिवाले हैं उन लोगों को तो हम सुजन-गोठमें लायेंगे ही न?" जोधाने कहा "पंडितजी आपका कहा मेरे सिर माथे, मगर जातिवालों को तो मैं हरगिज़ न आने दूंगा। इनके अलावा चाहे आप हरिजनों को भी लायें, मुझे ऐतराज नहीं है।" समधी ज़रा अकड़कर बोले, "जोधराजजी इसमें हमारी नाक कटती है, लोग बुरा कहेंगे। जातिवाले ज़रूर आयेंगे!"

ज़ोधा ने देखा समधी साहब तनते जा रहे हैं, मैदान सर कर ही लेंगे, ऐसे नज़र आते हैं। ज़रा नर्मी दिखायी गयी तो ठीक वे ही पंच लोग मूँछों पर ताव देते हुए मेहमान होकर जोधाके घर मिठाइयाँ सफा करने चले आयेंगे। एक तरफ़ समधी का आग्रह दूसरी तरफ़ सिद्धान्तों की हत्या। किधर जाये? क्या यह समधी आज जोधा को नीचा दिखा देगा? आवेशमें आकर जोधा कहने लगा: "क्या कहा पण्डित? जरा फिर कहना! राख लगाकर तेरी जबान खींच लूँगा! मेरे घर मेरे ही दुश्मनों को लाने को कहता है? मिठाइयाँ तेरे बाप ने बनायी हैं जो गधों को खेत खिला दूँ?"

समधी साहब के गुस्से का ठिकाना न रहा। आगबबूला हो गये। लड़कीवाले की यह गुस्ताखी। आव देखा न ताव, दाँत किटकिटाकर बोले 'तो भाड़ में जाय तेरा घर। यह शादी नहीं होगी। अपनी लड़कीके लिए लड़का और ढूंढलो।"

बीन्दराजाको सम्बोधित कर बोले "उठ लड़के यह घर तेरी ससुराल नहीं होगा। तेरी शादी और कहीं हाथों-हाथ न कर दूं तो मेरा नाम उदयराम नहीं।"

बेचारे दूल्हे पर जैसे वज्रपात हुआ। दाम्पत्य सुखके मीठे सपनों पर पिताजीने पाला डाल दिया। अपना-सा मुँह लिये उठ खड़ा हुआ। शादी स्थागित होनेके प्रस्तावने सारा गुड़ गोवर कर दिया। बेबसी!

जोधाने देखा कि बना-बनाया खेल बिगड़ा। कितनी कोशिशोंके बाद यह वर मिला था। कितने गांवोंकी खाक छानी, कितनोंकी सिफारिशोंका अहसान सिर पर लिया, तब कहीं यह लड़का नसीब हुआ था। अब समधी साहब ज़रासी बात को लेकर लड़की का भविष्य बिगाड़ने पर तुले हुए थे।

लेकिन साहसके धनी जोधा ने गरजकर कहा: "अच्छा तो शादी नहीं होगी यह आपका मतलब है! पर किसकी शादी पण्डित? तेरी या मेरी?" रूड़िया को ज़ोर से पुकारकर कहा, "ज़रा मेरी तलवार लाना तो। वही जिस पर एक हफ्ते पहिले मैंने धार लगायी थी। इस पण्डित की अभी कपली उड़ादूँ, साथ ही इस लड़के की भी, तू आँगनके बीच खड्डा खोद; और देख, दरवाज़ा बन्द कर दे। कोई भागने न पाये।"

रूड़िया जोधराज का साहबजादा था पर एक दृष्टि से सफल शागिर्द भी। इतने दिन साथ रहकर हर फ़न का नहीं तो कई फ़नों का उस्ताद तो ज़रूर बन ही गया था। अपने बुजुर्ग को इस तरह ललकारता सुनकर झट बोला:—

"बापू, यह तुम क्या कहते हो? मेरे रहते तुम इस बुढ़ापे में तलवार उठाओगे? इन सब को तो मैं ही उड़ा दूँगा। मैं मर जाऊँ तो तुम लड़ना। रूड़िया भी आखिर तुम्हारे ही नुतफेसे है। यह आज तक किसीसे डरा है?"

तलवार, कपली उड़ाना, दरवाजा बन्द करना और खड्डा खोदना, इन सब नारों को सुनते ही समधि साहब के पैरोंके नीचे की धरती खिसक गयी। आँखोंके आगे अँधेरा छा गया। जमीन फटती दिखायी देने लगी। पांव लड़खड़ाने लगे। घिग्घी बँध गयी। कहां लड़के की शादी और दहेज की आशा, कहां यह कत्लेआम! कसाई को छुरी पैनाते देखकर बकरे की जो हालत होती है ठीक वही हालत समधी साहब और उनके लाड़ले की हुई। काटो तो खून नहीं। सिर्फ़ एक ही फ़िकरा मुंहसे निकल सका। "हाय रे! कोई बचाओ!!"

गांववाले सब खड़े-खड़े यह तमाशा देख रहे थे।

पर जोधा ने उसी मुद्रा में उत्तर दिया, "देख रामला, तू मेरा भाई है। तेरी बात मैंने आजतक नहीं टाली। पर यह दूसरा मामला है। इसमें मैं किसी की नहीं सुनूंगा। रोक मत। आज इन दोनों बाप-बेटों को सुलाकर ही पानी पीऊँगा।"

रामला के कुछ खोटी-खरी और सुनाने पर जोधा चुप हो गया। इधर समधी ने भी नया जन्म लिया। विवाह-कार्य सानन्द समाप्त हो गया। जातिवाले नहीं आयेंगे, यह तय हो गया। जोधा जीता और समधी हारा।

में ताज्जुब करता हूँ कि अगर समधी फिर भी नहीं मानता तो जोधा या रूड़िया तलवार लाते कहाँ से? जहाँ तक गाँववालों का खयाल है जोधा के घर पर तलवार जैसी कोई चीज है ही नहीं, लेकिन "हिम्मते मर्दा मददे खुदा।"

जोधा को अपने जविन में भिन्न-भिन्न मौकों पर भिन्न तरीके अख्तियार करने पड़े हैं। इसका अर्थ पाठक यह न लगायें कि वह निरा भांड है। जोधा बातचीत और व्यवहार में किसी सुलभ्य नागरिक से कम नहीं है। हर रविवारको हवन करता है, भजन-ध्यान करता है और अपने सामर्थ्य के मुताबिक दान भी देता है। अपने बच्चों को पढ़ा-लिखाकर योग्य बना दिया, कुरीतियों और रूढ़ियों को अपने घर से उखाड़ फेंका। खद्दरधारी है। विधव-विवाह का पक्का हामी भी। मितव्ययी है और व्यावहारिक सदगृहस्थ भी।

(पृष्ठ ५ का शेषांश)

ज्वानसिंह—(संग्रामसिंहकी ओर देखते हुए) राजपूत जाति की?

संग्रामसिंह—हाँ, राजपूत जातिकी, कंवरजी, (चिताकी ओर देखते हुए) जो अग्नि कृष्णकुमारीके विवाहकी वेदीमें प्रतिष्ठित होनी चाहिये थी, वह अग्नि आज कृष्णकुमारीके मृत शरीरको ही नहीं जला रही राजपूत जातिको भस्म कर रही है, (कुछ रुककर) और जानते हो कृष्णकुमारीका विवाह किससे होना चाहिये था?

ज्वानसिंह—(संग्रामसिंहकी ओर देखते हुए) किससे, संग्रामसिंहजी?

संग्रामसिंह—श्रीमन्त सींधिया से।

ज्वानसिंह—(आश्चर्यसे) श्रीमन्त सींधिया से? शिशोदिया कुलकी राजकुमारीका विवाह शूद्र से?

संग्रामसिंह—मराठे शूद्र नहीं, सच्चे क्षत्रिय हैं कंवरजी। आज वे जिस प्रकार क्षात्र धर्म का पालन कर रहे हैं, अन्य कोई जाति नहीं। राजपूतों और मराठों का यह विवाह इन दो महान् जातियोंके एकीकरण का आरंभ होता। कदाचित् देश का, समूचे भारत का इतिहास पलट देता। किन्तु ... किन्तु कँवरजी, राजपूतों की यह अदूरदर्शिता, यह संकीर्णता ... आह ... आह ... (कुछ रुककर) कँवरजी, कृष्णकुमारी सीधे स्वर्ग को गयी है, स्वर्ग से ऊँचा कोई लोक होगा तो उसको गयी है। उसकी सद्गति, उच्चतम गतिमें सन्देह नहीं। इस जमानेमें बड़े बड़े धर्माचार्य, बड़े बड़े दार्शनिक जो नहीं कर सकते वह इस बालिका ने किया, परन्तु ... परन्तु कँवरजी, कृष्णकुमारी की जो बात उसे उच्च से उच्च स्थान देनेका कारण हुई वही राजपूत जातिको निम्नसे निम्न स्थलपर ले जायगी। कृष्णकुमारीके शवकी भस्मके साथ राजपूत जाति भी सदाके लिये भस्म हो जायगी।

[दाहिनी ओरसे एक वृद्ध ब्राह्मण बाईं ओर आता है।]

पंडित—(ज्वानसिंहसे) कंवरजी, कपाल क्रियाका समय हो गया।

[ज्वानसिंह लंबी साँस ले ब्राह्मणके साथ दाहनी ओर बढ़ता है।]

जबलपुर जेल, जून १९४१ } (यवनिका) समाप्त

राय साहेब रेखचंद गोपालदास मोहता

स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स

अकोला (बरार)

तारका पताः—"MOHOTA"

टेलिफोन नं. ३४ और ५६

बरार की सबसे बड़ी और खुद मालिकी की एकमात्र अप-टु-डेट मिल

★ ★ ★ ★

इस मिलमें सब तरहका कोरा, धुला व रंगीन शुद्ध स्वदेशी कपड़ा व सूत तैयार होता है ।

प्रोप्रायटर
सेठ गोपालदास मोहता, एम्. एल. ए. हिंगणघाट.
बैंकर, लैण्डलॉर्ड, टेक्सटाईल, आईल एण्ड राईस मिल्स
व जिनिंग एण्ड प्रेसिंग फेक्टरियोंके मालिक
प्रेसिडेण्टः—
सी. पी. एण्ड बरार फेक्टरी ओनर्स एसोसिएशन

सम्पूर्ण रूपसे
- ● भारतीय पूंजी ●
- ● भारतीय श्रम ●
- ● भारतीय प्रबन्ध ●

भारत के प्रत्येक विभाग में हमारा कपड़ा उपयोग में लाया जाता है

हमारे कन्सर्न्स

फैक्टरियाँ

राय साहेब रेखचंद गोपालदास जिनिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्टरी, अकोला

राय साहेब रेखचंद गोपालदास जिनिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्टरी, वर्धा

बुलाकीदास गोपालदास जिनिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्टरी, हिंगनघाट

दूकानें

भीखणचंद रेखचंद (हैड आफिस) हिंगणघाट

राय साहेब रेखचंद गोपालदास, वर्धा

गोपालदास घनश्यामदास, राजनांदगाँव

हमारे मैनेजमैण्ट के लिमिटेड कन्सर्न्स

लक्ष्मी बैंक लिमिटेड, अकोला (शैड्यूल बैंक)
शाखाएँः—बम्बई, नागपुर (इतवारी), नागपुर (सीताबर्डी), रायपुर, अमरावती, खामगाँव और गोन्दिया.

श्री गणेश आईल मिल्स लि. गोन्दिया.
इस मिलका शुद्ध व स्वस्थ तेल भारत भरमें प्रसिद्ध है

गोपालदास मोहता एण्ड कं. लि.
शाखाएँः—अकोला, नागपुर और गोन्दिया
इस कम्पनीमें सब तरहके कपडे व सूतका काम होता है ।

बुलाकीदास मोहता एँण्ड कं. लि. अकोला.
यह कम्पनी कई कम्पनियों की मैनेजिंग एजेण्ट व मैनेजिंग डाइरेक्टर है ।

नेशनल कमर्शियल कारपोरेशन लि.
अकोला बम्बई खामगाँव
इसके डिपार्टमेण्ट्सः—काटन जत्था, मिल व जिनस्टोर्स
बीमा व अन्यान्य एजेन्सियें

एडवान्स ट्रेडिंग कम्पनी लि. अकोला
इस कम्पनीमें रुई, सरकी व अनाज वगैरे के कमिशन का काम होता है ।

★ देश विदेशकी चर्चा ★

रेगिस्तानमें फिर तूफान

पिछले दिनों ब्रिटिश फौजोंने न्यूज़ीलैण्ड, आस्ट्रिया और भारतकी फौजोंके सहकार से लीबियामें जर्मनी और इटली की सेनाओंको घरनेके लिए अप्रत्याशित रूपसे आक्रमण कर दिया है। गतवर्ष लीबियाका जो महान इटालियन साम्राज्य ब्रिटेनने पांच—छै मासके घमासान संघर्षके बाद विजय किया था वह जर्मन टैंकवाहिनी की मददसे फिर—अक्ष शक्तियोंकेही अधिकारमें आगया था। साधारणतया मध्य-पूर्वके मोर्चेपर जो शांति और निस्तब्धता छायी हुई थी उससे किसीने यह आशा भी नहीं की थी कि इस प्रकार सहसा रेगिस्तान प्रचण्ड गर्म हो उठेगा। इसप्रकार आकस्मिक आक्रमणसे ब्रिटिश फौजोंने स्थल वाहिनी और हवाई सेनाकी मददसे लीबियाके एक बहुत बडे हिस्से को अपने अधिकारमें कर लिया है। बार्डिया पर उनका अधिकार हो गया है और तबरूकमें धुरीराज्यों की फौजोंकी घेरेबन्दीके बीच आ ब्रिटिश साम्राज्यकी फौजें फंसी हुई थीं वे भी घेरा तोड कर निकल भागी हैं। इस समय एक त्रिभुजाकार खण्डमें सिद्दी रजेग, बीर अल हमीद और अलदुरा के बीच घमासान संग्राम हो रहा है। प्रारम्भमें जिस प्रबल वेग और भीम पराक्रमसे ब्रिटिश फौजोंने आक्रमण करके अक्ष शक्तियोंके स्तम्भित कर दिया था उससे जान ही यही पड़ता था कि अकस्मात ही ब्रिटिश फौजों को इस मोर्चेपर सफलता मिल जायगी परंतु अब जर्मनीके मध्यपूर्वस्थित सेनाध्यक्ष जनरल रोमेल क्रीटसे लीबिया पहुंच गये हैं और उन्होंने स्वयं अपने डिविज़नोंको संचालित करना शुरू कर दिया है। इसका एक महत्वपूर्ण असर भी हुआ है। उधर पाश्चिमोत्तरमें जर्मनी और इटलीकी फौजों का काफी बड़ा जमाव था जिस से आसानी कुमुक मोर्चेके इस भागपर भेजी जा सकती है। इससे मध्यपूर्वके मोर्चेपर ब्रिटिश सरकारकी विजय असंदिग्ध या सर्वथा निश्चित हो गयी है ऐसा कहना कठिन है। इस प्रकारकी धारणा का एक आधार है और वह यह कि जर्मनीने फिर सिद्दी रजेग और बीर अल हमीदपर अपना अधिकार कर लिया है। घेरेबन्दी को उन्होंने कमजोर और निष्फलसा बना दिया है। यह इस बात का द्योतक है कि घिर जानेपर भी जर्मनीकी शक्ति बहुत कम नहीं और उसके बारेमें कम अन्दाज करना बहुत बड़ी भूल होगी। लीबियाका रेगिस्तान का अवगाहन ब्रिटिश फौजोंके लिए एकदम सुकर नहीं है।

प्रश्न यह है कि इस प्रकार यह नया मोर्चा फिर क्यों खड़ा किया गया है, किन आशाओंपर वह टिका हुआ है और वे आशाएं कहाँतक सफल होंगी। पिछले दिनों ब्रिटेनका जनमत जर्मनी और इटलीके रूसके साथ जूझने पर भी ब्रिटेनके शान्त रहनेके कारण विक्षुब्ध हो गया था। किसी भी देशकी जनता युद्ध नहीं चाहती। जनमत युद्धके विरुद्ध है। ब्रिटेनमें जनता नहीं बल्कि शासक श्रेणी युद्धका बीज बोकर अब उसे आम जनताके रक्त और हड्डियोंकी खादसे सींचना और संवर्धित करना चाहती है। इसलिए रूसको मदद देने के लिए वहांका जनमत उत्तेजित हो उठा था क्योंकि वह जानता था कि रूसका पदाहत होना एक ऐसे राष्ट्रका पदाहत होना है जो शासक श्रेणी नहीं बल्कि जनताका राष्ट्र है; जहांकी धरतीमें उपजनेवाला अन्न और, जहांके आकाशसे बरसनेवाला पर्जन्य जनताको पुष्ट बनाता है, शासक श्रेणीको नहीं। जहां शासक और शासितके विभेदसे राजतन्त्रमें कालुष्य नहीं आया। ऐसे राष्ट्रकी सहायताके लिए ब्रिटेनका विराट जनगण उत्तेजित हो उठा था और यह मांगकी जा रही थी कि जैसे भी हो रूसको मदद देनेके लिए एक नया मोर्चा ब्रिटेनको बनाना चाहिए। रूसके मोर्चेपर जर्मनीको जो महान् जन-धन और युद्ध सामग्रीकी क्षति हो रही है वह इस बातका संकेत है कि जितने भी अधिक मोर्चोंकी रचना की जायगी उतना ही वह क्षीण और क्लान्त होता जायगा। इसी सम्भावना पर लीबियामें जर्मनीका ध्यान बंटाने और उसे युद्धरत करनेकी मांग बढ़ रही थी। उसके अतिरिक्त स्वयं ब्रिटिश शासकों और राष्ट्रविदोंके मनमें भी एक आशा अंकुरित हुई थी कि यदि लीबियाके साम्राज्यको इटली और जर्मनीसे छीन लिया जाय तो भूमध्य सागरसे निश्चिन्त होनेके साथ-साथ इटलीपर आक्रमण किया जा सकेगा। इटली आज इतना अधिक सुरक्षित नहीं कि वह ब्रिटिश आक्रमणसे—यदि वह बड़े पैमानेपर किया जाय—अपनी रक्षा कर सके। पार्लिमेंट में कुछ समय पूर्व मि० होर बेलिशाने इस आशयका सुझाव भी पेश किया गया था। नेपल्स आदि इटालियन नगरोंपर जिस सफलतासे ब्रिटिश हवाईयानोंके आक्रमण हुए हैं उनसे यह बहुत सम्भव प्रतीत होता है कि इटलीका जर्मनीकी अपेक्षा कहीं अधिक आसानीसे पराभव किया जा सके।

किन्तु जर्मनी और इटलीकी फौजोंको लीबियासे खदेडा जा सकेगा या नहीं यह यद्यपि भविष्यके गर्भमें निहित है तथापि लीबियाको चारों तरफसे ब्रिटिश उपनिवेशोंने जिस ढंगसे घेरा हुआ है उसे देखते हुए जर्मनीके लिए बहुत बड़ी आशा नहीं मालूम होती। किन्तु एक आशा है और वह यह कि यदि मार्शल पेतांके द्वारा फ्रेंच नौसेना व हवाई जहाजोंके अड्डोंको व्यवहारमें लानेकी अनुमति जर्मनीको तरफसे मिल जाती है तो स्वभावतः ही आफ्रीकामें उसकी स्थिति बहुत सुदृढ़ हो जाती है। हिटलरने जिस निपुणतासे समग्र यूरोपखण्डको अपने वशवर्त्ती करके उसकी असंख्य वाहिनियों और अटूट भण्डारको अपने दुर्जेय शत्रुओंके विरुद्ध लगा दिया है उसे देखते हुए इस सुविधाके मिल जानेपर लीबियामें जर्मनीकी इस आशाका पुरा हो जाना कुछ बड़ी बात नहीं! अखबारोंके समाचार इस बातका आभास दे रहे हैं कि जर्मनीकी मांगके आगे क्रियात्मक रूपसे तो मार्शल पेतांने मस्तक झुका ही दिया है। इस लिए भविष्यमें इस अफ्रीकन मोर्चेका एक महत्वपूर्ण स्थान होगा और रूसके मोर्चेकी तरह इस मोर्चेपर भी संसारकी आंखें लगी रहेंगी।

रोस्टोवपर रूसी फौजोंका पुनः अधिकार

रोस्टोव काकेशसके भीतर जानेका एक प्रमुख मार्ग है। इस पर पिछले दिनों जर्मन जनरल क्लीस्टकी सेनाओंका अधिकार हो गया था। इस प्रकार रूसीमोर्चेपर काकेशसके प्रदेशमें अभियान करनेका एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक अध्याय खुलनेवाला था किन्तु इधर रुसी फौजोंने इतिहासकी दिशाको मोड़ दिया है और असामान्य पराक्रम और दृढ़तासे जर्मनीकी फौजोंको खदेड़कर रोस्टोवपर अधिकार कर लिया है। इसके साथ ही मास्कोके मोर्चेके निकट रूसियोंको असाधारण सफलताएं मिल रही हैं। एक तरफ जर्मन फौजोंका दबाव बढ़ रहा है फिर भी दूसरी तरफ रूसियोंको सफलता मिल रही है जो इस बातकी द्योतक हैं कि जर्मनीकी युद्ध प्रवृतियां रूसीमोर्चेपर बहुत कुछ धीमी पड़ गयी हैं।

प्रशान्त महासागरके पृष्ठपर

इधर यूरोपमें जो मन्दता रणक्षेत्रोंमें नज़र आ रही है उसकी पूर्ति सुदूर पूर्वमें प्रशान्त महासागरमें होती दीख रही है। अमेरिका और जापानके बीच एक अर्सेसे पारस्परिक सम्बन्धोंका विच्छेद हो चुका है। इन सम्बन्धोंको फिर सुदृढ करने के लिए अमेरिका और जपानसे दर्म्यान सन्धिकी चर्चा चलानेके लिए जापानी राजदूत और जनरल नोमुरा वॅशिंग्टन गये हुए थे और सन्धिकी प्रारंभिक बातें भंग हो चुकी हैं फिर भी दोनों देशोंकी तरफसे बिगड़ीको बनानेकी कोशिशें हो रही हैं।

सिंगापुर-थाइलैण्ड-इण्डोचीनमें तय्यारियां

उधर अमेरिकामें जापानकी सन्धिचर्चा चल रही है इधर इण्डोचीनमें उसकी फौजोंका भारी संख्यामें जमाव हो रहा है। यह अफवाहें बहुत दिनोंसे गर्म हो रही हैं कि जापान थाइलैण्डपर आक्रमण करेगा किन्तु इस संभावनामें अभी कोई सार नहीं नजर आता। यद्यपि जर्मनी इटली की तरह जापानने भी पूर्वमें विश्व व्यवस्था करने का संकल्प किया है और इस प्रकारकी नयी व्यवस्थाका...शब्द के द्वारा जापानी राष्ट्रविदों द्वारा बार-बार उत्तुंग आघोष हो रहा है पर तो भी इस नवीन व्यवस्था का जन्म किसी सदिच्छा या उपकार की भावनासे नहीं हुआ। ब्रिटेन और अमेरिका सरीखे साम्राज्य वादी देशोंने अपने व्यापार-व्यवसायके विस्तारके द्वारा जो आर्थिक उन्नति की है उसकी प्रतिस्पर्धा करने वाला यह क्षुद्र राष्ट्र साम्राज्यविस्तार की आकांक्षासे और अपनी मिट्टी को सोनेके मोल बेचने की अभिलाषासे एशियामें नये बाजार खोजना चाहता है और इसी तलाश करने की मनोवृत्तिसे नवीन व्यवस्था की बुनियाद पाटी जा रही है। पर आकांक्षाएं आर आसमान की उड़ान भरने वाली अभिलाषाएं होना एक बात है, और उनको अमलमें ला सकना दूसरी। जापान अपनी इन आकांक्षाओं को पूरा कर सकेगा, इसमें सन्देह है क्योंकि उसके पास स्थलीय युद्ध की और हवाई युद्ध की सामग्री नहीं कि वह स्वतन्त्र लोगोंके देश (थाईलैण्ड) पर आक्रमण करके अपनी स्थिति को आक्रान्त देशके अन्य सहायकोंके सामने मजबूत रख सके। चीनमें उसकी शक्ति की परख हो चुकी है।

राजनैतिक बन्दियोंकी मुक्ति

भारत सरकारनें केन्द्रीय असेम्बलीमें हुई बहस और ब्रिटिश जनमतके द्वारा की गई मांगके अनुसार गत ४ दिसम्बरको समस्त सत्याग्रही राजनैतिक बन्दियोंको मुक्त करनेकी घोषणा की है। एक मासके भीतर ही सब राजबन्दी कारावाससे मुक्त हो जायेंगे। मौलाना अबुल कलाम आज़ाद व पं० जवाहरलाल नेहरू भी मुक्त कर दिये गये हैं। सरकारने यह कदम इसलिए उठाया है कि कांग्रेसके सब नेता जेलोंसे बाहर परस्पर मिलकर अपनी नीतिपर पुनः विचार करें। सरकारको सम्भवतः अपने युद्ध प्रयासमें भारतकी मदद पानेका अवसर मिल जाय। किन्तु महात्माजी व अन्य कांग्रेसी नेताओंके वक्तव्योंको देखते यह अभी सम्भव नहीं प्रतीत नहीं होता क्योंकि भारतके लिए अब भी वही स्थिति है जो युद्धसे पूर्व थी।

दो योग्य वरोंकी आवश्यकता.

दो शिक्षित, सुन्दर, सुशील तथा गृहकार्यमें निपुण, १४ वर्षीय टावरी गोत्रज कन्याओंके लिये १५ से २१ वर्ष तकके योग्य वरोंकी आवश्यकता है।

कृपया जन्मकुंडली, फोटो, तथा चारों खांप सहित पत्र-व्यवहार करें।

मेसर्स हीरालाल गंगाप्रसाद टावरी
पचमढ़ी (सी. पी.)

यूनियन बैंक आफ़ इन्डिया लिमिटेड

★ बम्बई में सन १९१९ में स्थापित ★

हेड ऑफिस—अपोलो स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई

शाखाएँ
१ कॉटन एक्सचेन्ज बिल्डिंग
कालबादेवी रोड़ बम्बई
१ कत्था बजार मांडवी, बम्बई
३ राजकोट सिविल स्टेशन

सेफ़ डिपाज़िट वाल्ट
काटन एक्सचेंज बिल्डिंग
कालबादेवी रोड, बंबई
स्त्रियों के लिये ख़ास सुविधा

चुकाया हुआ धन	रु. ३९,९० ०००
रिज़र्व फड	रु. १०,००,०००
डिविडन्ड इक्वलाइज़ेशन फंड	रु. ६०,०००
जमा हुआ धन (ता. ३१-१२-४०)	रु. १,९६,७२,०००

डायरेक्टर्स

सेठ एम. एस. केप्टन, चेअरमेन
सेठ बेहराम एन. करंजिया
सेट लछमनदास हरखचंद डागा
सेठ विठ्ठलदास कानजी
सेठ के. आर. पी. श्राफ़
सेठ हरिदास माधवदास
सेठ रामदेव आनन्दीलाल पोद्दार
सेठ दीनशा डी. रोमर

चालू डिपाज़िट खाता खोला जा सकता है। हररोज़ की रु. दो लाख तक की बचत पर प्र. व. ३/४ प्र. श. के हिसाब से व्याज दिया जाता है।

कम ज्यादा समय की डिपाझिट बहुत ही लाभकारी शरतों पर स्वीकार की जाती है।

सेविंग बैंक—इस खाते में रु. १०००० तक की कम से कम मासिक बचत पर प्र. व. १॥ प्र. श. के हिसाब से व्याज दिया जाता है। सप्ताह में दो बार इस खाते से आप चेक द्वारा पैसा निकाल सकते हैं।

मान्य की गई जामिनगीरी पर पैसा दिया जाता है। बैंकिंग का हर किस्म का काम किया जाता है।

बी. एम. भार्गव, सेक्रेटरी

राय साहेब रेखचंद मोहता

स्पिनिंग ऐण्ड वीविंग मिल्स

हिंगणघाट (सी. पी.)

हिंगणघाट की महशूर रूई से बनाया हुआ सुन्दर और टिकाऊ कपड़ा इस्तेमाल कीजिये

★ ★ ★

हमारी शाखाएँ

मथुरादास गिरधरदास
नागपुर, गोंदिया, बारासिवनी
रा. सा. रेखचंद मोहता
राजनंदगांव, द्रुग, भाटापारा, अकलतारा
मथुरादास मोहता
झारसुगड़ा (B. N. R.)

बाज़ार में कपड़ा खरीदते समय इसी मिलकी छाप देखकर खरीदिये और अपने पैसोंका सदुपयोग करके प्रसन्नता प्राप्त कीजिये।

इस मिल में हर प्रकारका सूत व धुला कोरा कपड़ा, लाँगक्लाथ, शर्टिंग, धोतियां, साड़ियां, हरक, गादीपाट, सफेद एवं रंगीन चादरें, टावेल्स, टेबल क्लाथ आदि कपड़ा बनाया जाता है।

हमारी खास विशेषताएँ

इस मिल में कपड़ेपर माड़ी बिलकुल आवश्यक तथा बहुत कम प्रमाणमें दी जाती है। इसलिये निखालिस सूत कपड़ेमें रहने के कारण कपड़ा धोनेके बाद बहुत अधिक टिकाऊ तथा मुलायम एवं सुन्दर निकलता है।

ट्रेडमार्क
लक्ष्मीनाथजी की छाप
पान छाप

● सूतका ट्रेडमार्क ●
राय साहेब रेखचंद मोहता
(सेठ छाप)

★

साधारण जनता की परिस्थिति एवं उसकी मांग की ओर विशेष ध्यान देकर कपड़ा बनाया जाता है।

विधवाओंके सम्बन्धमें दो शब्द

● श्री गणेशरामजी मन्त्री ●

आज विधवाओं की दशापर दृष्टि पात करने से ज्ञात होता है कि हमारा पुरुष वर्ग अपने थोड़ेसे सुखके लिये इन अभागी रमणियोंके अधिकारको अपहरण कर दिन दहाड़े उनकी प्रतिष्ठा की हत्या कर रहा है । आज जो विधवोओं की दशा शोचनीय हो रही है, यथार्थमें इसका दोषी पुरुष समाज ही है । हमारे भुक्त भोगी पुरुष स्त्रीजाति पर बड़ी निष्ठुर दृष्टि से देख रहे हैं । स्वयं अपने आचरणों की ओर ध्यान नहीं देते । किन्तु स्त्रीसमाज को कठोर बन्धनसे बांध कर नीचे खाई की ओर ढकेल रहे हैं ।

आज जो विधवाओं के साथ घोर अन्याय तथा निन्दनीय व्यवहार किया जा रहा है, इसका वर्णन करना हमारी लेखनी की शक्तिसे बाहर का कार्य है। आज विधवाओं की ओर तुच्छ दृष्टिसे देखा जा रहा है । उनके रहनसहनके नियम आदि ऐसे कठोर हैं, कि शायद ही वे उनका पालन कर सकें । अधिकांश विधवाएं इस कठोर समाज को सदाके लिये धिक्कारती हुई तथा समाज की छाती को रौंदती हुई व्यभिचारी गुंड़ों के साथ निकल जाती हैं और अपने पेटकी ज्वाला को शांत करने के लिये वेश्यावृत्ति, अख्तियार कर लेती है। यह वेश्यावृत्ति स्त्रियोंके लिए नरक के सदृश है, परंतु इसके सिवाय वे कर ही क्या सकती हैं ? इधर सुख भोगकी इच्छा और पेट की ज्वाला और उधर नारकीय कुण्ड ! बेचारी न घरकी रहती हैं और न घाटकी ! कड़े से कड़े बन्धनोंमें बांध दी जाती हैं ताकि उनका आचरण भ्रष्ट न होने पावे । सारा दोष स्त्रियोंके माथे मढ़ दिया जाता है परंतु कागजकी नाव कबतक पानीमें बहती रहेगी । एक न एक दिन अवश्य धारामें पड़कर डूब जायगी । मकानकी नींव कमजोर पड़नेसे मकान शीघ्र ही ढह जाता है। ठीक उसी तरह हमारे समाजका बन्धन अनियन्त्रित, अस्वाभाविक और कमजोर है, इसी से स्त्रियां अल्पकाल तक भी इन बन्धनोंमें ठहरने नहीं पातीं । अन्तमें नीचोंके साथ भाग निकलती हैं। उसपर भी हमारा समाज मुंह ही ताकता रहता है ।

जब हम स्वयं अपनी वासनाको नहीं रोक सकते और स्त्री की मृत्यु हो जाने पर तथा उसकी उपस्थिति ही में दो चार शादियां कर डालते हैं, तो फिर हमारा क्या अधिकार है कि इन बाल विधवाओंका पुनर्विवाह होनेसे रोकें । चाहे वैवाहिक सुखका स्वप्नतक न देखा हो, उनके भरण पोषणके लिये एक भी सन्तान उत्पन्न न हुई हो तब भी समाज उन्हें विवाह नहीं करने देगा पर पुरुष वर्ग सन्तान रहते भी अपनी चार चार शादियां कर लेता है । विधवाओंके पुनर्विवाहसे उनका घर और समाज कलङ्कित हो जाता है । इन सरल और कोमल विधवाओंका दिन कैसे व्यतीत होता है, हमारा पुरुषवर्ग क्या समझ सकता है ? हमारी स्त्रियां चहारदिवारी के बाहर जाने नहीं पातीं, शिक्षासे वंचित रखी जाती हैं, बचपनमें शादी करा उन्हें बालविधवा बना दिया जाता है, उनके आचरण रक्षाके बहाने उनपर घोर अन्याय कर गलेपर छुरी रेती जाती है । उधर हमारा पुरुष वर्ग अपनेको सच्चरित्र बनायें रखनेमे असमर्थ है । इससे अच्छा तो मैं यही समझता हूं कि स्वयं हमारा पुरुषवर्ग अपना २ सुधार करे तो स्त्रियोंका चरित्र आप ही आप सुधर सकता है । इतनी सख्तीसे स्त्रियों पर निगाह रखना इनको पतनकी राहपर लाना है । स्त्रियोंपर पुरुषोंको जरा भी शक आया कि वे उनके लिए दण्ड विधान कर देते हैं । परन्तु लंपट व्यभिचारी पुरुषोंके लिये कौन और क्या दण्डविधान करे ? दिनदहाडे सतियोंका सतीत्व वे भले ही नष्ट कर डालें, पर उनका दण्ड माफ है । यही हमारे समाजकी भारी भूल है । उनके साथ भी यही दण्ड-विधान रखा जाता जो स्त्रियोंपर लागू किया जाता है तो ठीक होता ।

आज वेश्याओंकी संख्या कलकत्ता और बनारस जैसी महानगरियोंमें अनगिनत है । उनमें सभी वर्णकी वेश्याएं पाई जाती हैं परंतु अधिकांश वेश्याएं उसी वर्ण की हैं जिसमें विधवा विवाहकी प्रथा नहीं है। स्त्रियां समाजसे स्वतंत्र होकर वेश्यावृत्ति धारणकर लेती हैं और स्वतंत्र होकर सामाजके सामने तथा समाजके महापुरुषोंसे ही अपनी भोगवासना तृप्त करती हैं। बेचारी करें तो क्या करें ? समाजमें तो उनका कोई स्थानही नहीं है। अब यह स्त्रियां जाय कहां ? एक जमाना था जब इस देशमें सतीत्व रक्षाके लिये अच्छे२ वीरोंका मस्तक शरीरसे पृथक हो जाता था । इसके महत्वसे उनका मस्तक उन्नत था, परंतु आज उसी देशकी यह दशा हो रही है कि बड़े बड़े शहरोंमें चार लाख से अधिक वेश्याएं अपने यौवनकी दुकान लगाये बैठी हैं । मेरा तो स्पष्ट मत है कि इसकी वृद्धि हम (पुरुष समाज) से ही हो रही है ।

नीच पुरुष विधवाओंको अनेक प्रलोभन दे दे कर उनका सर्वस्व हरण कर ऐसी दशामें पहुंचा देते है कि वे कहीं की नहीं रहतीं । उन्हें सब कोई नीच दृष्टिसे देखने लगता है। किसी के द्वार भी जाती हैं तो बुरी रीत ढकेल दी जाती हैं। फिर उनके पास, आप ही कहिए, मार्ग क्या है ? इसपर भी इनमें पतन तो हमारी बहिनों का हुवा, वे नीच लम्पट पुरुष तो पतन का शिकार न हो सके ! वे तो समाज के सिरमौर ही रहे। क्या आप समझते हैं कि उन विधवा बहिनों को वेश्यावृत्तिमें सच्चा आनंद मिलता है ? सच तो यह है कि वहां भी वे सुखी रहने नहीं पातीं । उनका पापमय जीवन उन्हें सदैव धिक्कारा करता है ।

आज हमारे समाजमें विधवाओंकी दशाके सुधारकी नितान्त आवश्यकता है । पुरानी दिवार ढाहकर नई दिवार निर्माण करना है । इन बाल विधवाओंपर तरस खानेकी आवश्यकता है। समाजको न्यायसे कार्य करना आज अनिवार्य है। जो नियम पुरुषोंके साथ है वही नियम स्त्रियोंके साथ भी लागू हो । आज स्त्रियोंकी राह साफ करनेकी जरूरत है न कि उस राहमें रोडे अटकाना है । अतएव इस कलङ्कको जहांतक शीघ्र हो समाज को मिटानेका पूर्ण प्रयत्न किया जाना चाहिये ।

चिंचांवापेन]

(कालम १ का शेषांश)

बेरोज़गारी की वज़ह से मैट्रिक वाले भी बेकार बैठे हैं ।... सिन्ध में अन्य प्रान्त के लोग सिफारिश द्वारा नौकरियां कर रहें हैं । मगर स्वयं यहां के वासी वैसे ही ताकते रहते हैं ।

इस प्रान्तमें महिलाओंमें शिक्षा अच्छी है और स्त्रियें—सधवा-विधवा—नौकरियां भी बड़ी तदादमें करती हैं । किसीके साथ माता तो किसीके साथ सास, और किसीके साथ श्वसुर तो किसीके साथ पिता, किसीके साथ देवर तो किसी के साथ भाई रहते हैं । सभी आजकल विधवाओंकी आय पर अपना निर्वाह कर रहे हैं । जो माहेश्वरी वृद्ध पहले इसमें अपनी निंदा समझते थे, वही आज विधवाओंको नौकरिएं करवा रहे हैं !

— थार —

माहेश्वरियोंका एक उपेक्षित प्रदेश

★

एक थार निवासी

थार कहाँ है ?

थारपारकर सिन्ध, कच्छ, जोधपुर, और जैसलमेरके मध्य एक रेतीला 'धोरोंवाला' प्रदेश है। यहाँ पानी की बहुत तंगी रहती है। इस प्रान्तमें नहर वग़ैरह भी नहीं आ सकतीं, इस कारण पानीके अभाव होनेसे हमेशा दुष्काल समझा जाता है। वर्षाऋतुमें बरसात अच्छी होती है, तबतो सब आनन्दोंका उपभोग, कल्याण का जय जयकार हो जाता है ।

वर्षा कालमें पानी तालाबोंका पीया जाता है, और बादमें कुँओंसे काम लिया जाता है। कुएँ किसी-किसी जगह सौ, दो सौ, तीन सौ और चार सौ फुट तक गहरे होते हैं । और कहीं पानी मीठा, और कहां नमकीन होता है एवं कई जगह तो ऐसा भी है कि एक बार पीने से ही जुलाबका काम देता है । पर यहाँकी आब-हवा सदैव आरोग्यप्रद, आनंददायक व तर रहती है। यहां की जनताको, विशेष कर, बीमारीका मुख नहीं देखना पड़ता जिससे लोग हृष्ट-पुष्ट रहते हैं। किन्तु वर्तमानमें कुछ शहरोंवाले दूसरे मुल्कोंकी देखादेखी अपना आचरण, खाने-पीनेके नियम, बदल रहे हैं जिससे रोगोंका प्रवेश होरहा है। यहाँके लोग बहुत भोले-भाले, एवं ईमानदार हैं और कपड़े-लत्ते पोशाकमें सादे-रहते हैं। पर अब कुछ शहरोंवालोंके फैशनके मर्ज़से विदेशी पोशाकें भी नज़र आने लगी हैं !

यहाँका निर्वाह बहुत कर खेतीसे एवं मालपर है । और गरीब लोग अकालके कारण सिन्धको चले जाते हैं ।

यहाँ गर्म ऊनी वस्त्र, कम्बल, और खल्ये अच्छे होते हैं ।

सामाजिक दशा

यहाँ पर अनेक जातिएँ हैं, मगर शहरोंमें वैश्य, और ब्राह्मण विशेषकर हैं। एव, एक दूसरेसे परस्पर प्रेम और मेलमिलापसे ही रहते हैं ।

बहुतसे लोग अब पुराने ख्यालोंको छोड़ नवीन विचार अपना रहे हैं। लेकिन वे लोग निन्दा के डर से आगे कदम नहीं धर सकते। थारमें विवाह प्रथा में साटे-देना—लेना—का नियम पता नही किस वक्त से प्रचलित हुवा है। पहले ईमानदारी एवं विश्वास रहता था । एक की सगाई सम्बन्ध जुड़ता था और किसी के इत्तफ़ाकन एक तरफ़ा कन्या मर जाती तो दूसरे सगे लोग सम्बन्ध को नहीं छोड़ते थे और विवाह कर लेते थे । परन्तु इसवक्त अगर ऐसा हो जाता है तो सम्बन्ध को तोड कर दूसरी जगह कन्या का विवाह कर देते हैं। और कई जगह तो ऐसा भी हुआ है, कि विवाहकी लिखा पढ़ी हो जाने पर वरको छोड़कर अन्य जगह कन्याएं गई हैं। ऐसी बातें तो सत्तावाले करते हैं। अतएव रिश्तेदारीमें कहीं पर तो २ परस्परमें भी शादियां हुई हैं। अफसोस है कि शारदा एक्ट होते हुए भी यहां दो—तीन बाल विवाह हुए हैं पर दौलत मन्द और नौकरी की सत्ता होने से कोई भी इस बारेमें इनके खिलाफ उफ तक नहीं करता।

शिक्षा

थारमें एक अपनी थारी मात्र भाषा है। व्यापारी लोग हिसाब—किताब, गुजराती में रखते हैं । स्कूलोंमें सिन्धी की फाइनल ७ कक्षा तक पढ़ाते हैं। और कई शहरों में अंग्रेजी भी साथ २ पढ़ायी जाती है इस वक्त

(शेष कालम २ पर)

कमला मिल के कपड़े इस्तेमाल करें।

आर्टिफिशियल सिल्क ज्योर्जेट
साडियां, साडी क्लाथ और
शर्टिंग कपड़ों के लिए
यह मिल अपनी
विशेषता
रखती

हेड आफिसः—
गोयनका हाउस
१४५, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट,
कलकत्ता

हर प्रकार की धोती, साडी,
कोरा लाँगक्लॉथ,
कोटिंग, केनवास,
सूसी, आदि
आदि

कमला मिल्स लिमिटेड

तुलसी पाइप रोड, परेल, बम्बई. टे. नं. ६००६४—६५

विक्री-विभागः—

बम्बई : टे. नं. २६९४५
मूलजी जेठा मार्केट

कलकत्ता :
सूतापट्टी

लोकप्रियताका अकाट्य प्रमाण] **रूबी प्रगति पथपर** [दृढ़ता का सच्चा सबूत

१००%

- स्वदेशी
- टिकाऊ
- दृढ़

बीमा कंपनी

प्रगतिके आंकड़े

विभाग	प्रीमियमकी आवक	
	सन् १९३७	सन् १९४०
आग	रु. ६,५५,०४७	रु. १४,१७,०११
मोटर और अकस्मात	रु. ७३,९८६	रु. २,४६,७८१
समुद्रीय	रु. ७२,२८१	रु. ४,६६,५९०
पूंजी	रु. १७,९४,३४२	रु. २७,९४,१४५

जिंदगी १९४० के प्रथम वर्ष में किया
गया कामकाज……………………….रु. ३०,६५,१००

- आग
- मोटर
- अकस्मात
- जिंदगी
- समुद्रीय

और

- मजदूरोंके बदले आदि के बीमेका कामकाज किया जाता है

रूबी जनरल इन्श्युरंस कं. लि.

टे. नं. २०५६० और ३१९२९
टेलिग्राम्स 'सनशाइन'
'SUNSHINE'

चेअरमैन
श्री बी. एम. बिड़ला

जनरल मैनेजर इनचार्ज, बम्बई डिविज़न
श्री बी. के. सेतलवाड़

ऑफिस—४५-४७ अपोलो स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई

आरोग्य सुधा

फल और उनका स्वास्थ्य पर प्रभाव

नित्य फलोंका सेवन करना स्वास्थ्यके लिये अत्यंत आवश्यक है। फल शीघ्रपाची एवं पुष्टिकारक होते हैं। फलोंमें काष्टोज नामका तत्व होता है जो आंतोंमें पहुंच कर उनमें फिसलन उत्पन्न करता है जिससे मल साफ होकर कोष्ठवद्धता दूर होती है। इसके अतिरिक्त फलोंके छिलकोंमें लौह अधिक मात्रामें रहता है जो शरीरमें रक्तवृद्धिका कार्य करता है। यहां हम भारतवर्षमें उत्पन्न होने वाले कुछ फलोंका वर्णन करते हैं जिससे पाठक भलीभांति समझ जायें कि किस फलका शरीर पर क्या प्रभाव पड़ता है।

सेव

आधुनिक वैज्ञानिको ने सेव को सर्वश्रेष्ठ फल माना है तथा इसके विश्लेषण करने पर इसमें Potassium (पोटाश) Sodium (सोडा) Magnacium (मेगनेशिआ) और Phosphorous (प्रस्फुटक) काफी मात्रामें पाये गये हैं। आयुर्वेद मतानुसार सेव शीतल, वीर्यवर्धक, धातु (रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, शुक्र) की वृद्धि एवं पुष्टि करनेवाला है। शरीर की वाहरी एवं आन्तरिक दाहको शान्त करता है। हृदयकंपमें लाभकारी है, मास्तिष्क एवं स्नायु दुर्बलतामें अत्यंत लाभदायक है। इसके अतिरिक्त यह कई रोगों के कीटाणुओंको मारता है। इसके सेवनसे शरीरमें अम्लता नहीं वढ़ती (शरीरमें अम्लता (Acid) वढ़नेसे खट्टी डकारें आना, छातीपर जलन होना तथा आंखों के सामने अंधेरा आकर सिर दर्द होना उपद्रव होते हैं)। सेव खानेसे मल साफ होता है। हृदय दुर्बलतामें सेव का मुरब्बा चांदी अथवा सोने का वर्क लगा कर सेवन करने से अत्यंत लाभकारी है।

केला

"स्निग्धं पित्तास्रतृड्दाहक्षतक्षयसमीरजित्। पक्वं स्वादु हिमं पाके स्वादु तृष्यघ्न वृंहणम्। क्षुत्तृष्णानेत्रगदहृन्मेहघ्नं रुचि मांसकृत्" अर्थात् केला गुणोंमें स्निग्ध, कफ और पित्तको नष्ट करनेवाला, रक्त विकार (खून की खरावी यथा शरीरपर फोड़े फुन्सियां-खाज इत्यादि होना) दाह (शरीरमें जलन अनुभव होना), क्षत (चोट इत्यादि लगनेसे कहीं व्रण उत्पन्न हो जाना) क्षय (जिस रोग में धातुओंका क्षय होने लगता है) तथा वायुको नष्ट करता है। केला सेवन करनेसे शरीरमें वीर्य वढ़ता है तथा मांस की वृद्धि होकर मांस पोशियां पुष्ट होती हैं—भूख तथा नेत्रोंकी ज्योति वढ़ती है तथा पथरी-प्रमेह-स्वप्नदोष, वहुमूत्ररोग शांत होते हैं। वहुमूत्र रोग स्त्री-पुरुष दोनोंको समान रूपसे होता है, रोगी वार वार पेशाव करता है। ऐसे समय केला अत्यंत लाभकारी है। यहां पाठकों के लाभार्थ दो शास्त्रोक्त एवं अनुभवसिद्ध प्रयोग लिखते हैं।

१—पका हुआ केला, विदारीकंद, शतावर इन्हें बरावर २ लेकर मिश्रित कर पीने से वहुमूत्र दूर होता है।

२—पकाहुआ केला, आंवलेका रस, १ तोला मधु (शहद) ४ माशा दूध १ पाव; इन्हें एकत्र सेवन करने से सोम एवं वहुमूत्र रोग शांत होता है। केला सेवनसे यदि अजीर्ण हो तो इलयची दाना खाना चाहिये इससे यह तुरन्त पच जाता है। केलेकी जातियों में भटगांवका केला अधिक अच्छा माना जाता है क्योंकि इसमें "विटामिन" प्रचुर मात्रामें होते हैं।

अंगूर

शरीर के पोषण में अंगूरसे बढ़कर अन्य फल नहीं है, इसे संस्कृत भाषा में फलोत्तम भी कहा जाता है। आयुर्वेद मतानुसार गोस्तन आकार वाला एवं काले रंगका अंगूर अच्छा माना जाता है। जहांपर यह उत्पन्न होता है वहां मानो मनुष्य जीवनके लिये सुधा उत्पन्न होती है। भोजन की प्रायः समस्त आवश्यक वस्तुयें इससे प्राप्त होती हैं। इसमें सबसे वड़ी विशेषता यह है कि अंगूर शरीरमें पोषण होते समय अपने प्राकृतिक रूपमें ही शोषण होता है। अन्य प्रकारकी शर्कराको शोषण होनेसे पूर्व ग्लुकोज़ (Glucose) की अवस्थामें आना पड़ता है किन्तु अंगूरकी शर्करा स्वयं ही (Glucose) की अवस्थामें पहुंच जाती है, अर्थात अंगूर के पचाने के लिये शारीरिक यंत्रों को विशेष क्रिया नहीं करनी पड़ती। अंगूर के रससे एक अत्यंत पौष्टिक तथा बलकारक औषधि अंगूरासव बनाई जाती है। जिसकी निर्माण विधि निम्न प्रकार है। सम्पन्न पाठक इसे बनाकर स्वास्थ्य लाभ करें।

वैद्यमनीषी-कविराज ओमप्रकाश महेश्वरी

एल. ए. एम. एस.

आयुर्वेद रत्नाकर, भिषगाचार्य धन्वन्तरि,

अंगूरासव

अंगूर ५ सेर, नाशपाती २॥ सेर, सेव २॥ सेर, अनार २॥ सेर, संतरा १॥ सेर, शहद २ सेर।

औषधियां—

लौंग, जायफल, जावित्री, नागकेसर, कंकोलमिर्च, शतिलचीनी, पीपल, पीपलमूल, रेणुका, सफेद इलायची, अकरकरा, सोंठ, काली मिर्च, गुलहटी, असगंध, दालचीनी, शतांग, सफेद मूसली, उटंगनके बीज, तेजपात प्रत्येक औषधि ३-३ तोला, वबूल की छाल १ छटांक, कचनार की छाल १ छटांक, छुआरा आधा सेर, सुपारी पूर्वी १ पाव, पिस्ता १ पाव, चिरौंजी आधासेर, गिरी बादाम आधासेर, खांड ४ सेर, कस्तूरी ३ माशा, केसर ६ माशा। विधि—कूटने योग्य समस्त औषधियोंको कूट तथा अंगूरादि समस्त चीज़ोंके साथ एक घड़ेमें डाल दे तथा उस घड़ेको शराव (मिट्टीका ढकना) से ढक कपड़ा और मुलतानी मिट्टीसे भली प्रकार वंद कर दें तथा १॥ महीना बाद उसे खोल कर दवाको छान वोतलोंमें भर लें।

नोट—पहले पठानी लोधको पानीमें मिला घड़ेमें लेप कर सुखा लें। घड़ा सूख जाने पर उपरोक्त आसव डाल दें। इस अंगुरासव को १। तोला भोजनके वाद दोनों समय पीना चाहिये।

यह औषधि अत्यंत वाजीकरण—वल क्षुधा तथा मांसको बढ़ानेवाली, स्फूर्तिकारक, हृदयवलवर्धक प्रसन्नताकारक तथा वीर्य वर्धक है। मुनक्का, वेदाना और किशमिश अंगूर के ही रूपान्तर तथा भेद हैं। परन्तु इनके गुणों में कुछ थोडा बहुत अंतर है।

किशमिश—शीतल तथा कुछ मल को बाहर निकालने वाली; नेत्रों की ज्योति वर्धक तथा धातुपुष्ठ करने वाली है। जिन मनुष्यों को सदा कब्ज की शिकायत रहती है उनके लिये मुनक्का अत्यंत लाभ कारक है। आधा सेर दूध में आधासेर पानी मिला उनमें १० मुनक्का बीज निकाल कर डाल दें जब पानी जल जाय तो शक्कर डाल पहले मुनक्के खा ऊपरसे दूध पी ले। रात्रिके समय इस प्रकार दूध पीनेसे प्रातः- मल साफ होकर चित्त प्रसन्न हो जाता है।

अंगूरके सेवन किये हुये रससे यकृत शुद्ध होकर अपना कार्य भली प्रकारसे करता है जिससे क्षुधाकी वृद्धि होती है। इसे वालक वृद्ध सभी समान रूपसे ले सकते हैं। यह शरीरके सौन्दर्य को वढ़ाता व वीर्य और कफ को उत्पन्न करता है। तृष्णा (प्यास), दाह (जलन), ज्वर, कामला, रक्तपित्त, स्वास, कास, क्षय, आदि रोगोंमें हितकारी है। कमज़ोर करने वाले रोगोंमें जहां कि रोगीको कुछ खानेके लिये नहीं दिया जाता वहांपर रोगी की शक्ति को कायम रखनेके लिए इसकी शर्करा को उचित मात्रा की गरमपानीमें मिलाकर उपयोग करते हैं और इसे ग्लुकोज़ वाटर (Glucose water) कहते हैं।

(क्रमशः)

संपादकीय

सिन्धके युवकोंसे

दिसम्बर मासके अन्तिम सप्ताहसे जनवरी के पहले पक्ष तक श्रीमती लीलावतीजी झंवर, एवं श्री गुलावचंदजी नागोरी के नेतृत्व में एक शिष्टमण्डल सिन्ध (थरपारकर) का भ्रमण करेगा। इस शिष्टमण्डल में सम्भवतः श्रीमती रमणगौरीजी हेडा तथा श्रीयुत रामप्रसादजी हुरकट भी भाग लेंगे। इस शिष्टमंडलके सदस्योंके सम्बन्धमें अधिक कुछ भी कहने की आवश्यकता नहीं। उनका नाम ही सफलता और अथक परिश्रम व लगनका द्योतक है। गत वर्ष सभापति श्रीयुत रामकिशनजी धूत ने सिन्धप्रान्तका भ्रमण कर वहां सामाजिक जागृति को पैदा करनेमें जो सफलता प्राप्त की थी उसे देखते इस भ्रमण की सफलतामें भी कोई सन्देह नहीं रह जाता। दौर्भाग्य से कालक्रमसे सिन्धका माहेश्वरी समाज अन्यान्य प्रान्तोंके माहेश्वरी समाजसे कहीं अधिक पिछड़ा हुआ है। युवकोंमें शिक्षाका अत्यधिक अभाव होने के कारण साटा-वाडा, औसर-मौसर, रबड़ की चूडियां और गहने आदि की भद्दी और हानिकर प्रथाओंने अपनी जड़ जमा ली है। इन प्रथाओं को समाजसे दूर करने की अत्यधिक आवश्यकता है। पिछले वर्ष के शिष्टमण्डलके भ्रमणके पश्चात् वहांके सामाजिक जीवनमें एक असाधारण उन्नति और गति देख पडी थी। उस गति को कायम रखनेमें यह शिष्टमण्डल अत्यधिक सहायक हो सकेगा, यह हमारा विश्वास है। हमें आशा है कि सिन्धके समाजसुधार प्रेमी व उत्साही युवक इस शिष्टमंडलका यथाशक्ति स्वागत करेंगे और उससे प्रेरणा लेकर अपने समाजको उन्नति और सुधारके पथपर लानेका भरसक प्रयत्न करेंगे। औसर-मौसरको हटानेके सम्बन्धमें जो उत्साह और लगन गत वर्षके भ्रमणके बाद थरपारकरमें दीख पड़ा था उसकी ज्वाला भी फिर प्रज्वलित हो जायगी और उसकी प्रचण्ड शिखाके तेजमें न केवल औसर-मौसर ही अपितु वाड़ा-साटा, वालविवाह, वृद्धविवाह, अनमेल विवाह, अशिक्षा, गहने व रवड़की चूड़ियोंके रिवाज आदि कुरीतियां भी भस्म हो जायगी।

इस अवसरपर एक बार फिर हम सिन्धके सुधार प्रेमी युवकोंका उनके कर्तव्य की तरफ ध्यान खींच देना चाहते हैं और इस शिष्टमण्डल की सफलता और पथके कल्याण और शिवकी कामना करते हैं।

श्रीनिवास कॉटन मिल्स लिमिटेड

बंबई

अपने कलापूर्ण, सुन्दर और टिकाऊ कपड़े के लिये मशहूर है।

★

ट्रेड नेम्स

नरेन्द्र
गोल्डन प्लम
एस. एन. सी.
फॉक्स ग्लोव
नगेन्द्र
} धुला लांग क्लाथ

के के के के के
ओ ओ ओ ओ ओ
हिन्दनो ताज
असली फूल
बनर्जी
यू. पी. एक्सप्रेस
सी. पी. एक्सप्रेस
मारवाड़ एक्सप्रेस
} धुली धोतियां व साड़ियां

डायमण्ड हाल
डायमण्ड चेन
डायमण्ड बैटरी
बंगाल फैशन
प्रोमिनेंट लीडर
प्रोमिनेंट फैशन
} धुली या कोरी पॉपलीन

फ्लाइंग मून
मालिनी
मिस बिब्बो
} चेक वायल

आदि आदि

★

इस मिल में सब प्रकार का धुला व कोरा कपड़ा—लांग क्लाथ, शर्टिंग, वायल, धोतियां, साड़ियां, मलमल, छपी हुई—छींट, वायल, बोस्की आदि कपड़ा विविध डिज़ाइनों और रंगों में तैयार होता है।

यदि आप उत्तम-सुन्दर-कलापूर्ण, टिकाऊ तथा सस्ता कपड़ा चाहते हैं, तो हमारे मिल के बने हुये कपड़ों से आप को पूर्ण संतोष मिल सकेगा—क्योंकि यह मिल भारतकी सामाजिक, आर्थिक अवस्था, तथा सर्वसाधारण की रुचि को लक्ष्य में रखकर ही सब प्रकार के वस्त्र तय्यार करती है।

बाज़ार में कपड़ा खरीदते समय इसी मिल का कपड़ा खरीदिये।

इस मिल का बना कपड़ा इस्तेमाल कर आप निश्चय ही प्रसन्न होंगे।

★

ट्रेड मार्क

महाल
पेटल ब्यूटी
गोल्डन प्लम
फॉक्स ग्लोव
श्रीरामपंचायतन
चार्मिंग ब्यूटी
माधुरी
मुरली
ईस्टर्न ब्यूटी
सेक्रेड फ्लूट
श्रीराम

★

—हमारी विशेषता—

रेडियोगर्ल और नरेन्द्र कालिटी का धुला लांगक्लाथ—इसे बरतकर आप अवश्य सन्तुष्ट और प्रसन्न होंगे।

— हमारे सेलिंग एजेण्ट —

बम्बई
दी बम्बई एजन्सी कम्पनी लिमिटेड
सर विट्ठलदास गली,
मूलजी जेठा मार्केट, बम्बई नं० २

कलकत्ता
मंगनीराम रामकुमार
६५ बाँसतल्ला स्ट्रीट
कलकत्ता

कानपुर
ज्वालाप्रसाद राधाकिशन,
काहू कोठी, कानपुर

अमृतसर
शामदास कपूर एण्ड कम्पनी
कटरा अहलुवाल
अमृतसर

दिल्ली
हनुमानप्रसाद धूत एण्ड कम्पनी
कटरा नवाब
देहली

पत्र-व्यवहार का पताः—

श्रीनिवास कॉटन मिल्स लिमिटेड
डिलाइल रोड, बम्बई नं १३.

राजस्थानी संसार

उदयपुर

अखिल राजपूताना माहेश्वरी कॉनफरेंस

उदयपुरमें प्रथम अधिवेशन का आयोजन

राजपूताना एक ऐसा अद्वितीय प्रान्त है कि जहां के इतिहास की झांकी मात्र से भग्न हृदय मे क्रान्ति उत्पन्न हो जाती है। फिर भला मेवाड की मुख्य राजधानी उदयपुर में जहां पर अखिल राजपूताना माहेश्वरी कॉनफरेंस का आयोजन किया रहा है तो वह अदृश्य होगी। उस देश के अतीत गौरव का वर्णन सुन २ कर निर्बल भी सबल हो जाते हैं; निरुत्साही भी उत्साह से परिपूर्ण हो जाते हैं। स्वतंत्रता के पुजारी प्रताप का अदम्य उत्साह और वीरता एवम् पद्मिनी के जौहर की गाथा को सुन २ का प्रत्येक बाल और वृद्ध के हृदय में उथल पुथल मचने लगती है उनकी धमनियों में नवयुग का खुन प्रबल वेग से बहने लगता है पर वह जोश और उत्साह स्वल्प काल तक ही रहता है।

जिस देश की अणु २ मात्र जमीन धर्म युद्धके रंगसे रंगी हुई है जो कर्त्तव्य परायणता का सबक सिखाने वाली पाठशाला कही जा सकती है, आज उस प्रान्तमें निवास करने वाले माहेश्वरी बन्धुओं की क्या दशा हो रही है? राजस्थान माहेश्वरी समाज का उद्गम स्थान है, जो अनेक कुरीतियों की जंजीरोंमें जकड़ा हुआ है। सरस्वतीके स्थानपर आज अज्ञान ने अपना जबरदस्त अड्डा जमा लिया है और लक्ष्मीके स्थान पर निर्धनता ने अपना घर कर लिया है। माहेश्वरी और मारवाड़ी समाजके उद्गम स्थान की ऐसी दशा हो, उस प्रान्तके बन्धु स्वयं अपने पैरोंपर खड़े न हो जाँय, यह कैसे सम्भव हो सकता है? इसके लिये प्रवासी राजस्थानी भाइयोंके सहयोग की बड़ी आवश्यकता है जो सुधारके रंगमें पूर्ण रूपसे रंगे हुए हों और जिन्होंने राष्ट्रीयताके इस अंगको सुव्यवस्थित करना अपना कर्त्तव्य समझा हो।

इस प्रगतिके जमानेमें तमाम माहेश्वरी बन्धुओंको एकता के सूत्रमें बंध कर समाज सुधारके कार्यमें तल्लीन होना चाहिये। चाहे वे भाई भारतवर्षके किसी कोनेमें क्यों न निवास करते हों। जब यह भावना हमारे हृदय मंदिरमें घर कर जायगी और उसकी नींव मजबूत बन जायगी तो हमें आगे बढ़नेमें ज़रा भी कठिनता नहीं मालूम होगी।

अभी तकके अनुभवसे प्रतीत होता है कि राजस्थान और मेवाड़का माहेश्वरी समाज इन फैली हुई कुरीतियोंसे ऊब उठा है और चाहता है कि शीघ्र ही इन बंधनोंसे मुक्त हो जाय। यह हमें सूचित करता है कि उनके हृदयमें धधकती हुई आग अब भी मौजुद है किन्तु उस पर राख आगई है। उस राखको उड़ाने और दूर करनेके लिये त्यागी और तपस्वी नेताओंकी आवश्यकता है।

इन सब कुरीतियोंके दल २ से विमुक्त होनेके लिये समाजमें शिक्षा प्रचार और बेकारी दूर करनेकी व्यवस्था करना वर्तमानमें नितान्त आवश्यक प्रतीत होता है। ज्योंही समाजमेंसे इन दोनों वस्तुओंकी व्यापकता दूर होगी त्योंही समाज आगे कदम बढ़ाने लगेगा।

इस हेतु से अखिल राजपुताना माहेश्वरी कॉनफरेंस उदयपुरमें ता. २७, २८ दिसम्बरको बुलाने का आयोजन किया गया है। आशा है राजस्थान के माहेश्वरी बन्धु महानुभाव इस कॉनफरेंस में पधार कर सफल बनाने में पूर्ण रूप से सहयोग प्रदान कर अनुग्रहीत करेंगे।

हमें तो विश्वास है कि राजस्थान के युवक हृदय इतिहास प्रसिद्ध मेवाड़ प्रदेश की प्रसिद्ध राजधानी उदयपुर में पधारकर कॉनफरेंस के आनन्द का उपभोग ही नहीं करेंगे वरन श्रीनाथजी, श्रीद्वारकाधीश एकलिङ्गजी आदि यात्राओं का भी लाभ उठा सकेंगे। साथ ही साथ यहां के प्राकृतिक सीनसिनेरी और बड़े २ जलाशयों की भव्य छटा देखने तथा बोटिङ्ग का सौभाग्य प्राप्त होगा। जिसको देखने के लिये कई यूरोपियन और अमेरिकन लालायित रहते हैं।

निवेदकः—

स्वागताध्यक्षः-**हनुमानप्रसाद सोढाणी**
स्वागत मंत्रीः-**दिलीपसिंह राठी**

शुभ विवाह

श्री वंसीलालजी विड़ला,

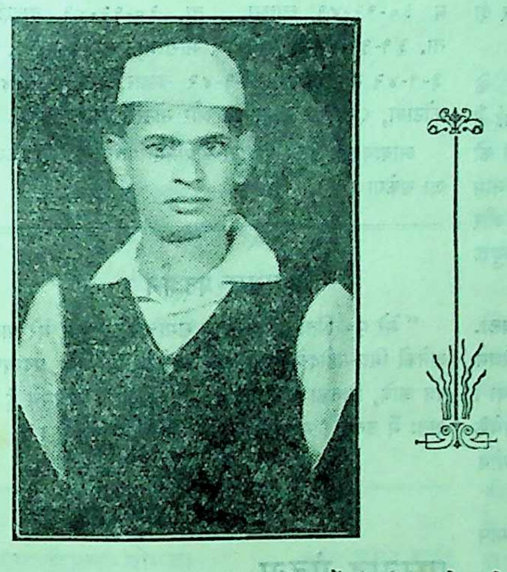

श्री रुक्मिणीदेवीजी बल्दुआ,

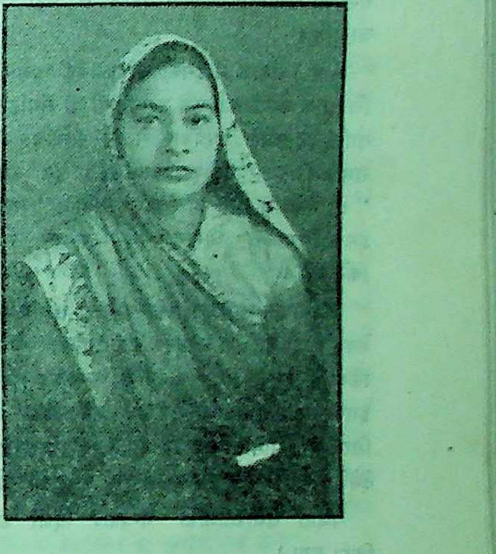

श्रीमती रुक्मिणी देवी छोटी आयुमें दुर्दैव से विधवा हो गयी थीं। अब इन की उम्र करीब २१ साल की है। ता. १२ दिसम्बरको एरण्डोलमें श्री बंसीलालजी बिडला के साथ इनका विवाह होने जा रहा है। श्री बंसीलालजी की उम्र २९ साल की है। आप भी विधुर हैं। श्री विड़लाजी उत्साही, उन्नतिशील व राष्ट्रीय विचारोंके हैं। इन दोनोंका वैवाहिक जीवन सुखी हो यही हमारी शुभ कामना है।

स्वागत समितिके सदस्य

श्री० हनुमानप्रसादजी सोढ़ाणी स्वागताध्यक्ष, दिलीपसिंहजी राठी स्वागत मंत्री, जमनालालजी लड्ढा सहकारी मंत्री, मदनसिंहजी देवपुरा प्रचार मंत्री, गणेशलालजी देवपुरा सह-प्रचार मंत्री, लक्ष्मीलालजी राठी कोषाध्यक्ष, श्रीगोपालजी मोहता, श्री दाऊदयालजी मोहता, सच्चिदानंदजी दरगड़, मदनलालजी राठी कलेक्टर भीलवाड़ा, रतनलालजी तोषनीवाल, भंवरलालजी देवपुरा केलवाडा वाले, केसुलालजी वैद, श्री राधाकिशनजी मोहता—सदस्य।

लश्कर

महासभा अधिवेशन समिति

श्रीयुत हरिदासजी राठी, मुरैना व श्री रामचंद्रजी नवाल, मेल्सा को भी उपरोक्त समितिमें २६-११-४१ की मीटिंग में निर्वाचित कर लिया गया है। समितिकी प्रवृत्तियां जोर शोर से जारी हैं।

खेद प्रकाशन

ता. ८ सितम्बरके पृष्ठ सं. १० पर तीसरे कालममें मौसर की राक्षसी प्रथाको बंद करो" समाचार के सम्बन्धमें श्री. नानालालजी देवपुराने हमें एक पत्र भेजा है। आप लिखते हैं—

"७-९-४१ ई. का माहेश्वरी पेपर देखा। सफा दसके आखिरी कालममें राजस्थानी संसार "मौसर की राक्षसी प्रथा को बन्द करो" का मज़मून पढ़ा। उसमें मेरा नाम भी था और साथ ही उसमें मेरी बुराई की गयी है—ये पढ़कर मेरी तबीयत को निहायत रंज व अफसोस हुवा चूंकि वह बिल्कुल गलत व बेबुनियाद लिखा गया है।"

श्री. नानालालजी को इस समाचारमें प्रयुक्त शब्दोंसे कष्ट हुआ है यह हमारे लिए भी अत्यन्त कष्टकर है। हम इसके लिए अपनी तरफसे खेद प्रकाशित करते हैं।

—सम्पादक

ब्यावर

गुरुकुल ब्याड का वार्षिकोत्सव

यह सूचित करते अत्यंत हर्ष होता है कि गुरुकुल का वार्षिक उत्सव वसंत पंचमी के शुभ अवसरपर ता. २१-१-४२ को होने जा रहा है। साथ ही साथ गुरुकुल के राजस्थानी बोर्डिंग की इमारत तथा ऑफिस की इमारत का उद्घाटन समारंभ भी होने जा रहा है। साथही स्थानीय आनंद सिद्ध ऋषि की यात्राभी होगी। सर्व कार्यक्रम जलदीसे जलदी प्रसिद्ध किया जायगा। गुरुकुल विद्यालय की इमारत का काम शुरु किया गया है। इस वर्ष गुरुकुलसे नव विद्यार्थी मैट्रिक की परीक्षा के लिये भेजे गये हैं।

राजस्थानी संसार

कलकत्ता

श्री माहेश्वरी नवयुवक सेवा समिति

माहेश्वरी समाजकी विराट सभा

गत ता. १६-११-४१ को दिनके २॥ बजे श्री माहेश्वरी भवनमें श्रीमान् चानणमलजी सोनीके सभापतित्वमें माहेश्वरी समाजकी एक विराट सभा हुई जिसमें समाजके अनेक सज्जन उपस्थित थे जिनमें प्रमुख सर्वश्री कस्तूरचन्दजी कोठारी, बालमुकन्दजी डागा, व्रजवल्लभदासजी सूंधड़ा, शिवकृष्णजी झंवर, लक्ष्मीचन्दजी झंवर, श्रीकिशनजी कोठारी, बुलाकीदासजी इन्नाणी, माधोदासजी कोठारी, तुलछीदासजी पुजारी, नरसिंहदासजी चांडक, लक्ष्मीनारायणजी तापड़िया, सूरजकरणजी डागा, शिवचन्दजी सोनी गोविन्दलालजी भट्टड इत्यादि थे।

रीतिरस्म सुधार के सम्बन्ध में अनेक सज्जनों ने अपने अपने भाव प्रकट किये और इसपर निम्न बातें तय हुईं।

(१) आज की विराट सभा यह घोषित करती है कि ‘ बीकानेर में समाज द्वारा रीतिरस्मों की व्यवस्था ’ जो सं. १९९८ मिति जेष्ठ कृष्ण ५ को घोषित एक पुस्तिका के रूपमें प्रकाशित की गई है, उसकी सारी की सारी रीतिरस्म सम्बन्धी संशोधित व्यवस्था आज से यहां लागू कर दी जाती है।

(२) समाज में इसका अधिकाधिक प्रचार करने के लिए एक कमेटी कई एक महानुभावों की संगठित की गई है ताकि यह कमेटी हरप्रकार से इन संशोधित रीतिरस्मों को समाजमें अग्रसर करनेका प्रयत्न करें। इस कमेटीका नाम “ श्री माहेश्वरी रीतिरस्म संशोधक समिति ” रखा गया और इसके संचालक श्रीमान् गोपीकिशनजी राठी नियुक्त किये गये।

(३) इस समाज हितकर कार्यको सुचारू रूपसे चलानेका “ श्री माहेश्वरी नवयुवक सेवा समिति ” ने जो परिश्रम किया है उसके लिए समितिको धन्यवाद दिया गया। इसपर समितिकी ओरसे आश्वासन मिला कि आगेके लिए भी समिति इस कार्यमें हर प्रकारसे सहयोग देनेके लिए तैयार है। इस पर खुशी प्रकट की गई।

पश्चात सभापतिजीको धन्यवाद देकर कार्य समाप्त किया गया।

मन्त्री, **श्रीमाहेश्वरी नवयुवक सेवासमिति**

जावद

श्री सारड़ाजी का आदर्श

मौसर की कुप्रथाका परित्याग

सुधार-प्रेमी बन्धुओं को यह जानकर बड़ी प्रसन्नता होगी कि जावद जैसे पिछड़े हुए स्थानमें भी सुधार-रूपी वृक्ष की जड़ जम चुकी है। हाल ही में स्थानीय जातिके अग्रगण्य पञ्च श्री० मांगीलालजी सारड़ा की माता का कार्तिक बदी २ को देहावसान होगया। श्री० सारड़ाजीके पुराने विचार एवं कट्टर रूढ़ी-वादी होनेके कारण समाजमें इस बात की चर्चा थी कि अब सारड़ाजी अपनी माता का मौसर करेंगे या नहीं। पुराने विचारोंसे तो मौसर का होना परमावश्यक था, और जमाने की हवा इसका विरोध करती है। दोनों दलोंमें खूब संघर्ष रहा। किंतु अन्तमें भगवान्की कृपासे श्री० सारड़ाजीने समयको पहिचान सुबुद्धिसे काम लिया और मौसर रूपी राक्षसका अंत करना ही निश्चित रहा। सारड़ाजीका यह कार्य सचमुच सराहनीय एवं अनुकरणीय है। ऐसे ही अग्रगण्योंसे समाज को बड़ी आशायें हैं। युवकोंका उत्साह इस कार्यवाहीसे द्विगुणित हो गया है। यदि इसी भाँति अन्य सज्जन भी सुबुद्धिसे काम लेने लगे तो निकट भविष्यमें **जावदका** माहेश्वरी समाज भारतके अन्य माहेश्वरी बन्धुओंसे सुधार की होड़में कभी पीछे नहीं रहेगा। हम जावदके नवयुवकोंसे सानुरोध प्रार्थना करेंगे कि वे जावदके पुराने वैमनस्यको दूर कर वहाँकी जातिमें तीन तड़ोंको एक करनेमें उत्साहसे काम लें। जिन सज्जनोंने स्वार्थवश जातिमें यह तीन तड़ें डाल दी हैं—भगवान् उन्हें भी सुबुद्धि दे। क्या जावद के नवयुवक इस बीड़े को उठाकर युवकोपयोगी कार्य करेंगे ?

सिन्धमें कु. लीलावतीजी झंवरका प्रचारार्थ भ्रमण

श्री. कुमारी लीलावतीजी झंवर दिसम्बरके अन्तिम सप्ताहसे सिन्धमें एक प्रचार भ्रमण करने जा रही हैं जो कि २६ दिसंबर १९४१ से आरंभ होकर १२ दिन तक ६ जनवरी १९४२ तक रहेगा। इस भ्रमण में श्री. गुलाबचंदजी नागोरी, बहिन रमणगौरीजी हेडा, व संभवतः पार्वतीदेवीजी धूत तथा रामप्रसादजी हुरकट भी रहेंगे।

सिंध भ्रमणका प्रोग्राम

ता.२६-१२-४१ व २७-१२-४१ गडरा, ता.२८-१२-४१ व ३०-१२-४१ छाछरा, ता. ३०-१२-४१ दाहली, ता. ३१-१२-४१ व १-१-४२ भोरीला, ता. २-१-४२ व ३-१-४२ मीठी, ता. ४-१-४२ चेल्हार, ता. ५-१-४२ कोटाया, ६-१-४२ अमरकोट और मोटरसे न्युछोर.

आवश्यकता पड़ने पर इस प्रोग्राममें परिवर्त्तन भी किया जा सकेगा।

आभार प्रदर्शन

“ मेरे पू० पिताजीके देहांतके समाचार सुनकर मेरे पास अनेकों मित्र-महोदयोंके समदुःख प्रदर्शक एवं धैर्य प्रदायक पत्र आये, जिनका व्यक्तिगत प्रत्युत्तर देनेमें मैं असमर्थ हूं। अतः मैं उनका ‘ माहेश्वरी ’ द्वारा आभार मानता हूं। ”

विनीत

आशाराम राठी, बम्बई

मारवाड़ मूंडवा

श्री वेंकटेश्वर धर्मार्थ औषधालय

यह औषधालय ता. ११।८।४१ से श्रीमान सेठ रामचन्द्रजी शिवनारायणाजी बंग द्वारा स्थापित हुवा था और इसके संचालन का भार वैद्य मोहनलालजी कोठारी R. A. P. पर रखा गया था जिसकी सूचना “ माहेश्वरी ” के पिछले अंकों में निकल चुका है। इस औषधालय की त्रैमासिक रिपोर्ट इस प्रकार है।

रोगी संख्या ता. ११।८।४१ से लगाकर ता. ११।१०।४१ तक–अभी तक १४०० बीमार आये हैं तथा रोगी दैनिक संख्या ९०।१०० के लगभग रही है। आनेवाले रोगियोंमें उन्माद, संग्रहणी, निमोनिया, टाइफाइड (मोतीझरा) अन्तर्विधि, मलेरियाज्वर एवं आंख, नाक, कान, गले के बिमार तथा व्रण, फोडा, फुन्सी आदि सब तरह के साधारण तथा जटिल रोगियों ने लाभ उठाया।

व्यवस्थापक,

श्रीवेंकटेश्वर धर्मार्थ औषधालय,

मारवाड मूंडवा.

कानपुर

विद्यार्थियोंपर लाठी चार्ज

माहेश्वरी युवककी दुःखद मृत्यु

ता. ८ नवम्बर के दिन कानपुर में देवली दिवसके निमित्त निकाले गए जुलूस पर पुलिस द्वारा आम जनता तथा विद्यार्थियोंपर लाठी प्रहार करने के परिणाम स्वरूप कानपुरकी जनतामें काफी रोष रहा।

ता. १० नवम्बर के दिन विद्यार्थियोंने गत ता. ८ के लाठी प्रहार के विरोधमें एक विराट सभा का आयोजन किया और उसमें उन्होंने लाठीचार्ज का विरोध किया। पुलिसने विद्यार्थियोंके प्रमुख श्री रामजीलाल अग्रवाल को वहीं गिरफ्तार कर लिया। सभा समाप्त होनेके बाद विद्यार्थी लोग कोतवाली में विद्यार्थियोंके मुकदमे देखने गए। परंतु वहां जाकर पता लगा कि मुकदमा तो जेलमें होनेवाला है, अतः वे सब जलूसके रूपमें काले झण्डोंके साथ वहीं पहुंचे। जेलका आम रस्ता बंद कर दिया गया और २–३ खाली फ़ायर हुए। इसी बीच मि. सूटर नामक एक अंग्रेज बिना हार्न बजाये अपनी मोटर लेकर निकले जिसके कारण तीन विद्यार्थी बुरी तरहसे घायल हुए, और उनमें से एक भाई श्री अमरनाथ माहेश्वरी की वहीं मृत्यु हुई।

इस दुर्घटनासे शहरके सभी स्कूल, कालेज, व बाजार बन्द रहे।

श्री अमरनाथ माहेश्वरीके इस आकस्मिक निधन पर शोक व समवेदना प्रगट करते हुए माहेश्वरी पुस्तकालय, मित्र बालसभा और सनातन धर्म कालेजने समवेदना सूचक प्रास्ताव पास किये।

हम अपने माहेश्वरी समुदाय में से श्री. अमरनाथजी के रूपमें एक होनहार युवक को गंवाते हुए हार्दिक दुःख अनुभव करते हैं, तथा परमात्मासे प्रार्थना करते हैं कि स्वर्गस्थ आत्मा को शांति मिले।

बम्बई

भारतीय नवयुवक संघकी कार्यकारिणी

भारतीय नवयुवक संघ की नव निर्वाचित कार्य्य कारिणी कमेटी की बैठक रविवार ता. ३०–११–४१ को संघके कार्यालयमें हुई जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारियों का चुनाव सर्व सम्मति से किया गया–सभापति श्री केदारनाथजी अग्रवाल; उप सभापति–श्री सीतारामजी मिश्र वैद्य, श्री भीमराजजी थर्ड; प्रधान मंत्री–बृजमोहनलालजी गुप्त; संयुक्त मंत्री–श्री वसंतलालजी सराफ, श्री नंदकिशोरजी सिंहल एवं कोषाध्यक्ष श्री इश्वरलालजी सांवलका।

अमरावती

दे. भ. रघुनाथमलजी कोचर की रिहाई व स्वागत

यहांके स्थानीय सुप्रसिद्ध कॉंग्रेस कार्यकर्ता दे. भ. श्री. रघुनाथमलजी कोचर अपनी दुबारा जेलयात्रा समाप्तकर ता. २२ नवम्बर को सजाकी पूरी अवधि समाप्तकर नागपुर सेंट्रल जेलसे रिहा कर दिए गये। जेलगेटपर प्रांताध्यक्ष श्री पूनमचंदजी रांका द्वारा आपका स्वागत किया गया। आप उसी रोज अमरावती पधारे। कॉंग्रेस कार्यकर्ताओंद्वारा आपका हार्दिक स्वागत किया गया।

स्मरण रहे श्री कोचरजीको प्रथम ता. २९ नवंबर ४० को ६ माहकी सजा हुई थी। दूसरी बार १४ जून १९४१ को ६ माहकी कैद एवं १००) जुर्माना दण्ड हुवा था।

राजस्थानी संसार

हापुड

श्री सरयूप्रसादजी तापड़ियाकी मुक्ति

संयुक्त प्रान्तीय माहेश्वरी सभाके प्रधान श्री सरयुप्रसादजी जो पिछले ७ माससे पहले मेरठ जेलमें और बादको आगरा जेलमें नजरबन्द थे अब रिहा कर दिये गये हैं। जेलसे आनेके समय आप प्रसन्न चित्त तथा स्वस्थ थे। अपने बीचमें पुनः आजाने पर हम हृदयसे उनका स्वागत करते हैं। मेरठ जिलेमें ही नही वरन् सारे प्रान्तके कांग्रेस जनोंमें आपका बहुत ऊंचा स्थान है। 'सी' क्लास राजनैतिक-बन्दी दिवस के दिन आपने जो संदेशा यहां की सभाके', जिसमें कि स्वयं उपस्थित न हो सके थे, भेजा था वह सर्वथा उनके उपयुक्त ही है। आपने लिखा था:—

हिन्दुस्थान मे ब्रिटिश हकूमत जब देश सेवकोंसे जिन को राजनैतिक कारण से वह अपराधी बना कर जेलोंमें रखती है 'सी' क्लास जैसा कठोर बरताव करती है तब वह अपनी स्वातन्त्र्यप्रियता और प्रजातन्त्र मे अपनी श्रद्धा को स्पष्टतया निराधार और निर्मूल साबित कर देती है। यदि उसका यह ख्याल है कि उसके ऐसे कठोर बर्त्ताव से देश की जाग्रत जनता को वह दबा सकेगी तो वह एक बेवकूफों के बहिश्त मे रह रही है। इस से वह स्वतन्त्रता के आन्दोलन को दबा नहीं सकती। इतना करने मे वह जरूर कामयाब हो जायेगी कि इससे आम आदमी के दिलमें वह तलखी पैदा हो जाय कि दोनों देशोंका किसी समय भी दिल मिलना असंभव हो जाय। भारतवर्ष तो अवश्य स्वाधीन होगा। यह कितने दुख की बात होगी कि जिस वक्त हम स्वाधीन होंगे उस वक्त हम लोगों के दिलमें वर्तानियां और ब्रिटिश हकूमत की दुखद स्मृतियां ही शेष रहें।

स्वाधीनता का कोई आन्दोलन किसी भी देश या किसी भी कालमे शासकों की कठोरतासे नहीं दबा है। इतिहास के इस सबक को हिन्दुस्तानमे ब्रिटिश हकूमत भूल कर अपने राजनैतिक दीवालियेपन का क्यों प्रदर्शन कर रही है यह समझना कठिन हो जाता है।

मेरी जनतासे यह अपील है कि वह ऐसा लोकमत जाग्रत कर दे कि जिससे उसके सेवकों पर बन्दीगृहमें कठोर बर्ताव होना असंभव हो जाय। हकूमतसे भी यह अपील है कि वह मानवताके नाते इंगलैंड और हिन्दुस्तान का अच्छा संबन्ध बनाये रखनेके लिये राजनैतिक बन्दियोंके साथ कठोरता और बर्बरतापूर्ण सलूक न करे।

पिछले कुछ मासोंसे प्रान्तीय सभा का अधिवेशन अलीगढ में होने की चर्चा चल रही है। सभाके मंत्री तथा अलीगढके कुछ मित्र इस संबन्धमें भाग दौड़ भी कर चुके हैं। हमें विश्वास है कि प्रधानजी इस ओर भी कुछ सहयोग देंगे।

"माहेश्वरी" को उदार सहायता

श्री किशन लालजी लाहोटी, कराड़ निवासीनें माहेश्वरीको १००) की उदारतापूर्वक सहायता दी है। इस उदार सहायता के लिए हम उनके आभारी हैं

इसके अतिरिक्त श्री मुलतान चंदजी श्री किशनजी राठी शोलापुर वासीने भी अपनी स्वर्गीया माताजीकी स्मृतिमें ११) 'माहेश्वरी' को प्रदान किये हैं, तदर्थ हम उनके आभारी हैं।

शुभ विवाह

हापुड निवासी ला० विश्वंभर सहायजी तापडिया के सुपुत्र श्री श्रीकिशनजी तापडिया का शुभ विवाह संस्कार मेरठ निवासी लाला श्रीरामजी की सुपुत्री कुमारी सुशीला देवी के साथ २८ नवम्बरको बडे समारोहसे हुआ। श्रीकिशनजीका विद्यार्थी जीवन बहुत ही गौरवान्वित रहा है। आप 'बी काम' की परीक्षा में प्रयाग विश्वविद्यालय मे प्रथम श्रेणी मे सर्व प्रथम रहे। इस समय आप वहीं 'एम० काम.' मे पढ रहे हैं। समाज को आप सरीखे रत्नों से बहुत आशा है। भगवान वर वधु को चिरायु दे।

अ. रा. मा. कार्यकर्त्ता सम्मेलनका आय व्यय विवरण

श्री राजस्थानीय माहेश्वरी कार्यकर्ता सम्मेलन, प्रथम अधिवेशन अजमेरका ता. २८-११-४१ को स्वागत समिति द्वारा स्वीकृत हिसाब निम्न है।

हिसाब आमद खर्च श्री राजस्थानीय कार्यकर्ता सम्मेलन
प्रथम अधिवेशन, अजमेर

आय

२४२)	श्री स्वागत सदस्य फीस
३४६)	श्री प्रतिनिधि फीस
२१)	श्रीमान शिववल्लभजी मानधण्या सांभर वालों के जमा
६०९)	

कोषाध्यक्ष

व्यय

५५॥≡)।	श्री पोस्टेज खर्च खाते
५७॥)॥	श्री सफर खर्च खाते
९॥≡)	श्री स्टेशनरी खर्च खाते
४८॥=)	श्री वेतन खर्च खाते
७७॥)	श्री छपाई खर्च खाते
६६॥=)।	श्री फुटकर खर्च खाते
२८९)।	श्री भोजन खर्च खाते
३)॥	श्री पोत बाकी
६०९)	

वसन्तीलाल नोगजा **मदन कृष्ण राठी**
स्वागताध्यक्ष **बालमुकुन्द झँवर**
मोहनलाल वहेडिया स्वागत मन्त्री
कोषाध्यक्ष,

श्री रामकृष्णजी जाजूका पुनः सत्याग्रह

दे० भ० श्री रामकृष्णजी जाजूने ता० २१ नवम्बरको वर्तमान सत्याग्रह आन्दोलनमें पुनः सत्याग्रह किया। आप यह सत्याग्रह करनेके पूर्व ता० ७ नवम्बर को नासिक जेलसे रिहा किये गये थे। एक वर्ष तक आप डिफेन्स आफ इण्डिया एक्ट की १२९ धाराके मातहत नजरबन्द रहे। इस बार भी आपको नासिक जेलमें ही 'ए' क्लासमें रखा गया है। इस अवसरपर हम उनका अभिनंदन करते हैं।

श्री श्रीकिशनजी राठीका सराहनीय कार्य

शोलापुर निवासी श्री मुलतानचंदजी श्रीकिशनजी राठीकी पूजनीया माताजीका स्वर्गवास गत मार्गशीर्ष बदी १३ को हुआ। आप बन्धुओंने इस अवसर पर उनका मौसर नहीं किया। आप लोगोंके इस सुधार प्रेमके कार्यके लिए हम उनका अभिनंदन करते हैं।

(पृष्ठ ६ का शेषांश)

शिक्षा प्रसार

का प्रभाव ही है। अवनति का दूसरा कारण जो मेरी समझमें आता है वह है सुधारकों की अज्ञानता। सब जानते है कि हमारा रूढिवाद ही हमारी दुरवस्था का प्रधान कारण है फिर भी इस रूढिवाद को दूर करनेके लिये हमारे सुधारक केवल गुण-दोष विवेचन कर नवीनता को समाजसे अपनाने की अपील करते हैं। उन्हें यह सोचना चाहिये कि समाज का प्रत्येक व्यक्ति नीर-क्षीर-विवेकी नहीं जो हंस की नाई गुणों को शीघ्र ग्रहण कर ले। अतः उनके इस रूढिवाद को दूर करने लिये हमें दूसरी दिशा से प्रयत्न करना पडेगा। प्राचीन और अर्वाचीन रीति-रिवाजों की तुलनात्मक आलोचना करनी होगी। इसकेलिये कुछ खोज (Research) की आवश्यकता है। यह प्रणाली जनताको ठीक समझा सकेगी ऐसी मेरी व्यक्तिगत धारणा है।

अंत में शिक्षा के विषय में दो सुझाव रखना चाहता हूँ। प्रथम तो यह है कि किसी व्यक्ति को इतने ही से संतोष नही होजाना चाहिये कि अमुक स्थान पर उसने हाई स्कूल या मिडिकल स्कूल खोला है। मैं मानता हूँ कि जो कुछ किया बहुत अच्छा किया, पर इसके साथ-साथ छोटे छोटे गांवों मे प्राइमरी शिक्षा को भी बहुत अधिक प्रोत्साहन देना चाहिये। यदि रात्रि शालाओं (Night Schools) की योजना भी की जाय तो हम देखेंगे कि समाज शिक्षा के क्षेत्र में कितनी उन्नति करता है।

दूसरी योजना जिसकी मैं सबस ज्यादा आवश्यकत समझता हूँ वह है कि समाज के धन-सम्पन्न महानुभाव युनिर्सिटियां खोलने का आयोजन करें और यदि वे ऐसा करनेमें असमर्थ हैं तो योग्य छात्रों को अच्छी छात्रवृत्ति देकर शिक्षा के क्षेत्रमें कूच कराया जाय। ऐसे समय समाज बिजली की मानिन्द आगे बढेगा जिसके लिये संशय करना तो व्यर्थ है।

आज का विद्यार्थी समुदाय उचित शिक्षा मिलनेपर विश्व-गगनमें भारत को एक बारगी चमका देने की सामर्थ्य अवश्य रखता है। वह भी स्वतंत्रता के वायुमण्डलमें विचरण करना जानता है। अतः देश के उत्थान के लिये अनिवार्य आवश्यकता है कि शिक्षा प्रसार का समुचित प्रबन्ध किया जाय। उसी दिन देशमें जागृति लहराने लगेगी और जब समाज अपने सुधार के एक मात्र उपाय 'विद्या के महत्त्व' को पूरा २ पहचान पायगा तब ही भारतीय दासता के सिरपर स्वतंत्रता का ताण्डव नृत्य होगा।

१९, सन्थोलिया होस्टल,
बिड़ला कॉलेज, पिलानी

साहित्य सेवकोंसे—

आज के जमानेमें साहित्यने बहुत ही ऊँचा स्थान प्राप्त किया है। हमारे समाजमें भी कई युवक-युवतियोंने उसके महत्व का स्वागत किया है। लेकिन आर्थिक कठिनाइयों के कारण वे आगे नहीं बढ़ सकते। हम उन साहित्यसेवकों के लिए जो के अग्रगामी विचार कि हैं एक योजना निश्चित करना चाहते हैं।

हम एक ऐसी प्रकाशन माला निकालना चाहते हैं कि जो अग्रगामी साहित्य निर्माण करें और साथही साथ उसके साहित्य निर्माताओंको योग्य पुरस्कार दें। जो साहित्यिक इस प्रकाशन मालामें सम्मीलित होना चाहते हैं वे ८ आ. प्रवेश फीस के साथ पत्र दें।

पत्रव्यवहार का पता—
पुष्कर प्रताप कोचर
पो. पालखेड (नासिक)

(पृष्ठ ७ का शेषांश)

काका के पत्र

अपना मनोरंजन करते हैं। पर अपनी बहन–बेटियों को इस आनंद प्रदायिनी कला की शिक्षा पाने से सदा रोकते रहते हैं। यह हमारी मानसिक अधोगति और विचारों की संकीर्णता का चिन्ह है।

दूसरी ओर संगीत का जो कुछ रूप हमारे समाजमें है वह विवाह जैसे अवसरों पर प्रकट होता है। किसी दूकानके बाहर पाल बिछा कर हमारे समाज की कलकण्ठी (?) तरुणियोंका संगीत विवाहके आघोष और चहल–पहलमें अपनी अभिव्यक्ति करता है, जहां कोई सुर नहीं, ताल नहीं; स्थायी नहीं, अन्तरा नहीं; यति नहीं और विराम नहीं। केवल षड्ज से लेकर निषाद तकके सातों स्वरों की अर्थहीन ध्वनि पालके विभिन्न कोनों से उठ कर अश्लील शब्दोंके बीच से सरे आम आकाशको भर देती है। इस प्रकारके अश्लील और बेसुरे राग की प्रथा हमारे समाजसे उठ जानी चाहिए और समाज की बहन-बेटियों को शास्त्रानुमोदित संगीत की शिक्षा दी जानी चाहिए। पहले प्रान्तीय सभा सम्मेलनों और महासभाओंके द्वारा इस प्रचलित गायन प्रथाको समाजसे उठा देनेका आन्दोलन हुआ है। कई प्रान्तोंके समझदार युवकोंने प्रतिज्ञाएं भी की थीं कि वे इस तरहके अश्लील गानोंके समारोहोंमें हिस्सा नहीं लेंगे। अभी तुमने पत्रोंमें पढ़ा होगा कि कलकत्तामें रास्ता चलते गाये जानेवाले इन गानोंके विरुद्ध एक तुमुल आन्दोलन उठ खड़ा हुआ था। यह आन्दोलन वर्तमान गायन प्रथाके प्रचलित रूपके विरुद्ध हुआ था न कि संगीत मात्रके। यह हमारे समाजमें जागृत होनेवाली सदभिरुचिका चिन्ह है। गायन तो मनुष्य ही नहीं, पशु पक्षी–और हिंस्र प्राणियोंको भी मोहित करनेवाली वस्तु है। सपेरेकी बीनपर सांप मोहित हो जाता है, वीणाके स्वर पर हरिण प्राणतक दे देता है फिर मनुष्यकी तो बात ही क्या? सच्चे मधुर संगीतसे उसके हृदयकी तन्त्रियां झंकृत हो जाती हैं और रोम–रोम पुलकित हो जाता हैं। पर हमारे समाजको पुरानी रूढियोंकी गुलामीने इतना बदल डाला है कि हमारे अधिकांश लोग उस संगीतकी मधुरताका रस और सम्मोहन भी खो बैठे हैं।

तुमने लिखा है कि तुम्हारे विद्यालयके वार्षिक समारम्भ पर संगीतका बड़ा प्रोग्राम था। तुम देख रही हो, सुनंदा, हमारे समाजसे वह समाज इतना आगे बढ़ चुका है। उनके हरेक घरमें कोई-न-कोई वाद्य मिलेगा और लड़कियोंकी संगीत की शिक्षामें माता-पिताकी तरफसे कभी कोई बाधा नहीं खड़ी की जाती फिर भी उस समाजमें चरित्रकी हीनताका ऐसा कोई सबूत नहीं मिलता जिसे लेकर हम उनके विरुद्ध अनैतिकताका अभियोग लगाने जांय। बल्कि वे लोग हम लोगोंसे कहीं बढ़े चढ़े हैं, कहीं अधिक सुसंस्कृत हैं। वे लोग संगीतकी कलाका विकास करनेकी कोशिश करते हैं। संगीत शालाएं उस समाजकी बहनोंसे भरी रहती हैं। नीति शास्त्रोंका कहना है कि साहित्य, संगीत और कलाके बिना मनुष्य मनुष्य नहीं, पशु है। जहां शिक्षा है, विचार है, वहीं कलाकी साधना और उपासना है। किसी दिन हमारे राजस्थानकी मरुभूमिका एक एक कण भक्त मीराबाईके भक्तिप्रवण संगीतसे नाच उठा था, शुष्क मरुस्थलमें संगीत का निर्झर प्रवाहित हो उठा था। पर कहां आज वह राजस्थान और कहां मीराबाई! आज तो हम लोग उस संगीत और उसकी मधुर वाणीसे वंचित हो गये हैं। और जब तक समाज की वर्तमान दशा है तब तक यह दारुण मनस्ताप तुम्हें और हम सबको सहन करना होगा। जो लोग पढ़ लिखकर शिक्षित कहलाने लगे हैं वे भी अभी रूढ़ियोंकी दासतासे मुक्ति नहीं पा सके। उनका ध्यान भी इस संगीतकी ओर नहीं। क्या उनके घरोंमें बहनें, बेटियां और भतीजी-भानजियां नहीं हैं? पर उनके लिए इस दिशामें उन्होंने क्या किया? उन्हें यह सब चिन्ता करनेका अवकाश ही कहां? फिर जिनमें शिक्षाका लेशमात्र भी नहीं उन्हें दोष देनेसे क्या होगा? तुम्हारी तरहसे उन शिक्षित भाईबहनोंने क्या अपने विद्यालयोंमें संगीतके प्रोग्राम नहीं देखे? क्या उन्होंने संगीतके बारेमें या कवियोंकी कविताएं और उनकी आलोचनाएं नहीं पढ़ी हैं? जब उनके ही दिमागमें समाजमें साहित्यका प्रचार तथा कला और संगीत की अभिरुचि बढ़ानेका ख्याल नहीं आता तब दूसरोंकी तो बात ही क्या?

बूढ़े लोग समय-समयपर उपालम्भ देते हैं कि इन गीतोंकी प्रथाको उठा देनेके लिए क्यों आन्दोलन किया जाता है। रामायण और महाभारतमें भी तो विवाह आदिके समय दामादके आनेपर गीत गाये जानेकी प्रथाका उल्लेख मिलता है। पर हमने कहा कब है कि उस समय संगीत धरतीपर था ही नहीं। वह तो अनादि कालसे चला आ रहा है और अनन्त कालतक चलता रहेगा। पर रामायण और महाभारतके समयके मंगल संगीतसे आजका यह अमंगल गीत पुष्ट नहीं होता। संगीत सारे विश्वमें ओतप्रोत है और उससे संसार कभी पूर्ण तृप्त नहीं हो सकता, पर वही जब बेसुरा हो जाता है तो प्रकृति दुःखी होती है। इसी लिए गायन अपना ठीक स्थान ले, ठीक रूपमें अपना मंगल बरसाये, यह हम चाहते हैं। उसका यह विकृत रूप एकदम बन्द हो जाना चाहिए।

पत्र बहुत लम्बा हो गया है इस लिए आज यहीं तक रहने दो। मेरा आशय तुम समझ गयी होगी कि क्यों मैं संगीतकी उपासना चाहता हूं और फिर भी क्यों इस वर्त्तमान गायनप्रथाका विरोधी हूं।

इन्दोर
२८ नवम्बर, ४१

तुम्हारा का का,

(पृष्ठ ३ का शेषांश)

प्रजातंत्र की आसन्न विजय

और जिसे हम प्रजातंत्र कहते हैं, उसके मुकाबलेमें निःसंदेह ‘ कुलीनता ’ क उच्चतम रूपमें खड़ी है।

यदि ‘कुलीनता’ शब्दका विशेषाधिकार व जन्म के अर्थमें नहीं परंतु आध्यात्मिक अर्थमें प्रयोग किया जाय तो वास्तविक प्रजातंत्र ‘ कुलीनता ’ के तत्वोंसे कभी भी पृथक नहीं हो सकता। जो प्रजातंत्र बौद्धिकजीवन का आदर व उसका नेतृत्व नहीं अंगीकार करता, उसमें कुछ लोग ऐसे निकल आवेंगे जो लोगोंको बहकाकर अपनी ओर ले जायेंगे और राष्ट्रीय जीवन मूर्ख और असभ्य लोगोंका जीवन बन जायगा। बनावटी-कुलीनता के दंभका भी निस्संदेह इस अधःपातमें हिस्सा है। तानाशाह लोग मालिकाना हक रखनेवाले प्राणी हैं, वे जनतासे घृणा करते हैं, और जब कभी वे अपने असभ्य विचारोंको प्रगट करते हैं, तब जनता यह समझती है—जो कि कुछ अज्ञेय–सा व अप्रमाणित प्रतीत होता है–कि उनके दिलमें उनके लिये (जनताके लिये) सिवा घृणाके और कुछ भी नहीं। फासिस्टोंका साम्यवाद असली साम्यवादका एक नैतिक दृष्टिसे हास्यास्पद रूप परिवर्तन तथा सुसभ्य और मानवतावादी विचारोंकी सरासर लूट है, ताकि उनका यौवन व यशके प्रचार के लिये उपयोग किया जा सके। फासिस्ट लोगों के द्वारा साम्यवाद शब्दका प्रयोग एक झूठ है। यह रूस नहीं जो कि युद्धोत्तर बीस साल के बाद अपनी विपुल साधन सामग्रीको शांतिपूर्ण उद्देश्यों से खींचकर शस्त्रास्त्र की वृद्धिके लिये बरत रहा है, यह तो हैं फासिज्म और उसकी तथा कथित वेगवान गति। अगर संसार सुख व शांति न प्राप्त कर सके, तो इसके लिये साम्यवाद नहा किन्तु फासिज्म दोषित होगा।

साम्यवादके एकदम उल्टे मुकाबलेमें, बाह्यविश्वके सामने प्रयुक्त राष्ट्रवाद एक आक्रामक प्रवृत्ति है, उसका संबंध अन्तरात्माके साथ नहीं बल्कि शक्तिके साथ है, मानवीय सिद्धियोंके साथ नहीं बल्कि युद्धके साथ है।

प्रजातंत्र अबतक भी फ़ासिज्म, कट्टरता, व तानाशाही देशोंके स्वैर शासनका स्पष्ट रूप समझ नहीं सका है। वह स्वेच्छासे सत्ता तथा विजयके लिये समस्त संस्कृति तथा मानवताका बलिदान दे रहा है। प्रजातंत्रको वास्तविक खतरा है मानवीय भ्रम तथा इस शुभ विश्वाससे कि इस प्राणीके साथ समझौता हो सकता है और इस बातसे कि सहिष्णुता, सौहार्द्र, तथा दोस्ती भरी रियायतोंके द्वारा इसे जीता जा सकता है और इसे शांत एवं सामूहिक पुनर्रचनाके विचारकी ओर ले जाया सकता है। यह आवश्यक है कि प्रजातंत्र इस बातको समझे। उसे फासिस्ट लोग वर्तमान संसार की परिस्थिति का, जिसमें युद्ध व शांतिका भेद मिट गया है और दोनोंमें से एक का भी आस्तित्व नहीं, कैसे लाभ उठाते हैं यह भी समझना होगा।

स्वतंत्रतामें कुछ सुधारकी आवश्यकता है, जिसके द्वारा वह उससे एक बिलकुल जुदा चीज बन जायगी जैसी कि वह हमारे दादे–परदादेके समयमें थी। जो सुधार मैं सोच रहा हू, वे सामाजिक सुधार हैं, और वे सामाजिक अर्थको ही सूचित करते हैं। इसका उद्देश्य आध्यात्मिक एवं आर्थिक स्वतंत्रता देना है। प्रजातंत्रका अधिक देर तक यह अर्थ नहीं हो सकता कि हरेक चीजके–और यहां तक कि मानवताके विध्वंसके संकल्पके प्रति भी वह सहिष्णुता प्रगट करे। कट्टरता के मूर्तिमान स्वरूपको अपने सामने खडा देख, जो स्वतंत्रता महज भलाई तथा मानसिक संदेहके कारण अपने ऊपर विश्वास करना छोड दे, उसका निश्चित रूपसे विनाश होता है। स्वतंत्रता आज वैसी मानवताको नहीं चाहती जोकि आत्मसंदेहकी हद तक क्षीण व दुर्बल हो गई हो। यह दृष्टिकोण सत्ता व शक्तिकी विचारधाराके सामने, जोकि ढीले विचारोंसे जराभी दुर्बल नहीं हुई है, स्वतंत्रताको करुणापात्र व घृणाजनक बतलाता है। हमें उस मानवता की जरूरत है जो कि अपनी रक्षाके लिये दृढ संकल्प एवं अटूटनिश्चय बलवाली हो। उसे अपने प्रचंड शत्रुओंके सामने अपनी रक्षा करनेके लिये सशस्त्र होकर चलना सीखना होगा। स्वतंत्रता को अपनी ताकत जान लेनी होगी। और अत्यंत कटु अनुभवोंके बाद उसे समझ लेना चाहिए कि शांतिवाद, जो कहता है कि किसी भी परिस्थितिमें युद्ध नहीं छेडा जा सकता, निस्संदेह युद्ध को दूर करने की बजाय उसे समीप लायगा।

इसके अलावा, अगर प्रजातंत्र, फासिज्म के ऊपर अपनी असंदिग्ध नैतिक श्रेष्ठता साबित करना चाहता है, और उसके बनावटी रूप के सामने डटकर खडे रहना चाहता है, उसे अपने आर्थिक और आध्यात्मिक क्षेत्रमें उतनी साम्यवादी नीतिको अंगीकार करना होगा जितनी कि समय की दृष्टिसे आवश्यक और अनिवार्य है। यहांपर भी सामाजिक अनुशासन के द्वारा स्वतंत्रता लायी जानी चाहिए। हरेक व्यक्ति जो यह सोचता है कि यदि संसारकी फिलासफियोंके इस ऐतिहासिक संघर्षमें, प्रजातंत्र अपनेको अनुकूल न बना सकनेके कारण नष्ट हो जाय तो यह एक महान मानवीय दुर्भाग्य होगा, उसे यह चाहना चाहिए कि उदारदलीय प्रजातंत्रका आर्थिक और राजनैतिक दृष्टिसे सामाजिक प्रजातंत्रमें ही विकास हो जाय।

सब प्रकार के बीमे का काम

फायर एण्ड जनरल

यूनिवर्सल

इंस्युरंस कंपनी

अपनी
जिंदगी
का
बी
मा
कराइये

को
ही
दी
जि
ये

इसके डायरेक्टर्स हैं

१. दि. ब. कृष्णलाल मोहनलाल झवेरी एम्. ए. एलएल. बी.
२. सेठ लक्ष्मणदास हरखचंद डागा
३. राजा नारायणलाल बंशीलाल
४. श्री. जे. एच. मोदी सालीसिटर
५. श्री. केशवलाल हरीलाल सेतलवाड़
६. राय साहब केदारनाथ खेतान एम. एल. सी.
७. श्री. रणछोड़दास त्रिभुवनदास पोपावाला (मालपाणी) बी. ए.
८. श्री. कांतीलाल चिमनलाल मुन्शी बी.ए.

आग;
मशीन;
मोटर;
इत्यादि सब
प्रकार के
बीमे के लिये
हमें पूछिये

यह कम्पनी "माहेश्वरी" द्वारा स्थापित की गई है। स्व. सेठ वरजदासजी भाईदासजी मालाणी इसके संस्थापक थे।

सब प्रांतों में एजेन्सियां देनी हैं। आज ही एजेन्सी के आकर्षक नियमों के लिये लिखिये—
मेनेजिंग एजेन्टस--एम. कानजी एन्ड कंपनी

दी यूनिवर्सल फायर एण्ड जनरल इंस्युरन्स कं० लि०

सर फीरोज़ शाह मेहता रोड, बंबई

Printed by Vasant S. B. Shroff, B. A., B. SC., LL. B. at the Bombay Vaibhav Press, Servants of India Society's Building
Sandhurst Road, Bombay. [illegible] 70 Tulsi Vihar, Marine Drive, Bombay.

Reg. No. B 4441

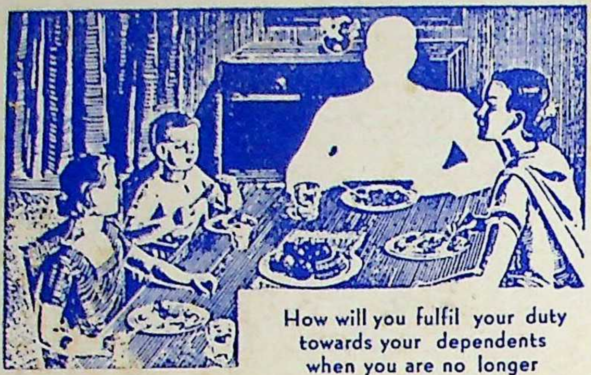

How will you fulfil your duty
towards your dependents
when you are no longer
a breadwinner ?

If you were not there...

कुटुम्ब का संपूर्ण संरक्षण

न्यु एशियाटिक की 'हैपी होम पॉलिसी' बीमा की एक ऐसी अद्वितीय तथा अपूर्व योजना है जिसका कुटुम्ब की संरक्षा अधिक से अधिक प्रमाण में करने के हेतु से निमार्ण किया गया है।

हमारा भारत गरीबी से पीड़ित है। ऐसी दशा में यहां कुटुम्ब की संरक्षा के प्रश्न का हल अधिक आवश्यक है। 'हैपी होम पॉलिसी' में पैसा लगाने से पैसे का अनुचित उपयोग नहीं होता और न वह किसी तरह की जोखम का काम ही है। ५०००) के बीमे से क्या मिलता है:—

५००) और बोनस-मृत्यु के बाद
५०) मासिक-बीमे की शेष अवधि तक
४५००) बीमा की अवधि ख़त्म होने पर

इस रकम से बच्चों की शिक्षा का प्रबन्ध हो सकता है अथवा वे कोई धंधा कर सकते हैं

पूर्ण विवरण के लिये लिखिये—

दी न्यु एशिआटिक लाईफ इंस्युरंस कम्पनी लिमिटेड

मैनेजिंग एजेन्टस्—**बिड़ला ब्रदर्स लिमिटेड**

हेड ऑफिस
कॅनाट सर्कस, नई दिल्ली

शाखाएं और प्रमुख कार्यकर्ता

उत्तरी विभाग
(कॅनाट सर्कस, नई दिल्ली)
लाहोर
रावलपिंडी
पेशावर (केन्टोनमेन्ट)
पटना
कानपुर

पूर्वी विभाग
(८, रायल एक्सचेन्ज प्लेस, कलकत्ता)
ढाका
बर्दवान
जलपाइगुरी
सिलहट
बर्मा

पश्चिमी विभाग
(४५–४७ अपोलो स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई)
हैद्राबाद (दक्षिण)
इर्नाकुलम
बेलगाम
अहमदाबाद
कराची

मध्य विभाग
(भवानी पेठ, जळगांव)
इन्दौर
जबलपुर
नागपुर
अमरावती

दक्षिणी विभाग
(२८९ लिंघा चेट्टी स्ट्रीट, मद्रास)
मद्रास
सीलोन
त्रिचनापल्ली

माहेश्वरी

ह. ह.

कुंवर चांदकरणजी शारदा

आपकी अध्यक्षता में अ. रा. माहेश्वरी सम्मेलन उदयपुर में संपन्न हुआ।

वर्ष ३२
संख्या १७

वार्षिक मूल्य
३) रुपया

खिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभाका मुखपत्र

प्रवर्तक—स्व. भागीरथदासजी भूतड़ा

पाक्षिक

कार्यालय—अली चेम्बर्स, डीन लेन, फोर्ट, बम्बई.

अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा

अर्ली चेम्बर्स, डीन लेन, फोर्ट, बम्बई
२ जनवरी १९४२

अ. भा. माहेश्वरी महासभा की **कार्य समिति** (प्रबंध समिति) का अधिवेशन आल इंडिया कांग्रेस कमिटी के अवसर पर वर्धा में अगामी माघ शुद्ध १ संवत १९९८ तदनुसार ता. १७ जनवरी १९४२ शनिवार को होगा। आशा है आप इस अवसर पर उपस्थित होने की कृपा करेंगे।

सभा का स्थान एवं समय वर्धा में सूचित किया जायगा।

विषय

(१) श्रद्धेय श्रीकृष्णदासजी जाजूकी एकषष्ठी मनानेपर विचार।
(२) शिक्षा-प्रसार विषयक योजनापर विचार।
(३) "माहेश्वरी" पत्र तथा अ. भा. माहेश्वरी महासभा की सुवर्ण जयन्ती मनानेपर विचार।
(४) माहेश्वरी महासभा इतिहास प्रकाशन पर विचार।
(५) "माहेश्वरी" पत्रका ३१ जुलाई १९४१ तक का आय-व्यय का हिसाब।
(६) "माहेश्वरी" का आगामी वर्षका बजट।
(७) अ. भा. माहेश्वरी महासभा का गत सालका आय-व्यय का हिसाब।
(८) अ. भा. महासभा का आगामी वर्षका बजट।
(९) श्री सभापतिजी की आज्ञासे अन्य विषयोंपर विचार।

विनीत
राधाकृष्ण लाहोटी
प्रधान मंत्री अ. भा. मा. महासभा

अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा

अर्ली चेम्बर्स,
डीन लेन, फोर्ट, बम्बई
२ जनवरी १९४२

अ. भा. माहेश्वरी महासभा के **कार्यकारी मंडल** का अधिवेशन आल इंडिया कांग्रेस कमिटी के अवसर पर वर्धा में अगामी माघ शुद्ध १ संवत १९९८ तदनुसार ता. १७ जनवरी १९४२ शनिवार को होगा। आशा है आप इस अवसर पर उपस्थित होने की कृपा करेंगे।

विचारार्थ विषय

(१) अ. भा. माहेश्वरी महासभा की कार्यसमिति (प्रबंध समिति) की कार्यवाही।
(२) सभापतिजी की आज्ञा से अन्य विषय।

विनीत
राधाकृष्ण लाहोटी
प्रधान मंत्री
अ. भा. मा. महासभा

सूचनाएं—(१) सभा का स्थान एवं समय वर्धा में सूचित किया जायगा।
(२) अपने आगमन की सूचना श्री दामोदरदासजी मूंदड़ा, वर्धा (सी. पी.) को देने की कृपा करें ताकि ठहरने और भोजन का प्रबंध किया जा सके।

हिन्दुस्तान में
गेंडा-मार्का
क्राफ्ट-पेपर
बनता है
मज़बूत
चीमड़
टिकाऊ
फिर कमज़ोर और भद्दे
कागजों की रैपिंग से
अपने व्यवसाय
को क्यों हानि पहुंचाते
हैं?
ओरियण्ट पेपर मिल्स लि०
८, रायल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता

सम्पादक समिति
श्री. लक्ष्मीनारायण मालाणी,
श्री. दामोदरदास मूंदड़ा,
श्री. राधाकृष्ण लाहोटी

माहेश्वरी

‘ उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत ’

प्रबन्ध सम्पादक
श्री. राधाकृष्ण लाहोटी
प्रकाशक
श्री. वसन्तलाल श्राफ़

वर्ष ३२, संख्या १७]   बम्बई ता. ७ जनवरी १९४२   [वार्षिक मूल्य ३ रुपया

स्टालिन- हिटलरका दुर्धर्ष प्रतिद्वन्द्वी

संसार भर के नेताओं में एक जोसेफ स्टालिन ही ऐसा है जो हिटलर का मुकाबला कर सका है। संसार में वह सबसे अधिक भीषण, सबसे अधिक शक्तिशाली है। तानाशाहों में वह बिना आलोचनाके सबसे अधिक प्रशंसित है और तिरस्कार और निन्दा भी संसार के नेताओं में सबसे अधिक उसीने पायी है। यहां तक कि हिटलरका नाम भी उन लोगोंके हृदयोंमें, जिन्हें सदा क्रांतिमय परिवर्त्तन का आतंक लगा रहता है उतनी गहरी घृणा या उतना स्पष्ट भय पैदा नहीं कर सकता। जिन लोगोंका काम केवल पार्टी की प्रणाली का अनुसरण करना है, वे हिटलर की आज्ञाओंको भी उतने अनालोचक भाव से स्वीकार नहीं करते जितना कि स्टालिन की आज्ञाओंको स्वीकार करते हैं। वास्तव में यह बात ध्यान देने योग्य है कि जर्मनीने रूस पर २२ जून १९४१ के दिन जो आक्रमण किया है वह केवल एक सेना का एक पड़ोसी के राष्ट्र पर ही आक्रमण नहीं अपितु हिटलर द्वारा उस एक व्यक्तिपर किया गया आक्रमण है जो व्यक्तिगत अधिकारमें उसकी प्रतिस्पर्धा कर सकता है। स्वेच्छाचारी जर्मन तानाशाह अपने इटालियन प्रतिद्वन्दी का पतन खुशीसे देख चुका है। उसकी इर्ष्याने अब उसे दूरवर्ती मास्कोके सिंहासनपर बैठे हुए मानवीय देवताका विनाश करनेके लिए प्रेरित किया है। इस सैनिक आयोजनके पीछे ऐसा व्यक्तिगत नाटक है।

प्रश्न यह है कि स्टालिन ८० लाख वर्ग मीलमें फैले हुए १७५ विभिन्न जातियोंके १८ करोड़ मनुष्योंके राज्योंके विशाल संघका विधाता कैसे बन गया ?

सन् १८७९ के २२ दिसम्बरको काकेशसके एक गरीब चमारके घर उसका जन्म हुआ। नाम रखा गया योसिफ विसारियोनोविच जुगाश्विली (सोसो)। उसके बचनपर बाहरसे शासन था एक निर्दयी, शराबी और अपनी पत्नीपर हाथ चलनेवाले पिताका और भीतरसे एक दुखित पदाक्रान्त माताका जो उसपर अपना सारा स्नेह बरसाती थी क्योंकि उसके पहले तीनों बच्चे मर गये थे और इसी एक बच्चेको देख देख कर अपने पतिसे मिलनेवाले कष्टोंकी व्यथाको वह भूल जाती थी। सौभाग्यसे अपने पुत्रकी ग्यारह वर्षकी आयुमेंही निर्दय पिताकी मृत्यु हो गयी। विधवाने आखिर अपने बच्चेको चमारपनके रास्तेसे बचा लिया और उसे पादरीपनकी शिक्षा दिलानेकी साधको उसने पूरा किया।

इस प्रकार, हिटलर और स्टालिनके जीवनके प्रारम्भकालोंमें एक समानता पायी जाती है। वही कठिनाइयोंमेंसे गुजरने वाला पारिवारिक जीवन है और वही मांका प्यार है। इसके अतिरिक्त स्टालिनके जीवनमें एक और भी वस्तु है, निपीड़न—पदाक्रान्त होनेकी अनुभूति; क्योंकि वह एक ऐसी जातिकी प्रजा था जो काकेशसमें सर्वोच्च (ज्यॉर्जियन) जाति होते हुए भी ज़ारशाहीके द्वारा पीड़ित थी।

टिफ्लिसकी ग्रीक आर्थोडॉक्स सैमिनरी (सनातन धार्मिक शिक्षणालय) में, जहां कि स्टालिनको अपने आपको पादरीपनके अधिकाधिक योग्य बनानेके लिए रखा गया था, उसके जीवनपर जो वास्तविक प्रभाव पड़ा उसका सबसे अच्छा वर्णन स्वयं उसीने अपने जीवनके पिछले वर्षोंमें किया है, “ मैं मार्क्सवादी बन गया। अपनी सामाजिक स्थितिके सत्प्रतापसे—क्योंकि मेरे पिता एक जूतेके कारखानेमें नौकर थे और मां भी मज़दूरिन ही थी—पर इसका एक और भी कारण था और वह यह कि मैं अपने पिताके सदश सामाजिक स्थितिके लोगोंमें विद्रोहकी गुपचुप बातें सुना करता था। और अन्तमें कठोर असहिष्णुता और ईसाइयतके अनुशासनने जो मुझे बड़ी निर्दयतासे उस रूढ़िवादी धार्मिक शिक्षणालय में पीस रहे थे जहां कि मैंने कुछ वर्ष बिताये थे, मुझे मार्क्सवादकी ओर और भी जोरसे धकेला।” उन दिनों गुप्त राजनैतिक संगठनोंमें ही उसने अपनी अधिक शक्ति लगाई और सन् १८९८ में टिफ्लिसके शिक्षणालय से मुक्त होते ही वह पेशेवर क्रान्तिकारी बन गया। बाकूमें तीन वर्ष तक एक बोलशेविक पत्रका उसने सम्पादन किया और तेलके कारखानोंके मजदूरों की हड़तालोंके संगठनमें अपना अधिकांश समय लगाया। उसके बाद सन् १९१० में उसे सेंट पीटर्स बर्गमें पार्टीके हैडक्वार्टरमें ही कार्य करनेके लिए बुला लिया गया। यहीं से पार्टीमें उसके जीवनका प्रारम्भ होता है। उस समयसे सन् १९१७ की बोलशेविक क्रान्तिकी विजय तक पांच बार वह गिरफ्तार और निर्वासित हुआ और चार बार कैदसे भाग निकला।

सन् १९१७ में बोलशेविज़्मने जो अन्तिम सफलता प्राप्त की उसमें स्टालिनका कितना हिस्सा था इस बातको लेकर इतिहासमें सदा आलोचकोंमें चखचख रहेगी। कुछ लोग उसके जीवनकी हरेक बारीकीको बढ़ा-चढ़ाकर लेनिनके प्रमुख सहकारी पदके अधिकारी होने और अभिशप्त ट्राट्स्कीसे उसकी श्रेष्ठता प्रमाणित करनेके लिए पेश करेंगे और कुछ लोग सदा उसकी निंदा ही करेंगे, वे कहेंगे कि उसकी यह सफलता तो खुशामदी मुसाहबका इनाम है जिसे शर्म नहीं और आत्माभिमान भी नहीं। फिर भी यह बात सच है कि लेनिनने सन् १९१२ में प्रागकी एक कान्फरंसमें सोशल डिमोक्रेटिक पार्टी से अलग होकर बोलशेविक पार्टीके नामसे अलहदा संघ स्थापित करते हुए सबसे पहले सात सदस्योंकी जो केन्द्रीय समिति बनाई उसका वह भी एक सदस्य था।

सन् १९१३ में सेंट पीटर्सबर्ग बोलशेविक कमिटीके द्वारा आयोजित एक कन्सर्टमें गिरफ्तार हो जानेसे युद्धके पहले तीन वर्ष स्टालिनने साइबेरिया निर्वासनमें बिताये और सन १९१८ की १२ मार्च को, जब कि फरवरी क्रान्तिके फलस्वरूप अस्थायी सरकार (प्रोविज़नल गवर्नमेंट) प्रभुत्वमें आचुकी थी, वह लौटा। लेनिन अप्रैलमें रूस लौटा और ट्राटस्की मईमें। कम्यूनिस्ट पार्टीके अधिकृत बयानोंसे मालूम होता है कि यह स्टालिन ही था जिसने उन नाजुक दिनोंमें, जब कि जुलाई की क्रान्तिके प्रयत्नके निष्फल होने के कारण लेकिन गुप्तरूपसे छिपा हुआ था और अक्टूबर क्रान्तिकी सफलता अभी प्राप्त नहीं हुई थी, केन्द्रीय समितिका कार्य संचालन किया। उसके आलोचक उसके कार्यों के महत्वको घटा देते हैं और उसपर यह इलज़ाम लगाते हैं कि वह अन्त तक समझौता कर लेने और पीछे हट जानेके लिए तय्यार था। पर एक बात निश्चित है कि विजयके उपरान्त पीपल्स कमिसर्स की पहली कौन्सिलका सदस्य बनाकर वह पुरस्कृत किया गया था।

इस शक्तिशाली विप्लव के बाद जो हलचल और गड़बड़ पैदा हुई उसमें स्टालिन जातियोंका कमिसर (सचिव) बन गया जिससे रूसके अल्पसंख्यकोंके असंख्य प्रतिनिधियोंके सम्पर्कमें आनेका उसे अवसर मिला। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह थी कि वह कम्यूनिस्ट पार्टीका सेक्रेटरी था और उसने आहिस्ता-आहिस्ता खास ढंगसे संसारकी महत्तम और जटिलतम राजनैतिक मशीनरीकी रचनाके लिए अत्यधिक प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया। इसके द्वारा उसने वही शक्ति प्राप्त करली, जो हेसने जर्मनीमें नाज़ीपार्टीके नेतृत्वके बलपर प्राप्त करली थी। किन्तु स्टालिन हेस नहीं था, वह केवल छायाकी तरह किसीके पीछे-पीछे नहीं चल सकता था।

(शेष पृष्ठ २४ के कालम १ पर)

माहेश्वरी

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन"

बम्बई, ता० ७ जनवरी १९४२

पंचायतें जवाब दें

"माहेश्वरी" के गतांकमें इन्हीं कालमोंमें एरण्डोल निवासी श्री बंसीलालजी बिड़लाका श्री रुक्मिणीदेवजीके साथ जो विवाह सम्बन्ध सम्पन्न हुआ है उसके बारेमें लिखते हुए उस विवाहमें सम्मिलित होनेवाले युवकोंको सम्बोधन कर हमने लिखा था कि सम्भव है जहां-जहांके लोग इस विवाहमें सम्मिलित हुए हैं वहां-वहांकी पंचायतें उन्हें जाति बहिष्कृत करनेका भय दिखाएं। विरोधियोंकी मनोवृत्तिको देखते हुए और आजतकके पंचायतोंके अनुभवोंको स्मरण करते हुए हमें लगाता था कि इस तरह की गड़बड़ी अवश्य पैदा होगी। अबतक हमारे पास जो समाचार आये हैं वे इस बातके द्योतक हैं कि इस विवाहके विरोधियोंने एक तुमुल आन्दोलन और कोलाहल मचा रखा है। इस विषयके कुछ लिखित वक्तव्य तो इसी अंकमें अन्यत्र हम प्रकाशित भी कर रहे हैं।

इस प्रकारकी घटनासे हमें तनिक भी आश्चर्य नहीं हुआ क्योंकि हमारे समाजका इतिहास इस तरहकी एक नहीं अनेक घटनाओंसे भरा हुआ है। आश्चर्य हमें तब होता यदि इस तरहकी कोई घटना नहीं होती। पंचायत प्रणालीके विषयमें यहां कुछ लिखना नहीं है क्योंकि जब-जब ऐसी घटनाएं घटी हैं, पंचायतों का विकृत स्वरूप समाजके सामने आता रहा है। इन पंचायतोंकी ओरसे विधायक कार्यों की जगह जो विघातक कार्य समय-समयपर होते रहते हैं उनके फलस्वरूप शायद ही कोई ऐसा स्थान बचा हो जहां समाजमें दो चार धड़े न बन गये हों। इन पंचायतोंसे समाजका भला होना तो दूर रहा समाजकी प्रगतिमें कदम—कदम पर रुकावट ही पड़ी है। यही कारण है कि उनके विरुद्ध आवाज बुलन्द करनेके लिए युवकों को बार-बार प्रोत्साहित किया जाता है। आज हमारे समाजके पंच कहाने वाले उच्च श्रेणोके लोगोंकी दशा ऐसी हीन हो गयी है। किसी भी विषयपर अच्छे या बुरेका विवेक तक वे नहीं कर सकते। वे लोग जानते हैं केवल एक ही बात और वह यह कि किसी भी प्रकार बने, औरोंपर अपना प्रभुत्व कायम रखनेके लिए आतंक जमाये रखा जाय।

श्री रुक्मिणी देवी ने एवं श्री बंसीलालजीने अपने भविष्यको सुखद और सुचारू बनानेके लिए विवाह बद्ध हो जाना उचित समझा। दूसरे लोगोंने भी इस विचार को उचित मानकर ही उन्हें इस शुभकार्यमें सहयोग दिया। पंचायतके लोगोंने उनको जलील करने और नीचा दिखानेके लिए फरमान निकाल कर जिले भरके लोगोंके पास भेजे हैं और इस प्रकार समाजका मत उनके विरुद्ध उभाड़नेकी कोशिश की जा रही है। किन्तु एरण्डोल निवासी श्री रामनाथजी जाजूके यहां,—यदि इसी अंकमें अन्यत्र प्रकाशित समाचार सत्य है जिसके सम्बन्धमें हम और जानकारी हासिल करके अधिक प्रकाश आगामी अंकमें डालेंगे—जो घटना हुई है उसके सम्बन्धमें सोचने की उन्हीं पंचायतों को फुरसत तक नहीं मिली। सम्भव है इस घटनामें कुछ वज़ूद न हो तो भी समाजमें इस प्रकारकी और भी घटनाएं और प्रसंग आते रहते हैं जब कि वधूको ससुराल वाले इतना अधिक परेशान और ज़लील करते हैं कि उसे अपना जीवन भार मालूम होने लगता है। पर इस तरहके प्रसंगों पर सोच विचार करके पंचायतें अपना दिमाग परेशान नहीं करतीं! किसीके यहां भोजन करने या न करनेकी बात व्यक्ति-व्यक्तिपर निर्भर है। उसके लिए इतना बड़ा बवण्डर और तूफ़ान खड़ा करनेकी हिमाक़त क्यों की जाती है?

श्री. बंसीलालजी एवं उनके विवाहमें साथ देनेवाले व्यक्तियोंसे खान-पान का सम्बन्ध तोड़नेके बारेमें जो पंच फरमान निकाल रहे हैं उनसे हम पूछना चाहते हैं कि क्या उनके यहां कभी किसी विधुरका विवाह हुआ ही नहीं? या वे उसमें कभी शरीक नहीं हुए? क्या ऐसे विधुरोंको अपनी कन्याएं उन्होंने कभी नहीं दीं या बड़ी उम्रमें विवाह करनेवालोंके विवाहोंमें वे कभी शरीक नहीं हुए? फिर क्या कारण है कि वे एक बहन को, जो कि अपनी कल्पनाके अनुसार अपना संसार बसाना और भावी जीवनको सुखपूर्ण बनाना चाहती है, नीचा दिखानेका प्रयत्न करते हैं? वे इस बातको आंख खोलकर देखलें, कान खोलकर सुन लें कि सारे जिलेके ६० प्रतिष्ठित व्यक्ति जिस विवाहमें शरीक हुए और जिस विवाहमें उन्होंने अपनी अनुमति और शुभ कामना व्यक्त की उसके विरुद्ध बवण्डर खड़ा करनेसे कुछ भी लाभ नहीं होगा। लोकाचार की दृष्टिसे जब इतने बड़े जनसमुदाय ने उनके साथ सहयोग कायम रखा और उनके कार्योंको उचित भी समझा तब उनपर इस बहिष्कारके अस्त्रका भला क्या असर होगा? पंचायतोंके तूणीरमें अपनी धाक और प्रतिष्ठा कायम रखनेके जितने भी अस्त्र थे वे सब निबट गये हैं एक हुक्का-पानी बंद करनेका अस्त्र ही बचा है। प्राचीन गाथाओंमें एक ऐसे अस्त्रका वर्णन पाया जाता है जो यदि अपने लक्ष्य का नाश नहीं कर सकता था तो वापिस लौट कर अपने फेंकनेवाले की ही हत्या कर देता था। जान पड़ता है पंचोंका यह अंतिम अस्त्र उसी कोटिका है। इस विवाहमें उपस्थित होनेवाले लोग सच्चे और निष्ठावान हैं, उनपर इस अस्त्रका कोई असर नहीं होगा।

एरण्डोलके कुछ लोगोंने समाजको यह बतानेका प्रयत्न किया है कि श्री रघुनाथजी बिड़लाने इस विवाहमें शरीक होनेके लिए पश्चात्ताप प्रकट किया है। हमारा इस कथनपर विश्वास नहीं होता। श्री रघुनाथजीको हम एक अर्सेसे जानते हैं। वे अपने विचारोंके पक्के हैं। जो प्रगतिशील विचार उन्होंने एक बार बना लिये हैं, उन से टलनेका ख्याल वे कभी नहीं कर सकते। उनके-से जिम्मेवार वकीलके द्वारा ऐसा कार्य हो ही नहीं सकता। श्री रघुनाथजी बिड़ला भी उनमेंसे एक हैं जिन्होंने इस विवाहके लिए आमन्त्रण दिया था। 'माहेश्वरी' तथा 'राजस्थानी वीर' में जो प्रकाशनार्थ संवाद भेजे गये हैं वे अपने ही नामसे उन्होंने प्रकाशित कराये हैं। वे इस बातको बच्चों का खिलवाड़ नहीं समझते थे। उनके भाइयोंने यदि उनके सम्बन्धमें कह भी दिया हो तो भी यह उनके मन या मुंहकी बात नहीं हो सकती और उससे वे पश्चात्ताप व्यक्त करते हैं यह भी नहीं झलकता। जो पंचायत श्री रघुनाथजी का हवाला देती है वह यह सोचे कि इस विवाहके पक्षमें श्री शिवनारायणजी मानधण्या वकीलके होते हुए भी उनके पिता श्री गंगाधरजी मानधण्याका इस विवाह के प्रति सख्त विरोध था, फिर भी अडावदमें होनेवाले एक मौसरके भोजनसे, उनका इस विवाहसे विरोध है यह जानते हुए भी उन्हें उठा क्यों दिया गया? वास्तवमें पंचायतोंकी तो यह हालत है कि जहां वे जैसा ठीक समझते हैं वैसा ही कर लेते हैं। हमारे निवेदन और सवालोंपर व गौर कर और जवाब दें कि क्या उनकी यह कार्रवाही उचित है?

इस प्रसंगमें हम धुलियाकी पंचायतको श्री छगनलालजी अजमेराकी पार्टीका अभिनंदन किये बिना नहीं रह सकते जिन्होंने इस विवाहमें भाग लेनेवालोंके विरुद्ध कोई भी कदम उठानेका विचार त्याग दिया है।

कार्यकारी मण्डलकी आगामी बैठक

आगामी १७ जनवरीको आल इण्डिया कांग्रेस कमेटीके अधिवेशनके अवसर पर वर्धामें अ. भा. माहेश्वरी महासभाकी कार्य समिति और कार्यकारी मण्डलकी मीटिंग होने जा रही है। कार्य समिति और कार्यकारी मण्डलके सम्मुख जो विषय विचारके लिए प्रस्तुत हैं उनपर यहां कुछ प्रकाश डाल देना नितान्त आवश्यक है।

श्रद्धेय श्री श्रीकृष्णदासजी जाजू की एकषष्टी मनानेपर उसमें विचार किया जायगा। श्रद्धेय जाजूजीके सम्बन्धमें कुछ भी कहना धृष्टता होगी। देश और समाजकी अनवरत सेवा करते हुए आज उनके जीवनके ६१ वर्ष बीत गये हैं। देश और समाजकी उन्नतिके इतिहासमें उनके समूचे जीवनका प्रत्येक क्षण सजा हुआ है। उनकी एकषष्टी मनानेमें मारवाडी समाजका गौरव है। हम चाहते हैं कि कार्यकारी मण्डल अग्रगामी होकर ऐसा आयोजन करे कि मारवाडी समाजके प्रत्येक अंगका सहयोग लेकर इस कार्यको विराट स्वरूप मिले।

पिछले दिनों माहेश्वरी समाजमें शिक्षा प्रसारका विषय लेकर समाजमें काफ़ी हलचल रही है। इस सम्बन्धमें एक योजना भी हमने इन कालमोंमें समाजके सामने प्रस्तुत की थी और उसपर लोगोंके विचार आमन्त्रित किये थे। हमारे निवेदनके उत्तरमें अनुकूल और प्रतिकूल अनेक विचार और सम्मतियां भेजी गयी थीं जिनके महत्वपूर्ण अंश हमने 'माहेश्वरी' में प्रकाशित भी कर दिये थे। कार्य समिति और कार्यकारी मण्डलकी आगामी बैठकोंमें शिक्षा प्रसार विषयक योजना पर भी विचार किया जायगा। आज इस बातसे इन्कार नहीं किया जा सकता कि व्यक्तिके व्यक्तिगत और सामजके सामाजिक जीवनके लिए सभी दृष्टियोंसे शिक्षाका बहुत अधिक महत्व है। हमारा समाज भी अब इस सत्यको दिन-दिन महसूस कर रहा है कि उन्नति, विकास और प्रगतिके लिये शिक्षाकी बहुत बड़ी और अनिवार्य आवश्यकता है। फलतः इस पर और अधिक प्रकाश डालनेकी आवश्यकता नहीं। शिक्षा प्रसार जैसे विषय पर अब समाजके धनी-मानी महानुभावोंका ध्यान जा रहा है, यह परम सौभाग्यका विषय है। कार्य समिति और कार्यकारी मण्डलके सदस्योंको इस विषय पर विचार करके एक उपयोगी और महत्वपूर्ण योजना तय्यार करनी है।

इसके अतिरिक्त 'माहेश्वरी' और महासभाके पिछले वर्षके आय व्यय और आगामी वर्षके बजट पर भी विचार किया जायगा। महासभा और 'माहेश्वरी' की सुवर्ण जयन्ती मनानेके सम्बन्धमें भी विचार होगा। सम्वत् १९४९ में सर्व प्रथम 'माहेश्वरी' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ था और अब सम्वत् १९९८ के अन्ततक उसे ५० वर्ष हो जायंगे। और माहेश्वरी महासभाका स्थापन हुए भी पचास साल हो रहे हैं।

इसके अतिरिक्त महासभाके इतिहासके प्रकाशनके सम्बन्धमें भी विचार होना है। महासभाकी इच्छा थी कि वह अपनी समस्त प्रवृत्तियोंका एक प्रामाणिक इतिहास तय्यार कराये और अब श्री पं. विश्वम्भर प्रसादजीने अपने कृष्णमन्दिरके प्रवासमें यह इतिहास बहुत कुछ तय्यार भी कर डाला है।

किन्तु इन सब कार्योंमें वर्त्तमान विश्व युद्धने एक गहन समस्या उपस्थित कर दी है। युद्धके कारण कागज़, स्याही और ब्लाक आदिके दाम इतने अधिक बढ़ गये हैं कि इन सब चीजोंका खर्च उठाना भारी होगया है। 'माहेश्वरीका' का प्रकाशन

भी महंगा हो गया है। इस परिस्थितिको देखते हुए कार्यसमिति व कार्यकारी मण्डलको इन सब विषयोंपर विचार करना होगा। हम चाहते हैं कि कार्यकारी मण्डलके सदस्य इन विषयोंपर पहलेसे ही भली भाँति विचार कर लें ताकि अधिवेशनमें विचार करनेमें सुविधा हो और शीघ्र ही निर्णयपर पहुंचा जा सके।

राजस्थानके युवकोंका कर्तव्य

गत ता. २७ व २८ दिसम्बरको उदयपुरमें अ. रा. माहेश्वरी सम्मेलनका अधिवेशन सफलतापूर्वक सम्पन्न हो गया है। जैसी कि आशा थी राजस्थान और बाहरके बहुतसे मान्य महानुभावोंने इस सम्मेलनमें हिस्सा लिया। सभापति कुंवर चान्दकरणजी शारदा और स्वागताध्यक्ष श्री हनुमान प्रसादजी सोढाणीके भाषण बहुत उत्साह वर्धक हुए। सम्मेलनमें जो प्रस्ताव पास किये गये वे भी बहुत अधिक महत्वपूर्ण हैं। समाजसुधारके जितने भी प्रमुख अंग है उनमेंसे एक भी छूटने नहीं पाया। पर्दा, औसर-मौसर, दिखावा, बालविवाह, वृद्धविवाह, परवानगी, सामाजिक बहिष्कार आदि कुरीतियोंका निवारण और स्त्री शिक्षा व व्यायम का प्रसार आदि सामाजिक विषयों और घरेलू उद्योग धन्धोंको प्रोत्साहन, हिन्दी प्रचार, खादी परिधान आदि अन्य उपयोगी विषयों तथा उत्तर दायित्वपूर्ण शासनके लिए प्रयत्न करने वालों को बधाई आदि देनेके सम्बन्धमें विविध प्रस्ताव पास किये गये हैं। इन प्रस्तावोंमें रचनात्मक कार्यका भी एक प्रस्ताव है जिसके अनुसार विभिन्न स्थानोंपर शाखाओंका स्थापन, औसर—मौसरके विपरीत प्रतिज्ञापत्र भरवाना, पर्दा आदि कुरीतियोंके निवारणके लिए प्रचार तथा व्यायाम शालाएं खोलनेके सम्बन्धमें रचनात्मक कार्य करनेका कार्य कारी मण्डलको आदेश दिया गया है। इसे देखते हुए हमें निश्चय है कि राजस्थानमें इस राजस्थान सिन्ध प्रान्तीय सम्मेलनके द्वारा अगले अधिवेशन तक एक बहुत बडा कार्य हो सकेगा।

उत्साही कार्यकर्ताओंके सहयोगसे यह सम्मेलन तो धूम धामसे सम्पन्न हो गया है परन्तु इस सम्मेलनमें जो ज्योति जगाई गयी है वह आगे भी इसी भांति जलती रहे और कार्यकर्त्ताओंका उत्साह और लगन भंग न हो इस बातकी सबसे अधिक आवश्यकता है। हम अनेकवार इस बातपर बल देते रहे हैं कि सभा-सम्मेलनोंकी समाप्तिके बाद कार्यकर्त्ताओंका जोश ठण्डा नहीं होना चाहिए। आम तौर पर होता यही है कि जहां सम्मेलन समाप्त हुआ और कानोंमेंसे भाषणोंकी उच्च ध्वनिकी गूंज समाप्त हुई कि युवकोंका जोश भी मन्द पड़ जाता है। इसी बातको दूर करनेकी आवश्यकता है। सच्चे कार्यकर्त्ताओंकी श्रद्धा, लगन और कर्मण्यताकी कसौटी सभा सम्मेलनोंके बाद ही होती है। हमारे समाजको आज सभामण्डपोंके वावदूक कार्यकर्त्ताओंसे कार्यक्षेत्रमें निरत रहने वाले कर्मठ युवकोंकी अधिक आवश्यकता है जो उसके सन्देशको चिरकाल तक प्रतिध्वनित रख सकें।

संसारकी परिस्थितियां जिस तेजीसे बदल रही हैं उससे जान पड़ता है कि युगका परिवर्त्तन प्रारम्भ हो गया है। नवयुगके आगमनके लिए स्वागतकी तय्यारियां शुरू हो गयी हैं, आरती प्रारम्भ हो चुकी है। हमें भी उस नवयुगके स्वागतके लिए अपने को तय्यार करना है। किन्तु इसके लिए सर्वप्रथम अपने भीतरसे कुरीतियों और दुष्प्रथाओं को निकाल बाहर करनेकी आवश्यकता है। जब तक इन सब कुरूढियोंको हटाकर अपने समाजको हम निर्मल और विशुद्ध नहीं कर लेंगे तबतक नवयुगके इस स्वागत समारोहमें हमारा स्थान कभी आगे नहीं हो सकता। संसारके—देशके दूसरे समाज हमें पीछे धकेल कर आगे बढ़ जायंगे और हमारा कहीं पता भी नहीं रहेगा। इस लिए इस कार्यके लिए हमारे कार्यकर्त्ता युवकों विशेषतः राजस्थानके युवकोंको समाजसुधारमें मन-प्राणसे लग जाना चाहिए।

बारडोली

दिसम्बरके अन्तिम सप्ताहमें बारडोलीमें कांग्रेस वर्किंग कमेटीका सप्ताह भर तक एक अधिवेशन हुआ है। इस अधिवेशनमें कांग्रेसने अपना सत्याग्रहका कार्यक्रम स्थगित करके युद्धके आतंकसे भारतकी आम जनताको बचानेके लिए एक रचनात्मक कार्य करनेका निश्चय किया है और सरकारको युद्धमें सहायता देनेका भी वचन दिया है किन्तु इस शर्तपर कि वह पहले भारतकी स्वतन्त्रता घोषित कर दे। स्वतन्त्र भारत ही सरकारको युद्धमें सहायता दे सकता है। वर्किंग कमेटीके अधिवेशनका परिणाम यह हुआ है कि कांग्रेसके नेतृत्वसे महात्मा गांधी पृथक हो गये है। वे स्वतंत्रता घोषित कर दिये जाने पर भी सरकारको युद्धमें मदद देनेके पक्षमें नहीं। कांग्रेसने जिस अहिंसा की नीतिको अपनाया है उसे वे परिस्थितियों का परिणाम स्वीकार करना नही चाहते। वे चाहते हैं कि उसे एक अपरिहार्य सत्य, एक सार्वभौम ध्रुव सत्यके रूपमें स्वीकार किया जाय। अहिंसा ही विश्वकी शांतिका एक मात्र मूल आधार है, वही एक मात्र सत्य धर्म है। स्वाधीनता भी उसे बेच कर नहीं खरीदी जानी चाहिए। उनकी अहिंसा निष्कलंक और पूर्ण अहिंसा है अतः वे किसी भी हिंसक युद्धमें सहायता देनेको तय्यार नहीं। किन्तु अधिकांश वर्किंग कमेटीके सदस्य इस विचारसे सहमत नहीं। उनका कहना है कि यदि देशको स्वाधीन घोषित कर दिया जाय तो स्वाधीनता की रक्षा के लिए अहिंसाका परित्याग करके हिंसा का आश्रय लेना आवश्यक और अपरिहार्य है। इसीसे बम्बईकी अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीकी मीटिंगमें जो प्रस्ताव पास हुवा था उसके अभिप्राय को लेकर एक बड़ा मतभेद और विवाद खड़ा हो गया है और जो लोग महात्मा गान्धीके पक्षमें हैं वे कांग्रेस कमेटीके बहुसंख्यक दलसे पृथक हो गये हैं और वे महात्मा गान्धीके सत्याग्रह आन्दोलन का साथ देंगे।

इस प्रकार कांग्रेसके हाईकमाण्डमें फूट पड़ गयी है और इस फूटके मूल्य पर कांग्रेसने एक बार फिर सरकारके सामने युद्धमें सहयोग देने का हाथ बढाया है यदि भारत को स्वाधीन करके बराबरी का दर्जा दिया जाय। अब देखना है कि सरकार सहायताके इस मित्रतापूर्ण हाथ का स्वागत करती है या नहीं। देशभरमें सत्याग्रही राजबन्दियों की मुक्ति की घोषणा करनेके बाद वायसराय महोदयने कलकत्ताके असोसियेटेड चेम्बर ऑफ कामर्समें जो भाषण दिया था उसमें फिर वही 'अगस्त आफर' का पुराना राग अलापा था। अटलांटिक चार्टरके सम्बन्धमें पार्लिमेंटमें स्पष्टीकरण देतें हुए ब्रिटिश प्रधानमन्त्री मि. चर्चिलने भी यह निदारुण सत्य स्पष्ट कर दिया था कि उस चार्टरका भारतपर कोई असर नहीं होगा। भारतमन्त्री मि. ऐमरीने इस बीच पार्लमेंटमें जो वक्तव्य दिये हैं उनसे भी इस बातका तनिक आभास नहीं मिलता कि सरकार भारतको कुछ देना चाहती है।

आज संकट भारतके द्वारपर सचमुच पहुंच गया है और भविष्यकी सुदूर बिभीषिका अत्यन्त आसन्न हो गयी है। इस अवस्थामें भी यदि ब्रिटिश सरकारने अपना लोभ कम नहीं किया तो यह विधिकी विडम्बना होगी। एक तरफ अमेरिका फिलिपाइन्सको फिर स्वाधीन करानेकी घोषणा कर रहा है और दूसरी तरफ मि० चर्चिल भारतको तिलभर भी अपना अधिकार देना नहीं चाहते, वर्त्तमान राजनीतिका यह एक अत्यन्त विचित्र पहलू है। परिस्थिति दिन-दिन नाजुक होती जा रही है और शत्रुके ठीक घरमें आ पहुंचनेसे पूर्वही सरकारको सम्भल जाना चाहिए। यदि वह नहीं सम्भली तो देशका और विशेषतः कांग्रेसका यह परम दुर्भाग्य होगा क्योंकि महात्मा गान्धी जैसे नेताको पृथक करनेका मूल्य देनेपर भी वह स्वाधीनता नहीं पा सकेगी। और दुविधामें महात्मा गान्धीके नेतृत्व और स्वाधीनता दोनोंसे ही उसे हाथ धोना पड़ेगा।

बम्बई प्रान्तीय माहेश्वरी सभा

बम्बई प्रान्तीय माहेश्वरी सम्मेलनकी कुछ हलचल इन दिनों सुनाई पड़ने लगी है। देशभक्त श्री रामकृष्णजी जाजूने दूसरी बार सत्याग्रह करनेके बाद मुक्ति पाते ही प्रान्तीय सभाका अधिवेशन बुलाने का कार्य प्रारम्भ किया था। आजसे ६ वर्ष पूर्व इगतपुरीमें बम्बई प्रान्तीय सभाका सम्मेलन हुआ था। तबसे अबतक कोई सम्मेलन नहीं हुआ। इतने समयतक निष्क्रिय रहनेके बाद अब समय आगया था जबकि बम्बई प्रान्तकी सभा को करवट बदलना और जागना चाहिए था। और यह हर्षकी बात है कि श्री रामकृष्णजी जाजूने सभा का अधिवेशन जल्दी ही बुलानेका निश्चय कर लिया है।

राजस्थानमें अ. रा. माहेश्वरी कार्यकर्त्ता सम्मेलन और अ. रा. माहेश्वरी सम्मेलनके नामसे दो सम्मेलन हो चुके है। इस बातको देखते हुए अन्य प्रान्तोंमें भी प्रान्तीय सभाओंके अधिवेशनोंकी आवश्यकता और महत्वको महसूस किया जा रहा था। पिछले दिनों मध्यभारत और संयुक्त प्रान्तमें प्रान्तीय माहेश्वरी सभाके अधिवेशनोंके लिए आवाज़ उठाई गयी थी और कुछ हलचल भी हुई थी। और अब बम्बई प्रान्तमें भी प्रान्तीय सभाके अधिवेशनकी हलचल हो रही है।

इस अधिवेशनके लिए बागलकोट स्थान चुना गया है। इस इलाकेमें इस प्रकारके प्रान्तीय अधिवेशनका होना और भी अधिक महत्वपूर्ण है। यह इलाका समाजसुधारके लिए एक जबर्दस्त आन्दोलनकी अपेक्षा रखता है।

इस सम्बन्धमें हमारा यह सुझाव है कि अधिवेशन बुलानेसे पूर्व बम्बई प्रान्तके प्रत्येक जिले, प्रत्येक नगर और प्रत्येक ग्राममें जहां-जहां माहेश्वरी जनता बसती है, घूम-घूम कर प्रचार करना चाहिए और जन-जनके हृदयतक महासभाका सन्देश पहुंचना चाहिए। उसके बाद जब सम्मेलन होगा तब निःसन्देह वह अधिक सफल होगा। बम्बई प्रान्तमें निष्ठावान् और उत्साही कार्यकर्त्ताओंकी कमी नहीं। यदि कार्यकर्ता गण सभाके अधिकारियोंको प्रचारमें सहयोग दें और दो-तीन मास तक प्रान्तभरमें खूब प्रबल आन्दोलन हो तब अप्रैल मासमें अधिवेशन करना बहुत ही उपयोगी होगा। इस अर्सेमें समाज सुधार की प्रेरणाके लिए एक उपजाऊ भूमि तय्यार हो जायगी और सभामें खासी उपस्थिति भी हो सकेगी। फरवरी मास बिल्कुल नजदीक है। इतने कम समयमें अधिवेशन को सफल बनाने की इच्छा रखना यह तो निरी कल्पना है। आशा है बागलकोटके कार्यकर्ता इसपर विचार करेंगे।

श्री सुखदेवजी तापड़ियाका दुःखद देहावसान

अकोलाके सुप्रसिद्ध व्यवसायी एवं समाजप्रेमी श्री सुखदेवजी तापडियाका स्वर्गवास हो गया, यह कहते हुए हमें दुःख हो रहा है। श्री सुखदेवजीका जीवन युवकोंके लिए अनुकरणीय है। उन्होने अपनेही प्रयत्नसे अपने जीवनको सुन्दर और उन्नत बनाया था। श्री सुखदेवजी अपने व्यवहारोंसे सभी समाजोंमें लोकप्रिय हो गये थे। अपने जीवनमें सहस्रों-रुपयेका देश और समाजके हितके लिये आपने दान किया है। आपके उन्नत विचारोंके कारण ही श्री सुगनचन्दजीने अपने सार्वजनिक जीवनमें विशेष स्थान बनानेकी योग्यता पायी है। ईश्वर आपकी स्वर्गत आत्माको शान्ति प्रदान करे।

हिन्दी में समाजशास्त्र की

श्री भगवानदासजी केला का हिन्दी साहित्य

श्रीमान् स्वागताध्यक्ष जी, माननीय सज्जनो, भाइयो और बहिनो,

आपने मुझे समाजशास्त्र परिषद् का सभापति चुन कर जो सम्मान दिया है, उसके लिए मैं किस प्रकार आपको धन्यवाद दूँ, यह मेरी समझमें नहीं आता।

इस समय मुझे समाजशास्त्र-परिषद्के बारेमें कहना है। पहले, कुछ शब्द समाज और समाज-साहित्यके विषयमें कह दूँ तो उचित ही होगा। मनुष्य ने सामाजिक जीवन इस लिए अपनाया कि उसे सुख-शान्ति मिले, और उसकी उत्तरोत्तर उन्नति हो। समाज विकासशील है, तथापि उसका यह उद्देश्य पूर्ण रीतिसे कभी भी पूरा नहीं हुआ; भूतकालमें समय-समय पर कुछ समस्याएँ बनी रहीं। इस समय हमारी अपनी चिन्ताएँ हैं। एक ओर यह शिकायत है कि देशमें शिक्षाकी कमी है, दूसरी ओर शिक्षितोंकी आलोचना है, कि ये कैसे आरामतलब, फैशनेबल, खर्चीले और नजाकतपसन्द हो जाते हैं। एक ओर धार्मिक भावना की कमी बतायी जाती है, तो दूसरी ओर धार्मिक संकीर्णता, कट्टरता और विद्वेषकी बात सामने आती हैं। एक ओर गांव वालोंको गंवार या असभ्य कह दिया जाता है, और शहरियों को उनसे मिलने जुलने और उनके पास रहनेमें अरुचि होती है, तो दूसरी ओर शहरवालोंकी सभ्यतामें ऐसी अनेक बातें मिलती हैं जो सहृदयता, त्याग, और निष्कपटताकी कमी सूचित करती हैं। इस प्रकार शिक्षा, धर्म, और सभ्यता जो समाजके आधार-स्तम्भ माने जाते हैं सबके सम्बन्धमें बहुत सोच-विचारकी आवश्यकता है। हमारी आर्थिक अवस्था अलग ही चिन्तनीय है, हम दिन रात रोटी-कपड़े की फिक्र मे मरे जा रहे हैं। इसका बहुत-कुछ कारण हमारी राजनैतिक दासता है। पराधीन और निर्धन भारत का समाज संकटग्रस्त है तो शिक्षा, विज्ञान, और सभ्यता की डींग हाँकने वाले सम्पन्न देशों में भी शान्ति और सुख स्वप्न की वस्तु बनी हुई हैं। विद्या और ज्ञान के केन्द्र रणक्षेत्र बने हुए है। जहाँ से स्वर्गीय संगीत की आशा होनी चाहिए थी, वहाँ मार-काट का कोलाहल मचा हुआ है; हिंसा का ताँडव नृत्य हो रहा है, जो भयानक जंगली जानवरों के व्यवहार को भी मात कर रहा है; अभागा मानव यह अभिमान भले ही करले कि वह यह युद्ध सभ्यता पूर्वक कर रहा है, या उसकी कार्रवाई विज्ञान की चरम सीमा की द्योतक है।

मनुष्यने संसारको जीतनेकी कोशिश की, पर उसने अपने आप पर, अपने काम, क्रोध, लोभ और मोह पर विजय प्राप्त करनेकी न सोची। यही नहीं, जिन महात्माओंने नैतिक विजय या आत्मोन्नति की बात कही, उसे आधुनिक मनुष्य गर्व-पूर्वक मूर्ख नहीं तो पागल की उपमा देता है। गत वर्षोंमें समाजवाद, नाजीवाद, फैसीवाद, साम्राज्यवाद, पूंजीवाद आदिके नारे लगाये गये। अब फिर समाजकी नयी व्यवस्था (न्यू आर्डर) की बात चल रही है। कौन जाने, हमारी लालसा या तृष्णामें कुछ वास्तविक कमी होकर हममें सच्ची उदारता आयी है, अथवा यह स्मशान का वैराग्य ही है। अस्तु, इन बातों से यह तो असंदिग्ध है कि मनुष्योंके सामाजिक सम्बन्ध पर बहुत ठंडे दिल से, गम्भीरतापूर्वक विचार होने की आवश्यकता है; अर्थात् समाजशास्त्र सम्बन्धी साहित्य की इस समय विशेष आवश्यकता है, इसमें पुराने और नये, देशी और विदेशी, पूर्वी और पश्चिमी-सभी प्रकारके अनुभवों से लाभ उठाते हुए आगे कदम बढ़ाने की जरूरत है।

इस अवसर पर मैं ज्ञात एवं अज्ञात, उन समस्त महानुभावोंके प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ, जिन्होंने नाना प्रकारके कष्ट उठाकर, व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, एवं अनेक दशाओंमें सरकारी बाधाओं को भी सहन करके हिन्दी संसार को कुछ समाज साहित्य प्रदान किया है। जिन सज्जनों ने आरम्भमें नागरिकता, अर्थशास्त्र, राजनीति कनून व्यावसायिक और आर्थिक भूगोल, इतिहास आदि की पुस्तकें लिखी हैं, उनकी कठिनाइयों का ठीक अनुमान करना सहज नहीं है, यद्यपि इस समय भी परिस्थितिमें बहुत सुधार नहीं हुआ है। आज दिन भी किस प्रकार कुछ व्यक्ति जहां तहां ऐसे साहित्यके लिए कुर्बान हो रहे हैं, मरनेसे कहीं बढ़कर जीने का कष्ट उठा रहे हैं, उसका अनुभव कोई भुक्तभोगी ही सकता है।

हिन्दीभाषा-भाषी बन्धुओ! हम उस भाषाका प्रतिनिधित्व करते हैं, जो चालीस कोटि जन-संख्यावाले महान् भारत की राष्ट्रभाषा है। आवश्यकता है कि हमें इस बात की पूरी जानकारी हो कि मराठी, गुजराती, बँगला, तामिल, तेलगू और उर्दू आदिमें भूगोल, इतिहास, राजनीति, अर्थशास्त्र आदि प्रत्येक विषय सम्बन्धी क्या-क्या और कितना-कितना साहित्य है। आज दिन हम इस ओर प्रायः बेखबर ही हैं। अफसोस है कि अखिल भारतवर्षीय कही जानेवाली संस्थाएँ भी इस योग्य नहीं हैं कि किसी जिज्ञासु को यह जानकारी दे सकें और उसके सामने सब सामग्री प्रस्तुत कर सकें। हमारी पत्रिकाओंमें समय-समय पर हिन्दी साहित्य के साथ साथ विविध प्रान्तीय भाषाओं के इन विषयों के साहित्यका भी सिंहावलोकन किया जाना आवश्यक है, जिससे साहित्य के क्षेत्र में अन्तःप्रान्तीय सहयोग हो सके, और आदान प्रदान की नीति का व्यवहार होने में सुविधा हो। हम लोग अँगरेजी के ग्रन्थों से प्रायः सहायता लेते रहते हैं। मैं इसे बुरा नहीं समझता, यथासम्भव फ्रांसीसी जर्मन और रूसी आदि अन्य देशीय भाषाओं के साहित्य से भी हमें लाभ उठाना चाहिए। किन्तु अपनी प्रान्तीय भाषाओं से तो हमारा निरंतर घनिष्ट सम्पर्क रहना अनिवार्य है। मराठी अर्थशास्त्र साहित्य को मान्यवर वामन गोविन्द काले, गुजराती अर्थशास्त्र साहित्य को श्रीमान के. टी. शाह, और बँगला अर्थशास्त्र साहित्य को विनयकुमार सरकार जैसे महानुभावों की सेवाएँ प्राप्त हैं। राष्ट्र-भाषा हिन्दी के समाजशास्त्र साहित्यके भिन्न-भिन्न अंगों को ऐसे सज्जनों की कितनी आवश्यकता है।

राष्ट्र-भाषाभिमानियों का उत्तरदायित्व महान् है। हमें तो प्रत्येक विषयके साहित्यमें, अन्य भारतीय भाषाओंके साहित्य से आगे रहना चाहिए। हमें ऐसी कृतियों को प्रस्तुत करने का लक्ष्य रखना चाहिए जो न केवल भारतवर्षके, वरन् संसारके साहित्यमें अच्छी देन समझी जा सकें, जिनका अन्य देशवासी न केवल अनुवाद करें, वरन् जिन्हें मौलिक रूपमें पढ़नेके लिए इंग्लैंड, जर्मनी और रूस आदिके निवासी हिन्दी भाषा सीखने या समझनेके लिये प्रेरित हों। क्या मेरी यह आकांक्षा कपोल कल्पित या स्वप्न समान है? क्या हिन्दी भाषाको इतना उन्नत करनेका दम हमें न भरना चाहिए? क्या हम भारत और भारतीयताका संदेश बाहर भेजनेका विचार न करें? भाषाकी विजय और विस्तार हमारी वास्तविक शक्तिका माप है और इसके लिए हमें हिंसक सामग्री या पाशविक बलकी आवश्यकता नहीं है; जरूरत है, अच्छा जीवन बनानेकी, त्याग और तपस्याके भावोंकी, और सादा जीवन और उच्च विचार की। क्या मैं हवाई क़िले बना रहा हूं, अथवा क्या यह बहुत उंची उड़ान है? इस विषयमें आप अपना-अपना स्वतंत्र मत रखनेमें सर्वथा स्वाधीन हैं।

समाज और समाज-साहित्य पर उड़ती-सी नज़र डाल कर मैं अब इस परिषद्के बारेमें कुछ निवेदन करूँ। आप तीन वर्षसे यह परिषद् कर रहे हैं, सालमें एक बार दो-तीन घंटेका उत्सव हो जाता है, और फिर खेल खतम। कौन विचारशील व्यक्ति किसी संस्थाके ऐसे जीवनसे संतुष्ट हो सकता है! क्या अभी वह समय नहीं आया कि परिषद् यह सोचे कि उसके जीवनका उद्देश्य क्या है, और वह उद्देश्य किस प्रकार पूरा किया जाय? इस बातमें तो किसीका मतभेद नहीं होगा कि परिषद्को कुछ ठोस काम करना चाहिए। समाजशास्त्र सम्बन्धी साहित्य कितना कम है, और उसे बढ़ाने की कितनी आवश्यकता है, यह आप सब जानते ही हैं। यह ठीक है कि कुछ वृद्धि समयानुसार स्वयं हो रही है, परन्तु वह कुछ नियमित रूपसे हो इसके लिए आवश्यक है कि इस बातकी भली भांति जांच की जाय कि इस विषयके भिन्न-भिन्न अंगोंमें से किसके सम्बन्धमें कितनी सामग्री विद्यमान है, कहाँ-कहाँसे किस-किस लेखककी कौन कौन सी पुस्तक प्रकाशित हुई है, और अब कैसी कैसी पुस्तकें और लिखी तथा छपायी जानेकी विशेष आवश्यकता है। इस दिशामें जहां तक मुझे मालूम है, सबसे प्रथम उद्योग हिन्दुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग, ने किया। उसके द्वारा सन् १९३० में प्रकाशित 'हिन्दी सर्वे कमेटीकी रिपोर्ट' में समाजशास्त्रकी विविध शाखाओं सम्बन्धी साहित्य पर भी विचार किया गया है। उसके पांच वर्ष बाद, सन् १९३५ में अर्थशास्त्र और राजनीति साहित्यके सम्बन्धमें, विशेष प्रयत्न भारतीय ग्रन्थमाला, वृन्दावन, ने किया, और उसके फल स्वरूप 'हिन्दीमें अर्थशास्त्र और राजनीति साहित्य' पुस्तक प्रकाशित की। इसमें अर्थशास्त्र की १४१ और राजनीति की २११ पुस्तकों का परिचय दिया गया था। यथेष्ट साधनोंके अभावके कारण कुछ कृतियों का उल्लेख होने से रह गया था। यह आशा थी कि हर दूसरे-तीसरे वर्ष उस पुस्तक का नया संशोधित और परिवर्द्धित संस्करण होनेसे वह अधिकाधिक पूर्ण होती रहेगी। खेद है कि हिन्दी संसारने अभी तक उसके दूसरे संस्करण का भी अवसर नहीं दिया। फिर उसके उदाहरणसे जो यह आशा की गयी थी कि भूगोल, इतिहास, व्यापार, कानून आदि अन्य विषयोंके साहित्यके जानकार भी अपने-अपने क्षेत्रका इसी प्रकार सिंहावलोकन करेंगे, वह पूरी नहीं हुई। आवश्यकता है कि अब परिषद् इस अत्यन्त आवश्यक कार्य को हाथमें ले, समाजशास्त्र-साहित्यकी पूरी जांच करके अपनी रिपोर्ट दे, जिससे पाठकों, लेखकों एवं प्रकाशकों—सभीका पथ-प्रदर्शन हो।

अब परिषद्के करने योग्य दूसरे खास कामका विचार करें। समाजशास्त्रकी विविध शाखाओंके साहित्यकी कमीका एक मुख्य कारण यथेष्ट पारिभाषिक शब्दोंका न होना है। जब किसी लेखकको पदपद पर यह सोचना पड़े कि अमुक भावको व्यक्त करनेके लिए किस पारिभाषिक शब्दका प्रयोग करना उचित होगा तो उसकी कलम अच्छी तरह नहीं चल सकती। और यदि भिन्न-भिन्न लेखक किसी एक ही भावको व्यक्त करनेके लिए पृथक

उन्नति की आवश्यकता

सम्मेलन की समाजशास्त्र परिषद् में भाषण

पृथक् पारिभाषिक शब्दोंका प्रयोग करें तो पाठकोंको बड़ी कठिनाई होती है। इसलिए पारिभाषिक शब्दोंके सम्बन्धमें भली भांति विचार-विनिमय किये जाने तथा उनके यथा-सम्भव प्रामाणिक कोष प्रकाशित होनेकी कितनी आवश्यकता है, इसका सहज ही अनुमान किया जा सकता है। समय-समय पर इस दिशामें कुछ प्रयत्न हुए हैं।

इन कोषोंमें से कुछ तो पुराने पड़ गये हैं। कुछ अधूरे हैं, या सुलभ नहीं हैं; व्यापारिक और आर्थिक भूगोल का तो कोई कोष देखनेमें ही नहीं आया। अस्तु, यह निर्विरोध कहा जा सकता है कि अभी इस दिशामें बहुत काम होनेकी आवश्यकता है। वर्तमान अवस्थामें कोई ऐसा समाजशास्त्र-शब्द-कोष नहीं है, जो सर्वसाधारण लेखकों का भली भांति काम चला सके। क्या ही अच्छा हो, यदि यह परिषद् इस महत्वपूर्ण कार्य को हाथमें ले।

इसके अतिरिक्त, और भी कई एक उपयोगी कार्य हैं। यद्यपि मैं उनकी चर्चा समाज-साहित्यको ही लक्ष्यमें रखकर कर रहा हूँ, तथापि वे व्यापक महत्वके हैं। आज दिन समाजशास्त्र सम्बन्धी पुस्तकोंके प्रकाशनकी व्यवस्था बहुत असंतोषप्रद है। यह ठीक है कि गत पाँच-सात वर्षोंमें इस दिशामें खासी प्रगति हुई है, तथापि उन्हीं पुस्तकोंके छपनेकी आशा विशेष होती है, जो पाठ्य पुस्तक बनने के योग्य हों। और, पाठ्य क्रम में आखिर कितनी पुस्तकों को स्थान मिल सकता है? क्या उसी क्षेत्र की पुस्तकों से हम अपने साहित्य भंडार की पूर्ति करके संतोष कर लें। आवश्यकता है कि साधारण पाठकों के उपयोगी ऐसी पुस्तकें प्रकाशित होने की भी समुचित व्यवस्था हो, जो उत्तम और उपयोगी हों, भले ही उन्हें शिक्षा विभाग की स्वीकृत न मिले।

हमे प्रकाशकों का भी यथेष्ट ध्यान रखना चाहिए। उनके हित की अवहेलना करना हमारे लिए कदापि उचित नहीं है। जब हम उनसे समाजशास्त्र सम्बन्धी साहित्य प्रकाशित करने का अनुरोध करें तो हमारे ऊपर यह दायित्व आता है कि हम ऐसी पुस्तकोंके प्रचारमें यथा-सम्भव योग दें। पाठ्य पुस्तकके रूपमें, पारितोषिकमें, या पुस्तकालय आदिके लिए, जहां कहीं हमारी पहुंच हो, हमें अपने उस दायित्व का ध्यान रखना चाहिए और उन पुस्तकों को याद करके उनकी खपत बढ़ानेमें सहायक होना चाहिए। इस बात की भी आवश्यकता है कि हम अपने अपने घर पर निजी पुस्तकालय रखें, जिनमें ऐसे साहित्य को भरसक स्थान दिया जाय। हमारी इस परिषद्को चाहिए कि समय-समय पर कुछ अच्छी-अच्छी पुस्तकोंका चुनाव करके निजी तथा सार्वजनिक पुस्तकालयों की इस विषयमें सहायता करें।

साहित्यमेंसे अच्छे और बुरे, अथवा उपयोगी और अनुपयोगीकी पहिचानका, तथा आवश्यक साहित्यके प्रचारका, एक साधन समालोचनाकी सुन्दर व्यवस्था होना है। आज कल इस क्षेत्रमें प्रायः अंधेर ही मचा है। एक आविष्कारकने कहा कि समालोचनाके लिए दो प्रतियाँ आनी चाहिए। क्रमशः दूसरे समालोचकों ने उसकी नकल करनी आरम्भ कर दी। छोटा पत्र हो या बड़ा, प्रायः सभी एक पुस्तक की दो-दो प्रतियाँ मांगते है। पुस्तकों की पहुँच देना कोई अपना कर्तव्य नहीं समझता। समालोचना के लिए समय की अवधि निर्धारित करना कठिन होता ही है। बस, किसी किसी पुस्तक की तो चार-चार छः-छः महीने ही नहीं, साल भर तक समालोचना नहीं होती, यदि लेखक या प्रकाशक उसकी याद कराता है, समालोचना का तकाजा करता है तो कार्यालय से या तो उत्तर ही नही मिलता, अथवा टकसाली जवाब आता है कि 'खेद है आपकी पुस्तक हमारे सामने नहीं हैं।' दो पुस्तकें भेजनेमें जो डाकखर्च हुआ, उसके उपरान्त बारबार पत्र लिखनेमें जो समय और पैसा खर्च करना होता है, उससे बचने का एक ही उपाय है, गम खाकर बैठ रहना; आगेके लिए समालोचनार्थ पुस्तक उस पत्रमें न भेजना।

इस प्रसंगमें मेरा यही निवेदन है कि समाजशास्त्र सम्बन्धी साहित्यमेंसे अच्छे और बुरेकी पहचान करने और अच्छे साहित्यको प्रोत्साहित करनेके लिए समालोचना सम्बन्धी व्यवस्था बहुत अच्छी होनेकी आवश्यकता है। कुछ योजनाएँ बन रही है। इस सम्बन्ध में इस परिषद् को यथा-सम्भव सहायक होना चाहिए, जिससे इस साहित्य की भविष्य में ऐसी उपेक्षा न हो, जैसी गत वर्षों में प्रायः होती रही है।

मैंने पुस्तकों के प्रकाशन, आलोचना और प्रचार की बात कही। पर ये सब मंजिलें तो पीछे आयँगी। पहली मूल बात तो पुस्तक का लिखा जाना है। यह ठीक है कि प्रकाशन और प्रचार की व्यवस्था होने से रचना कार्य में प्रगति होती है लेखक का उत्साह बढ़ता है। आज कल हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से समाजशास्त्र सम्बन्धी साहित्य पर भी पारितोषिक मिलने की व्यवस्था है। नागरी प्रचारिणी सभा भी समाजशास्त्रके कुछ अंगोंके साहित्य को पुरस्कृत करती है। गवालियर आदि राज्योंमें भी कहीं-कहीं अच्छी पुस्तकों पर पुरस्कार मिलता है तो समाजशास्त्र-साहित्य भी उसके अन्तर्गत आ जाता है। परन्तु, आखिर इन सब पुरस्कारोंके सहारे कुल मिला कर कितना साहित्य निर्माण होता है। हमारे सामने तो निश्चित और सुनिर्धारित योजना होनी चाहिए कि एक वर्षमें इतनी संख्यामें अच्छी प्रामाणिक पुस्तकों का अनुवाद अन्य भाषाओं से हिन्दीमें हो जाय, और इतनी पुस्तकें नयी मौलिक लिखी जायँ। इन पुस्तकों की रचना या अनुवादके लिए सुयोग्य व्यक्ति निर्धारित वृत्ति पाते हुए काम करें। इसके अतिरिक्त जो व्यक्ति लेखन-कार्यमें ही अपना जीवन अर्पण करना चाहें, उनके साधारण निर्वाहार्थ कुछ कुछ स्थायी छात्रवृत्तियोंकी व्यवस्था होनी चाहिए। इस कार्यके लिए स्वतंत्र सुरक्षित कोष होनेकी आवश्यकता है। यदि सरकार इस ओर ध्यान दे तो सहज ही यह कार्य सम्पन्न हो सकता है; हैदराबाद राज्यमें उसमानिया युनिवर्सिटीने गतवर्षोंमें उर्दू साहित्यमें ख़ूब काम कर दिखाया है। हमारे राजा महाराजा या धनी मानी सज्जन ध्यान दें तो क्या नहीं हो सकता। मैं परिषद्के सामने यह बात इस लिये रख रहा हूँ कि शायद किसी सदस्य द्वारा यह विचार अनुकूल क्षेत्रमें पहुँच जाय।

यह तो शिक्षित क्षेत्रकी बात रही। परन्तु हमें भूलना नहीं चाहिए कि अभी तो देशमें अविद्यांधकार है; नब्बे प्रतिशत व्यक्ति लिखना पढ़ना ही नहीं जानते, वे साहित्यसे प्रत्यक्ष लाभ नहीं उठा सकते। उनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती, उनमें भी समाजशास्त्रकी बातोंका प्रचार करना है। समाजशास्त्र-प्रेमियोंको चाहिए कि जब-जब सम्भव हो, कुछ व्यक्तियोंकी सभा या मंडलीमें अच्छी-अच्छी पुस्तकें पढ़ कर सुनावें, या उनके आधार पर अथवा अन्य रूपमें भाषण दें, और जनताको ये विषय समझावें तथा इनकी ओर उनकी रुचि बढ़ावें। हम लोग कवि सम्मेलन और कहानी सम्मेलन करते हैं, क्या अर्थशास्त्र सम्मेलन, राजनीति सम्मेलन या नागरिकता सम्मेलनकी योजना हमारी योग्यता या सामर्थ्यसे बाहरकी बात है? और ऐसा कब तक रहेगा?

अस्तु, शिक्षित हों या अशिक्षित, युवक हों या प्रौढ़, पुरुष हों या स्त्रियाँ, हमें सब व्यक्तियोंमें गली-गली और घर-घर समाजशास्त्र का प्रचार करना है। समाजके उत्थानके लिए कुछ व्यक्तियोंके आश्रित रहनेसे काम न चलेगा, नेताओं द्वारा हमारा केवल पथप्रदर्शन हो सकता है। समाज का निर्माण तो उसके समस्त व्यक्तियोंसे होता है। अभागा है वह समाज, जिसके औसत व्यक्ति का ज्ञान बहुत निम्न कोटि का हो, चाहे उसमें दो चार महानुभाव कितने ही विद्वान और सुप्रसिद्ध क्यों न हों। हमें, अपने सर्व साधारण का ज्ञान-बल बढ़ाकर ही समाजके सुन्दर भविष्य की आशा करनी चाहिए। समाजशास्त्र-परिषद् कुछ ऐसे व्यक्ति दे, जो समाजके उत्थानके लिए अपने आपको मिटा देनेके लिए तैयार रहें, जिनके जीवन का लक्ष्य एकमात्र समाजशास्त्र का प्रचार हो, वे जहाँ जावें, जहाँ रहें, सर्वत्र समाजशास्त्रकी जीवित जागृत विज्ञप्ति हों, वे दुख, दीनता और संघर्षका अन्त करें और सर्वत्र सुख, शान्ति, प्रेम और परोपकारका प्रचार करें। तभी यह परिषद् सफल होगी, और सफल होगा उसका जनक, हिन्दी साहित्य सम्मेलन।

(पृष्ठ १८ का शेषांश)

बिड़लाके बारेमें जो खास बात मालूम हुई है वह यह कि-" मैंने जो किया है वह विचारपूर्वक किया है। अब भी मेरे विचार वही हैं।" ऐसा उन्होंने अपने भाईसे कहा। लेकिन आपका आग्रह ही है, आप पंचायतमें मेरे बारेमें जो कहोगे उसे मैं आपके समाधानके लिये भर सकूंगा। दूसरे दिन जब अन्य लोग जो रामनाथजी जाजूके यहाँके जलसेमें थे और जो लोग इन सनातनियोंसे मिलेंगे ऐसा उन्हें लगता था, उनके उस प्रस्तावपर हस्ताक्षर लेनेके लिये अपनेको बड़े न्यायी समझनेवाले सनातनी गये, तब बहुतसे लोगोंने हस्ताक्षर देनेसे इन्कार किया। इन इनकार करनेवालोंमें यहाँके एक प्रतिष्ठित सनातनी श्री रघुनाथजी बिड़लाके काका श्री हीराचंदजी बिड़लाने ठेकेदारोंको खूब सुनायी। उन्होंने कहा—" मुझे ऐसा विवाह होना बिल्कुल नापसंद है। लेकिन आपने जो न्याय दिया है वह मुझे बिलकुल मंजूर नहीं हैं। मेरा हस्ताक्षर आप यदि चाहते हैं, तो न्याय इन्साफ ठीक करो। श्री रघुनाथजी पंचोंके सामने आकर जब माफ़ी माँगेंगे तभी उन्हें माफी दी जाय। यही मेरी राय है। और इसके मुताबिक न्याय करेंगे तो ही मैं आपमें शामिल होऊँगा। अन्यथा मैं किसीमें भी शामिल न रहूँगा।" लेकिन उनकी न सुनकर पंचोंने अपना ही घोड़ा आगे चलाया।

नवयुवकोंको तंग करनेके लिये ठेकेदार सनातनी पंचोंने अन्यायकी हद कर दी खानदेशमें माहेश्वरियोंकी सात पेठ हैं। सभी जगह पुनर्विवाहमें शामिल होनेवालोंसे, वे पुनर्विवाहमें शामिल हुए हैं इस लिये खानपानादि व्यवहार बंद किया जाय-ऐसी चिट्ठी सकल पंच माहेश्वरी एरण्डोलके नामसे भेजी गई। जिन लोगोंने एरण्डेलके माहेश्वरियोंके ५० घरोंमेंसे आधे घर भी शामिल नहीं है उनका सकल पंच माहेश्वरीके नामसे चिट्ठी भेजना ठेकेदारोंके न्यायकी सीमा है या बुद्धि की? या एरण्डोलकी माहेश्वरी पंचायतको वे अपनी इच्छानुसार बर्ताव करनेवाली सभा या दासी समझते हैं?

विवाह— मनोवैज्ञानिक दृष्टिसे

मनोवैज्ञानिक सम्बन्धकी दृष्टिसे विवाह सबसे अधिक जटिल सम्बन्ध है । आन्तरिक और बाह्य (आत्मिक और सांसारिक) सत्योंकी, जो एक दूसरेसे प्रवृत्तिमें सर्वथा विभिन्न हैं, एक पूर्ण श्रृंखलासे वह बना है । यहां मैं विवाहकी केवल मनोवैज्ञानिक समस्यापर ही विचार करूंगा और इसमेंसे भी कानूनी और सामाजिक सत्योंका एक बड़ा भाग मैं छोड़ दूंगा, यद्यपि यह सच है कि दो साथियोंके मनोवैज्ञानिक सम्बन्धपर इसका भी बहुत असर होता है ।

मनोवैज्ञानिक सम्बन्धकी चर्चा करनेसे पूर्व ही अभिज्ञताकी कल्पना हम कर लेते हैं । दो पुरुषोंमें अनभिज्ञताकी अवस्थामें कभी मनोवैज्ञानिक सम्बन्ध नहीं हो सकता । मनोवैज्ञानिक दृष्टिसे वे सम्बन्धहीन बने रहेंगे । हो सकता है कि उनमें परस्पर कोई अन्य सम्बन्ध हो, उदाहरणार्थ शारीरिक, किन्तु वह मनोवैज्ञानिक सम्बन्ध नहीं कहा जा सकता । पूर्ण अनभिज्ञता तो कभी सम्भव ही नहीं, पर आंशिक अनभिज्ञता अवश्य रहती है और वह भी इतनी कि उसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती । मनोवैज्ञानिक सबन्ध भी उसी दर्जेतक हो सकता है जिस दर्जे तक यह अनभिज्ञता रहती है ।

बच्चेमें अभिज्ञता—चेतना (Consciousness)—अज्ञात मानसिक जीवनकी गहराइयोंमेंसे अलग द्वीपोंकी तरह ऊपर उठती है जो कि धीमे-धीमे उन द्वीपोंसे मिलकर बने हुए एक महाद्वीपकी तरह एक परस्पर सम्बद्ध चेतनताका रूप धारण कर लेती है।मानसिक विकासकी क्रमिक प्रक्रियाका अर्थ है चेतना (ज्ञान) का प्रसार । परस्पर सम्बद्ध चेतनाके पैदा हो जानेपर फिर मनोवैज्ञानिक सम्बन्ध सम्भव हो जाता है । जहांतक हमारा चेतनाके बारेमें ज्ञान है, उसका अर्थ आत्म-ज्ञान (अपने सम्बन्धमें ज्ञान) होता है । अपने बारेमें सज्ञान होनेके लिए मुझे अपनेमें और दूसरोंमें भेद कर सकना चाहिए । जहां यह अपने और दूसरेका भेद मौजूद है वहीं दोका सम्बन्ध हो सकता है । यह आम विभेद कर तो लिया जाता है किन्तु सामान्यतः यह अपूर्ण होता है क्योंकि मानसिक जीवनकी ऐसी बहुत सी चौड़ी श्रृंखलाएं हैं जो सर्वथा अज्ञात हैं । अज्ञात वस्तुओंमें भेद नहीं किया जा सकता, इसलिए उनके क्षेत्रमें सम्बन्ध भी (जो भिन्न वस्तुओंमें ही सम्भव है) कायम नहीं हो सकता । उनके क्षेत्रमें अपने और दूसरेमें एकत्त्व या अविभेद करने की आदिम काल की प्रारम्भिक अचेतन अवस्था अब भी मौजूद है अर्थात् वहां कोई भी सम्बन्ध सम्भव नहीं ।

विवाहके योग्य अवस्था आजानेपर तरुण व्यक्तिमें आत्म-ज्ञान (अपने सम्बन्धमें ज्ञान) होता है (यह बात आम तौर पर युवा पुरुष की अपेक्षा युवती स्त्रीके लिए अधिक सत्य है) पर अचेतनताकी आदिम अवस्थाके बीचमें यह ज्यादा ऊंचा नहीं उठा । इसलिए अब भी वहां ऐसे विस्तीर्ण क्षेत्र हैं जो अचेतनता (अज्ञान) की छायासे ढके हुए हैं और अपनी सीमाके भीतर वे कोई मनोवैज्ञानिक सम्बन्ध होने नहीं देते । इसका व्यवहारिक दृष्टिसे अर्थ यह होगा कि अल्प आयुके मनुष्य को अपने और दूसरोंके सम्बन्धमें बहुत अपूर्ण ज्ञान होता है और इसीलिए उसे अपने और दूसरोंके मनोभावों का भी पर्याप्त ज्ञान नहीं होता । इसलिए वह हमेशा अज्ञात मनोभावोंके आधारपर ही चलता है । इसमें शक नहीं कि अपने आपको वह वास्तविकसे बहुत अधिक चेतन (अभिज्ञ) समझता है क्योंकि हरेक व्यक्ति अपनी चेतनता की क्षणिक अवस्थाकी वास्तविकता को बहुत अधिक आंकता है और इसीलिए यह देखकर उसके आश्चर्य की सीमा नहीं रहती कि जिसे वह सबसे ऊंची सीढ़ी समझकर चढ़ता है, वह अन्तमें लम्बी सीढ़ीका सबसे निचला कदम साबित होती है । अनभिज्ञताका क्षेत्र जितना चौड़ा होता है विवाहमें स्वतंन्त्र चुनाव उतना ही कम होता है । अपनी ही दृष्टिसे देखें तो विवाहित पुरुषों को मालूम होता है कि उनका प्रेम निश्चित रूपसे इस कारणसे ही नष्ट हो गया है । जहां तीव्र प्रेम नहीं रहता वहां बन्धन तो फिर भी रह सकता है परन्तु वह उतना वांछनीय नहीं होता ।

अज्ञात मनोभाव व्यक्तिगत और सामान्य दोनों प्रकारके होते हैं । व्यक्तिगत मनोभाव वे हैं जो पैतृक प्रभावसे उत्पन्न होते हैं । इन मनोभावोंमें जवान पुरुष का अपनी मांके साथ और जवान स्त्री का अपने पिताके साथ रहनेवाला सम्बन्ध अन्तिम निर्णायक होता है । सर्वप्रथम मां-बापके साथ सम्बन्ध अज्ञात रूपसे संगीके चुनावपर असर डालता है, या तो वह उसमें वृद्धि करता है या उसमें बाधा डालता है । पिता और माताका ज्ञात (अनुभूत) प्रेम एक ऐसे संगीके चुनावकी प्रवृत्ति बढ़ाता है जो उस माता या उस पिताके सदृश हों, जब कि एक अज्ञात श्रृंखला (आवश्यक नहीं कि वह चेतनरूपसे प्रेमके रूपमें प्रकट ही हो) इस प्रकारके चुनावको कठिन बना देती है और फलस्वरूप उसमें बहुतसे परिवर्त्तन हो जाते हैं । यह बात तब तक नहीं समझी जा सकती जब तक कि हम यह न जान लें कि माता-पिताके साथ अज्ञात शृंखला कहां उत्पन्न हुई है और किन अवस्थाओंमें आदेशात्मक रूपसे चेतनापूर्ण चुनावके परिवर्त्तन पैदा करेगी या चुनावको रोक ही देगी । वास्तवमें माता-पितामें जो कुछ कृत्रिमतासे दबा दिया जाता है वही एक अवरुद्ध रूपमें सन्तानोंमें संक्रान्त हो जाता है, अर्थात माता-पिताके जीवनमें जो वस्तु अपूर्ण रह गयी थी उसकी पूर्तिके लिए अज्ञात रूपसे वे एक विशेष जीवनकी दिशामें प्रवृत्त हो जाते हैं । यही कारण है कि आवश्यकतासे अधिक नैतिकता और सदाचारका पालन करनेवाले माता-पिताओंकी सन्तानें तथाकथित अनैतिक व दुराचारी होती हैं और गैरज़िम्मेदार और अहदी माता-पिताओंकी सन्तानों में इतनी तीव्र महत्वाकांक्षाएं पैदा हो जाती हैं कि वे रुग्ण और दूषित अवस्थामें पहुंच जाती हैं । मां-बाप जिस कृत्रिम तरीके से जान बूझकर अपनेको अचेतन या अनभिज्ञ रखते हैं, सबसे अधिक ख़राब परिणाम, इसी से पैदा होते हैं । उदाहरणार्थ जो स्त्री केवल इस लिए अपने को जान बूझकर अचेतन बनाये रहती है कि उसके विवाहकी सुखपूर्णता नष्ट हुई न दीखे, वह अपने पुत्रको अपने पतिके अभावकी पूत्तिके लिए अपने साथ रखती है । इसका परिणाम, चाहे वह सीधा न हो, यह होता है कि लड़का सजातीयके प्रति वासना रखने लगता है, कमसे कम उसके चुनावमें ऐसा परिवर्त्तन जरूर हो जाता है जो उसके चरित्रसे वस्तुतः मिलता नहीं । उदाहरणके लिए वह ऐसी लड़की से विवाह करेगा जो उसकी मांके बराबर न हो, परिणाम यह होगा कि वह उसकी मांका मुकाबला नहीं कर सकेगी, अथवा यह भी सम्भव है कि वह ऐसी स्त्रीके हाथोंमें पड़ जाय जो ज़ालिम और अभिमानिनी हो, जो उसे उसकी मांसे छीन सके। मनुष्य की स्वभावगत भावनाएं यदि पंगु न कर दी गयी हों तो सम्भव है चुनाव को इन प्रभावों से मुक्त रखें पर कुछ न कुछ समय बाद वह बाधा मालूम पड़ने लगेंगी । जाति रक्षाके दृष्टिकोण से थोड़ा बहुत स्वभाविक चुनाव ही सब से अच्छा है पर मनोवैज्ञानिक सम्बन्ध की दृष्टिसे आवश्यक नहीं कि वह सुखपरिणामी ही हो क्योंकि स्वाभाविक और व्यक्तिगत व्यक्तित्वमें प्रायः बहुत अधिक अन्तर होता है । ऐसी अवस्थामें जाति को विशुद्ध स्वाभाविक चुनावसे सुधारा या पुनरुज्जीवित किया जा सकता है पर इसमें वैयक्तिक सुखका गला घुंट जायगा । स्वभाव (Instinct) निःसन्देह सब प्रकारके ऐन्द्रियिक और मानसिक कारणों का संयुक्त नाम है जो प्रायः हमसे अज्ञात रहते हैं ।

यदि हम व्यक्तिको जाति-रक्षाका ही एक साधन समझें तब तो स्वाभाविक चुनाव सबसे अच्छा है । परन्तु क्योंकि इसकी बुनियादें अज्ञात हैं, इससे एक प्रकारके अवैक्तिक सम्बन्धसे अच्छा सम्बन्ध स्थापित नहीं हो सकता, जैसा कि असभ्य आदिम लोगोंमें पाया जाता है । जहां तक इसके बारेमें " सम्बन्ध की अवस्था " का वर्णन हो सकता है, यह एक अत्यन्त अस्पष्ट और दूरस्थ सम्बन्ध है जो अवैयक्तिक है और जिसमें आदतों, रिवाजों और पक्षपातका शासन है—ठीक उसी प्रकार जैसा कि रूढ़िविवाह होता है।

यदि बच्चोंका विवाह माता-पिताके तर्क, बुद्धि या तथा कथित विचारपूर्ण प्रेमसे व्यवस्थित नहीं होता और यदि बच्चोंका आदिम स्वभाव स्वयं दबायी हुई या उपेक्षित माता-पिताकी गुप्त भावनाओंसे प्रभावसे पंगु नहीं बना दिया जाता तब साथीका चुनाव अज्ञात स्वाभाविक मनोभावनाका ही परिणाम होगा ।

अनभिज्ञता किसी वस्तुकी विभेद भावनाको नष्ट कर देती है अर्थात् अज्ञात रूपसे हरेक वस्तु एकत्वकी ही द्योतक होती है । नतीजा यह होता है कि मनुष्य दूसरेकी मनोवैज्ञानिक रचनाको भी वैसी ही समझता है जैसी कि उसकी अपनी है । एकता और संयुक्तताकी यह अनुभूति और भी प्रबल हो जाती है जब लोग देखते हैं कि सामान्य लैंगिक वासना पारस्परिक वस्तु है और देखनेमें अनुभवकी दृष्टिसे दोनोंके लिए उसका मूल्य समान है। इस अवस्थाको पूर्ण साम्यावस्था कहा जाता है और महान् सुखके रूपमें उसे समझा जा सकता है जो कि ठीक ही है । दोनों की आत्मा एक हो जाती है और हृदय भी एक हो जाता है । क्योंकि अचेतनता और अज्ञात एकता की उस स्वाभाविक अवस्थामें लौटना बचपनमें लौटनेके सदृश है (प्रेमियोंमें बचपनेका सा व्यवहार पाया भी जाता है) । यह भी कहा जा सकता है कि यह मांके गर्भमें, और भी अधिक अज्ञात उत्पादक पूर्णताकी सम्भावनाओंकी बहुलतामें लौटना है । सचमुच ही यह वास्तविक और सत्य दैवीय अनुभव है जिसकी शक्तिका उद्वेग उस सबको पोंछ देता है जो वैयक्तिक है । यह जीवन और व्यक्तित्वसे रहित भाग्यके साथ सच्ची तदात्मता है । स्वार्थकी इच्छा जो अपने ही

★ सी. जी. युंग ★

ऊपर झुकी होती है, टूट जाती है; स्त्री बन जाती है माता और पुरुष बन जाता है पिता। और इस प्रकार दोनों अपनी स्वतन्त्रता खो देते हैं और उन्नतिशील जीवनके केवल साधन बन जाते हैं।

इस प्रकारका सम्बन्ध प्राणिशास्त्र की दृष्टिसे स्वाभाविक जातिविकासके उद्देश्यकी सीमाओंमें रहता है। और क्योंकि यह उद्देश्य सामूहिक ढंगका है इसलिए संगियोंके मनोवैज्ञानिक सम्बन्ध प्रधानतः सामूहिक ढंगके होते हैं और उन्हें व्यक्तिगत सम्बन्ध नहीं कहा जा सकता। यह (वैयक्तिक) सम्बन्ध केवल वहीं हो सकता है जहां अज्ञात मनोभावना कैसी है यह जान लिया गया और प्रारम्भिक एकता खत्म हो गयी हो। कोई भी विवाह बिना किसी खास संकटके व्यक्तिगत सम्बन्धमें परिणत नहीं हो सकता। बिना पीड़ाके मनुष्य चेतनामें नहीं पहुंचता। चेतना (ज्ञान) में पहुंचनेके अनेक रास्ते हैं पर इन सबके कुछ आम कायदे हैं। परिवर्त्तन, नियमतः, जीवनके उत्तरार्धसे शुरू होता है। जीवनका मध्यभाग मनोवैज्ञानिक दृष्टिसे सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। बच्चा अपना मनोवैज्ञानिक जीवन मां और परिवारके संकुचित दायरेमें शुरू करता है। व्यक्तिगत प्रभावका क्षितिज और क्षेत्र इसके विकासके साथ २ विस्तृत होते जाते हैं। आशा और इच्छाका लक्ष्य व्यक्तिगत शक्ति और सम्पात्तिके क्षेत्रका विस्तार हो जाता है, इच्छा संसारमें विस्तृत होने लगती है। व्यक्तिकी इच्छा अज्ञात मनोभावोंके स्वाभाविक उद्देश्योंके साथ अधिकाधिक एक होने लगती है। इस प्रकार मनुष्य वस्तुओंमें जीवन फूंकने लगता है जब तक कि वे स्वयं अपना जीवन जीने और बढ़ने नही लगतीं और अज्ञात रूपसे वे उस पर हावी हो जाती हैं। माताओंका स्थान बच्चे ले लेते हैं और मनुष्योंका स्थान उनकी सृष्टि। और जो वस्तु अपरिमित शक्तिसे पैदाकी गयी है वह अपने मार्ग और वृद्धिमें रोकी नहीं जा सकती। प्रारम्भमें जो वासना होती है वह कर्त्तव्य बन जाती है और अन्तमें वही एक अवहनीय भार हो जाती है—एक ऐसा भूत बन जाती है जो अपने रचयिताका ही रक्त चूसने लगता है। जीवनका मध्य भाग विस्तारका सबसे महान् क्षण है जब कि मनुष्य अपनी पूर्ण शक्ति और इच्छाके साथ कर्म निरत हो जाता है। पर यही क्षण सन्ध्या बन जाता है और जीवनका उत्तरार्ध शुरु हो जाता है। वासना (प्रेम) चेहरा बदल कर कर्त्तव्य बन जाती है चुनाव अतृप्त आवश्यकता बन जाता है और रास्तेके मोड़ और घुमाव जो पहले अद्भुत और नवीन मालूम होते थे सामन्य आदतमें दाखिल हो जाते है। मदिरामें खमीर उठना बन्द हो जाता है और वह निर्मल होते लगती है। यदि और सब कुछ ठीक हो तो मनुष्य अनुदार प्रकृतिका होने लगता है। आगे देखनेकी अपेक्षा वह बिना चाहे ही पीछे देखने लगता है और अपने समस्त अतीत जीवनकी व्याख्या करने लगता है। वह अपनी सच्ची मनोभावनाओंको ढूंढने की कोशिश करता है और इस प्रकार गवेषणाएँ करता है। मनुष्य अपने निजी व्यक्तित्वको स्वयं अपने और अपने भाग्यके आलोचनापूर्ण विचारमें जानना सीखता है। पर उसका ज्ञान उसे आसानीसे नहीं होता। केवल प्रबल धक्के ही ऐसे ज्ञानपर पहुंचाते हैं। बहुत देर तक यौवनके स्वैर्य्येको कायम रखनेसे इच्छाओंका भी विभाजन होने लगता है क्योंकि जीवनके उत्तरार्धके उद्देश्य पूर्वार्धसे सर्वथा भिन्न होते हैं। चेतना आगे बढ़ती जाती है मानों वह स्वयं अपनी ही जड़ता रही हो, पर अज्ञान पीछे लटकते रह जाते हैं क्योंकि शक्ति और इच्छा और अधिक विस्तीर्ण नहीं हो सकते। यह विभाजन अपने ही भीतर असन्तोषका बीज बो देता हैं और अपनी ही स्थिति से अनाभिज्ञ होने के कारण मनुष्य उस असन्तोष के निदान अपने साथीमें ढूंढने लगता है। परिणाम यह होता है कि परस्पर एक दूसरेकी आलोचना से नाजुक हालत पैदा हो जाती है। किन्तु यदि चेतना (अभिज्ञता) पैदा होती है तो यह आवश्यक अवस्था है। यह अवस्था एक ही साथ दोनों साथियोंमें प्रकट नहीं होती। श्रेष्ठ विवाह भी एक ही साथ दोनों साथियोंमे व्यक्तिगत विभेदोंको दूर नहीं कर सकते। आम तौरपर, दोनोंमेसे एक दूसरेकी अपेक्षा विवाहसे अधिक सन्तुष्ट होगा। माता-पिता के साथ एक निश्चित सम्बन्ध संगीके साथ अनुकूलताको सरल बना देगा, जब कि एक गहरी जड़ जमाए हुए अवस्थित मां-बापके साथ बंधी अज्ञात श्रृंखला इस अनुकूलतामें बाधा साबित होगी। इस अवस्थामें पूर्ण अनुकूलता देर से आयेगी और क्यों कि इसकी उपलब्धि कठिनाई से होगी, अतः यह अधिक स्थायी साबित हो सकेगी। एक तरफ मानसिक प्रबलतामें विभिन्नताएं और दूसरी तरफ मानसिक व्यक्तित्वका क्षेत्र एक खास कठिनाई पैदा कर देते हैं जो नाजुक क्षणमें अपनी पूर्ण शक्ति प्रकट करती है।

जब मैं एक विशाल "मानसिक व्यक्तित्व का क्षेत्र"—ऐसा कहता हूं तब मेरा आशय हमेशा खास तौरसे समृद्ध और बड़ी प्रकृतियोंसे नहीं होता। मेरा आशय अधिकतर मानसिक रचना की जटिलता से होता है—साधारण मानसिक रचना और इस जटिल रचनामें वही भेद है जो एक साधारण घनाकृति पत्थर और बहुपृष्ठ्युक्त पत्थरमें होता है। यह ऐसी जटिल प्रकृतियां होती हैं जिनके अनेक पार्श्व होते हैं जो प्रायः दुरूह और ऐसी वंशानुगत प्रकृतियों से बनी होती हैं जिनके साथ अनुकूलता स्थापित करना सरल नहीं। ऐसी जटिल (या कठिन) प्रकृतियोंके साथ मेल बिठाना या इन जटिल प्रकृतियों का सरल (Simple) प्रकृतियों से मेल बिठाना हमेशा कठिन ही रहेगा। जिन लोगोंमें इस प्रकार की विभिन्न प्रकृतियां होती हैं उनमें यह ईश्वर प्रदत्त शक्ति रहती है कि वे कुछ समय तक स्वभावें की मेल न खानेवाली आदतों को दूर कर देते हैं और इस प्रकार देखनेमें सरल बन जाते हैं अथवा उनकी बहुमुखता, उनका परिवर्तमान स्वभाव ही उनका एक विशेष आकर्षण साबित होता है। दूसरा साथी इस प्रकारकी जटिल प्रकृतिके लोगोंमें आसानीसे अपनेको खो सकता है। कहनेका अभिप्राय यह कि उसे उन प्रकृतियोंसे अनुभवकी इतनी सम्भावनाओंकी आशा रहती है कि उसकी अपनी दिलचस्पी उसीमें पूरी तरहसे लग जाती है: सम्भव है उसके साथ, अपनेको खोकर मिल जाना सर्वथा वांछनीय और अनुकूल तरीकेसे न हो क्योंकि वह उसे हरेक परिवर्तन और घुमाव पर कुरेदना चाहेगा फिर भी इतने अधिक अनुभव सम्भव हैं कि सरलतर व्यक्तित्व उनसे घिर जायगा और सम्भव है उनमें फंस ही जाय। वह बृहत्तर व्यक्तित्वमें डूब जायगा, वह उससे परे देख ही नहीं सकेगा। होता हमेशा यह है कि स्त्री मानसिक दृष्टिसे पूरी तरह अपने पतिमें समा जाती है और मनुष्य भावुकताकी दृष्टिसे पूरी तरह अपनी पत्नीमें समा जाता है। इसे समा लेनेवाले और समा जाने वाले की समस्या भी कहा जा सकता हैं।

समाजानेवाला प्रायः अपना समस्त जीवन विवाहके भीतर ही बिता देता है। वह अपने साथीकी तरफ अविभक्त (पूर्ण) ध्यानसे मुखातिब होता है, बाह्य संसारके लिए उसके कोई कर्त्तव्य नहीं, कोई स्वार्थ बन्धन नहीं। इस "आदर्श" स्थितिमें एक मात्र अवांछनीय वस्तु यही है कि उसे एक ऐसे व्यक्तिपर निर्भर रहना होता है जो उसकी पहुंचसे बाहर है इसीलिए विश्वसनीय नहीं और यह वस्तु उसे अशान्त बना देती है। फिर भी एक बड़ा लाभ है कि वह स्वयं अविभक्त है—यह एक सत्य है जिसका मानसिक अर्थशास्त्रमें कम मूल्य नहीं।

समा लेनेवाला, निःसन्देह, अविभक्त प्रेममें दूसरे (साथी) के साथ एक होनेके प्रयत्नमें सरल प्रकृतिका हो जाता है और क्योंकि उसमें कुछ विभिन्न प्रकृतियां हैं अतः उसे इसकी आवश्यकता भी अधिक है। अपने साथीमें उन तमाम सूक्ष्म या दुर्लभ मर्यादाओं और पेचीदगियोंको ढूंढनेके प्रयत्नमें, जिनसे उसकी अपनी बहुमुखीन प्रकृतियोंकी पूर्त्ति या मुकाबला हो सके, वह उसकी सरलताको विक्षुब्ध कर देता है। किन्तु आम परिस्थितियोंमें सरलता पेचीदापनसे अधिक अच्छी है इसलिए वह यदि दुर्लभ और गहन प्रतिक्रियाओंको पैदा करनेका प्रयत्न करेगा तो भी वह प्रयत्न शीघ्र ही छूट जायगा। उसका साथी जल्दी ही अपनी सरल प्रकृतिके अनुसार उससे सरल प्रत्युत्तर पायेगा और उन सरल प्रत्युत्तरोंकी आशामें उसे काफ़ी घेर लेगा। उसकी इच्छा हो या नहीं, सरलताकी प्रबल शक्तिके आगे उसे झुकना होगा। मानसिक प्रयत्न (सामान्यतः चेतनताकी प्रक्रिया) के लिए मनुष्यको इतनी चेष्टाकी आवश्यकता है कि हरेक परिस्थितिमें वह सरलताको ही पसन्द करता है चाहे वह वास्तविक और सच्ची न भी हो। किन्तु यदि यह वास्तविक नहीं तो वह उसका गुलाम बन जाता है।

पेचीदा प्रकृतिके ऊपर सरल प्रकृतिका एक छोटे कमरे जैसा असर होता है जो उसे रहनेके लिए बहुत थोड़ा स्थान देता है। उसके विपरीत पेचीदा प्रकृति सरल प्रकृतिको इतने कमरे दे देती है और उनमें इतना स्थान होता है कि उसके लिए यह निश्चय करना भी कठिन हो जाता है कि उसका अपना निवास किसमें है। परिणाम स्वभावतः यह होता है कि जो अधिक पेचीदा प्रकृति वाला है वह सरल प्रकृति वालेको अपने भीतर समा सकता है। वह उसे घेर लेता है पर स्वयं न तो उससे घिरता है और न भरता ही। फिर भी हो सकता है कि उसे स्वयं समाजानेकी अधिक आवश्यकता हो इसीसे कभी-कभी वह महसूस करता है कि उसका विवाह ही नहीं हुआ और ऐसा पार्ट अदा करता है जो समझमें नहीं आता। जितना-जितना समा जानेवाला चिपटता है समालेनेवाला उतना उतना अपनेको दूर फेंका जाता हुआ महसूस करता है। चिपटे रहनेसे समाजानेवाला समालेनेवालेके भीतर घुसता जाता है और जितना-जितना वह अधिक भीतर घुसता है दूसरेके लिए उतना ही उतना स्वयं प्रवेश करना दुष्कर होता जाता है। इस लिए समा लेनेवाला हमेशा कुछ न कुछ खिड़कियोंसे बाहर झांकता है, चाहे वह प्रारम्भमें बिना जाने झांकता हो। किन्तु जब जीवनका मध्य आ जाता है तब उसमें एकता और अविभक्तताकी जो उसकी विभिन्न-प्रकृतिकताके कारण उसके लिए अत्यन्त आवश्यक हैं प्रबल आकांक्षा उठती है। और आम तौर पर तभी वह इस अन्तर्द्वन्द्वको जान पाता है। उसे इस तथ्याका पता लगता है कि वह चिरकालसे पूर्णताको खोज रहा है और उसे किसीके भीतर समाकर पूर्ण और अविभक्त हो जानेमें सफलता नहीं मिली। जो पहले ही समाकर पूर्ण हो चुका है उसे पहले पहल ऐसा लगता है मानों यह घटना उसकी असुरक्षा का पोषक प्रमाण है जिसे वह चिरकालसे बड़ी व्यथासे अनुभव करता रहा है। उसे जान पड़ता है मानों भवनके भीतर ऐसे भी लोग बैठे हैं जो उसे अपने प्रतीत होते थे परन्तु वास्तवमें उसके लिए अवांछनीय अतिथि हैं। सुरक्षा की आशा जाती रहती है और यह निराशा उसे अपने ही ऊपर धकेल देती है यदि निराश व्यक्तिके अन्तिम और प्रबल प्रयत्नोंसे वह दूसरे संगीको यह स्वीकार करनेके लिए मजबूर न कर दे कि उसकी एकत्वकी इच्छा एक बचपना या दूषित विचार मात्र है। और यदि यह प्रबल प्रयत्न निष्फल हो जाय तो भी

[शेष पृष्ठ २४ के कालम १ पर]

राय साहेब रेखचंद गोपालदास मोहता

स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स

अकोला (बरार)

तारका पताः—"MOHOTA"

टेलिफोन नं. ३४ और ५६

बरार की सबसे बड़ी और खुद मालिकी की एकमात्र अप-टु-डेट मिल

★ ★ ★ ★

इस मिलमें सब तरहका कोरा, धुला व रंगीन शुद्ध स्वदेशी कपड़ा व सूत तैयार होता है।

प्रोप्रायटर
सेठ गोपालदास मोहता, एम्. एल. ए. हिंगणघाट.
बैंकर, लैण्डलॉर्ड, टेक्सटाईल, आईल एण्ड राईस मिल्स व जिनिंग एण्ड प्रेसिंग फेक्टरियोंके मालिक

प्रेसिडेण्टः—
सी. पी. एण्ड बरार फेक्टरी ओनर्स एसोसिएशन

सम्पूर्ण रूपसे
- ● भारतीय पूंजी ●
- ● भारतीय श्रम ●
- ● भारतीय प्रबन्ध ●

सस्ता व टिकाऊ होनेसे भारतके प्रत्येक विभागमें हमारा कपड़ा उपयोगमें लाया जाता है

हमारे कन्सर्न्स

फैक्टरियाँ

राय साहेब रेखचंद गोपालदास जिनिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्टरी, अकोला

राय साहेब रेखचंद गोपालदास जिनिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्टरी, वर्धा

बुलाकीदास गोपालदास जिनिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्टरी, हिंगनघाट

दूकानें

भीखणचंद रेखचंद (हैड आफिस) हिंगणघाट

राय साहेब रेखचंद गोपालदास, वर्धा

गोपालदास घनश्यामदास, राजनांदगाँव

हमारे मैनेजमैण्ट के लिमिटेड कन्सर्न्स

लक्ष्मी बैंक लिमिटेड, अकोला
सी. पी. एण्ड बरार की एक मात्र
(शैड्यूल बैंक)
व क्रियरिंग साधनों से युक्त
शाखाएँः—बम्बई, नागपुर (इतवारी), नागपुर (सीताबर्डी), रायपुर, अमरावती, खामगाँव और गोन्दिया.

श्री गणेश आईल मिल्स लि. गोन्दिया.
इस मिलका शुद्ध व सस्ता तेल भारत भरमें प्रसिद्ध है

गोपालदास मोहता एण्ड कं. लि.
शाखाएँः—अकोला, नागपुर और गोन्दिया
इस कम्पनीमें सब तरहके कपडे व सूतका काम होता है।

बुलाकीदास मोहता एँण्ड कं. लि. अकोला.
यह कम्पनी कई कम्पनियों की मैनेजिंग एजेण्ट व मैनेजिंग डाइरेक्टर है।

नेशनल कमर्शियल कारपोरेशन लि.
अकोला बम्बई खामगाँव
इसके डिपार्टमेण्ट्सः—काटन जत्था, मिल व जिनस्टोर्स बीमा व अन्यान्य एजेन्सियें

एडवान्स ट्रेडिंग कम्पनी लि. अकोला
इस कम्पनीमें रुई, सरकी व अनाज वगैरे के कमिशन का काम होता है।

★ देश विदेशकी चर्चा ★

सुदूर पूर्व में युद्ध की प्रगति

सदूर पूर्वमें जापानकी आक्रमणकी प्रगति दिन-दिन बढ़ती जा रही है। प्रशान्त महासागरमें एक भी द्वीप प्रायः नहीं बचा जो जापानके आक्रमणोंसे सुरक्षित हो। जापानियोंने हांगकांग को सर कर लिया है। ब्रिटिश प्रधानमन्त्री मि. चर्चिलका पार्लिमेंटमें बयान था कि हांगकांग अन्तिम दम तक रक्षाके लिए लड़ेगा और दोमासतक किसी भी तरह जापानके हाथमें उसका पतन होना सम्भव नहीं किन्तु १५ दिनके भीषण संग्रामके बाद जापानियों की १२ घण्टे की निरन्तर बमवर्षा और मशीनगनोंके निशानोंके आगे विवश होकर उन्हें आत्मसमर्पण कर देना पड़ा। प्रशान्त महासागरमें जो हांगकांग ब्रिटेनका सबसे सुदृढ़ किला समझा जाता था आज जापानके पावों के नीचे दब गया है।

वेक, गुआम आदि द्वीपोंपर भी जापानने पूरी तरह अधिकार कर लिया है। जापानके शास्त्रास्त्रोंका वहां शासन है। रहा फिलिपाइन—उसकी राजधानी मैनीला पर जापानका अधिकार हो गया है। शेष फिलिपाइन द्वीप समूहके अधिकांशपर तो उनका पहले ही अधिकार हो गया था।

इधर सुमात्रा पर भी जापानी हवाई जहाजोंने भीषण बमवर्षा की है। हताहतोंकी संख्या काफ़ी है। उत्तरी बोर्नियोका सरावक प्रदेश साराका सारा जापानी फौजोंके हाथोंमें चला गया है।

मलायाकी स्थिति भी दिन-दिन खतरनाक होती जा रही है। जापानी फौजें आगे ही आगे बढ़ रही हैं। पेनांगका पतन हो ही चुका है। उसके बाद पेराक नदीको लांघकर जापानी फौजोंने इपोह नगर पर भी अधिकार कर लिया है। कहा जाता है कि इपोहका पतन जापानियोंके लिए अत्यन्त महत्व रखता है। इपोहको मलायाकी 'टिन कैपिटल' कहा जाता है जिसका आशय है कि इपोहके जापानियोंके हाथमें जानेसे टीनकी खानें और उद्योग उनको मिल जायंगे। दूसरी तरफ कुआन्तन प्रदेश है जिसपर खतरा दिन-दिन बढ़ रहा है। कोटा बाहरूकी तरफसे जलमार्गसे भी जापानी फौजें इस प्रदेशमें आरही हैं। इस दशामें सिंगापुर पर संकटके बादल मंडरा रहे हैं। उसकी रक्षाका प्रश्न सुदूरपूर्वमें यूरोपीय शक्तियोंके साम्राज्यकी रक्षाके लिए आज सबसे बड़े महत्वका प्रश्न बन गया है। सिंगापुरके पतनका अर्थ होगा सुदूरपूर्वसे यूरोपीय शक्तियोंका पलायन। आस्ट्रेलिया, भारतवर्ष, न्यूज़ीलैण्ड, डच ईस्ट इण्डीज़; कहीं भी जहाजों का अड्डा नहीं-भग्न जहाजों की मरम्मतके लिये लिए भी कोई स्थान नहीं। फलतः सिंगापुर पर ही ब्रिटेनके साम्राज्य की आशाएं टिकी हुई हैं। किन्तु ब्रिटेन की स्थिति को देखते हुए सिंगापुरकी दशा बहुत चिन्ताजनक मालूम होती है।

भारतपर प्रतिक्रिया

इन सब घटनाओंका फल भारतके लिए भी बड़ा आतंक पूर्ण साबित हो रहा है। यदि सिंगापुर का पतन हो गया या किसी भी मार्गसे जापान भारत पर आक्रमण कर सका तो हमारे देश की दशा बड़ी कष्टमय हो जायगी। रंगून की आज की स्थिति से हमारे देशकी भावी संकटापन्न स्थितिका अन्दाज़ लगाया जा सकता है। रंगून पर जो दो-तीन बार जापानियोंने भीषण बम वर्षा की है उसके आतंक से रंगून नगर बिल्कुल खाली हो गया है। शहर सुनसान है—मरघट की-सी भयावह रोमांचकारी शान्ति है। यदि भारतमें भी उसी ढंग की संकटापन्न स्थिति हो गयी तो देशमें आत्मरक्षाके लिये लोग निरुपाय होकर भाग खड़े होंगे। इस स्थिति को आनेसे रोकनेके लिए सरकार की तरफसे, कांग्रेस की तरफसे तथा अन्यान्य संघटनों की ओरसे क्रियात्मक प्रयत्न हो रहे हैं पर गालिबन दो सदियोंसे अत्याचार पीड़ित देशके समाज और जनसाधारण (Masses) की मानसिक दशा बदल गयी है। भय और आतंक उन की घुट्टीमें मिल गया है। आत्मरक्षाके लिए पलायनकी मनोवृत्ति उनकी हड्डियोंतकमें समा गयी है। यही कारण है कलकत्ता शहर खाली हो रहा है। जनता अनागत भयसे अकुलाकर जान छोड भाग रही है। रेलोंको एक भारी कठिनाईका सामना करना पड रहा है। इस संकटकालमें वस्तुओंके निरख दिन-दिन बढ रहे हैं। सरकारकी तरफसे यद्यपि इस स्थितिको वशमें करनेके लिए प्रयत्न हो रहे हैं। पर इस स्थितिसे लाभ उठानेवाले भी कम नहीं हैं।

प्रश्न यह है कि यदि भारतपर खतरा आयगा और उदयाचलकी निकटवर्त्ती जापानी जाति संगीने लेकर भारत पर हमला किधरसे करेगी ? बोर्नियो और सुमात्राको लेनेके लिए जापानकी तरफसे जो अनथक परिश्रम किया जा रहा है वह इस बातका द्योतक है कि जापान सिंगापुरको लेनेसे पूर्वही अन्यथा सिद्ध करके छोड़ देना चाहता है। वह सुमात्राकी तरफसे मार्ग बनता हुआ सीधा जलमार्गसे भारत पर हमला करना चाहता है। यही कारण है कि भारतके तटवर्त्ती समुद्रोंपर भी सतर्कता मूलक कार्य वाहियां यथा सम्भवकी जारही हैं। दूसरे, वायुवाहिनीसे भी जापान शायद भारत पर हमला करे। जो भी हो, भारतको इस अनागत संकटके लिए अभीसे तय्यार हो जाना चाहिए। इस तय्यारीके नामपर सरकारने अनेक कार्यवाहियां शुरु कर दी हैं। आसाममें जो नवीन सहयोगी मन्त्रिमण्डल बनानेकी योजनाएं चल रही थीं वे सरकारने अपने सन् १९३५ के भारतीय विधानकी धारा ९३ के अनुसार रद्द कर दी हैं और शासन सूत्र अपने ही हाथमें लेलिया हैं। आसाम और बंगाल आपत्ति क्षेत्र घोषित कर दिये गये हैं। बाह्य आक्रमणके समय होने वाले विप्लव—अन्तर्विग्रहको अभीसे काबू करनेके लिए विभिन्न दण्डादि घोषित हो गये हैं। पर जनताको इन सतर्कता मूलक कार्यवाहियोंसे त्रस्त और आतंकित होनेकी जरूरत नहीं। नागरिक जीवनकी रक्षाके लिए इन नवीन आज्ञाओंको जारी किया गया है।

कांग्रेस और युद्ध

प्रश्न यह था कि देशकी इस संकट कालकी सम्भावनाके समय भारतकी राष्ट्रीय महासभा क्या रुख अख्तियार करती है। इसी दृष्टिको सम्मुख रखकर कांग्रेसको अपनी सत्याग्रहकी नीतिमें तब्दीली करनेके लिए सरकारने तमाम सत्याग्रही राजबन्दियोंको मुक्त कर दिया था। अभी हाल हीमें बारडोलीमें वर्किंग कमेटीकी मीटिंग हुई थी। उसमें किये गये निर्णयके अनुसार कांग्रेसने अपनी सत्याग्रहकी नीति समाप्त कर दी है। इस आशंकित संकटके कारण जनताको त्राससे बचाने और विपत्तिसे रक्षा करनेके लिए कांग्रेस एक रचनात्मक कार्य करना चाहती है और इस शर्त्तपर कि ब्रिटेन भारतकी स्वाधीनता घोषित कर दे, वह सरकारको युद्धमें मदद भी दे सकती है। किन्तु महात्मागान्धी इस नीतिसे सहमत नहीं। वे देशकी स्वाधीनताका भी अपनी पूर्ण निष्कलंक अहिंसासे बदला नहीं कर सकते। इसका नतीजा यह हुआ है कि उन्हें कांग्रेसके नेतृत्वसे जुदा कर दिया गया हैं। यहां कांग्रेसकी नीतिकी सूक्ष्म आलोचनाका अवसर नहीं, फिर भी इतना निःसन्देह कहा जा सकता है कि कांग्रेसने सरकारको सहायता देनेका जो अभिवचन दिया है उसमें भारत को स्वाधीनता देने की शर्त्त लगा कर अपनी रक्षा कर ली है। आज तक सरकारको सहायता न देनेके लिए कांग्रेस जो सबसे बड़ी दलील पेश करती थी वह यही थी कि सरकार का युद्ध साम्राज्यवादी युद्ध है अतः साम्राज्यवादके परित्यागको साबित करनेके लिए पहले भारत को स्वाधीनता देना सरकारके लिए अत्यन्त आवश्यक है। वह शर्त्त यहां भी ज्यों की त्यों अक्षुण्ण है। अहिंसाकी व्याख्या को लेकर महात्मा गान्धी और कांग्रेसके दर्म्यान विभेद हो गया है। अभी देखना है कि सरकार कांग्रेसकी इस भेंटका क्या प्रत्युत्तर देती है। ब्रिटेनमें भी भारतकी स्वाधीनता घोषित करनेके लिए आन्दोलन हो रहा है फिर भी सरकार अपनी लिप्सासे विचलित नहीं हुई इसलिए अब भी हमे आशा नहीं दीखती कि वह अपनी संकटापन्न स्थितिमें भारतको कुछ रिआयत देगी।

+ + +

ब्रिटिश प्रधान मन्त्री मि. चर्चिल अमेरिका के प्रेज़ीडेंट रूजवेल्ट से मन्त्रणा करने और कनाडा में युद्ध की तय्यारियों को प्रगति देने के लिए अमेरिकन महाद्वीप की भूमिपर पहुंचे हैं वहां अमेरिकन सीनेट में उन्होंने और प्रेजिडेंट रूजवेल्टने अन्तिम दम तक धुरी शक्तियों से मोर्चा लेने की घोषणा की है। किन्तु सवाल यह है कि क्या उन के पास इतनी तय्यारी है, क्या उनके पास इतने साधन और शक्ति हैं कि वे मुकाबला कर सकें ? तय्यारीमें उन्हें जितना समय लगेगा उतनेमें तो आत्मरक्षा का अमूल्य अवसर भी हाथसे निकल सकता है।

रूस की सफलताएं

रूस और जर्मनी का संघर्ष पांसा पलट चुका है। रूस की फौजें प्रायः सभी मोर्चोंपर निरन्तर प्रगति कर रही हैं और जर्मन लोग पीछे हट रहे हैं। तुला विस्तारमें जर्मनीको पीछे हटा दिया गया है परन्तु इस पराजयका शायद कोई स्थायी महत्व नहीं। इतना ही जा सकता है कि रूसको दम लेने और कुछ अधिक स्वच्छंदतासे आश्रय स्थलोंसे बाहर आनेका मौका मिल गया। रूस इतना अस्तव्यस्त हो चुका है कि नये सिरेसे जर्मन आक्रमणों का आगामी वसन्त ऋतुमें मुकाबला कर सके, इतनी तय्यारी वह इस बीच नहीं कर सकता।

हिन्दू-मुस्लिम फूटका नया बीज

दिसम्बर मासके अन्तिम सप्ताहमें हिन्दू महासभाके अधिवेशनपर पाबन्दी लगाकर सरकारने हिन्दू महासभाके नेताओंको सत्याग्रहका जो अवसर दिया है इसमें उसकी एक भयानक राजनैतिक चाल है और हिन्दू महासभाके नेता इस चालके शिकार होगये हैं। इसमें शक नहीं कि इस सत्याग्रह की बदौलत हिन्दु महासभाके नेताओं को शहीद कहाने का अवसर मिल गया है पर इससे सरकारने मुस्लिमलीग और हिन्दुमहासभाके बीच विद्वेषकी खाई को चौड़ा कर दिया है। कांग्रेसके साथ ही साथ महासभाके नेताओं की भी दुन्दुभी बज गयी है जो भारत की जनता को अनेक विभिन्न दलोंके रूपमें पेशकर रही है। यह स्थिति भारतकी राजनैतिक, धार्मिक, आर्थिक सभी तरह की स्वाधीनताके मार्गमें बाधक है।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन की भूल

अबोहर (पंजाब) में अभी अ. भा. हिन्दी साहित्य सम्मेलनका बड़े दिनोंकी छुट्टियोंमें अधिवेशन हुआ है जिसमें 'हिन्दी' और 'हिन्दुस्तानी' के प्रश्नको लेकर राष्ट्रभाषा प्रचारक दलको हिन्दी साहित्य सम्मेलनसे निर्वासित कर दिया गया है। इसका परिणाम निःसन्देह हिन्दी साहित्य सम्मे-

(पृष्ठ २४ के कालम २ पर)

उदयपुरमें अखिल राजस्थानी माहेश्वरी

मेवाड़ की वीरप्रसविनी वसुन्धरा में

नेताओंका आगमन और स्वागत

श्री. प्राण्ड काका दलबल सहित इधर उधर निमंत्रण देते रहे और सभाके अधिवेशनसे एक दिन पूर्व ही उदयपुर पंहुच गए।

ता. २७ दिसम्बरको ९॥ बजे चित्तौडसे आनेवाली ट्रेनसे अखिल राजपुताना माहेश्वरी कान्फरेंसके मनोनीत सभापति श्री. कुंवर चांदकरणजी शारदा भी अपने दलबलके साथ पधारे। उसी ट्रेनसे अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभाके सभापति श्री. रामकिशनजी धूत, श्री. ब्रजवल्लभदासजी मूंधड़ा, श्रीमती लीलावतीजी झँवर, श्रीमती ज्ञानकुमारीजी हेडा, श्री. बसन्तीलालजी नोगजा अजमेर, श्री. भागीरथजी पलोड़ आदि बहुतसे अन्य महानुभाव अजमेर, जयपुर, इन्दौर, नीमच, जावद, हैदराबाद, बम्बई, इत्यादि स्थानोंसे आये। ट्रेनमें चित्तौडसे श्री. छगनलालजी मूंधड़ा, श्री. रामनाथजी लड्डा, श्री रामचंद्रजी काबरा, इत्यादि प्रतिनिधिगण व कपासन, कुबलगढ़. आदि स्थानोंके भी प्रतिनिधिगण बड़े उत्साह और उमंगको लिये हुए जाति यज्ञमें सम्मिलित होने आ रहे थे। ऐसा मालूम होता था मानो आज ही सारी कुरीतियों और दुरवस्थाको झाड़ फूंककर बहा देंगे। आप लोगोंका स्वागत करनेके लिये स्टेशनपर अनेक प्रतिष्ठित महोदय, स्वागत समितिके अध्यक्ष श्री हनुमानप्रसादजी सोढाणी, स्वागतमंत्री श्री दिलीपसिंहजी राठी, श्री रामप्रतापजी मुराड़िया तथा इस सम्मेलनको सफल बनानेके लिये यहांपर पहलेसे ही आये हुए श्री. गुलाबचन्दजी नागोरी, श्री. रामप्रसादजी हुरकट, आदि उपस्थित थे। महेश भगवानके जयघोषके साथ सभापति महोदयको पुष्पमालाएं पहनाई गई। फिर सभापतिजीका जुलूस नगरके प्रमुख मार्गोंमें फिरता हुआ पंचायती नोहरे पंहुचा।

सायंकाल ६ बजे विशाल पंचायती नोहरेके सभास्थानमें सभाकी कार्यवाहीका श्रीमती कमलादेवी श्रोत्रियके 'वन्देमातरम्' गीत गानेके द्वारा प्रारंभ हुआ। सभास्थानमें अन्य नगरोंसे आये हुए ६० के करीब प्रतिनिधि गण उपस्थित थे। महिलाओंकी उपस्थिति भी संतोषजनक थी।

स्वागताध्यक्षका भाषण

स्वागताध्यक्ष श्री हनुमानप्रसादजी सोढाणीके अस्वस्थ होनेके कारण उनका लिखित व्याख्यान उनके सुपुत्र श्री देवीप्रसादजी सोढाणांने पढ़ा। आपने अपने भाषणमें कहा—

श्रीमान सभापति महोदय, सन्नरियो और सज्जनो!

आज बड़े हर्ष का दिन है कि, प्रताप-से वीर, मीरा-सी भक्त शिरोमणि और पद्मिनी-सी वीर बालाओंके जौहर से ज्वलित एवम् स्वतन्त्रताके पुजारियोंके रक्त से रंजित ऐसी पवित्र मेवाड़ भूमिमें, सदियों से सोते हुवे माहेश्वरी समाजका प्रथम अधिवेशन हो रहा है। ऐसे महान सम्मेलनके स्वागतका भार उठानेकी शक्ति मुझमें न होते हुए भी मित्रोंके आग्रहसे मैंने इसे स्वीकार किया है इसी नाते मैं इस प्रान्तके माहेश्वरी बन्धुओंकी ओरसे आपका हृदयसे स्वागत करता हूं। और मैं आशा करता हूं कि ऐसी पवित्र भूमि में, जो भी नीति निर्धारित होगी वह शीघ्र ही कार्य रूपमें परिणत की जायगी।

इस समय जब यह अधिवेशन किया जा रहा है। संसारमें प्रलयङ्कारी काली घटाएँ छा रही हैं। भिन्न २ देश अपनी २ स्वतन्त्रताके लिए लड़ रहे हैं चाहे उनमें अपने राष्ट्रकी स्वतन्त्रता की भावना हो या स्वार्थ की, परन्तु सभी इस बीसवीं सदीकी घुड़-दौड़में पीछे नहीं रहना चाहते। हमारे देशमें भी इस प्रगतिशील कहे जाने वाले युगमें भिन्न २ जाति एवम् दलके लोग संगठित और व्यक्तिगत उन्नतिके लिये सोच रहे हैं ऐसी दशामें जिस उद्देश्य को ले कर यह अधिवेशन बुलाया गया है उसमें हमें भी उन्नतिके मार्ग सोचने होंगे। और समाज को खोखला करने वाली प्रथाओं को जड़ मूलसे उखाड़ फेंकना होगा। सबसे पहिले हमारे देशमें बेकारी की समस्या को हल करना होगा जिससे आज हजारों युवक बेकार घूमते नजर आते हैं। इसका कारण हमारे व्यापार की अवनति ही है। हमारी भारत भूमि रत्न-गर्भा कहलाती है फिर भी हमारे देशमें व्यापारकी बढ़ोती न हो और बेकारी फैले तो हमें अपनेको हतभाग्य ही समझना चाहिए। यह मैं जानता हूं कि व्यापारका पूरा पूरा विकास न होनेके और भी कई कारण हैं परन्तु वह कारण इतने बाधक नहीं हैं जितनी हमारे साहसकी कमी और हमारी अकर्मण्यता है। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण मेवाड़में कुछ वर्षोंसे खोज कर निकाले गए खनिज पदार्थोंसे मिलेगा। पता नहीं इस प्रकार कितनी वस्तुएँ इन अर्वली पर्वत-मालाओं और भारतके विभिन्न स्थानोंके भूगर्भमें छुपी पड़ी होंगी जिनकी खोज करने पर देशकी बेकारी दूर होनेके साथ २ व्यापारकी उन्नति हो सकती है। परन्तु हमारी प्रवृत्ति सट्टेबाजी करना और विदेशी कम्पनीके व्यापार को भारतके मत्थे मढ़नेमें सहायक होकर कमीशन खाना है; इस कमीशनके लोभ को छोड़, यदि हम अपने देश की वस्तुओंके व्यापार की ओर ध्यान दें तो चाहे हमारा व्यापार दूसरोंके मुक़ाबिलेमें छोटा ही क्यों न हो वह हमारे देशके लिये हितकर और स्थायी होगा। मेरा तात्पर्य खाली खनिज पदार्थोंसे ही नहीं देशके विभिन्न उद्योग धन्धों और कृषि आदिसे है। कृषिके कार्य को ही यदि कोई आधुनिक ढंगसे सुव्यवस्थित करे तो बेकारी का प्रश्न हल होनेमें काफ़ी सहायता मिल सकती है। इस बेकारीके युगमें कई ऐसी प्रथाएँ भी हैं जिसके कारण हमारे देश और समाजकी काफी क्षति हो रही है। हमारे समाजमें उन प्रथाओंमेंसे मृतक-भोज है जिसका रिवाज खूब प्रचलित है। इस प्रथामें स्वर्गस्थ व्यक्तिके पीछे रहने वाले व्यक्ति अपने जमीन जेवर बेचकर काफी कर्जके बोझसे लद जाते हैं। वह विधवाएँ जिनके गोदमें छोटे २ दुधमुँहे बच्चे होते हुए भी उनके भरण, पोषण, शिक्षा दीक्षाका प्रबन्ध न करके जो कुछ पासमें होता है वह इस प्रथाको भेटकर सदाके लिए अपना जीवन निर्धनतासे बिताती हैं। यहां तक कि कोई व्यक्ति इस प्रथाको पूरा न करे तो उस को बुराभला कहते हैं और उससे प्रथा पूरी कराते हैं यह कितने अफसोसकी बात है। इसी प्रकार दहेज (दायचा) की प्रथा है जिसके कारण कन्या विक्रय जैसी घोर निन्दनीय प्रथा आज हमारे समाजमें विद्यमान है। इसी दहेज प्रथाके कारण पढ़ी लिखी निर्धन लड़कियाँ अशिक्षित युवकोंके साथ ब्याही जाकर, हंस कागके जोड़े की कहावत चरितार्थ करती रहती है। जिससे आदर्श गृहस्थ जीवन कलहमय नारकीय जीवनके रूपमें सामने आता है।

इसीके साथ २ स्त्री शिक्षा का अभाव और पर्दाप्रथा तो समाजके लिए और भी दुःख-जनक है। स्त्रीशिक्षासे मेरा तात्पर्य यह नहीं है कि हम अपनी बहिनों व बच्चियों को पढ़ा कर ऑफिसमें क्लर्क बनावें। मेरा तो

कुरीति निवारण और सामाजिक

मतलब उस शिक्षासे है जिसमें भारतकी प्राचीन नैतिक धार्मिक एवम् सांस्कृतिक शिक्षा दी जाय जिससे वह अपने महत्त्वको समझती हुई अपने घर और समाजके लिए उपयोगी बन, भावी सन्तानको शिक्षित बना सकें क्योंकि माताकी गोद ही बच्चेकी पाठशाला है। यदि माता शिक्षित होगी तो संतान पर शिक्षा तथा सभ्यताका प्रभाव अवश्य पड़ेगा। लेकिन हमारी ओरसे स्त्रीशिक्षाके लिए ऐसा कोई खास प्रबन्ध नहीं है जिससे स्त्रियोंमें शिक्षाका भली प्रकार प्रचार हो सके। शिक्षाके अभावसे पैदा हुई पर्दा प्रथाको देखिये जिसमें बहू माससे और अपनी जेठानी तकसे पर्दा करती हैं। वह चाहे बीमार क्यों न हो परन्तु अपना पूरा २ हाल तक नहीं कह सकती और न घरके बीमारोंकी ही पूरी सेवा सुश्रूषा कर सकती है। वह स्वयम् खुली हवामें फिर कर साफ़ वायुका सेवन नहीं कर सकती। इसी कारणसे उनका स्वास्थ्य निर्बल रहता है और निर्बल सन्तान पैदा होती है जिससे रात दिन डाक्टरों और वैद्योंके दरवाजे खटखटाने पड़ते हैं। इन्हीं भावी सन्तानों पर हमें भावी संसारके निर्माणका भार सौंपना है। सच पूछा जाय तो इस पर्दा प्रथासे हमारे स्त्री समाजका जीवन एक नजरबन्द कैदीसे किसी तरह कम नहीं है।

इन प्रथाओंके अतिरिक्त हमारे समाजमें कई ऐसी घातक प्रथाएँ हैं जिनका मूलोच्छेदन होना आवश्यकीय है। उनमेंसे बाल विवाह, वृद्ध विवाह ऐसी हानिकार प्रथाएँ हैं जिनके लिए सरकार तकको हमारे घरेलू जीवनमें दख़ल देकर क़ानून बनाना पड़ा है। इससे अधिक हमारे लिए शर्म की क्या चीज़ हो सकती है। हमारे पतन की यह पराकाष्ठा है। अच्छा तो तब होता कि खुद ही हम इन विनाशकारी प्रथाओं को रोकते। सरकार के इतना करने पर भी हमारा सभ्य समाज क़ानून को तोड़ मरोड़ कर इस प्रथा को अभी जीवित रखना चाहता है। विवाह जैसे आदर्श कार्य को शैशवावस्था में ही पूरा किया जाता है जो उसके महत्त्व तक को नहीं समझते। एक प्रकार से बाल विवाह वृद्धों के खेलने का गुड़िया के खेल-सा बन गया है। दूसरा वृद्ध विवाह जिसमें मौत की राह देखते वृद्ध पुरुष अपनी दौलत के बल पर वृद्ध अवस्थामें भी अपनी पोती जैसी कन्याके साथ विवाह करनेमें नहीं शर्माते। जैसे शर्म नामकी वस्तु उनके लिए संसारमें है ही नहीं और वे मां-बाप जिनके लिए मेरे पास कोई शब्द नहीं है अपनी बेटीको दौलतके मोहमें फँस कर सनसे सफेद दाढ़ी मूंछों पर काले खिज़ाबसे रंग किए हुवे उस कलियुगी बनड़ेके सुपुर्द कर देते हैं। इन्हीं कारनामोंके कारण आज हमारे समाजमें विधवाओंकी संख्या दिनों दिन बढ़ती जारही है। उन विधवाओंके लिए हम कभी विचार तक नहीं करते बल्कि जिसके घरमें बाल विधवा है वह उसको भार रूप समझता है। समाज विधवाओंकी उपस्थिति और उनकी दशा पर कुछ भी ध्यान नहीं देता सब कुछ जानते हुए भी आंख मूंद कर चल रहा है। लेकिन हमें उनका सुगमतासे जीवन व्यतीत करने के लिये उपाय तो सोचना ही होगा। उनको घर में सम्मान पूर्वक रखना होगा। उन्हें बराबर के हक़ हकूक देने होंगे। उनके निर्वाह के लिए उद्योग धंधे, दस्तकारी, धर्मशिक्षा, सदाचार शिक्षा और अन्य आवश्यक शिक्षा क

सम्मेलनके विराट् आयोजनकी धूम

माहेश्वरी समाज का बृहत् समागम

सुधार कें लिए बुलंद आवाज

प्रबन्ध करना होगा जिससे वे अपना जीवन-निर्वाह स्वतन्त्रता पूर्वक कर सकें।

सज्जनो, अव मैं आपका अधिक समय नहीं लूंगा, क्योंकि हमें अभी अनेक गम्भीर समस्याओं पर विचार करना है साथ ही वाहर से पधारे हुवे सज्जनों के विचारों से हमें लाभ उठाना है। गम्भीर समस्याओं पर विचार करने के साथ ही हमें आज अपने जीवनके आधार को भी बदलना है। हमें अब प्राणीमात्र में ईश्वर की कल्पना करते हुए उन दुखियों को भी अपनाना पड़ेगा जिनसे हम घृणा करते हैं। गरीब और अमीर का भेद मिटाना पड़ेगा तथा एक दूसरे से कन्धे से कन्धा मिला कर देश तथा अपने समाज की उन्नति के लिये ही जीना पड़ेगा। आजके स्वार्थ तथा हिंसा के प्रज्वलित वातावरणमें हमारे देश को सच्चे मानव धर्म के प्रचार, सच्चे सुख और शांति की स्थापनाका प्रयत्न करना पड़ेगा। केवल भौतिकवादके आधार पर ही जी कर हमें भोगी और मृत्यु के उपासक नहीं होना है। महर्षि याज्ञवल्क्य ने ठीक ही कहा है कि वैष्णवत्व, ब्राह्मणत्व आदि अपने आप में ग्रहणीय नहीं, आत्मा के लिए ही धारण करने योग्य हैं। आत्मा ही के लिए पृथ्वी और पृथ्वी के सुख हैं और वही सच्चिदानन्द आत्मा परमात्मा के रूप में चारों तरफ सभी में ओत प्रोत है। हमारा जीवन तो सत्यसाधन के लिए एक वाहन भर है।

इस राष्ट्रीय जागृति के युग में एक पक्ष है जो जातीय कॉनफरेन्सों की आवश्यकता महसूस नहीं करता परन्तु मेरा तो विश्वास है कि प्रथम व्यक्ति, व्यक्ति से घर, और क्रमशः जाति, प्रान्त, देश की उन्नति हो सकती है। ऐसा नहीं होगा तो बाल विवाह, वृद्ध विवाह आदि के कानूनों की भांति हमारे समाज के उद्धार के लिये भी कानून ही का आसरा लेना पड़ेगा।

अन्तमें मैं पुनः आप सब का जो इतनी दूर २ से इस व्यापारिक हलचल के समय अपने २ व्यापार छोड़ कर पधारे हैं आभार प्रदर्शित करता हूं और स्वागतमें जोभी त्रुटियां रह गई हों उनके लिये क्षमा याचना करता हूं।

सभापतिजीका भाषण

इसके पश्चात् श्री दिलीप सिंहजी राठीने श्री चांदकरणजी की सेवाओंकी प्रशंसा करते हुए उनसे सभापतिपद ग्रहण करनेकी प्रार्थना की। श्री भगीरथदासजी पलोडने इसका अनुमोदन करते हुए शारदाजीकी निस्वार्थ सेवाओंका परिचय दिया। मारवाड प्रांत की ओरसे श्री रामप्रसादजी हुरकटने समर्थन किया। निम्बाहेडा निवासी श्री जगन्नाथजी सारडानेकुंवर चांदकरणजी की अनेक सेवाओंकी प्रशंसाकी। तत्पश्चात कलकत्ता निवासी श्री व्रजवल्लभदासजी मूंधडाने शारदाजी जेसे योग्य कर्मवीरको सभापति चुननेके लिये स्वागतकारिणीको धन्यवाद देकर आपसे सभापति पद ग्रहण करनेकी प्रार्थनाकी। जयपुरकी ओरसे श्री हरिनारायणजी राठीने भी इसका जोरदार भाषामें समर्थन किया। इसके बाद श्री गुलाबचंदजी नागोरीने मारवाडी भाषामें शारदाजी जैसे कार्यक्षम व्यक्ति को सभापति "चुणवा बाबत स्वागत समितिने धन्यवाद दियो"। पश्चात् श्री चांदकरणजीने सभापति पद ग्रहण किया और अपने ओजस्वी भाषणमें कहा—

प्यारी बहिनो तथा भाइयो

मैं आपका अत्यन्त अनुग्रहीत हूँ कि आपने मुझे महाराणा प्रताप की इस वीर-भूमिमें अखिल राजस्थानी माहेश्वरी कान्फ्रेंस का सभापति चुनकर आपकी सेवा करने का सुअवसर प्रदान किया। राजस्थानके भिन्न २ भागोंसे नयी आशायें, नई उमंगें तथा नवीन स्वप्न लेकर आप ऐसे स्थान पर एकत्रित हुये हैं; जहां का इतिहास हमारी धमनियोंमें अब भी उत्साह और वीर रस भर देता है। कौन ऐसा भारतवासी होगा जो महाराणा सांगा, महाराणा कुम्भा, हमीर, महाराणा प्रताप, भामाशाह, महाराणा राजसिंह, जयमल फत्ता, वीर पद्मिनी, पन्ना धाय, भीष्म प्रतिज्ञा वाला वीर चंडाजी तथा भक्त मीराबाई की वीर गाथायें सुनकर तथा सहस्रों देवियोंके जौहरके वृत्तान्त पढ़कर अपना मस्तक ऊँचा न समझता हो। प्रांतके भिन्न २ विभागोंसे एकत्रित भाई बहनों को इस सम्मेलनमें उपस्थित देखकर मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है। आपने जो मेरा स्वागत किया तथा सुन्दर पुष्पमालाओंसे लाद-दिया उसके बोझसे मैं दबा जा रहा हूँ। क्योंकि आपने उन्हें पहना कर मुझे आदेश दिया है कि जिस प्रकार एक २ फूलको चुनकर आपने माला गूंथी, उसी प्रकार भिन्न २ स्थानोंसे आये हुये माहेश्वरी भाइयोंको एक संगठनमें बांधकर जातीय-मालाको सुदृढ़रूपसे मुझे गूंथना चाहिये। आपने जो मुझे सभापति चुनकर लोकसेवाका आदेश दिया है उसके लिये मैं अनेकानेक धन्यवाद देता हू। क्योंकि लोकसेवा सब धर्मोंका सार है। तथा प्राचीन कालसे लेकर इस समय तक लोकसेवाका महत्व सदा ही रहा है। दूसरेकी सहायता करना, दीन-दुखियोंकी सेवा करना, दूसरोंका भला करनेके लिये अपनी शक्तियोंका उपयोग करना, पीड़ित-मानव समाजके दैहिक; दैविक तथा भौतिक संतापोंको दूर करनेके लिये जीवनकी सर्वोत्तम शक्तियोंको जो नर श्रेष्ठ लगा सकता है, वह धन्य है। मनुष्य यदि सेवा करना चाहे तो उसके सामने असीम कार्यक्षेत्र पड़ा है। किन्तु सेवाका जो कार्य हम संगठित होकर कर सकते हैं वैसा वैयक्तिक रूपसे नहीं कर सकते। इसी कारण ऐसे सम्मेलनों की अत्यंत आवश्यकता है। एक स्थानपर एकत्रित होकर प्रतिवर्ष हमें अपने सुधारके प्रश्नोंपर विचार करना चाहिये और साल भरमें जो काम किया है उसका पूरा हिसाब लगाकर आगे बढ़ना चाहिये। इस सम्मेलनमें एकत्रित होकर हमें अपने कर्त्तव्य निर्धारित कर अपना भावी प्रोग्राम बनाना है। आज हमारा समाज भयंकर परिस्थिति में है। मुझे पूर्ण आशा है कि आप इस कान्फ्रेंसमें एकत्रित होकर अपनी सब अवस्थाओं पर विचार कर दुःखी संसार को सुखी बनानेके प्रयत्न में दत्तचित्त होगें। अनेक सामाजिक सुधारों को कार्यरूपमें परिणित कर इस कांन्फ्रेंस को सफल बनानेमें पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे और प्रान्तके सभापति संगठित होकर न केवल अपनी रक्षा बल्कि समस्त देश और जाति की रक्षाके प्रश्न को अपने हाथमें लेकर सुसंगठित होकर विश्वशांति का पाठ संसार को पढ़ावेंगे।

संगठन और सेवा भाव हमारा मुख्य कर्त्तव्य है

एक पत्थर जब तक अलग पड़ा हुआ है ठुकराया जाता है, परन्तु ज्योंही वह संगठनमें आ जाता है और किलेकी दीवारमें लगाया जाता है उस समय वह बड़े २ तोपके गोलों का मुकाबला कर सकता है। संगठनमें महान् शक्ति है। आप अपने सेवा भावसे सुई बनिये। कैंची मत बनिये। विभिन्न जातियोंमें विभक्त हिन्दू जातिको यही समझाइये कि हममें कोई छोटा बड़ा नहीं है हम सब समानाधिकारी हैं तथा हम भाई २ हैं। इस प्रकार मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान रामने शबरीके बेर खाये। भगवान कृष्ण सुदामासे मिले, तथा युधिष्ठिरके राजसूययज्ञमें उन्होंने 'पैर धोनेका, काम लिया, वैसेही हमें भी सदैव जातीय सेवा करनेको समुद्यत रहना चाहिये। छूत अछूतका भेद-भाव मिटाना चाहिये। दर्जीकी कैंची कपड़ेको काट कर पृथक २ कर देती है। और छोटी-सी सुई उन्हें जोड़ कर सुन्दर पोषाकें बना देती है। कैंची भारी होती है, मूल्य भी अधिक होता है। किन्तु दर्जी उसे पैरोंके नीचे दबाता है। और सुईको मस्तक पर स्थान देता है। क्योंकि कैंची विघटन पैदा करती है और सुई संघटन पैदा करती है। छोटासे छोटा भाई जो संगठन एवं प्रेम फैलाता है वह हमारे आदरका पात्र है यही कारण है कि छोटी अँगुलीको ही अँगूठी पहनाई जाती है। हमें बिजली न बनकर दीपक बनना है जिसकी ज्योति हमें रातमें मार्ग दिखलाती है तथा जो दीपक इतनी परोपकार वृत्तिसे परिपूर्ण है कि स्वयं अपने नीचे अंधकार रखकर संसारमें प्रकाश फैलाता है और जब उसकी परोपकारमें ही गर्दनकी बत्ती काटी जाती है तो और भी प्रकाशित होता है।

हमारा कार्य-क्षेत्र

धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं का कार्य मनुष्य के आत्मिक तथा मानसिक रोगोंका इलाज करना है। जो वैद्य रोग की परीक्षा करके औषधि देता है वह ही सफल वैद्य है। एक मनुष्य शीत से ठिठुर रहा है, उसका पेट भरा है, उस समय उसे रोटी देने की आवश्यकता नहीं। उस समय तो उसे शीत निवारणार्थ योग्य वस्त्र मिलने चाहियें। संसार का वर्तमान संकट पुकार २ कर कह रहा है—निर्बल के लिये संसार में कोई स्थान नहीं।

यह ठीक है कि दया अत्यन्त उच्च धर्म है परन्तु स्वयं शक्तिशाली बनकर दूसरे पर दया करना ही परम धर्म है किन्तु स्वयं अपने पर दया की आशा रखना धर्म नहीं है। हम नित्यप्रति रेडियो में युद्ध के समाचार सुनते तथा समाचार पत्र पढ़ लेते हैं परन्तु स्वयं नहीं सोचते कि हमारा क्या कर्त्तव्य है। घर में सोते रह दूसरों की दया के आश्रय पर जीवित रहनेवाले शीघ्र ही नाश को प्राप्त होते हैं। हमे अपनी जाति को स्वावलम्बी तथा बलिष्ठ बनाने का बीड़ा उठाना चाहिये। अब प्रश्न यह होता है कि स्वावलम्बी तथा बलिष्ठ बनने के लिये हमें क्या २ करना चाहिये? इसका उत्तर यह है कि चरित्र बल, शारीरिक बल और बुद्धि बल इन तीनोंका समुचित विकास करना चाहिये। हमें सभायें स्थापित कर उनमें व्यायामशालायें, वाचनालय अवश्य खोलने चाहिये। हमें छात्र वृत्तियां देकर हमारे नव-युवकों को विद्या-प्राप्ति तथा शारीरिक बल प्राप्त करने में सहायता देनी चाहिये। उत्तम साहित्य वितरण करना चाहिये। मौसर में धन का अप-व्यय करने की अपेक्षा उतने रुपये का घी-दूध आदि दिलवा कर जातीय नवयुवकों को पुष्ट बनाना चाहिये।

(शेष पृष्ठ १३ के कालम १ पर)

कमला मिल के कपड़े इस्तेमाल करें।

आर्टिफिशियल सिल्क ज्योर्जेट
साडियां, साडी क्लाथ और
शर्टिंग कपड़ों के लि
यह मिल अपनी
विशेषता
रखती
,

हेड आफिसः—
गोयनका हाउस
१४५, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट,
कलकत्ता

हर प्रकार की धोती, साडी,
कोरा लाँगक्लॉथ,
कोटिंग, केनवास,
सूसी, आदि
आदि

कमला मिल्स लिमिटेड

तुलसी पाइप रोड, परेल, बम्बई. टे. नं. ६००६४—६५
बिक्री-विभागः—

बम्बई : टे. नं. २६९४५
मूलजी जेठा मार्केट

कलकत्ता :
सूतापट्टी

लोकप्रियताका अकाट्य प्रमाण] **रूबी प्रगति पथपर** [दृढ़ता का सच्चा सबूत

१०० %

- स्वदेशी
- टिकाऊ
- दृढ़

बीमा कंपनी

प्रगतिके आंकड़े

विभाग	प्रीमियमकी आवक	
	सन् १९३७	सन् १९४०
आग	रु. ६,५५,०४७	रु. १४,१७,०११
मोटर और अकस्मात	रु. ७३,९८६	रु. २,४६,७८१
समुद्रीय	रु. ७२,२८१	रु. ४,६६,५९०
पूंजी	रु. १७,९४,३४२	रु. २७,९४,१४५

जिंदगी १९४० के प्रथम वर्ष में किया
गया कामकाज.......................रु. ३०,६५,१००

- आग
- मोटर
- अकस्मात्
- जिंदगी
- समुद्रीय
और
- मजदूरोंके बदले आदि
के बीमेका काम-
काज किया जाता है

रूबी जनरल इन्श्युरंस कं. लि.

टे. नं. २०५६० और ३१९२९
टेलिग्राम्स 'सनशाइन'
'SUNSHINE'

चेअरमैन
श्री बी. एम. बिड़ला

जनरल मैनेजर इनचार्ज, बम्बई डिविज़न
श्री बी. के. सेतलवाड़

ऑफिस—४५-४७ अपोलो स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई

अ. रा. माहेश्वरी सम्मेलन

(पृष्ठ ११ का शेषांश)

सामाजिक-सुधार

गत ५० वर्षोंसे हम एकता, मौसर, विद्या-प्रचार, पर्दा प्रथा विरोध, बाल विवाह, वृद्ध विवाह, अनमेल विवाह निषेध आदि सामाजिक सुधारों पर व्याख्यान देते आये हैं और प्रस्ताव पास-करते आये हैं परन्तु जैसा चाहिये वैसा सुधार अभी तक नहीं हुआ है और इसका मुख्य कारण यही है कि राजस्थान का स्त्री-समाज बहुत पीछे है। इसलिये हमारा प्रथम कर्त्तव्य यह होना चाहिये कि हम इस वर्ष स्त्रियोंमें से निरक्षरता एवं अविद्यान्धकार मिटाने पर अधिक बल दें। इतने वर्षोंसे व्याख्यान देने पर भी पर्याप्त मात्रामें सुधार नहीं हुआ इसका कारण यही है कि स्त्रियां बार बार उन्हीं रूढ़ियोंमें फंसी रहने से अन्ध विश्वासी बन गईं और उनको सुधारके क्षेत्रमें लानेके लिये हमें नवीन साधन ढूंढ़ने चाहिये। मनुष्य स्वभाव नवीनता चाहता है। अतः वर्तमान परिस्थितिसे डूबे हुये लोगोंके लिये हमें एकवर्षीय योजना ऐसी बनानी चाहिये जिससे कि इस वर्षमें हम कमसे कम एक हजार माहेश्वरी सभाके सभा-सद बना दें; पाँच हजार प्रतिज्ञा-पत्र भरवालें, ५०० स्त्रियोंसे पर्दा-प्रथा छुड़वा लें, १०० "माहेश्वरी" के नवीन ग्राहक बनालें तथा न्यूनातिन्यून ५० शाखायें माहेश्वरी महा सभाकी स्थापित कर दें। इस कार्यके लिये हमें अवैतनिक एवं अवैतनिक उपदेशक तथा उपदेशिकायें रखनी पडेंगी और उसके लिये धन भी सञ्चय करना पड़ेगा। बाल विवाहने ब्रह्मचर्यका नाश करके हमारी जातिको खोखली किया हैं उसके रोकनेके लिये हमें विजीलेंस सोसायटी खोलना चाहिये, जो इस बात की देखरेख रक्खे कि कोई भाई १४ वर्षसे पहले अपनी लड़की तथा १५ वर्षसे कम आयु वाले लड़के का विवाह न करने पाये।

इसी प्रकार औसर मौसरमें लाखों रुपया बर्बाद होता है। हर्ष है कि कई रियासतोंने कानून द्वारा इसे दूर किया है। परन्तु राजस्थानमें अभी बहुतसी रियासतें ऐसी भी हैं जहां पर बाल विवाह और औसर मौसर कानूनसे बंद नहीं हैं, अतः हमें प्रयत्न करके उनको कानूनसे बंद कराना चाहिये। हमें दुःख होता है कि हम सामाजिक सुधार भी कानूनसे कराते हैं परन्तु देश, काल और परिस्थितिके अनुसार हमें ऐसा करनेमें ही अधिक लाभ प्रतीत होता है। पर्दा-प्रथाने हमारे समाजके आधे भागको पंगु बना दिया है। विधवायें त्राहि २ कर रही हैं। १० वर्षकी विधवायें घरोंमें बैठी हुई हैं और अपनी गर्म २ आहोंसे हमें भस्म कर रही हैं। हमें ऐसे क्रांतिकारी युवक चाहियें जो विधवा विवाह करनेमें सहयोग देनेवाले हों। मातापिता की धमकियोंसे न डरने वाले हों और क्रांतिके प्रेमी होकर प्रत्येक सामाजिक और धार्मिक अत्याचारोंके विरुद्ध युद्ध करने वाले हों। मैं कल देखूंगा कि कितने युवक ऐसे सुधार प्रेमी निकलते हैं। यदि २५ नवयुवक भी मुझे मेवाड़में ऐसे मिल गये तो मैं सम्मेलन को सफल समझूंगा।

क्या यह सम्मेलन सांप्रदायिक है ?

कुछ भाई मुझसे प्रश्न करेंगे कि तुम माहेश्वरी सभाके सभापति बनकर जातीयता (Communalism) को उत्तेजना दे रहे हो। उन भाइयोंको मैं विश्वास दिलाता हूं कि इस सम्मेलनके सभापति बनने में मेरा एक मात्र ध्येय यही है कि मैं माहेश्वरी समाज को राष्ट्रके प्रति अपने कर्तव्य पालन करने में समर्थ बनाऊँ और सब में भारतीयता की एक ही आर्य संस्कृति की भावना को जागृत करूँ। माहेश्वरी सम्मेलन तो सारे संसारमें नव-युग लानेका जो हमारा प्रोग्राम है उसका कार्यक्षेत्र को बांटने के लिये एक अंग है और मैं यह समझता हूं कि माहेश्वरी सम्मेलन की सेवा करते हुए मैं राष्ट्र की सेवा कर रहा हूं और विश्व कल्याणके उस व्यापक और विशाल ध्येय वाले नवयुगको लाने का प्रयत्न कर रहा हूं। यद्यपि हमारा ध्येय विशाल और विस्तृत है और हम चाहते हैं कि समाज की सर्वांङ्गीण उन्नति के लिये शिक्षा, स्वास्थ्य, संगठन और आर्य संस्कृतिके प्रचार कार्यक्रम को पूर्ण करें।

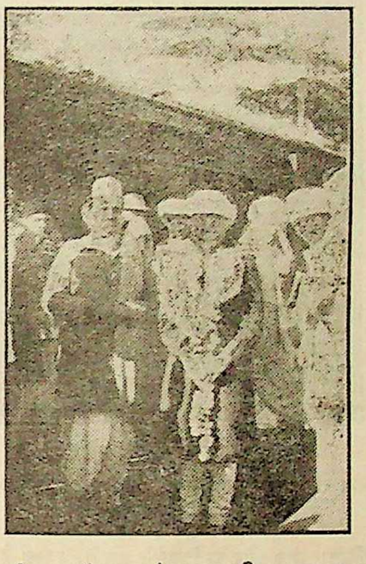

उदयपुर स्टेशनपर कुंवर चांदकरणजी शारदाका स्वागत

वर्तमान परिस्थिति और हमारा कर्तव्य

योरोपीय महायुद्धने अब विश्वयुद्धका रूप धारण कर लिया है। प्रशांत महासागरमें भी अब अमेरिका और जापानके बीचमें युद्ध छिड़ जानेसे अशांति छागई है। थाईलैंड, वर्मा और मलायाके पास घोर संग्राम हो रहा है। और युद्ध भारतके द्वार पर आपहुंचा है। सारा देश इस समय भयग्रस्त होगया है। कलकत्ता, आसाम और मद्रासमें रक्षा मूलक तैयारियां होरही हैं। कलकत्तानगरसे वहांके निवासी स्वेच्छासे भाग रहे हैं। व्यवसाय केन्द्रोंपर हमला होनेकी संभावनाके कारण व्यापारिक समाज भयग्रस्त है। सैनिक शिक्षण नहीं मिलनेके कारण हम अपनी रक्षा शत्रुसे कैसे करें? यही प्रश्न हमारे सामने विचारणीय है। शत्रु द्वारपर खड़ा ललकार रहा है और हम अपनी दीन दशा पर आंसू बहा रहे हैं। यदि कोई आततायी हमपर हमला करे तो भागकर घरका द्वार बंद करके भीतर बैठे रहनेके सिवाय हमारे पास और कोई उपाय नहीं। अपनी रक्षा करनेके लिये न तो हमें फौजी कवायद आती है न बंदूक, लाठी, भाला तलवार चलाना आता है। अब भी समय है कि हम शस्त्रास्त्र चलाना सीखें नहीं तो फिर हमारा प्रयत्न घर में आग लगने के बाद कुआं खोदने के समान होगा। अब प्रश्न यह उठता है कि हम तो सैनिक शिक्षण लेनेके लिये तैयार हैं परंतु ब्रिटिश सरकार भारतके राष्ट्रीय नेताओं के कहने सुनने पर भी भारतीय जनताको जितना सैनिक शिक्षण देना चाहिये उतना नहीं देती।

हिन्दू महासभा कहती है हमें फौज, जलसेना और वायुसेनामें और लड़ाई के सामान तैयार करने में सरकार के साथ जुट जाना चाहिये। कांग्रेस कहती है जैसी हमारी नीति अब तक रही है वही रहेगी। इस समयमें जब कि बाहर की चीजें बंद हो गई है तो हमें हमारे देशमें ही उद्योगधन्धों की तरक्की कर अपने देश का धन अपने देशमें ही रखनेका प्रयत्न करना चाहिये। Militarization & Industrialization (मिलिटरीझेशन और इन्डस्ट्रीलाइझेशन) इन बातोंमें अपना ध्यान लगाना चाहिये। कलकत्ता बम्बईसे जो भाई भाग भाग कर जारहे हैं उनसे मेरा यही नम्र निवेदन है कि वे मौतसे न डरें, उन्हें साहस और वीरता धारण करनी चाहिये और इस प्रकार भागकर लोगोंसे अपनी हंसी न करवानी चाहिये। हम तो गीताके माननेवाले हैं। हमारा आत्मा अजर और अमर है। परमात्मा हमारे साथ है। अतः हमें घबराना नहीं चाहिये। यह आत्माग्नि हममें किस लिये है!—इसीलिये है। यह हममें बढ़े और इस संसारमें हम अधिकसे अधिक अपना प्रकाश कर सकें। हमें अपने अद्भुत सामर्थ्य एवं दिव्य ऐश्वर्य द्वारा संसारके अत्याचार एवं अन्यायों का नाश करना चाहिये। आत्माके लिये हम जितना अधिक बलिदान करेंगे उससे सहस्र गुणा अधिक हमको हमारे तपसे विविध ऐश्वर्योंके रूपमें दैवी सम्पत्ति प्राप्त होगी। इस त्यागभूमिमें आकर मैं सब से पहले अपने भाई माननीय बृजलालजी बियाणी, श्री राम कृष्णजी जाजू तथा अन्यान्य देशभक्तों को बधाई देता हूं जिन्होंने देशहितार्थ कृष्णभूमिमें जाकर अनेकों कष्ट भोगे और अब भी उनके हृदय में यही अग्नि प्रज्वलित है कि हमारा देश किस प्रकार स्वतंत्र हो।

उपसंहार

आपके हृदयमें जोश उत्साह और स्फूर्ति है। आप राजस्थानमें सामाजिक जागरणकी बहुत अधिक आवश्यकता अनुभव कर रहे हैं। राजस्थानी समाजमें प्रचलित कुरुढियोंके विरुद्ध आपने आवाज उठाई हैं, प्रस्ताव पास किये हैं और

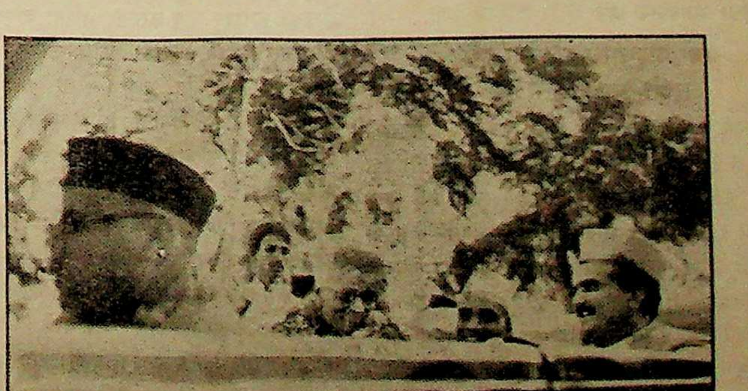

स्टशनसे मोटरद्वारा सम्मेलनके सभापतिजीका प्रस्थान

बुराइयोंको हटानेके लिये सम्मेलनोंमें प्रतिज्ञायें भी ली हैं। राजस्थानी समाजमें दिन दूनी रातचौगुनी उन्नतिको देखकर मेरा हृदय खुशीसे उछलता है। सम्मेलनोंमें एकत्रित होकर जहां हमारा पारस्परिक प्रेम, परिचय, और सहानुभूति बढती है वहां हमें पारस्परिक विचारोंके आदानप्रदानसे सुचारुरूपसे कार्य करनेके अनेक सन्मार्ग भी मिल जाते हैं। राजस्थानमें सामाजिक क्रांतिके विचार बड़ी तीव्रतासे फैल रहे हैं परंतु सम्मेलनमें भाग लेकर, प्रस्ताव पास करके हमारे कर्तव्यकी समाप्ति नहीं होती। हमें यहांसे यह दृढ़ निश्चय करके जाना चाहिये कि हम इन प्रस्तावोंको अपने गांवगांवमें जाकर कार्यरूपमें परिणत करेंगे। पुरानी कुप्रथाओं तथा रूढियोंमें फंसे हुए हमारे वृद्ध और अज्ञान अंधकारमें फंसे हुए भाइयोंको समझायेंगे और देश, काल, परिस्थितिके अनुसार उनके विचारोंमें परिवर्तन करेंगे। मुझे पूर्ण आशा तथा विश्वास है कि महाराणाप्रतापकी इस वीरभूमिमें उपस्थित होकर माहेश्वरी भाई व बहिन उस क्रांतिके संदेशको पहुंचा देंगें जिसके बिना हमारा जीवन दूभर है। हमारी सर्वांगीण उन्नतिके लिये हमें भी अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलनके समान हमारी सर्वांगीण उन्नतिके ध्येयको लेकर एक वर्षीय योजना तैयार करनी चाहिये और उस योजनाको कार्यान्वित करके, उसका घरघरमें प्रचार करके हमारे समाजको भारतके राष्ट्रीय जीवनमें योग्य स्थान प्राप्त कराना चाहिये। ये सब बातें आपके पूर्ण सहयोग और सहानुभूतिपर ही निर्भर हैं और मेरी आपसे अनुरोधपूर्ण अपील है कि आप यह अनुभव करें कि जमाना अब बातें बनानेका, प्रस्ताव पास करके प्रतिज्ञामें उच्चारण करनेका नहीं रहा है। अब तो जो दृढ़ निश्चय करना है वह करके दिखा देना है।

मैं चाहता हूं कि ईश्वर पर अटल विश्वास रखकर आप कार्यक्षेत्र में कूदें; और मातृभूमि भारत जो इस समय भी आपत्तियोंसे घिरी हुई है उसे जी जान लगाकर स्वतंत्र करें। सामाजिक कुरीतियोंको दूर भगावें, दुष्टोंका दमन करें। सदाचारी, स्वदेश, स्वधर्म और आर्य संस्कृतिके प्रेमी शस्त्राशस्त्र विद्यामें निपुण, तेजस्वी, बलवान ब्रह्मचारी, विजयी और निर्भय योद्धा बने। मेरा वारम्वार यही कहना है कि अन्यायी पापियों के नाश के लिये सदा तत्पर रहो। सच्चे मन्यु (क्रोध) से अपने हृदय को सजाओ। क्षात्रधर्म रूपी नवीन शक्ति से प्रत्येक भारत के लाल को दीक्षित करो। जल-थल और वायु सेनाओंमें भर्ती होकर मातृभूमिकी रक्षाके लिये युद्ध करना सीखो। सारे भारतको सैनिक भावोंसे भरदो। क्योंकि आपत्ति कालमें प्रत्येक भाई बहिनका सैनिक शिक्षण लेना और युद्धमें सम्मिलित होना आवश्यक धर्म है। तभी हमारे जात-पात, धन, प्रतिष्ठा, धर्म और संस्कृतिकी रक्षा हो सकती है। प्रिय भाइयो, उठो, कमर कसो अब यह समय बातें बनानेका नहीं है। कर्मवीर बनकर क्षात्र-धर्म जागृत कर अपने कर्तव्यको समझो। बोलो माहेश्वर भगवानकी जय

क्या पाश्चात्य सभ्यता हमें सुखी बना सकती है?

इस समय जो भाई यह कहते हैं कि पाश्चात्य सभ्यताकी 'नकल' से ही हम सुखी होंगे, उनके सामने योरोपका अथवा यों कहिये विश्व-व्यापी महायुद्ध अपना नग्न नृत्य प्रदर्शित कर रहा है। कोरे भोग-वादसे इस समय संसारकी जो दशा हुई है वह आपसे छिपी नहीं है। और कोरे वैराग्य-वादसे संसारकी बौद्ध-कालमें जो दुर्दशा हुई वह भी इतिहास प्रेमियोंसे छिपी नहीं है। अतः यदि हम सुखी होना चाहते हैं तो हमें भोग-वाद तथा वैराग्य-वाद, अभ्युदय और निःश्रेयस दोनोंको साथ लेकर संसारको सन्मार्ग पर लाना होगा। युद्धके बाद नव-युग आने वाला है और उस समय वही झण्डा लहरायेगा जो हिन्दुत्व-सूर्य्य महाराणा प्रतापका तथा मेवाड़ राज्यका है—'जो दृढ़ राखे धर्मको तेहि राखे करतार'—। जब संसार इस बातको मान लेगा। तभी सच्ची सुख शान्ति फैलेगी। अतः मेवाड़के नवयुवको, इस पवित्र ध्वजाको लेकर आगे बढो। इसी मेवाड़के वंशज नेपालमें स्वतंत्र हिन्दूराष्ट्र स्थापित किये हुये हैं। इसी सीसौदिया कुल के वंशज छत्रपति शिवाजीने जब२ हिन्दू-धर्म पर संकट आया तब २ इसी झण्डेको लेकर अन्याय तथा अत्याचारका नाश किया। अतः हिम्मत मत हारो, आगे ही बढ़े जाओ। इस घनघोर घटामें भी मुझे चमकती हुई बिजली दृष्टि गोचर हो रही है। इन काले २ बादलोंमें भी स्वर्ण-रेखायें दृष्टिगोचर हो रही हैं। कहा जाता है कि रात्रि का सबसे अधिक अंधकारमय घण्टा स्वर्णमय ऊषाके अत्यन्त निकट होता है उसी प्रकार यद्यपि भारत इस समय अत्यन्त दुखी है, दरिद्रता, भूख और परतंत्रता ने इसे घेर रक्खा है तथापि यह निश्चय रक्खो कि-नवयुग आने वाला है। अतः मोहमें फंसे हुये लोगों को कर्मयोगी बनाकर उनकी कायरता दूर भगाना हमारा कर्तव्य होना चाहिये। ईश्वरमें विश्वास रक्खो और जीवन संग्राममें योद्धा की भांति लड़ो। इस बलिदान भूमिमें आप निर्भय होकर फिर क्षात्रधर्म जागृत करो। मेवाड़ की यह पताका न केवल भारत की स्वतंत्र पताका बनेगी अपितु अखिल विश्वमें सुख शांति और स्वतंत्रता की संदेशवाहिनी बनेगी। हमारे सूर्य्यवंशी राजाओंने इसी पताकाको लेकर रावण, कंस, दुर्योधन और अनेक विधार्मियोंका विध्वंस किया है अतः इस हिन्दूराष्ट्रकी पताकाके नीचे आओ, अपने हृदयोंमें मातृ-भूमिको स्वतंत्र करनेकी भावना जागृत करो। कायरता भगाकर, भाग्यभरोसे बैठे रहना छोड़कर स्वराज्य प्राप्त करनेकी भावना जागृत करो। जिसकी फौज उसका राज, जिसकी फौज उसका हिन्दुस्तान, इस मूल मंत्रको कभी मत भूलो। फौजी काम सीखना ही इस समय हमारे रोगकी दवा है, हमारे पूर्वज कोरे वणिक नहीं थे बल्कि सेनाओंके बड़े २ सेनापति होते थे। इसी मेवाड़ भूमिमें हमारे देवपुरा खाँपके माहेश्वरी भाई आशाजी कुम्भल गढ़ के किलेदार थे और उन्होंने प्राण-पणसे महाराणा उदयसिंहजी की रक्षा की—इसी प्रकार हमारे मारवाड़के शाहजीके खानदान वालोंने सेनापतियों का कार्य किया तथा जैसलमेर और बीकानेरके मोहतों ने दीवान और सेनापति दोनोंके काम किये थे। अतः युवक मित्रो, आप, घबराइये नहीं। बल्कि इस पवित्र पताका को लेकर आगे ही आगे बढ़ते जाइये।

बोलो महाराणा प्रताप की जय!

हिन्दू धर्म की जय!! महेश्वर भगवान की जय!!!

श्री वसन्तीलालजी नोगजा

आप राजस्थान सिन्ध प्रान्तीय माहेश्वरी सभाके मन्त्री निर्वाचित हुए है।

खुला अधिवेशन

ता. २८ को प्रातः सभाका खुला अधिवेशन प्रारंभ हुआ। रातमें विषयनिर्वाचिनी सभामें पास हुए निम्न प्रस्तावोंको जनताके सामने रखा गया व अनुमति ली गई।

(१) शोक प्रस्ताव

सभापतिजी द्वारा।

यह सभा श्रीमान् आईदानजी मोहता, सतीदासजी मूंदड़ा, चंपादेवी भट्टड़, और कानपुरके गणेशप्रसादजी माहेश्वरी की असामयिक मृत्युपर शोक प्रकट करती है।

(२) नाम

प्रस्तावकः श्री. रामप्रसादजी हुरकट सांभर, समर्थकः श्री. भागीरथमलजी पलोड़ अजमेर।

इस कान्फ्रेन्सका नाम 'राजस्थान-सिंध प्रांतीय माहेश्वरी सभा' रखा जाय।

(३) उत्तरदायी शासनका समर्थन

सभापतिजी द्वारा।

यह सभा राजस्थानके उन माहेश्वरी बंधुओंको हार्दिक बधाई देती है जिन्होंने राज और प्रजाके हितके लिये उत्तरदायित्वपूर्ण शासन प्राप्त करनेवाली संस्थाओंमें भाग लिया है और राजस्थानकी देशी रियासतोंसे आग्रहपूर्वक अनुरोध करती है कि वे समयकी प्रगतिको ध्यानमें रखते हुए अपनी रियासतोंमें उत्तरदायित्वपूर्ण शासन स्थापित करें।

(४) राजस्थानमें प्रथाओंकी एकता

प्रस्तावकः श्री वसन्तीलालजी नोगजा अजमेर, समर्थकः श्री भँवरलालजी झँवर, कपासन।

सारे राजस्थानमें माहेश्वरी बंधुओंके सामाजिक रीतिरिवाज एक ही समान हों और उनमें कोई विभिन्नता न रहे अतएव निम्नलिखित सज्जनोंकी एक उपसमिति बनाई जाय, जो राजस्थानके प्रत्येक हिस्सेके माहेश्वरी भाईयोंके रिवाजोंका संग्रहकर उनका इस प्रकार संकलन करें जिससे उनमें किसी प्रकारकी विभिन्नता न रहे।

१ श्री वसन्तीलालजी नोगजा, अजमेर
२ ,, दिलीपसिंहजी राठी, उदयपुर
३ ,, रामप्रसादजी हुरकट, सांभर
४ ,, हरिनारायणजी राठी, जयपुर
५ ,, सोहनलालजी मणियार

(५) व्यायामको महत्व दें

प्रस्तावकः श्री. कस्तूरचंदजी तापेणीवाल, शाहपुरा, समर्थकः श्री. गंगाविष्णुजी बल्दुआ, ब्यावर।

यह सभा राजस्थानके माहेश्वरी बंधुओंका ध्यान समयकी प्रगतिकी ओर आकर्षित करती हुई यह आदेश करती है कि वे माहेश्वरी समाजके बालकों एवं युवकोंको बलवान बनानेके लिये स्थान २ पर अखाडे स्थापित करें और स्वयं व्यायाम किया करें।

यह सभा जातीय बंधुओंसे अनुरोध करती है कि वे महेशनवमी (ज्येष्ठ शुक्ला ९) का उत्सव अवश्य मनावें और उसके कार्यक्रममें व्यायामको मुख्य स्थान दें।

उपरोक्त प्रस्तावको क्रियात्मक रूप देनेके लिये निम्न सज्जनोंने अपने अपने स्थानोंमें व्यायामका कार्य शुरू करनेके लिये अखाडा स्थापित करनेके लिये अपना निश्चय प्रगट किया।

१ श्री छगनलालजी मूँधड़ा, चित्तौड़
२ ,, श्रीगोपालजी मोहता, उदयपुर
३ ,, श्रीनिवासजी सारड़ा, निंबाहेड़ा
४ ,, श्यामलालजी देवपुरा, उदयपुर

५ ,, गंगाविष्णुजी बल्दुआ, ब्यावर
६ ,, गणेशलालजी देवपुरा, उदयपुर
७ ,, इंद्रलालजी वैद्य, कोमलगढ़
८ ,, भागीरथमलजी पलोड़, अजमेर
९ ,, हरिनारायणजी राठी, जयपुर
१० ,, वृजवल्लभदासजी मूंधड़ा, बीकानेर
११ ,, झँवरलालजी झँवर, कपासन

(६) ग्रामोद्योगोंको प्रोत्साहन

प्रस्तावकः श्री श्रीनिवासजी झँवर, इन्दौर, समर्थकः बंसीलालजी जगराणी जावद, व श्री ज्ञानकुमारीजी हेडा, हैद्राबाद।

यह सभा राजस्थानके माहेश्वरी बंधुओंका ध्यान समाज की स्थितिकी ओर आकर्षित करती हुई यह आग्रह करती है कि वे ग्रामोद्योग एवं घरेलू धंधोंकी ओर विशेष ध्यान देवें जिससे समाजमेंसे बेकारी दूर हो और प्रत्येक माहेश्वरी बंधुको जीवन निर्वाहका साधन मिले। साथहीमें वे अपने लिये व सामाजिक कार्योंमें शुद्ध खादीका ही प्रयोग करें और इस प्रकार देश की गरीबी को दूर करनेमें सहायक बनें।

(७) हिन्दीको प्रोत्साहन

प्रस्तावकः श्री. भागीरथमलजी पलोड़, समर्थकः श्री. वृजवल्लभदासजी मूंधड़ा।

यह सभा रियासतोंके उन अधिकारियोंकी प्रशंसा करती है जिन्होंने अपनी रियासतोंमें हिन्दीभाषा और देवनागरी लिपिका उपयोग प्रारंभ कर दिया है तथा बालविवाह एवं औसर-मौसर को रोकनेके लिए कानून बना दिया है। जिन रियासतोंमें अभीतक हिन्दीभाषा और देवनागरी लिपिको नहीं अपनाया गया है तथा बालविवाह एवं औसर–मौसरके रोकनेके लिये कानून नहीं बनाये गए हैं वहांके अधिकारियोंसे यह सभा साग्रह अनुरोध करती है कि वे अतिशीघ्र इन कुप्रथाओंको रोकें और हिन्दीभाषा एवं देवनारी लिपिको अपनायें और समस्त राजकीय कार्योंमें इसका उपयोग अविलम्ब आरंभ कर दें।

इस सभाको खेद है कि आल इण्डिया रेडियोके स्टेशनसे हिन्दुस्तानीके नामसे जिस अहिन्दुस्तानी भाषाका उपयोग किया जाता है वह सर्वसाधारणको समझनेमें सरल नहीं है अतएव यह सभा उसका विरोध करती है और फारसी अरबीके शब्दोंसे बचकर साधारण बोलचालकी हिन्दी भाषाकाही उपयोग करनेके लिये आल इण्डिया रेडियो स्टेशनके अधिकारियोंसे आग्रहपूर्वक अनुरोध करती है।

(८) कन्या और वर विक्रयका विरोध

प्रस्तावकः श्री. बसंतीलालजी नोगजा, समर्थकः श्री कस्तूरचन्दजी तोषणीवाल।

प्रगतिके इस युगमें जब कि सभी जातियां उन्नतिकी ओर अग्रसर हो रही हैं, राजस्थानके माहेश्वरी बंधुओंमें कन्या एवं वर विक्रय जैसी कुप्रथाओंका अस्तित्व अत्यंत खेदजनक है। यह सभा माहेश्वरी बंधुओंसे और समाजके होनहार नवयुवकोंसे अनुरोध करती है कि इन घातक कुप्रथाओंको समूल नष्ट करने के लिए प्रयत्नशील रहें।

(९) स्त्री शिक्षा

प्रस्तावक श्री भागीरथदासजी पलोड़, समर्थकः श्रीमती ज्ञानकुमारी हेड़ा।

समाजकी उन्नति एवं उत्थानके लिये यह नितान्त आवश्यक है कि स्त्रियों और बालिकाओंमें शिक्षाका प्रचार बहुलताके साथ किया जावे और प्रत्येक बंधु अपने घरमें स्त्रियोंको कमसे कम साक्षर तो अवश्य बना दे और इसके लियें उनको सब प्रकारकी सुविधाएं दें।

(१०) अन्य कुप्रथाएं

प्रस्तावकः श्री व्रजवल्लभदासजी मूंघड़ा, समर्थकः श्री गुलाबचंदजी नागोरी।

इस सभा को यह देखकर अत्यंत खेद है कि अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभाके निरंतर प्रयत्न करने पर भी इस प्रांत के कतिपय स्थानोंमें आज तक निम्नलिखित कुप्रथाएं प्रचलित हैं जिनके कारण हमारा माहेश्वरी समाज बलहीन एवं निस्तेज हो रहा है और स्थान स्थानपर धड़े बन्दियां दिखाई दे रही हैं। यह सभा माहेश्वरी बंधुओं से पूर्ण आग्रह के साथ अनुरोध करती हैं कि वे इन्हें अविलम्ब त्याग दें।

(१) सामाजिक बहिष्कार

(२) परवानगी अर्थात दुआ की प्रथा

(३) दिखावा

(४) कृत्रिम शोक प्रथा.

संशोधन—इस सभा को यह प्रकट करते हुए अत्यंत खेद होता है कि राजस्थानके और विशेषकर मेवाड़के माहेश्वरी बंधुगण मरणोत्तर जातिभोजकी घातक रूढ़िको आज तक अपनाए हुए हैं। इस अमांगलिक अशुभ एवं निरर्थक प्रथाको शीघ्रातिशीघ्र नष्ट करनेका आग्रह यह सभा माहेश्वरी बंधुओंसे करती है।

यह संशोधन श्री गुलाबचंदजी नागोरीने पेश किया तथा श्री हरिनारायणजी राठी ने इसका समर्थन किया

(११) पर्दे की निन्दा

प्रस्तावकः श्रीमती ज्ञानकुमारीजी हेड़ा, समर्थकः श्री गुलाबचंदजी नागोरी।

इस सभाकी यह विचारपूर्ण सम्मति है कि समाजका एक महत्वपूर्ण अंग स्त्री समाजमें जबतक पर्दा प्रथा–प्रचलित है उसका किसी दिशामें भी अभ्युत्थान असंभव है क्योंकि यह कुप्रथा उनकी स्वतंत्रतामें बाधक ही नहीं अपितु समाजका उनपर अत्याचार प्रदर्शित करती है। अतएव यह सभा राजस्थानके माहेश्वरी भाइयोंसे बलपूर्वक अनुरोध करती है कि वे पर्दा–प्रथाको समाजसे उठा दें।

(१२) क्रियात्मक योजना

सभापति द्वारा।

यह राजस्थान–सिंध माहेश्वरी सम्मेलन अपने कार्यकारी मंडलको यह आदेश देता हैः—

(१) सदस्य फार्म भराएं जायं और जहां कम-से-कम ५ सदस्य हों ऐसे स्थानों में शाखाएं बनाई जावें। प्रथम वर्षमें ऐसी २५ शाखाएं स्थापित की जावें।

(२) औसर मौसरके विपरीत कम-से-कम एक हजार प्रतिज्ञा फार्म भराए जायं।

(३) पर्दाप्रथा, कन्याविक्रय, बाल, वृद्ध, अनमेल विवाहके विपरीत आंदोलन कर लोकमत बनानेमें अधिकसे अधिक समय खर्च किया जाय। शिक्षा तथा व्यायामकी ओर विशेष ध्यान दिया जाय। कमसे कम १० व्यायाम शालाएं खोली जायँ, और इन सब कार्योंको चलानेके लिये धनसंग्रह किया जाय।

(१३) गंगोजका आमोद

प्रस्तावकः श्री छगनलालजी मूंदड़ा, समर्थकः श्री कस्तूरचंदजी तोष्णीवाल।

यह सभा मेवाड़ प्रांतीय माहेश्वरी बंधुओंका ध्यान इस रिवाजकी ओर आकर्षित करना चाहती है कि गंगोजके रोज जिस रूपमें स्त्रियां आमोद प्रमोद–मनाती हैं, वह सभ्यताके विचारोंसे खिलाफ़ है, अतएव इस रिवाजको बंद कर दिया जाय।

करीब करीब सभी प्रस्ताव पास हुए। खादी और ग्रामोद्योग व पर्दा प्रथा और महिलाओंकी दुरवस्था पर बोलते हुए श्रीमती ज्ञानकुमारीजी हेड़ाने जनताके दिलमें आंतरिक वेदना पैदा कर दी। उन्होंने बड़ी मार्मिक शैलीमें स्त्रियोंकी दयनीय दशाका और समाजकी दरिद्रावस्थाका ऐसा चित्र खींचा कि कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं था जो उससे प्रभावित नहीं हुआ हो। श्रीमती लीलावतीजीने अपने गंभीर भाषणमें और भी अधिक सामाजिक समस्याओंपर प्रकाश डाला और महिलाओंमें शिक्षा प्रचारका ठोस काम करनेकी अपीलकी। आपने स्थानीय महिला मंडल सरीखी संस्थाओंको अधिकाधिक सहयोग देनेकी जनतासे अपीलकी। श्री. प्राण्डकाकाने तो अपने मारवाड़ी भाषणमें जनताको हंसा हंसाके लोटपोट कर दिया। और हंसी हंसीमें वे भाव भी जनतामें भर दिये जो कभी भुलाये नहीं जा सकते।

प्रस्तावोंमें औसर मौसर और व्यायाम शाला स्थापित करनेके प्रस्तावों पर खूब चर्चा चली, तथा सायंकालकी सभामें अनेक नवयुवकोंने प्रतिज्ञाएं लीं, परंतु बहुत कम वृद्ध महानुभाव इस संबंधमें प्रतिज्ञा लेने उठे। श्रीमान् व्रजवल्लभदासजी मूंधड़ाका भाषण तथा उनका बीकानेरमें अगले अधिवेशनका निमंत्रण और अन्य दो निमंत्रणोंमेंसे जिस खूबीसे उन्होंने उस परिस्थितिको संभाला वह सबके लिये विनोदात्मक एवं प्रसन्न करनेवाला था।

अन्तमें सभाका उपसंहार करते हुए श्री रामकिशनजी धूतका प्रवचन हुआ जिसमें उन्होंने यहांके कार्यकर्ताओं एवं जनतामें समाज सुधारके लिये कटिबद्ध हो जानेकी अपीलकी।

जो सज्जन अधिवेशनमें पधारे थे उनके अंदर एक प्रकारका उल्लासमय विनोदपूर्ण तथा शांतिप्रिय वातावरण सबको खुश रखता था। वास्तवमें यह जाति-उत्सव खूब सफल रहा इसमें कोई संदेह नहीं।

राज्यकी ओरसे इस सम्मेलनको सब प्रकारसे सफल बनानेका उचित सहयोग दिया गया था। सभामें लाउड स्पीकरकी व्यवस्था बहुत ही उत्तम थी। स्थानीय नवयुवकों और स्वयंसेवकोंकी सेवाएं और सहयोग भी प्रशंसनीय था। स्वागतमंत्री श्री. दिलिपसिंहजी राठीके उत्साह तथा अथक श्रमका ही परिणाम था कि यह सम्मेलन इस तरह सफलतासे संपन्न हो सका। जैसा कि श्री. रामकिशनजी धूत ने कहा कि इस सम्मेलनकी विशेषता यह रही कि इसमें किसी प्रकारके बखेडे खडे नहीं हुए, और सब लोग पूरी श्रद्धाभक्तिसे जाति यज्ञमें आहुति देनेको तत्पर दीखते थे।

सफलताकी शुभकामनाएं

अखिल राजपूताना माहेश्वरी कान्फरेंसके प्रथम अधिवेशन, उदयपुर की सफलता चाहनेवाले निम्न महानुभावोंके तार एवं संदेश प्राप्त हुए।

१ पूज्य श्रीकृष्णदासजी जाजू वर्धा, २ श्री सेठ जुगलकिशोरजी बिड़ला दिल्ली, ३ श्री ब्रिजलालजी बियाणी अकोला, ४ श्री सेठ गोविंददासजी मालपाणी जबलपुर, ५ श्री राधाकृष्णजी लाहोटी बम्बई, ६ श्री वृन्दावनदासजी बजाज भोपाल, ७ श्री शिववल्लभदासजी माणधण्या सांभरलेक, ८ श्री पन्नालालजी मालपाणी, ९ श्री बालकृष्णजी मोहता, १० श्री गणेशनारायणजी सोमाणी, ११ श्री रामकृष्णजी जाजू शोलापुर, १२ श्री रामगोपालजी मोहता बीकानेर, १३ श्री श्रीनिवासजी आगार इन्दौर, १४ श्री बालकृष्णजी धूत जोधपुर, १५ श्री हरविलासजी सारड़ा अजमेर, १६ श्री बद्रीनारायणजी सोमाणी सीकर, १७ श्री शिवचंदजी इन्नाणी इन्दौर, १८ श्री हीरालालजी सोनी बासौदा, १९ श्रीमती रमणगौरीजी हेड़ा बम्बई, २० श्रीमती सत्यवतीजी कलयंत्री फलोदी।

राय साहेब रेखचंद मोहता

स्पिनिंग ऐण्ड वीविंग मिल्स

हिंगणघाट (सी. पी.)

हिंगणघाट की महशूर रुई से बनाया हुआ सुन्दर और टिकाऊ कपड़ा इस्तेमाल कीजिये

★ ★ ★

इस मिल में हर प्रकारका सूत व धुला कोरा कपड़ा, लाँगक्लाथ, शर्टिंग, धोतियां, साड़ियां, हरक, गादीपाट, सफेद एवं रंगीन चादरें, टावेल्स, टेबल क्लाथ आदि कपड़ा बनाया जाता है।

हमारी शाखाएँ

मथुरादास गिरधरदास
नागपुर, गोंदिया, बारासिवनी
रा. सा. रेखचंद मोहता
राजनंदगांव, दुग, भाटापारा, अकलतारा
मथुरादास मोहता
झारसुगड़ा (B. N. R.)

ट्रेडमार्क
लक्ष्मीनाथजी की छाप
पान छाप
● सूतका ट्रेडमार्क ●
राय साहेब रेखचंद मोहता
(सेठ छाप)
★

हमारी खास विशेषताएँ

इस मिल में कपड़ेपर माड़ी बिलकुल आवश्यक तथा बहुत कम प्रमाणमें दी जाती है ; इसलिये निख़ालिस सूत कपड़ेमें रहने के कारण कपड़ा धोनेके बाद बहुत अधिक टिकाऊ तथा मुलायम एवं सुन्दर निकलता है।

बाज़ार में कपड़ा खरीदते समय इसी मिलकी छाप देखकर खरीदिये और अपने पैसोंका सदुपयोग करके प्रसन्नता प्राप्त कीजिये।

साधारण जनता की परिस्थिति एवं उसकी मांग की ओर विशेष ध्यान देकर कपड़ा बनाया जाता है।

यूनियन बैंक आफ़ इन्डिया लिमिटेड

★ बम्बई में सन १९१९ में स्थापित ★

हेड ऑफिस—अपोलो स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई

शाखाएँ
१ कॉटन एक्सचेन्ज बिल्डिंग
कालबादेवी रोड़ बम्बई
२ कत्था बजार. मांडवी, बम्बई
३ राजकोट सिविल स्टेशन

सेफ डिपाज़िट वाल्ट

काटन एक्सचेंज बिल्डिंग
कालबादेवी रोड, बंबई
स्त्रियों के लिये ख़ास सुविधा

चुकाया हुआ धन	रु. ३९,९० ०००
रिझर्व फंड	रु. १०,००,०००
डिविडन्ड इक्वलाइज़ेशन फंड	रु. ६०,०००
जमा हुआ धन (ता. ३१-१२-४०)	रु. १,९६,७२,०००

डायरेक्टर्स

सेठ एम. एस. केप्टन, चेअरमेन
सेठ बेहराम एन. करंजिया
सेठ लछमनदास हरखचंद डागा
सेठ विठ्ठलदास कानजी
सेठ के. आर. पी. श्राफ़
सेठ हरिदास माधवदास
सेठ रामदेव आनन्दीलाल पोद्दार
सेठ दीनशा डी. रोमर

चालू डिपाज़िट खाता खोला जा सकता है। हररोज़ की रु. दो लाख तक की बचत पर प्र. व. ¾ प्र. श. के हिसाब से व्याज दिया जाता है।

कम ज्यादा समय की डिपाझिट बहुत ही लाभकारी शरतों पर स्वीकार की जाती है।

सेविंग बैंक—इस खाते में रु. १०००० तक की कम से कम मासिक बचत पर प्र. व. १॥ प्र. श. के हिसाब से व्याज दिया जाता है। सप्ताह में दो बार इस खाते से आप चेक द्वारा पैसा निकाल सकते हैं।

मान्य की गई जामिनगीरी पर पैसा दिया जाता है। बैंकिंग का हर किस्म का काम किया जाता है।

वी. एम. भार्गव, सेक्रेटरी

हमारा राजस्थान

भागलपुरमें हिन्दू महासभाके अधिवेशन पर लगाई गई निषेध आज्ञासे सारे देशमें तहलका मच गया है। लेकिन देशी राज्योंकी पीड़ित और मूक प्रजाका तो सारा ही जीवन ऐसी निषेध-आज्ञाओंमें जकड़ा पड़ा है। उनके विरोधमें आवाज़ क्या उठाई जाय ? स्थिति यह है कि उनका किसीको पता तक नहीं लगता। मेवाड़ और मारवाड़से ऐसे दो उदाहरणोंका अभी अभी पता चला है। मेवाड़में सर्वथा निर्दोष और सब सोलह आना सामाजिक सम्मेलन 'राजस्थान माहेश्वरी सम्मेलन' पर रजिस्ट्रेशन कानूनका प्रयोग किया गया है। अब तक इस कानूनका प्रयोग केवल संस्थाओंके लिये किया जाता था। सम्मेलनके विरुद्ध उनको काममें लानेकी यह पहिली ही घटना है। इसी प्रकार जोधपुर सरकारने 'मारवाड़ विद्यार्थी सम्मेलन' पर यह कह कर रोक लगाई है कि उसमें राजनीतिक चर्चा होगी जो कि युद्धके इन दिनों में वांछनीय नहीं है। हम नहीं समझते कि मेवाड़ सरकार को 'माहेश्वरी सम्मेलन' में होनेवाली सामाजिक चर्चा और मारवाड़ सरकार को 'विद्यार्थी सम्मेलन' में होनेवाली तथा कथित राजनीतिक चर्चा से इतना भय खाने का क्या कारण था ? भागलपुर में बिहार सरकारने जो कुछ भी किया है, उससे मारवाड़ एवं मेवाड़ की सरकारों का काम किसी भी अंश में कम निन्दनीय नहीं है।

+ + +

ये दो राज्य वे हैं जो राजस्थान में काफी प्रगतिशील माने जाते हैं। दोनोंके दीवान उन्नत विचारों और स्वतंत्र प्रकृतिके कहे जाते हैं। दोनोंमें सुधारोंके नाम पर धारा सभा कायम की जा रही है। फिर भी सर टी. विजयराघवाचार्य की सरकार का एक सामाजिक सम्मेलनसे और सर डोनाल्ड फील्ड की सरकार का विद्यार्थी सम्मेलनसे इतना भयभीत होना बड़े अचरज और खेद की बात है। लेकिन, देसी राज्योंकी हवाको उन्नत और स्वतंत्र विचारके अधिकारियोंके लिये बदलना इतना आसान नहीं है।

+ + +

श्री हुक्मराज मेहता, सभापति विद्यार्थीसंघकी माताको जोधपुरके दीवान कर्नल फील्डकी ओरसे एक नोटिस मिला है कि उनका लड़का राजनीतिक हलचलोंमें भाग लेता है। क्यों न उनकी पेंशन बन्द कर दी जाय ? बेटेके अपराधके लिये माँको सजा देनेका यह अनोखा उदाहरण है !

+ + +

जोधपुरमें मध्य फरवरीमें होनेवाले राजस्थान प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य सम्मेलनके लिये सभापतिके चुनावको लेकर काफी चर्चा शुरू हो गई है। अजमेरके इस सप्ताहके प्रायः सभी पत्र प्रायः इसी चर्चासे भरे हुए हैं। राजस्थानका कोई ऐसा नेता नहीं है जिसने इसके बारेमें अपनी राय न प्रकट की हो। अधिक राय झालावाड़के, 'सौरभ' के भूतपूर्व सम्पादक श्री रामनिवासजी शर्माके पक्षमें प्रकट की गई है। श्री रामनाथजी 'सुमन' और श्री हरिभाऊजी उपाध्यायके नाम भी सुझाये गये हैं। सुमनजीने अपने नाम की चर्चा न करने का अनुरोध किया है और उपाध्यायजीने शर्माजीका समर्थन किया है, इसलिये शर्माजीके सभापति बनने की पूरी आशा है। लेकिन, स्थायी समिति और स्वागति समिति दोनोंमें विवाद खड़ा हो गया है। दोनों की ओर से सभापतिके चुनाव करनेके अधिकार का दावा किया जा रहा है। सम्मेलनके प्रधानमंत्री श्री जनार्दन राय प्रान्तके दौरे पर निकले हुए हैं। उनको इस बीच प्रान्त की भावनाओं को जानने और समझने का यथेष्ट अवसर मिलेगा। अपने दौरेके बाद, देखें, वे किस परिणाम पर पहुँचते हैं और प्रान्त का पथ-प्रदर्शन किस रूपमें करते हैं।

+ + +

ठिकाना सरदारगढ़ मारवाड़में कोई २५ प्रकार की लाग-बागें माफ करने का ऐलान किया गया है। इनमें कई लागें बहुत विचित्र हैं। देवीके बलिदानके लिये पांच भैंसे लाग ही में लिये जाते थे। कुम्हार लोगोंसे पानी मुफ्त भराया जाता था। जन्माष्टमी व सील मातमपर जनतासे मुफ्त दूध लिया जाता था। मालियोंसे झूलेके रस्से मुफ्त लिये जाते थे। तेलियोंसे दिवाली पर फी घानी चार सेर तेल लिया जाता था। यह सब बन्द करके मोचियों, कहारों, खटिकों, नाइयों, बलाइयों, भीलों आदिसे मुफ्त काम न लेने की भी घोषणा की गई है। देखना यह है कि घोषणाके अनुसार कहां तक काम होता है ?

● एक राजस्थानी ●

+ + + +

बीकानेर महाराज सुदूरपूर्व की युद्ध यात्रासे लौट आये हैं। आपके सम्मानमें इधर कई छोटे बड़े समारोह हुए और हो रहे हैं।

+ + +

दीवान राजा मानधातासिंहजी ने भी एक पार्टी आपके सम्मानमें दी और ७५००) का चन्दा करके एक पार्टी और लम्बा चौड़ा मान-पत्र सेठ-साहूकारों की ओरसे भी दिया गया।

+ + +

दिल्ली होकर कलकत्ता से आनेवाले मारवाड़ियों के लिये दिल्ली स्टेशन पर अनेक सभा सोसाइटियाँ काम कर रही हैं। रिवाड़ी होकर जानेवाली मुख्य लाइन बीकानेर रियासत से सम्बन्ध रखती है। इसलिये बीकानेर रियासतने दिल्ली स्टेशन पर अपनी ओर से भी कुछ व्यवस्था की है। वहाँ से नाजिम विरदीचंदजी तथा कुछ और लोगों को इसी काम के लिये भेजा गया है। अभी उस दिन दीवान राजा मानधातासिंहजी भी दिल्ली पधारे थे और सारी व्यवस्था का स्वयं निरीक्षण किया।

+ + +

सिरोही के उत्तराधिकारी के सवाल का फैसला हो गया। महाराज मानसिंहजी के पुत्र श्री अभयसिंह जी उत्तराधिकारी बनाये गये। महाराज स्वरूपसिंह जी की खवास लीलावती के पुत्र का दावा भारत सरकारने खारिज कर दिया। लेकिन, महाराज को यह फैसला पसन्द नहीं हैं। वे इसे अस्वीकार करने की चेष्टामें हैं। श्री. अभयसिंह जी को इसी से कौंसिल में भी कोई स्थान नहीं दिया जा रहा है। लेकिन, सार्वभौम सत्ताके सामने सिरोही महाराजकी दाल गलती दीख नहीं पड़ती।

+ + +

कोटा राज्यमें गल्लेकी निकासीपर रोक नहीं लगाई गई है। इससे राज्यमें घोर असन्तोष और आन्दोलन उठ खड़ा हुआ है। लेकिन, राज्यके अधिकारी कानोंमें तेल डाले पड़े हैं। उन्होंने प्रजाकी पुकारको अनसुना करनेका कुछ ऐसा संकल्प कर लिया है कि प्रजाकी ओरसे की गई मांगों पर भी कुछ ध्यान नहीं दिया जा रहा है।

पं० नयनूरामजी शर्माके स्मारकके संबंधमें प्रजामण्डल उचित विचार करनेमें लगा हुआ है। फिलहाल उस स्थानमें, जहां कि उनकी हत्या हुई थी, बड़के पेड़पर एक राष्ट्रीय झण्डा लगा दिया गया है। ४ जनवरीको बारांमें कोटा राज्य-प्रजामण्डलकी जनरल कमेटीकी बैठक हो रही है। उसमें कुछ महत्वपूर्ण विषयोंकी चर्चा होनेवाली है।

+ + +

अलवर प्रजामण्डलने नये सिरेसे अपने संगठनका काम शुरू किया है। विधानमें पदाधिकारियों और कार्यसमितिके सदस्योंके लिये खादी पहिनना अनिवार्य ठहरा दिया गया है। विधानमें कुछ और भी परिवर्तन किये गये हैं। श्री भवानी सहायजीने सभापतिका कार्य सँभालर उसमें नया जीवन डालनेका काम शुरू कर दिया है। प्रजामण्डलने बुलेटिन प्रकाशित करनेका भी निश्चय किया है।

+ + +

अलवरके चीफ मिनिस्टर हार्वे साहबकी तबदीली हो रही है। उनके स्थान पर मध्य प्रान्तके कोई अवसर प्राप्त श्री कुंजबिहारीलालजी पधार रहे हैं। हार्वे साहिबने अलवरमें अपनी सहृदयताकी छाप लगाई है। सुधारके कुछ कार्य भी किये हैं। जन-सेवकोंके साथ सीधा सम्पर्क भी कायम किया है। देखें उनकी इस परम्पराको उनके उत्तराधिकारी किस प्रकार कायम रखते हैं।

+ + +

भरतपुर प्रजा परिषदके प्रधान मंत्री श्री कुंआर रतनसिंहजीको डीमाके नाजिमने राजद्रोहमें दो वर्षकी सजा देदी। उनके साथ साधारण कैदियोंका सा व्यवहार किया जा रहा है। भोजनका भी उनको कष्ट है। इधर ब्रिटिश भारतकी जेलोंके 'सी' श्रेणीके कैदियोंके भोजन एवं रहन-सहनको लेकर काफ़ी आन्दोलन हुआ है। लेकिन, देशी राज्योंमें कौन पूछता है ? वहाँ तो यह अन्धेर न मालूम कब तक बना रहेगा ?

(पृष्ठ १८ का शेषांश)

दावतें उड़ानेमें अपने जीवनकी सफलता मानी, वह पंच समाजकी कैसे रक्षा कर सकते हैं ? आज कल जो पंचायत होती है वह न तो धर्मके पालनके लिये और न समाजकी रक्षाके लिये, लेकिन वह होती है इन हितचिंतकोंके अस्तित्वके लिये। आजकी अनियमित परिस्थितिमें अपना समाज आर्थिक, धार्मिक तथा सामाजिक दिशाओंमें नीचे गिर रहा है। दूसरा समाज अपने समाजकी ओर घृणाकी दृष्टिसे देखता है। क्या इन्होंने कभी सोचा है ! वे यदि गंभीरतासे इन विषयोंपर गौर करें, तो उन्हें यह पता जरूर लग जावेगा कि इन सब दोषोंका कारण समाज नहीं है लेकिन उस समाजको बहकानेवाले समाजके मुट्ठीभर ठेकेदार हैं।

समाजके नवयुवकोंके प्रति मेरा नम्र निवेदन है कि पंचायत ने समाजहितैषी न रहकर अब अत्याचारका स्वरूप धारण किया है। पंचोंने आज दिनतक समाजमें अपना अस्तित्व कायम रखनेके लिये द्वेषका ऐसा बीज बो दिया है कि समाज एक दूसरेकी ओर प्रेमभावसे न देख सके। लेकिन अब वह दिन नहीं रहे कि आंखे होते हुये भी इन ठेकेदारोंके साथ साथ हम किसीको अंधा बनायेंगे। इसलिये इन मुट्ठीभर पंचोंके भयके कारण वे समाज रक्षा और समाज जागृति करनेसे पीछे न रहें। अब वह दिन दूर नहीं जिस दिन सारा समाज एकत्रित होकर सामाजिक सुधारकी ओर बढ़ेगा और उस दिन न रहेगा कोई पंच और न रहेगी उसकी पंचायत।

एरंडोलकी माहेश्वरी पंचायतका नग्न स्वरूप

★

● श्री सीतारामजी बिड़ला ●

ता. १२-१२-४१ को श्री बन्सीलालजी बिड़लाका श्री रुक्मीणीदेवीके साथ पुनर्विवाह बड़े आनंदके साथ संपन्न हुआ। सनातनियोंको आशा थी कि समाजके कुछ बेहूदे और नंगे लोग ही इस विवाहमें शरीक होंगे। लेकिन सभ्य, चारित्रवान, और साथही साथ कुछ मालदार लेकिन नये और स्वतंत्रमतवादी सारे ही नवयुवक बड़ी संख्यामें इस पुनर्विवाहमें शामिल हुए देखकर उनकी आँखें खुल गयीं। लेकिन आखिर पंच तो सनातनी ही ठहरे। उन्होंने जोरसे दमन शुरू किया। गाँवके कुछ बड़े लोगोंको मध्यस्थ बनाकर श्री रघुनाथजी बिड़ला वकीलको दबाना शुरु हुआ। लेकिन वे तो सोच विचार कर इसमें शामिल हुये थे। ता. १७-१२-४१ बुधवारको फिर पंचायत बुलवायी गयी। सनातनी पंचोंने कानूनी सलाहके लिये दो पंचोंको दौड़ाया। साथ ही और गांवोके पंचोंका अपनेको साथ है या नहीं इसके लिये भी भाग दौड़ की। न्याय और इन्साफ़ यदि उनकी ओर होता तो किसीका साथ है या नहीं यह देखनेकी जरूरत ही न थी। रात्रिको करीब ८॥ बजे पंचायतका जाजम डाला गया। नवयुवक और बूढे सनातनी सारे ही पंच उपस्थित हुए। इस पंचायतका मामला कुछ और ही था। अभीतक पंचायतका रिवाज यह था कि कार्यवाही शुरू होनेके पहले सारे पंच आये हैं या नहीं, जो न आया हो उसे बुलाना, यदि कोई पंच न आता हो तो वह क्यों नहीं आता यह पूछताछ करना। लेकिन अपनेको पंच कहलाने वालोंने रिवाजके खिलाफ़ एकदम कामकाज शुरू करना चाहा। रिवाजके खिलाफ कामकाज शुरू करनेसे कुछ सनातनी बुजुर्गों और नवयुवकोंने पंचोंको रोका। श्री बन्सीलालजी, उनके बड़े भाई श्री रामप्रतापजी और उनके पिता श्री जेठमलजी बिड़ला से अलग रहते हैं पर वे यहां दिखायी नहीं देते हैं इस लिए उन्हें जाजमपर बुलाया जाय ऐसा कहा गया। पंचायत बुलानेवालोंने कहा "वे दोषी हैं, उन्हें कैसे बुलाय जाया?" बुजुर्ग और नवयुवकोंने पूछा—"उन्हें किसने, कब और कहां दोषी ठहराया?" पंच कहनिवालोंने जवाब दिया—"हम लोगोंने।" फिर सवाल हुआ-"तुम कौन! क्या एरण्डोलकी पंचायतके आप ठेकेदार हैं?" जवाबमें कहा गया—"हां, हम चार आदमी जो चाहें ठहरा सकते हैं।" बुजुर्गोंने और युवकोंने उन्हें समझाया—"किसी भी आदमीको आप दो-चार आदमी दोषी नहीं ठहरा सकते। यह काम पंचायतका है। पंचायत इकट्ठी होनेके पहलेही किसीको भी आप दोषी नहीं ठहरा सकते और उन्हें पंचायत का निमंत्रण, दोषी समझकर न देना कानूनके खिलाफ है। आपको उन्हें बुलाना ही होगा। उन्हें बुलाये बिना पंचायतका काम आगे चल ही नहीं सकता।" कुछ सनातनी पंचोंको यह बात जंची और उन्होंने उपर्युक्त सज्जनों को बुलाना मंज़ूर किया। लेकिन जिनकी उमर पंचायतमें बखेडे डालने, आपसमें फूट करने, गरीबोंको दबानेमें ही बीती है वे यह बात कैसे मंजूर कर सकते थे उन्होंने न्याय विरुद्ध सलाह दी और बुलाना बंद किया गया। "बुलाना और नहीं बुलाना" इस वादविवादमें श्रीमंत ठेकेदार पंचोंने गरीब और स्वतंत्र बुद्धिके युवकों को अपमानित कर-उन्हें आमंत्रण होते हुए भी वे अपनी पार्टीके नहीं हैं यह देख 'तुम यहाँके राईस नहीं', 'तुम्हें बोलनेका अधिकार नहीं', 'तुम चुप बैठो' आदि बातें कहकर दबाना चाहा। उन्होंने घरपर ही ठहरा लिया था कि आजकी पंचायतका जलसा किस तरह चलाया जाय और फैसला क्या दिया जाय। लेकिन युवक काफ़ी और कानून जाननेवाले थे और साथही उनका कहना न्याय्य होनेसे अपनेको पंच समझनेवालोंको बिदा होना पड़ा। बाकी रहे हुए पंचोंने पंचायत कैसे बुलायी गयी और पंचायतमें क्या हुआ इसकी प्रोसिडिंग लिखी और उसपर अपने हस्ताक्षर किये। साक्षीके लिये अन्य समाजके सज्जनोंके भी हस्ताक्षर लिये गये और पंचायत रातको १०॥ बजे बरखास्त हुई।

उधर पंचायतमेंसे जो लोग उठ गये थे उन्होंने सनातन धर्मके ठेकेदार श्रीमंत रामनाथजी जाजूके यहाँ पंचायतका जलसा शुरू किया। गांवके ५० घरके माहेश्वरियोंमेंसे करीब २० घरके आदमी वहाँ थे। वहां कामकाज शुरू करके श्री बन्सीलालजी बिड़लाको दोषी ठहराया। और उन्हें जाति बहिष्कृत किया। जो बात समझी उसमें पंचोंने जो प्रस्ताव लिखा है उसमें रुक्मिणीदेवीजी कौन जात और खांप की हैं यह जानबूझकर लोगोंकी आंखोंमें धूल डालनेके लिये लिखना टाल दिया। जिनकी लग्नपत्रिका सब पंचोंके हाथ पड़ी और कई लोगोंमें यह भी सवाल उठा था कि लड़की माहेश्वरी है या ओसवाल उन रुक्मिणीदेवीकी खांप टालने का अर्थ ही यह है। पंचोंको इतना तो समझना चाहिये कि यह बात कानूनके खिलाफ है। बन्सीलालजीको बहिष्कृत करनेके बाद फिर विवाहमें शामिल होनेवालोंका सवाल उठा। शामिल होनेवालें की यादी खूब लम्बी थी। फिर जिन लोगोंने बन्सीलालजीके यहां विवाहमें खानपान किया उन्हींको बहिष्कृत किया जाय ऐसा उन्होंने ठहराया। इस यादीमें भी कुछ कम न थे करीब ५७ भाइयोंने इस कार्यक्रम में भाग लिया था। लिस्ट पढ़ना शुरू हुई। जब श्री रघुनाथजी बिड़ला वकील का नाम आया। तब उनके बड़े भाई श्री बण्डूलालजीने कहा—"वे अब बन्सीलालजीके यहां नहीं जायंगे।" सुनकर पंचोंको हर्ष हुआ। और रघुनाथजी बिड़ला वकीलका नाम बहिष्कृतोंकी यादीसे हटाया जाय, यह प्रस्ताव रखा गया। "इस प्रस्तावके मैं खिलाफ हूं"—ऐसा श्री रामनाथजी कन्हैयालालजी कावराने कहा। खिलाफ होनेके कारण बतलाते हुए इन्होंने कहा—"श्री रघुनाथजी यहां नहीं आये हैं। उन्होंने मुझे पश्चात्ताप हुआ है ऐसा भी कहा नहीं है। और पंचोंसे क्षमा भी नहीं मांगी है।"—तब ठेकेदार पंचोंने जवाबमें कहा—"वे नहीं तो उनके भाई तो हैं। उनके भाईके कहनेपर उनका नाम हटानेमें कोई हर्ज नहीं है।" तब रामनाथजी उठकर बोले—"मुझे यह मंज़ूर नहीं, यह बिल्कुल अन्याय है। आप लोग श्रीमंतोंके लिये हमेशा ऐसा ही निराला नियम झट पट बना लेते हैं।" तब ठेकेदारोंने जवाब दिया-"न मंज़ूर हो तो आपकी मर्जी।" यह अन्याय देख कर और कुछ लोग श्री रामनाथजी की ओरसे कहने लगे। तब बिड़ला बंधुओंने कहा-"हम भाई रघुनाथको छोड़ नहीं सकते।" यह सुनते ही पंचों की हवा साफ हो गयी। और घबड़ाकर बोले-"रघुनाथजीका नाम यादी से जरूर हटाना चाहिये।" तत्काल रघुनाथजी का नाम यादीसे हटाया गया। और बाकी लोगों को बहिष्कृत (ब्याकासुं खानपान बंद करणो) किया गया। रामनाथजी कावरा अर्थिक परिस्थितिसे साधारण हैं। यदि वे लक्षाधीश होते तो उनकी बातपर कुछ विचार करना पड़ता। पर उनकी एकने भी न सुनी। श्री रामनाथजीने अपनी असंमति दिखाकर और कारण दिखाकर ठेकेदार पंचोंसे विदा ली। लेकिन रघुनाथजी

(शेष पृष्ठ ५ के कालम ३ पर)

जलगांव पंचायतकी तानाशाही

★

★ श्री गोकुलचंदजी लाहोटी ★

एरंडोल के पुनर्विवाहके बारेमें खानदेशमें हर जगह होनेवाली पंचायत आखिर जलगांवमें भी ता. २५।१२।४१ को रातको हुई। पंचायतके नियमानुसार एरंडोल पंचायतसे (कुछ एकपक्षीय व्यक्तियोंके द्वारा दिया हुवा निर्णय) आया हुवा निर्णय पढ़कर सुनाया गया। जजमेंटमें यह लिखा था कि उपरोक्त विवाहमें सम्मिलित लोगोंने एक बहुत जबरदस्त गुनाह किया है इसलिये उन लोगोंके साथ खाना पीना आदि व्यवहार बंद किया जाय। यहांके पंचोंने भी जिसमें कुछ श्रीमंत और स्वार्थी लोग हैं, और पंचायत ही जिनका जीवन-उद्देश्य है, बगैर सोचे-समझे और समाजके इतर सज्जनोंकी राय लिए झटसे फैसला दे दिया कि "जिस प्रश्नपर एरंडोल पंचायतने निर्णय दिया है उस प्रश्नपर हमें और दिमाग खर्च करनेकी क्या जरूरत हैं? बस होगया फैसला।" विवाहमें सम्मिलित यहांके दो नवयुवकोंसे (मैं और श्री. माणिकचंदजी कावरा) जो उस टाईमपर मौजूद थे न तो कोई बात पूछी गई और न उनके पूछनेका कोई जवाब मिला। उन्होंने पंचायतसे सिर्फ दो सवाल पूछनेका काफी प्रयत्न किया लेकिन पंचोंसे इसी आवाज़ की प्रतिध्वनि आई कि "यह कोई वादविवादकी दूकान नहीं है।"

इसी तरहसे पंचायतका यह नग्न स्वरूप देखकर उपस्थित सज्जनोंमेंसे किसीने एरंडोलसे कुछ तटस्थ सज्जनोंके मार्फत आये हुये वहांके पंचायतकी सत्य घटनाके बारेमें पूछनेका साहस भी किया, लेकिन उसी समय उनकी ज़बान बन्द कर दी गयी। इस बातसे समाजमें काफी असंतोष पैदा हुआ। उन्होंने पंचोंकी इस तानाशाही को न मानते हुये युवकों को अपने विचार प्रगट करनेकी इजाज़त देनी चाहिये, ऐसा आन्दोलन किया, लेकिन नतीजा यह हुवा कि पंचोंको जब बालाजीकी मनानी पड़ी।

इस तरहसे पंचायती अधिवेशन सिर्फ १०-१५ मिनट में ही बरखास्त होगया। पंचोंके इस अन्यायी और बेजवाबदार वर्तनका समाजपर काफी असर हुआ। दूसरे दिन समाजके दो उत्साही कार्यकर्ता (श्री. लालचंदजी जाखेटिया और श्री सुखलालजी लड्ढा) ने पंचोंमेंसे एक अग्रेसर पंचसे 'फिरसे पंचायती बुलवायी जाय' यह कहने का साहस किया, लेकिन "जिस आदमीने यहां एकभी पंचायती भोज कार्य नहीं किया (समाजको लड्डू नहीं खिलाये) उसे पंचायत बुलवानेका कोई अधिकार नहीं" ऐसा जवाब दिया गया। उत्साही सज्जन इतनेसे ही नहीं रुके, उन्होंने पंचोंका विरोध करनेका विचार किया। पंचोंको यह बात मालूम पड़ते ही उनमें भागदौड़ शुरू होगई और लोगोंपर हर तरहसे दबाव डालकर उपरोक्त पंचायतमें शामिल न होनेका उपदेश दिया गया और पंचायत न होने देनेके जितने भी उपाय थे वे सब किये गये। युवकोंको भी यही चाहिये था; पंचायत करके जो कार्य नहीं होता वही कार्य प्रत्यक्ष इन पंचोंकी मनोवृत्तिके प्रदर्शन द्वारा हो गया। समाज इस बातसे अच्छी तरहसे परिचित हो गया कि जिस पंचायतमें सिर्फ इन ५।७ ठेकेदारोंके सिवाय किसीको अपने विचार प्रकट करनेका अधिकार नहीं वह पंचायत नहीं है, वह तो है इन पंचोंके अस्तित्वकी पाठशाला।

जिन पंचोंने आज दिन तक समाजके हाथ-पैर तोड़कर समाजको पंगु बनाया, जिन्होंने अपनी उमर भर सिवाय पंचायतके एक मिनट भी नहीं गंवाया, जिन्होंने बड़ी बड़ी

(शेष पृष्ठ १७ के कालम ३ पर)

धुलियाकी पंचायतका स्तुत्य रवैय्या

★

★ श्री छगनलालजी अजमेरा ★

एरंडोलके पंचों की ओरसे धुलियाके माहेश्वरी पंचोंके पास ता. २४।१२।४१ को एरंडोल निवासी श्रीयुत बन्सीलालजी बिडलाके ब्याह के बारेमें एक पत्र आया। इस पत्रमें लिखा था।

उस विवाहमें जो सज्जन पधारे थे (गांववाले) उनसे गांववालोंने खान पान बंद किया है। आप भी ऐसा ही करें।

इस पत्र को पढ़नेके लिये ता. २६।१२।४१ के रात्रिको ८ बजे श्री छोटुलालजी बंग के यहां पंचायती बुलवाई गयी। हमारे धडेमें करीब २५।३० घर होते हुये भी पंचायतीमे १०।१२ पंच उपस्थित हुये। उपस्थित सज्जनोंको आया हुवा पत्र पढकर सुनाया गया। कुछ चर्चा के पश्चात् निर्णय किया गया कि आगेसे पंचायती न बुलायी जाय क्योंकि कोई किसीकी सुनता नहीं।

पंचोकी यह नीति अभिनंदनीय है। स्थानीय दूसरे धड़ेके पंचोंकेपास भी ऐसाही एकपत्र आया था। लेकिन धड़ेमे अभी तक कोई पंचायत नही हुई। इस धडेवाले पंचोसे पूछनेपर मालूम हुआ कि वह पंचायती बुलानेके लिए राजी नही है। इस धडेकी यह उदार नीति अभिनंदनके योग्य है। आशा है ऐसी नीति परगांव वाले पंच भी ग्रहण करेंगे।

जीर्ण मतवादी कई सज्जन विचारसे काम लेते हैं लेकिन जो कट्टर सनातनी हैं उनकी तो बात ही अलग है। कई सज्जन विधवाओंकी हालत पर तरस खाते है लेकिन यह विचार प्रगट करनेमें वे संकोच अनुभव करते हैं। इसलिये सुधारकोंसे प्रार्थना है कि वे अपने विचार और मार्गपर अटल रहें।

श्री वंसीलालजी व श्रीमती रुक्मिणी-देवीके विवाहमें हिस्सा लेनेवाले व्यक्तियों की सूचि

'एरंडोलमें सामाजिक क्रांति' शीर्षक श्री रघुनाथजी बिड़ला का लेख प्राप्त हुआ है। इस लेखमें प्रदर्शित विचार 'माहेश्वरी' में गतांकमें प्रकाशित हो चुके हैं अतः हम उस लेखमें से विवाहमें हिस्सा लेनेवाले व्यक्तियों की सूचि ही केवल प्रकाशित कर रहे हैं।

भोजन सहित सारे कार्यक्रममें हिस्सा लेनेवाले व्यक्ति

श्री. शंकरलालजी मानुधने वकील, श्री. शिवनारायणजी वकील, श्री. रामनारायणजी कावरा, श्री. मुरलीधरजी कावरा, श्री. लक्ष्मीचंदजी लढा, श्री. लक्ष्मणदासजी कावरा, श्री. रामकृष्णजी कावरा वकील, श्री. गणपतजी कावरा, श्री. रघुनाथजी बिर्ला वकील, श्री. शिवनारायणजी कावरा, श्री. शंकरलालजी कावरा, श्री. दामोदरजी जाखेटिया, श्री. रूपचंदजी मानुधने, श्री. जेठमलजी बिर्ला, श्री. रामप्रसादजी बिर्ला, श्री. नंदलालजी लढा, श्री. भगवानदासजी लढा, श्री· सीताराम बिर्ला, श्री. नारायणदासजी मुंगड, श्री· मोतीलालजी कावरा, श्री. हीरालालजी कावरा, श्री. कृष्णदासजी मानुधने, श्री. मुन्नालालजी बिर्ला, श्री. दामोदरजी मानुधने, (भालगांव) श्री. बद्रीजी राठी (धानोरा), श्री. शंकरलालजी बिर्ला, (माखड), श्री. नत्थूलालजी पांडे, (एरंडोल) श्री. केशरीमलजी श्रावगी, (धुले) श्री. रतनलालजी उपाध्ये, (अमलनेर)

जलगांव

श्री. गोकुलचंदजी लाहोटी, श्री. किसनलाल धूपड, लक्ष्मीनारायणजी जाखेटे, श्री.मांगीलालजी लढा, श्री.जगन्नाथजी कासट, श्री. रामकिशनजी मुंगड़, मोतीलालजी बिर्ला, (केपर्ली) श्री. धनालालजी कर्वा, (वरणगांव) श्री. राधाकृष्णजी लढा, (बलवाडी) श्री. तुलसीरामजी न्याती, (चोपडा) श्री. गुलाबचंदजी कावरा, (सोनवद) श्री. माणकचंदजी कावरा, (सोनवद)

धुलिया

श्री. रतनलालजी चांडक श्री. छगनलालजी अजमेरा, श्री. काशिनाथजी सोमाणी, श्री रामकिशनजी न्याती, श्री. भागीरथजी मूंदडा, श्री पंढरीनाथजी येमडे (नगरदेवळे) श्री. नंदलालजी अजमेरे, (किनगांव) श्री. बाबूलालजी झंवर, (कासोदा), श्रीमती यशोदाबाई दुधाणी, (वडोदा) श्री. भागीलालजी गौड ब्राह्मण (नंदुरबार) श्री. मिश्रीलालजी ओसवाल, (जलगांव) श्री. दीपचंदजी साभद्रा वकील, (जलगांव) श्री. देवकीनन्दनजी, (जलगांव) श्री. राजमलजी ललवाणी, एम्. एल. ए. (सेन्ट्रल) श्री. रामनाथजी जोशी, (धुळे) श्री. बद्रीनारायणजी अग्रवाल, (धुळे)

भोजन छोड़ अन्य विवाह विधिमें हिस्सा लेने वाले व्यक्ति

श्री. रामनाथजी कन्हैयालालजी कावरा, श्री. भागीरथजी बंडुलालजी बिर्ला, श्री. रामनाथजी बंसीलालजी कावरा, श्री. भगवानदासजी बिर्ला, श्री. बन्सीलालजी कावरा, श्री. शालिग्रामजी बिर्ला, श्री केदारमलजी मन्यार श्री. बल्दुवाजी (अमलनेर) श्री. आनंदामजी बाहेती, (अमलनेर)

एरण्डोल पंचायत का नादिरशाही फरमान

★

श्री सकल पंच माहेश्वरी सात पेठा यांना नम्र विनंती

तारीख १७।१२।४१ रोजीं एरंडोल येथील माहेश्वरी मंडळींची पंचायत श्री बन्सीलाल बिर्ला यांनीं रुक्मिणीबाई बल्दुवा यांचेशीं पुनर्विवाह केल्याबद्दलचा विचार करण्याकरितां कांहीं मंडळींनीं पंचायत बोलावली. पंचायतीस रात्रीं ८॥ वाजतां सुरवात झाल्यावर श्री जेठमलजी बिर्ला, रामप्रतापजी बिर्ला व बन्सीलालजी बिर्ला हे न दिसल्यामुळें कांहीं मंडळींनीं पंचायती भरविणाऱ्यांना पंचायती पद्धतीप्रमाणें त्यांना बोलाविण्यास सांगितलें. तेव्हां ते दोषी आहेत म्हणून त्यांना टाळण्यांत आलें असें पंचायती भरविणारे श्री. रामनारायणजी जाजू, जमनादासजी जाजू, छगनलालजी बिर्ला, बंडूलालजी बिर्ला, मोहनलालजी तोतला इत्यादिकांनीं उत्तर दिलें. पंचायती पद्धतीप्रमाणें पंचायती जाजमावर विवक्षित व्यक्तिस बोलावून त्यांस जवाब विचारून नंतर सर्व पंचांनीं मिळून निकाल द्यावयाचा असतो. घरींच बसून कांहीं लोकांनीं एकाद्यास दोषी ठरवून टाकणें चुकीचें आहे व तो पंचांचा निकाल होऊं शकत नाहीं. व एकाद्याचें गैरहजेरींत त्यांचें म्हणणें ऐकल्यावाचून निकाल देणें न्याय नाहीं. म्हणून त्यांना बोलाविणें जरूर आहे असें बऱ्याच पंचांनी म्हटलें, परन्तु श्री. रामनाथजी जाजू वगैरे वरील मंडळींनीं न बोलविण्याचा हट्ट धरल्यामुळें या वादविवादांतच थोडीशी मंडळी जाजम सोडून गेली. बाकीच्या मंडळींनीं पंचायतींत काय झालें तें लिहून ठेवून मग पंचायत कांहींहीं निर्णय न करतां बरखास्त झाली.

उठून गेलेली मंडळी खाजगीरित्या श्री. रामनाथजी जाजू यांचे घरीं गोळा झाली. पंचायतींत बसलेले श्री. रामनाथजी कन्हैयालालजी काबरे यांना त्यांस बोलविल्यावरून ते गेले. नंतर पुनर्विवाहांत सामील होणाऱ्या व जेवणाऱ्या गृहस्थांचीं नांवें वांचून झाल्यावर, पुनर्विवाहांत सर्वांत अग्रगण्य भाग घेणारे व आलेल्या पाहुण्यांना जेवण्याचें आग्रहाचें निमंत्रण देणारे श्री. रघुनाथजी बिर्ला वकील (बी. ए., एल्. एल्. बी.) यांच्या घरीं त्यांनीं पुनर्विवाहवाल्याकडे त्यांनीं यापुढें जाऊं नये अशी विनंती करण्यास कांहीं सद्गृहस्थ पंचायती भरण्याआधींच गेले असतां त्यांनीं यापुढें मी श्री बन्सीलाल बिर्लाकडे जाणार नाहीं. असें खाजगीरित्या कबूल केल्यावरून त्यांचे नांव यादींतून कमी करून त्यांना आपल्यात सामील करून घ्यावें असें म्हटलें. त्यावर अशारितीनें कांहीं सद्गृहस्थांनीं एकाद्याच्या घरीं जाऊन त्यांची माफी मिळविणें व सर्व पंचांनीं त्याला समक्ष न बोलवितां कबूल करून घेणें ही तर एक अजब पद्धत आहे. पंचायतीच्या सर्व आयुष्यांत असें कधींच घडलें नाहीं. तरी त्यांस बोलावून आणून त्यांच्या तोंडून माफी वदविल्याशिवाय त्यांस सामील करतां येत नाहीं असें निर्भिडपणें श्री. रामनाथजी कन्हैयालालजी काबरे बोलले. नंतर श्री. बंडूलालजी बिर्ला यांनीं सांगितलें कीं श्री. रघुनाथजी येथें मंडळींत येऊन सांगणार नाहींत. याउपर तुम्ही त्यांना सामील करून घेत नसला तर मी तुमच्यांत नाहीं. याला त्यांचे लहान बंधू श्री. केशरलालजी बिर्ला यांनीं पुष्टी दिली. तेव्हां बाकीच्या मंडळींनीं घाबरून श्री. रघुनाथजी यांचे नांव यादींतून काढून टाकलें. ही पद्धत श्री. रामनाथजी काबरे यांना न पटल्यामुळें ते तेथून निघून गेले. नंतर या खाजगीरित्या जमलेल्या मंडळींनीं पुनर्विवाहवाल्यांची संख्या मोठी पाहून फक्त जेवणांत भाग घेणाऱ्याशीं खानपान बंद करण्याचें आपसांत पक्षपातीपणानें ठरविलें.

दुसरे दिवशीं वरील निकालाची यादी सह्या घेण्याकरितां कांहीं घरीं फिरविली. तेव्हां कांहीं पंचांनीं पुनर्विवाह विरोधी असतांही, त्यांच्या संमतीवाचून न बोलवितां निकाल केला म्हणून सही करण्याचें नाकारलें. व पुनर्विवाहाच्या प्रतिकूल असतांहीं कांहीं पंचाकडे सह्या घेण्यास कागदच पाठविला नाहीं. येथील एक पंच श्री. रघुनाथजी बिर्ला वकील यांचे सख्खे चुलते श्री. हिराचंदजी बिर्ला यांनीं प्रत्यक्ष पंचायती जाजमावर श्री. रघुनाथजी यांना आणून त्यांची माफी त्यांचे तोंडून वदविल्याशिवाय मी तुमच्या यादीवर सही देत नाहीं असें सडेतोडपणाचें उत्तर देऊन सही देण्याचें साफ नाकारलें.

अशा रितीनें श्री. सकल पंच माहेश्वरी एरंडोल या नांवानें कांहीं थोड्या लोकांनीं खाजगी निकालांवर सकल पंचांचें नांव घालण्याचा हक्क नसतांही पुनर्विवाहांत जेवले त्यांचे खानपान बंद केल्याच्या चिठ्या रवाना केल्याचें समजतें म्हणून खरी हकीगत कळविण्याच्या दृष्टीनें लिहीत आहोंत. यावर खोल विचार करून योग्य तें करावें. अशी विनंती आहे. कळावें.

ता. २०।१२।४१

रामनाथ कन्हयालाल काबरे, प्रेमराज शालिग्राम मारवाडी,
कन्हयालाल गोपाल काबरे, मुरलीधर काशिनाथ जाखेटे,
काशिनाथ तोताराम राठी, छगनलाल छोटीराम काबरे,
दामोदर शिवजी नव्हाल, काशिनाथ विरचंद बिहाणी,
जगन्नाथ तिलोकचंद मारवाडी, शिवनारायण हीरालाल मानुधने,

श्रीनिवास कॉटन मिल्स लिमिटेड

बंबई

अपने कलापूर्ण, सुन्दर और टिकाऊ कपड़े के लिये मशहूर है।

★

ट्रेड नेम्स

नरेन्द्र गोल्डन प्लम एस. एन. सी. फॉक्स ग्लोब नगेन्द्र	धुला लांग क्लाथ
के के के के के ओ ओ ओ ओ ओ हिन्दनो ताज असली फूल बनर्जी यू. पी. एक्सप्रेस सी. पी. एक्सप्रेस मारवाड़ एक्सप्रेस	धुली धोतियां व साड़ियां
डायमण्ड हाल डायमण्ड चेन डायमण्ड बैटरी बंगाल फैशन प्रोमिनेंट लीडर प्रोमिनेंट फैशन	धुली या कोरी पॉपलीन
फ्लाइंग मून मालिनी मिस बिब्बो	चेक वायल

आदि आदि

★

इस मिल में सब प्रकार का धुला व कोरा कपड़ा—लांग क्लाथ, शर्टिंग, वायल, धोतियां, साड़ियां, मलमल, छपी हुई-छींट, वायल, बोस्की आदि कपड़ा विविध डिज़ाइनों और रंगों में तैयार होता है।

यदि आप उत्तम-सुन्दर-कलापूर्ण, टिकाऊ तथा सस्ता कपड़ा चाहते हैं, तो हमारे मिल के बने हुये कपड़ों से आप को पूर्ण संतोष मिल सकेगा—क्योंकि यह मिल भारतकी सामाजिक, आर्थिक अवस्था, तथा सर्वसाधारण की रुचि को लक्ष्य में रखकर ही सब प्रकार के वस्त्र तय्यार करती है।

बाज़ार में कपड़ा खरीदते समय इसी मिल का कपड़ा खरीदिये।

इस मिल का बना कपड़ा इस्तेमाल कर आप निश्चय ही प्रसन्न होंगे।

★

ट्रेड मार्क

- महाल
- पेटल ब्यूटी
- गोल्डन प्लम
- फॉक्स ग्लोब
- श्रीरामपंचायतन
- चार्मिंग ब्यूटी
- माधुरी
- मुरली
- ईस्टर्न ब्यूटी
- सेक्रेड फ्लूट
- श्रीराम

★

—हमारी विशेषता—

रेडियोगर्ल और **नरेन्द्र** कालिटी का धुला लांगक्लाथ—इसे बरतकर आप अवश्य सन्तुष्ट और प्रसन्न होंगे।

— हमारे सेलिंग एजेण्ट —

बम्बई
दी बम्बई एजन्सी कम्पनी लिमिटेड
सर विट्ठलदास गली,
मूलजी जेठा मार्केट, बम्बई नं० १

कलकत्ता
मंगनीराम रामकुमार
६५ बाँसतल्ला स्ट्रीट
कलकत्ता

कानपुर
ज्वालाप्रसाद राधाकिशन,
काहूँ कोठी, कानपुर

अमृतसर
शामदास कपूर एण्ड कम्पनी
कटरा अहलुवाल
अमृतसर

दिल्ली
हनुमानप्रसाद धूत एण्ड कम्पनी
कटरा नवाब
देहली

पत्र-व्यवहार का पताः—

श्रीनिवास कॉटन मिल्स लिमिटेड

डिलाइल रोड, बम्बई नं १३.

राजस्थानी संसार

इन्दौर

सभापतिजीका आगमन

अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभाके सभापति श्रीरामकृष्णजी धूत कल ता. २६ को उदयपुरमें जो सम्मेलन हो रहा है उसमें भाग लेनेके लिये जाते समय मार्गमें इन्दौर पधारे। इन्दौर स्टेशन पर कुछ मित्रोंके आग्रहसे जो कि आपसे मिलनेके लिये स्टेशन पहुंच गये थे, आप कुछ घंटोंके लिये इन्दौर रुक गये। दोपहरमें स्थानीय माहेश्वरी मिडिल स्कूलमें समाजके प्रतिष्ठित लोगों और कार्यकर्ताओंसे आपने महासभाके आगामी अधिवेशन और समाजसुधार आदि विषयों पर चर्चा की और अपने वहुमूल्य विचार प्रगट किये। इसके बाद आपने माहेश्वरी स्कूलका निरीक्षण किया। आवश्यक चर्चाओं के पश्चात् शामको ट्रेनसे आप उदयपुरके लिये विदा हो गये। आपको विदा करनेके लिये स्टेशन पर माहेश्वरीबंधु और कार्यकर्ता लोग काफी संख्यामें पहुंचे और फूल मालाएं पहिना कर प्रेमपूर्ण विदाई दी।

अनुकरणीय सार्वजनिक दान

इन्दौरके सुप्रसिद्ध सार्वजनिक और सामाजिक कार्यकर्ता श्रीयुत श्रीकृष्ण झंवरके पिता श्री हरिप्रसादजी झंवर का इसी मासमें स्वर्गवास होगया। श्रीयुत हरिप्रसादजी झंवर का जीवन उन कर्मठ और साहसी लोगों का जीवन था जो अनेक कठिनाइयों का मुकाविला करते हुए भी अपने स्वाभिमान की पूर्ण रक्षा करते हैं। स्वर्गीय झंवरजी को जहां अपने जीवनमें आर्थिक कठिनाइयों का घोर मुकाबिला करना पड़ा वहां अपने प्राचीन विचारों और अपने सुपुत्र श्रीयुत श्रीकृष्णजी झंवरके आधुनिक सुधारवादी विचार, जिनके कारण इन्दौरके माहेश्वरी समाजमें पिछले वर्षोंमें हरिजन प्रकरण को लेकर बहुत बड़ा तूफान हुआ था, के कारण मानसिक संघर्षका भी कुछ कम सामना नहीं करना पड़ा। फिर भी सारे जीवनमें कट्टर पंचायतवादी होते हुए भी परिवर्तित स्थितिके अनुसार आपने अपने को भी काफी अनुकूल बना डाला और सार्वजनिक एवं राजनैतिक विषयोंकी जिज्ञासा और रुचि रखने लग गये। आपकी इस परिवर्तित मनोवृत्तिका ही यह परिणाम हुआ कि ईश्वरकृपासे आपने जीवनके अंतिम दिनोंमें आर्थिक स्थिति सुधरने पर दान-पुण्य क्रिया और मृत्युसे पूर्व एक तरफ जहां अन्य धार्मिक कार्य और ब्राह्मणभोजनके लिये श्रीयुत श्रीकृष्णजी झंवरको आदेश दे गये वहां सामाजिक एवं राजनैतिक संस्थाओंको भी दान देना नहीं भूले। एक अच्छी रकम आपने उसके लिये भी दी जिसका विवरण निम्न प्रकार है।

२०१) श्रीमाहेश्वरी मिडिल स्कूल, इन्दौर
५१) श्री महेश सार्वजनिक वाचनालय, ,,
५१) श्री माहेश्वरी युवक मंडल ,,
२१) "माहेश्वरी" पत्र
११) अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा
११) ,, ,, माहेश्वरी महिला परिषद
५) "राजस्थानी वीर" पूना
२१) ब्रह्मचर्याश्रम लालबाग पुलिया, इन्दौर
११) हरिजन सेवक संघ, इन्दौर
७) श्रद्धानंद अनाथालय, इन्दौर

(शेष कालम ३ पर)

नाथद्वारा

समाज सुधार सम्बन्धी प्रचार

माहेश्वरी समाजके नेताओंके उपदेश

नाथद्वारामें पंचायती नोहरेमें रात्रि को ८॥ बजे समाज-सुधार विषयक प्रचार हुआ। सभापति का आसन श्री खूबीलालजी देवपुरा ने ग्रहण किया। इसके पश्चात् श्री सोहनलालजी ने एक सुधार विषयक भजन गाया।

श्री. रामप्रसादजी हुरकट ने अबतक जा माहेश्वरी महासभाने राजस्थानमें प्रचारकार्य किया उसका दिग्दर्शन कराया तत् पश्चात् राजस्थान प्रांतीय कांफ्रेंसके प्रस्तावों का विवेचन किया और आगुन्तक महानुभावों का परिचय कराया।

श्री. चांदकरणजी शारदा सभापति राजस्थान-सिंधप्रांतीय कांफ्रेंस ने भाषण देते हुए संसारकी वर्तमान राजनीतिक दशा पर प्रकाश डाला और प्रत्येक बंधुको अपने शरीरको सुसंगठित वनानेका आदेश दिया और अपील की कि नाथद्वाराका युवकमंडल शीघ्र ही एक अखाड़ा जारी करे। वृद्धविवाह, वालविवाह को रोकनेके लिये नवयुवकों को उत्साहित किया। मौसरको सामाजिक अत्याचार बतलाते हुये आपने कहा कि यह कोई धार्मिक कृत्य नहीं है इसलिये प्रत्येक बंधु का कर्तव्य है कि वह इस कुप्रथा का त्याग करदे। अंतमें आपने प्रत्येक बंधुको अपनी जाति, देश, और धम्मके हितमें परस्पर प्रेम रखने का आदेश दिया।

श्री वृजवल्लभदासजी मूंधड़ा ने अपने भाषणमें जाति-बहिष्कार को एक घातक प्रकार बतलाते हुए कहा कि किसी को हमें जातिच्युत करने का अधिकार नहीं क्यों कि उसने हमारी जातिमें जन्म लिया है और उसके नाते उसका जातिमें रहने का जन्मसिद्ध अधिकार है। आपने कहा कि इस युगमें जब कि रेल इत्यादिके साधन इतने अधिक हो गये हैं जातिबहिष्कार की नीति सफल नहीं हो सकती क्यों कि जाति बहिष्कृत व्यक्ति अपने साथ आसानी से एक समूह बना सकता है अतः वहिष्कारकी नीति इस समयमें सफल नहीं हो सकती। आपने कहा कि प्रश्न उठता है कि अब हमें कौनसा शस्त्र काममें लाना चाहिये। मेरी सम्मतिमें तो व्यक्तिगत असहयोग ही इसकी उत्तम साधन है। व्यक्ति असहयोगके मानी हैं केवल दोषी व्यक्तिसे असहयोग करना परन्तु उसके साथ व्यवहार करनेवालोंसे असहयोग नहीं करना। आपने परवानगी प्रथाके दोष बतलाये और कहा कि प्रत्येक व्यक्तिको स्वतंत्रता देनी चाहिये। दिखावे की कुप्रथासे हमारे समाजमें होड़ाहोड़ बढ़ती है, लौकिक एवं पारलौकिक महत्व घटता है। शोकप्रथाको कम करना चाहिये, हमें उसे प्रोत्साहन नहीं देना चाहिये।

श्री कस्तूरचंदजीने कहा हमें व्यक्तिगत रूपसे कार्य करना चाहिये। श्री रामकृष्णजी धूतने भाषण देते हुये कहा कि शिक्षा हमारे लिये निहायत आवश्यक है। जातीय संगठनपर भी आपने बहुत जोर दिया। इसके अतिरिक्त स्त्रीशिक्षा और पर्दा निवारण के महत्व को बड़ी विद्वत्तासे समझाया।

ततपश्चात् श्री भागीरथमलजी पलोड़ श्री नानालालजी कावरा, सुंदरलालजी कावरा तथा अन्य माहेश्वरी बंधुओं का स्वागत करनेके लिये धन्यवाद दिया। सभापतिजीके आगुन्तक सज्जनों को धन्यवाद देनेके पश्चात् सभा जयघोषके साथ विसर्जन हुई।

इंदौर

मध्य-भारत प्रान्तीय माहेश्वरी सभा

श्री माहेश्वरी युवक मंडल के आदेशानुसार मैं ता. २२-१२-४१ से मध्य भारत के नगरों में प्रचारार्थ गया था। भ्रमण से मुझे यह अनुभव हुआ है कि यदि मध्य भारत की प्रांतीय सभा का निर्माण किया जाय तो मध्य भारत स्वयं अपनी उन्नति करने मे समर्थ होगा और पड़ोसी प्रांत, जैसे राजस्थान-सिंध को भी उन्नत करने में सहायक हो सकेगा।

श्री अखिल भारत वर्षीय माहेश्वरी महासभा के नियम ७ के अनुसार मध्य भारत में एक प्रांतीय सभा की अनिवार्य आवश्यकता है। इस आवश्यकता की पूर्ति करने के हेतु मैं मध्य भारत की माहेश्वरी जनताको विशेष रूप से, तथा अन्य प्रान्तों की माहेश्वरी जनता से निवेदन करता हूं कि वे मेरी निम्नाङ्कित प्रांतीय सभा की योजनापर विचार जनवरी मास की ३१ वीं तारीख तक श्री माहेश्वरी युवक मंडल इन्दौर के प्रधान मंत्री के पास भेजने की कृपा करें।

नाम :

इस सभा का नाम 'मध्य भारतीय माहेश्वरी सभा' होगा।

उद्देश्य :

प्रांतीय माहेश्वरी समाज की धार्मिक सामाजिक आर्थिक और राजनैतिक उन्नति करना।

साधन :

(१) उपरोक्त उद्देश्य की पूर्ति के लिये प्रांतभर की जातीय संस्थाओं के साथ सम्बन्ध स्थापित करना।

(२) प्रांत में माहेश्वरियों की शिक्षा, और शारीरिक तथा व्यवसायिक उन्नतिके लिये सामग्री एकत्रित कर पत्रव्यवहार द्वारा अथवा भ्रमण द्वारा प्रचार करना।

(३) प्रांतीय, देशीय तथा अंतर्राष्ट्रीय राजनैतिक हलचलों से मध्य भारतीय माहेश्वरी समाज सामाजिक, धार्मिक, व्यापारिक तथा औद्योगिक क्षेत्र में किस प्रकार लाभ उठा सकता है इसकी आवश्यक योजना बनाना और जातीय तथा विजातीय विद्वानों का सहयोग प्राप्त करना।

(४) जातिके अनाथ, अशिक्षित, बेकार, अपंग, विधवा, निराश्रय जाति भाइयों को यथाशक्ति सहायता पहुँचाना।

(शेष पृष्ठ २२ के कालम ३ पर)

(शेष कालम १ पर से)

१००) बाबा काली कमली वालेका अन्नक्षेत्र, ऋषिकेश
३१४) अन्य आवश्यक सहायतार्थ
(स्थाई पारितोषिक फंड)
५१) इन्दौर राज्य प्रजा मंडल, इन्दौर
३१) "प्रजामंडल पत्रिका ,,
२१) नगर प्रजा मंडल ,,
५१) लोकसेवक संघ, खरगोन
२१) ग्राम सेवा कुटीर सैंधवा
२५) श्री गौरक्षिणी सभा, इन्दौर
५) महिला परिषद ,,
११) नगर कांग्रेस कमेटी, इन्दौर
१०१) गरीबों की सहायतार्थ
१२२१)

इस प्रकार कुल १२२१) रु. का अपने दान दिया है। आशा है समाजके अन्य सुधारप्रेमी धनिक सज्जन श्रीयुत झंवरजी का अनुकरण करेंगे और सामाजिक कार्यों एवं अन्य बड़े बड़े खर्चोंके समय सार्वजनिक और सामाजिक संस्थाओं को सहायता देने की परंपरा चालू रखेंगे।

राजस्थानी संसार

इन्दार

हम प्रगति शील हैं ?

श्री माहेश्वरी युवक मण्डल इन्दौरने शिष्ट-मण्डलके दौरेके लिये तय्यारी करने तथा मध्य-भारतको एकताके दृढ-सूत्रमें गूंथनेके उद्देश्यसे एक प्रचार समिति बनाई। इस प्रचार समितिके आदेशानुसार श्री श्रीनिवासजी झंवर मध्य-भारतके उत्तर-पश्चिमके नगरोंमें प्रचारार्थ गये थे।

रतलामः माहेश्वरी समाजके घर थोड़ेही हैं। जागृति नहीं के तुल्य है।

मंदसौर

माहेश्वरी समाजके ७५-८० घर हैं। इनमें तीन मुख्य तड़े हैं। तीनों तड़ोंके नवयुवक जागृत, उन्नतिशील, उत्साही और परिश्रमी है। नवयुवकोंमें अद्वितीय एकता है और इसी लिये वृद्धोंको लाचार हो प्रतिक्रियावादी कार्योंको बंद करना पड़ता है।

नामच

माहेश्वरियोंके २२ घर हैं। प्रत्येक माहेश्वरी युवक उच्च शिक्षा प्राप्त है। यहांकी पंचायत भी नमिच युवक मण्डलके अधीन है। इन्होंने अपनी शिक्षाका सदुपयोग कर वृद्ध पंचोंको मुग्ध कर लिया है और पंचोंसे ही कई सामाजिक कुरीतियोंका नाश करवा दिया है।

मनासा

माहेश्वरियोंके १२० घर हैं। यहांके माहेश्वरी पंच अन्य जातियां जैसे जैन, बीजावर्गी आदिके पंच भी हैं। तड़े नहीं हैं। कुछ युवक प्रगतिशील विचारवाले हैं। औसर मौसर तथा विवाहमें फिजूल खर्ची बंद है। प्रत्येक बालक बालिका शिक्षित है।

जावद

माहेश्वरियोंके लगभग ८० घर हैं। शिक्षाका पर्याप्त प्रचार है। आढ़तिये अधिक हैं। नवयुवक प्रगतिशील विचारके हैं। और योग्य नेताके नेतृत्वमें आशातीत उन्नति कर सकते हैं। यहां तीन तडें हैं जिनमें एक तड़ सुधार-वादियोंकी है।

उज्जैन

यहां माहेश्वरियोंके १२५ घर हैं। रूढीवादी जनता अधिक है। यहां दो प्रधान तड़े हैं जो कि उन्नति कार्यमें बाधक हैं। कुछ युवक उत्साही हैं किन्तु योग्य और परिश्रमी नेताके अभावसे कार्य नहीं कर पाते।

इन्दौर युवक मण्डल अभी और भी दौरेकी योजना पर विचार कर रहा है। फिर भी महासभाके कर्णधारोंसे अनुरोध है कि वे मध्यभारतको सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिसे देखें तथा अन्य उन्नत प्रान्तोंमें दौरे करनेके बजाय मध्य-भारतके प्रत्येक गांव से अधिक और भौतिक सम्बन्ध स्थापित करनेका आयोजन करें।

प्रचार मंत्री

श्री माहेश्वरी युवक मण्डल इन्दौर

आभार प्रदर्शन

हमारे पुनर्विवाहके अवसर पर अनेक संदेश एवं शुभकामनाएं प्राप्त हुई हैं। उन सज्जनोंका वैयक्तिक आभार मानना अशक्य है। इसलिए हम उन सज्जनोंका इस पत्रके जरिए हृदयसे आभार मानते हैं।

आजके समाजमें नवजवानोंमें सुधारणा विषयक जो बाढ़ आई है उसीके सहारे हम सनातनियोंके तीव्र विरोधका मुकाबला कर इस कार्यमें सफल हुए। इसी तरह भावी जीवनमें नवजवानोंकी कदम कदम पर सहायता मिलेगी ऐसी हमें दृढ़ आशा है।

भवदीय

बन्सीलाल बिड़ला, रुक्मिणदेवी बिड़ला

एरण्डोल

एरण्डोलमें विवाह विच्छेद

एरंडोलके श्री रामनाथजी जाजूके जो कि एक सरपंच हैं, सुपुत्र श्री शिवचंद्रजी का विवाह चार-पांच वर्ष पूर्व महूमें हुआ था। विवाहके पश्चात् कोई तीन-चार मास ही एरण्डोलमे उनकी धर्मपत्नी रही। किन्तु उनमें एवं श्री शिवचन्दजीके घरके दूसरे लोगोंमें अनबन रहनेसे वे बादमें बहुत लम्बे अर्से तक अपने पीहरमें ही रहीं। कहते हैं कि दो मास पूर्व श्री शिवचंदजी अपने मित्रोंके साथ महू गये थे और वे अपनी पत्नी को यह कहकर लिवा लाये थे कि अब किसी प्रकार त्रास नही होगा और हम जुदा ही रहेंगे। इस शर्त्तपर वह इनके साथ एरण्डोल आई थी। कुछ दिन पश्चात् श्री शिवचंद्रजीके साले, पिताजी बीमार हैं, कहकर बहनको साथ ले जानेके लिए एरण्डोल आये थे। वहां अपनी बहनको भेजनेका आग्रह न करते हुए जलगांव जाकर वहांके वकीलों से सलाह ले श्री शिवचंदजीके विरोधमें वहां की अदालतमें एक अर्जी पेशकी जिसमें, कहा जाता है कि, उन्होंने लिखा कि मेरी बहनको एरण्डोलमें बहुत त्रास होता है और उसे कमेरेमें बन्द कर रखा है, मारपीट भी की जाती है और भोजन नहीं दिया जाता। अतः उसे मुक्त कर दिया जाय। २० दिसम्बरको श्री रामनाथजी जाजूके यहां पुलिस 'सर्च वारण्ट' लेकर आयी और श्री शिवचंदजीकी पत्नीसे तीन चार सवाल किये और ता. २२ को श्री शिवचंदजी एवं उनकी पत्नी अदालतमें उपस्थित हुए। वहां इस आशयका समझौता होने की बात सुनी गयी है कि जब कि पति-पत्नीमें पारम्पारिक अनबन है तब दोनोंका जुदा हो जाना अच्छा है और जो भी आभूषण श्री रामनाथजीके हैं वे उनको वापिस कर दिये गये हैं और उनकी सम्पत्तिपर उनकी पुत्रवधूका कोई हक नहीं है। और दोनोंका सम्बन्ध टूट गया है। श्री शिवचंद्रजी चाहें तो दूसरा विवाह कर सकते हैं।—**संवाददाता**

बम्बई

मारवाड़ी विद्यार्थी कोष के लाभार्थ

रसोत्सव

भारत एक निर्धन देश है, फिर अर्वाचीन शिक्षा प्रणाली इतनी खर्चीली है। परतंत्र होनेके कारण सरकारी सहयोग भी नहीं प्राप्त है। आज के भारतीय विद्यार्थी के पथमें आर्थिक समस्या चट्टान रूप होकर खड़ी होजाती है। इस चटटानको तोडकर उसका मार्ग साफ कर दीजिये, और वह स्वतः संघटित होकर भारतको भी स्वतंत्र कर देगा।

इसी उद्देश्यसे मारवाडी छात्र संघने रसोत्सव (Variety Entertainments) कार्यक्रमका आयोजन किया है, जो १८ जनवरी १९४१ को सेण्ट जेविअर्स कालेज हाल (धोबीतलाव) में होगा। प्रसिद्ध अभिनेता और अभिनेत्रियों के गीत होंगे। श्री विष्णु पंत पागनीस, मेनका मंडलीके प्रसिद्ध मारवाड़ी कलाकार पंडित गौरीशंकरजी जिन्हें १९३६ में बर्लिन ओलम्पिक्समें सर्वश्रेष्ठ कथक नर्तकका प्रमाण पत्र मिला, ने अपने सहयोगका वचन दिया है। छात्र कलाकार कुमारी लीला कनैडीके नृत्य श्री. पाटील और चटर्जी आदि अन्य कई कलाकारोंके वाद्य संगीत होंगे।

इन सबके साथ ही एक हिन्दी नाटिकाका भी अयोजन किया गया है।

रसोत्सवकी टिकट लेकर आप एक पंथ दो काज कर सकेंगे।

सूचना— टिकटोंकी दर ५) रु., ३) रु., और २) रु.,
१) रु. केवल विद्यार्थियोंके लिये।
टिकटें संघके कार्यालय (जवेर बाग, कालबादेवी) में मिल सकेंगी।—मंत्री

राजस्थान-सिंध प्रांतीय माहेश्वरी सभा

कार्यकारी मंडलके प्रथमाधिवेशन की कार्यवाही

आज ता. २९-१२-४१ को मंडल का साधारण अधिवेशन फतेह मेमोरियलमें प्रातःकाल ठीक १० बजे प्रारंभ हुआ उपस्थिति इस प्रकार थी।

(१) दे. श्री चांदकरणजी शारदा-सभापति, (२) श्री वसंतीलालजी नोगजा, मंत्री, (३) श्री हनुमान प्रसादजी, सोढाणी उपसभापति, (४) श्री श्रीगोपालजी मोहता कोशाध्यक्ष, (५) श्री रामप्रसादजी हुरकट, सांभर, (६) श्री भागीरथमलजी पलोड़, अजमेर, (७) श्री वृद्धिचंदजी लखोटिया अजमेर, (८) श्री हरिनारायणजी राठी, जयपुर, (९) श्री भंवलालजी देपुरा उदयपुर, (१०) श्री दिलीपसिंहजी राठी, (११) श्री मोहनलालजी बहेड़िया, अजमेर।

इनके अतिरिक्त निम्न सज्जन विशेष निमंत्रणसे उपस्थित थेः—

(१) श्री. बृजवल्लभदासजी मूंधडा, (२) श्री. रामकृष्णजी धूत, सभापति माहेश्वरी महासभा (३) श्री. गुलाबचंदजी नागोरी।

निम्न प्रस्ताव स्वीकृत हुएः—

प्रस्ताव नं. १—आगामी वर्षभरके कार्यके लिये धनसंग्रह का विषय प्रस्तुत हुआ और निश्चय किया गया कि कमसे कम १०००) संग्रह किया जावे।

उपस्थित सज्जनोंने निम्न चंदा देने का वचन दियाः—

१५१)	श्री. श्रीगोपालजी मोहता
१५१)	,, रामेश्वरप्रसादजी सोढाणी
१०१)	,, चांदकरणजी शारदा
२५)	,, रामकृष्णजी धूत
२५)	,, बसन्तीलालजी नोगजा
११)	,, रामप्रसादजी हुरकट
११)	,, भागीरथमलजी पलोड़
११)	,, वृद्धिचंदजी लखोटिया
११)	,, हरिनारायणजी राठी
११)	,, बृजवल्लभदासजी मूंधडा
११)	,, भंवरलालजी देवपुरा
५)	,, मोहनलालजी बहेड़िया (प्राप्त)
५)	,, किस्तुरचंदजी तोशनीवाल (प्राप्त)
५)	,, दिलीपसिंहजी राठी
५)	,, सोहनलालजी सारड़ा (प्राप्त)
५३४)	

प्रस्ताव नं. २ श्री रामप्रसादजी हुरकटका त्यागपत्र खेद पूर्वक स्वीकार किया गया तथा उनके रिक्त स्थानपर सर्व सम्मतिसे श्री कस्तूरचंदजी तोषणीवाल शाहपुरा निवासी नियुक्त किये गये।

प्रस्ताव नं. ३ प्रचारकी दृष्टिसे यह निश्चय किया गया कि ग्राम २ में प्रचारके समय जातीय बंधुओसे व्यक्तिगत रुपसे मिलकर सुधार संबंधी प्रस्तावोंको कार्य रूपमें परिणित करनेके लिये उनको प्रोत्साहित किया जावे।

प्रस्ताव नं. ४ शिष्टमंडल बनाकर प्रचारके लिये प्रांतमें घूमकर प्रतिज्ञा पत्र भी भरवाये जावें।

मंत्री—**बसन्तीलाल नोगजा**

(पृष्ठ २१ का शेषांश)

इस प्रकारके एक संघ की मध्यभारत में नितान्त आवश्यकता है क्यों कि आजकल के उत्तम यातायातके साधनों का सदुपयोग कर हम एक दूसरेके निकट सम्पर्क में आ सकते हैं, एक दूसरे की आवश्यकताओं तथा कठिनाइयों का हल निकाल सकते है।

इस प्रकार मध्य भारत, महासभा का एक पुष्ट अङ्ग बनकर महासभा का सन्देश प्रान्तके प्रत्येक नगर में एक जोरदार आवाज में पहुँचा सकेगा।

श्रीनिवास झंवर

राजस्थानी संसार

श्री राजस्थान हितकारक मंडल, अमरावती

उपरोक्त मंडल की ओरसे श्री राजस्थान वाचनालयका उद्घाटन समारंभ ता. २।१।४२ की शामको ८ बजे श्री जुगलकिशोर व्यायामशालाके प्रांगणमें श्रीमान राधावल्लभजी लड्ढाके सभापतित्वमें श्रीमान सेठ मांगीलालजी मूणोतके कर कमलोंद्वारा धूमधामसे किया गया। सभामें उपस्थिति काफी थी। राजस्थानी समाजके सभी प्रमुख पंच व कार्यकर्त्ता उपस्थित थे।

इसी अवसर पर श्रीमान श्रीकृष्णदासजी लड्ढा वकील, श्रीमान गंगाबिशनजी सिकची वकील, मांगीलालजी नांगलिया, मोतीलालजी बंग, जवाहरलालजी मूणोत और बाबू राजेंद्रप्रसाद मालपाणीके भाषण हुए। पश्चात् सबका आभार प्रदर्शन होकर पानसुपारीके बाद कार्यवाही खतम हो गई। लाइब्रेरीके लिए निम्न भेंटें मिलीं।

५१) श्रीमान मांगीलालजी मूणोत

४१) श्रीमान जवाहरलालजी मूणोत

श्रीमान गंगाबशिनजी सिकची, श्री जगन्नाथजी मालपाणी और श्री हरनारायणजी लड्ढाने पुस्तकालयको किताबें देनेका अभिवचन दिया।

जोधपुरके युवकोंका स्तुत्य कार्य

कुछ वर्षों पूर्व श्री माहेश्वरी सेवा–मण्डल की स्थापना हुई लेकिन वह असफल रही। यह जानकर हर्ष होगा कि अभीके हमारे नवयुवक भाइयोंने सेवाके महत्त्वको समझ श्री माहेश्वरी सेवामण्डल का ता. २२–६–४१ को पुनरुत्थान किया।

जोधपुरके एक पासके गाँवमें एक जाजू घराने की लड़की थी जिसके माता–पिता का उसके जन्मके कुछ अर्सेके बाद ही देहान्त हो चुका था और उसका एक राजपूत ने पालन पोषण किया। उस राजपूत को उस लड़की की १५ वर्ष की उम्र होने पर शादीकी फिक्र हुवी और उसने एक ओसवाल नवयुवकसे शादी करना तय किया। परन्तु कुछ माहेश्वरी नवयुवकों को इसका पता चल गया। इस पर उस लड़की की शादीके लिये एक नवयुवक भाई रूपराजजी राठी को तैयार किया और उस राजपूतको १००) सालानाके हिसाबसे उस लडकीके पालन पोषण का खर्च दे दिया जो कि करीब १६००) रु. था और वह विवाह मगसर शुदी १० को माहेश्वरी न्यातिके नौहरेमें सम्पन्न हो गया।

इस पर सेवा मण्डल ने अपने सदस्यों को जिन्होंने इस में हार्दिक सहयोग दिया था, बधाई दी। ता. ६–१२–४१ को शामके ८॥ बजे भाई रामजीवनजी भूतड़ाके सभापतित्त्व में सेवा मण्डल की सभाने निम्न प्रस्ताव पास किया—मण्डल को यह जानकर बहुत खुशी हुई कि हमारे मण्डलके (करीब १० सदस्यों) बहुत से सदस्योंने भाई रूपराजी राठी की शादीमें भरसक मदद दी जो कि मगसर सुद १० सम्वत् १९९८ को जाति नोहरेमें हुई। मण्डल उन अन्य बन्धुओं–बूढे, जवान और बच्चों के साहसकी भी सराहना करता है जिन्होंने दिलसे हर प्रकारका इस शादीमें सहयोग दिया। साथ ही भाई रूपराजजी राठी भी इस सुकार्यके लिये धन्यवादके पात्र हैं।

मण्डलने ता. १९–१२–४१ की सभामें निम्न प्रस्ताव पास कियाः–मण्डल कुँवर दाऊदासजी फोफलिया की आकस्मिक और असामायिक मृत्यु पर शोक प्रकट करता है और ईश्वरसे प्रार्थना करता है कि मृतक आत्मा को शांति प्रदान करे और उनके दुखी परिवार को इस असह्य दुःख को सहन करने की हिम्मत दे।

बम्बई प्रान्तीय माहेश्वरी सभा सभापति कौन हो ?

बागलकोटमें होनेवाली बम्बई प्रान्तीय माहाश्वरी सभाके सभापति पद के लिये निम्न लिखित नाम हम सूचित करते है।

१ श्री. लक्ष्मीनारायणजी जाजू बी. ए. एल. एल. बी., सातारा २ श्री. सीतारामजी बिर्ला, एरंडोल ३ श्री. आनंदरामजी बाहेती, जलगांव ४ श्री. नारायणदासजी धूत, पूना।

जिन माहानुभावोंने सामाजिक सुधारके क्षेत्रमें तथा सत्कार्यमें अपने आयुष्यका अधिकांश भाग लगा दिया हो ऐसे ही सज्जनको प्रांतीय सभाके सभापति जैसे उच्च स्थानका मान देना चाहिये। इसीसे सामाजिक सुधारणाके नाते समाजपर बहुत अच्छा असर पड सकता हैं।

शिवनारायण लोया नाशिकरोड **शिवचंद्र झवर** पूना

पूना विद्यार्थी भवनके विद्यार्थियोंकी सभा

श्री बंसीलालजी व श्रीमती रुक्मिणीदेवीका अभिनंदन

रा. ब. हणमंतराम रामनाथ विद्यार्थी भवनके विद्यार्थियोंकी एक सभा ता. ११ दिसम्बर ४१ को प्रातः ८ बजे विद्यार्थी भवनमें हुई। विद्यार्थीयोंने एक प्रस्ताव पास किया जिसमें मारवाड़ी समाजमें स्त्रियोंका स्थान, विशेषकर विधवाओंका स्थान कितना गिरा हुआ है यह बतलाते हुए श्री बंसीलालजी व श्री रुक्मिणीदेवीका निडरताके साथ समाजके सामने उदाहरण पेश करनेके लिए अभिनंदन किया।

सुधारक शुभ विवाह

औरङ्गाबाद छावनी निवासी श्री. सेठ किशनलालजी साबूके ज्येष्ठ पुत्र चि. मोहनलालजी साबू एवं सोमठाना निवासी श्री सेठ हीरालालजी गिलडाकी ज्येष्ठ पुत्री सौ. चन्द्रभागा देवीका पाणिग्रहण पौष कृष्णा ९ शुक्रवार वि. सं. १९९८ को बड़ी सादगीके साथ एक आदर्शरूपमें सफलता पूर्वक हुआ।

विवाहमें नाशकारी अपव्यय एवं अनुचित हानिकारक तथा दूषित रूढियोंका बहिष्कार रहा। विवाहका आडम्बर सप्ताहों तक जारी न रहा किन्तु एकही दिनमें विशुद्ध वेदोक्त अर्चन पूजनके साथ कुछही घण्टोंमें हो गया।

विवाहमें शुद्ध खद्दरका उपयोग किया गया था। निन्द्य एवं अनावश्यक दहेजकी आडमें लडकेका भावताव नहीं किया गया, पाणिग्रहणके दूसरे दिन बिना किसी प्रकारके लेन–देन के श्री० गिलडाजीके सप्रेम आदर्शातिथ्यको स्वीकार कर वर–वधूकी विदाई भी हो गई। फलस्वरूप बराती तथा जनेती व्यर्थकी परेशानी और बेकार खर्चसे बच गये।

श्री० साबूजी एवं श्री० गिलडाजीको इस विवाहमें कुछ सम्बन्धियों, कुटुम्बियों एवं जातीय तथाकथित समाजके शुभचिन्तकोंके प्रेमका कटु अनुभव हुआ एवं उनके असहयोग तथा धमकियोंका गम्भीरता और दृढताके साथ मुकाबिला भी करना पडा।

गुरुकुल ब्याडका वार्षिकोत्सव

आगामी ता. २१ जनवरी वसन्त पंचमीके शुभ अवसरपर गुरुकुल ब्याडका वार्षिकोत्सव होगा जिसमें मा० बियाणीजी भी पधारेंगे। उसी अवसर पर गुरुकुल ब्याडके राजस्थानी बोर्डिंग का उद्घाटन श्री. गंगाबिशनजी सिकचीके हाथों होगा। गुरुकुलकी आफिसकी इमारतका भी जो श्रीमती रामकुमारीबाईजी कुकडी निवासिनीने अपने स्व० पति श्री. मोतीलालजी लड्ढाकी स्मृतिमें बनवाई है उद्घाटन समारंभ श्री सेठ किशनलालजी गोयनका, अकोला वासी द्वारा होगा।

यात्रा महोत्सव, बद्रीनारायण क्षेत्र (बरार)

प्रति वर्षानुसार इस वर्ष भी उपरोक्त महोत्सव आगामी मिती माघ शुक्ला ११ बुधवारसे १९९८ तदनुसार ता. २८ जनवरी स. १९४२ को होना निश्चित हुआ है। इस शुभ अवसर पर श्री ह. भ. प. गाडगेजी महाराज आदि संत महात्मा भी पधारेंगे तथा दे. भ. नेताओंके देश सुधार संबंधी व्याख्यान आदि होंगे। अतः सर्व देश प्रेमी तथा भक्त जनोंको सूचित किया जाता है कि इस अवसर पर पधार कर दर्शनोंका अवश्य लाभ प्राप्त करें।

यह श्री बद्रीनारायण क्षेत्र सतपुड़ा पर्वतमें श्री वानगंगाके तट पर श्रीवारी हनुमानजीके संपर्कमें तेल्हारा स्थानसे १२ मील पर स्थित है। अकोला और शेगाँव स्टेशनोंसे मोटर द्वारा तेल्हाराका मार्ग सुगम है।

श्रीराम भट्टड़, सोंदला, मंत्री व कोपाध्यक्ष

नगरमें मौसर प्रतिबन्धक दलका निर्माण

श्री काशीरामजी झंवर भींगार निवासीका स्वर्गवास अभी हाल ही में हुआ है। गत ता. २९-१२-४१ को आपका मौसर किया गया। यहांके कुछ सुधारक विचारोंके लोगोंने आपका मौसर न करनेके लिए पंचायतसे अनुरोध किया पर कोई फल नहीं निकला। इस पर यहां एक मौसर प्रतिबंधक दलकी स्थापना हो गयी और उस दलने मौसरका भरसक विरोध किया। पत्रियां छपाकर घर–घर भिजवाई जिनमें मौसरका भोजन न करनेका अनुरोध किया गया था। मौसरके दिन सड़कों पर बोर्ड भी लगाये गये। इन विरोधात्मक कार्योंका फल यह हुआ कि मौसरमें बहुत कम लोगोंने हिस्सा लिया। इस विरोध प्रदर्शनके कार्यसे यहां बहुत हलचल मच गयी है। भविष्यमें यदि कोई और मौसर यहां होगा तो उसका भी इस दलके द्वारा विरोध किया जायगा।

'माहेश्वरी' को सहायता

५) श्री बंसीलालजी बिड़ला

[अपने विवाहोपलक्षमें]

श्री रामकृष्णजी जाज शोलापुरमें

श्री रामकृष्णजी जाजू दसरी बार सत्याग्रह करनेपर गिरफ्तार किये गये थे किन्तु सरकारकी विशेष घोषणापर अन्य सत्याग्रहियोंके साथ आप भी मुक्त हो गये थे। अनेक बन्धु अब भी उन्हें कृष्ण मन्दिरमें समझ नासिक जेलके पते पर उनसे पत्रव्यवहार कर रहे हैं। अतः सर्व साधारणको सूचित किया जाता है कि वे जेलसे मुक्त होकर आजकल शोलापुरमें ही हैं। उनसे उनके शोलापुरके पतेसे ही पत्रव्यवहार करना चाहिए।

—सं०

(पृष्ठ १ का शेषांश).

उसके आलोचक कहते हैं कि लेनिनने उसे जनरल सेक्रेटरी इस लिए चुना था कि उससे उसे कोई खतरा नहीं था, उसमें कोई प्रतिभा नहीं थी और न उसमें कोई महत्वाकांक्षा ही थी। लेनिन ऐसा ही व्यक्ति चाहता था। यह भी कहा जाता है कि अन्तिम बीमारीके समय लेनिनने अपनी गलती महसूस कर ली और अत्यन्त विवादग्रस्त " अहदनामा " लिखा जिसमें स्टालिनको अपने पदसे हटानेका आदेश किया। उसने लिखा, "वह सच्चा कम्यूनिस्ट नहीं और ट्राटस्कीके प्रति उसमें व्यक्तिगत विद्वेष है। यदि उसका तुरन्त और दृढ़तासे प्रतीकार नहीं किया गया तो भारी कठिनाई उपस्थित हो जायगी।"

लेनिनकी मृत्युके बाद कामेनेव और जीनोवीवने प्रभुत्व पाया। उन्होंने स्टालिनको चुना और २७ मई सन १९२४ को कांग्रेस ऑफ सोवियट्सकी हायर सेण्ट्रल कमेटीके सामने एक प्रस्ताव पेशकरके उसकी नियुक्तिको पक्का कर दिया। और जब कामेनेव और ज़ीनोवीवको स्वयं अपने प्रभुत्वके लिए संघर्ष करना पड़ा तब पार्टीके संगठनपर स्टालिनके प्रभाव और उसे प्रयोगमें लानेकी उसकी योग्यताके कारण ही वे दोनों सुरक्षित रह सके। इसी साधन–कम्यूनिस्ट पार्टी—के द्वाराही, जिसे स्टालिनने अपना बना लिया था, वह सर्वोच्च प्रभुत्व पा सका।

अपने बादके जीवनमें, यहां तककि पंचवार्षिक योजना, महान् शोधन, देशद्रोह की जांचों और नवीन विधान (Constitution) आदि महत्वपूर्ण घटनाओंमें भी जान बूझ कर वह पृष्ठभूमिमें ही रहा। पर यह बात ध्यान देने योग्य है कि उसकी सब महान सफलताएं अपने देशमें ही पायी गयी हैं, उसने सच्चे अर्थोंमें अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिमें कभी कदम नहीं रखा। ४ मई, सन् १९३९ को लिटविनोफ़के परराष्ट्रसचिव पदसे च्युत किये जाने तक, साढ़े चार साल तक रूस की विदेशी नीति पूंजीवादी शक्तियोंके साथ सहकार पर ही निर्भर रही है। पर उसके बाद स्टालिन ने रूसो–जर्मन पैक्ट पर हस्ताक्षर करके एक नवीन नीति अख्तियार की जिसने रूसको युद्धसे बचाये रखा और इस नीतिके लिए स्टालिन को कितनी ही श्रद्धांजलियां अर्पित की गयीं। परन्तु पार्टीके संगठनमें सफलता और रूसके नेतृत्व की आकांक्षा रखनेवाले प्रतिद्वन्द्वियोंपर विजय पाना, अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओंकी बढ़ती हुई जटिलतापर भी विजय ही होगी, इसका प्रमाण नहीं।

स्टालिनने जिस ढंगस विदेशी नीतिका संचालन किया है उसमें यह बात साफ झलकती है कि यहां भी वही मन काम कर रहा है जिसने ट्राटस्की की विश्व-क्रान्तिकी नीतिके विरुद्ध केवल रूसमें ही समाजवादके निर्माणकी नीतिका प्रवर्त्तन किया था। यह सच है कि रूसने राष्ट्रसंघके सदस्य अन्य राष्ट्रोंके साथ सहयोग का प्रयत्न किया और इस प्रयत्नके कारण उसका नेता स्टालिन यह दावा कर सकता है कि उसने "सामुदायिक सुरक्षा" स्थापित करनेके लिए कुछ उठा नहीं रखा। इस सम्बन्धमें सन् १९३६ में सुप्रसिद्ध अमेरिकन पत्र संचालक रॉय हावर्डके साथ हुई उसकी मुलाकातको स्मरण कराना बहुत दिलचस्प होगा। हावर्डने स्टालिनसे पूछा कि वह यह कैसे कल्पना करता है कि नव—सुसज्जित नाज़ी जर्मनी रूसपर हमला कर सकता है।

स्टालिनने उत्तरमें कहा, 'इतिहास बताता है कि जब कोई राष्ट्र किसी दूसरे राष्ट्रपर आक्रमण करना चाहता है, चाहे वह उसके निकट न भी हो, तो वह सीमाएं ढूंढा करता है जिनके पार वह उस देशकी सीमाओंमें पहुंच सके जिसपर वह हमला करना चाहता है। या तो वह उन सीमाओंको शक्तिसे प्राप्त करता है जैसे कि सन् १९१४ में फ्रांसपर आक्रमण करनेके लिए बेलजियम पर हमला करके जर्मनीने प्राप्त की अथवा वह ऐसी सीमाएं उधार ले लेता है जैसी कि जर्मनीने लेनिनग्राड पर हमला करनेके लिए लटवियासे ली थी। मैं ठीकसे नहीं जानता कि जर्मनी अपने उद्देश्यकि पूर्तिके लिए किस प्रकारकी सीमाएं काममें लायेगा पर मेरा ख्याल है कि उसे सीमाएं स्वेच्छासे उधार देनेवाले लोग मिल जायंगे।"

जब फिर उससे पूछा गया कि युद्ध कब होगा तब उसने उत्तर दिया, "युद्ध आजकल घोषित नहीं किये जाते। वे बस, शुरु हो जाते हैं।" इन भविष्यवाणियोंकी सत्यताके आधारपर स्टालिन यह दावा कर सकता है कि उस समय अन्तर्राष्ट्रीय मामलेंमें उसका ज्ञान उन देशोंके राजनीतिज्ञोंसे अधिक और दृढ़ था, जिनका हित इसीमें था कि वे नाज़ी जर्मनीके विरुद्ध संगठित मोर्चा बनाएं। फिर भी "सामूहिक सुरक्षा" को कायम करनेमें लिटविनोफ़के प्रयत्नोंकी निष्फलताने स्टालिनके मनमें "रूसही" का सिद्धान्त जा कि उसके समाजवादी दृष्टिकोणमें था, और भी पृथक कर दिया। इस पृथकताके सिद्धान्तनेही अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रमें इतनी विनाशलीला करायी है और एकके बाद एक देशपर हमला करके यूरोपीय महाद्वीपपर अपना प्रभुत्व स्थापित करनेमें हिटलरको समर्थ बनाया है।

स्टालिनके चरित्रके बारेमें नितान्त असन्दिग्ध रूपमें जो बात कही जा सकती है वह यही है कि भले ही स्टालिन एक किसान का लड़का था, भले ही उसकी बायीं बांह जन्मसे ही कुछ पक्षाघात से ग्रस्त थी, भले ही उसकी दो उंगलियां एक दूसरेसे जुड़ी हुई थीं, फिर भी अपने जीवनके हरेक संकटकालमें उसने शक्तिकी एक प्रबल इच्छा प्रदर्शित की है जिसने उसके मार्ग से उन भयानक बाधाओंको भी हटा दिया जो सामान्य मनुष्यको अपने प्रयत्नसे विचलित कर देतीं। पर २२ जून सन् १९४१ को यह बात स्पष्ट हो गयी कि रूसमें जिस विरोधका सामना उसे करना पड़ा वह उस विरोधके आगे कुछ भी नहीं था जो जर्मनीमें आसन जमाये हुए था। यह है स्टालिनके जीवन का नाटक।

" पिक्चर पोस्ट, जुलाई ५, ४१ " से

(पृष्ठ ९ का शेषांश)

लनके लिए खतरनाक है। हिन्दी साहित्यसेवियोंको आज अपनी दशाका पता नहीं, वे सर्वथा बेखबर हैं। हिन्दी साहित्यका क्षेत्र उन्होंने इतना संकीर्ण बना लिया है कि उसके पनपनेकी आशा नहीं। जो लोग प्रभावशाली और विद्वान हैं, और हिन्दीको सार्वजनिक रूप देकर उसका प्रचार और प्रसार बढ़ा सकते हैं वे हिन्दी संसारकी सर्वोपरि संस्थासे निर्वासित कर दिये गये हैं। जिन्होंने हिन्दीकी सेवा की है वे ही आज बाहर हो गये हैं। इसका परिणाम यह होगा कि हिन्दीका प्रसार रुक जायगा। हिन्दी साहित्य सम्मेलनसे अलग राष्ट्रभाषा प्रचार समिति बन जायगी और वह राष्ट्र भाषाका प्रचार करेगी तो क्या वह अलग-अलग चलनेकी नीति ख़तरनाक नहीं होगी?

(पृष्ठ ७ का शेषांश)

विरक्ति उसे एक बड़ी दने देता है और वह यह ज्ञान है कि उसे उस सुरक्षाको अपनेमें ही ढूंढना चाहिए जिसे आज तक वह दूसरे संगीमें ढूंढता रहा है। इस प्रकार वह अपने आपको पाना और अपनी सरल प्रकृतिमें उन्हीं पेचीदा प्रवृत्तियोंको ढूंढना सीखता है जिन्हें उसका संगी उसमें प्रयत्न करके भी नहीं पा सका। यदि समा लेने वाला विवाहमें जिसे बेवफाई कहा जाता है उसे नहीं पहचान पाता बल्कि अपनी एकता की इच्छाके लिए आन्तरिक औचित्यमें ही विश्वास कायम रखता है तो उसे अपने ऊपर ही कठोरताएं (दण्ड) झेलनी होंगी। प्रकृतियोंका बेमेल होना अलग होनेसे दूर नहीं हो सकता उसके लिए केवल एकही इलाज है कष्ट, त्याग। एकताकी ओर लगानेवाली तमाम शक्तियां अपने प्रति समूची निष्कलंक इच्छाएं कष्ट और त्यागका विरोध करेंगी और वह निरन्तर यह अनुभव करता जायगा कि जिस एकत्वको वह बाहर खोजता रहा है वह अपने भीतर ही सम्भव है। वह अविभक्तता पूर्णताकी देन अपने भीतर ही सम्भवतः पा जाता है।

जीवनके उच्च स्थल पर प्रायः यही होता है और मनुष्यकी विचित्र प्रकृति इस प्रकार जीवनके पूर्वार्धसे जीवनके उत्तरार्धमें मनुष्यको मोड़ देती है—उसे उस अवस्थासे जिसमें वह अपनी स्वाभाविक प्रकृतिका एक साधन मात्र है उस अवस्थाकी ओर फेर देती है जहां वह उसकी साधन नहीं रहता बल्कि स्वयं तदात्मा हो जाता है—प्रकृतिसे संस्कृतिकी ओर और स्वाभाविक प्रवृत्तिसे बुद्धिकी ओर उसका अभिनिष्क्रमण होता है।

इस बातका ध्यान रखना चाहिए कि इस आवश्यक परिवर्त्तनको नैतिक जबर्दस्तीसे रोकना नहीं चाहिए क्योंकि अलग हो जाने या स्वाभाविक प्रवृत्तियोंके दबानेसे जो मानसिक रेखया उत्पन्न होता है वह असत्य है। ऐसी बुद्धिसे जो गुप्त रूपसे लैंगिक बना दी गई है कोई भी वस्तु अधिक दुखःद नहीं, वह उतनी ही अपवित्र है जितनी कि आवश्यकतासे अधिक आदर की गई विषयिता। किन्तु यह परिवर्त्तन का मार्ग बहुत लम्बा है इसलिए रास्तेमें दलदलमें ही गायब भी हो सकता है। यदि आदिम असभ्य लोगोंकी तरफ वर्त्तमान युगके सभ्य लोगोंका यह विवाहमें और विवाह से होने वाला मानसिक विकास अज्ञात हो रहने दिया जा सकता तो यह परिवर्त्तन कहीं अधिक स्थायी, गहरे और बिना द्वन्द्वके हो सकता। उन तथाकथित आदिम असभ्योंमें ऐसे आध्यामिक व्यक्तित्व पाये जा सकते हैं जो अपने लिए अविक्षुब्ध भाग्यके पूर्ण और परिपक्व फलों की–सी श्रद्धा पैदा कर सकते हैं। मैं यह बात अपने निजी अनुभवसे कह रहा हूं। किन्तु आधुनिक युगके सभ्य यूरोपियनोंमें ऐसे लोग कहां हैं जो नैतिक बलात्कारसे भ्रष्ट न हुए हों? हम लोग आज भी इतने असभ्य हैं कि तपस्विता और उसके विपरीत भावमें विश्वास करते हैं। तब भी इतिहासका चक्र उलटा नहीं घुमाया जा सकता। हम केवल आगेकी ओर ही बढ़ सकते हैं जीवनके उस प्रवाहकी ओर जिसमें आदिम युगके असभ्य मनुष्यकी अविक्षुब्ध नियति वास्तवमें हमें जीवित रहने देना चाहती है। तभी बुद्धिको विषयितामें और विषयिताको बुद्धिमें ग़लत परिणत होनेसे रोका जा सकेगा क्यों कि दोनों ही को जीवित रहना चाहिए—एक दूसरेसे जीवन ग्रहण करती है।

यह परिवर्त्तन जिसका यहां कुछ पंक्तियोंमें मैंने चित्रण किया है विवाहमें होनेवाले मनोवैज्ञानिक सम्बन्धका अनिवार्य भाग है। ऐसे भ्रमोंके बारेमें और भी बहुत कुछ कहा जा सकता है जो प्रकृतिक उद्देश्योंको पुष्ट करते हैं और जीवनके इस पूर्व और उत्तर भागके सन्धिस्थलमें होने वाले परिवर्त्तन की उत्पत्तिमें सहायक होते हैं।

['बुक आफ मेरिज' से]

सब प्रकार के बीमे का काम

फायर और जनरल

यूनिवर्सल

इंस्युरंस कंपनी

अपनी
जिंदगी
का
बी
मा
कराइये

को
ही
दी
जि
ये

इसके डायरेक्टर्स हैं

१. दि. ब. कृष्णलाल मोहनलाल झवेरी एम. ए. एलएल. बी.
२. सेठ लक्ष्मणदास हरखचंद डागा
३. राजा नारायणलाल बंशीलाल
४. श्री. जे. एच. मोदी सालीसिटर
५. श्री. केशवलाल हरीलाल सेतलवाड़
६. राय साहब केदारनाथ खेतान एम. एल. सी.
७. श्री. रणछोड़दास त्रिभुवनदास पोपावाला (मालपाणी) बी. ए.
८. श्री. कांतीलाल चिमनलाल मुन्शी बी.ए.

आग;
मशीन;
मोटर;
इत्यादि सब
प्रकार के
बीमे के लिये
हमें पूछिये

यह कम्पनी "माहेश्वरी" द्वारों स्थापित की गई है। स्व. सेठ बरजदासजी भाईदासजी मालाणी इसके संस्थापक थे।

सब प्रांतों में एजेन्सियां देनी हैं। आज ही एजेन्सी के आकर्षक नियमों के लिये लिखिये—

मेनेजिंग एजेन्टस--एम. कानजी एन्ड कंपनी

दी यूनिवर्सल फायर एण्ड जनरल इंस्युरन्स कं० लि०

सर फीरोज़ शाह मेहता रोड, बंबई

Printed by Vasant S. B. Shroff, B. A., B. SC., LL. B. at the Bombay Vaibhav Press, Servants of India Society's Building.
Sandhurst Roa[illegible] and published by him at 70, Tulsi Vihar, Marine Drive, Bombay.

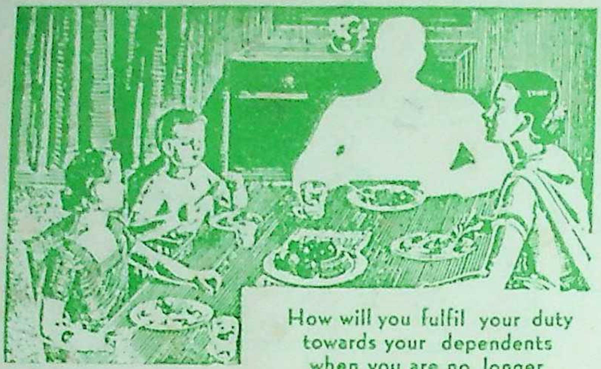

How will you fulfil your duty
towards your dependents
when you are no longer
a breadwinner ?

If you were not there...

कुटुम्बं का संपूर्ण संरक्षण

न्यु एशियाटिक की 'हैपी होम पॉलिसी' बीमा की एक ऐसी अद्वितीय तथा अपूर्व योजना है जिसका कुटुम्ब की संरक्षा अधिक से अधिक प्रमाण में करने के हेतु से निमार्ण किया गया है।

हमारा भारत गरीबी से पीड़ित है। ऐसी दशा में यहां कुटुम्ब की संरक्षा के प्रश्न का हल अधिक आवश्यक है। 'हैपी होम पॉलिसी' में पैसा लगाने से पैसे का अनुचित उपयोग नहीं होता और न वह किसी तरह की जोखम का काम ही है। ५०००) के बीमे से क्या मिलता है:—

५००) और बोनस-मृत्यु के बाद
५०) मासिक-बीमे की शेष अवधि तक
४५००) बीमा की अवधि ख़त्म होने पर

इस रकम से बच्चों की शिक्षा का प्रबन्ध हो सकता है अथवा वे कोई धंधा कर सकते हैं

पूर्ण विवरण के लिये लिखिये—

दी न्यु एशिआटिक लाईफ इंस्युरंस कम्पनी लिमिटेड

मैनेजिंग एजेन्टस–बिड़ला ब्रदर्स लिमिटेड

हेड ऑफिस

कॅनाट सर्कस, नई दिल्ली

शाखाएं और प्रमुख कार्यकर्ता

उत्तरी विभाग
(कॅनाट सर्कस, नई दिल्ली)
लाहोर
रावलपिंडी
पेशावर (केन्टोनमेन्ट)
पटना
कानपुर

पूर्वी विभाग
(८, रायल एक्सचेन्ज प्लेस, कलकत्ता)
ढाका
बर्दवान
जलपाइगुरी
सिलहट
बर्मा

पश्चिमी विभाग
(४५–४७ अपोलो स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई)
हैद्राबाद (दक्षिण)
इर्नाकुलम
बेलगाम
अहमदाबाद
कराची

मध्य विभाग
(भवानी पेठ, जळगांव)
इन्दौर
जबलपुर
नागपुर
अमरावती

दक्षिणी विभाग
(२८९ लिंबा चेट्टी स्ट्रीट, मद्रास)
मद्रास
सीलोन
त्रिचनापल्ली

माहेश्वरी

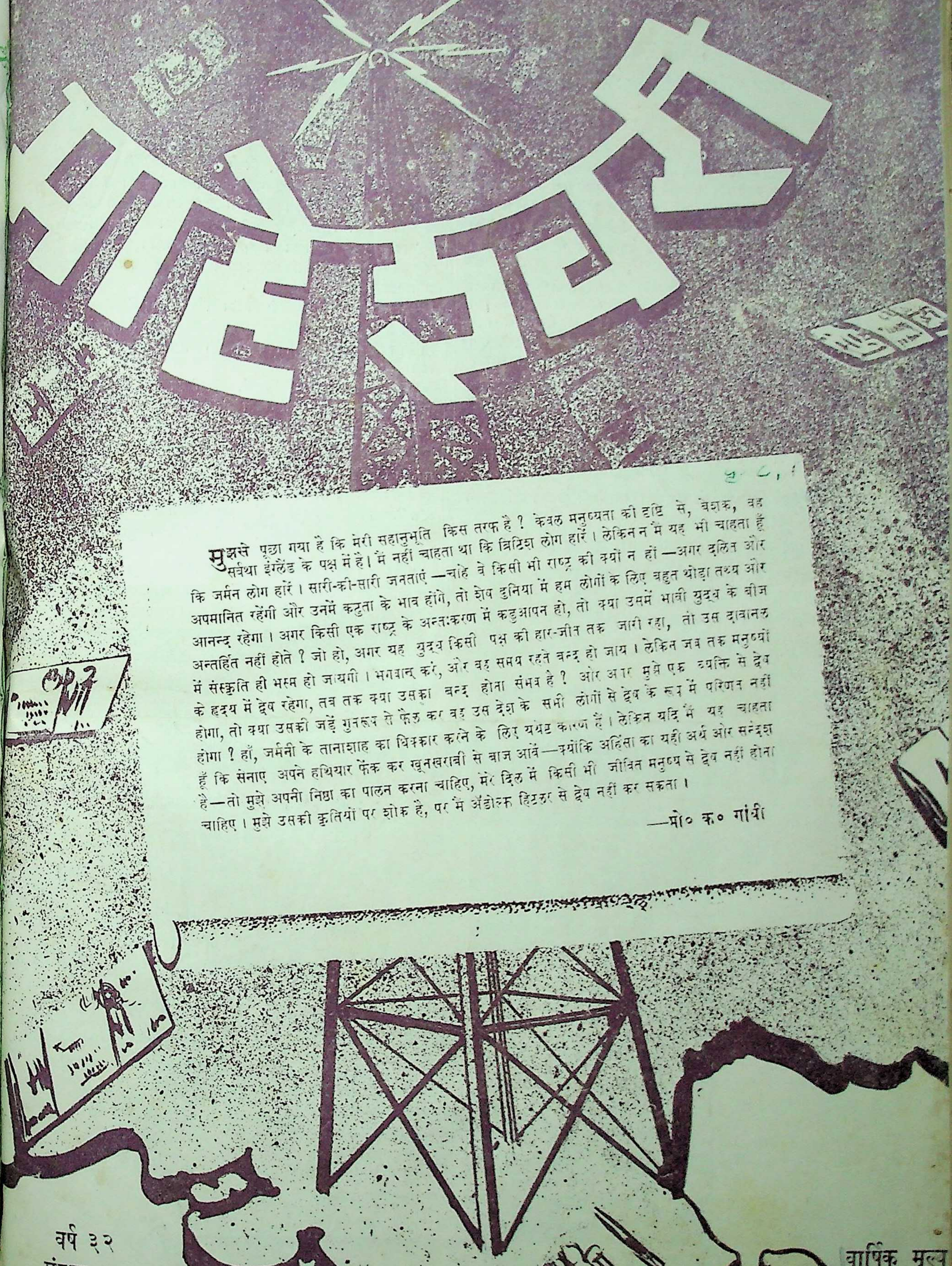

मुझसे पूछा गया है कि मेरी सहानुभूति किस तरफ है ? केवल मनुष्यता की दृष्टि से, बेशक, वह सर्वथा इंग्लैंड के पक्ष में है। मैं नहीं चाहता था कि ब्रिटिश लोग हारें। लेकिन न मैं यह भी चाहता हूँ कि जर्मन लोग हारें। सारी-की-सारी जनताएं—चाहे वे किसी भी राष्ट्र की क्यों न हों—अगर दलित और अपमानित रहेंगी और उनमें कटुता के भाव होंगे, तो शेष दुनिया में हम लोगों के लिए बहुत थोड़ा तथ्य और आनन्द रहेगा। अगर किसी एक राष्ट्र के अन्तःकरण में कड़ुआपन हो, तो क्या उसमें भावी युद्ध के बीज अन्तर्हित नहीं होते ? जो हो, अगर यह युद्ध किसी पक्ष की हार-जीत तक जारी रहा, तो उस दावानल में संस्कृति ही भस्म हो जायगी। भगवान करें, और वह समय रहते बन्द हो जाय। लेकिन जब तक मनुष्यों के हृदय में द्वेष रहेगा, तब तक क्या उसका बन्द होना संभव है ? और अगर मुझे एक व्यक्ति से द्वेष होगा, तो क्या उसकी जड़ें गुप्तरूप से फैल कर वह उस देश के सभी लोगों से द्वेष के रूप में परिणत नहीं होगा ? हाँ, जर्मनी के तानाशाह का धिक्कार करने के लिए यथेष्ट कारण हैं। लेकिन यदि मैं यह चाहता हूँ कि सेनाएं अपने हथियार फेंक कर खूनखराबी से बाज आवें—क्योंकि अहिंसा का यही अर्थ और सन्देश है—तो मुझे अपनी निष्ठा का पालन करना चाहिए, मेरे दिल में किसी भी जीवित मनुष्य से द्वेष नहीं होना चाहिए। मुझे उसकी कृतियों पर शोक है, पर मैं अँडोल्फ हिटलर से द्वेष नहीं कर सकता।

—मो० क० गांधी

वर्ष ३२
संख्या १८

वार्षिक मूल्य
३) रुपया

खिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभाका मुखपत्र

प्रवर्तक—स्व. भागीरथदासजी भूतड़ा
पाक्षिक
कार्यालय—अली चेम्बर्स, टीन लेन, फोर्ट, बम्बई.

२६ जनवरी को स्वातन्त्र्य दिन मनाइये : काँग्रेस वर्किंग कमिटी का आदेश

कांग्रेस वर्किंग कमिटीने एक प्रस्ताव पास कर ता. २६ जनवरी को स्वातंत्र्य दिन मनाने का आदेश दिया है।

स्वातन्त्र्य दिन की प्रतिज्ञा

"हम मानते हैं, कि संसारके अन्यान्य देशों की आम जनता के अनुसार हिंदुस्तानियोंको भी यह जन्मसिद्ध अधिकार है, कि वे अपनी स्वाधीनता प्राप्त करें, अपनी मिहनत मज़दूरी से पूरा लाभ उठायें और जिन्दगीमें महसूस होनेवाली ऐसी सारी आवश्यकताओंकी पूर्ति करा लें, जिनसे कि उन्हें अपनी तरक्की और पूर्ण विकास का मौका मिले। हम यह भी मानते हैं, कि यदि कोई सरकार जनताको उसके उक्त अधिकारोंसे वंचित करके उसपर अत्याचार करती हो तो जनता को यह हक है, कि वह उस सरकारको बदल दे या मिटा दे।

"हिंदुस्तानमें प्रस्थापित ब्रिटिश सरकारने हिंदुस्तानियोंकी स्वाधीनताको सिर्फ छीनही नहीं लिया है, बल्कि आम जनताके रक्त शोषणहीको उसने अपने अस्तित्वका आधार बना रखा है और आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक दृष्टिसे भी हिंदुस्तानको तहस नहस कर दिया है। इसलिये हमें यह विश्वास हो गया है, कि हिंदुस्तानको ब्रिटेनके साथ रहा हुआ अपना सम्बन्ध तोड़ देना होगा और पूर्ण स्वराज्य अर्थात् मुकम्मिल आज़ादी हासिल करनी होगी।

"हम जानते हैं, अपनी आज़ादी हासिल करनेका सबसे अधिक असरकारी उपाय खून खराबी या हिंसा नहीं है। पूर्ण शांतिमय और जायज तरीकोंकी राहपर चलकर ही हिंदुस्तानियोंने काफी शक्ति और आत्मविश्वास प्राप्त किया है और स्वराज्यकी बहुतसारी मंजिलको वे तय भी कर चुके हैं। इन्हीं तरीकों पर दृढ़ रहनेसे हमारा देश स्वाधीनता प्राप्त कर सकेगा।

"हम आज फिर हिंदुस्तानको स्वाधीन बनानेकी अपनी प्रातिज्ञाको दुहराते हुए सच्चे दिलसे यह निश्चय करते हैं—

जबतक पूर्ण स्वराज्य हासिल न होगा, तबतक हम अपने
अहिंसामय स्वाधीनताके युद्धको जारी रखेंगे।

"हमें विश्वास है, कि साधरणतया अहिंसामय आन्दोलन और खासकर अहिंसामय प्रत्यक्ष चढ़ाईकी तैयारी करनेके लिये देशमें खादीप्रचार, जातीय एकता तथा अस्पृश्यता निवारण जैसे रचनात्मक कार्यक्रमको सफलतापूर्वक चलाना महज जरूरी है। अतः हम ऐसे हरएक मौकेसे लाभ उठायेंगे, जिससे कि देशके सारे निवासियोंमें जातिपातिके भेदभावसे रहित परस्पर सद्भावकी भावना फैले। हम हमेशा यह भी कोशिश करेंगे, कि अबतक जिन लोगोंकी अवहेलना हुई है, ऐसे दीन दरिद्री और अज्ञानी लोगोंकी उन्नति हो, जो जातियां दलित और पिछड़ी हुई मानी जाती हैं, वे सब तरहसे सुधरकर आगे बढ़ें।

"हम जानते हैं, कि यद्यपि हम साम्राज्यवादी प्रणालीको मिटाने जा रहे हैं, तो भी व्यक्तिगत रूपसे हमारा अंग्रजोंसे कोई झगड़ा नहीं; फिर चाहे वे सरकारी अधिकारी हों, या गैरसरकारी व्यक्ति।

"हम यह भी महसूस करते हैं कि ऊंचे वर्णवाले स्पृश्य हिंदुओं और हरिजनोंमें जो भेदभाव है, उसे मिटा देना चाहिए, यहांतक कि हिन्दू अपने रोजबरोजके व्यवहारमें भी ऐसे भेदभावको कतई भूल जायें। क्योंकि ऐसे भेदभावोंका रहना अहिंसाके आचरणमें रुकावट पैदा करता है।

"हमारे धर्ममत चाहे भले ही भिन्न हों, फिर भी हम अपने आपसके व्यवहारमें एकही भारतमाताकी सन्तानकासा आचरण करेंगे और परस्परके साथ ऐसे एकसूत्रमें बंधे रहेंगे, जो एकहीसे राजनीतिक तथा आर्थिक हितसम्बन्धवाले एक देशके चिर निवासियोंमें हुआ करता है।

"चर्खा और खादी हमारे रचनात्मक कार्यक्रमका प्रधान अंग है, जिसके जरियेसे भारतके सात लाख देहातोंका पुनरुद्धार होगा और आम जनता को बरबाद कर देनेवाली दरिद्रता दूर होगी। अतः हम खुद नियमित रूपसे चर्खा चलाकर सूत कातेंगे; अपनी आवश्यताओंके लिये खादीको छोड़ दूसरे किसी कपड़ेको काममें न लायेंगे और जहांतक बनेगा ग्रामोद्योगकी चीज़ोंहीको इस्तेमाल करेंगे; इतनाही नहीं, बल्कि दूसरोंको भी ऐसा करनेकी प्रेरणा देंगे।

"अन्तमें हम यह प्रतिज्ञा करते हैं, कि हम पूर्ण अनुशासनपूर्वक कांग्रेसके सारे सिद्धातों तथा नीतिनियमोंका पालन करेंगे और ज्योंही कांग्रेस भारतीय स्वाधीनताकी लड़ाईके लिये हमें पुकारेगी, त्योंही उसमें शामिल होनेके लिये हमेशा तैयार रहेंगे।"

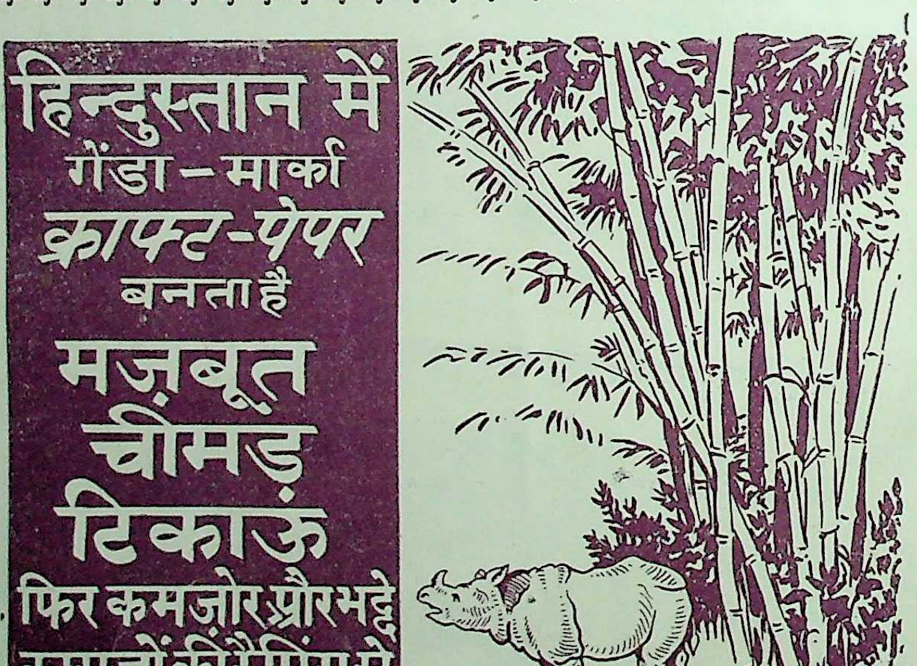

हिन्दुस्तान में
गेंडा-मार्का
क्राफ्ट-पेपर
बनता है
मज़बूत
चीमड़
टिकाऊ
फिर कमज़ोर और भद्दे
कागजों की रैपिंग से
अपने व्यवसाय
को क्यों हानि पहुंचाते
हैं?
ओरिएण्ट पेपर मिल्स लि०
८, रायल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता

सम्पादक समिति
श्री. लक्ष्मीनारायण मालाणी,
श्री. दामोदरदास मूंदड़ा,
श्री. राधाकृष्ण लाहोटी

माहेश्वरी

‘ उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत ’

प्रबन्ध सम्पादक
श्री. राधाकृष्ण लाहोटी
प्रकाशक
श्री. बसन्तलाल श्राफ़

वर्ष ३२, संख्या १८]
बम्बई ता. २१ जनवरी १९४२
[वार्षिक मूल्य ३ रुपया

गो-सेवा के प्रश्न

★

[गांधीजी]

(तीस सितम्बर अुन्नीससौ अिकतालीस को विजयादशमी के दिन, गोपुरी (नालवाड़ी) वर्धामें गोसेवा संघ की स्थापना करते कार्यकर्त्ताओं की सभा में गांधीजी का जो प्रवचन हुआ था, अुसका आवश्यक अंश यहाँ दिया जाता है।)

सदस्यों के बारे में

आप अपना विधान सादा ओर छोटा बनावें और अुसमें कई प्रकार के सदस्य न रक्खें। अेक ही प्रकार के सदस्य रक्खे जांय। पेट्रन तो होने नहीं चाहिएं। जो देनेवाले हैं वे नाम के लिये नहीं देंगे। कोअी तो अपना नाम जाहिर करना भी नहीं चाहेंगे। गुप्तदान ही देंगे।

भिन्न भिन्न प्रकार के सदस्य रखनेसे कुछ लाभ नहीं होनेवाला है। जो सदस्य रहेंगे अुनको कोअी अधिकार तो होगा ही नहीं। हम अधिकार नहीं, सेवा चाहते हैं। जो सदस्य रहेंगे, वे प्रत्यक्ष सेवा करनेवाले हों। ऐसे दस-बीस सदस्यों से भी हमारा काम चल सकता है। सिर्फ गाय का दूध-घी आदि और मृतगो-चर्म काम में लान की शर्त हरअेक सदस्य पर बन्धनकारक होनी चाहिए। अुसमें ढीलापन नहीं चल सकेगा। संघ के कार्य के लिये अेक छोटी-सी समिति नियुक्त की जाय।

गाय बनाम भैंस

दक्षिण आफ्रिका में ही यह मेरा मत बना था कि हमें भैंस के दूध-घी का मोह छोड़ना होगा। गाय की रक्षा से भैंस की भी रक्षा हो जाती है। भैंस का दूध सब लोग छोड़ेंगे, अैसी कोअी आशा नहीं की जा सकती। लेकिन गाय के दूध के बारे में यह डर है। अिसलिये यदि हम गोरक्षा नहीं करेंगे, तो गाय और भैंस दोनों का नाश होने वाला है।

हम लोगों में अेक अैब है—यों तो वह मनुष्य-मात्रमें पाया है—किन्तु हम हिन्दुस्तानियोंमें अधिक परिमाण में है। वह यह कि जो चीज आसानीसे मिल जाती है, उसे हम जल्द अपना लेते हैं और जिसे साध्य करनेमें कठिनाई होती है, उसे छोड़ देते हैं। खादी, ग्रामउद्योग, आदि संस्थाओंमें लोग आराम, सस्तापन और सुविधा खोजते हैं। भैंसका दूध सस्ता मीठा रहता है; इसलिये लोग उसे ज्यादा पसन्द करते हैं।

हमारे यहां वैदिक कालसे ही गाय की महिमा बतायी गयी है, भैंस की नहीं। अगर गायको यह स्थान न दिया जाता, तो उसका नाश ही हो जाता, और साथ-साथ भैंस का भी। हिंदुस्तान में गाय और भैंस का अनुपात क्या है, इसके आंकड़े मैंने देखे। दोनों की बहुतायत है। लेकिन न भैंस तेजी पर है न गाय। जब तक ग्वालेको गाय या भैंससे पैसे मिलते हैं, तब तब तक वह उसे रखता है और बादमें कसाईके हाथ बेच देता है। इनको बचानेके लिए गोरक्षावाले गाय या भैंसको खरीद लेते हैं। जो पैसे मिलते हैं, उनसे कसाई दूसरे जानवर खरीदते हैं। इससे अेक दो गायें तो बचती हैं सही लेकिन गोवंशका तो नाश ही है। इसलिये सही इलाज यही है कि जो गाय बिक गयी हो, उसे हम भूल जायँ और गायकी नस्ल सुधारनेमें, गायकी कीमत बढ़ानेमें, तथा गोपालोंको उनका धर्म सीखानेके लिये पैसे खर्च करें।

कोई ऐसी शंका न करें कि अगर भैंस के दूध-घी का सभी लोग त्याग करें, तो भैंस का तो नाश ही है। जैसा कि मैं पहले कह चुका हूँ, ऐसा होना कम संभव है। लेकिन ऐसा हो भी जाय, तो कोई हानि नहीं हो सकती। भैंस जंगली जानवर हो जायगी। असल बात यह है कि अगर बच सकती है, तो गाय ही। उसके साथ-साथ भैंस भी बच जायगी, क्योंकि हमारे लिये दोनों का दूध उपयोगी है। लेकिन शास्त्रीय पद्धति छोड़ कर सभी लोग गोरक्षाके नामसे अगर मनमाने तरीके से काम करने लगें, तो दोनोंका नाश निश्चित् है, जैसा कि हमारे देशमें और चीजोंका नाश हुआ है। उसमें हमारे अज्ञानका सबसे बड़ा हिस्सा था। इसलिये गो सेवा-धर्मके ज्ञानपूर्वक पालन पशुओंके प्रति हमारा धर्म हम जानेंगे और उसका पालन तभी कर सकेंगे। गोपालन की जड़ में हम मनुष्येतर जीवोंके प्रति अपना क्या धर्म है, उसका ज्ञान पाते हैं। लेकिन गो-सेवा नाममात्र रही है, इसलिये हम सब धर्म को भूल रहे हैं।

हिसाब की दृष्टि से देखें, तो दुनिया के ढोरों के एक-चतुर्थांश हिन्दुस्तानमें पाये जाएंगे लेकिन यहाँके लोगोंकी जितनी बुरी हालत है उससे भी बदतर यहांके ढोरोंकी है।

व्रतकी मर्यादा

गोसेवकको गायका ही दूध-घी लेना चाहिए, बकरीका नहीं। मैं तो लाचार हो कर बकरीका दूध पीता हूं। लेकिन गोसेवा संघके सदस्यको गायका ही दूध-घी और मृत गाय-बैलका चमड़ा ही इस्तेमाल करना चाहिए।

जहाँ गाय भैंसका भी इतना संहार होता है, वहाँ मृत बकरेका चमड़ा कहाँसे मिले? आज तक तो मानव-जातिने माना है कि बकरीका जन्म तो कत्ल हो जानेके ही लिये है। आज दशहरा है। कलकत्ते में आज हजारों की संख्या में बकरों की बलि काली के चरणों में चढ़ायी गयी होगी।

घी का प्रश्न धनिकों के लिये नहीं होना चाहिये। जिस प्रकार वे लवंडर, कोलनवाटर, टुथब्रश साथमें लेते हैं, उसी प्रकार उनको अपने साथ गाय का घी भी रखना चाहिये। नहीं तो वे गो सेवा का नाम छोड़ दें। घी का प्रश्न जितना आसान है, उतना दूध का नहीं है। अल्मोड़ेमें पैसे दे कर भी गाय का दूध नहीं मिलता। उड़ीसामें भी वही स्थिति है। दूध का मावा पानीमें घोल कर उसका दूध हम बना सकते हैं। हॉर्लिक्स का पाऊडर अच्छी चीज है, पचनेमें हलका होता है। इसलिये हम उसका उपयोग करते हैं। लेकिन हम उसी प्रकार का पाउडर यहाँ क्यों न बनावें? शास्त्रीय ज्ञान हासिल करके हमें उसें यहाँ बनाना चाहिए, जिससे हिमालय की चोटी पर भी पाउडरवाला दूध मिल सकेगा।

श्री जमनालालजीके बारे में

जमनालालजीका स्वास्थ्य इतना अच्छा नहीं कि मैं उन्हें फिर से जेल जाने की इजाजत दूं। अगर वे वहां जाकर बीमार हो गये, तो मैं इसे बरदास्त नहीं करूंगा। यह लड़ाई तो लम्बी चलनेवाली है। जब मौका आयेगा तो मैं खुद ही उनसे कहूंगा कि उठो, जेल में चले जाओ। लेकिन उन्हें जेल में न भेजना ही मेरा आज का धर्म है। तब वे क्या करें? उन्होंने दो-तीन तजवीजें मेरे सामने रक्खीं—हरिजन, खादी, गोसेवा आदि। उनमें गोसेवाको मैंने पसन्द किया। शुरू से ही इसमें जमनालालजी का हाथ रहा तो है ही और जो काम आज तक हुआ है वह निष्फल नहीं हुआ। फिर भी वह मेरी मति और प्रकृति के अनुसार चल रहा था। अब वह जमनालालजी की राय से चलेगा।

गूंगे प्राणियोंकी सेवा

गोरक्षा तो मूक प्राणियोंकी सेवा है। आज हरिजन दुर्बल हैं। लेकिन वे कल बलवान हो सकते हैं और अपने आप प्रगति कर सकते हैं, क्योंकि मनुष्यकी सब शक्तियाँ उनमें मौजूद हैं। अगर कल हरिजन उठ कर मंदिरोंका कब्ज़ा ले लें, तो मैं नाचूंगा। लेकिन गायमें वह शक्ति नहीं है। उसे खिलाओ-पिलाओ, तो वह हृष्ट-पुष्ट होगी। फिर भी वह तुम्हारे अधीन ही रहेगी। तुम उसे मारो, पीटो, कत्ल करो; लेकिन तो भी वह तुम्हारे खिलाफ़ बगावत नहीं कर सकेगी। तब उसकी रक्षा करनेवाला कौन है? जमनालालजीकी आध्यात्मिक तृष्णा गोमाताकी सेवासे तृप्त होगी। इस विचारसे मैंने यह कार्य उनके ऊपर पूरा छोड़ दिया है। इसमें वे अपनी सफल व्यापारी दृष्टि भी लगावेंगे, और पारमार्थिक दृष्टि भी।

एक प्रचण्ड प्रवृत्ति

गोरक्षाका काम एक प्रचण्ड काम है। उसके लिये शान्त चित्तसे उस शास्त्रका उन्हें अध्ययन करना होगा। जिन्होंने उसका आधुनिक शास्त्रीय दृष्टिसे अध्ययन किया है, ऐसे लोगोंका संग्रह करना होगा। जहाँसे मांग आवे वहाँ

(शेष पृष्ठ २८ के कालम १ पर)

माहेश्वरी

" कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन "

बम्बई, ता० २१ जनवरी १९४२

महासभा का हाथ बंटाइये !

अ. भा. माहेश्वरी महासभाके कार्यकारी मंडलकी गत ता. १७ जनवरीको वर्धामें जो बैठक हुई है, उसमें अनेक आवश्यक और महत्त्वपूर्ण विषयोंपर विचार हुआ है।

श्रद्धेय जाजूजीकी हीरक जयन्तीके सम्बन्धमें विचार विनिमय करनेके बाद मंडलने निश्चय किया कि यह कार्य सभी मारवाडी समाजा की संस्थाओं व नेताओंके साथ मिलकर सम्मिलित रूपसे होना चाहिए । शिक्षाप्रचार की योजना भी एक मुख्य विषय थी, पर कार्यकारी मंडलने कुछ खास कारणोंसे इस पर विचार करना अभी स्थगित कर दिया।

तीसरा महत्वपूर्ण विषय महासभाके इतिहासके प्रकाशनका है। पिछले पचास वर्षोंसे महासभा माहेश्वरी समाजके संगठन आर समाज सुधारक कार्य लगन और साहससे कर रही है। आज से पचास वर्ष पूर्व माहेश्वरी समाजकी जो दशा थी वह आज नहीं। समाज सुधारकी दृष्टिसे वह आज बहुत आगे बढ़ गया है और इसका प्रायः साराका सारा श्रेय माहेश्वरी महासभाको है। इस पचास वर्षके जीवनकालमें महासभाने देशभरके माहेश्वरी समाजको एक सूत्रमें ग्रथित किया है और समाजकी कुरीतियोंको हटानेका अथक उद्योग किया है। माहेश्वरी समाजके कितने ही उत्साही समाज सुधारक और नेता भी महासभाने समाजको दिये हैं और उन लोगोंने अपने श्रम, विद्वत्ता और लगनसे महासभा और समाजकी सेवा की है। महासभाकी देरसे इच्छा थी कि महासभाके इन सब कार्योंका एक प्रामाणिक इतिहास लिखाकर प्रकाशित किया जाय। इस प्रकारके कार्य, जिनका एक समाजके जीवनके लिए बहुत बड़ा महत्व है, विस्मृतिके गर्भमें डूब नहीं जाने चाहिएं, बल्कि उनको संचित करके रखा जाना चाहिए ताकि आगे आने वाली सन्ततियोंके लिए वे पथप्रदर्शनका कार्य कर सकें।

यह कहते हुए हमें अत्यन्त प्रसन्नता होती है कि श्री पं० विश्वम्भरप्रसादजी शर्माने श्रद्धेय जाजूजी तथा मा. बियाणीजीकी प्रेरणासे अपने जेलजीवनमें यह कार्य लगन और परिश्रमसे पूरा कर डाला है और अब उसे प्रकाशित करनेका समय आ गया है। वर्त्तमानमें महासभाकी आर्थिक परिस्थिति ऐसी नहीं है कि वह यह इतिहास आसानीसे प्रकाशित करा सके। इसके लिए समाजके सहयोगकी अत्यधिक आवश्यकता है। युद्धके कारण कागज़ ब्लाक तथा प्रकाशनकी अन्यान्य सामग्री मंहगी और दुष्प्राप्य हो गयी है। कागज़के दाम पहलेसे तीन-चार गुना बढ़ गये हैं। ऐसी दशामें इतिहास प्रकाशनके कार्यने महासभाके सन्मुख एक भारी समस्या उपस्थित कर दी है। युद्धकी स्थिति दिन-दिन और भी गम्भीर होती जा रही है और समय रहते यदि कागज़ खरीद नहीं लिया गया तो युद्धकी समाप्तितक उसका मिलना असम्भव हो जायगा। इसलिए महासभाको इस कार्यके लिए धनकी अति शीघ्र आवश्यकता है। इस आवश्यकताकी पूर्ति के लिए कार्यकारी मंडलकी मीटिंग में अनेक महानुभावोंने एक ठोस और रचनात्मक योजनाका सुझाव रखा है। महासभाके इस इतिहासका आनुमानिक मूल्य ३॥) रु० रखा गया है। यदि समाजके उत्साही बन्धु अपने-अपने नगर, तालुके या जिलेमें इस इतिहासकी अधिकसे अधिक संख्यामें प्रतियां अगाऊ बेचें और उनका मूल्य खरीदार महानुभावोंसे लेकर महासभाके कार्यालयमें तुरंत भिजवा दें तो स्वल्पकालमें ही इतना धन इकट्ठा हो सकता है कि इस कार्यको प्रारम्भ कर दिया जाय। यह कहते हुए हमें अत्यधिक प्रसन्नता होती है कि कार्यकारी मंडलकी मीटिंगमें अनेक बन्धुओंने इस योजनामें उत्साह दिखाया है और स्वयं अपने कन्धोंपर इतिहासकी प्रतियां अगाऊ बेचनेका भार उठा लिया है। इस सिलसिलेमें सर्वश्री राजेन्द्रप्रसादजी मालपाणी, मोतीलालजी केला, हनुमानबक्षजी सारड़ा, बल्लभदासजी जाजू, भीखूलालजी चाण्डक, सुंदरलालजी मल्ल, शिवदासजी डागा, एम. एल. ए; छगनलालजी अजमेरा तथा कृष्णलालजी कलयन्त्री का उत्साह विशेष सराहनीय है जिन्होंने क्रमशः अमरावती, बुलडाणा, वर्धा, नागपुर, अकोला, रायपुर तथा खानदेश जिलों व लखनऊ शहरमें कुल ४३६ प्रतियां बेचकर दो मासके भीतर ही उनका मूल्य महासभा के कार्यालयमें भेज देने का वचन दिया है। इन बन्धुओं के उत्साह का हम अभिनंदन करते हैं तथा अन्य बन्धुओंसे भी आग्रह करते हैं कि इस कार्यमें वे महासभा का हाथ बटायें क्यों कि ऐसा न हो कि महासभाको समाज के सहयोग के अभावमें यह महत्वपूर्ण कार्य अधूरा ही छोड़ देना पड़े। हमारा समाज एक धनी समाजके रूपमें प्रख्यात है और उसी समाज का कार्य धनके अभावमें रुक जाय तो यह लज्जाका विषय होगा। अतः हम आशा करते हैं कि हरेक बन्धु अपने-अपने क्षेत्रमें इतिहास की प्रतियां अगाऊ बेचने और खरीदने का कर्त्तव्य पूरा करेगा और इन विक्रीत प्रतियों का मूल्य दो मासके भीतर ही महासभाके कार्यालयमें भेज देगा।

महासभा का आगामी अधिवेशन जो कि असोज मासमें होगा, सुवर्णजयन्ती अधिवेशन के रूपमें मनाना निश्चय किया गया है। उसी अवसरपर यह इतिहास समाज के हाथोंमें पहुंचाया जायगा। अतः अब समय अधिक नहीं रह गया। इस कार्यमें यदि तनिक भी विलम्ब होगा तो वह इतिहास के समयपर प्रकाशित होनेमें बाधक होगा। महासभा के आगामी अधिवेशनपर 'माहेश्वरी' का भी सुवर्णजयन्ती अंक प्रकाशित करने का निश्चय हुआ है किन्तु यह कार्य भी तभी सम्भव है जब कि महासभा के पास यथेष्ट धन हो। 'माहेश्वरी' के ग्राहकों का बढ़ना और विज्ञापनों के रूपमें उसे आर्थिक सहायता मिलना जबतक सम्भव नहीं हो जाता तबतक इस कार्य के सम्पन्न होने की भी सम्भावना नहीं है।

'माहेश्वरी' का प्रचार बढ़ाने, ग्राहक बढ़ाने और उसे आर्थिक सहायता देनेके बारेमें और कागज़के बाजार भाव बढ़ने और उसके दिन-दिन दुष्प्राप्य होते जानेके कारण समय रहते पूरी तय्यारी कर लेनेके बारेमें हम पहले भी अनेक बार निवेदन कर चुके हैं। हम आशा करते हैं 'माहेश्वरी' के स्वयं ग्राहक बनकर और दूसरोंको बनाकर हरेक बन्धु इस कार्यमें अपना पूरा-पूरा सहयोग देगा।

यह दोनों विषय जिनका हमने ऊपर उल्लेख किया है समय को देखते हुए अत्यधिक महत्वपूर्ण है और इनपर जल्दी से जल्दी ध्यान देनेकी आवश्यकता है। हम आशा करते हैं कि हमारा यह निवेदन वृथा नहीं जायगा और महासभाको इन दोनों कार्योंके लिये अधिकतम सहयोग मिलेगा।

कांग्रेस मैनों के सामने कर्त्तव्य

सुदूर पूर्वमें युद्धका परिस्थिति दिन-दिन गम्भीर होती जा रही है और संकट भारतके अधिकाधिक निकट आ रहा है। जापानी फौजें मलायाके अतिरिक्त बर्मामें भी प्रविष्ट हो गयी हैं और कई महत्व पूर्ण अड्डोंपर उन्होंने कब्जा कर लिया है। सुदूर पूर्वमें युद्ध छिड़नेके बादसे रंगूनपर बहुसंख्यक विमानी हमले हो चुके हैं और वहां बड़ा-भीषण और लोमहर्षक विध्वंस और जन-धनकी हानि हुई है। फलस्वरूप रंगून नगर खाली और बीरान हो रहा है। आजसे कुछ ही समय पूर्व बर्मा भारत का ही एक भाग था और ब्रिटिश सरकारके द्वारा प्रबन्धकी दृष्टिसे उसके एक पृथक देश बना दिये जाने पर भी संस्कृति की दृष्टिसे वह भारत से जुदा नहीं हो सकता। हज़ारों, लाखों वर्षोंसे जो दो देश संस्कृतिकी दृष्टिसे एक चले आ रहे हैं उन्हें इस प्रकारके सरकारी फरमानों से अलग नहीं किया जा सकता। इस प्रकार बर्मा पर आक्रमण होने और बर्मामें शत्रुके घुस जाने का अर्थ है कि शत्रु भारत की पूर्वीय सीमाके भीतर घुस आया है इसलिए इस संकटसे बचनेके लिए अभीसे समय रहते सावधान हो जाने और रक्षा की पूरी तय्यारी कर लेने की आवश्यकता है। रंगून शहरपर जो बमवर्षा हुई है और वहांसे त्रस्त और भयचकित होकर जनता को जो भाग जाना पड़ा है वह भारतकी आंखें खोल देनेके लिए काफी है और यदि भारतीय लोग समय रहते रक्षाके लिए तैय्यार नहीं हो गये तो संकटके कई गुना बढ़ जानेकी सम्भावना है।

इस अवस्थामें कांग्रेसके सम्मुख देशको यह संकट झेलने और इस अग्निपरीक्षामें खरे उतरनेके लिए तय्यार करने की भारी जिम्मेवारी आ पड़ी है। राष्ट्रपति मौलाना आज़ादके शब्दोंमें कांग्रेस देशकी स्वाधीनता और समृद्धिके प्रश्नको हल करनेका पिछली आधी शताब्दीसे जो दम भरती आरही है वह सब व्यर्थ हो जायगा, और उसकी सारी तपस्या, उसका सब किया-कराया धूलमें मिल जायगा यदि वह इस कड़े समयमें देशकी जनता को बचा नहीं सकी। जनता भी और किससे अपनी रक्षा की आशा करे? पिछले ५० वर्षोंमें कांग्रेसने देशके लिए जो कुछ किया है वह किसी और संस्थाने नहीं किया, इसीसे इस संकटके समय भी देशकी आंखें उसीकी ओर लगी हुई हैं। सरकारसे भी इस बातकी आशा जनता नहीं कर सकती क्योंकि जनताके हृदयों तक सरकारकी पहुंच नहीं और देशको अपनी रक्षाके लिए तय्यार और सुसज्जित करनेमें तो उसने हमेशा रोड़े ही अटकाए हैं। इस लिए इस समय कांग्रेसके कन्धोंपर एक भारी जिम्मेवारी आ पड़ी है।

अपनी इस जिम्मेवारीको कांग्रेसने भली भांति महसूस किया है और इसीलिए गत ३० दिसम्बरको बारडोलीकी बैठकमें कांग्रेस वर्किंग कमेटीने कांग्रेसमैनोंके लिए कुछ महत्व पूर्ण आदेश किये थे जिनमें कहा गया था कि व भावी संकटसे जनताको बचानेके लिए देशके प्रत्येक नगर और प्रत्येक गांवमें संगठनका काम शुरु कर दें। बहुत सम्भव है कि भारतके कुछ बड़े-बड़े नगरोंपर हवाई हमला हो, उस समय एक प्रकारकी अराजकता और घबराहट फैल जानेकी सम्भावना है। लोगोंको उस अराजकता और संकट कालीन घबराहटसे बचाकर ग्रामोंमें आश्रय देने, उनके भोजनआच्छादनकी व्यवस्थाका संगठन करने और सबसे बढ़ कर जनताके हृदयसे आतंकका भूत भगानेके लिए अभीसे रचनात्मक कार्य करने और सहायताके लिए स्वयंसेवक तय्यार करनेकी ज़रूरत है। युद्ध आजाने पर अनाज के गल्ले तथा कपड़े आदि अत्यन्त दुर्लभ हो जायंगे। सम्भव है बहुतसे लोग अपने स्वार्थके लिए अनाजके कोठे भर कर रख लें या उन्हें ऊंची कीमतों पर बेचनेका उन्हें प्रलोभन हो जिससे उनका व्यापार तथा अन्यत्र प्रेषण वे नहीं करें। इन सब अवस्थाओंसे जनताको बचानेकी आवश्यकता है।

(शेष पृष्ठ ३ के कालम १ पर)

संकटसे बचाने के लिए संगठन का व रचनात्मक कार्य कीजिये

भारतीय जनताके प्रति कांग्रेस की जिम्मेवारी

अ. भा. कां. कमिटीमें प्रस्ताव

अखिल भारतीय कांग्रेस महासमिति के आधिवेशन की दूसरी बैठकमें राष्ट्रपति की आज्ञानुसार रचनात्मक कार्य सम्बन्धी प्रस्ताव पेश करते हुए बाबू राजेन्द्रप्रसादने कहा कि यह प्रस्ताव आपके सामने काम करने का एक तरीका रखता है। जिसपर अगर आप अमल करेंगे तो आप आगे आने वाली विषम पारीस्थिति का मुकाबिला कर सकेंगे। गवर्नमेंट जो ऊपरसे बैठाई हुई चीज़ है, उतना काम नहीं कर सकती जितना हमारे तरीकेसे हो सकता है। हमें हर एक देहातमें एक एक कार्यकर्ता तैय्यार कर लेना है। पूर्ण इन्तहा के साथ इस कामको किया जाए तो मेरा विश्वास है कि हम इस काम को कर सकते हैं। आगे बोल्ते हुए आपने कहा कि गांवोंपर गोले नहीं बरसाए जा सकते । इस तरह का खतरा जहां बड़े बड़े कारखाने, रेलोंके जंकशन, बंदर गाह आदि हैं वहां पर ही अधिक है। बड़े बड़े शहरोंको छोड़कर यह खतरा देहातों पर नहीं आएगा लेकिन ज़रुरत इस चीज़की है कि आगे आने वाली बदअमलीके सम्बन्धमें चारों तरफ फैले हुए कांग्रेस के सदस्य अपना अपना काम जारी रखें। हमारा ऐसा मुल्क है जिसमें ईश्वरने सब कुछ दिया है । अन्न वस्त्रकी हमें कोई कमी नहीं होगी। लेकिन हमारा काम तो ऐसा संगठन कायम करनेका है जिससेः—

लोगोंमें बदअमली फैले तो उसको सम्हाला जाए। उनमें हिम्मतको बढ़ाया जाए। हमारा संगठन ऐसा होना चाहिए जिसे सब गांवोमें जाल की तरह बिछाया जा सके।

रेल और मोटरोंके रुकनेकी हालत में खानेकी चीज़ों और कपड़ोंका हर जगह इन्तजाम कर लिया जाए। यह बहुत मुमकिन है कि लोगोंको कपड़ों की कमी महसूस होने लगे और इसका एकमात्र इलाज चरखा है। हर घर को अपने कपड़ोंके लिए अपना मिल बन जाना चाहिए।

हमारा संगठन किसीसे लड़ने झगड़नेका न होकर औरोंकी सेवा करनेका है। हमारा सारा संगठन अहिंसाकी बुनियादपर बनेगा । हम ब्रिटिश सल्तनतके साथ झगड़ना नहीं चाहते। हम रोड़ा अटकाने के लिए भी कोई काम नहीं कर रहे हैं । आपको यहां से जाकर एक दृढ़ संगठन कायम करना होगा । इस वक्त मुल्क को ऐसे बड़े संगठनकी और ऐसे कार्यकर्ताओं की, ऐसे स्वयंसेवकों की दृढ़ आवश्यकता है जो इस चीज़ को यहां से जाकर अधिक से अधिक अमलमें लाएं । आप लोगों को इस वक्त जनताकी सेवा का मौका मिला है अत एव आपको अपने इलाकोंमें जाकर ऐसा काम करना चाहिए जिससे आप अपनी बातमें खरे उतर सकें।

प्रस्ताव का समर्थन पंडित गोविन्दवल्लभ पन्तने अपने एक विशेष ढंगके पार्लियामेंटरी तरीके से बोल्ते हुए किया। आपने कहाकि इस प्रस्तावके बारेमें कोई अलग अलग मत हो ही नहीं सकते। हम लोगों को केवल प्रस्तावही पास नहीं करना है लेकिन इस तजवीज की अहमियत समझकर अपने अपने घर जाकर इस चीज़ को करना है । स्वराज्य आ रहा है-नए आर्डर की बातें दुनियांमें सब जगह हो रही हैं । हम भी एक नई रोशनीकी उम्मीद कर रहे हैं । हमको इस प्रस्ताव पर गौर करना चाहिए कि कल जो स्वराज्य आएगा उसे हम किस तरहसे कायम रख सकेंगे।

आज गल्लेकी कीमतें बढ़ रही हैं। मालके एक जगहसे दूसरी जगह ले जानेके साधन नहीं हैं और इसी तरहकी नयी नयी कठिनाइयां पैदा होती जा रही हैं। बहुत मुमकिन है कि हमें लोहा आदि सामानका मिलना भी मुश्किल हो जाए। इस तरहकी गोलाबारीसे और भी अनेकों नई नई चीज़ें पैदा होती हैं। आजका जमाना बड़ा नाजुक है। उससे प्रस्तावमें दी गई योजनासे बढ़कर हमारे सामने कोई काम भी नहीं है। अगर आज हम लोगोंकी हिम्मत बढ़ानेका, उनका हौसला कायम रखनेका कोई प्रयत्न नहीं करते तो कांग्रेसके रहनेका कोई मतलब नहीं है। अंग्रेजों की जैसी हालत होती जा रही है उसमें उन्हें हमसे समझौता करना ही होगा। हम क्या करें इस बात का जवाव इस प्रस्तावसे मिलता है । यह बुनियादी रिज्योल्यूशन है इस कामपर ही अपनी पूर्ण शक्ति हमें लगाना है। आज इसी वजहसे सत्याग्रह बन्द किया गया है। इस सम्बन्ध में यू. पी. कांग्रेस की कौन्सिलने एक तजबीज पेश की है और उसके मुताबिक हम कांग्रेसको एक जीता जागता संगठन बनाना चाहते हैं। सरकारी मशीन आज टूट गई है, उसका कामकाज रुक गया है जिसका सबूत हमें सरकारके द्वारा किए जानेवाले और उसके नाकामयाब होनेसे ही जाहिर हो जाता है। इसी तरह हम देखते हैं कि अब पूरा काम हमें ही करना होगा। हमें कांग्रेसके संगठनको दृढ़ बनाना होगा ।

पंतजीके भाषणके पश्चात मौलाना साहबने अपनी ओरसे प्रस्तावके सम्बन्धमें एक महत्वपूर्ण भाषण दिया। मौलाना साहेबकी लाक्षणिक शैली इस भाषणमें अपने सर्वोच्च रूपमें प्रगट होती थी। आपने कहा कि—कांग्रेस मैनोंका यह फर्ज़ है कि इन कामोंमें का कमसे कम एक काम हरदिन उन्हें करना चाहिए। पहिले हमारा ख्याल कांग्रेसके कांस्टीटयूशनमें तरमीमें करके इस कामको करवानेका था। कांस्टीटयूशनके मुताबिक हम हरएक कांग्रेसमैनके लिए ऐसा काम करना लाजिमी कर देना चाहते थे। लेकिन बादमें हमने आप लोगों पर ही पूरा भरोसा करना ठीक समझा। हम चाहते हैं कि आप अपना फर्ज़ बड़ी जिम्मेवारीसे अदा करें और बाहरी दबावोंकी आपको जरूरत न हो । जेलकी चहारदीवारीमें जानेसे आप पर कौनसा बोझ रहा । बोझ तो इस वख्त आ पड़ा है। इस वख्त अगर आपमें कुर्बानीकी स्पिरिट बाकी है तो यह अपने फरायज अदा करनेका सबसे अच्छा टाईम है। आज दूसरे मुल्कोंके लोग अपने मुल्ककी आज़ादी कायम रखनेके लिए अपनी जानें दे रहे हैं फिर क्या हम इस मौके पर अपनी कुर्बानी करनेसे हिचकिचाएंगे। हमें लोगोंको इस वक्त बतला देना है कि कांग्रेस ही मुल्ककी ऐसी जमात है जिस पर मुल्ककी-मुल्कके करोड़ों लोगोंकी आंखें लगी हैं। अगर अभी आपका सीना ठंडा नहीं हुआ है—अगर आपके सीनेके चूल्हेमें आग है, अगर वह राख नहीं हो गया है तो आपको आज बता देना है कि कांग्रेसमें कुर्बानीकी स्पिरिट बाकी है । हर एक कांग्रेसमैन रियायाकी हिफाजितके लिए कुरबान होना जानता है । यह काम उन कामोंका नक्शा है जिसे आपको आज़ाद होनेपर करना ही होगा। तो फिर क्यों नहीं हम आजसे ही इस कामको शुरू कर दें। आपको इस कामको अपने दिमागमें जगाना है और जगाकर अपना फर्ज़ अदा करना है। इसके पश्चात् आपने डिसिप्लिन पर जोर देते हुए कांग्रेसमैनोंको अपने आपसी झगड़ोंको भूलाकर वक्तकी मांगके मुताबिक अपना फर्ज़ अदा करनेकी अपीलकी। इसके बाद तजवीज एक मतसे पास होगई।

संपादकीय

(पृष्ठ २ का शेषांश)

कांग्रेस वर्किंग कमेटीके इन आदेशोंके प्रस्तावको अ. भा. कांग्रेस कमेटीने अपनी वर्धाकी मीटिंगमें भी ज्योंका त्यों स्वीकृत कर लिया है और हरेक कांग्रेसमैन व हरेक अ. भा. कांग्रेस कमेटीके सदस्यको आदेश दिया है कि वे इसे अपना कर्त्तव्य समझें कि इन कार्योंमेंसे एक-न-एक वे अपने यहां पहुंचते ही प्रारम्भ कर देंगे।

इस प्रस्तावकी देशरत्न बाबू राजेन्द्र प्रसाद, पं. गोविन्द वल्लभपन्त तथा राष्ट्रपति मौलाना अबुल कलाम आज़ादने अपने भाषणोंमें बहुत सुन्दर व्याख्या कर दी है। आज भी हम देख रहे हैं कि अनाज व कपड़ेके दाम युद्धसे पूर्वके दामों से कहीं अधिक बढ़ गये हैं और युद्धके ठीक हमारे सरपर आजाने पर तो वे इतने दुर्लभ हो जायंगे कि सम्भव है तन ढांपनेको एक भी सूतका तार और पेट भरनेको एक भी अनाजका दाना मयस्सर न हो। यातायातकी असुविधाएं दिन–दिन बढ़ती जा रही हैं। मालको एक स्थानसे दूसरे स्थानपर ले जाना कठिन होनेसे यह कठिनाई और भी बढ़ रही है। इस लिए समय रहते ही ऐसी व्यवस्था होजानेकी जरूरत है कि जो लोग गल्लेको एक ही जगह जमा करके दूसरे देशवासियोंके तड़पते देखनेका रहनेपर भी मुनाफ़ा उठानेका स्वप्न देख रहे हैं, उन्हें गल्ला जमा नहीं करने दिया जाय और एक देहातसे दूसरे देहातमें अनाज व कपड़ा पहुंचाकर कष्टमें पड़नेवालोंकी मदद करनेकी तय्यारी कर ली जाय। युद्धके आतंकसे बचानेके लिए जनताको धैर्य बंधाया जाय और इस कठोर अग्नि परीक्षामें भी विचलित नहीं होने दिया जाय।

इसकी आज इतनी अधिक आवश्यकता क्यों है? पं. गोविन्दवल्लभपन्तके शब्दोंमें हम कहेंगे कि स्वराज्य तो भारतको मिलेगा ही मिलेगा। इसमें आज सन्देह नहीं। उस समय देशका नियन्त्रण करने की योग्यता हममें होनी चाहिए और अब उसकी भूमिका हमें इस कार्यके द्वारा प्रारम्भ कर देनी है। सत्याग्रह बन्द हो चुका है और कांग्रेसने आज इसीलिए सत्याग्रह बन्द कर दिया है कि देशको आज कार्यकर्त्ताओंकी गांव-गांव और कस्बे-कस्बेमें जरूरत है। कांग्रेसके कार्यकर्त्ताओंका स्थान इस समय जेल नहीं, कार्यक्षेत्र है जहां वे कांग्रेसके प्रतिजनताका विश्वास उपजा सकें और संकटके समय अपनी परीक्षा देनेको तय्यार कर सकें।

मौलाना आजादने देशके हरेक कांग्रेसमैनसे यह आशा की है कि इसके हृदयमें उत्साह, जोश और कार्यकी लगनकी आग धधक रही होगी, उसका हृदय बुझकर राख नहीं हो गया होगा। हम चाहते हैं कि इस महत्वपूर्ण समयमें उनकी यह आशा पूर्ण हो। कांग्रेसीजन हरेक ग्राम और हरेक कस्बे में फैल जांय और देश भरको युद्धके आतंकसे बचाएं, उन्हें धैर्य बंधाएं व भावी संकटसे बचानेके लिए कहीं भी अनाज़ या कपड़ा नाजायज़ तौरपर इकट्ठा न होने दें, उसे गरीब और ज़रूरत मन्द लोगों तक पहुंचानेकी व्यवस्था करें।

ब्रिटिश प्रोपेगेण्डा—— ★

पत्रोंमें लेख लिखनेवाले और भाषण देनेवाले यह समझते हैं कि वे राजनैतिक प्रोपेगेण्डाके कठिन कार्यको बिना किसी भूलके ठीक ठीक करनेके—अर्थात् लोगोंमें राजनैतिक उद्बोधन पैदा करनेके सर्वथा योग्य हैं। कहीं मैं भी ऐसी भूल न कर बैठूं, इसलिये बिना हिचकिचाहटके इस बातको स्वीकार कर लेता हूं कि प्रोपेगेण्डाके जरिये राजनैतिक उद्बोधन पैदा करनेके लिये इस देशने पहिले ही बहुत कुछ किया है।

ऐसी किसी कार्यकी छोटी मोटी बारीकियां चर्चाका विषय हो सकती हैं, क्योंकि प्रोपेगेण्डाकी कोई अमोघ विधि नहीं है, तथा अच्छे और बुरे की दो पृथक् कक्षाओंमें इसे स्पष्ट रूपसे विभक्त करना असंभवसा है। यहां तक कि सफलताकोभी इस चीजकी कोई अचूक कसौटी नहीं कही जा सकता, क्योंकि हमें प्रोपेगण्डाकी तात्कालिक प्रतिक्रियाके एवं लंबे अर्से के कारणोंसे पैदा हुए परिणामोंको भली भांति समझना चाहिये। जिस चीजका अत्यधिक महत्व है, वह है, असली ढांचेका सवाल। और राजनैतिक उद्बोधन बहुत अधिक प्रमाणमें इसीकी साधारण रूपरेखा पर निर्भर करता है। कुछ आलोचकों के मतमें ऐसी साधारण रूपरेखा नहीं है, और जहांतक जर्मन उद्बोधन का ताल्लुक है, उसका अस्तित्व कतई नहीं है—लेकिन इस विचारको सही साबित करनेका हमारे पास कोई प्रमाण नहीं।

इन बारीकियोंकी आलोचना करनेके और साधारण रूपरेखा के विषयमें वादविवाद खड़े करनेके बदले, मैं यहां एक साधारण परिस्थितिके बारेमें ही कुछ कहूंगा कि जिसमें योग्यसे योग्य और उत्तम प्रकारसे चुना हुआ भी प्रोपेगेण्डा निष्फल सिद्ध होता है, और उसे सफल कैसे बनाया जा सकता है, इसके विषयमें भी कुछ सूचनाएं दूंगा।

इसका निषेधात्मक पहलू मैं यहां पहले लेता हूं। कई लोग यह समझ रहे हैं कि जर्मनोंका प्रोपेगेण्डा प्रचार कलाका एक आदर्श है, और उनके तरीकोंकी नकल करके हमें भी वही सफलता प्राप्त हो सकती है जो कि कुछ यूरोपियन देशोंमें 'राष्ट्रीय समाजवादियों' को प्राप्त हुई है। इसके अलावा, यह भी स्वाभाविक है कि गत महायुद्धके ब्रिटिश प्रचार की ओर भी हमारा ध्यान आकर्षित हो।

गत महायुद्धमें ब्रिटिश प्रचार सफल हुआ था, और कुछ व्यक्ति यह मानते हैं कि वह अब भी सफल हो सकता है बशर्ते कि उसे बदली हुई परिस्थितियोंके अनुकूल बना लिया जाय।

लेकिन ये दोनों ही प्रकारके तर्कों की बुनियाद गलत है, और ये हमें एक विफल प्रचार कार्य की ओर ले जाते हैं। इसकी असलियत समझनेके लिये इस बातको स्पष्ट रूपसे जान लेना आवश्यक है कि नात्सी प्रचारका उद्देश्य क्या है और विगत महायुद्धमें राजनैतिक उद्बोधनके प्रचारमें ब्रिटेन का क्या उद्देश्य था। स्पष्ट सरल शब्दोंमें प्रचारका उद्देश्य है दुश्मन की प्रतीकार करने की इच्छा को निर्बल बनाना, उसकी एकताको छिन्नविच्छिन्न करना, उसमें युद्धकी थकावट पैदा करना, और इस तरह बौद्धिक दबावके द्वारा उनको असमय ही आत्मसमर्पण करने के लिये बाधित करना। संक्षेपमें कहा जाय तो, जैस कि राष्ट्रीय समाजवादियोंने अपनी चातुरीसे उसे अपने उच्चतम शिखरपर चढ़ा दिया है,—प्रचारकार्य का उद्देश्य है गलत मार्ग पर ले जाना। यह शत्रुको आत्मसर्पण के लिये उद्यत करने का एक प्रयत्न है, और विकट कालमें जो विनाश अतिशीघ्रतासे तथा सैनिकोंकी कार्यवाहीसे पूर्णतया नहीं लाया जा सकता, इससे लाया जाता है।

लेः—हरमान राउशनिंग

क्या इस प्रकारका या इससे मिलता-जुलता प्रचार का कोई स्वरूप है, जो जर्मनोंपर ऐसा परिणाम पैदा कर सकता हो? इसका उत्तर सर्वथा नकारमें ही मिल सकता है। जो लोग यह सोचते हैं कि जर्मन प्रजाके सामने चालाकीसे हम अपनी बातोंको रखकर उसे आत्मसमर्पणके प्रलोभनमें फंसा सकते हैं, वे सरासर गल्ती कर रहे हैं। इतने गर्ह्य प्रलोभनके मौलिक मनोवैज्ञानिक आधार का इस समय जर्मनीमें पूर्णतया अभाव है, और मुझे संदेह है कि भविष्यमें भी यह चरितार्थ किया जा सकता है या नहीं।

सुधारकी आवश्यकता

इसका कारण सिर्फ यही नही है कि आज समूची जर्मन प्रजा हिटलर और उसके साथियों की अन्ध अनुयायिनी बनी हुई है। इसका असली कारण गत महायुद्धके अनेक अनुभवोंमें छिपा हुआ है, और इन अनुभवोंने ही वचनोंके प्रति इतने व्यापक और जड़बद्ध अविश्वासको जन्म दिया है—चाहे वे वचन देनेवाले कोई भी क्यों न हो! उनका यह संदेहवाद और अपने विचारोंके प्रति उनकी यह निर्भ्रम बुद्धि जर्मनीमें केवल थोड़ेसे समुदाय या श्रेणी विशेष तक ही सीमित नहीं, बल्कि समूचे राष्ट्रकी मानसिक विचारधारा बन गई है।

सन १९१८ के जर्मन विनिपातका पुनरावर्तन सर्वथा असंभव है। यह इसलिये नहीं कि राष्ट्रीय समाजवादी लोग जैसा कि वे अभिमान के साथ कहते हैं, एक कठोर राष्ट्रीय अनुशासन स्थापित करनेमें सफल हुए हैं, बल्कि इसलिये कि रास्तेमें चलनेवाला हरक जर्मन यह समझता है कि उसका भाग्य अविछिन्न रूपसे समूचे राष्ट्रके भाग्यके साथ बंधा हुआ है। उनके दिमागमें यह तथ्य मुद्रित-सा है कि १९१८ का आत्मसमर्पण या लिबरल प्रजातंत्रिकोंकी क्रांति दोनोंमेंसे कोई भी पराजयसे उत्पन्न होनेवाले जर्मन जनताके उत्तरदायित्वसे उनकी रक्षा नहीं कर सकता। वे पर्याप्त रूपसे वास्तविक दृष्टिकोण रखते हैं, और अतएव मानते हैं कि युद्धमें आत्मसमर्पण उनकी स्थितिको ज्यादा खराब बनायेगा। वे जानते हैं कि इससे केवल शासक श्रेणीको ही दुःख भोगना पड़ेगा यह बात नहीं, लेकिन हरेक व्यक्तिको इसमें अपना हिस्सा लेनेके उत्तरदायित्वको निभाना पड़ेगा। फलतः न तो श्रेणी-युद्धका सिद्धान्त और न ही दूसरा कोई राजनैतिक सिद्धान्त जर्मन जनताके समस्त समुदायोंकी भावी विपत्तिकी वास्तविकताको छिपानेमें समर्थ है।

युद्धोत्तर वर्षोंकी जड़बद्ध निर्भ्रमबुद्धि चाहें वह सही हो या नहीं, उपेक्षा की चीज़ नहीं है। जर्मन लोग अन्य किसी देशके लोगोंसे ज्यादा वास्तविक दृष्टिकोण रखने वाले हैं, उनको बड़े लंबे लंबे लुभावने और मोहक शब्द-विन्यासोंसे धोखा नहीं दिया जा सकता।

संदेह और निर्भ्रम की ऐसी परिस्थितिमें जर्मन जनताको अपील करनेके लिए गोबेल्स के तरीकोंका अनुकरण करना अत्यधिक मूर्खताजनक कहा जा सकता है। जर्मन जनतामें उद्बोधन पैदा करने के लिये प्रयुक्त किया गया हरेक प्रयत्न आरंभसे ही व्यर्थ साबित होगा यदि उसमें उनके नैतिक ह्रास और सर्वसामान्य अविश्वासके भावोंपर ध्यान नहीं दिया गया। कोई भी योजना, जो गत महायुद्धके प्रचार कार्यका आधार लेकर चली होगी, केवल उनके दिलमें प्रतीकार और अविश्वासके भावोंको दृढ़तर करनेमें ही कामयाब होगी। इसलिये गत महायुद्धके कड़वे अनुभवों को दबा देनेके लिये दृढ़ एवं विश्वासोत्पादक शब्दोंकी आवश्यकता है। उनको विशाल उदारता भरी भावनाओंसे अपील करना—जैसे स्वतंत्रता, न्याय, एवं आत्मप्रतिष्ठाके विचार हैं—असफल ही क्यों न रहे, लेकिन इससे उन भ्रष्ट, अमानुषी, और अपराधी नेताओंका भण्डाफोड़ हो जायगा, जिन्होंने जर्मन प्रजाको युद्धमें ढकेला है।

इस प्रकारकी आलोचना बहुत अर्सेसे जर्मनीके हरेक वर्गमें बहुतायतसे फैली हुई थी। उन्हें इस वक्त नात्सियोंको पाशविकता और क्रूरता बतलानेकी जरूरत नहीं, क्योंकि इससे वे सुपरिचित हैं, जरूरत है यह बतलानेकी कि वे क्योंकर इन अपराधियोंके पंजेसे मुक्त हो सकते हैं। यहीं पर समस्या पैदा होती है और एक वैधानिक राज्यतंत्रमें बसने वाले नागरिकके लिये इसके स्वरूपको समझना कठिन है, और इसीलिये वे अपने प्रचारकार्यके प्रयत्नोंमें दूसरी भारी गल्ती कर बैठते हैं। इस विचारका, कि स्वाधीनताके नाम पर नात्सीवादके विरुद्ध जनशक्ति तैयार करनेके उद्देश्यसे जर्मन जनताको प्रेरित करनेके लिये किया गया प्रोप्रेगण्डा युद्धका अन्त कर सकता है, और नात्सी शासन को उलट सकता है, कोई वास्तविक असर करने वाला आधार नहीं।

निस्संदेह बहुतसे जर्मनोंमें ऐसे कार्य करनेके लिये इच्छा जिन्दा है, और मुझे लगता है कि यह इच्छा, इस प्रचलित अभिप्रायसे कि जर्मन प्रजाने घटनाओंके दुःखद विकासक्रमका स्वागत किया है, अवश्य ही विरोध करेगी। उनके पास उनसे सहमत होनेके अलावा और कोई उपाय ही न था। तानाशाही शासनतंत्र का जिन्हें अनुभव नहीं, वे इस बात को नहीं समझ सकते कि जनताको दासतामें जकड़े रखनेके लिये मानसिक तथा भौतिक तरीकों की कुटिल शक्ति कहां तक काम करती है।

इस लिये शत्रुके खिलाफ जनशक्ति तैयार करना केवल वक्तका दुरुपयोग करना ही है। इससे तो केवल विरोध की भावना ही बढ़ेगी, और वे लोग इन बातों को केवल सुंदर शब्दोंके ही रूपमें समझेंगे। जर्मनीके पब्लिक अभिप्राय को अपील करते वक्त हमेशा विशाल, भोली, सरल जनता और शासनप्रणालीमें जिनका कुछ हिस्सा है वैसे नेताओंसे अपील के बीचके विभेदको ध्यानमें रखना चाहिए। शासनतंत्रमें जिनका हाथ है वैसे नेता ही, और न कि जनता, नात्सी शासन को उलट सकते हैं। आधुनिक तानाशाही परिस्थितिमें जनता के द्वारा क्रांति किसी भी हालतमें शक्य नहीं। केवल इस परिस्थितिमें एक ही उपाय शेष है, और वह है विशेष प्रकारसे शिक्षित किये गए क्रांतिकारी व्यक्तियों द्वारा शासन परिवर्तन। मेरे इस कथनकी पुष्टि के लिये मैं लेनिन, ट्राटस्की और मालापार्टे जैसे प्रख्यात व्यक्तियोंके अभिप्राय उध्दृत कर सकता हूं।

स्वाधीनताकी लड़ाईमें जनता जर्मनीमें केवल एक ही दृष्टिसे सहायक हो सकती है, और वह इस तरह कि शासन-तंत्रके आर्थिक ढांचेको ढीला बनाने के लिये वह मर्यादित स्वरूपमें अक्रियात्मक विरोधका मार्ग अपनावे। लेकिन यह भी तब संभव हो सकता है, जब कि मज़दूरोंके द्वारा जानबुझकर तोड़ फोड़ दिये मशीनोंकी वह तंगी महसूस करे।

इसलिये जनतामें उद्बोधन पैदा करनेका उद्देश्य एक तरहसे उसके मनमें क्रांतिकी पूर्वभूमिका पैदा करना है। जनतासे कार्यकी नहीं बल्कि उसमें एक निश्चित् मनोदशा पैदा करनेकी आवश्यकता है; ऐसी मनोदशा जोकि नेताओंको पंगु, व्यग्र और शक्तिविहीन-सा कर दे और उनके बीच फूट तथा कलहके बीज बोये।

कार्य उन्हीं लोगोंसे शुरू होना चाहिए, जिनका शासन सत्तामें हिस्सा हो। इसलिये हमारे प्रचारका मुख्य उद्देश्य शासनसत्ताके तत्वोंको तितर-बितर करनेका होना चाहिए। जनताको उनके शासकोंके खिलाफ उकसानेके बजाय हमें नेताओंमें विभेद करानेकी कोशिश करनी चाहिए। राजनैतिक युद्ध का (प्रचारका) यही उद्देश्य है।

इस पर उपस्थित होनेवाली आपत्तियां निस्संदेह स्पष्ट-सी हैं। इसपर कोई पूछ सकता है कि क्या इसका अभिप्राय हिटलरके खिलाफ गोरिंग को लड़ाना नहीं ? या गोबेल्सके स्थानपर हिमलरको लानेका नहीं ? इसका अर्थ क्या अपराधीको मदद देनेके अपराधको अपने ऊपर उठाना नहीं ? निस्संदेह मैं यहां हिटलर और रिबनट्रोप के खिलाफ हेस और गोरिंगका समर्थन नहीं कर रहा। मैं तो सिर्फ इसी बात की ओर संकेत करना चाहता हूं कि जर्मनीमें शासनसत्ताके सूत्रधार किसी एक ही उद्देश्य को सफल बनाने के लिये बिल्कुल संघबद्ध हैं ऐसी बात नहीं। इसके विपरीत, एक ही झंडेके नीचे खड़े होकर काम करने वाले वहां ऐसे भी लोग हैं, जिनके उद्देश्य एक दूसरेसे सर्वथा विरुद्ध हैं, और उससे भी ज्यादा महत्वकी बात तो यह है कि वे अपने उद्देश्योंको क्रियात्मक रूप देनेका भी प्रयत्न कर रहे हैं। और दूसरोंको अपने से पीछे छोड़ देना चाहते हैं। उन नेताओंकी जबरदस्तीसे स्थापित की गई ऊपरी एकता को तोड़ देनेके और उनमें से कुछ एकको अपने वशमें करनेके पूरे अवसर हैं। यहां पर इसका हेतु भले (चाहें आप उन्हें गलत रास्ते पर ले जाये गए या जिनका गलत उपयोग किया गया है, वैसा कहें) देशभक्तों को उद्दामवादियों और गुण्डोंके खिलाफ करना है, जो कि जर्मनीको महान् बनानेके बजाय उसे सर्वनाश की ओर ले जा रहे हैं। इस प्रकारकी योजना को चरितार्थ करना चाहिए या नहीं, यह राजनैतिक तर्क का सवाल है, लेकिन यदि सफल प्रचारकार्य की आवश्यकता है तो केवल यही योजना फलीभूत हो सकती है।

प्रथम जर्मन रिपब्लिक को याद करके और पुरानी जर्मन राजनैतिक पार्टियोंके नारे बुलंद करते हुए किसी भी प्रकार की योजना को पेश करना बेकार है। इसका तात्पर्य यही हो सकता है कि हम विगत दस वर्षमें जर्मनीके राजनैतिक विचारोंमें जो बड़ाभारी परिवर्तन आया है, उसे भूल जाते हैं। 'विइमर' के समय की परिस्थिति को उत्पन्न करना एक बेहूदा बात होगी। जर्मनीके राजनैतिक विचारों का पुनर्जीवन किसी एक संघ या पार्टी विशेषसे नहीं हो सकता, इसके लिये राष्ट्रीय समाजवादियों के विरुद्ध जनसाधारण के विरोध के अलावा भी किसी चीज की आवश्यकता है। इस प्रकार का पुनर्जीवन दो पार्टियों के द्वारा हो सकता है, जिनमेंसे एक है, महान् उदार विचारवाली, नॉन-मार्क्सिस्ट, स्वतंत्र लेबर पार्टी, तथा दूसरी है नरमदल की अप्रतिक्रियावादी लिबरल-कान्ज़रवेटिव पार्टी। इसी तरह जर्मनीसे देशनिकाला दिये हुए जर्मन भी जर्मनीमें उद्बोधन फैलानेमें सहायक हो सकते हैं क्योंकि जो मानसिक कार्य जर्मनीकी जनता जल्दी या देरसे अपनावेगी, उसे वे शुरू ही से प्रारंभ कर देंगे।

जर्मनीमें उद्बोधन पैदा करनेके इस कार्यमें वहां पर पाये जाते अनेक प्रच्छन्न विरोधोंका—भौगोलिक, जातिगत, ऐतिहासिक और भौतिक, प्रशियाके खिलाफ बवेरिया और मालिकोंके खिलाफ श्रमजीवियोंका—लाभ उठानेकी बातें सोचना उतना ही अनुचित होगा। यह विचार प्रथमदृष्टिमें शायद लुभावना प्रतीत हो सकता है कि ज्योंही ये प्रछन्न विरोध उग्र रूपमें जाग उठेंगे, जर्मनी अपने आप दब जायगा। लेकिन यह बात भी जर्मनोंके सामने नात्सी नेताओंकी श्रेष्ठता और पाशविकता बतलाने के समान ही है। इस प्रकार के प्रचारकार्य को लोग मजेसे सुनेंगे, क्योंकि एक औसतन जर्मन रोष या क्रुद्धावस्थामें कार्य करना पसंद करता है, लेकिन इसका क्रियात्मक परिणाम कुछ भी नहीं आयेगा। और जिस प्रचार कार्य में किसी प्रकारका हेतु नहीं, उसकी कुछ भी कीमत नहीं है। जर्मन जनता के लिये अक्रिय प्रतीकार की मर्यादामें रहकर ही कार्य करना संभव है। और वे नारे जिनमें पार्टी पोलिटिक्स या अन्य मतभेदों की बू नहीं आती, तथा जो सर्वसाधारण को अपील करनेके उद्देश्य से बुलंद किए गए हों, केवल वही प्रयुक्त किये जा सकते हैं। आर शासकश्रेणी के लोग केवल तभी कार्य के लिये तैयार हो सकते हैं, जब कि उन्हें एक देशभक्तके नाते मरमिटनेका उद्देश्य नज़र आता हो।

उन्हें किसी तरह यह समझाना होगा कि जर्मनीकी सेवा करना, यूरोप ही की सेवा करना है, और एक प्रकारसे समस्त यूरोपके देशोंकी सेवा करना है। और इस प्रकारकी मनोवृत्ति तबतक उत्पन्न नहीं की जा सकती, जब तक जर्मन जनताके दिलमें हम कुछ वास्तविक और स्पष्ट आशाका संचार नहीं करते।

यहां पर मुझे उद्बोधन पैदा करनेके एक आवश्यक तत्वका ख्याल आता है। प्रचार कार्यके नात्सी तरीकोंका अनुकरण नहीं किया जा सकता। ब्रिटिश प्रचारकार्यसे जर्मनीमें उतने ही क्रांतिकारी परिणाम पैदा होवे, ऐसी इच्छा रखनेसे पूर्व हमें जर्मनोंको अपने राजनैतिक कार्यको सफल बनानेके लिये जो अपूर्व अवसर प्राप्त हुए थे, उन्हें नहीं भूलना चाहिये। उनके तरीकोंकी कोरी नकल करना मूर्खता ही हो सकती है। उद्बोधन पैदा करनेका केवल वही तरीका, जोकि बिलकुल भिन्न प्रकारका हो, और भिन्न विचारोंकी आधारशिलापर स्थित हो, सफल हो सकता है। यह बात वैयक्तिक प्रयत्नों एवं सामुदायिक योजना, दोनों ही के बारेमें समानरूपसे सत्य है।

इस विषयमें अनेक छोटी मोटी बातोंपर गल्ती बतायी जा सकती है। लेकिन कठिनाई का सवाल तब उपस्थित होता है, जब कि कोई व्यक्ति सामान्य योजनामें परिवर्तन करनेकी आवश्यक्ताके लिये जोर देता है। ब्रिटनमें प्रचारकार्य की सफलता ज्यादातया इस बातपर आँकी जाती है कि वह गोबेल्स के प्रचारादर्शके मुताबिक कहां तक है। इसतरह नात्सियोंको अपील करने के लिये जारी किया ब्रिटिश प्रोपेगेण्डा, दरअसलमें उनके मनमें उल्टा असर पैदा करता है। क्योंकि उसकी आवाज स्पष्टरूपसे पहचान ली जाती है, और उससे किसीको धोखा नहीं होता। इसलिये रेडियो ब्रोडकास्ट उद्दण्डता, अहंकार तथा हंसीमजाक, जिनमें से सचाई नहीं टपकती, पर होना चाहिये। इसमें व्याख्यान और उपदेश देनेकी भी आवश्यकता नहीं। उसका प्रधान सूत्र शुद्ध सरलता होना चाहिये, जिसमें जर्मनीमें आज जिस चीज का अभाव-सा है, वैसी निर्व्याज, निष्कपट और प्रामाणिक सचाई का भी साथ हो।

गोबेल्सके ब्रोडकास्टमें जो बुद्धिपूर्ण, उत्तेजनशील और तिरस्कारयुक्त कटाक्ष पाया जाता है, वह उसके विशेष संहारक कार्यके लिये अत्यंत उपयुक्त है, लेकिन उसके अनुकरण की आवश्यकता नहीं। वह जिस मानसिक दृष्टिकोण को सामने रखकर चलता है, वर्तमान जर्मनीमें से कतई भिन्न है, और प्रजातंत्र देशों की उस जनताके लिये ही उपयुक्त है, जो कि इस समय भी कुछ अंशोंमें भोली-भाली है, तथा जिनको पथभ्रष्ट किया जा सकता है। राष्ट्रीय समाजवादी प्रोपेगेण्डाके पीछे वे ताकतें हैं, जो कि पुरानी व्यवस्थाको नष्ट भ्रष्ट कर रही हैं। चाहे निहिलिस्ट क्रांति की ताकतोंके अलावा उनकी कोई कीमत न हो, लेकिन किसी भी हालतमें वे कम क्रांतिकारी नहीं हैं। इस समय बहुतसे लोग 'नव-जीवन' 'स्वाधीनता', 'बंधनसे मुक्ति' और इसी प्रकारके नारोंका प्रयोग करते हैं। परंतु झूठी स्वाधीनताके नामसे जनताको छलने का हरेक प्रयत्न उस देशमें नाकामयाब सिद्ध होगा, जिसे धोखेबाजीके नवीन अनुभव प्राप्त हो चुके हैं। नात्सी प्रोपेगेण्डा का जहर जिन्होंने पचा लिया है, और भ्रम तथा निर्भ्रामकता दोनों ही के परिणामोंका जिन्हें अनुभव है, वैसे जर्मन लोग आसानीसे निःसत्व एवं मंद प्रवञ्चनाके शिकार नहीं हो सकते।

इस लिये जर्मन प्रजाके दिलों तक पहुंचनेके लिये एक बिलकुल भिन्न तरीके का उपयोग करना चाहिए। उनके साथ सीधे और सरल ढंगसे बातें करनी चाहिए, जिसमेंसे ईमानदारी, सदिच्छा और वास्तविक-केवल बनावटी नहीं-सचाईकी बू आती हो। संसारके सामने उपस्थित इस विपत्तिका केवल इसके द्वारा ही अन्त आ सकता है। केवल खरे दृढ़निश्चय बलसे ही विश्वासकी रक्षाकी जा सकती है। जर्मनीके जैसी परिस्थितिवाले किसी भी देशको गुमराह करना व्यर्थ है, आवश्यकता है सिर्फ सच्चे नेतृत्वकी। काल्पनिक राष्ट्रीय समाजवादी दुःस्वप्नके प्रतीकार करनेमें वास्तविक दृढ़-शक्तिसंपन्न नयी व्यवस्था ही विशेषकरके कामयाब हो सकती है। विजेता जर्मनीकी मिथ्या आशाएं, जो कि उसकी संपूर्ण विजयके बाद भी फलीभूत नहीं हो सकतीं, उसके स्थानमें हमें उन आशाओंका संचार करना होगा, जो देखनेमें भले ही कुछ कम आडंबरी प्रतीत हों, लेकिन जो स्वतंत्र राष्ट्रों के एकत्रित संघमें जर्मनीको समुचित शास्वत स्थान दिलायें।

प्रचार और उद्बोधन पैदा करने का यह तरीका निस्संदेह सफल हो सकता है, यदि हम उन्हें कहें कि उनकी विजय लहूसे भींगी हुई है, और वह उन्हें अंतमें मृत्युकी ओर ही ले जायगी, और यदि लिबिया, ग्रीस, रूस, फ्रांस और अटलान्टिक की अथाह जलराशिमें जैसे वे अपनी लाशें पाटते हुए चले आये हैं, वैसे हिंदुस्तान, चीन और अमेरिकाको भी रौंद डालें, तब भी आखिरमें वे थक जायेंगे। और यहां तक कि यदि कुछ समयके लिये जर्मनीको नेपोलियन की सी सफलता मिले, लेकिन अंतमें उसे मुंहकी ही खानी पड़ेगी, जैसे कि फ्रान्स जैसे 'महान् देश' को खानी पड़ी थी। लेकिन ये वक्तव्य अपने आपमें पर्याप्त नहीं हैं। आज जर्मनीमें काफी भय फला हुआ है। केवल आशा ही कार्य करनेके लिये उन्हें उद्यत कर सकती है। जर्मनोंके दृष्टिकोणको इस विश्वाससे पंगु बना दिया गया है कि पराजित जर्मनीका स्थान संसारमें एक नीच जातिके राष्ट्रके तुल्य होगा। जर्मनोंके हृदयमेंसे इस भयको दूर करनेकी आवश्यकता है, और साथ ही साथ उन्हें इस बातकी वास्तविकता बतलानी चाहिए कि नयी व्यवस्थामें, यद्यपि जर्मनी संसारपर शासन तो नहीं करेगा, लेकिन समस्त संसारके पापोंका बोज केवल उसीके मथ्थेपर नहीं मढ़ दिया जायगा।

समाजवादी या शांतिवादी, किसी भी तरह की शिक्षा

(शेष पृष्ठ २८ के कालम ३ पर)

काका के पत्र—(३)

पूज्य काकाजी,

'माहेश्वरी' के पिछले दो अंकोंमें बहन रुक्मिणीदेवीजी एवं बंसीलालजी बिड़लाके सम्बन्धपर सम्पादकीय स्तम्भमें जो लेख लिखे गये हैं और इस काण्डपर एरण्डोल आदि स्थानोंकी पंचायतोंने जो कार्यवाही की है उस सबको पढ़कर मुझे एक ताजी घटना स्मरण हो आयी है। इस घटनाकी स्मृति और इस विधवा विवाहके काण्डने मेरे मनमें जो विचार पैदा किये हैं उन्हें ही मैं आज आपकी सेवामें लिख रही हूं। यह ऐसा विषय है जिसपर प्रकट रूपसे हम नारियां न तो आपसमें विचार विनिमय ही कर सकती हैं और न अपने विचार लिख सकती हैं। नारी समाजके सम्बन्धमें उत्पन्न होनेवाले प्रश्नों पर हम स्त्रियों का सोचने का स्वभाव ही नहीं। सोचें भी कैसे? न तो हममें पर्याप्त शिक्षा-प्रसार हो है और न कभी घरोंमें सामाजिक विषयोंपर सम्मिलित चर्चा ही होती है। जो विचार अत्यन्त विकट रूपसे हमारे सामने आते हैं उनपर हम इतनी उदासीन हैं कि हमारे मनमें तनिक भी कम्पन या आन्दोलन नहीं होता। ऐसी है हमारी नारी जातिकी दशा!

जिस घटनाकी स्मृति मनमें जाग उठी है, वह अभी हालकी ही घटना है। अपनी सखी रुक्मिणीके विवाहमें म गयी थी। अपने समाजकी वहां काफ़ी अच्छी संख्या है। विवाहमें उसके नाते रिश्तेके भी बहुतसे लोग आये थे।... से उसकी बूढ़ी बूआ अपने लड़के-बालोंके साथ आयी थीं— उनके साथ उनकी दो छोटी-छोटी पोतियां थीं। सिन होगा यही चौदह और बारह बरस। दोनोंका विवाह छोटी आयुमें कर दिया गया था। आप जानते ही हैं कि हमारे समाजमें बड़े घरोंमें छोटी उम्रमें विवाह कर देना बड़प्पनका एक लक्षण समझा जाता है। बालविवाहको रोकनेके कानून यद्यपि बन गये हैं पर ये लोग रियासतके रहनेवाले थे। वहां ऐसा कोई कानून भी नहीं जो उन्हें रोक सके इसलिए ऐसे विवाहमें बाधा होती भी कैसे? दुर्दैवने इन बहनोंका विवाहके थोड़े ही दिन बाद सौभाग्यका सिन्दूर छीन लिया। इन अबोध बच्चियोंने दैवकी इस हठात् आयी विपत्तिको कुछ भी नहीं समझा क्योंकि उन्होंने विवाहको गुड्डे-गुड्डीके विवाहसे अधिक कुछ नहीं समझा था। इन बहनों की वेश भूषा और पहरावमें केवल इतना ही फर्क कर दिया गया था कि वे मांगमें सिन्दूर या कुंकुम नहीं भर सकती थीं और हाथमें सुहाग की चूड़ियां नहीं पहन सकती थीं। बहन रुक्मिणीके विवाहमें वे और सब तरहसे बेरोक-टोक आ-जा और उठ-बैठ सकती थीं किन्तु किसी भी मांगलिक कार्यमें उनका सहयोग नहीं लिया जाता था। और इन्हीं दिनों एक और भी घटना ठीक रुक्मिणी बहनके घरके नज़दीक घटी जिसने मेरी आंखोंके सामने पुरुषोंके अन्यायका घोरतम रूप खड़ा कर दिया। पेंतीस-छत्तीस बरसके एक अधेड़ धनी सज्जनकी दूसरी पत्नी प्रसवकालमें कुछ दिन पहले बीमारीसे चल बसी। अभी उनका परित्यक्त शव एकान्त नीरव स्मशानमें धू-धू करके जल ही रहा था, लोग उनकी दाहक्रिया सम्पन्न करके लौटे ही थे कि रुक्मिणीबहनके घरके पास ही एक गरीब सज्जनकी तेरह-चौदह साल की कन्याके साथ उनके विवाह की चर्चा चलने लगी। रुक्मिणी की दादी कहती थीं कि और-और गांवोंसे भी उनके लिए कन्याओंके सम्बन्ध आये पर बेचारे उन गरीब पड़ोसी सज्जनकी गरीबी उन्हें और उनकी कन्याको ले डूबी। उनके शुभ चिन्तकोंने कन्याको पार लगानेके इस सुअवसरका लाभ उठाने की सलाहें दीं और बेचारे गरीबने चुपचाप यह सम्बन्ध स्वीकार कर लिया। आपको विश्वास तो नहीं होता होगा। क्यों न काकाजी? आप हैं सुधारक, सुधारकी बातें करते हैं, उसीकी चर्चा करते हैं पर अभागे समाजमें और भी लोग हैं जिन्होंने अपने आप को सुधारकी हवासे बचानेके लिए बन्द कोठरीमें रखा हुआ है। इस विचित्र घटना को देख कर समाज की दयनीय दशापर मुझे रोना आता है। बेचारी वृद्धा की पोतियां असमयमें ही वैधव्यका पहाड़ उठाने को समाजद्वारा विवश कर दी गयी हैं। उनके दुःखको अनुभव करने या सोचनेकी किसी को फुरसत ही नहीं और इधर इन धनी-सज्जन का सम्बन्ध करनेके लिए कितनी दौड़-धूप हो रही है। काकाजी, ऐसी विषमतापर क्या कभी किसी का ध्यान ही नहीं जाता? उनकी नज़रोंमें स्त्री का कोई मूल्य नहीं। जैसे बाज़ारसे काम पड़नेपर कोई चीज खरीद ली जाती है और काम हो जानेपर निकम्मी समझकर फेंक दी जाती है, वैसे ही नारी भी बाज़ारकी वस्तु की तरह ही रखी जाती है। क्या सचमुच हम स्त्रियों का इससे अधिक कोई यथार्थ मूल्य नहीं? आप सुधारक लोग इस संबंधमें कोई अधिक उद्योग क्यों नहीं करते? क्या अब भी आपको महसूस नहीं होता? क्या आप चाहते हैं कि हम बहनें मिलकर सुधारक पुरुषों की सेवामें उपस्थित होकर अनुनय विनय करें और तब आप लोग कोई कदम उठानेका ख्याल करें? 'माहेश्वरी' में समाज की दुर्दशाकी बातें पढ़-पढ़कर कितनी अशान्ति मनमें होती है। कितना विद्रोह उसके भीतर संचित हो गया है? इतना लिखनेसे ही आप बहुत समझ सकेंगे काकाजी। अधिक क्या लिखूं?

आपकी

सुनन्दा

चिरंजीव सुनन्दा,

तुम्हारा पत्र मिला। 'माहेश्वरी' के लेखों और संवादोंको पढ़कर मेरे मनमें भी कितने-कितने विचार उठे हैं, तुम्हें कैसे बताऊं? तुमने जो घटनाएं लिखी हैं, समाजमें वही घटनाएँ नहीं हैं। यहां तो आये दिन इस ढंगकी घटनाएं होती रहती हैं। इस तरहके समाचार थोड़े-बहुत हेरफेरसे प्रायः सुननेमें आते रहते हैं। किन्तु हमारा रक्त आज इतना ठण्डा हो गया है और हृदय ऐसा पाषाण हो गया है कि उसपर इनका कोई असर ही नहीं होता। हमारे संस्कार ही ऐसे बन गये हैं कि बहनोंके दर्दका हम कुछ मूल्य नहीं समझते, मानों दर्द और व्यथाको अनुभव करनेवाला हृदय उनके है ही नहीं। कवि कालिदासने कहा है "महदपि परदुःखं शीतलं सम्यगाहुः" दूसरेके महान् दुःखोंको भी लोग शीतल अनुभव करते हैं। अपने दुःखोंके आगे दूसरोंके दुःखोंको हम नाचीज़ समझते हैं। तुमने जिस घटनाका वर्णन किया है उससे भी कहीं अधिक भीषण घटनाएं हमारे समाजमें होती हैं जिन्हें सुनकर एड़ीसे चोटी तक कांटे उठ आयें फिर भी समाजने उनके लिए क्या किया? पुरुष समाज घोर निद्रामें पड़ा है उसे जागरित करनेकी आवश्यकता है। उस मोहनिद्रासे सचेत होकर ही वह नारी समाजकी करुण दशाको समझ सकता है।

दो-एक घटनाएं इस प्रसंगमें मैं तुम्हें बता दूं, जिनसे तुम्हें मालूम होगा कि समाजकी जिस दुरवस्थाको तुमने देखा है वह कुछ भी नहीं। नारियां तो उससे भी कहीं अपमानित, लांछित, पददलित और ठुकराई हुई हैं। एक सज्जनकी बात आज मुझे याद आ रही है। उन्होंने संसारका बहुत सुख देखा है, उनके बड़ी-बड़ी उम्रोंके कितने ही लड़के बाले हैं जिनके विवाह तक हो चुके हैं और चन्द सालोंमें वे अच्छे कमाऊ और कुटुंबका भार वहन करनेवाले बन जायंगे। उनकी पत्नीकी बुढापेमें मृत्यु हो गयी और मृत्युके थोड़े दिनों बाद ही अपनी पत्नीके वियोग दुःखको सांसारिक सुखमें परिवर्तित करनेके लिए उन्होंने अपनी पुत्र वधुओं के समान वय की एक छोटी कन्याके साथ विवाह कर लिया है। पर उन्हींकी बारह वर्ष की लड़कीके सिर विवाह के चार महीने बाद ही दौर्भाग्य से वैधव्यका अनभ्र वज्रपात हो गया तो वे अपनी पहली मनःस्थिति भूल गये। उनके मनमें तनिक भी विचार नहीं आया कि इस असमय विधवा अभागी कन्याके वैधव्यके दुःखभारको उठा देना चाहिए। उन्होंने यह भी नहीं सोचा कि उनकी कन्या जिसने अभी यौवनमें पांव भी नहीं रखा, इस दुःखको आजीवन कैसे सहन कर सकेगी? स्वयं बुढापेमें भी उनकी तृष्णा नहीं मिटी, विधुरत्वका भार उन्हें असह्य मालूम हुआ तब जिस कन्याने यौवन का तनिक भी सुखभोग नहीं किया वह आजीवन निरानंद वैधव्यव्रतका पालन क्यों कर सकेगी?

दूसरी एक और घटना भी ऐसी ही है। अपने ही समाजकी एक कन्याका विवाह हुए डेढ़ मास भी व्यतीत नहीं हुआ और इसी बीच सोहागका सिन्दूर पोंछ देनेका दुःसमय उस बेचारी पर आ पड़ा। सब लोगोंमें हाहाकार मच गया किन्तु जब उन लोगोंसे कहा गया कि उस बच्चीके जीवनके यौवन अध्यायका जो पृष्ठ अधूरा रह गया है और विधाताकी कोपदृष्टिसे जिसका सूत्र बीचमें ही टूट गया है उसे फिर जोड़ कर आरम्भ कर दिया जाय तो "अशुभ-अशुभ" कह कर उन्होंने कानोंपर हाथ रख लिया। ऐसी कितनी ही घटनाएं हैं, यदि उनका वर्णन किया जाय तो सहस्रों ग्रंथोंमें भी वह अधूरा ही रह जायगा।

सुनन्दा, इस विषयमें तुमने आज सोचना शुरू किया है, लेकिन तुम जानती नहीं कि देशके हरेक समाजमें इस विषयको लेकर वर्षों पहले आन्दोलन शुरू हो चुका है। बंगालके सुप्रसिद्ध समाजसुधारक ईश्वरचंद्र विद्यासागरने विधवाओं पर होनेवाले इस सामाजिक अत्याचारके विरुद्ध देशभरमें तुमुल आन्दोलन किया और सरकारको विधवाविवाहका कानून बनानेके लिए मजबूर किया। स्वामी दयानंदने भी इस विषयको समाजमें बहुत बल दिया और जिन समाजोंमें शिक्षाका काफ़ी प्रसार है वहां विधवा विवाह को हीन दृष्टिसे नहीं देखा जाता किन्तु हमारे इस मारवाड़ी समाजकी तो बात ही निराली है। यह समाज, दुनियांकी बात तो जाने दो, अपने ही देशके अन्य समाजोंसे पचास वर्ष पीछे रहता है। बंगाल, महाराष्ट्र आदिके उन्नत और प्रगतिशील समाजोंमें जो बातें आजसे पचास साल पहले सोची जाती थीं, इसमें वे अब सोची जाने लगी हैं। मारवाड़ी समाजमें धन बहुत है और उसके साथ ही अन्ध विश्वास भी बहुत है। उस पर इन दोनोंके अपूर्व मेलसे लाभ उठानेके लिए अनेक स्वार्थी पण्डित भी इस समाजको मिल गये हैं। इनकी असीम दयासे धर्मका भयावह रूप दिखाकर हरेक वस्तुमें शास्त्रकी शरण लेनेका पाठ इन्हें पढ़ाया जाता है। और यदि शास्त्र ही उनके स्वार्थमें आ अटके तो उसे भी सुन्दर सुनहरी जिल्दें बांधकर और साफसुथरे कपड़ोंमें लपेट कर आलमारीमें रख दिया जाता है। हमारी मनोवृत्ति ही ऐसी बन गयी है कि किसी भी विषयपर स्वतन्त्र विचार करनेकी क्षमता हममें नहीं रही। आये दिन पत्रोंमें शास्त्रवचनोंको

(शेष पृष्ठ ७ के कालम १ पर)

देशी राज्य शासन

★

श्री भगवानदासजी केला

भारतवर्षकी देशी रियासतोंकी जनसंख्या सवा नौ करोड़से भी अधिक है। जब कि हम भारतवर्षके लिए स्वराज्य और स्वाधीनताका आन्दोलन कर रहे हैं, और यहांके शासन विधानकी सूक्ष्म छानबीन और अध्यापन करनेमें लगे हैं, देशी रियासतोंके प्रश्नकी अवहेलना नहीं की जा सकती। यद्यपि गत वर्षोंमें देशी रियासतोंके विषयमें अपेक्षाकृत अधिक चर्चा हुई है, अभी तक भी यहांकी राष्ट्र-भाषामें कोई ऐसी पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई है, जिससे देशी राज्योंकी शासनपद्धति तथा राजनैतिक समस्याओंका साधारण ज्ञान हो जाय। यह कितने दुःखकी बात है।

बारह वर्ष हो गये। सन् १९२९ में मैंने इस विषयकी पुस्तक लिखनेका विचार किया था। इसके लिए कई मित्रोंसे पत्र-व्यवहार किया, कुछ राज्योंकी वार्षिक रिपोर्टें भी मंगायीं। परन्तु थोड़ासा कार्य करनेके बाद सोचा कि नया शासन विधान बननेवाला है, देशी राज्यों सम्बन्धी कुछ नयी सामग्री तैयार होनेवाली है, उसकी प्रतिक्षा की जाय। निदान, कार्य स्थगित हो गया। इसबीचमें कई सज्जनोंसे इस पुस्तकके लिखे जानेके सम्बन्धमें विचार हुआ परन्तु, अफसोस, किसीके द्वारा यह कार्य पार नहीं पड़ा। अन्ततः अब मैंने पुनः इस कार्यको हाथमें लिया है। विषय जितना महान् है, मेरे साधन उतने ही कम है। फिर भी प्रबल प्रेरणावश इसका दुस्साहस कर रहा हूं, आशा है देशी राज्योंके निवासी ही नहीं, उनसे सहानुभूति रखनेवाले अन्य सज्जनभी इसकी सामग्री जुटानेमें मुझे यथेष्ट सहयोग प्रदान करेंगे।

पुस्तकका प्रथम भाग लिखा जा चुका है। इसमें निम्नलिखित अध्याय हैं।

१. विषय प्रदेश, २. ऐतिहासिक चर्चा (क) अंगरेजोंके आनेसे पूर्व, ३. देशी राज्य और कम्पनी, ४. सन् १८५७ के बाद, ५. देशी राज्योंका वर्गीकरण ६. सर्वोच्च सत्ता और देशी राज्य ७. राजनैत्तिक विभाग ८. राजा, ९ राजकर्मचारी १०. व्यवस्थापक सभाएं, ११. न्यायालय १२. जागीरदार, १३ नरेन्द्रमंडल, १४ कांग्रेस और देशी राज्य प्रजापरिषद, १५. देशी राज्योंका सुधार, १६. देशी नरेशोंका भविष्य, १७ ब्रिटिश सरकारका उत्तरदायित्व, १८. देशी राज्य और संघ शासन।

दूसरा भाग लिखा जा रहा है। इसके विषय घटबढ सकते हैं। अभी हालमें इतने विषय सामने हैंः—

१ मैसूर २ बड़ौदा ३ कोचीन ४ ट्रावंकोर
५ औंध ६ ग्वालियर ७ इन्दौर ८ भावनगर
९ कोल्हापुर १० ओरछा ११ काश्मीर १२ हैदराबाद
१३ उदयपुर १४ जयपुर १५ भरतपुर १६ कोटा
१७ बीकानेर १८ अलवर १९ जोधपुर २० सिक्कम
२१ पटियाला २२ भोपाल २३ रींवा २४ जैसलमेर
२५ बनारस २६ भूटान २७ टोंक २८ सिरोही
२९ उड़ीसाके राज्य ३० काठियावाड़के राज्य
३१ सीमा प्रान्तके राज्य ३२ सिंहावलोकन

तीसरे भागमें समस्त (५८४) रियासतोंके नाम, जन संख्या, क्षेत्रफल, आय आदि आवश्यक ज्ञातव्य बातोंका समावेश होगा।

जो सज्जन किसी भी राज्यके सम्बन्धमें, अथवा किसी राज्य समूह सम्बन्धी व्यापक प्रश्न पर प्रकाश डालेंगे, या कोई सुधार सुझावेंगे उनका मैं अत्यन्त कृतज्ञ हूँगा। पिछले दिनों कुछ मित्रोंने हैदराबाद, गवालियर, अलवर, भरतपुर, सिरोही और कोटासम्बन्धी कुछ सामग्री भेजने की कृपा की है। अभी अन्य राज्योंके विषय की सामग्री आनी शेष है। यह बहुत जल्दी आजानी चाहिए। मुझे प्रत्येक राज्यके, विशेषतया निम्नलिखित विषयोंका ज्ञान प्राप्त करना हैः—

(क) शासक वर्ग, और शासक विभाग
(ख) व्यवस्था या कानून निर्माण
(ग) न्याय प्रणाली
(घ) स्थानीय स्वराज्य
(च) शिक्षा प्रचार
(छ) नागरिक अधिकार
(ज) शासन सुधार योजना
(झ) राज्य की विशेष समस्याएँ, तथा आवश्यकताएँ।
(ट) प्रजामंडल तथा लोकपरिषद और राजनैतिक जागृति।

मैं इन दिनों प्रयाग ठहरा हुआ हूं। पत्र-व्यवहारका पता यह हैः—भारतीय ग्रन्थमाला, दारागंज (प्रयाग)।

भारतीय ग्रन्थमाला, वृन्दावन

(पृष्ठ ६ का शेषांश)

लेकर ही माथा पच्ची होती है कि अमुक बात शास्त्रमें लिखी है या नहीं। विधवा विवाहकी ही बात लो। जो उसके प्रतिपक्षी हैं वे शास्त्रवचनोंसे यह स्थापित करनेकी कोशिश करते हैं कि विधवा विवाह शास्त्रोंमें निषिद्ध माना गया है और उसके पक्षपाती लोग उसके ठीक होनेके प्रमाण ढूंढनेमें व्यस्त रहते हैं। लेकिन इस पक्ष और प्रतिपक्षके विवादमें पड़नेकी आवश्यकता ही क्यों है? मैं सोचता हूं कि जैसे विवाह समाजमें रोजमर्राकी सामान्य चीज़ है वैसे ही इसे भी क्यों न बना दिया गया। कोई कभी यह नहीं सोचता कि विवाहबद्ध होनेवाले युवक-युवती विवाहके महत्वको जानते भी हैं या नहीं, उनकी प्रकृतियां, स्वभाव, विचार, वय और स्वास्थ्य आदि परस्पर अनुकूल हैं या नहीं। माता-पिताने पसन्द कर लिया, ब्राह्मणने आकर शास्त्रोंके चार वचन पढ़ दिये, घीका अग्निमें अर्घ्य दे दिया और दो एक समिधाएं कुण्डमें डाल दी गयीं और विवाहको कानूनी रूप मिल गया। जो हाल कुमारोंके विवाहका है वही विधुरोंके विवाहका भी है। कोई विधुर यदि विवाहके लिए तय्यार हो जाता है, फिर उसकी उमर चाहे जितनी हो और चाहे जितनी बार वह विवाह कर चुका हो, तो भी उसके लिए समाजमें कोई हलचल नहीं होती। कोई उनके विवाह सम्बन्धी प्राथमिक अधिकारोंपर प्रहार करना नहीं चाहता। और वृद्धविवाह, बाल विवाह या अनमेल विवाहका अगर विरोध भी किया जाता है तो उसका यह अभिप्राय नहीं कि यह विवाह करनेका उन्हें अधिकार नहीं, बाल्कि वह इस लिए किया जाता है कि उस प्रकारके विवाहोंसे जो सन्तान उत्पन्न की जाती है वह अत्यन्त दुर्बल होती है। इससे समाज दुर्बल और कमज़ोर होता है। इसी दृष्टिसे इसका विरोध किया जाता है। किन्तु यदि कोई विधवा बहन पुनः विवाह कर ले तो समाजमें एक भीषण बवण्डर उठ खड़ा होता है। ऐसा क्यों? समाजकी नारियोंके प्राथमिक हकोंपर कुठाराघात किया जाता है। जितना अधिकार अपना विवाह करनेके लिए किसी पुरुषको है उतना ही स्त्री को भी है। यदि हम प्राथमिक अधिकारकी स्वाधीनताकी इस छोटी-सी बातको भी स्वीकार कर लें तो इतने लम्बे वाद-विवादमें पड़नेकी ज़रूरत ही नहीं रहेगी। पर पुरुष समाज यह कैसे करे? उसके संस्कार ही ऐसे बन गये हैं कि वह स्त्रियोंको पति-परायणा, पतिके प्रति भक्त और अनुरक्त, और पति-सेविका देखना चाहता है। शास्त्र भी उसके ही पक्षमें गवाही दे रहे हैं। किन्तु इसके मुकाबलेमें यदि हमसे पत्नीव्रत और पत्नीके प्रति अनुरक्त रहनेकी बात कही जाय तो हम उसे अपने प्राथमिक अधिकारों और स्वाधीनतापर असह्य कुठाराघात समझते हैं। बड़े आदर्शवादी समझे जानेवाले पुरुष भी इस पत्नीव्रतके आदर्शको सहन नहीं कर सकते। तब नारी समाजका उद्धार क्यों कर हो सकता है? रघुवंशमें महाकवि कालिदासने स्त्रियोंकी महत्ता बतलानेके लिए लक्ष्मणके द्वारा सीताको बनवासमें छोड़ आनेपर सीताके मुखसे यही कहलाया है।

> वाच्यस्त्वया मद्वचनात्स राजा,
> बन्हौ विशुद्धामपि यत्समक्षम्।
> मां लोकवादश्रवणादहासीत्,
> श्रुतस्य किं तत्सदृशं कुलस्य॥
> कल्याणबुद्धेरथवा तवायं,
> न कामचारो मयि शंकनीयः।
> ममैव जन्मान्तर पातकानां,
> विपाकविस्फूर्जथुरप्रसह्यः॥

अथात् हे लक्ष्मण, मेरी तरफसे तुम उस राजा रामचंद्रसे कहना कि अग्निपरीक्षाके द्वारा सब लोगोंके सामने पवित्र सिद्ध हो जाने पर भी केवल लोगोंके कहने से जो तुमने मेरा परित्याग कर दिया है क्या तुम्हारे जैसे प्रख्यात कुलके लिए वह उचित है? अथवा जाने दो, तुम्हारी बुद्धि तो प्रजाके कल्याणमें रत है, मेरे प्रति तुम्हारी स्वेच्छाचारिताकी मुझे आशंका भी नहीं करनी चाहिए, शायद मेरे ही पूर्वजन्मके पापोंके फलका यह असह्य वज्रपात है।

हमारे प्राचीन ग्रन्थकारों और कवियोंका नारीको हठात् अत्याचार सहनेका उपदेश देनेका यह अन्याय और छल शुरूसे ही चल रहा है। जान पड़ता है कवि और धर्मोपदेष्टा अन्धे थे। उन्होंने नारीके भीतर भी एक हृदय है इस सत्यको कभी नहीं पहचाना। शुरूसे ही जितने नियम-व्रत और प्रायश्चित्त हैं वे सब नारियों को ही कल्याण धर्ममें प्रेरित करनेके लिए बनाने गये हैं। यह क्या पुरुषोंका दुर्बलके प्रति अन्याय नहीं है?

"माहेश्वरी" में एरण्डोलके जिस पुनर्विवाहकी खबर छपी है उस विवाहके बाद एरण्डोलमें जो पंचायत बैठी उसने इस विवाहकी निन्दा करनेके लिए पहले तो यह कहा कि बहन रुक्मिणीबाई पराई जातिकी स्त्री हैं। वह जानते हैं कि बहन कभी पंचोंके सम्मुख आकर उनकी निर्भित्सना नहीं कर सकतीं इस लिए उनके विरुद्ध चाहे जो आरोप लगाया जाय, चाहे जो अपवाद उनपर लगाया जाय, वे धरित्रीकी तरह सब आरोपोंको अपने ऊपर धारण कर लेती हैं। उनकी आत्मा सच्चे अर्थोंमें 'अच्छेद्य और अदाह्य' है। उसपर वाक्प्रहारका कोई प्रभाव नहीं होता।

स्त्रियोंके प्रश्नोंपर हम अपनेको सुधारक कहनेवालोंकी उदासीनता पर तुमने अपने पत्रके अन्तमें रोष प्रकट किया

(शेष पृष्ठ २८ के कालम ३ पर)

विवाह —

संगियोंके चुनाव की दृष्टि से

यह मानी हुई बात है कि कुछ युगल, चाहे उनकी संख्या कम ही क्यों न हो, एक दूसरेके लिए विशेष हेतुसे पैदा हुए होते हैं। बौद्धिक प्रक्रियाओंके द्वारा इस चीज़ का कारण नहीं ढूंढ़ा जा सकता। क्या यह बात प्लेटो की 'सिम्पोज़िअम' में बतलाई गई शिक्षा का समर्थन करती है कि एक मूलतत्वमें से ही द्वित्वका आविर्भाव होता है? या क्या परमात्मा की सत्ता ही एक ही समयमें संसार के भीतर दो नयी आत्माओंको एक दूसरेके लिये भेजती है? क्या पुनर्जीवन का सिद्धान्त सत्य है? या जिस चीज़ को हम सर्वदा शक्ति के नामसे पुकारते हैं, क्या वह अन्ध अकस्मात् तो नहीं है? इन प्रश्नों का जवाब कोई नहीं दे सकता और हरेक व्यक्ति अपने अपने ढंगसे इस बात में विश्वास करता है। इस रहस्य को समझना हमारी बुद्धिशक्ति के बाहर की बात है। परिणामतः ऐसे गूढ़ संबंधोंके सवाल हम यहां नहीं छेड़ना चाहते।

लेकिन एक चमत्कार भी उसके नियमों की मर्यादा में ही पैदा हो सकता है। ठीक उसी प्रकार जैसे कि ईसा, परमात्मा विषयक अलौकिक ज्ञानको मानव जीवन में सतत घटनेवाली छोटी-मोटी कथा कहानियोंके रूपमें प्रगट करनेको समर्थ हुए थे, वैसे ही अत्यंत गहन और गूढ़ ज्ञान की सतह हमारी सहजबुद्धि को भी सर्वत्र छूती रहती है। जहां तक विवाहका ताल्लुक है, इसका अभिप्राय यह है कि यद्यपि विशेष परिस्थिति के खास खास स्वरूपका उसकी हरेक बाबतों को ध्यानमें रखकर स्पष्टीकरण नहीं हो सकता फिर भी कुछ ऐसे सार्वभौमिक नियम हैं, जिनके भीतर इस विशेष पहलूका स्पष्टीकरण होता है।

विभिन्न लिंगके दो व्यक्तियोंके बीच आकर्षण होता है, इससे यह फलित नहीं होता कि उन दोनोंको विवाह कर लेना चाहिए। मानव-जीव एक बड़ा पेचीदा प्राणी है। और दूसरे अनेक बंधनोंमें विवाहके बंधनको संतोषपूर्वक निभाना अत्यधिक कठिन कार्य है, तथा हमारे साधारण अनुभवोंसे-दुर्भाग्यवश-यह बात सिद्ध हो चुकी है कि सुखी विवाहके लिये सिर्फ मोहाकर्षण सबसे बुरी चीज़ है। इसका एकमात्र कारण यह नहीं है कि शारीरिक आकर्षण आत्माकी भूखको पूर्णतया संतुष्ट करनेमें असफल रहता है, परंतु प्रधान कारण यह है कि प्रेममें पड़नेवाले अकसर असली प्रेम और मोहके बीच भेद नहीं समझते। हरेक यह जानता है कि प्रत्येक नये जन्ममें कोई भी व्यक्ति अपनी ही जैसी प्रकृति वाले व्यक्तिसे आकृष्ट होता है, बशर्ते कि उसके दिलमें कोई खास व्यक्ति पुरी तरह ही न समा गया हो। मनोविश्लेषण विज्ञान हमें बताता है कि पुरुषोंमें साधारणतः दो किस्मके लोग होते हैं, मातृप्रकृति वाले (जिनका आधार या तो उनकी अपनी माताएं होती हैं या उनकी कल्पनाकी नारी) और दूसरे सख्य प्रकृतिवाले, जिनका मूल बहन है। पुरुषकी ये दो प्रकृतियां-मातृप्रकृति और सख्य प्रकृति—उसी रूपमें स्त्रियोंमें भी पायी जाती हैं। इनमेंसे सख्य प्रकृतिका मूर्तरूप हमें वेश्यावृत्तिमें दिखाई देता है।

सामान्य तौर पर यह कहा जा सकता है कि विवाहके लिये मातृप्रकृति ही अनुकूल है। क्योंकि उसकी मूल आधारशिला मनुष्यके आदि स्वभावमें निहित है, और उससे एक प्रकारकी जिम्मेवारीका सूचन होता है, अतः अपने चरित्रमें वह गंभीर है। सख्य प्रकृतिवाले व्यक्तियोंमें, मनुष्य साहस, उत्तेजन और खेलको ढूंढ़ता है। ठीक यही बात स्त्रियोंको भी लागू होती है। अपनी मूल प्रकृतिसे ही ये दो लक्षणवाले परस्पर असंगत हैं। फलस्वरूप, इन दोनोंके बीच किसी भी तरहके समझौते की कोशिश करना भी भूल होगी। हरेक आदमीको अपने लिये यह समझ लेना चाहिए कि वह किस प्रकार और किस हद तक अपने प्रेमी स्वभावकी दो पूरक बाजुओंको परिपूर्ण करना चाहता है। एक बात जो सर्वथा स्पष्ट-सी है वह यह कि सख्यप्रकृतिवाली व्यक्तिको कभी पत्नी नहीं बनना चाहिए। स्त्री या पुरुष को अपने साथीसे (Comrade) विवाह करना, एक दोषपूर्ण नीति है। और यहीं पर हमें संगियोंके सही चुनावके बारेमें स्पष्ट उत्तर मिलता है। विवाह, अगर उसका वास्तविक अर्थ ग्रहण किया जाय, तभी संभव हो सकता है, जब कि आकर्षण 'साथीपन' के उद्देश्य के अलावा किसी अन्य उद्देश्य पर निर्भर करता हो। यह संभव है कि मैत्री का संबंध दूसरे सब संबंधोंसे अधिक घनिष्ट सिद्ध हो। और यह भी हो सकता है कि दो आत्माएं, जो हमें एक दूसरे के ही लिये निर्मित हुई प्रतीत होती हैं विवाह की इच्छा न करें। आदमी जितना अधिक वैयक्तिक होता है, अवैयक्तिक बंधनों से उतनाही कम बांधा जाता है।......यह बात चाहे जैसी भी हो लेकिन हमारे पुरखाओंने यह बात बतलाकर निश्चित् ही बुद्धिमानी प्रगट की थी कि विवाह वैयक्तिक स्वभावसे स्वतंत्र रहना चाहिए। इसलिये नहीं कि अपने आपमें वह वांछनीय नहीं, इसके विपरीत, वे चाहते थे कि मोह विवाहमें निर्णायक तत्व नहीं होना चाहिए, क्योंकि अधिकांश मनुष्योंके लिए मोह प्रत्यक्ष रूपमें "सख्य प्रधान" साथियोंसे संबंधित रहेगा। अधिकांश स्त्रियोंमें मातृत्वकी भावना इतनी अधिक विकसित होती है कि वे योग्य पुरुषके साथ प्रेम करने लग जाती हैं। हर हालतमें वे अपनी मित्रतामें अकसर बहुत कम दुःख पाती हैं, क्योंकि उनकी भावनाएं कोमलता लिये होती हैं। परंतु पुरुष उस हालतमें भी जब कि स्त्री का उसपर पूर्ण अधिकार होता है, उसे प्रसन्न करने की कोशिश करता रहता है, इस लिये वैयक्तिक आकर्षणको निर्णायक तत्व बनानेसे रोकने का विचार, एक साधारण चेतावनी के रूपमें मौलिक रूपसे बिलकुल ठीक है। इसके अलावा इस बात का आधुनिक अनुभवोंसे भी समर्थन होता है। साथियों के बीच विवाह बहुत ही कम सफल साबित होते हैं। ऐसी वारदातोंमें जहां कि आकर्षण विवाहमें परिणत हो जाता है—पुरुष की दृष्टिसे स्त्रीमें प्रोत्साहन और उत्तेजन देनेके गुण, और उसके प्रति स्त्री की संपूर्ण वैयक्तिक सहानुभूति--उसका विच्छेद नहीं रोका जा सकता। परिणामतः ऐसे अधिकांश विवाह आवेगपूर्ण होते हैं और अकसर तलाकमें परिणत हो जाते हैं। क्योंकि विवाह संबंध प्रधानतः अविच्छेद्य होते हैं, गंभीर क्षति और अनेक हानिकर परिणाम पैदा करते हैं अगर संबंधित व्यक्ति बिलकुल ही छिछले विचारोंके नहीं हैं।

फल स्वरूप वे प्रेमी युगल जो मित्रता की दृष्टिसे वैवाहिक बंधनमें जुड़ते हैं, जीवन संगीके समुचित चुनावके बारेमें गल्ती करते हैं। यदि यह विचार चर्चास्पद प्रतीत होता है, तो इसका कारण यही है कि हम इस बातको पहलेसे ही मानकर आगे चलते हैं कि हरेक व्यक्ति अपने से विजातीय लिंगके केवल एक ही व्यक्तिमें संपूर्ण संतोष पा सकता है। इस समय यद्यपि भूलभरा यह विचार निश्चित् रूपसे दूर हो रहा है। व्यक्तिके विकासक्रमकी उन्नत कक्षा पर खड़ी हुई मानव जाति फिरसे अपने चरमोद्देश्य को रूढ़ि युक्त विवाहमें ढूंढ़ रही है। रूढ़ि या प्रथा शब्द, उसके पीछे जुड़े हुए ऐतिहासिक या संकुचित अर्थके लिये यहां प्रयुक्त नहीं किया गया। रूढ़ि शब्दका उपयोग मैं एक खास 'व्यवस्था' के अर्थमें कर रहा हूं, जिसके मुताबिक विवाहको भी हमें एक प्रकारकी व्यवस्था समझना चाहिए, ठीक उसी प्रकार जैसे कि आश्रम विषयक व्यवहारोंमें ब्रह्मचर्यकी व्यवस्था है। इस व्यवस्थाको हमें सिर्फ उसीके नीतिसूत्रोंके द्वारा मापना चाहिए। इस नैतिक अनुशासनमें, प्राकृतिक व सांस्कृतिक दोनों ही क्षेत्रोंकी खास व्यवस्थाको निभाना शामिल है। जहां कहीं भी आत्म-चेतना जाग्रत है वहां इससे वैयक्तिक इच्छाका विरोध भी सूचित नहीं होता, क्योंकि इस सार्वभौमिक व्यवस्थामें हरेक व्यक्तिको एक निश्चित् स्थान दिया गया है, जिसे कि अगर उसे जीवनमें अपने वैयक्तिक उद्देश्यको चरितार्थ करना है, तो समुचित रूपसे परिपूर्ण करना पड़ेगा। सामान्य तौर पर प्रश्न होता है कि विवाह किसके साथ करना चाहिए? इस प्रश्नका जवाब वैज्ञानिक नपेतुले ढंगमें नहीं दिया जा सकता, क्योंकि हरेक चेतन पदार्थ अपनी रचनामें इतना अपूर्व और अद्वितीय है कि जब कभी किसी खास केस में हम सामान्यीकरणका प्रयोग करते हैं, उस समय उसकी विशेष रचनाके बारेमें भी प्रकाश डालनेके लिये विस्तृत व्याख्या की आवश्यकता रहती है। सामान्य नियमोंका ज्ञान अनुकूल जीवन संगीके चुनाव करनेमें इस प्रकार हमें कोई विशेष सुहूलियत नहीं देता। इसके अलावा इस प्रश्नका (संगीका चुनाव) अत्यंत पेचीदा स्वरूप होनेसे हमारे लिये सामान्य कानून संगतताको ध्यानमें रखकर किसी भी प्रकारके नियमको बनाना भी सर्वथा असंभव है। धार्मिक दृष्टिसे अपवादके आधारपर नियम साबित हो सकता है, लेकिन असली व्यवहारिक जीवनमें बहुत बार अपवाद ही महत्वका बन जाता है। उदाहरणतः यह बात सामान्य तौर पर सच है कि एक 'हिस्टरिकल' व्यक्ति विवाहके योग्य नहीं, फिर भी कई प्रसंगोंमें देखा गया है कि विवाहके द्वारा यह रोग वास्तवमें दूर हो जाता है। इसके अलावा यह बात न्याय्य आधारपर मान ली गई है कि निकट संबंधियोंमें किया गया विवाह हानिकर्ता है। लेकिन कई बार उसके द्वारा बहुत अच्छे परिणाम पाये जाते हैं। इससे हमें इन बातोंका खुलासा मिलता है कि मनुष्यमें निहित प्रतिप्राकृतिक (Preternatural) गुण किसलिये इसकी निकट संबंधियोंके साथ संभोग करनेकी आदि प्रवृत्ति पर आरोपित किये जाते हैं। मैं यहां पर फ्रेंकफर्ट ए. एम; एच. बिखोल्डकी "किसके साथ विवाह करना चाहिए" (Whom should one marry?) नामक किताबको सूचित करता हूं। इसमें इस विषयके अनेक विश्वासदायक विचारोंका निरूपण किया गया है और सारी ही किताब विस्तृत अनुभव और खोजका फल है। मैं पाठकोंसे इस किताबको पढ़नेकी

● काउन्ट हरमान कैसरलिंग ●

सिफारिश करता हूं, यद्यपि मेरा ख्याल है कि इसमेंसे क्रियात्मक मूल्य की बहुत बातें उन्हें नहीं मिल सकतीं। दरअसल देखा जाय तो सामान्य नियम एक अॅलजिब्राके फार्मुले व कानूनी किताबके एक पेरेग्राफके जितनेही उपयोगी हो सकते हैं, जिन्हें पढ़कर हम अपने वैयक्तिक फेक्टरोंमें उन बातोंको सही बिठा लेते हैं और इस प्रकार उनका एक निश्चित मूल्य ढूंढा जा सकता है। इसीलिये अगर हमें इस समस्याका संतोषजनक हल ढूंढना है, जीवनसंगीके समुचित चुनावके बारेमें विशेषीकरणके द्वारा प्रयुक्त किए गये फार्मूलेसे किसी दूसरे ही फार्मूलेसे काम लेना होगा। उसका सिर्फ उसके महत्व व आशय की दृष्टिसेही विचार करना होगा। केवल इसी तरह हम इस समस्या को उसमें से बिना विरोध खड़े किये नियमित बना सकते हैं। और ज्यों ही इस समस्या पर हम विशेषीकरण (Particulars) की दृष्टिसे सोचने लगते हैं, वह एकदम दो स्वतंत्र समस्याओं में विभक्त हो जाती है, जिन्हें सिर्फ अंशतः ही हम इकट्ठा कर सकते हैं:—उनमें से एक तो है दो साथियों के खुदके बीच जीवन संगी के चुनावकी समस्या, तथा दूसरी है संतानों की समस्या। यह बिलकुल साफ बात है कि ये दोनों समस्याएं अपने आप पृथक हैं तथा जहांतक बच्चोंका सवाल है, मांबाप केवल उनके लिए मध्यस्थ से हैं, उन्हें वे केवल जातीय विरासत की देन देते हैं। इसके सिवाय, यदि संतानको ही मुख्य समस्या मानलिया जाय तब वैयक्तिक सुख एक गौण प्रश्न बन जाता है। क्योंकि मातापिता का सुख वैवाहिक सुखसे सर्वथा भिन्न है। इस सुखमें एक बिलकुलही भिन्न और अवैयक्तिक भावनाओं की तृप्ति होती है। अंतमें, मातापितामें छिपी हुई वैयक्तिक असंगति संतानमें एक ऐसी आंतरिक संघर्षण की अवस्था पैदा कर सकती है, जो कि समस्त उत्पादन प्रवृत्तिके लिये एक आवश्यक शारीरिक शक्ति है। इसीलिये हम देखते हैं कि अधिकांश महापुरुष दुःखी या कमसे कम बेमेल विवाहोंसे ही पैदा हुए हैं। यहां तक कि प्रतिभासंपन्न युवक बहुत बार इसीलिये अच्छे नहीं बन पाते क्योंकि वे अपने प्रारंभिक दिनोंमें अत्यंत ज्यादा सुखी वातावरणमें पले हुए होते हैं। कठिनाइयों से टक्कर झेलने व उनपर विजय पानेके बजाय जो उनसे मुक्त होना सोचते हैं उनके दिलमें वैयक्तिक आकांक्षाएं नहीं पनपतीं। लेकिन, इन सबके बावजूद भी एक ऐसा दृष्टिकोण है, जिसके द्वारा हम संगियोंके समुचित चुनाव की इस समस्याको समग्र दृष्टिसे सोच सकते हैं, और वह यह है कि हम विवाहको दो विभागोंसे बनी हुई एक स्वतंत्र इकाईके रूपमें समझें। इस बाबतमें यह बात संतानके प्रश्नसे बहुत साम्य रखती है, जो कि एक द्वित्वकी संगति का ही परिणाम है।

यदि एक व्यक्ति दूसरे व्यक्तिमें प्रेम की भावनाएं उत्पन्न करता है, और जब कि मन तथा आत्माके प्रवर्तक कारण उसमें कार्य करते हैं, तब वह अपने अंतस्थलके ही वांछित और फलतः पूर्वसे ही सोचे हुए का प्रत्यक्ष मूर्त स्वरूप धारण करता है; यह बात बहुत कुछ ऐसी ही है जैसे कि कभी कभी दूसरे व्यक्तिके शब्दों द्वारा हमारा अभिप्रेत अर्थ, जिसे स्पष्ट करनेमें हम असमर्थ होते हैं, स्पष्ट हो जाता है। यह उन सब स्मृति-संबंधोंका मूल है, जिसके द्वारा लोग यह अनुभव करते हैं, कि मानो वे एक दूसरे को बहुत अर्से से जानते हैं, और सच्चे प्रेमी अक्सर इस चीज़ को अनुभव करते हैं। एक व्यक्ति दूसरे व्यक्तिमें, जिससे कि उसे प्रेम है, शीशे की नाईं अपनी ही आत्मा की प्रतिकृति देखता है। इस लिये इस बातमें कोई भी आश्चर्य नहीं, कि एक व्यक्तिको प्रथम दृष्टिमें ही देखकर हम यह कह दें कि उसका संबंध इससे होना चाहिये। यहां पर हमें सुखी विवाह के लिये बनाये गए समस्त नीति शासन की व साथ ही साथ अनेक प्रस्थापित नियमोंमें पाये जाने वाले विरोधों की व्याख्या मिलती है।

हरेक काल और हरेक देशमें विवाह प्रथा को नियमित करने के लिए कुछ नियम काम करते आये हैं। यह बात आस्ट्रेलिया के आदि युगीन आरण्यकोंसे लेकर आज के बड़े बड़े अमीर उमरावों के समुदायोंमें भी समानरूपसे पायी जाती है। ये नियम सर्वदा अनिवार्य साबित हुए हैं, क्योंकि हम देखते हैं कि बिना जबरदस्ती के कोई अपवाद रूप व्यक्ति ही सच्चे रास्ते को पसंद करता है। यहां पर हमारे सन्मुख प्रश्न उपस्थित होता है कि, कर्तव्यके सवाल की तरह हमारी आत्मा को कई चीज़ें साफ साफ क्यों नहीं नज़र आनी चाहिएं? इन सब नीति नियमोंका अंतिम उद्देश्य क्या है? प्राकृतिक और सांस्कृतिक व्यवस्थामें किसी विशेष स्थिति या स्टैण्डर्डको स्थिर और सर्वकालीन बना देना। यदि सामान्य नियमको व्यक्तिपर लागू किया जाय तो हम देखते हैं कि एक खास स्थितिको कायम रखनेका अभिप्राय एक स्टैण्डर्डको कायम रखना ही होता है, चाहे वह क्रियामें फलीभूत हो या न हो। इसी आधारपर हम सामान्य नियमके बिन्दुसे एक विशेष चीज़की व्याख्या कर सकते हैं। इसका स्टैण्डर्डसे यह संबंध है। हरेक आत्मा कुछ गुणों और क्रियाओंका समुच्चय है जिनके केन्द्रबिन्दु अलग अलग, कुछके ऊपर और कुछके नीचे अवस्थित होते हैं। व्यक्तिका स्वभाव इन केन्द्रबिन्दुओंकी स्थितिके अनुसार ही उथले अथवा गहरे, सत्तापूर्ण या साधारण होते हैं। सत्तापूर्ण स्वभाव उन अवस्थाओंमें विचलित नहीं होता जिनमें साधारण स्वभाव विचलित हो जाता है। वास्तवमें केन्द्रबिन्दुओंकी यह स्थिति ही व्यक्तित्वका केन्द्र है। केन्द्रबिन्दुओंकी स्थितिके अनुसार गुणोंका महत्व घटता बढ़ता रहता है। दूसरी तरफ इस केन्द्रबिंदुकी स्थिति विशुद्ध आत्मिक है, उसको प्रकृतिसे अलग नहीं किया जा सकता। इस प्रकार केन्द्रबिंदुकी यह स्थिति अनुभवोंकी उस बुनियादकी प्रतिनिधि है जिससे सब गुणोंका संबंध है। साथ ही इसका अभिप्राय यह हुआ कि केन्द्रबिन्दुकी व्याख्या उसके महत्वको आंकनेके लिये पर्याप्त नहीं है। सबसे पहले यह जानना जरूरी होता है कि वह केन्द्रबिन्दुकी किस स्थिति पर है। उदाहरणके लिये यह हो सकता है कि एक जवान चपरासीकी, जिसके भाग्यमें किसी दिन प्रधान चपरासी होना बदा है, जन्मपत्री नेपोलियनकी जन्मपत्रीसे मिलती हो। केन्द्रबिंदुकी यह स्थिति हमें इस बातका महत्व आंकनेमें मदद दे सकती है। विवाहके नियमोंका उद्देश्य और उसका औचित्य अब स्पष्ट हो जाता है। ठीक अर्थमें एक ही धरातल (केन्द्रबिन्दुकी स्थिति)के व्यक्ति एक दूसरेके पूरक हो सकते हैं। अगर उनके धरातल भिन्न हों तो वे ठीक तरहसे एक दूसरेके पूरक नहीं हो सकते। क्योंकि एक तो एकात्मताका तत्व ही गायब रहेगा दूसरे गुरुत्वाकर्षणके नियमानुसार नीचेका धरातल ऊपरके धरातलको नीचे खींचा करता है। यदि हम एकाकी आत्मा और वैवाहिक संबंधकी एकताके बीच क्या समानता है इस बातको याद रखें तो हम अनुभव करेंगे कि एक निम्न धरातलके व्यक्ति और उच्च धरातलके व्यक्तिके बीच समान अधिकारोंके सिद्धान्तके आधार पर प्रेम स्थापित नहीं किया जा सकता। इसीलिये जीवन संगीके उचित चुनावके लिये यह आवश्यक शर्त है कि उन दोनों को एक ही धरातल का होना चाहिए। दूसरी तरफ एक ही धरातलपर होनेका अर्थ वास्तवमें होता है समकुलीनता। फलतः जीवन संगियोंका समकुलीन होना न सिर्फ अत्यंत युक्तिसंगत है बल्कि अत्यंत आवश्यक भी है।

इतना होते हुए भी एक धरातल अंतिम उद्देश्यको मूर्तिमान् नहीं कर सकता। हरेक व्यक्तिको उच्चतम उद्देश्यकी ओर ध्यान रखना चाहिए, ठीक उसी प्रकार जैसे कि हिंदुस्तानी पुनर्जन्मके द्वारा और अंग्रेज लोग विनयी और सभ्य होनेके सामान्य उद्देश्यको लेकर आगे बढ़ते हैं। इस तरह विवाहका चरम उद्देश्य अपने धरातलको निभाना नहीं बल्कि उसे उत्तरोत्तर उच्च बनानेका है। जब कभी यह उद्देश्य सफल होता है, हमें समझना चाहिए कि इसका सारा श्रेय नारीको है। एक आदमी अपनी स्थितिसे निम्न धरातलवाली स्त्रीके साथ विवाह करके शायद ही उसे अपने धरातल तक ऊंचे ले जा सकता है। लेकिन स्त्री एक जन्मजात माता है, अतः पुरुषको ऊंचे ले जानेमें समर्थ ही नहीं लेकिन योग्य भी है, इस संबंधमें उसमें गति और उन्नतिके सिद्धान्त काम करते हैं। सच कहा जाय तो जब कभी अत्यन्त ध्यानसे पाली पोसी गई नर संतति खत्म हो जाती है, विधिकी कुछ विचित्र घटनासे स्त्री संतति बहुधा जिन्दा रहती है। इस बातसे यह पता चलता है कि अच्छी तरह पाली पोसी गई स्त्री को अपनेसे निम्न भूमिकावाले पुरुषके साथ विवाह करना चाहिए, और इस तरह तरुण रक्तको आंतर विवाहोंके द्वारा मिश्रित करके सामान्य स्टैण्डर्डको ऊंचा उठाना चाहिए। इस प्रकार शाश्वत नारीत्व बारंबार डूबती हुई मानवताको ऊंचे उठाता है। यहां पर भी हमें पता लगता है कि हमारे पुरखे अपनी लड़कियोंको उनसे निम्नस्थितिवाले पुरुषोंके साथ और लड़कोंको उच्च स्थितिवाली स्त्रियोंके साथ विवाह करनेकी इजाज़त देते थे इसमें उनकी बुद्धिमानी ही प्रगट होती है। पुरुष अपने जीवनसंगीको ऊंचा उठानेमें असमर्थ है। इसीलिये नीत्शेने स्त्रियोंको संबोधित करते हुए कहा है कि "तुम केवल वंशवृद्धिके लिये ही नहीं, बल्कि जातिको ऊंचे उठानेके लिये पैदा हुई हो"। इसलिये समकुलीनता—उसके सच्चे अर्थमें—सुखी विवाहका एक आवश्यक अंग है। प्रत्येक पुरुषको चाहिए कि वह अपनेमे उच्च व्यक्तिके साथ एक या दूसरे अर्थमें विवाह करे। वास्तवमें हरेक आदमी की स्वाभाविक इच्छाएं उसे इसी दिशामें ले जाती हैं। इसीलिये हरेक पुरुष शाश्वत नारीत्व के प्रति बिना निराशा की संभावना के देख रहा है, और इसीलिये एक स्त्री अपने प्रेमी की ओर आदर की दृष्टिसे देखती है। यह आदर्श अत्यंत तीव्रता से चाही हुई वास्तविकता को ही प्रगट करता है। और नयी चीज़ जैसे दो विरोधी पदार्थोंके सम्मिलनसेही निर्मित होती है, उसी तरह आत्मा और शरीरकी उच्च संस्कृति का इसी बातको विवाह का प्रत्यक्ष उद्देश्य बनानेसे ही निर्माण हो सकता है।

हमारा प्रतिपादन यदि उसे ठीक रूपसे समझा जाय तो केवल इसी बात को मानकर चलता है कि मनुष्य को समझना चाहिए कि वह एक स्वतंत्र जीव है। मनुष्यपर प्रधानतया आत्मा का शासन है। फलतः उसे आत्माकी ही मांगोंको ज्यादा महत्व देना चाहिए। इसका यह अर्थ नहीं कि अन्य मांगोंका तिरस्कार करना चाहिए लेकिन उसका अर्थ है कि आत्मा की मांगोंके साथ उसे घनिष्ट संबंध स्थापित करना चाहिए। अगर अनुभवसे सिद्ध हुए इस तथ्य पर हम गौर करें कि रूढ़ि युक्त विवाह ही सुखदायक हो सकते हैं, तब हम समझ सकेंगे कि संगियोंके समुचित चुनावका यदि कहीं दुःखद परिणाम आता है, इसका एकमात्र कारण अपूर्ण शिक्षा ही है।

हमारा राजस्थान

जोधपुर के विद्यार्थी सम्मेलन पर मारवाड़ सरकार द्वारा लगाया गया प्रतिबंध शैतान की आंत बनता जा रहा है। मारवाड़ की सरकारको इस प्रतिबंधसे ही सन्तोष नहीं हुआ, संघ के प्रधान श्री हुक्मराजकी विधवा माताको उसके लड़के के पीछे उसकी पेंशन रोकनेकी धमकी दी गई। यह धमकी कितनी निन्दनीय है, यह इससे प्रगट होता है कि विधवा माता को यह पेंशन उसके लड़केकी वजहसे न मिलकर उस पतिकी वजहसे जिसका जीवन रियासतकी सेवाके पीछे समाप्त हुआ है। फिर शिक्षा विभागके डाइरेक्टर श्री. फाक्स अपनी सरकारसे भी दो कदम आगे बढ़ गये हैं। इन्होंने विद्यार्थियोंको यह कहकर संघ का सदस्य बननेसे रोका है कि वह रजिस्टर्ड संस्था नहीं है। सरकारने संघको अनरजिस्टर्ड संस्था होनेसे न तो गैर कानूनी ही ठहराया है और न उस पर कोई प्रतिबंध लगाया है। प्रतिबंध उसकी ओरसे होंने वाले सम्मेलन पर ही लगाया गया है। लेकिन शिक्षा विभाग ने संघके गैर कानूनी होने तक की बात कह दी है। संभव है शिक्षा विभाग ने सरकार की मंशाको पहिले ही प्रगट कर दिया हो अथवा सरकारके निश्चयके बारेमें भविष्यवाणी ही की हो, क्योंकि संघके रजिस्टर्ड करने की दरख्वास्त कोई एक वर्षसे सरकारके विचाराधीन है।

+ + + +

श्री जयनारायणजी व्यासने इस सम्बन्धमें एक लेख 'प्रजा सेवक' के गत सप्ताहके अङ्कमें लिखा है। उसमें आपने एक रहस्य का उद्घाटन किया है और सरकारके रोषका कारण भी उसमें प्रगट कर दिया है। आपने बताया है कि कॉलेजके प्रिंसिपल श्री साहनीने कॉलेजमें सरकारी ढंगका एक यूनियन कायम करना चाहा। उसके प्रधान और मंत्री प्रिंसिपल और प्रोफेसरों में से किसीको रखनेकी योजना की गई। लेकिन, सरकारकी यह चाल सफल न हुई। विद्यार्थियोंने एक स्वतंत्र संघ कामय कर लिया। विद्यार्थियोंकी इस स्वतंत्रतामें सरकारको राजनीतिकी गन्ध आगई। इसी लिये सरकारने प्रतिबंधकी आज्ञामें यह लिखा है कि "सरकार की रायमें वर्तमान संकटका समय राजनीतिक चर्चा के लिये अत्यन्त अनुचित है। उससे गड़बड़ और अशान्ति पैदा होनेकी सम्भावना है।" कितनी लचर यह दलील है।

+ + +

विद्यार्थियोंकी इच्छा प्रतिबंधकी अवज्ञा करके सम्मेलन करनेकी थी। लेकिन लोक परिषद्के नेताओंने रोका। विद्यार्थी सालाना परिक्षाओंकी फीस भर चुके हैं। इस रस्सा-कशी का परीक्षाओं पर बुरा असर पड़े बिना नहीं रहेगा। इसलिये विद्यार्थियोंके जोशको शान्त किया गया और संघर्षको टाल दिया गया। गरमीकी छुट्टियोंमें सम्मेलन करनेका उनका विचार है। श्री हुक्मराज मेहताके सभापतिके पदसे स्तीफा दे देनेसे श्री फतहराजजी जोशी संघके प्रधान चुन लिये गये हैं। संघकी ओरसे एक लम्बा वक्तव्य निकालकर यह प्रगट किया गया है, कि "संघकी ओर से यह सम्मेलन राजनीतिक उद्देश्यसे न किया जाकर विद्यार्थियोंकी अपनी समस्याओंपर विचार करनेके लिये किया जा रहा था"।

+ + +

जोधपुरमें शिवरात्रि पर होनेवाले द्वितीय राजस्थान प्रान्तिय हिन्दी–साहित्य–सम्मेलनकी तैयारियां पूरे उत्साहके साथ की जा रही हैं। प्रधानपदके लिये झालरापाटनके वयोवृद्ध साहित्यसेवी 'सौरभ' के भूतपूर्व सम्पादक और यशस्वी साहित्यिक श्री रामनिवासजी शर्माके नामकी बहुत अधिक चर्चा है। प्रान्तके प्रायः सभी नेता, कार्यकर्ता और साहित्यिक उनका समर्थन कर चुके हैं। प्रान्तके पत्रोंमें भी उनका समर्थन किया जा रहा है। बीकानेरकी साहित्यमण्डलीने श्री घनश्यामदासजी बिड़लाके नामको पेश किया है। लेकिन, शर्माजीका जो समर्थन हुआ या हो रहा है, उसको देखते हुये इस बातको यहां ही समाप्त कर देना श्रेयस्कर होगा। एक बहस और भी है। स्थायी समिति और स्वागत समितिमें भी इस बात पर बहस हो रही है कि चुनावका अधिकार किसे है? पता चला है कि प्रान्तीय सम्मेलनके मंत्री श्री. जर्नादन राय इसका निर्णय इस वर्ष स्वागत समितिके पक्षमें कर देना चाहते हैं और जल्दी ही इस बारे में सम्मेलनके प्रधान मुनि श्री जिनविजयजी कोई वक्तव्य प्रकाशित करनेवाले हैं।

● एक राजस्थानी ●

+ + +

सम्मेलनके संगठनको दृढ़ बनाकर जोधपुरके अधिवेशनके लिये अनुकूल वातावरण पैदा करनेके लिये प्रान्तीय सम्मेलनके प्रधान मंत्री श्री. जनार्दन राय प्रान्तके दौरे पर निकले थे। अबोहरसे लौटने पर उन्होंने अपना दौरा फिरसे शुरू कर दिया था। लेकिन, उनको आगरामें ४ जनवरीको पता चला कि १ जनवरी को उनके पिताजी का देहान्त हो गया है। सहसा उन्हें दौरा स्थगित करके उदयपुर लौट जाना पड़ा। सम्मेलन के संगठन का काम हो रहा है। जगह जगह पर सम्मेलन की शाखा के रूपमें 'साहित्य कुल' स्थापित हो रहे हैं।

+ + +

मारवाड़ लोक परिषद का ८ फरवरी को पहिल सम्मेलन हो रहा है। स्वामी चैनदासजी उसकी तय्यारियोंमें पूरे उत्साह के साथ लगे हुये हैं।

+ + +

जयपुर का भानपुरा जिला राजनीतिक सम्मेलन ११ जनवरी को जयपुरके सुप्रसिद्ध वकील श्री शंभुनाथजीके सभापतित्वमें सफलताके साथ होगया। सम्मेलनमें झूंझनूं अधिवेशन का उत्तरदायी शासन का सिर्फ एक ही प्रस्ताव पास किया गया। प्रस्ताव पर श्री लादूरामजी जोशी, श्री मनोहरलालजी और श्री कटारियाके भाषण हुए। सभापतिजी का प्रारम्भिक भाषण और श्री हीरालालजी शास्त्री का उत्तरदायी–शासन सम्बन्धी भाषण बहुत जोरदार हुए। सभापतिजीने अपने भाषणमें कहा कि "जो शासनप्रणाली आज तक रही है, उससे हमारी दरिद्रता और बेकारी दूर नहीं हुई। अब हम कमर बांधकर खड़ा होना होगा। मीनार पर चढ़कर नक्कारे की चोट पर जोर से चिल्लाकर यह कहना होगा कि उत्तरदायी शासन प्राप्त करना हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और हम इसको लेकर ही रहेंगे।" दूसरों पर भरोसा न कर सत्य और अहिंसा को अपनाते हुए स्वालम्बी बनने पर आपने जोर दिया। इसी प्रकार शास्त्रीजीने भी राज्य की आमदनी और भारी तनखाहों की आलोचना करते हुए बताया कि राजा प्रजाके लिए क्या कर रहा है? डेढ़ करोड़में से सिर्फ ग्यारह लाख रुपये शिक्षा व स्वास्थ्य पर खर्च किए जाते हैं। आपने राज्यको सावधान किया कि उसे प्रजा का धीरज नहीं टूटने देना चाहिए।

राजस्थान के पुराने जनसेवक श्री अर्जुनलाल सेठी के जयपुरमें देहावसान होनेके समाचार विशेष दुःख के साथ सुना जायगा। पिछले कई वर्षोंसे वे सार्वजनिक जीवनसे बिल्कुल उदासीन थे। इस लिये राजस्थान की जनता उनको इतनी भूल गयी कि उनकी मृत्यु की कहीं चर्चा तक न हुई। फिर भी यह मानना होगा कि वर्तमान राजस्थानके निर्मांताओंमें से एक थे। उन्होंने तब राजस्थान में सार्वजनिक जीवनके बीज बखेरे थे; जब लोग बोलना भी नहीं जानते थे। सार्वजनिक जीवनको जन्म देकर उसको उन्होंने पाला–पोसा और युवावस्था तक पहुंचाया। उनको भुला देनेका एक कारण और भी था। वे इतने उदार और स्वतंत्र विचारोंके थे कि उनके लिये हिन्दू–मुसलमानका भेदभाव भी सर्वथा गौण और तुच्छ रहा। अत्यन्त अनुदार संकुचित वृत्ति और पौराणिक मनोवृत्ति के जैन समाज में जन्मलेकर ऐसे विचार रखना ऐसा सामाजिक अपराध माना गया कि जैन समाजने उनको समाजसे बाहर कर दिया और बादमें हिन्दू समाजने भी उनको यहां तक भुला दिया कि मुसलमानोंने उनके शवको इस्लामकी प्रथाके अनुसार दफना दिया। एक वीर, साहसी और क्रान्तिकारी जीवनका अन्त इस प्रकार होना कितना दुःखपूर्ण है? राजस्थान केसरीकी केसरीसिंहकी बारहटके बाद उनके समकालीन श्री. अर्जुनलालजी सेठी के उठ जानेसे गरीब राजस्थान और भी गरीब हो गया है।

+ + +

मेवाड़के अत्यन्त लोकप्रिय श्री. भंवरलालजी स्वर्णकार 'अन्ध कवि' का अपने निवासस्थान बिजोलिया में टाइफाइडसे २० दिसम्बर को स्वर्गवास होगया। बिजोलिया सत्याग्रह में आपने सार्वजनिक जीवनमें प्रवेश किया था। उन दिनोंमें 'मान मान मेवाड़ राणा।' कविता आपने रची थी, किसानोंमें उसका खूब प्रचार हुआ था। उसीके लिये आप को चितौड़ जेलमें नजरबन्द रखा गया। बादमें आपने बूंदी के किसान आन्दोलनमें भी भाग लिया और उसके लिये जेल यातनायें भी भोगीं।

+ + +

मेवाड़ सरकारने रजिस्ट्रेशन कानून को सख्तीसे काममें लानेका निश्चय किया है। २९ दिसम्बरके मेवाड़ गज़टसे सब संस्थाओं को यह सूचना दी गई है कि वे १५ जनवरी तक जरूर रजिस्ट्री करालें। अन्यथा उनके विरुद्ध कानूनी कार्यवाही की जायेगी।

+ + +

मेवाड़में उद्योगधन्धों की अच्छी शुरूआत हो रही है। ऊनके कम्बलों, चमड़े और कागज़ के उद्योग का श्री गणेश किया जा रहा है। श्री हीरालालजी कोठारी एड़वोकेट ऊन के काममें, कपासन के श्री हरिश्चन्द्रजी चमड़े के काममें, और सेठ रोशनलालजी कागज़ के काममें विशेष दिलचस्पी ले रहे हैं।

+ + +

अलवर के कार्यकर्ता अपने को रचनात्मक प्रवृत्तिओंमें लगा रहे हैं। प्रजामंडल के संगठन, बुलैटिन के प्रकाशन, सदस्य बना कर शाखाओं की स्थापना, जनजागृति पैदा करना, वाचनालय एवं औषधालय खोलना, प्रौढ़ शिक्षा, हरिजन–सेवा, महिला जागृति, ग्रामसेवा, और खादी कार्य की व्यापक एवं विस्तृत योजनायें बनाई गई हैं। मण्डल के प्रधान श्री भवानीसहायजी शर्माने इस सम्बन्धमें जनतासे आर्थिक सहायता की अपील की है।

+ + +

कोटाके दीवान श्री ओंकारसिंहजीने आखिरमें स्तीफा दे ही

(शेष पृष्ठ १३ के कालम ३ पर)

SHIP BRAND FABRICS

SELL ON THEIR MERITS !

बर्मा, सीलोन, देश और विदेश में लोकप्रिय

सुंदर, स्वदेशी
पक्के रंगके
टिकाऊ और
कीमतमें सस्ते

सफेद ड्रिल्स
,, ट्विल्स
,, लाँग क्लाथ्स
साटिन ड्रिल्स
★
टेबल क्लॉथ
सफेद ६०" व ६८"
★
शर्टिंग क्लॉथ
सफेद ५४", ६०"
व ५८" की साईज़में
★
केज़मेंट क्लॉथ्स
अन्य कई रंगोंमें
डेसुत क्लॉथ्स

सफेद व " डाइड "
टॉवेल्स, नेपकिन्स
वगैरह।

जहाज छाप

जहाज छाप

कॉटन क्रेप

सफेद व अन्य ३४ प्रकार के पक्के रंगों व अन्य कई रंगोकी डिज़ाइन में।

पोपलिन्स

सफेद व अन्य २४ प्रकारक पक्के रंगो, आकर्षक छपाई व अन्य रंगोकी डिजाइन ।

खाकी ड्रिल्स्, ट्विल्स्
व
पगड़ी क्लॉथ

अपने व्यक्तित्व का
प्रभाव डालने व
मित्रों तथा सबंधियों
में अपने प्रति आदर
भाव उत्पन्न कराने के
लिए जहाज मार्का
कपड़ा बरतिये।

मर्सराइज्ड
,, डाइड क्रेप्स
,, प्रिन्टेड क्रेप्स
,, ब्लिच्ड क्रेप्स
,, ,, पॉपलिन्स
,, ,, कोटिंग्ज़
,, ,, ड्रिल्स
,, साटिन ड्रिल्स्
,, ,, लाग क्लॉथ
,, ब्लिचड } शर्टिंग्ज़
,, स्टाइड }

जहाज छाप

चंद्र चौक, मूलजी जेठा मार्केट, बम्बई

Bawa Parduman Singh & Sons

Head Office ——— AMRITSAR

Branches: BOMBAY CALCUTTA DELHI LAHORE QUETTA

★ देश विदेशकी चर्चा ★

★

[संकलन कर्ताकी कलमसे]

प्रशान्त महासागर की नाज़ुक स्थिति

प्रशान्त महासागरके द्वीपोंकी स्थिति दिन-दिन खराब होती जा रही है। फिलिपाइनकी राजधानी मनीलाके पतन व उस पर जापानियोंके अधिकारके समाचार तो गत पक्ष ही बताये जा चुके हैं। मनीलाके पतनके बाद बालेर, सान्तारोसा, काम्बा और तारियाक पर जापानियों द्वारा किए गए हवाई आक्रमणसे पता चलता है कि जापान शीघ्रातिशीघ्र फिलिपाइनके शेष द्वीपोंपर अपना अधिकार कर लेना चाहता है। अमेरिकन और फिलिपाइन सेनाएं यत्र-तत्र जापानी आक्रमण का मुकाबला करती हैं किन्तु जब देशका अधिक हिस्सा जापानके अधिकारमें जा चुका है, तो ऐसे विरोधसे कोई लाभ नहीं दिखाई देता।

जापान फिलिपाइनके युद्धको समाप्त प्रायः कर अब बोर्नियोकी ओर बढ़ा है और वहां भी सफलता प्राप्त कर रहा है। बोर्नियोके उत्तर-पूर्व स्थित ताराकान पर जापानने ऐसा भीषण आक्रमण किया कि वहांकी सेनाने अपना आत्मसमर्पण कर दिया। ताराकानके आत्मसमर्पणमें वहांके तेलके कुओं और हवाई अड्डे पर जापानका अधिकार होगया है। ताराकानसे भागनेका प्रयत्न करने वाले माइन बिछानेवाले उपजहाज वान ओरांजेको जापानी जहाजने डुबा दिया है। गोरोनतालो और उत्तरीय सेलेबस पर भी जापानियोंने भीषण आक्रमण किए और भारी बम गिराये हैं। तेरेनाते द्वीप पर भी बम गिराए गये जिसके फलस्वरूप पेट्रोल भण्डार और नारियलके ढेरोंमें आग लग गई।

सिंगापुर पर घण्टों बमवर्षा

मलायामें अब युद्ध उस स्थितिमें पहुंच चुका है, जिसे अन्तिम कहा जा सकता है। मलायाकी राजधानी और रबर-उद्योगके केन्द्र कुआलालमपुर का पतन हो चुका है और उस पर जापानियोंका अधिकार होगया है, जिन मुख्य मोर्चों पर लड़ाई चल रही थी, उन सभी जगहों में जापानी सेनाएं अंग्रेजी सेनाओं को पीछे हटाती चली जारही हैं। मलाया का कोई न कोई भाग प्रतिदिन जापानियों के अधिकार में जा रहा है। इससे सिंगापुर पर संकट के बादल मंडरा रहे हैं। सिंगापुर की रक्षा का प्रश्न भारत की रक्षा की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है। सिंगापुर के पतन से जापानियों के लिये रास्ता बहुत ही सुगम होजाता है। सिंगापुर पर गत पक्ष में लगातार हुई बमवर्षा से उसकी भारी हानि हुई किन्तु जब तक जापानी पदाति सेनाओं के वहां पहुंचने के लिये कोई रास्ता नहीं मिलता तब तक उसकी स्थिति इतनी चिन्ताजनक नहीं। हाल ही में सिंगापुरसे जो समाचार आये हैं वे बहुत चिंताजनक हैं और वे ब्रिटेनके लिए चेतावनी रूप हैं। कहा जाता है कि सिंगापुर पर ५० जापानी बोम्बरोंने कई घण्टों तक बमवर्षा की। किन्तु ब्रिटिश रक्षक विमान शत्रुके केवल एक जहाजको नुकसान पहुंचा सके। इससे जाहिर होता है कि हवाई शक्तिमें जापान ब्रिटनसे अधिक शक्तिशाली है।

बर्मा पर हवाई आक्रमण

बर्माके रंगून, मॉलमीन, तावाय और मर्जबान शहरोंपर एक-दिनमें अनेक बार हवाई आक्रमण कर संभस्त करना आरम्भ कर दिया है। इस प्रकार नित्यके हवाई आक्रमणसे लोक शहर छोड़ रहे हैं। एक दिन तो शहर छोड़नेवालों की संख्या इतनी अधिक बढ़ गई थी कि अधिकारियोंको शहर छोड़नेके पास देना भी बन्द कर देना पड़ा था, किन्तु लोगोंमें फैले हुए असन्तोष और घबराहटको देख उन्हें फिरसे पास देना शुरू करना पड़ा। हवाई हमलोंमें घायल हुए व्यक्तियोंको हिन्दुस्तान भेजा जा रहा है। इन घायल व्यक्तियोंके लिए बंगालके विभिन्न प्रान्तोंके अस्पतालोंमें व्यवस्था की गई है।

रूस और जर्मनीके युद्धके सम्बन्धमें जो समाचार आये हैं उनसे ज्ञात होता है कि अनेक महत्वके स्थानोंपर रूसी फौजोंने अधिकार कर लिया है। रूसी सेनाने तूला विस्तारमें ओरेल तक पहुंच कर अपना अधिकार कर लिया है। मोस्को के उत्तर—पश्चिम स्टारिट्जा शहर पर भी रूसी सेनाओंने अपना अधिकार कर लिया है। ब्राहन्स्कके से ४०० मील उत्तरमें लिंडिवावो शहर पर रूसियों ने फिरसे अधिकार कर लिया है। शीत ऋतु की कठिनाइयोंके कारण जर्मनी को हरेक मोर्चे पर पीछे हटना पड़ रहा है, किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि वसन्त ऋतुके आते ही वह रूस पर जोरों का आक्रमण करे। क्रीमियाके दक्षिणी किनारे पर रूसियों का अधिकार होगया है और कुर्स्क विस्तारमें पूर्वी मोर्चे पर आगे बढ़ रहे हैं। वोलखोव नदीके पूर्वी किनारेसे जर्मन भगा दिए गये हैं और पश्चिमी किनारेके नोवाकिरिशी गांव पर अधिकार कर लिया है। उक्रेनमें खारकोर के पास भीषण संग्राम हो रहा है।

माल्टापर आक्रमण की हिटलर की योजना

सिसीली (इटली) में जर्मन सेनाएं, बोम्बर्स, ग्लाइडर्स, डाइव बोम्बर्स, पेरेश्युटिस्ट्स आदि एकत्र हो रहे हैं। इस प्रकार इन सब का सिसिलीमें एकत्रित होने का एक मात्र उद्देश्य माल्टाको दूसरा क्रीट बनाना है। इस आक्रमण की सारी तय्यारियां हो चुकी हैं अब केवल स्मोलेन्सकसे, जहां हिटलर अपना हेडक्वार्टर बनाये पड़ा है, हिटलर के आदेश की राह देखी जा रही है। माल्टा पर १६ फरवरी १९४१ को प्रथम वार हवाई आक्रमण हुआ था। तबसे लेकर अब तक माल्टापर दुस्मानोंने १३०० वार हवाई हल्ला किया। गत पक्षमें तो इस आक्रमणका वेग इतना अधिक बढ़ गया कि एक-एक दिनमें १०-२० वार हवाई आक्रमण हुए।

प्रेसिडण्ट रूज़वेल्ट का कांग्रेस समक्ष भाषण

प्रेसिडेण्ट रूज़वेल्टने कांग्रेस समक्ष भाषण करते हुए कहा कि सन् १९४२ में अमेरिका ५६,०००,०००,००० डालर युद्धमें खर्च करेगा। और ६०००० वायुयान, ४५००० टेङ्क, २०००० एन्टी-एअर-क्राफ्ट गन्स और ८०,००,००० टन के जहाज तय्यार करेगा। सन् १९४३ में १२५००० वायुयान, ७५००० टेङ्क, ३५००० एन्टी-एअरक्रॉफ्ट गन्स और १,००,००,००० टन के जहाज तय्यार करेगा। युद्धके सम्बन्धमें बोलते हुए प्रेसिडन्ट रूज़वेल्टने कहा कि युद्ध तब तक खत्म न होगा जब तक जर्मनी, जापान और इटली की फासिस्ट सरकार खत्म नहीं होजाती।

अ. भा. कांग्रेस कमिटी की बैठक

अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी की बैठक ता. १५ को, पन्द्रह मासके बाद, शान्त और मधुर वातावरणमें आरम्भ हुई। कमिटीके ३८४ सदस्योंमें से १९० सदस्य उपस्थित थे। शेष सदस्योंमें से ४० सदस्य जेलके भीतर हैं।

राष्ट्रपति का भाषण

वंदे मातरमके गीत से सभा की कार्यवाही आरंभ हुई। राष्ट्रपति मौलाना आज़ादने अपने भाषणमें गत १६ मास की राजनैतिक स्थिति का सिहांवलोकन करते हुए कहा कि परिस्थिति जैसी की वैसी ही है अतः हम अपने रूखमें परिवर्तन करने का कोई कारण नहीं देखते। महात्मा गांधी और अपने दृष्टिकोणके अन्तर को स्पष्ट करते हुए मौलाना अज़ादने कहा कि गांधीजीके जीवनका जो मिशन है, समस्त संसार उसकी सीमाओंके अन्तर्गत है। गांधीजीने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि युद्धमें योग देनेके मूल्य पर युद्धकालमें भारत की स्वतंत्रता लेनेके लिए वे तैयार नहीं हैं। किन्तु हम लोगोंकी स्थिति वैसी नहीं है। युद्ध या शान्तिके किसी भी क्षणमें यदि स्वतन्त्रता प्राप्त होती हो तो मैं लेनेको तय्यार हूं। मेरा सम्पूर्ण व एकमात्र उद्देश्य है—भारतकी आज़ादी।

विश्वकवि टैगोरके अवसान पर शोक सूचक प्रस्ताव सब सदस्योंने खड़े होकर पास किया। पश्चात् राष्ट्रपति आज़ादने महात्माजीसे अपना भाषण आरम्भ करनेकी प्राथेना की।

महात्माजीका आदेश

महात्माजीने अपना भाषण प्रारंभ करते हुए यह विश्वास दिलाया कि मैं कांग्रेसको कोई हानि नहीं पहुंचाऊंगा। मैं कांग्रेससे बाहर हुआ हूं तो उसकी और भी अधिक सेवा करनेके लिए ही। बारडोलीमें प्रस्ताव पास हो जाने पर मुझे लगा कि मैं इस अधिवेशनमें यह देखूं कि कितने सदस्य मेरे साथ हैं किन्तु मेरा अहिंसाका सिद्धान्त मुझे ऐसा करनेसे रोकता है अतः आप लोगोंको मेरी यही सलाह है कि आप बारडोली प्रस्तावको स्वीकार कर लें।

देश और विदेशमें कुछ लोगोंका खयाल है कि मैं कांग्रेसको धार्मिक संस्थामें परिणत कर देना चाहता हूं। परंतु यह बिलकुल गलत है। मैं कांग्रेसका मजाक उड़वाना नहीं चाहता। एक बार पुनः प्रस्ताव पास करने पर जोर देते हुए महात्माजीने कहा कि यह प्रस्ताव कांग्रेसका दर्पण है। कांग्रेसके विचित्र विचारोंका उसमें प्रतिबिम्ब है!

पं. नेहरूका गर्जन

बारडोली प्रस्ताव पेश करते हुए पं. जवाहरलाल नेहरूने कहा कि केवल जापानी व जर्मन आक्रमणके भयसे मैं अंग्रेजी हुकूमतके मातहत रहनेको तैयार नहीं हूं। कांग्रेस गत २० वर्षोंसे इसके खिलाफ़ प्रचार कर रही है और अब वह इस नीतिको छोड़ पीछे नहीं हट सकती।

श्री राजगोपालाचारीने इस प्रस्तावका समर्थन किया।

इस प्रस्ताव पर का. महमूदअली खां (पंजाब) ने भारतकी कम्युनिस्ट पार्टीकी ओरसे ४ संशोधन पेश किए। समाजवादियोंकी ओरसे स्वामी कृष्णानंदने भी एक संशोधन पेश किया।

श्रीमती राधाबाई सुब्बरायनने कम्यूनिस्ट पार्टीके प्रस्ताव का समर्थन किया।

बारडोली प्रस्ताव स्वीकृत

थोड़ेसे परिवर्तनके साथ पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा पेश किया गया बारडोली प्रस्ताव बहुमतसे स्वीकृत कर लिया गया।

२१९ के हाउसमें से केवल १५ सदस्यों ने प्रस्तावके विरोधमें वोट दिये।

★ समाजके शत्रु ★

★

● श्री बालकृष्णजी मोहता ●

संसारमें अन्न बहुत पैदा होता है, कपड़े भी कम नहीं बनते; फिर भी आप देखेंगे कि बहुतसे लोग अन्नके बिना रिरियाते चल रहे हैं, बहुत-से लोग ऐसी हीन अवस्थामें घूमते फिर रहे हैं जिनके पास तन ढांकनेको भी पूरा वस्त्र नहीं। ऐसा तो बिल्कुल ही नहीं कहा जायगा कि उनकी ऐसी हीन अवस्था इसलिये है कि दुनियामें इतना अन्न और वस्त्र है ही नहीं जो वे पा सकें, खा और पहन सकें। मगर जिनकी कार्रवाइयोंसे जन-समाजको कपड़ा, खाना और जगह मिलनेमें कठिनाई है वही समाजके सबसे बड़े शत्रु हैं। उन लोगोंमें से जो हमारे सामने पहले आते हैं उनके नाम हैं दलाल और बड़े-बड़े व्यापारी। इन दोनों श्रेणियोंका कार्य आज समाजके लिये बहुत ही हानिकर हो उठा है। आप दलालोंको लें। दलाल अपनी थोड़ी-सी मिहनतसे बहुत ज्यादा रुपये ले-लेते हैं। वे उन रुपयोंको इसी प्रकार उटपटाँग और वाहियात चीज़ोंके पीछे खर्च करते हैं जो कि जनसाधारणके किसी भी काममें आनेवाली नहीं। दलाल कभी भी आपको घाटेमें नहीं मिलेंगे। लेनेवालेको मुनाफा हो या बेचनेवालेको घाटा हो, इससे उन्हें कोई मतलब नहीं। किसीको तेजी समझा दी, किसीको मन्दी सुझा दिया, बस यही इनका काम है। इस पेशेको करनेवाले दूसरोंको बेवकूफ समझने लग जाते हैं, क्योंकि दिन-भर दूसरोंको उल्टा-सीधा समझाना इनका काम ही बन जाता है। यही कारण है कि ये सभीको बेवकूफ समझते हैं और अपनेको परम बुद्धिमान। इनकी मंडलीमें बुद्धिमान वही आदमी समझा जाता है जो दूसरोंको सबसे अधिक मूर्ख बना सके। समाज-संगठनमें यह वर्ग बहुत ही अधिक नुकसान पहुँचानेवाला है। और उसी दलाली पेशाके लोग आज सबसे अच्छा खाते हैं, सबसे बढ़िया पहनते हैं और सबसे अधिक फ़िजूलखर्च होते हैं। उसपर भी तुर्रा यह कि इनके अस्तित्व या इनकी कार्यप्रणालीसे समाजका इतना भी लाभ नहीं होता जितना कि एक दतवन बेचनेवाला भी समाजको लाभ पहुँचा सकता है। ये न तो कोई कच्ची चीज़ उत्पन्न करते हैं, न पक्की चीजें बनाते हैं और न बनीं-बनाई चीजोंकी रक्षा करते हैं। कदाचित् कोई कहे कि ये घरसे पूँजी लगाते होंगे; लेकिन वह भी बात नहीं है। कई वर्ष पहले पढ़े-लिखे लोग इस पेशेको नहीं करते थे। लोगोंकी निगाहमें यह पेशा प्रतिष्ठाकी चीज़ नहीं थी। व्यापारी वर्ग इस पेशाके लोगोंको इसी दृष्टिकोणसे देखते थे कि—"वे? वे तो बस दलाल हैं, दलाली करते हैं!" चाहे दलालने कुछ रुपये भी जोड़ लिये हों, तो भी व्यापारी समाजकी दृष्टिमें वह एक दलाल ही समझा जाता था। इधर कई वर्षोंसे पढ़े-लिखे लोगोंकी जबरदस्त बाढ़ आई। उन्हें राज्य और समाजमें नौकरियाँ नहीं मिलीं। पूँजी भी पासमें नहीं कि कोई सच्चा व्यवसाय कर सकें। ऐसी अवस्थामें वे इसी उचक्के काम की ओर लपके। पढ़े-लिखे तो थे ही, बुद्धिका सदुपयोग न करके धोखा-धड़ीका कारबार करने लगे। आप देखें, इन्स्योरेंस कम्पनीके सभी दलाल आपको पढ़े-लिखे मिलेंगे, बिचारे गरीब आदमी, जिन्हें खाना-पीना भी कठिन है, उन्हें लोभ-लालच, सब्ज़बाग दिखला कर हजार-दो हजारकी पालिसी करवा लेते हैं। जितनी पालिसियाँ वे बिकवाते हैं उनमें आधीसे भी अधिक "लेप्स" कर जाती हैं। इसी प्रकार फाटकेके दलालोंको देखिये, प्रत्येक तेजी-मन्दीके दलालोंको देख लीजिये। अन्तमें सारांश यह है कि इस गिरोहका काम ज्यादासे ज्यादा नुकसान करनेवाला होता है और उत्पन्न करनेका काम एक फी सदी भी नहीं होता।

अब दूसरा गिरोह धनी व्यापारियोंका है। इनका काम बनी-बनाई चीज़ोंको गोदामघरमें भरना है। बाजारमें झूठमूठ चीज़ोंकी कमी दिखलाकर आवश्यक चीज़ोंके मूल्यमें वृद्धि करना ही इनका काम है, आजकल आप अपनी आँखोंसे देख रहे हैं कि रूईका दाम क्या है और उनसे बने हुए कपड़ोंके दाम क्या है। अगर रूईके दामसे कपड़ोंके दामका (मजदूरी आदि जोड़ कर) पड़ता लगाया जाय, तो आपको मालूम पड़ेगा कि इन दामोंसे चालीस-पचास प्रतिशत तक कम हो सकता है। पाठक शायद सोचेंगे कि तब भी इन कपड़ोंका दाम इतना अधिक क्यों है। कपड़ोंका दाम इन धनी व्यापारियोंकी कानूनसे ऊँचा है। आप देख लीजिये, दूकानोंमें माल ठसाठस भरा है, गाँठोंको रखनेके लिये गोदामकी तलाश हो रही है। सारा माल ये पैसेवाले खरीद-खरीद कर गोदामोंमें जमा कर रहे हैं। स्टाक रख दिया है और माल पर ताला लगा कर कहते फिरते हैं कि मालकी कमी है। और अनाप-शनाप दाम बढ़ रहा है। शायद आप यह समझें कि चीज़ोंका मूल्य माँग और स्टाक पर ही घटता-बढ़ता रहता है; किन्तु बात ऐसी नहीं है। जब कभी भी यह गिरोह दाम बढ़ाना चाहता है तभी बने हुए मालको बाजारसे लेकर गुदाममें भर देता है। पिछली लड़ाईके समय कपड़ोंका दाम अभीसे भी अधिक था। उस समय भी यही बात कही जाती थी कि कपड़ेका स्टाक है ही नहीं; लेकिन जिस समय लड़ाई बन्द हुई उस समय कलकत्तेके गोदामोंमें कपड़ेका इतना बड़ा स्टाक मिला जितना कि यहाँ कभी किसी समय देखा ही नहीं गया था। परिणाम यह हुआ कि लड़ाई बन्द होते ही कपड़ेका दाम एक साथ ही चालीस और पचास प्रतिशत तक घट गया। उस पिछली लड़ाईके समय भी गरीबोंको कपड़ा खरीदनेमें जो कष्ट हुआ था वह इसी गिरोहकी करतूतका फल था। शायद आप कहें कि इस व्यापारी वर्गका यह काम ही है कि माल खरीदा करे। इसी प्रकार अनाजके व्यापारियोंको लीजिये। वे अनाज कोठोंमें भर-भर कर भगवानसे प्रार्थना किया करते हैं, ब्राह्मणोंको मिष्टान्न जिमाते हैं, जप-तप और पूजा-पाठ करते हैं और बराबर यही मनाते रहते हैं कि पंद्रह दिनों तक और वर्षा न हो। आप अवश्य जानते हैं कि ऐसा होगा तो अकाल पड़ जायगा और इन कोठोंमें भरे अनाजके बोरे सोना और चांदीके हो जायंगे। भगवान समाजके इन शत्रुओंसे जनताका पिंड कबतक छुड़ावेगा? वह दिन कब देखनेमें आवेगा जबकि इनका कार्य कानूनके विरुद्ध समझा जायगा?

बोरले की समस्या

श्री मूलचन्दजी अग्रवाल,

विवाहके तीसरे दिन राजपूतानेमें वधुकी 'सिर गूंथी' करनेका रिवाज है। उसमें बालोंमें 'बोरला' भी गूंथा जाता है। पूछताछ करने पर मालूम हुआ कि 'सिर गूंथी' म 'बोरला' एक अनिवार्य चीज़ है। इसके बिना सिर गूंथी हो ही नहीं सकती है। स्त्रियोंका कुछ ऐसा भी ख्याल बन गया है कि 'बोरला' एक सौभाग्यका चिन्ह है। इन दोनों दलीलों पर हम विचार करें।

(१) 'सिर गूंथी' में यदि बोरला अनिवार्य हो तो उसका उल्लेख धार्मिक ग्रन्थोंमें अवश्य होना चाहिये था परन्तु ऐसी कोई बात विवाह संस्कार की पद्धतिमें देखनेमें नहीं आती है। प्राचीन स्त्रियोंके चित्र या मूर्त्तियां जो देखनेमें आती हैं उनमें भी 'बोरला' दिखाई नहीं देता है। यदि धार्मिक रूपसे 'बोरला' अनिवार्य होता तो महाराष्ट्र और गुजरात प्रान्तकी स्त्रियोंको भी कमसे कम विवाहके समय तो उसे लगाना पड़ता। परन्तु इन प्रान्तोंमें भी ऐसा रिवाज नहीं हैं। भारतके उत्तरी भागमें भी इसका रिवाज नहीं है, केवल इसका रिवाज 'राजस्थान' में ही पाया जाता है। यह रिवाज एक प्रान्तीय होनेके कारण इसको धार्मिक नहीं कहा जा सकता है। यदि धार्मिक होता तो किसी न किसी रूपमें अन्य प्रान्तीय हिन्दुओंमें भी होता।

(२) सौभान्य चिन्हके रूपमें भी 'बोरला' अनिवार्य नहीं माना जा सकता है। क्यों कि हम देखते हैं कि उसे विधवा स्त्रियां भी धारण करती हैं। यदि 'बोरला' केवल सधवा स्त्रियोंके लगानेकी चीज़ होती और विधवाओंको लगाना मना होता तो यह माना जा सकता था कि यह एक सौभाग्यका चिन्ह है।

फिर स्त्रियां इसको क्यों पहिनती हैं? मेरा ख्याल ऐसा है कि राजपूतानेमें बहुतसे स्थानोंमें पानीकी कमी होनेके कारण स्त्रियोंका नहानाधोना कठिन होनेसे स्त्रियोंने सिरको गुंथाना शुरू किया होगा और सिरको गुंथानेके साथ साथ शृंगारके रूपमें 'बोरले' को भी स्थान मिल गया होगा। परन्तु अब यह रिवाज मारवाड़ियोंमें इतना घर कर गया है कि मारवाड़ी स्त्रियां चाहे कहीं पर भी क्यों न रहें, जहां कि पानी की कमी नहीं है, फिर भी माथेको गुंथाना और उसमें बोरला डालना नहीं छोड़ती हैं।

सिरमें 'बोरला' डालकर गुंथानेसे सिरकी सफाई नहीं हो सकती है और सिरमें बेहद जूंएं पड़ जाती हैं, जो कि जंगलीपनकी निशानी है। इसलिये जहां पर पानीकी कमी हो और नित्य स्नान करना संभव नहीं हो वहांपर केवल तेल डालकर स्त्रियां बालोंको साफ कर सकती हैं। स्त्रियोंकी गंदगीका असर बच्चों पर भी पड़ता है इसलिये मारवाड़ियोंके बच्चे भी स्त्रियों की तरह प्रायः गंदे रहते हैं फिर यह आदत उनमें बड़े हो जाने पर भी कायम रहती है। फलस्वरूप अन्य प्रान्तीय या अन्य देशीय लोग मारवाड़ियोंको अत्यन्त गंदे समझते हैं और उनसे नफरत करते रहते हैं। इसलिये मारवाड़ी समाजके शिक्षित पुरुषों और शिक्षित महिलाओंको चाहिये कि वे इस कुरीतिके विरुद्ध आवाज़ उठावें और इसको दूर करनेका प्रयत्न करें।

गोविंदगढ़-मल्किपुर (जयपुर स्टेट)

(पृष्ठ १० का शेषांश)

दिया है। स्वास्थ अच्छा न रहने पर आपने स्तीफा दिया है। फिल हाल आपको छः मासकी छुट्टी दी गई है। लेकिन, आपकी इस छुट्टीकी खासी चर्चा है। अभी अभी कोटामें एक भीषण काण्ड होनेका समाचार मिला है। रातको किसीने हाईकोर्टकी इमारतमें सिटी मॅजिस्ट्रेट और रजिस्ट्रार के कमरों का ताला तोड़कर उनमें आग लगा दी। अनेक मामले मुकदमे की मिसलें और काम के बहुतसे कागज़ जलकर राख होगये। टाइपरायटर भी तोड़ दिये गये। पुलिस मामले-की छान बीन कर रही है। पुलिसको अभी कुछ भी पता नहीं चला है।

समाज-सुधारक श्रीकृष्ण

★ श्री भगत ★

इतिहास को पढ़नेसे स्पष्ट रूपसे यह विदित होजाता है कि जब कभी संसारमें अत्याचार बहुत बढ़ गये, लोगों ने अपने कर्तव्योंको भुला दिया, मानव मानव का शोषण करने लगा तभी एक ऐसे नेताका प्रादुर्भाव हुआ जिसने अत्याचारियों का नाश किया, भटकी दुनियाँको सच्चा मार्ग बताया और शोषण का अन्तकर शान्ति स्थापित की। अपनी अतीव श्रद्धाके कारण जनता उसे ईश्वर का अवतार समझने लगी, उसकी पूजा प्रारंभ होगई। पर क्या सचमुच ही ईश्वर जन्म लेता है? भक्त लोग इसका उत्तर 'हाँ' में देंगे और अपनी बात की पुष्टि के लिये गीता के ये श्लोक सामने रखेंगे:—

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे॥

परंतु इन श्लोकों में जो मुख्य बात बतलाई गई है उसकी ओर उनका ध्यान नहीं जाता। इन श्लोकों पर की गई महात्माजी की टिप्पणी से वह 'बात' स्पष्ट हो जाती है। वे लिखते हैं कि "यहाँ श्रद्धालु को आश्वासन है और सत्य की—धर्मकी—अविचलता की प्रतिज्ञा है। इस संसारमें ज्वार भाटा हुआ ही करता है, परन्तु अन्तमें धर्म की ही जय होती है। सन्तोंका नाश नहीं होता, क्योंकि सत्यका नाश नहीं होता। दुष्टोंका नाश ही है, क्योंकि असत्यका आस्तित्व नहीं है। ऐसा जानकर मनुष्य अपने कर्तापनके अभिमानसे हिंसा न करे, दुराचार न करे। ईश्वर की गहन माया अपना काम करती ही रहती है। यही अवतार या ईश्वर का जन्म है। वस्तुतः ईश्वरके जन्म लेनेकी क्रिया होती ही नहीं।" इस प्रकार अब यह स्पष्ट होगया कि ईश्वर स्वयं कभी जन्म नहीं लेता। महापुरुषोंको हम ईश्वरका अवतार न मान यदि 'मनुष्य' ही मानें तो अधिक अच्छा हो। देवता सिर्फ पूजा की वस्तु बन जाते हैं—हम उन्हें अपने से एक भिन्न श्रेणी का जीव मान उनसे सदैव दूर ही रहने का प्रयत्न करने लगते हैं। उनको 'मनुष्य' मानने से वे हममें साहस का संचार करेंगे। उनके कार्य हमारे लिये आदर्श बन जायेंगे और हम नवीन स्फूर्ति तथा प्रेरणा पाकर शीघ्र ही अपने लक्ष्य को पाने में सफल होंगे। देवता के कार्य मनुष्य की शक्ति के बाहर के हो सकते हैं परन्तु एक 'मनुष्य' द्वारा किये गये कार्यों को प्रत्येक मनुष्य कर सकता है—कम से कम प्रयत्न तो किया जा सकता है चाहे सफलता मिले या नहीं।

श्रीकृष्णको भी देवता (अवतार) माना जाता है। मन्दिरोंमें नित्य ही उनकी पूजा होती है। जन्माष्टमी भी प्रतिवर्ष आकर चली जाती है। उत्सव मनाये जाते हैं, खूब सजावट होती है, भजन-गायनका बोलबाला हो जाता है परन्तु इन सबका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता। लोग यदि उनके कार्योंका अनुकरण करने लगें तो कितना अच्छा हो! कोरे उत्सव मनानेसे तो कुछ नहीं होनेका।

श्रीकृष्ण एक महापुरुष थे। अपनी असाधारण प्रतिभा तथा अलौकिक गुणोंके द्वारा उन्होंने मानवताके दुःखोंका अन्त कर दिया। उनकी पहुँच सभी क्षेत्रोंमें थी। अध्यात्म उनका प्यारा विषय था, समाजशास्त्र के वे अद्वितीय विद्वान् थे और राजनीति तो उनकी दासी ही थी। उनकी 'गीता' सदैव अमर रहेगी। संसारके दुःखोंको नाश करनेका सबसे सीधा और व्यावहारिक मार्ग उसमें बतलाया गया है। उनके राजनैतिक कार्योंके वर्णनके लिये कई ग्रन्थ लिखे जा चुके हैं। उन्होंने समाज-सुधारमें भी बहुत प्रयत्न किये। निम्न लिखित पंक्तियोंमें उनके समाज-सुधारक स्वरूप पर कुछ विचार किया जावेगा।

श्रीकृष्णको हुए करीब पाँच हजार वर्ष होगये हैं। यह एक आश्चर्यकी बात है कि जिन सुधारोंको श्रीकृष्ण कर चुके थे, जो बातें उनके जमानेमें ही चालू होगई थीं उन्हींको करनेके लिये यदि आज कहा जाता है तो विरोधका एक तूफान खड़ा हो जाता है और दुःख तो यह है कि मुख्य विरोधी लोग अपनेको, 'कृष्ण-भक्त' कहनेमें भी नहीं शर्माते!

पहिले हम श्रीकृष्णके विवाह-संबन्धी कार्यों पर विचार करते हैं। वे विवाहमें प्रेमको विशेष महत्व देते थे। सुभद्रा का प्रेम अर्जुनसे था और अर्जुनका सुभद्रासे। कृष्णको यह मालूम हुआ तो उन्होंने तुरन्त ही विवाहकी अनुमति दे दी। बलदेव आदि ने विरोध किया तो श्रीकृष्णने सुभद्राको भगा ले जानेमें अर्जुनकी मदद की। स्वयं भी रुक्मिणीके सच्चे प्रेमके वशीभूत हो उससे ही विवाह किया। इन उदाहरणोंसे यह भी स्पष्ट हो जाता है कि वे बाल-विवाहके विरोधी थे। छोटी लड़कियोंमें 'प्रेम' का प्रादुर्भाव नहीं होता तब विवाहमें प्रेमको विशेष महत्व देने वाला व्यक्ति बालविवाहका समर्थक कैसे होसकता है?

वे विधवा-विवाहके भी समर्थक थे। कुछ 'भक्तों' को यह बात शायद चौंका दे, परन्तु है बिल्कुल सच। वे कोरे समर्थक ही नहीं थे उन्होंने इसे अपने ही घरमें करके एक आदर्श भी उपस्थित किया था। वे जानते थे कि विधवाओंके भी हृदय होता है। जवान उम्रमें पतिके विछोहको वे नहीं सह सकतीं। उन्हें भी एक आधारकी आवश्यकता हो सकती है। यदि वे अपनेको नहीं रोक सकतीं तो उन्हें पुनः विवाह करनेकी आज्ञा क्यों न दी जावे उन्हें उनकी स्वाभाविक इच्छाओंको कुचलनेके लिये बाध्य करना एक अक्षम्य अपराध है। उनके पोते धृष्टद्युम्नका प्रेम एक विधवासे हो गया था। श्रीकृष्णने उनके विवाहकी सहर्ष अनुमति दे दी। अपने आदर्शोंको व्यवहारमें लाकर उन्होंने सच्चे सुधारकका काम किया। इस भाँति हम देखते हैं कि उनके विवाह संबन्धी विचार आज कलके उन विचारों से, जिनका कि जबरदस्त विरोध किया जाता है, कितने मिलते जुलते थे।

उस समय पर्दा तो था ही नहीं। स्त्रियोंके प्रति श्रीकृष्ण का बर्ताव बहुत ही आदरका होता था। पत्नीको वे 'पैरकी जूती' नहीं समझते थे। हरएक काममें उनकी सलाह लेते थे; यहाँ तक कि युद्ध में भी वे सत्यभामा को अपने साथ ले गये थे। कितनी वीर थीं उस समयकी रमणियाँ! कितना आदर था श्रीकृष्णमें उनके प्रति!!

यद्यपि आजकल 'हरिजन-आन्दोलन' का विरोध कम पड़ गया है परन्तु अभी भी अछूतोंके साथ सद्व्यवहार करनेके बहुत से विरोधी मौजूद हैं। श्रीकृष्ण मानव मानव में कोई भेद नहीं मानते थे। सिर्फ सामाजिक कार्यों को सुचारु रूपसे चलाने के लिये ही वर्ण-व्यवस्था की स्थापना की गई थी। विदुर एक दासीपुत्र थे—वे 'अछूत' थे—परन्तु श्रीकृष्ण ने दुर्योधनके मिष्टान्नों को छोड़ कर उनके यहाँ भोजन तक करनेमें तनिक भी हिचकिचाहट नहीं की। आजकल तो 'अछूत' मन्दिरमें श्रीकृष्णके दर्शन तक नहीं कर सकते परन्तु उस जमानेमें श्रीकृष्ण स्वयं अछूतोंके घर पधारते थे। अछूतोंके प्रति 'भक्तों' का यह व्यवहार क्या श्लाघनीय है?

इस प्रकार हम देखते हैं कि श्रीकृष्ण विधवा-विवाहके समर्थक, पर्दाके विरोधी, स्त्रियोंके साथ समानताका बर्ताव करनेवाले तथा सच्चे अछूतोद्धारक थे। अगर भक्तलोग 'भगवान्' के इन्हीं गुणोंकी ओर ध्यान देकर उन्हें अपनाना प्रारंभ करदें या कमसे कम इन कार्योंको करने वालोंका विरोध करना ही बन्द कर दें तो सामाजिक उन्नति बहुत शीघ्रतासे हो जावेगी। पर क्या भक्तगण ऐसा करनेको तैयार हैं?

(शेष पृष्ठ १५ के कालम ३ पर)

राजस्थानी संसार

लश्कर माहेश्वरी समाजके एक जनसेवक का दुःखपूर्ण निधन

बड़े दुःखके साथ लिखना पड़ता है कि स्थानीय माहेश्वरी समाजके प्रसिद्ध जनसेवक तथा लोक प्रिय उत्साही कार्यकर्ता श्री गुलाबचंदजी लाहोटी का ता. ५-१२-४१ को ४८ वर्ष की आयुमें स्वर्गवास होगया। आप भयंकर दमे और पथरी के रोगों से पीड़ित थे।

आप बड़े कलाप्रिय, मिष्टभावी, मिलनसार और प्रतिभाशाली व्यक्ति थे। आपने आयुर्वेद शास्त्र का गहन अध्ययन किया था तथा स्वयं एक अनुभवी और सफल चिकित्सक थ। साथही आप मेस्मेरिज्म और हिप्नॉटिज्म आदि विद्याओंमें भी निपुण और माने हुए प्रयोग करते थे और ज्योतिषशास्त्र में भी दखल रखते थे। मैजिक के तो आप मर्मज्ञ ही थे। आप अपना पूरा समय आयुर्वेद शास्त्रके अध्ययन और रोगियोंकी परिचर्यामें ही देते रहे तथा अनेक असाध्य और दुःसाध्य रोगियोंकी सफलतापूर्वक चिकित्साकी और विशेषताकी बात यह कि आप मुफ्त इलाज करते थे। तथा रोगीके घर जाकर भी कोई फीस नहीं लेते थे। और गरीबोंका इलाज बड़ी दिलचस्वी तथा प्रेमसे करते थे।

सामाजिक सुधारकी ओर भी आपकी विशेष अभिरुचि थी हमें गर्व है कि आप श्री माहेश्वरी मित्र मंडल, लश्करके आदि संस्थापकोंमें से थे। यह आप ही की सत प्रेरणा थी कि जिसने मित्र मंडल को जन्म दिया। उनके निधन से स्थानीय माहेश्वरी समाज की भारी क्षति हुई है।

हम, संस्थाके संस्थापक एवं समाजसेवक होनेके नाते उन्हे सादर श्रद्धांजलि समर्पित करते हैं और उनके कुटुम्बियों से समवेदना प्रकट करते है। परत्मातमा उनकी दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें।

मंत्री—**माहेश्वरी मित्र मंडल,** लश्कर

बम्बई भारतीय नवयुवक संघ

उक्त संघ द्वारा संचालित वाचनालयमें हिन्दी, गुजराती और अंग्रेजीके प्रायः सभी प्रमुख समाचार पत्रोंकी व्यवस्था की गई है जिससे आसपास की जनता पर्याप्त संख्यामें लाभ उठा रही है। संघकी ओरसे हिन्दी वर्ग तारीख १५ जनवरीसे खुल जायेगा। अतः हिन्दी सीखनेके इच्छुक व्यक्तियोंको उक्त तारीख के अन्दर अपने आवेदन पत्र संघके कार्यालयमें भेज देना चाहिये। हमारी इन प्रवृत्तियोंसे प्रभावित होकर निम्न सज्जनोंने हमें सहायता प्रदान की है जिसके लिए हम कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

१०१) श्री हरनन्दराय घनश्यामदासजी
१०१) श्री हरसुखराय गोपीरामजी

—मन्त्री

वैधव्यव्रत और ब्रह्मचर्य

श्री. द्वारकाप्रसादजी टावरी, बीएस. सी., एलएल्. बी. पंचमढ़ी (सी. पी.)

> जब तक हम लोग इस बात का अनुभव न करलें कि स्वराज्य की सच्ची नींव हम लोगोंके सामाजिक जीवन की ही नींव है तब तक हम स्वराज्यके आदर्श को नहीं समझ सकते। जब तक हम लोग तीन करोड़ हिन्द–विधवाओं को स्वतंत्र नहीं कर सकते तब तक स्वतंत्रता केवल मिथ्या और विडम्बनापण है। –श्रीमती नायडू

●

इसमें रत्ती भर भी संदेह नहीं कि ब्रह्मचर्य का परिपालन ही भारतीय विधवा की सर्वश्रेष्ठ साधना है और कोई भी हिन्दु यह कदापि प्रतिपादित नहीं करेगा कि जो विधवायें अपना जीवन ब्रह्मचर्य की साधनामें उत्सर्ग कर देना चाहती हैं, उन्हें विवाह की ओर प्रवृत्त करने की चेष्टा की जावे। विधवायें ही क्यों, भारतधर्म ने सधवाओं को भी ब्रह्मचर्यसे रहने की आज्ञा दी है। एक मात्र सन्तानोत्पत्ति की सदिच्छासे उन्हें पतिप्रसंग करने की आज्ञा दी गई है। परन्तु जो इस स्थूल कठोर जगतके वास्तविक स्वरूप को आदर्शमयी भावनामें विस्मृत नहीं कर देता है उससे यह बात छिपी नहीं रह सकती कि प्रत्येक सधवा के लिये अथवा प्रत्येक विधवा के लिये धर्म की आज्ञानुसार उस शाश्वत ब्रह्मचर्य का परिपूर्ण परिपालन करना कठिन ही नहीं, असम्भव हो जाता है। फिर हमारे इस अभागे समाजमें विधवाओं की जो दारुण दुर्दशा की जाती है, बात बातमें उनका जो अनादर किया जाता है, प्रातःकाल के समय उनका मुख दर्शन जो अपशकुन समझा जाता है उत्सव, के समारोहमें उनका दर्शन जो अमंगल जनक माना जाता है, इन सब के कारण उन सबकी अवस्था शोचनीय हो गई है। इतना ही नहीं इस अभागे समाज में ऐसी विधवाएं भी हैं, जो पतिका मुख-दर्शन तो दूर पति के साथ वरण करने की बात तक नहीं जानती। हमारे इस समाजमें युवती और प्रौढ़ा विधवाओं की संख्या इतनी अधिक है कि उसपर विचार करनेसे हृदय कांप उठता है। प्रति ६ औरतोंमें एक विधवा है। तब यह तो निर्विवाद है कि इतनी बड़ी संख्यामें और उस पर भी जब उनमें शिक्षाका अभाव, कुरीतिका प्रचार, एवं कुसंस्कारोंका प्राबल्य है आप यह कैसे आशा कर सकते हैं कि वह आजन्म पतिकी स्मृतिको धारण करके परम कठोर ब्रह्मचर्यव्रत परिपालन कर सकेगी। ब्रह्मचर्यकी कठोर साधना तो विधवाका आदर्श है ही, पर यदि वह उस साधनाको, कठोरताके कारण, उसमें सिद्धि प्राप्त करनेमें अक्षम हो, तो क्या उसे एक बारही विपथ पर चलनेको बाध्य करना ही धर्म संगत है ? हिन्दूधर्मका बच्चा बच्चा जानता है कि मोक्षकी प्राप्ति ही प्रत्येक मनुष्यका परम पुनीत कत्तव्य है परन्तु क्या हिन्दूसमाजके समस्त सभ्य उस मोक्षकी ही प्राप्तिकी सदा चेष्टा करते हैं और क्या मोक्ष प्राप्तिके साधनोंसे इतर कर्मोंको करनेपर उनके लिये किसी प्रकार की व्यवस्था की गई है ? नहीं; यह असम्भव है। हमें आदर्शकी परम रम्य मूर्तिकी कल्पना करते समय यह कदापि न भूल जाना चाहिये कि इस विश्वमें ऐसे महापुरुषों की संख्या उंगली पर गिनी जा सकती है, जो ऊंचे उठ सके हैं। तब ऐसी स्थितिमें हमारा क्या कर्त्तव्य है ? हम इसी प्रश्न पर थोड़ासा विचार करेंगे।

यह हम सभी जानते हैं कि वासना की उत्पत्ति और विकास प्राकृतिक है अतः स्वाभाविक है। इस स्वाभाविक प्रकृतिका दमन यदि संभव न हो सके तो उसे ठीक तौरसे परिचालन करनेमें ही समाज का कल्याण और देशका हित है। हम प्रति दिन इस बात को देखते हैं और इसी वासना के कारण अनेक विधवायें कुमार्गगामिनी होती हैं; अनेक विधवायें विधर्मियों की शरणमें चली जाती हैं; अनेक अभागिनी नारियाँ वेश्या बननेको बाध्य होती हैं और अनेक पतित विधवाएं भ्रूण हत्या जैसे नृशंस कर्म को भी विवश होकर करती हैं। तब ऐसी स्थितिमें यह स्पष्ट ही है कि उनकी वासना की गति ठीक मार्गपर परिचालित नहीं होती है। ब्रह्मचर्य का परिचालन सबके लिये संभव नहीं और जिनके लिये है वह सहस्र सहस्र बार आग्रह करनेपर भी कदापि विवाह करने को उद्यत नहीं होगी। वे देवियां हैं, महासती हैं, विवाह प्रस्ताव उनके लिये नहीं है। पर जो ब्रह्मचर्यसे नहीं रह सकतीं, यौवनके उद्दाम वेग से जो समय समय पर विह्वल हों; और उसी विह्वलतामें विपथ गामिनी हो जाती हैं उनके लिये विवाह की व्यवस्था दे देना सर्वथा उचित है, न्याय्य है। हम मानते हैं कि यह आदर्श नहीं है पर अवश्य ही यह बीच का मार्ग है और घोर पतन से हजार गुना अच्छा है। बहुतसे सज्जन इस बात पर यह आक्षेप करते हैं, कि इस प्रकार का आदर्श रखने से बहुत-सी, वे स्त्रिया भी, जो किसी न किसी भांति ब्रह्मचर्य रखती हैं, स्त्रियां विवाह करनेके लिये लालायित हो उठेंगी और फिर ब्रह्मचर्यव्रत का आदर्श एक बार ही विनष्ट हो जायगा। हमारी दृष्टि से यह आशंका सर्वथा निर्मूल है और सैद्धान्तिक दृष्टि से भी हानिकारिणी है। जो स्त्रियाँ येन केन प्रकारेण ब्रह्मचर्यव्रत धारण करती हैं वह वास्तवमें पुण्य नहीं, पाप करती हैं। गोस्वामी तुलसीदासजीके कथनानुसार ऐसी स्त्रियाँ जो कल्लाजसे, अवसर न मिलनेसे अथवा और किसी लौकिक भयसे ब्रह्मचर्य धारण करती हैं निकृष्ट श्रेणीमें मानी गयी हैं। "कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन्, इन्द्रियार्थान्विमूढ़ात्मा मिथ्याचारः स उच्यते" (गीता ३-६) अर्थात् जो स्त्रियाँ कर्मेन्द्रियको दमन करके मन ही मन उन इन्द्रियोंके विषयकी चिन्ता करती रहती हैं वे मूर्ख हैं और उनका यह व्यापार मिथ्याचार है। हमारी दृष्टिमें ऐसी स्त्रिया यदि विवाह बन्धनमें बंधकर मिथ्याचारसे छूट जांयगी तो उससे धर्मकी हानि नहीं वरन धर्मका अभ्युदय ही होगा।

पूर्ण ब्रह्मचर्य को जो स्त्रियां परिपालन न कर पावें, उन्हें विवाह–बन्धन रूपी मार्ग का अनुसरण करना चाहिये और अपनी उस वासना को विपथगामिनी होनेसे बचाना चाहिये। तर्क, न्याय, मीमांसा चाहे किसी का आश्रय ले लीजिये पर आप यह कदापि प्रमाणित नहीं कर सकते कि समाजमन्दिर में भ्रूणहत्या, व्यभिचार, अनाचारका प्रवेश भले ही हो जाय पर विधवा–विवाह का मंगलगान नहीं हो सकता। बड़ से बड़े पंडित भी यह कभी नहीं कह सकते कि विधवा–विवाहसे भ्रूणहत्या अच्छी, विधवाविवाह से व्यभिचार अच्छा, विधवाविवाहसे विधवा का वेश्या बनना अच्छा, विधवा का हिन्दूसे विवाह ठीक नहीं पर विधवा का एक यवनके साथ गुप्त पलायन कहीं श्रेयस्कर है !

विधवाओं के सम्बन्ध में समय२ पर गांधीजीने अपने पवित्र उद्गार प्रकट किये हैं उनसे हमें यही आभासित होता है कि वे स्वयं ऐसी स्थिति में विधवा–विवाह के पक्षपाती हैं। उन्होंने यह स्पष्ट कह दिया है कि "वैधव्यव्रत अति सुन्दर होते हुए भी अत्यन्त कठोर है और जो उस व्रत के परिपालन में पूर्ण समर्थ नहीं हैं वे व्यभिचार की अपेक्षा विवाह करके ही सुखी हो सकती हैं।" चाहे कुछ हो, उनके मर्म को हम ठीक समझ सके हों पर हमारा यह निश्चित विश्वास है कि विधवाओं का विवाह अधर्म संगत नहीं है।

"नष्टे मृते प्रव्रजिते क्लीवे च पतिते पतौ। पंचस्वापत्सु नारीणां पतिरन्यो विधीयते।" अर्थात् यदि पति मर जाय, नपुंसक हो जाय, नष्ट हो जाय, कहीं चला जाय अथवा पतित हो जाय तो ऐसी पांच प्रकारकी आपत्तियोंमें स्त्रियोंको दूसरा पति वरन कर लेनेकी आज्ञा है।

पत्रोंमें देश और जाति सुधार के अनेकों लेख लिखे जाते हैं परन्तु गृहस्थ सुधारकी ओर बहुत कम ध्यान दिया जाता है। कोई भी सुधार तबतक पूरा न होगा जबतक घरोंके अन्दर स्त्रियोंकी दशा न सुधारी जाय। जिस जातिकी स्त्रियाँ दुःखी हैं वह जाति क्या उन्नति कर सकती है ? महिलाओंकी एक सभामें श्रीमती सरोजिनी नाइडूने कहा था–

"Unless we realise that the social foundations of our life are the only true foundations of Swaraj, we shall never realise the ideal of Swaraj. Freedom is a sham and mockery if it does not give freedom to the three crores of Hindu widows."

अर्थात् जब तक हम लोग इस बात का अनुभव न करले कि स्वराज्य की सच्ची नींव हम लोगोंके सामाजिक जीवन की ही नींव है तब तक हम स्वराज्यके आदर्श को नहीं समझ सकते। जब तक हम लोग तीन करोड़ हिन्दू–विधवाओं को स्वतंत्र नहीं कर सकते तब तक स्वतंत्रता केवल मिथ्या और विडम्बनापूर्ण है।

(पृष्ठ १४ का शेषांश)

इन बातोंके अलावा श्रीकृष्णने कुछ अन्य ऐसे कार्योंको भी किया जिन्हें हम समाजकी उन्नतिके लिये आवश्यक समझते हैं। वे मित्रताके आदर्श थे। सुदामाके प्रति उनका कितना अधिक प्रेम था ! नाम सुनते ही राज्य सिंहासन छोड़कर भागे और प्रेमपूर्वक मिले। सुदामाके चरण धोनेके लिये उन्हें नौकरों की जरूरत नहीं पड़ी। रानियाँ खड़ी खड़ी तमाशा देख-रही थीं—पानीसे भरी परात सामने धरी की धरी ही रह-गई, उसे छुआ भी नहीं और सुदामाके पैर धुए गये। कैसे ? "पानी परात को हाथ छुओ नहिं, नैनन के जल सों पग धोये" ! धन्य सुदामा तुम्हारे भाग्य जो ऐसा मित्र पाया ! धन्य है कृष्ण तुम्हारी मित्रताको। आज समाजमें कृष्णसरीखे मित्र कितने हैं ?

आज श्रीकृष्ण भगवान् की भाँति पूजे जाते हैं। वे समालोचना से परे हैं। 'भक्त लोग' उनके नाम पर हजारों लाखों रुपया खर्च करने को तैयार हैं परन्तु यदि उनसे श्रीकृष्णके इन गुणोंका अनुसरण करनेके लिये कहा जाय तो वे कदापि तैयार न होंगे। आज यदि श्रीकृष्ण स्वयं ही कोई अन्य नाम धरकर यहा अवतरित हों और पुनः उन्हीं कार्यों को करें तो यह देखकर उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहेगा कि उन्हींके तथा–कथित 'भक्त' उनका सबसे जबरदस्त विरोध करते हैं। क्या यही श्रीकृष्ण की 'भक्ति' है ? क्या 'भक्तों' का यह आचरण उनके लिये शोभनीय है ! क्या अब भी वे श्रीकृष्णके सच्चे अनुयायी बनकर सामाजिक रूढ़ियों को तोड़ने की हिम्मत कर सकेंगे ? [इन्दौर

राय साहेब रेखचंद मोहता

स्पिनिंग ऐण्ड वीविंग मिल्स

हिंगणघाट (सी. पी.)

हिंगणघाट की महशूर रूई से बनाया हुआ सुन्दर और टिकाऊ कपड़ा इस्तेमाल कीजिये

★ ★ ★

हमारी शाखाएँ

मथुरादास गिरधरदास
नागपुर, गोंदिया, बारासिवनी

रा. सा. रेखचंद मोहता
राजनंदगांव, दुग, भाटापारा, अकलतारा

मथुरादास मोहता
झारसुगड़ा (B. N. R.)

इस मिल में हर प्रकारका सूत व धुला कोरा कपड़ा, लाँगक्लाथ, शर्टिंग, धोतियां, साड़ियां, हरक, गादीपाट, सफेद एवं रंगीन चादरें, टावेऊस, टेबल क्लाथ आदि कपड़ा बनाया जाता है।

ट्रेडमार्क

लक्ष्मीनाथजी की छाप
पान छाप

● सूतका ट्रेडमार्क ●

राय साहेब रेखचंद मोहता
(सेठ छाप)

★

हमारी खास विशेषताएँ

इस मिल में कपड़ेपर माड़ी बिलकुल आवश्यक तथा वहुत कम प्रमाणमें दी जाती है। इसलिये निख़ालिस सूत कपड़ेमें रहने के कारण कपड़ा धोनेके बाद बहुत अधिक टिकाऊ तथा मुलायम एवं सुन्दर निकलता है।

बाज़ार में कपड़ा ख़रीदते समय इसी मिलकी छाप देखकर ख़रीदिये और अपने पैसोंका सदुपयोग करके प्रसन्नता प्राप्त कीजिये।

साधारण जनता की परिस्थिति एवं उसकी मांग की ओर विशेष ध्यान देकर कपड़ा बनाया जाता है।

लोकप्रियताका अकाट्य प्रमाण] **रूबी प्रगति पथपर** [दृढ़ता का सच्चा सबूत

१००%

- स्वदेशी
- टिकाऊ
- दृढ़

बीमा कंपनी

प्रगतिके आंकड़े

विभाग	प्रीमियमकी आवक	
	सन् १९३७	सन् १९४०
आग	रु. ६,५५,०४७	रु. १४,१७,०११
मोटर और अकस्मात	रु. ७३,९८६	रु. २,४६,७८१
समुद्रीय	रु. ७२,२८१	रु. ४,६६,५९०
पूंजी	रु. १७,९४,३४२	रु. २७,९४,१४५
जिंदगी		१९४० के प्रथम वर्ष में किया
गया कामकाज		रु. ३०,६५,१००

- आग
- मोटर
- अकस्मात्
- जिंदगी
- समुद्रीय

और

- मजदूरोंके बदले आदि के बीमेका कामकाज किया जाता है

रूबी जनरल इन्श्युरंस कं. लि.

टे. नं. २०५६० और ३१९२९
टेलिग्राम्स 'सनशाइन'
'SUNSHINE'

चेअरमैन
श्री बी. एम. बिड़ला

जनरल मैनेजर इनचार्ज, बम्बई डिविज़न
श्री बी. के. सेतलवाड़

ऑफिस—४५-४७ अपोलो स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई

हिन्दू समाज और स्त्रियाँ

(श्री प्रह्लादरायजी चौधरी)

आजकल समानताका युग है। प्रत्येक समाज अपने भिन्न अंगोंमें बराबरीका व्यवहार चाहता है। हमारे समाजकी भी यही प्रवृत्ति देखी जाती है। इसमें अछूतों व स्त्रियोंके स्थानोंको परखने लगे हैं। आजकल समाजके इन्हीं अंगों की ओर जनताका विशेष ध्यान है। हमें यहां स्त्रियोंके सम्बन्धमें ही विवेचन करना है।

प्राचीन कालमें स्त्रियोंकी दशा कितनी अच्छी थी! उनका स्थान पुरुषोंके समान था। वे पुरुषों की अर्द्धांगिनियां समझी जातीं थीं। उनका समाजमें आदर होता था। वे पुरुषोंके साथ बैठकर शास्त्रार्थ करती थीं। जैसे स्त्रीको पातिव्रत धर्मका पालन करना पड़ता था वैसे ही पुरुष को उसका आदर करना पड़ता था। उसको समानाधिकार देने पड़ते थे। स्त्रियां अपने पतिकी योग्य सहचरी होती थीं। अपने पतिको सहायता देती थीं। स्त्रियाँ शिक्षित होतीं थीं। उन्हें सब बातों का अच्छी तरह से ज्ञान था। उनका समाज में आदर होता था। कहना होगा कि उनका समाजमें ऊंचा स्थान था।

लेकिन आजकल समाजमें स्त्रियों का स्थान बहुत ही नीचा है। उनकी दशामें काफी परिवर्तन हो गया है। समाजने उन्हें दासत्व की बेड़ियोंसे जकड़ रखा है। उनको कुछ भी अधिकार नहीं हैं। उनको विलास का उपकरण समझ रखा है—पुरुष स्त्री को पैर की जूतीके समान समझते हैं। वे समझ बैठे हैं कि जिस प्रकार पैर की जूती फटने पर दूसरी बदली जा सकती है उसी प्रकार अगर स्त्री मर जायगी तो दूसरी आजायगी। चाहे स्त्री पति की सेवा कितनी ही करे तो भी समाजमें उनका कोई ऊंचा स्थान नहीं है। उसके साथ दासी सा व्यवहार होता है। वस्तुतः पातिव्रत धर्म की आड़में स्त्रियों को गुलामी की बेड़ियोंमें जकड़ रखा है। जहां पूर्वजों ने स्त्रियों को पतिव्रता होना आवश्यक ठहराया है वहाँ पुरुषों को पत्नीव्रत होना भी। यदि पत्नीका प्रधान धर्म पति-सेवा है तो पुरुषका प्रधान धर्म भी स्त्रियों का आदर करना व उनको समानाधिकार देना है। परन्तु प्रायः आजकल देखा गया है कि पुरुष तो अपने धर्म का पालन ही नहीं करते और चाहते हैं कि स्त्रियां अपने धर्म का पालन करें। पुरुष वर्ग इतना ही नहीं बल्कि स्त्रियोंके अधिकारों का भी अपहरण करता है। साथ ही उनके साथ पैशाचिक अत्याचार भी करता है।

आजकल हमारे समाजमें व खास तौरसे राजस्थानमें बालविवाह का अधिक प्रचार है। पुरुष अपनी १०–११ वर्ष की कन्याओंका विवाह कर देते हैं। साथमें यह नहीं देखते हैं कि लड़का छोटा है या बड़ा है। वे तो देखते हैं सिर्फ धनको। वे सिर्फ विवाह करनेमें ही कर्त्तव्य समझते हैं। भविष्यके बारेमें कुछ भी नहीं सोचते। लड़कियाँ विवाह शब्द व पति शब्द का अर्थ ही नहीं जानतीं कि उनके पिता उनको दूसरों के गले मढ देते हैं। वहां उनको सास, ननद जो कुछ भी कहती हैं सुनना पड़ता है। सुसराल में उनके साथ अच्छा व्यवहार नहीं होता फिर जब कि उसके अंग पूर्ण विकसित भी नहीं होते कि वह पति की कामवासना का शिकार बन जाती हैं। इससे उसके स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। कभी कभी तो ऐसी नौबत आती है कि वह बच्चा जनने के समय ही मर जाती है। उनकी संतान भी प्रायः जीवित नहीं रहती। और अगर जीवित रहती है तो भी अस्वस्थ। बतलाइये वह बालपत्नी समाज के इस अत्याचार का क्या जवाब दे। कभी कभी तो मां बाप धन के लोभ में फंसकर लड़की की सगाई वृद्ध के साथ कर देते हैं। इसका दुष्परिणाम यह होता है कि कुछ अर्से बाद वह विधवा हो जाती है। और आजन्म कष्टमय जीवन व्यतीत करती है। समाज के कठोर नियमानुसार वह पुनः विवाह भी नहीं कर सकती। देखिये समाज का अत्याचार! लेकिन आजकल हमारे सुधारवादी नेता इस प्रथा को हटाने का खूब प्रयत्न कर रहे हैं।

हिन्दू समाजमें विधवाओंको पुनः विवाह करनेका अधिकार नहीं हैं। यह भी उनके साथ अन्याय है। यद्यपि कानून उनका साथ देता है लेकिन वह समाजके भयसे नहीं कर सकते। जहाँ पुरुषोंको एक स्त्रीके मर जाने पर दूसरा विवाह करनेका अधिकार व एक स्त्रीके होते हुए अनेक विवाह करनेका अधिकार है तो स्त्रियोंको पतिकी मृत्युके बाद उनकी इच्छानुसार पुनः विवाह क्यों नहीं करने देते। यह सरासर स्त्रियोंके साथ अन्याय व अत्याचार नहीं तो क्या है? पतिकी मृत्युके बाद स्त्रीको कितना कष्टमय जीवन व्यतीत करना पड़ता है, यह सबको मालूम है। अन्तमें परिणाम यह होता है कि वह छिपे छिपे व्यभिचार करने लग जाती हैं। इससे समाज कलंकित होता है। फिर भी समाज इन बातों पर ध्यान नहीं देता। मेरा कहनेका मतलब यह नहीं कि विधवाविवाह अनिवार्य कर दिया जाय लेकिन जो छिप छिप कर व्यभिचार करती हैं उनके लिये अनिवार्य करना आवश्यक है। सुशीला व साध्वी स्त्रीके लिये पुनः विवाह करना कोई आवश्यक नहीं।

अब लीजिये पर्दा प्रथा को। इस कुप्रथासे समाजको कितनी हानियां हैं, यह सबको विदित है। फिर भी इसे हटाने का कोई प्रयत्न नहीं करता। इस कुप्रथासे निम्नलिखित मुख्य हानियां हैं।

१ उनकी शिक्षामें बाधा पड़ती है।
२ उनका स्वभाव भीरु बनता है।
३ उनका स्वास्थ्य बिगड़ जाता है।
४ वे सांसारिक अनुभवसे वंचित रहती हैं।

इतनी हानियां होते हुए भी पुरुष इसे हटाने की कोशिश नहीं करते। बेचारी स्त्रियों का तो इसमें दोष ही क्या है। कारण वे तो अशिक्षित हैं। उन्हें अपनी हीन स्थितिका भी ज्ञान नहीं। वे अपने घरके मनुष्यसे तो बोलनेमें हिचकिचाती हैं, पर्दा रखती हैं लेकिन बाहर आने वाले बिसाती व चूड़ी बेचने वालों से उनका पर्दा नहीं रहता। वे उनसे खुले मुंह बात करती हैं। यह पर्दा प्रथा एक ऐसी कुरीति है जो अनेकों कुरीतियों की जननी है। अगर आज समाज से यह कुप्रथा उठ जाय तो समाज काफी उन्नति कर सकता है। इससे उपरोक्त सब कुरीतियां नष्ट हो जायंगी व समाज उन्नति करने लग जायगा।

हमारे समाजकी स्त्रियों में आभूषण प्रियता बहुत है। स्त्री हर वक्त पति को आभूषण बनानेके लिये कहती रहती है। स्त्रियाँ समझती हैं कि आभूषण ही शरीरके सौन्दर्य को बढ़ाने वाली वस्तु है। वे शरीर की स्वच्छता व वस्त्रों की सफाई पर उतना ध्यान नहीं देतीं जितना कि आभूषणों पर। उन्हें यह नहीं मालूम कि सौन्दर्य का संबंध स्वास्थ्यसे है। क्रीम, पाऊडर व आभूषणोंसे शरीर सुन्दर नहीं होता। स्त्रियों की आभूषण प्रियताके कारण गरीबों को पेट भर भोजन नहीं मिलता। कैसा ही गरीब क्यों न हो उसे अपने भोजन में किसी न किसी प्रकार की कमी करके अपनी स्त्री को संतुष्ट रखने के लिये आभूषण लानेही पड़ते हैं। चाहे पीने को दूध न मिले, खाने को फल न मिले, पर चाहिये स्त्रीके लिये आभूषण। स्त्रियाँ इसी आभूषण प्रियताके कारण अपने प्राण गंवा बैठती हैं। देखिये! स्त्रियां तो आभूषण पहनती ही हैं लेकिन बचपनसे ही वे अपने बच्चों को भी आभूषण पहनाने लग जाती हैं—इसका दुष्परिणाम यह होता है कि दुष्ट गुंडे व औरतें उन्हें उड़ाकर ले जाती हैं व उनके जेवर खोलकर उनको कुआँ में पटक देती हैं। ऐसा होते भी आप लोग इस तरफ ध्यान नहीं देते।

हिन्दू समाजमें स्त्रियों को धनाधिकार नहीं है। पतिके धनमें पत्नीका कोई भाग नहीं होता। पतिकी मृत्युके पश्चात् पत्नी, अगर वह निःसन्तान हो या अभी उसकी संतान छोटी ही हैं तो उसे रोटी कपड़ा मिलना भी दुश्वार हो जाता है। हिन्दू समाज ने स्त्रियोंके लिये "स्त्रीधन" की जो व्यवस्था की है वह प्रधानतः मातापिता व सम्बन्धियों द्वारा दिया हुआ धन ही होता है और वह भी इतना कम कि इससे स्त्री अपना भरण पोषण नहीं कर सकती। आखिर बहुत परिश्रम करनेपर भी भरपेट भोजन नहीं मिल सकता। इसलिये समाज को इस तरफ भी अपना ध्यान आकर्षित करना चाहिये।

हमारे समाजमें प्रचलित वैवाहिक नियम भी स्त्रियोंके अधिकारों का अपहरण करते हैं। आजकल लड़की का पिता उसके लिये वर ढूंडता है। जहां पूर्व समयमें स्वयंवर की प्रथा प्रचलित थी वहां आज लड़की की इस कार्यमें स्वीकृति भी नहीं ली जाती। इसका परिणाम कभी कभी भयंकर होता है। यदि पति पत्नी की प्रकृति का न मिली तो दोनों का जीवन कंटकाकीर्ण हो जाता है। कभी कभी उनमें घोर शत्रुता हो जाती है। वे कभी फिर अलग भी नहीं हो सकते। इससे आजकल का वैवाहिक बंधन और भी दुखदायी है। अच्छा हो यदि पतिके चुननेमें स्त्री का भी कुछ हाथ रहे।

हिन्दू स्त्रियों की शोचनीय दशाका प्रधान कारण उनकी अशिक्षा है। आजकल अधिकांश स्त्रियां बिना पढ़ी लिखी होती हैं। इससे उन्हें अपने अधिकारों का भी ख्याल नहीं है। शिक्षा का अभाव अधिकतर राजस्थानमें है। राजस्थानमें ऐसे ऐसे धनिक पुरुष मौजूद हैं जो लखपति होते हुये भी अपने लड़कों को पूर्ण शिक्षा नहीं दिलाते। जब वे अपने पुत्रों को पढ़ानेमें ही अपना धन व्यय नहीं करते तो भला अपनी पुत्रियों को तो क्या पढ़ायेंगे? धिक्कार है ऐसे धनवानों को! उनका धन किस दिन काम आयगा? राजस्थानमें कुछ जगह कन्यापाठशालायें अवश्य हैं लेकिन उनमें उनको पर्य्याप्त शिक्षा नहीं मिलती। स्त्री शिक्षाके अभावके कारणही हमारा समाज उन्नति नहीं कर रहा है। शिक्षित नहीं होनेके कारण स्त्रियां अपने जीवन की उपयोगिता नहीं जानतीं, न समाज अथवा देश की ही कोई भलाई कर सकती हैं।

हर्षका विषय है कि इधर विशेष शक्तिसम्पन्न व्यक्तियोंके आविर्भावसे देशमें जागृति हो रही है। क्या राजनैतिक, क्या धार्मिक, क्या सामाजिक सभी क्षेत्रोंमें उथल-पुथल मच रही है। समाजकी कुरीतियाँ दूर हो रही हैं। स्त्रियोंकी दुर्दशा सुधारी जा रही है। उन्हें शिक्षित बनाया जा रहा है। बालविवाह को रोकनेके लिये शारदा एक्ट बन गया है। पर्दा प्रथा टूटती जा रही है। स्त्रियोंको धनाधिकार भी मिल रहे हैं। लेकिन अभी यह सुधार कुछ ही प्रान्तोंमें हुये हैं। राजस्थान व अन्य प्रदेश इनसे वंचित हैं। इसलिये नवयुवक वृन्द! आवो, तुम भी कार्यक्षेत्रमें कूदो। इन कुरीतियोंको हटानेके लिये क्रियात्मक योजना कार्य रूपमें लाओ। आशा है, निकट भविष्यमें स्त्रियोंका स्थान समाजमें पुरुषोंके बराबर हो जायगा और वह पुरुषकी योग्य सहचरी बनकर देश व जातिकी भलाई करनेमें पुरुषोंसे पीछे नहीं रहेंगी।

श्रीनिवास कॉटन मिल्स लिमिटेड

बंबई

अपने कलापूर्ण, सुन्दर और टिकाऊ कपड़े के लिये मशहूर है।

★

ट्रेड नेम्स

नरेन्द्र गोल्डन प्लम एस. एन. सी. फॉक्स ग्लोब नगेन्द्र	धुला लांग क्लाथ
के के के के के ओ ओ ओ ओ ओ हिन्दनो ताज असली फूल बनर्जी यू. पी. एक्सप्रेस सी. पी. एक्सप्रेस मारवाड़ एक्सप्रेस	धुली धोतियां व साड़ियां
डायमण्ड हाल डायमण्ड चेन डायमण्ड बैटरी बंगाल फैशन प्रोमिनेंट लीडर प्रोमिनेंट फैशन	धुली या कोरी पॉपलीन
फ्लाइंग मून मालिनी मिस बिब्बो	चेक वायल

आदि आदि

★

इस मिल में सब प्रकार का धुला व कोरा कपड़ा—लांग क्लाथ, शर्टिंग, वायल, धोतियां, साड़ियां, मलमल, छपी हुई—छींट, वायल, बोस्की आदि कपड़ा विविध डिज़ाइनों और रंगों में तैयार होता है।

यदि आप उत्तम-सुन्दर-कलापूर्ण, टिकाऊ तथा सस्ता कपड़ा चाहते हैं, तो हमारे मिल के बने हुये कपड़ों से आप को पूर्ण संतोष मिल सकेगा—क्योंकि यह मिल भारतकी सामाजिक, आर्थिक अवस्था, तथा सर्वसाधारण की रुचि को लक्ष्य में रखकर ही सब प्रकार के वस्त्र तय्यार करती है।

बाज़ार में कपड़ा खरीदते समय इसी मिल का कपड़ा खरीदिये।

इस मिल का बना कपड़ा इस्तेमाल कर आप निश्चय ही प्रसन्न होंगे।

★

ट्रेड मार्क

- महाल
- पेटल ब्यूटी
- गोल्डन प्लम
- फॉक्स ग्लोव
- श्रीरामपंचायतन
- चार्मिंग ब्यूटी
- माधुरी
- मुरली
- ईस्टर्न ब्यूटी
- सेक्रेड फ्लूट
- श्रीराम

★

—हमारी विशेषता—

रेडियोगर्ल और **नरेन्द्र** क्वालिटी का धुला लांगक्लाथ—इसे बरतकर आप अवश्य सन्तुष्ट और प्रसन्न होंगे।

— हमारे सेलिंग एजेण्ट —

बम्बई
दी बम्बई एजन्सी कम्पनी लिमिटेड
सर विट्ठलदास गली,
मूलजी जेठा मार्केट, बम्बई नं० २

कलकत्ता
मंगनीराम रामकुमार
६५ बाँसतल्ला स्ट्रीट
कलकत्ता

कानपुर
ज्वालाप्रसाद राधाकिशन,
काहू कोठी, कानपुर

अमृतसर
शामदास कपूर एण्ड कम्पनी
कटरा अहलुवाल
अमृतसर

दिल्ली
हनुमानप्रसाद धूत एण्ड कम्पनी
कटरा नवाब
देहली

पत्र-व्यवहार का पताः—

श्रीनिवास कॉटन मिल्स लिमिटेड
डिलाइल रोड, बम्बई नं. १३.

क्या सुधारक दोषी हैं?

श्री द्वारकादासजी काबरा, बी. काम. (प्रीवियस)

बहुत वर्षों से सुधार किया जा रहा है, लेकिन जब हम अपने सुधारका हिसाब लगाने बैठते हैं तो हमें ज्ञात होता है कि हमने अपनेमें और समाजमें कोई अधिक सुधार नहीं किया और समाज की आज भी गये गुजरे जमानेसे कोई विशेष अच्छी अवस्था नहीं है। हाँ, हमने अगर किसीमें उन्नति नामकी कोई चीज़ की है तो वह बोलनेमें की है। पंडाल में खड़े होकर प्रभावशाली व्याख्यान देनेमें हम अपने पूर्व पुरुषोंसे अवश्य अधिक निपुण होगये हैं। यह निपुणता एवं वाक्-पटुता हमें बड़े मँहगे मूल्य पर मिली है। केवल इस निपुणता को प्राप्त करनेके प्रयासमें हमने हमारी स्वयं की शिक्षा पर भी आचरण करना छोड़ दिया है। हम जो कुछ कहते हैं वह दूसरोंके लिए कहते हैं और अपने उपदेशों को अपने पर लागू नहीं समझते। हम भूल गये हैं कि जब तक हम अपना सुधार नहीं कर लेते तब तक दूसरों को सुधार करने का क्या अधिकार रखते हैं, एवं हमारे ऐसे आचरण का जनमत पर क्या प्रभाव पड़ सकता है? अपना घर साफ-सुथरा किये बिना दूसरे को उसका घर साफ-सुथरा रखनेके लिए कहना कोई मूल्य नहीं रखता। बस, इसी कारण आजकलके सुधारकों पर आवाजें कसी जाती हैं और उनसे कहा जाता है "प्रत्यक्ष कृति करो," केवल जबानी जमाखर्चसे काम नहीं चल सकता।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि सुधार बहुत अंशोंमें सुधारकों पर ही अवलम्बित है। अगर सुधारक अपने वचनोंका पालन न करेंगे और समय पर पीठ दिखा देंगे तो समाजपर उनका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा और अगर पड़ेगा भी तो क्षणिक और अस्थायी। उस समयको आते देर नहीं लगेगी जब कि उस सुधारकी कलई खुल जावेगी और समाजमें उसकी प्रतिष्ठा क्षीण हो जावेगी। वह केवल झूठा और बकने-झकनेवाला समझा जावेगा। अतः सुधारकको केवल 'पर उपदेश कुशल' नहीं होना चाहिये, बल्कि होना चाहिये 'आत्म उपदेश कुशल'। कहावत है कि 'उदाहरण उपदेशसे उत्तम है'। अगर सुधारक 'उदारता घरसे आरंभ होती है' (Charity begins at home) वाले सिद्धान्तका पालन करें तो श्रेष्ठतर है। क्योंकि यह असंदिग्ध रूपसे कहा जा सकता है कि अगर कोरा उपदेश न देकर उदाहरण पेश किया जाय तो फिर सुधार की समस्या हल होते देर न लगेगी और वह दिन दूर न होगा जब कि हम अपनेको अत्यधिक सुधरा हुए पायेंगे।

पर हमारे प्रस्तुत लेख का विषय इससे कुछ भिन्न है। हमको देखना यह है कि क्या सारा दोष सुधारकों का ही है और क्या उसको उनके ही सिर मढ़ देना उचित है या जनसाधारण भी इसके लिए दोषी ठहराया जा सकता है?

सच तो यह है कि सुधारकों को सुधारके लिए जितना दोषी ठहराया जाता है वे उतने दोषी नहीं हैं। सुधारक का स्थान वास्तव में अत्यन्त उत्तरदायित्व पूर्ण है और प्रत्येक सुधारक को सुधार के पथ-कंटकाकीर्ण पथ पर पैर रखने से पूर्व दो बार सोचना पड़ता है। पर हमने आजकल उनको अकारण ही लांछित कर उनके मार्ग को अधिक संकटमय बना डाला है। हम चाहते हैं कि सारा काम सुधारक ही हमारे लिए कर डालें। हम अपने ऊपर किसी भी प्रकार का दायित्व लेना पसंद नहीं करते। सुधारक से ही यह आशा करते हैं कि हमें बना-बनाया सीरा परोस दे और हम उसे चट कर जावें। जब यह आशा पूरी नहीं होती, जिसका होना भी संभव नहीं, तो इसके लिए सुधारकों को दोष देते हैं। 'उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे' यह कहावत यहाँ पर पूर्णतया चरितार्थ होती है। अपने हिस्से का काम दूसरोंपर डाल कर उनको दोषी ठहराना कहाँतक न्यायसंगत है? **हमको यह स्पष्टतया जान लेना चाहिये कि सुधार केवल कतिपय सुधारकोंके द्वारा ही नहीं हो सकता, बलिक इसमें जनसाधारण का भी बहुत बड़ा हिस्सा है और मैं तो यही कहूँगा कि वही अधिक महत्वपूर्ण है।** अगर किसी सुधारकके उपदेशसे एकसौ परिवार सुधर जाते हैं तो कोई वजह नहीं कि हम उस सुधारक को अपना सुधार न करनेके लिए दोष दें। समाजको उस सुधारकके प्रति कृतज्ञ होना चाहिये और उसका भारी अहसान मानना चाहिये। जब समाज उसका आदर करेगा और उसके उपदेशों पर चलेगा तो वह स्वतः ही अपने आदर्शों पर आचरण करने लग जावेगा। हमें इस बातको न भूल जाना चाहिये कि किसी काम को करनेके लिए दूसरोंको न कहकर स्वयंही आरंभ कर देना चाहिये। धीरे धीरे हमारे असहयोगी भी सहयोगी बन जावेंगे। इसलिए सुधारकके सुधरे हुए विचारोंसे लाभ उठाकर उनको अपनाइये, फिर सुधारक भी अपने विचारोंको अपनाने लग जावेगा।

इसके साथ ही आपको यह भी समझ लेना चाहिये कि सुधारक आपका नौकर नहीं है जिससे आप सारा काम ले डालें और एक जगह पड़े-पड़े ही अपनी इच्छाओंकी तुष्टि करलें। **सुधारक सच्चे अर्थोंमें आपका मार्ग-दर्शक है। उसका कर्तव्य केवल आपको सच्चा आर सही मार्ग दिखला दना है फिर उस पर चलना आपका कर्त्तव्य रह जाता है।** इसलिए जो व्यक्ति सुधारकोंको अपराधी समझता है पहले उसे स्वयं अपने हृदयको टटोलकर देखना चाहिये कि वह स्वयं कितना बड़ा अपराधी है, जो अपना काम भी सुधारक पर ही डालना चाहता है। इसके अतिरिक्त उसे यह भी सोचना चाहिये कि सुधारक **अपनी वाणीद्वारा ही सही, दूसरोंको सुधारनेका प्रयत्न तो करता है, पर म अपने आचरण (जिसपर कि हम अधिक जोर देते हैं) द्वारा उसको शुभ कार्यमें बाधा पहुँचाता हूँ।** अब आप ही निर्णय कर लीजिये कि अपराधी कौन है? सुधारक या जन साधारण?

सबसे बड़ा दोष जो सुधारकों पर लगाया जाता है वह है 'पर उपदेश कुशलता' अथवा आचरण हीनता का। लोग कहते हैं कि 'सुधारक बड़े लम्बे-चौड़े व्याख्यान झाड़ता है, परन्तु स्वयं उनपर कभी नहीं चलता। वह तो उन पंडितजीकी तरह है जो बाहर तो बेंगन न खानेका उपदेश देते हैं, परन्तु स्वयं घरमें पंडिताइनसे बेंगनका साग बनवाकर खाते हैं। कुछ तो यहाँतक कह डालते हैं कि सुधारक हमारे सामने एक धोखेकी टटी खड़ी करता है जिसकी ओटमेंसे वह समाज और उसके व्यक्तियों का शिकार करता है। उसके सब उपदेश केवल दिखावेके लिए होते हैं। वास्तवमें 'हाथीके दांत खाने और दिखानेके अलग अलग होते हैं।'

ठंडे दिमागसे अगर विचार किया जाय तो हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि यद्यपि जो कुछ सुधारकोंके विषयमें ऊपर कहा गया है वह असत्य नहीं है, परन्तु अतिशयोक्तिपूर्ण अवश्य है। हमने उपर्युक्त बातें सुधारकोंके विषयमें कहकर उनके साथ बड़ा भारी अन्याय किया है जिसकी कोई अपील नहीं। **जिनकी भलाईके लिए वह प्रयत्नशील है, अगर वे ही उसको भला-बुरा कहेंगे तो भला उसको सुधारमें क्या रस आ सकता है, और समाजके ऐसे कटु वचनों से उसके दिल पर क्या बीतती होगी इसे कोई कैसे बतावे? उसकी अच्छी बातों को ग्रहण करनेके स्थानमें हम हमेशा उनके दोषों को ढूँढनेमें लगे रहते हैं।** अपना समय छिद्रान्वेषणमें ही व्यतीत करते हैं। हम यह भूल जाते हैं कि सुधारक हमारी भलाई का काम करता है या बुराई का। हमें तो सुधारक नामसे चिढ़ है। अगर वह कोई अच्छी बात कहे तो भी और अगर बुरी कहे तो भी। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार कि एक कट्टर पुरातन पंथी सनातनी को एक आर्य समाजी से होती है चाहे वह आर्य समाजी पुराणों एवं मूर्ति-पूजाको भी अच्छा क्यों न बताता हो। हम लोगोंकी बुद्धि या आदत ही होगई है कि हमें सुधारकोंसे कोई अच्छी बात नहीं ले सकते, बल्कि कभी-कभी तो केवल सुधारकोंको बिठानेके लिए ही हम ऐसे-ऐसे कार्य करते हैं, जिनको हम साधारणतया नहीं करते। पर चूँकि सुधारकने मना किया इसलिए उसे अवश्य करेंगे। यह उसी निर्बुद्धि बालककी-सी आदत है जिसको अगर किसी कामके लिए मना किया जाय तो वह उसे अवश्य करेगा। उदाहरणार्थ किसी लड़केसे कहा जावे कि तमाखू मत पीना, बड़ी बुरी चीज़ है। इस पर वह अगर पीवे तो हमारे सामने यही रास्ता खुला है कि हम उसकी आदतसे लाभ उठावें आर उससे कहें कि तमाखू बड़ी अच्छी चीज़ है इसे प्रतिदिन पीया करो। ठीक इसी तरह अगर सुधारक भी करें तो संभवतः कई उल्टी खोपड़ीवालोंसे ठीक काम ले सकते हैं।

अब अगर यह मान भी लिया जाये कि सुधारक अपने उपदेशों पर स्वयं आचरण नहीं करता पर आपको इससे क्या? आचरण न करने का फल वह स्वयं भुगतेगा। आप तो उसके ज्ञान और शब्दों से फायदा उठाकर आचरण कीजिए और उस आचरण के शुभ परिणामों को भोगिये। आपकी प्रवृत्ति तो ऐसी होनी चाहिये कि आप सुधारक के गुणों को ग्रहण करें और दोषों का परित्याग। **अर्थात् आप सुधारक में से पयरूप गुणों को अपनाइये और जलरूप दुर्गुण को छोड़ दीजिये। हंस बनिये, काग नहीं।** इस बात की आशा तो छोड़ दीजिये कि आपको पृथ्वीतल पर चिराग लेकर ढूँढनेपर भी कोई ऐसा सुधारक मिल जावेगा जिसमें गुण ही गुण हों। विधना की सम्पूर्ण सृष्टि ही गुण—दोषमय निर्मित की गई है। अतएव हमारी भलाई इसीमें है कि उसकी अच्छी बातों को गाँठमें बाँध अपने जीवनमें उतारें।

समझ लीजिये कि कोई कथावाचक कथा सुना रहा है, पर क्या वह कथामें आये हुए सब या कुछ उपदेशों पर अमल करता है? हम कथावाचक को इसके लिए दोषी नहीं ठहराते और उसके चरणोंमें भक्ति-भावपूर्वक नमस्कार करते हैं और यथेष्ठ भेंट-पूजा द्वारा उसका सत्कार करते हैं। पर सुधारक की तरफ हमारा व्यवहार बिल्कुल दूसरी ही तरह का है। ऐसा क्यों? एक अपराधके अपराधियों को दो प्रकार का दंड क्यों?

इसी तरह मान लीजिये कि आप कोई उपदेशपूर्ण पुस्तक

(शेष पृष्ठ २३ के कालम ३ पर)

अ. भा. मा. महासभा तथा महिला परिषद

★ परदा, औसर-मौसर आदि

राष्ट्रभाषा हिन्दी

ढाट प्रान्त (सिन्ध) में प्रचार की आवश्यकताको महसूस करते हुए महिला परिषद एवं महासभाका एक शिष्ट मंडल उदयपुर सम्मेलनसे रवाना होकर ता. ३१ की प्रातःकाल गडरा रोड पहुँचा। वहांसे ६ मीलकी मुसाफरी ऊंटोंकी सवारी द्वारा पूरी करके शिष्टमंडल गडरा ग्राममें आया। शिष्टमंडलके सदस्य निम्न प्रकार थे:—

कु० लीलावतीजी झंवर एम. ए. बी. टी, अध्यक्षा अ. भा. मा. महिला परिषद.

श्रीमती ज्ञानकुमारीजी हेड़ा, हैद्राबाद (दक्षिण)

गुलाबचन्दजी नागोरी पैठण, अध्यक्ष राजस्थानी कार्यकर्ता सम्मेलन

श्री मास्टर गौरीशंकरजी झंवर, देहरादून

गडरा रोडके स्टेशन पर शिष्टमंडलके स्वगतार्थ श्री सेठ मोतीरामजी छाछरा निवासी एवं पुनमचंदजी, अध्यक्ष ढाट प्रांतीय सभा तथा अन्य महानुभाव उपस्थित थे।

स्त्रीपुरुषोंकी सम्मिलित सभा।

उसी दिन ता. ३१ को दोपहरमें ३ बजे श्री मथुरादासजी राठीके नोहरेमें—(जहांपर शिष्टमंडलको ठहराया गया था)—स्त्री-पुरुषोंकी एक सम्मिलित सभाका आयोजन श्री बिशनदासजी पनपाल, गडरानिवासीकी अध्यक्षतामें किया गया। सभामें सर्व प्रथम श्री. गौरीशंकरजी झंवरने समाजकी अनेक कुरीतियोंपर प्रकाश डाला। बाल-विवाह, अनमेल-विवाह, आंटा-सांटी (अदला-बदला) विवाहकी फ़िज़ूल खर्ची, औसर-मौसर निवारण तथा लड़कियोंको सुयोग्य गृहणी बनाया जाय, इत्यादि विषयों पर प्रभावशाली विचार प्रकट किए।

तत्पश्चात श्री गुलाबचन्दजी नागौरीने अनमेल-विवाह, औसर-मौसर, पर्दा प्रथा पर विस्तार पूर्वक अपने विचार अपनी विनोदपूर्ण प्रभावी हिन्दी भाषामें समाजके सामने रखे।

इसके बाद कु. लीलावतीजीके अपने भाषणमें बतलाया कि सिन्धमें जितना प्रचार होना चाहिए था इतना नहीं होसका, इसका उन्हें अत्यंत खेद है। पर ढाट प्रांतवासियोंको अपना संगठन मजबूत बनाए रखना चाहिए। तदुपरांत आपने स्त्रियोंकी दुर्दशा एवं उनकी उन्नति का महत्व बतलाया। साथ ही आपने राष्ट्रभाषा हिंदी को अपनाने एवं स्त्रियोंको हिंदी पढ़ाने व रामायण पढ़नेकी अपील की। पर्दा यद्यपि राजपूताने जैसा नहीं था फिर भी इस रहे सहे पर्देको उड़ा देने की प्रार्थना की। साथ ही आपने वस्त्राभूषणके सुधार पर प्रकाश डाला।

अन्तमें श्रीमती ज्ञानकुमारजी हेड़ाने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि सिंधके इस ढाट प्रांत क माहेश्वरियोंकी दशा सबसे अधिक शोचनीय है। इसे सुधारने के लिए शिक्षा आदि की जरूरत है ही, पर साथमें आंटा-सांटा के रिवाजको तोड़ कर अन्तः प्रान्तीय विवाह संबंधों की बहुत जरूरत है ताकि संतानें मजबूत बन सकें एवं सहवास से वेशभूषा, रहनसहन शिक्षा, रीतिरिवाज़में फर्क पड़ सके। खादी एवं ग्रामोद्योग पर मार्मिक विचारोंको रखनेके बाद जनतासे महासभाके संदेश पर अमल करनेकी प्रार्थना की। सभामें उपस्थिति ५०० के लगभग थी।

इसके बाद सभा विसर्जित हुई। इसी बीचमें स्त्रियोंसे वार्तालाप किया गया एवं एक बहन महिला परिषद की सदस्या बनीं।

राष्ट्रीय समस्याओंपर भाषण

रात्रिमें ९ बजेसे बाजारके चौटेमें श्री. बूलचंदजी सिंधी, मैनेजर गांधी आश्रम, गडराने एक सार्वजनिक सभाका आयोजन श्री पुनमचंदजी केला, सभापति ढाट प्रान्तीय माहेश्वरी सभा, की अध्यक्षतामें किया। सर्वप्रथम संयोजक महोदय ने सिंधी भाषामें आगत मेहमानोंका परिचय देते हुए अपनी समस्याओं एवं दोपहरमें हुई माहेश्वरी सभाका जिक्र किया। तत्पश्चात् श्री गौरीशंकरजी झंवरने हिन्दु-मुस्लिम एकताकी महत्ताको बताते हुए गांधीजीके आदेशों का पालन करनेकी अपील की।

श्री गुलाबचन्दजी नागौरीने हरिजनोद्धार पर अपना मार्मिक भाषण दिया। आपने बतलाया कि हम उन्हें विधर्मी बनने पर तो कुएंपर पानी भरने देते हैं, पूरा २ सहयोग देते हैं और वैसे छूत २ पुकारते हैं। उनके साथ पूरा २ अन्याय करते हैं, जो कि हमारे लिए कलंक की बात है।

कु. लीलावतीजीने राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रचारके संबंधमें अपने विचार रखे। आपने बतलाया कि एक दूसरेके विचार समझाने बुझाने के लिए इसकी अत्यन्त आवश्यकता है। आधुनिक अवस्थामें हम अपना बचाव करनेके लिए एवं बाहरी आक्रमणोंके भय एवं पारस्परिक घरेलू झगड़ोंको मिटानेकी आवश्यकता है। ए. आर. पी, एवं अखाड़ोंकी आवश्यकता है। स्त्रियोंकी उन्नतिके लिए शिक्षा एवं पर्दा हटाना जरूरी है।

ता. १-१-४२ को प्रातःकालमें ५ बजे उठकर नागौरी जीने वहांके प्रतिष्ठित सज्जनोंसे बातचीत की और वहांके रीतिरिवाजोंसे जानकारी प्राप्त की।

बगल

उसी दिन दोपहर में ऊंटोंपर सवार होकर शिष्ट मंडलने छाछरा की ओर प्रयाण किया जो कि गडरासे करीब ५० मीलकी दूरी पर है। रास्ते में रात के ९ बजे शिष्टमंडलने बगल नामक ग्राममें विश्राम लिया। ता. २ को सुबह स्थानीय माहेश्वरियों से बातचीत की। बगलमें १५ घर माहेश्वरियों के हैं। बातचीत के फलस्वरूप श्रीमती आंबीदेवीने, धर्मपत्नी खटाऊमलजी भूतड़ाने, चूड़ा छोड़ने की प्रतिज्ञा ली एवं सात व्यक्तियोंने औसर मौसर-छोड़ने की प्रतिज्ञा ली जिनके नाम निम्नप्रकार हैं:—

सर्वश्री. खटाऊमलजी भूतड़ा, आंबीदेवी भूतड़ा, पुनमचंदजी तुलसीदासजी करवा, लक्ष्मणदास पुनमचंदजी केला, प्रयागमल पुरुषोत्तमदासजी भूतड़ा, गातम खटाऊमल भूतड़ा, अंबाराम गोकुलदासजी भूतड़ा।

छाछरामें जुलूसद्वारा स्वागत और सभा

बगलसे ठीक दो बजे शिष्टमंडल छाछरा के लिए रवाना हुआ और ऊटों की ही सवारी द्वारा रात्रिमें ८॥ बजे नियत स्थानपर पहुंचा। रातको १०॥ बजे तक शिष्टमण्डलने वहांके नवयुवकों एवं प्रतिष्ठित सज्जनोंसे वार्तालाप किया। छाछरा निवासियोंका प्रेम एवं उत्साह सराहनीय था। शिष्टमण्डलके स्वागतार्थ जनता पहलेसे ही तैयार खड़ी थी। ता. ३-१-४२ को प्रातःकाल सबसे मिलना-जुलना एवं वार्तालाप जारी रहा। दोपहरमें १ बजेसे शिष्टमंण्डलके सदस्योंका बाजे-गाजेके सहित नगरमें जलूस निकाला गया। जुलूसमें जाति-प्रेमके गायन वहांके नवयुवक गाते जाते थे। जुलूसको दो बजे सभास्थानपर—लोकलबोर्डके बागमें टेनिस कोर्टमें—समाप्त करके सभाका रूप दिया गया। उपस्थिति ४०० के लगभग थी, एवं १५० के लगभग महिलायें भी मौजूद थीं। सभा का कार्य छाछराके एक मुखिया श्री जगरूपदासजीके सभापतित्व में हुआ। सर्वप्रथम श्री गनेशमलजीने ईश्वरस्तुति करके स्वागत गायन गाया। दूसरा स्वागत गान श्री मूलशंकरजी शारदाने गाया। सर्वप्रथम श्रीमान् पुनमचन्दजी राठीने अपना भाषण पढ़ा, जिसमें आपने अपने खरके चूड़ेका बायकाट, औसर मौसर का त्याग, एवं चरखेका महत्व समझाने की अपील की। साथ ही आपने नौजवानोंको आगे बढ़नेके लिए आह्वान किया।

श्री. गौरीशंकरजी झंवरने अपने भाषणमें बालविवाहकी कुरीतियां समझायीं। आपने बतलाया कि हमारे समाजमें कन्याओंके जन्म पर दुखः प्रगट किया जाता है एवं बहुओंके साथमें बर्ताव बहुत बुरा किया जाता है। यह हमारे लिए शर्मकी बात है। इसे छोड़ना ही चाहिए।

श्री नागौरीजीने महासभाके सतत कार्य एवं उसकी सफलताको बतलाया। साथ ही बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह, पर्दा, तथा किसीके मरनेके पश्चात् झूठा रोना रोनेकी भद्दी प्रथा, तथा यहांकी भद्दी वेशभूषाकी हानियां और असामयिकताको बतलाया।

कु. लीलावतीजीने राष्ट्रभाषा हिन्दीको जाननेकी आवश्यकता, स्त्रियोंकी दुर्दशा और उन्हें सुधारनेकी कोशिश पर जोर दिया। शिक्षा एवं पर्दा-त्याग पर विचार प्रकट करते हुए अन्तमें हिन्दी सीखने-सीखानेके लिए नवयुवकोंसे प्रतिज्ञा लेनेकी अपील की। फलस्वरूप १३ व्यक्तियोंने प्रतिज्ञा ली। तत्पश्चात् श्रीमती ज्ञानकुमारीजी हेड़ाने वहांकी वेषभूषाको बिल्कुल ही बदलने एवं सिन्धमें पुरुषोंमें भी शिक्षाकी कमीको देखते हुए उन्हें भी विद्या प्राप्त करनेको कहा। औसर-मौसर की राक्षसी प्रथा को त्यागने, विधवाओंके साथ अच्छा बर्ताव करने एवं उन्हें सात्विक मार्ग बतलाने की शिक्षाकी आवश्यकता, अन्तरप्रान्तीय विवाह संबंध, सट्टा-त्याग, रहनसहन एवं बच्चों की सफाई पर विचार प्रकट किया। अन्तमें माहेश्वरी पत्रके ग्राहक बननेके लिए अपील की।

हिंदी सिखने-सिखानेके लिए प्रतिज्ञा लेने वाले व्यक्तियोंके नाम निम्नप्रकार हैं:—

श्री मोतीरामजी गीगल, श्री मूलशंकरजी शारदा, श्री पुनमचंदजी राठी, श्री गोवर्धनदासजी बाहेती, श्री लक्ष्मणदासजी मोतीरामजी शारदा, श्री मथुरादासजी शारदा, श्री मथुरादासजी गीगल, श्री महादेवजी गीगल, श्री लद्धारामजी राठी, श्री राणोमलजी शारदा, श्री भोजराजजी लाठी, श्री चुन्नीलालजी लड्ढा मीठीनिवासी, श्री माहेती वेदव्यास।

सभा समाप्त होने पर शिष्टमंडलके सदस्य श्री मूलशंकरजी के निवासस्थान पर जलपानके लिए पधारे। वहां उनकी धर्मपत्नी चन्द्रावतीजीकी वेशभूषा देखकर दोनों महिला सदस्याओंने उनसे वेशभूषा में परिवर्तनकी प्रार्थना की।

के शिष्टमंडल का सिन्ध में प्रचार भ्रमण

के विरुद्ध आन्दोलन ★

को अपनाइये

फलस्वरूप श्री मूलशंकरजीने वचन दिया कि छः महीनेके अन्दर वे अपनी धर्मपत्नीकी वेशभूषा बदल देंगे। एवं उनके हाथके चूड़ेको भी छुड़वा देंगे। श्रीमती चन्द्रावतीजीके एक एक हाथ ७६ छिहत्तर चूड़ियां थीं। पूरी बाहें इन चूड़ोंसे भरी पड़ी थी, क्योंकि सिन्ध प्रांन्तमें यह उत्तम रिवाज है।

रात्रिमें ९ बजे लोकलबोर्डके टेनिस कोर्टमें एक सार्वजनिक सभा श्री मास्टर चुन्नीलालजीके सभापतित्वमें हुई। सभोंमें उपस्थिति ३०० के लगभग थी। सर्वप्रथम श्री. नागौरीजीने सुधारकी आवश्यकता बतलाई, तथा आपने बतलाया कि कुछ सामाजिक रूढ़ियोंको त्यागनेमें ही संतोष नहीं कर लिया जाय।

संतोषमात्र ही सुधार का अन्त है। सुधार की पुष्टि आपने भगवानके अवतारवादसे की। जैसे मच्छावतार से शुरू होकर सुधार होते हुए पूर्णावतार कृष्ण तक पहुंचा। फिर भला हम मनुष्यमात्र खुदके लिए सुधारोंमें कैसे संतोष करें। सदा सुधार की भावना से ही जाति पनपती है। औसर–मौसर पर भी आपने खूब विस्तार से कहा, क्योंकि यह प्रथा यहां सभी जातियोंमें है। फलस्वरूप ३२ व्यक्तियोंने प्रतिज्ञायें लीं कि वे कभी मृतभोज नहीं करेंगे। तदुपरान्त कु. लीलावतीजीने वहां की वेषभूषा त्यागने का कहते हुए घरेलू झगड़ों को छोड़ कर प्रेम और संगठन से रहना की अपील की मानमर्यादा और आत्मरक्षाके लिए व्यायाम आदि की आवश्यकता को देखते हुए अखाड़ों की आवश्यकता पर जोर दिया। आपने खास कर नवयुवकों को बतलाया कि वे समाज की आशा हैं। उन्हें हिम्मत और साहस से आगे बढना चाहिए। अन्तमें अध्यक्षने इन सभी बातों पर विचार करने को कहा एवं उसे अमली रूप देने को विचार–विनिमय करनेके लिए दूसरे दिनके कार्यक्रम पर छोड़ कर सभा विसर्जित की।

औसर–मौसर का भोजन न करने वाले सज्जनोंके नाम निम्न प्रकार हैं:—

सर्व श्री गोरधनदासजी बाहेती, मथुरादासजी राठी, पुनमचंदजी राठी, जसरूपदासजी राठी, चत्रुमलजी राठी एवं उनका पूरा परिवार, लक्ष्मणदासजी शारदा, मथुरादासजी शारदा, तुलसीदासजी शारदा, टीकमदासजी शारदा, नैनसी शारदा, रामजीशा मल्लड़, लादुरामजी राठी, मास्टर जेठानन्दजी कड़वा, चुन्नीलालजी लड्ढा, राणोमलजी शारदा, मखारामजी शारदा, धनजी शारदा, भोमजी राठी, उकोड़ामलजी राठी, ईसरदासजी मल्लड़ लद्धारामजी गींगल, पुनमचंदजी गगिल, परसरामजी शारदा, शिवलालजी शारदा, जेठानंदजी करवा, बेखटामलजी शारदा, वाघजी शारदा, तोलारामजी राणियों, उत्तमचंदजी कड़वा, नंदलालजी राठी, गोकुलजी शारदा, जीवराजजी राठी।

ता. ४ को दोपहरमें केवल स्त्रियों की एक सभा रामबागमें हुई। सभा के अध्यक्ष का स्थान श्रीमती जेठीबाईने ग्रहण किया था। सर्व प्रथम श्रीमती ज्ञानकुमारीजी हेडाने बतलाया कि स्त्रियोंमें कूप मंडूकता भरी पड़ी है उसे शिक्षा के द्वारा हटाना अनिवार्य हैं। घूंघट, चूड़े की हानि वस्त्राभूषणका भद्दापन एवं कूट २ कर भरा हुआ अन्ध विश्वास दूर करना अनावश्यक है। तदुपरान्त कु. लीलावतीजी झंवरने भाषा न समझनेकी कठिनाईको महसूस करते हुए हिंदी भाषाके प्रचारकी जरूरतको समझाया। स्त्रियोंकी वर्तमान गिरी हुई हालत एवं सुधारनेकी जरूरत, मौसर, शिक्षा आदि पर प्रकाश डाला।

इन दोनों भाषणोंका सारांश श्री. जेठीबाईने ढाट प्रांतकी भाषामें समझाया। मौसरका भोजन न करनेकी प्रतिज्ञा निम्न बहनों ली।

सर्वश्री किसनीबाई राठी, कस्तूरीबाई केला, जशीबाई केला, धर्मपत्नी बजू गोकलजी, सीतादेवी केला, जानकीबाई राठी, आसीबाई करवा, हरीया जग्गूदास करवा, रूदीदेवी लद्दड, लीलाराम मल्लड़, धर्मपत्नी गौरीमल भोजराजजी, गोदावरीबाई केला, धर्मपत्नी बद्री सजनमलजी शारदा, हरिया देवी सोजारामजी शारदा, चुन्नीबाई तुलसीदास शारदा, कस्तूरीबाई जैसूर्यदास।

श्रीमती कस्तूरीबाई गुलाबचंद केलाने फौरन ही अपने हाथका चूड़ा निकाल कर शिष्टमंडलको दे दिया। एवं श्रीमान् मोतीरामजीने आगेसे चूड़ा न खरीदकर देनेकी प्रतीज्ञा ली।

ता. ४-१-४२ को ही रातमें ९ बजे श्री मूलशंकरजी शारदाकी अध्यक्षतामें दूसरी सार्वजनिक सभा हुई। जिसमें सर्वप्रथम श्री गौरीशंकरजी झंवरने संगठन एवं प्रेमभाव रखनेके लिए बहुत ही अच्छा भाषण दिया। तत्पश्चात् श्रीमती ज्ञानकुमारी हेडाने देश प्रेम और कुर्बानीकी जरूरत एवं तैयारीके बारेमें बतलानेके बाद खादी की महत्ता एवं देशकी गरीबी को दूर करनेका एकमात्र उपाय, ग्रामोद्योग की उन्नति, खादी उपयोग की प्रचुरता पर मार्थिक एवं हृदयस्पर्शी भाषण किया। भाषण समाप्त होनेपर ग्राण्ड काकाने खादीके लिए प्रतिज्ञायें लिवाईं। तथा कन्या–विक्रय की चाण्डाल प्रथा, पंचायतसे परवानगी लेनेसे हानियां एवं पंचोंकी स्वार्थपरता, बाल–विवाहका निषेध एवं बच्चों को माता–पिता द्वारा आजादी मिलनी चाहिए, बरना घरमें क्लेश मचेगा। बच्चे तो सुधार एवं नवीन युगके रास्ते पर चलेंगे पर माता–पिताको खुशीसे इजाजत देनी चाहिए—इन सभी विषयों पर श्री नागौरीजीने अत्यन्त विनोदपूर्ण किन्तु मर्मभेदी उदाहरणोंसे प्रकाश डाला। जनता पर भाषणका प्रभाव अच्छा रहता था।

पहले दिन वहांके कुछ सज्जनोंने चूड़ा त्याग या अखाडा खोलने आदि पर विचार करके आज की सभामें निर्णय देनेको कहा था, परन्तु आज उन लोगोंसे कोई भी संतोषजनक उत्तर न मिल सका।

भविष्यमें सिर्फ खादी ही धारण करने की प्रतिज्ञा लेने वाले सज्जनोंके नाम निम्न प्रकार हैं:—

सर्वश्री मथुरादासजी राठी, गणेशदासजी बाहेती, मोतीरामजी, पुनमचन्दजी राठी, खुशहालदासजी शारदा, लक्ष्मणदासजी शारदा, कस्तूरचन्दजी राठी, बेखटजी शारदा, मास्टर जेठानन्दजी करवा, ईश्वरदासजी मल्लड़, परसरामजी शारदा।

सभा कार्य लगभग १२ बजे समाप्त हुआ। ता. ५ को दोपहरके १ बजे शिष्टमण्डल ऊंटोंकी सवारी द्वारा चिल्हार की ओर रवाना हुआ। चिल्हारके रास्तेमें शिष्टमण्डल कांटिया ग्राममें रुका।

कांटियामें प्रचारकी धूम

ता. ५ को रात्रिमें पुरुषोंकी सभा हुई। सभाका अध्यक्ष स्थान वहांके निवासी सेठ अम्बाराम शिवलालजी कचौलिया ने ग्रहण किया। सर्व प्रथम ढाट प्रांतीय भाषामें उन्होंने शिष्टमंडलका परिचय देते हुए उनके नगरमें पधारनेके उपकार से धन्यवाद माना। स्वागत, गायनके पश्चात् मास्टर गौरीशंकरजीने बाल-विवाह, फिजूल खर्ची, संगठन आदि पर भाषण दिया। उसके बाद श्री. नागौरीजीने औसर-मौसर, पर्दा प्रथा, कन्या-विक्रय, पंचायतवाद, आदि पर अपने विचार प्रकट किए। कु. लीलावतीजीने स्त्रियोंकी उन्नति, राष्ट्रभाषा हिन्दीका प्रचार, शिक्षा आदि पर भाषण दिया। अन्तमें श्रीमती ज्ञानकुमारीजी हेड़ाने वहांकी वेशभूषा, खादीकी महत्ता और उसकी आवश्यकता स्त्री–पुरुषोंमें हिम्मतकी जरूरत आदि पर अपने विचार रखे।

सभापतिके कथनके पश्चात् सभा विसर्जित हुई। सभामें उपस्थिति लगभग १५० थी, उक्त सभामें निम्न व्यक्तियोंने हिन्दी सीखने की प्रतिज्ञा ली—

सर्वश्री अम्बाराम शिवलालजी कचौलिया, पुनमचंदजी चांडक, मुरारदास छबीलदासजी मालाणी, गोवर्धनदास मोतीलालजी लोया, सेठ धर्मदास बालजीराम चांडक, सेठ दामोदरदासजी कचौलिया, आलमचंदजी केला, परसुराम खेतारामजी लोया, बालजी शाहजी राठी, उत्तमचंद रणछोड़दासजी कचौलिया, लादूरामजी गंगारामजी लोया, चतुरमल मुरारदासजी कचौलिया, रतनचंद छबीलचंदजी, कस्तूरचंद लीलारामजी गीगल, चुन्नीलालजी सीतारामजी लद्दड़, शंकरलाल खुशालदासजी लद्दड़, मनहरलालजी मलजीराम मल्लड़, परमात मोजीरामजी, गिरधारी चेलारामजी कचौलिया, खजूरमल प्रेमजीमल केला, कानजी रणछोड़दासजी कचौलिया

मौसर त्यागनेवालोंकी नामावली

सर्वश्री सेठ अम्बालालजी शिवलालजी कचौलिया, सेठ मुरारदास छबीलजी मालाणी, परशुराम खेतारामजी लोया, गोवर्धनदासजी मोतीरामजी लोया, मोतीराम भोजराजजी लोया, चतुर्भुज मुरारदासजी कचौलिया, जैकृष्ण जसरूपजी केला, पुनमचंद तुलसीदासजी चांडक

ता. ६ को ११ बजे दोपहरमें स्त्रियोंकी सभा हुई जिसमें सर्वप्रथम मास्टर गौरीशंकरजी झंवरने रामायणके उदाहरण एवं चौपाई आदि बतलाते हुए स्त्रियोंके पातिव्रत धर्म पर एक मनोरंजक लंबा भाषण दिया। बादमें श्री ज्ञानकुमारीजी हेडाने स्त्रियोंको उनके अस्तित्व, उनकी महत्ताको बतलाते हुए, उनकी वेशभूषा उनका कर्त्तव्य, पर्दाप्रथा, शिक्षाकी आवश्यकता, औसर मौसर पर अपने विचार रखे। तत्पश्चात् कु. लीलावतीजीने हिन्दी भाषाकी जरूरत, स्त्रियोंकी दुर्दशा, शिक्षा एवं पर्दाप्रथा पर अपना प्रभावशाली भाषण दिया। इन भाषाणोंका सारांश सिन्धी भाषामें श्री जेठीबाई एवं श्री पुनमचंदजी चांडक, सभाको देते थे। अन्तमें श्रीमान् गुलाबचन्दजी नागौरीने मारवाड़ी भाषामें पर्दा प्रथा, शिक्षा, मौसर बाल–विवाह पर भाषण दिया।

मौसरका भोजन त्यागनेकी प्रतिज्ञा लेनेवाली बहिनोंके नाम निम्न प्रकार हैं,

[शेष पृष्ठ २३ के कालम १ पर]

कमला मिल के कपड़े इस्तेमाल करें।

आर्टिफिशियल सिल्क ज्योर्जेट साड़ियां, साडी क्लाथ और शर्टिंग कपड़ों के लिये यह मिल अपनी विशेषता रखती है

हेड आफिसः—
गोयनका हाउस
१४५, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट,
कलकत्ता

हर प्रकार की धोती, साडी, कोरा लाँगक्लॉथ, कोटिंग, केनवास, सूसी, आदि आदि

कमला मिल्स लिमिटेड

तुलसी पाइप रोड, परेल, बम्बई. टे. नं. ६००६४—६५

विक्री-विभागः—

बम्बई : टे. नं. २६९४५
मूलजी जेठा मार्केट

कलकत्ता :
सूतापट्टी

आयुर्वेदिक दवाइयां आवश्यकतानुसार शीघ्र प्राप्त करनेकी एकमात्र संस्था

उदार प्रकृति मोहता परिवार द्वारा सञ्चालित

श्री मोहता आयुर्वेदिक रसायन शाला

बीकानेर की सुप्रसिद्ध औषधियां

स्वर्ण भस्म	८०) तोला	स्वर्ण वंग	२॥) तोला	पञ्चामृत पर्पटी	३) तोला
सिद्ध मकरध्वज	४०) ,,	वंग भस्म	१) ,,	लोह पर्पटी	२॥) ,,
मकरध्वज	१२) ,,	त्रिवंग भस्म	१॥) ,,	चौसठ प्रहरी पीपल	१) ,,
स्वर्ण चन्द्रोदय	१२) ,,	कान्तसार भस्म	२) ,,	अंगूरासव	१॥) बोतल
मल्ल ,,	४) ,,	स्वर्ण वसन्तमालती रस	१०) ,,	गर्म जीवन	२) ,,
च्यवनप्राश	४) सेर	वसन्त कुसुमाकर रस	३०) ,,	शुद्ध मधु	१।) सेर
ब्राह्म रसायन	४) ,,	पूर्ण चन्द्ररस	५) ,,	कमल मधु	२॥) ,,
चन्द्र प्रभावटी	॥) तोला	ब्राह्मी वटी	१।) ,,	अभ्रक भस्म	४) तोला
द्राक्षासव	१।) बोतल	स्वर्ण पर्पटी	१५) ,,	निद्रोदय रस वटी	२) ,,

शाखाएँ—

मोहता आयुर्वेदिक दातव्य चिकित्सालय तथा रसायनशाला

उदयपुर (मेवाड़) मोहतानगर (सिन्ध) मोहता क्लॉथ मार्कट, कराची

शिष्टमंडलका सिन्धमें प्रचार भ्रमण

(पृष्ठ २१ का शेषांश)

सर्वश्री सांकलीबाई खेतारामजी, गौरीबाई रामशाह, मूलीबाई हलीशाह, आसीबाई टीकमशाह, हरियाबाई मोतीरामजी, भोजराजजी, सोनीबाई लीलारामजी, रानीबाई खेमराज बृजलालजी, देवीबाई रामजी शाह, वादलीबाई कस्तूरचंद धर्मदासजी, मेथीबाई पूनमचंदजी।

सभा समाप्त होते ही शिष्टमंडल चिल्हारके लिए रवाना हो गया। सभामें उपस्थित १०० थी।

चेल्हार

ता. ६ को रात्रि ९॥ बजेसे पुरुषोंकी सभा बाजारके मैदानमें श्रीमान् सज्जनमलजी राठीकी अध्यक्षता में हुई। स्वागत गायनके पश्चात् सर्वप्रथम श्री. ज्ञानकुमारीजी हेडाने महासभा का ध्येय एव संदेशका परिचय दिया। साथमें थरपारकरके माहेश्वरियोंकी दशाका अनुभव बतलाते हुए उच्च शिक्षा, अंतरप्रान्तीय विवाह संबंधोंकी नितान्त आवश्यकता बताई, साथमें यह भद्दी वेशभूषा एवं औसर–मौसर शीघ्र ही त्याग देना चाहिये। खास कर नवयुवकोंको साहसी एवं हिम्मत धरनेको कहा।

श्रीमान् गौरीशंकरजी झंवर ने माहेश्वरी जातिमें संगठन की आवश्यकता को उदाहरणों सहित बतलाया। तदनन्तर श्रीमान् नागौरीजीने औसर-मौसर की राक्षसी प्रथा को एकदम छोड़ देनेको बहुत जोर दिया। और कहा कि यह खुशीका विषय है, कि यहां यह प्रथा काफी संख्यामें दूर होती जा रही है। पंचायतवाद, उससे हानियां, आजकी परिस्थिति, महासभाके आज तक कार्यका परिचय, कन्या विक्रय आदि पर भाषण दिया। अन्तमें कु. लीलावतीजीने हिन्दी भाषा सीखने सीखाने पर जोर देते हुए स्त्रियोंकी हालतको सुधारनेको कहा और शिक्षा, एवं पर्दा–त्यागकी आवश्यकताको बताया।

सभामें उपस्थिति २५० के लगभग थी। हिन्दी सीखनेकी प्रतिज्ञा लेने वाले सज्जनोंके नाम निम्रप्रकार हैं:—

सर्वश्री पुनमचंदजी केला, सज्जनमलजी राठी, मेघराजजी राठी, मेहरचंदजी भट्टड़, गोवर्धनजी राठी, राणादेवलरामजी राठी, देवमल जयरामजी राठी, पुन्नमचंदजी सजणो, देउरामजी भट्टड़, श्रीराणाजी राठी, तुलसीदासजी केला मुरारदासजी राठी, वेखटमलजी केला, प्रयागचंदजी राठी, भोजराज अमरचंद भट्टड़, टीकमदासजी, पुनमचंद शर्म्मा, वेखटमल हीरालालजी राठी, बालचंदजी शर्म्मा जीवराम लछमनजी भट्टड़, आसनदासजी शर्म्मा, गौतमरामजी केला, जेठमलजी शर्म्मा, अक्षसराज केला, जयरामदास वस्तीराम केला.

ता. ७ जनवरीको दोपहरमें ११ बजे से एक दूसरी सभा पुरुषोंकी हुई। सभाका अध्मक्षस्थान शेठ श्री तुलसीदासजी केलाने ग्रहण किया थी। श्री. पुरणचंदजी केला के द्वारा ईश-प्रार्थना होनेके पश्चात् शिष्टमण्डलके सदस्योंने भिन्न २ विषयों पर भाषण दिए।

दोपहरमें २॥ बजे से एक सभा केवल स्त्रियोंकी हुई। जिसमें सर्व प्रथम श्रीमान् गौरीशंकरजीने रामायण के उदाहरणों द्वारा योग्य माता एवं गौरवशाली स्त्री बनने की शिक्षा, दी। तत्पश्चात् श्री. नागौरीजीने पर्दा, चूड़ा, वेशभूषा पर अपना भाषण दिया। श्रीमती ज्ञानकुमारी हेड़ाने वेशभूषा, औसर–मौसर, झूठा रोना, दहेजका दिखावा, आदि कुरीतियों पर अपना भाषण दिया। अन्तमें कुमारी लीलावतीजीने स्त्रियोंकी उन्नति की आवश्यकता, हिन्दी आदि पर भाषण दिया। सभा समाप्त करते ही शिष्टमण्डल मीठी के लिए रवाना होगया। सभामें उपस्थिति ३०० से ऊपर थी।

मिठ्ठी

ता. ८ के दोपहरमें स्त्रियों की सभा हुई। जिसमें स्त्रियोपयोगी भिन्न २ विषयों पर चारों सदस्यों के भाषण हुए। स्त्रियों की उपस्थिति २५० अधिक थी। साथ ही कुछ उत्सुक पुरुष भी बिना निमंत्रण के वहां सुननेको मौजूद थे।

रात्रिमें ८ बजे से मास्टर चुन्नीलालजी की अध्यक्षतामें पुरुषों की सभा हुई, जिसमें ३०० के लगभग उपस्थिति थी। सर्वप्रथम मास्टर गौरीशंकरजीने अपने विचार रखे, बादमें श्री नागौरीजीने समाज की भिन्न २ समस्याओं पर भाषण दिया। कु. लीलावतीजीने हिन्दी की आवश्यकता, स्त्रियों की हालत सुधारने की जरूरत आदि विषयों पर भाषण दिया। तदनन्तर श्री ज्ञानकुमारी हेडा ने वेशभूषा, सेट्टे विवाहों का दुष्परिणाम तथा फलस्वरूप किये जानेवाले बालविवाह. नवयुवकों की जिम्मेवारी, खादी पर भाषण दिया। सभा लगभग १२ बजे समाप्त हुई।

इस सभामें हिन्दी सीखने की प्रतिज्ञा लेने वाले सज्जनोंके नाम निम्नप्रकार हैं।

से. जेठानन्दजी वकील, वाघजीमलजी वकील, माणिकलालजी शारदा, गोवर्धनजी भट्टड़, श्री ताराचंदजी गींगल, पुरुषोत्तमदासजी राठी, राधाकिशन रणछोड़दासजी राठी, मूलचंदजी राठी टीकमदासजी कचौलिया, भोजराज लक्ष्मणदासजी लद्धड़ बालचंद माणिकमलजी।

सर्वश्री वाघजीमेघजी वकील, जेठानन्दजी वकील, भोजराजजी नायब तहसीलदारने अपनी पत्नियोंका घूंघट उठानेके लिए ईमानदारीसे भरसक प्रयत्नकी प्रतिज्ञा ली।

सर्वश्री, गोवर्धनजी लद्धड़, हालीराम हरदास एवं अन्य दो सज्जनोंने खादी धारणकी प्रतिज्ञा ली।

ता० ९ को दोपहरके ११ बजेसे लोकलबोर्ड हाईस्कूलमें वहांके हैडमास्टरकी अध्यक्षतामें नवयुवकों एवं वहांके विद्यार्थियोंकी एक सभा हुई। जिनमें सर्व प्रथम मास्टर गौरीशंकरजीने विद्यार्थियोंको नियंत्रणमें रहनेकी शिक्षा दी। श्रीमान् नागौरीने अत्यन्त रोचक भाषामें नवयुवकोंको हमेशा अग्रगामी, सुधारक, एवं हिम्मतवाले बने रहनेके लिए कहा। सभी श्रोता हंसते २ लोटपोट हो रहे थे। कु. लीलावतीजीने विद्यार्थियोंको अपने जीवनको नियंत्रण, संयममें रहनेको एवं पुस्तकोंके बजाय शिक्षाको क्रियात्मक रूप देनेको कहा। श्रीमती ज्ञानकुमारी हेडाने स्कूलके जीवनकी झांकी देते हुए हिन्दुस्थान में हिन्दु-मुस्लिम एकताकी कमीके बुरे परिणामोंको बतलाया। तथा विद्यार्थियोंको आपसमें बिना भेदभावके भ्रातृभाव पैदा करनेको कहा। हिन्दु-मुस्लिम एकताकी जड़ स्कूलोंमें भाई २ की तरह रहनेसे मजबूत हो सकती है। इतना कहनेके पश्चात् विद्यार्थियोको देशकी आशा बताते हुए उन्हें हिम्मतवान् बननेको कह कर भाषण समाप्त किया। इन सभी विस्तृत भाषणोंका प्रभाव अध्यापकगण तथा विद्यार्थियों एवं अन्य श्रोतागणों पर अच्छा रहा।

दोपहरमें ३ बजेसे फिर एक दूसरी सभा सिर्फ स्त्रियोंकी हुई। उसमें भी दोनों महिलाओंके भाषण हुए। सभा समाप्त होतेही

मीरपुर खास

शिष्टमंडल नवाकोट स्टेशन के लिए रवाना हुआ। जहांसे रेल्वे द्वारा शिष्ट–मंडल, न्यूछोर एवं अमरकोट के लिए जाने को, मीरपुरखास आया। वहां रात्रिमें स्थानीय कार्य्यकर्त्ताओंसे वार्तालाप हुआ। शिष्टमंडल के सदस्योंने थरपारकर प्रान्त के भ्रमण के प्रति अपने २ विचार रखे। एवं वहां के कार्य्यकर्त्ताओं से शंका–समाधान किया गया। श्रीमान् वाघजीमल वकीलने न्यूछोर, अमरकोट के प्रोग्राम की जिम्मेवारी ली थी; परन्तु वे ठीक समयपर मीरपुरखास न आए जिसके फलस्वरूप न्यूछोर आदि का प्रोग्राम स्थगित करना पड़ा जिसका काफी खेद शिष्टमंडलको रहा।

शिष्टमंडल के सदस्य मीरपुरखाससे अपने २ स्थान की ओर रवाना हो गये।

शिष्टमंडल का स्वागत सभी स्थानों पर अत्यन्त प्रेम एवं उत्साहके साथ किया गया। उसके भाषणोंका भी सभी जगह बहुत अच्छा प्रभाव रहा। थरपारकर प्रान्तमें प्रचार की, वह भी स्त्रियोंमें सबसे अधिक अत्यन्त आवश्यकता है। इस भ्रमण की सफलता का श्रेय ढाटप्रान्तीय माहेश्वरी सभा के मंत्री सेठ श्री० मोतीरामजी गींगल को है।

यह शिष्टमंडल महासभा का ध्यान इस प्रान्तके लिए लगातार प्रचार की आवश्यकता की ओर आकर्षित करता है। श्रीमान् मोतीरामजी गींगल अपनी वृद्धावस्थामें भी काफी उत्साह एवं लगनके कार्यकर्त्ता हैं, अतः उनके प्रति शिष्टमंडल अत्यन्त आभारी है। ढाट प्रान्तीय सभाने १२५ रु० महासभा को दान दिये तदर्थ वह धन्यवाद की पात्र है।

(पृष्ठ १९ के कालम ३ का शेषांश)

पढ़ रहे हैं और उसमें एक स्थल पर यह लिखा हुआ आ जाता है कि ‘माता-पिताकी आज्ञा मानना प्रत्येक मनुजका परम कर्तव्य है।’ अब अगर आप केवल इसी कारणसे कि पुस्तक इस सिद्धान्त या उपदेश पर अमल नहीं करती इसलिए आप भी न करेंगे तो न तो यह बुद्धिमत्ता सूचक निर्णय ही है और न कोई अच्छी दलील ही। आप उपदेश पर आचरण करें तो आपकी भलाई है, न करें तो पुस्तककी बलासे। और अगर आपका यही रवैया रहा तो सच मानिये आप इस दुनियाँमें कुछ भी न सीख सकेंगे, जब तक कि कोई सर्वगुणसम्पन्न स्वर्गदूत आकर आपको आमंत्रित न करे। शेखसादीने भी एक जगह कहा है कि **“बुद्धिमानकी बात पूरी सावधानीसे सुनो चाहे वह उस पर न चलता हो। यदि कोई उपकारी उपदेश भींत (दीवार) पर लिखा हो तो क्या वह सीखने योग्य नहीं है ?”**

अतः हमको सुधारकों को कथावाचक की तरह निर्दोष, पुस्तककी तरह आचरणहीन और दीवारकी तरह चित्रित व लिखित समझकर चलना चाहिये। हमको यह सोचनेके लिए नहीं ठहरना चाहिये कि वह अमुक बातपर अमल करता है या नहीं। अगर उसकी कोई बात आपको अच्छी लगी है तो आप उसपर अमल कीजिये। मान लीजिये कि आप उसकी वक्तृताके कारण पर्दा–प्रथा को या अन्य प्रथा को बुरा मानने लग गये तो आप उसपर आचरण कीजिये। यह मत देखिये कि उस सुधारकके घरमें पर्दा है अथवा नहीं। आप अपना ख्याल कीजिये, दूसरे अपना ख्याल अपने आप करलेंगे। अगर किन्हीं कारणोंके वशीभूत होकर आप स्वयं आचरण नहीं कर सकते तो यह, आपकी कमजोरी है। इसका दोष सुधारक के सिर क्यों? इस तरह सुधारकको लपेटना अनुचित एवं नीचतापूर्ण है। **शिक्षक लड़कोंको पढ़ाता है तो इसका मतलब यह तो नहीं निकलता कि वह परीक्षा भी दे और लड़के उसकी परीक्षा लें। इसलिए हमको यह सोचना चाहिये कि हम परीक्षक नहीं परीक्षार्थी हैं और अपने मास्टर सुधारकसे हम क्या सीख सके हैं इसकी परीक्षा देनी है।**

C/o हंसराजजी अत्तार, गोपालजीका रास्ता, जयपुर

राजस्थानी संसार

शाहपुरा

औसर-मौसर प्रथा उठा देंगे

सभापतिजी को पंचो का आश्वासन

श्री रामकृष्णजी धूत (प्रधान अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा) ता. १ जनवरी १९४२ के सुबह ८ बजे शाहपुरा पधारे। माहेश्वरी नवयुवक मंडल, बालचर मंडल और प्रजा मंडल के सदस्यों ने 'माहेश्वरी भवन' पर पुष्पमालाओंसे स्वागत किया।

दोपहर को जाति के पंच सरदार आये और करीब ३ घटें तक विविध विषयों पर वार्तालाप होता रहा। वार्तालाप में श्रीमान् धूतजीने मौसर की खराबियां बतलाते हुये कहा कि मौसर जाति को नष्ट करने वाली प्रथा है। पंचो ने मौसर को २ साल के अन्दर बन्द करनेका धूतजी से वादा किया। करीब ३ बजे से ५ बजे तक आपने आर्यसमाज, प्रजा मण्डल का आफिस व खादी भण्डार व शहर में चर्खे चलाती हुई महिलाओं का निरीक्षण किया इसके बाद करीब ७॥ बजे 'माहेश्वरी भवन' में श्री मदनलालजी डोडिया की अध्यक्षता में सभा की कार्रवाई शुरू की गई।

ईश वन्दना व स्वागतगानके पश्चात् श्री कस्तूरचन्दजी तोष्णीवालने श्री धूतजीका परिचय दिया। इसके बाद श्री धूतजीने वर्तमान परिस्थिति पर प्रकाश डालते हुए अपने ओजस्वी भाषणमें कहा कि राजस्थानके युवकोंको अब और अधिक निद्रामें नहीं पड़े रहना चाहिए। उन्हें उठकर अपने समाजसे परदा-प्रथा, बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह, कन्या-विक्रय, वर-विक्रय, औसर-मौसर आदि कुप्रथाओंको उठा देनेके लिए सतत प्रयत्न करना चाहिए। स्त्री-शिक्षा, खादी व ग्रामोद्योग पर बोलते हुए आपने कहा कि हमें स्वतंत्रता प्राप्त करनेके लिए यह जरूरी है कि हम ऐसे रचनात्मक कार्य की ओर अपनी शक्ति लगा दें। पश्चात् श्री कस्तूरचंदजी तोष्णीवालने भी सामाजिक कुरीतियों पर प्रकाश डाला।

मेवाड़

बालक-बालिकाओं को शिक्षित बनाइये

कपासन ता. ३१-१२-४१ को प्रातःकाल श्री० रामकिशनजी धूत सभापति अ. भा. माहेश्वरी महासभा, श्री. कस्तुरचंदजी तोषणीवाल और श्री दिलीपसिंहजी यहां पहुंचे। स्टेशनपर स्थानीय नवयुवकोंने शिष्टमण्डल एवं श्री शारदाजीका, जो इसी गाड़ी द्वारा चितोड़गढ़ निश्चित् प्रोग्रामके अनुसार पहुंच रहे थे, पुष्प मालाओं द्वारा स्वागत किया।

शिष्ट मंडल माहेश्वरी पंचायती नोहरेमें ठहराया गया। यहां पर माहेश्वरी समाजकी जन संख्या ४०० के करीब है। आर्थिक दशा बड़ी सोचनीय प्रतीत हुई। शिक्षाका अभाव दिखाई पड़ता था।

सायंकालको ६ बजे पंचायती नोहरेमें श्री० कन्हैयालालजी वैद्य कुमलगढ़ निवासीके सभापतित्वमें सार्वजनिक सभाका कार्य प्रारम्भ किया गया। स्थानीय बंधुओंकी उपस्थिति काफी अच्छी थी। श्री. धूतजीने स्थानीय बन्धुओंमें फूटके वातावरण को देख खेद प्रगट करते हुए कहा कि यहां समाजमें तीन धड़े हैं यह बड़ी खेद की बात है। पश्चात् आपने राजस्थान माहेश्वरी कॉनफरेंसमें नवयुवकोंके शरीक न होनेपर खेद प्रगट करते हुए बतलाया कि कॉनफरेंस द्वारा आप पर कोई प्रस्ताव जबरन नहीं लादा जाता है। महासभा की नीति पंचायत से भिन्न है। पंचायततो कोई भी कानून जबरदस्ती समाजके उपर लाद देती है पर महासभा ऐसा नहीं करती। पंचायत प्रणालीके दोषोंका वर्णन करनेके पश्चात् औसर-मौसर और बच्चोंको अशिक्षित रखनेकी हानियोंका वर्णन कर समाजके होनहार बालक बालिकाओंके जीवनको शिक्षा द्वारा समुज्ज्वल बनानेके लिये आदेश देते हुए कहा कि अशिक्षित युवकोंकी बेकारी की अपेक्षा शिक्षित युवकोंकी बेकारी समाजमें विशेष लाभकारी हो सकती है। अतएव समाजके प्रत्येक बालक और बालिकाको शिक्षित बनाना आवश्यक है।

तत्पश्चात् श्री तोष्णीवालजीने कन्याविक्रय, परवानगी एवम् पंचायत द्वारा बहिष्कार प्रथाओंकी हानियोंका वर्णन किया एवं स्थानीय मण्डलकी आवश्यकता बताते हुए स्थानीय मण्डलके अधिकसे अधिक सदस्य बननेकी अपील की। इसके बाद श्री. दिलीपसिंहजी राठीने नवयुवकोंके राजपुताना कॉनफरेंसमें भाग नहीं लेने पर खेद प्रगट किया। पश्चात् निम्नलिखित नवयुवकोंने मौसर में भाग न लेनेकी प्रतिज्ञा ली—श्री भंवरलालजी झंवर, श्री नवनीतलालजी नामधर, श्री हरिवल्लभजी केला, कन्हैयालालजी गेहलड।

जबलपुर

सेठ गोविंददासजी पर सफल शस्त्रक्रिया

सेठ गोविंददासजी मालगणी पर ता. १२ को प्रातः स्थानीय विक्टोरिया हॉस्पिटलमें सफल आपरेशन किया गया। इस अवसर पर हाऊस सर्जन व सेठजीके फेमिली डाक्टरके अलावा अन्य पांच डाक्टर उपस्थित थे इस अवसरपर आपरेशन थिएटर पर एक बड़ा जनसमुदाय एकत्रित था। सेठजी पर सफल आपरेशनकी खबर सुनकर सबको अत्यन्त हर्ष हुआ। इस अवसर पर महात्माजीने अपना आर्शीवाद भेजा था।

राजस्थानी संघ, पूना

राजस्थानी संघ, पूना की सर्व साधारण सभा गत ता. ५-१-४२ को दोपहरको ३ बजे संघके कार्यालय, श्री मुरलीधरजी लोयाके निवासस्थानमें श्री. श्यामसुन्दरजी अग्रवालके सभापतित्वमें सम्पन्न हुई। उपस्थिति संतोष जनक थी।

१. संघके गतवर्षके कार्यका सिंहावलोकन कराकर गत वर्षका रिपोर्ट और आय-व्ययका हिसाब स्वीकृत किया गया।

२. संघकी नियमावलीमें आवश्यक परिवर्तनके पश्चात् आगामी वर्षके लिये निम्न पदाधिकारियोंका निर्वाचन किया गया—

सभापति—श्रीश्याम सुन्दरजी अग्रवाल

उप सभापति—श्री. मुरलीधरजी लोया, उपाध्यक्ष पूना शहर म्युनि. श्री. नयनसुखजी ओसवाल, बी. ए. एल्‌एल्‌ बी.,

प्र. मंत्री एवं कोषाध्यक्ष—श्री. नारायणदासजी कर्वा

सं. मंत्री—श्री. रामकृष्णजी जाजू

प्रचार मंत्री—श्री रूपचंदजी धूत, 'कोविद'

कार्यकारिणीके सदस्य सर्वश्री. श्रीकृष्णजी भूतड़ा, अमोलकचंदजी सुरपुरिया, बी. ए. एल्‌एल्. बी., गोविंदरामजी भूतड़ा, शंकरलालजी तोष्णीवाल, रामचंद्रजी राठी, लक्ष्मीचंदजी श्रीगौड़.

परामर्श समिति—सर्वश्री धोंडिरामजी खिवसरा ऑ. मॅजिस्ट्रेट, मदनलालजी जालान, नारायणदासजी धूत, मेघराजजी जाखेटिया।

जोधपुर

सर्वश्री बांगड़जी, सोमाणीजी एवं तापड़ियाजी का स्वागत

श्री सनातन धर्म सम्मेलन पर जोधपुर आये हुए श्री रघुनाथदासजी बांगड़ डीडवाना, श्री गजाधरजी सोमानी मौलासर, श्री जीवनमलजी तापड़िया जसवन्त गढ़का स्वागत करनेके लिये श्री माहेश्वरी कन्या पाठशाला तथा श्री माहेश्वरी स्कूल जोधपुर की ओरसे अपने २ स्थानोंपर शानदार जलसे किये गये। प्रथम श्री माहेश्वरी कन्या पाठशालामें श्री मुकुंददासजी तापड़िया, हाकिम डीडवानाके, तत्वावधानमें दिनके १॥ बजे उक्त तीनों महानुभावोंका स्वागत हुआ। सम्मेलनपर पधारे हुए पं. मोतीलालजी शास्त्री वैज्ञानिक जयपुरका स्त्री शिक्षाके भारतीयकरणपर प्रभाव शाली भाषण हुआ। श्री जयकिशनजी मूंधड़ाके पाठशालाकी रिपोर्ट पढ़ सुनानेपर उक्त तीनों महानुभावोंने १५१) रुपये पाठशाला को प्रदान किये और श्री रघुनादासजी बांगड़ की ओर से ५१) के अलावा ११) के लड्डू कन्याओंको बंटवाये गये। इस समारोहमें जोधपुरके विशिष्ट माहेश्वरियोंके अलावा सम्मेलनमें पधारे हुए कितने ही विद्वान भी सम्मिलित थे।

इसके बाद स्थानीय माहेश्वरी स्कूलमें स्वागत-समारोह हुआ, जिसमें माहेश्वरी सज्जनोंके अलावा नगरके कतिपय विशिष्ट व्यक्ति भी उपस्थित थे। उक्त तीनों सज्जनोंके सम्मानमें एक प्रीतिभोज स्कूलके अन्दर फलोंद्वारा सम्पन्न होनेपर पुष्पमालाओं द्वारा स्वागत किया गया। श्री सोहनलालजी मणियारने स्वागत भाषण देते हुए स्कूल के इतिहास का संक्षिप्त परिचय दिया। आपने बताया कि सन् १९४० में श्री जयनारायणजी तापड़िया ने ४० हजार रुपये देकर इस स्कूल की नींव रखी थी। मकान श्री शिवरतनजी मोहताने बनवा दिया और श्री जोधपुर नरेशने भी १५ हजार रुपये देकर अपने विद्याप्रेम का परिचय दिया। सेठ मंगनीरामजी बांगड़ने बोर्डिंग हाउसके लिये १० हजार रुपया दिया है, फिर भी स्कूलमें अभी कितने ही मकान बनने हैं, जिनके लिये समाज का ध्यान आकर्षित किया जाना आवश्यक है। इसके बाद लड़कोंने जिमनास्टिकके बहुतसे खेल दिखाये और शिक्षाके सम्बन्धमें पं. मोतीलालजी शास्त्री जयपुर का भाषण हुआ श्रीमान् बाबू गजाधरजी सोमानीने स्वागत-भाषण का जवाब देते हुए आभार प्रदर्शन किया और कहा कि स्कूल को हर दिशामें उन्नत बनाने के लिये उनका सहयोग बराबर मिलता रहेगा और जब भी हमारी सेवाओं की आवश्यकता होगी हम तैय्यार रहेंगे। ईश्वर करे, यह स्कूल शीघ्र हाईस्कूल बने। दिनमें ४ बजे उक्त जलसा समाप्त हुआ। इसके बाद श्री उम्मेद स्कूल की ओरसे आपलोगों का स्वागत हुआ जहां आपने २००) की सहायता प्रदान की।

नम्र निवेदन

बम्बई प्रान्तीय माहेश्वरी सभा के सभापतिपदके लिये मेरा नाम भी कुछ बन्धुओंने सूचित किया है। उनके प्रति आभार मानते हुए मेरा निवेदन है कि इस कार्यके उत्तरदायित्वसे मुझे मुक्त ही रखा जाय।

आनंदराम बाहेती

राजस्थानी संसार

अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभाका कार्यकारी मंडल

वर्धामें तृतीय अधिवेशन

अ. भा. माहेश्वरी महासभाके कार्यकारी मंडल का तृतीय अधिवेशन अ. भा. काँग्रेस कमेटीके अधिवेशनके अवसरपर वर्धामें ता. १७ जनवरी १९४२ को अ. भा. काँग्रेस कमेटी के पण्डालमें हुआ। समयाभाव के कारण यह उचित समझा गया कि कार्यसमितिका कार्य कार्यकारी मंडल ही कर दे और सबके सब विचारणीय विषय सीधे कार्यकारी मंडल के सम्मुख पेश किये जांय। इस निश्चय के अनुसार प्रातःकाल ९॥ बजे श्री रामकृष्णजी धूतकी अध्यक्षता में मण्डल की कार्यवाही प्रारंभ हुई। बैठकमें मण्डलके निम्न सदस्य उपस्थित थे।

सर्वश्री रामकृष्णजी धूत, श्रद्धेय श्री कृष्णदासजी जाजू, मा. ब्रिजलालजी बियाणी, राधाकृष्णजी लाहोटी, रामकृष्णजी जाजू, दामोदरदासजी मून्दडा, सुंदरलालजी मल्ल, राधावल्लभजी लड्ढा, रामगोपालजी चाण्डक, मोतीलालजी बंग, वल्लभदासजी जाजू, छगनलालजी अजमेरा, भीकूलालजी चाण्डक, शिवदासजी डागा, कृष्णगोपालजी कलंत्री नारायणदासजी धूत तथा छोगालालजी चाण्डक।

इनके अतिरिक्त दर्शक के रूपमें सर्वश्री गोपालदासजी राठी, कन्हैय्यालालजी कलयन्त्री, हनुमानवक्षजी शारदा, विश्वम्भरप्रसादजी शर्मा, शंकरलालजी भांगडिया, मगनलालजी कोठारी, प्रो. पन्नालालजी वल्दुआ, प्रो. ठाकुरदासजी बंग, विठ्ठलदासजी राठी, हरिकिशनजी राठी, रामरतनजी सिकची, राजेंद्रप्रसादजी मालपाणी, मूलचंदजी गान्धी, किशनलालजी बागड़ी, सूर्यरतनजी डागा, लक्ष्मीनारायणजी लखोटिया, सुन्दरलालजी राठी, दामोदरदासजी जाजू, हरकिशनजी मल्ल, मोतीलालजी केला, लूणकरणजी गान्धी, नारायणदासजी जाजू, हीरालालजी मून्धड़ा, परमसुखदासजी राठी, आईदानजी दाऊदासजी राठी, नथमलजी कलन्त्री, श्रीरामजी मून्दड़ा वार्शी, वासुदेवजी, वल्लभदासजी बिसाणी, जीवनलालजी चाण्डक, श्रीकिशनजी, रामदयालजी सावू, तथा द्वारकादासजी बाहेती थे।

१. सर्वप्रथम अ. भा. माहेश्वरी महासभाके कार्यकारी मंडलके अजमेर अधिवेशनकी कार्यवाही प्रधानमन्त्री श्री राधाकृष्णजी लाहोटीने पढ़कर सुनाई। उसके सम्बन्धमें श्री सभापतिजीने कुछ स्पष्टीकरण दिया व सिन्धभ्रमणके खर्चके बारेमें मण्डलके पिछले अधिवेशनके निश्चयके अनुसार अपना निर्णय दिया। निश्चय किया गया कि श्री सभापतिजी अपना स्पष्टीकरण व निर्णय विवरण की किताबमें दर्ज़ करा दें। इसके अनन्तर अजमेर अधिवेशनकी कार्यवाही स्वीकृत कर ली गयी।

२. मण्डलने स्व. आईदानजी मोहताके सम्बन्धमें निम्न शोक प्रस्ताव पास किया:—

अ. भा. माहेश्वरी महासभाके कार्यकारी मण्डल की यह सभा सुप्रसिद्ध समाजसेवी श्री आईदानजी मोहता, अकोला निवासीके निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती है। श्री आईदानजी महासभाके दो अधिवेशनोंके स्वागताध्यक्ष, तथा कई वर्ष तक महासभाके मंत्री और कोषाध्यक्ष रहे हैं। साथ ही अपने जीवनकाल में आपने समाज की प्रचुर सेवा की है। इसलिए उनके निधन को यह सभा अ. भा. माहेश्वरी महासभा तथा समाज की महान् क्षति समझती है।

३. स्व. चम्पाबाई भट्टडके सम्बन्धमें भी निम्न शोक प्रस्ताव पास किया गया:—

अ. भा. माहेश्वरी महासभाके कार्यकारी मण्डल की यह सभा समाज की सुप्रसिद्ध कार्यकर्त्री व देशसेविका श्रीमती चम्पाबाई भट्टडके निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती है। श्रीमती चम्पाबाई ने देश और समाज की अपने जीवनकाल में जो प्रभूत सेवा की है उसके लिए आदरभाव प्रकट करते हुए उनके निधन को समाज और देश दोनों की क्षति समझती है।

४. इसके अनन्तर मंडलने अन्य महानुभावोंके स्वर्गवासके सम्बन्धमें भी जिन्होंने अपने जीवनकालमें महासभाकी सेवाएं की हैं, निम्न शोक प्रस्ताव पास किया:—

"अ. भा. माहेश्वरी महासभाके कार्यकारी मंडलकी यह सभा श्री सुखदेवजी तापडिया, श्री सतीदासजी मूंदडा, श्री सूरजमलजी सूदा (बेहेरडी) श्री. शिवदासजी डागा आर्वी तथा श्री गणेश प्रसादजी माहेश्वरी कानपुरके, जिन्होंने अपने जीवन कालमें महासभाकी सेवा की है, देहावसान पर हार्दिक दुःख प्रकट करती है।

५ मण्डलने कांग्रेस द्वारा संचालित वाणी स्वातन्त्र्य संग्राममें भाग लेनेवाले माहेश्वरी बन्धुओंके लिए हार्दिक अभिनन्दनका निम्न प्रस्ताव पास किया।

"अ. भा. माहेश्वरी महासभाके कार्यकारी मण्डल की यह सभा समाजके उन सब बंधुओंका हार्दिक अभिनंदन करती है जिन्होंने देशके कांग्रेस द्वारा संचालित वाणीस्वातन्त्र्यके संग्राममें अपना योग दिया है।"

६ इसके पश्चात् श्री सभापतिजीने कार्यकारी मंडलके सम्मुख विचारार्थ प्रस्तुत विषयोंकी सूचि पढी। सर्व प्रथम मा. बियाणीजीने प्रथम दो प्रस्तावों (श्रद्धेय श्रीकृष्णदासजी जाजूकी हीरक जयन्ती व शिक्षा प्रसार सम्बन्धी योजना) पर स्पष्टीकरण दिया और यह बताया कि इन प्रस्तावोंको महासभाने किस प्रकार उठाया है। इस सम्बन्धमें श्री घनश्यामदासजी बिडलाका एक पत्र भी पढकर सुनाया गया। अन्तमें निम्न निश्चय हुआ:—कार्यकारी मण्डलकी राय है कि यह हीरक जयन्ति समस्त मारवाड़ी समाजकी ओरसे मनाई जाना उपयुक्त होगा। अतः इसकी संपूर्ण योजना मारवाड़ी समाजकी अन्य संस्थाओं व प्रमुख व्यक्तिओंसे सलाह करके बनाई जाय।

७ शिक्षा प्रसार विषयक योजना पर विचार करना अभी स्थगित रखा गया।

८ मण्डलने विचार विनिमयके पश्चात् यह निश्चय किया कि ग्वालियरमें महासभाका जो आगामी अधिवेशन किया जा रहा है, वह असोज मासमें करनेकी सलाह वहां के कार्यकर्त्ताओंको दी जाय। और यह अधिवेशन महासभाके स्वर्णजयन्ती अधिवेशनके रूपमें मनाया जाय और उसी अवसर पर महासभाका इतिहास प्रकाशित किया जाय। यदि शक्य हो तो उसी अवसर पर 'माहेश्वरी' का स्वर्णजयन्ती विशेषांक भी प्रकाशित किया जाय।

९ महासभाके इतिहासके प्रकाशनके खर्चके सम्बन्धमें विचार करते हुए यह सुझाव रखा गया कि इस कार्यके लिए पहले ही धनसंग्रह करनेके लिए कुछ उत्साही महानुभाव अपने-अपने क्षेत्रोंमें उस इतिहासकी प्रतियोंके लिए, जिनका आनुमानिक मूल्य ३॥) रु. निर्धारित किया गया, आर्डर बुक करें और उनका अगाऊ मूल्य वसूल करके दो मासके भीतर ही महासभा कार्यालयमें भिजवा दें। इस कार्यमें निम्न क्षेत्रोंमें निम्न महानुभावोंने इस प्रकार पुस्तककी अगाऊ बिक्री करनेके अभिवचन दिये:—

श्री राजेन्द्रप्रसादजी मालपाणी, अमरावती जिला	१०० प्रति
श्री मोतीलालजी केला, बुल्ढाणा जिला	५० प्रति
श्री हनुमान बक्सजी शारदा, व श्री वल्लभदासजी जाजू, वर्धा जिला	१०० प्रति
श्री भीखूलालजी चाण्डक, नागपुर जिला	१०० प्रति
श्री सुन्दरलालजी मल्ल, अकोला जिला	५० प्रति
श्री शिवदासजी डागा एम् एल्. ए., रायपुर जिला	२५ प्रति
श्री कृष्णगोपालजी कलयन्त्री, लखनऊ नगर	११ प्रति
श्री छगनलालजी अजमेरा, खानदेश	५० प्रति

इन उत्साही महानुभावोंको मण्डलने धन्यवाद दिया तथा अन्य लोगोंसे भी आशा की कि वे इस कार्यमें उत्साह दिखाएं एवं सहयोग दें।

१० श्री पं. विश्वम्भर प्रसादजी शर्माको महासभाका इतिहास लिखनेके लिए धन्यवाद देते हुए मंडलने निम्न प्रस्ताव पास किया:—

"अ. भा. मा. महासभाके कार्यकारी मंडलकी यह सभा श्री पं. विश्वम्भर प्रसादजी शर्माका अपने कृष्णमन्दिर प्रवासमें बड़े परिश्रम और लगनसे महासभाका इतिहास लिखनेके लिए धन्यवाद करती है।"

११ अ. भा. माहेश्वरी महासभाके सूरत अधिवेशनमें महासभा व 'माहेश्वरी' के हिसाब परीक्षकके रूपमें श्री दीपचंदजी चांडक निर्विचित हुए थे किन्तु महासभा एवं 'माहेश्वरी' का आफिस बम्बईमें रहनेके कारण श्री दीपचंदजी चाण्डकका इसी कामके लिए इतनी दूर आना या कार्यालयके हिसाब परीक्षणार्थ कागजात कलकत्ता भेजना कठिन सा कार्य है अतः सुविधा की दृष्टिसे निश्चय किया जाता है कि अ. भा. माहेश्वरी महासभाके आय-व्यय विवरणका निरीक्षक नारायणदासजी अग्रवाल, एण्ड कम्पनी, रजिस्टर्ड अकाउण्टेण्ट्स बम्बईको नियुक्त किया जाता है।

१२ श्रद्धेय श्रीकृष्णदासजी जाजूने कार्यकारी मंडलके अजमेर अधिवेशनमें एक पत्र भेजा था जिसमें कहा गया था कि कार्यकारी मंडल कलकत्ताके माहेश्वरी जातिवर्धक फण्डके ट्रस्टीमंडल से निवेदन करे कि वह उन्हीं लोगोंको विवाहके लिए फण्डसे सहायता दे जिनकी विवाहके समय आयु १८ वर्ष (वर) और १४ वर्ष (वधु) से कम न हो। इस पत्रके अनुसार कार्यकारी मण्डलने उस अधिवेशनमें निश्चय किया था कि मन्त्री महोदयको आदेश दिया जाय कि वे उक्त फण्डके ट्रस्टबोर्ड द्वारा १४ वर्षसे कम उम्र वाली लड़कीके साथ होने वाले विवाहमें फण्डसे सहायता न देनेका निश्चय करानेका प्रयत्न करावें। मंडलके निश्चयके अनुसार ता. २६-६-४१ को एक पत्र मन्त्री माहेश्वरी जातिवर्धक फण्डको लिखा गया था जिसमें कार्यकारी मंडल का प्रस्ताव भेजते हुए यह आग्रह किया गया था कि वे इस आशयका निश्चय ट्रस्टीमंडल की मीटिंगमें करायें। इसके उत्तरमें १९-११-४१ को जो पत्र जातिवर्धक फण्डकी तरफसे महासभा कार्यालयमें भेजा गया है उसमें ता. २४-८-४१ की ट्रस्ट बोर्ड की मीटिंग की कार्यवाहीके सिलसिलेमें कहा गया है-"जिस विवाहमें वधु की आयु १४ सालसे एवं वर की आयु १८ सालसे कम हो उन्हें माहेश्वरी जातिवर्धक फण्ड की ओरसे सहायता नहीं दी जानी चाहिए, इस आशयके श्री श्रीकृष्णदासजी जाजू एवं अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभाके आये हुए पत्र पढ़कर सुनाये गये। विचार विमर्शके पश्चात् बहुमतसे तय हुआ कि लोन देने की वर्तमान परिपाटी जो कि ट्रस्टडीडके अनुसार

(शेष पृष्ठ २७ के कालम ३ पर)

राजस्थानी संसार

उज्जैनका माहेश्वरी समाज तथा नवयुवक

गतांकमें माहेश्वरी युवक मंडल, इन्दोरके प्रचारमंत्री द्वारा उज्जैन पर भी कुछ टिप्पणी प्रकाशित की गई थी वे ही दृष्टिगत होनेसे मैं यहाँ की वास्तविक परिस्थिति संक्षिप्त रूपमें प्रकाशित करना अधिक अच्छा सोचता हूँ, ताकि माहेश्वरी जगत यहाँ की परिस्थितिसे परिचित हो सके।

यहाँ समाजके करीब १२५ घर हैं; जिनमें दो थोक मेवाड़ी तथा मारवाड़ी नामसे प्रचलित हैं। दोनों थोककी अलग २ पंचायत हैं। समाजमें सराफ, कपड़ा, किराना व सट्टेके व्यापारी तथा बहुत कम लोग नौकर पेशा हैं।

करीब दो वर्ष पूर्व यहाँ के उत्साही युवकोंने श्री लक्ष्मीनारायणजी भैय्या की अध्यक्षतामें "माहेश्वरी समाज" नाम की एक संस्था कायम की थी। संस्था के नवयुवक उत्साही होनेसे दिन ब दिन सदस्य संख्या की भी वृद्धि होती रही। संस्था के उत्साही स्वयंसेवकोंने उज्जैन जिला राजनैतिक सम्मेलनमें भी अपनी सेवासे पूर्ण सहयोग दिया था, जिससे कि उज्जैन जिलावासी पूर्णतया परिचित हैं। संस्थाने अपने समाज की सेवा करके अच्छे विचार यहाँ के अनुभवी वृद्ध समाज के हृदयमें अंकित कर दिये थे।

सदस्योंमें भी मेवाड़ी तथा मारवाड़ी दोनों थोकके युवक थे। दुर्दैवसे संस्थाके मेवाड़ी सदस्य चाहते थे कि मेवाड़ी हा अध्यक्ष, मंत्री व कोषाध्यक्ष हो, तथा मारवाड़ी युवक चाहते थे कि हमारे ही थोकका युवक उच्चासनको अलंकृत करे। यह प्रश्न संस्थामें उस समय पैदा हुआ, जब कि संस्थाके कोषमें कुछ धन एकत्रित हो गया, तथा कुछ धनसंपन्न युवक अपनी स्वेच्छाचारिताका उपयोग करने लगे। इसी अत्यन्त छोटे कारणसे संस्थाके सदस्योंमें मतभेद हो गया, और यही मतभेद संस्थाके विनाशका कारण हुआ।

संस्थाके एक उत्साही धनसंपन्न युवक श्री आशारामजी सावूने उज्जैनमें "माहेश्वरी बोर्डिंग हाउस" स्थापित करनेकी एक योजना सदस्योंके सम्मुख रक्खी थी, उन्होंने न सिर्फ योजना ही रक्खी थी, किन्तु पूर्णरूपेण सहायता देने व दिलानेका वचन दिया था, परन्तु संस्थाकी अधोगतिके साथ उनकी योजना कार्यरूपमें परिणित न हो सकी।

श्री इन्दोर युवक मंडलके प्रचार मंत्री श्री. श्रीनिवासजी झंवर प्रचारार्थ यहाँ पधारे थे, परन्तु उत्साही युवक होने पर भी जब कोई भी संस्था उनके दृष्टिगोचर न हुई तब उनको अत्यन्त पश्चात्ताप हुआ। मैं उनको विश्वास दिलाता हूँ कि निकट भविष्यमें शीघ्रातिशीघ्र हम पुनः अपना संघ कायम कर उनके "मध्य भारतयि माहेश्वरी समिति" स्थापित करनेमें सहयोग दे सकेंगे।

अंत में उज्जैनके उत्साही युवकोंसे मेरी विनम्र प्रार्थना है कि वे अपने पुराने आपसी मतभेदों को भुलाकर पुनः अपना संघ योग्य नेताके नेतृत्वमें स्थापित कर माहेश्वरी जगत को बता दें कि हम भी आने वाले युगके साथ ही हैं।

मोहनलाल बालदी

भूल सुधार

माहेश्वरीके ता. ७ जनवरीके अङ्कके पृष्ठ १९ पर 'भोजन सहित सारे कार्यक्रममें हिस्सा लेनेवाले व्यक्ति' में श्री नथू काशीराम पांडेका नाम प्रकाशित हुआ है और भोजन छोड़ अन्य विवाहविधिमें हिस्सा लेनेवाले व्यक्ति' मे श्री आनंदरामजी बाहेतीका नाम प्रकाशित हुआ है। पाठक श्री नथू काशीराम पांडेका नाम 'भोजन छोड़ अन्य विवाहविधिमें हिस्सालेनेवाले व्यक्तिकी सूचीमें और श्री आनंदरामजी बाहेतीका नाम 'भोजन सहित सारे कार्यक्रममें हिस्सा लेनेवाले व्यक्ति' की सूचीमें पढ़ें।

श्री कोलवार माहेश्वरी सभा

समस्त जातिबान्धवों एवं भगिनियों की सेवामें हमें कतिपय सूचनाँए देते परम हर्ष होता है--

सभाके प्रतिनिधि मण्डल एवं कार्य समितिके अधिवेशनों में जो २८-१२-४१ ई० को उझियानीमें हुये यह निश्चय हुआ है कि सभा का आगामी अधिवेशन आँवला जिला बरेलीमें किया जाय। महाशय कृष्णलालजी विद्यार्थी ने सभा कार्य करनेके लिए अपना पूरा समय देने का वचन दिया है। अब शीघ्र ही महाशयजी आप सब की सेवामें सभा कार्यके लिए पहुंचेंगे। हमें पूर्ण आशा है कि जिन महानुभावों पर सभाके हक्का रुपया बाकी है (बमूजिब कार्य प्रणाली) महाशयजीके आने पर या उनके पहुँचनेसे पहिलेही सभा कार्यालयको भेजनेकी कृपा करेंगे।

सभा कार्यके संचालनके लिए तुरन्त ही धनकी आवश्यकता थी-अतः हमें यह सूचित करते परम हर्ष होता है कि हमारी इस आवश्यकताको पूरा करनेके लिए निम्नलिखित सज्जनोंसे विशेष दानके वचन मिले हैं।

५१) श्री. बा. मुन्शीलालजी पल्तानी (कानपुर),
५१) ,, सेठ नारायण दासजी काबरा केसरपुर (बरेली),
६१) ,, सेठ घनश्यामदासजी जाखेटिया पुरादिलपुर (अलीगढ़),
२१) ,, बा. ब्रजमोहनलालजी दरगड़ शेखपुर (बदायूँ),
३१) ,, बा. मथुराप्रसादजी सारडा मुबारिकपुर (एटा),
३१) ,, बा. हरिचरणलालजी झंवर (फ़रुखाबाद),
१०) ,, बा० केदारनाथजी खासट बिलसी (बदायूँ),
१०) ,, ला० रोशनलालजी राठी ,, ,,
१०) ,, बा० माधोरामजी कावरा अजमेर
५) ,, बा० छबिलालजी काबरा राजपुर (बरेली),
२) ,, बा० रोशनलालजी मूंदड़ा ,, ,,
२) ,, ला० रामनिवासजी खासट उझियानी (बदायूँ)
२) ,, ला० बनवारीलालजी दरगड़ उझियानी (बदायूँ)
२) ,, ला० त्रिवैनीसहायजी खासट ,, ,,
२) ,, ला० अयोध्याप्रसादजी अजमेरा ,, ,,
१) ,, ला० मनोहरलालजी भंडारी ,, ,, ,,

ऊपर लिखे सज्जनों को उनकी उदारताके लिए हम धन्यवाद देते हैं। हमें आशा ही नहीं किंतु पूर्ण विश्वास है कि हमारे अन्य उदार हृदय सज्जन भी विशेष दान प्रदान कर सभाके कार्य संचालनमें सहायक होंगे।

सोरों अधिवेशनके पश्चात् पुरदिलपुर अधिवेशन तक सभाके आय-व्यय का हिसाब निरीक्षण होकर प्रतिनिधि मण्डल द्वारा पास हो गया है वह नीचे लिखे प्रकार है।

१६०।) श्री रोकड़ी बाकी रहे
१०३८।=) फीस स्वागत सदस्य, प्रतिनिधि व सभा हक्के जमा
४) ला. सेवाराम रोशनलाल लोधामई बारेके जमा रसीद नं. ६०१
२) ला. लक्ष्मणदासजी तालगांव वालेके जमा रसीद नं. ६०२

१२०४॥=)

४१८॥≡)॥। रसोई खर्च खाते
६०॥≡) पंण्डाल रोशनी आदि खर्च
१२८।=)॥ छपाई आदि खर्च खाते
१८९=)। प्रचार खर्च खाते
२८३॥।=) वेतन खर्च खाते
४६॥।=)॥ मुतफर्रिक खर्च खाते
२०) बा. बसन्तलालजी मालूके नाम
८) ला. बाबूलाजी मालपाणीके नाम
१) ला. ओंकार प्रसादजी काबरा सोरों वालेके नाम
४) ला. वासुदेव सहायजी भू. पू. मंत्री रसीद नं. ६०१
२) ला. बसंतलाल मालू भू. पू. मंत्री रसीद नं. ६०२
ला. लक्ष्मणदासजी तालगांव निवासीके जमा सोई नाम

११६२॥।)

४१॥।-)॥। श्री रोकड़ी बाकी रही
८॥।-) कोषाध्यक्ष
३३)॥। मंत्री

१२०४॥=)

सभा का इतिहास संकलन करनेके लिए अभी प्रयत्न जारी है, इस सम्बन्धमें जो विशेष चन्दा किया गया था वह अभी पर्याप्त नहीं है। जिन सज्जनों के पास अभी इस कमेटीके सदस्य नहीं पहुंचे हैं, शीघ्रही पहुँचेंगे।

जिन महानुभावों के पास इस सम्बन्धमें सामग्री हो, कार्यालयको भिजवानेकी कृपा करें या महाशयजीको दे देवें।

अन्तमें हमारा सर्व सज्जनों एवं महिलाओंसे सादर नम्र निवेदन है कि सभा कार्य संचालनमें हमारा हाथ बटावें।

घनश्यामदास जाखेटिया मन्त्री सभा

अजमेरमे माहेश्वरी मंडल की सभा

ता. ४ जनवरी १९४२ रविवार को श्री चांदकरणजी शारदा के समापतित्व में मंडल की एक सभा हुई। श्री लक्ष्मीनारायणजी तोषनीवाल व भंवरलालजी मंत्री की असामयिक मृत्यु पर शोकप्रस्ताव पास किया गया। श्री बिरद्धीचंदजी लखोटिया व मोहनलालजी बहेडियाने उदयपुरमें हुये सम्मेलन के संस्मरण सुनाये। मेवाड़के कार्यकर्त्ताओं के उत्साह तथा वहां की सामाजिक-क्रान्तिकी बहुत प्रशंसा की। उपस्थित सज्जनोंसे 'राजस्थानीय माहेश्वरी कार्यकर्ता सम्मेलन' के **प्रतिज्ञा-पत्र** भरवाये, व्यायामशालामें जाने व मौसरमें न जाने की प्रार्थना व अपील की गई। सभीने तदनुसार कार्य करने की इच्छा प्रगट की। श्री मोहनलालजी पलोड़ के यहां होनेवाले स्थानीय मौसरमें बंधुओंको भाग न लेनेके लिये समझानेको कमिटी बनाई गई। हिन्दु अधिकारोंकी रक्षा के लिये कारावास गये वीर सावरकर, मूंजे आदि को मंडलकी ओरसे बधाई दी गई और बिहार सरकारके प्रतिबन्धकी निन्दा की। तत्पश्चात् सभापतिजी को धन्यवाद देकर कार्यवाही समाप्त की गई।

मंत्री—

एरंडोल पुनर्विवाह काण्ड पर खुलासा

एरंडोलमें श्री बंसीलालजी बिड़लाका श्री रुक्मिणीदेवीके साथ पुनर्विवाह होजानेके पश्चात् अब कुछ लोग श्री रुक्मिणीदेवीके सम्बन्धमें अनेक अफवायें फैला रहे हैं अतः इस सम्बन्धमें कुछ आवश्यक खुलासा इस प्रकार है:—

श्री रुक्मिणीबाई बागड़ीगांव (मालवा) निवासी श्री चतुर्भुजजी बल्दुआकी पुत्री हैं। आपके दो भाई तेजकरण व मदनलाल हैं। हालमें आपके पिता हाटपिपल्या (मालवा) रहते हैं। आपके मामा मुंगड़, पिताके मामा लाहोटी और माताके मामा मूंदड़ा हैं। आपकी पहली सुसराल कम्लापुर (मालवा) निवासी श्री रामचन्द्रजी भूतड़ाके यहां है और आपके स्व. पतिका नाम गोवर्धनदासजी था।

सीताराम बिड़ला

एरण्डोलका पुनर्विवाह काण्ड

एरण्डोलमें श्री बंसीलालजी बिड़ला और श्री रुक्मिणीदेवीका जो पुनः विवाह हुआ है उसके सम्बन्धमें अनेक लेख व संवाद 'माहेश्वरी' में छपे हैं। इनके विरोधी पक्षके भी यदि कोई सज्जन अपने विचार या संवाद आदि प्रकाशित कराना चाहें ता 'माहेश्वरी' के कालम उनके लिए खुले हैं।

सं०

राजस्थानी संसार

कानपुर

मृतक भोजका अन्त हो गया

श्री माहेश्वरी एसोसिएशनने औसर बन्द कर देनेके लिये बराबर आन्दोलन किया और पंचोंसे यह मांग की थी कि वह पंचायत बुलाकर इस प्रश्नपर बिरादरीका मत जान ले।

अभी लाला नरसिंहदासजी जाजू की मृत्युके उपरान्त मृतक-भोजन न करनेका अनुरोध किया गया था परन्तु उनके वारसियोंके स्वीकार करनेपर एसोसिएशनने धरना द्वारा मृतक-भोजका विरोध करनेका निश्चय किया था। इस सम्बन्धमें नवयुवकोंके विरोधका आदर करते हुए पंचोंने असोसिएशनको अपने ता. १२-१-४२ के पत्रद्वारा आश्वासन दिया है कि अबसे वे औसरकी परवानगी पंचायतमें इस प्रश्नको तय कराये विना नहीं देंगे और पंचायत एक माहके अन्दर बुला लेंगे। इसके लिए एसोसिएशन पंचोंको धन्यवाद देता है और उनके अनुरोधके अनुसार इस औसरपर धरना द्वारा विरोध करनेका विचार स्थगित करता है। आशा है कि अब आगे माहेश्वरी समाजसे इस कुप्रथा का उन्मूलन हो जायेगा।

माहेश्वरी वाचनालय

करीब ६ मास पूर्व माहेश्वरी बालकोंद्वारा वाचनालय खोला गया था। नवम्बर ४१ तक २०३५ व्यक्तियोंने 'इस वाचनालयसे लाभ उठाया। खेद के साथ लिखना पड़ता है कि समाज की ओर से इन बालकों का उत्साह बढ़ाने का जराभी प्रयत्न नहीं किया जाता (इतनाही नहीं उद्घाटन के अवसर पर जिन महानुभावोंने सहायता एवं पत्र-पत्रिकायें देने का वचन दिया था उन्होंने भी अपना वचन पूरा नहीं किया। अतः समाजप्रेमी महानुभावोंसे प्रार्थना है कि वे इस वाचनालय को मदद कर बालकों का उत्साह बढ़ायें।

—मंत्री

पंचायती बहिष्कार का फोल स्वरूप

भाई बंसीलाल के विवाह को एक मास होगया है। इस विवाह में शरीक होनेवाले भाइयों पर बहिष्कार का अस्त्र फेंक कर उन्हें दबाने की कोशिश की गई किन्तु इसका परिणाम बिलकुल विपरीत हुआ दिखाई देता है क्योंकि इस प्रकार के बहिष्कार के बाद निम्न बंधुओं ने ता. ११ जनवरी ४२ तक भाई बंसीलाल के यहां भोजन किया।

सर्वश्री भगवानदासजी बिड़ला एरंडोल, रूपचंदजी काबरा वकील सोनवद, शंकरलालजी समदाणी कासोदा, शंकरलालजी देपरा नांद्रे, मोतीलालजी पांडे कासोदा, रामनारायणजी मानधण्या एरंडोल, दामोदरजी काबरा एरंडोल, लक्ष्मीनारायणजी जाजू वकील सातारा, बंसीलालजी भट्टड़ सातारा।

खानदेश के सात पेटामें से दो पेटा के एक-एक धड़े का एरंडोल की २०-२२ घरके धड़ेवाली पंचायत को बहिष्कारके समर्थन में उत्तर आया है। अन्य पेठों की ओरसे अब तक कोई उत्तर नहीं।

ब्राह्मणों का बहिष्कार

श्री दामोदरदासजी जाखेट्या, जिन्हें पुनर्विवाहमें सम्मिलित होनेके कारण बहिष्कृत किया गया था, की मृत्यके बारहवें दिवस गृहशुद्धिके निमित्त हुए ब्रह्मभोजमें ३०-३२ ब्राह्मण शरीक हुए थे। कुछ दिनों पश्चात् महसावदके कार्यमें इन ब्राह्मणोंमेंसे ५-६ भाई शरीक होने गये। इन भाइयों को कार्यमें शरीक होनेसे रोका गया। ज्ञात रहे कि इस सम्बन्धमें ब्राह्मणों की कोई पंचायत वगैरह नहीं हुई।

सीताराम बिड़ला

पंचायत जवाब दे।

एरण्डोल पुनर्विवाहमें शरीक हुए लोगोंपर कड़ा बहिष्कार डाला गया। किन्तु एक आश्चर्यजनक बात यह हुई कि जो पुनर्विवाहमें शरीक न थे उनपर भी बहिष्कार डाला गया। श्री. कन्हैयालालजी काबरा पर बहिष्कार क्यों किया गया समझमें नहीं आता। जांच करनेपर पता चला कि उनके २।३ लड़के पुनर्विवाहमें शरीक थे। इस कारण उनके घरपर भी बहिष्कार डाला गया। लेकिन यह तो उचित नहीं। क्यों कि जिस घर से एकसे ज्यादा व्यक्ति पुनर्विवाहमें सम्मिलित थे उनमें श्री. लक्ष्मणदासजी काबरा भी एक हैं। लेकिन उनके घरसे जितने व्यक्ति विवाहमें सम्मिलित थे उन सबके नाम बतीस पत्रमें लिखें है। ऐसे ही कन्हैयालालजी काबराके यहाँसे भी २।३ व्यक्ति इसमें शरीक थे उनके नाम बतीस पत्रमें क्यों नहीं डाले? यदि पंचों की गलती हो तो उनका नाम यादीसे हटाकर सात पेटाको लिखकर समझाना चाहिए। वैसे ही बतीस पत्रमें रघुनाथजी बिड़ला वकील का नाम नहीं हैं। उनका नाम क्यों हटाया यह उस पत्रमें लिखना जरूरी था। क्या उन्होंने क्षमा मांगी? या पश्चात्ताप व्यक्त किया? उनका नाम यादीमें नहीं। यह यदि पंच जाहीर करे तो बहुत अच्छा होगा। क्या पंचायत इसका जवाब देगी।

सीताराम बिड़ला

पूना

माहेश्वरी विद्या प्रचारक मण्डल पारितोषिक वितरण

माहेश्वरीमें पारितोषिक वितरणकी सूचनाके पश्चात् हमारे पास विद्यार्थियोंकी ओरसे आये पत्रोंका विचार कर निम्न विद्यार्थियोंको पारितोषिक वितरण किया गया।

मेट्रिक परीक्षामें संस्कृतमें ६७ अंक प्राप्त करनेके लिए लक्ष्मीनारायण पी. लाहोटीको रु. १००) का श्री श्रीरामजी पारितोषिक दिया गया।

मेट्रिक परीक्षामें ७०० में से ४३९ अंक प्राप्त करनेके लिए दामोदर प्रेमराज काबराको रु. ५०) का पारितोषिक दिया गया।

संयुक्त मंत्री—{ **मुरलीधर लोया**
तुलसीराम बांगड़

जावद में युवक मण्डल की स्थापना

माहेश्वरी नवयुवक मण्डल स्थापित होगया है। जिसके उद्देश्य शारीरिक व मानसिक उन्नति, सामाजिक कुरीतियाँ का नाश, महिलाओं एवं पुरुषोंमें साक्षरता प्रचार एवं समाजसे बेकारी का नाश करना है। उद्देश्योंको पूरा करने के आमलाना कार्रवाई के लिये कार्यसमिति १५ दिनमें कार्यक्रम तय्यार करके कार्य प्रारम्भ कर देगी। कार्यसमिति का चुनाव निम्न प्रकार है—

अध्यक्ष-श्री. बंसीलालजी गगरानी
उपाध्यक्ष-श्री. बालमुकुन्दजी कालानी
मंत्री-श्री. मोहनलालजी सोमानी
सहायकमन्त्री-श्री. बंसीलालजी मुंदड़ा (टोपीवाले)
कोषाध्यक्ष-श्री. मोतीलालजी राठी.

सदस्य सर्वश्री बंसीलालजी तोतला, मोतीलालजी चांडक, कन्हैलालजी न्योति, मदनलालजी भूतड़ा, बंसीलालजी काबरा, बंसीलालजी पलोड़, बंसीलालजी राठी।

मण्डलके २५ सदस्य तो हो चुके हैं, और माहेश्वरी वाचनालय स्थापित हो गया है।

—मंत्री

श्री लोयाजीके नाम खुला पत्र

श्रीमदनलालजी (बाबुलालजी) लोया, शोलापुर।

मैंने तारीख १६ जनवरी १९४२ के 'राजस्थानी वीर' में आपके विवाहका समाचार पढ़ा। सचमुचही इसपर मुझे विश्वास नहीं होता।

जब मैंने आपका 'आगे बढ़ो' यह लेख 'राजस्थानी वीर' में पढ़ा था उस वक्त आपका समाज सुधारके दृष्टिकोणका परिचय मिला था।

ता. १६-१-४२ के 'राजस्थानी वीर' में आप १३ या १४ वर्षीय अबोध कन्याके साथ विवाह कर रहे हैं, ऐसे समाचार थे। आपकी उम्र ४० वर्षकी तो जरूर होगी। मेरे ख्यालसे आप भी ऐसे विचारोंके हैं कि किसी अबोध लड़कीकी शादी ४० सालके आसपासकी उम्रके व्यक्तिसे करना यानी उस लड़कीकी जिन्दगीका होम करना है।

क्या हम आप जैसोंसे ऐसीही अपेक्षा करें? सचमुचही आज शोलापूरमें अपने समाजमें आप जैसे पढ़े लिखे कितने होंगे? आपके सामने कोई शास्त्रीय दलील पेश करनेकी आवश्यकता नहीं है।

शायद आप बच्चोंके लिये मां ढूंढते होंगे। किन्तु आपको मातृहृदय उसी लड़कीमें मिलेगा जो लड़की वयस्क होकर विधवा हो गई हो। जो लड़की बाल्यावस्थामें है वह मातृहृदयको क्या जानेगी?

मैं आशा रखता हूं कि यह बात सिर्फ अफवाह ही साबित हो और आप जैसे आगे आकर हमारे नेतृत्वपदका स्वीकार करें।

यदि यह अफवाह है तो आशा है आप इसका खुलासा करेंगे।

आपका नम्र,
'भाई'

मैंने भी श्री लोयाजी को व्यक्तिगत रूपसे विवाह न करनेके लिए लिखा था। इस पत्रके उत्तरमें उनका जो पत्र आया है उससे मालूम होता है कि वे विवाह करना नहीं चाहते।

राधाकृष्ण लाहोटी

(पृष्ठ २५ का शेषांश)

चली आ रही है उसमें परिवर्तन की आवश्यकता नहीं है। वर्तमानमें ट्रस्टडीडमें वरकी आयु १८ साल निर्धारित है किन्तु वधुकी आयु के सम्बन्धमें कोई मर्यादा नहीं है।"

माहेश्वरी जातिवर्धक फण्डके इस निश्चयके फलस्वरूप मंडल यह समझता है कि १४ वर्षसे कम आयुकी कन्याका विवाह शारदाकानूनके अनुसार बाल विवाह ही है और यह महासभाके सिद्धान्तोंके सर्वथा प्रतिकूल है। इस प्रकार के विवाहोंमें महासभाका कोई सहयोग नहीं होना चाहिये। अतः यह मंडल महासभाके मन्त्री को यह आदेश देता है कि महासभाके मन्त्री की हैसियतसे माहेश्वरी जातिवर्धक फण्डकी जो सदस्यता उन्हें प्राप्त है उसका वे परित्याग कर दें।

१३ महासभाकी नियमावलीके अनुसार महासभा अधिवेशनके प्रतिनिधियोंकी आधी फीस स्वागत समितिको महासभाके कोषमें देनी चाहिए, परन्तु सूरत महासभा अधिवेशनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं रहनेसे निश्चय किया गया कि उससे इस राशिकी मांग न की जाय।

१४. मण्डल, महासभा बिड़ला-छात्रवृत्तिकी रकमें जिन महानुभावोंने लौटादी हैं उन्हें धन्यवाद देता है तथा अन्य वृत्ति पानेवाले सज्जनोंसे प्रार्थना करता है कि वे भी अपनी रकमें यथा सम्भव शीघ्र लौटा दें।

अन्तमें उपस्थित सदस्यों तथा अन्य महानुभावोंको श्री सभापतिजीने धन्यवाद दिया और १२॥ बजे सभाकी कार्यवाही समाप्त हुई।

शनिवार }
ता. १७-१-४२ }

राधाकृष्ण लाहोटी
मन्त्री, अ. भा. मा. महासभा

पुस्तक समालोचना

गोपा-गणित

श्रीयुत सांगीदान पुरोहित गोपा (इंदाणी) द्वारा प्रणीत 'गोपा-गणित' नामाङ्कित पुस्तकके प्रथम और द्वितीय भाग हमारे पास समालोचनार्थ आये हैं। हमने दोनों भागोंको आदिसे इति तक पढ़ा है और यह अनुभव किया है कि लेखकने प्रस्तुत पुस्तकके द्वारा हिन्दी गणित–साहित्यमें तीव्र रूपसे खटकने वाले एक अभावकी पूर्ति की है। अब तक 'गणित' विषयपर हिन्दीमें जितनी पुस्तकें प्रकाशित होती रही हैं वे प्रायः दुर्बोध और पाश्चात्य आधार लेकर लिखी गयी हैं। यही कारण है कि वे छात्रोंको रुचिकर न होनेके कारण लोकप्रिय न हो सकीं। गणित एक रूक्ष विषय है। अधिकांश विद्यार्थी इसे पसन्द नहीं करते, पर जीवनके व्यवहार-चक्रमें इसकी उपादेयता किसी भी अन्य विषयसे कम नहीं हैं। जहाँ बौद्धिक विकासकी दृष्टिसे शिक्षाके क्षेत्रमें यह एक अपरिहार्य विषय हो उठा है वहाँ इसका एक आर्थिक पहलू भी है। संसारकी वर्तमान आर्थिक रचनामें यह आर्थिक पहलू ही अधिक कम महत्वकी चीज़ है। इसलिये जीवनके इस आर्थिक संघर्षमें प्रवेश करने से पूर्व विद्यार्थीके लिये इसका प्रारंभिक ज्ञान कितना अधिक आवश्यक है, इस विषयमें कहनेके लिये राइरत्ती भी गुंजाइश नहीं है; किन्तु विद्यार्थी चाहता है गणित की सहज–सुबोध पद्धति। लेखक महोदयने प्रस्तुत पुस्तकोंमें गमितके दुरूह नियमों को जिस सुबोध और सरल तरीके से विद्यार्थियोंके मास्तिष्क तक पहुँचाने का प्रयत्न किया है, वह प्रशंसनीय है। संख्या पठन से लेकर योग, बाकी, गुणा, भाग, त्रिराशिक, पञ्चराशिक, सप्तराशिक, नौराशिक, ग्यारहराशिक, व्यावहारिक प्रश्न, लाभहानि, साधारण व्याज आदि सभी विषयों को उतने मनोरञ्जक ढंगसे समझाया गया है कि विद्यार्थीके लिये पुस्तक एक दिलचस्प कहानी का रूप धारण कर लेती है। गणित सम्बन्धी कई मनोहर चुटकुले भी पुस्तकमें दिये हैं। इस लिये हम यह विश्वासपूर्वक कह सकते हैं कि इस पुस्तक को एक बार आरम्भ करके विद्यार्थी किसी दूसरी पुस्तकसे फ़िर गणित सीखना नहीं चाहेगा। प्रस्तुत पुस्तकमें उल्लिखित पद्धति गणित की प्राचीन देशी पद्धति है और हम प्रत्येक भारतीय विद्यार्थी को यह सलाह देंगे कि वह उस प्राचीन देशी पद्धतिपर गणित जैसे दुर्बोध विषय को अत्यन्त सरलतासे सीखकर व्यापार–चक्र के लिये अपने को अधिकसे अधिक योग्य बनाये।

गेट–अप और छपाई की दृष्टिसे पुस्तक यद्यपि बहुत सुन्दर नहीं है; तथापि कागज़ तथा छपाई के युद्धकालीन भावों को देखते हुए वह सस्ता है। हमें आशा है कि अभिभावकगण इस पुस्तक के महत्व को समझेंगे और विद्यार्थियोंको इससे लाभ उठाने का अवसर देंगे।

—आनन्द विद्यालंकार

[पृष्ठ ७ का शेषांश]

है। किन्तु मैं मान लेता हूं कि 'माहेश्वरी' में एरण्डोलकी खबरें पढ़ते हुए जब तुमने पढ़ा होगा कि कई भाइयोंने इसमें केवल सहयोग ही नहीं दिया अपितु पत्रोंकी तरफसे होनेवाले प्रहारोंको वीरकी भांति सहन भी किया है। यह हमारा सुधारका सुप्रभात है। लोगोंने आंखें खोली हैं और भविष्यमें उनसे और भी बड़ी आशाएं रखनी चाहिएं।

अन्तमें मैं भी तुमसे चाहूंगा कि तुम अपनी सखी सहेलियोंके बीच इन विषयोंकी चर्चा करती रहो और उनके मनसे यह विचार निकाल दो कि स्त्री अबला है। वह भी अपने अधिकारों की रक्षाके लिए लड़ सकती है। जब हम सभी लोग मिलकर प्रयत्न करने लग जायंगे तो मुझे आशा है कि हम बहुत थोड़े अर्सेमें ही उन्नति कर सकेंगे।

तुम्हारा
काका

(पृष्ठ १ का शेषांश)

हम निपुण गो-सेवक भेज सकें, ऐसा दल हमारे पास हो जाना चाहिए। स्वामी आनन्द आना चाहते हैं तो आ जांय; लेकिन वे थानामें बैठे बैठे भी कार्य कर सकते हैं। वे अपनी सेवा का क्षेत्र निश्चित कर लें और उतने भरमें अपनी शक्ति लगावें। इस प्रकार हिन्दुस्तान का नक्शा सामने रख कर छोटे-छोटे दस या सौ क्षेत्र बना सकते हैं और हरएक क्षेत्र का आदमी अपना हिसाब भेज सकता है। हिन्दुस्तानमें आज कई गोशालाएं पड़ी हैं। उनका निरीक्षण होना चाहिए; उनकी सुव्यवस्था होनी चाहिए। अगर किसी स्थानसे निष्णात सेवकके लिए माँग आवे, तो भेजने की भी हमारी तैयारी होनी चाहिए।

गो–सेवक बननेके लिए पवित्र आदमीकी जरूरत है। सिर्फ काबिल आदमी वह काम नहीं कर सकेगा। इस कार्यके लिए दौरा करने की जरूरत आज मेरे ध्यानमें नहीं आती। एक ही स्थानमें बैठ कर काफी काम हो सकता है। वर्धामें जितने दूध पीनेवाले मिलें, उनको गाय का दूध पिलावें। इतना तो अभी से शुरू कर सकते हैं।

एकता

रचयिताः—**श्री नंदकिशोरसिंहजी मोहता**

गिरधारन टारन बिपति, अशरण शरण सहाय।
लिखत प्रबन्ध सुएक्यपर चरण कमल सिरनाय ॥
भारत भाषा एकता, कहत यमन इतिफाक।
सुखप्रद दुखहर देशघर, मंगलमय परिपाक ॥
जहां बसेरा यह करे, धन्य नगर कुलदेश।
पूरत सब मन कामना, नासत कठिन कलेश ॥
तृन बटि बटि रस्सी बनत, बांधत गज बलवान।
इमि एकता सहयोग ते कारज होत महान ॥
परमानूके मेलते, बन जग द्रव्य अपार।
जाते सब प्राणीन कर, होत महत उपकार ॥
आकर्षन बल एकते रवि शशि नषत अपार।
नभ सुन्दरि भूषण सरिस, लटकत नीर अधार ॥
वात पित्त कफ एकका, जबलों रहत शरीर।
तबलों प्राणी सुख लहत, रहत सदा बलधीर ॥
थलचर नभचर जीवगण, यावत पसार पसार।
एकताही से लहत सुख, बुधजन कहत विचार ॥
जेतें गुण एकता विषें कोउ न सके बखान।
नारद सारद आदि कवि मो मति मन्द अजान ॥
सुरपति आयसु मेघगण, ब्रज हि बहावन काज।
बरसन लाग्यो प्रलय जल करन लग्यो बहुगाज ॥
तेहि छिन गोपन साथ से, हरि लिय गिरिहिं उठाय।
ता तर सब कह राखिके लीनो विपति नसाय।
एकताके बल पवन सुत, अंगदादि बलधाम।
सेतु बांधि कपि दल सहित, सीता पाई राम ॥
इस्पेनहि यवनन लियो, एकता ही के जोर।
शाह सिकन्दर साहसी लीनों देश न थोर ॥
चन्देरी दिल्ली नृपति अरु सह भूप चित्तोर।
बाबर लघु सेना सहित जीत लीनहि रणथोर ॥
व्योपारी ते होय गयेहा, भारत राज नरेश ॥
राजा प्रजा सुहित करन, शान्ति प्रदायक मूल।
जो एकता रस नहिं छके, ताकी है मति भूल ॥

– सवैया –

ऐसी है शक्ति अनुपम,
याहि चहे जो तो मेरू को राई बनावे।
लेई उठाय हिमाचलको,
अरू गंग की धारको फेर बहावे।
चारिसमुद्र सुठौर करे,
अरू सूरज हू को प्रतीच उगावे ॥
या गति देखि भने 'किशोर,'
तजो मानि कोंय यही मन भावे ॥

राजस्थानी संसार

मध्य प्रान्त पीछे क्यों?

अभी हाल ही अखिल राजपूताना माहेश्वरी कॉनफरेन्स का अधिवेशन उदयपुरमें हुआ। सामाजिक कुरीतियों एवं सामयिक प्रश्नोंपर विचारविनिमय हुआ। संयुक्त प्रांत, बम्बई प्रांत, बंगाल आदि प्रांतोंमें माहेश्वरी महासभाके प्रांतीय संगठन व इसी तरहके कई बार अधिवेशन भी हो चुके हैं। मध्यभारत प्रांतमें भी प्रांतीय माहेश्वरी सभा का संगठन होना अत्यन्त आवश्यक है। अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभापर यहांके सुधार का सम्पूर्ण भार नहीं छोड़ा जा सकता और न यह संभव ही है। उसके सहयोग की हम आशा कर सकते हैं परन्तु हमारा यह पहला कर्तव्य है कि हमारे प्रांत की सभा की स्थापना करें और उसके द्वारा समाज सुधार का सतत प्रयत्न जारी रखें। आगामी अधिवेशन के लिये स्वागत कारिणीके निर्माणके लिये जो प्रयत्न किये जाते हैं उनमें प्रांतीय शाखा सभा की स्थापना का कार्य भी किया जाय। अखिल माहेश्वरी समाजको हमें यह बतला देना चाहिये कि हम समाज सुधारमें किसी से पीछे नहीं रह सकते।

श्रीनिवास आगार, इन्दौर

(पृष्ठ ५ का शेषांश)

की इसके लिये जरूरत नहीं, लेकिन ब्रिटिश कामनवेल्थके राष्ट्रोंके अनुरूप, स्वतंत्र राष्ट्रोंका एक सामुदायिक संघ बनाया जा सकता है इस चीजको क्रियात्मक रूपसे उन्हें बतानेकी जरूरत है। मैं यहां पर यह बतलानेका साहस नहीं कर रहा कि ब्रिटिश कॉमनवेल्थमें जर्मनी सम्मिलित हो, लेकिन मैं तो सिर्फ इस बातकी ओर इशारा ही करता हूं कि ब्रिटिश कॉमनवेल्थ ही के समान राष्ट्रसंघमें जर्मनीके सम्मिलित होनेसे जर्मनोंकी आक्रामता रोकी जा सकती है। यूरोप एवं अन्य सभ्य राष्ट्र सहकारी तरीकसे कार्य कर सकते हैं, इस बातको स्पष्ट विचारपूर्ण और सत्यनिष्ट शब्दोंमें रखकर जो कुछ किया जायगा, उससे इस युद्धको रोका जा सकता है।

अंतमें उद्‌बोधन पैदा करनेका यह कार्य यदि ब्रिटेनके महान् नेतृत्व के अनुरूप ही करना हो, तब उसका कार्य दुश्मनके 'मोरेल' को तोड़ देनेसे कहीं अधिक ज्यादा होना चाहिए; उसे नये शांतियुग की आधारशिला भी स्थापित करनी होगी।

जीवन और मरण के संग्रामके बीच राजनैतिक महानुभावताका ऐसा कार्य संभव है या नहीं इसका जवाब एक विदेशी आदमी नहीं दे सकता, लेकिन एक बात निश्चित है कि यह कार्य केवल वही प्रजा कर सकती है जिसमें पुराने झगड़ोंकी सतहसे ऊपर आनेकी क्षमता हो। दूसरी किसी भी विचारधारा पर स्थापित की गई योजना अन्य विरोधी तत्वोंको राष्ट्रीय–समाजवादियोंके साथ मेल करानेमें ही परिणत होगी। और इस बातमें कोई संदेह नहीं कि बाह्य परिस्थितियां यदि हिटलरको अपनेसे प्रतिकूल जाती हुई दीखेंगी, तब वह ऐसी घटनाओंको ही पैदा करनेका सोचेगा।

परिस्थिति इतनी विषम हो चुकी है कि इस वक्त छल-कपट, षडयंत्र और प्रति–षडयंत्रकी बातें सोचना मूर्खता है। केवल वही उद्‌बोधन (Enlightenment) बिगड़ी बातको बना सकता है, जिसके पीछे सच्चे और महान् नेतृत्वका बल हो और जो संसारको बचानेकी जिम्मेवारी अपने ऊपर लेता हो।

World Review—से

सब प्रकार के बीमे का काम

फायर एण्ड जनरल

यूनिवर्सल

इंस्युरंस कंपनी

अपनी
जिंदगी
का
बी
मा
कराइये

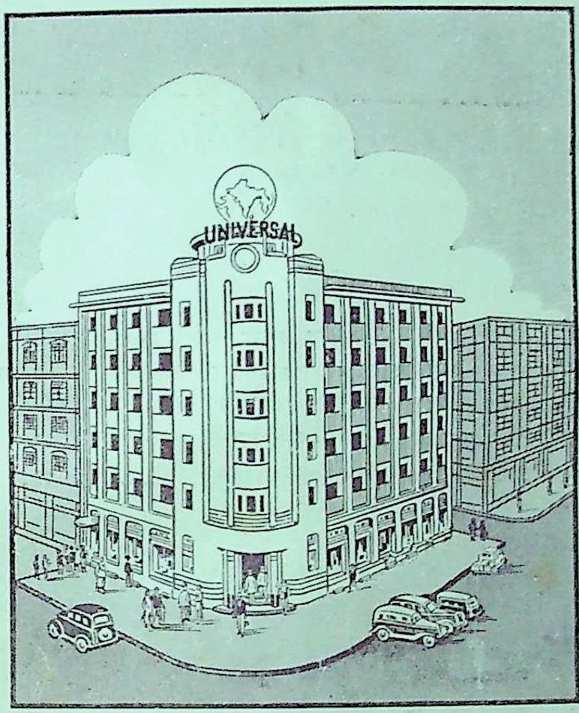

को
ही
दी
जि
ये

इसके डायरेक्टर्स हैं

१. दि. ब. कृष्णलाल मोहनलाल झवेरी एम्. ए. एलएल. बी.
२. सेठ लक्ष्मणदास हरखचंद डागा
३. राजा नारायणलाल बंशीलाल
४. श्री. जे. एच. मोदी सालीसिटर
५. श्री. केशवलाल हरीलाल सेतलवाड़
६. राय साहब केदारनाथ खेतान एम. एल. सी.
७. श्री. रणछोड़दास त्रिभुवनदास पोपावाला (मालपाणी) बी. ए.
८. श्री. कांतीलाल चिमनलाल मुन्शी बी.ए.

आग;
मशीन;
मोटर;
इत्यादि सब
प्रकार के
बीमे के लिये
हमें पूछिये

यह कम्पनी "माहेश्वरी"
द्वारा स्थापित की गई है।
स्व. सेठ वरजदासजी
भाईदासजी मालाणी इसके
संस्थापक थे।

सब प्रांतों में एजेन्सियां देनी हैं। आज ही एजेन्सी के आकर्षक नियमों के लिये लिखिये

मेनेजिंग एजेन्ट्स--एम. कानजी एन्ड कंपनी

दी यूनिवर्सल फायर एण्ड जनरल इंस्युरन्स कं० लि०

सर फीरोज़ शाह मेहता रोड, बंबई

Printed by Vasant S. B. Shroff, B. A., B. SC., LL. B. at the Bombay Vaibhav Press, Servants of India Society's Building, Sandhurst Road, Bombay 4 and published by him at 70, Tulsi Vihar, Marine Drive, Bombay.

How will you fulfil your duty
towards your dependents
when you are no longer
a breadwinner ?

If you were not there...

कुटुम्बं का संपूर्ण संरक्षण

न्यु एशियाटिक की 'हैपी होम पॉलिसी' बीमा की एक ऐसी अद्वितीय तथा अपूर्व योजना है जिसका कुटुम्ब की संरक्षा अधिक से अधिक प्रमाण में करने के हेतु से निमाण किया गया है।

हमारा भारत गरीबी से पीड़ित है। ऐसी दशा में यहां कुटुम्ब की संरक्षा के प्रश्न का हल अधिक आवश्यक है। 'हैपी होम पॉलिसी' में पैसा लगाने से पैसे का अनुचित उपयोग नहीं होता और न वह किसी तरह की जोखम का काम ही है। ५०००) के बीमे से क्या मिलता है:—

५००) और बोनस-मृत्यु के बाद
५०) मासिक-बीमे की शेष अवधि तक
४५००) बीमा की अवधि ख़त्म होने पर

इस रकम से बच्चों की शिक्षा का प्रबन्ध हो सकता है अथवा वे कोई धंधा कर सकते हैं

पूर्ण विवरण के लिये लिखिये—

दी न्यु एशिआटिक लाईफ इंस्युरंस कम्पनी लिमिटेड

मैनेजिंग एजेन्टस-**बिड़ला ब्रदर्स लिमिटेड**

हेड ऑफिस

कॅनाट सर्कस, नई दिल्ली

शाखाएं और प्रमुख कार्यकर्ता

उत्तरी विभाग
(कॅनाट सर्कस, नई दिल्ली)
लाहोर
रावलपिंडी
पेशावर (केन्टोनमेन्ट)
पटना
कानपुर

पूर्वी विभाग
(८, रायल एक्सचेन्ज प्लेस, कलकत्ता)
ढाका
बर्दवान
जलपाइगुरी
सिलहट
बर्मा

पश्चिमी विभाग
(४५-४७ अपोलो स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई)
हैद्राबाद (दक्षिण)
इर्नाकुलम
बेलगाम
अहमदाबाद
कराची

मध्य विभाग
(भवानी पेठ, जळगांव)
इन्दौर
जबलपुर
नागपुर
अमरावती

दक्षिणी विभाग
(२८९ लिंगा चेट्टी स्ट्रीट, मद्रास)
मद्रास
सीलोन
त्रिचनापल्ली

माहेश्वरी

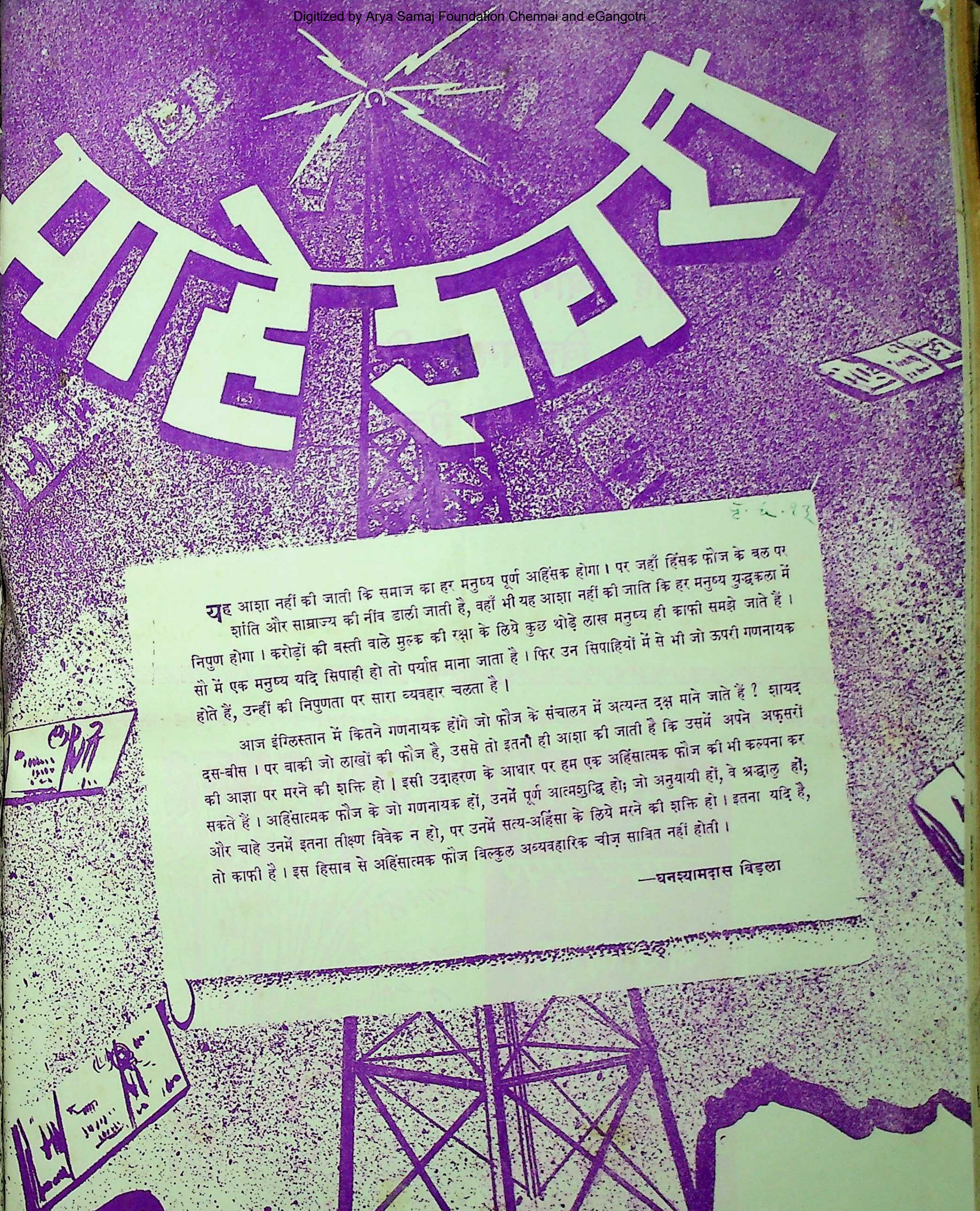

हे. ६.९३

यह आशा नहीं की जाती कि समाज का हर मनुष्य पूर्ण अहिंसक होगा । पर जहाँ हिंसक फौज के बल पर शांति और साम्राज्य की नींव डाली जाती है, वहाँ भी यह आशा नहीं की जाति कि हर मनुष्य युद्धकला में निपुण होगा । करोड़ों की बस्ती वाले मुल्क की रक्षा के लिये कुछ थोड़े लाख मनुष्य ही काफी समझे जाते हैं । सौ में एक मनुष्य यदि सिपाही हो तो पर्याप्त माना जाता है । फिर उन सिपाहियों में से भी जो ऊपरी गणनायक होते हैं, उन्हीं की निपुणता पर सारा व्यवहार चलता है ।

आज इंग्लिस्तान में कितने गणनायक होंगे जो फौज के संचालन में अत्यन्त दक्ष माने जाते हैं ? शायद दस-बीस । पर बाकी जो लाखों की फौज है, उससे तो इतनी ही आशा की जाती है कि उसमें अपने अफ़सरों की आज्ञा पर मरने की शक्ति हो । इसी उदाहरण के आधार पर हम एक अहिंसात्मक फौज की भी कल्पना कर सकते हैं । अहिंसात्मक फौज के जो गणनायक हों, उनमें पूर्ण आत्मशुद्धि हो; जो अनुयायी हों, वे श्रद्धालु हों; और चाहे उनमें इतना तीक्ष्ण विवेक न हो, पर उनमें सत्य-अहिंसा के लिये मरने की शक्ति हो । इतना यदि है, तो काफी है । इस हिसाब से अहिंसात्मक फौज बिल्कुल अव्यवहारिक चीज़ साबित नहीं होती ।

—घनश्यामदास बिड़ला

वर्ष ३२
संख्या १९

वार्षिक मूल्य
३) रुपया
एक प्रति का

खिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभाका मुखपत्र

प्रवर्तक—स्व. भागीरथदासजी भूतड़ा
पाक्षिक
कार्यालय—अली चेम्बर्स, डीन लेन, फोर्ट, बम्बई.

यह स्थान
विज्ञापन के लिए
रिक्त है।

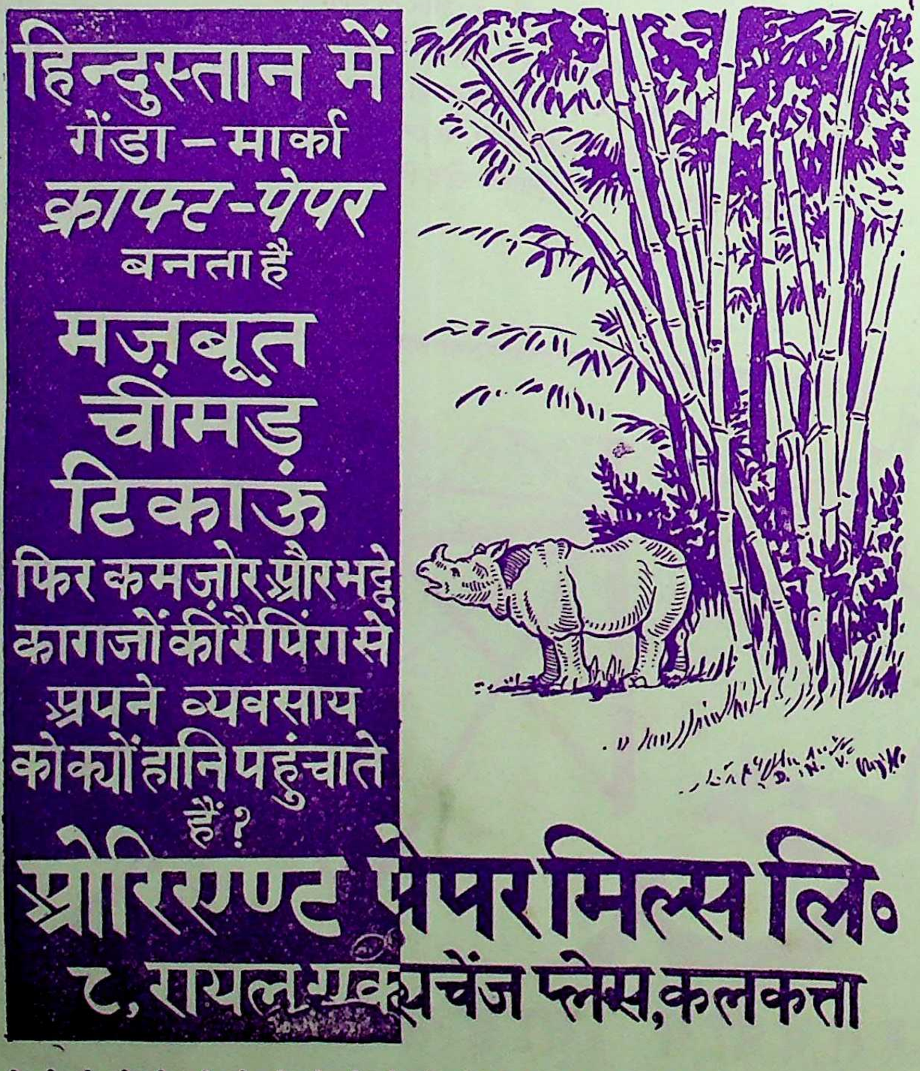

हिन्दुस्तान में
गेंडा-मार्का
क्राफ्ट-पेपर
बनता है
मज़बूत
चीमड़
टिकाऊ
फिर कमज़ोर और भद्दे
कागजों की रैपिंग से
अपने व्यवसाय
को क्यों हानि पहुंचाते
हैं?
ओरिएण्ट पेपर मिल्स लि०
८, रायल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता

सम्पादक समिति
श्री. लक्ष्मीनारायण मालाणी,
श्री. दामोदरदास मूंदड़ा,
श्री. राधाकृष्ण लाहोटी

माहेश्वरी

‘ उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत ’

प्रबन्ध सम्पादक
श्री. राधाकृष्ण लाहोटी
प्रकाशक
श्री. वसन्तलाल श्राफ़

वर्ष ३२, संख्या १९]
बम्बई ता. ७ फरवरी १९४२
[वार्षिक मूल्य ३ रुपया

हरिजनोंकी कठिनाई और सेवकोंके कर्त्तव्य

गुजरात, महाराष्ट्र और राजपूतानाके हरिजन सेवकों की एक छोटीसी सभा बारडोलीमें ८ तारीखको हुई थी। उसमें हरिजनोंके संबंधमें कई विकट प्रश्नोंपर गांधीजीके साथ चर्चा हुई थी। पहिला प्रश्न हरिजनोंके लिए कुएं खुलवानेके बारेमें था, कि क्या तरीका इस कामके लिए इख्तियार किया जाय। गांधीजीके उत्तरका सारांश यह था :

सबसे पहिले हमें यह जान लेना चाहिए कि कहां कहा कौन कौनसे कुएं हैं और उन पर कौन पानी भरता है। अगर डिस्ट्रिक्ट बोर्डके कुएं हैं तो पहिले तो हमें लोगों को समझाना होगा कि हरिजनों को वहांसे पानी लेने दें क्योंकि इसका उन्हें अधिकार है। अगर वह रोकें तो हम सरकार की मदद भी लेंगे। हरिजनोंके साथ हम खुद कुओंपर जायंगे। बड़ी संख्यामें हरिजनोंको ले जानेकी आवश्यकता नहीं। क्योंकि वह सबके सब स्वच्छताके नियमका पालन नहीं कर सकते। सिर्फ उन्हें ही जाना चाहिए जो पूरी तरहसे स्वच्छताके नियमका पालन करते हों। अगर कोई दंगाफ़साद करे तो सिर हमारा फूटेगा, हम हरिजनोंकी हड्डी टूटने न देंगे। इस तरहसे अगर एक दो कुएं भी खुल जायं तो काफी होगा। बादमें धीमे धीमे अपने आप काम बढ़ेगा।

‘जो कुएं खास हरिजनोंके लिए खुदे हैं उनका पानी मीठा होगा तो सर्व हिन्दू भी वहां पानी लेने आयेंगे—पहिले संकोचके साथ, बादमें खुले दिलसे—हमें उन्हें आने देना चाहिए। मगर मानो कि वह वहां कब्जा करके ही बैठ जाते हैं और हरिजनों पर ही मारपीट करते हैं तो भी हम हरिजनों को वहांसे हटनेकी सलाह न देंगे। सिर्फ इस डरसे कि झगड़ा होगा हम उन्हें चुपचाप बैठनेको नहीं कह सकते। हरिजनोंमें अब जाग्रति आ गई है। अपने अधिकारोंके रक्षणके लिये वे तैयार हो रहे हैं। यह हमारी तालीमका ही नतीजा है। मैं इसको रोकना नहीं चाहता। अगर हरिजन—सेवक सच्चे अहिंसक होंगे तो सब अड़चन दूर हो जायगी।

‘अब एक ऐसा युग आ रहा है कि जहां अहिंसा नहीं चलती वहां हिंसा को आना ही है। हमेशाके लिए हरिजन मुर्दा नहीं रह सकते। सवाल सिर्फ संधिकालका है। अगर हिन्दूधर्मको जिन्दा रहना है तो हममें श्रद्धा और हिम्मत आनी चाहिए।’

एक हरिजन सेवकने प्रश्न पूछा—‘हमारे साथ तो वे हरिजनोंको पानी लेने देंगे, परन्तु पीछेसे उनका बहिष्कार करें तो फिर क्या करना? गांधीजी : ‘इसके लिये हमें तैयार रहना चाहिए। आज देहातोंमें हरिजनोंको मज़दूरी मिलती है। वह मिलना बंद हो जाय तो इसकी जगह कोई स्वतंत्र धंधा उनको सिखाना चाहिए।

‘बहिष्कार दो धारवाला अस्त्र है। अगर वह तामसिक होगा तो उल्टा सवर्णोंको ही वह भारी पड़ेगा।’

प्रश्न : ‘देहातोंमें हरिजनोंको नमक, मिर्च तक सब सामान सवर्णोंके पाससे ही खरीदना पड़ता है। अगर वे उसे देना बन्द कर दें तो?’

गांधीजी : बात सीधी है। अगर देहतोंमें हरिजनोंकी संख्या बड़ी है तो उनके लिए अलग रसदकी दुकान खोली जा सकती है, और अगर बहुत अल्प संख्यामें वे हैं तो हरिजन सेवक खुद उन्हें सामान खरीद कर ला देंगे। उनको सवर्णोंकी दुकान पर जानेकी ज़रूरत ही नहीं पड़नी चाहिए।

‘यह तो मैंने सिद्धांतकी बात की। मगर हर जगह हमें मौका देखकर काम करना होगा।’

छात्रालयोंके बारेमें

प्रश्न : ‘जहां हरिजनोंके सिवा सब वर्णोंके विद्यार्थी लिये जाते हैं, ऐसे छात्रालयोंमें हरिजनोंको दाखिल करनेकी मांग करनी चाहिए या नहीं?’

गांधीजी : ‘जब मैंने शुरू शुरूमें कहा था कि रोटी व्यवहार या बेटी व्यवहार अस्पृश्यता निवारणके कार्यक्रमके लिए आवश्यक नहीं तो वह मर्यादा सामान्य जनताके लिए थी। इसका मतलब सिर्फ यह था कि कांग्रेसके लोग जनताके साथ इस बातके लिए आग्रह नहीं करेंगे। परंतु खुद कांग्रेसियोंको वह मर्यादा लागू नहीं होती। अब तो यह भी टूटने लगी है। इसलिये जहां सार्वजनिक छात्रालय हैं वहां तो हरिजनोंको दाखिल करनेकी हमें ज़रूर मांग करनी चाहिए। परंतु जहां केवल एक ही वर्णके लिए छात्रालय हों वहां हम हरिजनोंको दाखिल करानेकी मांग नहीं कर सकते। यह तो ऐसी ही बात हुई कि कन्याओंका छात्रालय है और उसमें मैं एक लड़केको दाखिल करना चाहूं। असत्य चार पैरवाला पशु है परंतु सत्यके तो दो ही पांव हैं।’

प्रश्न : ‘जहां हरिजनोंमें धर्मांतरकी प्रवृत्ति चलती हो वहां हमें क्या करना चाहिए?’

गांधीजी : ‘हम इस प्रवृत्तिको रोक नहीं सकते। पर हम खुद हरिजनोंके बीचमें जाकर बैठ जायेंगे। अभी सेवाग्रामकी ही बात लीजिए। आम तौर पर ईसाई प्रचारक सेवाग्राममें नहीं आते। पर एक बड़ा पादरी था उसने धर्मान्तर प्रवृत्ति चलानेके लिए अपना एक आदमी वहां भेज दिया। इस आदमीने ईसाई धर्मके प्रचारके लिए वहां एक स्कूल-सा खोल दिया। पैसे वगैरेका लालच भी वह देता था। हम तो पहिलेसे वहां काम करते थे। हमारे कार्यकर्तोने देहातके लोगोंको समझाया की अगर समझपूर्वक, लोक परलोकका विचार करके बच्चोंको वहां भेजते हों तो भले, नहीं तो उनको वहां भेजना बंद कर देना चाहिए। वह समझ गये। उन्होंने अपने बच्चोंका वहां जाना बंद कर दिया। धर्मान्तरकी बात तो यह बेचारे समझते भी नहीं थे। अब तो बड़े पादरीका आदमी वह भी हमारे पास आकर रह गया है।

‘इस तरह जगह जगह हरिजनोंके बीच हमारी छावनियां होनी चाहिए। अगर हमारा उनसे ठीक ठीक ठीक संबंध हो गया है तो वे हमें कुटुम्बका आदमी जैसा ही समझेंगे और सुखदुःखकी हर बातमें हमारी सलाह लेकर चलेंगे इसका यह मतलब नहीं कि हम धर्मान्तर प्रवृत्ति चलानेवाले लोगोंसे बात नहीं करेंगे। परंतु हमारा मुख्य काम लोगोंके बीच होगा। कई जगह किताबों, रुपये वगैराका लालच भी इन प्रचारकों की मारफत दिया जाता है। इससे बचानेका काम मुश्किल है। हमें जाग्रत रहना चाहिए। अगर यह सब कुछ करनेके बाद भी वह अन्य धर्ममें जाना चाहें तो हमें उसकी परवाह नहीं करनी चाहिएं।’

प्रश्न : ‘हरिजन सेवकमें क्या गुण होने चाहिए?’

गांधीजी: ‘बदकिस्मतीसे हमारे लगभग सब हरिजन-सेवक राष्ट्रवादियोंमेंसे आ गए हैं। इसलिए हमारा हरिजन काम राजकारणका हिस्सासा बन गया है। मेरी बात इससे उलटी है। म तो यह काम पहिले से करता आया हूं। इसका आधार मेरी धर्मवृत्ति थी। राजकारण बादमें इसमें मिल गया। परंतु मेरे नज़दीक यह संबंध अनिवार्य नहीं और न ही राजकरणमें से यह चीज़ निकली है।

‘मेरी रायमें कोई व्यक्ति प्रथम दर्जे का हरिजन-सेवक नहीं बन सकता अगर उसमें धर्मभावना नहीं। अगर धर्म की सेवाका ख़याल उसमें नहीं तो सवर्णों पर उसका प्रभाव नहीं पड़ेगा। सवर्णोंको राजकरणकी बहुत परवाह नहीं। परंतु जब वह देखेंगे कि यह आदमी जो कि मेरी तरह हिन्दूधर्म का प्रेमी है, जो शास्त्र मैंने पढ़े हैं वही वह भी पढ़ता है, तो वह अपनेसे पूछेगा कि क्यों यह आदमी अस्पृश्यता को हिन्दूधर्मका मेल कहता है? मैं क्यों नहीं। वह विचार करन लगेगा।

‘एक प्रथम दर्जेके हरिजन सेवकको अपने धर्मका अभिमान होना चाहिए, प्रेम होना चाहिए, उसके लिये मरनेकी तैयारी होनी चाहिए। जैसे कि मैंने बारंबार कहा है, उसे यह लगना चाहिए कि अस्पृश्यता हिन्दूधर्मका अविभाज्य अंग नहीं, न था; न हो सकता है। अगर इसका नाश न हुआ तो हिन्दूधर्मका नाश ही है, क्योंकि असत्य पर कोई धर्म कायम नहीं रह सकता और अस्पृश्यता असत्य है। अगर उसमें यह विश्वास आ गया है तो वह फिर माता-पिता, स्त्री-बच्चोंकी आहूति देकर भी इस काममें लगा रहेगा। वह हरिजनसेवक संघके मिलनेवाले द्रव्यके लालचसे काम न करेगा-जैसे कोई गीतापाठ करता है, मंदिरमें जाता है तो उसके लिए पैसा थोड़े ही मांगता है, वैसे ही हरिजनसेवकको आजिविकाका ख़याल तक नहीं करना चाहिए। हरिजन सेवा पेशा नहीं, धर्म है। इसलिये इसके लिए फ़ाकामस्ती करनी पड़े तो भी वह इसे न छोड़ेगा।

‘इतना होगा तो बाकी चीज़ें अपने आप उसमें आ जायेंगी। अगर कहीं कोई भंगी बीमार है तो उसकी सेवा करेगा, कोई

[शेष पृष्ठ ५ के कालम ३ पर]

माहेश्वरी

"कर्मण्येवाधिकारस्ते
मा फलेषु कदाचन"

बम्बई, ता० ७ फरवरी १९४२

युवक जागे !

पंचायतोंके स्वरूप और जाति बहिष्कारके सम्बन्धमें पहले भी इन कालमों में हम पर्याप्त प्रकाश डाल चुके हैं। पंचायतों का जन्म जिस सद्भावनासे किसी समय हुआ था उसका कैसा विकृत रूप आज हो गया है यह किसी से छिपा नहीं। आज पंचायतोंने समाज की प्रगति को रोकने और अपने स्वार्थसाधन के लिए ही मानों जाति–बहिष्कार के अस्त्रका उपयोग करना शुरू कर दिया है। जाति बाहिष्कार के द्वारा पंचायतें लोगों के प्रारम्भिक अधिकारों पर कुठाराघात करके अपनी स्वेच्छाचारिताका प्रदर्शन कर रही हैं। एक अर्से तक इस अस्त्रकी अचूकता भी दीखती रही है और सुधारके पथपर अग्रसर होने के अभिलाषी युवकों के साहस को उसने खण्डितकर दिया है। पर आज जमानेंने पलटा खाया है। वैसी दशा नहीं रही जो अबसे कुछ काल पूर्व दीख पड़ती थी।

पिछले दिनों एरण्डोलमें विधवाविवाहकी जो घटना घटी है उसने एक बात निश्चित् रूपसे स्पष्ट कर दी है कि हमारे समाजके युवकोंमें काफ़ी साहस पैदा हो गया है, जागृति केवल शब्द और सिद्धान्त तक ही सीमित नहीं, व्यवहारमें भी वह दृष्टिगोचर हुई है। किसी भी समाजके सुधार आन्दोलनकी सफलता इस बात पर निर्भर है कि उसे कितने वफ़ादार, सच्चे और क्रियात्मक सुधार करनेवाले अनुयायी मिलते हैं। सुधार का सिद्धान्त और वस्तु है और व्यावहारिक सुधार दूसरी। आज तक माहेश्वरी समाजमें सुधारका जो आन्दोलन होता आया है उसकी गति मन्द रही है और उसका फल शीघ्र प्रकट नहीं हुआ, इसका एकमात्र कारण यही है कि व्यवहार और क्रियाका अवसर आ पड़नेपर समाजमें वह स्फूर्ति, वह साहस और वह उत्साह नहीं नज़र आया जो सिद्धान्त स्वीकार करनेके समय दीख पड़ता था। सुधार को लोगोंने बहुधा सिद्धान्तके रूपसे तो स्वीकार कर लिया किन्तु उस सिद्धान्तको क्रियात्मकरूप देनेमें सदा ही कोई न कोई आड़ या रुकावट उन्हें मिलती रही। आत्मीय-स्वजन, ज्ञाति-बन्धु, जाति-बिरादरी इन सबका भय उन्हें अपने सिद्धान्तोंको व्यवहारमें लानेमें रोकता रहा है। इस भयपर वे विजय नहीं पा सके। यह उनकी पराजयका सबसे अधिक मुख्य कारण रहा है। सुधारके विरोधी लोग विशेषतः पंचायतोंके अधिनायक जाति-बहिष्कारके अस्त्रसे युवकों और सुधारवादियोंपर प्रहारोंकी बौछार करते रहे जिन्हें रोकनेके लिए उनके पास साहसकी ढाल नहीं थी। जाति बहिष्कारके मुकाबलेमें सुधारवादी आम समाजको तय्यार करनेमें एक कठिनाई अनुभव करते रहे। यही कारण है कि जो लोग सभा सोसाइटियोंमें इस बातका करार करते रहे हैं कि वे महासभाके द्वारा किये जानेवाले सुधारोंमें विश्वास करते हैं, वही अवसर आ पड़ने पर अपने सिद्धान्तोंपर टिके नहीं रह सके।

इस एरण्डोलकाण्ड के बाद पंचायतोंने जो एक आम जाति–बहिष्कार का दण्ड घोषित किया है, उसकी व्यर्थता प्रायः सिद्ध हो ही चुकी है। कुरीतियोंके दुर्ग पर विजय पानेके लिए सुधारवादियों की तरफ़से जो चेष्टाएं हो रही थीं उनका जवाब देनेके लिए जाति बहिष्कार कमजोर अस्त्र है यह बात अब साबित हो चुकी है। जिन लोगोंको भी जाति बहिष्कार का दण्ड दिया गया था उन्होंने उसकी तनिक भी परवाह नहीं की। जितने लोगोनें इस विवाहमें भाग लिया, वे इस जाति–बहिष्कारके दण्डसे अनभिज्ञ नहीं थे, वे जानते थे कि उनको इस प्रकारके अवांछित दण्डका सामना करना ही होगा, फिर भी उन्होंने इस विवाहमें भाग लिया और अपने विचारों और सिद्धांतों की अविचलता साबित की।

समाजके लिए यह एक अत्यधिक सुन्दर और शुभ लक्षण है। इधर नरेनासे भी एक इसी प्रकारका समाचार सुननेमें आया है जिस से ज्ञात होता है कि समाजके बहुतसे युवकों का एक ऐसा वर्ग पैदा हो रहा है और उसके दृढ़ विचारोंकी जड़ अज्ञात रूपसे समाजके भीतर दूर तक फैलती जा रही है, जो यह जाति बहिष्कारका सामाजिक रूप स्वीकार नहीं करता। इसी बातकी समाजको बहुत अधिक आवश्यकता थी। जब तक समाजके युवक जाति-बिरादरी, बहिष्कार आदिके भयका सर्वथा त्याग नहीं कर देते तब तक सुधारका मार्ग निष्कंटक नहीं हो सकता। सुधारके मार्गमें यह एक बड़ा कांटा था कि युवकोंमें इन सब वस्तुओंके कृत्रिम भयकी बला थी। यह सन्तोषकी बात है कि अब युवकोंनें इस अस्त्रके खिलाफ खड़े होनेका भी सत्साहस प्रदर्शित किया है और यदि यह प्रवृत्ति दिन–दिन बढ़ती गयी तो निःसन्देह समाज बहुत कुछ उन्नति कर सकेगा। जिन लोगोंको सुधारकी प्रक्रिया और आवश्यकतामें विश्वास है उन्हें यह विश्वास जमाना ही इस बुनियादपर चाहिए कि उन्हें अनेक दिक्कतों और कष्टोंका सामना करना पड़ सकता है। उनकी हरेक हरकत, हरेक गीत, हरेक चेष्टा ठहरे हुए पानीको प्रकम्पित कर देनेवाले पत्थर की है। उससे रूढ़िवादी लोगोंमें हलचल मच जाना नितान्त स्वाभाविक ही है। अतः इस परिस्थितिके लिए तो उन्हें अपनेको हमेशा तैयार ही रखना चाहिए। हमें विश्वास करना चाहिए कि युवकोंमें पैदा हुआ साहस दिन–दिन बढ़ता ही जायगा और उससे समाजके सुकृतकी वृद्धि होगी।

(पृष्ठ १५ का शेषांश)

और उनके भाई एरण्डोल जाकर उन्हें महू ले आये। महूमें विभिन्न डाक्टरोंके उपचारके पश्चात् उनका स्वास्थ्य कुछ ठीक हुआ और कोई आठ महिने पश्चात् वे पुनः एरण्डोल पहुंचा दी गयीं। साथ ही एरण्डोल इस आशय की सूचना भी भेजी गयी कि जमनादेवीका स्वास्थ्य अभी पूरी तरह ठीक नहीं हुआ है, इसलिए वहां उनका व्यवस्थित उपचार जारी रखा जाय। उसी समय जमनादेवी को देखकर उनके ज्येष्ठने कहा, "अरे यह रुग्णा कहांसे आकर गले पड़ गयी, यह मर जाय तो शिवचंदकी नयी शादी तो कर सकें"। धीरे–धीरे सारे परिवारके लिए यह विषाक्त घोषणा आदेश बन गयी। परिणाम स्वरूप जमनादेवी के उपचारका कोई ध्यान नहीं रखा गया और उनपर नित नये आरोपोंके साथ हमले किये जाने लगे। साथ ही उन्हें मृत्युके निकट पहुंचा देनेकी धमकियां दी गयों। यह सत्य है कि उन दिनों जमनादेवी पर नृशंस और अमानुषिक अत्याचार किये गये। साक्षी स्वरूप उनके अंगोंपर पड़ी मारके चिन्होंको कई लोगोंने देखा था। इन्हीं अत्याचारोंके परिणाम–स्वरूप श्री जमनादेवीजीने अपने पिताजीको पत्र लिखा जिसमें उनसे अनुरोध किया गया था कि वे उन्हें एरण्डोल आकर महू ले जांय। पत्र पाकर उनके भाई एरण्डोल गये और उन्हें लेकर महू लौट आये। फिर उनके रोगका उपचार आरम्भ किया गया। इसके पश्चात् श्री जमनादेवी लगातार दो वर्ष तक महू रहीं। इस अरसेमें एरण्डोलसे उन्हें लेनेके लिए समय समय पर लोग आये परन्तु श्री मोतीलालजी लोयाने उन्हें इस शर्त्तपर भेजना चाहा कि अब उनपर किसी प्रकारका अत्याचार न करते हुए वे लोग उनकी व्यवस्था एक पारिवारिक व्यक्तिकी भांति करेंगे। परिणामतः वे लोग उसी प्रकार लौट गये।

आजसे कोई तीन महिने पहिले श्री शिवचंदजी जाजू जमनादेवीको लेनेके लिए महू आये। फिर उपरोक्त प्रश्न उपस्थित हुआ और श्री शिवचंदजी जाजू इस शर्त्तपर अपनी पत्नी जमनादेवीको लेकर एरण्डोल गये कि वे अब उनपर किसी प्रकार का अत्याचार न होने देंगे। एरण्डोलमें सात दिन गुजर गये पश्चात् श्री जमनादेवी का एक पत्र महू आया, जिसमें उनके कुशल समाचार थे। परन्तु उसके आठ दिन बाद जो दूसरा पत्र आया उसमें जमनादेवीके द्वारा अपने भाग्य की विडम्बनापर दुःख प्रकट किया गया था। इसी तरहके ५, ६ पत्र और आनेपर महूसे श्री कन्हैय्यालालजी लोया द्वारा इस आशय का एक पत्र एरण्डोल श्री रामनाथजी जाजूको प्रेषित किया गया कि वे जमनादेवी पर होनेवाले अत्याचारों को रोकें, अन्यथा इसका परिणाम ठीक न होगा। इन दिनों श्री जमनादेवीपर जो अत्याचार किये जाते थे वे अकारण तो थे ही परन्तु उनकी बुनियाद ईर्ष्या और उपरोक्त भावनाके अतिरिक्त और कुछ नहीं थी। पत्थरके आंगनमें लोटा रखनेपर उसका झंकृत होना स्वाभाविक है, परन्तु उन्हें ऐसे ही अकारण आरोपोंको लेकर पीटा जाने लगा। उनके यह पूछनेपर कि उनका वास्तविक अपराध क्या है, श्री शिवचंदजी जाजू भी उन्हें खूब पीटने लगे। और महूसे भेजा हुआ उपरोक्त पत्र पाकर तो जैसे श्री शिवचंदजी की प्रतिहिंसा और भी भड़क उठी। अब वे जमनादेवी को दिनमें तीन–तीन, चार–चार बार पीटने लगे। इन अत्याचारोंसे ऊब कर श्री जमनादेवीने एक प्राइवेट पत्र अपने पिताजीके नाम प्रेषित किया। वह पत्र पाकर श्री कन्हैयालालजी लोया अपनी बहनको लेनेके लिये एरण्डोल गये और अपनी बहनको महू भेजनेके लिए श्री रामनाथजी जाजूसे कहा। श्री रामनाथजी जाजूने उन्हें झिड़क दिया और कहा कि वे इस सम्बन्धमें शिवचंदसे ही बात करें। इस पर कन्हैय्यालालजी लोया श्री शिवचंदजी जाजूसे बातें करने गये परन्तु उन्होंने उनसे बातें करनेसे इन्कार कर दिया। इसके पश्चात् श्री. कन्हैय्यालालजी लोयाने श्री शिवचंदजी से प्रार्थना की कि वे जमनादेवी को महू भेज दें। उनके पिताजी की अवस्था खराब है। परन्तु इसका उन्होंने उत्तर नहीं दिया और इसके पश्चात् जो कुछ हुआ वही अदालती कार्यवाही है। यह श्री कन्हैय्यालालजी लोया का बयान है।

श्री. जमनादेवीने भी इसी आशयका बयान-सा दिया है। उसमें उन्होंनें उनपर होनेवाले अत्याचारोंकी कहानी सुनाते हुए कहा है कि यदि अब भी श्री शिवचंदजी जाजू इस बातका निश्चित् आश्वासन दें कि वे अब उनपर किसी प्रकारके बर्बर अत्याचार न स्वयं करेंगे और न अन्य किसीको करने देंगे तो वे अब भी उनके पास रहनेका तय्यार हैं। उन्हींके शब्दोंमें इस तरहके फैसले इन पवित्र बन्धनोंको नहीं तोड़ सकते।

राजस्थानी संसार

[श्री रामजीदासजी मोदानीके द्वारा प्रेषित वक्तव्यके सम्बन्धमें (पृष्ठ १९ के कालम १ पर देखिए) हमारे एक पत्रका उत्तर देते हुए श्री रामप्रसादजी हुरकटने हमें जो पत्र भेजा था, उसका कुछ अंश इस प्रकार है।—सं.]

"श्री रामजीदासजी मोदानीने आपको जो बात लिखी है वह गलत है। किसीने माहेरा पहननेसे इन्कार नहीं किया, बल्कि श्री ओंकारजी कालानीने खुदने पहननेसे इन्कार किया। साम्भरमें श्री ओंकारजी जाति च्युत नहीं हैं। साम्भर वालोंने ओंकारजी कालानीकी शादी मोजमाबादमें जाकर करवाई थी। यहां किसीको ऐतराज हो ही कैसे सकता था। इसके अतिरिक्त ओंकारजी कालानीकी दो लड़कियोंकी शादीमें ओंकारजीने उनका माहेरा पहना था परन्तु इस बार उनको खुद को कुछ ऐसी घबराहट हो गयी थी कि उनके लड़केके ससुराल वाले अर्थात् चौमू वाले कहीं विवाह करनेसे इन्कार न कर दें क्योंकि चौमूवालोंको एक दो लोगोंने बहका दिया था और बादमें साम्भरके पंचोंके लिखने पर चौमूवाले विवाह करनेको राजी हुए थे। ओंकारजी कालानीकी घबराहट व्यर्थ थी और आश्चर्य है कि हम लोगोंको इसका पता भी नहीं था न इसकी कहीं चर्चा ही हुई थी।"

हिन्दू संस्कृतिके व्यापक सिद्धान्त

इलाहाबाद की सुप्रसिद्ध मासिक पत्रिका ‘ विश्ववाणी ’ के जनवरी सन् १९४२ के संस्कृति विशेषांकका डा. सय्यद अहमद एम. ए. पी. एच. डी. ने एक विचारपूर्ण और मननीय लेख ‘ हिन्दु संस्कृति के व्यापक सिद्धान्त ’ शीर्षकसे लिखा है । उस के खास-खास अंश ‘ मोहेश्वरी ’ के पाठकोंके लिए हम यहां दे रहे हैं । डा. सय्यद अहमद बिहारकी कांग्रेस सरकारके शिक्षा मन्त्री थे । कांग्रेस वर्किंग कमेटीके भी आज सदस्य हैं ।

डॉ. **सैयद महमूद** एम. ए., पी-एच. डी., बार-एट-ला., भूतपूर्व शिक्षा मंत्री, बिहार ।

आर्य जातिने इस मुल्कमें आकर एक नई, स्थायी और निहायत रौशन संस्कृति और सभ्यता की बुनियाद डाली । इस सभ्यतामें इतना स्थायित्व है कि बावजूद हजारों वर्ष बीत जाने पर भी इसकी सांस्कृतिक दीवारें इतनी ठोस हैं कि लगातार तूफ़ानके झोंके, जो मुख्तलिफ़ सूरतोंमें इस देशमें उठते रहे, इसकी दीवारों को हिला न सके । ज़मानेके पल्टने और अनेक दुघर्टनाओंके कारण उसके चमकदार और रौशन सिक्के पर भले ही ज़ंग आ गया हो; लेकिन थोड़ा-सा घिस कर चमकाने पर वह संस्कृति आज भी दुनिया को सभ्यता और शाइस्तगी का प्रकाश दिखा सकता है ।

हिन्दुओं का धर्म बहुत ही प्राचीन है । हिन्दू धर्मके सम्बन्धमें यदि यह कहा जाय कि यह बहुतसे मज़हबों का सम्मिश्रण है, तो गालिबन बेजा न होगा ।

इस मज़हब की नींव किसी एक शख्सने एक वक्त में नहीं डाली । बल्कि मुख्तलिफ़ ऋषियों और मुनियोंने, जो मुख्तलिफ ज़माने में पैदा हुए, हजारों सालके अरसे में इसे बनाया है । अगर इस मज़हबके सूक्ष्म सिद्धान्त और इसकी महानता को जाननेके लिए हम दिव्य ऋषियों और देवताओंके इल्म और अमलके तरीकों पर गौर करें, तो उनमें हमें ईश्वरोपासना की पूरी शान और एकेश्वरवाद की पूरी तस्वीर नज़र आयगी । गो यह सही है कि आजकल बहुतसे हिन्दू मूर्ति पूजते हैं और मूढ़ जन देहधारी आदमियों को ईश्वर मानने लगे हैं, लेकिन दरअसल हिन्दू धर्म में शुद्ध एकेश्वरवाद है । हिन्दू धर्मके अनुसार एक ईश्वरके अलावा दूसरे को मानना गुनाह है । वेदों की असली तालीम ईश्वर की एकता को ज़ाहिर करती है। जगह जगह उसमें लिखा है—“ नहीं है वास्तवमें कोई उपासना योग्य सिवाय एक ईश्वरके । ” वेद की एक और ऋचा यह है—“ मैं उस वास्तविक उपास्य देव को खूब पहचानता हूं, जो सृष्टिपर छाया हुआ है, जो सूर्यसे भी अधिक प्रकाशवान् है और अन्धकारसे दूर है । सिर्फ इस उपास्य देवको जाननेसे मुझे मृत्यु पर विजय मिल सकती है । सिवाय इसके मुक्तिका दूसरा रास्ता नहीं है । ” भगवद्गीता का एक श्लोक यह है— “ मैं वह आत्मा हूं जो हर चेतनके अन्दर है और हर जड़ पदार्थ की गहराईके अन्दर है । मैं न कभी पैदा हुआ और न मरूंगा । कोई ऐसा वक्त नहीं था जब मैं मौजूद न था । प्रारम्भ और अन्त ख्वाब है । न मैं कभी बदला हूं न कभी बदलूंगा । मृत्यु ने मुझे कभी छुआ तक नहीं । ” एक दूसरा श्लोक है—“ लोग उस एकेश्वर को इन्द्र, मित्र, वरुण, अग्नि कहते हैं; लेकिन वह सिर्फ अकेला है । ”

आमतौरपर लोग यह समझते हैं कि हिंदुओंके निकट खुदा इनसानकी सूरतमें जन्म लेता है । और इसीको अवतार कहते हैं। अवतारसे मतलब है जिस्मवाला और ख़ास व्यक्ति। सब प्राणियोंमें ईश्वरका अंश है । लेकिन सबको तो हम अवतार नहीं कहते । जो व्यक्ति अपने समयमें सबसे बड़ा धर्मवान होता है, उसीको भविष्यत्में लोग अवतार मानकर पूजते हैं। जिसमें अपने समयमें सबसे अधिक धार्मिकता हो वही अवतार है । चुनांचे आज भी महात्मा गांधीको बहुतसे हिन्दू अवतार मानने लगे हैं और कुछ जमानेके बादतो आमतौर पर अवतार माने जायेंगे । लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि महत्मा गांधी ईश्वर है और ईश्वरने उनमें जन्म लिया है । बल्कि इसका सिर्फ यह अर्थ है कि वह अपने जमानेके परम धार्मिक व्यक्ति हैं । इस विषयको एक हिन्दू निम्नलिखित पद्यके अंदर बहुत खूबसूरतीसे समझा सकता है—

आदमको खुदा मत कहो आदम खुदा नहीं,
लेकिन खुदाके नूरसे आदम जुदा नहीं ।
मरदाने खुदा खुदा न बाशन्द,
लेकिन ज़खुदा जुदा न बाशन्द ।*

अल्लामा अल्बेरूनी नामक एक मशहूर मुसलमान विद्वान् और ज्योतिषी महमूद ग़ज़नवीके समयमें हिन्दुस्तानमें आया और वर्षों तक हिन्दुस्तानमें रहकर उसने संस्कृतकी शिक्षा प्राप्त की और हिन्दुओंकी विद्याएं सीखीं । बड़े बड़े पण्डित उसका लोहा मानते थे । अलबेरूनी लिखता है—“ हिन्दू मूर्तिपूजक कहे जाते हैं, मगर मूर्तिपूजा आम जनतामें है; विद्वानोंमें मूर्तिपूजा नहीं है । वे तो एक ईश्वरको जिसका आदि अन्त नहीं है, जो अन्तर्यामी है, पवित्र है, जो अपनी मरजीसे जो चाहता है करता है, जो सर्व शक्तिवान् है, सर्वज्ञ है, जो जीवन देता है, हुकूमत करता है, जो अपनी बादशाहीमें निराला है, जिसकी किसीसे तुलना नहीं हो सकती, ऐसे ईश्वरको मानते हैं । ”

अल्लामा अबुलफ़ज़्ल, अकबरका विख्यात वज़ीर और सलाहकार था, जिसने हिन्दुओंके संबंधमें बहुत कुछ बातें मालूम कीं, लिखता है—“ मैंने हिन्दू विद्वानोंकी बहुत संगतिकी और हर पंथ और धर्मके उसूलोंको मालूम करके इस किताब (आईने अकबरी) में इस गरज़से लिखा है कि भविष्यमें विद्वान् लोग अफ़लातून, अरस्तू और सूफियोंके बताए हुए सिद्धान्तोंसे इनकी तुलना करके बिना किसी पक्षपातके यह मालूम कर सकेंगे कि वास्तविकता क्या है । हिन्दुओंकी पुस्तकोंमें अमूल्य और उच्चतम शिक्षाएं हैं । ” फिर आम हिन्दुओंके संबंधमें अबुलफ़ज्ल लिखता है—“ इस जमीनके बाशिन्दे (हिन्दू) खुदापरस्त (ईश्वरोपासक), दयावान, परोपकारी, हंसमुख, मिलनसार, अक्लमन्द, मेहनती, न्यायवान, धैर्यवान, सहनशील, कार्यशील, नमकहलाल, दानी और वफादार हैं । विपत्तिके समय उनकी असलीयत जाहिर होती है । सब लोग खुदाको एक मानते हैं और अगर ये लोग पत्थर और लकड़ीकी मूर्ति या किसी और वस्तुकी पूजा करते हैं, तो उसको मूर्ख मनुष्य मूर्तिपूजा समझते हैं । मगर मैंने बहुतसे विद्वानोंसे मालूम किया है कि मूर्तिको बाज़ ईश्वरोपासकोंने अपनी दिलजमई का आधार बनाया है, ताकि इनका दिल दसरी तरफ न भटके । वह एक ईश्वरकी उपासना जरूरी समझते हैं । अपनी समस्त उपासना और आदतोंमें उसीसे मदद चाहते हैं और उसीको सबसे ऊपर समझते हैं । ” वेद हिन्दुओंके सबसे पवित्र ग्रन्थ हैं, जो मुख्तलिफ़ वक्तोंमें लिखे गये हैं । इनमें सबसे मुख्य ऋग्वेद है, जिसका बड़ा हिस्सा उपासना और ईश्वरकी प्रशंसा और विशेषताओंसे भरा हुआ है । लेकिन इसकी बहुतसी ऋचाएं ऐसी भी हैं, जिनसे प्राचीन हिन्दुओंके धर्म, उनकी भाषा, उनकी विद्या, उनके ज्ञान, उनके रहन-सहन और उनकी सभ्यता आदि जाहिर होती है । ऋग्वेद और दूसरे वेदोंसे मालूम होता है कि हिन्दू जाति एक अत्यंत सभ्य जाति थी, जिनका संपूर्ण जीवन सुसंस्कृत था । उनके दिलोंमें ईश्वरका डर और भलाई की इच्छा थी । उन्होंने ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्रमें बड़े बड़े चमत्कार किए थे । हिंदुओंका अध्यात्म, जो हमेशा इस मुल्ककी प्रतिष्ठा और शानको बढ़ाता रहेगा, अब भी सभ्य मुल्कोंके लिये मार्ग प्रदर्शनका काम करता है । प्राचीन ईरानियों और फिर अरबोंके संपर्कसे यूरोप निवासी हिन्दुओंकी विशेषताओंसे सदा लाभ उठाते रहे और अब तक उठा रहे हैं । दानशीलता, मुरव्वत, शराफ़त और रवादारी हिन्दुओंके खास गुण हैं । इनकी वीरता, मुरव्वत और शराफ़त की यहां एक मिसाल दी जाती है । इसको गौरसे सुनो और देखो कि प्राचीन हिन्दू अपने दुश्मनोंके साथ कैसा बर्ताव करते थे—

महाभारतकी लड़ाईमें जब दोनों तरफसे सैन्यदल सजधजकर बाहर आये और व्यूह-रचना हो चुकी, तो यकायक युधिष्ठिर और अर्जुन व्यूहके बाहर निकले और अपने अपने हथियार फेंककर शत्रुकी फौजकी तरफ बढ़े । सब लोग हैरतमें थे और इनकी फौज यह समझी कि शायद यह लड़ना नहीं चाहते । शत्रु यह समझे कि ये लोग हमारी विशाल सेना देखकर डर गये और सुलहके लिये आ रहे हैं । दोनों तरफके लोग निस्तब्ध थे । दोनों पाण्डव, भीष्मपितामह और द्रोणाचार्यके शिविरमें गये और उनके चरणोंमें सिर रखकर बोले “ पूज्य गुरूओ ! हम आपके तुच्छ शिष्य हैं । यह हमारा दुर्भाग्य है कि हमें आपके सामने अस्त्र लेकर खड़ा होना पड़ा आपको भी विवश होकर हम छोटोंके विरुद्ध अस्त्र उठाने पड़े । हमको इसकी शिकायत नहीं है कि आप जैसे गुरु, हमारे शिक्षक हमारे मुकाबलेमें लड़नेपर कटिबद्ध हैं, क्योंकि हमारे विरोधी दुर्योधनसे आप वचनबद्ध हैं । मगर हम भी विवश हैं । हमने सुलहके प्रयत्नोंमें कोई उपाय उठा नहीं रखा और न कोई कसर छोड़ी । अब जबकि लड़ाई सिरपर आ गई है, तो हमारा कर्त्तव्य है कि पहले आपको प्रणाम करें और आपसे लड़ाई शुरू करनेकी इजाज़त मांगें । अगर दूसरे शत्रुका मुकाबला होता, तब भी हम गुरुकी हैसियतसे बिना आपकी आज्ञाके बाहर न निकलते और अब अगरचे आप ही से युद्ध करना है, तब भी हम आपकी इजाज़त मांगने आये हैं । जब तक आप इजाज़त न देंगे हमारे तीर तरकशसे बाहर न निकलेंगे ।

भीष्मपितामह और द्रोणाचार्य पर इस नम्रताका बड़ा असर हुआ और आंखोंमें आंसू भरकर उन्होंने बहुतसी दुआएं दीं और कहा कि–“ जाओ हम तुमको दिलसे इजाज़त देते हैं । तुम्हारी विजय तो उसी वक्त हो गई, जबकि तुम ऐसे शुद्ध विचार, ऐसी शराफ़त, ऐसी वीरता और ऐसी नम्रतासे अपने दुश्मनोंमें निःशस्त्र चले आये । ” आज युधिष्ठिर और अर्जुन नहीं हैं । आज दुर्योधनकी ख़ाक भी दुनियामें नहीं है । लेकिन पाण्डवोंके इस कार्यकी प्रलय तक

(शेष पृष्ठ २२ के कालम १ पर)

---

* मनुष्य खुदा नहीं है, लेकिन खुदासे वह जुदा भी नहीं है ।

जर्मन-मनोवृत्ति के मूलमें

वैयक्तिक परिस्थितियोंके झमेलोंसे क्षणभर छुट्टी पाकर, वर्तमान संसारके मामलोंको स्वस्थ चित्तसे समझनेका हम अल्प मात्र भी प्रयास करते हैं कि हमारे मनमें एक प्रकार की कष्टदायक घबड़ाहट पैदा होती है। इसके अतिरिक्त चारों ओर फैली हुई एक तरह की बुराई की बू आती है। जिन चीजोंको हम बिलकुल सत्य और दैनंदिन जीवन-व्यवहार की सहजबुद्धि के स्वरूपमें मानते आये हैं, उनका युग मानों खत्म हो चुका है, और मनुष्य जिसकी बड़ी बड़ी बातें करता आया है वैसी सत्य और ईमानदारीकी उपादेयता, शुद्ध सरल व्यवहार और निष्कपट वाणी, आत्मसम्मान और दूसरोंके प्रति आदर के भाव, संक्षेपमें कहा जाय तो मसीहाका वह सिद्धान्त कि "दूसरोंसे वैसा ही व्यवहार करो, जैसा कि तुम उनसे चाहते हो" आज सब कुछ मिट-सा गया है, और उनका महत्व पुराने जमानेके जीर्णशीर्ण शब्दोंके अलावा और कुछ नहीं रहा।

यदि रास्तेमें चलनेवाला एक साधारण मनुष्य व्यवहारके इन मौलिक नियमोंका उल्लंघन करता है, तो साधारण आचारकी कोटिसे जितना ही वह दूर गया होगा, उसके अनुसार हम उसे विक्षिप्त, अपराधी या पागल कहते हैं। क्या यही बात देशोंपर लागू हो सकती है? यहांपर मनोविज्ञानके आचार्योंका, जो कि प्रत्येक मानवीय उद्देश्यमें अन्तर्हित आचरणकी धाराको समझनेमें अंतदृष्टि रखते हैं, विचार जाननेके लिये हमें रुकना होगा। उनमेंसे एच. जी. बेयनिस नामक विद्वानने जो कि एक व्यावहारिक मनोविज्ञानवेत्ता हैं, तथा जर्मनी एवं युद्ध पूर्वके जर्मनोंके साथ निकटरूपसे रहनेका जिन्हें काफी अवसर मिला है, अपनी ताजा प्रकाशित पुस्तक 'अधिकृत जर्मनी' (Germany Possessed) में इस विचारको विशद रूपसे प्रस्तुत किया है। यह किताब अपने आप एक कोरा शास्त्रीय ही नहीं बल्कि मानवता की एक महान् समस्याका गंभीर अध्ययन है, और रास्तेमें चलने वाले एक साधारण आदमी को ध्यानमें रखकर लिखी गई है, जो कि अपनी निजी देहाती सीमाओंसे परेकी दुनियाको देखनेके लिये पर्याप्त बुद्धि रखता हो।

जनरल स्मट्सका कहना है कि वर्तमान सभ्यतामेंसे आध्यात्मिक तत्व दूर हो रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि वह किसी ओर कूच कर रही है; कुछ हो रहा है। हमारे जीवन उलझसे गए हैं और ऐसा प्रतीत होता है कि मानों अपनेसे एक बिलकुल परेकी किसी महाशक्ति की झपटमें हम जकड़ दिये गए हों। हमारे एकदम नजदीक पीछे जो दूसरे लोग आ रहे हैं, उनका क्या किया जाय? तेजीसे भागने वाले वर्ष कलके लिये कुछ विचार करनेका समय ही नहीं रखते।

इन सब घटनाओंके मूलमें जो कारण काम कर रहे हैं, यदि उन्हें किसी प्रकार हम समझनेकी कोशिश करेंगे तो हमारी दृष्टि ज्यादा साफ बनेगी। हम लोगों को यह समझ लेने की आवश्यकता है कि जर्मन लोग बदल गए हैं। सन् १८७० के पूर्वका यह जर्मनी नहीं है, और यहां तक कि विगत १९१४–१८ के युद्धकालके जर्मनीमें तथा आजके जर्मनीमें भी काफी अन्तर है, वर्तमान जर्मनी एक बिलकुल दूसरा जर्मनी है, और कुछ अधिक कहा जाय तो एकदम निकृष्ट और हीन कोटिका जर्मनी है। एक बार फिर यह "लूट करनेवाला लालचू और उच्छृंखल पशु" बन गया है।

'अभिप्रेत विचारों' (Wishful thinking) को छोड़ दिया जाय और वस्तुस्थिति पर ध्यान दिया जाय तो, एक दो बातें बिलकुल स्पष्ट-सी प्रतीत होती हैं। एक बात तो यह है कि जर्मन लोग वस्तुतः इस चीज को समझते हैं। यह एक बेहूदा सी बात है कि एक विशाल राष्ट्र की इतनी बड़ी भारी जनता को किसी भी अर्थमें एक ऐसी शासन पद्धति के द्वारा स्वेच्छासे ले जाया जा सकता है, उसे दिक किया जा सकता है, या फुसलाया जा सकता है, जिसे कि वह अपने आचरणके द्वारा मंजूर या स्वीकार नहीं करती। यदि हिटलर जीता तो जर्मन लोग बड़ी खुशीके साथ विजेताकी नांई लूटके मालको हथियानेके लिये तैयार बनेंगे। जर्मनी नात्सी शासन सत्ताके साथ पूरी तरहसे एकमत नहीं है, ऐसा कहनेका अर्थ अपने आपको विगत सौ वर्षोंके इतिहाससे अन्धा रखना ही हो सकता है।

दूसरी बात तानाशाही शासनप्रणालीके बारेमें है। यहांपर भी जर्मन लोग इस चीज को समझते हैं। वे इसको स्वीकार करते हैं, उसमें उन्हें यकीन है केवल यही नहीं अपितु उन्हें 'राष्ट्रीय समाजवाद' के सिद्धान्तोंमें अत्यधिक तीव्र आस्था है। राष्ट्रीय समाजवाद–ये शब्द अपने आपमें विरोधीसे मालूम पडते हैं, क्योंकि 'हेरेनवोक' के अधिकारोंके दावेको छोडकर यह किसीभी अर्थमें राष्ट्रीय नहीं, और हरेक जीवित व्यक्तिको स्वेच्छाचारी शासनका संपूर्ण दासत्व स्वीकार करना पडता है, इस अर्थ को छोडकर, और किसीभी रूपमें वह समाजवाद नहीं है। हिटलरने स्वयं कहा था कि "यहां पर किसी भी प्रकारकी रियायत नहीं दी जायगी, एक व्यक्ति अपने आपको निजका मालिक समझे, वैसा कोई स्वतंत्र स्थान नहीं रखा जायगा, यही समाजवाद है, और उत्पादनके साधनोंकी वैयक्तिक संपत्तिके जैसी क्षुद्र बातोंमें समाजवाद नहीं।" हम प्रजातंत्रके आदर्शोंके बारेमें बड़ी बड़ी बातें करते हैं, हमने मानों यह समझ रखा है कि यह तो एक स्वतः प्रकाशित सत्य है, और नीतिविषयक या वास्तविकताके आधार पर जब कोई इसका विरोध करता है, हम उसके जवाबमें पता नहीं क्या क्या कहते हैं। यह बात निश्चित रूपसे अधिक अच्छी है कि हम शांतिपूर्वक इन सबके अर्थको और इनके पीछे रही हुई युक्तियोंको समझें, जो कि एक प्रकारसे जर्मन लोगोंमें फैले हुए राजनैतिक विप्लवका सारतत्त्व है। ये विचार एकदम गलत हैं, इसमें कोई शक नहीं। लेकिन हमें फिर कभी भी जर्मनोंके साथ ही रहना है, अतः यह कहीं अधिक अच्छा है कि महज उन्हें दोष देनेकी अपेक्षा हम उनकी गल्तियां समझने की कोशिश करें।

शाब्दिक दृष्टिसे देखा जाय तो कोई भी व्यक्ति स्वतंत्र नहीं हो सकता, क्योंकि हरेक व्यक्ति अपने आपमें अपनी वैयक्तिक एवं सामाजिक ईकाईका द्वित्व है। परंतु इन दोनोंमें भी इस सामाजिक पहलूके अधिकार सबपर अपना असर रखते हैं और वे सब पर संयुक्त एवं समान रूपसे लागू होते हैं। ये अधिकार दिये गए हैं, लिये नहीं गये। संक्षेपमें प्रजातंत्रका यही सिद्धान्त है। अंग्रेज, अमेरिकन, चीनी, और रूसी स्टैण्डर्डके बीच इस बारेमें सैद्धान्तिक एवं क्रियात्मक विभेद हो सकता है, लेकिन यह सवाल छोटी मोटी बारीकियोंका है, सिद्धान्तका नहीं, और इसे सरलतासे दूर किया जा सकता है। विशेषतया यहां सवाल यह है कि "सिज़र को उसका हिस्सा कितना दिया जाय।"

तानाशाही विचार धारा इससे सर्वथा भिन्न है। इसमें व्यक्तिके निजी अस्तित्वकी कोई भी गुंजाइश नहीं। वह अपने आप एक सामूहिक इकाईके अधीन तत्वके अलावा और कुछ नहीं है; और जिस प्रकार शरीरके साथ, फेफडे, यकृत हृदय इत्यादि अंग जुडे हुए होते हैं, उसी तरह तानाशाही राष्ट्रमें व्यक्ति का जीवन बाहरसे स्वतंत्र दीखता हुआ भी वस्तुतः समस्त राष्ट्र-शरीरके आधीन ही होता है। वहां पर व्यक्तिकी स्वतंत्र सत्ता का मानो स्थान ही नहीं है। "तानाशाही राष्ट्र" की फिलसफी हरेक व्यक्तिके समुचित स्थानको निर्धारित करनेका दावा करती है। हेगल, फिक्टे, शॉपनहॉर, नित्शे आदि सभी फिलासफरोंने यह बतलाना चाहा है कि "राष्ट्र ही सर्वोपरि वस्तु है, यह एक इच्छा का ही मूर्तरूप है" इनमेंसे किसीने "सत्ता समुच्चय" के नाम, किसीने 'लोकोत्तर पुरुष' के आदर्श पर बल देकर, तो किसीने "एकके आगे समस्तका हित" ऐसे ऐसे शब्द विन्यासोंसे उसी आदर्शको पुष्ट किया है। यहां पर एक दिलचस्पी की बातका भी जिक्र कर देना आवश्यक होगा कि नात्सी विचार धारा के दो महान् पैगंबर हेगल और नित्शे–जर्मनीसे घृणा रखते थे। हेगलने एक स्थान पर लिखा है कि "मेरी यह भी एक आकांक्षा है कि मैं जर्मनीसे घृणा करनेवाला समझा जाऊं।"

हमें शायद इस बातका आश्चर्य होगा कि जिस देशने मानवजाति की प्रगतिमें इतना बड़ा हिस्सा दिया है, वह धोखेबाजी, खून, साजिशें और अनेक प्रकारके क्रूर अत्याचार करनेवाला कैसे बन गया। लेकिन वस्तुतः हमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए, क्योंकि यह सब तो "सत्ता ही सत्य है" इस सिद्धान्तके तर्कसंगत परिणाम हैं। इसके अलावा, जैसा कि पहले कहा गया है, इस चीज को जर्मनी समझता है। जर्मनीसे मतलब है सर्वसाधारण जर्मन प्रजा, जिसने कि हिटलरको सत्तारूढ किया है, और जर्मनी को आज वहां खड़ा किया है जहां कि वह है।

जर्मनीमें यह बुराई कैसे बढ़ी, पिछले सौ वर्षोंमें वहां क्या क्या परिवर्तन आये, उसके भीतरमें कौनसी शक्तियां काम कर रही थीं, ये सब बातें बड़ी दिलचस्पी की हैं, लेकिन यहां हम उनका जिक्र नहीं करते। इस बातको मान भी लिया जाय कि इसमें अनेक परिस्थितियां कारणभूत हैं, फिर भी हम इसका ठीक ठीक स्वरूप नहीं समझ सकते। ऐसा प्रतीत होता है कि इसमें कुछ ऐसी चीज निहित है जिसे हम साधारण नहीं कह सकते; हमें इसमें एक तरहकी बुराई और पागलपन की बू आती है। ठीक यहीं पर हमें भावनात्मक प्रवृत्तियोंके अध्ययनका मौका मिलता है।

जर्मन-व्यवहारकी युक्तियुक्तताके विषयमें लोग अकसर कहते-सोचते नजर आते हैं। 'डेली टेलिग्राफ' के एक ताजा प्रकाशित अग्रलेखमें जिसमें अनेक पत्र उद्धृत किये गए थे, बारबार यह पूछा गया है कि नात्सीवादको पैदा करनेवाली आत्मावस्था क्या अस्थायी है या शाश्वत?

मनोविज्ञान केवल व्यक्तिको ही नहीं, समूहको भी अपने क्षेत्रमें आवृत करता है। बहुत अर्सेसे यह बात मानी गयी है कि कोई भी एक लोक समुदाय, चाहे वह एक राष्ट्रके समान ही बृहत् क्यों न हो, एक स्वतंत्र ईकाईकी ही तरह क्रिया प्रतिक्रिया करता है, और जब जब एकधर्मी एवं सस्वरूपी भावनाओं प्रवृत्तियों और क्रियाओंके साथ क्षणिक व अस्थायी तौर पर विषमता जुडती है तब तब विभिन्न मनस्तत्वोंके बीच समन्वयका कोई न कोई सूत्र अवश्य दिखाई देता है। जनताके अंदर छिपा हुआ पृथक् मनस्तत्वोंका समुच्चय किसी भिन्न, आन्तरिक दृष्टिसे संबंद्ध और बड़ी चीजके साथ एकत्रित होनेकी क्षमता रखता है। इस विषयकी ज्यादा जानकारीके लिए ट्रोटर्सकी 'समूह मानस' (Instincts of the Herd) और लॅबॉनकी ला फाउले (La Foule) नामक किताबें उपयोगी हो सकती हैं।

बेयनिस इस विचारको प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि जर्मनोंका अज्ञात समूहमानस हिस्टिरिकल विस्फोटमें–एक ऐसे भावावेशमें बह गया है जिसे समझना आसान नहीं। उनकी गतिविधिको हम बुद्धियुक्त नहीं मान सकते। यहांपर निस्संदेह दो बातें स्पष्ट ताल्लुक

(पृष्ठ २४ के कालम १ का शेषांश)

अ. भा. माहेश्वरी महासभा

स्वर्णजयन्ति महोत्सव

समाजोपयोगी महत्वपूर्ण योजनाएं

माहेश्वरी बंधुओं को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अ. भा. माहेश्वरी महासभा संबंधी हलचलों को आरंभ हुए ५० वर्ष समाप्त हो रहे हैं। संवत् १९५० में सर्वप्रथम माहेश्वरी सभा की स्थापना सहारनपुरमें हुई थी। यद्यपि उसका क्षेत्र उस समय उत्तर भारत तक ही सीमित था और माहेश्वरी महासभा का भारत व्यापी प्रसार संवत १९६४ में अमरावती महासभाधिवेशन से हुआ किन्तु संवत् १९५० ही वस्तुतः हमारी महासभा संबंधी हलचलों और सामाजिक विकास का आरंभकाल है। अ० भा० माहेश्वरी महासभा रूपी सुविशाल वृक्ष का बीज उसी समय एक प्रकारसे वोया गया और उसकी स्मृतिको चिरस्थायी बनाना हमारा कर्तव्य है। इसी भावनासे प्रेरित होकर महासभाके कार्यकारी मंडलने गत वर्धा अधिवेशनमें यह निश्चय किया है कि महासभाके आगामी ग्वालियर अधिवेशनको अ० भा० माहेश्वरी महासभाका स्वर्णजयन्ति महोत्सव माना जाय और उसे इसी दृष्टिसे मनाया जाय। मुझे विश्वास है कि महासभा प्रेमी इस महत्वपूर्ण योजनाको सफल बनानेमें पूर्ण सहयोग करेंगे।

माहेश्वरी महासभा का इतिहास

महासभाके उक्त स्वर्णजयन्ति महोत्सवके शुभ अवसर पर कार्यकारी मंडलने अ. भा. माहेश्वरी महासभाकी ५० वर्षों की सेवाकृत्ति का विस्तृत इतिहास प्रकाशित करने का निश्चय किया है। माहेश्वरी बंधुओंको यह जानकर हर्ष होगा कि महासभा का यह इतिहास तपोधन श्रीकृष्णदासजी जाजू की पुण्य प्रेरणासे माहेश्वरी समाजके चिरपरिचित विद्वान श्री. पं. विश्वंभरप्रसादजी शर्मा ने बड़े परिश्रमके साथ कृष्णमंदिर (सेण्ट्रल जेल, नागपुर) में लिखा है। इस इतिहासमें माहेश्वरी महासभाके गत ५० वर्षोंके सामाजिक आंदोलनके साथ विविध प्रांतोंके माहेश्वरी समाज की गति विधि एवं सामाजिक जागृति का भी परिचय दिया गया है। माहेश्वरी समाजमें सामाजिक जागरणका प्रकाश किस तरह धीरे धीरे फैला, कैसी कसी सामाजिक समस्याएं और संघर्ष पैदा हुए और किन किन विभूतियोंने हमारे सामाजिक जीवनको समुन्नत एवं प्रगतिशील बनानेमें सहायता की, यह सब इस इतिहासमें पाठकोंको मिलेगा। निस्संदेह यह इतिहास प्रत्येक माहेश्वरी बंधु और बहनके लिये संग्रह की चीज़ होगी और समाजकी वर्तमान तथा भावी संततिको उत्तरोत्तर उन्नतिपथ पर अग्रसर होनेके लिये पथप्रदर्शक काम करेगा।

इतिहासके ग्राहक बनिये

यह इतिहास सामग्री लगभग ३००।४०० पृष्ठोंमें होगी और समाजके विशिष्ट पुरुषोंके सैकड़ों चित्र इसमें छपेंगे। युद्धके कारण कागज़ का दाम अत्यधिक बढ़ गया है लेकिन फिर भी समाज की गौरववृद्धिके लिये महासभाके मण्डलने इसे प्रकाशित करने का निश्चय कर लिया है और मण्डलके अनेक सदस्योंने इसके ग्राहक बनाने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ली है। इतिहासका मूल्य ३॥ या ४ रु. होगा। मण्डलके कई सदस्योंने अपने अपने जिले और तहसीलों से इस इतिहासके सौ–सौ पचास–पचास सदस्य बनाने की जिम्मेदारी ली है, और दो महीनेके भीतर उसका सारा मूल्य महासभा कार्यालय बंबईको भेजनेका वचन दिया है। मूल्य प्राप्त होना आरंभ हो गया है और सबसे पहले श्रीमान् मोतीलालजी केलाने अपने जिम्मेके ५० ग्राहकोंके रुपये अदा कर दिये हैं जिसके लिये हम उनके आभारी हैं और चाहते हैं कि मण्डलके अन्य सदस्य भी इसी प्रकारका उत्साह प्रदर्शित करें।

इतिहासकी बहुत थोड़ी प्रतियां छपाई जा रही हैं अतः माहेश्वरी बंधुओंको अभीसे अपनी कापी मूल्य भेजकर रिज़र्व करा लेनी चाहिये। अन्यथा पीछे इसका प्राप्त होना कठिन हो जायगा। प्रत्येक प्रांतके कार्यकारी मंडलके सदस्योंसे अनुरोध है कि इस आवश्यक कार्यमें उत्साहपूर्वक योग प्रदान करें और अपने अपने प्रांतोंसे 'इतिहास' के पर्याप्त संख्यामें ग्राहक बनाकर उनका मूल्य भिजवा दें ताकि इतिहास–प्रकाशनका कार्य जल्दीसे जल्दी आरंभ हो सके।

महासभाका 'स्वर्णजयन्ति महोत्सव' जहां हमारे भीतर प्रगतिपथ पर द्रुत गतिसे अग्रसर होनेके लिये स्फूर्ति एवं उत्साहका संचार करेगा, वहां महासभाका इतिहास हमारे अतीतका उज्ज्वल चित्र अंकित कर हृदयमें बल और साहसका निस्सीम सागर लहरा देगा। 'महासभाका इतिहास हमारी महासभाके स्वर्णजयन्ति महोत्सव की सर्व श्रेष्ठ भेंट होगी और इसे प्राप्त करनेके प्रत्येक सजातीय बंधु और बहिनका लालायित होना स्वाभाविक है। इतिहासके मूल्यका सब रुपया–मंत्री–अ. भा. माहेश्वरी महासभा कार्यालय, अली चैम्बर्स, डीन लेन, फोर्ट, बम्बई के पते पर भेजा जाना चाहिए।

विनीत

हैद्राबाद
वसंत पंचमी
सं. १९९८

रामकिशन धूत
सभापति–अ. भा. माहेश्वरी
महासभा

राजस्थानी संसार

कानपुर माहेश्वरी पुस्तकालय

हमें अब तक निम्न सहायता प्राप्त हुई है:—

रु. ५) बद्रीप्रसादजी बल्दुआ, रु. ११) सुन्दर लालजी गंगानारायणजी भुराड़िया, ५) मांगीलालजी केदारनाथजी सोमाणी, ५) हरिलालजी प्रागदासजी भट्टड़, १०) नरसिंहदासजी बालकिशनजी जाजू। —मंत्री

मध्यभारत और महासभाका आगामी अधिवेशन

२६ दिसम्बर को इन्दौर तथा ४ जनवरी को लश्कर ग्वालियर जानेका अवसर मिला। इन्दौरके कार्यकर्ताओंसे जो बातचीत हुई उससे ज्ञात हुआ कि महासभाके आगामी अधिवेशनके लिए ग्वालियरमें जो अधिवेशन समिति बनी है, उसके विषयमें गलतफहमी हो रही है।

लश्कर (ग्वालियर) के कार्यकर्त्ताओंने जब यह बात सुनी तो उन्हें इससे आश्चर्य हुआ। मैं इस निवेदनके द्वारा मध्यभारतके समाज कार्यकर्त्ताओंकी गलतफहमी दूर करना चाहता हूँ। लश्कर में माहेश्वरी मित्रमंडलके तत्वावधानमें जिस महासभाधिवेशन समितिका निर्माण हुआ है वह एक प्रकारसे अस्थायी स्वागत समितिका कार्य कर रही है। स्वागत कारिणीके निश्चित सदस्य बन जानेपर पूर्व सूचना देकर उनकी एक सभा बुलाई जायगी तथा उसमें स्वागताध्यक्ष, स्वागतमन्त्री एवं भिन्न-भिन्न उपसमितियोंके पदाधिकारियोंका निर्वाचन होनेके बाद इस अधिवेशन समितिका कार्यकाल खतम हो जायगा।

मध्यभारतमें अभी तक प्रान्तीय सभा नहीं है। सूरत अधिवेशनमें उपस्थित सज्जनोंने महासभाधिवेशनका निमन्त्रण दिया था। उन्होंने अधिवेशनके लिए ग्वालियरको उपयुक्त स्थान समझा था। ग्वालियरवालोंने अपनी जिम्मेवारीको महसूस करके अधिवेशन की तय्यारीके लिए कार्य प्रारम्भ किया है, यह मध्यभारतवालोंके लिए हर्ष और गौरवकी बात है। ग्वालियरवालोंको नये तथा पुराने सभी विचारोंके स्थानीय लोगोंका पूरा सहयोग मिलेगा, ऐसा प्रतीत होता है।

महासभाके कार्यकारी मंडलने वर्धाकी बैठकमें सम्वत् १९९९ में महासभाको पूरे ५० वर्ष हो जानेके कारण आगामी ग्वालियर अधिवेशन सुवर्णजयन्ति अधिवेशनके रूपमें मनाना तय किया है। इससे इस अधिवेशनकी महत्ता और साथ ही साथ मध्यभारतवालोंकी जिम्मेवारी दोनों बढ़ जाते हैं।

प्रांतीय सभाके संघटनके निमित्त इन्दौरके माहेश्वरी युवक मंडलके तत्वावधानमें व्यवस्थित प्रचार प्रारम्भ हो गया है। आशा है सभी कार्यकर्त्ता इसमें सहयोग देंगे। महासभा अधिवेशन समितिके अध्यक्ष मदनमोहनजी शारदा भी मध्यभारतके विभिन्न भागोंमें रहनेवाले कार्यकर्त्ताओंसे मिलकर महासभा अधिवेशनको सफल बनानेके कार्यमें प्रयत्नशील हैं।

आगामी आश्विन मासमें अधिवेशन किया जाय ऐसी वर्धामें महासभा कार्यकारी मंडलने सूचना की है। देखनेमें अभी बहुत समय मालूम होता है किन्तु यह अधिवेशन क्योंकि सुवर्णजयन्ति अधिवेशन है अतः बृहत रूपसे प्रचार करनेके लिए काफी समय पूर्वसे प्रचार करनेकी जरूरत है, तभी कार्य भलीभांति हो सकेगा।

मध्यभारतवालोंसे निवेदन है कि शीघ्रातिशीघ्र स्वागत कारिणीका चुनाव कर प्रचार्य कार्य प्रारम्भ कर दें।

नम्र

हैद्राबाद (दक्षिण)
वसंत पंचमी
सं. १९९८

रामकिशन धूत
सभापति अ. भा. माहेश्वरी
महासभा

'शाहपुराके माहेश्वरी पंचोंसे नम्र विवेदन'

सभापतिजीके आगमन पर पंचोंने मिलकर उन्हें यह आश्वासन दिया था कि हम लोग अपनी पंचायत बुला करके २ वर्षमें मोसर प्रथा जातिसे बिलकुल उठा देंगे लेकिन अभी तक पंचायत बुलाई नहीं गई। अतः पंचोंसे नम्र निवेदन है कि वे शीघ्र ही पंचायत बुलाकर इस कार्यकी ओर अग्रसर हों।

मंत्री, माहेश्वरी बालचर मंडल

(पृष्ठ १ का शेषांश)

मारपीट करता है तो उससे हरिजनोंकी वह रक्षा करेगा। कोई शराब पीता है तो उससे शराब छुड़ायगा। अगर किसीके पास धंधा नहीं तो उसे धंधा सिखायगा।

'यह सब योगी आदमी नहीं, त्यागी ही कर सकता है। त्याग तो चेहरेपरसे परखी जाने वाली चीज़ है। उसमें त्यागहोगा तो उसका असर आसपासकी सारी हरिजन जनतापर होगा। सबको वह अपना कुटुम्बी जन-सा ही लगेगा। अगर कोई भूखा हरिजन उसके नज़दीक है तो वह पहिले खिलायगा पीछे आप खायगा।'

आखिरका प्रश्न गांधीजीसे पूछा गया वह यह था: 'कांग्रेसी दुनियासे न्याय मांगते हैं पूर्ण स्वराजके लिए बड़े बड़े आंदोलन उठाते हैं, परंतु हरिजनोंको उनके प्राथमिक नागरिक हक़ भी वे नहीं देते इसके लिए हमें क्या करना चाहिए?'

गांधीजी: 'यह तो कायदेका एक निर्विवाद सूत्र है कि अगर हम न्याय चाहते हैं तो पहिले खुद हमें औरोंको न्याय करना चाहिए। परंतु एक हिस्सा कांग्रेसवासियोंका ऐसा भी है कि जो आज़ादीका राजनैतिक अर्थ ही करते हैं। उनका राजनैतिक ध्येय अंग्रजोंसे छुटकारा पानेतक ही मर्यादित है वह मानते हैं कि अस्पृश्यता निवारण तो धीमे धीमे पीछेसे भी हो सकेगा। उनकी यह मनोभूमिका आहिस्ते आहिस्ते ही बदलेगी। मैं उन्हें कहा करता हूं कि अगर हमें अहिंसक स्वराज लेना है तो अस्पृश्यताका हमें पहिले त्याग करना ही होगा। और जो चाहें सो करें परंतु मेरे और आपके लिये तो रास्ता साफ है। हमसे बन सके उतनी हरिजनोंकी हम सेवा करें दूसरोंके न्यायाधीश हम न बनें। इस विषय पर बाह्यदृष्टिसे नहीं अंतदृष्टिसे हमें विचार करना चाहिए।'

विवाह— भविष्य का रूप

विवाहमें दो बातें पायी जाती हैं। पहली यह कि यह एक सामाजिक संस्था है और दूसरी यह कि यह पुरुष और स्त्रीका विशुद्ध व्यक्तिगत संबंध है। विवाहका संस्थात्मक रूप शताब्दियों तक प्रथित रहा है। उस समय व्यक्तिगत प्रेमका विवाहके लिए विचार करते हुए कोई मुख्य स्थान नहीं था, विवाह स्वयं एक धार्मिक आचार था और इसीलिए उसका विच्छेद नहीं हो सकता था ऐसी थी उस समयकी परिस्थितियां और इनमें विवाह करनेवालोंके निजी आनंदके प्रश्नको इतना महत्व नहीं मिला था जितना कि उसे आधुनिक युगमें मिला है। साथ ही उस समय विवाहका अर्थ सुरक्षा, सौभाग्य और पवित्रता भी था, वह मनुष्यके जीवनकी पृष्ठभूमि और स्त्रीके अस्तित्वका आधार था।

विवाहका यह संस्थात्मक रूप प्राग्औद्योगिक युगकी आर्थिक परिस्थितियोंके साथ घनिष्ट सम्बन्ध रखता है। जब तक परिवार उत्पादनकी इकाई था तबतक यह आवश्यक था कि उसे जुदा नहीं किया जा सके क्योंकि उसकी अविभाज्य एकतामें ही घरेलू अर्थव्यवस्था का अविच्छिन्न प्रवाह और उसके साथ साथ मानवीय अस्तित्वका भौतिक आधार सुरक्षित रह सकता है। विवाह परिवार जीवनका अर्थ-व्यवस्थाका केन्द्र है।

राज्यका भी संस्थात्मक रूपसे विवाहसे सम्बन्ध है। विवाहके द्वारा जिन विशुद्ध मानवीय और स्त्री-पुरुषके लिए सामान्य कृत्रिम मूल्योंका प्रतिनिधित्व होता है वे पहले मनुष्य ही के द्वारा निर्धारित हुए थे क्योंकि आदिम युगकी भौतिक परिस्थितियोंमें स्त्रियां मातृत्व और घरेलू कर्त्तव्योंसे इतनी अधिक घिरी हुई थीं और प्रजननकारी सृष्टिवाही प्राणीके रूपमें उन पर इतना अधिक भार था कि इन कार्योंसे अधिक वे और कुछ कर ही नहीं सकती थीं। परिणामतः स्त्री का अपने आपमें राज्यमें कोई स्थान नहीं था, केवल विवाहके द्वारा ही वह उसका एक अंग बनायी गयी थी और विवाहके द्वारा ही उसने अपने अस्तित्वके लिए सामाजिक स्वीकृति पायी थी और यह विवाहका ही परिणाम है कि उपजातियोंका जीवन मशीनरी, कानून और राज्यकी व्यवस्थाके द्वारा अधिकृत हुआ है।

किन्तु अत्यन्त आधुनिक युगके व्यापक और क्रान्तिकारी 'टैकनिकल' तथा आर्थिक परिवर्त्तनोंने सभी दृष्टियोंसे परिवर्त्तन कर दिया है। परिवार अब प्रजननकी इकाई नहीं रहा और उसका आर्थिक जीवनके साथ जो कुछ सम्बन्ध रह गया है वह अत्यन्त शिथिल है, घरेलू जीवन अब प्राचीनयुगकी तरह जीवनका एक मात्र सम्भव मार्ग नहीं रह गया। वर्त्तमान आर्थिक संगठनमें व्यक्तिकी कार्यशक्तिकी मांग है, परिवार की नहीं। इस आर्थिक विघटनका प्रभाव मनुष्य जीवनके सभी क्षेत्रोंमें फैला हुआ है। आज दलों या श्रेणियोंके अनुसार संगठित समाज भी राज्यका पूर्व निर्धारित लक्ष्य या उद्देश्य नहीं रहा, बल्कि अकेला व्यक्ति ही उसका उद्देश्य बन गया है। इस सचाई को सबसे अधिक व्यक्त जिस शब्दसे किया जाता है, वह है प्रजातन्त्र, जिसमें मतोंकी गिनती होती है तोल नहीं। इस प्रकारके राज्यको एक व्यक्तिकी हैसियतसे स्त्रीको भी उसके नागरिक अधिकार देने पड़े।

इन परिवर्तनोंके कारण, जिन्होंने सामाजिक रचनापर बहुत गहराई तक असर किया है, विवाहकी संस्थात्मकताका प्रमुख सहारा टूट गया है। स्त्रीके लिए प्रारम्भमें यह नुक्सान साबित हुआ क्योंकि बहुत अर्से तक इस परिवर्त्तनकी वजहसे स्त्रीका जीवनके कृत्योंमें ऐसा कोई महत्वपूर्ण स्थान नहीं रह गया जो पहले था। परन्तु आर्थिक स्वतन्त्रताके विकास और उसके परिवार और गृहसे सम्बन्ध टूट जानेसे स्त्रीको बड़ी राहत मिली। प्राचीन कालमें गृहस्थीकी व्यवस्था उसके जीवनको पूरी तरह भरे रहती थी पर अब वह उसका एक अतिरिक्तसा कार्य हो गया। मानवीय दृष्टिसे कहा जाय तो स्त्रीने अपने निजके लिए एक जीवन जीता है; अब वह एक स्वाधीन जीवन बिता सकती है—पुरुष-हीन जीवन; और उसे यह अनुभव नहीं होता कि पुरुष-हीन जीवन अर्थहीन है। वह मानवीय मूल्योंके इस संसारमें जो एकबार दुष्प्रवेश था सीधा और क्रियाशील भाग लेती है और उन मानवीय मूल्योंको वह स्वयं उत्पन्न न भी कर सकती हो तोभी आज उनके कायम रखनेमें वह हिस्सा लेती है। इन पिछले डेढ़ सौ वर्षोंमें विवाहका संस्थात्मक रूप अपना अधिकांश मूल्य खो चुका है, यह बात इस बातसे प्रमाणित नहीं होती कि विवाह आज कल बहुत कम संख्यामें होते हैं, बल्कि वह इस बातसे प्रमाणित होती है कि अधिकांश विवाहोंका अंजाम आजकल तलाक होता है। तलाक विवाहके उस आधारभूत विचारका, जो स्त्री और पुरुषके आजीवन साहचर्यमें विशुद्ध संगमनकी अत्यधिक प्रशंसा करता है, खण्डन कर देता है। कैथोलिक लोगोंका जो यह विचार है कि विवाह एक धार्मिक कृत्य है, वह वस्तुतः विवाहमें परम्परासे आनेवाले सहज विचारको धार्मिक क्षेत्रमें लानेका प्रयत्न है। और आज कैथोलिक लोगोंमें भी तलाकोंकी संख्या अनुपातमें कम नहीं और भविष्यमें सम्भव है यह और भी बढ़ जाय। क्योंकि संगीपनके नये उत्पन्न रूप सन्तान प्रजननके क्षेत्रोंसे बाहर रहेंगे, परिणाम यह होगा कि विवाह की स्थिति उनसे कुछ अधिक मजबूत नहीं होगी।

समाज की भविष्य रचनामें निःसन्देह विवाह का अपेक्षाकृत कम महत्व का स्थान रहेगा, विवाहातिरिक्त स्त्री और पुरुषके सम्बन्ध अधिक प्रचलित हो जायंगे और उनके प्रति जो घृणाके विचार लोगोंमें फैले हुए हैं वे विलुप्त होते जायंगे। साथ ही, राज्य बच्चोंकी अधिक मात्रामें देख रेख करेगा। सब प्रकारकी सार्वजनिक संस्थाएं होंगी जिनमें योग्य शिक्षक और नर्सें मातापिताको भारसे अधिकाधिक मुक्त कर देंगीं। किन्तु मनुष्यके शिशुओंके लिए जिन विचित्र वस्तुओं की आवश्यकता होती है उनके फलस्वरूप बच्चोंके कारण समझदार लोगोंके बीच समस्त व्यक्तिगत इच्छाओंके अतिरिक्त भी एक संस्थाके रूपमें विवाहका अस्तित्व रहेगा। आध्यात्मिक दृष्टिसे पुरुष व स्त्रीके परस्पर सम्बन्ध व अनुकूलताके लिए स्पष्टतः परिवारमें एक ही वस्तु सम्भव है-बच्चेके साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध रखना। बच्चेके साथ होने वाले सब अनुभव और अत्यन्त आधुनिक मनोवैज्ञानिक अन्वेषण इस बातका संकेत करते हैं कि मां-बापके स्थान की पूर्त्ति और किसीसे नहीं हो सकती। और जितना अधिक गहरा मातापिताका आध्यात्मिक सम्बन्ध होगा उतना उतना ही उनकी अपना स्थान किसी अन्यको देनेकी इच्छा कम होती जायगी और अपने बच्चोंके साथ अनुभूति और भावना की सक्रिय सहचरतामें उनका स्वाभाविक प्रेम अधिकाधिक आत्मप्रकाश करता जाएगा और साथ ही अपने बच्चोंके कुशल क्षेमके आगे, यहां तक कि अपनी व्यक्तिगत इच्छाओंके आगे भी, उनकी स्वार्थ और आत्मतोषकी भावनाएं लुप्त होती जांयगी। अधिकांश स्त्रियोंमें सन्तान पानेकी इच्छा रहती है; और मनुष्य भी अपने आगे एक सन्तति बढ़ाना चाहता है। और, जो सन्तान चाहता है वह विवाहको भी चाहेगा जिसका रूप अपनी व्यक्तिगत इच्छाओंसे परे आजीवन साझेदारी और एक संस्था है।

तब भी विवाहका संस्थात्मकरूप उसके व्यक्तिगत सम्बन्धके रूपसे पीछे ही रहेगा। निःसन्देह एक व्यक्तिगत सम्बन्धके द्वारा आजीवन साझेदारी कायम करनेसे अधिक कठिन और कोई कार्य भी नहीं। क्योंकि स्त्री और पुरुषके सम्बन्धोंमें हमेशा प्रेमकी झाई पायी जाती है और प्रेमका सार है परिवर्त्तन शीलता। प्रेमके सम्बन्धका जो सीधा परिणाम हम लोग जानते हैं, वह है उत्थान और पतन; अपनेको पाना और अपनेको खो देना। जब सब बाधाओं के बावजूद एक बार स्त्री और पुरुषमें आजीवन संगीपन कायम हो जाता है तब उसका कारण यही होता है कि स्त्री और पुरुषके बीचका सम्बन्ध प्रेम सम्बधसे भी आगे बढ़ कर समूचे व्यक्तित्व को ग्रहण कर सकता है। निःसन्देह, हर एक अपने आपमें अकेला रहता है, दूसरेमें एकका पूर्णतया समावेश कभी नहीं हो सकता। इस लिए विवाहमें 'तू' के साथ जो सम्बन्ध होता है वह और किसी प्रकारके 'तू' के सम्बन्धसे भिन्न होता है। आधुनिक युगकी मानसिक और आध्यात्मिक उन्नतिके साथ—साथ मनुष्य भी बहुत बदल गया है, उसमें अब आध्यात्मिक बहुत्वकी एक अधिक सूक्ष्म चेतनता आ गयी है। इसके साथ ही जीवनका चेतन वस्तुभाग प्रायः बदलता रहता है और ऐसी मैत्रियां जो सदा एकसा जीवन न बिताने वाले मनुष्योंके सारे जीवन भर कायम रहें अधिकाधिक कठिन और दुर्लभ होती जा रही हैं। इस सचाईमें आजके जीवनकी परिवर्तनशील अवस्थाएं एक आवश्यक तथ्यकी वृद्धि कर रही हैं—अब बाह्य जीवनका भी कोई ऐसा ढांचा नहीं रहा जो दस बरस तक भी एकसा रह सके और मनुष्यों को एक कौमके रूपमें बांधे रखे। आम तौरपर हर कोई दूसरे का एक 'प्रक्षेपक या एकांकी नाटक एक दृश्य' मात्र समझता है, उसे जीवनप्रवाह का एक अंग बहुत कम लोग ही समझते हैं। यह अवस्था उसके लिए जो सन्तकी तरह जीवनसे बाहर नहीं रहते एक न एक दिन अत्याचार बन जाती है। मनुष्य ऐसे मनुष्यको चाहता है जो उसके साथ रहे, उसका हाथ बंटाये। इस प्रकारका सम्बन्ध स्त्री और पुरुषके प्रेमसे सीधा पैदा नहीं हो सकता, क्योंकि वासना तो बहुत कम समय तक टिकती है; और न यह परिवार्त्तित ही हो सकती है; यह या तो होगी या एकदम नहीं होगी। किन्तु इस की छायामें विवाहकी एकताका 'हम'—होके एक होनेका भाव-तर्कपे हुए विवाहोंकी अपेक्षा, शीघ्र आ जाता है, जिनमें कि दोनों साथी एक दूसरेके साथ प्रारम्भसे ही अत्यधिक संयम और विरक्तिसे बरतते हैं। और जो लोग अपने विवाहको एक व्यक्तिगत सम्बन्ध बनाए रखना चाहते हैं उन्हें इस 'हम' के भावकी पहलेसे ही कल्पना करलेनी होगी।

किन्तु व्यक्तिगत सम्बन्धके रूपमें विवाह स्थायी तभी हो सकता है जब कि वह 'टिपिकल' बातोंपर आश्रित न हो, बल्कि अपने निजके सम्बन्धमें ज्ञान और चेतनतापर आश्रित हो। अब तक मुख्यतः वह जिन शर्त्तोंके साथ सम्बद्ध रहा है वे कही नहीं जातीं बल्कि स्वयं-सिद्ध मान ली जाती हैं और एक 'टिपिकल' ढंगकी होती हैं। इनमेंसे एक है विवाहसे पूर्व स्त्रीका निष्कलंक चारित्र होना। यह शर्त्त बिल्कुल स्वाभाविक है। लैंगिक इच्छाओंमें मनुष्य असहिष्णु और अनुदार होता है जहां कहीं वह अपनी इच्छाओंको स्वाधीन होकर चला सकता है। हरेक

शेष पृष्ठ ८ के कालम १ पर

● लियोनी उनगर्न स्टर्नबर्ग ●

क्या श्रीकृष्ण समाज सुधारक थे ?

● श्री गजाधरजी सोमाणी ●

अपने सिद्धांत और विचारोंको कोई भी व्यक्ति निष्पक्ष तथा न्यायोचित ढंगसे जनता के सामने रखे-इसमें किसीको कुछ आपत्ति नहीं हो सकती। वर्त्तमान परिस्थितिमें विधवा-विवाह, अछूतोंका मंदिरप्रवेश, वर्ण व्यवस्था का नाश इत्यादि-समाजके कल्याणके लिये आवश्यक है—इन बातोंका प्रतिपादन कई युक्तियोंसे हमारे सुधारक मित्रगण करते हैं और इन विषयोंमें हमारा उनके साथ गहरा मतभेद होते हुये भी उनके इस प्रचारको हम कदापि अनधिकार पूर्ण नहीं कह सकते। मैं तो यहां तक कह सकता हूं कि वर्त्तमानमें झूठका बोलबाला है—सत्य बोलनेवालोंका निर्वाह बहुत कठिन हो रहा है इसलिये यदि आज कोई व्यक्ति यह भी प्रचार करे कि 'झूठ बोलना ही इस युगका धर्म है' तो भी उसका यह प्रचार अधिकार युक्त ही कहना पड़ेगा। परंतु जब समय २ पर हमारे सुधारक मित्रगण वर्तमान समयकी आवश्यकताके दायरेको छोड़ कर अपने इन सुधारों (?) के पक्षमें प्राचीन धर्मशास्त्रोंके प्रमाणों तथा श्री भगवानके अवतार कालकी घटनाओं से अर्थका अनर्थ करके जनतामें भ्रम फैलाने का प्रयास करते हैं तो उनकी यह चेष्टा अवश्य ही बिलकुल अनधिकारपूर्ण तथा सर्वथा अवांछनीय हो जाती है।

हाल ही में हमारे "माहेश्वरी" के ता. २१-१-४२ के अंक में किन्हीं श्री "भगत" महोदय का "समाज सुधारक श्रीकृष्ण" शीर्षक एक लेख निकला है जिसमें इसी तरह की बातें भरी हैं। उन बातोंमें कहां तक तथ्य है इस पर मैं अब संक्षेपमें विचार कर रहा हूं।

श्री 'भगतजी' के लेख का सबसे सरल उत्तर तो यह है कि किसी भी ग्रंथमें वर्णित किसी घटनाके आधार पर यदि आप किसी विचारका पोषण करते हैं तो आपको उस सम्पूर्ण ग्रंथ को प्रामाणिक तथा सत्य मानना पडेगा। मैं नहीं समझता कि कोई भी व्यक्ति इस सीधी सी बातको अस्वीकार कर सकता है। यदि 'मीठी मीठी गप्पा तथा कड़वी कड़वी थू' वाली उक्ति आप चरितार्थ नहीं करना चाहते हैं तो आपको इस सिद्धांतको मानना ही पड़ेगा। अस्तु, हमारे 'भगत' महोदयने सर्व प्रथम यह सिद्ध करनेका प्रयास किया है कि भगवान श्रीकृष्ण-ईश्वरके अवतार नहीं थे परंतु केवल विशिष्ट महापुरुष थे। आगे चलकर लेखक महोदय ने भगवान श्रीकृष्णके अवतार काल की कुछ घटनाओंका उल्लेख करके अपने मत का समर्थन करना चाहा है, परंतु 'भगतजी' इस बातको बिलकुल ही भूल गये हैं कि जिन ग्रंथोंमें उक्त घटनाओंका वर्णन मिलता है—उन सभी धर्मग्रंथोंका सर्व प्रधान सिद्धांत यह है कि श्रीकृष्ण परमेश्वरके साक्षात् अवतार थे। जब आप उन्हीं ग्रंथोंकी इस मुख्य बातको माननेको तैयार नहीं है तब फिर आपको क्या अधिकार रह जाता है कि आप फिर वहां दी हुई अन्य घटनाओंका अपने पक्ष समर्थनमें सहारा लें। खैर, यह तो मैंने लेखक महोदयका तर्कशास्त्रके एक निर्विवाद नियमकी ओर ध्यान आकृष्ट किया है- अब आपके लेखका जरा विश्लेषणात्मक विचार करना है।

'ईश्वर स्वयं कभी जन्म नहीं लेता' इस उक्तिको पुष्ट करनेके लिये आपने श्री गीताजीके उक्त प्रसंगके दो प्रसिद्ध श्लोकोंके ऊपर महात्मा गांधीकी टिप्पणी दी है। इसमें कोई संदेह नहीं कि पूज्य महात्मा गांधी आज इस विश्वकी एक विशिष्ट विभूति हैं—उन्होंने अपने त्याग, संयम, सत्य तथा अहिंसासे इस देशके राजनीतिक वातावरणमें जो अभूतपूर्व जागृति उत्पन्न कर दी है उसके लिये यह देश सदा उनका ऋणी रहेगा। परंतु इतना होते हुए भी हमारे धार्मिक जगत्के वे गुरु नहीं माने जा सकते। राजनीतिक क्षेत्रमें आज लाखों ही क्या, करोड़ों व्यक्ति उनके अनुयायी हैं परंतु 'भगवान राम और कृष्ण केवल महापुरुष थे-ईश्वरके अवतार नहीं' उनके इस सिद्धांतका यदि जनतामें प्रचार किया जाय तो यह बात दावेके साथ कही जा सकती है कि इस सिद्धांत को स्वीकार करने वालों की संख्या केवल अंगुलियोंपर गिनने मात्र मिलेगी। खैर, महात्माजी महापुरुष हैं और उनके संबंधमें मुझे इस लेखमें कुछ विचार नहीं करना है। लेकिन लेखक महोदय महात्माजी की उस टिप्पणी का उद्धरण करके फिर जो साहस पूर्वक ऐसा लिखते हैं:— "अब यह स्पष्ट हो गया कि ईश्वर कभी जन्म नहीं लेता" उनकी यह उक्ति बहुत ही आश्चर्यजनक है। सारे वेद, उपनिषद, इतिहास, पुराण, स्मृतियां आदि अनंत धार्मिक साहित्य भगवानके अवतारके सिद्धांत तथा घटनाओंसे ओतप्रोत हैं, इस देशके कोने-कोनेमें दीर्घकालसे निर्मित कितने ही असंख्य, विशाल तथा सुप्रसिद्ध मंदिर—देवालय इस अवतारवादके सिद्धांत को उच्च स्वरसे विघोषित कर रहे हैं तथा इस देशके करोड़ों नरनारी गण भगवान् राम तथा कृष्ण की ईश्वरीय लीलाओंका अहर्निश स्मरण करते हैं इस तरह आर्य संस्कृति का यह मूलभूत सिद्धांत इस प्रकार सुदृढ़ तथा निःसंदिग्ध रूपमें सर्व व्यापक है तथा इस पुण्य भूमिके कण कणसे प्रतिक्षण प्रतिध्वनित हो रहा है—फिरभी हमारे विद्वान लेखक का साहस तो देखिये कि उन्होंने उक्त प्रसंगकी एक टिप्पणी देकर ही यह मान लिया है कि भगवानके अवतारवादके सिद्धांतका अब अंत हो गया है। इस सिद्धांतके संबंधमें हमारे प्राचीन ऋषि महर्षि संत महात्माओंने जो कुछ कहा है उसका असर हमारे लेखक महोदय पर नहीं भी होवे परन्तु इस संबंधमें मैं उनका ध्यान लोकमान्य तिलक कृत श्रीमद्भगवद्गीता रहस्यकी ओर आकृष्ट करता हूं। श्रद्धेय लोकमान्यने धार्मिक साहित्यका जितना गवेषणापूर्वक अध्ययन तथा मनन किया था उसके संबंधमें किसीको संदेह नहीं हो सकता और उन्होंने भी इस अवतारवादके सिद्धांतको अंगीकार किया है। अधिक विस्तार करनेकी आवश्यकता नहीं है—इस संबंधमें श्रीगीताजीका ही एक श्लोक देना पर्याप्त होगा—

अवजानन्ति मां मूढ़ा मानुषीं तनुमाश्रितम्।
परं भावमजानन्तो मम भूत महेश्वरम् ॥

जो लोग भगवानके अवतारोंका साधारण मनुष्य रूपमें (फिर चाहे महापुरुषके रूपमें ही क्यों न सही) समझते हैं वे "मूढ़" हैं—आगे चलकर लेखक ने यह उपदेश दिया है कि हमलोग महापुरुषों को ईश्वर का अवतार नहीं मानकर 'मनुष्य' ही मानें तो अधिक अच्छा है परन्तु जहां तक हमारे धर्मशास्त्रोंसे संबंध है-ऐसे उपदेशकी तनिक भी गुंजायश नहीं है। भगवानके अवतारोंके अतिरिक्त शास्त्रोंमें ऐसे असंख्य जीवनचरित्र ऋषि मुनि, संत महात्मा, आचार्योंके मिलते हैं जिनमें उन विशिष्ट विभूतियों को कहीं भी ईश्वरके अवतारके रूपमें नहीं मानकर उनको केवल महापुरुषोंके रूपमें ही वर्णन किया गया है। इसलिये आपकी उक्त संबंधमें लिखी हुई बातों की हमारे लिये आवश्यकता नहीं रह जाती है। भगवान श्रीकृष्णके उत्सव मनानेके संबंधमें भी आपने कुछ छींटें उछाले हैं। मैं मानता हूं कि कार्योंका अनुकरण होना चाहिये परन्तु क्या आपका यह मतलब है कि जन्माष्टमी का उत्सव नहीं मनाया जाय? यदि हां, तो फिर आज महापुरुषों की अन्य जयंतियां जैसे तिलक-जयंती, गांधी-जयंती क्यों मनाई जाती है?

श्रीकृष्णके जिन गुणोंका आपने वर्णन किया है इस पर तो कुछ लिखनेकी आवश्यकता है ही नहीं—आगे चलकर जिन घटनाओंके आधार पर आपने अर्थका अनर्थ निकाला है-उन्हींका अब कुछ विचार करना है। सबसे पहले तो यह बात स्मरण रखनेकी है कि जैसा श्री भगवानने श्रीगीताजीमें कहा है 'जन्म कर्म च मे दिव्यं' भगवानके जन्म तथा कर्म दिव्य हैं, साधारण मनुष्यके लिये यह समझना कठिन है कि श्री भगवानने किस समय कौनसी विशेष परिस्थितिके कारण कौनसा कर्म क्यों किया है, श्री भगवानके अवतारकालकी दिव्य लीलाओंका अद्भुत रहस्य केवल भावुक भक्तों के दीर्घ चिंतन तथा गंभीर मननका ही विषय है—हर एक व्यक्ति के लिये उन लीलाओंको तर्ककी कसौटी पर कसना कदापि संभव नहीं हैं। हमारे 'भगतजी' ने जिन घटनाओंका उल्लेख किया है उनके अतिरिक्त श्रीकृष्ण भगवानकी अन्य ऐसी बतहुसी लीलायें हैं जिन पर आये दिन सुधारक गण कुछ न कुछ आक्षेप किया करते हैं—'भगतजी' ने उन लीलाओंकी ओर अपने लेखकी सुविधाके लिये संकेत भी नहीं किया है। भगवानने रास लीला की थी, गोपियोंके साथ विहार किया था, चोरी छल-कपट किया था, १६१०८ रानियोंके साथ विवाह किया था। इन लीलाओं का क्या गुप्त रहस्य था यह विचार करना तो यहां अप्रासंगिक होगा-परंतु 'भगतजी' का इन लीलाओंके प्रति क्या विचार है? इन लीलाओं का वर्णन आपकी दृष्टिसे झूठा है अथवा सत्य? यदि झूठा है, तो केवल आपके द्वारा वर्णित घटनाओं को ही सत्य क्यों माना जाय? यदि सच्चा है-तो क्या 'भगतजी' की यह भी राय है कि भगवानके उन कर्मों का भी अनुकरण किया जाय? वास्तवमें बात तो यह है कि भगवान अथवा महापुरुष द्वारा विशेष परिस्थितिमें विशेष कारणसे सम्पादित सभी कर्मों का जनता को अनुकरण करना चाहिये-यह सिद्धांत कभी भी लागू नहीं हो सकता। दूर की बात जाने दीजिये-खुद महात्मा गांधीने यह बात कई दफे कही है कि हरएक व्यक्ति को बिना समझे बूझे किसी भी कर्म को जो उन्होंने (महात्माजीने) किया हो उसका अनुकरण नहीं करना चाहिये, भले के बदले में उसमे भयंकर बुराई हो जानेकी संभावना है। इसलिये जनताको उनके किये हुये कर्मका नहीं—उनके बताये हुये मार्ग का अनुसरण करना चाहिये। बात भी यही ठीक तथा व्यावहारिक है और इसी एक बात से लेखक के दिये हुये सब उदाहरणोंका उत्तर आजाता है-श्री गीताजीमें भी भगवान ने कर्मानुष्ठानके संबंध में स्पष्ट आज्ञा दी है:-

तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्य व्यवस्थितौ।
ज्ञात्वा शास्त्र विधानोक्तं कर्म कर्तुमिहार्हसि ॥

अस्तु, अब थोड़ा विचार उन दी हुई घटनाओं पर करना आवश्यक है। सबसे प्रथम आपने श्रीकृष्ण-रुक्मिणी तथा अर्जुन-सुभद्रा के विवाह का उदाहरण देते हुये उनसे यह सिद्ध करनेकी चेष्टा की है कि भगवान बाल-विवाहके विरोधी थे तथा विवाह उसी समयमें करनेके समर्थक थे जब दम्पतीमें आपस में प्रेम का प्रादुर्भाव हो। श्रीकृष्ण रुक्मिणीको भगाकर लाये थे तथा अर्जुन सुभद्राको भगाकर ले गया था। यह विवाह किन विचित्र परिस्थितियोंमें क्यों हुये थे—इनकी एक लम्बी कथा है। लेखका कलेवर बढ़ जानेके भयसे वह सारा इतिहास यहां देनेकी आवश्यकता नहीं। क्या लेखक महोदय विवाहका यह आदर्श स्थापित करना चाहते हैं कि जिस किसी स्त्री-पुरुषमें प्रेम हो गया—बस फिर अन्य किसी भी तरह की अड़चन पड़ने का भय हो तो पुरुष को उस स्त्री को भगाकर ले जाना चाहिये? इस तरहकी सूझ तथा युक्तिके लिये क्या कहा जाय? इसमें कुछ भी संदेह नहीं कि श्रीकृष्ण तथा अर्जुनके यह विवाह कदापि विवाहका आदर्श स्थापित करनेके लिये नहीं हुये थे और उन विवाहोंसे ऐसा अनर्थ निकाल कर जनताको भ्रममें डालनेका प्रयास करना सर्वथा अवांछनीय है। लेखक महोदय कृपया उन घटनाओंके इतिहास को जरा शान्तिसे आद्योपान्त पढ़कर मनन कर लेवें और फिर उन्हें ऐसी विचित्र दलीलें पेश करनेका साहस नहीं होगा। विवाह का क्या आदर्श होना चाहिये इस संबंधमें भगवान श्रीकृष्णका क्या मत था-यह संक्षेपमें तो 'तस्मात् शास्त्रं प्रमाणं ते' वाली उक्तिसे ही प्रकट हो जाता है-इसके उपरांत उनके अवतार कालकी अनेक और

घटनायें तथा उक्तियां दी जा सकती हैं जिनसे प्राचीन शास्त्रीय वैवाहिक पद्धतिका सर्वथा पोषण हो जाता है। यदि लेखक महोदय उत्सुक होंगे तो अगले लेखमें उनका कुछ विस्तृत वर्णन दिया जा सकता है।

इसके बाद तो 'विधवा विवाह' के प्रसंगमें तो आपने ऐसी सनसनी पूर्ण बात लिख मारी है जो बिलकुल सत्यका गला घोंटनेवाली है, तथा किसी भी आस्तिकके हृदयमें महान् क्षोभ तथा कठोराघात उत्पन्न किये बिना नहीं रह सकती। धर्मशास्त्र अनंत हैं—मालूम नहीं यह प्रसंग आपने कहांसे निकाला है, परंतु जहांसे भी आपने इस घटनाका उद्धरण लिया है उसका आपने मनमाने रूपमें उल्टा अर्थ अवश्य लगाया है। विधवाओंकी स्वाभाविक इच्छाओंको कुचलनेके लिये बाध्य करना अक्षम्य अपराध है या नहीं—यह तो फिर कभी विचार किया जायगा लेकिन आपने भगवान नंद-नंदनको इस कीचड़में फसा करके एक अक्षम्य अपराध अवश्य किया है। सबसे पहले आपको यह पता नहीं कि धृष्टद्युम्न कौन था? आप उनको श्रीकृष्णका पौत्र बतलाते हैं लेकिन यह महाराज द्रुपदके पुत्र थे। श्रीकृष्णके पोते धृष्टद्युम्न नहीं थे—धर्मशास्त्रोंसे तो ऐसा प्रमाणित है—यदि आपके पास कोई प्रमाण हों तो देवें। भगवान श्रीकृष्णके पौत्र थे अनिरुद्ध और उनका विवाह बाणासुरकी कन्या उषासे हुआ था। इस विवाहका अत्यंत रोचक वर्णन शास्त्रों में मिलता है तथा यह बात स्पष्ट रूपमें मिलती है कि उषा कन्या थी, १२ वर्ष की। इसके संबंध में 'विधवा' शब्दकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। लेखक महोदयने धृष्टद्युम्नके विधवा-विवाहका प्रसंग किस आधारपर कल्पित किया है—यह वही जानें परंतु इस प्रकारकी निराधार बातों के द्वारा भगवानके दिव्य अवतार पर मिथ्या आरोप करके लेखक महोदयने कितना अक्षम्य अपराध किया है—इसका पाठक सहज में ही अनुमान कर सकते हैं।

आगे चलकर 'भगतजी' ने विदुरजीके उदाहरण द्वारा भी निरा भ्रम फैलाने का निष्फल प्रयास किया है। यह बात सदा स्मरण रखनी चाहिये कि जितने शास्त्रीय नियम तथा मर्यादायें हैं वे सब सामान्य परिस्थितिमें लागू होते हैं—व्यावहारिक जगत्में भी यह देखा जाता है कि जितने विधान, नियम, कानून आदि बनाये जाते हैं—उनका कभी विशेष परिस्थिति में उल्लंघन हो जानेसे भी इसका यह अर्थ नहीं लगाया जाता कि साधारण अवस्थामें भी वे नियम लागू न हों। धर्मशास्त्रों का यह सिद्धांत है कि जब मनुष्य सांसारिक रागद्वेषसे मुक्त होकर त्रिगुणातीत अवस्थामें पहुंच जाता है तब उसके लिये फिर वर्ण तथा आश्रम की कोई मर्यादा नहीं रह जाती है। विदुरजी महापुरुष थे, भगवानके अनन्य भक्त थे, तथा सांसारिक विषयोंसे अलग होकर उनका जीवन आध्यात्मिक उन्नतिके चरम शिखर पर पहुंच गया था। भगवान प्रेमके भूखे हैं, भगवत्प्रेमके पीयूष सागरमें आमग्न भावुक भक्तोंके लिये फिर वर्णाश्रम की मर्यादा नहीं रहती—ब्राह्मण हो अथवा चांडाल—अपनी वर्ण व्यवस्था की मर्यादानुसार आरंभ से साधना करते हुये जब वह उस उच्च अवस्था को प्राप्त हो जाता है जहां सांसारिक आसक्तिसे पर होकर वह अपने आपको भूल करके भगवान् चिंतनमें अहर्निश संलग्न हो जाता है, उस समय फिर वे दोनों ही भगवदनुग्रहके समान रूपसे अधिकारी हैं। धर्मशास्त्रोंका यह सर्वसम्मत सिद्धांत है और विदुरजी—जो दासी पुत्र थे, परन्तु अछूत नहीं—के समान ही और भी ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं जहां भगवद्भक्त अपने विशेष तप और भक्तिके द्वारा साधारण नियमोंका उल्लंघन कर गये हैं; परन्तु यह सभी घटनामें नियमके अपवाद हैं और इनके कारण शास्त्रीय नियमों और मर्यादाओंमें किसी तरहका विरोध नहीं पड़ता। यह सदा स्मरण रखना चाहिये कि इन सभी विशेष विभूतियोंने अपने जीवनके प्रारंभिक कालमें वर्ण व्यवस्था की सारी मर्यादाओंका पालन किया था, इस लिये इन उदाहरणोंकी विशेष परिस्थितियोंकी उपेक्षा करके साधारण जनताको भ्रममें डालना सर्वथा अनुचित है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि श्रीकृष्ण भगवानके अवतार काल की घटनाओंसे किस प्रकार भ्रमपूर्ण आशय निकालने का निष्फल प्रयास किया गया है। मेरा साग्रह अनुरोध है कि लेखक महोदय जरा गंभीरतापूर्वक निष्पक्ष हृदयसे इन घटनाओं पर विचार करें तथा जरा मनन करें—अपने पक्ष समर्थन के खयालसे भी हमारे सुधारक मित्रोंको ऐसे अनर्गल लेखोंसे बचना चाहिये। इस तरहके भ्रमपूर्ण प्रचारसे उनका मत भी दृढ़ नहीं अपितु निर्बल बनता है। लेखक महोदय ने प्रच्छन्न रूपमें यह कायरतापूर्ण आक्रमण किया है—आशा है इस लेखका उत्तर देते समय वे अवश्य खुले रूपमें मैदानमें आने की कृपा करेंगे।

अंतमें मैं संपादकजी तथा 'भगतजी'—दोनों को नम्रतापूर्वक विश्वास दिलाता हूं कि यह एक व्यथित तथा आहत हृदयके सच्चे उद्गार हैं—अपने ही समाजके मुखपत्रमें सर्वेश्वर जगन्नियन्ता नंद-नंदन योगीश्वर भगवान कृष्णचंद्रके अवतार तथा उनकी दीर्घ लीलाओं पर ऐसे आक्षेप वास्तवमें कुछ असह्य हो जाते हैं—इस प्रहार जनित व्यथाके आवेशमें यदि लेखमें कोई अनुचित शब्द आगये हों तो क्षमा करें।

(पृष्ठ ६ का शेषांश)

मनुष्य और हरेक स्त्री अपने संगीपर न केवल अपना एकाधिपत्य चाहते हैं, बल्कि उसके सर्व प्रथम संगी बनना चाहते हैं। पर यह इच्छा केवल मनुष्य ही चला सकता है क्योंकि प्राचीन कालमें उसने ही स्त्रीको एक सामाजिक प्राणी, समाजके भीतर एक मानव प्राणी बनाया है। इसीलिए वह अपनी शर्त्तें उसपर लागू कर सकता है। इसमें शक नहीं कि कुमारीकी निष्कलंकतामें भी एक आकर्षण है। इसके अतिरिक्त प्रेम और विषायिताके पार्थक्यसे पुरुषकी अपेक्षा स्त्रीको अधिक नुक्सान पहुंचता है। यह वांछनीय रहता है कि स्त्री अपने आपको दृढ़तासे सम्भाले रहे। पर आज विवाहके लिए स्त्रीके कौमार्यको अनिवार्य आवश्यकता बताना समयानुकूल नहीं, क्योंकि यह जातिकी वैषयिक भावनापर बल देनेका संकेत है और यह विवाहविषयक सम्बन्धके लिए जो अवश्य ही मानवीय और वैयक्तिक होना चाहिए सफलता लानेवाला नहीं। परिणाम यह हो रहा है कि कुमारी उसी युवकके प्रेममें फंस जाती है जो उसे सबसे पहले मिलता है और स्वीकार करने योग्य जंचता है और उसके निकट विवाहका प्रस्ताव करता है; और पुरुष कुमारीके प्रति प्रेम करता है न कि उसके व्यक्तित्वसे। यदि मानवीय सम्बन्धको चिरस्थायी बनाना हो तो उसके लिए यह कोई अच्छी बुनियादें नहीं हैं।

दूसरी टिपिकल शर्त्त यह रहती है कि पति अपनी पत्नीको एक घर भेंट करे जो उसका अपना हो और वह इस स्थितिमें हो कि उसका भरण पोषण कर सके। यह शर्त्त उस समय जरूरी हो सकती थी जब कि जीवन केवल गृहस्थमें ही चल सकता था। आजके युगमें जब कि जीवन की ऐसी अनेक परिस्थितियां पैदा हो गयी हैं कि जिनमें स्त्रियां अपना निर्वाह कर सकें और जिनमें बच्चे भी शायद ही किसीके लिए भाग्यकी देन हों, या चाहे जाते हों, इस शर्त्तकी कुछ खास अहमियत नहीं। यह शर्त्त अपने व्यक्तिगत चुनावके आधारपर विवाह करनेमें बाधा पैदा करती है, क्योंकि यह इस बातके लिए बाधित करती है कि विवाह आमदनी और दौलतके मापसे किया जाय। इसमें शक नहीं कि इन टिपिकल शर्त्तोंके अनुसार किये गये बहुतसे विवाह बहुत सुखी साबित होते हैं। पर आज अधिकांश लोगोंके विवाहित जीवनकी जो अधोगति हो रही है, उसका कारण यही है कि यह सम्बन्ध, जो कि आवश्यक रूपसे व्यक्तिगत सम्बन्ध हो गया है, टिपिकल आधारपर निर्मित हुआ है। 'टिपिकल' की मुखालफत करते समय हमारा यह आशय नहीं कि विवाह करने के लिए जो सामाजिक बुनियादें इस समय मौजूद हैं, वे सबकी सब पूर्णतः बदल दी जायंगी। यह अत्यधिक स्वाभाविक है कि आवश्यक रूपसे जो सम्बन्ध व्यक्तिगत है वह होता ही उन लोगोंमें है जो जीवनके एक ही स्तरपर हों, जिनकी एक ही समान शिक्षा व एकसी प्रकृति हो।

प्राचीन विचारोंके लोगोंके जो अन्ध पक्षपात हैं उनके मुकाबलेमें अब विशुद्ध व्यक्तिगत, मानवीय—आकस्मिक नहीं—सम्मतियोंकी एक तीव्र भावना पैदा हो गयी है जो जीवनमें अनेक बार परिवर्त्तित होती रहती है, पर उसमें एक अन्तिम आध्यात्मिक गुण सदा एकसा मौजूद रहता है। उनसे परिचित होना, उन्हें जीवनके लिए महत्वपूर्ण प्रश्नोंको निश्चय करनेके लिए पथप्रदर्शक सितारा बनाना जीवनकी कला है।

विवाह भविष्यमें तभी जिन्दा रह सकता है यदि वह एक व्यक्तिगत सम्बन्धके द्वारा एक पुरुषसे दूसरे पुरुषके नज़दीक वहन किया जाय। यह नये ढंगका विवाह भूतकालके विवाहसे कई बातोंमें कठिन होगा। क्योंकि इसका युक्ति युक्त दावा न केवल मनुष्यकी सहन करनेकी उदासीन योग्यता पर होगा, बल्कि जीवित सर्जन शक्तिकी अधिक दुर्लभ देन पर भी होगा। जब तक कि विवाह एक पहलेसे ही निश्चित वस्तु था तब तक पारस्परिक झगड़े, विचारोंकी चपलता, बर्बरता, और अपने स्वार्थकी भावना उस पर बहुत साधारणसा ही प्रभाव डाल सकते थे, परन्तु भविष्यमें यह एक ऐसी समस्या बन जायगा जिसमें नित्य नये परिवर्त्तन होंगे और उनको सुलझा वही सकेगा जो कठोर आत्म अनुशासनका पालन कर सकेगा।

हमारे युगका यह स्वभाव है कि उद्देश्य जीवनसे अपनेको अलग कर देते हैं और केवल जीवनके औजारोंको गढ़ते हैं। कामके सभी पदार्थ अपनेको एक खास ढांचेमें ढाल देते हैं जिनकी शिल्पके कालमें हम कल्पना तक नहीं कर पाते थे। किन्तु विशुद्ध मानवीय संबंध हमेशासे अधिक अपनी परम्परागत शक्लको दूर फेंकते आ रहे हैं। स्टैण्डर्ड चूल्हे, स्टैण्डर्ड डैस्क और स्टैण्डर्ड मोटर—सब कुछ हैं परन्तु स्टैण्डर्ड विवाह नहीं रहे। बाहरका जीवन खास योजनाओंके अधिकाधिक अनुकूल हो रहा है। किन्तु जो आर्थिक दृष्टिसे सुदृढ वस्तुके रूपमें समाजकी सुरक्षाके काम नहीं आ सकता, जो केवल वैयक्तिक है, वह संसारके बाह्य सहारेसे वंचित हो जाता है, वह स्वाभाविकता, सचेत ज्ञान और उत्साहपर ही खड़ा रह जाता है। विवाहके साम्राज्यमें, मनुष्य और मनुष्यके सम्बन्धमें हम ऐसी एक प्रक्रिया गुजरती देख रहे हैं जो एक बार धर्मके क्षेत्रमें पुरुष और परमात्माके सम्बन्धमें अनुभव की गयी थी। पहले धर्म नितान्त चमत्कार और संस्कार विधि था, ईसाइयतने इसे विशुद्ध आध्यात्मिक वस्तुका रूप दिया। हमारे आन्तरिक जीवनकी मानवीयता जितनी-जितनी बढ़ती है, वह भी उतना-उतना उसके साथ चल रहा है। बाह्य यान्त्रिकताका ही वह अन्दरका सिरा है—जहां-जहां हमारा मूल्य व्यक्तित्वके रूपमें, न कि काम करनेवाली शक्तिके रूपमें, मापा जाता है वहां हमें सचेतन होकर दृढ़तासे अपने जीवनको पकड़ लेना चाहिए। इसका अर्थ है कि संस्थाओंका स्वाभाविक जीवन मृत हो रहा है, अब वे ऐसे ढांचे नहीं रहे जिनमें बहुतसे लोग पनप सकें।

निःसन्देह व्यक्तिकी दृष्टिसे यह एक लाभ हो सकता है—एक कदम आगे। 'दुर्बोध' स्त्री आज अतीतकालकी वस्तु हो गयी है क्योंकि उसकी मूक वेदना आधुनिक जीवनकी प्रतिभाके विपरीत है। दुःखी विवाहका विचार अब भी हममें प्रचलित है पर भविष्य में वह केवल एक आश्चर्यकी वस्तु रह जायगा। क्योंकि सजीव व्यक्तिके लिए दोही मार्ग खुले हैं—या तो वह विवाहका खात्मा करदे या सब दुःखोंके साथ उसका परिग्रह करे। और इन दोनों अवस्थाओंमें किसी को दुःखी नहीं कहा जा सकता, वह तो अपने भाग्यका स्वामी बन जाता है।

बेशक, कोई ज्ञान, कोई इच्छा या कोई संस्कृति हमें विवाह की समस्याओं और कष्टोंसे बचा नहीं सकती। ये अनन्त हैं क्योंकि विभिन्न लिंगोंका सम्बन्ध बिना कठिनाइयों और बिना पीड़ाके नहीं हो सकता। विवाह जीवनका ही एक रूप है और जीवनमें आनंद और कष्ट दोनोंका समावेश है और मूलतः मनुष्य कष्टों को आनंदसे कम नहीं चाहता। पर विवाह जीवनका ही एक रूप है और उसे वैसा रूप दिया भी जा सकता है बशर्ते कि विवाह करने वाले अपने आपको जानते हों, विवाहकी उनमें आकांक्षा हो और उसे नियन्त्रित करनेका उनमें साहस भी हो।

"बुक ऑफ मैरेज" से

सामुदायिक संगठन की आवश्यकता

मारवाड़ी सम्मेलन, बम्बई का वार्षिकोत्सव

श्री रामदेवजी पोद्दार का भाषण

सज्जनो,

मुझे यह कहते हर्ष होता है कि हमारा बम्बई का मारवाड़ी समाज व्यापार-उद्योग, सार्वजनिक सहयोग आदिके कार्योंमें उन्नति कर रहा है और किसी भी दूसरे समाजसे उपरोक्त कार्योंमें हीन नहीं है। पिछले १० सालोंसे हमारे समाजने देशके प्रगतिशील उद्योगोंकी ओर ध्यान देना भी आरम्भ कर दिया है और उस दिशामें भी हम यथेष्ट प्रगति कर सके हैं, सार्वजनिक हितके लिये दानशीलता का गुण हममें पूर्वजों की सौगात के रूपमें विद्यमान है और मुझे इस बात की खुशी है कि हमारे समाज ने प्रान्तीयता आदिके भेदभावके बिना काफी मुक्तहस्त होकर दान दिया है। किन्तु यह सब होने पर भी यदि आप अपनी वास्तविक स्थितिपर विचार करें तो आपको मालूम होगा कि बम्बईके सार्वजनिक जीवनमें आपका यथोचित स्थान नहीं है। सार्वजनिक जीवनमें हमारे धनका उपयोग तो होता है, हमारे कर्मका कोई मान नहीं। यह हमारे लिये बड़े दुःखकी बात है, और इसके कारण विभिन्न सामाजिक, व्यापारिक और राजनैतिक विभागोंमें हमारा कोई प्रतिनिधित्व नहीं है। अपनी इस कमी का एक कारण तो यह है कि हममें सामुदायिक संगठनका अभाव है और दूसरा कारण यह है कि हमारे समाजके अधिकांश व्यक्तिओंका दृष्टिकोण एकांगी हो गया है। उनका व्यापारको छोड़कर अन्य बातोंकी ओर ध्यान ही नहीं जाता। अपने सामुदायिक संगठनकी चर्चा करते समय मैं एक बात स्पष्ट कर देना चाहता हूं।

सामुदायिक संगठनसे मेरा आशय मारवाड़ी समाजके सभी वर्गों, जातियों और श्रेणियों को एकसूत्र में संगठित करने से है, इस संगठनके आदर्शको अपना कर हम राष्ट्र भारत के सच्चे सेवक बननेका दावा करेंगे, और मुझे सबसे ज्यादा खुशी उस दिन होगी जब मारवाड़ी समाज देशके राष्ट्रसेवक समाजोंमें अग्रगण्य समझा जावेगा।

हमारे वर्तमान संगठनके अभावका एक कारण यह है कि हम विभिन्न देशी रियासतोंसे उद्भूत होनेके कारण अपने आपको बीकानेरी, जोधपुरी, जयपुरी आदि छोटे छोटे फिरकोंके रूपमें जानते रहे हैं, इसके साथ ही अग्रवाल, माहेश्वरी, ओसवाल, ब्राह्मण, राजपूत आदि जाति एवं वर्गभेदके कारण भी हममें एक विस्तृत सामुदायिक संगठनका अभाव रहा है। हम चाहें वैश्य हों, चाहें ब्राह्मण, चाहे क्षत्रिय, लोग हमें सबको मारवाड़ी नामसे जानते हैं और इसलिये हमारा यह कर्त्तव्य है कि हम अपने सामुदायिक संगठनके सहारे राष्ट्रके विभिन्न भागोंमें व्यक्त हों, हमारे संगठनके अभावका एक खास कारण और है, हम गलतीसे अभीतक सिर्फ अपने व्यापारी और ब्राह्मण वर्गको ही मारवाड़ी समझते हैं। हमारे विभिन्न राजा-महाराजे, राजपूत सैनिक, बुद्धिशाली कलाकार, जो मारवाड़में ही उद्भूत हैं क्या वे मारवाड़ी नहीं हैं। खुद हमने उन्हें अपने बाहर रखकर भुला रखा है; नहीं तो मारवाड़ी नामसे केवल व्यापारी बोध नहीं होता। मारवाड़ी नामके उच्चार मात्रसे लोगोंके सामने प्रताप, दुर्गादास, भामाशाह आदिकी मूर्तियां सामने आजाती हैं, लेकिन अब तक हमारा यह दुर्भाग्य रहा है कि हम अपने आपको नहीं समझ सके।

आज सारी दुनिया युद्धमें संलग्न है। अब दुनियाकी एक भी शक्ति युद्धमें अछूती नहीं रही है। धीरे धीरे युद्ध भारतकी तरफ भी आ रहा है और दिन प्रति दिन परिस्थिति बदल रही है। चारों तरफ एक तरहका भयातुर वातावरण-सा फैल रहा है और इस अवस्थामें तो हमारे लिये और भी आवश्यक हो जाता है कि हम सामुदायिक संगठन को दृढ़ करें और राष्ट्रकी सेवा करें। आज दुनिया का नया इतिहास बन रहा है। हमें दुनियाके इस ऐतिहासिक कालमें अपने जातीय मानकी रक्षा के लिये कर्म करना होगा। हमने राष्ट्रसेवा के कार्योंमें सदैव भाग लिया है और राष्ट्रहित को अपना हित माना है। अतएव यदि युद्धका मोर्चा भारतमें ही आ जाये तो हमें यथाशक्ति अपने राष्ट्रकी रक्षा के लिये उद्योग करना चाहिये।

युद्ध की चर्चा करते समय मैं आपका ध्यान एक बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य की ओर खींचना चाहता हूं। बर्मा जो अभी तक हमारे भारत का ही एक भाग था अब युद्ध की विभीषिकाके अन्तर्गत आगया है, और वहांके कई भागों पर भयंकर हवाई हमले हो रहे हैं। बर्मामें हमारे भारतीय बन्धु भी बहुत बड़ी संख्यामें निवास करते हैं, उनमें मारवाड़ी समाजके लोग भी हैं। युद्ध की भयंकरताके कारण वे शरणार्थियों की अवस्थामें आज भारत को लौट रहे हैं। यह सब आपत्तिग्रस्त प्रवासी भारतीय इस आशासे अपनी जन्मभूमि लौट रहे हैं कि उनके कष्ट दूर होंगे। बम्बईके मारवाड़ी समाजसे मेरा निवेदन है कि वह इन शरणार्थी भारतीयको किसी भी प्रकारके जाति धर्म और वर्गके भेदभावके बिना यथाशक्ति सहायता करें और उनके कष्ट निवारणके लिये जो योजनाएं बनाई जायें उनमें पूरा पूरा सहयोग दें।

अपना निवेदन समाप्त करनेके पहले मैं बम्बईके मारवाड़ी समाज को अस्पताल की योजनाके लिये जो अब पूरी हो गई है, धन्यवाद देना चाहूंगा और इसके लिये विशेषतः मारवाड़ी चैम्बर आफ कामर्स, हिन्दुस्तानी देशी व्यापारी ऐसोसिएशन, ग्रेन एन्ड सीड्स ब्रोकर्स ऐसोसिएशन तथा पूरनमलजी बूबना, बेगराजजी गुप्त, दुर्गादत्तजी थाड़ एवं श्री बनारसीदासजी वैद्य को बधाई दूंगा। इस अस्पताल से बम्बईके मारवाड़ी समाज को उन माध्यमिक श्रेणियोंके व्यक्तियोंका जिन्हें और दूसरे अस्पतालोंमें प्रवेश नहीं मिलता है विशेष उपकार होगा।

[मारवाड़ी सम्मेलन, बम्बईके वार्षिकोत्सवके अवसर पर श्री रामदेवजी पोद्दार—सभापति अ. भा. मारवाड़ी सम्मेलन ने एक महत्वपूर्ण भाषण दिया था। जिसका खास खास अंश हम यहां दे रहे हैं—सं]

देश विदेशकी चर्चा

सिंगापुरका घेरा

उस दिन मलाया और सिंगापुरके कमाण्डर जनरल वॉवलने ऐलान कर दिया कि मलायाकी लड़ाई खतम हो गयी है और अब सिंगापुरकी लड़ाई शुरू हो गयी है। यों तो पहले भी सिंगापुर पर जापानी बमवर्षक वायुयानोंके हवाई आक्रमण हो रहे थे, लेकिन अब जोहोरके हवाई अड्डेपरभी जापानियोंका अधिकार हो जानेके कारण हवाई हमलोंकी सुविधा और भी बढ़ गई है। पिछले समाचारोंसे विदित होता है कि जोहोर और सिंगापुरको जोडनेवाले पुलको भी सिंगापुरकी रक्षाकी दृष्टिसे तोड़ दिया गया है। जापानका अगला कदम क्या होगा, इस विषयमें निश्चित् रूपसे कुछ कहना मुश्किल है, लेकिन यह तो निश्चित् दीखता है कि सिंगापुर आज जैसी स्थितिमें है, उसे देखते हुए जापानी लोग उसपर सीधा आक्रमण करने के बजाय उसे चारों ओर से घेर, भूखा रखकर, आत्म समर्पण करने के लिये मजबूर करेंगे। जापानियोंकी अबतक की गतिविधिसे ऐसा ही प्रतीत होता है कि वे सिंगापुर के टापु के चारों ओर घेरा डालकर बाहरी दुनियासे उसका सम्बन्ध काट डालने की कोशिशमें लगे हैं। उत्तरमें मलाया पर उनका अधिकार हो ही चुका है, पूर्व की ओर भी बोर्नियो के उत्तर-पश्चिम भागमें भी उनकी सेनाएं पहुंच चुकी हैं; पश्चिममें पेनांग पर पहले ही जापानियों के पैर जमा चुकने के कारण मलक्का की खाड़ी भी अब मित्रराष्ट्रोंके लिये ज्यादा कामकी नहीं रही। अतएव सिर्फ उत्तरी सुमात्राकी ओरसे होकर अभी तक सिंगापुरमें रसद और फौज वगैरेह पहुंचानेका रास्ता रह गया था। अगर जपानियोंकी घेरेबन्दीके कारण यह मार्ग भी बन्द हो जाय तब तो सिंगापुरकी रक्षाका प्रश्न और भी कठिन हो जायगा।

आस्ट्रेलिया खतरेमें

मित्र राष्ट्रोंके लिये सिंगापुरका कैसा महत्व है, यह किसीसे छिपा नहीं है। प्रशान्त महासागरकी लड़ाईके लिये मित्रराष्ट्रोंने जो योजनाएं बनायी होंगी, उसमें सिंगापुरको सबसे ज्यादा महत्व दिया गया होगा यह हम समझ सकते हैं। यदि सिंगापुर शत्रुके हाथों चला गया तो न केवल आस्ट्रेलिया बल्कि सुदूर अमेरिका और इस तरफ समस्त भारतकी स्थिति विचारणीय बन गई है। सिंगापुर यदि दुश्मनके कब्जेमें चला जाय, तो सबसे अधिक, तात्कालिक खतरा ओस्ट्रेलियाको है। अखबारोंसे ज्ञात होता है कि जापानी सेनाके कुछ दस्ते न्यू गिनी और उसके इर्दगिर्दके द्वीपसमूहोंमें उतरे हैं। यदि यह समाचार सच हो तो आस्ट्रेलिया पर जापानियोंका भावी आक्रमण अत्यंत गंभीर समस्या उपस्थित करता है। ज्यों ज्यों आस्ट्रेलिया पर आक्रमण की संभावना बढ़ती जाती है, त्यों त्यों एक ओर तो आस्ट्रेलियाकी रक्षाका प्रश्न महत्वपूर्ण होता जाता है और दूसरी ओर आस्ट्रेलियन अधिकारियोंके वक्तव्योंका सार अत्यन्त करुण होता जा रहा है। विगत कुछ दिनोंमें आस्ट्रेलियाने ब्रिटिश केन्द्रीय युद्ध—

(शेष पृष्ठ १० के कालम १ पर)

अ. भा. गोसेवा संघका प्रथम अधिवेशन

महात्माजी द्वारा उद्घाटन

पूर्व निश्चयानुसार ता. १-२-४२ को दोपहरके २ बजे बजाजवाड़ीमें गोसेवा संघका प्रथम अधिवेशन प्रारंभ हुआ। इस अधिवेशनके अध्यक्ष महामना पं. मदनमोहन मालवियजी स्वास्थ्य ठीक न होनेसे—उपस्थित नहीं हो सके। संघके अध्यक्ष श्रद्धेय श्री जमनालालजी बजाज की प्रेरणासे आज अधिवेशके पेंडालमें पधारे हुए निमंत्रित मेहमानों में सभी दलों व पक्षोंके नेताओं एवं कार्यकर्ताओंका सुंदर सम्मिलन देखकर आनंद हुए बिना नहीं रह सकता था। महात्माजी, पू. विनोबाजी, श्रद्धेय जमनालालजी तथा जाजूजी जैसे महान राष्ट्रीय नेताओंके साथ साथ सरदार सर दातारसिंह जैसे गोसेवा विशारद सरकारी अधिकारी तथा श्री चौंडे महाराज जैसे अनन्य गोभक्त, सेठ घनश्यामदासजी बिड़ला जैसे अनन्य हरिजन सेवक और सर्व श्री गोन्विददासजी सेकसरिया, प्रतापसेठ नारायणलालजी बाजोरिया आदि हिन्दूधर्माभिमानी गोसेवकोंको एक साथ बैठकर राष्ट्रीय दृष्टिसे गोसेवा के प्रश्नपर गंभीर विचारविनिमय करते देखकर किसे आनंद नहीं हो सकता था। गाय भारत जैसे कृषिप्रधान देशकी सच्ची देवता है और अबतक इस गोपालनकी समस्याका अपने देशमें जितना भी व जैसा भी हल हुआ है वह कई दृष्टियोंसे अपर्याप्त व कहीं कहीं काफी दोषपूर्ण है। इस परिषदने इस महान् किंतु अबतक उपेक्षित विषय का हल करके देशपर बहुतही उपकार किया है।

ऊपर जिन महानुभावों के नामों का ज़िक्र किया गया है उनके अतिरिक्त और भी कई महानुभाव उपस्थित थे. जिनमें श्री कुमारप्पा, श्री. स्वामी आनंद, काकासाहेब कालेलकर श्री. सूरजी वल्लभदास, श्री. बगड़का, श्री. श्रीनिवासजी अग्रवाल, श्री. रघुनाथ धोत्रे, आचार्य दादासाहब धर्माधिकारी श्री. वालजीभाई देसाई, श्री. शांतिकुमार नरोत्तम मुरारजी, बाबा गोविंददास, श्री मातादीनजी भगेरिया आदि सज्जनोंके नाम भी विशेष उल्लेखनीय हैं।

राष्ट्रगीतके साथ ठीक २ बजे कार्यवाही शुरू हुई। पू० बापूजीका भाषण कई दृष्टियोंसे महत्वपूर्ण था। पू. विनोबाजीके भाषणको सुनकर तो उनकी (पू. विनोबाजी) अध्ययनशीलता व प्रतिपादन के चातुर्य के कायल हुए बिना नहीं रहा जाता। सम्मेलनमें कई महत्वपूर्ण प्रस्ताव पास हुए जो निम्न प्रकार हैं:—

प्रस्ताव नं. १

चूंकि हिन्दुस्तान कृषिप्रधान देश है जिसकी ८० फीसदी आबादी की गुजर खेती पर ही होती है और चूंकि हिन्दुस्तान की खेती बैलों पर ही निर्भर है और चूंकि दूध और घी देनेके अलावा बैल देनेवाली सिर्फ गाय ही है; इसलिये इस सम्मेलन की निश्चित राय है कि दूसरे मवेशियों की अपेक्षा गाय और उसकी औलादकी मौजूदा हालत और आर्थिक स्थितिका सुधार इस देशके अर्थ निर्माण की योजनामें अनिवार्य है।

प्रस्तावक—**श्री प्रतापसेठ, अमलनेर**
अनुमोदक—**सरदार दातारसिंह**

प्रस्ताव नं. २.

चूंकि ढोरों को कम खिलाना, गंदगी में रखना, उन पर ज्यादा बोझ लादना, उनसे अधिक काम लेना, उन्हें मारपीट करना और उन्हें आर और फूकें की यातनाएं देना जीवदया की भावनाके विरुद्ध है और इनसे उन पशुओंकी उपयोगिता भी घटती है इसलिये यह सम्मेलन जनतासे आम तौरपर अनुरोध करता है कि वे सार्वजनिक अन्तःकरण को जागृत करें और इस निर्दय व्यवहार को रोकने की भरसक कोशिश करें और जहां जरूरत हो इस काम में कानून की मदद भी लें।

प्रस्तावक—**श्री चौंडे महाराज**
अनुमोदक—" **अभयदेवजी**

प्रस्ताव नं. ३

पींजरापोलों और धर्मार्थ गोशालाओंका असली उद्देश्य बीमार बुढ़े और अपाहिज पशुओंको आश्रय देकर उन्हें कत्ल और कष्टमय जीवनसे बचाना है। इस सम्मेलनकी रायमें इस उद्देश्यका यथार्थ पालन होनेके लिये पींजरापोलोंकी व्यवस्था और कार्यक्रममें नीचे लिखे सुधार और विस्तार होना जरूरी है:—

१ हर संस्थामें पशुओंका इलाज, परवरिश और दूसरी वैज्ञानिक व्यवस्था हो और इन सहूलियतोंका लाभ आसपासकी जनताको भी मिले।

२ संस्थामें आनेवाले अपंग और घटिया नस्ल (scrub) के मवेशियोंकी वंशवृद्धि बिल्कुल रोकी जाय और मजबूत और अच्छी नस्लकी गायोंके अच्छी खुराक, देखभाल और वंश सुधारकी इस तरह व्यवस्था की जाय कि ज्यादा दूध देनेवाली गायें और ज्यादा काम देनेवाले बैल तैयार हों।

३ हर संस्थामें अच्छे सांड रखे जांय और उसका लाभ जनताको भी मिले।

४ हर संस्थाके पास यथा संभव विशाल चरागाहों (dry cattle farms) की व्यवस्था हो जहां आसपासकी जनताको, सूखी गायों और बछड़ोंको भी रियायती खर्च लेकर रखी जा सकें। इन चारागाहोंप अच्छे सांड भी रखे जांय।

५ हर संस्थाके पास हरा घास चारा काफी मात्रामें पैदा करने और उसे साइलेज वगैर के रूपमें संग्रह करने की व्यवस्था हो।

६ पींजरापोलोंके मकान सफाई औ तंदुरस्ती का खयाल रखकर बनाये जाय औ वहां कुए, पानीकी खेती वगैरः की रचन वैज्ञानिक ढंगसे और निश्चित नमूनेपर हो।

७ हर संस्थामें एक एक पशु विद्याविशारद होना चाहिये जिसकी देखरेखमें संस्था चलाई जाय। उस विशारदको पशुपालनका, उसके लिये होनेवाली खेतीका, और पशु चिकित्स का ज्ञान होना चाहिये।

प्रस्ताव—**वैजनाथजी केड़िया**, बनारस
अनुमोदक—**प्रागजीभाई उदेशी**, नासिक
समर्थक—**आचार्य कालेलकर**
" **स्वामी आनंद**

प्रस्ताव नं. ४

जिन संस्थाओंको इस सम्मेलनका पा किया हुआ पिंजरापोलों सम्बन्धी प्रस्ताव मंजूर हो उन सबकी नीतिका एक तरहसे संचालन हो, और उनका प्रबंध ठीक ढंगसे हो इसके लिये यह सम्मेलन सिफारिश करता है कि ये सब संस्थाएं गोसेवा संघका प्रमाणपत्र हासिल करें और संघके साथ सम्बन्ध जोड़ लें। सम्मेलन यह भी सिफारिश करता है कि संघ संस्थाओंको सम्बन्द्ध और प्रमाणित होनेमें सुविता हो इसलिये जरूरी नियम बनावे और पींजरापोलों और धर्मार्थ गोशालाओंको संघसे सम्बन्ध होनेके लिये निमन्त्रण दें।

प्रस्तावक—**हरीदास मूलजी उदेशी**
अनुमेदाक—**दीपचंद भाईचंद व्होरा**

[पू. बापू व पू. विनोबाके भाषण अगले अंकमें आ सकेंगे।]

(पृष्ठ ९ का शेषांश)

नीतिकी अति तीव्र आलोचनाकी है और पूर्वके रणक्षेत्रमें ब्रिटेनने बतलाई हुई ढीलको घातक बताया है।

बर्मा और चीनका सवाल

दक्षिणी बर्माके मर्गुई और टेवाय नामक स्थानोंपर अधिकार करनेके बाद जापान बर्मामें तीन तरफसे बढ़नेका प्रयत्न कर रहा था। दक्षिणमें मेरवाडी, मध्यमें पापून व उत्तरमें शान राज्योंसे। मेरवाड़ीकी ओरसे बढ़कर उसने अपने लक्ष्य मौलमीनको ले लिया है। यहांसे रंगून १२० मील दूर है। पापूनसे बढ़कर जापानी सेनाए रंगून व मांडलेकी रेल्वे लाइनपर अधिकार कर रंगूनका उत्तरी बर्मासे संबंध विच्छेद करना चाहता है, उत्तरमें शान राज्योंके आक्रमणसे वह मांडलेकी तरफ बढ़ना चाहती है। पापून तथा शान राज्योंके हमलेसे जापानी बर्मारोड द्वारा चीन पहुंचनेवाली मदद बन्द कर देना चाहते हैं।

बर्मा रोडके बंद होनेका मतलब है चीनकी जीवनडोरीका टूट जाना। इससे चीन पर जो महान् विपत्ति आयगी उसका अंदाज हम इस तथ्यसे लगा सकते हैं कि इसी मार्ग पर प्रतिमास ५ हजार मोटर लारियोंके द्वारा ३० हजार टनके करीब युद्धसामग्री चीनको पहुंचायी जाती है। प्रतिदिन के हिसाब से २५० से ३०० मोटर लारियोंका तांता इस मार्गमें लगा हुआ रहता है।

लीबियामें फिर सरगर्मी

लीबियाका रणक्षेत्र कुछ समयसे मन्द और सुस्तसा नजर आता था। जनरल रोमेलकी पीछेहटके समाचार अखबारोंमें कई दिन तक बड़े बड़े अक्षरोंमें आते रहे। प्रायः सबको लगता था कि बस, लीबियामें से हमेशाके लिए रोमेल चला गया है। लेकिन सबके आश्चर्यके बीच, एक जादूगर की भांति जिस प्रचण्ड वेगसे थोड़े ही समयमें उसने बेन्गाज़ी कब्जे कर दिया—इससे अफ्रीकाके रेगिस्तानमें फिर सरगर्मी आगई है।

आयर्लैण्डकी प्रजासेना की गतिविधि

पिछले दिनों एक बहुत ही सनसनी पूर्ण खबर जो आयर्लैण्डसे आयी है, यह कि वहां की 'रिपब्लिकन आर्मि' ने यह ऐलान किया है कि ब्रिटेनके विरुद्ध युद्धमें वे जर्मनीको सहायता देगें। इस संबंधमें आयरिश पार्लेमेन्टमें वक्तव्य देते हुए डि वेलेराने बतलाया था कि प्रजासेनामें करीब दस हजार सैनिक जुडे हुए हैं। ये लोग पिछले कई सालसे अपना आंदोलन करते आये हैं।

राजस्थानी संसार

कानपुर

माहेश्वरी युवक एसोसियेशन

मौसर त्याग

"श्रीयुत बाबू रामेश्वरदयालजी भुराडिया (फर्म. रामदास शिवनारायण) की माताजी का स्वर्गवास ता. २२-१-४२ वार बृहस्पतिवार को हुआ था। उसके प्रति समवेदना की चिठ्ठी देते हुये एसोसियेशनने बाबू रामेश्वरदयालजीसे औसर मौसर (मृत्युका बिरादरी भोज) न करने की प्रार्थना की थी।

इस सिलसिलेमें बाबू रामेश्वर दयालजीने एसोसियेशन की प्रार्थना मान ली है। और मन्त्री को बुलाकर स्वीकृति दे दी है। इसके लिये हम उनको धन्यवाद देते हैं। और उम्मीद करते हैं कि आइन्दाके लिये ऐसे कार्योंमें हमारी मदद करेंगे।"

माहेश्वरी पुस्तकालय

श्री माहेश्वरी पुस्तकालय प्रबंध कमेटीके प्रधानमंत्री बा. पुरषोत्तमदास भुराड़ियाके त्यागपत्र देनेपर उनकी जगह बा. बद्रीप्रसादजी बाहेती प्रधानमंत्री नियुक्त हुये।

—मंत्री

SHIP BRAND FABRICS

SELL ON THEIR MERITS!

बर्मा, सीलोन, देश और विदेशमें लोकप्रिय

जहाज छाप यानी टिकाऊपन का सबूत
SHIP BRAND
KHAKI
COTTON CREPE
COTTON CREPE
LONG-CLOTH

क्योंकि

१ वे स्वदेशी हैं,
२ पक्के रंगके हैं,
३ मज़बुत हैं,
४ सर्वोत्तम हैं,
५ कीमत में सस्ते हैं।

SHIP BRAND FABRICS

A.R.P. लेम्पों के शेड के लिए A.R.P.

जहाज छाप काली व ब्ल्यू क्रेप, पड़दों के लिए दसूती व केसमैण्ट क्लॉथ के इस्तेमाल से आप

—A.R.P.—

सुरक्षित रहेंगे।

कौटन क्रेप सफेद व रंगीन, खाकी ड्रिल, टविल व पगड़ी क्लाथ, सफेद ड्रिल, ट्विल, लौंगक्लाथ, साटिन ड्रिल, फास्ट ब्ल्यू ड्रिल, ग्रे ड्रिल, पापलीन सफेद व रंगीन, दसूती सफेद व रंगीन, कैसमेन्ट क्लाथ रंगीन, नीटींग क्लाथ, शीटींग क्लाथ, टेबल क्लाथ सफेद, मरसीराइज़ लौंगक्लाथ, क्रेप, पापलीन, टसर, शरटींग टौवल, नैपकीन वगैरह वगैरह।

चंद्रचौक, मूलजीजेठा मार्केट, बम्बई।

Bawa Parduman Singh & Sons
Head Office AMRITSAR
Branches: BOMBAY CALCUTTA DELHI LAHORE QUETTA

नारी की महिमा

★

● कुमारी लीलावती शारदा ●

नारी कितना प्यारा शब्द है ! कैसा सुन्दर संबोधन है ? न जाने किस वैयाकरणीने यह नामकरण किया है ? लेखनीकी नोकमें वह भाव कहां, वह क्षमता कहां कि नारीकी महत्ताका याथातथ्य चित्रण कर सके ? जिस कलित कान्त कलेवरा कामिनीका चित्र अंकित करनेमें बिहारी सरीखे शृंगारी कविके विश्व-विख्यात चतुर चितेरे चुप होगये, क्रूर बन गये, जिसकी कोमल कलाइयोंसे घूमनेवाली करवालने मदान्ध मुगलोंके छक्के छुड़ा दिये उसी भव्य भारतवर्षके महिला मण्डलको यह बतलाते हुए कि नारी क्या है, लेखनी कांपती है । वास्तवमें विनश्वर विश्वमें यदि विश्वकर्माने किसी विशाल वस्तु की रचना की है तो वह नारी है। एक पाश्चात्य पंडितके शब्दोंमें:—

" Nature intended that Women should be her Masterpiece. "

कालान्तरमें कामिनी माताके महान् पदको सुशोभित करती है । अत्यंत स्वाभाविक परन्तु कठिन तपस्याके बलसे हृदयके खूनको छातीका क्षीर बनाकर अपनी प्राणप्रिय सन्तानका परिपोषण करती है । जानते हो क्यों ? कहीं अनादिकालीन आत्मसमर्पणका यज्ञकुण्ड आहुत्यभावसे ठंडा न हो जाय। संसारसे अनंत बलिदानका तांता न टूट जाय, चण्डीका खप्पर रक्तसे रिक्त न होजाय ! नारी तप, तेज और त्यागकी पवित्र त्रिवेणी है।

राष्ट्रकी निरन्तर वृद्धि और अभ्युदयका श्रेय रमणीमण्डल को है। वीरभूमि मेवाड़के रक्तरंजित अंचलका अणु अणु, कण कण आज भी पद्मिनी, पन्ना, हाड़ा और ताराके गौरवके गीत गा रहा है। जगतविजयी नेपोलियनकी स्वर्गीय आत्मा आज भी राष्ट्र-निर्माणके लिये वीर जननी लाटोशिया सरीखी आदर्श माताओंका आह्वान कर रही है।

" A country needs nothing so much to promote its regenaration as good mothers. "

विश्व इतिहासके प्रायः सभी महापुरुषोंके उज्ज्वल जीवन पर उनकी माताओंने गहरा प्रभाव डाला है। भारतके अर्द्ध नग्न फकीर गांधी, महाराष्ट्र केसरी शिवाजी और महाराणाप्रताप इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं।

भारतीय ललनायें प्रेमकी प्राणमयी प्रतिमा हैं। प्रणय–कवच परिधान कर अपने मानापमानकी चिन्ता न कर अपना सर्वस्व प्यारे प्रीतमके चरणों पर चढ़ा देती हैं। किन्तु हा ! स्वदेश संकटके समय आन पर जान देनेके लिये पति-पुत्रको स्वयं सुसज्जित कर सहास्य-वदन विदा देती हैं। आंखके आंसुओंको मन्द मधुर मुस्कानकी ओटमें छिपा लेना उनका जन्मजात गुण है । रावणकी स्वर्णलंका पर थूकनेवाली सती सीता, अकबरके वर वक्ष पर आसीन होनेवाली वीरबाला किरणमयी दुर्गा और लक्ष्मी सरीखी आदर्श ललनाओं पर आज भी भारतीयोंको गर्व है। भारतीय इतिहास आकाशपर आजभी उनके नाम सूर्य और चन्द्रकी भांति चमक रहे हैं।

सतीत्व भारतीय रमणीका अक्षय धन है, अपूर्व बल है, और एकमात्र संपत्ति है । वह उसपर गर्व करती है । सारा संसार उसके सामने नतमस्तक होता है । वह उसकी रक्षाके लिये प्रज्वलित अग्नि शिखामें कूदकर हंसते हंसते प्राण विसर्जन करना भली भांति जानती है । स्वर्ग और सौभाग्य जिसकी चरणरजको शिरोधार्य कर पवित्र होता है, कठोर क्रूर कालकी भी जिसके सामने दाल नहीं गलती, ऐसी सतियोंके प्रसव करनेका सौभाग्य इसी भूमिको है।

प्राचीन हिन्दूसमाज नारीके अपूर्व गुणों पर मुग्ध पवित्रतासे प्रभावित हो अर्धांगिनी, सहचरी आदि सुन्दर विशेषणोंसे ही सम्बोधित था। यज्ञादिके अनुष्ठान भी स्त्रीकी अनुपस्थितिमें धर्म विरूद्ध माने जाते थे। आजभी कृतज्ञ भारतीय अपने प्रातःस्मरणीय महात्माओंके शुभनामके पूर्व उनकी स्वनामधन्य पत्निओंका नाम जोड़कर अपनी स्मृतिको पवित्र करते हैं। यथा—सीताराम, गिरजाशंकर, राधाकृष्ण इत्यादि । हिन्दूधर्मशास्त्रका पन्ना पन्ना स्त्रीगुणगानसे भरपूर है । मनुमहाराजका कथन है "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः! ' अर्थात् जहां स्त्रियोंका आदर होता है वहां देवता निवास करते हैं। स्त्रियोंकी प्रसन्नता पारिवारिक सुख सम्पन्नताका मूल है। बात भी कुछ ऐसी ही है। गृहलक्ष्मीके असन्तुष्ट रहने पर बाह्य लक्ष्मी कभी तुष्ट नहीं रहती । क्योंकि राष्ट्रके पालनेकी रस्सी स्त्रियोंकेही हाथमें रहती है न !

जिस देशमें भारतीने आदिगुरू शंकराचार्यसे शास्त्रार्थ किया, विश्वपाराने सूक्ति रचना की, लीलावतीने गणितकी गुत्थियां सुलझाई और खन्नाने ज्योतिषमें पारदर्शिता प्राप्त की वहां आज लोग 'स्त्री शूद्रौ नाधीयाताम्' की अनर्गल उक्तिको लेकर स्त्रीशिक्षा पर तर्क-वितर्क करनेका साहस करें यह कैसी मूर्खता है। जहां कुमार कुमारियोंको विद्याध्ययनके लिये गुरुकुलोंमें न भेजना जघन्य राजकीय अपराध था वहां आज शिक्षाकी उपयोगिता पर विवाद हो कैसी दयनीय अवस्था है ! ठीक ही है। जो समयकी आवश्यकताओंको पूरा नहीं करता वह उसे नष्ट भ्रष्ट कर देता है।

" सत्यं शिवं सुंदरं " की प्रत्यक्ष मूर्ति नारी आज भारतमें भारस्वरूप समझी जाती है। कारण ? कारण अज्ञान–अशिक्षा और समाज प्रचलित कुरूढ़ियां। स्त्री और पुरूष दोनों समाजके अंग हैं। पूर्ण होनेके लिये, सांसारिक कार्य संचालनके लिये दोनोंका सहयोग अपेक्षित है। सहयोगके लिये दोनोंका समान होना अनिवार्य है। किन्तु आधुनिक भारतवर्षके मानव समाजमें यह प्रश्न निरर्थकसा समझा जाता है। वर और कन्या दोनोंकी आखों पर रूढ़ियोंकी काली पट्टी कसकर गहरे अंधकारपूर्ण गर्तमें धकेलकर दोनोंको मिला देना यही वर्तमान विवाहका स्वरूप है। युवक सुन्दर एवं सुशिक्षित है तो कन्या कुरूपा तथा निरक्षर। कन्या कुमारी है तो वर वृद्ध । इसी घोर वैषम्यने प्रतिकूल तत्वोंके सम्मिश्रण हमारे पारिवारिक और सामाजिक जीवनको अप्रीतिकर, अवांछनीय और दुःखद बना दिया है।

आज भारतीय नवयुवक विवाह बन्धनको बेड़ियोंसे कम कष्टदायक नहीं समझते ? वह ललनायें जो युद्धसे विमुख पतियोंको लौटा देखकर गृहद्वार बन्द कर लेती थीं, वीररसके गायन गा गाकर अपने पति पुत्रोंको प्रोत्साहित किया करती थीं आज पतियोंके आदर्शोंकी साधको सोनेचांदीके जालमें फंसाकर मार डालती हैं। उठती भावनाओंको मोहके आंसुओंमें वहा देती हैं।

परदेकी घिनौनी तथा नाशकारी प्रथाने उन्हें कहींका भी नहीं रक्खा। पालतू पशु पक्षी भी घूम फिरकर वायुसेवन करनेके लिये स्वतन्त्र है किन्तु मनुष्यकी सहचरी नारीको आज यह अधिकार भी सुलभ नहीं । घरकी चारदिवारीके अन्दर सादो कैदकी सजा भोगा करती हैं। परदा उन्हें क्षयका पुरस्कार प्रदान करता है। क्रूर कानूनके शिकंजेमें जकड़ी हुई ललनायें कूपमण्डूककी भांति कोठरीके एक कोनेमें अपनी इह लीला संवरण करती हैं। परदा पाप है। रूप और सौन्दर्य परमपिता परमात्माकी देन है उसे घूंघटमें घोंटकर रखना घोर अत्याचार है।

आज शताब्दियोंसे सोया हुआ देश करवटें बदल रहा है। स्त्रीशिक्षाका भी श्रीगणेश हुआ है। शिक्षाका अर्थ यह नहीं है कि हम अपने आदर्शोंको भुला दें और दिखावे तथा फैशन की ओर दौड़ें किन्तु शिक्षाका अर्थ है आत्माको संस्कृत कर पूर्ण मनुष्यता प्राप्त करना तथा आदर्शोंके लिये अपने आपको मिटा देना। हमें यह कभी न भूलना चाहिये कि अन्य देशोंकी सभ्यता और हमारी सभ्यतामें आकाश पातालका अंतर है। उसका विकास सुरम्य प्रासादोंसे हुआ है तो इसका श्रीगणेश तपोवनकी जीर्ण शीर्ण झोंपड़ियोंसे हुआ है।

आज भारतको केवल बच्चे पैदा करनेवाली स्त्रियों और खाना बनानेवाली दासियोंकी आवश्यकता नहीं। आवश्यकता है कुरीतियोंको कुचल कर, परदेको फाड़कर आनेवाली वीरबालाओंकी जो युवकोंके कन्धेसे कन्धा मिलाकर देश को आपत्कालमें सहायता पहुंचायें। दुर्गा, लक्ष्मी और सावित्रीके आदर्शोंका अनुसरण करनेवाली नारियोंसे अनुरोध है कि वे धधकते हुए बलिदानकुण्डकी वह्निको बुझने न दें।

(पृष्ठ २२ का शेषांश)

राजस्थान-सिंध प्रान्तीय सभा कार्यकारी मंडलके सदस्योंकी सूची

पदाधिकारी

सभापति—कुं. चांदकरणजी शारदा, अजमेर

उप–सभापति—श्री हनुमानप्रसादजी सोढाणी उदयपुर (स्वागताध्यक्ष)

मंत्री— श्री बसन्तीलालजी नौगजा, अजमेर

कोषाध्यक्ष-श्री. श्रीगोपालजी मोहता, उदयपुर

सहायक मंत्री—श्री. दिलीपसिंहजी राठी, उदयपुर, श्री कस्तूरचंदजी तोषनीवाल, शाहपुरा

सदस्य

१ अजमेर-मेरवाड़ा

१ श्री भगीरथमलजी पलोड़
२ श्री गुलाबचंदजा भट्टड़
३ श्री मोहनलालजी बहेड़िया
४ श्री वृद्धिचंदजी लखोटिया
५ श्री गंगाविष्णुजी बल्दुआ

२ उदयपुर–शाहपुरा (मेवाड़)

१ श्री कन्हैयालालजी सोमाणी, कपासन
२ श्री भंवरलालजी देपुरा, उदयपुर
३ श्री भंवरलालजी भदादा, भीलवाड़ा
४ श्री छगनलालजी मूंदड़ा, चित्तोड़

३ जोधपुर–सांभर

१ श्री जयकृष्णजी मूंधड़ा, जोधपुर
२ सदासुखजी कावरा, कुचामण
३ श्री कन्हैयालालजी कलयंत्री, फलौदी
४ श्री शिववल्लभजी मानधण्या, सांभर
५ श्री रामप्रसादजी हुरकट, सांभर

४ जयपुर–टोंक

१ श्री हरिनारायणजी राठी, जयपुर
२ श्री राधाकृष्णजी परवाल
३ श्री रामजीदासजी, नरेना
४ श्री जगन्नाथजी शारदा, नीबांहेड़ा

५ कोटा–बूंदी–किशनगढ़–झालावाड़

१ श्री मदनमोहनजी मूंदड़ा, कोटा
२ श्री अमरचंदजी भूतड़ा, किशनगढ़
३ श्री रामकृष्णजी माहेश्वरी, बूंदी

६ बीकानेर–जैसलमेर

१ श्री मोहनलालजी कोठारी, देशानोंक
२ श्री छोटूलालजी मोहता, बीकानेर
३ श्री हरिश्चन्दजी भट्टड़, जैसलमेर
४ श्री. मदनगोपालजी दामाणी, बीकानेर

नोट १ (अ) विभाग नं. २ में श्री कस्तूरचंदजी तोनषीवालके सहकारी मंत्री नियुक्त होनेके कारण शाहपुरासे एक सदस्य का स्थान रिक्त है

नोट २ सभाका ऑफिस अजमेरमें है निम्न पते पर पत्र व्यवहार करें।

बाबू बसन्तीलालजी नौगजा एडवोकेट
मंत्री, राजस्थान—सिंध प्रान्तीय माहेश्वरी सभा, लाखन कोठरी, अजमेर।

कार्यकारी मंडलके सदस्योंसे प्रार्थना है कि वे अपने पते आफिस को शीघ्र सूचित कर देवे।

ता. १७-१-४२ निवेदक—मंत्री

हिन्दू स्त्रियोंके कानूनी अधिकार

● **श्री द्वारकाप्रसादजी टावरी**, बी. एस्सी., एलएल. बी. ●

[हिन्दू समाजमें स्त्रियोंका स्थान इतना गिरा हुआ है कि उन्हें अपने खुद के कानूनी अधिकारों का भी ज्ञान नहीं रहा। यह लेख स्त्रियों के कानूनी अधिकारों पर वेधक प्रकाश डालता है —सं०]

सामाजिक जीवनमें महिलाओं का कौनसा स्थान होना चाहिये और पुरुषों की तुलनामें उन्हें क्या अधिकार दिये जाने चाहियें यह कोई नवीन प्रश्न नहीं है, क्योंकि लाखों वर्ष पूर्व से ही यह प्रश्न किसी न किसी रूपमें मौजूद था। इसके कारण समाजमें बहुत कुछ उथल-पुथल और बड़ी बड़ी क्रान्तियां भी हो चुकी हैं। यों तो आज कल सभी क्षेत्रोंमें स्त्रियों की स्थिति को सुधारने का आन्दोलन जारी है और कुछ सुधार भी हुए हैं, किन्तु यह निश्चय है कि जब तक उनके कानूनी अधिकारों का पूर्ण निश्चय नहीं होता, तब तक स्त्रीजाति की स्थितिमें वास्तविक सुधार नहीं हो सकता।

हमारी बहनें क्षमा करें, यदि हम कहें कि स्त्रियोंके आन्दोलन का श्रेय स्त्रियों को नहीं, पुरुषों को है। यदि पुरुषों को अपनी ज्यादती महसूस हुई तो उन्होंने स्त्रियों का पक्ष ले आन्दोलन भी उठाया और उसका [illegible]त भी किया। पुरुष कितना ही स्त्रियों की हालतमें सुधार करें परन्तु जब तक स्त्रियां खुद इसके लिये आगे न बढ़ेंगी तब तक सुधार केवल ढोंग मात्र है। जिसे कष्ट है वही जान सकता है कि उसका कहां तक दर्द दूर हुआ। चाहे स्त्रियां कितनी ही शिक्षिता हो जावें, चाहे उन्हें पूर्ण मताधिकार या स्वतंत्र रीतिसे जीविकोपार्जनके अधिकार दे दिये जावें, चाहे वृद्ध विवाह या बालविवाह अथवा दहेज आदि कुप्रथाओं का नाश कर दिया जावे, परन्तु जब तक कानूनी तौर पर उन्हें पूर्ण नागरिक और पूर्ण व्यक्ति न माना जायगा, जब तक उनके सारे वैयक्तिक और साम्पत्तिक (Personal and Proprietary) अधिकारोंको उसी हद तक पुरुषोंके समान नहीं बनाया जायगा जिस हद या रूपमें स्त्री-पुरुषका पारम्परिक सम्बन्ध स्थिर करना अपेक्षित है, तब तक उनका वास्तविक सुधार होना असंभव है। किसीने सच कहा है कि किसी देश या जातिकी सभ्यता की परीक्षा करना हो तो उस देश या जातिकी स्त्रियोंके कानूनी अधिकारोंका अध्ययन करना चाहिये।

भारतीय स्त्रियोंकी शोचनीय स्थितिका पता इस देशमें प्रचलित स्त्री सबन्धी कानूनोंसे चल सकता है। ये कानून पुरानी धार्मिक कही जानेवाली किताबों और रीतिरिवाजोंके आधार पर अबसे करीब ५० वर्ष पूर्व बनाये गये थे और तबसे उनमें बहुत कम परिवर्तन हुआ है। प्राचीन धार्मिक नियमोंकी पुस्तकें ऐसे लोगोंकी बनाई हुई हैं जिनकी दृष्टिमें स्त्रियां पुरुषोंकी अपेक्षा कहीं निकृष्ट और हीन थीं। इतना ही नहीं जिस समय वर्तमान 'हिन्दू लॉ' की रचना हुई थी, उस समय भारतमें स्त्रियों के अधिकारके लिये आन्दोलन भी नहीं उठा था। खैर, जो कुछ भी नहीं के बराबर अधिकार हिन्दू ला में स्त्रियोंको दिये गये हैं उससे भी हमारी देवियां अशिक्षाके कारण अबोध (Ignorant) हैं उदाहरणके तौर पर—पाणिग्रहण तथा विदाईके समय लड़की के पिताके परिवारके स्त्रीपुरुष तथा मित्रगण अपनी श्रद्धाके अनुसार कन्याको कुछ उपहार देते हैं जिन्हें पति महाशय हड़प जाते हैं और बड़ी शानसे कहते हैं कि इतना मिला। इसी प्रकार पिता अपनी पुत्रीको दहेजमें जो गहने, कपड़े तथा बर्तन आदि देता है वह भी समधी साहेब अपनी बपौती समझते हैं और उसे हड़प जाते हैं। शादी के समय लड़के के पिता दिखाने के लिये वधूको हजारों रुपयोंका जेवर चढ़ा देते हैं किन्तु वधूके घर पर पहुंचते ही सारा जेवर नौ-दो ग्यारह हो जाता है। इन सबका कारण है हमारी बहिनोंका अपने कानूनी अधिकारोंसे अंधेरेमें रहना। खैर, जो कुछ थोड़े बहुत अधिकार हमारी देवियों को "हिन्दू लॉ" के द्वारा प्राप्त हैं उनका वे अज्ञानताके कारण फायदा नहीं उठा सकतीं और इसका परिणाम यह होता है कि उन्हें विधवा होने पर, नहीं-नहीं सधवा की हालतमें भी, स्त्रीधनसे वंचित रहकर पति तथा उनके कुटुम्बियों पर आश्रित रहना पड़ता है। लेखकने इस लेखमें हिन्दू लॉ के अनुसार स्त्रीधन पर प्रकाश डालनेका प्रयत्न किया है।

स्त्रीधन का साधारण अर्थ स्पष्ट ही है किन्तु हिन्दू लॉ में इस शब्द की बड़ी खैंचातानी की गई है। हिन्दू लॉ के अलग अलग स्कूलों (मिताक्षरा और दायभाग) में भी स्त्रीधनके बारेमें बहुत मतभेद है।

साथ ही अलग अलग ग्रन्थोंके भिन्न भिन्न टीकाकारोंने (Commentators) अपने अलग अलग मत प्रगट किये हैं। फिर अंतमें यह जानना आवश्यक है कि ब्रिटिश भारतके सबसे बड़े न्यायालय प्रिव्ही कौंसिलने इसका कौनसा अर्थ लगाया है। दर असल प्रिव्ही कौंसिलके अर्थके अनुसार न्यायका संचालन होता है।

मनुमहाराज लिखते हैं—

अध्यग्न्याध्यावाहनिकं दत्तं च प्रीतिकर्मणि।
भ्रातृमातृपितृप्राप्तं षड्विधं स्त्रीधनं स्मृतम्॥

अर्थात्—

१ अध्यग्नि अर्थात् विवाहके समय अग्निके समीप पिता आदिके द्वारा दिया हुआ धन।

२ आध्यावाहनिक अर्थात् पिताके गृहसे पति कुल में जाते समय दिया हुआ धन।

३ प्रीतिदत्त अर्थात पतिकुलमें पहुंचकर सास ससुर आदिको प्रणाम करते समय जो प्रसन्न होकर श्वसुर कुलवालोंने दिया हो।

(४) पिता द्वारा अन्यप्रकार का दिया हुआ धन।

(५) मातासे प्राप्त दान।

(६) भ्रातासे प्राप्त दान।

मनुस्मृतिके अनुसार केवल उपरोक्त छ ही स्त्रीधनमें शामिल किये गये हैं किन्तु अन्य टीकाकारों (Commentators) की राय है कि ये छ धन ही स्त्रीधन की पर्याप्त सूची नहीं है। और भी धन स्त्रीधन हो सकते हैं। विष्णु (स्मृतिकार) उपरोक्त सूचीमें निम्न चार प्रकारके धन और भी जोड़ देते हैं।

१ अधिवेदनिक अर्थात पहिली स्त्रीके होते जब पति दूसरी शादी करता है तब पहली स्त्री को संतुष्ट या प्रसन्न करनेके लिये पति पहली स्त्री को धन देता है।

२ अन्वधेयक अर्थात विवाहके बाद पति अथवा पिताके किसी रिश्तेदार का दिया हुआ अन्य धन।

३ पुत्र अथवा अन्य सम्बन्धियोंसे दान स्वरूप प्राप्त धन।

४ शुल्क—इसका अर्थ भिन्न भिन्न टीकाकारों तथा ग्रन्थों ने अलग अलग लगाया है। अब हम सुविधाके लिये इसका अर्थ विवाह का मूल्य या फीस लेते हैं।

अब हम थोड़ी देरके लिये कात्यायनके स्त्री धन संबन्धी विचारों पर विचार करें। दायभाग स्कूल भी मनुके कहे हुये छ धनों और विष्णुके लिखे हुवे चार धनों को स्त्रीधन मानता है। परन्तु कात्यायन उपरोक्त मनु तथा विष्णुके कुल दस धनों को स्त्रीधन मानते हुये थोड़ा मतभेद रखते हैं। उनका कहना है कि मनुके पहले और दूसरे धन अर्थात स्त्रीके सधवा रहने की हालतमें अग्निके समीप पिताके अलावा अन्य रिश्तेदारों का दिया हुआ धन तथा सधवा हालतमें पिताके कुलसे पतिके कुलमें जाते समय अन्य रिश्तेदारों का दिया हुआ धन स्त्रीधन नहीं है। इस धन पर पति का अधिकार है। कहने का तात्पर्य यह कि कात्यायन के अनुसार स्त्री के सधवा रहने की दशामें अन्य पुरुषों द्वारा दिया हुआ धन स्त्रीधन नहीं है। इसी प्रकार उपरोक्त कात्यायनके अनुसार सधवा स्त्री का अपने साधव्य समयमें कला कौशल, मज़दूरी अथवा अन्य दस्तकारी द्वारा उपार्जित किया हुआ धन स्त्रीधन नहीं है—उसपर उसके पति का अधिकार है। हां, उसके वैधव्यकालमें उपार्जित किये हुवे धन पर विधवा का अधिकार है और साथ ही वैधव्य कालमें अन्य सम्बन्धियों द्वारा दिये हुये धन पर उसका अधिकार है। साथ ही स्त्रीको कौमार्य अवस्थामें दिया हुआ धन अथवा कौमार्य अवस्थामें कमाया हुआ धन स्त्रीधन है। परन्तु पाठकोंको ध्यानमें रखना चाहिये कि कात्यायन का उपरोक्त कथन व्यवहारमें नहीं माना जाता। इसका अर्थ यह हुआ कि मनुका पहला (अध्यग्नि) और दूसरा (अध्यावाहनिक) धन स्त्रीधन है और उसपर पतिका कोई अधिकार नहीं।

नारद, आपस्तम्ब, व्यास और देवल आदि स्मृतिकारोंने भी करीब करीब वैसी ही परिभाषा की है, विशेषता इतनी ही है कि देवलके मतमें भोजन और वस्त्र भी स्त्रीधन ही है। यहां पर यह कहना अप्रासंगिक नहीं होगा कि

कुल टीकाकारोंके मतसे पतिद्वारा दिया हुआ आभूषण (गहना-ज़ेवर) भी स्त्री-धन ही है।

याज्ञवल्क्य स्त्रीधनकी परिभाषा इस प्रकार करते हैं—"वह धन जो स्त्रीको उसके माता, पिता, भाई या पति द्वारा प्रातिदान प्राप्त हो, अथवा विवाहके समय अग्निके समक्ष दिया गया हो, अथवा दूसरी शादी करने पर पतिने पहली स्त्रीको दिया हो, आदि स्त्रीधन हैं। अतः जो कुछ सम्बन्धियोंसे दान मिला हो, अथवा विवाहका शुल्क हो अथवा जो कुछ विवाहके बाद मिला हो, वे सब स्त्रीधन है।"

यों तो अस्सी ऋषियोंने अपनी अपनी स्मृति लिखी है किन्तु निबन्धकारोंने स्त्री-धनके सम्बन्धमें केवल आठ उपरोक्त वर्णन किये गये ऋषियोंके विषयमें उल्लेख दिया है। कुछ धन जो स्त्रियोंके कब्जेमें होता है वह सारा का सारा स्त्रीधन नहीं कहा जा सकता, केवल वही धन स्त्री-धन है जिसका वर्णन ऊपर किया गया है।

अब यदि हम आठों ऋषियोंके कहे हुए स्त्री-धनके बारेमें उनके मत एकत्र करें तो कहना पड़ेगा कि केवल वह धन, जो स्त्रीने अपने सम्बन्धियों से दानस्वरूप पाया है तथा उसके गहने और कपड़े ही उसके स्त्रीधन हैं। इसके अलावा अन्य लोगोंसे दानस्वरूप प्राप्त धनोंमें केवल वही धन स्त्रीधन है जो या तो विवाहमें अथवा द्विरागमन (गौना या मुकलावा) में दिया गया हो। अन्य समयमें किसी अन्य व्यक्ति से दिया हुआ दान अथवा साधव्य अवस्थामें कला कौशल से प्राप्त धन स्त्रीधन नहीं हो सकता।

अभी तक तो हमने आठों स्मृतिकारोंके विवेचनों पर ध्यान दिया है परन्तु अब हमें यह देखना है कि हमारे टीकाकारों तथा निबन्धकारोंने (Commentators and critics) स्मृतिकारोंके स्त्रीधन का क्या अर्थ लगाया है तथा उन्हें कैसा समझा है।

हमारे वर्तमान न्यायाधीश (जज) स्मृति

(शेष पृष्ठ २४ के कालम ४ पर)

श्रीनिवास कॉटन मिल्स लिमिटेड

बंबई

अपने कलापूर्ण, सुन्दर और टिकाऊ कपड़े के लिये मशहूर है।

★

ट्रेड नेम्स

नरेन्द्र
गोल्डन प्लम
एस. एन. सी.
फॉक्स ग्लोव
नगेन्द्र
— धुला लांग क्लाथ

के के के के के
ओ ओ ओ ओ ओ
हिन्दनो ताज
असली फूल
बनर्जी
यू. पी. एक्सप्रेस
सी. पी. एक्सप्रेस
मारवाड़ एक्सप्रेस
— धुली धोतियां व साड़ियां

डायमण्ड हाल
डायमण्ड चेन
डायमण्ड वैटरी
बंगाल फैशन
प्रोमिनेंट लीडर
प्रोमिनेंट फैशन
— धुली या कोरी पॉपलीन

फ्लाइइंग मून
मालिनी
मिस बिब्बो
— चेक वायल

आदि आदि

★

इस मिल में सब प्रकार का धुला व कोरा कपड़ा—लांग क्लाथ, शर्टिंग, वायल, धोतियां, साड़ियां, मलमल, छपी हुई—छींट, वायल, बोस्की आदि कपड़ा विविध डिज़ाइनों और रंगों में तैयार होता है।

यदि आप उत्तम-सुन्दर-कलापूर्ण, टिकाऊ तथा सस्ता कपड़ा चाहते हैं, तो हमारे मिल के बने हुये कपड़ों से आप को पूर्ण संतोष मिल सकेगा—क्योंकि यह मिल भारतकी सामाजिक, आर्थिक अवस्था, तथा सर्वसाधारण की रुचि को लक्ष्य में रखकर ही सब प्रकार के वस्त्र तय्यार करती है।

बाज़ार में कपड़ा खरीदते समय इसी मिल का कपड़ा खरीदिये।

इस मिल का बना कपड़ा इस्तेमाल कर आप निश्चय ही प्रसन्न होंगे।

★

ट्रेड मार्क

महाल
पेटल ब्यूटी
गोल्डन प्लम
फॉक्स ग्लोव
श्रीरामपंचायतन
चार्मिंग ब्यूटी
माधुरी
मुरली
ईस्टर्न ब्यूटी
सेकेंड फ्लूट
श्रीराम

★

—हमारी विशेषता—

रेडियोगर्ल और नरेन्द्र क्वालिटी का धुला लांगक्लाथ—इसे बरतकर आप अवश्य सन्तुष्ट और प्रसन्न होंगे।

— हमारे सेलिंग एजेण्ट —

बम्बई
दी बम्बई एजन्सी कम्पनी लिमिटेड
सर विट्ठलदास गली,
मूलजी जेठा मार्केट, बम्बई नं० २

कलकत्ता
मंगनीराम रामकुमार
६५ बोंसतल्ला स्ट्रीट
कलकत्ता

कानपुर
ज्वालाप्रसाद राधाकिशन,
काहू कोठी, कानपुर

अमृतसर
शामदास कपूर एण्ड कम्पनी
कटरा अहलुवाल
अमृतसर

दिल्ली
हनुमानप्रसाद धूत एण्ड कम्पनी
कटरा नवाब
देहली

पत्र-व्यवहार का पताः—

श्रीनिवास कॉटन मिल्स लिमिटेड
डिलाइल रोड, बम्बई नं. १३.

जलगांवकी अदालतमें सनसनीपूर्ण मामला

एरण्डोलके एक धनीमानी सज्जन श्री रामनाथजी जाजूके ज्येष्ट पुत्र श्री शिवचंदजी का विवाह महू निवासी श्री मोतीलालजी लोया की सुपुत्री श्री जमनाबाईके साथ करीब चार वष पूर्व हुआ था। विवाह होनेके पश्चात् पहली बार आठ दिन ही वह ससुराल रह सकी थी। तत्पश्चात् उसके ससुराल जानेपर उसके साथ जो वर्त्ताव किया गया उसका परिणाम यह हुआ कि मामला अदालत तक ले जाना पड़ा। यों तो आये दिन बालिकाओंको उनकी ससुरालमें कष्ट दिये जाने की घटनाएं हमारे कानोंमें पड़ती रहती हैं और उनके दुःख पाते रहनेमें उनका अन्त हो जाता है। किन्तु एरण्डोल की उपरोक्त घटनाका सामाजिक दृष्टिसे महत्व है और वह काफी सनसनी पूर्ण है। अतः उसकी अदालत की अर्जी व अन्य कार्यवाही तथा महूसे प्राप्त जानकारी समाजके जाननेके लिए यहां दे रहे हैं।

जलगांवके सब-डिविज़नल मैजिस्ट्रेट साहेब पहला वर्ग

फौ. ख. नं. १९४१

अर्जदार

कन्हैय्यालाल मोतीलाल, जात माहेश्वरी मारवाड़ी, उमर बरस ३०, धन्धा–व्यापार, बस्ती–महू कैण्टोनमैण्ट आज मुकाम जलगांव।

अर्ज क्रि. प्रो. को. क. १०० के मातहत मैं अर्जदार विनतीपूर्वक निवेदन करता हूं। वह इस प्रकार है— मेरी बहन जमनाबाईका शिवचरण रामनाथ मारवाड़ी एरण्डोल निवासीके साथ विवाह हुए करीब चार वर्ष हो गये हैं। रिवाजके मुताबिक वह ससुराल रहने गयी किन्तु ससुरालमें उसे बहुत कष्ट होनेके कारण वह हमारे घर रहनेको आयी थी। वह करीब दो वर्ष रही। इसके अनन्तर मेरी बहनको पति शिवचरण और उनके सम्बन्धी (ब्रदर-इन-लॉ) व गुमाश्ता लालचंद मणियार उसे ले जानेके लिए महू आये। उस समय उपरोक्त शिवचरणने कहा कि वे उसके साथ अच्छा व्यवहार करेंगे और यही बात ता. ७–१०–४१ को उन्होंने लिखित रूपमें भी दी और उसे अपने साथ ले गये। परन्तु एरण्डोल जानेपर फिर उसे कष्ट देना शुरू कर दिया, ऐसा उसके द्वारा मेरे पास भेजे गये पत्रसे मालूम होता है। ता. ५–१२–४१ को हमें प्राप्त हुए पत्रमें 'मुझे शिवचरणने बेशुमार मारा है' वगैरह निम्न वाक्य लिखे हैं—

"तथा आपकी समाचार चिट्ठी पेली देवी मिली होगी और म्हारे की उजागर चिट्ठी बी देनो बन्द कर दियो है … … और शुक्रवारके रातमें इने मारी, बहोत बेसुमार, मुंडो सुजा दियो है—शनिवारके दिन बेसुमार मारी—नाकमेंस खुनकी धार पड़ी–लाथ की कुछ गिनती नहीं और दो काठी की बी मारी और खानेके देवे नहीं है—दो दिनसे सिरमें दर्द और चक्कर आवे है—अब तो म्हारे बहोत तकलीफ़ है……म्हारेको कोर्ट मार्फत लेजाव—" इस पत्रके विषयसे, उसे बहुत दुःख दिया जानेके कारण उसका जीवन खतरेमें है, ऐसा मालूम होनेसे मैं जलगांव आया। पहले हमारे मुनीम बद्रीब्राह्मण तराणा निवासी (होलकर स्टेट) को शिवचरणके पास एरण्डोलमें मेरी बहनके साथ भेंट करनेके लिए भेजा गया था परन्तु शिवचरण और उसके घरके लोगोंने उसे मेरी बहनसे मिलने नहीं दिया। इस कारण मैं स्वयं ता. १७–१२–४१को एरण्डोल गया। वहां शिवचरणने पहले तो मेरी बहनके बारेमें मुझे देर तक कुछ मालूम ही नहीं होने दिया। परन्तु उसे कोठेपर भेज दिया और वहीं रोक रखा। ऐसा मुझे मालूम हुआ तो मैं एकदम कोठेपर गया। वहां उसे एक कमरेमें रखा हुआ देखा। उसकी हालत बहुत खराब मालूम होती थी। इस कारणसे उसे बाहर जानेकी स्वतंत्रता नहीं थी और उसे कैद करके रखा हुआ है इसलिए उसे कोर्टके सामने तुरन्त हाजिर करना बहुत जरूरी है। वहां रहनेसे उसका जीवन खतरेमें पड़ना सम्भव है। अतः क्रि. प्रो. को. क. १००के मातहत सर्च वारण्ट जारी करवाकर शिवचरणके एरण्डोलके घरसे या उसे जहां रखा हुआ है वहांसे लाकर कोर्टके सामने हाजिर करनेकी आज्ञा दी जावे ऐसी एरण्डोलके पोलिस सब इन्स्पेक्टरसे विनती है। मेरी बहन का आया हुआ पत्र साथमें दिया हुआ है।

यह अर्ज हुजूरके सम्मुख प्रस्तुत है।

(स.) कन्हैय्यालाल मोतीलाल लोया

मैं कन्हैय्यालाल मोतीलाल मारवाड़ी महू निवासी कैण्टोनमेंट कोर्ट की प्रतिज्ञा पर लिखता हूं कि ऊपर की अर्जी का वृत्तांत मेरी अपनी जानकारी और समझसे सही है व मैंने इस पर जलगांव मुकाममें सही की है।

(स.) कन्हैय्यालाल मोतीलाल लोया

म प्रतिज्ञा पर कहता हूं कि अर्ज किया हुआ वृत्तान्त सही है। मैं परसों बहनको मिलनेके लिए गया था लेकिन उसके पतिने मुझे मिलने नहीं दिया। मैंने कहा कि मैं बिना मिले नहीं जाऊंगा। कोठेपर जाकर देखा तो ऐसा दीखा कि उसे पार्टीशनमें बन्द करके रखा हुआ है। विवाह हुए चार वर्ष हो गये हैं। जमुनाबाई मेरी सगी बहन है। हमारे मां-बाप जीवित हैं। हमारे पिता बूढ़े हैं और उन्हें दीखता नहीं। बड़ा भाई देवासमें है। जमुनाकी ऊमर १८-१९ बरसकी है। वह लिखना और पढ़ना जानती है। पति उससे राजी नहीं, वह उसे मारता पीटता है। विवाहके बाद वह करीब आठ दिन अपने पतिके साथ रही और आनंदसे घर आ गयी। पीछेसे हमारे यहां वह बीमार हो गयी। उसे बुखार आने लगा। खाना पचता नहीं था। पतिने कहा कि यह बीमार लड़की मेरे गले बांध दी है और पतिके घरवाले नाराज हो गये। ७-१०-४१ को पतिने मुझे करारनामा लिख दिया कि मैं उसे मारपीट नहीं करूंगा। जमुनाका खत साथमें है। उसे मारा–पीटा जाता है। कोठरीमें बन्द करके रखा गया है, खानेको नहीं दिया जाता। उसके सास और ससुर हैं। जमुना मर जाय ऐसी उन सबकी इच्छा है। जमुनाको कोर्टके सामने बुलाया जाय और उसका जीवन बचाया जाय, ऐसी विनती है।

(स.) कन्हैय्यालाल मोतीलाल
(स.) ए. ए. बासित
१९–१२–४१

सर्च वारण्ट जारी किया जाय

जांच करने पर ज्ञात हुआ है कि लड़की को बन्द रखा गया है। उसे अन्न खानेको नहीं दिया गया और उसके साथ उसके पतिने बुरा बर्त्ताव किया है जो, ऐसा ज्ञात हुआ है, चाहता है कि वह मर जाय और वह उससे छुटकारा पा जाय क्योंकि वह बीमार रही है। मैं आज्ञा देता हूं कि एक सर्च वारण्ट जारी किया जाय और उसे २२–१२–४१ को अदालतके सामने पेश किया जाय।

(स.) ए. ए. बासित
सब–डिविज़नल मॅजिस्ट्रेट डब्ल्यू. डी.ई. के.

Verification shows that the girl is kept confined. She is not given food to eat and is illustrated by the husband who, it is gathered, wants her to die and he may get rid of his wife, because she has been ailing. I hereby direct that a search warrant be issued and she should be produced on 22–12–41.

Sd/–A. A. Basit.
Sub-Div. Magte. W. D. E. K.

मामला नहीं चलाना चाहता

सब-डिविज़नल मैजिस्ट्रेट डब्लू. डी. ईस्ट खानदेश की अदालतमें

विविध अर्जी ……अर्जदार कन्हैय्यालाल मोतीलाल

मैं इस अर्जीके मुताबिक मामला नहीं चलाना चाहता क्योंकि मेरी बहन जमनाबाई यहां उपस्थित है और मेरे साथ महू आना चाहती है और–पति (शिवचरण) को उसके मेरे साथ महू जानेमें कोई ऐतराज नहीं।

जलगांव स. कन्हैय्यालाल
२२–२२–१९४१ अर्जदार

In the Court of the S. D. Magte. W. D. East Khandesh
Mis…………appl. of
Kanayalal Motilal…applicant

I do not wish to proceed with this application, as my sister Jamnabai is here and is willing to come with me to Mhow and the husband (Shivacharan) has no objection to her accompanying ~~to~~ Mhow.

Jalgaon, *Sd*/–Kanhayalal.
22–12–1941 applicant.

आर्डर

जमुनाबाई यहां हाजिर है। उसके पतिने समझौते का पत्र पेश किया है। वह स्वीकार करती है कि वह समझौता उनमें हुआ है। समझौतेका पत्र देखा और वापिस कर दिया गया। लड़की को इजाज़त है कि वह जहां चाहे जा सकती है। अर्जी फ़ाइलमें से निकाल दी गयी है।

(स.) ए. ए. बासित
२२–१२–४१
एस. डी. एम. डब्लू. डी. ई. के.

ORDER

Jamnabai present. Her husband produces the Compromise deed which she admits having executed it. The Compromise deed seen and returned. The girl is allowed to go wherever she chooses. The application is struck off the file.

Sd/–A. A. Basit
22–12–41
S. D. M. W. D. E. K.

[इस सम्बन्धमें हमने कई मित्रोंको जानकारी प्राप्त कर हमें भेजने के लिए लिखा था। अब तक जो जानकारी प्राप्त हुई वह निम्न प्रकार हैं। —सं०]

एरण्डोलके श्री शिवचंदजी जाजूका विवाह महूके स्व. श्री मोतीलालजी लोया की सुपुत्री श्री जमनादेवीके साथ करीब चार वर्ष पूर्व हुआ था। इस सम्बन्धमें उनसे जो जानकारी प्राप्त हुई वह निम्नानुसार है। श्री कन्हैय्यालालजी लोया जमनादेवीके बड़े भाई हैं।

उनके कथनानुसार आजसे चार वर्ष पूर्व जमनादेवीका विवाह एरण्डोलके श्री शिवचंदजी जाजूके साथ हुआ था। विवाहके प्रारम्भिक दिनोंमें श्री जमनादेवी की उनके पति और परिवारसे पूरी तरह बनती थी। उसके कुछ दिन पश्चात् जमनादेवी बीमार हुई

(शेष पृष्ठ २ के कालम ३ पर)

राय साहेब रेखचंद मोहता

स्पिनिंग ऐण्ड वीविंग मिल्स

हिंगणघाट (सी. पी.)

हिंगणघाट की मशहूर रूई से बनाया हुआ सुन्दर और टिकाऊ कपड़ा इस्तेमाल कीजिये

★ ★ ★

हमारी शाखाएँ

मथुरादास गिरधरदास
नागपुर, गोंदिया, बारासिवनी

रा. सा. रेखचंद मोहता
राजनंदगांव, द्रुग, भाटापारा, अकलतारा

मथुरादास मोहता
झारसुगड़ा (B. N. R.)

बाज़ार में कपड़ा खरीदते समय इसी मिलकी छाप देखकर खरीदिये और अपने पैसोंका सदुपयोग करके प्रसन्नता प्राप्त कीजिये।

इस मिल में हर प्रकारका सूत व धुला कोरा कपड़ा, लॉंगक्लाथ, शर्टिंग, धोतियां, साड़ियां, हरक, गादीपाट, सफेद एवं रंगीन चाद्दरें, टावेल्स, टेबल क्लाथ आदि कपड़ा बनाया जाता है।

हमारी खास विशेषताएँ

इस मिल में कपड़ेपर माड़ी बिलकुल आवश्यक तथा बहुत कम प्रमाणमें दी जाती है। इसलिये निख़ालिस सूत कपड़ेमें रहने के कारण कपड़ा धोनेके बाद बहुत अधिक टिकाऊ तथा मुलायम एवं सुन्दर निकलता है।

ट्रेडमार्क
लक्ष्मीनाथजी की छाप
पान छाप

● सूतका ट्रेडमार्क ●
राय साहेब रेखचंद मोहता
(सेठ छाप)
★

साधारण जनता की परिस्थिति एवं उसकी मांग की ओर विशेष ध्यान देकर कपड़ा बनाया जाता है।

लोकप्रियताका अकाट्य प्रमाण] **रूबी प्रगति पथपर** [दृढ़ता का सच्चा सबूत

१००%

- स्वदेशी
- टिकाऊ
- दृढ़

बीमा कंपनी

प्रगतिके आंकड़े

विभाग	प्रीमियमकी आवक सन् १९३७	 सन् १९४०
आग	रु. ६,५५,०४७	रु. १४,१७,०११
मोटर और अकस्मात	रु. ७३,९८६	रु. २,४६,७८१
समुद्रीय	रु. ७२,२८१	रु. ४,६६,५९०
पूंजी	रु. १७,९४,३४२	रु. २७,९४,१४५

जिंदगी १९४० के प्रथम वर्ष में किया गया कामकाज………………………रु. ३०,६५,१००

- आग
- मोटर
- अकस्मात्
- जिंदगी
- समुद्रीय

और

- मजदूरोंके बदले आदि के बीमेका कामकाज किया जाता है

रूबी जनरल इन्श्युरंस कं. लि.

टे. नं. २०५६० और ३१९२९
टेलिग्राम्स 'सनशाइन'
'SUNSHINE'

चेअरमैन
श्री बी. एम. बिड़ला

जनरल मैनेजर इनचार्ज, बम्बई डिविज़न
श्री बी. के. सेतलवाड़

ऑफिस—४५-४७ अपोलो स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई

राजस्थानी संसार

जबलपुर

महात्माजी सेठ गोविन्ददासजीसे मिले

महात्मा गांधी काशी जाते हुए तारीख २० को यहां उतरे और से० गोविन्ददासजीको देखनेके लिये मोटरसे विक्टोरिया अस्पताल पहुंचे। सेठजीकी धर्मपत्नी और उनकी पुत्री रत्नकुमारी देवी आदिने स्वागत किया। महात्माजीने आपरेशनका सारा हाल ब्योरेवार पूछा और सेठजीको शीघ्र ही निरोग हो जाने के लिये आशीर्वाद दिया। कल डाक्टर राजेन्द्रप्रसादजी भी विक्टोरिया अस्पताल सेठजीको देखनेके लिये अपने सेक्रेटरी बाबू मथुराप्रसादजीके साथ आये थे। विक्टोरिया अस्पतालमें सेठजीका स्वास्थ्य धीरे धीरे सुधर रहा है।

गुरुकुल (ब्याड़) का वार्षिकोत्सव

वसंत पंचमीके दिन गुरुकुल का वार्षिको- ब मा. बियाणीजी की अध्यक्षतामें ामके साथ मनाया गया। नियोजित ध्यक्ष मा. बियाणीजी तथा नियोजित द्घाटक सर्वश्री वामनरावजी जोशी, श्री गंगाबिसनजी सिकची, और श्री किशनलालजी गोएनकाके आगमन पर धूमधामसे स्वागत किया गया।

मा. बियाणीजीके अध्यक्षपद ग्रहण करनेके बाद श्री वल्लभदासजी रामावतार ने संस्थाका प्रगतिमय रिपोर्ट पढ़कर सुनाया और दानदाताओंको दान देनेके लिए धन्यवाद दिया। पश्चात् उद्योग मन्दिर, राजस्थानी बोर्डिंग और कार्यालयका उद्घाटन हुआ।

श्री वामनरावजी जोशी ने अपने भाषणमें चर्खा, खादी और ग्रामोद्योग की वस्तुओंको अपनाने की अपील की। मा. बियाणीजीने ग्राम्यजीवनके शुद्ध वातावरणमें गुरुकुल की आवश्यकता बताते हुए गुरुकुल दिनों दिन उन्नति करे यह इच्छा प्रदर्शित की। भोजन समारंभके पश्चात् कार्यवाही समाप्त हुई।

श्री गोरधनदासजी सोगानीका दुःखद स्वर्गवास

लश्कर समाजके प्रतिष्ठित सज्जन श्री गोरधनदासजी सोगानीका ता. २०–१–४२ को दोपहर बारह बजे डबल निमोनियासे दुःखद स्वर्गवास हो गया है। आप बड़े ही मिलनसार, उत्साही और दृढ़ प्रतिज्ञ कार्यकर्त्ता थे, और कई वर्षोंसे श्री बालाजीमहाराज के पंचायती मन्दिर तथा डीडू पंचायत का कुल कार्यभार सुचारू रूपसे संचालन करते रहे थे। आपकी असामायिक मृत्युसे संस्था तथा समाजकी बहुत हानि हुई। एक सहयोगीके नाते मैं उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और परमात्मासे प्रार्थना करता हूं कि मृतात्माको शांति व सद्गति प्रदान करे।

—**रामनिवास बांगर्ड**

‘राजस्थान’ पर सरकारका वार रु० २००० की जमानत मांगी गई

अजमेर मेरवाड़ा के चीफ कमिश्नर महोदय ने इन्डियन प्रेस एमरजेन्सी पावर्स के मातहत राजस्थान प्रेस के कीपर श्री ऋषिदत्त मेहता से जो कि ‘राजस्थान’ पत्रके प्रकाशक हैं रु० २०००) हजार की जमानत माँगी है। जमानत के रु० २०००), २५ जनवरी के प्रथम जमा हो जाना चाहिएं।

जमानत माँगने का कारण बताते हुए लिखा गया है कि ‘राजस्थान’ के ता० २२ सितम्बर १९४१ के अंक में ‘सिरोही आंखों में धूल न झोंक’ शीर्षक अग्रलेख है।

मारवाड़ी क्लब बंबई द्वारा स्वातन्त्र्य दिवस समारोह

ता. २६ जनवरीको सुबह ९ बजे मारवाड़ी क्लब माटुंगा की तरफसे अग्रवाल नगर में स्वातन्त्र्य दिवस के निमित्त सुप्रसिद्ध जनसेवक श्री. बी. एन. माहेश्वरीके करकमलोंसे विशाल जनसमुदायकी उपस्थितिमें राष्ट्रीय ध्वजवंदन हुआ एवं स्वातन्त्र्य दिवस की प्रतिज्ञा भी उपस्थित जनताने ली।

माहेश्वरी नवयुक मंडल महू का अभूतपूर्व साहस

स्थानीय माहेश्वरी समाजमें गत दस वर्षोंमें भयानक तड़बंदियां चल रही थीं और उससे समाज दिन-प्रतिदिन पतन की ओर अग्रसर हो रहा था। इसी दयनीय अवस्थाने माहेश्वरी नवयुवक मंडलको जन्म दिया। मंडल जीवनके प्रारंभिक दिनोंसे ही इन फिरकों को तोड़कर समाज का एक संगठन बनानेके लिये उत्सुक था। अपने जीवनके तीन वर्षों की कठोर साधनाके पश्चात् ता. २९–१–४२ की रात्रिको १०॥ बजे वह अपने प्रयत्नमें सफल हुआ एवं अत्यन्त साहसके साथ समाजका एक संगठन कायम करनेके लिए निम्नानुसार निश्चय किया।

“माहेश्वरी नवयुवक मंडल महूको आजकी यह सभा महूके माहेश्वरी मात्रका एक संगठन मानती हुई यह निश्चय करती है कि इस प्रकारके फिरके समाजमें असंगठन, अव्यवस्था और अविकासके द्योतक हैं। साथ ही मंडलका यह विश्वास है कि इन फिरकोंसे समाज काफी नीचे गिर चुका है और दिन दिन पतनकी ओर बढ़ता जा रहा है। अतः मंडल आजसे इन फिरके बाजियों (तड़बंदियों) को माननेसे इन्कार करता हुआ समाजके बुजुर्गोंके सम्मानको ध्यानको रखते हुए उन्हें आगाह करता है कि वे १५ दिनके अंदर समाजका एक संगठन कायम करें। यदि वे ऐसा न करेंगे तो हम अपने विश्वासके मुताबिक इन फिरकों (तड़बंदियों) को न मानते हुए एवं समाजका एक संगठन मानते हुए तदनुकूल कार्य करेंगे।

—**श्रीराम आगार** मंत्री
श्री. भा. न. मंडल, महू।

रांची

मारवाड़ी युवक समिति
चतुर्थ वार्षिक अधिवेशन।

ता. २५ जनवरीको मारवाड़ी युवक समिति “व्यायामशाला” का चतुर्थ वार्षिक अधिवेशन पं० चन्द्रगुप्तजी वेदालंकारके सभापतित्वमें मनाया गया।

दिनके तीन बजे अधिवेशनकी कार्यवाही आरम्भ हुई। उपस्थिति लगभग एक हजार की थी।

सर्व प्रथम कवि श्री माधवजी शुक्लने कविता द्वारा आगत सज्जनोंका स्वागत किया। पश्चात् समितिके मंत्री द्वारा वार्षिक रिपोर्ट पढ़ी गई। इसके बाद व्यायाम प्रदर्शन हुआ

पश्चात् उपस्थित विद्वानोंके भाषण हुए जिनमें श्री माधवजी शुक्ल, पं. रामरक्षा ब्रह्मचारीजी, और नारायणजी वैद्यके नाम उल्लेखनीय हैं।

अन्तमें सभापतिने अपने भाषणमें व्यायामशालाके कार्यों की प्रशंसा करते हुए व्यायामकी आवश्यकता बताई। आपने मारवाड़ी भाइयोंसे अपने धनका सदुपयोग करनेके लिए अपील की।

पश्चात् पारितोषिक वितरण किया गया। सभापतिजी और आगत सज्जनोंको धन्यवाद देनेके पश्चात् निम्न लिखित सज्जनोंने व्यायामशालामें दूधका प्रबंध करनेके लिए इस प्रकार दान देनेका वचन दिया—

सर्वश्री गणपतरायजी बुधिया ५१), धर्मचंदजी सरावगी ५१), राधावल्लभजी नथमल ३१), जगन्नाथजी गुप्ता २१) रु.।

श्री शिवनारायणजी मोदीने एक गाय देनेका बचन दिया। समिति उपरोक्त सज्जनोंकी आभारी है।

माहेश्वरी बाल विधवाकी आवश्यकता

एक माहेश्वरी बाल-विधवाकी आवश्यकता है जिसकी उमर १६–२० वर्षतक की हो। वधू गृह कार्यमें कुशल एवं प्रायमरी शिक्षा प्राप्त की हुई हो। वरकी उमर ३४ बर्षकी है। शरीरसे सशक्त, घरकी जायदाद और ६० रुपये मासिक आमदनी है। थोड़े ही समय पहले उनकी पूर्व पत्नीका स्वर्गवास हुवा है। वधू गिलडा एवं मूंधडा जातिकी न हो। पत्रव्यवहार नीचे पत्तेपर करें—

रामगोपाल शंकरलाल बिड़ला
मु. पो.—मालेगांव जहागीर,
जिला—अकोला।

आवश्यकता

२४ वर्षीय माहेश्वरी (लोईवाल) युवकके लिए, जिसकी आय निजी दूकानसे ४०)–४५) माहवार है, २० वर्ष तक की माहेश्वरी विधवा की आवश्यकता है।

पत्र-व्यवहारका पताः—

लोईवाल
C/o सूरजमल सोमाणी
पुरानी सब्जी मण्डी, कानपुर (यू. पी.)

(पृष्ठ १९ का शेषांश)

करीबन २ बजे श्री. चारभुजाजीके मन्दिरमें कई गांवोंके माहेश्वरियों की सम्मिलित रायसे यह निर्णय स्वीकार किया गया है।

माहेश्वरी पंचायत नारायनाका निर्णय

आज ता. २१ अप्रेल सन १९४१ को दोपहरको श्री चारभुजाजीके मन्दिरमें एकत्रित होकर श्री गौरीशंकरजी डबकोडा मौजादवालोंके सम्बन्धमें अन्तिम निश्चय किया गया कि आजसे नरायना, सोडा, मेंदवास, मौजमाबाद, और खुडालाके माहेश्वरी प्रतिनिधियोंने सर्व सम्मतिसे यही निश्चय किया है।

“जिस प्रकार इस प्रान्तमें अपनी जातिमें मौजमाबाद निवासी छित्रमलजी डबकोडाका व्यवहार खुलासा है उसी प्रकार आजसे श्री गौरीशंकरजी डबकोडा मौजमाबाद वालोंका भी व्यवहार खुलासा किया जाता है।”

मिती वैशाख वदी १० सं. १९९८ का ता० २१–४–४१ ईस्वी।

(सही) रामानन्द चौधरी, रामजीदास मोदानी, भोपतराम चौधरी, गोपीलाल मोदानी, बालाबगस तेला, नारायणलाल मूंदड़ा, लछमीनारायण सोडाणी, रामस्वरूप मोदानी, रामबिलास मोदानी, रामानन्द चौधरी, लक्ष्मीनारायण भंसाली, गोरधन सोमानी, रामकिशन काबरा, गुलकन्दलाल काबरा, जगदीश मालाणी मोजाद, उंकार मालाणी खुडाला, लादूलाल मेंदवास, शिववल्लभ तेला, श्रीकिशन तेला, सांवलराम चौधरी, रामजीदास काबरा, कल्याणमल तेला, श्रीनारायण झंवर, सोडावाला, हरिकिशन परवाल,

श्रीमान् पंचगण महोदय।

“माहेश्वरी पचांयत” नरायना

आदरणीय बन्धुवर,

हमें आपकी सेवामें यह निवेदन करते हुए अत्यन्त दुःख होता है कि जिस समय हमने आपके यहां अपने व्यवहार खुलासा करने की प्रार्थना की थी तो दुभार्ग्यवश हम रामानन्दजी चौधरीसे मिले तो उन्होंने कहा कि “कुछ रुपये खर्च करो तो तुम्हारा व्यवहार खुलासा करा सकता हूं” अतः हमने बेबसी की हालतमें उन्हें रु० १७५) अंके रुपया एक सौ पचहतर दिये थे एवं जयपुर वाले जागाजी को चार रुपया एवं मेवाड वाले जागाजी को १०) खर्चा का एवं बिदा अलग देदी थी।

लेकिन हमें दुःखके साथ आपसे प्रार्थना करनी पड़ती है कि हमसे इतने रुपये लेकर भी रामानन्दजीने हमारे साथ जैसा विश्वासघात किया है यह आप लोगोंके सामने ही है। अतः आप इस मामले को अपने हाथमें लेकर अपराधी को उचित दण्ड देने की व्यवस्था करें।

महा शुद्धी ९ रविवार १९९८
ता. २५–१–४२

आपके आज्ञाकारी

गोरीलालजी डबकोडा मोजादवाला
गोपीलाल डबकोड़ा मोजादवाला

राय साहेब रेखचंद गोपालदास मोहता

स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स

अकोला (बरार)

तारका पताः—"MOHOTA" टेलिफोन नं. ३४ और ५६

बरार की सबसे बड़ी और खुद मालिकी की एकमात्र अप-टु-डेट मिल

★ ★ ★ ★

इस मिलमें सब तरहका कोरा, धुला व रंगीन शुद्ध स्वदेशी कपड़ा व सूत तैयार होता है।

प्रोप्रायटर
सेठ गोपालदास मोहता, एम्. एल. ए. हिंगणघाट.
बैंकर, लैन्डलॉर्ड, टेक्सटाईल, आईल एण्ड राईस मिल्स
व जिनिंग एण्ड प्रेसिंग फेक्टरियोंके मालिक
प्रेसिडेण्टः—
सी. पी. एण्ड बरार फेक्टरी ओनर्स एसोसिएशन

सम्पूर्ण रूपसे
● भारतीय पूंजी ●
● भारतीय श्रम ●
● भारतीय प्रबन्ध ●

सस्ता व टिकाऊ होनेसे भारतके प्रत्येक विभागमें हमारा कपड़ा उपयोगमें लाया जाता है

हमारे कन्सर्न्स

फैक्टरियाँ

राय साहेब रेखचंद गोपालदास जिनिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्टरी, अकोला

राय साहेब रेखचंद गोपालदास जिनिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्टरी, वर्धा

बुलाकीदास गोपालदास जिनिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्टरी, हिंगनघाट

दूकानें

भीखणचंद रेखचंद (हैड आफिस) हिंगणघाट

राय साहेब रेखचंद गोपालदास, वर्धा

गोपालदास घनश्यामदास, राजनांदगाँव

हमारे मैनेजमैण्ट के लिमिटेड कन्सर्न्स

लक्ष्मी बैंक लिमिटेड, अकोला
सी. पी. एण्ड बरार की एक मात्र
(शैड्यूल बैंक)
व क्लियरिंग साधनों से युक्त
शाखाएँः—बम्बई, नागपुर (इतवारी), नागपुर (सीताबर्डी),
रायपुर, अमरावती, खामगाँव और गोन्दिया.

श्री गणेश आईल मिल्स लि. गोन्दिया.
इस मिलका शुद्ध व सस्ता तेल भारत भरमें प्रसिद्ध है

गोपालदास मोहता एण्ड कं. लि.
शाखाएँः—अकोला, नागपुर और गोन्दिया
इस कम्पनीमें सब तरहके कपडे व सूतका काम होता है।

बुलाकीदास मोहता एँण्ड कं. लि. अकोला.
यह कम्पनी कई कम्पनियों की मैनेजिंग एजेण्ट व मैनेजिंग डाइरेक्टर है।

नेशनल कमर्शियल कारपोरेशन लि.
अकोला बम्बई खामगाँव
इसके डिपार्टमेण्ट्सः—काटन जत्था, मिल व जिनस्टोर्स
बीमा व अन्यान्य एजेन्सियें

एडवान्स ट्रेडिंग कम्पनी लि. अकोला
इस कम्पनीमें रुई, सरकी व अनाज वगैरे क कमिशन का काम होता है।

राजस्थानी संसार

जातीय पंचोंका हृदयहीन विचार

युवकोंके कर्तव्य पालनका दृढ़निश्चय

गत ८–९ मास पूर्व मोजमाबाद निवासी ी गोरूलालजी अजमेरा को जो कि पंचों ी दुषित मनोवृत्तिके कारण करीबन १५–२० र्षसे जाति–च्युत समझे जाते थे, नरायनाके छ उत्साही नवयुवकों की प्रेरणासे उदार विचारोंके पंचोंने जागों की जांचसे प्रभावान्वित होकर जातिमें सम्मिलित कर लिया ा और फलस्वरूप इनकी कन्याका संबंध भी एक नवयुवक श्री. मोहनलालजी मणियार नरायना निवासीके साथ मि. फाल्गुन शुक्ला ो होना निश्चित हो गया है।

राजस्थान सुधारके क्षेत्रमें कितना पिछड़ा हुआ है इसका प्रत्यक्ष अनुभव राजस्थानके ांवोंमें बसनेवाले नवयुवकोंको दृष्टिगोचर । आज भी यहांके पंच लोगोंने ीभाली अशिक्षित जनता पर अपना क़ जमा रखा है।

ाज इस उन्नति और विकासके युगमें ां अन्तर्जातीय विवाह और विधवाविवाह े उदार मनोवृत्तिके प्रस्ताव हमारे मस्तिष्कमें गूंज रहे हैं, तब एक निरपराध भाईको नुष्योचित अधिकारोंसे भी वंचित कर ेकी शैतानी दुर्भावनाको तो किसीभी रूपसे ीकार नहीं किया जा सकता। क्या मनुष्य ोनेके नाते एक स्वजातीय व्यक्तिके मानवी अधिकार अन्य बिरादरीके मनुष्यों जितने भी नहीं रहते?

हमने जातीय पंचायतोंमें कई ऐसे प्रकरण देखे हैं कि जरासे अपराधके कारण जब किसी गृहस्थका व्यवहार बन्द किया जाता है तो उसको भोजन कराना या उसके यहां भोजन करना तो अपराध है ही लेकिन कहीं कहीं तो यह निर्दयता इस हद तक पहुंच जाती है कि उसके साथ बैठना–उठना या बोलना तक बंद कर दिया जाता है और विशेषता यह है कि यह सब कार्य किये जाते हैं 'धर्मके पवित्र नाम पर।'

इसी प्रकारकी कठोर कार्यवाही श्री गोरूलालजीके साथ की गई है। मोजमाबाद नरेनाके पास एक छोटा कस्बा है जहां पर सिर्फ ३ घर माहेश्वरियोंके हैं अतः आसपासके कई गांवोंके सम्मिलित कुटुम्बोंकी पंचायत उनका न्याय करती है। इनमें एक घर जगदीशजी मालाणीका और दूसरा उन्हींके भाई छित्रमलजी अजमेरा का है। छित्रमलजी और गोरूलालजीका संबन्ध एकही नस्लसे है यह बात जागोंकी जांचसे भी प्रमाणित हो चुकी है, लेकिन हमारे आश्चर्यका कोई ठिकाना नहीं रहता जब कि हम एक भाई श्री छित्रमलजी अजमेराको आसपासके सब गांवोंकी पंचायतोंमें सम्मिलित देखते हैं, एवं बेचारे गोरूलालजीसे उनके खास जवांई और रिस्तेदार तक बुलाना तो दूर रहा सम्पर्क तक रखना बुरा समझते हैं। (अभी सांभर यह माहेरा लेकर गया था लेकिन उसके हाथसे कपड़े पहिनने तकसे विवाहमें सम्मिलित नहीं होनेकी धमकी देने लग गए परिणाम स्वरूप बेचारेको निराश होकर लौटना पड़ा)

जब यह सारा मामला हमारे सामने आया तो हमारी अंतरात्मा इस पक्षपात पूर्ण हृदयहीन व्यवहारके प्रति एक बार ही विद्रोही भावोंसे उन्मत्त हो उठी। हमने अपने पिछले अनुभवोंसे पंचायती शासनका खोखलापन प्रत्यक्ष देख लिया है अतः इस प्रश्नके उठने पर जितना दुःख हुआ उतना आश्चर्य नहीं हुआ लेकिन फिर भी आखिर श्री. गोरूलालजीकी मुक्तिके प्रश्नने हमें अस्थिर बना दिया। क्यों कि इस प्रकार यदि सैकड़ों वर्ष पुरानी छानबीन की जाय तब तो शायद अधिकांश माहेश्वरी कुटुंब इसी श्रेणीके निकल आयेंगे। अतएव हमने कुछ योग्य पंचोंसे इस प्रश्नकी गंभीरता बतलाकर उसका व्यवहार छित्रमलजीकी तरह ही खोल देनेका निर्णय पंचायत द्वारा दिया।

इस शुभकार्यके बीच एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना और हो गई। हालांकि श्री. गोरूलालजीको जातिमें सम्मिलत कर लेनेका सारा श्रेय नरायनेके माहेश्वरी नययुवकोंको है लेकिन दुष्ट प्रकृतिके मनुष्य तो जिन्होंने जीवनभर न्यायको पैसोंके मोल बेचा है, इस अवसरको कब खोनेवाले थे। लेकिन मामला यहीं समाप्त नहीं हुआ है, ज्यों ज्यों विवाहका समय समीप आरहा है नरायनाके कुछ कुचक्री पंच इस विवाह संबंधको स्थगित करा देनेके लिए जी तोड़ परिश्रम कर रहे हैं। आसपासके गांवोंमें धर्म डूबा या जाति बिगड़ी का नारा लगा लगाकर इस विवाहमें सम्मिलित होने वालोंके विरुद्ध घृणित प्रचार कर रहे हैं। परिणाम स्वरूप कुछ कायर और स्वार्थी पंच तो उनके प्रपंचमें फंसकर मैदान भी छोड़ भागे हैं। लेकिन जो अबतक सत्य और न्यायके इस पवित्र मार्ग पर डटे हुए हैं उनमें भी कुछ वृद्धोंमें एक विचित्र घबराहट दीख पड़ रही है। लेकिन नरायनाके माहेश्वरी नवयुवक अपने निश्चयपर पूर्ण रूपसे अड़िग हैं। हम सब नवयुवक इस विवाहमें सम्मिलित होकर एक जातीय बन्धुके साथ किये जाने वाले अत्याचारके विरूद्ध लड़नेके लिये दृढ़ प्रतिज्ञ हैं। पंचोकी कोई भी धमकी हमें अपने कर्तव्य मार्गसे विचलित नहीं कर सकती, क्योंकि यह ध्रुव सत्य हमने भली भांति अनुभव कर लिया है कि जातीय पंचायतें अपनी पक्षपात पूर्ण स्वार्थ लिप्सा और पापमय दुर्भावनाके फलस्वरूप स्वयं अपने हाथों अपनी मृत्युशय्या निर्माण कर रही है। पंचायतके ढांचेकी एक एक ईंट अपने पापकर्मोंसे बचानेके लिए नवयुवकोंकी ओर करूणाभरी निगाहसे निहार रही है। किन्तु जिस इमारतकी नींवका एक एक पत्थर हिल चुका है उसे बचाना मुश्किल ही नहीं, असंभव-सा है। अतः हम नवयुवकोंको अपनी शक्तिपर विश्वास करके सब प्रकारकी कठिनाइयोंको हंसते २ झेलनेके लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए। साथ ही हम अपने आसपासके अन्य उत्साही सुधारक बन्धुओंसे एवं विशेषकर राजस्थान प्रान्तीय माहेश्वरी सभाके मन्त्री श्रीमान् बसन्तीलालजी नोगजा, एडवोकेट अजमेर एवं महासभाके संयुक्त मंत्री श्री. रामप्रसादजी हुरकटसे और उनके सांभर निवासी सहयोगी मित्रोंसे आग्रहपूर्ण निवेदन करते हैं कि इस पुनीत कार्यमें आप आगे आकर हमारा पथप्रदर्शन करें एवं महासभाके अन्यान्य पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओंका आशीर्वाद तो हमें मिलना ही चाहिए, ताकि हमें अपने कर्तव्य पालनके लिए अधिकाधिक बल प्राप्त हो सके।

समाजके नम्र सेवकः—

रामजीदास मोदानी, बसंतलाल केला,
मंगलचंद मोदानी, अनंतराम मोदानी,
रामानंद चौधरी, द्वारकादास काबरा
बी. कॉम. (प्रीवियस).

नरेनाकी पंचायतकी कार्यवाही

पवित्र सेवामेंः—

श्री माननीय पंचगण माहेश्वरी पंचायत नरायना
आदरणीय महानुभाव,

सेवामें निवेदन यह है कि एक अर्सेसे कुछ लोगोंने आपसी मतभेदके कारण मेरा व्यवहार बन्द रखा है किन्तु इस प्रान्तमें नरायनाकी माहेश्वरी पंचायतही हमारे लिए सर्वोपरि न्यायालय है अतः मैंने भी आपकी ही शरण ली है। अतः आप सहृदयतापूर्वक मेरी स्थिति पर विचार करके मेरी प्रार्थना स्वीकार करें।

यदि आपको मेरे व्यक्तिगत जीवनमें कोई बुराई दीख पड़े तो श्रीमान जागाजी यहीं उपस्थित हैं। इनसे मेरे कुटुम्बके सम्बन्धमें जानने योग्य बातें जान सकते हैं एवं यदि इस सम्बन्धमें और कोई सेवा भी आप फरमावेंगे तो उसे भी मैं सहर्ष स्वीकार करनेको प्रस्तुत हूं।

क्योंकि मेरे दो लडके और दो कन्यायें हैं अतः जबतक मेरे रोटीबेटी व्यवहारके सम्बन्धमें आपका सहानुभूति पूर्ण निर्णय नहीं हो जाय मेरी सन्तानोंके सम्बन्धमें भी चिन्ता पूर्ण भविष्य सामने है। अतएव मेरी प्रार्थना पर विचार करते समय मेरे इन अबोध बालक बालिकाओंके जीवनका भी आप ध्यान रखनेकी उदारता करें।

मैं अपनी सारी स्थिति आपके सुयोग्य हाथों तक पहुंचाकर आपके दयापूर्ण हृदयोंसे यही आशा करता हूं कि आप प्रेम, सहानुभूति और न्याय पूर्ण आज्ञा द्वारा मेरे रोटीबेटी व्यवहार को खोलने का निर्णय प्रदान करके मेरे दुःखी जीवन को शान्तिमय जीवन दान करनेमें पथप्रदर्शक बनेंगे।

मैं एक बार फिर विनम्रतापूर्वक मेरे दुःखी जीवन को आपकी सहायता और दयासे सुखी बना देने की प्रार्थना करता हूं।

आप भाइयोंसे एक प्रार्थना यह भी है। मेरे भाई छित्रमलजीका सम्बन्ध भी उसी नस्लमें हुवा है जिसमें मेरा सम्बन्ध हुआ है अतः जब उसका व्यवहार खुलाशा है तो मेरा व्यवहारभी खुलाशा करनेकी कृपा करें।

नरायना (जयपुर)
ता. ४–४–४१

आपका आज्ञाकारी बन्धु
(स.) **गौरीशंकर डबकोडा,**
मोजमाबाद निवासी

इस प्रार्थना पत्रके सम्बन्धमें श्रीमान् जागाजीको पूरी जानकारी लिखनेके लिए लिखा गया। गौरीशंकरजी और छित्रमलजी डबकोडा मौजाद वालोंके सम्बन्धमें पूरा हाल लिखें।

नरायना ४–४–४१

(स.) **आर. मोदानी**
(for) माहेश्वरी पंचायत नरायना

जागाजी का उत्तर

श्रीमान् पंच नरायनाके समस्त से जागा चम्पालाल रतनलाल शाहपुराका आशीर्वाद बचना। अपरंच गौरूलाल डबकोडा मौजादका निवासी आपको दरखास्त दीनी जिसका जवाब पंच समस्त नरायनाको मैं देता हूं "गोरूलाल परण्यों लड़ाके गांव हिंगूणे सोई लडाका सकपण सारा चोखा है। सिर्फ बगडी बायतीके जमनालाल परण्यों बगडीवाला घाटी परण्यो, झंवराकी भाणजो छ, और शंकरपुरा का बायती और बगडीका बायती एक थाम्बामें है। छित्रमल डबकोडा शंकरपुरा परण्यों सो भी इसी थाम्बा मांइ छे सम्वत् १९९८ मिति चेत शुदी १० ता. ७–४–४१

(हस्ताक्षर)
चम्पालाल जागा शाहपुरका
(हस्ताक्षर)
रामनारायण जागा जयपुरका

हमारा निर्णय

श्री गोरूलालजी डबकोडाके करुणा भरे प्रार्थना पत्रमें वर्णित उनकी दयनीय स्थिति को हमारी पंचायतने गम्भीर रूपमें लिया। साथही श्री जागाजीका उत्तर भी उन्हें दोषी करार नहीं देता कि जिसके कारण एक बन्धुके साथ इसप्रकारके अमनुष्योचित व्यवहार का समर्थन किया जासके। अतः नवयुवकों ने तो इसके तुरन्त ही बाद ता. ७–४–४१ को इनका व्यवहार खुलाशा कर देनेका निर्णय कर दिया था लेकिन कुछ वयोवृद्ध पंचोंके आग्रहपर इस सब कार्यवाही पर अपना अन्तिम निर्णय करनेके पूर्व आस पास की पंचायतों की राय जान लेना विशेष आवश्यक ठहरा अतः सब कागजों की एक २ प्रतिलिपि रजिस्ट्रियों द्वारा सम्बन्धित पंचायतियों को भेजनेके बाद ता. २१–४–४१ को दिनके

(शेष पृष्ठ १७ के कालम ४ पर)

यूनियन बैंक आफ़ इन्डिया लिमिटेड

बम्बई में सन १९१९ में स्थापित

हेड ऑफिस—अपोलो स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई

शाखाएँ
१ कॉटन एक्सचेन्ज बिल्डिंग
कालबादेवी रोड़ बम्बई
२ कत्था बजार, मांडवी, बम्बई
३ राजकोट सिविल स्टेशन

सेफ़ डिपाज़िट वाल्ट
काटन एक्सचेंज बिल्डिंग
कालवादेवी रोड, बंबई
स्त्रियों के लिये ख़ास सुविधा

चुकाया हुआ धन रु. ३९,९० ०००
रिझर्व फंड रु. १०,००,०००
डिविडन्ड इक्वलाइज़ेशन फंड रु. ६०,०००
जमा हुआ धन (ता. ३१-१२-४०) रु. १,९६,७२,०००

डायरेक्टर्स

सेठ एम. एस. केप्टन, चेअरमेन
सेठ लछमनदास हरखचंद डागा
सेठ के. आर. पी. श्राफ़
सेठ बेहराम एन. करंजिया
सेठ विठ्ठलदास कानजी
सेठ हरिदास माधवदास
सेठ रामदेव आनन्दीलाल पोद्दार
सेठ दीनशा डी. रोमर

चालू डिपाज़िट खाता खोला जा सकता है। हररोज़ की रु. दो लाख तक की बचत पर प्र. व. ३/४ प्र. श. के हिसाब से व्याज दिया जाता है।

कम ज्यादा समय की डिपाझिट बहुत ही लाभकारी शरतों पर स्वीकार की जाती है।

सेविंग बैंक—इस खाते में रु. १०००० तक की कम से कम मासिक बचत पर प्र. व. १॥ प्र. श. के हिसाब से व्याज दिया जाती है। सप्ताह में दो बार इस खाते से आप चेक द्वारा पैसा निकाल सकते हैं।

मान्य की गई जामिनगीरी पर पैसा दिया जाता है। बैंकिंग का हर किस्म का काम किया जाता है।

बी. एम. भार्गव, सेक्रेटरी

कमला मिल के कपड़े इस्तेमाल करें।

आर्टिफिशियल सिल्क ज्योर्जेट साड़ियां, साडी क्लाथ और शर्टिंग कपड़ों के लिये यह मिल अपनी विशेषता रखती है

हेड आफिसः—
गोयनका हाउस
१४५, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट,
कलकत्ता

हर प्रकार की धोती, साडी, कोरा लॉंगक्लॉथ, कोटिंग, केनवास, सूसी, आदि आदि

कमला मिल्स लिमिटेड

तुलसी पाइप रोड, परेल, बम्बई. टे. नं. ६००६४—६५

विक्री—विभागः—

बम्बई : टे. नं. २६९४५
मूलजी जेठा मार्केट

कलकत्ता :
सूतापट्टी

राजस्थानी संसार

हिंगणघाट राजस्थानी मंडल व्यायाम मन्दिरका केम्पिग

[निज संवाद दाता द्वारा]

इस वर्ष राजस्थानी व्यायाम मंदिरका म्पिग श्री. दामोदरदासजी मूंधड़ाके सभा-तित्वमें ता. २६ जनवरी स्वतंत्र दिवसके दिन वलीमें हुआ। केम्पिगके स्थानकी व्यवस्था था भोजनकी व्यवस्था रायसाहेब गोपी-कसनजी जावंदियाकी तरफसे हुई थी।

कार्यक्रमः—प्रातः ५॥ बजे झंडावंदन आ। झंडावंदनके बाद गांवमें प्रभातफेरीका ार्यक्रम हुआ। उसके बाद सब विद्यार्थी केम्पिगके मैदानमें आये वहां सब विद्यार्थियोंकी रेड हुई। शामको ५ बजे भालेंकी सलामी ारा विद्यार्थियोंने सभापतिजीका स्वागत किया। भापतिजीने सब टेंट्स्में जाकर उनका नीरीक्षण किया। इसके बाद कवायतों तथा ारीरिक प्रयोगका कार्यक्रम हुआ। तत्पश्चात् स्थानी व्यायाम मंदिरके संचालक श्री. धरजी व्यासने मंडलका परिचय देते सके उद्देश्य जनताके सामने रखे। बादमें तिजीका गंभीर एवं सारगर्भित भाषण । आपने राजस्थानके प्राचीन रोमांचकारी हासको जनताके सामने रखते हुए कहा तुम भी इस गौरवपूर्ण गाथा को हृदयमें कित कर उसे राष्ट्रीयताके रंगमें रंगकर को सच्चे राजस्थानी वीरोंका परिचय दो। तमें राजस्थानी मंडल देवलीके मंत्री श्री. दनलालजी भूतड़ाने उपस्थित सज्जनोंका न्यवाद माना। इस प्रकार बड़े उत्साहके ाथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

शुभ विवाह

अ. भा. माहेश्वरी महासभाके भूतपूर्व मन्त्री श्री गिरधरलालजी केला मेरठ निवासीके कनिष्ठ पुत्र श्री शान्तिचंद्रजी केलाका विवाह मिति माघ सुदी ५ को ओकारा निवासी श्री बृजलालजी जाजूकी सुपुत्री आयुष्मती गीतादेवीके साथ हुआ। श्री गिरधरलालजी केलाकी ओरसे निम्न संस्थाओंको दान दिया गया।

११) अ. भा. माहेश्वरी महासभा
११) "माहेश्वरी" पत्र
११) यू. पी. माहेश्वरी सभा
११) स्थानीय कन्या पाठशाला
२१) गोशाला चिडावा राजपुताना
११) सनातन मंडल ओकारा

स्वतंत्रता दिवस समारोह

पूर्व निश्चयानुसार गत ता. २६ जनवरी रविवार को भारतीय नवयुवक संघ एवं कालका देवी गुमास्ता मण्डलके संयुक्त आश्रयमें स्वतंत्रता दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया।

प्रारम्भमें श्री मूलचन्द्रजी व्यास द्वारा झण्डा फहराया एवं प्रार्थना की गई तथा श्री रामप्रतापजी शुक्ल एवं श्री देशराजजी शर्मा द्वारा आजके उत्सव तथा प्रतिज्ञा का महत्व बतानेके पश्चात स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा ग्रहण की गई।

राजस्थानी मंडल, अकोला

विदर्भ निवासी राजस्थानी भाइयोंको यह अच्छी तरह मालूम है कि राजस्थानी व्यवसायी अथवा श्रमोपजीविक वर्गने आज-तक ऐसी किसी संस्थाका निर्माण नहीं किया जो उनके सामाजिक तथा राजनैतिक प्रश्नोंको हल करें और यदि पहले कभी उक्त संघटन कार्य करनेकी चेष्टा भी की तो वह असफल प्रमाणित हुई। इसमें किसीका दोष नहीं है।

बड़ी खुशीकी बात है कि हमारा राजस्थानी समाज भी अपने उत्कर्ष कालमें ही चेत गया वरन् अवनतिकालकी धनहीन अवस्थामें किम्-कर्तव्यमूढ़ होकरही बैठना पड़ता। इन्हीं तमाम बातोंसे प्रेरित होकर अथवा समाजका उज्वल भवितव्य जानकर अकोलाके प्रतिष्ठित राज-स्थानी भाइयोंने उपरोक्त संस्थाका निर्माण कार्य हाथमें लिया।

ता. २९-१-४२ बृहस्पतिवारकी रात्रिके ९ बजे सनातन धर्म सभा लाइब्रेरीमें एक सर्व साधारण सभा की गई, जिसम श्रीमान् सेठ किसनलालजी गोइनकाने अध्यक्ष स्थान ग्रहण किया। अध्यक्षीय भाषणके पश्चात् विदर्भ नेता श्रीमान् ब्रिजलालजी बियाणीने अपने भाषणमें रूढ़िवादियों और सुधारवादियोंके संघर्षके पूर्व-कालका इतिहास बहुत ही अच्छी तरह समझाया।

"माहेश्वरी" को सहायता

१०१) श्री आर. बी. बंसीलालजी अबी-रचंदजी, हिंगणघाट
११) श्री सेठ बद्रीदासजी डागा, बंबई
११) श्री गिरधारीलालजी केला, मेरठ
११) श्री घनश्यामदासजी जैथल्या, सिघवालिया
११) श्री कृष्णगोपालजी कलंत्री, लखनऊ
५) श्री कोलवार माहेश्वरी सभा, पुर्दिलनगर

महासभा को सहायता

११) श्री गिरधारीलाललजी केला, मेरठ

अंतमें जिस कार्यके लिये सर्वसाधारण सभा की गयी थी वह था "प्रवन्धकारिणी समितिका निर्वाचन।" अभीतक मंत्रीके अतिरिक्त इतर पदाधिकारी और सदस्य, सभी अस्थायी थे परंतु कार्यनियमित रूपसे चलानेके लिये स्थायी समितिका होना जरूरी होता है, तद्-नुसार उक्त मंडलकी प्रवन्धकारिणी समितिका निर्वाचन किया गया। निम्न लिखित महानु-भाव उक्त समितिके पदाधिकारी तथा सदस्य निर्वाचित हुए हैं।

अध्यक्ष—श्री माणिकलालजी सोमाणी
उपाध्यक्ष—श्री रमणलालजी कोठारी
,, श्री मुरलीधरजी धानुका
मंत्री—श्री शंकरलालजी गोइनका
उप-मंत्री—श्री रामनिरंजनजी खंडेलवाल
कोषाध्यक्ष—श्री भिकमचंदजी तापड़िया
सदस्य—सर्वश्री. माणिकलालजी मोदी एम. ए. एल्. एल्. बी., पंडित भवानी शंकरजी, बन्सीधरजी सिंगतिया, माधव मुरारी शर्मा, श्रीरामजी कारीवाल, बिरदीचंदजी चांडक, अमरचंदजी सारड़ा।

दिल्लीमें आदर्श-विवाह

हमारे विशेष संवाददाता द्वारा

स्व. बाबू बालमुकुन्दजी झंवर, खुर्जा निवासी के द्वितीय सुपुत्र श्री. भारतभूषणजी का शुभ विवाह देहली निवासी श्री. व्रजभूषणजी चितलांगिया की सुपुत्री सौ. शिरोमणीदेवी के साथ गत २१ जनवरी को दिल्लीमें अत्यंत सादगी एवं आडम्बर रहित पद्धतिसे संपन्न हुआ। वर तथा वधु-दोनोंने ही क्रमशः बी. ए. एवं हिन्दी 'रत्न' तक शिक्षा प्राप्त की है। वधु हिन्दी प्रभाकर एवं मैट्रीकुलेट परीक्षा की अभी तैयारी कर रही है। विवाह में लेन-देन, फिज़ूल खर्ची आदि का लेशमात्र भी आडम्बर न था। विवाहके पूर्व भी किसी तरह की रस्म नहीं की गई थी। ता. २१ को दोहपरमें बरात देहली पहुंची थी, एवं संस्कार के पश्चात् दूसरे दिन ही दोहपरमें वहांसे बिदा हुई। विवाहमें ग्वालियर खुर्जा, देहली के कई प्रतिष्ठित सज्जन सम्मिलत थे। इस शुभ विवाह के लिए श्रद्धेय श्री. श्रीकृष्णदासजी जाजू वर्धा; मा. ब्रिजलालजी बियाणी; श्री. रामेश्वरदासजी बिड़ला; सौ. शारदादेवीजी बिड़ला; श्री. घनश्यामदासजी बिड़ला; सरदार फालके मिनिस्टर, ग्वालियर स्टेट; सरजूप्रसादजी तापड़िया, हापुड़; दामोदरदासजी मूंधड़ा; सौ. मीरादेवी मूंधड़ा, वर्धा, राधाकिशनजी लाहोटी, बम्बई; कुंवर चांदकरणजी शारदा, अजमेर; श्रीमती यशोदादेवीजी दूधानी, बड़ौदा; श्री. रामकुमारजी बिड़ला, ग्वालियर आदि अनेक महानुभावों एवं मित्रों के संदेश एवं आशीर्वाद प्राप्त हुये।

अ. भा. मा. महासभा स्कॉलरशिप

२००) श्री मांगीलालजी माहेश्वरी B. sc., आगरा
२५) श्री दामोदरदासजी मूंधड़ा, वर्धा,
१०) श्री चिरंजीलालजी शेरसिंगजी मोहता, जलेसर

स्व. बाबू बालमुकुन्दजी झंवर ने यह संबंध हापुड़ सभा, सन् १९२९ में ही निश्चय किया था। उस समय डीडू-कोलवार संघर्ष की चर्चा ज़ोरों में थी। कुछेक डीडू पंचायत के सदस्यों ने यह निश्चय किया था कि कोलवार समाज की कन्या ले ली तो ले ली पर डीडू समाज की कन्या इन्हें न दी जाय। इसी बात पर श्री. व्रजभूषणजी चितलांगिया ने साहसपूर्ण प्रस्ताव रखा कि 'चाहे जो हो मैं अपनी पुत्री इन्हे दूंगा।' और वहीं श्री. भारतभूषणके साथ उनकी पुत्री शिरोमणीका संबंध निश्चय किया गया। उस समय यह संबंध प्रथम पहला ही संबंध था; इस संबंधके बाद तो स्व. बालमुकुन्दजीने अपने बड़े सुपुत्र बा. सुशीलकुमार का विवाह इन्दौर निवासी श्री इन्नाणी की सुपुत्री से किया स्व. झंवरजी की हार्दिक इच्छा थी कि इस प्रकार की कमज़ोरियां माहेश्वरी समाज से बिल्कुल निकल ही जांय एवं डीडू-कोलवार एक हो जांय वे इस प्रयत्नमें सफ़ल भी हुए, फलस्वरूप अभी तक उनके परिवारमें सभी संबंध इसी प्रकार हुए हैं। सौभाग्य की बात है कि उस ज़मानेके विरोधी भी आज प्रसन्नता से इस प्रकारके संबंध करते हैं।

हमें सफलता क्यों नहीं मिलती?

माहेश्वरी समाजके सामने सबसे महत्वका प्रश्न उपस्थित हुआ है। महासभाके प्रस्तावों का अमल क्यों नहीं होता, इस बातको लेकर मारवाड़ी समाजमें काफी चर्चा होती रहती है। खासकर किसी कार्यकर्ताके घर अनुचित कार्य होता है, तब तो समाजमें काफी हल्चल मच जाती है और आपसमें बातचीतके रूपमें वादविवादसे ही संतोष मान लिया जाता है। समाजमें संघटनका अभाव, पेपरोंकी कमी, उस पर एक ही मतके लोगोंके हाथोंमें पेपरोंका संचालन होनेसे विरोधी मतका प्रचार जैसा उग्ररूपमें होना चाहिये वैसा नहीं होता।

'माहेश्वरी' ने अपने संपादकीय स्तंभोंमें सार्वजनिक रूपमें होने वाले ब्राह्मण भोजोंको फिज़ूल खर्चीवाले कार्य की, उपमा दी है; और समाजसे ऐसे ब्राह्मणभोजन बंद करनेकी अपील की है। साथ ही साथ गंगा-प्रसादीके नामसे न्याती भोजन करनेकी प्रथाको भी औसरका ही अंग माना है और उसमें संमिलित न होनेकी भी सलाह दी है। इतना होनेपर भी महासभाके कार्यकर्ता अपने यहां ऐसे कार्य कर रहें हैं।

श्री. सुगनचंदजी तापड़िया अकोला निवासी सी. पी. और बरार प्रांतिक माहेश्वरी महासभाके सभापति हैं और कार्यकारी मंडलके भी सभासद हैं। अभी हालमें ही आपके पिता श्री. सुखदेवजी तापड़ियाका स्वर्गवास हुआ। अभी उसके उपलक्षमें आपने जो कार्य किया वह महासभाके प्रस्तावोंके प्रतिकूल हुआ है ऐसी समाजमें चर्चा है।

सामाजिक कार्योंपर फिज़ूल खर्ची कम करनेके पक्षपाती और सामाजिक रूपसे ब्राह्मण भोजन करनेकी प्रथाके आप विरोधी हैं। इस कामको अनुचित समझते हुवे भी आपने ब्राह्मण भोजनमें ज्यादासे ज्यादा खर्च करनेकी कोशिश की और गंगाप्रसादीके नामसे पन्दरहवें दिनके (पाक्षिक) श्राद्धके दिन जातीय भोजन करनेकी भी कोशिश की। समाजमें निमंत्रण भी दिये परंतु जिन लोगोंको निर्मंत्रित किया उनमेंसे बहुत कम लोगोंने भोजनमें भाग लिया। निमंत्रण होते हुवे भी जो सज्जन भोजन करने नहीं गये वे धन्यवादके पात्र हैं। कार्यकर्ताओंके अनुचित कार्यसे समाजपर उल्टा असर होता है और सुधारकी गाड़ी रुक जाती है। भविष्यमें कार्यकर्ता लोग समझदारीसे काम लेंगे ऐसी मुझे पुरी आशा है।

—सोवळीबाई सारड़ा, अकोला

राजस्थान सिन्ध प्रान्तीय माहेश्वरी सभा

कार्य समितिके निम्न सदस्य नियत किये गए हैं—

सर्वश्री कुं. चान्दकरणजी शारदा अजमेर, बा. बसन्तीलालजी नोगजा अजमेर, दिलीप-सिंहजी राठी उदयपुर, कस्तूरचंदजी तोष्णीवाल शाहपुरा, भागीरथमलजी पलोड़ अजमेर, जयकिशनजी मूंधड़ा जोधपुर, रामप्रसादजी हुरकट साम्भर, जगन्नाथजी शारदा निम्बाहेड़ा, श्रीगोपालजी मोहता उदयपुर, कन्हैय्यालालजी कलन्त्री फलोदी।

(पृष्ठ ३ का शेषांश)

प्रशंसा होगी और यह घटना पीढ़ी दर पीढ़ी हिन्दुजातिके उच्चतम गुणोंकी गवाही देती रहेगी कि इस जातिके शासक विरोध और शत्रुतामें भी उच्चादर्शों और व्यवहारोंके कितने पाबन्द थे। इसके बाद महाभारतका युद्ध शुरू हुआ, जिसका परिणाम सब जानते हैं।

उपनिषद्में है कि—"ईश्वर सत्यका नाम है, ईश्वर बुद्धिका नाम है, ईश्वर पुण्यका नाम है, ईश्वर असीमका नाम है और ईश्वर प्रेमका नाम है।" प्रेमका शब्द आखिरमें आया है और इससे उद्देश्य है इस बातपर जोर देना कि प्रेम ही अस्तित्वका आधार है। प्रेमसे ही हमारा अस्तित्व है। प्रेम ही की ओर हम बढ़ रहे हैं और फिर प्रेम ही में हम समा जाते हैं।

भक्तिका यही मार्ग बताया गया है। यही हिन्दुओं का धर्म है। नफ़रत को मिटानेका रास्ता नफ़रत नहीं है, बल्कि नफ़रत मुहब्बत से मिटती है। हिन्दू धर्मकी कोई परिभाषा नहीं है। उसके ईश्वरके हजारों नाम हैं। वह ईश्वरके अनन्त गुणोंको हजारों नामोंसे याद करता है। ईश्वरकी प्रेमपूर्ण विशेषताएं उसके दिलपर छा जाती हैं। वह ईश्वरके प्रेममें संलग्न हो जाता है। यहां तक कि ईश्वर का कोई भय उसके दिलमें बाकी नहीं रहता और वह यूं चिल्ला उठता है—"जिस तरह ज़मीन और आसमान भय नहीं खाते और इससे उनको कोई नुकसान नहीं पहुंचता, उसी तरह मेरी आत्मा तुझसे भय नहीं खाती। जिस तरह सूरज और चांद निर्भय हैं और इससे उन्हें कोई हानि नहीं, उसी तरह मेरी आत्मा (हे परमात्मा) तुझसे निर्भय है।" हजारों रीतियोंसे ईश्वर उसके पास आता है। जब वह मुसीबत और कष्टको मिटाकर आता है, तो वह उसे 'दुर्गा' के नामसे पुकारता है, जब वह उसके अपराधोंको क्षमा करता है, तब वह उसे 'हरि' कहता है और जब वह विद्याके रूपमें आता है, तब वह उसे सरस्वती कहता है। हिन्दू किसी एक पुस्तक विशेषको अपने लिये मुक्तिदाता नहीं समझता। बहुतसी पुस्तकें हैं, जिनमें उसका आदर्श निहित है। लेकिन सिर्फ़ धर्मपुस्तकोंसे ही हिन्दूके दिलको सन्तोष नहीं होता। उसका मज़हब उसे सहिष्णुता की प्रतिमूर्ति बनाना चाहता है। उसका मज़हब उसे सिखाता है कि वह इसकी परवाह न करे कि कौन हिन्दू है और कौन मुसल्मान, कौन ईसाई है और कौन पारसी, कौन यहूदी है और कौन बौद्ध? सब ईश्वरकी रचना हैं। और हर धर्मवालेकी मुक्ति उसीके स्वधर्म पालनसे होती है। एक सच्चा हिन्दू किसी मज़हबको बुरा नहीं कहता और न वह अपने मज़हबको सबसे अच्छा बताता है। एक बार विष्णुके एक पुजारीके दिलमें शिवके पुजारी की ओर नफ़रतके भाव पैदा हुए। फिर जब वह विष्णुकी पूजामें प्रवृत्त हुआ, तो देखता है मूर्तिका चेहरा दो हिस्सोंमें बंट गया है। एक तरफ विष्णुका चेहरा है और दूसरी तरफ शिवका। दोनों चेहरे धर्मान्ध पुजारी की ओर देखकर हंस रहे हैं। इस किस्सेसे यही निष्कर्ष निकलता है कि मुक्तिके अनेक रास्ते हैं और किसी रास्ते को बुरा न कहो।

एक हिन्दू अपनी आत्माको ज्ञानके प्रकाशमें साधनाके द्वारा मुक्ति दिलाना चाहता है। हिन्दू धर्म सत्यको सबसे महत्वपूर्ण और सबसे श्रेष्ठ गुण समझता है। उसके निकट सूर्यका प्रकाश, हवाका झोंका, वर्षाकी बूंदें और ईश्वर सबके लिये हैं और सबके हैं। भगवद्गीता दुनियाको यही शिक्षा देती है—"जो कोई भी मेरे पास किसी रास्तेसे चलकर आता है, मैं उसके पास उसी रास्तेसे पहुंचता हूं। बहुतसे लोग भिन्न भिन्न रास्तेसे मेरे पास पहुंचनेकी कोशिशमें हैं और वे सब रास्ते मेरे हैं।" गीताके इस इशारेके बाद कौन सच्चा हिन्दू किसी दूसरे धर्मको बुरा कह सकता है? यह श्लोक गीताका सार है और गीताका मौलिक सिद्धान्त जाहिर करता है। हिन्दू अपने ईश्वरको जगन्नाथ कहकर पुकारता है। उसे दुनिया भरकी भलाई करनेवाला समझता है। वह ईश्वरको सिर्फ अपना चाहनेवाला नहीं समझता। हिन्दूके समस्त धार्मिक कर्तव्योंका सार यह है—

ईश्वरकी उपासना, देवताओं और ऋषियों की प्रतिष्ठा और श्रद्धा, मां-बापकी कद्र और इज्जत, दूसरे मनुष्योंके साथ रोज़ कोई न कोई नेकी करना, भूखोंको खाना खिलाना, प्यासोंको पानी पिलाना, जानवरोंके साथ मेहरबानीका बर्ताव करना—ये बातें ईश्वर और मनुष्यके प्रेम बल्कि हर प्राणीके प्रति प्रेमको साबित करती हैं। "अपने ईश्वर और अपने पड़ोसियोंसे जिनमें पशु भी शामिल हैं प्रेम करो"।

हिंदुओंको शुरूसे प्रेमका पाठ पढ़ाया गया है। हज़रत ईसाकी पैदाइशसे पांच सौ वर्ष पहले हिंदू सन्तोंने बताया था कि 'नफ़रत कभी भी नफ़रतसे शांत नहीं होती। नफ़रतको केवल मुहब्बतसे जीता जा सकता है। यह हिन्दुओंके स्वभावका अंग बन गया है। हमको सदा प्रसन्न रहना चाहिए और जो लोग हमसे नफ़रत करते हैं, उनसे हरगिज नफ़रत न करना चाहिए। क्रोधको प्रेमसे जीतना चाहिए, बुराई को भलाईसे दूर करना चाहिए, लोभ को दानसे और झूठ पर सचसे फतह हासिल करना चाहिए।' यहां एक किस्सा बयान करना असंगत न होगा।—

काशीमें ब्रह्मदत्त नामक एक राजा था। वह बहुत ऐश्वर्यवान, बहुत धनी और बहुत शक्तिवान था। उसके पास बड़ी विशाल सेना थी। वह एक बड़े राज्यका स्वामी था। लेकिन विरोधी कोसलका राजा बहुत दुर्बल और अशक्त था। न उसके पास इतना धन था और न इतनी बड़ी फ़ौज। राज्य भी बहुत छोटा था। ब्रह्मदत्तने कोसल पर कब्जा कर लिया और उसके राजाको घरसे निकाल बाहर किया। कोसल नरेश अपनी पत्नी और बच्चेके साथ भेष बदलकर काशीमें एक कुम्हारके घरमें रहने लगा। कुछ अरसेके बाद राजा ब्रह्मदत्तको इसकी सूचना मिली और उसने कोसल नरेश और उसकी पत्नीको पकड़ कर कत्ल करने का हुक्म दे दिया। उनका लड़का, जो उस समय काशीसे बाहर था, अपने पिताका हाल सुनकर वधस्थलमें पहुंचा। कोसल नरेशने अपने लड़के की ओर देखकर वसीयत की—

"ऐ मेरे प्यारे बेटे! घृणाकी अग्नि घृणासे नहीं बुझती। प्रेम ही घृणा की अग्निको बुझाता है।"

फिर कोसल नरेशका बेटा जंगलमें गया और वहां रोता-पीटता रहा। वहांसे एक निश्चित् इरादेके साथ शहर वापिस आया और राजाके फ़ीलख़ानेमें नौकरी कर ली। बहुत तड़के वह सुरीली और लुभावनी आवाज़में बांसुरी बजाता था। राजा ने ऐसी सुमधुर बंशी ध्वनि को सुनकर पूछा कि यह बांसुरी कौन बजा रहा है? कोसल कुमार उसके सामने पेश किया गया। काशी नरेशने उसे अपनी निजी सेवामें रख लिया और कोसल कुमार राजाकी खिदमत करने लगा। कुछ दिन बाद राजा एक दिन शिकार खेलने गया और अपने साथियोंसे अलग हो गया सिर्फ कोसल कुमार उसके साथ रह गया था। राजा बहुत थका हुआ था और सो गया। कोसल कुमारने सोचा अपने मां-बापके खून का बदला लेनेका यह अच्छा वक्त है। उसने फ़ौरन अपनी तलवार निकाली और राजापर वार करना ही चाहता था कि उसे अपने बापकी आखरी वसीयत याद आगई। उसने तलवार फेंक दी। राजा जाग गया और कोसल कुमारसे माजरा पूछा। कोसल कुमारने सारा किस्सा सच सच कह सुनाया। इस पर राजाने उसे अपने हृदयसे लगा लिया और अपने पिछले अपराधकी माफी मांगी। कोसलका राज्य उसे वापस कर दिया और अपनी लड़कीसे उसकी शादी कर दी।

इसी तरहके उदाहरणोंसे ऋषि मुनि हिन्दुओंको आध्यात्मिक शिक्षा दिया करते थे। मित्रोंके साथ बर्ताव और प्रेमके संबंधमें यह शिक्षा दी गई है।

१—अपने मित्रोंको उपहार दिया करो इससे प्रेम बढ़ता है,

२—अपने मित्रोंसे नम्रता और मिठाससे बोलो,

३—उनके लाभकी बात सोचो,

४—उनके साथ बराबरीका बर्ताव करो और अपने लाभके मुकाबलेमें पहले उनके लाभको देखो,

५—अगर तुम खुशहाल हो तो अपनी खुशहालीमें उन्हें शामिल करो,

६—जब वे गाफिल हों उनकी खबरगीरी करो,

७—ख़तरेके समय उन्हें शरण दो,

८—मुसीबतके समय उनकी और ज्यादा खातिर करो, और

९—मित्रके सारे परिवारके साथ मेहरबानी और इनायतका बर्ताव करो।

इसी तरह संतानको अपने बापके साथ, स्वामी को अपने सेवकके साथ, पतिको अपनी पत्नीके साथ, शिष्यको अपने गुरुके साथ, बर्ताव करने की विस्तृत नैतिक शिक्षा दी गई है। यही नहीं कि यह शिक्षा सिर्फ पुस्तकोंमें हो, बल्कि हिन्दुओंने इस पर पूरा पूरा अमल भी कर दिखाया है।

हिंदू शास्त्र, हिंदू रहन-सहन, हिंदू काव्य सब प्रेमकी शिक्षा देते हैं और तरह तरह प्रेमकी ही बड़ाई साबित करते हैं, यहां तक कि प्रेम को ही उन्होंने ईश्वर कहा है। हर चेतन और जड़ पदार्थके साथ प्रेम और सेवा ही हिंदू धर्मका सदासे लक्ष्य रहा है। लेकिन कुछ स्वार्थी और अदूरदर्शी लोग हिंदू जातिको अपनी संकीर्णता और अदूरदर्शितासे बदनाम करते हैं और अपने खयालमें समझते हैं कि वह हिंदू जातिका बड़ा उपकार कर रहे हैं।

[पृष्ठ २३ का शेषांश

८ भरतपूर, अलवर धौलपूर, कैराली १
९ थरपारकर-सिंध १

इनके सिवायः—स्वागत समितिकी ओरसे कार्यकारिणीके सभी सदस्य, स्वागत कारिणीके सभापति एवं दो मंत्री, सभापतिकी इच्छानुसार अधिकसे अधिक ५ सज्जन, स्वागत समितिके अध्यक्षकी इच्छानुसार अधिकसे अधिक दो सज्जन।

उपरोक्त समितिद्वारा बहुमतसे स्वीकृत प्रस्ताव सभाके अधिवेशनमें उपस्थित किये जावेंगे। किन्तु विषय निर्वाचिनी समितिमें अस्वीकृत प्रस्ताव भी सभापतिकी आज्ञासे सभामें विचारार्थ उपस्थित किये जा सकेंगे।

१५—पद

सभामें उपस्थित प्रत्येक प्रतिनिधि को एक मतका अधिकार होगा, परन्तु तीन विभागोंके प्रतिनिधियोंकी मांग आनेसे प्रान्तीय ढंग लिया जावेगा।

इस अवस्थामें प्रत्येक विभाग का एक मत गिना जावेगा। यदि विभागों का मत समान हो तो वह प्रश्न आगामी अधिवेशन तक स्थगित कर दिया जायगा।

१६—मंत्री मण्डल

सभाके प्रधान मंत्री और दो सहायक मंत्री होंगे। तीनों का निर्वाचन वार्षिक अधिवेशनमें होगा।

१६—कोषाध्यक्ष

सभाके कोषाध्यक्ष का निर्वाचन सभाके वार्षिक अधिवेशनमें हुआ करेगा।

इनके अलावा अन्य पदाधिकारियों का चुनाव कार्यकारी मण्डल करेगा। मण्डल को सभा की उद्देश्य पूर्तिके लिये संस्था स्थापित करना तथा चलाना और सब-कमिटियां (Sub-Committees) बनाने का अधिकार होगा। इनमें माहेश्वरी सज्जनोंके अलावा अन्य सज्जन भी लिये जा सकेंगे किन्तु इन्हें मत देने का अधिकार न होगा।

१८—परिवर्तन

उपरोक्त नियमोंमें परिवर्तन करने का अधिकार सभाके साधारण अधिवेशन को होगा और वह दो तृतीयांश बहुमत से ही स्वीकृत होगा।

(शेष पृष्ठ १२ के काल्म ४ पर)

राजस्थान-सिंध प्रान्तीय माहेश्वरी सभा

नियमावली

१—नाम

इस सभाका नाम ‘ राजस्थान-सिंध प्रांतीय हेश्वरी सभा ’ होगा ।

२—उद्देश्य

माहेश्वरी समाजकी समयानुकूल सर्वाङ्गपूर्ण न्नति करना ।

३—साधन

१ उपरोक्त उद्देश्यकी पूर्तिके लिये जातिमें क्षा प्रचार सामाजिक सुधार एवं व्यापारिक, रीरिक उन्नति करना तथा जितनी और स प्रकारकी संस्थाओंकी आवश्यकता हो तनी और उस प्रकारकी संस्थाएं स्थापित रना तथा चलाना ।

२ उन राजकीय प्रकरणोंमें भाग लेना नका संबंध धर्म, समाज, व्यापार और गधंधोंसे हो ।

३ जातिके अनाथ बालकों, विधवाओं अंधे, लूले, लंगड़े, निराश्रय जाति-ओंको जो अन्न-वस्त्रादि के लिये पीड़ित सहायता पहुँचाना ।

४ इस सभाको हानि न होते हुवे, के द्वारा स्थापित संस्थाओंका लाभ अन्य तियोंको भी लेने देना ।

५ जिन इतर जातीय संस्थाओं द्वारा हेश्वरी जातिके लोगोंको कुछ लाभ पहुँचता उनकी सहायता करना ।

४—बहिष्कार विषयक नीति

सभामें उपस्थित होनेवाले किसी भी प्रस्ताव में बहिष्कार नीतिको स्थान नहीं दिया जायगा।

५—सदस्य

माहेश्वरी जाति का प्रत्येक स्त्री एवं पुरुष स सभाका सदस्य गिना जाएगा किन्तु भाके किसी भी अधिवेशनमें पधारनेवाले प्रत्येक सज्जनको सभाके उद्देश्य-पत्र पर स्वीकृति सूचक हस्ताक्षर करने होंगे और निश्चित् फीस भी देनी होगी । अठारह वर्षसे म उम्रवाले सज्जनको मताधिकार नहीं हेगा ।

६ अधिवेशन

सभाके अधिवेशन दो प्रकार के होंगे ।
(१) साधारण और (२) विशेष ।

१ साधारण अधिवेशन वर्षमें एक वक्त पूर्व अधिवेशनमें निश्चित् स्थानपर सज्जनोंके सुभीतेके दिनोंमें होगा ।

यदि साधारण अधिवेशन नियत स्थान पर किसी कारणवश न हो सके तो कार्यकारी मंडलको अधिकार होगा कि स्थान परिवर्तन कर दे ।

यदि पूर्व अधिवेशनमें स्थान निश्चित नहीं हुआ होगा तो कार्यकारी मण्डलको अधिकार होगा कि वह किसी योग्य स्थान पर सभाका अधिवेशन कराए ।

२ विशेष अधिवेशन आवश्यकतानुसार दो मास पूर्व सूचना देकर कार्यकारी मंडल कर सकेगा ।

७—सभाका संगठन

सभामें निम्नलिखित सभाओंका समावेश होगाः—

१ प्रान्तीय सभा वार्षिक अधिवेशन ।
२ प्रान्तीय सभाका कार्यकारी मंडल।
३ जिला माहेश्वरी सभा ।
४ माहेश्वरी ग्राम पंचायत ।

५ सभाके उद्देश्योंके अनुकूल स्थापित माहेश्वरी जातिकी अन्य सभाएं और पंचायतें, जिन्हें सभाके कार्यकारी मण्डलने अथवा जिला सभाने स्वीकार कर लिया हो ।

८—क्षेत्र

इस सभाका क्षेत्र सारा राजस्थान–सिंध माना जायगा जिसके निम्न विभाग होंगेः—

१ अजमेर–मेरवाड़ा
२ जोधपुर–सांभर
३ जयपुर व टोंक
४ बीकानेर व जैसलमेर
५ उदयपुर शाहपुरा
६ कोटा, बूंदी, किशनगढ़, झालावाड़
७ बांसवाड़ा, प्रतापगढ़, डूंगरपुर और कुशलगढ़
८ भरतपुर, अलवर, धोलपुर, करौली
९ थरपारकर–सिंध

९ कार्यकारी मंडल

सभाका एक कार्यकारी मंडल रहेगा। सभामें उपस्थित प्रतिनिधि अपने २ विभाग की तरफसे कार्यकारी मंडलके सदस्योंका निर्वाचन करेंगे । जिस विभागका चुनाव उपस्थित प्रतिनिधि नहीं करेंगे व कार्यकारी मंडलके अगले अधिवेशन तक उस विभागकी तरफसे नाम चुनकर न आवेंगे तो कार्यकारी मंडलको अधिकार होगा कि उस विभागके सदस्योंका चुनाव कर ले । विभागोंके सदस्य निम्न प्रकार होंगेः—

१ अजमेर–मेरवाड़ा	४
२ जोधपुर सांभर (मारवाड़)	५
३ जयपुर व टोंक	४
४ बीकानेर व जैसलमेर	४
५ उदयपुर शाहपुरा (मेवाड़)	५
६ कोटा, बूंदी, किशनगढ, झालावाड़	३
७ बांसवाड़ा, प्रतापगढ़, डूंगरपुर, कुशलगढ़	१
८ भरतपुर, अलवर, धौलपुर, करौली	१
९ थरपारकर सिंध	२

इसके अतिरिक्त

१ सभाके गत अधिवेशनके सभापति तथा सभाके मंत्री, सहकारी मंत्री तथा कोषाध्यक्ष
२ स्वागतकारिणीके सभापति एवं मंत्री
३ सभाके पिछले अधिवेशनोंके सभापति
४ सभाके पिछले महामंत्री और
५ सभाके जातीय फण्डके ट्रस्टी वे भी अधिकारी मण्डलके सदस्य समझे जावेंगे ।

सभाके गत अधिवेशनका सभापति, आगामी अधिवेशन तक कार्यकारी मंडलका सभापति रहेगा । उसकी अनुपस्थितिमें मण्डल के उपस्थित सज्जनोंको अधिकार होगा कि वे अपनेमें से किसी एक को उस सभाका सभापति निर्वाचित कर लें ।

सभाके किसी भी पदाधिकारी का पद रिक्त होने पर मण्डल को अधिकार होगा कि वह अपने सदस्यों में से रिक्त पदों की पूर्ति कर ले ।

कार्यकारी मंडल का ‘कार्यकाल’ आगामी अधिवेशन में नये “ कार्यकारी मण्डल ” के बनने तक रहेगा ।

कार्यकारी मंडलके वर्ष भरमें कमसे कम दो बार अधिवेशन होंगे ।

कोरम ११ सज्जनों का होगा ।

सभा में स्वीकृत प्रस्तावों को कार्यरूप में परिणत करना इस मंडल का उद्देश्य होगा।

कार्यकारी मंडल का निर्णय सभाको मानना होगा ।

सभाका प्रधान मंत्री कार्यकारी मंडलका मन्त्री रहेगा ।

कार्यकारी मण्डलके पांच सदस्योंका विज्ञप्ति पत्र आनेसे या महामन्त्री जब आवश्यकता समझें तब सभापति की अनुमति से कार्यकारी मण्डलका अधिवेशन किया जायेगा ।

अधिवेशनकी सूचना निदान एक सप्ताह पूर्व सारे सदस्योंको डाक द्वारा दी जानी चाहिये।

१०—प्रान्तीय सभाकी कार्यसमिति

प्रान्तीय सभाके कार्यकारी मण्डलके निर्वाचित १० सदस्यों की समिति रहेगी। जो मंडल की प्रधान कार्य समिति होगी, उसमें सभापति तथा ३ मन्त्रीपद की हैसियतसे सदस्य रहेंगे और शेष ६ सदस्योंके चुनावका अधिकार सभापतिको होगा। कार्य समितिकी सारी कार्यवाही मण्डलके आगामी अधिवेशनमें उपस्थित की जावेगी ।

कार्यकारी मण्डलका यह भी कर्त्तव्य होगा कि प्रत्येक सभा अधिवेशनके पूर्व समाज को प्रगति और आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुवे अधिवेशनके विचारार्थ प्रस्ताव तैयार कर कार्यकारी मण्डलके सदस्यों के पास भेज देगी और यही प्रस्ताव विषय निर्वाचनीके सामने अधिवेशनके मुख्य प्रस्तावोंके रूपमें उपस्थित किये जावेंगे ।

११—प्रतिनिधि निर्वाचन

सभा की प्रत्येक शाखा, सभा तथा हर एक स्वजातीय संस्थाओं को सभाके प्रत्येक अधिवेशन में प्रतिनिधि भेजनेका अधिकार है तथापि यदि किसी भाईका किसी सभा द्वारा निर्वाचन नहीं हुवा तो वह उद्देश्यपत्र पर हस्ताक्षर करके प्रतिनिधि बन सकेगा ।

सभाके प्रतिनिधि को दो रुपया फीस देनी होगी, इस फीसमें आधी रकम पर सभाका अधिकार होगा और आधी रकम स्वागतकारिणी अपने उपयोगमें ला सकेगी परन्तु स्त्रियोंसे कोई प्रतिनिधि फीस नहीं ली जायगी ।

सारे प्रस्ताव प्रतिनिधियोंके बहुमतसे पास हुवा करेंगे ।

१२—स्वागत समिति

जिस विभागमें सभाका अधिवेशन होना निश्चित होगा उस विभागकी शाखासभा या जहां अधिवेशन होना निश्चित हो गया हो वहांके कार्यकर्ताओंको अधिकार होगा कि वे सभाके अधिवेशनके लिये स्वागत-समिति बनावें।

जो उस विभागका रहने वाला हो, सभाके उद्देश्योंको स्वीकार करता हो और स्वागत समिति द्वारा निश्चित फीस देता हो वह सज्जन स्वागत–समितिका सदस्य हो सकता है । स्वागत-समिति सदस्यकी फीस अधिकसे अधिक २१) हो सकेगी ।

स्वागत सदस्यको प्रतिनिधि फीस अलग नहीं देनी होगी ।

स्वागत–समितिका कर्त्तव्य होगा कि सभाके अधिवेशनका कुल कार्य और रिपोर्ट विवरण छपवाकर प्रतिनिधिओंके पास पहुँचा दे ।

सभा का खर्च काटकर यदि स्वागत समिति के पास कुछ धन बचता रहेगा तो उसका एक चतुर्थांश सभाको देना होगा ।

स्वागत समिति को अपना सारा आय-व्यय का हिसाब अधिवेशनसे तीन मासके भीतर प्रकाशित करना होगा ।

जब तक साधारण अधिवेशनमें सभापति आसन ग्रहण न कर ले तब तक सभाके सारे अधिकार स्वागत समितिके अध्यक्षको होंगे ।

१३—सभापति निर्वाचन

सभापति अन्य विभाग का होगा और उसका निर्वाचन स्वागत समितिके आधीन होगा ।

निर्वाचित सभापतिके पुनर्निर्वाचन की आवश्यका न होगी केवल घोषणा करदी जावेगी ।

१४-विषय निर्वाचिनी समिति

विषय निर्वाचिनी समितिमें भिन्न २ विभागोंके प्रतिनिधियों द्वारा निर्वाचित निम्न लिखित संख्यामें सदस्य होंगे ।

जो सज्जन जिस विभाग की ओर से प्रतिनिधि बनेंगे वे उसी विभाग की ओर से विषय निर्वाचिनी समितिमें निर्वाचित हो सकेंगे।

१ अजमेर–मेरवाड़ा	२
२ जोधपुर–सांभर (मारवाड़)	३
३ जयपुर व टोंक	२
४ बीकानेर व जैसलमेर	२
५ उदयपुर शाहपुरा (मेवाड़)	३
६ कोटा, बूंदी, किशनगढ़, झालावाड़	२
७ बांसवाड़ा, प्रतापगढ़, डुंगरपुर, कुशलगढ़	१

(शेष पृष्ठ २२ के कालम ४ पर)

(पृष्ठ ४ का शेषांश)

रखती हैं। एक तो आंतरिक, जिसका लोगोंकी मनोवृत्तिके साथ संबंध है, तथा दूसरी है बाहरी अर्थात् वे बाह्य परिस्थितियां, जिसमें उन्होंने अपने आपको पाया था। यह जानकर हम एकदम कह उठेंगे कि उनकी अवस्था कठिन एवं कष्टकर थी। लेकिन केवल इस लिये अबौद्धिक और अनीतिपूर्ण प्रतिक्रियाकी आवश्यकताको युक्तिसंगत नहीं माना जा सकता। पिछले २० सालके इतिहासमें यूरोपके सामने ऐसे सवालात नहीं पैदा हुए थे, जिनका निराकरण 'दो और लो' की उदार नीतिसे न लाया जा सकता हो लेकिन जर्मनीने जो मार्ग अपनाया, उसमें कदम कदम पर घृणा, द्वेष और बदलेके ही बीज थे, वे बालकोंकेसे अयुक्तियुक्त, आवेगशील और आक्रामक व्यवहारोंके ही गुलाम बने, जिसका अंतिम परिणाम पराजय ही हो सकता है।

तटस्थ निरीक्षकोंसे यह बात छिपी न थी। सन् १९२३ के समय अपनी जर्मनीकी यात्राके दौरेमें 'अेरेबियावाले लॉरेन्स' ने कुछ विचित्र ढंगसे कहा था कि "आप अपनी रीढ़को कड़ी कर रहे हो, और अंधेरी रातकी राह देख रहे हो। मुझे खतरेकी वू आ रही है। यह जनता नहीं है; वह डरावनी नहीं प्रतीत होती। सांय सांय करती हुई हवामेंसे खतरे की आवाज सुनाई देती है, एक विचित्र, भडकीला और विलक्षण-सा भय नज़र आता है। कुछ हुआ है जो कि अबतक घटा नहीं। पुरानी दुनियाका पुराना जादू नष्ट हुआ है, और वही पुराना डरावना, असभ्य स्पिरिट......में प्रविष्ट हुआ है, और किसी वास्तविक घटनासे भी ज्यादा गंभीर दृश्य उपस्थित होने वाला है। यह नयी आगे आनेवाली घटनाओंका जन्मदाता है।" सन् १९३६ में जंगने देखा था कि एक क्रूर शक्ति जर्मनीको दबा रही है।" जर्मनी आध्यात्मिक दुर्गतियोंका देश है, जहांपर प्रकृतिके कुछ तथ्य बुद्धिके साथ बाहरसे थोपी गई शांति ही अनुभव करते हैं।" ये दोनों समान भावको सूचित करने वाले उदाहरण बेयनिस की 'अधिकृत जर्मनी' (Germany Possessed) नामक किताबमें से उद्धृत किये गए हैं।

समूह मनोविज्ञान खास किस्मके लोगोंमें एक विचित्र और अबौद्धिक, लेकिन स्पष्ट और तात्कालिक प्रतिक्रिया पैदा करता है। इस किस्मके लोग सामूहिक अज्ञात मन को प्रभावित करनेमें समर्थ होते हैं। ये लोग अंतर्नाद का अनुगमन करते हैं, और साधारण मनुष्यों का दृष्टि मर्यादाके बिना अपनी आंतरिक भावनाओंसे ही प्रेरित होते हैं। कुछ हद तक हरेक आदमी अंतर्नाद सुन सकता है, कईयों को स्पष्ट रूपसे वह सुनाई देता है, लेकिन बहुत ही कम व्यक्तियोंमें अपूर्व रूपसे इसकी झनझनाहट सुनाई देती है। कुछ व्यक्ति ऐसे पाये जाते हैं जो निस्संदेह अज्ञात मन की सतह को छूनेकी क्षमता रखते हैं, और उसका संस्पर्श पाकर देश और काल की वास्तविकताओंका एक अभूतपूर्व संबंध स्थापित करते हैं। जॉन आफ आर्क इसका एक उत्तम उदाहरण है। उस गरीब ग्रामीण कन्याके दिलमें अपने राष्ट्रको मुक्त करनेके अंतर्नाद अहर्निश सुनाई देते थे। वह इस कार्य के लिये अपने पीछे न केवल अपढ़ और भोलीभाली जनता को ही खींच लायी, लेकिन फ्रान्सके बड़े बड़े जनरल्स और बुद्धिमाने व्यक्ति भी उसकी इच्छाको सर्वोपरि मानते थे। इतिहासमें इस विषयके और भी अनेक उदाहरण पाये जाते हैं। लेकिन इसकी व्याख्या करना सरल बात नहीं।

जर्मन फ्यूरर अपने आप एक 'अतिमानव' आत्मा है। उसका विचित्र और रहस्यमय जीवन, उसके व्यवहारोंकी विलक्षणता, उसका बालकोंसा स्वभाव, उसकी अंतःप्रेरणाएं, (" जिसकी वह मिलने तक राह देखता है ") और जर्मन जनतापर जमा हुआ उसका दृढ़ और प्रचण्ड प्रभाव, ये सब बातें उसको एक असाधारण रूप प्रदान करती हैं। इस बातका ख्याल रहे कि रास्तेमें चलनेवाले साधारण भोलेभाले आदमीको ही वह अपने प्रभावमें बहा ले गया है यह बात नहीं; लेकिन बड़े बड़े प्रचण्ड दिमागवाले जर्मन जनरल स्टाफके लोग और बुद्धिप्रधान व्यक्ति भी उसके साथ हैं। दुःख तो इस बातका है कि इतनी असाधारण शक्तिवाले इस व्यक्तिने अपने राष्ट्रकी नीतिको इतना कुटिल मुड़ाव क्यों दिया।

प्रश्न होता है कि क्या जर्मनी किसी भारी समूह आंदोलन, या समूह हिस्टिरियाकी प्रसव वेदनासे तडप रहा है, या प्राचीन असभ्य अज्ञात मनकी उत्ताल लहरें अबौद्धिक, बच्चोंकी-सी व पागलपनभरी निम्नभूमिकी ओर बढ़ रही हैं? क्या इस प्रकार उनके-कुछ आदमियोंके नहीं—समस्त साथियों के प्रबल आक्रमणको समझाया जा सकता है? उनके कार्य साधारण नहीं। ब्रिटिश घेरबंदी व रूसके प्रति उनका निराधार संदेह, आत्मप्रकाशनकी उनकी तीव्र इच्छा, हेरेनवोक और आर्योंके बीच निम्न और उच्चकी निश्चित छाप, उनकी रूक्षता, उनकी क्रूरता, और सभ्यताके हरेक पहलूका उनमें अभाव—इन बातोंको क्या समझा जाय? हरेक आदमी जानता है कि संदेह, विश्वासघात, झूठ, धोखेबाजी और हत्यायें सफल नहीं होतीं। व्यवहारमें केवल नीतियुक्त कोरे शब्दोंसे काम नहीं चलता। तब फिर सवाल होता है कि जर्मन लोग यह क्यों करते हैं? उसका केवल एक ही परिणाम आ सकता है। यहांपर हमें एक 'अधिकृत' राष्ट्रके विचारका समर्थन मिलता है।

निस्संदेह, इसमें कुछ कठिनाइयां हैं। यह सारा ही विषय नया और अनाविष्कृत सा है। धैर्ययुक्त और सतत अध्ययन ही से हम इस विचार को परिपुष्ट करनेमें सफल होंगे। इस कथनमें कि जर्मनी सभ्यताके चरम सोपानसे कठोर, भयानक, पापपूर्ण और अहंतापूर्ण गढ़े में गिर गया है, कोई नया विचार नहीं। महान् फेडरिकमें अनेक गुण थे फिर भी वह विश्वासयोग्य नहीं था। एम्स टेलिग्राम वाली घटना के लिये बिस्मार्क जिम्मेवार था, और १९१८-१९ के एक कागजके टुकडेके बारेमें हम सब जानते हैं। जर्मन क्रूरता कोई नयी बात नहीं—यदि मर्यादित शब्दोंमें ही कहा जाय तो सन् १८७० और १९१४ में ही वे कुछ अंशोंमें फैल चुकी थीं। जर्मन रीति-नीति जिन सिद्धान्तों को तर्कपूर्ण ढंगसे प्रकट कर रही है, उनके विकासमें अकेला जर्मन दर्शन ही है। संक्षेपमें कहा जाय तो उनकी वर्तमान मनोवृत्तिको हम एकदम अकल्पित-सी नहीं कह सकते, इसके विपरीत बिलकुल उचित रूपसे हम यह कह सकते हैं कि केवल जर्मनी ही एक ऐसा देश था, जिससे हम ऐसे ही परिणामोंकी आशा रख सकते थे।

"अधिकृत जर्मनी" हमारे सामने इस कष्टकारक गड़बड़ीका क्यों और कैसेके रूपमें विशुद्ध एवं गंभीर अध्ययन पेश करती है। इसके अलावा, सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि यह अनेक प्रामाणिक और सरल व्यक्तियोंके मनोंमें भी जो प्रवञ्चक संदेहजाल छाया हुआ है, उसे दूर करती है। वर्तमान पेचीदा प्रश्नोंके अंतिम समाधानके बारेमें भी इसमें कुछ निर्देश प्राप्त हो सकते हैं। पाठक यदि छोटी–मोटी बारीकियोंकी उलझनमें न पड़े तो, बेयनिस की इस किताबमें उसे बहुत कुछ ग्राह्य, युक्तियुक्त और उत्साहप्रद मिल सकता है। यह कहना कि किसी क्रियात्मक सुझावके बिना यह एक ऊपरी ढंगसे प्रश्नोंका निराकरण करती है, सच नहीं, क्योंकि मानवजाति गाणितिक क्रमसे नहीं लेकिन भौमितिक हिसाब से तरक्की करती है। कलके भयजनक सिद्धान्त आजके सुखद सत्य बन रहे हैं। मनोविज्ञान संभव है एक नया शास्त्र हो, संभव है वह विस्मयजनक व क्रांतिकारी प्रतीत होवे, लेकिन वैयक्तिक जीवनके क्षेत्रमें उसे जो मानी हुई सफलता मिली है, उससे यह कहना असत्य नहीं है कि समूह मानसके अध्ययनमें भी वह उपयोगी हो सकता है। लेकिन केवल एक इस प्रकार के निबंधका प्रकट होना ही इस बातका सफल अनुमोदन है कि, ऐसे क्रूर संघर्ष भरे युगमें जीता हुआ भी, मनुष्य अपने जीवनके व्यवहारोंमें सहकार तथा सहयोगके उच्च और तेजस्वी आदर्श पर दृढ़ रह सकता है। यह कठिन तो अवश्य है, लेकिन आदर्शोंका अनुगमन सरल कब रहा है?

—'Nature' से

भूल सुधार

२१ जनवरीके 'माहेश्वरी' में पृष्ठ २३ के कालम १ पर कांटिया ग्राममें महासभा शिष्टमंडलके सिन्ध भ्रमणके समय जिन बहनोंने मौसर त्यागकी प्रतिज्ञाएं लीं उनके नाम छपे हैं। वे इस प्रकार होने चाहिए।

१. श्रीमती कलावती खेतराम लोया
२. श्रीमती गोरांरामजी कचोलिया
३. श्रीमती मुक्ती हाथीरामजी राठी
४. श्रीमती हरी मोतीरामजी लोया
५. श्रीमती सोनदेवीजी लीलारामजी कचोलिया
६. श्रीमती राणकदेवीजी खेमराजजी केला
७. श्रीमती देवकीरामजी साह केला
८. श्रीमती बादली कस्तूरचंदजी लोया
९. श्रीमती मेंघी पूनमचंदजी चांडक
१०. श्रीमती आशादेवी टीकमसाह कचोलिया

(पृष्ठ १३ का शेषांश)

का अपने शब्दोंमें अर्थ नहीं कर सकते तो टीकाकारों तथा निबन्धकारोंका ही अनु करना पड़ता है और उनको अपना फैस उन्हीं टीकाकारोंके विशेष अर्थके अनुसार पड़ता है।

टीकाओंमें याज्ञवल्क्य-स्मृतिकी मिता टीकाका स्थान सबसे ऊंचा है। यह टी विज्ञानेश्वर की लिखी हुई है। भारत बंगालको छोड़कर अन्य सभी प्रान्तोंमें मि क्षरा सर्वोच्च मानी जाती है। इसी भारतीय कानून संप्रदायके दो भाग हो हैं—एक तो मिताक्षरा संप्रदाय और दू बंगाल का दायभाग संप्रदाय। मिता सम्प्रदायके अन्तर्गत चार अन्तर्विभाग गये हैं।

(१) काशी (बनारस) सम्प्रदाय, (महाराष्ट्र (बम्बई) सम्प्रदाय, (३) द (मद्रास) सम्प्रदाय और (४) मि सम्प्रदाय।

विज्ञानेश्वरकी मिताक्षराके अनुसार स्त्रीधन परिभाषा यों हैः—"पिता, माता, पति या ने जो कुछ दिया हो; मामा आदि सम्बन्धि योंसे विवाहके अवसरपर जो कुछ दिया गया हो; द्विरागमन वा (पतिके) पुनर्विवाहमें पति द्वारा जो कुछ दिया गया हो; निम्नलिखित धन जो "आद्य" श सूचित है—

१ उत्तराधिकारसे प्राप्त
२ ख़रीदसे ,,
३ बलपूर्वक अधिकारसे प्राप्त
४ विभागसे प्राप्त
५ किसी जगह आचिन्तित रूपसे प्र हुआ। ये कुल धन अन्य स्मृतियोंके द्वा स्त्री-धन हैं।" इस प्रकार मिताक्ष अनुसार स्त्री-धनका सामान्य अर्थ "स्त्री धन है," न कि कछ विशेष प्रकारके ध जैसा कि स्मृतिकारोंने गिनाया है।

यदि विज्ञानेश्वरका यह मत आज भार वर्षमें मान्य होता तो स्त्रियोंकी आर्थि अवस्था बहुत कुछ सुधरी हुई होती, अधि क्या, उनका स्थान संयुक्त परिवारमें प्रा पुरुषोंके समान होता।

सभी देशोंमें समाज की बदलती हुई प स्थितिके अनुकूल कानूनमें परिवर्तन हो रहता है। इसका अर्थ यह कि जज जिनको पुराने फैसलोंके अनुसार case law चलना पड़ता है अपनी समझके अनु भिन्न भिन्न अर्थ कर लेते हैं। इसप्रकार टीकाका और न्यायाधीश लोग अपने अपने अर्थबल पुराने कानूनों में अनायास परिवर्तन क डालते हैं। १९१२ में प्रिवी कौन्सिल का फैसला विज्ञानेश्वर की व्याख्याके विरु हुआ तब से उसका असर जाता रहा। पुरुषके जन्म-सिद्ध अधिकार को ही ध्यान में रख कर विज्ञानेश्वर ने स्त्रियों को धनमें ऐसा विशेष अधिकार दिया था किन्तु अब हम देखते हैं कि संयुक्त परिवारमें स्त्रियों को धनके प्रबन्ध, विनिमय और विभाजन कितना कम अधिकार है तथा किस प्रकार पुरुष सम्बन्धियों को पारिवारिक धनमें जन्म से ही अधिकार प्राप्त हो जाता है।

सब प्रकार के बीमे का काम

फायर एण्ड जनरल

यूनिवर्सल

इंस्युरंस कंपनी

अपनी
जिंदगी
का
बी
मा
कराइये

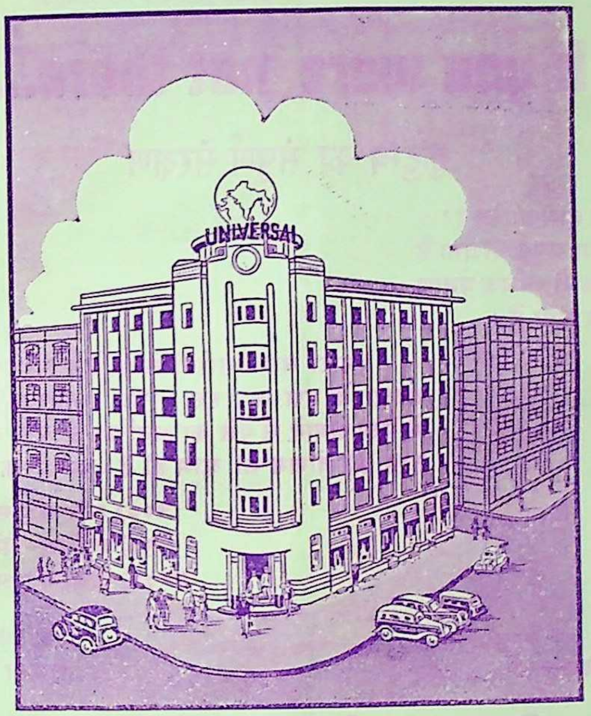

को
ही
दी
जि
ये

इसके डायरेक्टर्स हैं

१. दि. ब. कृष्णलाल मोहनलाल झवेरी एम्. ए. एलएल. बी.
२. सेठ लक्ष्मणदास हरखचंद डागा
३. राजा नारायणलाल बंशीलाल
४. श्री. जे. एच. मोदी सालीसिटर
५. श्री. केशवलाल हरीलाल सेतलवाड़
६. राय साहब केदारनाथ खेतान एम. एल. सी.
७. श्री. रणछोड़दास त्रिभुवनदास पोपावाला (मालपाणी) बी. ए.
८. श्री. कांतीलाल चिमनलाल मुन्शी बी.ए.

आग;
मशीन;
मोटर;
इत्यादि सब
प्रकार के
बीमे के लिये
हमें पूछिये

यह कम्पनी "माहेश्वरी" द्वारा स्थापित की गई है। स्व. सेठ वरजदासजी भाईदासजी मालाणी इसके संस्थापक थे।

सब प्रांतों में एजेन्सियां देनी हैं। आज ही एजेन्सी के आकर्षक नियमों के लिये लिखिये

मेनेजिंग एजेन्ट्स--एम. कानजी एन्ड कंपनी

दी यूनिवर्सल फायर एण्ड जनरल इंस्युरन्स कं० लि०

सर फीरोज़ शाह मेहता रोड, बंबई

Printed by Vasant S. B. Shroff, B. A., B. SC., LL. B. at the Bombay Vaibhav Press, Servants of India Society's Building, Sandhurst Road, Bombay 4 and published by him at 70, Tulsi Vihar, Marine Drive, Bombay.

Reg. No. B 4441

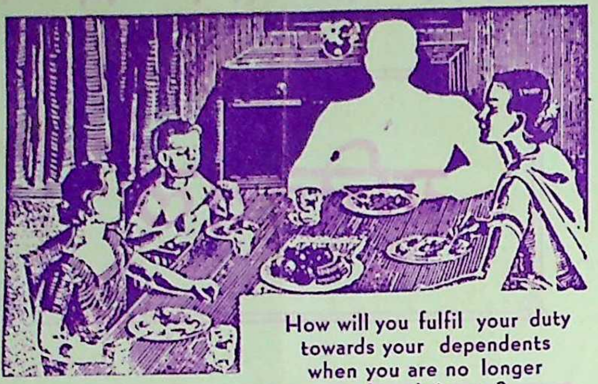
How will you fulfil your duty
towards your dependents
when you are no longer
a breadwinner ?

If you were not there...

कुटुम्ब का संपूर्ण संरक्षण

न्यु एशियाटिक की 'हैपी होम पॉलिसी' बीमा की एक ऐसी अद्वितीय तथा अपूर्व योजना है जिसका कुटुम्ब की संरक्षा अधिक से अधिक प्रमाण में करने क हेतु से निमार्ण किया गया है।

हमारा भारत गरीबी से पीड़ित है। ऐसी दशा में यहां कुंटुम्ब की संरक्षा के प्रश्न का हल अधिक आवश्यक है। 'हैपी होम पॉलिसी' में पैसा लगाने से पैसे का अनुचित उपयोग नहीं होता और न वह किसी तरह की जोखम का काम ही है। ५०००) के बीमे से क्या मिलता है:—

५००) और बोनस-मृत्यु के बाद
५०) मासिक-बीमे की शेष अवधि तक
४५००) बीमा की अवधि ख़त्म होने पर

इस रकम से बच्चों की शिक्षा का प्रबन्ध हो सकता है अथवा वे कोई धंधा कर सकते हैं

पूर्ण विवरण के लिये लिखिये—

दी न्यु एशिआटिक लाईफ इंस्युरंस कम्पनी लिमिटेड

मैनेजिंग एजेन्टस—**बिड़ला ब्रदर्स लिमिटेड**

हेड ऑफिस

कॅनाट सर्कस, नई दिल्ली

शाखाएं और प्रमुख कार्यकर्ता

उत्तरी विभाग
(कॅनाट सर्कस, नई दिल्ली)
लाहोर
रावलपिंडी
पेशावर (केन्टोनमेन्ट)
पटना
कानपुर

पूर्वी विभाग
(८, रायल एक्सचेन्ज प्लेस, कलकत्ता)
ढाका
बर्दवान
जलपाइगुरी
सिलहट
बर्मा

पश्चिमी विभाग
(४५—४७ अपोलो स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई)
हैद्राबाद (दक्षिण)
इर्नाकुलम
बेलगाम
अहमदाबाद
कराची

मध्य विभाग
(भवानी पेठ, जळगांव)
इन्दौर
जबलपुर
नागपुर
अमरावती

दक्षिणी विभाग
(२८९ लिंघा चेट्टी स्ट्रीट, मद्रास)
मद्रास
सीलोन
त्रिचनापल्ली

माहेश्वरी

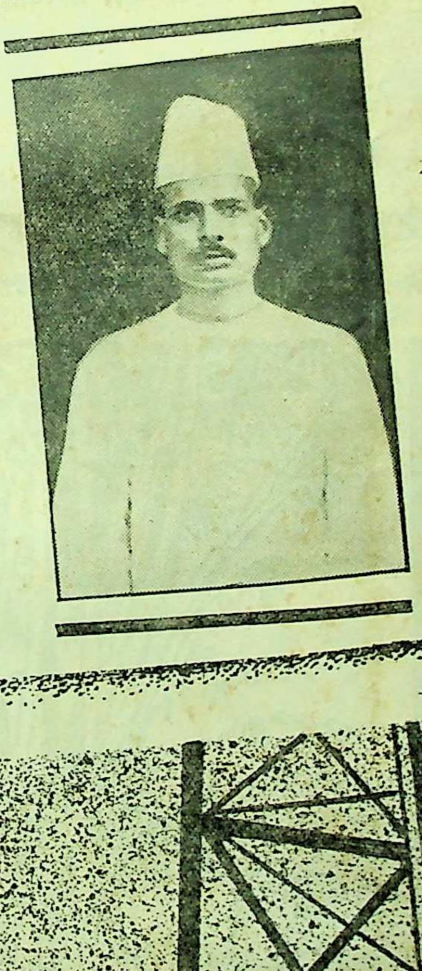

स्व. शंकरलालजी काबरा

आप तारीख २३ नवम्बर १९४२ को
इस संसार से चल बसे ।

वर्ष ३३ वा. मूल्य ३रु)·
संख्या १५ एक प्रति का।)

खिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभाका मुखपत्र

प्रवर्तक—स्व. भागीरथदासजी भूतड़ा

पाक्षिक

कार्यालय—अली चेम्बर्स, डीन लेन, फोर्ट, बम्बई.

भारतकी आज़ादी अनिवार्य है

" भारतमें हम अपनी साम्राज्यवादी सत्ता खोकर सिर्फ भारतीय जनताकी हार्दिक सहानुभूति ही नहीं प्राप्त करेंगे, वरन् उन सभी पुरुष-स्त्रियोंके सम्मानके पात्र भी होंगे जो जानते हैं कि साहस और दूरदर्शिता ही स्वतन्त्रताकी चिराग जलाये रखनेके लिये काफी है।

अगर हम भारतकी समस्या हल करनेके लिये दृढ़प्रतिज्ञ हो जायं तो समस्या हल होगी ही, लेकिन इस समस्याको हल करनेके लिये हमें भारतकी स्वतन्त्रताको सर्वप्रथम महत्त्व देना पड़ेगा और ब्रिटनकी प्रतिष्ठाको इसके बाद। अगर हम मलाया और बर्माकी नीतिसे काम न लें तो समस्या हल होगी और इस युद्धमें भारतकी पूरी सहानुभूति मिलेगी।"

—प्रो. हेरोल्ड लास्की

हिन्दुस्तान में
गेंडा-मार्का
क्राफ्ट-पेपर
बनता है
मज़बूत
चीमड़
टिकाऊ
फिर कमज़ोर और भद्दे
कागजों की रैपिंग से
अपने व्यवसाय
को क्यों हानि पहुंचाते
हैं?
ओरिएण्ट पेपर मिल्स लि०
८, रायल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता

सम्पादक
श्री. लक्ष्मीनारायण मालाणी,
श्री. राधाकृष्ण लाहोटी

माहेश्वरी

प्रकाशक
श्री. वसन्तलाल श्राफ,
बी. ए., एलएल. बी.

' उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत '

वर्ष ३३, संख्या १५] बम्बई ता. ७ दिसम्बर १९४२ [वार्षिक मूल्य ३ रुपया

प्रान्तीय शासन वास्तवमें एक खिलवाड है

डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जीने, जिन्होंने हाल-ीमें बंगालके प्रधान मण्डलसे त्याग-पत्र दिया , एक वक्तव्य दिया है जिसका कुछ मुख्य ंश नीचे दिया जाता है—

मैं कोई लम्बाचौड़ा वक्तव्य न दूंगा। जो वायसराय साहब तथा प्रान्तके गवर्नर बसे पत्रव्यवहार किया है, उसके छपने ब स्पष्ट हो जायगा। मैंने अपने साथि साथ किसी मतभेदके कारण इस्तीफा दिया, पर इसका यह अर्थ नहीं कि कोई नहीं हुआ। हमारे और उन अफसरोंके एक प्रकारका संघर्ष रहता था, जो अब शाहीवाद के पुराने विचारोंको नहीं छोड़ना हते, और मानते हैं कि वे भारतपर, प्रजाका ोध होते हुए भी, राज्य किया करेंगे। र ९ अगस्तसे, जबसे यह वर्तमान न्दोलन चला है, परिस्थिति और भी बिगड़ ई है। मैंने इस सम्बन्धमें सरकारी नीतिके त अपना विरोध दर्शाया है।

भारतका आजका प्रश्न यह है कि हम ारतीयोंके हाथोंमें हमारे देशके भविष्यको नानेकी सत्ता नहीं है। हम अपने देशके अस्तित्व तथा स्वतन्त्रताकी रक्षा करना चाहते हैं। हम किसी भी विदेशी सत्ताका शासन हीं चाहते।

वर्तमान परिस्थिति तबतक न सुधरेगी, बतक ब्रिटेनकी नीति न बदलेगी, मैंने समझौता करानेका यथाशक्ति प्रयत्न किया; परन्तु सरकारका सहकार न मिला। समझौतेका मार्ग भारतीयोंके आपसके मतभेदके कारण नहीं बंद है, वरन् सरकारकी भारतीयोंको वास्तविक सत्ता देनेकी अनिच्छा इसे बन्द किये है।

ब्रिटेनके प्रधान मंत्री मि. चर्चिल तथा भारत मंत्री बड़ी शानसे कहते हैं कि भारतके धिकांश हिस्सेमें अब भी शासन भारतीयोंके चुने हुए मंत्रियोंके हाथमें है। यदि मेरा यह वक्तव्य उन तक पहुंचने दिया जाय तो मैं बिना किसी अतिशयोक्तिके यह कह देना चाहता हूं कि यह कथित प्रान्तीय स्वराज्य एक भारी ढोंग है। मंत्रियोंकी जिम्मेदारी तो भारी होती है, परन्तु जनताकी स्वतन्त्रता तथा अधिकारोंकी रक्षाके सम्बन्धमें उनकी सत्ता नगण्य होती है। बहुत-सी महत्वपूर्ण बातोंके सम्बन्धमें गवर्नर साहबने हमारी रायकी उपेक्षा की है तथा सरकारी अफसरों की सलाहके अनुसार काम किया है। यदि ब्रिटेनके प्रधान मंत्री इन बातोंकी जांच करें तो उन्हें अपनी बातोंके खोखलापनका पता लग जायगा।

मेरे त्याग-पत्र देनेके मुख्य दो कारण हैं, एक तो सामूहिक दण्डकी नीति तथा मेदनीपुर जिलेके सम्बन्धमें नीति। बंगालमें अक्सर हिन्दुओंपर ही जुर्माने किये गये हैं, चाहे वे दोषी हों या नहीं। गवर्नर साहबने इस सम्बन्धमें किसी प्रकार दखल देनेसे इन्कार कर दिया, हालांकि हमने अनेक बार इनके लिये कहा।

मेदनीपुरके सम्बन्धमें हम अराजकताको प्रोत्साहन नहीं देना चाहते। पर वहां जो घोर दमन हुआ है वह तो असाधारण है। हमारे हाथमें न तो जांच करनेकी सत्ता है न हम वहांके अफसरोंको कोई आदेश दे सकते हैं और इसका वीभत्स स्वरूप तो हालके भयङ्कर तूफानके बादमें प्रकट होता है। सरकारी अफसरोंने तूफानकी खबर दबा रखने तथा फौरन ही सहायता न पहुँचानेमें अपने कर्त्तव्यके प्रति भयङ्कर उदासीनता दिखाई और हम इसमें गवर्नर तथा दूसरे अफसरोंके सहानुभूतिपूर्ण रवैयेके कारण कोई परिवर्तन न करा सके। वहां एक साथ ही सहायता देनेका तथा दमनका काम चल रहा है, हालांकि हमने इसका विरोध किया है। ऐसी दशामें तो सहायताकार्य बिलकुल निरर्थक बन जाता है। यह कैसी अमानुषिकता है!

इन दोनों बातोंके सम्बन्धमें जनमतको उत्तेजित करनेकी आवश्यकता है, जिससे इस प्रकार अविचारों व प्रतिक्रियावादी शासनका हम अन्त ला सकें। हमारे मन्त्रिमण्डलमें इस सम्बन्धमें एक ही विचार है, और शायद दो मन्त्री और किसी समय त्यागपत्र दे दें। हम देशकी स्वतन्त्रता अपने त्याग व दुःख सहनेकी शक्तिसे ही प्राप्त कर सकेंगे। हमें एक होकर सब प्रकारके अत्याचारोंका सामना करना चाहिये।

[डा. मुकर्जीका बंगाल गवर्नरको पत्र]

अपने पदत्यागके कारण बताते हुए बंगालके गवर्नरको मैंने एक पत्र लिखा था जिसमें मैंने बताया था कि हम लोग विदेशी सत्तासे छुटकारा पाना चाहते हैं। अब आप हम लोगों की आंखोंमें धूल नहीं झोंक सकते और न विश्वास दिला सकते हैं कि अंगरेज़ हमारे रक्षक हैं। भारतके प्रतिनिधि, इसलिये चाहते हैं कि उनके देशका शासन उनके अपने देशवासियों द्वारा ही चलाया जाय। नौकरशाहीके पिट्ठुओं या गवर्नरोंको उसमें दखल देनेका कोई हक नहीं है। मेरे इस्तीफे देनेके दो कारण हैं। पहला कारण यह है कि देशकी वर्तमान परिस्थितिके प्रति सरकारका जो रुख है उसका मैं अगस्तसे ही विरोध करता आ रहा हूं, और आपको मैंने सबसे पहले (९ अगस्तको ही) इसकी सूचना दी थी। लेकिन इसमें भारत सरकारका दोष है, आपका इसमें कोई हाथ नहीं है। लेकिन दूसरे कारणसे तो आप ही का सम्बन्ध है। आप अकारण मंत्रिमण्डलकी कार्रवाइयोंमें हस्तक्षेप करते रहे हैं जिससे प्रांतीय स्वराज्य एक तमाशा मात्र रह गया है। आप बंगालकी राजनीतिक परिस्थितिमें काफी तब्दीली ला सकते थे—खासकर ऐसे समयमें जब बंगाल एक उत्तर-पूर्वी युद्ध-सीमा बन गया है—लेकिन आपने कुछ नहीं किया जिससे स्थिति सुधरे।

'वायसरायको मैंने जो पत्र लिखा है उससे मेरे विचार स्पष्ट हो जाते हैं। लेकिन जब आपको भारत सरकारकी नीतिके बारेमें सामूहिक आन्दोलनसे पूर्व आदेश मिला तो आपने विचित्र रुख अख्तियार किया। प्रधान मंत्रीने कहा कि भारत सरकारके पत्रपर बंगाल मंत्रिमंडल द्वारा सम्मिलित रूपसे विचार करना अच्छा होगा—लेकिन आपने इस सलाहको अस्वीकार दिया और प्रधान मन्त्रीसे आपने कहा कि वे इस पत्रको दूसरे मन्त्रियोंसे छिपा रखें। कुछ स्थायी अफसरोंने पत्र देख लिया और उन्होंने भारत सरकारका

(शेष पृष्ठ १९ के कॉलम ४ पर)

गीत :

रचयिता
श्री रमेशचन्द्रजी माहेश्वरी 'प्रदीप'

★

कह न दे इतिहास कायर !
दीन मानव, हीन मानव,
रे, विवश गमगीन मानव,
भर रहा निश्वास ठंडी, मौन क्यों बैठा डगरपर !
रे विमुख होकर समर से,
भागकर जीवन-डगर से,
चाहता निर्जन बसेरा, क्या पराजय का तुझे डर !
आज तू 'स्व' को बिसारे,
हेरता नभके सितारे,
नीर नयनोंसे तुम्हारे, कौनसा उरमें बिंधा शर !
स्वयम् को पहिचान मानव,
यह पतन तेरा पराभव,
आज कर अभियान, रे तू, जोश—ज्वालासे हृदय भर !
कह न दे इतिहास कायर !

माहेश्वरी

" कर्मण्येवाधिकारस्ते
मा फलेषु कदाचन "

बम्बई ता० ७ दिसम्बर १९४२

स्व. शंकरलालजी काबरा

न जाने कितनी ही बार हम कथनको याद करते आ रहे हैं कि " जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्ममृतस्य च । तस्मादपरिहार्येर्थे नत्वं शोचितुमर्हसि " और बचपनसे ही हम यह पाठ पढ़ते आये हैं कि मिट्टीसे हम बने हैं और मिट्टीमें ही मिल जायेंगे, कूचकी नौबत प्रतिक्षण बज रही है, कोई आज गया है, कोई कल गया है तो कोई ' जावन काज ' तैयार खड़ा है । जीवनचक्र की एसी गतिविधिको देखते हुए भी मनुष्य अपने सांसारिक खेलोंकी ओर आंखमिचौनी करता रहता है । किन्तु फिर भी उस पर जब दुःखका बोझ आ पाता है, तो उसका हृदय रो देता है । जहां श्री. लक्ष्मणजीको शक्ति लगनसे मूर्छित हुए देख श्री. रामचन्द्रजी विव्हल हो जाते हैं, या जिनके सखा-संगी श्रीकृष्ण जैसे सहायक हैं, वैसे युधिष्ठिर भी भारत-युद्धके समाप्त होनेपर रणक्षेत्रपर स्वजन-परिजनोंके परिवारका नाश देखकर धैर्यच्युत हो जाते हैं वहां हम जैसे साधारण प्राणियोंकी कथा ही क्या ?

हम इस बातकी कल्पना भी नहीं कर सकते थे कि भाई शंकरलालजी काबराके पार्थिव शरीरके दर्शनोंसे हमें इतना जल्दी वंचित होना पड़ेगा । केवल मारवाड़ी समाजमें ही नहीं अपितु महाराष्ट्रभरमें ऐसे बहुत थोडे लोग होंगे जिन्होंने अपना सारा जीवन देशके चरणोंमें उत्सर्ग कर दिया हो । खानदेशके एक कोनेमें एक कुटीरके पुष्पकी भांति भाई शंकरलालजी काबरा उगे, और बिना किसी प्रकारकी प्रसिद्धिकी कामना किए, अपना सारा सौरभ वहीं समाप्त कर विला गए ।

सन् १८९९ में एरंडोलके सुप्रसिद्ध काबरा परिवारमें श्री. मोतीरामजीके यहां उनका जन्म हुआ था । श्री. शंकरलालजीकी बुद्धि बचपनसे ही प्रखर और सतेज थी । अपने अध्ययन कालमें हमेशा वे अपनी क्लासमें प्रथम रहते थे । सेवा और परोपकारके सद्गुणोंकी झलक बचपन से ही उनमें दृष्टिगोचर होती थी । परीक्षामें सर्व प्रथम रहनेके कारण उन्हें जो भी पारितोषिक आदि मिलते थे, उनका अपने निजके लिए उपयोग न कर वे दूसरे गरीब-विद्यार्थियोंमें ही उन्हें बांट देते थे ।

उनसे हमारा परिचय बिलकुल अकल्पित रूपसे हुआ था । संवत् १९७६ की वे धुंधली स्मृतियां अब भी याद आती हैं, जब कि पूनामें बंबई प्रान्तीय माहेश्वरी महासभाके तृतीय अधिवेशनकी तैयारियां हो रही थी । उन दिनों भाई शंकरलालजी काबरा और श्री शंकरलालजी मानधण्या पूनाके फर्ग्यूसन कॉलेजमें पढ़ते थे । एक दिन सायंकाल वे दोनों स्वागत समितिके दफ्तरमें पधारे और अपना नाम स्वयंसेवकोंकी श्रेणीमें दर्ज करा गये । पूनाके उस अधिवेशनको सफल बनानेमें उन्होंने अपनी ओरसे काफी परिश्रम उठाया ।

भाई शंकरलालजी काबराके दिलमें बचपनसे ही देशसेवा की उमंग थी । भारतकी आज़ादीके लिए उनका दिल तड़प रहा था । डॉ. सावरकर की प्रेरणासे उनमें ये भावनाएं और पनपीं और सन् २० के असहकार आंदोलनमें वे लॉ कॉलेजकी अपनी पढ़ाई बन्द कर उसमें शामिल हो गए । उनका दिल पराधीनताके दुःख और स्वाधीनता प्राप्तिके लिए कितना उत्कट रूपसे तड़प रहा था, इसका हमें उन दिनोंके उनके मित्रोंपर लिखे जोशीले पत्रोंसे पता चलता है । उन पत्रोंने अनेक मित्रोंको देशके प्रति कर्तव्य-भावनासे जागृत होने की प्रेरणा दी थी ।

विदेशी शिक्षाप्रणालीमें शिक्षा पाकर भी कभी उनके मनमें उस ओर मोह पैदा नहीं हुआ था । उन्होंने यद्यपि बी. ए. पास किया था, किन्तु अपनेका विभूषित करनेके लिए कभी भी अपने नामके पीछे बी. ए. नहीं लगाया । असहयोग आंदोलन जोरोंसे चल रहा था, उनकी परीक्षा का परिणाम आया और वे प्रथम श्रेणीमें उत्तीर्ण हुए, इस समाचारको सुनानेके लिए जब उनके छोटे भाई उनके पास गये, तब उन्होंने उसे मीठी चपत देकर कहा कि इस सफलता पर क्या खुशी मना रहा है, खुशी तो तब मनानी चाहिए जब कि हम माताकी खातिर अपने प्राणोंकी बलि देनेमें सफल हो जायं । उनका यह एक ही वाक्य उनके दिल की छिपी वेदनाको व्यक्त करनेके लिए काफी होगा ।

जो भावना उनके दिलमें काम कर रही थी उसीको पनपानेके लिए वे तपस्या कर रहे थे । सन् १९३० का स्वातंत्र्य-युद्ध छिड़ा । माताकी पुकार आयी, देशके कोने-कोनेसे हजारों-लाखों आदमी मैदानमें आये । इस अवस्थामें भाई शंकरलालजी भला कैसे घरपर रह सकते थे ? वे भी एक सैनिकके रूपमें मैदानमें आ खड़े हुए । घर पर पत्नी रोग-शय्या पर पड़ी हुई थी । सारे घरवाले उन्हें इस अवस्थामें संग्राममें भाग लेनेको रोक रहे थे किन्तु रणभेरी और नगाड़ेकी आवाज सुनकर जैसे राजपूतका खुन उबल उठता है वैसे ही माँकी पुकार सुनकर शंकरलालजी भी स्वातंत्र्य युद्धमें कूद पड़े । उनकी नसनसमें भारतमाताकी सेवाके भाव उमड़ रहे थे । वे कहां रुकने वाले थे ? परदेशी सरकारने उन्हें छः मासके कारावासकी सजा देकर जेलके सीखचोंमें बन्द कर दिया । जेलकी मियाद समाप्त कर घर आये तो देखा कि घर तो सूना पड़ा है । सहधर्मिणी पत्नीका अवसान हो गया था । स्वजन-संबंधी दूसरे विवाहके लिए जोर देने लगे । लेकिन जिसके दिलमें माताके चरण-सेवाकी लौ लगी हो, उसे भला सांसारिक सुखोंकी ओर लौटने की फुरसत मिल सकती है क्या ? वे तो फिर जोरशोरसे कार्य करने लगे और भारतके स्वतंत्रता प्रेमियोंके लिए जो स्थान नियुक्त किया हुआ है उन्होंने भी एक सालके लिए फिर अपना डेरा वहां डाला । सरकारने उन्हें जलील करनेमें कुछ उठा न रखा । किन्तु वे विचलित नहीं हुए ।

देशसेवाका जहां २ भी काम हो, चाहे छोटा हो या बड़ा, भाई शंकरलालजी वहीं दौड़ जाते । अपने नामकी प्रसिद्धिकी उन्हें तनिक भी परवाह नहीं की । कांग्रेसने जब निश्चय किया कि उसका वार्षिक बृहदाधिवेशन शहरोंमें न होकर गांवोंमें हो और इस निश्चयके मुताबिक सर्व-प्रथम ग्राम-अधिवेशन जब फैज़पुरमें होने जा रहा था, तब वे भी अपने दल-बल समेत वहां पहुंच गये और श्री. शंकरराव देव आदि अपने सहयोगियोंको उन्होंने जो अमूल्य सहयोग प्रदान किया वह वर्णनातीत है । फैज़पुर अधिवेशनमें भोजन विभागकी सारी जिम्मेवारी उन पर थी और उन्होंने इस कठोर सेवाव्रतको किस सुंदर ढंगसे निबाहा यह वहां उपस्थित होने वाले सब भाई जानते हैं ।

कांग्रेसके मंत्रि-मण्डल बने और जब यह तय हुआ कि म्युनिसिपलिटी, लोकल-बोर्ड आदिमें कांग्रेसके प्रतिनिधि जाकर जनताकी अधिकाधिक सेवा करें, तब भाई शंकरलालजीको लोगोंने बहुत ही आग्रहपूर्वक लोकल-बोर्डके चुनावके लिए उम्मीदवारके तौर पर खड़ा किया और प्रजाने उन्हें निर्विरोध रूपसे एक-मत हो चुना तथा अपना चेयरमैन बनाया । उन्होंने अपने कार्यकालमें लोकल-बोर्डके जरिये जनताकी जो सेवाएं की हैं, वह खानदेशके लोग अन्ततक भूले नहीं हैं ।

भाई शंकरलालजीकी एक विशेषता यह भी थी कि वे जिस कार्यमें पड़ जाते थे, उसमें अपने को एकरस कर देते थे । कई विद्यार्थियोंको उन्होंने आर्थिक सहायताएं दी हैं, और केवल यही नहीं, उन विद्यार्थियोंके चरित्रगठन में भी उन्होंने गहरा परिश्रम उठाया है । आज खानदेश में राष्ट्रीय जागरणकी जो ज्योत हम देख रहे हैं, उसे प्रज्वलित रखनेमें भाई शंकरलालजीका ही प्रमुख हाथ है । ' माहेश्वरी ' के पाठकोंने देखा ही होगा कि खानदेशके कितने आदमियोंने इस आंदोलनमें भाग लिया है । इन सबके अधिनायक भाई शंकरलालजी ही थे ।

इन दिनोंमें उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता था । रातदिनके अथक परिश्रम और आज़ादीकी चिन्ता उन पर सवार थी । और इसीसे वे दिनप्रतिदिन क्षीण व दुर्बल होते जा रहे थे । ता. ९ अगस्तके दिन महात्माजीको पकड़ते ही देशमें गिरफ्तारियोंका जो विराट् सत्र सरकारने प्रारंभ किया, उसमेंसे वे भी कब बच सकते थे ? हालांकि वे रोगशय्यापर पड़े हुए थे, पुलिस उनको वहांसे उठाकर अधिकारियोंके पास ले गई । अधिकारियोंने चाहा कि वे इनको लिखित रूपसे यह आश्वासन दें कि वे इस आंदोल में हिस्सा न लेंगे । लेकिन काबराजी भला क्यों करते ! इस पर उनसे यह भी गया कि लिखित न सही तो सिर्फ मौखि आश्वासन ही दे दें; किन्तु इसमें भी पुलि कर्मचारी सफल नहीं हुए । भाई शंकरलाल ने इस प्रकार वचनबद्ध होना नामंजूर कि और अंतमें सरकारने उन्हें मजबूरन् कर दिया । वे रोगशय्यमें पड़े हुए लेकिन उनका रोम रोम आज़ादी यज्ञमें आहुति देनेको तड़प रहा था ।

गत सितम्बरके आखिरी सप्ताहकी है । मैं किसी कार्यवश जलगाँव गया वहां उनके दर्शन किये । डाक्टरने बात करनेको मना की थी । किन्तु मैंने देखा जिनका समस्त तन-मन देशके लिए हो रहा था, उनकी वाणी चाहे रहे, मस्तिष्कमें तो विचारोंका तूफान रहा था ।

भाई शंकरलालजी यद्यपि कोई नहीं थे, किन्तु उन्होंने अपने जीवनमें कोको उदार हाथोंसे सहायता की वास्तवमें उन्होंने सन्यस्तधर्म अंगीकार किया था । काषायाम्बर परिधान न करते हुए भी वे सच्चे निष्काम सन्यासी थे हजारों रुपये चुपचाप लोगोंकी सहायता उन्होंने लगाये और मृत्युके १९ हजारका सार्वजनिक दान किया भाई शंकरलालजी जैसे बहुत विरल व्यक्ति मिलेंगे जिन्होंने अपना तन-मन-धन, चन्दन की भांति देशहितार्थ घिस दिया हो ।

आज पार्थिव रूपमें भले ही भाई शंकरलालजी हमारे बीच न रहे हों, किन्तु जिस भूमिमें वे अपना पार्थिव शरीर छोड़ गए उसके कण कण हवाके झकोरोंने वायुमंडलमें बिखेर दिए हैं । वे कण संसारमें व्याप्त होकर कह उठेंगे—" कौन कहता है कि उस प्रभातमें मैं न हूंगा, तब सभी क्रीड़ा कौतुकमें मैं यहीं हूंगा । तुम मुझे नये नामसे पुकारोगे, नयी बाहु वल्लरीमें बांधोगे, चिरंतन मैं फिर आऊंगा । "

हम जानते हैं कि भाई शंकरलालजीके जीवनकी बूंद बूंद माँकी उस पुकारको सुनकर आज शांतिके महासागरमें विलीन हो है । यही पुकार सुनते हुए वे योद्धाकी भांति जीवन भर जूझे इसी लक्ष्यको सन्मुख रखते हुए इहलोकसे बिदा हुए । ऐसे माँके दुलारे तपस्वी देशसेवक की मृत्यु पर शोक करना उनके गौरव शिथिलता ला देगा—कविके शब्दोंमें हम तो यही कहेंगे कि : " It is the death that dead, not he. "

पूज्य माताजी, और बहन यमुना एवं अन्य स्वकीय जनोंको हम और क्या दिलासा दे सकते हैं ? वे उनके ही नहीं थे, सारे देशके थे । देशवासी उन्हें नहीं भूल सकेंगे । आज़ादीके युद्धमें उनकी याद हमें हमेशा बढ़ावा देगी और इसीसे भाई शंकरलालजीकी आत्माको शांति मिलेगी ।

आदर्श राष्ट्र-सेविका

श्रीमती सावित्री देवी बियाणी

संस्मरणात्मक परिचय

श्री. विश्वम्भर प्रसादजी शर्मा

१९३० के वे तूफ़ानी दिन ! आज भी वह याद मुर्दे दिलोंमें जिंदगी फूंकने की सामर्थ्य रखती है। भारतका सोया शौर्य उस वक्त जाग उठा था। कोई जेलखाना ऐसा बाकी न था जहां सत्याग्रहियोंने उसे ठूंस ठूंस कर भर न दिया हो। अहिंसा और शांतिके आधार पर ऐसा भीषण, देशव्यापी आंदोलन विश्व इतिहास की नई घटना थी। भारतका पुरुष-वर्ग तो जागा ही, महिला-वर्ग भी चेता। सैकड़ों क्या हजारों वर्षोंके बाद भारतीय महिलाओंको सबसे पहले अपनी अनन्त शक्तिका भान हुआ और विश्ववंद्य महात्मा गांधीजी की कृपासे वह यह समझीं कि घरके बाहर भी उनके लिये एक निस्सीम कार्यक्षेत्र है जहां उनका सहयोग ज़रूरी है। राष्ट्र और समाजके निर्माणमें जब पुरुषके साथ स्त्री का भी योग है तो क्या उसके उत्थानके लिये उसका सहयोग ज़रूरी न होगा ? वह भी जागी—रूढ़ियों और सामाजिक बंधनोंको तोड़ कर वह मैदानमें उतर पड़ीं। भाइयोंके कंधेके साथ कंधा मिलाकर भारतीय बहनोंने सत्याग्रह आंदोलनमें प्राण फूंका। उन्होंने जुलूस निकाले, सभाएं कीं, जोशीले व्याख्यानों द्वारा मुर्दोंमें चेतना पैदा की, लाठियां खाईं और जेलखानोंकी यातनाएं भोगीं। मगर शराब की दुकानों पर पिकेटिंग करके उन्होंने जिस अदम्य साहस और निस्सीम धैर्य का परिचय दिया वह दुनियांकी एक अमर कहानी बन गई है।

× × ×

गांधीजीके समक्ष जिस समय महिलाओं द्वारा शराबकी दुकानों पर पिकेटिंगका प्रश्न उपस्थित था, उस समय आम लोग इस बातके विरोधी थे कि स्त्रियां शराब की भट्टियों पर पिकेटिंग करें जहां दिनरात गुंडे और बदमाश घूमा करते हैं, मगर गांधीजी तो दिव्य दृष्टा हैं। उन्होंने देखा कि इन शराबियों और गुंडों का हृदय परिवर्त्तन अगर होगा तो बहनोंके पिकेटिंगसे ही होगा। महिलाएं त्याग, तपस्या और शांति की ज्वलंत मूर्ति हैं। गुंडों की ताक़त नहीं है कि उनके मुकाबले पर टिक सकें। और इस प्रयोगमें गांधीजी सफल हुए। मगर इस दिशामें काफी विरोध हुआ। अकोलामें विदर्भ प्रांतके सत्याग्रह आंदोलनके सूत्रधार माननीय श्री. ब्रिजलालजी बियाणी गांधीजीके कट्टर अनुयायी हैं और उन्होंने भी लोगोंकी असहमतिके बावजूद शराबकी दुकानों पर महिलाओं द्वारा पिकेटिंग जारी रखा। लेकिन एक दिन स्थिति काफ़ी उग्र बन गई। उस दिन शराब की दुकानों पर गुंडोंका दल घूमता हुआ देखकर प्रतिष्ठित व्यक्तियोंका एक डेपूटेशन बियाणीजीसे मिला और महिलाओं द्वारा पिकेटिंग बंद करनेका प्रबल अनुरोध किया। मगर बियाणीजी कब विचलित होने वाले थे! उन्होंने अपनी अकाट्य दलीलोंसे डेपूटेशनके सदस्योंको

श्रीमती सावित्रीदेवीजी बियाणी

निरुत्तर कर दिया। अधिकांश महिला पिकेटर महाराष्ट्रीयन थीं अतः डेपूटेशनके एक महाराष्ट्रीय सदस्य ने गर्म होकर यह उलाहना दिया कि 'महिला पिकेटरोंमें प्रायः सभी महाराष्ट्रीयन स्त्रियां हैं, शायद आप इसी लिये झुकनेको तैयार नहीं हैं। अगर आपके समाजकी स्त्रियां होतीं तो हम देखते कि आप इतने दृढ़ रहते हैं।" बियाणीजीने अपनी सहज मुस्कराहटमें जवाब दिया कि, 'मेरा समाज तो आप सब हैं, पृथक् समाज कोई नहीं है लेकिन मैं यह प्रयत्न करूंगा कि महाराष्ट्रीय बहनें पिकेटिंग करें'

+ + +

दूसरे दिन अकोलामें काफी सनसनी फैली थी। शराबके दुकानदारोंने आज खास तौर पर गुंडे बुलाये थे। लोग देखना चाहते थे कि बियाणीजी कैसे नियंत्रण करते हैं और किससे पिकेटिंग कराना चाहते हैं। सायंकाल ४ बजे शराबकी दुकान पर भीड़ ही हो गई, पिकेटिंगका वही वक्त था। ठीक समय पर कांग्रेसकी कारसे हाथमें तिरंगा झण्डा लिये एक सौम्य-शांत–स्वरूपा देवी निकलीं और चुपचाप शराबकी दुकानके आगे जा खड़ी हुई। भीड़की उत्सुकता बढ़ी। लोग पहचान न सके कि आज यह नई सत्याग्रही बहन कौन हैं, जो गुण्डोंके आतंकमें अडिग रहकर पिकेटिंग कर सकती हैं। गुंडे एक तरफ़ बैठे थे और भीड़का कोलाहल जारी था। उस महिलाने हाथ जोड़ कर भीड़से शांत रहने और दूर हटकर खड़े होनेका अनुरोध किया और कहा कि "शराब पीनेवाला नहीं समझता कि यह ज़हर है जिसे पीकर वह अपनी मनुष्यताको तो खोता ही है लेकिन इससे वह अपने परिवारको संकटमें डालता है और अपने राष्ट्रकी संपत्ति को बर्बाद करता है। गुंडे और शराबी भी हमारे भाई हैं, हमारा धर्म उन्हें समझाना और सुमार्ग पर लाना है और अगर इस पवित्र कार्यमें हमें कष्ट और अपमान भी उठाना पड़े तो भी हम इस कर्तव्यसे पीछे न होंगे।"

* * *

एक सौम्य प्रकृति महिलाके मुखसे ऐसी निर्भीक और निर्दोष वाणी सुन कर लोग आश्चर्यमें पड़ गये। महात्मा गांधीजीके जयघोषसे आकाश गूंज उठा और गुंडे एक एक करके वहांसे खिसकने लगे। भीड़मेंसे एकने पूछा कि आखिर यह है कौन महिला ? निश्चय ही यह कोई महाराष्ट्रीयन नहीं है। इतनेमें एक आवाज आई, "अरे यह बियाणीजीकी पत्नी सौ० सावित्रीबाई हैं।" और भीड़ने 'सावित्रीदेवीकी जय' के नारेसे आकाशको गुंजा दिया। जो डेपूटेशन पहले दिन बियाणीजीसे महिलाओंका शराबकी दुकानों पर पिकेटिंग बंद करनेका अनुरोध करने गया था उसके सदस्य भी उस भीड़में मौजूद थे। उनके विरोधका बियाणीजी ऐसा उपयुक्त उत्तर देंगे, इसकी उन्हें कल्पना न भी न थी। शराबके दुकानदारने बियाणीजीसे क्षमा मांगी और आश्वासन दिया कि या तो उसकी दुकान बंद रहेगी या वहां एक भी गुंडा न आ सकेगा।

आज से १३ वर्ष पूर्व की यह घटना है और यही श्रीमती सावित्रीदेवी बियाणी के सार्वजनिक जीवनकी पृष्ठभूमि है। उस समय उन्होंने पर्दा छोड़ा ही था और पिकेटिंग के लिये प्रस्तुत होना तो दूर वे घर के और बिरादरीके शिष्ट पुरुषों के समक्ष आने और चर्चा करने में भी संकोच करती थीं। लेकिन गांधीजी की कृपासे भारत की हजारों बहनें, जिनकी इसी प्रकार के संकोच में जिन्दगी डूबी हुई थी, बाहर निकलीं और देशकी आज़ादीके आंदोलन में अपने अनोखे उत्सर्ग से जान फूंकी। श्रीमती बियाणी भी इसी श्रेणी की महिला हैं। आज तो वे एक सभा में कांग्रेसकी संदेश देनेका प्रयत्न करने के अपराध में दंडित होकर अकोलाके कारागृह में कैद भोग रही हैं। पिछले १५ वर्षोंमें और उससे पहले भी १९२१-२२ से यों तो वह अपने देशभक्त, एक राष्ट्र-सेवी पतिकी सच्ची अनुगामिनी हैं और उन्होंने भले ही सभामंचोंपर आ के भाषण न दिया हो, जेल न गई हों और कांग्रेस संस्थामें कोई पद ग्रहण न किया हो; मगर राष्ट्रके उत्थान के लिये अपने पतिद्वारा किये गये गंभीर प्रयत्नोंमें उनका बराबरीका किन्तु मूक, सहयोग अवश्य रहा है। श्रीमती बियाणी साधारण पढ़ी–लिखी महिला हैं, बहुत मितभाषी, शांत-सौम्य, आडम्बर और फैशनसे कोसों दूर। कृत्रिमताने मानों उन्हें छुआ तक नहीं। दिन रात अपने गृहस्थके साज-संवार, बच्चोंकी देखभाल, पतिकी प्रसन्नता, आराम और आनेवाले अनेक अतिथियों की सेवा-शुश्रुषामें ही वे अपनेको भूली रहती हैं।

आजसे ३२ वर्ष पहले श्रीमान् ब्रिजलालजी बियाणीके साथ उनका विवाह हुआ। उस समय बियाणीजी मैट्रिकमें पढ़ते थे और उनकी नववधू श्रीमती सावित्रीदेवी उस वक्त एक अबोध बालिका ही थीं-१२-१३ वर्षसे ज्यादा उनकी उम्र न होगी, मगर उस वक्त भी उनके भीतर इतनी समझदारी थी कि अपने पति बियाणीजीसे उनका यही प्रेमावरोध रहता था कि वे अपना पढ़ना न छोड़ें। १९२१ में बियाणीजीके

(शेष पृष्ठ १५ के कालम ४ पर)

श्री रामस्वरूपजी गुप्त, एम्. ए., एम्. एल्. ए., कानपुर

आप नवम्बरके प्रारम्भमें ही गिरफतार कर लिए गये थे। आपकी गिरफतारी बड़ी ही करुण परिस्थितिमें हुई थी। पुखरायामें (जहां के आप मूल निवासी हैं) आपके पिताजी मृत्यु-शय्या पर पडे थे, और आप उन्हें ही देखने गये थे, जब कि गिरफतार कर लिए गए। इसके दो दिन बाद ही आपके पिताजी की मृत्यु हो गई। इसके बाद आपको १४ दिनके पेरोल पर छोड़ा गया था और १४ दिन बाद गत २६ नवम्बर को आपको फिरसे गिरफतार कर लिया गया है।

हिन्दुस्तानकी आज़ादी क्यों और किसलिए

पं. जवाहरलाल नेहरू

[यह लेख पं. जवाहरलालने भारतकी आज़ादीकी मांगके यथार्थ मर्म व महत्वको समझानेकी दृष्टिसे अमेरिकाक सुप्रसिद्ध पत्र ‘ Fortune ’ में लिखा था। आपने इसमें भारतीय समस्याका अत्यन्त ही सुन्दर साथ ही अधिकारपूर्ण चित्रण किया है।]

भारतसे संबंधित मसले पर ‘Fortune’ के कालमोंमें लिखनेके मौकेका मैं स्वागत करता हूं। ये समस्यायें अब केवल हमीसे संबंधित नहीं रहीं; इनका सारी दुनियांसे ताल्लुक है। इनका आजकी पूरी अन्तर्राष्ट्रीय हालत पर असर पड़ता है। केवल इतनेसे ही बस नहीं। भावी घटनाओंके स्वरूप पर भी इनका प्रभाव पड़ेगा। आज दुनियांमें जो जबदस्त कशमकश जारी है, उसे मद्देनजर रखते हुए या इस जंग के राजनीतिक, माली या व्यापारिक नतीजोंको ध्यानमें रखते हुए, जिस किसी दृष्टिबिंदुसे हम इस पर सोचें, ४० करोड़ लोगोंका भविष्य बहुत अहमियत रखता है। ये लाखों लोग अब तटस्थ दर्शक नहीं रहे, जो कि इन चीज़ोंको किस्मत लिखा समझ कर निश्चेष्ट होकर चुप बैठे हों। वे क्रियाशील हैं और जमानेके साथ कदम बढ़ाना चाहते हैं। उनमें अपने भाग्यविधाता बनने की इच्छा और अपनी इच्छाओंके मुताबिक अपना भावी बनाने की भूख जागृत हो गई है।

केवल सहानुभूति नहीं

प्रजातंत्र तथा आज़ादीके लिये लड़ा जानेवाला भारतीय आंदोलन कई अमेरिकनों को अपनी ओर आकर्षित करनेमें समर्थ हुआ है; पर आज हम जिस संकटसे गुज़र रहे हैं उसमें पारस्परिक सहानुभूति प्रदर्शन या एक दूसरेके प्रति श्रद्धा की भावना की अभिव्यक्तिसे काम नहीं चलनेका। हमें अपनी समस्याओं पर किसी खास उद्देश्य तथा निष्फल दृष्टिसे विचार कर उन्हें हल करनेका प्रयत्न करना चाहिये; अन्यथा ये समस्यायें निःसंदेह हमारे ऊपर छा जायंगी और सचमुच उनके छा जानेका भय पैदा भी हो गया है। यह इतिहासकी सीख है और इसे भुलाना खतरा मोल लेना है। अतः हमें अपनी समस्या पर मानवीय दृष्टिसे नहीं—यद्यपि मानविय दृष्टि बिन्दु बड़ी अच्छी चीज है, बल्कि विज्ञान सम्मत सोफेष्टिक दृष्टिकोणसे विचार करना चाहिए।

अमेरिकाकी शताब्दि

कहा जाता है कि आगामी शताब्दि अमेरिकाकी शताब्दि रहेगी। निःसंदेह अमेरिकाका आनेवाले समयमें बहुत ही महत्वपूर्ण ‘ रोल ’ रहेगा। अमेरिकामें नव-जीवन है, और है बढ़नेकी बलवती भावना। योरोपके के छोटे और खोखले देश, जहां कि चिरंतन संघर्ष जारी रहता है, अब संसारपर नियंत्रण नहीं रख सकते। योरोप अपनी सफलताओं पर गर्व कर सकता है। यह सफलता कायम रहेगी और कदाचित फूले और फले भी, पर यह तभी होगा जब कि दूसरे पर शासन करनेकी उसकी मनोवृत्ति का अंत हो जायगा।

अगर अगली शताब्दिमें अमेरिकाका बोलबाला रहा तो एशियाका भी रहेगा। नवजीवन-प्राप्त एशिया-जिसकी शक्ति का स्रोत उसकी पुरातन संस्कृति रहेगी और जिसकी रगोंमें दौड़ा करेगा वर्तमान विज्ञान का गरम खून। हम लोगोंमें बहुतोंकी आदत एशियाको पिछड़ा हुआ समझनेकी पड़ गई है, क्योंकि लगभग २०० वर्षों तक योरोपका उसपर आधिपत्य रहा और वह उन सभी आर्थिक व आध्यात्मिक विषमताओंका जो गुलामीके निश्चित परिणाम हैं, शिकार रहा। हम एशियाके सुदीर्घ-कालीन भूतको भूल जाते हैं जब कि क्या आर्थिक, क्या राजनीतिक और क्या सांस्कृतिक सभी दृष्टियोंसे उसका गौरवपूर्ण स्थान था। इस लम्बी अवधिमें पिछली दो शताब्दियां एक संक्षिप्त प्रकरण मात्र हैं। जिसका अब अंत हो रहा है। एशिया, जैसा कि पहले कई बार हुआ है, तभी शक्ति, तथा ताकतके साथ फिरसे उठेगा। इतिहासको आश्चर्यजनक घटनाओंमें भारत और चीन द्वारा पतनावस्थासे बार २ ऊपर उठना तथा हजारों वर्षों तक अपनी संस्कृति भी निर्बाध रूपसे बनाते रखना है। स्पष्टतः उनकी शक्तिका स्रोत बहुत विशाल और अक्षय है। भारतीय सभ्यताके बाल सफेद हो गये थे जब कि यूनानी सभ्यताका कुसुम अपनी पूर्ण सुन्दरताके साथ खिल रहा था। दोनोंके बीच घनिष्ट सम्पर्क था, दोनोंके बीच बहुतसी बातें समान थीं, और जिस हद तक यूनानने भारतको प्रभावित किया उससे कहीं ज्यादा भारतका उस पर असर पड़ा था। यूनानी सभ्यताका वह कुसुम जल्द ही अपनी समस्त मधुरिमाके साथ मुरझा गया, एक महान देन अपने पीछे छोड़कर भारत सिर उठाये खड़ा ही रहा तथा उसकी संस्कृतिका विकास सर्वदा होता रहा।

परावलंबी नहीं

एशिया परावलंबी नहीं, पर सभी चीजोंमें समानताका दावा करता है। वह वर्तमान समयमें, दूसरोंके कंधेसे कंधा मिलाये रखते हुए अपना अस्तित्व कायम रखनेका दावा करता है। जनरल चांग-काई-शेक और मादमकी हालकी भारतयात्राका न केवल ऐतिहासिक महत्व है बल्कि उससे हमें उस भविष्यकी झांकी भी मिल जाती है जब कि चीन और भारत अपने तथा संसारके भलेके लिये एक दूसरेसे सहयोग करेंगे। जनरल चांग-काई-शेकने एक उल्लेखनीय बात कही थी और वह यह कि ३००० मीलकी समान सरहद रहते हुए भी भारत और चीन युगों तक एक दूसरेसे सांस्कृतिक तथा व्यापारिक संबंध बनाये रहे और कभी एक ने दूसरे पर हमला नहीं किया। दो सभ्यताओंके शांतिपूर्ण स्वरूपका यह परिचायक है।

इस आधारको मद्देनजर रखते हुए यह बात कितनी अवास्तविक-सी प्रकट होती है कि भारत ब्रिटेनके एक औपनिवेशिक पुछल्ले या अंग की भांति बना रहे और मन्थरगतिसे राष्ट्रीयता तथा स्वतंत्रताकी ओर, जैसा कि अन्य ब्रिटिश उपनिवेशोंमें हुआ है, अग्रसर हो। भूतकालमें एशियाके करोड़ों लोगोंने भारतसे स्फूर्ति ग्रहण की है। भारत उस सांस्कृतिक भंडारको जिसने कि उसे भूतकालमें शक्ति प्रदान की है, बनाये रखेगा। इसके साथ ही साथ भारतमें प्राकृतिक साधन भी मौजूद हैं। वैज्ञानिक, टेकनिकल, औद्योगिक तथा आर्थिक काबिलियत भी है उसमें, जिससे वह आजके जमानेमें एक महान् राष्ट्र बन सकता है। पर आज, इन बेड़ियोंमें जकड़ा रहनेके कारण वह अपना पार्ट अदा नहीं कर सकता। यह पार्ट इस लिये बड़ा नहीं होगा कि उसकी जनशक्ति बहुत बड़ी है; पर इसलिये कि अगर उसे मौका दिया जाये तो वह महान् औद्योगिक राष्ट्र भी बन सकता है।

सारे संसारमें जो एक जबर्दस्त इन्किलाब हो रहा है, मौजूदा जंग उसका एक हिस्सा है। उसे सिर्फ फौजी संज्ञा देना, जो कुछ हो रहा है, उसकी अहसियत को भुला देना है। कारण गहरे हैं, और यह समझना मूर्खता होगी कि मौजूदा संधि चन्द लोगोंके घमण्ड या अतृप्त लालसाके कारण है। ये लोग बुरी मनोवृत्तियोंके प्रतिनिधि हैं। पर इससे उनकी उस इच्छा का भी पता चलता है जो कि पुराने जमाने को छोड़, जिसका सन्तुलन तथा स्थायित्व नष्ट होगया है, नयेको अपनाना चाहती है। इस मनोवृत्तिको अधिकांश लोग नापसन्द करते हैं। पुरानी व्यवस्थाको उन्होंने जो चैलेंज दिया है, उसमें कुछ अंशों तक आक्रमणकारी राष्ट्रों की शक्ति निहित है। इन अनिवार्य परिवर्तनोंका विरोध तथा पुरानेको बरकरार रखनेकी कोशिश या उसके प्रति निष्क्रियताका प्रदर्शन आक्रमणकारियोंके समक्ष सिर झुका देना है। बुद्धिमान जानते हैं कि ये आक्रमणकारी ऐसे अत्याचारोंको, जैसे कि कभी नहीं हुए लादना चाहते हैं, अतः इनका विरोध होना चाहिये। इनके आगे सिर झुका देना निकृष्टतम पतनका निमंत्रण तथा आध्यात्मिक सर्वनाश है, जो कि फौजी पराजयसे भी बुरी चीज होगी। हम देखते हैं कि विशी फ्रांसमें क्या हुआ। मध्य यूरोप तथा उत्तरी चीनमें जो कुछ हुआ उससे भी हम भली भांति अवगत हैं। फिर भी संभावित इससे भी बुरी हालतका भय उन करोड़ों लोगोंको प्रभावित करनेमें असमर्थ है जो कि अपनी वर्तमान स्थितिसे पूर्ण रूपसे असन्तुष्ट हैं। अपनी निष्क्रियताकी नींदसे झझकोर कर उठानेके लिये कोई निश्चित मुक्ति मार्ग चाहते हैं—ऐसा कोई उद्देश्य जो उन्हें तत्काल लड़नेके लिये प्रेरित करे। गौरवशील व्यक्ति मौजूदा पतनावस्था तथा विपत्तिको इसलिए स्वीकार नहीं कर सकते कि इसके बाद इससे भी बुरी दशा हो जायगी। अतः जरूरत संसारको नैतिक और क्रान्तिकारी नेतृत्व करनेकी है—संसारको यह बतला देनेकी कि पुराना जमाना गुजर चुका, अब नया युग आया है। भविष्य संबंधी आश्वासन पर्याप्त नहीं; अधकचरे कदमोंसे काम नहीं चलेगा; वर्तमानका ही मूल्य है; क्योंकि युद्धमें विजय या हार जो भी कुछ होगी, इसी वक्त होगी। प्रेसीडेण्ट रूज़वेल्टने इस भविष्य तथा चार स्वतंत्रताओंकी चर्चा बड़े सुन्दर ढंगसे की है, और उनके शब्द लाखों व्यक्तियोंके दिमागमें गूंज रहे हैं। पर उनके शब्द अस्पष्ट हैं, उनसे संतोष नहीं होता। उन्हें असली रूप देनेकी कोई कार्यवाही नहीं की गई। अटलांटिक चार्टर इस आशा की पवित्र तथा अस्पष्ट अभिव्यक्ति है जिससे किसीमें उत्साह जागृत नहीं होता, पर यह भी मि. चर्चिलके शब्दोंमें भारतके लिये लागू नहीं !

अगर कान्तिकारक तथा नैतिक नेतृत्व प्रदान करनेकी तीव्र आवश्यकताको महसूस कर उसे अमली रूप देनेकी कोशिश की गई तो आक्रमणकारी राष्ट्र उस चोलेको उतारनेके लिये, जिसे पहनकर वे अपनी कु-आकांक्षाओं को छिपानेमें समर्थ हो जाते हैं, बाध्य हो जायेंगे। नात्सी अधिकृत योरोपके देश भी इससे प्रभावित होंगे। पर सबसे ज्यादा प्रभाव पड़ेगा एशिया और आफ्रिका पर। यह युद्धकी धारा ही बदल देनेमें समर्थ हो सकता है। केवल आज़ादी तथा यह विश्वास की हम अपनी आज़ादीके लिये लड़ रहे हैं, लोगोंका चीनियों और रूसियोंकी भांति लड़नेके प्रोत्साहित कर सकता है।

एशियामें योरोपियनोंके दीर्घकालीन प्रभुत्व की कटु स्मृति हमारे दिलमें हरी है। ब्रिटेन भले ही यह सोचता रहे या दावा करे कि

उसने भारत या अन्य एशियायी देशोंका भला किया है पर भारतीय तथा दूसरे एशियावासियोंका खयाल इससे विपरीत है और आज जो हम सोचते हैं उसीका मूल्य है भूतकालीन कटुता तथा संघर्षको भुलाना एक टेढ़ी खीर है, फिर भी यदि बिल्कुल नया ही पृष्ठ खोला जाये तथा वर्तमानकी शकल ही बदल दी जाये तो यह संभव भी है। केवल इसी ढंगसे मनोवैज्ञानिक वातावरणका निर्माण हो सकता है जो कि आम उद्देश्यमें सहयोग तथा सामूहिक प्रयत्नको जन्म देता है।

इसी आशासे प्रेरित होकर कांग्रेसने सितम्बर १९३९ में एक बड़ा वक्तव्य निकालकर अपने रुखका स्पष्टीकरण कर दिया था। वर्षोंसे कांग्रेस नात्सी तथा फासिस्ट सिद्धान्तों व आक्रमणकारियोंकी भी निंदा करती चली आई थी। कांग्रेसने इनकी फिरसे निंदा करते हुए प्रजातंत्र तथा आज़ादीके जंग में सहयोगका आश्वासन दिया। पर यह साफ कर दिया कि अगर यह युद्ध साम्राज्यी देशोंके हितों तथा अधीनस्थ देशोंमें पूर्ववत स्थिति कायम रखनेके लिये लड़ा जा रहा है तो कांग्रेसको उससे कोई सरोकार नहीं।

यह आफर २॥ वर्ष पूर्व पेश किया गया था। और इस बीच इसे विभिन्न स्वरूपोंमें कई बार दुहराया भी गया। पर उन्हें ठुकरा दिया गया और इस ढंगसे ठुकराया गया जिससे भारतको क्रोध आना स्वाभाविक था। बगैर किसी संदेहके ब्रिटिश गवर्नमेण्टने स्पष्ट कर दिया है कि वह भूतकाल को लिये हुए बैठी है, तथा वर्तमान और भविष्य, जहां तक ब्रिटेन का वस चलेगा, भूतकाल जैसा ही रहेगा। २॥ वर्षोंके दुःखद इतिहासका, जिसने कि हमारी समस्याओंको बढ़ा दिया, जिक्र करना मैं आवश्यक नहीं समझता। घटनाक्रम बड़ी तेजीके साथ बदले हैं और विगत कुछ माहों के बीच ब्रिटिश साम्राज्यके कुछ हिस्से जापानियोंके हाथों चले गये हैं। पर फिर भी, इन सबके बावजूद पुराना दृष्टिबिन्दु तथा तरीका कायम है तथा इंग्लैंड़के राजनीतिज्ञ १९ वीं शताब्दि की अधिकारपूर्ण वाणीमें बोलते हैं। नात्सी आक्रमणसे देशमें रक्षाके लिये हम उत्सुक हैं पर इस दिशामें हमारे द्वारा असर कारक ढंगसे कुछ करनेका तरीका जनताका उत्साह तथा लोकप्रिय नियंत्रणके अंतर्गत सामूहिक प्रयत्न हैं।

हम अपने प्रमुख उद्योगोंका विकास नहीं कर सकते, यद्यपि युद्धकालीन आवश्यकतायें इसके लिये पुकार २ कर जोर दे रही हैं, केवल इसीलिये कि ब्रिटिश इसे स्वीकार नहीं करते और उन्हें भय है कि युद्धके बाद कहीं भारतीय उद्योग ब्रिटिश उद्योगोंसे स्पर्धा न करने लगे। वर्षोंसे भारतीय उद्योगपति मोटर, हवाई-जहाज तथा जहाजी उद्योगोंके विकास की, जिनकी कि युद्ध कालमें नितान्त आवश्यकता है, कोशिश कर रहे हैं। इन प्रयत्नोंमें जिस भांति सफलताके साथ रोड़ा अटकाया गया है यह एक दिलचस्प बात है। बहैसियत नेशनल प्लानिंग कमेटीके अध्यक्षके मैं औद्योगिक समस्याओंके प्रति खास दिलचस्पी लेता रहा हूं। इस कमेटीने भारतके योग्यतम व्यक्तियोंका औद्योगिक आर्थिक, वैज्ञानिक तथा टेकनिकल विशेषज्ञोंका उद्योग, कृषि तथा आम खुशहालीकी जटिल और विशाल समस्याओंके एक सूत्रीकरण और इनके वैज्ञानिक और निर्धारित विकासका प्रयत्न किया। कमेटी तथा उसकी विभिन्न उप समितियोंकी कोशिश खास कर युद्धके समय मूल्यवान सिद्ध होती। इसका न केवल लाभ न उठाया गया पर उसके कार्योंमें गवर्नमेंटने रोड़े अटकाये और रुकावट डाली।

२॥ वर्ष पूर्व हमने सांसारिक नाटकमें असर कारक पार्ट अदा करनेकी उम्मीद बांधी थी। हमारी सारी सहानुभूतियां एक ही ओर थीं। हमारे हित इनसे मेल खाते तो हमारी मुख्य समस्या हिन्दू मुस्लिम एकता न होकर उद्योगोंका निर्धारित विकास, अधिक उत्पादन, अधिक ऊंची स्टेन्डर्ड तथा धीरे २ उस भीषण दरिद्रताका उन्मूलन होती जो कि हमारी कमर तोड़ रही है।

और खतरनाक

कहा जाता है कि युद्धके समय सत्ताका हस्तांतर खतरेसे खाली नहीं। ऐसी बात हुआ करती है। पर कर्तव्यसे अलग रहना और भी अधिक खतरनाक है। आक्रमणकारी राष्ट्रोंने बतला दिया है कि उनमें भाग्यके साथ जुआ खेलनेका साहस है तथा इस जुएमें उनके पासे बहुधा सीधे पड़े हैं। एक बात स्पष्ट है और वह यह कि भारतकी मौजूदा हालत दयनीय है। आज इसे न केवल जनताके समर्थनका अभाव है बल्कि इसमें काबिलियत भी नहीं। जो लोग व्हाइट हॉलसे या दिल्लीसे भारतका सूत्र संचालन करते हैं वे यहां जो कुछ हो रहा है उसे भी नहीं समझते। उसके प्रति कैसी नीति बर्ती जानी चाहिये यह बात तो जाने दीजिये।

सबकी आजादी पर...

हमसे कहा जाता है कि सीरियाकी आज़ादी स्वीकार कर लीगई है और कोरिया आजाद देश बन कर रहेगा। पर भारत—साम्राज्यी आधिपत्यकी पुरातन भूमिको हमेशा ब्रिटेनके ही आधीन रहना चाहिये। इस बीच टोकियो, बैंकाक रोम तथा बर्लिनसे होनेवाली हिन्दुस्तानी ब्राडकास्टोंमें हर रोज कहा जाता है कि धुरीराष्ट्र भारतकी स्वतंत्रताके इच्छुक हैं। बुद्धिमान जानते हैं कि यह बात कितनी गलत और झूठी है और उस पर कान नहीं देते। पर जो लोग रेडिओ सुनते हैं, उनमेंसे अधिकांश भारतमें ब्रिटिश गवर्नमेण्टकी कार्यवाहीसे इसकी तुलना करते हैं। मलाया और बर्मामें प्रचारका प्रभाव हमने देखा है। राजनीतिक दृष्टिसे भारत कहीं ज्यादा प्रगतिशील है अतः वह उसका ज्यादा कामयाबीके साथ मुकाबिला कर सकता है। भारत खास तौर पर चीनके प्रति आकर्षित है। और उसने रूसी जनता के बहादुराना बचावकी प्रशंसा की है। अमेरिकाकी प्रजातंत्रीय भावनाके प्रति उसकी हमदर्दी है। पर इन सबके बावजूद वह खुद को असमर्थ पाता है। जिन लोगोंने उसे इस स्थितिमें ला रखा है उनके प्रति उसका हृदय कटुता और विक्षोपसे भरा है।

आज़ादीकी संयुक्त मांग

कुछ समस्यायें ऐसी हैं, जिनके लिये हम जिम्मेदार हैं, और कुछ ऐसी जिन्हें ब्रिटेनने खड़ा किया है। पर इनके लिये कोई भी जवाबदार क्यों न हो, हमें इन्हें हल करना है। इनमेंसे एक समस्या जिसका, इतना जिक्र किया जाता है, हिन्दु-मुस्लिम भी है। पर बहुधा यह भुला दिया जाता है कि मुसलमान भी हिन्दुओंकी भांति भारतकी आज़ादीकी मांग करते हैं। उनमेंसे कुछ (सिर्फ थोड़े ही) उत्तर-पश्चिम भारतमें पृथक् रियासतकी मांग करते हैं। उनमें इस मांग का क्या अर्थ है, यह उन्होंने कभी नहीं बतलाया; बहुत कम लोग उनकी बात पर संजीदगीके साथ ध्यान देते हैं—खासकर आजकलके दिनोंमें जब कि छोटी २ रियासतोंकी कोई पूछ नहीं और जो कि निश्चयही विशाल फेडरेशनका एक अंग हैं।

नया हल

हिन्दू मुस्लिम समस्या फेडरेशनके आधार पर हल होगी, पर वह तभी हल होगी जब कि हमारे मामलेमें ब्रिटिश हस्तक्षेपका अंत हो जायगा। जब तक इस हलमें अडियल लोगों को बढ़ावा देनेके लिये तीसरी पार्टी मौजूद रहेगी तब तक इस समस्याका हल न हो सकेगा। आज़ाद भारत इस पर बिल्कुल अलग दृष्टिबिन्दुसे विचार करेगा।

हम चाहते क्या हैं!

हम चाहते क्या हैं? एक आज़ाद, प्रजातंत्रीय, संघीय भारत जो कि बड़े संघोंमें दूसरे देशोंसे सहयोगके लिये प्रस्तुत रहेगा। विशेषतः भारत, चीन और रूससे जो कि उसके निकट पड़ोसी हैं, संबंध स्थापित रखना चाहेगा। अमेरिकासे भी उसका ताल्लुक रहेगा। हम अल्पसंख्यक दलों और उन लोगोंको, जो कि सांस्कृतिक व आर्थिक दृष्टिसे पिछड़े हुए हैं, सभी तरहके संरक्षणोंको प्रदान करेंगे।

अभी क्या किया जाना चाहिये? यह सवाल सरल नहीं है, क्योंकि आज जो बात संभव है वह कल कठिन हो सकती है। हमने जो बात दो साल पहले की होती उसे करनेका आज हमारे पास वक्त नहीं, पर यह युद्ध जल्द खत्म नहीं होनेवाला और भारतमें जो कुछ होगा उसका जबर्दस्त प्रभाव पड़ेगा। युद्ध-नीतिका तकाजा है कि उन मूलगत भावनाओंको समझा जाये जो कि लोगोंको किसी उद्देश्यके लिये बलिदान करनेके लिये प्रेरित करती हैं। इसके लिये न केवल बहदुरोंके बलिदानकी आवश्यकता है बल्कि जरूरत है जातीय दुर्भावनाओंके त्यागकी भी, दूसरों पर आर्थिक व राजनीतिक शासन, दूसरोंके शोषणके नाशकी जो कि दूसरोंके विकासमें आड़े आते हैं।

वे हित कहां गये?

इसके लिये ज़रूरी है सभी देशोंकी राजनीतिक तथा आर्थिक स्वतंत्रता, स्वतंत्र जनोंके सहयोग क्रान्तिकारी नेतृत्व, तथा खतरोंका मुकाबिला करनेके साहसके आधार पर बननेवाले नये जमानेको समझने तथा जहांतक संभव हो उसे अमली रूप देनेकी कोशिश की जाये। आज, जब कि मानवताका हित खतरेमें पड़ गया है उस समय कौनसे स्थापित हित (Vested Interest) आनेवाले वर्षोंमें हमारी रक्षा कर पायेंगे? हांगकांग तथा सिंगापुरके Vested Interest कहां गये?

अभी किया जाये

यह जरूरी है कि जो कुछ करनेकी इच्छा हो वह अभी किया जाये। क्योंकि वर्तमान की ही कीमत है। यह कोई नहीं जानता कि युद्धके बाद क्या होगा। अतः तब तक किसी चीजको टाल देना अपने दिवालियेपनकी स्वीकृति तथा खतरेका निमंत्रण है।

घोषणा

मैं चाहूंगा कि ब्रिटेन व अमेरिकाके नेता प्रथमतः इस बातकी घोषणा करें कि प्रत्येक देशको, चन्द अन्तर्राष्ट्रीय ज़रूरतें तथा अन्तर्राष्ट्रीय समझौतोंको छोड़, पूर्ण स्वतंत्रता तथा अपने भविष्य निर्माणका पूरा हक है। दूसरे यह कि उपर्युक्त घोषणा उन देशोंके लिये, जो कि ब्रिटिश साम्राज्यके अन्तर्गत हैं, पूर्ण रूपसे लागू की जायें और भारतकी आज़ादी तथा विधान पंचायतद्वारा—जिसके प्रतिनिधि ब्रिटेन तथा दूसरे देशोंसे अपने संबंध पर भी विचार करेंगे, अपना विधान स्वयं बनानेके अधिकार को मंजूर कर लिया जाये। तीसरे, सभी जातियों और कौमोंके साथ समान बर्ताव किया जाये तथा उन्हें अपने विकासका समान अवसर दिया जाये। व्यक्ति और कौमोंमें फर्क रहा करता है। कुछ सांस्कृतिक या बौद्धिक दृष्टिसे दूसरोंकी बनिस्बत अधिक प्रगतिशील हुआ करते हैं। पर प्रगतिके द्वार सभीके लिये खुले रहने चाहिये और जिनका अभी विकास नहीं हुआ है, उन्हें प्रोत्साहन मिलना चाहिये। नात्सियोंको उनके जातिगत नेता संबंधी सिद्धान्तों तथा इनके बर्बर उपयोगने जितना बदनाम कर दिया है उतना और किसी वस्तुने नहीं। पर गुलाम देशोंमें इन्हीं सिद्धान्तोंका उपयोग हम हमेशा देखते हैं।

साम्राज्यवादका अंत

ऐसी घोषणाका अर्थ होगा सब जगह साम्राज्यवाद तथा उसकी खास सुविधाओंका अंत। किसी फौजी जीत की बनिस्बत इस घोषणासे नात्सिज्म और फासिज्मको ज्यादा गहरा धक्का पहुँचेगा। क्योंकि नात्सिज्म और फासीज्म साम्राज्यवादके परिवर्द्धित रूप ही हैं। उस समय आज़ादीका मुद्दा संसारके समक्ष पूर्ण स्पष्टतासे पेश हो जायगा और किसी तरहका वाक्छल अथवा कपट असंभव हो जायगा।

घोषणा ही पर्याप्त नहीं

पर केवल घोषणा मात्र ही—फिर चाहे वह कितनी अच्छी क्यों न हो, पर्याप्त न होगी। क्यों कि कोई भी आश्वासनों पर विश्वास नहीं, करता न भविष्यकी बाट जोह सकता है। आज ही उन्हें असली रूप देना खरी कसौटी होगी। आज पूर्ण परिवर्तन चाहे संभव न हो पर फिर भी, आज बहुत कुछ किया जा सकता है। इस संबंधमें ब्रिटिश

(शेष पृष्ठ १७ के कालम ४ पर)

युद्धकालिक आर्थिक समस्यायें

श्री· हरिदत्तजी वेदालंकार, प्रो· गुरुकुल कांगडी

हम रामायण, महाभारत और पुराणोंमें जिन युद्धोंका वर्णन पढ़ते हैं, वर्त्तमानकालके युद्ध, विज्ञानकी उन्नतिसे उन युद्धोंकी अपेक्षा अधिक संहारक एवं भीषण हो गये हैं। विनाश के नये २ प्रभावजनक आविष्कारोंसे उनकी भीषणता निरन्तर बढ़ती जा रही है, किन्तु इस भीषणताके साथ उनका व्यय भी बढ़ रहा है। दोनोंमें सुरसा और हनुमानजीकी होड़ लगी हुई है। एक तरफ युद्धकी विकराल राक्षसी अपने विनाशकारी साधनोंका प्रसार कर रही हैं, दूसरी तरफ उसी अनुपातसे राष्ट्रोंके रक्षा व्ययोंमें भी वृद्धि हो रही है। युद्ध छिड़ते ही सरकारोंको विशाल जल, स्थल और वायुसेनाओं का संगठन करना पड़ता है। इन सेनाओं को अद्यतन (Up-to-date) रण सामग्रीसे सुसज्जित करना पड़ता है। यह रण सामग्री पहलेसे बहुत अधिक खर्चीली हो गयी है। गोला बारूद, बन्दूकें, तोपें, टैंक, हाथियारबन्द गाड़ियां, टैंक, हवाईजहाज आदि तय्यार करनेके लिये सरकारको नये नये कारखाने स्थापित करने पड़ते हैं। सैन्य संगठन तथा रण सामग्री तय्यार करनेमें सरकारोंको रुपया पानीकी तरह बहाना पड़ता है। गत महायुद्धमें मित्र-राष्ट्रों ने युद्धमें विजय प्राप्त करनेके लिये ४० अरब ९६ करोड ३६ लाख पौण्ड व्यय किये थे और जर्मनी तथा उसके साथियोंने १५ अरब १२ करोड २३ लाख पौंड[1]। वर्तमान युद्ध पिछले गत महायुद्ध से भी अधिक भीषण है। इस युद्धमें इंग्लैण्ड, जर्मनी पर विजय पानेके लिये अपनी सम्पूर्ण राष्ट्रीय आय (National Dividend) का आधेसे अधिक भाग युद्धपर व्यय कर रहा है। इंग्लैण्डमें १०½ अरब रुपयेकी राष्ट्रीय आयमें ६½ अरब युद्ध देवताकी उपासनामें लग रही है[2]। जर्मनी अपने महान् युद्ध यन्त्रको चालू रखनेके लिये ८ अरब रुपया प्रति वर्ष व्यय कर रहा है।[3] अभी तक भारत वर्ष युद्धका क्षेत्र नहीं बना, किन्तु इस वर्ष भारतकी केन्द्रीय सरकार भारतकी रक्षाके लिये १ अरब ३३ करोड़ रुपया खर्च कर रही है[4]। और यह युद्ध व्यय निरन्तर बढ़ता जा रहा है। १९४०-४१ में भारतका दैनिक रक्षा व्यय २० लाख रुपये था। १९४१-४२ में यह व्यय बढ़कर ४० लाख रुपये दैनिक हो गया है।

इन अंकोंसे यह स्पष्ट है कि आजकलके युद्ध विपुल व्यय साध्य हैं। युद्धके समय सेनापतियोंको जहां यह चिन्ता रहती है कि शत्रुपर निर्णायक सैनिक विजय किस प्रकार प्राप्त की जाय, वहां अर्थशास्त्रियोंको यह समस्या परेशान करती है कि विशाल सैन्य संगठन व रण सामग्रीके लिये आवश्यक रुपया कहांसे लाया जाय, वृकोदर युद्ध-देवकी उदरपूर्त्ति किस प्रकार हो। जिस देशका युद्धकालिक अर्थप्रबन्ध (War Economy) युद्धके विकराल व्ययोंको देर तक सह सकता है, वही अन्तमें विजयी होता है। गत महायुद्धमें इंगलैण्ड अपने विश्वसाम्राज्यके विपुल आर्थिक स्रोतोंके कारण ही अन्तमें विजयी हुआ। युद्धके समय राज्यकी सामान्य आय व्ययसे काम नहीं चलता। युद्धके विकराल व्ययको पूरा करनेके लिये—युद्धकालिक राजस्व (War-finance) के लिये विशेष अर्थ प्रबन्ध (Economy) करने पड़ते हैं। इस अर्थ प्रबन्धके साधन जितने सुविचारित एवं आयोजित (Planned) होंगे सरकारका अर्थप्रबन्ध उतना ही अधिक दृढ़ होगा, और देशको युद्धके बादके आर्थिक दुष्परिणामोंसे बचा सकेगा। सेनापतियोंको युद्ध समाप्त होनेपर नयी २ आर्थिक समस्याओंके प्रतिकारके उपाय सोचने पड़ते हैं। यदि युद्धके समय ही, अर्थशास्त्री अपने अर्थ प्रबन्धको सुव्यवस्थित कर लेते हैं, तभी वे युद्धके बादके आर्थिक दुष्परिणामोंसे बच सकते हैं, अन्यथा देशमें आर्थिक अव्यवस्था तथा भयंकर असन्तोष फैल जाता है और भीषण क्रान्तियां प्रारंभ हो जाती हैं। गत महायुद्धके बाद जर्मनीके दोषपूर्ण अर्थ प्रबन्धके कारण मुद्राप्रसार (Inflation) अपनी चरम सीमा तक पहुंच गया। एक समयका भोजन, कई लाख मार्कके नोट देने पर उपलब्ध होता था। सारे जर्मनीमें आर्थिक हाहाकार मच गया। उस हाहाकारकी हिटलर के उत्थानके रूपमें प्रबल प्रतिक्रिया हुई। इस समय विश्व जर्मनीके दूषित अर्थ प्रबन्ध जनित उस प्रतिक्रियाके कटु परिणाम भोग रहा है। अतः युद्धकालिक आर्थिक समस्याओंका महत्व स्वतः सिद्ध है।

युद्ध कालके इस विशाल व्यय पूरा करनेके लिये अर्थशास्त्री किन साधनोंका प्रयोग करते हैं–यह देखनेसे पहले हमें युद्धकालिक राजस्वके लक्ष्य एवं मूल सिद्धान्तको अच्छी तरह समझ लेना चाहिये। युद्धकालिक राजस्वका मुख्य लक्ष्य सैनिक आवश्यकताओंकी पूर्ति है। सरकारको अपनी सेनाके लिये लाखों मन खाद्य सामग्री खरीदनी पड़ती है, सेनाकी पोशाक के लिये हजारों गज़ कपड़ा और निवासके लिये लाखों तम्बू। सैनिकोंके लिये गोलाबारूद, अस्त्रशस्त्र, मोटर गाड़ियां, टैंक आदि बनानेके लिये जो सरकारी कारखाने बनते हैं–उनके लिये सरकारको, लोहा, कोयला, मैंगनीज़, ताम्बा आदि धातुयें–तथा विविध रासायनिक द्रव्य प्रचुरमात्रामें खरीदने पड़ते हैं। आजकल लड़ाईका स्वरूप इतना व्यापक हो गया है कि बाज़ारमें बिकनेवाले मामूली बोरेसे लेकर, भारी लोहेके सामान तक, सभी वस्तुओंकी सरकारको आवश्यकता होती है। बाज़ारमें, गेहूं, कपड़े, लोहे, कोयलेका परिमाण लगभग निश्चित है। युद्धसे पहले साधारण जनता इन वस्तुओंको खरीद कर अपने उपभोग (Consumption) मे ला रही थी युद्धके समय सरकारको, इन वस्तुओंकी युद्ध-कार्यके लिये अत्यधिक एवं अनिवार्य आवश्यकता होती है। यदि लोग बाज़ारमें इन वस्तुओंको पहले की तरह खरीद कर उपयोग करते रहेंगे तो सरकारको ये वस्तुयें नहीं मिलेंगी और उसके युद्ध प्रयत्नोंमें बहुत बाधा पड़ेगी। इस लिये सरकार यह प्रयत्न करती है कि साधारण जनता इन वस्तुओंका पूर्ववत् उपभोग (Consumption) न करे। साधारण जनताके उपभोगको जितने परिमाणमें कम किया जा सकेगा–सरकारको सैनिक आवश्यकताओंकी पूर्तिके लिये उतने ही अधिक परिमाणमें वस्तुएँ उपलब्ध हो सकेंगी। इस लिए युद्धकालिक राजस्वका मूलसिद्धान्त तथा लक्ष्य यह है कि सार्वजनिक उपभोग (Public consumption) के परिमाण को अधिकाधिक कम करना।

सार्वजनिक उपभोगके परिमाणको कम करनेके लिये दो प्रकारके उपायोंका अवलम्बन किया जा सकता है। पहला तो यह कि युद्धसे पहले सर्वसाधारण जनताके पास जो धन था–वह धन जनतासे किन्हीं साधनोंसे ले लिया जाय। यदि लोगोंकी जेबोंमें युद्धकाल में भी उतना ही पैसा बना रहता है, जितना युद्धसे पहले था तो लोग वस्तुओंको उसी प्रकार खरीदते रहेंगे और सार्वजनिक उपभोगके परिमाणमें कोई कमी नहीं होगी। किन्तु यदि उनकी जेबोंसे पैसा निकाल लिया जाय तो वे बाज़ार से पहले की तरह चीज़ें नहीं खरीद सकेंगे। लोगोंकी खरीदनेकी शक्ति अथवा क्रयशक्ति के घटनेसे, बाजारमें सार्वजनिक उपभोगकी वस्तुओंका परिमाण स्वतःकम होजायगा। अर्थशास्त्रकी परिभाषामें इसे 'लोगोंकी क्रयशक्ति (Purchasing Power) कम कर, सार्वजनिक उपभोगके परिमाण को कम करना' कहते हैं। युद्धके समय, सरकार सभी संभव साधनोंसे, लोगोंकी क्रयशक्ति कम करनेका प्रयत्न करती है।

सार्वजनिक उपभोगके परिमाणको कम करनेका इसका उपाय यह है कि सभी वस्तुओंके दाम किसी प्रकार बढ़ा दिये जायं तो वस्तुओंकी खपत या उपभोग स्वयमेव कम हो जायगा। यदि पहले गेहूं रुपयेका १५ सेर था और युद्धके समय ५ सेर हो जाता है तो गेहूंके खरीदने वालोंकी संख्या कम हो जायगी। बाजारमें बहुत सा गेहूं बचा रह जायगा और सरकार उसका सैनिक कार्योंमें विनियोग कर सकेगी। इस प्रकार युद्धकालिक राजस्वके मुख्य लक्ष्य–सार्वजनिक उपयोगके परिमाण को न्यून करने–को दो उपायोंसे पूरा किया जाता है—१, जनताकी क्रयशक्ति कम करके २. पदार्थोंकी मूल्यवृद्धि करके।

जनताकी क्रयशक्ति कम करनेका स्थूल आशय यह है कि उनकी जेबोंमें ज्यादा रुपया न रहे किन्तु युद्धके समय स्वभावतः लोगोंकी जेबोंमें ज्यादा रुपया आ जाता है। व्यापारी लोग मूल्योंके चढ़ जानेसे खूब मुनाफा कमाते हैं, नये कारखाने खुलनेसे, भूखों मरनेवाले मज़दूर भी अपना जीवन निर्वाह करने लगते हैं! खाद्य वस्तुओंके दाम बढ़नेसे कृषक भी अपनी फसलोंका अच्छा दाम प्राप्त करते हैं, सेनाके विस्तारसे लाखों आदमी अपना अच्छा गुजारा करने लगते हैं। इन सबका यह परिणाम होता है कि बाज़ारमें मुद्राकी संख्या बहुत बढ़ जाती है। सरकार यह प्रयत्न करती है कि यह रुपया लोगों द्वारा खर्च होनेसे पहले ही, उनकी जेबोंसे निकाल लिया जाय। इस रुपयेको जनताकी क्रयशक्ति कम करनेके दो मुख्य साधन हैं (१) कर Tax (२ सरकारी रक्षा ऋण (Defence Loans)

इस विषयमें, अर्थशास्त्रियोंमें बहुत मतभेद है कि युद्ध-व्ययको पूरा करनेके लिए कर तथा ऋणमें क्या अनुपात रहना चाहिये। साधारण जनता करोंकी अपेक्षा ऋणोंको अधिक पसन्द करती है। जनताको नये करोंकी वृद्धि स्वभावतः बहुत अखरती है और सरकारी ऋणोंमें जनता रुपया लगाकर व्याजका लाभ भी प्राप्त करती है, किन्तु सरकारको करवृद्धि हित कर जान पड़ती है। सरकारी ऋणोंका रुपया तो युद्धके बाद व्याजके भारी बोझके साथ चुकाना पड़ेगा किन्तु करोंसे प्राप्त आयमें इस प्रकारकी कोई बाधा नहीं है। इंगलैण्ड व जर्मनीमें कर और ऋणका ५०% का अनुपात रखा जाता है; किन्तु भारतवर्षकी स्थिति इन दोनों देशोंसे सर्वथा भिन्न है। यहां पर, निर्धनताके कारण लोगोंकी कर देनेकी क्षमता, उन देशोंकी अपेक्षा बहुत कम है। इस आर्थिक कारणके अतिरिक्त, इस भिन्नताका एक मनोवैज्ञानिक कारण भी है। भारत युद्धक्षेत्रसे दूर है और भारतीय इसे ब्रिटिश साम्राज्यवादका युद्ध समझते हैं अतएव इंगलैण्ड व जर्मनीके निवासियोंकी तरह बहुत त्याग करनेके लिये उद्यत नहीं। इन कारणोंसे भारतमें कर तथा सरकारी रक्षा-ऋणोंमें ५०% का अनुपात रखना कठिन है। इस वर्ष भारतकी केन्द्रीय सरकारको युद्धके नये व्ययोंके कारण ४७ करोड़का घाटा था। इसमें १२ करोड़ करोंसे पूरा किया जा रहा है और ३५ करोड़ नये रक्षा-ऋणोंसे।

(अगले अङ्कमें समाप्य)

---

[1] शिरास-दी साइन्स ऑफ पब्लिक फिनान्स पृ० ६८६

[2] कायर-पेइंग फॉर दि वॉर पृ० १०

[3] दे० हिन्दुस्तान टाइम्स २ मार्च १९४२ का साप्ताहिक अंक

[4] दे० १ मार्च १९४२ को केन्द्रीय व्यवस्थापिका परिषदमें भारतके अर्थ सचिवकी बजटकी वक्तृता

हमारी प्रमुख आवश्यकता

श्री भगवानदासजी
तोष्णीवाल, दिल्ली

[अमेरिकामें दो वर्ष रहकर मैंने कई बातोंका अनुभव किया, शिक्षा और व्यापारके क्षेत्रको छोड़कर दैनिक जीवनमें जिस बातका मेरे पर अधिक प्रभाव पडा, वह है वहां की शिशु-पालन योजना। मुझे अमेरिकामें अपने मित्रोंके घरोंपर छुट्टियोंमें प्रायः रहनेका अवसर मिला, अतः यह लेख मैं अपने उन्हीं दिनोंके अनुभव व अमेरिकन सरकार द्वारा प्रकाशित शिशु-पालन-सम्बंधी पुस्तकोंके आधार पर लिख रहा हूं। —लेखक]

किसी भी देशकी उन्नति व अवनतिका आधार वहांके बालक और बालिकाओंकी शिक्षा व लालनपालनकी योजना पर निर्भर है। अमेरिका, जापान और पाश्चात्य देशोंने इसके महत्व को अच्छी प्रकार समझा है। हिटलरने तो जर्मनीमें इस योजनाको क्रियात्मक रूप देकर सारे संसारको चौकन्ना कर दिया है। लेकिन भारत-वर्ष अभी तक प्राचीन पद्धति व विचारों की जंजीरोंमें जकड़ा हुआ है और जब तक हम इन जंजीरोंको तोड़ कर शिशुपालन योजनाको समयानुकूल न बना लेंगे, हमारे दूसरे प्रयत्न भारतको स्वतंत्रता दिलानेके लिए व्यर्थ ही साबित होंगे। अबतकके हमारे सामाजिक और राजनैतिक आन्दोलनोंका दृष्टिकोण बड़ी आयुवाले व्यक्तियोंकी तरफ ही रहा है, और हमने कुछ सफलता भी प्राप्त की है, लेकिन यह सफलता शून्यके बराबर है, क्यों कि पुरानी डालीको झुकाना उतना आसन नहीं है जितना कि नईको। आजकी बालिकायें भविष्यकी मातायें और आजके बालक भविष्यके नेता बनेंगे, अतः यदि हम इन्हींकी तरफ आजसे उचित ध्यान दें तो अगले २० वर्षोंमें हम भारतके उत्थानके लिए बहुत कुछ आशाएं रख सकते हैं।

दुनियामें मातापिता होनेका भार लेना जितना सर्वोच्च है उतना ही कठिन और उत्तरदायित्व पूर्ण भी है। यदि देखा जावे तो धन कमाना उतना कठिन नहीं है जितना कि सन्तानका उचित लालन-पालन करना। हमारे मारवाड़ी समाजमें ऐसे बहुतसे व्यक्ति मिलेंगे जिन्होंने अपने प्रयत्नसे काफी धनोपार्जन किया लेकिन क्या इनमेंसे दो-चार प्रतिशत भी ऐसे व्यक्ति पाये जावेंगे जिन्हें अपनेको कुशल मातापिता कहलानेका गर्व हो? क्या हमारी मारवाड़ी समाजमें दो-चार भी ऐसे खानदान मिलेंगे जिन्होंने अपना गौरव १००।५० वर्ष तक कायम रखा हो? अधिकांश पुरुष ऐसे मिलेंगे जिन्होंने अपनी सन्तानको या तो अधिक प्यार किया हो और या बिलकुल ही लापरवाहीसे अपने खानदानी पतनके बीज अपने जीवनमें ही बो दिये हों। सच तो यह कि हमने अभी तक शिशु-पालन की तरफ़ बिलकुल ध्यान ही नहीं दिया। वे बेचारे ऐसे ही गिरते पड़ते ईश्वर भरोसे बड़े हो जाते हैं। इसके विपरीत उन्नतिशील देशोंमें हम देखेंगे कि वहांके प्रति खानदानमें सन्तानका ध्येय यह ही रहता है कि वह अपने माता-पितासे अधिक उन्नातिशील हो। वहां बहुतसे ऐसे खानदान पाये जावेंगे जिनकी ख्याति वर्षोंसे उन्नति कर रही है।

सन्तानकी शिक्षाके लिए केवल उसकी पढ़ाई-लिखाईका उचित प्रबन्ध हो जानेसे संतोष कर लेना ही पर्याप्त नहीं। बालककी आन्तरिक शक्तियोंका भविष्यमें पूर्णतया विकास होना या न होना उस योजना पर निर्भर है, जिसके अनुसार पैदा होते ही वह पाला जाता है। प्रायः हम कहा करते हैं कि लड़का जब बड़ा होगा अपने आप ही ठीक मार्ग पर आ जावेगा, लेकिन यह हमारी भूल है, बालक दो हफ्तेका होता है तब ही से कुछ न कुछ सीखना आरम्भ कर देता है और अपनी आदतें बनाने लग जाता है। अतः हमें प्रारम्भसे ही सतर्क होकर कार्यवाही करना चाहिये।

यह सत्य है कि बालक की शारीरिक और मानसिक शक्तियां अपने माता-पितासे मिलती हैं जिनमें खानदानी असर अवश्य पाये जाते हैं। फिर भी उसका भविष्य उसके माता-पिता और खासकर उसकी माताके हाथमें हैं क्योंकि शुरूसे उसीके सम्पर्कमें वह अधिक आता है। आगे चल कर तो दूसरे बालकोंकी संगति व आसपासके वातावरणका भी असर पड़ता है।

संतानके पालनमें उसकी शारीरिक, (Physical) बौद्धिक (Intellectual) और मानसिक (Emotional) शक्तियोंका समभावसे विकास होना आवश्यक है। अतः माता-पिता केवल उन्हीं बातोंकी तरफ ध्यान न दें जो कि वह अपनी संतानसे अपने और समाजके प्रति चाहते हैं, बल्कि उन बातोंका भी खयाल रखें जो कि एक नवजात बालकके हृदयमें स्वतः पैदा होती हैं और वह अपने लिए चाहता हो। जैसा कि कहा जा चुका है सफल माता-पिता होना इतना सरल नहीं है जितना कि हम मान बैठते हैं, शिशु-पालनमें बहुत सोच विचार और धैर्यकी आवश्यकता है। प्रायः देखा जाता है कि माता-पिता आवश्यक और अनावश्यकके भेदको भूल जाते हैं, आचरण सिखानेके प्रयत्नमें सदाचारको भूल बैठते हैं, एक अवाञ्छनीय आदतको छुड़ानेकी कोशिश में दूसरी और बुरी आदतोंको बुला बैठते हैं। सन्तान और माता-पितामें बहुत ही नाजुक रिश्ता है जो केवल प्रेम और भक्तिसे कायम नहीं रखा जा सकता। माता-पिताको इस बातका ध्यान रखना ज़रूरी है कि बालककी समय-समय पर क्या क्या आवश्यकता हो सकती है और वह बालकसे क्या क्या उसकी आयुको ध्यानमें रखते हुए उम्मीद रख सकते हैं।

हमारे समाजके धनाढ्य परिवारोंमें अकसर देखा जाता है वहां बालकको आवश्यकता से अधिक लल्लो चप्पो की जाती है, फलतः वह खुदगर्ज़ (Self-centered) और नाजुक मिजाज हो जाता है और भविष्यमें उसमें उपज (Initiative) और स्वतंत्रता (Independance) की कमी पाई जाती है। साधारणतः एक बालक जब बीमारीसे उठता है तो सब परिवारवाले उसको बहुत फिकर करते हैं और उसकी प्रत्येक इच्छाको सन्तुष्ट करनेका प्रयत्न करते हैं, इस हालतमें यदि समझसे काम न लिया जावे तो बालक को स्वार्थी और (Domineering) बननेसे रोका नहीं जा सकता। इस परिवर्तनका कारण हम उसकी बीमारीको भले ही बतावें किंतु सच तो यह है कि घरवाले ही उसकी आवश्यकतासे अधिक लल्लो चप्पो करके उसकी आदतें खराब कर देते हैं।

मातायें प्रायः अपने बालककी इतनी फिकर करती हैं कि वस्तुतः वे अपनी सन्तानकी शारीरिक और आत्मिक शक्तियोंको प्रारम्भसे ही कुचलकर नष्ट कर देती हैं। माता-पिताको अपनी सन्तानका कार्य करते हुए एक प्रकार का गर्व और प्रसन्नता होती है। वे अपने बालकको हाथसे भोजन कराते हैं, दोपहर और रातमें उसके साथ सोते हैं, स्कूल तक उसको पहुँचाने जाते हैं और यहांतक कि बालकोंकी आपसकी लड़ाईमें भी अपने लड़के की तरफसे शामिल हो जाते हैं। फलतः बालकको स्वावलम्बी बनने का अवसर ही नहीं मिलता, उनके विचार और कार्य स्वतंत्र नहीं हो पाते और उनकी मनोशक्ति (Mental Power) जहां की तहां रह जाती है। ऐसे बालक जब बड़े होते हैं तो उनके कार्य सदैव संदेह और अनिर्णयता (Indecision) से भरे रहते हैं।

बालक ज्यों ही कुछ समझने लगता है, माता उसको डरा-धमका कर काबूमें लानेकी कोशिश करती है, जब रोता है तो कभी हव्वा बुलाया जाता है, कभी रातकी मां की शरण ली जाती है। इस प्रकार उसके कोमल हृदय पर कठोर चोट पहुँचाई जाती है, जिसके चिन्ह आजीवन उसके लिए हानिकारक हो जाते हैं। जब बालक बड़ा होकर खेलने कूदने लगता है तो उसे कहा जाता है कि यदि वह दौड़ेगा तो गिर जावेगा, छलांग मारेगा तो सर फूट जावेगा, खेलेगा तो चोट खावेगा। तो भला जब उसको प्रत्येक कार्यका दुष्परिणाम ही दिखाया जाता है तो आगे चल कर उससे (Adventurous) होनेकी कैसे आशा रख सकते हैं, जब कि हम भली प्रकार जानते हैं कि अंग्रेज जाति अपनी (Adventurous Spirit) की ही वजह से हमारे पर राज्य कर रही है।

इसी प्रकार हमें बालकोंसे झूठे वायदे-जिनको कि हम पूरे न कर सकते हों, नहीं करना चाहिये, क्योंकि बालक बहुत जल्दी यह मालूम कर लेता है कि उसको धोखा दिया जा रहा है और धीरे धीरे वह सत्यता पर विश्वास खो बैठता है और दूसरोंके कहनेका विशेष खयाल नहीं करता। उनको पैसोंका लोभ देकर काम कराना भी उचित नहीं क्यों कि उनकी आदतें खराब हो जाती हैं और उनकी मांग बढ़ती ही जाती है। बालकको प्रारम्भिक जीवनमें ही यह बात सिखानी चाहिये कि प्रत्येक वस्तु केवल उसके चाहने पर ही उसको नहीं मिल सकती, उसको अपनी कुछ ज़रूरतोंको भूल जानेकी आदत सिखानी चाहिये, खिलौने व वस्तुओंको और बालकोंके साथ बांटना सिखाये। इस प्रकार जब वह बड़ा होगा तो जीवनके प्रतिदिन आनेवाली मुसीबतें और नाउम्मीदियोंको साहसके साथ झेल सकेगा।

प्रत्येक बालक स्वभावतः यह चाहता है कि आसपासके व्यक्ति उसकी तरफ ध्यान दें, छुटपनमें रोकर वह दूसरोंका ध्यान अपनी तरफ आकर्षित करता है, बड़ा होने पर यदि हम उसके अच्छे काम पर उचित ध्यान न दें तो वह कुछ शैतानी करके ध्यान आकर्षित करनेका प्रयत्न करता है। अतः यह माता-पिताका कर्तव्य है कि वे आवश्यकतानुसार बालकके तरफ अवश्य ध्यान दें और हुशियारीसे काम लेते हुए उसको अच्छी आदतें सिखायें, जब वह कोई अच्छा कार्य करे तो अपनी प्रसन्नता दिखाते हुए उसकी तारीफ करें, अनुचित कार्य करने पर उसको समझाएं और अपनी नाराजी भी जाहिर करें। बालकोंके समक्ष उन के कार्य का ध्येय उनकी शक्ति और उनका खयाल रखते हुए रखे, यदि हम उसका ध्येय प्रारम्भ-से ही बहुत बडा बना देंगे तो उसको सफलता न मिलने पर वह निराशा और अपनी कमजोरी महसूस करने लगेगा, आगे और प्रयत्न करने के लिए उसकी इच्छा न होगी। सफलता ही एक ऐसी शक्ति है जो कि मनुष्य को अपना ध्येय प्राप्त करने के लिए फिरसे प्रयत्न करनेके लिए अथवा अपने प्रयत्नको जारी रखनेके लिए प्रेरित करती है।

बालकके सामने न उसके सम्बन्ध की बातें और न उसकी हंसी ही करना चाहिये। क्यों कि बालकमें अपनत्व (Self-consciousness) बहुत जल्द पैदा हो जाती है। इसी से या तो उसके हृदय पर चोट पहुँचती है या फिर उसके दिलमें ऐसे विचार उठने लगते हैं कि वह ऐसे कार्य करे जिससे वह और भी नजरोंमें आने लगे। माता-पिताके लिये यह आवश्यक है कि बालकके प्रति हमेशा अपना एक मत

(शेष पृष्ठ १० के कालम ४ पर)

देश तथा विदेशमें लोकप्रिय

केशोराम कॉटन मिल्स लिमिटेड, कलकत्ता

बंगाल में सबसे बड़ी और मशहूर क्यों ?

क्योंकि यह उत्तम, सुन्दर, कलापूर्ण, टिकाऊ, मजबूत तथा इस लड़ाईके समयमें भी सस्ता कपड़ा बनाती है और भारत की सामाजिक व आर्थिक दशा तथा सर्व साधारण की रुचिको ध्यानमें रखते हुए सब प्रकारके वस्त्र तैयार करती है।

	ट्रेड नंबर
साड़ियां	No. 515
	No. 252½
	No. 7026
	No. 17003
	Radha
	Seeta
	No. 4312
	No. 4412
	No. 900 A
	No 900 C
ग्रे शर्टिंग तथा मारकीन	No. 3650
	No. 3850
	No. 4050
	"S"
धोतियां	No. 52½
	No. 4026
	No. 3192

इस मिलमें हरप्रकारका सूत, धुला व कोरा कपड़ा, लंग क्लाथ, धोतियां, साड़ियां, सफेद एवं रंगीन चादरें, टावेल्स, गंजी आदि कपड़ा बनाया जाता है।

बाजारमें कपड़ा खरीदते समय दूकानदारसे बंगाल मिल तथा केशोराम मिल का ही कपड़ा मांगिये।

हमारी विशेषता

ट्रेड मार्क

सी. आर. दास
●
"लॉयन"
●
बंगाली लेडी
●
भारत माता
●
फ्लावर पॉट
●
महारानी
●
"हॉर्स"
●
स्वराज
●
के. सी. एम.
●

इस मिल में कपड़े पर माड़ी बिलकुल आवश्यक तथा बहुत कम प्रमाण में दी जाती है। इसलिये खालिस सूत कपड़े में रहने के कारण कपड़ा धोने के बाद बहुत अधिक टिकाऊ तथा मुलायम एवं सुन्दर निकलता है।

—: हमारे सेलिंग एजेन्ट्स :—

कलकत्ता
मेसर्स सेवाराम विलासराय
सूतापट्टी, कलकत्ता

कानपुर
मे. रामकिशनदास व्रजमोहनलाल
काह्रू कोठी, कानपुर

कराची
मे० रोछलदास गीडूमल
बंदर रोड, कराची

बनारस
मे० श्रीकिशनदास श्यामदास
बीबी हाटिया, बनारस

नागपुर
प्रीमियर स्टोर्स सप्लाइंग कं.
नागपुर (सी. पी.)

छपरा तथा मुज़फ्फरपुर
जालान एन्ड सन्स लि०

अमृतसर
मे० बेलीराम राजकुमार,
कटरा अहलूवाला, अमृतसर

देहली
मेसर्स श्यामसुन्दर पाटोदिया
कटरा नवाब साहिब, देहली

मैनेजिंग एजेन्ट्सः—**बिड़ला ब्रदर्स लिमिटेड.**

पत्रव्यवहार का पता

केशोराम कॉटन लिमिटेड,
८ रॉयल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता.

राजस्थानके दुर्भाग्यपर एक झांकी

एक दिन था, राजस्थान समूचे हिन्दका मुकुट बना हुआ था और समस्त संसारमें उसकी गुणगाथा गूंज रही थी। जहां अपन देशकी आज़ादी की रक्षाके लिए चित्तौड़पति महाराणा प्रतापने घासकी रोटियां खानेमें सचमुच रत्ती भर भी संकोच नहीं किया था, जहां मीराबाई जैसी भक्त और पद्मिनी जैसी वीर ललनाओंने सारे भारतका भाल ऊंचा किया था और जो प्रांत देशकी आन और अकड़ रखनेके लिए हंसता हुआ सर्वस्व बलिदान करना अपना कर्त्तव्य समझता था — वही राजस्थान आज पतनके नरककुंडमें पड़ा कराह रहा है, इतना ही नहीं आज वही देश की उन्नतिके पथका बोझल रोड़ा बन गया है, चारों ओरसे निराशासे घिर गया है, स्वार्थपरता, कायरता और विलासिताने इसे अपना अड्डा बना लिया है। आज राजपूत-जननियों के पुत्रोंके भोगविलासमय और महत्वाकांक्षाहीन जीवन की दुर्गंधने इसके क्षितिजको सब दिशाओंमें तेजहीन एवं निष्प्राण कर दिया है। जितना ही वह ऊंचा चढ़ा था उतना ही नीचे गिरकर आज धूलि धूसरित हो रहा है। इससे ज्यादा दर्दनाक स्थिति और क्या हो सकती है !

आज राजाओंकी नीति इसी संवशासनमें शामिल हो रही है कि ब्रिटिश शासनको इस देशमें कायम रखना और उसीके हाथमें देश-रक्षाके साधन रहने देनेमें सहायक होना। इससे ज्यादा और कौनसा पतन हो सकता है कि राजाओंका निर्माण (शिक्षा) तक अंग्रेज़ोंने अपने हाथमें ले रखा है। आज राजाओंको इतना चिंतित रहना पड़ता है कि कोई अंग्रेज़ी अफसर उनके राज्यमें देखभाल करने आ जाता है तो जबतक वह वापिस नहीं लौट जाता, उनके गलेमें फांसी पड़ी रहती है और विदाईके समय उस अफसरको प्रसन्न करनेमें कोई कसर नहीं रखते। एक निर्दोष साधारण दर्जे का आदमी किसी इंसानमात्रसे इतना चिंतित नहीं रह सकता। अपने दिलमें तो पूरे नरेन्द्रशिरोमणि बने हुए हैं और डिग्रियों की दुम भी खूब लंबी फैला चुके हैं, किन्तु वस्तुतः वे उस कच्ची मिट्टी की हालतसे बढ़कर नहीं जिसे उसका मालिक-कुम्हार चाहे जैसे सांचेमें ढाल सकता है। फिर भी रौब गांठनेमें श्री चर्चिलको भी मात कर देते हैं। अपने सुखमें प्रजा का कोई हिस्सा नहीं रखते, किन्तु आवश्यकताओं और विपदाओंमें प्रजा का खून चूसना ज़रूरी समझते हैं। जहां तक प्रजाके दुःख का ताल्लुक है, देशी राजाओंकी कार्यवाहीका दर्शन करते ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं, संभव है वे ईश्वरका कोप नहीं रखते हों। जब संतरी ही चोर हो जायगा तो रखवाली करनेवाला कोई नहीं।

देश-रक्षाके नाम दमनचक्र चलानेमें देशी राजाओंने ब्रिटिश भारतसे कहीं आगे निकलकर अपना कौशल दिखलाया है। न मालूम राज्योंके प्राइम-मिनिस्टर साहबान्को खद्दरके वस्त्रोंमें कौनसा हौआ दिखाई देता है कि एक सफेद गांधी टोपी पहिनने वालेके पीछे फौरन पहरा लग जाता है। ब्रिटिश भारतमें जिस कार्यकी मनाई है उसकी देशी रियासतोंमें नहीं और जिसकी ब्रिटिश भारतमें मनाही नहीं है उसकी देशी राज्योंमें है। खद्दरका कपड़ा पहिनना तो देशी राज्योंमें गैर-कानूनी है किन्तु जूआ खेलनेके लिए प्रजाको निमंत्रण दिया जाता है। इस प्रकार उल्टी गंगा बहाकर न मालूम राजा लोग कौन-सा प्रेत खड़ा करना चाहते हैं।

क्या वजह है कि चीनने, जो वैज्ञानिक दृष्टिसे काफी पिछड़ा हुआ है जापान जैसे सम्पन्न राष्ट्रके सामने इतने लम्बे अर्सेके बाद भी मुंहकी नहीं खाई और बराबर नये साहससे लड़ता है? रूस आज एक विजयी देशके सदृश स्वाभिमान रखता है और दुश्मनके दांतोंमें नींबू निचोड़ रहा है और दूसरी ओर अंग्रेज़ोंने थोड़ेसे समयमें आसामके उस तरफ की छोटी-मोटी सब पूर्वीय सम्पत्ति जापान द्रेवको भेंट कर दी और बर्मासे जो अंग्रेज़ी जनरल जान बचाकर आए उन्हें नई दिल्लीमें उच्च पदोंपर नियुक्त किया—मानो कि उन्होंने आगे काफी काबिलियत दिखलाई हो। कहने का संक्षिप्त सारांश यह है कि जहां देशकी आज़ादी का प्रश्न उपस्थित होता है वहां कोई भी राष्ट्र कितना ही संपन्न क्यों न हो, प्रजाका सहयोग लिए बिना एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकता। किन्तु प्रजाका सहयोग लेना तो एक तरफ रहा देशी राजा लोग तो अंग्रेज़ोंकी पूंछ पकड़ कर बैठ गए और एक प्रकारसे बाजीगरके बंदर बने हुए हैं। जहां कहीं भी प्रजा-मंडल व प्रजा-परिषद हैं, भले ही वे काम कुछ भी न करते हों उनके नाम ही से चिढ़कर उनपर कुठाराघात करते हैं, पिट्ठू धनी लोगोंके सामने झोले फैलाकर याचना करते हैं और प्रजासे 'खमा, घणी-घणी खमा' कहवा कर सीना निकालते हैं। अपयशसे गोदाम भरते हुए वे यह नहीं सोचते कि श्वास का विश्वास तो बेवकूफ ही करता है, न मालूम किस समय प्राण पखेरू उड़ जांय, उनकी कृतियां काले कलंकोंको लिए हुए जरूर शेष रह जायंगी।

प्रजाके दुःखनिवारण-हेतु, गरीबोंकी आहें सुनकर भावी खतरेको दृष्टिगत रखकर यदि कोई पुरुष मुंह खोलनेका साहस करता है तो सरकार उसके सामने पशु बनकर पेश आती है। राजा लोग अज्ञानांधमें फंस गए तो प्रजा भी दोषसे मुक्त नहीं कही जा सकती। यहां 'प्रजा' शब्दका मेरा आशय है सरकारी अन्यायोंको नीची नस करके मुंह बंद करके सहनेवालोंसे। इतनी अशिक्षित व भोली प्रजा अलादिनका चिराग लेकर भी खोजी जाय तो भारतमें और कहीं नहीं मिलनेकी। प्रजामें आत्मबल की भारी जरूरत है। यह गुलामी-पसंद प्रजा बद-इंतजामी के खिलाफ नस ऊंची करनी तो दूर रही, सीधी तक नहीं करती। इनमें साहस और दूरदर्शिता की लेन-देन ही नहीं, फूट, पारस्परिक असहयोग एवं द्वेष इनमें आवश्यकतासे ज्यादा भरा पड़ा है। यदि एक आदमी आपदाओंका सामना करके सार्वजनिक जीवन के उत्थानका पथ-निर्माण कर रहा है तो उसके जातिभाई, पड़ोसी और खास दोस्त तक उसकी हंसी उड़ाते हुए उससे घृणा करने लगते हैं। ऐसे प्रजाजनोंका देश की आज़ादीके सुखमें कोई हक नहीं रह सकता और जब भी देश स्वतंत्र हो तो इस ताबेदारी-प्रिय प्रजाको किसी और आश्रित देशमें भिजवा दिया जाना चाहिए क्योंकि यह गुलामी जीवनको ही वास्तविक सुख समझ बैठी है।

राजस्थानके प्रजामंडलके विशेषांशको बिगाड़नेका श्रेय तो पिट्ठू धनीवर्गको ही दिया जा सकता है। ये कोट्याधिपति प्रजाके उत्थान व जागृतिके लिए तो एक पैसा देते भी संकुचाते हैं और सरकारी झोलोंमें थैलियां उडेल देते हैं। यह वर्ग अपने धनके मदमें मस्त है। इन्हें यह जरूर सोचना चाहिए कि लाठीधारी जब चाहेंगे भैंस को छीन ले जाएंगे। लक्ष्मीका स्वभाव ही फिरता रहनेका है। इस दृष्टिसे बीकानेर और रियासतोंसे विशेष पिछड़ा हुआ है। वहां इस समय भी जनता अठारवीं शताब्दीका स्वप्न देख रही है। उनमें आलस्य और बेकारीकी मात्रा बड़े पैमानेमें है।

जो लोग राजस्थानमें सरकारी नौकर हैं वे दिलोंमें भलेही जो कुछ भी विचार क्यों न रखते हों किन्तु उनका जीवन ही बर्बाद है। किन्तु यह कितने खेदकी बात है कि उनके लड़के भी इसी बोझके नीचे दब जाते हैं। मेरे एक दोस्त जो बीकानेरके एक विशेष सम्मानित विद्वानका जेष्ठ पुत्र है—मेरे ऐसा कहनेपर कि इस सविनय आज्ञाभंग आंदोलनमें यहांके (बीकानेरके) विद्यार्थियोंने अपना शतांश फर्ज़ भी अदा नहीं किया, कहा 'यहांके अधिकतर छात्र सरकारी नौकरोंके लड़के हैं'। यह बात जितनी असत्य है उतनी ही दुर्भाग्य की। मुश्किलसे विद्यार्थियोंका पन्द्रहवां हिस्सा सरकारी नौकरोंका पुत्र होगा। किन्तु जो भी हो, ऐसे फालतू कारणोंको लेकर सरकारी नौकरोंके लड़के अपने आपको और देशको क्यों धोखा दे रहे हैं? विद्यार्थीका कर्त्तव्य निबाहनेमें कौनसी शक्ति उन्हें बाधा दे रही है? आज वही मेरा दोस्त बीकानेरकी भूमिके बाहर विद्यासागर कालेज, कलकत्ताका छात्र होता तो उसका दिमाग और ही होता!

यदि राजस्थानी भाई यह सोचकर हाथपर हाथ दिये बैठे हों कि 'हमको तो बाहर वालोंकी चेष्टासे प्राप्ति हो जायगी' तो वे गलतीपर हैं। अपने देशके लिए तो उन्हींको कार्य करना पड़ेगा जो उसके भीतर हैं, बाहर वालोंसे तो सहानुभूति एवं उत्साह मिल सकता है और विशेष कुछ नहीं। निश्चयसे कई नररत्नोंने देशमें जागृति पैदा करनेकी, उसे कष्टोंसे निकालनेकी चेष्टा की है। स्वनाम धन्य स्व. सेठ जमनालालजी बजाजने जयपुर रियासतमें प्रसन्नतापूर्वक भीषण कठिनाइयों का सामना किया, देशके लिए समस्त त्याग किया, जिसके फलस्वरूप समस्त भारतको उनके निधनपर शोकके आंसू बहाने पड़े। पिलानी (रियासत जयपुर) के बिड़ला बंधु न केवल मारवाड़ियों का बल्कि हिन्दूमात्र का उद्धार करनेमें जुटे हुए हैं। बीकानेरके स्व. रामकृष्णजी मोहताने भारतके लिए अपना तनमन धन अर्पित कर दिया था और सेठ रामगोपालजी मोहता गरीब वर्गको संभालनेमें काफी दिलचस्पी ले रहे हैं। जोधपुरमें बालमुकुंदजी बिस्साने अपने आपको अधिकार याचनामें बलिवेदी पर चढ़ा दिया। और जयनारायणजी व्यासकी इसी विषय पर घटित विषाद दुखगाथा पत्थर हृदयको भी मोम बना देती है। बीकानेरमें बाबू रघुवरदयालजी वकील प्रजाको जगानेके लिए अड़कर भारी कष्टों का सामना कर रहे हैं।

राजस्थान की मौजूदा दयनीय दशा पर जितने ही आंसू बहाए जांय, थोड़े हैं। जमाना रेस (Race) के घोड़ों की तरह बढ़ता जा रहा है किन्तु अभागा राजस्थान इस बातकी कल्पना तक नहीं करता कि समयके पीछे रहनेमें कितना भारी खतरा है। राजा और प्रजाका यही हाल है कि वक्तामें भाव नहीं है और श्रोतामें श्रद्धा नहीं है। राजा लोगोंको जरूर सोचना चाहिए कि आज उनके भाग्यका निपटारा कहीं अन्यत्र ही हो रहा है। प्रजाको असहयोग देकर शासन करते हुए जरूर है कि आनेवाले समयमें वे नामशेष रह जाएंगे। फिर सिरपर हाथ धरकर पश्चात्ताप करना अरण्यरोदनसे ज्यादा कीमती नहीं होगा। जगत् जननी अष्टभुजेमें ही इतनी क्षमता है कि जो राजा और प्रजा दोनोंको जगाकर सचेत करे, सम्पन्न करे और उनकी रक्षा करे।

श्री वासुदेवभाई मोहता, दिल्ली

आवश्यकता है।

१. दो सुन्दर, स्वस्थ, सुशिक्षित और गृह-कार्य में दक्ष १४ वर्षीय कन्याओं के लिए वरों की आवश्यकता है।

२. एक २२ वर्षीय कुंवर, स्वस्थ, सुन्दर, योग्य वर के लिए सुयोग्य कन्या की आवश्यकता है। मासिक आय २००)

३. एक २२ वर्षीय सुंदर, सुन्दर और योग्य वर के लिए सुयोग्य कन्याकी आवश्यकता है। मासिक आय ६०)

कृपया अपनी चारों खापों सहित पत्र-व्यवहार करें।

रामशरण लाहोटी
बी. ए., एलएल. बी., ऐडवोकेट,
नगीना, जिला बिजनौर, यू. पी.

युवकों के प्रति—

ले० —श्री. जेठानन्दजी शारदा, बी. कॉम., बाड़मेर

ज़मानेकी बेढंगी रफ्तारने बड़े असमंजसमें डाल दिया है । दिन प्रति दिन होनेवाले पतनको उत्थान और अधोगतिको उन्नति कहना मस्तिष्कका विकार या समझका फेर कहना चाहिये । केवल कागज़ी घुड़दौड़के, वास्तविक सुधारका तो कहीं नाम भी सुननेमें नहीं आता । बाबा आदम के ज़मानेसे हम दुष्प्रथाओंके बहिष्कारका आन्दोलन कर रहे हैं । परन्तु सफलतादेवी हमसे कोसों दूर भाग रही हैं, हम कितने ही आर्तस्वरसे पुकार रहे हैं । परन्तु वह हमारी ओर करुणा दृष्टि नहीं फेरती, वास्तवमें वह हमारी मक्कारी, दगाबाज़ी, छलछिद्र और हृदयकी मलिनतासे अच्छे तरह परिचित हो गई है । सफलता देवीके आवाहनके लिये स्वच्छ हृदय, कर्मयोगी, आत्मविश्वासी, जो अपनी मानमर्यादा और प्रतिज्ञा पर अटल रहनेवाले सत्य प्रतिज्ञ हों, ऐसे सच्चे पुजारियोंकी आवश्यकता है ।

बहुतसे अन्धविश्वास, कट्टरता, रीतिरिवाज और तर्कहीन रूढ़ियाँ हैं जिनके विरुद्ध हम खड़े होना चाहते हैं और उन्हें नष्ट भी करना चाहते हैं । कुछ सामाजिक संस्थाएँ ऐसी हैं जो देरसे एक पुराने ढर्रे पर चल रही हैं, और इसलिये समाजको लाभ पहुंचानेकी अपेक्षा नुकसान पहुँचाती रही हैं । हम उनमें परिवर्त्तन करना और यदि ऐसा परिवर्त्तन असम्भव हो जाय तो उन्हें उखाड़ फेंकना चाहते हैं । इस कार्यकी सिद्धिके लिये इन चीज़ोंकी सामाजिक जड़ों तक पहुँचना और उनपर आघात करना ज़रूरी है ।

पुरानी व्यवस्थाका तेज़ीसे अन्त हो रहा है और इस अन्तका कारण है उन्हे चुनौती देनेवाली नयी शक्तियोंका जन्म और उनकी शक्तिका दिन दिन बढ़ना । हरेक सुधारक समझता है कि उसका सम्बन्ध नवीन व्यवस्थासे है । इसलिये पुराने सुधारकोंकी अपेक्षा सामाजिक समस्याओंको समझने और अध्ययन करनेमें अवश्य ही वह अधिक योग्य है । मैं उनके इस दावेका सर्वथा समर्थन करता हूं । पर मुझे इतना ही कहना है कि सुधारकको अपना यह दावा सत्य प्रमाणित करना चाहिये और इसके लिये निश्चय ही उसे हमारी सामाजिक रचना का निकटसे आलोचनात्मक अध्ययन करना चाहिये । सामाजिक सुधारक बनना कोई आसान बात नहीं है । अच्छे विचार या अच्छी नीयत होना ही कभी काफी नहीं होता । संसारमें अच्छी नीयतसे भी कभी कभी बुराई हो सकती है । हमारी नीयत इस बातकी गारण्टी नहीं दे सकती है कि जिस उद्देश्यको हम पाना चाहते हैं उसे पा ही सकेंगे । इसकी गॅरण्टी तो केवल इसी बातसे हो सकती है कि हम क्या करते हैं और उसका क्या नतीजा होता है ।

गर्ज यह है कि भारतकी अन्य जातियां जब भावी आपत्तिसे मुक्त होनेके लिये संगठित हो चुकी हैं तब हमारा समाज क्यों गफलतमें अबतक खुर्राटे ले रहा है ? क्यों नहीं वह अन्य समाजके कार्योंको देख कुछ सबक सीखता है ? क्यों वे इस समाज सुधारके महत्वशाली प्रश्नके सुलझानेमें उदासीन हैं ? क्या हम प्राचीनकालकी बहादुरीका ढोल ही पीटना जानते हैं ?

सम्मेलनेमें जिस सहजभावसे प्रस्ताव पास किये जाते हैं, उसी सहज भावसे किसी बन्धु के मौका पड़नेपर तोड़ दिये जाते हैं । इसका परिणाम यह होता है कि समाजपर इसका असर बहुत बुरा होता है और कोई भी कार्य सुचारू रूपसे सम्पन्न नहीं होता । जो सच्चे और लगनशील कार्यकर्त्ता हैं उनको चाहिये कि वे निरपेक्ष और निर्लिप्त भावसे अपने कर्त्तव्य पथपर चलते रहें, इससे उनका श्रेय ही होगा । जो निर्विकार चित्तसे विपत्तियों और बाधाओंका मुकाबला करते हैं, कातर होकर भाग नहीं खड़े होते, वही शूर हैं, वही साहसी हैं, विपत्तियां स्वयं कायरकी तरह उनके मार्गसे भयत्रस्त होकर भाग जाती हैं । प्रारम्भमें उन्हें अपनी पराजय दीखती है । वही परिणाममें विजय बन जाती है ।

जो जो कुरीतियां हमारे यहां आसन लगाये बैठी हैं उनके विरुद्ध इतनी आवाज़ उठने पर भी उनका आसन अडिग क्यों बना हुआ है ? असलियत यह है कि विचारोंको कृतिमें परिणत नहीं किया जाता । युवकोंसे मेरा अनुरोध है कि वे दृढ़ निश्चय कर लें कि चाहे जैसी बाधाये आयें, न तो वयोवृद्ध लोगोंका रुआब और न ही स्वजन-परिजनोंका दुराग्रह उनके मार्गमें बाधक हो सकेगा ।

इस सामाजिक गंदगीको हटानेका जबतक जोरोंसे आन्दोलन और प्रयत्न नहीं होगा तबतक हरेक कुप्रथाके शिकार होनेके समाचार सुननेके लिये हम तैयार रहना होगा । हरेक कुप्रथाका रूप समाजके लिये घातक कीटाणुओंसे इतना विकृत और सड़ा-गला हो गया है कि यदि जल्दी ही उन्हें नष्ट नहीं कर दिया गया तो समाजके स्वस्थ और हृष्टपुष्ट होनेकी अब और अधिक आशा नहीं । जिस दिन हम वास्तवमें इन सामाजिक रोगों पर विजय पा लेंगे, वह दिन कितने उल्लास और हर्ष का होगा । हमारी मान्यता है कि समाज में कई ऐसी प्रथाएं हैं जिन्हें उठा देनेके लिये एड़ीसे चोटी तकका ज़ोर लगा देना होगा और कहीं से तो आरम्भ करना ही होगा । अतः युवकोंको विलम्ब किये बिना इस तरफ अग्रसर होना चाहिये ।

सामाजिक कुरूढ़िका विरोध एक छोटे दायरे तक ही सीमित न रख कर उसे निरन्तर व्यापक और विस्तृत बनायें । जितना हो सके उतना लोक संग्रह करें—इस प्रकार सामुदायिक शक्तिसे कुप्रथाओंको उठा देनेमें बड़ी मदद मिल सकती है ।

सामाजिक जीवनको सुन्दर बनानेके लिये जितने भी सुधार करने आवश्यक हैं वे करने चाहिये । हमें अपनी शक्तिको ऐसे कामोंमें लगाये रखना चाहिये जिससे समाजके सौंदय को नष्ट करनेवाली कुरीतियोंकी जड़ उखड़ जाय ।

हमारा माहेश्वरी समाज आज पुरानी कुप्रथाओं और रूढियोंमें फंसा हुआ है । औसर-मौसर, अनमेल विवाह, बालविवाह, वृद्धविवाह, विवाहमें आड़म्बर और दिखावा आदि कितनी कुप्रथायें हैं जिनसे राजस्थानका जनसाधारण खोखला हो चला है । समाज के विचारोंमें समयकी गतिसे भी कोई परिवर्त्तन नहीं हो रहा है । सार्वजनिक कार्योंके लाभके लिये सोचनेकी प्रवृत्ति हमारे समाजमें नहीं जागी । इस अवसर पर युवकोंको इन चीज़ोंको सोचनेकी जिम्मेवारी लेनी होगी ।

क्या कारण है सुधारकोंके दिल व दिमाग ठण्डे पड़ गये हैं ? उनकी नस और नाड़ियोंमें जीवनका रक्त प्रवाहित नहीं होता, वे कुप्रथाओंके खिलाफ आवाज़ नहीं उठा सकते ?

स्त्रीके जीवनको. लीजिये । हमारे यहांका नारीजीवन कितना दुःखदायी है । इनको सुखी बनानेका भार समाज पर है । स्त्रीजातिको स्वतंत्रता, समानाधिकार देनेमें समाज ही उत्तरदायी है । जबतक समाजका प्रत्येक व्यक्ति इस ओर ध्यान न देगा तब तक नारीजीवन सुधर नहीं सकता । जबतक पक्षपातकी भावना रहेगी तबतक नारी जीवन सुखदायी नहीं हो सकता । अंधकार, निस्तब्धता और राक्षसी घृणाके हटानेसे नारीजातिका ही नहीं वरन् सारे समाजका कल्याण हो सकता है—

नियम और कानूनसे सुधार होना कठिन है, क्योंकि नियम और कानून तो सब डरपोक और गरीबोंके लिये होते हैं । इसलिये कुरीति निवारणमें सबसे प्रथम आवश्यकता होती है विचार परिवर्तन की । वह दो रूपसे हो सकता है । (१) स्वयं आचरण करके (२) भाषणों और साहित्यद्वारा । दोनों उपायों पर चलना अत्यन्त आवश्यक है । जिस कामको आत्मा बुरा समझे उसका त्याग करना प्रत्येक युवक का कर्तव्य होना चाहिये । चाह कितनीही बाधायें आये, मान अपमान हो, अपने निश्चय पर दृढ़ रहो । सार्वजनिक कामोंमें जानवरोंके झुण्डकी तरह जमा होनेकी बजाय उन्हें मनुष्यकी तरह जिम्मेदारीके साथ उनमें भाग लेना चाहिये ।

संसारकी परिस्थितियाँ जिस तेज़ीके साथ बदल रही हैं उनसे जान पड़ता है कि युगका परिवर्तन प्रारम्भ हो गया है । नवयुगके आगमनके लिये स्वागतकी तैयारियां शुरू हो गई हैं, आरती प्रारम्भ हो चुकी है । हमें भी उस नवयुगके स्वागतके लिये तैयार होना चाहिये । किन्तु इसके लिये सर्व प्रथम अपने भीतरसे कुरीतियां और दुष्प्रथाओंको निकाल बाहर करनेकी आवश्यकता है, जब तक इन सब कुरूढ़ियोंको हटाकर अपने समाजको निर्मल और विशुद्ध नहीं कर लेंगे तब तक नवयुगके इस स्वागत—समारोहमें हमारा स्थान कभी आगे नहीं हो सकता । संसारके दूसरे देशके समाज हमें पीछे धकेल कर आगे बढ़ जायेंगे और हमारा कहीं पता भी नहीं रहेगा । इस लिये समाज सुधारके लिये हमारे कार्यकर्ता युवकोंको मन प्राण तक लगा देने चाहिये ।

आपके हृदयमें जोश-उत्साह और स्फूर्ति है । आप सामाजिक जागरणकी बहुत अधिक आवश्यकता अनुभव कर रहे हैं । सम्मिलित होनेसे पारस्परिक प्रेम, परिचय और सहानुभूति बढ़ती है । परन्तु हमारे कर्तव्यकी समाप्ति यहां नहीं होती । यहांसे दृढ़ निश्चय कर जाना चाहिये कि पुरानी कुप्रथाओं तथा रूढ़ियोंमें फंसे हुए भाइयोंको समझायेंगे और देश, काल, परिस्थितिके अनुसार उनके विचारोंमें परिवर्त्तन करायेंगे । सर्वांगीण उन्नतिको लेकर हमें अग्रसर होना चाहिए ।

जब तक हमारे हृदय और आत्मा पर हमारा साम्राज्य स्थापित नहीं होगा, हम संसार में कुछ नहीं कर सकते । सदैव अपमानित और तिरस्कृत होते रहेंगे । क्या निर्लज्जताका जीवन भी कोई जीवन है ?

(पृष्ठ ७ का शेष)

दिखावे, यदि किसी कारणवश अपने विचारोंमें भिन्नता हो तो बालककी गैर-हाजरीमें उस पर आपसमें सोच विचार कर निर्णय कर लें । साथ साथ बालकके प्रति अपने व्यवहारमें उतनी ही नम्रता दिखावे जितनी कि एक सह-उम्रके लिए दिखानी चाहिये और आवश्यकतानुसार अपना तात्पर्य भी स्पष्ट कर देना चाहिये । उदाहरणके लिए एक बालक अपने पिताके बगलमें बैठा हुआ अपने खेलमें लगा हुआ है, इतनेमें ही उसकी माता उसे सोनेके लिए पुकारती है । बालक २।३ मिनटमें अपना खेल समाप्त करनेवाला था, यदि वह बात माताको मालूम होती तो वह २।३ मिनट ठहर कर आवाज देती, लेकिन अब क्या था बालक अंसुआ गया और अपने पितासे कहने लगा कि वह अभी नहीं जावेगा वह अपना खेल पूरा कर ले । पिताने उसके भावको समझ लिया और कहने लगा " यह ठीक नहीं है, तुम्हारी माता को मालूम नहीं था कि तुम खेल समाप्त करने वाले हो वरना, वह ठहर कर आवाज देती, लेकिन कोई चिंता नहीं, मां की आज्ञा मानना चाहिए, जाओ दौड कर सो जावो " और बालक फौरन सोनेको चला गया । इस प्रकार पिताने बालक की निराशा पर उसके सामने अपना खेद प्रगट किया, और उसका कर्तव्य क्या होना चाहिये यह भी बताया और साथ ही साथ माताकी आज्ञाका उलंघन भी न होने दिया ।

माता-पिताको चाहिये कि वे अपनी संतानके साथी, मित्र और विश्वासी बन कर रहें । बालक अपनी सब छोटी बड़ी शिकायतें माता-पिताके पास उनको हल करनेको लावें तो माता-पिता और बालकमें एक अमूल्य सम्बन्ध स्थापित हो सकता है । जो माता पिता अपनी संतानकी छोटी-छोटी बातोंकी तरफ ध्यान नहीं देंगे वे उनकी असली कठिनाइयोंसे भी परिचित न हो सकेंगे । दुनियामें सफल माता-पिता होना अत्यंत आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य है ।

SHIP BRAND FABRICS

SELL ON THEIR MERITS!

बर्मा, सीलोन, देश और विदेशमें लोकप्रिय

सुंदर, स्वदेशी पक्के रंगके मज़बूत और कीमतमें सस्ते

सफेद ड्रिल
,, ट्विल
,, लौंग क्लाथ
साटिन ड्रिल

★

टेबल क्लाथ
सफेद ६०" व ६८"

★

शर्टिंग क्लाथ
सफेद ५४", ६०"
व ५८" की साईज़में

★

कैसमेंट क्लाथ
अन्य कई रंगोंमें
दसूती क्लाथ

★

सफेद व रंगीन
टौवल, नैपकिन
वगैरह।

जहाज छाप

जहाज छाप

कौनट क्रेप

सफेद व अन्य ३४ प्रकार के पक्के रंगों व अन्य कई रंगोकी डिज़ाइन में।

पापलीन

सफेद व अन्य २४ प्रकारके पक्के रंगो, आकर्षक छपाई व अन्य रंगोकी डिज़ाइन में।

खाकी ड्रिल, ट्विल
व
पगड़ी क्लाथ

A. R. P. लेम्पों के शेड के लिए A. R. P.

जहाज छाप काली व ब्ल्यू क्रेप, परदोंके लिए दसूती व कैसमेण्ट
क्लाथ के इस्तेमाल से आप
—A. R. P.—
सुरक्षित रहेंगे।

अपने व्यत्विक का प्रभाव डालने मित्रों तथा सबंधियों में अपने प्रति आदर भाव उत्पन्न कराने के लिए जहाज मार्का कपड़ा बरतिये।

मरसीराईज़
,, रंगीन क्रेप
,, प्रिन्टेड क्रेप
,, ब्लिच्ड क्रेप
,, ,, पापलीन
,, ,, कोटिंग
,, ,, ड्रिल
,, साटिन ड्रिल
,, ,, लौंग क्लाथ
,, ब्लिच्ड } शर्टिंग
,, स्ट्राइड }

जहाज छाप

चंद्र चौक, मूलजी जेठा मार्केट, बम्बई

Bawa Parduman Singh & Sons

Head Office — AMRITSAR
Branches: BOMBAY CALCUTTA DELHI LAHORE QUETTA

टेलीफोन नंबर ६००४५ / ६००४६ तारका पता "श्रीनिवास"

श्रीनिवास कॉटन मिल्स लिमिटेड

डिलाईल रोड, बम्बई १३

★ ★

श्रीनिवास मिल का कपड़ा बढ़िया और टिकाऊ
होने के साथ २ सस्ता भी है।

हमारी

धोतियां, साड़ियां, लट्ठा, वाइल, मलमल, पापलिन,
चैक आदि ख्याति-प्राप्त माल है

श्रीनिवास मिल्स का **नरेन्द्र-छाप** लट्ठा सुप्रसिद्ध है

★

कोरा, रंगीन, धुला हुआ, छपा हुआ व फैन्सी
हर प्रकार का माल हम तैयार करते हैं।

हमारे बम्बई के सोल एजन्ट्स:—

मेसर्स, दी बम्बई एजन्सी कम्पनी लिमिटेड,

सर विट्ठलदास गली, मूलजी जेठा मार्केट, बम्बई

मैनेजिंग एजन्ट्स—

दी मारवाड़ टैक्सटाईल्स (एजन्सी) लिमिटेड, बम्बई।

चयन—

भारतकी समस्या अमेरिकाकी समस्या है

★

मि. वेण्डेल विल्कीका महत्वपूर्ण ब्राडकास्ट

हमारी पाश्चात्य और उसकी तथाकथित प्रधानताकी अभी कसौटीपर जांच हो रही है। हमारी बड़ी-बड़ी बातोंको सुनकर एशियावासी अन्यमनस्क हो गये हैं। रूस, चीन और मध्यपूर्ववालोंको अपनी ताकतमें विश्वास हो गया है। अब वे जान गये हैं कि भविष्यकी दुनियामें उनका बहुत बड़ा हाथ होगा और उनकी इच्छा है कि वे दुनियाके सभी देशोंको आज़ाद करेंगे। २० करोड़ रूसी और ४५ करोड़ चीनी घबड़ा उठे हैं। उन्हें हम लोगोंमें विश्वास नहीं है। बहुत लोगोंने अटलांटिक शर्तनामेके बारेमें भी पढ़ा है, इससे वे सन्तुष्ट नहीं हैं। वे पूछते हैं कि प्रशांतके शर्तनामेके बारेमें क्या होगा? दुनियाके शर्तनामेके बारेमें क्या होगा? चीनके सबसे बुद्धिमान् व्यक्तिने मुझसे कहा, 'भारत की स्वाधीनताकी मांग जो मुल्तवी कर दी गयी है उससे सुदूरपूर्वमें ब्रिटेनके सम्मान को धक्का नहीं पहुंचा है, अमेरिकाके सम्मानको धक्का पहुंचा है। भारतके मामलेमें चुप रहकर अमेरिकाने अपनी बहुत बड़ी प्रतिष्ठा खो दी।' दुनियामें शांति-सुव्यवस्था स्थापित करनेके लिये यह ज़रूरी है कि सारी दुनिया स्वतन्त्र हो जाय।

कुछ महिने पहले मेरे मनमें यह बात उठी कि दुनियाके जो देश इस युद्धमें लड़ रहे हैं, अगर हम उनके देश जाकर उनसे वार्तालाप करें और पता लगायें कि उनका क्या रुख है तो हम भी युद्धमें एक तरहसे मदद करेंगे। मैंने प्रेसिडेंट रूज़वेल्टके पास मध्यपूर्व, रूस और चीन जानेके लिये आवेदन किया। प्रेसिडेंट रूजवेल्टने स्वीकृति दे दी और उन्होंने मुझे कुछ काम सौंपा जो मैंने खुशीसे करना स्वीकार कर लिया। मैंने एक मामूली नागरिककी हैसियतसे उक्त स्थानोंमें भ्रमण करनेका निर्णय किया था। हम दोनोंमें निर्णय हो गया था कि उनके (प्रे० रूजवेल्टका) काम करनेके अलावा मैं स्वतन्त्रतापूर्वक अपना विचार प्रकट कर सकूंगा।

आधुनिक वैज्ञानिक आविष्कारके जरिये दुनियाभरके सभी लोग एक दूसरेके सन्निकट हैं, और एक देशकी समस्या दूसरे देशकी समस्या हो गयी है। इसलिये हम लोग भविष्यमें जो कुछ योजना बनायेंगे वह विश्वव्यापी आधारपर होगी, न कि किसी देश विशेषके लिए। जहां कहीं भी मुझे किसीसे बातचीत हुई, उससे यही पता चला कि अमेरिकाके प्रति सभी लोगोंकी असीम मैत्रीपूर्ण दृष्टि है। इसलिये इस संकटापन्न स्थितिमें अमेरिकाका यह कर्तव्य है कि वह उन लोगोंकी मदद करे। अमेरिकाके साथ दूसरे देशोंका जो इतना सद्भाव बढ़ गया है उसमें हमारे देशके फिल्मका भी बहुत बड़ा हाथ है। नाटाल (आफ्रिका) से लेकर चुंगकिंग तक प्रधान मन्त्री और सम्राट्से लेकर चायकी दुकानकी छोकड़ियों तकने मुझे बराबर उत्सुकताके साथ हमारे देशके अभिनेता अभिनेत्रियोंके बारेमें प्रश्नोंकी झड़ी लगा दी।

मित्र-राष्ट्र असन्तुष्ट

अमेरिकाके प्रति सभी देशोंके जो बड़ा सद्भाव था, वह घट रहा है। इसका कारण है कि हमारा देश दुनियामें सबसे बड़ा औद्योगिक देश समझा जाता है, लेकिन दूसरे देशोंको जो यहांसे युद्धसामग्री भेजी गयी है वह बहुत थोड़ी है। हमलोगोंने अपना वादा पूरा नहीं किया है, इसलिये लोगोंका सद्भाव घट रहा है। अगर हम आप लोगोंसे कहें कि चीनको कितने बमवर्षक विमान दिये गये हैं तो आप विश्वास ही नहीं करेंगे। रूस भी हम लोगोंसे सन्तुष्ट नहीं है क्योंकि हमने अपना वादा पूरा नहीं किया है।

भारतकी समस्यासे सर्वत्र असंतोष

इस युद्धमें ७० लाख रूसी और ५० लाख चीनी मारे गये हैं। इन दोनों देशोंमेंसे प्रत्येकके जितने सैनिक मारे गये हैं उतने हमारी सम्पूर्ण सेनामें सनिक हैं। इस लिये हम लोग सिर्फ बड़ी-बड़ी बातें न करें, प्रतिज्ञा भंग न करें; हम लोगोंको उनकी मदद करनी चाहिये। इन लोगोंको युद्ध-सामग्री देनेके अलावा, हमारा यह भी कर्त्तव्य है कि हम उनके सामने अपने युद्धोद्देश्य स्पष्ट करें—हम किस लिये लड़ रहे हैं? बहुतसे देशोंमें मुझसे प्रश्न किया गया—भारतका क्या होगा? सम्पूर्ण एशियामें भारतकी समस्यामें लोग दिलचस्पी ले रहे हैं और भारतके प्रति हमारी उदासीनतासे उन्हें हम लोगोंमें विश्वास ही नहीं रह गया है।

औपनिवेशिक शासनप्रणाली उठ जाय

मध्यपूर्व, अरब, चीन और रूस सभी जगह लोग स्वतन्त्रताका अर्थ बताते हैं औपनिवेशिक शासन-प्रणालीका बन्द होना। वे पूरी आज़ादी चाहते हैं। यही ठीक भी है। एक जाति अगर दूसरी जातिपर शासन करे तो स्वतन्त्रता नाम की चीज़ फिर कहां रह जाती है? हमें इसलिए इस युद्धमें नहीं लड़ना चाहिये कि हम उपनिवेशोंपर अधिकार रखना चाहते हैं। गलतफहमी दूर करनेके लिये मैं कहता हूं कि इससे मेरा मतलब स्वतन्त्र राष्ट्रोंके कामनवेल्थसे नहीं है। मेरा मतलब है कि औपनिवेशिक शासन-प्रणाली उठ जाय।

भारतकी समस्या अमेरिकाकी समस्या है

अगर भारत-जैसे विशाल देशपर जापानका कब्जा हो गया तो हमारा ही नुकसान होगा। जिस तरहसे भारतकी समस्या हम लोगोंकी समस्या है, उसी तरह फिलिपाइनकी समस्या ब्रिटेनकी समस्या है। अगर फिलिपाइन स्वतन्त्र न हुआ तो प्रशान्त-राष्ट्रोंका नुकसान होगा। ये बातें ऐसी है, जो कोई भी समझ सकता है, और हमें निर्भीक होकर इन बातोंको प्रकट करना चाहिये। इससे हर राष्ट्रको दूसरे राष्ट्रोंमें विश्वास होगा और शान्ति-सुव्यवस्था कायम करनेमें भी मदद मिलेगी। हर देशका अपना अलग मसला है, लेकिन सभी उपनिवेशों तथा रक्षित राष्ट्रोंको यह साफ वादा मिलना चाहिये कि अमुक तिथिमें उन्हें स्वराज्य मिलेगा। ईरानके शाह, ईराकके प्रधान मन्त्री, तुर्कीके प्रधान मन्त्री, चीनके चांगकाई शेक ऐसे आदमी हैं, जो दुनियाकी बातें अच्छी तरह समझते हैं और भविष्यके बारेमें उनके महत्वपूर्ण विचार हैं। वे दुनिया भरके लिये वास्तविक स्वतन्त्रता चाहते हैं। लेकिन हम इन देशोंमें अपने राजदूत भेजते ही नहीं जो लोगोंसे दुनियाकी वर्तमान समस्याओं पर वार्तालाप करें; विचार-विनिमय करें। हमें प्रथम श्रेणीके मित्र-राष्ट्रों और द्वितीय श्रेणीके मित्र-राष्ट्रोंमें भेदभाव नहीं करना चाहिये।

समाचारोंको सेंसर न किया जाय

कहा जाता है कि युद्धके मामलेमें युद्ध-विशेषज्ञों और नेताओंको छोड़कर साधारण नागरिकोंको हस्तक्षेप नहीं करना चाहिये। लेकिन युद्धके नामपर आज जो समाचारोंका सेंसर किया जाता है, वह बहुत हदमें मूर्खतापूर्ण है और ऐसा नहीं होना चाहिये। अगर हम अपने मित्र-राष्ट्रोंको पूरी जानकारी नहीं रखेंगे तो किसी भी समय हमें बहुत बड़ी हानि पहुंच सकती है। हमारे सैनिक विशेषज्ञोंके अभी तकके कारनामोंको देखकर, हमलोगोंको उनमें पूर्ण विश्वास न करना चाहिये। सैनिक विशेषज्ञों और नेताओंकी खूब आलोचना होनी चाहिये। जनताकी आलोचना ही तो गणतन्त्रकी शक्ति है।

यूरोपमें दूसरा मोर्चा खोलना ज़रूरी है और अमेरिका तथा इसके मित्रराष्ट्रोंको इसपर खूब ध्यान देना चाहिये। मैं आशा करती हूं कि शीघ्र ही हम लोग भारतमें अपना सेना भेजेंगे जो बर्मापर आक्रमण करेगी। इस तरह हम अपने दो बड़े मित्र-राष्ट्रों-रूस और चीनपर शत्रुका दबाव कम करा सकेंगे। मेरे इस लम्बे-चौड़े वक्तव्यका मतलब है कि युद्धमें विजय पाना ही काफी नहीं है। हमें स्थायी शान्तिके लिये सार्वभौमिक आधारपर विचार-विनिमय करना चाहिये। जब तक सारी दुनियामें शान्ति स्थापित नहीं होती तबतक दुनियाके किसी भागमें भी शान्ति कायम नहीं रह सकती। स्थायी शांति स्थापित करनेके लिये सारी दुनियाको आज़ाद करना होगा।

[गत २७ अक्तूबरके 'न्यूयार्क टाइम्स' में मि० वेण्डल विल्कीके ब्राडकास्टकी उपर्युक्त आशयकी रिपोर्ट प्रकाशित हुई थी।]

चीनी जनताको पं: नेहरूका संदेश

चीनी और भारतके भाग्य एकमें बंधे हैं

अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटीके गत अधिवेशनके अवसरपर जो चीनी पत्र-प्रतिनिधि बम्बई आये थे, उनके जरिये पं. जवाहरलाल नेहरूने अपनी गिरफ्तारीके पूर्व चीनको निम्नलिखित आशय का एक सन्देश दिया था:—

चीनी जनताको मैं फिर यह बता देना चाहता हूं कि हम उनमें अपना विश्वास रखेंगे, चाहे जो कुछ भी हो। पर हम ऐसा इसलिये नहीं करेंगे कि चीन की आज़ादी हमारे लिये बहुत कीमती है, बल्कि इसलिये कि चीनकी आज़ादीमें हमारी आजादी भी सन्निहित है। अगर चीन आज़ाद नहीं रहेगा, तो हमारी आज़ादी भी खतरेमें रहेगी। परिस्थितिवश हम इस समय जो कुछ भी करते हैं, उसका उद्देश्य भारतकी आजादी हासिल करना है, जिससे कि हम भारत और चीनमें आक्रमणके खिलाफ अपनी सारी ताकत लगाकर लड़ सकें।

आजाद भारत जितनी सफलतापूर्वक लड़ सकता है, उतनी सफलतापूर्वक गुलाम भारत नहीं लड़ सकता। इसीलिये इस खतरे और संकट के समय हम चीनमें अपने विश्वासको नया रूप देते हैं।

हमारा विश्वास है कि यह महायुद्ध एक भारी क्रांति है, जिसकी सफलता सिर्फ समस्त जनताकी आजादीके आधारपर ही निर्भर करती है। लेकिन यदि भारत अभी आजाद नहीं कर दिया जाता, तो युद्धका उद्देश्य गिर जायेगा और तब हम अन्धकार और खतरनाक स्थितिमें पड़ जायेंगे।

यही कारण है कि भारतका तत्काल आज़ाद होना बहुत ज़रूरी हो गया है। भारतका आज़ाद किया जाना बादके लिये कदापि स्थगित नहीं रखा जा सकता। इस वक्त हमपर जो खतरा है, उसका भी यही तकाजा है कि भारत आज़ाद किया जाय।

चीन और उसके महान् नेताओं—मार्शल और मैडम चांगकाई शेकको मैं बधाई देता और उनके प्रति सम्मान प्रकट करता हूं, इसलिये कि युद्धके पिछले ५ वर्षों में उनकी बहादुरी चमकते सितारे की तरह नजर आयी है।

भारत और ब्रिटिश साम्राज्यपर न बोलें

टोरण्टोमें मि. विल्कीको चेतावनी

टोरेण्टोके सिटी कौन्सिल द्वारा मि. वेण्डल विल्कीको मानपत्र दिया जानेवाला था। लेकिन कौंसिलने मि. विल्कीको चेतावनी दी कि वे अपने भाषणमें ब्रिटिश साम्राज्य और भारतकी चर्चा न करें, वरना उन्हें मानपत्र नहीं दिया जायगा। इसपर टीका करते हुए 'न्यूयॉर्क टाइम्स' ने लिखा है, 'टोरन्टोवाले शायद यह नहीं जानते हैं कि किसी आदमीके विचारको प्रकट न होने देनेसे उसके विचारोंकी ओर लोगोंका ध्यान और आकृष्ट होता है। इस तरहसे निर्णयके लोग यह जाननेके लिये और अधिक उत्सुक होंगे कि मि. विल्कीने ब्रिटिश साम्राज्य और भारतके बारेमें क्या कहा।'

बिड़ला जूट मैन्यूफेक्चरिंग कं. लिमिटेड

मैनेजिंग एजेन्ट्स

बिड़ला ब्रदर्स लिमिटेड

८, रॉयल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता

★

सब प्रकारके फ़र्श सजानेके लिए संतोषप्रद

सुप्रसिद्ध जूटकार्पेट्स के निर्माता

यदि आपके शहरमें कोई स्टाकिस्ट न हो तो
कृपया हमसे सीधा पत्र-व्यवहार करें।

भारत के लिए हमारे सोल डिस्ट्रीब्यूटर्स

मेसर्स गोल्सन्स ऐण्ड कंपनी

११, क्लाईव स्ट्रीट,
कलकत्ता

★

पोस्ट बाक्स
नं. ६६३

टेलिफोन
Cal. 2859

टेलिग्राम:
Carpet

देश विदेशकी चर्चा

लाल सेनाके जवाबी हमले

रूसी धरती पर जाड़ा शुरू होते ही फौज़ी कार्रवाइयां धीमी पड़ गयी थीं और लगता था कि शायद कुछ देरतक रूसी युद्धमोर्चे पर फिर बर्फकी-सी शान्ति छा जायेगी। लेकिन दो सालके भीषण संग्रामने दुनियाको यह बता दिया कि जलती आग या कड़ी ठण्डके बीच आक्रमणकारियोंका मुकाबला करनेका लाल सेनाने दृढ़ निश्चय किया है। हिम पातके मौसममें बोल्गाके किनारे विश्राम करनेके नात्सी सेनाके मनसूबे मार्शल टिमोशेंकोने चूर चूर कर दिये। यदि ऐसा न होता तो केवल १५ दिनोंके युद्धमें नात्सी सेनाके हजारों सैनिक खेत न आते। मॉस्कोके समाचार कहते हैं कि रूसी सेनाके हाथों ७० हजार जर्मन सिपाही कैद हुए हैं और एक लाखसे ज्यादा सिपाही रूसी सेनाके घेरेमें घिर गए हैं। इसके इलावा हाथ लगी युद्ध सामग्रीका तो कोई पार ही नहीं।

रूसी सेनाने चन्द दिनोंके भीतर आक्रान्ता दुश्मन पर इतने तीखे जवाबी हमले किये और उसमें उसे अकल्पित कामयाबी मिली यह बात सचमुच आश्चर्य पैदा करने वाली है। जर्मन सेनाएं इस वक्त भी विषम परिस्थितिमें फँसी हुई हैं। दुश्मनके घेरेमें फँसी हुई अपनी सेनाको छुड़ानेके लिए जर्मन सेनापति क्या कार्रवाई करेंगे यह कहा नहीं जा सकता। परन्तु जर्मन लोग यदि अपनी घिरी हुई सेनाको छुड़ाकर रूसियोंकी आगे कूचको रोक दें तो यह इससे भी अधिक चमत्कारिक घटना साबित होगी।

इस वक्त जर्मन सेनाको केवल स्टालिनग्राड और डोन मोर्चा ही नहीं, लेकिन जैसा कि जर्मन समाचारसे सूचित होता है, मॉस्को और टारोवोज़ मोर्चेका भी ख्याल रखना पड़ेगा। मॉस्को मोर्चे पर वेलीकिये ल्युकि और टारोवोज मोर्चे पर लाल सेनाने हमले शुरू कर दिये हैं। ये दोनों ही रूसी हमले बड़े पैमाने पर शुरू किये गए हैं। इन दोनों हमलोंका प्रधान लक्ष्य स्मोलेन्स्क है। स्मोलेन्स्क इस समय जर्मनोंका प्रमुख धाम बना हुआ है। अगर स्मोलेन्स्क पर जोखिम आयेगा तो मध्य मोर्चेके करीब सभी जर्मन अड्डों पर इसका असर होगा।

पिछले समाचारोंसे यह भी पता चलता है कि वॉरोनेज़ मोर्चे पर भी रूसी सेना जर्मन दलों पर हमले करनेको तैयार हो रही है। इससे मालूम होता है कि लेनिनग्राडसे लेकर स्टालिनग्राड तक पांच रूसी फौजें जाड़ेके मौसममें दुश्मन पर प्रत्याक्रमण करनेके लिए सज्ज हैं।

फ्रेंच नौकादलकी जल-समाधि

पिछले हफ्तेकी एक करुण घटना, फ्रांसके समुद्री अड्डे, तुलों पर विशाल फ्रेंच नौका दलने ली जल-समाधि की है। तुलों अभी १० दिन पहले विशी सरकारके अधीन था। फ्रेंच नौका दलका बहुत बड़ा भाग वहां आश्रय ले रहा था। मित्र सत्ताओंने एकाएक उत्तर फ्रेंच अफ्रीका पर धावा बोल दिया और एडमिरल दार्लोने हिटलरको धोखा दिया, इसके बाद तुलोंके इस समुद्री बेड़े पर दुनिया भरके देशोंकी आंखें लगी हुई थीं। फ्रांसके उस विशाल नौका-दलका क्या होगा, क्या वह मित्रराष्ट्रोंसे जा मिलेगा, दार्लोकी सलाहके मुताबिक क्या वह तटस्थ बंदरगाहों पर पहुंच जायेगा, या उसे हिटलर ले लेगा, इस प्रकारसे लोग सोचते थे। इन धारणाओंके खिलाफ उस नौका-दलका क्या हुआ, यह अब हमसे छिपा नहीं।

इस जल-मग्न नौका-दलमें दो बड़े बेटल शिप, दो बड़ी क्रुजर, छः छोटी क्रुजर, कितनी ही विनाशिकाएं और पनडुब्बियां थीं। यह समूचा नौका-दल अपने हाथसे खिसक न जाय इस बातकी हिटलरने पूरी तैयारी रखी थी। इस वीर नौका-दलने दुश्मन और दोस्त दोनोंके ही पास न पहुंचकर गौरवपूर्ण आत्म-विसर्जनका ही रास्ता अपनाया। विश्वयुद्धके इतिहासमें फ्रेंच नौका-दलकी यह वीरत युक्त, तेजस्वी और स्वमानप्रिय कार्यवाही हमेशाके लिए अमर रहेगी।

अन्तिम समाचारोंसे पता चलता है कि नौका-दलके जल-निमज्जनके पूर्व उसके कप्तान एडमिरल ला बोर्द वहां अपने ध्वजवाहक जहाज डन्कर्क पर बैठकर आये और उस किलेके समान मजबूत जहाज़को उड़ा देनेकी आज्ञा देकर स्वयं तथा दूसरे अफसरों समेत समुद्रमें कूद पड़े

युद्धने रंग पलटा ?

अफ्रीकाकी युद्ध भूमिमें नया रंग आया है। मिश्रमें हारे हुए रोमेलकी जर्मन फौज़ने एक चमत्कारिक पीछेहट की है। रोमेल भागता जा रहा है, और उसका पीछा करते हुए मित्र सेनाएं उसे पकड़नेको दौड रही हैं। रोमेल की इस अभूतपूर्व पीछेहट का कारण केवल यह नहीं है कि मित्रसेना का सामना करने के लिए मिश्रमें रोमेल सर्वथा कमजोर था। परन्तु इसका मुख्य कारण है उत्तर अफ्रीकामें मोरक्को और अल्जीर्यस के मार्ग पर एकाएक उतरी हुई अमेरिकन फौजें। फ्रेंच मोरक्को और अल्जीर्यस पर कब्जा करके अमेरिकन फौजें पूर्वकी ओर तेजीसे बढ़ रही हैं और रोमेल पश्चिमकी ओर पीछेहट कर रहा है। फलतः एक तरफ अमेरिकन फौजें और दूसरी ओर ब्रिटिश फौजों की पकड़में फंस जानेके गंभीर जोखिमसे बचनेके लिए वह तेजीसे पीछे हटकर तोब्रुक, बर्डिया, सोल्लुम वगैरह महत्वपूर्ण सैनिक अड्डोंपर बिना लड़े ही दौड़ा जा रहा है।

लड़ाईका तख्ता पलटा है, इसका दूसरा सुबूत फ्रांसकी फूट है। मोरक्को और अल्जीर्यसमें अमेरिकन सिपाहियोंके साथ वहांकी फ्रेंच सेनाने जो मुकाबिला किया वह नहीं-सा था। तुलोंके बंदरगाह पर फ्रेंच नौका-दलने जो जलसमाधि ली इससे भी फ्रेंचोंकी जर्मन-विरोधी मनोवृत्तिका पता चलता है। फ्रेंच नौकापति दार्लो हिटलरका विरोधी बन गया है, यह बात भी अब छिपी नहीं। पिछले समाचारोंसे यह भी प्रकट होता है कि मार्शल पेंता और दार्लोके बीच गुप्त संदेशे जारी थे। इस अवस्थामें संभव है कि रोमेल अफ्रीका छोड़कर फ्रेंच किनारेकी रक्षा करनेके लिए फ्रांसके तट पर आ जाय। निकट भविष्यमें हिटलर अफ्रीकाके लिए लड़े यह बहुत कम मुमकिन प्रतीत होता है। परंतु अमेरिकन एवं ब्रिटिश फौजें उत्तर अफ्रीकासे भूमध्य सागर पार कर दक्षिण यूरोप पर हमला करें यह संभव है। यदि ऐसा होगा तो इटली एवं हिटलरके हथियाये हुए बाल्कन राष्ट्रों पर बड़ा भारी खतरा उपस्थित हो जायगा। इस संभावित आपत्तिसे यूरोपकी रक्षा करनेके लिए हिटलरको अपना जहाज़ी बेड़ा भूमध्यमें लाना पडेगा। इसीसे यह संभव प्रतीत होता है कि भूमध्य सागरमें एक भीषण नौकायुद्धका आरंभ हो। यदि ये घटनाएं सच साबित हुईं तो युद्धका सारा तख्ता ही पलट जायगा। एक ओर रूसी मोर्चे पर हिमपातका आरंभ हो गया है और उधर लालसेनाएं जर्मनोंको बुरी तरहासे नाकोंदम किये हुए है। इसी बीच भूमध्य सागरमें अगर नौ-युद्ध आरंभ होवे तो हिटलरको अपनी अधिकांश ताकत फ्रांसमें केन्द्रित करनी पड़ेगी। इस प्रतिकूल स्थितिसे बचनेके लिए हिटलर जी-जानसे कोशिश करेगा और पहल जैसे अनेक बार हुआ है, वैसे इस बार भी यदि वह यौद्धिक चमत्कार दिखाये तब तो सचमुचमें वह एक आश्चर्यजनक घटना साबित होगी।

(पृष्ठ ३ का शेषांश)

एल. बी. फाइनलसे कालिज छोड़ा और एक सफल वकील या सफल व्यापारीका जीवन त्याग कर एक राष्ट्र सेवकका कंटकाकीर्ण मार्ग अपनाया, तब श्रीमती सावित्रीदेवी ने अतुल धैर्य और साहस का परिचय देकर अपने पतिका हर हालतमें साथ देनेका व्रत धारण किया। राजपूतानेके एक पिछड़े हुए मारवाड़ी परिवारमें जन्म लेकर और रूढ़िजन्य मारवाड़ी संस्कारोंके बीच लालित-पालित होकर वे जब अपने सुशिक्षित देशभक्त पतिके साथ बाहरके प्रगतिशील राष्ट्रीय भावनाओंसे व्याप्त वातावरणमें प्रविष्ट हुईं तो उनकी आंखें जरा चौंधिया गईं। उनके लिये यह सब नया था, उनके पितृगृहके संस्कारोंके सर्वथा प्रतिकूल और पूर्णतया कल्पनातीत, मगर भारतीय संस्कृतिने एक पत्नीके भीतर अपने पतिके लिये जो एकान्त निष्ठा और पतिपद सेवाकी अविचल मर्यादा बांध दी है, श्रीमती सावित्रीदेवी भी उसी की अनुगामिनी थीं। उच्च राष्ट्रीय उमंगोंसे ओतप्रोत बियाणीजी ऐसी सरल, सौम्य, समविचारशील जीवनसंगिनीको पाकर धन्य बने।

आजसे ठीक दो वर्ष पहले इन कालमों में मा. ब्रिजलालजी बियाणीके संबंधमें कुछ संस्मरण लिखते हुए मैंने श्रीमती सावित्रीदेवीजीके बारेमें निम्नलिखित पंक्तियां लिखी थीं—

“यह संस्मरण निश्चय ही अधूरे रह जायेंगे अगर हम यहां मा. बियाणीजी की वीर पत्नी श्रीमती सावित्रीदेवीजी बियाणी का उल्लेख न करें। सादगी, सरलता और सौम्यताकी सजीव मूर्ति सावित्रीदेवीजी अपने वीर पतिके अनुरूप राष्ट्रके चरणोंमें बड़ा से बड़ी कुर्बानी करनेको हमेशा तैयार रहती हैं। जब जब राष्ट्रने आह्वान किया तब तब आपने राजस्थानकी वीर भूमिकी परंपराके अनुरूप स्वतंत्रताके संग्राममें जूझनेके लिये भारतीय वीरांगनाके रूपमें अपने पतिको विदा करनेमें कभी आनाकानी नहीं की। बियाणीजीके प्रशस्त ललाट पर विजय तिलक करते समय श्रीमती सावित्रीदेवीजीके मस्तक पर विषाद और निराशाकी जगह सदा उल्लास बरसता देखा गया। इसमें कोई शक नहीं कि राष्ट्रीय क्षेत्रमें बियाणीजीने जो अग्रगण्य स्थान प्राप्त किया है उसमें उनकी वीर पत्नीका बहुत बड़ा योग रहा है।

माता पिताके संस्कारोंकी छाप उनकी संतति पर पड़ा करती है। मा० बियाणीजीके बच्चों पर भी उनके माता पिताके उच्च संस्कारोंका काफी प्रभाव है। उनकी दोनों कन्याएं और पुत्र अपने विचार और संस्कारकी दृष्टिसे श्रेष्ठ संतति हैं। दोनों कन्याओंको ऊंचे दर्जेके शिक्षणके अलावा तहजीब और इखलाककी जो शिक्षा मिली है, उसका श्रेय उनकी सुसंस्कृत माता सावित्रीदेवीजीको है। ये दोनों कन्याएं देशके संभ्रान्त परिवारोंमें ब्याही गई हैं और हमें यह देखकर खुशी होती है कि इन्होंने अपने पितृकुलकी संचित सांस्कृतिक विशिष्टतासे अपने पतिकुलोंको प्रकाशित किया है।

सन् १९४१ में हमें भी मा० बियाणीजी के साथ कारागृहमें छः महीने रहनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ था। इस काराजीवनमें उनके साथ विविध प्रकारकी चर्चाओंमें एक बार श्रीमती सावित्रीदेवीजीके विषयमें भी बातें हुईं। मा० बियाणीजीने उनके विषयमें कुछ संस्मरण सुनाते हुए हमें बताया कि “राष्ट्रीय क्षेत्रमें उनकी उत्तरोत्तर सफलतामें सावित्रीदेवी का निस्संदेह बहुत बड़ा हाथ है। न केवल पारिवारिक जिम्मेदारीसे उन्होंने मुझे मुक्त कर रखा है, बल्कि मेरी राष्ट्रीय और सामाजिक प्रवृत्तियोंमें भी बराबर उनकी प्रेरणा रहती है। जीवनमें मुझे एक ऐसा भी प्रसंग याद नहीं है जब सावित्रीदेवीने मुझे उत्सर्ग मार्ग पर बढ़नेके लिये उत्साहित न किया हो।”

इसमें कोई संदेह नहीं कि बियाणीजीके राष्ट्रीय, सामाजिक और सांस्कृतिक विचारोंका निर्माण और विकासमें उनका बहुत बड़ा हाथ है। भले ही उनके पास विशेष अक्षर-सम्पत्ति न हो लेकिन जहांतक कृतिका संबंध है वह बड़ी से बड़ी विदुषी और साक्षर महिलासे टक्कर ले सकती हैं। आज हमारे देशमें कर्तव्यशून्य उच्च शिक्षा-प्राप्त महिलाओं की नहीं, श्रीमती सावित्रीदेवी बियाणी जैसी सुसंस्कृता, कर्तव्यपरायण, सहृदयी सरल-सौम्य राष्ट्रसेविकाओंकी ज़रूरत है, जो न केवल अन्तःकरण और अपने परिवारको ही बल्कि समग्र राष्ट्रको अपनी प्रतिभा एवं तेजस्वितासे आलोकित कर सकें।

राय साहेब रेखचंद गोपालदास मोहता

स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स

अकोला (बरार)

तारका पताः—"MOHOTA"

टेलिफोन नं. ३४ आर ५६

बरार की सबसे बड़ी और खुद मालिकी की एकमात्र अप-टु-डेट मिल

★ ★ ★ ★

इस मिलमें सब तरहका कोरा,
धुला व रंगीन शुद्ध स्वदेशी
कपड़ा व सूत तैयार
होता है।

प्रोप्रायटर
सेठ गोपालदास मोहता, एम्. एल. ए. हिंगणघाट.
बैंकर, लैण्डलॉर्ड, टेक्सटाईल, आईल एण्ड राईस मिल्स
व जिनिंग एण्ड प्रेसिंग फेक्टरियोंके मालिक

प्रेसिडेण्टः—
सी. पी. एण्ड बरार फेक्टरी ओनर्स एसोसिएशन

सम्पूर्ण रूपसे
● भारतीय पूंजी ●
● भारतीय श्रम ●
● भारतीय प्रबन्ध ●

सस्ता व टिकाऊ होनेसे भारतके प्रत्येक विभागमें हमारा कपड़ा उपयोगमें लाया जाता है

हमारे कन्सर्न्स

फैक्टरियाँ

राय साहेब रेखचंद गोपालदास जिनिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्टरी, अकोला

राय साहेब रेखचंद गोपालदास जिनिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्टरी, वधा

बुलाकीदास गोपालदास जिनिंग एण्ड प्रसिंग फैक्टरी, हिंगणघाट

दूकानें

भीखणचंद रेखचंद (हैड आफिस) हिंगणघाट

राय साहेब रेखचंद गोपालदास, वर्धा

गोपालदास घनश्यामदास, राजनांदगाँव

हमारे मैनेजमैण्ट के लिमिटेड कन्सर्न्स

लक्ष्मी बैंक लिमिटेड, अकोला
सी. पी. एण्ड वरार की एक मात्र
(शैड्यूल बैंक)
व क्लियरिंग साधनों से युक्त
शाखाएँः—बम्बई, नागपुर (इतवारी), नागपुर (सीताबर्डी),
रायपुर, अमरावती, खामगाँव और गोन्दिया.

श्री गणेश आईल मिल्स लि. गोन्दिया.
इस मिलका शुद्ध व सस्ता तेल भारत भरमें प्रसिद्ध है

गोपालदास मोहता एण्ड कं. लि.
शाखाएँः—अकोला, नागपुर और गोन्दिया
इस कम्पनीमें सब तरहके कपड़े वसूतका काम होता है।

बुलाकीदास मोहता एँण्ड कं. लि. अकोला.
यह कम्पनी कई कम्पनियों की मैनेजिंग एजेण्ट व
मैनेजिंग डाइरेक्टर है।

नेशनल कमर्शियल कारपोरेशन लि. अकोला
शाखाएँ बम्बई खामगाँव
इसके डिपार्टमेण्ट्सः—काटन जत्था, मिल व जिन स्टोर्स
बीमा व अन्यान्य एजेन्सियें

एडवान्स ट्रेडिंग कम्पनी लि. अकोला
इस कम्पनीमें रुई, सरकी व अनाज वगैरे के कमिशन का
कामहोता है।

राजस्थानी संसार

राजपूताना-मध्यभारत सभाका २४ वाँ अधिवेशन

[देशी राजाओंको ३१ डिसेम्बर १९४२ तक उत्तरदायी शासनकी घोषणा कर देनेकी चेतावनी, विश्वविद्यालय, जागीरी किसान सुधार एवं उद्योग-धन्धांके लिए महत्वपूर्ण प्रस्ताव स्वीकृत हुए]

राजस्थान केसरी देशभक्त चांदकरणजी शारदा की अध्यक्षतामें गत ता. २१ नवम्बरको रात्रिके ८ से ११॥ बजेतक पवित्र स्थान पुष्करराजमें राजपूताना–मध्यभारत सभाका २४ वां अधिवेशन बड़े समारोहके साथ सम्पन्न हुआ। अनेक राज्योंके प्रजाजनोंने भाग लेकर कई महत्वपूर्ण प्रस्ताव स्वीकृत किए। सुबह १० बजे सभापतिका जुलूस बड़े सज–धजके साथ राजस्थानप्रान्तीय हिन्दू महासभाके सभापति डॉ. मुन्जे साहबके साथ पुष्करराजमें निकाला गया।

शामको ८ बजे खास पण्डालमें सर्व प्रथम स्वागताध्यक्ष श्री रामनारायणजी आचार्य, ॲडवोकेट बीकानेरकी प्रार्थना पर श्री. कन्हैयालालजी कलयंत्रीने सभाका उद्घाटन करते हुए कहा कि, देशी राज्य प्रजाकी सेवा करने वाली यह सर्व प्रथम संस्था है। साथ ही इस सभाको ही यह गौरव प्राप्त है कि वह प्रति वर्ष अनेक कठिनाइयोंके बावजूद अपना सफल अधिवेशन करती आ रही है। आगे चलकर कलयंत्रीजीने कहा कि जब कि हमारे राजा–महाराजा इंगलैण्डकी जनताकी स्वतंत्रता व डेमोक्रसीकी रक्षाके लिए अपना प्रजाका तन-मन-धन इस विश्वव्यापी युद्धमें अर्पित कर रहे हैं, तब क्या वजह है कि, वे अपने ही देशबान्धवोंको या प्रजाजनोंको गुलामीकी शृंखलामें आबद्ध रखें या रहने देवें। आदि आदि।

स्वागताध्यक्ष श्री आचार्यजीने मारवाड़ी भाषामें कहा कि, जमाना संगठनका है। प्रान्तके समस्त कार्यकर्त्ताओंको अलग २ डफली न बजाकर हमारी इस सबसे पुरानी संस्थाके झण्डेके नीचे रचनात्मक कार्य करनेके लिए अपनी शक्तिको केन्द्रित करनी चाहिये। हमारे अधिकार जिन शक्तियोंने दबा रखे हैं वे बड़े शक्तिशाली हैं। आपने यह भी कहा कि, राज्योंके अंदर सैकड़ों-हज़ारों बेलगाम और कर्तव्यसे कोरे राज्य जागीरोंके रूपमें जिस रियासत या प्रान्तमें मौजूद हों वहां तो अन्नदाता किसानोंपर क्या बीतती होगी यह बात शहरी लोगों की कल्पनाके भी बाहर है। अस्तु, मैं हमारे प्रान्तके राजस्थान केसरी, देशभक्त श्री. चांदकरणजी शारदाको, जो इस सभाके संस्थापकोंमेंसे एक हैं, सभापतित्वकी बागडोर इस कठिन परिस्थितिमें स्वीकारनेकी प्रार्थना करता हूँ। कईओंके अनुमोदनके पश्चात् शारदाजीने तालियोंके कड़कड़ाहटमें गर्जते हुए कहा कि मेरे प्यारे राजस्थानी भाइयो! आप जानते हैं कि, स्वतंत्रताकी प्राप्ति और उसकी रक्षा सदैव 'सर' हथेली पर लेकर फिरने वाले बहादुर ही करते रहे हैं। आज भी युरोप, अमेरिका, चीन, जापानके निवासी हंसते २ अपनी स्वतंत्रताकी रक्षाके लिए प्राणोंको न्यौछावर कर रहे हैं! यह सभा आप सबकी है। आप ही के सहयोगसे गत २० वर्षों पूर्व सभा प्रान्तसे बेगारके लिए कानून बनवानेमें व मनुष्योंको (चाकर आदि जातिके) गुलामोंकी तरह बेचने और दहेजमें देने वगैर वगैरेके विरोधमें कानून बनानेमें सफल हुई थी। इस सभाने गत वर्ष किसानोंकी-खासकर जागीरोंमें रहनेवाले किसानोंकी स्थितिकी जांच की है। वह इस सम्बन्धमें अपनी एक योजना आपके सामने पेश करेगी। दूसरे भी महत्व पूर्ण प्रश्नों पर जैसे मँहगाई रक्षा वगैरे...अन्तमें आपने कहा कि, हमारे कुछ रूठे हुए भाई सभाकी ज़रूरत नहीं समझते, अगर आप सबका पूर्ण सहयोग एवं विश्वास हो तो कार्य आगे चलाया जाय? उत्तरमें सब उपस्थित जनताने एक स्वरसे सभाके प्रति विश्वास प्रगट किया। पश्चात् निम्न लिखित प्रस्ताव पास हुए।

(१) महान् देशभक्त दानवीर सेठ जमनालालजी बजाज, महादेवभाई देसाई (महात्माजीके सेक्रेटरी), सर्वोपरि शिक्षणशास्त्री प्रिन्सिपल शेषाद्रि (अजमेर), खादी प्रचारक श्री बिस्साजी (जोधपुर) आदिकी आसामयिक एवं आकस्मिक मृत्यु पर शोक तथा उनके परिवारके प्रति समवेदना।

(२) ब्रिटिश सरकारको यदि डेमोक्रेसीके ढंढोरेमें सचमुच विश्वास है तो, वर्तमान गतिरोधको दूर करके कांग्रेसकी मांगको स्वीकार करने एवं भारतको आज़ादी देनेका अनुरोध किया गया, व जिस अन्धाधुन्धीसे गोलियों और गिरफ्तारियोंका तांता बांधा गया उसकी तीव्र निन्दा की गई।

(३) देशी राजाओंसे उन्हींकी देखरेखमें ३१ डिसेम्बर १९४२ के पूर्व उत्तरदायी शासनकी घोषणा करनेका अनुरोध वरना पूर्ण प्रजासत्ताक आन्दोलन खड़ा होनेकी चेतावनी दी गई।

(४) राजपूताना और मध्य–भारतके जागीरों एवं किसानोंके सुधारनेके लिए एक योजनारूपमें लंबा प्रस्ताव स्वीकृत किया गया– जिसमें जागीरदारोंके ज्युडिसियल पावर्स न रखने, जमीनका (विगूटी) के अलावा कोई भी लाग, बाग एवं बेगारको कानूनन जुर्म ठहराने, करदाता किसानको किसी हालतमें दुःखी न करने और कर न बढ़ाने की मांग को गई। शिक्षा, रक्षा, सफाई एवं दवा आदिके लिए जागीरकी आधी आमदनी लगनी चाहिये। किसानोंकी कर्ज-मुक्तिके लिए कानून बनाकर राज्यकी ओरसे कम सूद पर कर्ज उधारकी व्यवस्था होनी चाहिये। किसानोंको बरबाद करनेके इरादेसे ही उनपर मुकदमे चलाने या पीड़ा देने वाले जागीरी की किसान प्रजाके उस गांवको (रियासतमें) खालसेमें शामिल करनेकी मांग करनेका हक़ हो। आदि २। इसी प्रस्तावके अन्तमें किसानोंकी सुधि लेने वाले इन्दौर, ग्वालियर, जोधपुर, देवास (ज्युनियर) डुंगरपुर महाराजा एवं रीवांके सरदार नर्मदाप्रसादसिंहजीका अनुसरण करनेका अन्य राजाओं एवं ठाकुरोंसे अनुरोध किया गया।

(५) रियासतोंमें होनेवाले दमनका विरोध, अलवर, भरतपुर आदि शासकोंके प्रजा–मण्डलोंके सहयोगकी नीति पर एवं जोधपुर राज्यने इस सभाकी भी प्रार्थनाको ध्यानमें लेकर राजबन्दियोंके भोजनकी समुचित व्यवस्था करने पर संतोष प्रगट किया। साथ ही समस्त राज्योंको राजबन्दियोंको शीघ्र मुक्त करनेकी अपील की गई।

(६) देशके लिए कष्ट सहने वाले एवं जेलप्रवासी देशभक्तोंको उनके त्याग, तपस्याके लिए बधाई दी गई।

(७) रीवां महाराजाका केस उठा लेने एवं इन्दौर महाराजाको अपने राज्यमें वापिस लौटने देनेके लिए प्रजाके अनुरोधके स्वीकार करनेका भारत सरकारको कहा गया।

(८) वर्तमानयुद्ध–जनित मँहगाईसे पीड़ित प्रजाको बचानेके लिए जिन २ रियासतोंने कानूनन् रक्षण दिया है, उन्हें यह सभा धन्यवाद देती है। खासकर जयपुर, जोधपुर उदयपुर, देवास (ज्यु०) आदि अन्य शासकोंसे इस ओर ध्यान देनेकी प्रार्थना।

(९) ओसर मोसर आदिके सामाजिक सुधारके कानून बनाकर प्रजाको बरबादीसे बचानेके लिए इन्दौर, ग्वालियर एवं जोधपुर महाराजाको धन्यवाद दिया गया।

(१०) राजस्थानके स्वतंत्र विश्वविद्यालयके लिए राजा-महाराजा एवं धनी-विद्वानोंसे जोरदार अपील की गई।

(११) राजस्थानी धनिकोंका ध्यान प्रान्तमें उद्योग-धन्धे स्थापित करने व देशके ज़रूरतकी पूर्तिकी ओर विशेष रूपसे आकर्षित किया गया।

(१२) पिछले वर्षके पदाधिकारी विशेषतः प्रधान श्री कलयंत्रीजी व कार्यकारी–प्रधान शारदाजी व प्रधान मंत्री पं. निरंजन शर्मा अजितजीको धन्यवाद दिया गया।

(१३) आगामी वर्षके कार्यकारिणी कमिटीके निम्नलिखित सज्जन पदाधिकारी चुने गये।

सभापति–देशभक्त श्रीमान् चांदकरणजी शारदा।

उप-सभापति, ऑनरेबल राजाबहादुर गोविन्दलालजी व बरारकेसरी ब्रिजलालजी बियाणी।

प्रधान–मंत्री, श्री कन्हैयालालजी कलयंत्री

सहकारी मंत्री–श्री रामनारायणजी आचार्य

कोषाध्यक्ष–सेठ रामनारायणजी राठी चुने गये।

अन्तमें राजस्थानमाता, भारतमाता एवं वन्देमातरम्के जयघोषमें सभाकी कार्यवाही पूर्ण हुई।

(१४) इस सभाका अगला अधिवेशन रौप्यमहोत्सव (सिल्वर ज्युबिली) मनाया जाय। प्रान्तके कार्यकर्ता और संस्थाओंको विशेष इससे पहलेसे ही संगठित और निमंत्रीत किये जांये।

(पृष्ठ ५ का शेषांश)

पार्लमेण्ट कोई कानून पास करे या न करे। इस विषयमें हमारी कोई खास दिलचस्पी नहीं क्योंकि हम बादमें स्वयं अपने कानून बनाने वाले हैं। यह मौजूदा ढाँचेके अंतर्गत भी किया जा सकता है; पर यह स्पष्टतः समझ लेना चाहिये कि उस समय यह ढांचा एक नगण्य परिसीमा मात्र रहेगा। एक राष्ट्रीय अस्थायी सरकारका निर्माण हो सकता है तथा वास्तविक सत्ता उसे दी जा सकती है।

यह राष्ट्रीय सरकार ब्रिटिश गवर्नमेण्ट या वायसरायके प्रति जिम्मेदार न होकर जनता के प्रति उत्तरदायी होगी। हां, यह ब्रिटिश गवर्नमेण्ट तथा उसके सहयोगियोंसे मेलजोल रखेगी। भविष्यमें जब मौका आये उस समय विधान-पंचायतके जरिये और परिवर्तन किये जा सकते हैं। इस बीच यह मुमकिन हो सकता है कि मौजूदा केन्द्रीय धारासभाका आधार बढ़ा दिया जाये जिससे वह प्रतिनिधि हो जाये। इस धारासभाके प्रति केन्द्रीय सरकार जवाबदार रहे।

अगर केन्द्रमें ऐसा हो सकता है तो प्रांतोंमें लोकप्रिय मंत्रिमंडलोंके कार्य करनेमें कोई कठिनाइयां नहीं, क्योंकि वहां पहलेसे ही इसके लिये मशीनरी मौजूद है।

जबर्दस्त परिवर्तन

ढांचेमें आकस्मिक परिवर्तनके बगैर यह सब संभव है पर इसके लिये बहुत ही जबर्दस्त और भारी परिवर्तनकी जरूरत है; सार्वजनिक समर्थन प्राप्त करने और जनताको अपनी ओर आकर्षित करनेके लिये इसकी आवश्यकता भी है। केवल वास्तविक परिवर्तन और यह विश्वास कि पुरानी बातें मर खप चुकी, वे कभी अपना सिर न उठा सकेंगी, जनताको कार्यकी ओर अग्रसर करेगा। स्वतंत्रता बड़े खतरनाक मौकेपर मिलेगी और यह जबर्दस्त जवाबदारी उठाना बड़े भारी दायित्वका काम होगा। पर खतरे चाहे जो कुछ भी हों, उनका मुकाबिला करना पड़ेगा– जवाबदारीका बोझ कंधोंपर वहन करना पड़ेगा।

जिन परिवर्तनोंका जिक्र किया गया है उससे भारतको एक आज़ाद देशका 'स्टेटस' प्राप्त हो जायगा, पर शांति पूर्ण परिवर्तनमें यह बात पहले ही से तय हो जायगी कि अपने भावी संबंधोंके नियंत्रणके लिये पारस्परिक प्रबंध हो जाये। मैं नहीं समझता कि पूर्ण रूपसे स्वतंत्र तथा खुद मुख्तियार राष्ट्रोंके सिद्धान्तका जागतिक शांति या प्रगतिसे मेल

(शेष पृष्ठ २० कालम १ पर)

कमला मिल के कपड़े इस्तेमाल करें।

आर्टिफिशियल सिल्क, ज्योर्जेट साड़ियां, साड़ी क्लाथ और शर्टिंग कपड़ों के लिये यह मिल अपनी विशेषता रखती है

हेड आफिसः—
गोयनका हाउस
१४५, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट,
कलकत्ता

हर प्रकार की धोती, साड़ी, कोरा लाँगक्लॉथ, कोटिंग, केनवास, सूसी, आदि आदि

कमला मिल्स लिमिटेड

तुलसी पाइप रोड, परेल, बम्बई. टे. नं. ६००६४—६५

बिक्री-विभागः—

बम्बई : टे. नं. २६९४५
मूलज़ी जेठा मार्केट

कलकत्ता :
सूतापट्टी

—: डांवाडोल और संकट की स्थितिमें भी :—

लोकप्रियताका अकाट्य प्रमाण] रूबी प्रगति पथपर [दृढ़ता का सच्चा सबूत

१०० %

- स्वदेशी
- टिकाऊ
- दृढ़

बीमा कंपनी

प्रगतिके आंकड़े

विभाग	प्रीमियमकी आवक	
	सन् १९३७	सन् १९४१
आग	रु. ६,५५,०४७	रु. १८,४३,८५६
मोटर और अकस्मात	रु. ७३,९८६	रु ३,०२,५५४
समुद्रीय	रु. ७२,२८१	रु. २,८७,७७०
पूंजी	रु. १७,९४,३४२	रु. ३५,८७,९९६
जिंदगी		केवल दो वर्ष में किया
नया कामकाज		रु. ५२,७२,७६९

- आग
- मोटर
- अकस्मात्
- जिंदगी
- समुद्रीय

और

- मजदूरोंके बदले आदि के बीमेका कामकाज किया जाता है

रूबी जनरल इन्स्युरंस कं० लि०

टे. नं. २०५६० और ३१९२९
टेलिग्राम्स 'सनशाइन'
'SUNSHINE'

चेअरमैन
श्री. बी. एम. बिड़ला

जनरल मैनेजर इनचार्ज, बम्बई डिविज़न
श्री. बी. के. सेतलवाड़

ऑफिस—४५-४७ अपोलो स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई

राजस्थानी संसार

मृत-भोज और रतलाम माहेश्वरी समाज

भारतके अन्य प्रांतोंमें जहां लोग जमानेकी रफ्तारके साथ तेजीसे अग्रसर होकर समाज-उन्नतिके कार्योंमें परस्पर स्पर्धा करके अपना मस्तक ऊँचा रखनेका प्रयत्न करते हैं वहां रतलामके प्रजाजन और खासकर माहेश्वरी जनता अभी कोसों पीछे हैं, यों कहा जाय तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी। रतलामके लोगोंको औसर-मौसरसे बहुत प्रीति है। आये दिन यहां मृत-भोज हुआ करते हैं जिसमें लोग जी खोलकर रुपया व्यय करते हैं और इसको अपनी शान समझते हैं।

यहां तक देखा जाता है कि किसी कुटुंबकी आर्थिक हालत औसर-मौसर करनेके योग्य न होने पर भी जाति बन्धन ऐसे हैं कि मृत-भोजके लिये बाध्य करते हैं। पंच लोग रूढ़िवादके अनुसार उस कुटुंब पर अप्रत्यक्ष रूपसे दबाव डालते हैं या फिर स्वयं वह गरीब कुटुंब जाति-बहिष्कारके डरसे किसी भी तरह या तो अपनी स्थायी जायदाद, मकान, गहने आदि बेचकर या किसीसे कर्ज लेकर जो उसकी एक दो पीढ़ी तक अदा हो पाता है, लेकर जाति-बांधवोंको निमंत्रित करता है कि यदि वे उस कुटुंबकी उन्नतिमें नहीं तो कमसे कम बरबादीमें तो अवश्य हाथ बँटाव।

यह तो है सब दूरकी बातें, एक कदम आगे बढ़कर देखें। यदि किसीने मृतात्माके तेरह दिन बाद ही मृत-भोज कर दिया तब तो पंच लोग खुश, किन्तु यदि आर्थिक हालत या फिर अन्य किसी कारणवश उस कुटुंबने मृत-भोज कुछ दिनके लिये स्थगित कर दिया तो उस पर कई दिनों या कई महिनों तक ही नहीं किन्तु जब तक मृत-भोज न हो जाय तब तक शब्द-बाणोंका लगातार प्रहार किया जाता है। लोग यह कहते सुने जाते हैं कि अमुक वंश या अमुक कुटुम्बमें ऐसे कर्महीन पैदा हो गये कि उनके बड़े बूढ़ोंको अभीतक धूलमें ही लोटना पड़ता है। क्या ईश्वर मृत-भोज होने पर ही मृतात्माके लिये स्वर्गका दरवाजा खोलता है?

यह तो है माध्यमिक स्थितिके आदमियोंका हाल, किन्तु यदि किसी धनिक कुटुंबमें मृत्यु हो जाय तो उसे तो मृत-भोजके बाद मृतात्माकी स्मृतिमें 'लेण' के नामपर चाँदी या पीतल आदिके बर्तन जातिमें वितरण करना चाहिये। यह है यहांके समाजोन्नतिके कार्य और धनके सदुपयोगके रास्ते। भला जिस जातिके ऐसे संकुचित विचार हों वह कब उन्नत हो सकती है! क्या पंचोंने कभी इस बातपर भी विचार किया कि उनके इन कृत्योंसे एक नहीं सैंकड़ों हरीभरी गृहस्थियाँ और कुटुम्ब नष्ट हो गये हैं और आज दाने २ को मोहताज हैं।

समाजोन्नतिके लिये हमें जमानेके अनुकूल बनना चाहिये। जमानेके अनुकूल बननेके लिये हमें अन्धविश्वास, रूढ़िवाद और अशिक्षाको त्यागना होगा। उसकी जगह वास्तविक शिक्षाका, जो हमें योग्य नागरिक बना सके, जिसके द्वारा हम अपने भले और बुरेको समझ सकें और उचित और अनुचितका विचार कर सकें, प्रचार करना होगा। घरमें जो बड़े बूढ़े हैं यदि हम उनके विचार परिवर्तन करवाकर उनसे जाति सुधारकी आशा करें तो वह कठिन ही नहीं, असम्भव है। किन्तु वे तो पके पान हैं। यह तो नवयुवकोंके करनेका कार्य है जिसपर समाजकी भावी इमारत चुनि जायगी। नवयुवकोंको संगठित होकर अपने मण्डल स्थापित करके एक ही आवाजसे एक साथ समाजको हानि पहुंचाने वाले कार्योंका विरोध करना चाहिये। ऐसे कार्योंमें उन्हें सम्मिलित न होकर सहयोग नहीं देना चाहिये।

यहां एक दुखजनक किन्तु रहस्यमय और रतलामके पंचोंके सड़े हुए दिमागकी हास्यास्पद घटना उल्लेखनीय है। अभी कुछ ही दिन पूर्व श्रीयुत नानालालजी मालानीके कुटुंबके एक व्यक्तिके पैर नीचे अनजानमें अकस्मात ही एक चिडिया दबकर मर गई। उस व्यक्तिने 'पाँच पंच मिल परमेस्वर' के कथनानुसार पंचोंका मान रखनेके लिये उसी दिन रातको सब पंचोंको माहेश्वरी मंदिरमें इकत्रित कर सज्जनताके नाते सारा हाल कह सुनाया और पंचोंके समक्ष इस पापके लिये खेद प्रगटकर प्रायश्चित्तके निवारणार्थ सलाह मांगी। इसपर वे एकत्रित लोग उलटे उसके गले पड़ गये और उसको हत्यारा साबित कर उसका जाति-बहिष्कार कर दिया। उसके बहुत कुछ गिड़गिड़ानेपर और पंचोंकी अनुनय विनय करनेपर उन लोगोंने उससे हेमाद्रि वगैरा करवा कर उसके हाथसे मंदिरमें परसाद बँटवाकर जातिमें शामिल करनेका वादा किया। यह भी हो चुका किन्तु एक व्यक्ति द्वारा जातिके और लोग, जो उस दिन मंदिरमें उपस्थित नहीं थे, यह कहकर उस्केर दिये गये कि, चौधरीने इस मामलेमें और लोगों को पूछा तक नहीं है। अतएव बाकीके और लोगोंने श्रीयुत नानालालजीको जातिमें अंगीकार करनेसे इनकार कर दिया। दुबारा फिर परसाद बटवाया गया किन्तु यह भी निष्फल।

रतलाममें फिरके-बन्दीका बहुत जोर है। अतएव दूसरे फिरके के कुछ आदमियोंने जोशमें आकर यह तय किया कि यदि नानालालजी चिडियाके मृत-भोजके रूपमें जाति-भोज कर दें तो हम उनको अपने फिरकेमें शामिल कर लेंगे। 'मरता क्या न करता' के कथानुसार जाति-भोज भी हुआ और खूब पेट भरकर माल उड़ाया गया। यहां यह वर्णनीय है कि श्रीयुत नानालालजीकी आर्थिक हालत इतनी गिरी हुई है कि वह अपनी स्थायी सम्पति एक मात्र मकानको भी पहले ही गिरवी रख चुके हैं और आजकल महंगाईके जमानेमें येनकेन प्रकारेण अपने कुटुम्बका पालन करते हैं। जहां ऐसी हालत हो तो क्या पंचोंको उचित था कि वे इन जाति-भोजके नामपर उनसे धन व्यय करवाएं? क्या पंचोंने कभी इस बात पर भी विचार किया कि वह इस जाति-भोजमें व्यय करीब तीन सौ रुपये कहांसे लाएगा?

परसाद भी दो बार बंटा, जाति-भोज भी हुआ किन्तु फिर भी 'धोबीका कुत्ता न घरका न घाटका'। उस बेचारेको तीनसौ रुपयेके खर्चेमें उतारकर भी आजतक जातिने उसका अंगीकार नहीं किया। अब श्रीयुत् नानालालजीसे यह कहा जाता है कि यदि तुम अपने दो चार रिस्तेदारोंके घर भोजन कर लो तो तुमको जातिमें शामिल कर लिया जायगा, किन्तु अफसोस है कि अंधविश्वासके कारण कि हत्यारेको पहल पहल गृहस्थीके घर नहीं जिमाया जाता कोई सम्बन्धी भी तो तैयार नहीं होता, जातिमें उन्हींके फिरकेमें दो-तीन और भी मृत-भोज होनेवाले थे किन्तु वे सिर्फ इसी लिये स्थगित कर दिये गये हैं कि वे नानालालजी को सर्वप्रथम अपने यहां जिमाना नहीं चाहते। जनश्रुतियाँ तो यहां तक हैं कि इसी बहिष्कारके सिलसिलेमें दो चार व्यक्ति नानालालजीसे पांच पचास रुपये रिश्वतके रूपमें हड़प भी कर गये हैं। अभी नानालालजी जातिच्युत ही हैं।

हायरे अभागे माहेश्वरी समाज! जहां तेरी यह दशा है कि उजड़े हुए कुटुम्बोंको पुनः बसानेके बदले बसी हुई हरीभरी गृहस्थियोंको नष्ट कर अपने भाइयोंको दाने २ के लिये तरसता कर देनेमें अपनी सारी ताकत अजमाई जाती है, भला कब वह समाज उन्नतोमुख हो सकता है? उसका पतन नितान्त है। पाप निवारणका सच्चा रास्ता क्या उस चिड़ियाका मृत-भोज करवाना था? सरल शास्त्रोक्त उपाय तो यह था कि उनसे हवन वगैरा करवा लिया जाता। जातिवालोंने इस मृत-भोजमें व्यय हुए करीब तीन सौ रुपयेका मूल्य कभी नहीं आंका।

दूसरी घटना मृतात्मा श्रीमती राजीबाई नवारकी याद आती है। हम इसके विरुद्ध नहीं कि ब्राह्मणोंको भोजन न करवाया जाय, किन्तु श्रीमती राजीबाई नवारके धनके ट्रस्टियोंने कभी इस पर भी विचार किया कि उनकी आत्माको शांति देनेका सबसे अच्छा तरीका केवल क्या छन्यात (ब्राह्मणभोज) ही था? छन्यातमें व्यय किये गये एक हजार रुपयेका यदि जातिहितैषी कार्योंमें उपयोग किया जाता तो उनके कितने ही बेटोंका भला होता जिनको हरेभरे देखकर उनकी आत्मा चिरशांतिका अनुभव करती।

रतलाममें ऐसे उदाहरणोंकी कमी नहीं। जन्ममरण तो दुनियाका दैनिक क्रम है। अस्तु, यहां आये दिनही औसर हुआ करते हैं जिसमें लोग अपनी इज्जत, आबरू बेचकर भी खुले दिलसे धन व्यय करते हैं। हमारा इससे यह तात्पर्य नहीं कि मृतात्माकी शांतिके लिये कुछ भी नहीं किया जाय। औसर-मौसर की प्रथा कब और क्यों चालू हुई और किसी जमानेमें इसकी आवश्यकता रही या नहीं इसके बारेमें इतिहास तो कुछ कहता नहीं किन्तु समयको देखते हुए हम यह अवश्य कह सकते हैं कि आज मृत-भोजकी प्रथाकी आवश्यकता कतई नहीं है। यह निरर्थक और फिजूल खर्ची है। हमारे धनका दुरुपयोग है। यह केवल मात्र भ्रम और अन्धविश्वास है कि मृत-भोजसे मृतात्माको स्वर्ग और शांति मिलती है। यह खोखले और और सड़े दिमागकी उत्पत्ति है कि जीवन भर पाप कर मरनेके बाद स्वर्ग और शांति खरीद लिये जायं। मृतात्माको शांतिके लिये ईश्वरसे हार्दिक प्रार्थना ही वास्तविक शांतिका सबसे अच्छा उपाय है।

जिस अभागे गरीब देशमें और आजकलके युद्धकालीन जमानेमें, जहां कि एक ओर पेटभर खानेको अन्न नहीं मिलता, बालकोंको भूखसे तड़पते देख माताओंके कपोलों पर निरन्तर अश्रुधारा बहती रहती है, उसी देशमें दूसरी ओर हम मृत-भोजके नामपर हजारों रुपया व्यय कर माल-मिठाइयाँ उड़ाते नजर आवें यह अन्याय और हकतलफी नहीं तो और क्या हो सकता है? हवाकी रुखके साथ हमें भी बदलना चाहिये। आधुनिक-कालमें दान और धनके सदुपयोगके कई तरीके निकल चुके हैं। हमें भी उन्हींको काममें लाकर समाजके समक्ष आदर्श उपस्थित करना चाहिये।

आवश्यकता है संगठन एवं रूढ़िवादके त्यागकी। आजका श्रेष्ठ धर्म यही है कि हम सबसे पहले नालियोंमें तड़पते देशके जीते-जागते नर-कंकालोंकी पूजा करें, उन्हें पेटभर खाना खिलावें, मृत-भोज आदिमें व्यर्थ व्यय न कर वही धन इकट्ठा कर हम जातिकी उन्नतिके कार्यमें एवं सच्ची शिक्षाके प्रचारमें व्यय करें। इससे हमारा स्वतःका, जातिका और देशका तीनोंका कल्याण ही है। मानवजातिका यही एक धर्म है जो उसके लिये स्वर्ग और शांति प्राप्त कर सके।

यद्यपि सब जगका हितचिन्तन, सबको
परमावश्यक है।
पर प्रत्येक मनुज पर पहला, देश जातिका
हक है॥
यह प्रत्येक देश-वासीका सत कर्तव्य
अटल है।
करें देश सेवामें अर्पण, उसमें जितना
बल है॥

(श्री. चांदमलजी माहेश्वरी)

(पृष्ठ १ का शेष)

आदेश नोट कर लिया। ९ अगस्तको आपने मन्त्रियोंकी मीटिंग बुलायी, जभी मैंने कहा था कि प्रान्तीय स्वराज्यका मजाक उड़ा रहे हैं। ९ अगस्तसे पहले अगर हम लोग भारत सरकारके पत्रपर विचार कर भारत सरकारको अपनी सलाह भेजते तो, कुछ हो भी सकता था, लेकिन जब नेतागण गिरफ्तार हो गये तो फिर हम लोगोंकी वह मीटिंग भी बेकार हुई। हमने सरकार और भारतीयोंके बीच समझौतेका प्रयत्न किया, लेकिन उसमें सरकार द्वारा रोड़े अटकाये गये। जबतक भारत आज़ाद नहीं होता, तबतक वह पूरे जोश—खरोशके साथ युद्धमें मदद नहीं दे सकता।'

(पृष्ठ १७ कालम ४ का शेष)

नहीं खा सकता। पर जिस अन्तर्राष्ट्रीय सहयोगके हम खिलाफ हैं, वह है उसका साम्राज्यवादी स्वरूप-जिसमें प्रबल राष्ट्र अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय नीतिके सूत्रसंचालक बन जाते हैं। औपनिवेशिक स्वराज्यकी पुरानी कल्पना को भविष्यमें कहीं भी स्थान नहीं रहेगा, और खास तौर पर भारतमें तो इसे लागू ही नहीं किया जा सकता। पर जैसे ही साम्राज्यवादका कब्जा मिट जायगा, भारत समान आधार पर ब्रिटेन या दूसरे देशोंके सहयोगका स्वागत करेगा।

नये परिवर्तन

भारतकी आज़ादीके बाद व्यवहारतः कई पुराने सम्पर्क तो कायम ही रहेंगे। शासन तंत्र कुछ खास बातोंको छोड़कर अधिकांशतः आज जैसा ही रहेगा; पर उसमें आवश्यकता के अनुकूल नये परिवर्तन होंगे ही। भारतीय फौजको राष्ट्रीय सेना होना ही चाहिये, जिससे लोगोंकी यह धारणा दूर हो जाये कि यह महज़ किरायेकी टट्टू है। भावी ब्रिटिश फौजी Establishment बहुतसी वर्तमान और परिवर्तनशील शक्तियों पर, खास कर युद्धके विकास पर निर्भर करेगा। यह फौज भूतकालकी भांति अधिकार जमानेवाली विदेशी फौज नहीं रहेगी पर रहगी हमारी फौज़। उसकी 'पोजीसन' उस समय बिलकुल जुदी होगी।

अगर ऐसा...

स्पष्ट है कि अगर जिन परिवर्तनोंका सुझाव पेश किया गया है अगर वे कर दिये गये तो भारत उन देशोंके साथ, जो कि आक्रमणकारियोंके खिलाफ जूझ रहे हैं, कंधा भिड़ा देगा। आजके विशेष अवसर पर कौन-सा कदम सबसे ज्यादा असरकारक होगा, इसकी भविष्यवाणी करना कठिन है। अगर भारतका सैनिक-बचाव जो कि उसकी सीमाके बहुत दूर किया जा रहा है, अभावजनक साबित हो तो एक नयी कठिन और फौजी समस्या पैदा हो जायगी जिसके लिये नये कदम उठानेकी ज़रूरत होगी। महात्माजीने दूसरोंकी भांति कह दिया है कि हमें आक्रमणकारियोंका मुकाबिला करना चाहिए। उनके सामने झुकना नहीं, पर जैसा कि सभी जानते हैं, मुकाबिले की उनकी पद्धति बिलकुल जुदी है। बर्बर युद्धके समय इस ढंगके शांतिपूर्ण प्रयत्न अजीब प्रतीत होंगे; पर कुछ हालतोंमें हमारे लिये उनके सिवा कोई चारा नहीं रह जायगा। मुद्दे की बात यह है कि हम आक्रमणके आगे सिर नहीं झुकायेंगे।

एक बात तयशुदा है; भारत उस पर कब्जे के प्रत्येक प्रयत्नका मुकाबिला करेगा तथा ऐसी शांति जो भारतकी समस्याओंका हल न करेगी, ज्यादा दिन टिक नहीं सकेगी। मुख्यतः यह ब्रिटेनकी जवाबदारी है, पर उसके परिणाम विश्वव्यापी हैं तथा उसका प्रभाव युद्ध पर पड़ता है। अतः कोई भी देश भारतकी स्थितिकी उपेक्षा नहीं कर सकता खास कर अमेरिकन देश जिन पर जवाबदारी आ पड़ी है और जिनकी ओर संसारके लक्ष २ व्यक्ति सही नेतृत्वके लिये आशाभरी दृष्टिसे देखते हैं।

संपादकीय

अपनी बात

ता. २१ नवंबरके १९४२ के 'माहेश्वरी के अंकमें 'प्रेमी पाठकोंकी सेवामें' शीर्षक विज्ञप्तिमें, युद्ध-जन्य परिस्थितियोंमें कागजके दाम किस तेजीसे बढ रहे हैं और इस हालतमें "माहेश्वरी" का चलाना कितना कठिन हो गया है, इस ओर हमने अपने पाठकोंका ध्यान आकर्षित किया था। साथ ही हमने यह भी जानना चाहा था कि इस परिस्थितिमें हमें क्या करना चाहिए इस बारेमें पाठकगण हमें सलाह सूचना दें। हमारे इस निवेदनके उत्तरमें हमें जो पत्र प्राप्त हुए हैं उनमें माहेश्वरीके स्थगित होनेकी संभावनाका ख्याल कर पाठकोंने अपना दुःख जाहिर किया है। एक समाज हितैषी भाई का पत्र हम यहां ज्यों का त्यों उद्धृत कर रहे हैं।

" इस पक्षके माहेश्वरीमें " " प्रेमी पाठकों कीं सेवामें " शीर्षक सूचना पढ़कर कुछ दिलको चोट लगी। ' माहेश्वरी ' का प्रकाशन तो हरदशामें जारी रहना ज़रूरी है। अपने गेटप, पाठ्यसामग्री और निर्भीक राष्ट्रीय नीतिके कारण उसका क्षेत्र माहेश्वरी समाज तक ही सीमित नहीं है, वह राष्ट्रकी और हिन्दी पत्रकार जगत्की एक महत्वपूर्ण चीज़ बन गया है। आपने इसके लिये जो श्रम किया है और साथही त्याग भी, उसे इसकी एक २ पंक्ति प्रकट करती है। यों तो सभी पत्रोंके समक्ष संकट पूर्ण स्थिति मौजूद है मगर ' माहेश्वरीके समक्ष खास है। वह एक समाज विशेषका पत्र समझा जाता है, विज्ञापनोंके संबंधमें उसकी एक विशिष्ट नीति है, वह दूषित, जनरुचि बिगाडनेवाले विज्ञापन नहीं छापता है, अतः उसकी आर्थिक कठिनाई स्वाभाविक है। मगर सुसंपन्न माहेश्वरी समाज के लिये अपने ऐसे सुन्दर पत्रको संकटपूर्ण स्थितिमें पड़ा देखते रहना, वस्तुतः आश्चर्यकी बात है। मेरा विश्वास है कि आपकी उक्त सूचना पढतेही प्रत्येक माहेश्वरी बंधु यथाशक्ति आर्थिक सहायता भेजकर तथा अन्य मित्रोंको भी इसके लिये प्रेरित कर अपने कर्तव्यका पालन करेगा। आज नहीं गत ३३ वर्षोंसे वह समाजकी सतत सेवा करता आ रहा है। और आगे भी उसका इसी निर्विघ्न गतिसे चलता रहना माहेश्वरी समाज और राष्ट्रकी खातिर ज़रूरी है। यह पत्र माहेश्वरी समाजके अभिमानकी वस्तु है और इसकी रक्षा करना प्रत्येक माहेश्वरी बंधुका कर्तव्य है। "

हम जानते हैं कि माहेश्वरीके अनेकपाठकोंके दिलमें प्रायः इसी तरहके भाव पैदा हुए होंगे। हमारे हाथोंमें 'माहेश्वरी' को आये करीब २॥ साल होने आये हैं। हमारे दिलमें यही भावना बनी रही कि जिन आदरणीय महानुभावोंने समाज सेवाके हेतु इस वृक्षको लगाया था और उसे बढानेमें अथक परिश्रम उठाया था, उसे हम अधिकाधिक, पुष्पित, पल्लवित और फलित होते रखें। हम यह नहीं कह सकते कि इस ध्येयमें हम कहां तक सफल हुए हैं। किन्तु हम अपने राहमें इस ध्रुव विश्वासको लिए कि " न हि कल्याणकृत कश्चित् दुर्गतिं तात गच्छति' पाठकों की सेवामें उपस्थित होते रहे हैं। उपरोक्त पत्रमें 'माहेश्वरी' की जो महत्ता प्रदर्शित की गई है, उसके हम कितने यशभागी हैं यह हम नहीं जानते, हाँ अपनी ओरसे हमने सदा यह कोशिश की कि इसका दायरा अधिकाधिक विस्तीर्ण बने।

किन्तु इस कागजकी समस्याने हमें इतना चिन्तित बना दिया है कि इसीको लेकर थोडेसे शब्दोंमें हमने गताङ्कमें अपील की थी। कई बार हमारे मनमें आया कि माहेश्वरीका वार्षिक मूल्य ३ रु. से बढाकर ४ रु. कर दिया जाय। पर क्या इससे हमारी चिन्ताका निवारण हो सकता है? कागजके दाम जिस समय ३ आना और आगे चलकर ६ और ९ आना रतल थे तब भी माहेश्वरीको घाटा उठाना पड रहा था। और अब तो बाज़ारमें १ रु. ८ आना और इससे भी ज्यादा दाम बोलते हैं। इस अवस्थामें पत्रको कैसे जारी रखा जाय? यही एक बड़ी भारी समस्या है। इसके इलावा इस वक्त महासभाके सभापति श्री. रामकृष्णजी धूत, श्रद्धेय जाजूजी, माननीय बियाणीजी, सेठ श्री गोविन्ददासजी मालपाणी इत्यादि महासभाके प्रमुख कार्यकर्ता भी जेलके सीखचोंमें बन्द हैं, यदि वे बाहर होते तो इस संकटावस्थामें उनकी ओरसे पथ-प्रदर्शन मिलता और हमें इस संबंधमें अपना निर्णय करनेमें मदद मिलती। परंतु उनके जेल चले जानेसे इस संबंधमें भी हमारी कठिनाई बढ़ गई है।

(**नोटः**—गताङ्कमें हमारी विज्ञप्ति पढ़कर श्री. बालकृष्णजी मोहताने माहेश्वरीके चंदेमें २०० रु. प्रदान किये हैं और श्री. लक्ष्मीनिवासजी बिड़लाने भी सहायता देनेका आश्वासन दिया है। हम इन दोनों महानुभावोंके आभारी हैं।)

अपने सामने उपस्थित हुई इन कठिनाइयोंको दूर करनेकी हम भरसक कोशिश कर रहे हैं। अपने पाठकों और माहेश्वरीके अन्य प्रेमी सज्जनोंसे हम चाहते हैं कि वे हमारे इस प्रयत्नमें सहयोग दें।

"रतलाममें प्रसूति-गृहकी स्थापना"

प्रत्येक मनुष्य मात्रका यही एक कर्तव्य है कि वह अपनी शक्ति अनुसार कमाई हुई सम्पत्तिका सदुपयोग कर लोगोंका परोपकार कर एक ऐसी अमर कीर्ति कायम कर जाय जो उसके बाद आनेवाले वंशज और समाजके लिए योग्य मार्ग प्रदर्शित कर आदर्श बन जाय।

श्री. सेठ लछीरायजी सारडा वर्षों पूर्व रतलामकी प्रजा और खास कर माहेश्वरी समाज मे एक नर-रत्न हो गये हैं। समय व्यतीत हो गया किन्तु आज भी उनका नाम रतलामके इतिहासमें स्वर्णाक्षरोंसे लिखा हुआ है और भविष्यमें भी अमर रहेगा। उनके धनके सदुपयोगके लिए आज भी एक नहीं अनेक आत्माएं उनको याद कर उनके लिए दो आंसू बहाती हैं और हार्दिक आशीर्वाद देती हैं। आज उन्हीं समाज-रत्नकी यादको ताजा करनेके लिए हम हमारे बीच श्री. सेठ रामदेव बलदेवकी कुटुम्बी श्रीमती राजबाई बावरी (मूंधड़ा) को देख रहे हैं।

सेठानी श्रीमती राजबाईने अपने स्व. पति श्री. श्रीनिवासदासजीकी पवित्र स्मृतिमें रतलाममें एक सार्वजनिक धर्मार्थ प्रसूति-गृहके स्थापित करनेका घोषित कर, रतलाम की जनताके समक्ष आदर्श दानका एक नमूना उपस्थित किया है। रतलाममें ऐसे प्रसूति-गृह की कितनी आवश्यकता थी यह यहांके प्रत्येक नागरिकको विदित है। सेठानीजीने केवल इस कमीको ही पुरा नहीं किया किन्तु रतलामकी वर्तमान और भावी जनताको अपने धनके उपयोगका पथ प्रदर्शन भी किया है। श्रीमती राजबाईने 'का वर्षा जब कृषी सुखाना' के अनुसार समय की आवश्यकताको पहचाना और उसी आवश्यकताकी पूर्ति की। हम रतलाम माहेश्वरी नवयुवक मंडलके सदस्य चिरकाल तक अमर रहनेवाले सेठानीजीके इस दानकी प्रशंसा करते हैं और रतलामके माहेश्वरी समाज की ओरसे हार्दिक धन्यवाद प्रगट करते हैं।

समाजोन्नतिका एक मात्र उपाय है सच्ची शिक्षा। अतएव प्रत्येक समाज शिरोमणिका कर्तव्य है कि वह समाजका भला करने और उन्नत बनानेके इस विशाल कार्यको हाथमें ले। रतलामके लोग यद्यपि दानी और धर्मप्रिय हैं फिर भी यहां शिक्षाका बहुत अभाव है। इस नगरमें केवल एक ही सरकारी हाईस्कूल है जो यहांकी जनताके लिए पर्याप्त नहीं। हमारे समाजमें तो शिक्षाका बहुत ही अभाव है। आर्थिक कठिनाईयोंके कारण बच्चे उच्च शिक्षासे ही वंचित नहीं रहते, आधुनिक शिक्षण बहुत मंहगा हो जानेके कारण हाई-स्कूल तक भी शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकते। यद्यपि सेठानीजीका प्रसूति-गृहका दान उच्च कोटिका है और हम उसकी प्रशंसा करते हैं फिरभी ईश्वरने श्रीमती राजबाईको एक नहीं अनेकोंका भला करने योग्य बनाया है। अतएव उनसे हमारी नम्र प्रार्थना है कि वे शिक्षाकी ओर भी ध्यान दें। हमें आशाही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सेठानीजी शिक्षण कार्यमें भी सर्व प्रथम आगे कदम बढ़ा इस आयोजनाको शीघ्र कार्यरूपमें परिणित कर लोगोंका पथ प्रदर्शन करेंगी।

साथ २ रतलामके माहेश्वरी समाजसे भी हमारी प्रार्थना है कि गंगाजल, छन्यात्, मृतभोज आदिके जाति भोजोंका बहिष्कार कर कर इसी धनको समाज हितैषी शिक्षण आयोजनाको सफल बनानेमें व्यय कर पुण्यके भागी बनें।

विनीत

श्री माहेश्वरी नवयुवक मंडल

रतलाम

यूनिवर्सल फायर एण्ड जनरल
इन्स्युरन्स कंपनी लिमिटेड
संस्थापित सन् १९१९

★

१००% शत प्रतिशत हिन्दुस्तानी इन्स्युरन्स कंपनी

ज़िन्दगी, आग, मोटर, समुद्रीय, देशी उद्योग,
और मजदूरोंके मुआवजेके बीमेका
कामकाज किया जाता है

—: हमारी शाखाएं :—

अहमदाबाद
(गांधी रोड)

बोटाद
(काठियावाड)

कलकत्ता
(१३५, कैनिंग स्ट्रीट)

लाहौर
(दी माल)

कम्पाला (युगाण्डा)
(बाम्बो रोड)

★

जिन स्थानोंपर हमारी एजेन्सियां नहीं हैं, वहां एजेण्टोंकी आवश्यकता है। विशेष विवरणके लिए लिखिए :—

कंचनलाल वरजदास (मालाणी)
जनरल मॅनेजर

हेड ऑफिस :— सर फिरोजशाह मेहता रोड, फोर्ट, बम्बई

बीमेकी सुरक्षितताके लिये यूनिवर्सलको याद कीजिए

Printed and published by Vasant S. B. Shroff, B. A., B. SC., LL. B. at the Bombay Vaibhav Press, Servants of India Society's Building, Sandhurst Road, Bombay 4

Reg. No. B4441

न्यु एशियाटिक

की

शानदार प्रगति

	१९४०	१९४१
	रु.	रु.
नया कामकाज	६०,१३,५००	६२,०४,२६०
प्रीमियमकी आय (नेट)	६,८७,८३८	८,४२,४५१
व्याजद्वारा आय	१९,८४१	३८,४१४
इन्वेस्टमेंट रिज़र्व फण्ड	२०,६१५	३१,९६१
जीवन वीमा फण्ड	५,७६,७७३	९,२१,३९५
अॅसेट्स	८,८७,०९४	१३,९५,९४३

दी न्यु एशिआटिक लाईफ इंस्युरंस कम्पनी लिमिटेड

हेड ऑफिस

कॅनाट सर्कस, नई दिल्ली

शाखाएं और चीफ एजंसियाँ

उत्तरी विभाग

(कॅनाट सर्कस, नई दिल्ली)

लाहोर

रावलपिंडी

पेशावर (केन्टोनमेन्ट)

पटना

कानपुर

पूर्वी विभाग

(८, रायल एक्सचेन्ज प्लेस, कलकत्ता)

ढाका

बर्दवान

जलपाइगुरी

सिलहट

बर्मा

पश्चिमी विभाग

(४५–४७ अपोलो स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई)

हैद्राबाद (दक्षिण)

इर्नाकुलम

बेलगाम

अहमदाबाद

कराची

मध्य विभाग

(१८, यशवंत रोड़, इन्दौर)

इन्दौर

जलगांव

नागपुर

दक्षिणी विभाग

(२८९ लिंगा चेट्टी स्ट्रीट, मद्रास)

मद्रास

सीलोन

त्रिचनापल्ली

वर्ष २३ वा. मूल्य ३) रु.
संख्या १६ एक प्रति का ।)

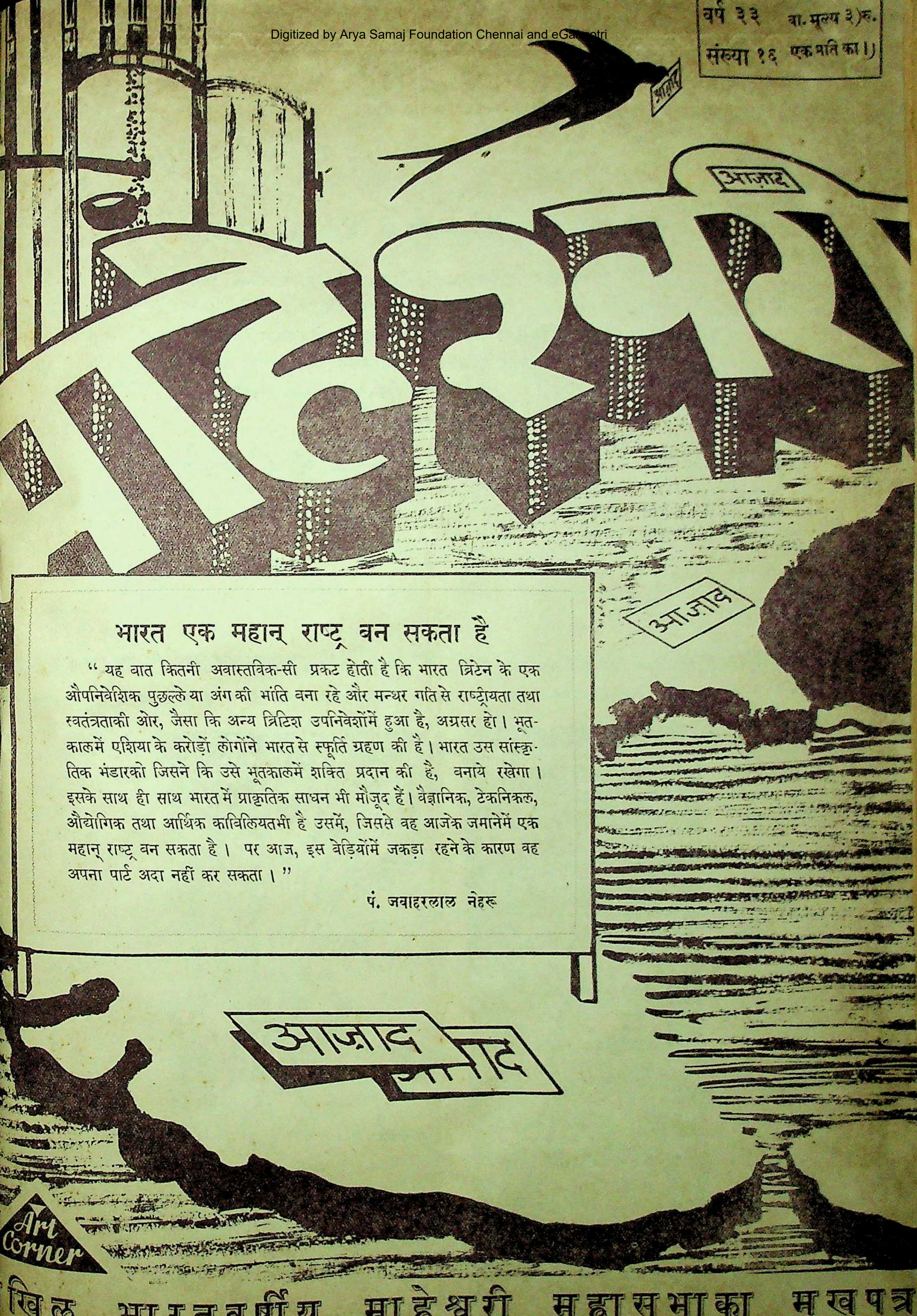

भारत एक महान् राष्ट्र बन सकता है

" यह बात कितनी अवास्तविक-सी प्रकट होती है कि भारत ब्रिटेन के एक औपनिवेशिक पुछल्ले या अंग की भांति बना रहे और मन्थर गति से राष्ट्रीयता तथा स्वतंत्रताकी ओर, जैसा कि अन्य ब्रिटिश उपनिवेशोंमें हुआ है, अग्रसर हो। भूतकालमें एशिया के करोड़ों लोगोंने भारत से स्फूर्ति ग्रहण की है। भारत उस सांस्कृतिक भंडारको जिसने कि उसे भूतकालमें शक्ति प्रदान की है, बनाये रखेगा। इसके साथ ही साथ भारत में प्राकृतिक साधन भी मौजूद हैं। वैज्ञानिक, टेकनिकल, औद्योगिक तथा आर्थिक काबिलियतभी है उसमें, जिससे वह आजके जमानेमें एक महान् राष्ट्र बन सकता है। पर आज, इस बेड़ियोंमें जकड़ा रहने के कारण वह अपना पार्ट अदा नहीं कर सकता। "

पं. जवाहरलाल नेहरू

खिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभाका मुखपत्र

प्रवर्तक—स्व. भागीरथदासजी भूतड़ा

पाक्षिक

कार्यालय—अली चेम्बर्स, डीन लेन, फोर्ट, बम्बई.

गांधीजीका कष्ट हिन्दुस्तान के गौरव का प्रतीक है

" गांधीजीका कष्ट हिन्दुस्तान के गौरव का प्रतीक है, और उनका सत्याग्रह हिन्दुस्तान के गहरे ज्ञानका प्रतीक है। गांधीजीका कहना है कि अन्याय के सामने सर झुकाना तो अन्याय सहने से भी अधिक अपमानजनक है। मुझे विश्वास है कि वह दिन आयगा जब गांधीजी संसारभरमें देवता की तरह पूजे जायेंगे। आज गांधीजी स्वतंत्र नहीं हैं। आप उनके शरीरको भले ही नष्ट कर दें; लेकिन उनमें ईश्वरीय ज्ञानकी जो ज्योति चमकती है, उसे आप नहीं बुझा सकते। "

—श्री. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

हिन्दुस्तान में
गेंडा-मार्का
क्राफ्ट-पेपर
बनता है
मज़बूत
चीमड़
टिकाऊ
फिर कमज़ोर और भद्दे
कागजों की रैपिंग से
अपने व्यवसाय
को क्यों हानि पहुंचाते
हैं?
ओरिएण्ट पेपर मिल्स लि०
८, रायल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता

सम्पादक
श्री. लक्ष्मीनारायण मालाणी,
श्री. राधाकृष्ण लाहोटी

माहेश्वरी

' उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत '

प्रकाशक
श्री. वसन्तलाल श्राफ़
बी. ए., एलएल. बी.

वर्ष ३३, संख्या १६] बम्बई ता. २२ दिसम्बर १९४२ [वार्षिक मूल्य ३ रुपया

हिन्दुस्तानका मिशन

✶

विश्व-युद्धके बाद विश्व-क्रान्ति होनेवाली है। युद्धका प्रारम्भ किस लिए हुआ, यह तो लोग भूल ही जायेंगे। और इतने महान् मनुष्य-संहारके बाद मनुष्यजाति किस तरह शांतिसे और सुखसे रह सकती है, इसका विचार करके दुनियाकी नवरचना की जायगी।

आज लोग समझाते हैं कि अगर जापान-जर्मनीकी विजय हुई तो यह नवरचना खराब होगी और मानवताका नाश होगा; किन्तु अगर अमेरिका, इंग्लैंड, रूस, चीनकी विजय हुई तो मानवताकी रक्षा होगी और दुनियाभरमें शान्तिकी स्थापना होगी। इस मान्यतामें सत्यका अंश बहुत ही कम है और अहंकार, अभिमान और आत्मश्लाघा अधिक है। दोनों पक्ष स्वार्थसे भरे हैं, जर्मनीका पराजय होनेके चिन्ह तो अभी दीख नहीं पड़ते हैं, तो भी मित्र राज्योंके बड़े बड़े नेता अभीसे सोच रहे हैं कि विजय पाते ही जर्मनीको किस तरह कुचल दिया जाय।

पिछले महायुद्धके अंतमें वरसाई की संधिमें ऐसा सब सामान तैयार किया गया था, जिससे जर्मनी कभी भी सिर ऊंचा न करे। लेकिन बुद्ध भगवान की वाणी सही निकली कि विजयके बाद वैर बढ़ता है और पराजित पक्षको तबतक सुख की नींद नहीं मिलती जबतक कि वह अपनी पराजय का पूरा-पूरा बदला नहीं ले लेता है।

वरसाई की संधि ने हिटलर पैदा किया। जब हिटलरने वरसाई की संधिको तोड़ दिया, तब दुनियाके हितचिंतकोंने जाहिर किया था कि वरसाई की अन्यायी संधिके पेटमें नया विश्व-युद्ध छिपा हुआ है। युद्धके अंतमें किसी एक पक्ष की नहीं, किन्तु स्वतंत्रता, समता और बंधुता की ही विजय होनी चाहिए थी। वैसा होता तो पिछला युद्ध ही आखिरी युद्ध हो जाता। लेकिन इंग्लैंडने और फ्रांसने वैर-वृत्तिसे काम लिया और बीस-पचीस बरसके अंदर आजका विश्व-युद्ध मोल लिया।

फ्रांसकी क्रान्तिके समय चन्द महात्माओंने स्वतंत्रता, समता और बंधुता की घोषणा की। मानवधर्मका यही त्रिविध सार है। फ्रांसमें क्रान्ति हुई, किन्तु उसने एक स्वतन्त्रता की ही स्थापना की। अमेरिकाने भी इंग्लैंडके खिलाफ लड़कर स्वतंत्रताकी घोषणा की, किन्तु जब तक अब्राहम लिंकनने गृहयुद्ध चलाया और निग्रो लोगोंको दासमुक्त नहीं किया तबतक अमेरिकामें स्वतंत्रताकी खुशबू नहीं पैदा हुई थी।

मेज़िनीने राष्ट्रीयताके नाम पर आस्ट्रियाके साथ युद्ध चलाया। तबसे दुनियामें राष्ट्रीयता का बोलबाला है। किन्तु 'मेरे राष्ट्रके लिए स्वतंत्रता और औरोंके लिए दासता' ऐसी वृत्ति बढ़नेसे दुनियाभरमें भयानक साम्राज्यवाद फैल गया।

इससे दुनियाने देखा कि केवल स्वतंत्रता शान्तिकी रक्षक नहीं है। समानताके बिना स्वतंत्रता व्यर्थ है। रूसने समानताका साम्यवाद चलाया, और मानवताके तीन तत्त्वोंमेंसे दूसरे तत्त्वकी प्रतिष्ठा की। अब दुनियामें सर्वत्र समाजवाद और साम्यवादका प्रचार होने लगा है। दबे हुए लोग अपना संगठन करें तो वे जबरदस्त शक्ति पैदा कर सकते हैं, यह देख कर समान-स्वार्थोंका संगठन करने पर अब दुनिया तुली हुई है।

'दुनियाभरके मजदूरो, एक हो जाओ!' यह एक घोषणा है। 'दुनियाभरके मुसलमानो, संगठित हो जाओ!' यह घोषणा भी हमने सुनी थी। एशिया, अफ्रिकाके लोगों को छोड़कर बाकीके राष्ट्रोंने अपना राष्ट्रसंघ बना कर देखा। (जापान भी उसमें था, यह हम भूल नहीं सकते।) लेकिन सब दीर्घदृष्टि समर्थ धूर्तोंका वह संगठन अदूरदर्शी और कमजोर ही साबित हुआ। एशियाके संगठन की बात भी छेड़ी जाती हैं। आज मित्र-राज्योंकी घोषणा है कि प्रजातंत्रमें विश्वास रखनेवाले देशोंका संगठन करके जापान, जर्मनी, इटलीको परास्त किया जाय। इन सब घोषणाओंमें न्यायकी, मानवताकी और बन्धुताकी खुशबू नहीं आती है।

हिन्दुस्तान ही एक ऐसा देश है जो बन्धुता की स्थापना कर सकता है।

स्वतन्त्रताकी स्थापनाके साथ व्यक्तिवाद और वोटका जन्म हुआ। समताकी स्थापनाके साथ समाजवाद और अर्थ-विभाजनका जन्म हुआ। बन्धुताके साथ अहिंसा और सत्याग्रह की स्थापना होनेवाली है।

श्री. काका कालेलकर

डर है कि हिन्दुस्तान अपना यह अहिंसा और बन्धुताका मिशन भूलकर भ्रामक स्वतन्त्रताके लोभमें पड़कर इस सर्वनाशी विश्व-युद्धमें शरीक होगा। आशा है कि ईश्वरकी कृपासे ऐसी कुछ घटना घटेगी कि जिससे हिन्दुस्तान बन्धुता, मानवता, आत्मीयताके प्रति पूर्ण निष्ठा रखकर इस विश्वयुद्धका रूप ही बदल देगा।

युद्ध मात्र अधर्म है। युद्ध बंधुताका द्रोह करता है। न्याय और अन्याय किसीकी भी हिंसा हमें नहीं करनी चाहिए। अन्यायीकी हिंसा करनेसे अन्यायकी हिंसा नहीं होती। उल्टा अन्याय तो बढ़ता ही है। अंग्रेज़ कहते हैं कि दुनियाकी स्वतंत्रताके लिए वे लड़ रहे हैं, किन्तु वे स्वयं कितने अन्यायी स्वातंत्र्यद्रोही और विश्वासघाती बनते जा रहे हैं, इसका अनुभव हिन्दुस्तानको है।

हम हिन्दू-मुस्लिम-एकता चाहते हैं। किसलिए? सिर्फ भारतकी स्वतन्त्रताके लिए? नहीं। हम तो तमाम दुनियाके छोटे-बड़े सबोंकी स्वतंत्रता चाहते हैं। जापान और जर्मनीकी भी स्वतन्त्रता हमें चाहिए। हम कहते हैं कि हिन्दू-मुस्लिम भाई-भाई हैं। तो क्या अंग्रेज़ और जर्मन भाई-भाई नहीं हैं? चीनी और जापानी लोग भाई-भाई नहीं हैं? हम तो कहते हैं कि अंग्रेज़ और जर्मन दोनों हमारे भाई हैं। चीनी और जापानी दोनों हमारे भाई हैं। हम अपने बलिदानसे यह बात साबित करेंगे तभी बन्धुता सिद्ध होगी। अहिंसक प्रतिकार और कोई चीज़ नहीं बल्कि वह तो प्रेमकी तेजस्विता ही है; बन्धुताका तकाजा ही है। हम ऐसा अनोखा युद्ध चलाना चाहते हैं कि जिसके अन्तमें 'वसुधैव कुटुंबकम्' सिद्ध हो जाय; सर्वोदय स्थापित हो जाय।

हम भगवानसे प्रार्थना करते हैं—हृदयसे और जीवनसे प्रार्थना करते हैं कि भारतको किसी भी हत्यामें शरीक न करे। हमें दुनिया भरमें बन्धुताकी स्थापना करनी है।

गीत

●

श्री. रमेशचन्द्रजी माहेश्वरी 'प्रदीप'

बलिदान करें, बलिदान करें !
कैसी यह करुण पुकार अरे,
दारुण यह हाहाकार अरे,
माताका क्रन्दन आज हरें,
हम आज विप्लवी गान करें !
बलिदान करें, बलिदान करें !

दुखियोंके बन्धन आज हरें,
मरकर भी, कटमिटकर भी रे,
हाथोंमें प्राण लिये अपने
मजलूम सभी अभियान करें !
बलिदान करें, बलिदान करें !

हम आज़ादीके दीवाने,
स्वातंत्र्य-शिखाके परवाने,
यह जलती ज्वाल बढें आगे,
वेदीपर अपने शीश धरें !
बलिदान करें, बलिदान करें !

माहेश्वरी

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन"

बम्बई, ता० १२ दिसम्बर १९४२

महिलाओंको स्वाश्रित बनानेके लिए

'महिला सेवा संघ' की स्थापना

अन्यत्र प्रकाशित विज्ञप्तिसे पाठकोंको ज्ञात होगा कि महिलाओंकी उन्नति और उनकी विविध प्रकारसे सेवा करनेके पवित्र उद्देश्यसे 'महिला-सेवा संघ' नामक संस्थाका आगमन हो रहा है।

मारवाड़ी समाज़में महिलाओंकी स्थिति उन्नत करनेकी ओर अब तक जो भी प्रयत्न हुए हैं, वे एक तरहसे नगण्यसे ही हैं। हां, सुप्रसिद्ध समाजसेवी और समाजप्रेमी श्री. रामगोपालजी मोहता द्वारा संचालित 'मातृ-मन्दिर' और हिंगणघाटका विधवा सहायक संघ अवश्य ही इस ओर अग्रसर हैं, लेकिन इतने विशाल दायरेवाले समाजमें ऐसी संस्थाएं मुश्किलसे हाथकी उंगलियां जितनी ही मिलेंगी। इसके इलावा कुछ संस्थाएं हैं जिनका कार्यक्षेत्र केवल लडकियोंको निश्चित कक्षापर्यंत पढ़ाने तक ही सीमित है। एक प्रकारसे इन्हें हम कन्या पाठशालाएं ही कह सकते हैं। लेकिन इसके अतिरिक्त प्रौढ़ महिलाओं और आपन्न बहनोंको उचित शिक्षण देकर, उनका मानसिक विकास साधकर, समाजमें उन्हें स्वाश्रयी और अपने पैरों खडी रहनेके काबिल कर सके, ऐसी एक भी संस्था वर्तमानमें हमें दृष्टिगोचर नहीं होती। श्री. मोहताजी की संस्थाके संबंधमें हम विशेष परिचित नहीं, फिर भी हम यह निस्संकोच रूपसे कह सकते हैं कि बंबईकी 'वनिता विश्राम' और महाराष्ट्र, मध्यप्रान्त, और बरारमें 'सेवासदन' की ओरसे संचालित संस्थाओंकी सी एक भी संस्था अपने समाजमें नहीं है।

पाठक हमें माफ करें, हम स्पष्ट कह देना चाहते हैं कि अपनी बहनों और बहू-बेटियोंकी ओर मारवाड़ी समाज जितना लापरवाह और उदासीन है उतना शायद ही कोई समाज होगा। नामवरी हासिल करनेके लिए अन्य संस्थाओंको विपुल धन राशि प्रदान करनेवाले यहां बहुत मिल जायेंगे, पुण्योपार्जनके लिए इधर उधर धर्मशालाएं स्थापित करने और ब्राह्मणोंको भोजन करानेमें गौरव समझनेवालोंकी भी कमी नहीं है। लेकिन मानव सृष्टिकी इन जीती-जागती चेतन प्रतिमाओं की सेवा करनेकी ओर किसी का ध्यान नहीं जाता।

लड़कोंकी शिक्षाकी ओर अब कुछ ध्यान दिया जा रहा है यह एक शुभ चिन्ह है। किन्तु समाजकी सर्वांगीण उन्नति करनेके लिए स्त्रियोंको शिक्षित करना भी उतना ही अनिवार्य है, यह चीज अब तक भी कोरे विचार तक ही सीमित रही है। और जहां लडकियोंकी शिक्षा के बारेमें भी अनेक तरहके संकुचित विचार प्रवर्तित हैं, वहां प्रौढ बहनों और खासकर निस्सहाय बहनोंको शिक्षा देकर उन्हें स्वावलम्बी बनानेकी बात भी कौन सुनता है! किसी धनी-मानीके घरमें दैववशात् छोटी उम्रमें कोई बहु-बेटी विधवा होगई हो, या जब कोई सुधारकदल बाल विधवाओंके पुनर्विवाहका आन्दोलन करनेका सवाल खडा करता हो, तब ऊंघते ऊंघते हवामें इतनी बात छोड दी जाती है कि विधवाश्रमोंकी स्थापना की जाय। लेकिन प्रस्तावकी परिभाषा वाणी तक ही सीमित रहती है। जो हाल उपरोक्त लोगोंका है, वही सुधारक माने जाने वाले लोगोंका है। वे भी इस कार्यकी ओर जितने कर्तव्यशील होने चाहिए, उतने नहीं हैं। स्त्री स्वातन्त्र्य और स्त्रियोंके समानाधिकारके संबंधमें हम बढ बढकर बातें करते हैं; लेकिन उन्हें अंधकारसे प्रकाशकी ओर ले जानेके लिए कोई क्रियात्मक कार्य नहीं कर रहे। इस अंधकारसे प्रकाशकी ओर ले जानेका तात्पर्य केवल यही नहीं है कि हम स्त्री शिक्षाका प्रसार करें। वस्तुतः शिक्षा तो एक साधन मात्र है। जरूरत है ऐसे सर्वांगीण शिक्षोपक्रमकी जो उनको जिन्दगीका एक निश्चित राह दिखाये, और जिसके बल पर जरूरतके मौके पर वे समाजमें स्वाश्रयी जीवन बिता सकें। आज समाजमें महिलाओंकी कितनी दुरवस्था है यह बात किसी से छिपी नहीं। अधिकांश स्त्रियोंका समय अड़ोस पड़ोसमें गपशप और इधर उधरकी बातोंमें ही बीतता है। न तो कोई शिक्षणका इन्तजाम है और न इस ओर उन्हें प्रोत्साहित कर सके वैसा वातावरण ही। गरीब और असहाय स्त्रियां आटा पीस कर या सीने पिरोनेके द्वारा किसी प्रकार जीवन निर्वाह करती हैं। इनमें भी बच्चों वाली असहाय स्त्रियोंकी अवस्था अत्यंत शोचनीय है। इस निराधार हालतमें जहां अपने खुदकी जीविका निर्विघ्न रूपसे चलाना विकट हो, सन्तानोंका उचित पालन पोसन और उनकी शिक्षा-दीक्षाका प्रबंध तो प्रायः असंभव सा ही प्रतीत होता है। इन बच्चोंकी आकांक्षाएं दब जाती हैं, बुद्धि अविकसित रह जाती है, और जीवनमें अंधकारको लेकर ही वे बड़े होते हैं। उनको चालना देकर समाजके योग्य नागरिक बनानेका जिम्मा कोई नहीं लेता अतः मुरझाये फूल की तरह उनका जीवन असमयमें ही कुम्हला जाता है। समाजके इस विचलित व्यक्तिक्रमको सुधारनेके लिए सबसे पूर्व हमें बहनोंको शिक्षित व स्वाश्रयी बनानेकी जरूरत है।

हमें विश्वास है कि 'महिला-सेवा संघ'के संस्थापकोंके दिलमें यही उद्देश्य कार्य कर रहा होगा। लेकिन एक चीजका उल्लेख कर देना हमें यहां आवश्यक प्रतीत होता है, और वह यह है कि इस समूचे सदुपक्रममें महिलाओंको संस्थाकी आश्रित नहीं किन्तु स्वाश्रित बनानेकी ही दृष्टि ध्यानमें रखनी होगी। आज १० बहनोंको मासिक रु. १०, की सहायता-वृत्ति देना निश्चित हुआ है, मुमकिन है बादमें इससे भी ज्याद बहनोंको ज्यादा सहायता देना शक्य हो, फिर भी यदि उनमें स्वाश्रयी वृत्ति उदित हुई होगी तो ही उनका और उनकी संततिका जीवन आलोकमय बन सकेगा।

वस्तुतः समाजोन्नतिके इस परमावश्यक विषयकी ओर हमारा ध्यान कबका जाना चाहिए था, लेकिन अबभी समय है, यह सोच कर इस ओर जितनाभी प्रयत्न कर सकें, करना चाहिए। संस्थाके संस्थापकोंके सामने प्रारंभ प्रारंभमें चाहे अनेक कठिनाइयां खडी हों, वे इसकी परवाह न कर आगे बढते रहें। संभव है, प्रारंभमें इस सदुद्योगमें बहुत कम लोगोंका सहयोग मिले, फिरभी वे इस ओर ध्यान न दें। समाजके भाई बहनों और विशेष कर नवयुवकोंसे हमारी प्रार्थना है कि वे भी बहनोंको इस संस्थासे लाभ उठानेके लिए प्रोत्साहित करें।

मि. एटली को मुँहतोड जवाब

सिरसे एडीतक जिनके शरीरमें शाहीवादी मनोवृत्ति भरी हुई है, वैसे ब्रिटेनके प्रधानमन्त्री और भारतसचिव मौके ब मौके अपने भाषणों और ब्रोडकास्टोंमें बतलाते आ रहे हैं कि भारतकी प्रमुख समस्याओंमें वहांके अल्प-संख्यकों की भी एक जटिल समस्या है। अपने प्रधानमंत्रीकी कोरी नकल करते हुए ब्रिटेनके समाजवादी उप-सचिव मि. एटलीने भी पिछले दिनों भारतमें ब्रिटेनकी जिम्मेदारियोंका लंबा चित्र खींचते हुए कहा था कि हमपर भारतकी अन्य अल्पसंख्यक जातियोंके साथ साथ सिख और पारसियोंके अधिकारोंकी रक्षा करनेकी पवित्र जिम्मेवारी भी है।

पारसी लोग सचमुचमें एक अल्पसंख्यक जाति है। एक अल्पसंख्यक जातिके नाते वे वैधानिक सुरक्षाके अधिकार पेश करें उसमें भी किसीको आपत्ति नहीं हो सकती। लेकिन यह कौमी अल्पसंख्यक जाति अपना हित अच्छी तरह समझती है। भारतके राष्ट्रीय जीवनमें उसका क्या स्थान है, उसका उसे ख्याल है। वह जानती है कि देशकी अन्य कौमों के साथ सुलह-शांतिसे रहकर ही वह देशकी सच्ची सेवा कर सकती है और इसीमें उसकी सच्ची सलामती है।

इसी लिए श्री. एटलीको पारसियोंने साफ साफ सुना दिया कि आप मेहरबानी कर हमारी फिकर न करें। हमारी आडमें हिन्दुस्तानको स्वाधीनता न देने के बहाने मत बनायें। हमें आपकी विशेष सुरक्षाकी तनिक भी आवश्यकता नहीं। हरेक हिंदुस्तानीकी भाँति हम भी हिन्दुस्तानकी आज़ादीकी मांग करते हैं।

पारसियोंके इस खरे जवाब से आशा है श्री. एटली और उनकी गिरोहके अन्य सदस्योंकी आंखें खुल जायंगी।

बम्बईके पारसी समाजकी ओरसे एक महत्वपूर्ण घोषणा-पत्र प्रकट हुआ है, इसमें एक हजारसे अधिक प्रमुख और प्रतिष्ठित पारसी सज्जनोंके हस्ताक्षर हैं। इसमें पुराने सरकारी वेतनभोगी, विभिन्न संस्थाओंके संचालक और बम्बईके प्रमुख पारसी पत्रोंका प्रतिनिधित्व है। कहते हैं कि कितने ही सरकारी नौकर जिन्होंने इस पत्रपर हस्ताक्षर नहीं किये, उनकी सहानुभूति है।

घोषणा पत्र इस प्रकार है:—हम लोगोंने गत ८ अक्टूबर १९४२ को कामन्स सभामें मि० एटलीका वह वक्तव्य पढ़ा जिसमें उन्होंने यह कहा है—"भारतमें ऐसी अनेक प्रभावशाली अल्पसंख्यक जातियां हैं, जिनके सम्बन्धमें विचार करना आवश्यक है। भारतमें सिख, पारसी, राजा और देशीराज्यों की प्रजा है।" यह स्मरण रह सकता है कि सर्वप्रथम देशकी आज़ादीके लिये हमारे ही समाजके स्व. दादाभाई नवरोजी, सर फिरोजशाह मेहता और सर दीनशाह वाच्छाने पथप्रदर्शन किया था। इसीलिये हमने सदैव इस बातपर जोर दिया है कि हम भारतीय पहले हैं। हमने इसी विश्वाससे कभी भी व्यवस्थापिकाओं, म्युनिसिपल बोर्डों या नौकरीके बारेमें पृथक् प्रतिनिधित्वकी मांग नहीं की। यही बात हमने गोलमेज परिषद्के समय भी की थी। महात्माजीने इसके लिये विशेष जिक्र किया था और कहा था कि पारसी ही ऐसी अल्पसंख्यक जाति है जिसने कभी भी पृथक् प्रतिनिधित्व की मांग नहीं की। हम इस बातपर जोर देकर कहना चाहते हैं कि हमारा हित अन्य अन्य समाजोंके साथ जुड़ा है। इसलिये आजकी ऐसी परिस्थितिमें हम अपनी निश्चित नीति बनाये रखना चाहते हैं।

आज भारतके तमाम राजनीतिक दल, व्यापारिक और औद्योगिक संस्थाओंकी इस मांगका हम हार्दिक समर्थन करते हैं कि भारतको आज ही और अभी स्वाधीनता उपलब्ध होनी चाहिये। अब उसे अपनी स्वाधीनताका अधिकार है, और फिर इस समय जब कि उसके हृदयमें स्वाधीनताका चिराग जल रहा है, वह किसी भी आक्रमणकारीका विरोध करना अपना कर्त्तव्य समझता है। इसके लिये हम महसूस करते हैं कि यह परम आवश्यक है कि आज जो प्रमुख नेता जेलोंमें बन्द हैं, उन्हें शीघ्रातिशीघ्र छोड़ दिया और भारतकी आज़ादीकी घोषणाकी भित्तीपर उनसे समझौतेकी चर्चा की जाये।"

पाठकोंकी सेवामें—

'माहेश्वरी' के गत दो अङ्कोंमें 'प्रेमी पाठकोंकी सेवामें' और 'अपनी बात' शीर्षक निवेदन पाठकोंने पढा ही होगा। उससे हमारी कठिनाइयोंका उन्हें ख्याल आ गया होगा। वस्तुतः 'माहेश्वरी' के संबंधमें हमें चिन्तित थे। एक ओर मनमें यह इच्छा पैदा होती थी कि विघ्न और कठिनाइयोंका सामना करते हुए भी माहेश्वरीका प्रकाशन पूर्ववत् जारी रखा जाय, लेकिन कागजकी समस्याका ख्याल आते ही दिल बैठ जाता था। लेकिन अब हमें अपने पाठकोंको सूचित करते हुए खुशी हो रही है कि श्री. लक्ष्मीनिवासजी बिड़ला और 'सकाळ' के विद्वान् संपादक मित्रवर्य डॉ. परुळेकरने हमें काफी उत्साहित किया और उधर श्री. बालकृष्णजी मोहता और श्री प्रतापचन्द्रजी पनपालियाने तो इस संबंधमें कार्य भी प्रारंभ कर दिया है। 'माहेश्वरी पत्रमें हमारी ओरसे वह निवेदन निकलते ही अनेक उत्साही भाइयोंने सहायता भेजना भी प्रारंभ कर दिया है। हमें पूर्ण विश्वास है कि 'माहेश्वरी' की ओर हित—चिन्ताकी नजरसे देखनेवाले और समाजप्रेमी भाई भी इस ओर हाथ बटायेंगे। अब तक जिन महानुभावोंने सहायताके लिए अभिवचन दिये हैं उनके नाम निम्न हैं।

१०१) रु. श्री. बजरंगलालजी बृज-मोहनदासजी राठी, लातूर,
१०१) रु. श्री. प्रतापचन्द्रजी पनपालिया, बम्बई,
१०१) रु. एक शुभचिन्तक
१००) रु. श्री. विष्णुदासजी रामगोपालजी राठी, लातूर,
४९ रु. श्री. शिवचन्द्रजी सोनी, कलकत्ता,
२१) रु. एक शुभचिन्तक

इसके अतिरिक्त रा. सा. श्री. पन्नालालजी लाहोटीने भी इस कार्यकी ओर सहानुभूति प्रदर्शित की है, और उनकी ओरसे सहायतार्थ एक अच्छीसी रकम मिलनेकी उम्मीद है।

जयपुर रियासतमें दावतों पर प्रतिबन्ध

'माहेश्वरी' के २१ अक्टूबरके अंकमें 'जोधपुर सरकारका एक स्तुत्य प्रयत्न' शीर्षक नोटमें हमने यह इच्छा व्यक्त की थी कि और रियासतें भी भोजन समारंभ, सहभोज, और दावतों पर कानूनी नियंत्रण जारी करे। हमें यह जानकर खुशी होती है कि जयपुर सरकारने भी दावतों पर प्रतिबन्ध लगाया है और कानून बनाकर जाहिर किया है कि मृतक भोजमें अधिकसे अधिक १२ ब्राह्मणों और अन्य दावतोंमें २५ व्यक्तियोंसे ज्यादा आदमी शरीक नहीं किये जा सकते। इस आज्ञाके उल्लंघन पर ३ सालकी सख्त सज़ा भी निर्धारित की गई है। हमारी रायमें इस विषयमें बहुत पहिलेसे ध्यान जाना चाहिए था, लेकिन इस युद्धजन्य विकट परिस्थितिमें, जब कि खाने-पीनेकी चीजोंके दाम अत्यधिक बढ़ गए हैं, इस प्रकारके प्रतिबन्धोंकी आवश्यकता और भी अनिवार्य बन गई है। हम जयपुर सरकारके इस प्रयत्नकी प्रशंसा करते हैं और उम्मीद करते हैं कि सर इस्माइल जैसे एक बहुश्रुत दीवानके मार्ग दर्शनसे रियासतमें और भी सुधार कायम किए जा सकेंगे।

यहां हम रियासतके अधिकारियोंका इस ओर ध्यान खींचते हैं कि कई बार जनता अपने ही लाभके लिए बनाये गए कानूनोंका भी पालन नहीं करती। बालविवाह-निषेध कानून बड़ोदा व० रियासतोंमें कबका जारी है, लेकिन यह कानून दफ्तरोंमें शोभा रूप पड़ा रह जाता है। इसके लिए कड़े अनुशासन की जरूरत है। केवल पुलिस पर ही भरोंसा न करके हरेक प्रजा जनको भी यह अधिकार देना चाहिए कि वह ऐसे कानून भंग पर अदालतमें शिकायत दर्ज़ करा सके।

जोधपुर और जयपुरकी राजस्थानी रियासतोंके अतिरिक्त बड़ोदा और कोचीनमें भी दावतों पर प्रतिबन्ध जारी किया गया है। अन्य राजस्थानी रियासतोंसे भी हम इसी तरहके कानून बनाने की आशा करते हैं। दूसरी ओर नवयुवकोंको भी चाहिए कि जिन रियासतोंमें अब तक ऐसे कानून नहीं बने हैं, वहां आंदोलन करके रियासती सरकार पर इसके लिए जोर दिया जाय।

महिला सेवा संघ

हमें यह सूचित करते हुए संतोष हो रहा है कि समाजमें महिलाओं, और खासकर संकटापन्न बहनों एवं असहाय विधवाओंकी सेवा करनेके उद्देश्यसे 'महिला-सेवा संघ' नामक संस्था की स्थापना हुई है। वर्तमानमें 'फूल नहीं तो फूलकी पांखरी' के रूपमें संस्थाने अपना लक्ष्य उन बहनोंकी यत्किंचित् स्वल्प सहायता करना ही रखा है और तदनुसार दान दाताओंकी इच्छाको ध्यानमें रखते हुए १० माहेश्वरी बहनोंको मासिक रु. १०) की सहायता—वृत्ति प्रदान करना निश्चित किया है।

समाजकी जो बहनें इसका लाभ उठाना चाहें वे निम्न पते पर अपने आवेदन पत्र भेजें।

मंत्री, महिला-सेवा संघ
११५७ रविवार पेठ, पूना नं. २

खाद्य पदार्थोंकी कमी

आज हिन्दुस्तान भरमें खाद्य सामग्रीकी समस्याने अत्यंत विकट स्वरूप धारण कर लिया है। सरकारी नाजकी दूकानोंके आगे जनता पांच पांच और उससे भी ज्यादा घंटों मुट्ठी भर अनाज पानेकी आशामें बैठी हुई सर्वत्र नज़र आती है। सरकारने खाद्य सामग्रीके नियंत्रित भाव कायम किये हैं लेकिन उस भाव पर शायद ही किसीको अनाज मिलता है। व्यापारी लोग, जिनके पास थोड़ा बहुत स्टॉक है वे नियंत्रित भाव पर किसीको कुछ नहीं देते। लेकिन व्यापारियों और मण्डियोंके मालिकोंका हमें इसमें दोष नहीं प्रतीत होता। असली दोष है सरकारकी दोषित व्यवस्थाका। यह तो एक जाहिर बात है कि हिन्दुस्तानसे लाखों टन खाद्य सामग्री ईराक ईरान और दूसरे देशोंको भेजी जा रही है। यहां तक कि सीलोन भी यहींसे नाज जाता है। इस अव्यवस्था और खाद्य सामग्रीके संकटको दूर करनेके लिए श्री. मा. नलिनीरंजन सरकारसे बंबईके प्रमुख व्यापारियोंने प्रार्थना की थी। श्री. सरकारने इस बातका आश्वासन दिया है कि आस्ट्रेलियासे गेहूं मंगवानेके लिए सरकार जहाज व. की व्यवस्था करनेका प्रयत्न करेगी। हमें उनके इस वक्तव्यसे आश्चर्य होता है। यहांसे गेहूं इ० खाद्य पदार्थ बाहर भेजा जाना जारी है और इस देशके अकाल ताण्डवको दूर करनेके लिए आस्ट्रेलियासे गेहूं मंगाया जायगा! इसके अतिरिक्त जहां लाखों टन अनाजकी आवश्यकता है वहां ५० हजार टनकी व्यवस्थाके लिए आश्वासन दिया जा रहा है!

खासकर बंबई प्रान्तके कुछ स्थानोंमें तो अन्नकी इतनी कमी हो गई है कि उन स्थानोंको अकालपीडित क्षेत्र घोषित करनेका वक्त आ गया है। कोई भी जिम्मेदार सरकारके लिए इतना अंधेर शर्मनाक है। हम चाहते हैं कि सरकार इस समस्याकी गंभीरताको शीघ्र ही पहिचाने और सप्लाईकी व्यवस्थित योजना बनाकर खाद्य पदार्थोंकी कमीको दूर करे।

ब्रिटेन और अमेरिकाको विल्की की ललकार

युद्धके प्रारंभ होते ही कांग्रेसने अपनी नीति निर्धारित करने के लिए मित्र राष्ट्रों और खास कर ब्रिटेनसे कहा था कि अपना युद्धोद्देश्य स्पष्ट करो। कांग्रेस की यह मांग हिन्दुस्तान व ब्रिटेनके हाकिमोंने अनेक तरहसे टाला दी और गोल गोल भाषामें यह बतलानेकी कोशिश की यह युद्ध संसारमें प्रजातंत्र की सुरक्षाके लिए लड़ा जा रहा है। लेकिन ब्रिटेन और अमरीका [illegible] राजनीतिज्ञ भी अब मित्रराष्ट्रोंको ललकार दे रहे हैं कि वे स्पष्ट शब्दोंमें बतायें कि युद्ध के बाद वे क्या करना चाहते हैं। इन स्वाधीनचेता व्यक्तियोंमें सबसे अधिक तेजस्वी और निर्भीक वाणीमें मि. वेन्डेल विल्की बार बार मित्रराष्ट्रोंको चेतावनी दे रहे हैं कि वे युद्धके अपने वास्तविक उद्देश्य अभीसे ही जाहिर कर दें। अटलान्टिक शर्तनामे का उल्लेख कर उन्होंने कड़े शब्दोंमें उसकी आलोचना की है और बताया है कि उस शर्तनामेमें जबतक भारत, चीन और एशियाके अन्य राष्ट्रोंको उतने ही गौरवके साथ शामिल नहीं किया जायगा, तबतक संसारमें सच्ची शांति और प्रजातंत्र वादकी अवतारणा नहीं हो सकती।

गत ७ दिसम्बरको लन्दनके 'इवनिंग स्टैंडर्ड' नामक पत्रमें एक लेख लिखते हुए मि. वेन्डेल विल्कीने कहा है—'अगर युद्ध कालमें हम लोग युद्धोद्देश्यके बारेमें एक दूसरे से सहमत न होंगे, तो युद्धके बाद आपसमें फूट पैदा होगी। इसलिये अंग्रेजों और अमेरिकनोंको दिल खोल कर विचार विनिमय करना चाहिये। ब्रिटेन अपनी औपनिवेशिक शासन-प्रणाली द्वारा करोड़ों मनुष्योंपर शासन करता है। (यहां मेरा मतलब स्वतन्त्र राष्ट्रोंके कामनवेल्थसे नहीं है)। सुदूरपूर्व (भारत और चीन) में जो जागृति फैल रही है, उसके प्रति अमेरिकनोंकी अपनी परम्परा और विवेकके अनुसार, पूरी सहानुभूति है। मैं अमेरिका और ब्रिटेनके नेताओंको ललकारता आ रहा हूं कि वे अपने युद्धोद्देश्य प्रकट करें, वे स्पष्ट बोलें कि युद्धके बाद वे क्या करना चाहते हैं।'

मि. वेन्डेल विल्कीकी ये खरी बातें भले ही साम्राज्यवादी चर्चिल और उनके अन्य साथियोंको कांटेकी भांति चुभें, लेकिन विल्कीके ये जीवित शब्द एशियाकी राष्ट्रोंकी आवाज व्यक्त कर रहे हैं इससे इन्कार नहीं किया जा सकता।

माहेश्वरी सहायता

गत अंकमें श्री. बालकृष्णजी मोहता द्वारा प्रेषित २०२ रुपयोंका हमने उल्लेख किया था जिसका ब्यौरा निम्न है।

५१ रु. श्री. रतनलालजी मानधन्या
(माहेश्वरीके आजीवन ग्राहक)
५१ ,, ,, शिवचन्द्रजी सोनी
(माहेश्वरीके आजीवन ग्राहक)
५१ ,, ,, ब्रह्मदेवजी मोहता
(माहेश्वरीके आजीवन ग्राहक)
४९ ,, ,, शिवचंद्रजी सोनी
२०२ (माहेश्वरी पत्रकी विशेष सहायतार्थ)

५१ रु. श्री. विष्णुदासजी राठी, लातूर
(श्री. रामगोपालजी राठीके पुत्रजन्मके उपलक्ष्यमें)

लातूर

श्री. श्रीकृष्णजी चाण्डकने श्री. राधाकृष्णजी रामचन्द्रजीकी ओरसे लातूरके मारवाडी राजस्थान विद्यालयको ५१००) का दान दिया है।

हिन्दुस्तान और जापान दोनोंसे दुश्मनी

सुप्रसिद्ध अमेरिकन पत्रकार

आज एक ओर हिंदुस्तान पर जापानका खतरा मँडरा रहा है, और दूसरी ओर जर्मनी खड़ा है। हिंदुस्तान अत्यंत संकटापन्न अवस्थामेंसे गुजर रहा है। अंग्रेज लोग हिंदुस्तानमें जिस शांतिको फैलाये हुए है, उसको हिन्दुस्तानी लोग स्वतंत्रताके लिए विद्रोह मचाकर या दुश्मनके साथ लड़कर भंग करेंगे। आज वह घड़ी आ गयी है जबकि हिन्दुस्तानी लोग स्वाधीनताके लिए एक भयानक विद्रोहकी आग लगानेको तत्पर हो रहे हैं। इस नाजुक वक्तमें हिन्दुस्तान शायद धुरीराष्ट्रोंका भी शिकार बन जाय। इस विषम समयमें यह परिस्थिति पैदा हुई है।

हिंदुस्तान एक सबल राष्ट्र है

हिन्दुस्तान हमें जो सहायता पहुंचा रहा है, उसके बारेमें बहुत कम अमेरिकनोंको ख्याल होगा। कितने अमेरिकन लोग ऐसे भी हैं जो हिन्दुस्तानकी कद्र करनेके बजाय उसके खिलाफ आक्षेप भी कर रहे हैं।

जर्मनीने अब तक जितने राष्ट्रोंको हथिया लिया है उन सबके सामुहिक विस्तारसे इकले हिन्दुस्तानका विस्तार ज्यादा है। जर्मनीके पास जितनी जनशक्ति है उससे दुगुनी जनशक्ति हिन्दुस्तानके पास है। ब्रिटेन, रूस और ऑस्ट्रेलियाके अपवादके साथ मित्र-राष्ट्रोंका यह एक महत्वका औद्योगिक केन्द्र है। इसके इलावा दक्षिण-पूर्व एशियामें तो मित्रराष्ट्रोंका यह इकला ही प्रमुख शक्तिकेन्द्र हो सकता है।

अगर हिन्दुस्तान हाथसे निकल जाय तो...

हिन्दुस्तान अगर दुश्मनके हाथमें चला जाय तो चीनका रास्ता बन्द हो जायगा। केवल यही नहीं, इस हालतमें चीनकी बहुत खराब अवस्था पैदा हो जायगी। हिन्दुस्तानके चले जानेपर अकेला चीन दुश्मनके खिलाफ खड़ा नहीं रह सकेगा। चीन शायद टक्कर ले, फिर भी हमारी मनोवृत्ति ही बदल गई होगी। जापानको मार भगा देनेकी आज हममें जो तमन्ना है, उस समय वह नहीं रहेगी। इसका असर इतना भयंकर होगा कि इससे हमारी समूची युद्धदिशामें पलटा आ जायगा और यह पलटा हमारे लाभमें नहीं परन्तु गैरलाभमें परिणत होगा।

हिन्दुस्तानको बचाना ही होगा

मित्रराष्ट्रोंको अपने खुदके लाभके लिए हिन्दुस्तानको बचाना होगा। उसके बचावमें हमें मदद करनी चाहिए। और मदद करनेके लिए हमें उसकी कमसे कम मांगें सच्चे दिलसे समझनी चाहिए। संभव है कि राष्ट्रवादी हिन्दुस्तानीकी आंखोंसे ही इतनी ज्यादा खतरनाक परिस्थिति दीखती हो। लेकिन दरअसल हकीकत है कि हरेक निष्पक्ष आदमीको परिस्थिति वैसी ही खतरनाक दीखेगी। हिंदुस्तानके बारेमें धुरीराष्ट्र जितना जानते हैं, कमसे कम उतना तो हमें मालूम होना ही चाहिए। इस संकट घडी में भी युद्धप्रयासमें सहयोग देनेवाले बहुत कम हिन्दुस्तानी हैं। ऐसा किस लिए?

वर्धाकी मुलाकात

इस प्रश्नका उत्तर मिलनेकी एक ही जगह है, और वह है मध्यप्रान्तमें आया हुआ वर्धा। वहांके तीस हजार बाशिन्दे मानते हैं कि ईश्वर की उनपर महान् कृपा है। वर्धाका प्रदेश आंखोंको शीतलता नहीं देता। उसके इर्द-गिर्द पथरीली भूमि है। गरमी के दिनोंमें १२० तक गरमी पडती है। बहुतसे व्यक्तियोंकी इस भयंकर गरमीसे ही मृत्यु हो जाती है। जिस समय मैं वहां गया, उस समय उधरके इलाकेमें कॉलेराका उपद्रव फैला हुआ था। अधिकांश लोग मेलेरिया के शिकार थे। सचमुचमें वहांकी गरमी असह्य है।

मिट्टीके झोंपडे

स्टेशनसे उतरकर इक्केमें बैठकर मैं आधे घंटेमें वहां पहुँचा। आधा घंटा बीतने पर मिट्टीके झोंपड़ोंकी बनी हुई एक कॉलोनी दिखाई दी। एक छोटासा मार्ग एक झोंपड़ीकी ओर जा रहा था। उसके चारों ओर बाड़ सी है। कितनी बार वहां गौएं भी चरती हुई दिखाई देती हैं। इस झोंपड़ीमें एक बिना दांतका बुड्ढा बैठा हुआ आपको दिखाई देगा। इस छोटीसी बसाहतका नाम सेवाग्राम है। इधर उधर गांधीजीके अनुयायी मिलेंगे। गांधीजीके समीप जानेसे वे आपका स्मितयुक्त स्वागत करेंगे।

वे वहां क्या करते हैं?

वे वहां अपनी रोजिन्दा प्रवृत्तियोंमें ही संलग्न रहते हैं। ब्रिटेनके मांसमें जैसे कांटा लगे, वैसे वस्तुतः ब्रिटेनका कांटा वहीं है। चर्चिलके लिए वे दवाई खोज रहे हैं। उनकी अस्पतालके बीमारोंके रोग दूर करनेके लिए वे जुलाबकी दवा देते ही रहते हैं। हिन्दुस्तान में सबसे ज्यादा प्रभावशाली पत्र 'हरिजन' का वे वहींसे संपादन करते हैं। एक पत्रकार के रूपमें उनको हम जानना चाहें तो वे डोरोथी थोम्सन और डोरोथी डिक्सनके योग हैं। हरेक चीज़ोंपर उनका एक निश्चित मंतव्य होता है। यदि अमेरिकन डोरोथीका और हिन्दुस्तानी गांधीजीका अनुसरण करें तो दुनियाकी शक्ल ही बदल जाय।

गांधीजीको समझे बिना कांग्रेसको नहीं समझ सकेंगे

गांधीजीके प्रिय अनुयायियोंमेंसे एक श्रीमती सरोजिनी नायडूने उनको 'मिकी माउस' की उपमा प्रदान की है। आज वे हिन्दुस्तानमें सबसे ज्यादा प्रभावशाली पुरुष हैं। उनकी महत्ताकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। दूसरी बात यह है कि कांग्रेसको समझनेके लिए गांधीजीको समझना ज़रूरी है। कांग्रेस हिन्दुस्तानमें सबसे बड़ा राजनीतिक पक्ष है।

दूसरे नेताओंसे भी मैं मिला हूँ

अलाहाबादकी अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटीके अधिवेशनमें मैं उपस्थित था। राष्ट्रीय नेताओंके साथ मैंने वहां घण्टों बैठकर बातचीत की थी, और बंबई, दिल्ली, कलकत्ता आदि स्थानों पर गया था। मेरे इस दौरेमें मैं युद्ध-विरोधी समाजवादियों, युद्धमें सहयोग देने वाले साम्यवादियों, विद्यार्थी नेता, सुभाषचन्द्र बोसके अनुयायियों, श्री. महमदअली जिन्नाके अनुयायियों, व्यावसायिकों और किसानोंके संपर्कमें आया था।

इन सबको मिलनेके बाद एक व्यक्तिसे मिलनेकी मेरी बहुत इच्छा थी। वायसरायने मुझसे कहा कि गांधीजीको मिलनेमें बिलंब नहीं करना चाहिए। पिछले दस सालसे मैंने गांधीजीको नहीं देखा था। वायसरायने कहा कि "कांग्रेस कुछ नहीं है, गांधीजी ही कांग्रेस है। कांग्रेस उन्हीकी संस्था है। वे जब तक जीते हैं तब तक उन्हींकी ही रहेगी। कांग्रेसकी राजनीतिक दृष्टि गांधीजीकी ही राजनीतिक दृष्टि है।"

दो एक महीने पहिले गांधीजीने स्पष्ट कहा था कि बिना लीग-कांग्रेस समझौतेके हिंदुस्तान आज़ाद नहीं हो सकता। लेकिन इस वक्त उसी हेतुपर जोर देनेवाले साम्यवादी पक्षकी वे अवगणना करते हैं। उन्होंने तो अब निश्चय किया है कि पहले आज़ादी और बादमें एकता। कुछ समय पूर्व उन्होंने अंग्रेजोंको हिन्दुस्तानसे चले जानेकी चेतावनी दी थी।

आज़ादीकी इस "अंतिम लड़ाई" को प्रारम्भ करनेका जब उन्होंने तय किया, तब उन्होंने बतलाया था कि इस आंदोलनसे ब्रिटेनको लाभ ही होगा। वे सिरसे एडी तक अंग्रेज़ विरोधी हैं और हिन्दुस्तानमें ऐसे अंग्रेज-विरोधी लोगोंकी कमी नहीं है।

कुछ हिन्दुस्तानी गांधीजीकी इस 'परिवर्तनशील नीति' के बारेमें संशय प्रकट करते हैं। वे उनके शब्दोंकी बाल की खाल निकालनेकी कोशिश करते हैं। लेकिन वे लोग जानते हैं कि गांधीजी दो प्रकारकी भाषाएं बोलते हैं। उनमें एक भाषा जन-समुदायकी है, वह गूढ है। दूसरी भाषा राजनीतिक वास्तविकताकी अर्वाचीन भाषा है। गांधीजी की ये दोनों ही वास्तविकतायें सच्ची हैं और हिन्दुस्तानपर अपना काबू रखनेके लिए ज़रूरी भी।

पं. जवाहरलालके शब्दोंमें

इस बारेमें स्पष्टीकरण करते हुए पंडित जवाहरलाल नेहरूने मुझे बतलाया था कि गांधीजीको एक व्यक्तिके तौर पर और गांधीजीको एक नेताके तौर पर बांट दो और एकमेंसे दोनोंको पृथक् पृथक् रूपसे देखो। गांधीजी एक सर्वश्रेष्ठ व्यवहारिक राजनीतिक व्यक्ति हैं। नेताके तौर पर वे अपने विरोधीसे समझौता करनेके लिए हमेशा तैयार रहते हैं। उन्हें जो कुछ कहना होता है, कह कर रहते हैं। बाहरी दुनियाको जैसे प्रतीत होते हैं वे वैसे नहीं हैं। महत्वपूर्ण बात तो यह है कि गांधीजी कुछ भी करें या कहें लेकिन उनके विचारों या शब्दोंसे उनकी लोकप्रियता कभी क्षीण नहीं हुई। हिन्दुस्तानी जनता अपनी समस्त शक्ति, हिम्मत वगैरहके साथ उनमें पूरा भरोसा रखकर चलती आयी है।

नेताओंके साथ

जब जब सामुदायिक भद्र-अवज्ञा आंदोलनकी योजनाएं गढ़ी जाती हैं, गांधीजी हमेशा अपने साथियों, नेताओं और कार्यकर्ताओंके साथ पूरा विचारविनिमय करते हैं। गत जुलाईमें उन्होंने कार्यकारी समितिके साथ मिलकर जो प्रस्ताव गढ़ा था वह इस बातका उदाहरण है। हिन्दी राष्ट्रीय सरकारके जरिये असली सत्ता प्राप्त करनेका हेतु उसमें प्रदर्शित किया गया है। उस प्रस्ताव द्वारा और जनतामें अंग्रेजविरोधी कटु भावनाको कम करके उन्होंने हिन्दुस्तान संसारके स्वाधीनताप्रिय राष्ट्रोंके साथ कंधा भिड़ाकर ब्रिटेनके साथ रहकर मित्र-राष्ट्रोंके युद्ध प्रयत्नमें अपना हिस्सा अदा कर सके-इस उद्देश्यकी भूमिका पर उस प्रस्तावका गठन हुआ है। वे अंग्रेज़ोंको सत्ताका त्याग कर हिन्दुस्तानियोंके हाथों सत्ता दे देनेके लिए कहते हैं। मित्रराष्ट्रोंकी सत्ताके नीचे हिन्दुस्तानी फौजें रहने देनेके लिए वे सहमत होते हैं। और अन्तमें अगर ब्रिटेन इस मांगको अस्वीकार करे तो सामुदायिक सत्याग्रह आंदोलन को प्रारम्भ करनेके लिए कहा गया है।

विचारशील अद्वितीय व्यक्ति

मौजूदा संकटावस्थामें गांधीजीने सामुदायिक सत्याग्रहकी जो बात कही, उसपर अनेक व्यक्तियोंने उनसे प्रश्न पूछे। ब्रिटेन और अमेरिकाको यह बात नहीं भुलनी चाहिए कि हिन्दुस्तानी ज़िचको खत्म करनेके लिए उनको गांधीजीके सिवा और कोई विचारशील अद्वितीय व्यक्ति नहीं मिल सकता। ब्रिटेनके खिलाफ कांग्रेसने जो शिकायतें-मांगें-पेश की हैं, उनमें हरेक हिन्दुस्तानीकी सहमति है। हिन्दुस्तानी जनता का बहुत बड़ा भाग उस प्रस्तावका अनुमोदन कर रहा है। आज, अब वक्त आ गया है जब कि हमें हिन्दुस्तानियोंके असंतोषकी जांच करनी चाहिये।

इस जांचके लिए सर्वप्रथम यह आवश्यक है कि विगत दो शताब्दीके हिन्दुस्तानपर अंग्रेज़ोंके शासनपर विचार किया जाय। पिछले बीस सालसे अहिंसाके बल पर लड़ी जानेवाली सत्याग्रह लड़ाईकी भी जांच होनी चाहिए। हिन्दुस्तानमें एक बड़ा

कर हम हिन्दुस्तानको नहीं बचा सकते

श्री एडगर स्नोका महत्वपूर्ण लेख

विचार भी काम कर रहा है कि गत महायुद्धके अवसरपर हिन्दुस्तानने जो शर्तिया सहयोग दिया था उसका ब्रिटेनने वचनभंग किया है।

स्वतंत्रताकी दूसरी लड़ाई इस समय हिन्दुस्तानमें चालू है। कांग्रेस मंत्रि–मण्डलोंने अपने पदसे इस्तीफे दे देनेके बाद भी कांग्रेसने युद्ध–प्रयत्नमें सहयोग देनेके लिए बतलाया था–इस शर्तपर कि केन्द्रीय जिम्मेवारीके साथकी प्रान्तीय सरकार स्थापित की जाय। लेकिन ब्रिटेनने इस ओर कुछ भी नहीं किया। इस ओर विचार करनेकी भी ब्रिटेनने परवाह नहीं की।

प्रांतीय सरकार

दरअस्ल कांग्रेस सभी प्रान्तोंपर काबू रख सकती है, इतना ही नहीं; वायसराय पर भी इस चीज़का दबाव डाल सकती है। ब्रिटिश गवर्नरोंके पास "वीटो" की सत्ता है। फिर भी प्रान्तीय स्वायत्त सरकारके शासन दर्मियान उनको अपनी यह विशेष सत्ताका उपयोग नहीं करना पड़ा था।

हिन्दुस्तानी और जापानी दोनोंका ही विरोध कर हम हिन्दुस्तानको अपने हाथमें नहीं रख सकते। अब भी हिदुस्तानियोंके साथ समझौता करनेका वक्त है। वैसा करनेसे वे चीनीयोंकी ही भांति हमें सहायता पहुँचा सकेंगे। अधिकांश भाग मित्रराष्ट्रोंके साथ हो तो उस सहयोगकी कीमत हम कम नहीं आंक सकते। शाहीवादके अधिकारोंकी अंतिम और स्पष्ट तैयारीकी अपेक्षा उसकी कीमत कम नहीं हो सकती। हम ऐसी ही शक्तियों का तो मुकाबिला कर रहे हैं।

युद्धसे पहलेके व उसके बादके अंग्रेज़ोंके प्रयत्नोंकी निष्फलता अब साफ दृष्टिगोचर होती है। और इस प्रकारकी नीतिने अंग्रेजोंके प्रति भारी शंका दृष्टि पैदा की है। चर्चिलकी वाक्चातुरी इस शंका जालके एक अंशको भी नहीं नष्ट कर सकती। अटलांटिक शर्तमानेकी विशेष शर्तोंने हिन्दुस्तानको तो और अधिक अपमानित किया है।

क्रिप्सकी निष्फलतासे कटुता बढ़ी है

आखिरी निर्णयके लिए कांग्रेसने जो रूख अख्तियार किया है उसमें क्रिप्सकी निष्फलता भी एक कारण है। ब्रिटिशपक्षी उदारमतवादी नेताओंमें भी इससे कटुता बढी है। इन लोगोंका विश्वास था कि कामदारोंकी शुभ भावनाओंके परिणामस्वरूप ब्रिटिश-नीतिमें परिवर्तन होगा। और इसमें खास तौरपर क्रिप्सकी भी गिनती होती थी। जब क्रिप्स केवल १५ दिनमें भारतीय ज़िचको खत्म करनेके नाटकीय इरादेसे हिन्दुस्तान आये, तब इन लोगोंकी आशाका कोई पार नहीं था।

जबर्दस्त भूल

स्टेफोर्ड क्रिप्स हिन्दुस्तानको कमसे कम औपनिवेशिक स्वराज्य भी नहीं देते थे—जब यह तथ्य पीछेसे मालूम हुआ, तब जन साधारण की भावनाओंपर भारी आघात हुआ। युद्धके बाद भारतको पूरी आज़ादी देनेका वादा करनेसे हिन्दुस्तानके सवाल हल हो जायेंगे—यह माननेमें उन्होंने गंभीर भूल की। उन्होंने जापानकी विजयका ऊपरी तौरपर अवलोकन किया और परिवर्तित परिस्थितियों की ओर नहीं–सा लक्ष्य दिया। और वे यह भी सोच न सके कि युद्धके बाद की बातोंको हिन्दुस्तानी लोग जिन्दगीके बाद की बातें समझते हैं।

पं. जवाहरलाल नेहरू

पं. जवाहरलाल नेहरूने मेरे सामने क्रिप्सके बारेमें विस्मयकारक निवेदन किया।

"पिछले पचास सालके भीतर हिन्दुस्तानमें भेजे गए किसी भी अंग्रेज़की अपेक्षा क्रिप्सने हिन्दुस्तानको बहुत अधिक नुकसान पहुँचाया है। उस आदमीने हमारी श्रद्धा और बुद्धिशक्ति दोनोंका सरासर अपमान किया है।" पंडित नेहरू अब ब्रिटेनके किसी भी वचन या वादे पर इतबार रखनेके लिए तैयार नहीं है।

अविश्वासके ये भाव रूस, अमेरिका और चीनके प्रति भी बढ़ने लगे हैं। हिन्दुस्तानके औद्योगिक विकासमें सहायतार्थ जब अमेरिकाका ग्रेडी मिशन यहां आया, तब अधिकांश हिन्दुस्तानियोंने मि. ग्रेडीको हिन्दुस्तानमें अमेरिकन शाहीवादका ही प्रतीक समझना शुरू किया था। जब रूस और ब्रिटेनके बीच शर्तनामा हुआ, कितने ही हिन्दुस्तानियोंने इसे हिन्दुस्तानके प्रति घोर धोखेबाजी ही समझा था। इसका यह अर्थ नहीं है कि अब रूस हिन्दुस्तानको ब्रिटेनके साम्राज्यवादी जालसे मुक्ति नहीं दिलायेगा।

ब्रिटेनकी प्रतिष्ठा घट गई

पंडित जवाहरलालने मुझसे कहा कि उग्र राष्ट्रवादी हिन्दुस्तानी चीनके प्रति सहानुभूति रखनेवालोंकी भी आलोचना करते हैं। जापानने अंग्रेज़ोंको एकके बाद एक करके शिकस्त दी इससे अंग्रेज़ोंकी प्रतिष्ठा घट गई है। समुदायमें ये भावनाएं किस रूपमें प्रकट होती हैं और एशियाकी नजरोंमें ब्रिटेन व अमेरिका कितने गिर गए हैं इसका अंग्रेज़ व अमेरिकनोंको पूरा ख्याल आना मुश्किल है। अंग्रेज़ोंकी 'प्रतिष्ठा' की हिन्दुस्तानमें कोई कीमत नहीं रही। हिन्दुस्तानकी मेरी मुलाकातमें यह परिवर्तन मुझे स्पष्ट दिखाई दिया।

आश्रित लोग भी ब्रिटेनकी निन्दा करते हैं

वर्णभेद और जातीय श्रेष्ठतासे ओतप्रोत शाहीवादी ख्यालातोंसे हिन्दुस्तानी लोग अब ऊब गये हैं। ताज़ा अनुभवोंने यह भावना और भी गहरी बना दी है। मलाया और बर्मामेंसे आश्रितोंको स्थानान्तरित करते वक्त श्वेताङ्ग जातियोंको प्रथम सुविधा मिलती थी। दो लाखके करीब हिन्दुस्तानी जापानके द्वारा अधिकृत प्रदेशोंसे वापिस लौटे हैं। वे लोग अब घर घर पर अपने कटु अनुभवोंकी कथा सुनाते हैं।

हिन्दुस्तानी व्यापारिकोंमें भी असंतोष

हिन्दुतानके उद्योगपति और व्यापारियोंमें भी ब्रिटेनकी नीतिके खिलाफ घोर असंतोष व्याप्त है। युद्धके लिए प्रवर्तमान उत्पादन-नीतिसे यह असंतोष पैदा हुआ है। ऐसे अनेक उत्पादकोंके परिचयमें मैं आया। उन सबने एकमत होकर मुझसे कहा कि यदि सच्चा सहयोग लिया जाय तो इससे चौगुना उत्पादन बढ़ सकता है। हेन्री ग्रेडीने भी इसी आशयकी बात मुझसे कही थी। उन्होंने कहा था कि: "एक भी अपवादके सिवा हिन्दुस्तानके हरेक उद्योगपतिने मेरे सामने शाहीवादी अंतरायकी हकीकतें बतलायी थीं।" हिन्दुस्तानको स्वावलम्बी बनानेकी एक भी योजना अस्तित्वमें नहीं आयी; इस बारेमें भी उन्होंने मुझसे शिकायत की थी। बगैर अपवाद के उनमेंसे हरेकका यह कहना थाकि ब्रिटेन हिन्दुस्तान परसे अपना प्रभुत्व छोड़नेको राजी नहीं है। इस कथनके समर्थनमें उन्होंने बतलाया थाकि युद्धके बादकी ब्रिटिशोंकी आवश्यकताओंका क्षेत्र बन्द हो जाय इस कारण हिन्दुस्तानके कितने ही प्रगतिशील उद्योगोंको रोक दिया गया है। इसमें तनिक भी संदेह नहीं कि गांधीजी और कांग्रेस अखिल हिन्दुस्तानकी भावनाओंके प्रतिनिधि हैं।

वॅवेलको हिन्दुस्तानियोंकी सहानुभूति नहीं चाहिए।

कुछ हिन्दुस्तानियोंको अब भी जापानी आक्रमणके खिलाफ लड़नेके लिए ब्रिटिश ताकतमें विश्वास है। लेकिन राष्ट्रीय रंगसे रंगी हुई अधिकांश हिन्दुस्तानी जनतातो यही मानती है कि विशाल अधिकारवाली राष्ट्रीय-सरकार ही दुस्मन का मुकाबला करनेमें शक्तिशाली होगी। जनरल वॅवेलकी व्यूह–रचनाका अर्थ वे यही करते हैं कि भारतीय जनताको बिना पूछे उनकी इच्छाके विरुद्ध युद्धमें घसीटना। मुझे यह कबूल करना होगा कि जनरल वॅवेलके कतिपय वक्तव्योंसे यह बात साबित भी होती है।

केवल राष्ट्रीय सरकार ही……

यह एक हकीकत है कि, एक सच्ची राष्ट्रीय सरकार ही देशमें किसी प्रकार की विरोधी भावनाओंको बगैरे पैदा किये अपने उपर लड़ाईकी जिम्मेवारी ले सकती है। जो लोग उत्तरदायी मंत्रिमण्डलके समर्थक हैं, उन्होंने मुझसे कहा था कि मज़दूरी और उद्योगोंमें नफेकी भावनासे ही कामकाज हो रहा है। सर होमी मोदीने भी मुझसे यही शिकायत की थी। मि॰ मोदी इस वक्त वायसरायकी कौन्सिलके सप्लाय विभागके मंत्री हैं। उन्होंने आगे चलकर कहा था कि यदि इस महकमेमें देशभक्तिकी भावनाका मेल हो तो दोनों ताकतोंके जरिये उत्पादन दुगुना बढ़ सकता है।

आज़ादी ही जोश पैदा करेगी

आश्रित और गाँवोंमें बसनेवाले निरुद्यमियोंको तालीम देकर चीनकी तरह युद्धोत्पादनमें उनसे सहायता ली जा सकती है। विद्यार्थी एवं शिक्षित जनसमुदायमें-से सेनामें भर्ती की जा सकती है। इस समय फौजी-क्षेत्र सर्वथा अपढ़ और अशिक्षितों तक ही सीमित है। फौज़ी तालीम भी बड़े पैमाने पर दी जा सकती है। लेकिन इसके लिए देशवासियोंमें राष्ट्रीय भावना पैदा होना निहायत ज़रूरी है। और यह आज़ादी पाये बिना संभव नहीं। कलकत्ता, बंबई इत्यादि शहरोंमें जिस प्रकार कामदार लोग अपने कारखानोंको छोड़ कर भाग गये थे, आज़ादी मिलने पर निर्भय होकर अपने स्थान पर डँटे रह सकते हैं।

जापान विरोधी लड़नेकी भावना

एक महत्वकी बात यह है कि पं. जवाहरलाल नेहरू और मौलाना अबुल कलाम आज़ादमें जापान विरोधी लड़नेकी भावनाएं हैं। उन्हें यह महसूस हुआ कि चर्चिल पर अमेरिका अर्थात् प्रेसिडेण्ट रूज़वेल्ट दबाव डालें। इन दोनों राष्ट्र-नेताओंने हमारे हस्तक्षेपकी राह देखी। और जब कर्नल जॉन्सन पिछले मई मासमें अमेरिका वापस जा रहे थे हुए, पंड़ित नेहरूने उनसे कांग्रेसकी मांगके बारेमें स्पष्टीकरण किया। उन्होंने कहा कि हिन्दुस्तान किन शर्तोंपर युद्धमें सहयोग दे सकता है।

इसके बाद कर्नल जॉन्सन और पंड़ित नेहरूके बीच पत्रव्यवहार चला। वॉशिंग्टन कुछ करेगा–इस आशासे पंडित नेहरूने गांधीजीको दो महीनेके लिए रुक जानेको कहा। लेकिन उन्होंने जब देखा कि हमने कुछ नहीं किया, तब वे भी सत्याग्रह आंदोलनको शुरू करनेके निर्णय पर सहमत हुए। पंड़ितजीने मुझे अच्छी तरह समझाया कि हिन्दुस्तानकी आज़ादी व रक्षाके लिये यह एक ही इलाज बाकी रह गया है।

ब्रिटेनको—गृहयुद्धका भय ह

प्रान्तीय स्वशासनकी स्थापनामें ब्रिटेनको गृहयुद्धका भय लगता है। मेरे साथ बातचीत के दौरेमें मि. जिन्नाने कहा था कि कांग्रेस अगर सत्याग्रह आंदोलन छेड़ेगी तो हिन्दुस्तानके मुसल्मान विद्रोह मचायेंगे। लेकिन मेरी मान्यता इससे विपरीत है। मुझे इस वक्त हिन्दुस्तानमें गृह-युद्धका खतरा नहीं लगता।

(शेष पृष्ठ २० के कालम २ पर)

★ अन्तिम घड़ी ★

अनु०-श्री. अमृतराय

(एक सोवियट सैनिक अपने एक साथी को ख़त लिखते हुए बताता है कि वह किस चीज़के लिए लड़ रहा है ।)

मशीनगनोंने कड़कना शुरू कर दिया है। तोपचियों की टुकड़ी तैयार हो रही है । और एक पलमें हम लड़ाईके बीच होंगे...

साथी ! हमें अभी हुक्म पढ़कर सुनाया गया है । पौ फटते, हमें छापा मारना है । पौ फटनेको सात घंटे हैं ।

रात । ऊपर तारोंका दूरसे टिमटिमाना । और निस्तब्धता । तोपोंका गरजना बन्द हो गया है । मेरे पड़ोसीकी ज़रा आँख लग गई है । कहीं पर कोनेसे एक भिन्‌भिन्‌सी आवाज़ मुश्किलसे सुन पड़ती है । फ़ौजी दूत कुछ बुदबुदा रहा है...

एक अजीब-सी निस्तब्धताके कुछेक पल हैं जिन्हें भूला ही नहीं जा सकता ।

किसी दिन मैं यह रात याद करूँगा, ३० अक्तूबर १९४१ की यह रात । डॉनके मैदानके ऊपर तैरता हुआ यह चाँद याद करूँगा । और याद करूँगा कि किसी तरह तारे सिहर रहे थे—गोया वे ठिठुर गये थे । याद करूँगा किस तरह मेरा पड़ोसी नींदमें परेशान करवटें बदल रहा था । और पहाड़ियोंको, खाइयों और तोपें गाड़नेके मुकामों को एक निस्तब्धता ढँके हुए थी—तूफ़ानसे काँपती हुई निस्तब्धता । लड़ाईके ठीक पहले की तारीकी । मैं अपनी खाईमें पड़ा हुआ था; फ्लैशलाइटको अपने गीले बरानकोटसे ढँककर तुमको खत लिख रहा था और सोच रहा था...और उत्तरी आर्कटिक महासागरसे लेकर काले सागर तक लाखों दूसरे-लड़ाके मेरी ही तरह लेटे हुए थे, रातमें, जमीन पर । वे पौ फटने और छापा मारनेका इन्तज़ार कर रहे थे और सोच रहे थे जीवन और मौतके बारेमें, अपने भविष्यके बारेमें ।

साथी ! आदमी जीना बहुत चाहता है । मैं जीना चाहता हूँ, साँस लेना चाहता हूँ, घूम सकना चाहता हूं, अपने सर के ऊपर आसमान देखना चाहता हूँ । लेकिन बस किसी तरह की जिंदगी मैं नहीं जीना चाहता । सिर्फ़ जिंदा रहनेमें मेरी कोई दिलचस्पी नहीं है—सिर्फ़ अस्तित्व बनाये रखनेमें ।

कल रात हमारी खाईमें ' उस पार ' से घिसटकर एक आदमी आया । फासिस्टोंसे बचकर । फूली टाँगों और छिली चमड़ीवाली लहूलुहान कुहनियोंके बल घिसटकर वह आया । जब उसने हमको देखा, अपने आदमियोंको, तो वह रोने लगा । वह लोगों से बार-बार हाथ मिलाता था । वह सबको गले लगा लेना चाहता था । उसका चेहरा हिलता था; उसके होंठ काँपते थे । हमने उसको रोटी और मक्खन और तमाखू दी । जब वह खा चुका तो शांत होनेपर उसने हमें जर्मनोंके सम्बन्धमें बताया; उसने बलात्कार और यंत्रणाओं और डाकेज़नी की बातें बताईं । उसकी बातोंको सुनकर खून उबलता था और दिलकी धड़कन तेज़ हो जाती थी ।

मैंने उस आदमीकी पीठ देखी । मैं फिर और कुछ न देख सका । मेरी आँखें उसकी पीठसे चिपक गई थीं वह किसी भी कहानी से ज्यादा डरावनी थीं ।

फ़ासिस्टोंकी हुकूमत में वह सिर्फ डेढ़ महीना रहा था, मगर उसकी पीठ दोहर गई थी, जैसे उसकी रीढ़ टूट गई हो; जैसे वह सारे डेढ़ महीने कमर झुकाकर, मुड़ते और बल खाते हुए चला हो; और उसकी पीठ होनेवाले प्रहारोंके डरसे लगातार काँपती रही हो। यह ऐसे आदमी की पीठ थी जिसका आत्म-गौरव चूर कर दिया गया हो । यह एक गुलामोंकी पीठ थी । मन करता था, चिल्ला उठूँ, ' तनकर खड़े हो जाओ । कंधोंको पीछे की तरफ फेंको, साथी, तुम अपनों ही के बीच हो ।'

मेरे सामने आरसी की तरह साफ हो गया कि फ़ासिस्टोंके खज़ाने में मेरे लिए क्या है : टूटी हुई रीढ़ की जिंदगी, गुलामीकी ज़िन्दगी ।

साथी ! पौ फटनेको पांच घण्टेमें मैं लड़ने चला जाऊँगा । मैं सामने दीख पड़नेवाली इस भूरी पहाड़ीके लिए फासिस्टोंसे न लड़ूँगा । नहीं, मैं लड़ूँगा ज्यादा बड़ी चीज़ोंके लिए । इस निश्चयके लिए कि अपने भविष्यका मालिक मैं हूँ या हिटलर ।

अब तक मैं और तुम, हर कोई, अपने भविष्यका मालिक आप रहा है । हम अपनी मर्ज़ीके मुताबिक काम चुनते, अपनी मर्ज़ीके मुताबिक पेशा चुनते, जिस औरतसे प्रेम करते उससे शादी करते । हम सब हौसलेके साथ आगे की ओर भविष्यको निहार रहे थे । सारा देश हमारी मातृभूमि था । हर मकानमें साथी थे । हर पेशेकी इज्जत थी, काम बहादुरी और शान की बात थी । हर शख्स जानता था कि कोयलेका हर टन जो वह खान से खोदता है, उस इज्ज़त, शोहरत और इनामसे मालामाल करता है । गेहूँ का हर मन जो वह काटता है, उसकी, उसके कुनबे की, दौलत बढ़ाता है ।

लेकिन फिर फासिस्ट के घुस आनेका खतरा है । वह फासिस्ट तुम्हारे भविष्यका मालिक बन जायगा । वह तुम्हारे वर्तमानको रौंद देगा और भविष्यको चुरा ले जायगा । वह तुम्हारी जिंदगी, तुम्हारे घर, तुम्हारे कुनबे पर हुकूमत करेगा । वह तुम्हें तुम्हारे घरसे बाहर कर देगा और तुम टूटी कमर लिए हुए बारिश और कीचड़में खदेड़ दिये जाओगे । हाँ मुमकिन है वह तुम्हें जीने दे । उसे लद्दू जानवरों की ज़रूरत है । वह तुम्हें गुलाम बना देगा—ऐसा गुलाम जिसकी पीठ दोहर गई है । तुम गेहूँके मनके गट्ठर काटकर लाओगे, लेकिन वह उसे ले जायगा और तुम्हें भूखा छोड़ देगा । तुम खानसे टनके टन कोयले खोदकर लाओगे लेकिन वह इसे ले जायगा और तुम्हें गाली देगा—' ऐ रूसी सूअर, तुम काम अच्छा नहीं करते । ' उसके लिए तुम हमेशा ' रूसी आइवन ' बने रहोगे यानी नीचे स्तरका एक चौपाया । वह तुम्हें अपने पिता की ज़बान भूल जाने को मजबूर करेगा, वह ज़बान जिसमें तुमने अपने सपनोंको, झुलाया है, वह ज़बान जिसमें तुमने अपनी प्रेयसीको अपना प्रेम बताया था, और जब तुम एक विदेशी भाषा बोलनेमें लड़खड़ाओगे, तो वह तुम्हारी खिल्ली उड़ायेगा ।

वह तुम्हारी अभिलाषाओंको रौंदेगा और तुम्हारी उम्मीदों पर थूकेगा । तुमने अभिलाषा और उम्मीद की है कि तुम्हारा बेटा बड़ा होने पर विद्वान् बनेगा, इंजीनियर बनेगा, योग्य व्यक्ति बनेगा । लेकिन फ़ासिस्टोंके पास रूसी वैज्ञानिकोंका कोई इस्तेमाल नहीं है; स्वयं अपने वैज्ञानिकोंको उन्होंने काल-कोठरियोंमें ठूँस रक्खा है । उनको तो बस नासमझ लद्दू जानवरोंकी ज़रूरत है । और तुम्हारा बेटा फ़ासिस्ट जूएमें बैलकी तरह बांध दिया जायेगा और उसका बचपन, उसकी जवानी, और उसका भविष्य सब धूलमें मिल जायगा । तुमने अपनी प्यारी-सी बच्चीको लाड़ किया है, पाला-पोसा है । कितनी बार तुमने और तुम्हारी पत्नीने मारिकाके छोटे-से सफ़ेद पालने पर झुककर उसके अपने जीवनमें सुख पानेका मीठा सपना देखा है । लेकिन फासिस्टोंको स्वच्छ, तन्दुरुस्त रूसी लड़कियोंकी ज़रूरत नहीं है । तुम्हारे नाज़ और खुशीकी मूरत मारिका—खूबसूरत बच्ची—भूरी कमीजवाले फासिस्ट गिरोहोंके मज़ेके लिए किसी चकलेमें ढकेल दी जायगी ।

तुम्हें अपनी पत्नी पर नाज़ है । उसे हमारे गाँवमें हर कोई पसंद करता है । तुम्हारी ओकसाना ! हम सब ने तुमसे ईर्ष्या की है उसके लिए । लेकिन गुलामीमें औरतोंके पनपनेका कोई मौका नहीं होता । वे उम्रसे पहले बूढ़ी हो जाती हैं । तुम्हारी ओकसाना देखते-देखते एक बूढ़ी औरत हो जायगी । जिसकी पीठ दोहर गई है ऐसी एक बूढ़ी औरत ।

तुम अपने मां-बापकी इज्ज़त करते हो क्योंकि वे ही तो तुम्हें दुनियामें लाये और उन्हीं ने तो तुम्हें बड़ा किया ? हमारे देश ने तुम्हारी मदद की जिसमें तुम उनका बुढ़ापा सुखी, शान्त और इज्जतदार बना सको । लेकिन फासिस्टोंके पास बूढ़े रूसियोंका कोई उपयोग नहीं है : बूढ़े काम नहीं कर सकते और इसलिए उन्हें भूखों मरना होगा क्योंकि फासिस्ट तुम्हारे माँ-बापको तुम्हारे काटे हुए अनाजकी एक रोटी न देंगे ।

मुमकिन है, तुम यह सब बर्दाश्त कर सकोगे । मुमकिन है कि तुम मरोगे नहीं, कुछ हो जाओगे, समझौता कर सकोगे, एक अंधी भूखी और बेमज़ा ज़िंदगीको घसीटकर आगे ले जा सकोगे ।

मैं ऐसी जिंदगीको लात मारता हूं । नहीं, मैं उस तरह नहीं जीना चाहता । ऐसी जिंदगीसे मौत बेहतर है ! मेरी गर्दनमें जुआ पड़नेके बजाय मेरे गलेमें संगीनका भोंका जाना मुझे मंज़ूर है । नहीं एक वीरकी मौत मरना अच्छा है, गुलामकी तरह जीनेसे !

साथी ! पौ फटनेको सिर्फ तीन घण्टे और हैं । मेरा भविष्य मेरे हाथमें है । मेरा भविष्य मेरी संगीनकी तेज नोंक पर है... मेरा भविष्य, मेरे कुनबेका भविष्य, मेरे देशका भविष्य, मेरे राष्ट्रका भविष्य ।

साथी ! आज हमने तीसरी कम्पनीके ऍंटन शुवीरीनको गोली मार दी । रेजिमेण्ट एक चौकठेकी शक्लमें इकठ्ठा हुआ था । आसमान जैसे त्योरियाँ बदल रहा था, और पीली पत्तियाँ काँपती हुई कीचड़में गिर रही थीं । हमारी सफ़ें निश्चल थीं । एक व्यक्ति न डोलता था ।

उसके हाथ पीछेको थे और वह हमारे सामने खड़ा था । दयनीय डरपोक गद्दार, भगोड़ा ऍंटन शुवीरीन । उसकी आंखें हमसे न मिलती थीं और दायें-बायें कतराती थीं । वह हमसे डरता था, अपने साथियोंसे । आख़िरकार हमीं तो थे जिनके साथ उसने गद्दारी की थी ।

क्या वह फासिस्टोंकी जीत चाहता था ? हरगिज़ नहीं । किसी भी रूसीकी तरह वह चाहता था कि फासिस्ट न जीतें । लेकिन उसकी आत्मा गुलामकी थी और दिल धोखेबाज़का । निश्चय ही, उसने भी जिन्दगी और मौतके बारेमें, अपने भविष्यके बारेमें सोचा था और तय किया था-मेरी अपनी ही चमड़ी ही मेरा भविष्य है ।

उसने समझा वह काफी चतुराईकी बात कर रहा है : अगर हमारे आदमी जीतते हैं—क्या कहने । मेरी चमड़ी सुरक्षित रहेगी । मगर फासिस्ट जीतते हैं--तब भी ठीक ही है । गुलाम रहूँगा लेकिन फिर भी अपनी चमड़ी तो बचा ही लूँगा ।

वह युद्धसे भाग जाना चाहता था, वक्त गुज़ारना चाहता था । गोया युद्धसे कोई छुप भी सकता है ! वह चाहता था कि उसके साथी उसके लिए लड़ें और मरें । वह उँगलियाँ चटखाकर युद्ध काट देना चाहता था ।

लेकिन ऍंटन शुवीरीन, अपने लेखे-ज्योढ़ेमें तुमने गलती की ! अगर तुम बचबचकर बाहर ही बाहर रहना चाहते हो, तो, तुम्हारे लिए कोई न लड़ेगा । यहाँ पर हर कोई अपने और अपने देशके लिए लड़ रहा है । अपने कुनबेके लिए, और अपने देशके लिए । अपने भविष्यके लिए और अपने देशके भविष्य के लिए । तुम हमको अलग नहीं कर सकते, सुना तुमने ? तुम हमको हमारी मातृभूमिसे अलग नहीं कर सकते; अपने सारे रक्त, हृदय, शरीरसे हम उसके साथ बंधे हैं । उसका भविष्य हमारा भविष्य है । उसका ध्वंस हमारा ध्वंस है, उसकी जीत हमारी जीत है ।

और जब हम जीत चुकेंगे, हम हर किसीसे पूछेंगे : ' तुमने हमारी जीतमें क्या सहयोग दिया ? ' हम कुछ न भूलेंगे । हम

(शेष पृष्ठ २० के कालम १ पर)

युद्धकालिक आर्थिक समस्याएँ

श्री. हरिदत्तजी वेदालंकार, प्रो. गुरुकुल कांगड़ी

युद्धके समय भारतमें जो नये कर लगाये गये हैं--उनका यह उद्देश्य है जनताके सभी वर्गोंसे युद्धके लिये आवश्यक खर्च लिया जाय। धनी वर्ग तथा व्यापारियोंसे, अतिरिक्त लाभकर (Excess profit tax), आयकर (Income tax) पर २५% के अधिक कर (Surcharge) तथा आयकर योग्य अर्थराशिकी मात्रा २०००) से घटाकर १५००) करके उनकी क्रयशक्ति कम की गयी है और मध्य तथा निर्धन वर्गसे लिफाफे व तारके दाम बढ़ा कर, आयातकी सभी चीजों पर २०% अधिक कर लगा कर, मिट्टीके तेल, पेट्रोल आदि पर चुंगीकी वृद्धिसे, उनपर पर्याप्त युद्ध–व्यय डाला गया है।

क्रयशक्ति कम करनेका दूसरा साधन है—सरकारी रक्षाऋण। इन रक्षाऋणोंको भी इस तरह आयोजित किया गया है कि वे एक करोड़पतिसे किसान तककी बचत (Savings) एवं संगृहीत पूंजीका अधिक तम दोहन (Exploitation) कर सकें। जो व्यक्ति वर्त्तमान युद्धको हिटलर-वादके ध्वंस करनेका साधन समझते हैं और सरकारको सहायता देना अपना कर्त्तव्य समझते हैं वे विना व्याजके, सरकारी डिफेन्स बाण्डस् खरीद सकते हैं। व्यापारी रक्षाऋणोंमें अपनी पूंजी सुरक्षित रूपसे लगा सकते हैं। मजदूरों एवं कृषकों की छोटी २ बचतोंके उपयोगके लिये डिफेन्स सेविंग्स सर्टिफिकेटोंकी व्यवस्था की गयी है। मजदूर अपनी आयमेंसे, सुविधानुसार प्रतिसप्ताह या प्रतिमास ।), ॥), १) बचाकर डाकखानेसे उनसे रक्षा टिकट खरीद सकता है। डाकखानेमें एक कार्ड पर ये टिकट चिपकाये जाते हैं और १०) की राशि पूर्ण होनेपर एक डिफेन्स सेविंग सर्टिफिकेट पूरा हो जाता है। भारत सरकार इन उपायोंसे कितना रुपया अब तक प्राप्त कर चुकी है—यह अधोलिखित अंकोंसे स्पष्ट है। ये अंक भारत सरकारकी २७ नवंबर की प्रेस विज्ञप्तिके आधार पर हैं—

२१ नव. १९४२ तक–तीसरा रक्षाऋण–१,५९,२०,७०० रुपये

२१ नव. १९४२ तक व्याजरहित डिफेन्स बाण्ड ३,०२,७६,००० रुपये

१४ नव. १९४२ तक डिफेन्स सेविंग सर्टिफिकेट ६,१५,५३,००० रुपये

२१ नव. १९४२ तक ३% के रक्षाऋण १,२२,०४,०७,००० रुपये

४ जून १९४० से २१ नव. १९४२ तकके कुल रक्षा ऋण १ अरब ३१ करोड़ २२ लाख ३६ हजार रु०

पहले यह बताया जा चुका है कि सार्वजनिक उपभोगके परिमाणको वस्तुओं की मूल्यवृद्धि द्वाराभी कम किया जा सकता है। सरकार वस्तुओं की मूल्य वृद्धिके लिये मुद्राप्रसार (Inflation) के साधनका उपयोग करती है।

मुद्राप्रसारके लक्षण पर अर्थशास्त्रियोंमें बहुत मतभेद है। हम यहां मुद्राप्रसारके लक्षणोंकी बहसमें नहीं पड़ना चाहते। हमें तो मुद्राप्रसारका स्थूल आशय समझना है। कोई सरकार जब यह अनुभव करती है कि जनता पर अब अधिक कर नहीं लगाये जा सकते, सरकारी रक्षाऋणों द्वारा उनका संचित धन भी लिया जा चुका है, किन्तु युद्धका व्यय फिर भी पूरा नहीं हो रहा तो उस अनिवार्य एवं आवश्यक युद्ध-व्ययको पूरा करनेके लिये शान्तिकालकी अपेक्षा अधिक संख्यामें पत्रमुद्रा छापनेके भयंकर मार्गका अवलम्बन करती है। यही मुद्राप्रसारका स्थूल अभिप्राय है। सरकार सैनिकोंके वेतन तथा सैनिक सामग्रीके बदले यही पत्रमुद्रा प्रदान करती है। बाज़ारमें पत्र-मुद्राओंकी मात्रा बढ़ जाती है। बाज़ारमें वस्तुओंका परिणाम तो यथापूर्व है किन्तु पत्रमुद्राओंकी वृद्धिसे पत्रमुद्राका मूल्य कम होगा और वस्तुओंका मूल्य बढ़ना शुरू होगा। कई बार यह मुद्राप्रसार अपनी चरम सीमातक पहुंचकर अपनी उपयोगिता बिल्कुल खो देता है। गत महायुद्धके बाद जर्मनीमें मार्कका नोट न केवल करोड़ों अरबों की संख्यामें छापा गया अपितु खरबों, नीलों और पद्मोंकी संख्यामें छापा गया[1]। यहांतक कि मार्कका कोई मूल्य ही नहीं रहा। आस्ट्रियामें इतनी पत्रमुद्रा छापी गयी कि एक क्रोन (आट्रियाका एक सिक्का जो १२ आनेके बराबर होता है) के बाज़ार भावको देखते हुए क्रोनका छापना अधिक मंहगा था। शराबका एक व्यापारी, शराबकी बोतलोंके लेबलोंकी छपाईके खर्चसे बचनेके लिये अपनी बोतलों पर क्रोनके नोट लगाता था। रूस में दो पैसेकी रोटी खरीदनेके लिये जेब भर रूबलके नोट भी पर्याप्त नहीं होते थे[2]। (रूबलका सामान्य मूल्य १½ रुपयेके बराबर होता है।)

गत महायुद्धमें रूसकी सरकारने कर या ऋणके स्थान पर रूबलके नोट छापकर ही अपना युद्ध व्यय पूरा करना चाहा। युद्धसे पहले रूसमें १ अरब ६० करोड़ रूबलके नोट चल रहे थे। जनवरी १९२७ में उनकी संख्या ९ अरब तक पहुंच गयी। जनवरी १९२१ में इन नोटोंकी संख्या बढ़ कर ११ खरब ६८ अरब तक जा पहुंची। १९२४ तक मुद्राप्रसारकी यह स्थिति इतनी विषम हो गयी सोवियट सरकारको नया रूबल चलाना पड़ा। फरवरी १९२४ में, ५० अरब पुराने रूबलके नोटोंके बदलेमें एक नया रूबल मिलता था। जर्मनीमें मार्कके नोटोंकी संख्या ६ अरबसे ४३६ खरब तक जा पहुंची और बादमें जब इनकी संख्या नीलों और शंखों में आ पहुंची तो सरकारको नये मार्कका दाम १० खरबके, पुराने मार्कके नोट रखना पड़ा।

भारतवर्षमें, वर्तमान युद्ध छिड़नेपर, भारत सरकारने नोटोंको जितनी अधिक संख्यामें छापकर प्रचलित किया है–उसका विस्तृत निवरण निम्न तालिकासे स्पष्ट होगा—

अगस्त १९३९	१ अरब ७९ करोड़
दिसम्बर १९३९	२ अरब ३६ करोड़
जनवरी १९४१	२ अरब ५५ करोड़
जुलाई १९४१	२ अरब ७७ करोड़
जनवरी १९४२	३ अरब ५७ करोड़
फरवरी १९४२	३ अरब ८० करोड़
६, नव. १९४२	५ अरब ३७ करोड़ ३१ लाख ३५ हज़ार

नोटोंके अधिक संख्यामें जारी होनेसे वस्तुओंके मूल्यमें वृद्धि हो जाती है। जब २ बाज़ारमें नोटोंकी भरमार होती है, तो उसी अनुपातमें, पदार्थोंका दाम बढ़ता है–यह नियम या व्याप्ति इसी रूपमें ठीक है। इसकी उलटी व्याप्ति अर्थात्–जब २ दामोंमें वृद्धि होती है—तब २ मुद्रा मुद्राप्रसार होता है—ठीक नहीं। वस्तुओंकी मूल्य वृद्धि मुद्राप्रसारके अतिरिक्त दो अन्य कारणोंसे भी हो सकती है–१ बाज़ारमें वस्तुओंका कम होना, २ सट्टा।

भारतमें, इस समय वस्तुओंके मूल्योंमें जो असाधारण वृद्धि तथा मंहगाई दिखाई दे रही है उसमें मुद्राप्रसार या नोटोंकी भरमार इतना कारण नहीं है, जितना बाज़ारमें वस्तुओंका अभाव और सट्टा।

हम ऊपर यह देख चुके हैं कि युद्धकालिक राजस्वका मूल सिद्धान्त है कि सार्वजनिक उपभोगके परिमाणको न्यून करना। सैनिक आवश्यकताओंकी पूर्तिके लिये भारत सरकारने गेहूँ बहुत परिमाणमें खरीदा है। बाजारमें गेहूँकी कमी हो गयी और मांग और पूर्तिके (Demand and Supply) के प्रसिद्ध नियमके अनुसार गेहूंका दाम बढ़ गया। यही बात कपड़ेके सम्बन्धमें कही जा सकती है। मिलोंके पास सरकारी कपड़ेके इतने आर्डर हैं कि उन्होंने सर्वसाधारणके लिये कपड़ा तय्यार करना बन्द कर दिया। बाज़ारमें कपड़ेका परिमाण घटनेसे कपड़ेके दाम बहुत चढ़ गये हैं। यातायातकी असुविधासे इस समस्याकी विकटता बढ़ गयी है। रेलें सैनिकों तथा युद्धोपयोगी सामग्रीके ढोनेमें लगी हुई हैं-इसलिये बहुत स्थानों पर कोयले आदिका बहुत अभाव होगया है और उन स्थानोंपर उनकी क़ीमतें बहुत चढ़ गयी हैं।

किन्तु वस्तुओंका कम होना वास्तविक भी हो सकता है और अवास्तविक भी। उपर्युक्त अभाव वास्तविक है। इस वास्तविक अभाव को तीन प्रकारसे पूरा किया जा सकता है—१. वस्तुओंके उत्पादनकी मात्रा बढ़ाकर, २. नये स्थानापन्न (substitutes) तय्यार करके, ३. नियत वितरण (Rationing)। इंगलैंड में इस समय यह प्रयत्न हो रहा है कि वहां अधिकसे अधिक भूमिमें कृषि की जाय, वहांकी चप्पा २ ज़मीनको जोतने, बोने और फसल काटनेके लिये खेतीके औजार लाखोंकी तादादमें, सरकार द्वारा बांटे जा रहे हैं। भारतवर्षमें, सरकारने 'ज्यादा खाद्यसामग्री उत्पन्न करो' (Grow more food) का आन्दोलन शुरू किया हुआ है इसके बड़े सुन्दर विज्ञापन पत्रोंमें निकलते हैं और सरकारी बागोंमें फूलोंकी जगह अनाज बोया जा रहा है। हिन्दुस्तान टाइम्सके प्रसिद्ध व्यंग्य चित्रकार श्री. शंकरने इस आन्दोलनक एक मज़ेदार व्यंगचित्र बनाया था। जिसमें वायसरायकी परिषदके सभी सदस्य अपने सिरों पर, गमलोंमें गेहूं, चावल आदिके पौधे उठाये खड़े हैं तथा 'अधिक अनाज उपजाओ' का प्रचार कर रहे हैं।

वास्तविक अभावको दूर करनेका दूसरा उपाय कम हुई वस्तुओंको नये उपायोंसे तय्यार करना या उनके नये स्थानापन्न (substitutes) तय्यार करना है। जर्मनीके पास पेट्रोलकी कमी है। उसने कोयले तथा अग्निसे पेट्रोलकी बहुत बड़ी मात्रा तय्यार की है। इस समय जर्मनीमें जूते बनानेका सामान बहुत कम हो गया है। अब उन्होंने सिरके बालोंसे जूते तय्यार करने शुरू किये हैं—वहांके सब नाइयोंको यह आज्ञा हुई है कि वे बालोंको न फेंके। पिछले साल भारतमें जब गेहूँ और चावलकी बहुत कमी हो गयी तो लोगोंने गेहूँ और चावलके स्थानपर चने, ज्वार और बाजरेका प्रयोग शुरू कर दिया।

जब उपर्युक्त दोनों उपायोंसे भी काम न चले तो नियत वितरण (Rationing) का अवलम्बन किया जाता है। नियत वितरण का यह आशय है कि प्रत्येक व्यक्तिके लिये एक सप्ताहकी खाने पीनेकी आवश्यकताओं की मात्रा नियत कर दी जाती है। प्रत्येक व्यक्ति यह नियतमात्रा ही बाज़ारसे खरीद सकता है, उससे अधिक नहीं। जर्मनी में युद्धप्रारम्भ होनेसे पहले ही लोगोंके लिये अंडे, मक्खन, पनीर आदि की मात्रा नियत कर दी थी। इंग्लैण्डके तात्कालिक प्रधान मन्त्री श्री चेम्बरलेनने अभिमानपूर्वक यह कहा था कि हम इस युद्धमें अवश्य विजयी होंगे, क्योंकि हमने लड़ाई नियत वितरण पत्रों (Ration cards) के साथ नहीं शुरू की। उनके कहनेका यह मतलब था कि जर्मनी की लड़ाईके पहले ही इतनी बुरी हालत हो चुकी है कि उसे सब वस्तुओंका नियत वितरण (Rationing) करना पड़ा। इसलिये उसकी अर्थ व्यवस्था शीघ्र ही भंग होगी और इंग्लैण्ड विजयी होगा। किन्तु

(शेष पृष्ठ ९ के कालम ४ पर)

---

[1] टासिग–प्रिन्सिपल्स ऑफ इकनामिक्स पृ० ३८९

[2] वाडिया और जोशी–मनी एण्ड मनी मार्केट इन इण्डिया पृ. ३०

कमला मिल के कपड़े इस्तेमाल करें।

आर्टिफिशियल सिल्क, ज्योर्जेट साड़ियां, साड़ी क्लाथ और शर्टिंग कपड़ों के लिये यह मिल अपनी विशेपता रखती है

हेड आफिसः—
गोयनका हाउस
१४५, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट,
कलकत्ता

हर प्रकार की धोती, साड़ी, कोरा लाँगक्लॉथ, कोटिंग, केनवास, सूसी, आदि आदि

कमला मिल्स लिमिटेड

तुलसी पाइप रोड, परेल, बम्बई. टे. नं. ६००६४—६५

विक्री-विभागः—

बम्बई : टे. नं. २६९४५
मूलजी जेठा मार्केट

कलकत्ता :
सूतापट्टी

—: डांवाडोल और संकट की स्थितिमें भी :—

लोकप्रियताका अकाट्य प्रमाण] **रूबी प्रगति पथपर** [दृढ़ता का सच्चा सबूत

१०० %

- **स्वदेशी**
- **टिकाऊ**
- **दृढ़**

बीमा कंपनी

प्रगतिके आंकड़े

विभाग	प्रीमियमकी आवक सन् १९३७	प्रीमियमकी आवक सन् १९४१
आग	रु. ६,५५,०४७	रु. १८,४३,८५६
मोटर और अकस्मात	रु. ७३,९८६	रु. ३,०२,५५४
समुद्रीय	रु. ७२,२८१	रु. २,८७,७७०
पूंजी	रु. १७,९४,३४२	रु. ३५,८७,९९६
जिंदगी		केवल दो वर्ष में किया
नया कामकाज		रु. ५२,७२,७६९

- **आग**
- **मोटर**
- **अकस्मात्**
- **जिंदगी**
- **समुद्रीय**

और

- मजदूरोंके बदले आदि के बीमेका कामकाज किया जाता है

रूबी जनरल इन्श्युरंस कं० लि०

टे. नं. २०५६० और ३११२९
टेलिग्राम्स 'सनशाइन'
'SUNSHINE'

चेअरमैन
श्री. बी. एम. बिड़ला

जनरल मैनेजर इनचार्ज, बम्बई डिविज़न
श्री. बी. के. सेतलवाड़

ऑफिस—४५–४७ अपोलो स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई

रोटीकी एवजमें पत्थर

जे० सी० कुमारप्पा

वर्तमान युद्धके बोझमें सिक्केके विनिमयकी बुराइयां अधिक स्पष्ट रूपमें सिद्ध हो रही हैं। सरकार इतने बड़े पैमाने पर सिक्के निकाल रही है कि उनका कोई वास्तविक मूल्य ही नहीं हो सकता। हमारे देहाती इन बेकाम सिक्कोंमें अपना कीमती अनाज बेचनेका मोह करते हैं क्योंकि उन्हें भाव अच्छा मालूम होता है। वास्तवमें आजके रुपयेकी कीमत १½ आनेसे अधिक नहीं है, इस लिये आज यदि पहलेकी अपेक्षा कमसे कम १२ गुने दाम मिले तो ही अपनी चीज़ बेचना उचित है, अन्यथा हम बरबाद हो जावेंगे। हमारे किसानोंको नोट लेकर अपना माल देनेके लिये अनेक युक्ति प्रयुक्तियोंसे फुसलानेकी कोशिश हो रही है। युनायटेड किंगडम कमर्शियल कॉरपोरेशनके कारनामे ऐसी ही कोशिशोंमें-से एक है।

युनायटेड किंगडम कमर्शियल कॉर्पोरेशन

युनायटेड किंगडम कमर्शियल कॅारपोरेशन के उद्देश्य और कार्यप्रणालीकी जानकारी प्राप्त करनेके लिये केन्द्रीय धारासभा और कौन्सिल ऑफ स्टेटके गत अधिवेशनोंमें कई प्रश्न पूछकर कोशिश की गई, पर सरकारने बड़ी होशियारीके साथ कोई जानकारी देना टाल दिया। इस लिये उपर्युक्त कॉर्पोरेशनके कार्यसे जो अनुमान किये जा सकते हैं उन्हींसे अपनी राय कायम करनेके सिवा आम जनताके लिये दूसरा कोई मार्ग नहीं है।

आज तक विदेशोंसे मिलनेवाली आवश्यक चीज़ोंकी एवजमें ग्रेट ब्रिटेन उन देशोंको कोयला, इस्पात, यांत्रिक सामान और जहाज़ों द्वारा माल ढोनेकी सहूलियतें दे सकता था। लड़ाई के कारण इन चीज़ोंकी तथा जहाज़ोंकी मांग उस देशमें ही इतनी बढ़ गई है और यू बोटोंका ऐसा निष्ठुर प्रहार हुआ है कि अब ग्रेट ब्रिटनको अपनी आवश्यकताओंकी चीज़ें प्राप्त करने और अपनी क्रयशक्ति कायम रखनेके लिये उपर्युक्त चीज़ें और सहूलियतें देना क़रीब क़रीब असंभव हो गया है। अब तो वह केवल अपने स्टर्लिंग सिक्युरिटीज़् ही दे सकता है और खुदा न करे यदि इस जंग का कोई विपरीत परिणाम हुआ तो इन सिक्युरिटीज़्की वे जिस कागज पर छपी हैं उसके जितनी भी कीमत न होगी। इसलिये यदि अन्य देशोंके लोग केवल इन नोटोंके बूतेपर अपना माल देनेके लिये राजी न हों तो वह स्वाभाविक ही है। अपने मालकी एवजमें यदि वे दूसरी कोई उनके उपयोगकी चीज़ ही चाहें तो वह दुरुस्त ही है। पर ग्रेट ब्रिटेन तो केवल कागजके टुकड़े ही दे सकता है। मध्यपूर्वमें आवश्यक तेल, कुछ मूल्यवान धातु और अन्य चीज़ें मिल सकती हैं और हिन्दुस्तानमें यद्यपि मूल्यवान धातुएं सब घुल गई हैं फिर भी यहां ईरानकी खाडीके आसपासके देशोंकी ज़रूरियातों की बहुतसी चीज़ें पैदा होती हैं। ग्रेट ब्रिटेनकी हिन्दुस्तानकी आर्थिक व्यवस्था और तिजारत पर संपूर्ण सत्ता है। इस सत्ताके बलपर अपने कागज़के सिक्के हिंदुस्तानके मत्थे मढ़ना और वहां का माल उठाकर छोटे और यू बोट वर्जित समुद्रमार्गसे मध्यपूर्वके देशोंको पहुंच कर वहांका सोना, तेल और अन्य कीमती चीज़ें हस्तगत करना इससे और आसान बात दूसरी कौनसी है? यही संक्षेपमें युनायटेड किंगडम कमर्शियल कॉर्पोरेशनके कार्यका असली स्वरूप है और हिंदुस्तानकी रिज़र्व बैंकका उसके इस काममें सहारा है।

मूल्यहीन सिक्के

रिज़र्व बैंक ॲक्ट बनानेवालोंने उसमें हिकमतसे ऐसी गुंजाइश रखी है कि बैंक जितने नोट निकाले उसका ४०% बुलियन (सोना और चांदी) या "स्टर्लिंग सिक्युरिटीज़्" उसके पास होनी चाहिये। शर्त सिर्फ इतनी ही है कि बुलियन ४० करोड रुपयेसे कमका कभी नहीं होना चाहिये। चांदी-सोनेकी अपनी निजी कीमत होती है पर नोटकी सिक्युरिटी ग्रेट ब्रिटेनकी केवल साख ही है। ऐसी दो असमान वस्तुओंको समान दरजा देना तत्त्वतः गलत है। कानूनकी इस चतुराईभरी हिकमतके जरिये बैंक ४० करोड़का सोना-चांदी रखनेकी शर्त सम्हालकर नोट सिक्युरिटीके बल पर हिंदुस्तानमें बेहिसाबसे नोट चला सकती है। इसका परिणाम यह होना संभव है कि सिक्केकी संख्या बेशुमार हद तक बढ़ सकती है। इसके अलावा केन्द्रीय सरकारको, जो एक पक्षकार है, ऐसे विशाल अधिकार रखे गये हैं कि वह जायज़ नाजायज़ सभी तरीकोंको कानूनी करार दे सकती है। इस अधिकारके कारण सरकारने रुपयेका सिक्का और नोट एक ही कर दिये और समय समय पर बैंककी स्थिति निदर्शक जो विवरण प्रसिद्ध किये जाते हैं उनमें ऐसी खबरदारी ली जाती है कि लोगोंको कुछ भी मतलब की जानकारी न मिल सके।

१९३९–४० में नोटोंकी संख्या करीब दुगुनीसे भी अधिक होगई है। पहले नोट करीब २२७ करोड़ रुपयोंके थे, सो अब करीब ५२५ करोड़ रुपयोंके हो गये हैं। इसकी सिक्युरिटीके तौरपर सोना-चांदीका प्रमाण तो ४४ करोड़ रुपयों पर स्थिर रखा गया है पर स्टर्लिंग सिक्युरिटीज़ ७८ करोड़ रु. से ३२५ करोड़ तक बढ़ गई है, अर्थात् करीब रु.३०० करोड़के नोट बेबुनियादके हैं।

यदि हम सोना और चांदी की असली कीमतको नोटोंकी बुनियाद मानें तो हमारी जायदाद और देनेका अनुपात ८·४% पड़ता है, न कि ७०·६% जैसा कि रिज़र्व बैंक भासित करना चाहती है। क्योंकि वह बेकार स्टर्लिंग सिक्युरिटीज़ पूरी कीमत देंगी ऐसा मानकर चलती है। यह बहुत ही खतरनाक हालत है, क्यों कि इसके अनुसार एक रुपयेका १½ आना ही हाथ आवेगा।

संक्षेपमें ग्रेट ब्रिटनने रु. ३२५ करोड़की पेपर सिक्युरिटी दी और उसकी एवज़में उसे उतनी ही कीमत का तेल, धातु, और अन्य चीज़ें मिलीं। ईराक आदि देशोंको चीज़की एवजमें चीज़ मिली सो ठीक ही हुआ। गरीब बेचारे हिंदुस्तानको ही अपनी चीज़के बदले कागज़ थमाया गया। कागज़ी सिक्युरिटीज़् की एवजमें अपने लिये आवश्यक कीमती चीज़ें खरीदनेकी सहूलियत ग्रेट ब्रिटनको प्राप्त हो इस तरहकी सेवा युनाइटेड किंगडम कमर्शियल कॉर्पोरेशन कर सकता है इतना कारण उसके राजनैतिक सत्ता द्वारा प्राप्य सब फायदा उठानेवाला एक सरकारी महकमाके रूपके अस्तित्वको टिका रखनेके लिये काफी नहीं है क्या? इंडियन चेंबर ऑफ कॉमर्सकी यह शिकायत है कि यह कॉर्पोरेशन हिंदी व्यापारियोंके क्षेत्रमें अतिक्रमण करता है। पर उससे भी अधिक हर्जेकी बात यह है कि यह कॉर्पोरेशन हिंदुस्तानियोंकी कडी मिहनतका ब्रिटनके कागज़ी सिक्कोंके साथ विनिमय करनेका एक माध्यम बन पाता है।

आर्थिक दग्धभूमि

यह क़िस्सा यहीं खतम नहीं होता। रिज़र्व बैंकके पास इस समय करीब रु. ३२५ करोड़ की स्टर्लिंग सिक्युरिटीज़् हैं। पर काश ग्रेट ब्रिटेनको हिन्दुस्तानसे कूच करना पड़े इस लिये ये सिक्युरिटीज़् भी यहां रहने देना सरकारको सुरक्षित नहीं मालूम होता। इस लिये हमारे अर्थसचिव ३० करोड़ पौंड इंग्लैंडमें इस लिये जमा करा देना चाहते हैं कि हिन्दुस्तानी रेल्वेके बॉंडोंका भविष्यकालीन व्याज देनेमें किसी क़िस्मकी अड़चन न आवे।

इसके अलावा हिन्दुस्तानी रेल्वे कंपनियोंमें लगी हुई ग्रेट ब्रिटेनके पूंजीपतियोंकी पूंजी डुबने न पावे इस लिये ऐसी एक योजना बनाई जा रही है जिसके द्वारा हिंदुस्तान सरकार इन कंपनियोंकी मियादें पूरी होनेके पूर्व ही इन्हें मोल ले लें। इस प्रकार हिंदुस्तान छोड़नेके पहले यहांसे जितना कुछ समेटते बने उतना सब समेट कर हिंदुस्तानमें दग्धभूमिकी नीतिका अवलंब करनेका इनका इरादा स्पष्ट है। अभी तो सिर्फ चंचुप्रवेश ही है, पर यह सिलसिला कहाँपर जा कर रुकेगा कौन कह सकता है?

मौजूदा अस्थिर समयमें ग्रामवासियोंको हमारी तो सलाह है कि वे अपनी चीज़ें वस्तुविनिमयकी पद्धतिपर अदलाबदल कर लिया करें, कागज़की नोटकी एवजमें वे अपनी चीज़ कभी न दें। महाजनों आदिसे भी हमारी यही प्रार्थना है कि वे लोगोंको अपनी अपनी चीज़ें अनाज या मज़दूरीकी एवजमें ही दे सकनेकी सहूलियत कर दें। मौजूदा परिस्थितिमें राहत मिलनेके लिये एक क़िस्मकी वस्तुविनिमय पद्धति अमलमें लानी चाहिये। हमारे किसान यदि अपनी कमसे कम दो सालकी आवश्यकताओंका अनाज अपने बंडोंमें भरकर रख सकें तो अच्छा।

युद्धकालिक आर्थिक समस्यायें

(पृष्ठ ७ का शेषांश)

इंग्लैण्डमें भी अब जबर्दस्त नियत वितरण (Rationing) शुरू हो चुका है। भारत जैसे विस्तृत एवं जनसंकुल देशके लिये यह संभव नहीं प्रतीत होता। इसमें बसने वालोंके खान-पान, रहन-सहन, वस्त्र एवं अन्य आवश्यकताओंमें इतना वैविध्य है कि यहां तो वितरणकी योजना बनाना संभव नहीं और यदि बन भी जाय तो उसे चलानेके लिये युद्धके समय इतना बड़ा प्रबन्ध करना सर्वथा असंभव है।

वस्तुओंकी वास्तविक न्यूनताको तो इन उपायोंसे दूर किया जा सकता है किन्तु बहुत बार सट्टेसे बाज़ारमें वस्तुओंकी अवास्तविक न्यूनता उत्पन्न हो जाती है। व्यापारी मूल्यवृद्धिकी आशासे माल अपने पास बटोर कर (Hoard) रखते जाते हैं। वस्तुओंके इस प्रकारसे संचित होनेका यह परिणाम होता है कि बाज़ारमें उनकी अवास्तविक कमी हो जाती है। माल बाजारमें होता है, किन्तु कुछ व्यापारियोंके गोदामोंमें संचित हो जानेसे उसकी कमी मालूम होती है और वस्तुओंका मूल्य बढ़ने लगता है।

सरकार प्रायः इस अवास्तविक अभावको मूल्य नियन्त्रण (Price control) द्वारा दूर करनेका प्रयत्न करती है। सरकार सोचती है कि यदि मूल्य नियन्त्रित कर दिये जायं तो व्यापारियोंको माल जमा करके, रखनेका प्रलोभन जाता रहेगा, किन्तु समझदार व्यापारी यह सोचते हैं कि जिस वस्तुका मूल्य नियन्त्रित किया जा रहा है, बाजारमें उसकी मात्रा अवश्य कम है। यदि कम न होती तो उसके मूल्यका नियन्त्रण न होता। समय बीतने पर इस वस्तुका परिमाण कम हो जायगा। और सरकारने जिस भाव पर आज मूल्य नियन्त्रित किया है–सरकार स्वयमेव उस भावको चढ़ा देगी। भारतमें पिछले दो वर्षोंके मूल्य नियन्त्रण का अनुभव भी ऐसा ही है। सरकार नियन्त्रित भावोंको बराबर बढ़ाती रही है। इस लिये किसी वस्तुके मूल्य नियन्त्रणका यह दुष्परिणाम होता है कि बाज़ारसे वह वस्तु सर्वथा लुप्त हो जाती है। शासकोंके लिये 'इधर कुंआ उधर खाई' या सांप छछूंदर की सी गति हो जाती है। यदि वस्तुओंका मूल्य-नियन्त्रण न किया जाय तो मूल्य बेहद बढने लगते हैं। वस्तुयें मंहगी या दुर्लभ होनेसे, लोगोंमें असन्तोषकी अग्नि सुलगने लगती है, यदि मूल्य-नियन्त्रण न किया जाय तो बाज़ारसे माल सर्वथा लुप्त हो जाता है और जनतामें सरकारके प्रति रोष और असन्तोषकी मात्रा बहुत बढ़ जाती है। व्यापारियोंके संचय को रोकनेका एक ही प्रभाव जनक तरीका है और वह यह कि सरकार व्यापारियोंसे सारे मालका जबर्दस्ती खरीद (Commandeering of stocks of commodities) कर ले और उसे व्यापारिक संघों द्वारा या अपने दुकानें खोलकर नियन्त्रित भाव पर, जनताको वह बेचे पंजाबमें सरकारने गेहूंका संचय करने वाले

(शेष पृष्ठ १२ के कॉलम ४ पर)

मातृ–पितृ स्तम्भ—१०

मां-बापका व्यवहार

★

श्री. श्रीनिवासजी झंवर, बी. ए.

आजकल हमारे घरोंमें संघर्ष और विषाद तो राजमर्राकी चीज़ें हो गए हैं, घरोंके पश्चात् गांवमें देखिये तो राजनैतिक शोरगुल सुनाई देता है । कम्यूनिस्ट सरकारी युद्ध-प्रयत्नोंमें सहायता देनेको बाध्य करते हैं तो गांधीवादी सब काम-काज छोड़कर देशकी आज़ादीके युद्धमें कूद पड़नेको आव्हान करते हैं । सारा देश इस वक्त सरकारसे आज़ादीके अन्तिम युद्धमें जूझ रहा है । विश्वमें देखें तो महाभयंकर सर्वग्राही भीषण युद्ध चल रहा है । आज हम सब ध्वंस, परिवर्तन और नव-निर्माणके क्रान्ति युगसे गुजर रहे हैं । सामाजिक व्यवस्थामें ऐसी क्रान्तिकारी घटनाएं घटित हो रही हैं कि जन-साधारण अपना कर्तव्य निश्चित नही कर पा रहे हैं । अभी लोगोंको यह भी स्पष्ट नहीं है कि यह युद्ध क्यों हो रहा है? होना चाहिये या नहीं? आगे क्या होगा? राज्य-व्यवस्था और समाज-व्यवस्थापर इसका अच्छा प्रभाव होगा या बुरा? हम आज़ाद होंगे या नहीं? यह क्यों? वह क्यों? मुख्तसिरमें एक भयंकर उथल-पुथल मची हुई है । हमारी शोचनीय स्थिति अपनी असभ्यताकी सीमा पार कर चुकी है । किन्तु हमारा समाज, समाजमें प्रचलित 'नीतिशास्त्र', हमारी 'प्रगतिशील' संस्थाएं, संघ, योजनाएं, नये आदर्शोंके अनुसार समाजके नवनिर्माणकी भावनाएं—ये सब केवल विड़म्बना मात्र हैं । स्थितिमें ऊपरी अंतर लानेसे—लीपापोती करनेसे आजके मानवकी समस्याएं हल नहीं होंगी । रोगीको ऊपरी मलहम-पट्टीसे शान्ति देनेसे ही रोग जड़से नहीं चला जाता । आवश्यकता है हमें हमारे विचारोंपर और तदनुरूप कार्योंमें परिवर्तन करनेकी । हमें अपने व्यवहारके मूल्यों—Social values को बदलना होगा । हमें हमारी अन्दरुनी कमजोरियोंको समूल नष्ट करना होगा ।

ड़ाक्टर मेरिया मॉण्टेसरीका विश्वास है कि हमारी इस विचलित पतित दशासे मुक्ति बालक ही दिला सकते हैं । प्रत्येक बालकको वह परमात्माका अवतार मानती है । इसी महान् प्रेरणासे प्रेरित होकर रामगढ़ कांग्रेसको उन्होंने एक संदेश भेजा था जिसके द्वारा उन्होंने बाल-संसारकी स्वाधीनताकी बड़ी आवश्यकता बताई थी और कांग्रेससे इस दिशामें प्रयत्न करनेकी प्रार्थना की थी । बाल-जीवनका निरीक्षण और उसका शुद्ध उगाव निश्चय ही सत्ययुगका प्रवर्तक हो सकता है । वे अल्पसंख्यक माता–पिता, जिनकी आंखोंमें यह अमृत है, आज भी समाजमें सुख और शान्तिकी नींव चुपचाप भर रहे हैं । किन्तु साधारणतया सभी माता-पिता वर्तमान अवस्थासे असन्तुष्ट हैं । उन्हें सच्ची राह सूझ नहीं पड़ रही है । इसी बौखलाहटमें ये 'जटिल माँ-बाप' 'जटिल सन्तानको' को उत्पन्न कर रहे हैं (इस विषयका विशेष विवेचन 'माहेश्वरी' के ता. २१-११-४२ के अंकमें पढ़िये) क्योंकि विषम और जटिल बच्चे ही हमारे आदर्शोंकी उपलब्धिमें बाधक होते हैं । ये जटिल बच्चे वयस्क होकर प्रौढ़ होते हैं और स्वयं सन्तान उत्पन्न करते हैं । उनकी यह सन्तति भी विषम और जटिल होती है, इसी प्रकार यह विषाक्त चक्र चलता आ रहा है । मेरा यह लिखना शायद पाठकोंको कुछ अतिरंजित या असंगत भले ही प्रतीत हो, किन्तु यह सत्य है ।

बालकोंका भरण-पोषण उनके माँ-बाप, पालक, आया, अभिभावक लोग करते हैं । यह सत्य है कि प्रौढ़ और वृद्ध समाजका बाल-शासन, वात्सल्य और लाड़चाव पर स्थित रहता है किन्तु समाजकी वर्तमान 'हाय घोड़ा, दिन थोड़ा' वाली हालतने हमारे ऋषि-युगके शान्तिमय जीवनमें कई विकार उत्पन्न कर दिये हैं । हमारी दैनिक जीवनकी कठिनाइयोंसे त्रस्त होकर हमने बालककी महानताको भुला दिया है । हम अपनी ही इच्छाओं, आदतों और रूढ़ियोंके इतने गुलाम हो गये हैं कि बालकोंमें भी जन्मसे ही ये विषाक्त संस्कार अंकुरित हो जाते हैं । बालक यह अपेक्षा करते हैं कि माँ-बाप उनके साथ बैठे, खेलें, उन्हें पुचकारें और शाबाश कहें । बालक माँ-बापसे अपने प्रत्येक कार्यके लिये प्रशंसा चाहते हैं, उत्साहवर्धक थपथपी चाहते हैं, किन्तु होता इसके विपरीत ही है । पिता थकामांदा अपने कामसे फुर्सत मिलने पर घर आता है, बालक प्रसन्नतासे हँसकर उसका स्वागत करता है, लेकिन चूंकि पिता प्रसन्नचित्त नहीं है इसलिये वह बच्चेको डाँट देता है, या लोकलाजसे बच्चेसे नहीं बोल सकता है । बच्चा इस उपेक्षाका अर्थ नहीं समझ पाता है, उसे दुःख होता है और भय भी । इसलिये वह अपने इस दुःख और भयको भुलानेके लिये पैसोंकी चोरी करके यार-दोस्तोंमें समय बिताता है या सिगरेट पीता है या झूठ बोलने लग जाता है—बालकमें कोई भयंकर भाव-ग्रन्थि उत्पन्न हो जाती है ।

बहुधा ऐसा देखा गया है कि माता-पिता बालकको हाथ खर्चेके पैसे दे देनेमें ही अपने कर्त्तव्यकी इतिश्री समझ लेते हैं । जो पिता दफ्तरोंमें नौकर होते हैं वे दिनभर तो दफ्तरमें रहते हैं और सुबह-शाम अफसरों और यार-दोस्तोंकी साहब सलामतमें समय गुजार देते हैं । जिनके दुकानें हैं वे सुबह जल्दी जाकर दुकान खोलते हैं और रातको देरसे नामा-ठामा करके लौटते हैं, जब कि घरके सब बाल-बच्चे सो चुके होते हैं । माँ भी बिचारी दिनभर घर गृहस्थीके कार्योंमें व्यस्त रहती है इस लिये बच्चोंको कभी भी माँ बापका सच्चा दुलार प्राप्त नहीं होता है ।

मैंने ऐसे कुछ माता-पिताओंको देखा है जो समय की पाबन्दी और कठोर निर्दय अनुशासन बच्चोंसे करवानेमें अंगरेज़ोंको भी मात करते हैं । ये माँ-बाप चाहते हैं कि इनके बच्चे यन्त्रवत् समय-समयपर अपना निश्चित् कार्य कर लिया करें और इससे अधिक उन्हें कोई वास्ता नहीं । ऐसे ममताहीन माँ-बापके बच्चे पिताके भयसे त्रस्त होकर पिता की मौजूदगीमें तो दबी बिल्लीकी तरह काम कर लेते हैं किन्तु अक्सर ऐसे घरोंमें बालक पिताकी आँखोंसे ओझल रहना अधिक पसंद करते हैं । ऐसे माता-पिता यह भूल जाते हैं कि बालक बौना आदमी नहीं है, बल्कि बालक बालक ही है । ऐसे माता-पिता अपने दैनिक जीवनके कार्य-क्रममें थोड़ासा भी परिवर्तन कर लेंगे तो उन्हें गृहस्थी जीवनका सच्चा आनन्द अनायास ही प्राप्त हो जावेगा । ये माँ-बाप यदि नित्य २ घंटे अपने बच्चोंके साथ हंसी खेलमें व्यतीत करना आरम्भ कर दें तो बच्चोंको वे अपने मनोनुकूल बड़ा कर सकेंगे, बच्चे बुरी सोहबतमें फंसनेसे बचेंगे, वे सदा मोदमें भरे रहेंगे जिसका परिणाम यह होगा कि इनकी शारीरिक और मानसिक शक्तियोंका उत्तम विकास होगा और ये कभी भी बीमार नहीं होंगे । आप यह निश्चित जान लीजिये कि जो बड़े आदमी शिथिल, बोड़म, बुध्दू, अथवा दुर्बल, कृशगात दिखते हैं उन्हें माँ–बापका वास्तविक प्रेम कभी नहीं मिला है और जो पुरुष या स्त्री प्रखर, सुन्दर, हृष्ट-पुष्ट, तीक्ष्ण याददाश्त वाले प्रतिभासम्पन्न होते हैं उन्हें उनके माँ-बापका यथार्थ सहयोग बाल्यकालमें प्राप्त हुआ है ।

केवल इतना ही काफी नहीं है कि आप अपने कार्यक्रममें परिवर्तन करके बच्चोंके साथ २ घंटे नित्य हंसना-खेलना आरम्भ कर दो । यदि आप अपने बच्चेको अपने आदर्शोंके अनुकूल बनाना चाहते हो तो भोजन करते वक्त बच्चोंको साथ लेकर भोजन करो । सुबहसे शामतक जितनी अधिकबार तुम बच्चोंके सम्पर्कमें आ सको, आओ, इससे बच्चोंका व्यवहारिक ज्ञान बहुत बढ़ जायगा, किन्तु एक सिद्धान्त सदैव ध्यानमें रखना चाहिये कि आपके व्यवहारमें साहश्य हो, विरोधाभास न हो । उदाहरणार्थ बच्चा आटा लेकर रोटी बनाता है या कागज़ लेकर नाव बनाता है । आपने उसे एक दिन या दो दिन तो शाबाश कह दिया और तीसरे दिन झुंझला उठे और डाँट दिया "क्यों आटा खराब करता है?" या "क्यों कागज बिगाड़ता है?" आपके ऐसे मामूली विरोधी व्यवहारसे भी बालक विचलित हो जायगा और आपके प्रति उसकी नजरमें आदर और प्रेमकी भावनाको ठेस पहुँचेगी । फिर वह आपके चेहरेका रूख देखकर काम करनेकी कोशिश करनेकी बनावट करेगा । नतीजा यह होगा कि बालक छल–कपट सीख लेगा ।

इसी प्रकार बालकके सामने माँ-बापको कभी भी झगड़ा नहीं करना चाहिये । यदि वे बच्चेके सामने ही एक दूसरेके विचारोंका खण्डन और निरादर करेंगे तो बच्चेमें माँ या बापके लिये निरादरकी भावना उत्पन्न हो जावेगी । जैसे मां बच्चेको पानीमें खेलनेसे मना करती है और बापसे बच्चेको ड़ाँटनेकी प्रार्थना करती है तो बापका यह कर्तव्य हो जाता है कि उसी वक्त बच्चेके सामने ही उसे पानीमें खेलनेकी इजाजत न दे । माँ-बापको चाहिये कि वे बच्चेको यह बतावें कि जो भी हुक्म या आज्ञाएं उसे दी जाती हैं उनके सम्बन्धमें उन दोनोंकी राय एक ही है । ऐसा करनेसे बच्चेमें एककी आज्ञा मानना और दूसरेके आदेशोंका उल्लंघन करनेकी आदत नहीं आवेगी ।

माँ-बापकी आपसकी लड़ाई और गाली-गलौज बच्चेको बड़ा बेचैन बना देता है । माँ-बाप यदि लड़ाईको नहीं टाल सकते हों तो बच्चेकी अनुपस्थितिमें चाहे जितना लड़ लें किन्तु बच्चेके सामने तो उनमें प्रेम व्यवहार ही होना चाहिए, अन्यथा बच्चे सदैव दुःखी रहेंगे और घरसे भागनेकी ही ताकमें रहेंगे । ऐसे बच्चे अधिक समय तक घरमें नहीं रहते हैं और बड़े होनेपर माँ-बापसे अलग हो जाते हैं ।

यह तो हुई माँ-बापके व्यवहारके सम्बन्धमें बात । अब एक बात और है । भारतकी गरीबी तो दुनियामें कहावतके रूपमें प्रचलित हो चुकी है । कई कुटुम्बोंको तो दोनों समय पेटभर भोजन भी प्राप्त नहीं होता है, इस लिये वैज्ञानिक संतुलनसे भोजन करना असम्भव–सा ही है, किन्तु जो समृद्धिशाली हैं और 'दाल-रोटीमें' मस्त हैं, उन्हें तो अवश्य ही किसी डाक्टर या वैद्यसे खुदके और बच्चेके भोजनके सम्बन्धमें सलाह ले लेना चाहिये । हमारा वैश्य–समाज धनी होते हुवे भी शायद दुनियामें सबसे अधिक दीन भोजन करता है । कुछ लोग तो तिजोरी की तरफ देख-देख कर ही रूखी-सूखी खाकर धन जोड़नेमें अपना जीवन सार्थक समझते हैं और कुछ श्रीमंत लोग मिठाईयोंके और बाजारू चाटके इतने भक्त होते हैं कि वे घर पर पूरा भोजन भी नहीं करते हैं और जब कुटुम्बका कर्ता ही घरमें दिलचस्पी नहीं लेता तो औरतें भी जैसा तैसा भोजन बनाके दिन गुजार देती हैं । इस प्रकारके हानिकारक भोजनसे बच्चोंको न तो सन्तोष होता है और न पुष्टि मिलती है । नतीजा यह होता है कि बच्चोंका पेट बढ़ जाता है, दस्तें लगती ह, ऊपरकी कई बीमारियां हो जाती हैं, आदि इस लिये स्वस्थ सन्तति और सुखी गृहस्थीके लिये यह अत्यावश्यक है कि वह पुष्टिकारक भोजन करें । पुष्टिकारक भोजन महंगाईसे सम्बन्ध नहीं रखता है बल्कि खाद्य गुणोंपर अवलंबित है ।

SHIP BRAND
FABRICS

SELL ON THEIR MERITS!

बर्मा, सीलोन, देश और विदेश में लोकप्रिय

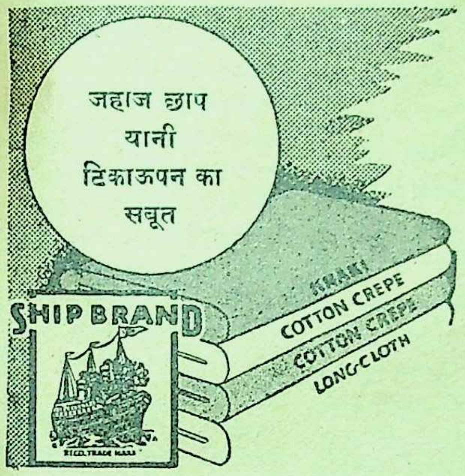
जहाज छाप
यानी
टिकाऊपन का
सबूत
SHIP BRAND
KHAKI
COTTON CREPE
COTTON CREPE
LONG-CLOTH

क्योंकि

१ वे स्वदेशी हैं,
२ पक्के रंगके हैं,
३ मज़बुत हैं,
४ सर्वोत्तम हैं,
५ कीमत में सस्ते हैं।

SHIP BRAND
FABRICS

A. R. P. लेम्पों के शेड के लिए A. R. P.

जहाज छाप काली व ब्ल्यू क्रेप, पड़दों के लिए दसूती व केसमैण्ट क्लॉथ के इस्तेमाल से आप

—A. R. P.—

सुरक्षित रहेंगे।

कौटन क्रेप सफेद व रंगीन, खाकी ड्रिल, टविल व पगड़ी क्लाथ, सफेद ड्रिल, ट्विल, लौंगक्लाथ, साटिन ड्रिल, फास्ट ब्ल्यू ड्रिल, ग्रे ड्रिल, पापलीन सफेद व रंगीन, दसूती सफेद व रंगीन, कैसमेन्ट क्लाथ रंगीन, नीटींग क्लाथ, शीटींग क्लाथ, टेवल क्लाथ सफेद, मरसीराईज़ लौंगक्लाथ, क्रेप, पापलीन, टसर, शरटींग टौवल, नैपकीन वगैरह वगैरह।

चंद्र चौक, मूलजी जेठा मार्केट, बम्बई

Bawa Parduman Singh & Sons
Head Office—AMRITSAR
Branches: BOMBAY CALCUTTA DELHI LAHORE QUETTA

★ गाँवकी सैर ★

हरि-कीर्तनके अवसरपर ग्राम-सुधार कार्य

> [आज कल हरि कीर्तनका प्रचार बढ़ता जा रहा है, परन्तु यह केवल थोड़ी देरका मनोविनोद न होना चाहिए। हमारे कीर्तन तभी सफल कहे जा सकेंगे, जब उनके साथ हम समाज सेवा और सुधारका अनुष्ठान करेंगे। —लेखक]

श्री. श्रीरामजी जैन

प्रयागसे दक्षिणकी ओर लगभग ११ मील के फासले पर यमुनाके तटकी एक पहाड़ीने भीटा ग्रामको अपने छोटेसे आंचलमें स्थान दिया है। मुगल सम्राटों द्वारा निर्मित एक प्राचीन गढ़का ध्वंसावशेष, सीताजीकी रसोई, सुजान देवता आदि प्राचीन स्मारक भीटाको एक ऐतिहासिक गांव सिद्ध करनेके अर्थ साक्षी रूपमें सहस्रों वर्ष बाद मानों आज भी अनुरोधपूर्वक डटे खड़े हैं। हमारी सुहृद् मण्डलीने यह निश्चित् कर दिया कि दीपावली को भीटा प्रसकी ही यात्रा हो। फलतः १०–११–४२ को प्रातः ९ बजते बजते समस्त बाल-गोपाल इक्के और साइकिलों पर सवार हो चल पड़े भीटाकी ओर। प्रयाग का विशाल यमुना ब्रिज और भीटाके समीपवर्ती घूरपुर ग्रामके बीच १० मीलका अन्तर बातकी बातमें तय हो गया। शेष एक मील के कच्चे रास्तेको भी हमारी सुहृद् मण्डलीने पैदल ही मथ डाला।

भीटा ग्रामनिवासी हमारे एक परमस्नेही हरिवंशनारायणजी दुबेने अखण्ड हरिसंकीर्तनका आयोजन किया था। हमारी सुहृद्-मण्डली इसी धार्मिक आयोजनकी ओर प्रेरित होकर ही भीटा अग्रसर हुई थी। और इस भक्त-मण्डलीके कर्णधार स्वनाम-धन्य प्रोफेसर दयाशंकरजी दुबे थे। गांवमें घुसते ही संकीर्तन प्रेमियोंका हरे रामः हरे रामः मंत्र हमारे कानोंमें पड़ा। उसी ध्वनिको लक्ष्य कर हम निर्दिष्ट मण्डपमें जा पहुंचे। हरि–संकीर्तन ही तो था—कोई रास-रंग अथवा नौटंकीका नाच नहीं, अस्तु, हजारों मनुजों-से भरे गाँवमें इस धार्मिक महोत्सवके अवसरपर केवल इने गिने हरिभक्तोंका ही सहयोग था, भगवान् भी बेचारे क्या करते—शेष नास्तिक जनोंकी यह बेप्रीत एवं निर्ममता बैठे टुकुर टुकुर देखा करते।

हमारी सुहृद्-मण्डली धर्मवादी तो है ही पर सुधारवादी भी कम नहीं। ग्रामसुधार तो ग्राम्यभारतकी एक प्रमुख समस्या है। तब ग्राममें पहुँच कर इस समस्याको वे लोग कैसे भूल सकते थे? इस सुधारवादके सुदृढ़ स्तम्भ श्री. भगवानदासजी केलाके नेतृत्वमें अधिकांश मण्डली ग्रामनिरीक्षणको चल पड़ी। गाँवकी ऊँची नीची गलियोंको पार करते हुये हम आगे बढ़े—कच्चे मकान लिपे-पुते पड़े थे। उन मकानोंमें विचरण करनेको हवा और प्रकाश मानों पूर्ण स्वतन्त्र कर दिए गए थे। हर मकानमें खुला आंगन छोड़ना मानों गृहनिर्माणका एक अनिवार्य्य अंग था। यह कच्चे मकान प्रेम–कुटीर थे। इनकी ओर मन अनायास ही खिंचता था। सादा, सरल, और स्वतन्त्र जीवन मानों गावों में ही केन्द्रीभूत है। बेचारे वैभवपूर्ण शहरों के लिये तो केवल कोलाहल, कृत्रिमता और खाँसी–जुकाम ही शेष रह गया है।

किन्तु गाँवकी जिन सड़कोंपर होकर हम गुजरते थे उनकी शोचनीय दशाने तो गाँवके प्रति हमारे आशावादपर पानी ही फेर दिया। हम सशङ्कित होने लगे-ग्रामके सरल वैभवपर। सारी गलियाँ और सड़कें ग्रामवासियोंका कूड़ा-कर्कट स्थल बना हुआ था। गली, सड़क, कुआँ यह तो सार्वजनिक वस्तुएं हैं, किसी एक व्यक्तिकी नहीं। स्वार्थसे भरे ग्रामीण उन सार्वजनिक वस्तुओंकी जिम्मेदारीसे नितान्त विमुख मालूम होते थे। और डिस्ट्रिक्ट बोर्ड भी गैर जिम्मेवार ग्रामीणोंके पदचिन्होंपर चल कर ही अपने जीवनको धन्य समझ रहा था।

हम और आगे बढ़े—आगे एक कच्चा मकान मिला जो कभी गाँवकी एकमात्र पाठशाला थी। पर अब तो बच्चोंकी वह पाठशाला केवल उनके आरम्भिक शिक्षणका जीर्ण-शीर्ण स्मारक रह गया था। फिर भी हम अपनी बिखरी आशाओंको समेट कर उस अस्थि-पञ्जरमें घुस पड़े, हम अवाक् रह गए। जब हमारे पाठशालामें घुसते ही जुआरियों की एक मण्डली भयभीत हो उठ खड़ी हुई। अबोध-भावी भारतका आरम्भिक शिक्षा-गृह जुएका अड्डा बना हुआ था और उसकी सभी दीवारोंके एक भग्न स्थल पर देवनागरी वर्णमालाकी बारहखड़ी उस खण्डहरको गर्म आँसुओंसे भरे देती थी! हम भारी हृदय से बोले–'भाई जुआ क्यों खेलते हो?' 'दीपावली त्यौहार' की आड़में वे लोग अपने अपराधको धोनेका प्रयत्न करने लगे। श्री. केलाजी विनय और प्रेमको अपना साथी बना उस अभागे गुटके समीप बढ़े–निस्वार्थ हार्दिक सहानुभूति अपना काम करने लगी। अन्धकारमय हृदयोंमें प्रकाशकी क्षीण रेखा दौड़ गई। पश्चाताप और ग्लानिके रूपमें वह प्रकाश बाहर प्रकट हुआ। वे लोग तन-मनसे जुआ जीवनमें कभी न खेलनेके लिये शपथ खाने लगे। दो चारने धूम्रपान भी त्यागने का वचन दिया। हमने समझा, हमारी पूजा-अर्चना सफल हुई। सुहृद्-मण्डलीके सन्तोषित मन खुशी खुशी और आगे बढ़ चले।

चलते चलते एक और सार्वजनिक कुटीर में जा पहुंचे। मालूम हुआ यह स्थान पहले कभी कांग्रेस-ऑफिस था। इस स्थान पर गांवके नासमझ मनुष्योंके पारस्परिक झगड़ोंका न्याय हो जाया करता था। एक प्रकारसे यह संस्था उस ग्रामका संरक्षण करती थी। इतनी उपकारी संस्थाकी भी गांवकी आपसी फूटने क्षणभरमें हड्डी-पसली तोड़ डाली। इस फूटका बीजारोपण निदान व्यक्तियोंका व्यक्तिगत स्वार्थ ही होगा। वाह रे मनुष्य! स्वार्थके समक्ष तू उचित-अनुचित क्या नहीं कर डालता!

उस कांग्रेस-कुटीरको एक सज्जन लिपवा-पुतवा कर स्वच्छ-सुन्दर बना रहे थे। शनैः शनैः उसका रूप निखर रहा था–मानों एक सुप्त आत्माको यत्नपूर्वक जागृत किया जा रहा हो। उस कुटीरके सुदृढ़ विशाल स्तम्भ हमसे धीरे २ मूल भाषामें कह रहे थे–"सुख के दिन नहीं रहे तो दुःखके दिन भी न रहेंगे।" सत्य, धर्म और अहिंसाकी नींव पर खड़ी वह इमारत हमें धैर्य और साहससे आगे बढ़नेका संकेत कर रही थी। मानों वह कहती ही थी–'कुछ काम करो, कुछ काम करो। नर हो न निराश करो मनको!'

अब भोजनका समय निकट आ रहा था। अतएव उसीको लक्ष्य कर हम संकीर्तन मण्डप की ओर लौट चले। हरिवंशजी दुबेने कच्ची रसोईका आयोजन किया था। लिपे-पुते शीतल भोजनगृहमें सुहृद्गोष्ठी की पंक्ति ने सप्रेम भोजन किया।

भोजनके अनन्तर ग्रामवासियों और हमारी मण्डलीके बीच विभिन्न चर्चा छिड़ने लगी। गांवके एक प्रतिष्ठित जमींदार पं० हरप्रसादजी दुबेने हमारी ग्राम-सुधार योजनाका विशेषरूपसे समर्थन किया था। उन्होंने भी गांवकी शिक्षा-दीक्षा, स्वास्थ्य, सफाई आदि अति आवश्यक बातोंका महत्व अनुभव किया। गांव वालोंकी ओरसे हमें आश्वासन मिला कि इन सुधारोंको कार्य-रूपमें परिणित करनेका सफल प्रयत्न किया जायगा। हमने दृढ़ताके साथ कह दिया कि हम आपके ग्राम-उत्सवों पर तभी सम्मिलित होना अपना कर्तव्य समझेंगे जब आप इस उत्सवसे आगामी उत्सव तक कमसे कम अपने ही गांवमें तो इस ग्रामसुधार योजनाको असली रूप अवश्य देंगे। अगली बार हम आपके गांवके बच्चोंको पाठशालामें पढ़ते हुऐ देखना चाहेंगे। गांवकी सड़कों, गलियों, कुओं आदिको साफ़ सुथरा पाएंगे, पाठशाला और सफ़ाईके अर्थ डिस्ट्रिक्ट बोर्डका भी सहयोग प्राप्त करनेका प्रयत्न किया जा सकता है; परन्तु डिस्ट्रिक्ट बोर्डके सहारे ही हमें नहीं बैठे रहना चाहिये। हमें अपनी शक्तिभर तो उद्योग करते ही रहना होगा।

कुछ विचारविनिमयके बाद निश्चय हुआ कि गांवमें कमसे कम एक घंटा रोज़ बालकों की शिक्षाके लिए एक स्वयंसेवक सज्जन अपना समय प्रदान करेंगे। चाहे बालकोंकी संख्या आरम्भमें कम ही रहे, यह कार्य नियमित रूपसे होता रहेगा। यदि किसी दिन उक्त महाशय पढ़ानेमें असमर्थ हों तो उनकी जगह दूसरे सज्जन इस कार्यका सम्पादन करेंगे और किसी भी दशामें यह काम रुकने नहीं पायेगा। अक्षर–ज्ञानके अतिरिक्त रामायण आदिका पाठ भी इस कार्यका एक अंग रहेगा। इन पंक्तियोंके लेखकने यह आश्वासन दिया कि प्रति मास दो बार इस कामका निरीक्षण करनेके लिए प्रयागसे इस गांवमें आया करेंगे। आशा की जाती है कि अगले ६ महीनेमें इस कार्यका कुछ स्थूल परिचय दिया जा सकेगा।

हरि-संकीर्तन जैसे उत्सवों पर हमको ग्राम-सुधारके लिए अनायास ही विस्तृत क्षेत्र मिल जाता है। इन धार्मिक उत्सवोंका महत्व तभी है जब ग्राम और ग्रामवासी सुखी, सम्पन्न और स्वस्थ हों। गांवकी जनता शिक्षित हो, वे परिश्रमशील और स्वावलम्बी बनें। शिक्षित और स्वस्थ मनुष्योंके सहयोगसे गांव लहलहा उठेंगे। उनमें सबल सुख-वैभवका प्रसार होगा और यही भावी भारतकी सफलताका श्रीगणेश होगा।

(पृष्ठ ९ के कालम ४ का शेषांश)

व्यापारियोंसे हजारों बोरियां जबर्दस्ती खरीदकर इस प्रकार सरकारी दुकानों द्वारा बेची हैं, किन्तु इस योजनाको भारतमें व्यापक रूपसे लागू करनेमें नियतवितरण (Rationing) जैसी ही भीषण बाधायें हैं। मण्डियों तथा व्यारियोंके बिना, भारतका आर्थिक प्रबन्ध चलना बहुत कठिन हो जायगा। मूल्यनियन्त्रणकी जटिल समस्या पर विचार करनेके लिये सरकार छः परिषदें बुला चुकी हैं। किन्तु अभी तक इनका कोई सन्तोषजनक हल नहीं निकला।

कालिदासने रघुवंशके प्रारम्भमें राजा दिलीप की अथपद्धतिके सम्बन्धमें लिखा है-'दुदोह गां स यज्ञाय।' वह यज्ञकार्यके लिये प्रजा रूपी गौसे धनका दोहन करता था। वर्त्तमान अर्थशास्त्रीके लिये यह कहा जा सकता है कि 'दुदोह गां स युद्धाय' वह युद्धके लिये प्रजाके धनका दोहन करता है। हमने संक्षेपसे यह देखा कि यह दोहन कर–ऋण तथा मुद्राप्रसार (Inflation) से होता है। मुद्राप्रसार एक भयंकर साधन है, उससे किस प्रकार मूल्यवृद्धि, नियतवितरण (Rationing) मूल्य नियन्त्रण (Pricecontrol) आदि की नयी जटिल आर्थिक समस्यायें उठ खड़ी होती हैं-इनको विस्तृत रूपसे हम फिर कभी देखेंगे।

वरकी आवश्यकता है

एक सुन्दर स्वस्थ, सुशिक्षित एवं गृहकार्य में दक्ष १५ वर्षीय कन्याके लिए एक सुयोग्य मंगली वरकी (राठी एवं लाखोटिया खापें वर्जित हैं) आवश्यकता है।

पत्र-व्यवहारका पता :—
लालकृष्ण भुराड़िया
२९।४४ सिरकी मुहाल, कानपुर

चयन—

भारतकी देशी रियासतें

भारतमें ५८१ देशी रियासतें हैं, जिनमेंसे सिर्फ २१ ऐसी रियासतें हैं जिनमेंसे प्रत्येककी वार्षिक आमदनी ५० लाख रुपये हैं। सिर्फ १२ रियासतें ऐसी हैं जिनमेंसे प्रत्येककी वार्षिक आमदनी एक करोड़ रुपये हैं। सबसे छोटी रियासत बिलबारी है जिसकी जनसंख्या २७ है और वार्षिक आमदनी ८० रुपये हैं। कुछ रियासतें ऐसी हैं जिनमेंसे प्रत्येक की क्षेत्रफल सिर्फ ४ वर्ग मील है। ७० ऐसी रियासतें हैं जिनमेंसे प्रत्येककी वार्षिक आय १० हज़ार रुपयेसे कम है। सहारा (गुजरात) रियासतमें दो हिस्सेदार हैं जिनमेंसे प्रत्येकको ९३ रुपये वार्षिक आय मिलते हैं। ५२५ रियासतों में हिन्दू शासक हैं, और ५६ रियासतोंमें मुसलमान शासक हैं। बहुतसी ऐसी रियासतें हैं जिनके पास पुलिस नहीं है। कितनी ही रियासतोंमें शिक्षाका प्रबन्ध नहीं है।—

'भारत ज्योति' से

यह युद्ध स्वतंत्रताकी रक्षाके लिये नहीं,

यूरोपीय सभ्यताकी रक्षाके लिये लड़ा जाता है

न्यूयार्कमें नोबेल पुरस्कारप्राप्त व्यक्तियोंकी एक बैठकमें मिसेज पर्ल बकने कहा, 'यह युद्ध स्वतंत्रताकी रक्षाके लिये नहीं लड़ा जा रहा है। युद्ध यूरोपीय सभ्यताकी रक्षाके लिये लड़ा जा रहा है। अगर इस साल कोई इतना महान् व्यक्ति होता, जो घोषणा करता कि यह युद्ध सभी देशों की स्वतन्त्रताकी रक्षा करनेके लिये लड़ा जा रहा है, तो हमें दूसरे युद्धका सामना न करना पड़ता। यह युद्ध तो उस दूसरे युद्धका प्रारम्भिक रूप है।' दूसरे वक्ताओंने कहा कि रूससे किसी प्रकारकी गलतफहमी न होनी चाहिये।

बर्मासे ब्रिटिश सरकारको सबक लेना चाहिये

लंदनके 'ट्रिब्यून' में डेविड मार्टिनका लेख

लन्दनके 'ट्रिब्यून' में एक लेख लिखते हुए डेविड मार्टिनने कहा है, 'बर्माके भूतपूर्व मन्त्री यू. सा. ब्रिटिश सरकारके युद्धोद्योगमें पूरी मदद देनेके लिये तैयार थे, लेकिन बर्माके लिये युद्धके बाद वे औपनिवेशिक स्वराज्य चाहते थे, लेकिन ब्रिटिश सरकारने यू. साकी बात न मानी और बर्मामें जापानी सफल हुए। ब्रिटिश सरकारको बर्मासे सबक लेना चाहिये। अगर बर्मासे जापानियोंको निकाल-बाहर करना है, तो पहले बर्मी जनताकी पूरी सहानुभूति प्राप्त करनी चाहिये। लेकिन बात बनानेसे काम न चलेगा। हम लोगोंको निश्चित रूपसे प्रतिज्ञा करनी चाहिये कि युद्धके बाद बर्माको पूर्ण स्वराज्य दिया जायगा। जबतक स्वाधीनताकी मांगके लिये हममें लोग कांग्रेसी नेताओंको जेलमें ठूंसते रहेंगे तबतक हमारे प्रचार-कार्यपर लोग सिर्फ हसेंगे, कुछ परिणाम न निकलेगा।

—'भारत-ज्योति' से

पंजाब भारतसे पृथक् नहीं किया जा सकता

सिखों का विरोध

युनाइटेड प्रेसके प्रतिनिधिकी मुलाकातमें अकाली दलके नेता मास्टर तारासिंहने कहा—"मैं किसी भी हालतमें पाकिस्तानसे सहमत नहीं हो सकता। भले ही मुस्लिम संस्थाएं और जातियां तथा सरकार भी पाकिस्तानके लिये सहमत हो जायं, मैं पाकिस्तानका भरसक विरोध करूंगा क्योंकि इसमें मैं सिख समाजका अहित देखता हूं। सिख कभी भी पाकिस्तानसे सहमत नहीं हो सकते। आज हम पर साम्प्रदायिक राज्य जिस रूपमें किया जा रहा है, उससे हम मुक्ति चाहते हैं, हिन्दू इसे बहुत ही कटु अनुभव कर रहे हैं, परन्तु वे ऐसे फूटे हुए हैं कि वह अपना मन एकाग्र नहीं कर सकते। कुछ लोग राष्ट्रीय विचारके होनेके कारण वस्तुस्थितिपर ध्यान नहीं देते। हम पंजाबकी सीमाओंको फिरसे ठीक कर लेना चाहते हैं। मैं यह चाहता हूं कि पंजाबमें एक जातिपर दूसरी जाति हुकूमत न करे। मैं इससे भी कोई अच्छी योजना पर विचार करनेके लिये तैयार हूं। जो लोग मेरी आलोचना करते हैं, उन्होंने मुझे समझा नहीं। यह भी गलत है कि मैं खालिस्तान चाहता हूं। मेरा प्रस्ताव ठीक पाकिस्तानके विपरीत है। पाकिस्तानका अर्थ एक जातिका दूसरी जाति पर हुकूमत और केन्द्रसे सम्बन्ध विच्छेद है। मैं यह नहीं चाहता। पंजाबमें ४० प्रतिशत मुसलमान ४० प्रतिशत हिन्दू, और २० प्रतिशत सिख हैं। इसे किस आधार पर खालिस्तान बनानेकी कल्पना की जायेगी? इससे एक जाति दूसरी जाति पर हुकूमत नहीं कर सकती और यह सच्ची राष्ट्रीयताकी तरफ ले जाती है। अतएव पंजाब भारतमें बना रहेगा और उसे स्वतन्त्र स्थितिको ज़रूरत नहीं है। यदि सब लोग साम्प्रदायिक समझौतेको स्थगित कर दें, तो मैं अपने प्रस्तावके समर्थनमें प्रचार बन्द करनेको तैयार हूं।"

भारत एक राष्ट्र है

गत २७ नवम्बरको पटना विश्वविद्यालयका दीक्षान्त भाषण देते हुए मैसूरके भूतपूर्व और जयपुरके वर्तमान दीवान सर मिर्ज़ा मोहम्मद इस्माइलने कहा—

"देशभरमें हमें किसी भी रूपमें अलग नहीं रहना चाहिए। हमें एक राष्ट्रीयताका पराक्रम, गौरव और सद्भावना प्राप्त करना चाहिए। कुछ लोग समझते हैं कि भारत न एक राष्ट्र है, न हो सकता है। उसमें हितोंका स्थायी संघर्ष है, जो एक राष्ट्रीयताकी समझ और संगठनको असम्भव बनाए है। पर मेरे लिए तो भारत एक राष्ट्र है और यह विचार मेरे लिए बड़ा ही प्रेरक तथा तर्कसंगत है। यही भावना मैं चारों और विकसित होते देख रहा हूं। हम चाहे जिस जाति या धर्मके हों, यह (भारत) हम सबकी भूमि है।

"कई भाषाएं हैं, जिनका अपना साहित्य है। कई धर्म हैं, जिनका अपना दर्शन और नीति है। आज अधिकांश लोग इनके विभेदों और प्रतियोगिताओंकी ही अधिक चिन्ता करते हैं। निःसंदेह यह मानवस्वभाव है। पर ऐसेभी लोग हैं, कम होनेपर भी जो बहुत प्रमुख और बुद्धिमान हैं, जो उदाहरणके लिए हिन्दू या मुस्लिम–संस्कृतिके रूपमें नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृतिके रूपमें ही ख्याल करते हैं।"

दमनसे लाभ नहीं होगा

लन्दन यूनिवर्सिटीके राजनीति-विभागके प्रधान अध्यापक प्रोफेसर हेरोल्ड. जे लैस्कीने 'न्यू स्टेट्समैन एण्ड नेशन' में लिखा है कि भारतमें हम अपनी साम्राज्यवादी सत्ता खोकर सिर्फ भारतीय जनताकी हार्दिक सहानुभूति ही नहीं प्राप्त करेंगे, वरन् उन सभी पुरुष-स्त्रियोंके सम्मानके पात्र भी होंगे जो जानते हैं कि साहस और दूरदर्शिता ही स्वतन्त्रताकी चिराग जलाये रखनेके लिये काफी है।

अगर हम भारतकी समस्या हल करनेके लिये दृढ़प्रतिज्ञ हो जायं तो समस्या हल होगी ही, लेकिन इस समस्याको हल करनेके लिये हमें भारतकी स्वतंत्रताको सर्वप्रथम महत्व देना पड़ेगा और ब्रिटनकी प्रतिष्ठाको इसके बाद। अगर हम मलाया और बर्माकी नीतिसे काम न लें तो समस्या हल होगी और इस युद्धमें भारतकी पूरी सहानुभूति मिलेगी।

भारतीय समस्या ब्रिटेनकी नेकनियतीकी कसौटी है। इस समस्याके हल होनेसे युद्धका रूप बदल जायगा। इससे साबित होगा कि ब्रिटेन, सचमुच स्वतंत्रताके लिये लड़ रहा है।

क्रिप्सका प्रस्ताव इस तरहका था कि उसमें भारतकी उचित मांगके बदले, जापानकी मुखालिफत करनेकी ही चेष्टा की गयी थी। मनोवैज्ञानिक दृष्टिसे क्रिप्सके लिये इस विचारको लेकर भारत जाना कि 'प्रस्ताव मंजूर करो या रद्द कर दो' बड़ा खतरनाक था। ब्रिटेनने युद्धके बाद भारतको स्वराज्य देनेका वादा किया है, लेकिन कांग्रेस अभी स्वराज्य मांगती है। फर्क बहुत थोड़ा है। दमन करनेसे यही खराबी होती कि समझौतेका द्वार बन्द हो जाता है और लोग गलतफहमीमें पड़ जाते हैं। अगर सच्चे दिलसे कोशिश की जाय तो अभी भी कांग्रेस और सरकारके बीच समझौता हो सकता है। अपनी नेकनियतीको प्रमाणित करनेके लिये इससे अच्छा तरीका और क्या हो सकता है कि हम अभी स्वीकार कर लें कि भारतका प्रश्न सिर्फ ब्रिटिश साम्राज्यका प्रश्न नहीं है, वरन सार्वजनिक प्रश्न है जिसपर दुनियाकी स्वतन्त्रता निर्भर है।

रूसमें संस्कृत

आधुनिक भाषा-साहित्योंका भी अध्ययन

इण्डियन एकेडेमी ऑफ साइन्सेजके प्रेसिडेंट सर सी. वी. रमनको रूसी वैज्ञानिकोंकी फासिस्ट-विरोधी कमेटीने एक लम्बा तार भेजा है जिसमें कहा गया है कि रूसी विद्वान् भारतीय सभ्यता और भारतीय भाषाओंकी छानबीन कर रहे हैं' रूसी क्रान्तिसे पहले वहांपर संस्कृतके पठन-पाठनपर बहुत ध्यान दिया जाता था। संस्कृतका सम्पूर्ण कोष प्रकाशित किया गया था और बहुतसी हस्तलिखित संस्कृत पुस्तकें भी प्रकाशित की गयी थीं। इस क्षेत्रमें ओल्डेनबर्ग और स्चेरबाटस्कीका नाम विश्वविख्यात है।

रूसके आधुनिक भारतीय भाषा और साहित्यका अध्ययन करनेमें अधिक समय देते हैं तथा भारतीय इतिहासका भी अध्ययन कर रहे हैं। आधुनिक भारतीय भाषाओंके व्याकरण और दूसरे पाठ्यग्रंथ भी बहुत बड़ी तादादमें प्रकाशित किये गये हैं। महत्वपूर्ण भाषाओंका सम्पूर्ण कोष भी नये ढंगसे प्रकाशित किया गया है। सभी रूसी विद्यालयमें पूर्वका आधुनिक इतिहास पाठ्य विषय रखा गया है।

ब्रिटिश अखबारोंका घृणित प्रचार

इंग्लैंडमें प्रकाशित होनेवाले 'सन्डे डिस्पैच' नामक एक अखबारमें कांग्रेसकी पिछली बैठक व गांधीजीके बारेमें एक घृणित लेख निकला है। उस लेखमें बतलाया गया है कि कांग्रेस कमेटीके अधिवेशनमें सभामंच पर नर्तकियोंको बुलाया गया था और श्री. कस्तुरबा गांधी अपने सिरपर बिस्तर रखकर गांधीजीकी मोटरके पीछे पैदल चलकर गयी थीं। बम्बईके 'टाईम्स ऑफ इण्डिया' के सन्डे डिस्पैचके रिपोर्टर श्री. स्टिमसनने यह लेख लिखा है। अखबारोंमें इसका खुलासा देते हुए मि. स्टिमसनने कहा है कि उस लेखका कुछ हिस्सा उन्होंने नहीं लिखा और उसमें पीछेसे जोड़ दिया हुआ है। परन्तु उसमेंका कौनसा भाग निश्चित रूपसे जोड़ा गया है, वह उन्होंने नहीं कहा है। उनका बचाव एकदम झूठा प्रतीत होता है और ऐसे घृणित कार्यके लिए उन्होंने किसी प्रकारका खेद भी नहीं प्रकाशित किया। हमें यह लेख किसने लिखा यह महत्वपूर्ण नहीं लगता। 'सन्डे डिस्पैच' के इलावा 'पंच' अखबारमें भी एक व्यंगचित्र प्रकाशित हुआ है, उसमें यह बताया गया है कि गांधीजी पांचवी कतारके साथ हाथ मिला रहे हैं, अर्थात् वे पांचवी कतारके व्यक्ति हैं। ब्रिटेनके कुछ अन्य अखबार भी कांग्रेस नेताओंकी गिरफ्तारीके बाद, कांग्रेसके आंदोलन, गांधीजी एवं हिंदुस्तानके बारेमें अनेक तरहकी झूठी, मनगढन्त एवं हीन मनोवृत्तिकी सूचक बातें प्रकाशित कर रहे हैं।

अंग्रेज़ी अध्यापककी आवश्यकता है

एक सुधारक विचारोंके माहेश्वरी की हरसोर (मारवाड़) की धर्मार्थ स्कूलमें अंग्रेज़ी अध्यापनके लिए आवश्यकता है। वेतन योग्यतानुसार मासिक ३० रु. तक दिया जा सकता है।

आवेदक निम्नपतेपर पत्रव्यवहार करें:—

श्री. मंत्री सेवा-समिति
P. O. हरसोर
Via Degana (Marwar)

टेलीफोन नंबर ६००४५ / ६००४६ तारका पता "श्रीनिवास"

श्रीनिवास कॉटन मिल्स लिमिटेड

डिलाईल रोड, बम्बई १३

★ ★

श्रीनिवास मिल का कपड़ा बढ़िया और टिकाऊ
होने के साथ २ सस्ता भी है।

हमारी

धोतियां, साड़ियां, लट्ठा, वाइल, मलमल, पापलिन,
चैक आदि ख्याति-प्राप्त माल है

श्रीनिवास मिल्स का **नरेन्द्र-छाप** लट्ठा सुप्रसिद्ध है

★

कोरा, रंगीन, धुला हुआ, छपा हुआ व फैन्सी
हर प्रकार का माल हम तैयार करते हैं।

हमारे बम्बई के सोल एजन्ट्स:—

मेसर्स, दी बम्बई एजन्सी कम्पनी लिमिटेड,
सर विट्ठलदास गली, मूलजी जेठा मार्केट, बम्बई

मैनेजिंग एजन्ट्स—

दी मारवाड़ टैक्सटाईल्स (एजन्सी) लिमिटेड, बम्बई।

देश विदेशकी चर्चा

चालू दवाई

एक लंबे अरसेके पूर्व सिमलामें बिदाईगिरीके समारंभको मनानेकी बात जाने दें, तब भी वायसराय पद की दो साल तककी अवधिको बढ़ानेके बाद, और बिदाई के अनेक भाषणोंके बाद भी लॉर्ड लिनलिथगोके ओहदे की नई अवधि एक तरह ऊकताने वाला आश्चर्य पैदा करती है। लॉर्ड डेलहाउसीसे लेकर लॉर्ड कर्ज़न तकके सभी वायसरायोंके ओहदेकी मुद्दतकी अपेक्षा लॉर्ड लिनलिथगोके ओहदेकी मुद्दत ज्यादा बढ़ाई गई है। अगर यह उनके कारोबारकी सफलताका सन्मान गिना जाता है, फिर भी यह सन्मान उदासीनतापूर्वक की गई प्रशंसाके तुल्य है। जिस देशमें ब्रिटिश खिद्धिओंका एक नया स्मारक स्तंभ वे खड़ा करना चाहते थे, उस देशमें अपनी समूची शुभ भावनाएं और बुद्धिमानी खर्च करनेके बाद भी उनके समान राजनीतिज्ञको जो बेचैनी होती थी, उसे दबा देनेके लिए यह उपचार किया गया प्रतीत होता है। अन्तमें पूरे दो हफ्ते तक धाँधली करनेके बाद, नयी नयी दवाइयांके इश्तिहार करनेके बाद, हिन्दुस्तान जैसे गरीब राजनीतिक दर्दीको केवल "चालू दवाई" ही दी जा रही है। — 'डॉन' से

पुरानी संधियांके लिए जामसाहिबकी चिंता

"हिन्दुस्तानी रियासतोंके साथ संधियोंकी जो लोग बातें कर रहे हैं, वे या तो पागल हैं, ढोंगी हैं, या मूर्ख हैं।" पंड़ित जवाहरलाल नेहरू द्वारा निरूपित इन तीन श्रेणियोंमें हम जामसाहिबको किस श्रेणीमें रखें?

कुछ समय पहिले ब्रिटेनके प्रधानमंत्री श्री. चर्चिलने जाहिर किया था कि वे ब्रिटिश साम्राज्यको छिन्न-भिन्न करनेके लिए प्रधानमंत्री पद पर नहीं आरूढ़ हुए। उनके इस कथनसे जामसाहिबको एक प्रकारका सूचन मिला हो वैसे ही उन्होंने कहा है कि हिन्दुस्तानके राजा-महाराजा ब्रिटेनको इस युद्धमें मदद कर रहे हैं—इस लिए कि उनके हक सलामत रहें। श्री. जामसाहिबने संधिपत्र, सनद और करारोंको रियासती राजाओंकी श्वासनलिका बतलाया है। वास्तवमें उन्होंने क्रिप्स प्रस्तावकी ओर इस बातका निर्देश किया है। क्रिप्स-प्रस्ताव यदि मंजूर होते तो राजाओंको उनकी पुरानी संधियोंका पुनर्विधान करना पड़ता और वैसा पुनर्विधान भला वे क्यों मंजूर करते? जामसाहिबका कहना है कि हमें तो हमारे पास जितना है, पकड़ रखने दो। ब्रिटिश हिन्दुस्तान भले ही प्रगति करे, लेकिन हमें उसका शिकार न बनाओ।

ये बातें तो सहन की जा सकती हैं, लेकिन जब समस्त रियासतोंकी जनताके प्रतिनिधिके तौरपर वे यह कहते है कि "कांग्रेस और उसके साथ जुड़े हुए गुजराती और मारवाड़ी पूंजीपतियोंके काबूके किसी भी शासनके नीचे रियासती जनता नहीं रहना चाहती" तब हमें हँसी आती है। उनके इस वाहियात कथन पर आलोचना भी क्या की जाय? इन बातोंसे तो लगता है कि पं. जवाहरलाल नेहरू द्वारा निरूपित तीनमेंसे किसी भी एक श्रेणीमें जामसाहिब अपनेको रख रहे हैं।

मिदनापुरमें जल-प्रलय

बंगालके मिदनापुर इलाकेमें समुद्रीतूफान से जो अपार जनहानि हुई है उसकी पूरी जानकारी अब भी हमें सेंसरके कारण नहीं मिलती। अत्यंत सावधानीसे किये गए अन्दाजके अनुसार भी तीस हजार आदमियोंकी मृत्यु और बीस लाखसे ज्यादा आदमी बेघरबार हो जानेके समाचार प्राप्त होते हैं। ऐसी भीषण घटनाएं घटित होनेके १८ दिन बाद सरकारने यह समाचार प्रकाशित होनेको दिये। निराधार लोगोंको मदद पहुंचाने की बंगाल गवर्नरकी अपील उपरोक्त घटना घटित होनेके ३२ दिन बाद प्रकट हुई। डा. मुकर्जीने तो साफ साफ कहा है कि गवर्नर और बंगालके अन्य कर्मचारी संकटग्रस्त लोगोंको मदद पहुंचाने के कार्यमें सहानुभूति नहीं दे रहे।

तामलुक और केन्टाइ जिलेके डि. मैजिस्ट्रेट और सब-डिविज़नल अफसरोंको अलीपोरके हवामान महकमेकी ओरसे ता. १६ अक्टूबरको सूचना दे दी गई थी कि एक भारी समुद्री तूफ़ान नजदीक आ रहा है। इन सनदी नौकरीवाले अफसरोंको यह संदेशा सुबह ९ बजे मिला था, लेकिन उन्होंने इस सूचनाको फाइलके ढेर पर चढ़ानेके अतिरिक्त और कुछ नहीं किया। सायंकाल इन अफसरोंसे वहांके लोग मिले और उन्होंने घरसे बाहर नहीं निकलनेके करफ्यू आर्डरको ढीला बनानेके लिए उनसे प्रार्थना की, लेकिन करफ्यू आर्डर उल्टा और कठोर बना दिया गया। समुद्रकी तूफ़ानी लहरें बढ़-बढ़कर सैकड़ों गांवों पर रौरव मचा रही थीं। इस अवस्थामें वहांसे बचनेका एक ही साधन-नौकाएं थीं, लेकिन वह तो कबकी लोगोंसे ले ली गयी हैं। जिलेके विद्रोहियोंको सजा करनेके तौरपर उन स्थानोंमें केरोसिनका तेल बेचना भी बन्द कर दिया गया था, अंतः रातके वक्त अंधेरेमें कौन कहां जाता? यह भीषण घटना घटित होनेके बाद भी सामूहिक जुर्माने वसूल करनेका कार्य तो चालू ही था।

बंगालमें बारिश और समुद्री तूफ़ानसे जो हाहाकार मच गया है। वह कितना करुण दृश्य उपस्थित करता है, इसका नीचेके तीन उद्धरणोंसे पता लगता है। 'रोयज़ विकली' के एक संवाद दाताने अपनी आंखों देखे हुए ये तीन दृश्य हैं।

(१)

एक स्थान पर दो शव अगल-बगल पड़े हुए थे: एक स्त्रीका, दूसरा पुरुषका। स्त्रीके हाथमें कंकण था, अर्थात् वह विवाहिता थी। उसकी दायीं कलाईके साथ पुरुषका बायां हाथ एक कपड़ेके टुकडेसे बंधा हुआ था। तूफानसे बचनेके लिए घर छोडकर भागे हुए इस युगलने अलग न पड़ जायं इसलिये अपने हाथ बांधे होंगे। लेकिन उनकी यात्रा लंबी नहीं थी। पीछे दौडती हुई जल-प्रलयकी लहरोंने उन्हें पकड लिया, लेकिन मृत्यु उन्हें अलग न कर सकी। शंखकी चूडियां सतीके देहपर कीर्तिकी मीनारकी तरह चमकती थी।

(२)

मैं आगे चला। आठ मनुष्य शरीरका एक गुच्छ दिखाई दिया। आठों ही एक रस्सीसे बंधे हुए थे। चार स्त्रियां, और चार बारह सालके बच्चे समुद्रकी थपेडों से बहते हुए उधर आ जुटे थे।

(३)

उसी समय एक बच्चेका शव शांतिसे बहता चला जा रहा था। अठारह दिन के बादभी उसकी शक्ल बिगडी न थी। समुद्रकी लहरोंने और सूरजकी किरणोंने उस शरीरकी रक्षा की थी। उसका पहिना हुआ कुर्ता अब भी मौजूद था।

विद्रोह और दमन बदस्तूर जारी

सरकारी दमनसे देशकी अशांति दब जायगी इसका कोई चिन्ह नहीं नजर आता। प्रान्त प्रान्तमें कडे सेन्शरका पहिरा बिठा देनेके बाद भी जो समाचार अखबारोंमें प्रकाशित होते हैं उनसे पता लगता है कि देशभरमें विद्रोहकी आग पहलेकी सी ही तेजीसे जल रही है। बमबाजी और लूटके किस्से तो अब आये दिनकी घटनाएं हो गयी हैं। कहीं रिवोल्वरें चलती हैं, तो कहीं लाठियों उछल रही हैं। सरकारी दमन तो अपनी सीमा लांघ गया प्रतीत होता है। मद्रासमें २४ और मध्य प्रांतमें ६४ व्यक्तियोंको फांसी और कालेपानी की सजाएं दी गई हैं। आसाममें १० से २० बार गोलीबार हुआ और ३० की मृत्यु और ७० घायल हुए। गुजरात काठियावाड में भी तोड़फोड़, आग और गिरफ्तारियोंका तांता जाती हैं: बंगाल और बिहारके बहुत कम समाचार अखबारोंमें आये हैं, फिरभी उनसे पता चलता है कि जनताका उभार कम नहीं हुआ। सीमा प्रान्तमें खुदाई खिदमतगारोंकी ओरसे अदालतों पर पिकेटिंग चालू है और इसी सिलसिलेमें वहां भी सैकडों व्यक्ति गिरफ्तार किये गए हैं। कराची, बंबई, नागपुर, लखनऊ, कलकत्ता, कोलर (मैसूर) अहमदाबाद, सर्वत्र आगकी घटनाएं घटी हैं, और हजारों लोगोंकी गिरफ्तारियोंके बाद भी जनतामें अशांति फैली हुई है। पाठ शालाएं, डाकघर, ट्राम और रेल्वे आदिके यातायातके साधनों पर भी स्थान स्थान पर हमले हुए हैं।

उत्तर आफ्रीकाकी रहस्यमयी युद्ध भूमि

सबके आश्चर्यके बीच फिल्ड मार्शल रोमेलने अलएघिला खाली करके ट्रिपोलीकी ओर पीछेहट की है। मित्रसेनाओंका अनुमान था कि शायद अलएघिलाके आगे रोमलसे भिडन्त होगी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। हफ्ते पहले के अपने भाषणमें श्री. चर्चिलने कहा था कि दिसंबर मासमें हमारी पूरी कसौटी होगी। अलएघिलासे हटकर रोमल पश्चिमी ट्यूनिसियाके पहाडी इलाकेमें संरक्षक किले बंदियां खड़ी कर रहा कहा जाता है। एक खबर यह भी है कि ट्यूनिसियामें धुरी राष्ट्रोंने एक लाखके करीब सैन्य जमा किया है। यदि यह बात सच हो तो कहना होगा कि निकटभविष्यमें मित्रराष्ट्रों पर आक्रमण-युद्ध की शुरुआत होगी। दूसरी बात यह भी है कि इतने लंबे अर्से की तैयारीके बावजूद भी मित्रसेनाओंकी हवाई शक्ति धुरी हवाई शक्तिका मुकाबिला नहीं कर सकी है। अलब्बत्ता, पिछले समाचारोंसे ज्ञात होता है कि ट्यूनिस और बिजर्टा पर मित्र सेनाके हवाई जहाज रात दिन हमला कर रहे हैं और उनके कहनेके अनुसार "धुरी राष्ट्रों की हवाई शक्ति बिलकुल क्षीण हो गई है।" फिर भी मित्रसेना की स्थिति इतनी अधिक आशाजनक मानने का हमें कोई कारण नहीं प्रतीत होता। खुद ब्रिटेनके कुशल सेना विशारद भी अब यह मानने लगे हैं कि रोमेल अफ्रीका की भूमिका एक चतुर खिलाडी है। उसकी पीछे हट भी खतरेसे खाली नहीं है। ट्यूनिसियामें फौजी जमावट के साथ वह किस घडी प्रतिआक्रमण कर बैठे, यह कहा नहीं जा सकता।

इनके मुखमें ये शब्द!

अकबर जयंतीके उपलक्ष्यमें लंडनकी एक सभामें साम्राज्यवाद-प्रचारक-मण्डलके एक सदस्य श्री एमरीने नाटकीय हावभावके साथ अकबर की प्रशंसा करते हुए हिन्दुस्तानको उद्देश्य कर कहा—

"असहिष्णुताकी आगमें जलते युगमें पैदा होकर भी स्वयं तुर्क या मुसलमान है यह भूल कर, समस्त हिन्दुस्तानके समान न्यायके लिए राज करता है, ऐसा समझनेवाला वह प्रथम शासक था। यह अकबर-भावना ही हिन्दुस्तानको अकबर-कालिक हिन्दुस्तानके स्थानको वापिस दिला सकेगी। हिन्दुस्तानके नेता लोग अगर अकबर की दर्शायी हुई दीर्घदृष्टि युक्त नीतिको अपनायेंगे तो निस्संशय हिन्दुस्तानका भावी उज्वल है।"

इंग्लैंडपर हमले

इंग्लैण्ड पर हवाई हमले का मौसम फिर आ गया प्रतीत होता है। पिछले कुछ दिनोंसे उत्तर पूर्वी इंग्लैण्ड पर जर्मन हवाई जहाजों की टोलियोंने बुरी तरह बमबाजी करना प्रारंभ कर दिया है। कुछ शहरों पर मशीनगनसे भी गोले फेंके जानेके समाचार

(शेष पृष्ठ २० कालम ४ पर)

देश तथा विदेशमें लोकप्रिय

केशोराम कॉटन मिल्स लिमिटेड, कलकत्ता

बंगाल में सबसे बड़ी और मशहूर क्यों ?

क्योंकि यह उत्तम, सुन्दर, कलापूर्ण, टिकाऊ, मजबूत तथा इस लड़ाईके समयमें भी सस्ता कपड़ा बनाती है और भारत की सामाजिक व आर्थिक दशा तथा सर्व साधारण की रुचिको ध्यानमें रखते हुए सब प्रकारके वस्त्र तैयार करती है।

ट्रेड नंबर

साड़ियां
- No. 515
- No. 252½
- No. 7026
- No. 17003
- Radha
- Seeta
- No. 4312
- No. 4412
- No. 900 A
- No. 900 C

ग्रे शर्टिंग तथा मारकीन
- No. 3650
- No. 3850
- No. 4050
- "S"

धोतियां
- No. 52½
- No. 4026
- No. 3192

इस मिलमें हरप्रकारका सूत, धुला व कोरा कपड़ा, लांग क्लाथ, धोतियां, साड़ियां, सफेद एवं रंगीन चादरें, टावेल्स, गंजी आदि कपड़ा बनाया जाता है।

बाजारमें कपड़ा खरीदते समय दूकानदारसे बंगाल मिल तथा केशोराम मिल का ही कपड़ा मांगिये।

हमारी विशेषता

ट्रेड मार्क

सी. आर. दास
●
"लॉयन"
●
बंगाली लेडी
●
भारत माता
●
फ्लावर पॉट
●
महारानी
●
"हॉर्स"
●
स्वराज
●
कें. सी. एम.
●

इस मिल में कपड़े पर माड़ी बिलकुल आवश्यक तथा बहुत कम प्रमाण में दी जाती है। इसलिये खालिस सूत कपड़े में रहने के कारण कपड़ा धोने के बाद बहुत अधिक टिकाऊ तथा मुलायम एवं सुन्दर निकलता है।

—: हमारे सेलिंग एजेन्ट्स :—

कलकत्ता
मेसर्स सेवाराम विलासराय
सूतापट्टी, कलकत्ता

कानपुर
मे. रामकिशनदास व्रजमोहनलाल
काहू कोठी, कानपुर

कराची
मे० रोछलदास गीडूमल
बंदर रोड, कराची

बनारस
मे० श्रीकिशनदास श्यामदास
बीबी हाटिया, बनारस

नागपुर
प्रीमियर स्टोर्स सप्लाइंग कं.
नागपुर (सी. पी.)

छपरा तथा मुज़फ्फरपुर
जालान एन्ड सन्स लि०

अमृतसर
मे० बेलीराम राजकुमार,
कटरा अहलूवाला, अमृतसर

देहली
मेसर्स श्यामसुन्दर पाटोदिया
कटरा नवाब साहिब, देहली

मैनेजिंग एजेन्ट्सः—**बिड़ला ब्रदर्स लिमिटेड.**

पत्रव्यवहार का पता
केशोराम कॉटन लिमिटेड,
८ रॉयल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता.

राजस्थानी संसार

जोधपुर सेन्ट्रल जेलकी अमानुषिक घटनाओंके विरोधमें सभा

जयपुर राज्य प्रजा मंडलके तत्वावधानमें और श्री मनोहरलालजीके सभापतित्वमें एक आम सभा जोधपुर सेन्ट्रल जेलकी अमानुषिक घटनाओंके विरोधमें हुई। सभामें सर्वसम्मतिसे एक प्रस्ताव पास हुआ जिसमें श्री जयनारायणजी व्यास तथा अन्य राज बन्दियोंको बुरी तरहसे पीटनेकी निन्दा की गई और उन लोगोंको जो सख्त चोटें पहुंची हैं उन पर चिन्ता और क्षोभ प्रकट किया गया। साथ ही जोधपुर सरकारसे घटनाकी रिपोर्ट शीघ्र प्रकाशित करने और जांचके बाद इसके जिम्मेदार कर्मचारियोंके विरुद्ध उचित कार्रवाई करनेकी मांग भी की गई।

प्रस्तावके सम्बन्धमें श्री हीरालालजी शास्त्री, पं. सत्यदेवजी विद्यालंकार, सम्पादक विश्वमित्र; देवीशंकरजी, सिद्धराजजी डड्ढा, और राधावल्लभजी आदिके भाषण हुए। पं. सत्यदेवजीने अपने भाषणमें जयपुरकी स्थितिकी तुलना जोधपुरकी स्थितिसे करते हुए कहा: जयपुरकी जनता और सरकारको जोधपुरकी घटनाओंसे सबक लेना चाहिए। और जोधपुरमें ऐसी स्थिति पैदा न हो इस बातकी सावधानी रखनी चाहिए।

उन्होंने आगे कहा कि जोधपुर जेलमें बीसाजीकी मृत्यु जेलकर्मचारियोंके दुर्व्यवहार से ही हुई। उस समय भी राजबन्दी पीटे गए थे। २१ तारीखकी रातकी मारपीटमें राजबन्दियोंकी पसली और टांग टूटने तथा सख्त चोटें आनेकी खबर है। व्यासजीको सख्त चोट आई है। सुमनेशजी और माथुरजीके भी घायल होनेकी खबर है। ऐसी ज्यादती किसी भी सभ्य सरकारके कर्मचारी नहीं कर सकते। जनताकी ऐसी कार्रवाइयोंको रोकनेके लिए संगठित होना चाहिए।

श्री हीरालालजी शास्त्रीने कहा: मैंने इस खबरको पाकर जोधपुरके चीफ मिनिस्टरको तार दिया था, लेकिन उसका कोई जवाब नहीं आया। ऐसे कांडोंकी जांच करना प्रत्येक सरकारका कर्तव्य है।

जयपुरके सम्बन्धमें उन्होंने कहा: अभी कोई शासन सुधार सामने नहीं आए हैं: जब वे सामने आएंगे और यदि वे मंजूर करने लायक होंगे तो प्रजामंडल उनको मंजूर कर लेगा।

अन्तमें उन्होंने कार्यकर्ताओंसे आपसी मतभेद भूल जानेकी अपील की।

इन्दौरमें जवाहर जयंती

इन्दौरमें जवाहर जयन्तीका उत्सव धूमधामसे मनाया गया। नौजवान जत्थोंने शहरमें फेरियां लगाई। दुकानदारोंने पं. जवाहरलाल नेहरू और महात्मा गांधीके चित्र फूलोंसे सजाए थे और हरजगह रोशनी की गई थी।

बीकानेर राज्य साहित्य सम्मेलन

तृतीयाधिवेशन

साहित्य एवं शिक्षाप्रेमियोंको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि बीकानेर राज्य साहित्य सम्मेलन का तृतीय अधिवेशन ता. २४–२५–२६ दिसम्बरको सुजानगढ़में बड़े समारोहके साथ मनाया जायेगा। सभापति पदके लिए ठा० रामसिंहजी, एम्. ए.; ठा० जुगुलसिंहजी एम्. ए. बार. एट्. ला. और सेठ रामगोपालजी मोहता का नाम प्रस्तुत किया गया है। सम्मेलनके अवसरपर कवि संमेलन, संस्कृत संम्मेलन, राजस्थानी संमेलन और शिक्षा संमेलन वगैरह उपयोगी संमेलन भी होंगे।

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी युवक भाषण प्रतियोगिता होगी, इसके साथ कला एवं कुटीर व्यवसाय की सभी वस्तुओंसे सुसज्जित प्रदर्शनी भी होगी। जिसमें स्टेटभरके साहित्यकारों की प्रकाशित व अप्रकाशित कृतियाँ, चित्र, वस्त्र एवं ग्रन्थसामग्रियाँ प्रस्तुत होंगी। सर्वश्रेष्ठ हिन्दीके ग्रन्थपर १००) रुपयों का टॉटियां पारितोषिक भी सम्मेलनके अवसरपर ही प्रदान किया जायेगा।

अतः स्टेटभरके सभी शिक्षाप्रेमियों, साहित्यकारों, अध्यापकों, छात्रों, प्रकाशकों, कवियों तथा समाज सुधारकों एवं धनीमानी सज्जनोंसे प्रार्थना है कि सम्मेलनके अवसरपर अवश्य उपस्थित होने की कृपा करें।

ओंकारनाथ शर्मा,
प्रधान मन्त्री

मिदनापुरके पीडित देशवासियोंकी सहायता कीजिए

मिदनापुरमें जो भयंकर दैवीकोप के कारण सहस्रों मनुष्योंकी मृत्यु हुई है और सहस्रों परिवार दयनीय अवस्थाको प्राप्त हुए हैं, वह अब छिपी हुई बात नहीं है। प्रत्येक मनुष्यका यह कर्तव्य है कि इस विषम अवस्थामें वहां की जनताकी सहायता करे। अ० भा० मारवाड़ी सम्मेलनकी स्टैंडिंग कमिटी मिदनापुरके पीडित बन्धुओंके प्रति हार्दिक सहानुभूति प्रकट करती है और समाजके बन्धुओंसे अपील करती है कि वे मुक्तहस्त सहायता करके मिदनापुरकी जनताके दुःखमें हिस्सा बंटाएं। सम्मेलनकी प्रत्येक शाखा-सभाका यह कर्तव्य है कि वह इस कार्यमें हाथ बंटाएं और जो भी सहायता कर सके, करे। सहायता की रकम या तो वे हमारे यहां, अ० भा० मारवाड़ी सम्मेलन, १५२ बी. हरिसन रोड़, कलकत्तामें, अन्यथा मारवाड़ी रिलीफ सोसायटी ३९१ अपर चितपुर रोड़, कलकत्तामें भेज दें। अथवा अन्य सेवा करनेवाली संस्थाओंके पास भिजवाएं।

निवेदक
भंवरमल सिंघी,
स० प्र० मंत्री,
अ० भा० मारवाड़ी सम्मेलन
१५२ बी. हरिसन रोड,
कलकता।

राजस्थानी बंधुओंकी आहुति

माहेश्वरी

श्री. शंकरलालजी हीराचंदजी नवाल, नान्द्रे (खानदेश)
,, भगवानदासजी शंकरलालजी ,, ,, ,,
,, शांतिलालजी शंकरलालजी ,, ,, ,,
,, भाउलालजी गिरधरलालजी आगीवाल ,, ,,
,, बाबूलालजी गिरधरलालजी ,, ,, ,,
,, रामनारायणजी भाउलालजी ,, ,, ,,
,, भाउलालजी मोतीरामजी देपरा ,, ,,
,, वंसीलालजी ,, ,, ,, ,,
,, शिवनारायणजी सुखलालजी आगीवाल ,, ,,
,, रामनारायणजी पन्नालालजी लाठी, भोकर (पूर्वखानदेश)
,, शंकरलालजी रामचन्द्रजी ,, ,, ,,
,, हरिनारायणजी सोनी, शोलापुर
,, शांतिलालजी मोतीलालजी मुणोथ, पनवेल

राजस्थानी

श्री. मदनलालजी अग्रवाल, चोपड़ा (पूर्वखानदेश)
,, अमरचंदजी मदनलालजी अग्रवाल ,, ,,
,, हीरालालजी अग्रवाल, ,, ,,

विश्ववाणी सम्पादक गिरफ्तार

अलाहाबादकी सांस्कृतिक-पत्रिका विश्ववाणीके सम्पादक श्री विश्वम्भरजी ता. १४ दिसम्बरकी दुपहरको नई दिल्लीमें विश्वमित्र सम्पादक श्री सत्यदेवजी विद्यालंकारके मकान पर इलाहाबादके वारंट पर गिरफ्तार कर लिए गए। वारंट भारत-रक्षा कानूनके मातहत था। पोस्टमैनने उनको एक रजिस्टर्ड लिफाफा ला कर दिया। जैसे ही उन्होंने उस पर हस्ताक्षर किए पुलिसने उनको गिरफ्तार कर लिया। लिफाफे पर लखनऊको भेजनेका पता था। खोलने पर उसमें कोरे कागजके सिवा कुछ न था।

चोपड़ा (खानदेश)

श्री. तुलसीदासजी बालारामजी न्यातीने दीपावली उपलक्षमें निम्न संस्थाओंको दान दिया है।

२ रु. गुलाबदेवी आर्य कन्या पाठशाला, अजमेर
२ ,, राजस्थान वनिता आश्रम, ,,
२ ,, दयानन्द हिन्दू अनाथाश्रम, ,,
२ ,, माहेश्वरी विधवा सहायक फंड, हिंगणघाट
२ ,, सनातन जैन विधवाश्रम, अकोला
१ ,, 'माहेश्वरी' पत्र बंबई

सुसनेर

श्री रामचन्द्रजी बजाजका असामयिक निधन

तारीख ८-१२-४२ की रात्रिमें यहांके उत्साही युवक श्री रामचन्द्रजी बजाजका ३४ वर्षकी अल्पायुमें देहावसान होगया।

आप एक उदार, भाग्यशाली, साहसी और उत्साही पुरुष थे। आपके कुटुम्बियोंको यह अभिमान है कि दिवंगत सज्जनके जन्म दिनसे ही उनके घरमें सर्व प्रकारकी दिन-प्रतिदिन समृद्धि होती रही है, आप अपने कुटुम्ब व सम्बन्धियोंको जितने प्रिय थे, उससे अधिक सहानुभूति आपने जनताकी भी प्राप्त कर ली थी।

सुसनेर ग्रामके प्रत्येक सार्वजनिक कार्यमें आप सदैव तन, मन, व धनसे सहायक रहा करते थे, सेवा-समिति, गोशाला, वाचनालय आदिका संस्थापक आपको कहा जाना अनुचित न होगा।

प्रत्येक नव आगन्तुककी सेवा व सत्कार के लिये भी आप सदा तत्पर रहते थे। आपका विशाल भवन जनता के प्रत्येक विवाह, गणेशोत्सव, सभा, व्याख्यान, लायब्रेरी आदि के कार्य में सदैव निःशुल्क काम में आता रहा है। आप एक कुशल व्यवसायी तो थे ही। किन्तु आपको गायनवाद्यादि में भी पूर्ण अभिरुचि थी। और प्रत्येक दिवस आप अपना व अन्यके मनोरञ्जनके विशेष कारण रहा करत थे।

इसके अतिरिक्त आपमें स्पोर्टस् मैन स्पिरिट (अभिरुचि) भी पूर्णरूपेण थी। सोशल क्लब सुसनेरने आपके निधन पर शोकप्रस्ताव पास कर संतप्त परिवारके साथ समवेदना प्रकट की है। परमात्मा आपकी आत्माको शान्ति प्रदान करे।

बिड़ला जूट मैन्यूफेक्चरिंग कं. लिमिटेड

मैनेजिंग एजेन्ट्स

बिड़ला ब्रदर्स लिमिटेड

८, रॉयल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता

★

सब प्रकारके फ़र्श सजानेके लिए संतोषप्रद

सुप्रसिद्ध **जूटकार्पेट्स** के निर्माता

यदि आपके शहरमें कोई स्टाकिस्ट न हो तो
कृपया हमसे सीधा पत्र-व्यवहार करें।

भारत के लिए हमारे सोल डिस्ट्रीब्यूटर्स

मेसर्स गोल्सन्स ऐण्ड कंपनी

११, क्लाईव स्ट्रीट,
कलकत्ता

★

पोस्ट बाक्स
नं. ६६३

टेलिफोन
Cal. 2859

टेलिग्राम:
Carpet

110674

no674

राजस्थानी संसार

जयपुरमें हिन्दू सम्मेलन

जयपुर हिंदू-सम्मेलनमें पहिले दिन स्वागताध्यक्ष श्री सोहनलाल गोलछा का भाषण समाप्त होनेके बाद सभापति श्री रामकृष्णजी डालमिया का भाषण हुआ। आपने राजस्थान की वीर भूमि की प्रशंसा करते हुए कहा कि—"आज यह हमारा अहोभाग्य है कि राजस्थान की उस परमपावन भूमिमें हम एकत्रित हुए हैं, जहांका अतीत गौरव बार-बार हमारे हृदयको उल्लसित कर रहा है और जिसके कण-कणमें वीरोंकी पवित्र स्मृति बिखरी पड़ी है। यहांकी वीर ललनाओंने अपने रक्तसे हमारे इतिहासको सींचा है और सारा संसार उनके दिव्य सतीत्वके सामने श्रद्धा और भक्तिसे नत-मस्तक है। इस परम-पावन भूमिको हमारा कोटि-कोटि प्रणाम है।

भाइयो! आपने मुझे इस सम्मेलनका अध्यक्ष चुना, यह आपका असीम प्रेम है और उस प्रेमके सामने मैं सर्वथा मूक हूं। मुझे अपनी अयोग्यताका पता है और मुझे आज बड़ा ही संकोच हो रहा है, परन्तु आप महानुभावोंका प्रेम मुझे बल प्रदान कर रहा है और मुझे आपके प्रेमपूर्ण सहयोगमें पूरा विश्वास है। मैं तो इसी भूमिकी गोदमें खेला-कूदा हूं और पनपा हूं। आपके प्रेम और आत्मीयताका मैं सब प्रकार अधिकारी हूं। इसलिये जहां अपनी ओर देखते हुए मुझे संकोच और झिझक हो रही है वहीं आप प्रेमियोंकी ओर देखकर मेरे अन्दर साहस और शक्तिका संचार भी हो रहा है। आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप प्रभुसे प्रार्थना करें कि यह सम्मेलन सब प्रकार सफल हो और आपके दायित्वको मैं संभाल सकूं।

सज्जनो! आज संसार एक महान् संकटसे होकर गुजर रहा है—पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय आदि सभी क्षेत्रोंमें एक अजीब क्रांन्ति और उथल-पुथल-सी मची हुई है और आज मानवता त्रस्त, खिन्न, आर्त और कातर होकर दीन गऊकी तरह शान्तिके लिये त्राहि-त्राहि मचा रही है। भारतने ऐसे-ऐसे समयों-पर संसारको एक महापुरुष देकर संसारका योगक्षेम वहन किया है और आज फिर उसकी बारी है। सज्जनो! जिस देशमें राम' भीम, अर्जुन, भीष्म, बुद्ध, गुरु गोविन्द' राणाप्रताप और छत्रपति शिवाजी व० नर-रत्नोंने अवतार लिया, उसी की आज ऐसी दीन दशा! अरे, आज भी तो गांधी और टैगोर, मालवीय और अरविन्द, जगदीश और राधाकृष्णन, सावरकर और मुंजेने हमारा मुख उज्ज्वल और हमारा मस्तक ऊंचा किया है और हम संसारमें आज उनके ही कारण इस गुलामीकी हालतमें भी मुंह दिखाने लायक हुए हैं। इस अवसरपर देशके उस महान् उज्ज्वल रत्न त्यागवीर स्वर्गीय सेठ जमनालालजी बजाजकी, जिनके साथ मेरा भाईका नाता था, स्मृति भी मेरे हृदयमें सजीव हो उठी है। संसारमें उनकी कोटिका त्यागी होना कठिन है। उन्होंने देशके दरिद्रनारायणोंके लिए अपना सब कुछ और अपने आपको होम कर दिया। ऐसे वीर व्रती देशपुजारीको, जिनके जीवनका मूलमन्त्र था—'कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामर्तिनाशम्' पाकर यह भारत धन्य हुआ। इस महादानी, महात्यागी, महातपस्वी की जन्मभूमि भी यह जयपुर ही था। आज वे जीवित होते, और जेलसे बाहर होते तो अवश्य ही इस सम्मेलनमें आये होते। मित्रो! यह विश्वास रक्खो, उस महापुरुष की आत्मा स्वर्गसे हमारे इस राष्ट्रीय उत्सवको देख रही है और हमें जनता-जनार्दन तथा दरिद्र-नारायण की सेवाके लिए प्रेरित और उत्साहित कर रही है। जाति-सेवा, देश-सेवा, राष्ट्र-सेवा, गौ-सेवा और सबसे बढ़कर दीनोंकी मूक सेवामें स्व० जमनालालजीका रिक्त स्थान कांग्रेस भी नहीं पूरी कर सकी।

मित्रो! हिन्दु-जातिमें सदासे एकसे एक विभूतियों पैदा हुई और दुनियासे उनसे शिक्षा ली। हमारी संस्कृतिका आधार इतना सुदृढ़ है कि जहां इस पृथ्वीपर अनेक-अनेक राष्ट्र उगे, चमके और धराशायी हो गये, संस्कृतियों और सभ्यताओंने अपनी चकमकसे क्षण भरके लिए संसारको मुग्ध कर लिया परन्तु उनका आज पता भी नहीं है परन्तु हमारी भारतीय संस्कृति अब भी संसारके लिए एक ईर्ष्याकी वस्तु हो रही है और इस गिरी हुई दशामें भी यदि हम मिलकर रहना सीखें, मिलकर चलना जानें और मिलकर मुकाबला कर सकें तो हमारी बिखरी हुई, उजड़ी हुई जातीयता पुनः जी उठे, लहलहा उठे और सारी दुनियापर छा जाय।"

अधिवेशनके लिए श्री सेठ जुगलकिशोरजी बिड़ला और श्री सावरकरजीने संदेश भेजे थे जिनमें सम्मेलनकी सफलताके लिये शुभ कामना प्रकट की गई थी।

जयपुर महिला सम्मेलनमें सभानेतृ श्रीमती डालमियाके भाषणके बाद श्रीमती लेखवती जैन और कुमारी निर्मलाके भाषण हुए जिनमें 'स्त्रियों' की उन्नति पर जोर दिया गया।

हिन्दू सम्मेलनमें दूसरे दिन जयपुरके दीवान सर मिर्जा इस्माइल भी आए उन्होंने अपने संक्षिप्त भाषणमें सब धर्मोंके प्रति अपना समभाव प्रकट किया और सम्मेलनको विश्वास दिलाया कि जयपुरमें राजकाजमें हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपिको भी स्थान दिया जाएगा।

सम्मेलनमें एक प्रस्ताव गोरक्षा और गोचर भूमिके सम्बन्धमें और एक श्री जुगलकिशोरजी बिड़ला द्वारा स्थापित अ. भा. आर्य धर्म सेवा-संघके साथ सहयोग करनेके संबंन्धमें रखा गया।

एक नये आर्डिनेन्सकी आवश्यकता

श्री भंवरलाल कासट सीहोर, केन्ट

इस लेखमें जिस आर्डिनेन्सके लगाये जानेके विषयमें लिखा जा रहा है वह किसी व्यापार पर कंट्रोल या तेजी-मंदी रोकनेवाला प्रयास नहीं। यह एक अत्यन्त आवश्यक समस्या पर विचार है—इसे चाहे सरकार न लगाये मगर समाजको यह आर्डिनेन्स अवश्य ही लगाना चाहिए और विशेष कर मारवाड़ी समाजको इस आर्डिनेन्स की अधिक आवश्यकता है।

देशमें आज शक्कर, घी, चावल, आटा, मैदा, गुड, तेल, वस्त्र, और रेलोंमें सवारियों की अधिकता एक प्रमुख समस्या है। एक महिनेके बाद शादियों की धूम मचेगी। धनी लोग खुशियां मनायेंगे। अनाप-शनाप खर्च, रोशनी, घी, शक्कर की भरमार होगी। सैंकड़ों हज़ारों आदमियों की जीमणवारें होंगी। मनो मिठाई खाई जायगी और उतनी ही जूठनमें जायेगी। जब कि एक कुटुम्बके लिये आवश्यकतानुसार यह वस्तुएं प्रायः दुष्प्राप्य हैं। समाजके वह निर्धन लोग, जिनके लड़के या लड़की जवान हैं और विवाह योग्य हैं हमेशा ही एक समस्यामें उलझे हुए और बेचैन हैं। इस जमानेमें उनपर एक नयी मुसीबतका पहाड़ महंगाई टूट पड़ा है। कईयोंने जो एक वर्ष पूर्व अपने बच्चोंका विवाह कर देना चाहते थे सोचा कि युद्ध शीघ्र ही समाप्त होगा, फिर शादी करेंगे, कम खर्च होगा; आज उन्हें पहिले की अपेक्षा अधिक दुख दायी हो रहा है। युद्धकी ज्वाला बढ़ती ही जाती है और निकट भविष्यमें युद्धकी समाप्ति के कोई चिन्ह नहीं दिखाई देते।

आजके समयमें एक गृहस्थको अपने कुटुम्बका पालन पोषण शिक्षण तो दूर रहा दुर्भर हो रहा है, तिसपर शादी विवाहके खर्चकी समस्या। युद्धके समयमें ऐसे तो थोड़े ही व्यक्ति हैं हैं जिन्होंने इस तेजीसे लाभ उठाया है और हज़ारों लाखों कमाये हैं और उन्हें तो अपने बच्चोंकी शादी विवाहकी खर्चकी कोई समस्या नहीं और ज्यादा आतिश बाजी चलायेंगे। धनवानोंको खर्चकी चिन्ता नहीं। वह शादीसे पूर्व ही एक सालसे सामान एकत्रित करते हैं। और कई तो ऐसे पक्के रुखवाज़ व्यापारी हैं कि उन्होंने शादीके खर्चके समानमें व्यापारी कुशलता दिखाई होगी। शादीके खर्चका प्रत्येक सामान खर्चसे दुगना तिगना जमा किया। शादीमें खर्चसे अधिक सामान जो बचेगा उसकी दुगनी तिगनी कीमत आयेगी इस तरह धनवानोंके बच्चोंकी शादी हुई मुफ्त और गरीबोंका कुछ हाल न पूछो। उनके पास इतना पैसा ही कहां जो जरूरतका सामान ले सकें, दुगना तिगना जमा करना तो दूर ही रहा।

क्या अच्छा होता यदि सरकारने इस और ध्यान दिया होता शक्कर, घी, तेलका बहुत बड़ा स्टाक अनावश्यक खर्चसे बचता, जमा किया हुआ सामान फिर बिकता; चीजें मिलने लगतीं, महंगाई कम होती, रेल्वे की विज्ञप्ति जिसमें कम सफर करने का अनुरोध किया गया है कार्य रूपमें परिणत होते। अधिकारियोंने इस और ध्यान तो दिया मगर उन कारणोंका खोज नहीं निकाला, जिनमें इन वस्तुओंका अनावश्यक खर्च हो रहा है जिससे उनकी स्कीम पूरी नहीं हो पाती। यदि सरकार इस तरफ ध्यान न दे तो समाजको ही अपने पैरोंपर खड़ा होना चाहिए। जब यह पंक्तियां लिखी जा रही थीं "विश्वमित्र" दैनिक प्राप्त हुआ। जिसमें "दावतों पर प्रतिबंध" जयपुर सरकार द्वारा लगाया जाना पढ़ा, जिसमें मृतक भोजमें १२ ब्राह्मणों और अन्य दावतोंमें २५ आदमीसे अधिक व्यक्ति नहीं जिमाये जा सकते और आज्ञा उल्लंघन पर ३ वर्ष की सख्त सजा रखी गई। जयपुर सरकारका यह कार्य प्रशंसा योग्य है। यदि सरकार और देशी राज्य इस तरफ ध्यान दें तो एक बहुत बड़ी समस्या हल हो सकती है। जीमणवारें बंद की जायें। अथवा लड़कीवाला या लड़केवाला एक जीमणवारसे ज्यादा न करें। व्यक्तियोंकी संख्या नियमित हो। बाने निकालना बंद किया जाय। बरातमें नियमित संख्यामें बराती जाएं। बतासे न बांटे जायं। तभी यह समस्या हल हो सकती है और शक्करकी प्राप्तिमें जो कठिनाई होती है इससे छुट्टी मिल सकती है।

पुराने विचारवाले इसे सुधार योजना मानेंगे। उनसे प्रार्थना है कि सदैवके लिये यह प्रथाएं बंद न करें; परंतु युद्धके समयमें और जबतक युद्धसे पूर्वकी साधारण स्थिति न हो जाये तबतकके लिये इनको बंद करनेमें अवश्य ही सहयोग करें। यह प्रतिबंध एक अच्छा आर्डिनेन्स साबित होगा। अतः सुधारकों और पुराने विचारवालोंको चाहिए कि इस पर विचारविमर्श कर इस कार्यको शीघ्रातिशीघ्र कार्यरूपमें परिणत करें क्यों कि अब देर नहीं, केवल एक मास बाद ही शादियोंकी धूमधाम होगी। युद्धके पश्चात् साधारण संपत्ति आने तक यह प्रतिबंध रहे और इसके बाद प्रतिबंध उठा लिया जाए इसमें पुराने विचारवालों को भी आपत्ति न होगी। आशा है इस पर सब एकमत हो सकेंगे।

वधूकी आवश्यकता है

एक २७ वर्षीय सुंदर स्वस्थ व मेट्रिक पास झँवर गोत्रके माहेश्वरी विधुरके लिए, जिनकी मासिक आय १०० रु. है, एक योग्य खानदानी कन्याकी आवश्यकता है। कन्या सुंदर स्वस्थ हो, तथा मंत्री खापकी न हो। उत्तरके लिए निम्नपते पर फोटो, शिक्षण व० खुलासा करें।

आर. एस. झँवर,
प्रो. श्रीराम स्टोर्स
स्टेशनरी एण्ड जनरल मर्चेंट
चोपड़ा (पू. खानदेश)

• अन्तिम घड़ी •

(पृष्ठ ६ का शेष)

किसीको माफ करेंगे ! वहाँ देखो, उस झाड़ी में वह है । बदजात ऐंटन, वह आदमी जिसने अपनी मातृभूमिका साथ उसके सबसे गाढ़े दिनमें छोड़ा । वह अपनी चमड़ी एक कुत्तेकी जिन्दगी पानेके लिए बचाना चाहता था और उसे कुत्तेकी मौत मिली ।

हम दृढ़तासे डग बढाते हैं । हम उधर बगैर देखे हुए डग बढ़ाते हैं । अफसोस न महसूस करते हुए । बिहान होते हम लड़ने जायँगे । संगीनोंसे छापा मारने । हम लड़ेंगे, अपनी जिन्दगी पर बगैर जरा-सी मुरौवत किये । मुमकिन है हम मर जायँ । लेकिन कोई हमारे बारेमें न कह सकेगा कि हमने पीठ दिखाई, कि अपनी मातृ-भूमिसे ज्यादा हमें अपनी चमड़ी प्यारी थी ।

साथी ! पौ फटनेको अब दो घण्टे हैं । मैं रातके अंधेरेको चीरता हुआ ऐसे आदमीकी निगाहोंसे देख रहा हूँ जो लड़ाई और अपनी संभाव्य मृत्युकी नजदीकीके कारण बहुत दूर तक देख पाता है । बहुतेरी रातों, दिनों, महीनोंके उस पार मैं आगे देखता हूँ और दुःख के पहाड़ों के पार जीत देखता हूँ । हम जीतेंगे । लहू की नदियों, तकलीफों और यन्त्रणाओं के बाद, युद्ध की भीषणता और गलीज़ के बाद हमें जीत मिलेगी । दुश्मन पर अन्तिम और मुकम्मिल जीत । हमने उसके लिए तकलीफ सही है और हम जीतेंगे ।

लड़ाई के पहले के सालों को याद करो । हमारी पीढ़ी के सर पर हमेशा से लड़ाई की यह तलवार झूलती रही है । हम जीते थे, अपनी पत्नियों को छाती से लगाते थे, अपने बच्चों को पालकर बड़ा करते थे लेकिन एक पल को सुध न खोते थे । उधर हमारी सरहद के पार एक खूँखार दरिन्दा तैयार हो रहा था । वह अपने दाँतों को निकालता और उन्हें तेज़ कर रहा था । युद्ध हमारा हर वक्त का पडोसी था । उस साँप की फूँकने हमारी ज़िन्दगियों, हमारी मेहनत, हमारे प्यार में ज़हर दौड़ा दिया था । हम चैनसे न सोते थे । हम इन्तज़ार कर रहे थे ।

उस दरिन्देने हम पर हमला किया । वह हमारे मुल्कमें है । बड़ी ही कठोर और भीषण लड़ाई हो रही है । लड़ाई, जिसका अन्त मृत्युमें ही हो सकता है । किसी किस्मके समझौते अब नामुमकिन हैं । अब कुछ चुननेको नहीं । है सिर्फ गला घोंटना, नष्ट करना और हमेशाके लिए हिटलरी दरिन्दों का सफाया करना । और शव आखिरी फासिस्ट अपनी कब्रमें जा रहेगा और जर्मन हॉविट्ज़र तोपें आखिरी बार भूँक चुकेंगी, तभी इस भीषण डरावने सपने का खात्मा होगा । एक निस्तब्धता, विजय की एक विराट् अटूट निस्तब्धता तब आयेगी । और साथी, हम तब सिर्फ जंगल की खुश पत्तियों की सरसराहट ही न सुनेंगे । हम तब सुनेंगे, तमाम दुनिया, सारी मानवता की सुख और चैनसे ली गई साँस ।

हम आज़ाद किये गये शहरों और गाँवोंमें दाखिल होंगे और एक जीतसे उल्लसित शांति हमारा स्वागत करेगी—खुशीसे छलकते हुए हृदयों की शांति । और फिर, नये सिरेसे बनी हुई फैक्टरियों और मिलोंसे धुँआ उठेगा । ज़िंदगीमें फिर उबाल आयेगा—बहुत खूब ज़िन्दगी होगी, साथी ! वास्तवमें एक महान् और कीमती ज़िन्दगी होगी वह । एक आज़ाद दुनियामें जिसमें हर क़ौम में भाई-चारा होगा । ऐसी जिंदगी के लिए मरना कोई बहुत बड़ी कीमत नहीं है । यह मौत नहीं है । यह अमरत्व है ।

साथी, बिहान हुआ...डरते-से, भूरे साये धरती पर फैल गये हैं । जीवन मुझे कभी इतना सुन्दर न जान पड़ा था जितना इस घड़ी । देखो डॉनका मैदान कैसा फूल रहा है, खड़ियेके रंगके टीले सूरजकी किरणोंमें कैसे रुपहले हो रहे हैं !

हाँ, जीनेका मतलब होता ज़रूर है । इसलिए कि विजय मिली देखूँ । इसलिए कि अपने बड़े कोटकी तहोंमें अपनी नन्हीं बच्चीका घुँघराले बालोंवाला सर छुपा लूँ । मुझे ज़िंदगी से बड़ा मोह है और इसीलिए अब मैं लड़ने जा रहा हूँ । मैं जिंदगीके लिए लड़ने जा रहे हूँ । एक अच्छी ज़िंदगीके लिए साथी ! गुलामके अस्तित्वके लिए नहीं । अपने बच्चोंके सुखके लिए, अपनी मातृभूमिके सुखके लिए । अपने सुखके लिए । मैं जिंदगीको प्यार करता हूँ, पर मौतसे नहीं डरता । दिलेरीसे जीना और दिलेरीसे मरना, ज़िंदगी का यही मतलब मैं जानता हूँ ।

बिहान......

मशीनगनोंने कड़कना शुरू कर दिया है । तोपचियोंकी टुकड़ी तैयार हो रही है और एक पलमें हम भी लड़ाईमें होंगे ।

साथी ! मेरे अपने डॉनके मैदान पर सूरज निकल रहा है । लड़ाईका सूरज । इसकी किरणोंके नीचे साथी, मैं उल्लासके साथ शपथ खाता हूँ : मेरे पैर न लड़खड़ायेंगे । घायल होनेपर अपनी सफोंको छोडूंगा नहीं । दुश्मनोंसे घिर जाने पर आत्मसमर्पण न करूंगा । मेरे मनमें कोई डर, कोई उलझन, दुश्मनके लिए कोई दया नहीं है । है सिर्फ एक घृणा, एक हिंस्र घृणा । कलेजेको आग लग गई है । यह मरते दम तककी हमारी लड़ाई है ।

और लो, मैं चला ।

('हंस' से लिया गया)

(पृष्ठ ५ का शेषांश)

भारी हानिके साथ हिन्दुस्तान गँवाना पड़ेगा

इस परिस्थितिमें शीघ्र ही परिवर्तन करनेकी आवश्यकता है । यदि इस आवश्यकताको हम नहीं पहचानते तो मुझे कहना पड़ेगा कि हम आत्म-प्रवंचना कर रहे हैं ।

दुनियामें खड़े रहनेका केवल यही एक उपाय शेष है कि हम हिन्दुस्तानके हाथोंमें अधिक से अधिक अधिकार दें ।

मुझे जरा आश्चर्य हुआ था फिर भी मेरा यह मत है कि हम लोग हिन्दुस्तानी और जापान–दोनोंका विरोध कर हिन्दुस्तानको अपने हाथमें नहीं रख सकते ।

ग्वालियर राज्यके स्थानीय स्वशासन एवं ग्रामसुधारके मंत्रीपदसे

श्री तख्तमलजीका त्यागपत्र

श्री तख्तमलजी भूतपूर्व मंत्री ग्रामसुधार एवं स्थानीय स्वशासन विभाग राज्य ग्वालियरने अपना त्यागपत्र मंजूर होनेपर निम्न वक्तव्य प्रकाशनार्थ भेजा है ।

वैधानिक सुधारोंकी तरक्कीके सिलसिलेमें श्रीमंत ग्वालियर नरेशने अपनी प्यारी प्रजामेंसे किसी गैर सरकारी व्यक्तिको शासनसे सम्बद्ध करनेकी दृष्टिसे अपने मंत्रिमंडलमें अपनी पसंदगीके व्यक्तिके लिए एक स्थान कायम करनेकी घोषणा तारीख १० अक्टोबर १९४० को की थी । इसके बाद ता. २५ अक्टोबर १९४० की आज्ञा द्वारा इस पद पर तीन सालके लिये मेरी नियुक्ति की गई । ता. ११ नवंबर १९४० को मैंने इस पदका भार सम्हाला, तथा ठीक बीस माह बाद यानी १४ जुलाई १९४२ को इससे हमेशा स्तीफा देकर इसके कारणोंपर विचार करनेकी सहुलियत पैदा करनेकी गरजसे ता. १ अगस्ट १९४२ से मैं तीन माह दस दिनकी बिना तनख्वाह पद पर रहा । चूंकि मेरा स्तीफा अब मंज़ूर हो चुका है, इसलिये मेरा फर्ज हो जाता है कि, मैं इसके कारणोंपर रोशनी डालूं ।

"इस गैर सरकारी मंत्रीपदकी कायमी अवश्य ही किसी उच्च राजनैतिक दृष्टिसे प्रेरित होकर की गई थी और इस पदको स्वीकार करनेके वक्त मेरे नजदीक ऐसी पुरजोर वजहें भी थीं कि जिनकी बिना पर इस पद द्वारा राजा तथा प्रजाकी विशेष सेवा करनेकी आशाएं उत्पन्न हो गई थीं । किन्तु शांति व दृढ़तापूर्वक बीस मास तक मैंने इस पद पर रहकर यह महसूस किया कि मेरी ऊपरोक्त आशाएं व्यर्थ थीं । मेरे पदग्रहणके उद्देश विफल होनेकी खास वजहाते ये हैं ।

१ मेरे कार्यों तथा योजनाओंमें सफलता मिलनेकी दृष्टिसे माकूल सहायताका (Support and co-ordination) का अभाव, जिससे मुख्य उपदेशोंको अमलमें लानेमें बहुत देर दार एवं अडचनें उत्पन्न हो गईं ।

२ अवैधानिक कार्यपद्धति तथा मेरे अधिकारोंका कम किया जाना ।

३. राज्यके पब्लिसिटी डिपार्टमेंट की संकुचित नीति ।

४. सरकारी नोकरोंमें पाया जानेवाला असंतोष ।

५. गैर ज़रूरी दमन ।

६. राज्य की नीति पर जनहित की दृष्टिसे प्रभाव डालने की असंभवनीयता ।

"मेरी ओरसे सब कुछ कर लेनेके बाद जब मैंने यह देखा कि मेरी अडचनें लगातार बढ़ती ही रही हैं और राजा तथा प्रजा की सेवा के हेतु मौजूदा शासनमें मेरे जैसे व्यक्तिका कोई उपयोग नहीं है तब मजबूरी हालतमें मैंने उपरोक्त पदभारसे छुटकारा पाना ही ठीक समझा है ।

हमीरगढ़के रावजी साहेब इस ओर ध्यान दें

हमीर गढ़

हमीरगढ़ बड़ा कस्बा है, आबादी ८००–९०० घरोंके करीब है, रेल्वे स्टेशन भी है । यहाँके रावजीसाहेब वृद्ध हैं इनमें काम करनेकी शक्ति नहीं है । ठिकानेकी दिन ब दिन दुर्दशा होती जा रही है । चंद स्वार्थी लोग रावजीसाहेबके मुँह लगे हुए हैं । वे अपनी मनमानी करते हैं । हाल हीमें इन कारणोंसे ठिकाने पर मूनसरमात की गई है । मगर रावजी साहेबके स्वार्थियोंको यह बात सहन नहीं हो सकी, जिससे मूनसरमातको हटानेकी हर प्रकारसे कोशिश की जा रही है । पब्लिक मूनसरमात कायम रखनेके लिए तार व अर्जियें प्राईमिनिस्टर साहेबकी सेवामें निवेदन कर रही है ।

यहाँ पर न स्कूल, न दवाखाना, न शहर सफाईका प्रबन्ध था । मूनसरमात कायम होनेपर इन बातोंकी व्यवस्था की गई और आगेकी उन्नतिकी आशा है । मगर रावजी साहेबके मरजीदानका स्वार्थ नष्ट होनेकी वजहसे वे लोग मूनसरमात उठानेकी पूरी कोशिश कर रहे हैं । वैद्यराज भूवानीशंकरजीको जागीरीके अलावा २०००) अलग दिए जाते हैं तो भी पब्लिकके लिए कुछ भी खर्च नहीं किया जाता है । इसी लिए प्राईमिनिस्टर साहेबकी सेवामें निवेदन है कि मूनसरमात दस्तुर कायम रखाई जावे ।

सलुम्बर

नवयुवकोंकी प्रतिज्ञा भंग

जाति सुधारके लिए मृत्युभोज आदि कुरीतियोंको हटानेका प्रयत्न हो रहा है । यहाँ पर भी कतिपय नवयुवकोंने जब श्री. दिली-सिंहजी राठीका दौरा हुआ था मृत्युभोज नहीं खानेकी प्रतिज्ञा ली थी । और उनके नाम अनुकरणीय गिने जाने लगे, पर यह देख कर दुःख होता है कि उन्हींमेंसे कुछ सज्जनोंने अभी अभी मार्गशीर्ष कृष्णा नवमीको एक मृत्युभोजमें पांच पक्वान्नके लालचमें पड़कर अपनी प्रतिज्ञा भंग कर दी । यह कार्य है तो निन्दनीय, पर क्या ही अच्छा हो कि वे सज्जन अब भी अपनी भूल पर पश्चात्ताप कर भविष्यमें अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहनेका निश्चय कर लें ।

(पृष्ठ १५ का शेषांश)

मिलते हैं । इस बमवर्षाका पूरा ब्यौरा नहीं प्रकाशित हुआ है, लेकिन जितना भी प्रकाशित हआ है, उससे पता चलता है, कि करीब २० शहरों पर जर्मनोंने बमवर्षा की और इससे जन-धन की अत्यधिक हानि हुई ।

चटगाँवपर जापानी हमले

चटगांव पर जापानी बमवर्षक पिछले कुछ दिनोंसे हमले कर रहे हैं । ता. १० दिसंबर को चटगांव और और पर बहुतही जोरों का हमला हुआ और अनेक व्यक्ति हताहत हुए फेनी जापानी आक्रमणके भयसे जनताने नगर छोडना शुरू कर दिया है ।

यूनिवर्सल फायर एण्ड जनरल

इन्स्युरन्स कंपनी लिमिटेड

संस्थापित सन् १९१९

★

१००% शत प्रतिशत हिन्दुस्तानी इन्स्युरन्स कंपनी

ज़िन्दगी, आग, मोटर, समुद्रीय, देशी उद्योग,
और मजदूरोंके मुआवजेके बीमेका
कामकाज किया जाता है

—: हमारी शाखाएं :—

अहमदाबाद
(गांधी रोड)

बोटाद
(काठियावाड)

कलकत्ता
(१३५, कॅनिंग स्ट्रीट)

लाहौर
(दी माल)

कम्पाला (युगाण्डा)
(बाम्बो रोड)

★

जिन स्थानोंपर हमारी एजेन्सियां नहीं हैं, वहां एजेण्टोंकी आवश्यकता है। विशेष विवरणके लिए लिखिए :—

कंचनलाल वरजदास (मालाणी)
जनरल मॅनेजर

हेड ऑफिस :– सर फिरोजशाह मेहता रोड, फोर्ट, बम्बई

बीमेकी सुरक्षितताके लिये यूनिवर्सलको याद कीजिए

Printed and published by Vasant S. B. Shroff, B. A., B. SC., LL. B. at the Bombay Vaibhav Press, Servants of India Society's Building, Sandhurst Road, Bombay 4

न्यु एशियाटिक

की

शानदार प्रगति

	१९४० रु.	१९४१ रु.
नया कामकाज	६०,१३,५००	६२,०४,२६०
प्रीमियमकी आय (नेट)	६,८७,८३८	८,४२,४५१
व्याजद्वारा आय	१९,८४१	३८,४१४
इन्वेस्टमेंट रिज़र्व फण्ड	२०,६१५	३१,९६१
जीवन वीमा फण्ड	५,७६,७७३	९,२१,३९५
ॲसेट्स	८,८७,०९४	१३,९५,९४३

दी न्यु एशिआटिक लाईफ इंस्युरंस कम्पनी लिमिटेड

हेड ऑफिस

कॅनाट सर्कस, नई दिल्ली

शाखाएं और चीफ एजंसियाँ

उत्तरी विभाग

(कॅनाट सर्कस, नई दिल्ली)

लाहोर
रावलपिंडी
पेशावर (केन्टोनमेन्ट)
पटना
कानपुर

पूर्वी विभाग

(८, रायल एक्सचेन्ज प्लेस, कलकत्ता)

ढाका
बर्दवान
जलपाइगुरी
सिलहट
बर्मा

पश्चिमी विभाग

(४५–४७ अपोलो स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई)

हैद्राबाद (दक्षिण)
इर्नाकुलम
बेलगाम
अहमदाबाद
कराची

मध्य विभाग

(१८, यशवंत रोड़, इन्दौर)

इन्दौर
जलगांव
नागपुर

दक्षिणी विभाग

(२८९ लिंगा चेट्टी स्ट्रीट, मद्रास)

मद्रास
सीलोन
त्रिचनापल्ली

Compiled
1999-2000